मॉरमन धर्मशास्त्र

अगर परमेश्वर ने चाहा कि तुम इन बातों को पढ़ो, तब सुनो, मैं तुम्हें सावधान करता हूं कि जब तुम इन्हें पढ़ो तब यह याद रखो कि आदम के बनाए जाने के समय से ले कर इन बातों को प्राप्त करते के समय तक, परमेश्वर मानव वंश के लिए कितना दयालु रहा है, और तुम, अपने हृदय में इसका चिन्तन करना।

और जब तुमको ये बातें प्राप्त होंगी, तब मैं तुम्हें सावधान करूंगा कि तुम परमेश्वर, अनन्त पिता से, मसीह के नाम पर पूछो कि क्या ये बातें सत्य नहीं हैं; और अगर तुम सच्चे हृदय से, और अच्छी अभिलाषा से, मसीह में विश्वास करके पूछोगे, तब वह पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा तुम पर सच्चाई स्पष्ट प्रकट करेगा।

और तुम पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा सब बातों की सच्चाई जानोगे।

—मरोनी १०:४-५.

मॉरमन धर्मशास्त्र के कुछ रोचक उल्लेख

•

२५०० वर्ष पूर्व अमरीका के इतिहास की भविष्यवाणी—प्रथम नफी, अध्याय १३

क— कोलम्बस पद्य १२
ख—अमरीकी आदिवासियों का पतन। पद्य १४
ग—धर्म के कट्टर अनुयायी। पद्य १६
घ—क्रान्तिकारी युद्ध। पद्य १७-१६
ङ—धर्मशास्त्र पद्य २३-२६

पतन और प्रायश्चित क्यों? पढ़ो २ नफी २:१४-२७, २ नफी ६:६-१६, अलमा ४२: ३-१६

अमरीका पर कोई राजा का शासन नहीं होगा। पढ़ो २ नफी १०:१०-१४

इन भविष्यवक्ताओं द्वारा अन्तिम दिनों की भविष्यवाणियां। २ नफी २६:१४-३२ २ नफी २६:१५-१७ की तुलना यशायाह २६:३-४ से करो।

२ नफी २७:६-१० की तुलना यशायाह २६: १-१० से करो।

२ नफी, २७, १५-३५ की तुलना यशायाह २६:११-२४ से करो।

२ नफी, अध्याय २८ और २६ अवश्य पढ़ो।

क्या परमेश्वर हमें धर्मशास्त्र के अलावे और भी कुछ देगा? २ नफी, २६:२-३ की तुलना यहेजकेल ३७:१६-१७ से करो।

अल्मा का आश्चर्यजनक मतपरिवर्तन। पढ़ो मूसायाह, अध्याय २७

आधुनिक वैज्ञानिकों ने जिस प्राचीन अमरीकी सभ्यता का पता लगाया है उसका निर्माण करने वाले कौन थे? पढ़ो इलामन ३:७-१०, इलामन ६:६-१२

अपने सेवकों के लिए परमेश्वर की कृपा का एक उदाहरण। इलामन ५:२०-५२

अमरीकी गोलार्ध में मसीह के क्रूस पर चढ़ाने की, और उसका यहां गमन करने की घटनाओं को पढ़ो। ३ नफी अध्याय ८ से ११

यहूदियों से मसीह ने अन्य भेड़ों के विषय में कहा (यूहन्ना १०:१६) वे कौन थे? पढ़ो ३ नफी १५:१३-२४

संस्कार करना और संस्कार में कौन भाग लें। ३ नफी, १८:१-१४ पूरा अध्याय पढ़ो।

३ नफी, अध्याय २१ पढ़ना आवश्यक है। (नया यरूशलेम)

गिरजा का क्या नाम होना चाहिए? पढ़ो ३ नफी २७

तीन नफायटी भविष्यवक्ताओं को दी गई दिलचस्प प्रतिज्ञायें ३ नफी, अध्याय २८।

क्या मसीह और परमेश्वर एक है और बिना किसी स्वरूप के या मनुष्य को परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के सदृश्य बनाया गया? एथर ३:३-१६ तुलना करो उत्पत्ति १:२६-२७ से।

क्या बिना बपतिस्मा लिए शिशु नर्क में पड़ते हैं या अनन्त शोभा प्राप्त करने से वंचित रह जाते है? पढ़ो मरोनी अध्याय ८

मारमन धर्मशास्त्र पढ़ने वालों के लिए एक प्रतिज्ञा मरोनी (१०) ४, पद्य २७ से ३४ भी पढ़ो।

क्या हमें अपना शरीर पुनः प्राप्त होता है? पढ़ो अल्मा, ११:४०-४५

मृत्यु के पश्चात् आत्मा कहां जाती है पढ़ो अलमा अध्याय ४०

मॉरमन धर्मशास्त्र
अर्थात्
मॉरमन की पुस्तक

पटियों पर मॉरमन के हाथ द्वारा लिखा गया वर्णन

नफी की पटियों से लिया गया

नफी और लमनायटी लोगों का संक्षिप्त अभिलेख—इस्राएल के घराने के अवशेष, यहूदी और उन से भिन्न जाति के लोगों के लिए भविष्यवाणी और दिव्य ज्ञान के प्रभाव से लिखा गया—लिखकर मुहरबन्द की गई, और परमेश्वर के लिए सुरक्षित कर दिया गया जिससे कि वह नष्ट न होवे और उचित अवसर पर परमेश्वर की शक्ति और देन के द्वारा अनुवाद के लिए प्राप्त हो—मरोनी के हाथ से मुहरबन्द की गई और सुरक्षा के लिए छुपा दिया गया जो उचित समय पर यहूदियों से भिन्न जाति द्वारा प्राप्त हुआ और इस का अनुवाद परमेश्वर की कृपा द्वारा किया गया।

एथर की पुस्तक से भी लिया गया संक्षिप्त वर्णन, जो कि यारद लोगों का अभिलेख है, जो यारद स्वर्ग में जाने के लिए मीनार बनाते थे और जिनकी भाषा में गड़बड़ी कर देने पर तितर बितर हो गए थे—जो कि इस्राएल के अवशेष वंश को यह दिखलाने के लिए है कि उनके पूर्वजों के लिए परमेश्वर ने कैसे-कैसे महान कार्य किए हैं, और वे परमेश्वर का यह वचन जान सकें कि उन्हें सदा के लिए त्यागा नहीं गया है—और यहूदियों और यहूदियों से भिन्न जाति वालों को यह दिखलाने के लिए है कि यीशु ही मसीह है, जो अनन्त परमेश्वर है, जो हर एक राष्ट्र में प्रत्यक्ष है और अगर त्रुटियां हैं तो वे त्रुटियां हैं मानव समाज की; इसलिए परमेश्वर की बातों की निन्दा मत करो जिससे कि तुम मसीह के न्याय सिंहासन के सामने निर्दोष ठहरो।

जोसफ स्मिथ द्वारा अनुवाद किया गया

अंतिम दिनों के संतों का मसीही गिरजा द्वारा प्रकाशित

(दी चर्च ऑफ जीजस क्राइस्ट ऑफ लेटर डे सेइण्टस्)

नमकीन झील नगर, (साल्ट लेक सिटी)
उटाह, संयुक्त गण राज्य अमरीका

अन्तिम युग के संतों का मसीही गिरजा के प्रधान की मण्डली को
१९८२ में प्रतिलिप्याधिकार प्राप्त।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

थॉमसन प्रेस (इण्डिया) लिमिटेड, नयी दिल्ली, द्वारा फोटोसेट

© 1982 by Intellectual Reserve, Inc.

All rights reserved

Photosetting by Thomson Press (India) Limited, New Delhi.
First printing by Kai Tak Printing Press, Hong Kong.

The Book of Mormon, translated into Hindi
Printed in the United States of America 02 / 2012

ISBN 1-59297-561-5 (33572 294)

मॉरमन धर्मशास्त्र का संक्षिप्त विश्लेषण

मॉरमन की पुस्तक के मुखपृष्ठ पर तीन प्रकार के अभिलेख की पटियों की चर्चा है:

१. नफी की पटियां जो मूल सूत्र से स्पष्ट है कि ये दो प्रकार की थीं—(क) बड़ी पटियां (ख) छोटी पटियां। बड़ी पटियां सम्बन्धित लोगों के लौकिक और धार्मिक सत्व के इतिहास से सम्बन्धित थीं और छोटी पटियों में अधिकतर पवित्र लेख थे।

२. मॉरमन की पटियां जिनमें नफी की पटियों में दिए गए विषयों का मॉरमन द्वारा संक्षिप्त वर्णन किया गया था और साथ ही उसकी अपनी अनेकों व्याख्याओं के साथ ऐतिहासिक विषय जारी रखा गया था। इन में मॉरमन के पुत्र मरोनी द्वारा विषयों में कुछ अतिरिक्त वृद्धि भी की गई थी।

३. एथर की पटियां जिन में यारदों का इतिहास था जिसे मरोनी द्वारा संक्षिप्त किया गया था और इनमें इसने अपनी व्याख्याओं को सम्मिलित करके एथर की पुस्तक के नाम से आम इतिहास के साथ संयुक्त किया था।

   इनके साथ कुछ अन्य पटियों को भी सम्मिलित करना चाहिए जिनकी मॉरमन की पुस्तक में कई बार चर्चा की गई है।

४. इनको लबान की पीतल की पटियां कहा गया है। इन पटियों को लेही के लोगों के द्वारा यरूशलेम से लाया गया था। इनमें इब्रानी शास्त्र और वंशावली थी जिनके अनेक सत्व नफायटियों की लेखाओं में मिलते हैं।

मॉरमन की पुस्तक पन्द्रह भागों में बंटी हुई है और एक को छोड़ कर हर एक भाग को पुस्तक के रूप में माना गया है। इन भागों के नाम इनके मुख्य लेखकों के नाम दिए गए हैं। इनमें से प्रथम छ: पुस्तक जिनके नाम हैं प्रथम नफी, २ नफी, याकूब, इनोस, जराम, और ओमनी, नफी की अनुरूप छोटी पटियों से अनुवाद किया गया है। ओमनी और मूसायाह की पुस्तकों के बीच हम मॉरमन की वाणी को पाते हैं जो नफी की लेखा को जोड़ती है और जो छोटी पटियों में, मॉरमन द्वारा उस समय के आने वाले काल के विषय को बड़ी पटियों से संक्षेप में किया गया था, के साथ खुदी हुई थी। मॉरमन की वाणी अभिलेख के पूर्व भागों का संक्षिप्त विवरण स्थापित करती और आने वाले भागों के लिए भूमिका के रूप में है।

मॉरमन धर्मशास्त्र, मूसायाह से मॉरमन के सातवें अध्याय के अंत तक नफी की पटियों का मॉरमन द्वारा संक्षिप्त अनुवाद है। मॉरमन अध्याय ८ के आरम्भ से पुस्तक के अंत तक मॉरमन का पुत्र मरोनी ने पटियों पर खोद कर लिखा। मरोनी ने पहले अपने पिता का जीवन चरित्र पूरा किया और तब उसने एथर की पुस्तक के रूप में यारदों का लेख-प्रमाण को संक्षिप्त किया। इसके पश्चात् उसने उन भागों को जोड़ा जो हमें मरोनी की पुस्तक के नाम से ज्ञात है।

मॉरमन की पुस्तक ईशा से ६०० वर्ष पूर्व से ले कर ईशा के ४२२ वर्ष पश्चात् तक की अवधि काल की है। मरोनी जो अंतिम नफायटी इतिहासकार था, ईशा से लगभग ४२१ वर्ष पश्चात्, इस पवित्र अभिलेख को मुहरबन्द कर परमेश्वर के लिए अंतिम दिनों में, प्राचीन भविष्यवक्ताओं द्वारा कहे गए परमेश्वर की वाणी अनुसार, लाए जाने के लिए छुपा दिया। सन् १८२७ में पुनर्जीवित यही मरोनी जोसफ स्मिथ को खुदी हुई उन पटियों को दिया।

मॉरमन धर्मशास्त्र का उद्गम

प्राचीन धर्म-पुस्तक जो मॉरमन की पुस्तक के नाम से जानी जाती है, परमेश्वर की देन व शक्ति से जोसफ स्मिथ द्वारा लाया और उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया गया। उसने इस विषय पर व्यक्तिगत लेख-प्रमाण दिया है। उसने यह पुष्टि की कि पूर्व श्रेष्ठ दिव्य दर्शन प्राप्त कर लेने के पश्चात् वह २१ सितम्बर १८२३ की रात को उत्सुकता के साथ परमेश्वर से पुनः भेंट करने के लिए प्रार्थना कर रहा था। आगे उसने इस प्रकार लिखा:

"जब कि मैं इस प्रकार परमेश्वर से प्रार्थना कर ही रहा था तब अचानक मेरा कमरा ज्योति से प्रकाशमान होने लगा। यह ज्योति बढ़ती गई और मेरा कमरा दोपहर के प्रकाश से भी अधिक ज्योतिर्मय हो उठा और अविलम्ब मेरे पलंग के निकट हवा में खड़ा एक श्रेष्ठ पुरुष प्रकट हुआ। उसके पैर फर्श को छू नहीं रहे थे।

उसका लबादा अत्युत्तम उज्ज्वल था। उसके लबादे की सफेदी सभी सांसारिक वस्तुओं से परे थी, और मैं सोचता हूं कि संसार की कोई भी वस्तु ऐसी श्रेष्ठ सफेद और देदीप्यमान बनाई ही नहीं जा सकती। उसके हाथ कलाई से कुछ ऊपर तक वस्त्रहीन थे और उसके पैर एड़ी से कुछ ऊपर तक वस्त्रहीन नंगे थे। उसका सिर और गर्दन भी वस्त्रहीन थे। मैंने देखा कि उसका लबादा वक्षःस्थल पर खुला हुआ था, और इस लबादे के अलावे वह और कोई दूसरा वस्त्र नहीं पहने था।

उसका केवल लबादा ही अत्यधिक सफेद नहीं था लेकिन उसका पूरा शरीर ऐसा आश्चर्यजनक था कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, और उसका चेहरा बिजली की चमक की तरह था। मेरा कमरा प्रकाश से परिपूर्ण था परन्तु उतना नहीं जितना कि उस पुरुष के शरीर के चारों ओर ज्योति चमक रही थी। प्रथम तो मैं उसे देख कर डरा, लेकिन थोड़ी ही देर में मेरा भय जाता रहा।

मेरा नाम ले कर उसने मुझे पुकारा और कहा कि वह परमेश्वर का भेजा हुआ दूत है, और उसका नाम मरोनी है; और परमेश्वर के लिए मुझे एक विशेष कार्य करना है, जिसके करने से संसार के हर एक देश, जाति और भाषा के लोग मुझे भला बुरा कहेंगे।

उसने कहा कि एक पुस्तक जो स्वर्ण पृष्ठों पर लिखी हुई है, एक स्थान पर जमा है। उसमें अमरीकी महाद्वीप के प्राचीन निवासियों का पूरा वर्णन है और साथ ही उनके उद्गम स्थान का भी वर्णन है। उसने यह भी कहा कि उसमें अनन्त सुसमाचार पूर्ण रूप से दिया गया है, जो मुक्तिदाता ने स्वयं उन प्राचीन निवासियों को दिया था।

उसने यह भी कहा कि चांदी के बन्धनों के साथ दो पत्थर एक कवच के साथ बन्धे हुए हैं, जिन्हें उरिम और थम्मिम कहते हैं। ये भी उन्हीं पटियों के साथ जमा हैं। प्राचीन समय में इन पत्थरों को प्राप्त कर भविष्य-दर्शी इनका उपयोग करते थे और परमेश्वर ने इनको उस पुस्तक के अनुवाद करने के लिए तैयार किया था।

* * *

उसने मुझसे पुनः कहा कि जिन पटियों की चर्चा उसने मुझ से की थी, उनको प्राप्त करने का समय अभी नहीं आया है, और जब मैं उनको प्राप्त कर लूंगा तब मैं न तो उन पटियों को और न ही कवच व उरिम और थम्मिम पत्थरों को ही किसी को दिखाऊं। केवल उन व्यक्तियों को ही उन्हें दिखाऊं जिनको दिखाने के लिए मुझे आज्ञा दी जाएगी। अगर मैं किसी अन्य व्यक्ति को दिखाऊंगा तब मेरा विनाश कर दिया जाएगा। जबकि वह मुझसे पटियों के विषय में वार्तालाप कर रहा था तब मैंने उस स्थान को स्पष्ट देखा जहां पर वे स्वर्ण पृष्ठ जमा थे। यह दर्शन इतना साफ था कि जिस समय मैं उस स्थान पर गया तो अविलम्ब उसे पहिचान गया।

इस बातचीत के पश्चात् मैंने देखा कि मेरे कमरे का प्रकाश उस व्यक्ति के आस पास सिमिटने लगा और तब तक सिमिटता गया जब तक कि मेरा कमरा अन्धेरा न हो गया। एकमात्र उस व्यक्ति के आसपास प्रकाश रह गया और तब मैंने स्वर्ग तक एक प्रकाश—बिम्ब बनते देखा। उस प्रकाश बिम्ब में वह व्यक्ति ऊपर उठता हुआ अदृश्य हो गया और मेरा कमरा उस दिव्य प्रकाश के आने से पूर्व जैसा था वैसा ही रह गया।

बिस्तर पर पड़े पड़े मैं इस विशेष दृश्य की विशेषता पर विचारमग्न हो गया। उस दिव्य दूत के संदेश पर मैं आश्चर्य कर ही रहा था कि मुझे अचानक मालूम हुआ कि मेरे कमरे में पुन: प्रकाश होने लगा और क्षण भर में ही वही दिव्य दूत पुन: खटिए के पास प्रकट हुआ।

उसने दोबारा ठीक वही बातों को मुझे पहली बार की तरह बताया। ऐसा करने के पश्चात् उसने मुझे न्यायों के विषय में सूचना दी जिन में बड़े-बड़े अकालों, युद्धों और महामारियों द्वारा बहुत अधिक जन हानियां होंगी। उसने कहा कि ये दु:खदायी न्याय इन्हीं दिनों में होगा। इन बातों को कह देने के पश्चात् वह पहले जैसा स्वर्ग में ऊपर चला गया।

इस समय तक मेरे मन पर इस घटना का इतना अधिक प्रभाव पड़ चुका था कि मेरी आंखों से नींद जाती रही। जिन बातों को मैंने देखा और सुना उनसे अत्यधिक प्रभावित होकर मैं चारपाई पर पड़े-पड़े आश्चर्य में डूबा रहा। मैंने उस दिव्य दूत को जब फिर अपने खटिए के समीप खडे देखा तब मुझे और भी आश्चर्य हुआ। उसने पहले बताई बातों को फिर से दुहराया और कहा कि मुझे शैतान से सावधान रहना चाहिए क्योंकि वह मुझे ललचाएगा कि मैं उन स्वर्ण-पटियों को (मेरे पिता की कंगाली के कारण) धनी होने के लिए प्राप्त कर लूं। उसने ऐसा करने के विरुद्ध मुझे चेतावनी देते हुए कहा कि उन स्वर्ण-पटियों को, किसी दूसरे के प्रभाव में न आकर, एकमात्र परमेश्वर की महिमा के लिए और परमेश्वर के राज्य की स्थापना करने के विचार से ही प्राप्त करने की इच्छा होनी चाहिए, अन्यथा वे मुझे प्राप्त नहीं होंगी।

इस तीसरी भेंट के पश्चात् वह फिर से उसी प्रकार ऊपर अदृश्य हो गया, और मैं फिर इस विचित्र अनुभव के विषय में सोच विचार करने लगा। जब दूत तीसरी बार ऊपर उठ कर अदृश्य हो गया तब मुर्गे ने बांग दी। मैंने देखा कि सुबह होने वाली थी। इन भेंट-वार्ताओं में सारी रात बीत गई।

कुछ देर पश्चात् मैं अपने खटिए पर से उठा और अपने दैनिक कार्यों में लगा परन्तु थका होने के कारण ठीक से मैं अपने दैनिक कार्यों को कर न सका। मेरे पिता ने, जो मेरे साथ ही साथ परिश्रम कर रहे थे, देखा कि मेरी दशा ठीक नहीं है, इसलिए उन्होंने मुझे घर जाने को कहा। मैं घर की ओर चल दिया, लेकिन जब मैं उस खेत का घेरा पार करने लगा जिसके अन्दर हम थे, तब मेरी सारी शक्ति जाती रही और मैं निसहाय होकर भूमि पर गिर पड़ा और कुछ समय तक बेहोश पड़ा रहा।

होश आने पर पहिली बात जो मुझे स्मरण होती है वह यह है कि मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझे मेरा नाम लेकर बुला रही थी। मैंने दृष्टि ऊपर उठा करके देखा कि स्वर्ग-दूत पहले की तरह प्रकाश से घिरा हुआ मेरे सिर के ऊपर खड़ा है। उसने जो सन्देश पिछली रात को दिया था वह सब फिर से बताया और तब मुझे आज्ञा दी कि मैं अपने पिता के पास जाकर उनसे अपने दर्शन और आज्ञाओं के विषय में बताऊं जो मुझे दी गई थीं।

उसकी आज्ञा का पालन करते हुए मैं उस खेत में गया जहां मेरे पिता काम कर रहे थे और मैंने उनको सारी बातें बताईं। पूरी बातें सुन लेने के पश्चात् उन्होंने कहा कि यह सब अवश्य ही परमेश्वर की ओर से है और जाओ तुम स्वर्गदूत की आज्ञा का पालन करो। खेत से मैं उस स्थान पर गया जहां उस स्वर्गदूत ने कहा था कि वे स्वर्ण पृष्ठ सुरक्षित रखे थे। मैंने उस स्थान को अपने दर्शन में स्पष्ट देखा था इसलिए वहां पहुंचते ही मैंने उस स्थान को पहिचान लिया।

• ओण्टेरियो काउन्टी, न्यूयार्क के मनचेस्टर गांव के निकट एक बहुत बड़ी पहाड़ी है जो आसपास के अन्य पहाड़ियों से बड़ी है। इस पहाड़ी के पश्चिम ओर चोटी से कुछ नीचे एक बड़े पत्थर के नीचे, पत्थर के बने एक सन्दूक में वे स्वर्ण की पटियां सुरक्षित रखी थीं। वह पत्थर बीच में मोटा और गोलाकार ऊपर उठा हुआ था और किनारों की ओर पतला हो गया था। इसलिए उसका बीच का भाग दिखाई देता था परन्तु चारों ओर किनारा मिट्टी से ढका हुआ था।

मिट्टी को हटा कर मैं एक ढेकली को ले आया जिसको उस पत्थर के नीचे लगा कर थोड़ा सा परिश्रम करके पत्थर को उठा दिया। मैंने उस तहखाने में झांक कर उन स्वर्ण पटियों उरिम और थम्मिम के साथ कवच को सचमुच में वैसा ही रखा हुआ पाया, जैसा कि उस दूत ने मुझे बताया था। जिस संदूक में ये चीजें रखी थीं वह किसी प्रकार के सीमेंट से जोड़े गए पत्थरों से बना हुआ था। सन्दूक में दो पत्थर बेंड़े बिठाए हुए थे, और इन्हीं पत्थरों पर स्वर्ण-पृष्ठ और दूसरी चीज़ें रखी हुई थीं।

मैंने उन्हें बाहर निकालने का प्रयत्न किया, लेकिन स्वर्गदूत ने ऐसा करने से मुझे मना किया। उसने कहा कि उन्हें बाहर निकालने का समय अभी नहीं आया है और वह समय तब से चार वर्ष पूरा होने तक नहीं आएगा। उसने कहा कि उस समय से एक वर्ष पूरा होने पर मुझे फिर उसी स्थान पर आ जाना चाहिए और वह मुझसे पुनः उसी स्थान पर मिलेगा। उसने हर साल ऐसा ही करने की मुझे आज्ञा दी जब तक कि उन स्वर्ण पटियों को प्राप्त करने का समय न आ जाए।

इस आज्ञा का पालन करते हुए मैं हर साल के अन्त होने पर उस स्थान पर पहुंच जाया करता और हर बार मैंने उस दूत को वहां पाया और हर बार की भेंट पर मैंने उससे शिक्षा और ज्ञान प्राप्त किया। परमेश्वर जो कुछ करने जा रहा था और अन्तिम दिनों में कैसे और किस प्रकार उसके राज्य की स्थापना और व्यवस्था होगी इसका मैं सदैव आदर करता रहा।

* * *

अंत में स्वर्ण-पृष्ठों, उरिम और थम्मिम के साथ कवच प्राप्त करने का समय आ गया। सन् १८२७ में २२ सितम्बर को एक और वर्ष के अन्त होने पर मैं फिर उसी स्थान पर गया जहां ये वस्तुएं सुरक्षित रखी हुई थीं। उसी दिव्य दूत ने मुझे उन चीज़ों को देते हुए बताया कि मैं उनकी सुरक्षा के लिए जिम्मेवार रहूंगा और यदि मैंने उनके प्रति लापरवाही की और मेरी लापरवाही के कारण वे मेरे हाथ से निकल गईं तब मैं परमेश्वर के कार्य को करने से हटा दिया जाऊंगा। परन्तु यदि मैं उन्हें सम्भाल कर रखने के लिए प्रयत्न करता रहा तब वे उस समय तक मेरे पास सुरक्षित रहेंगी जब तक कि वही स्वर्गदूत उन्हें लेने को वापस न आएगा।

शीघ्र ही मुझे इस बात का कारण मालूम हो गया कि उन वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए मुझे इतने दृढ़ भाव से सावधान क्यों किया गया था। मुझे यह बात भी समझ में आ गई कि उस दूत ने यह क्यों कहा था कि जब मैं उस काम को पूरा कर लूंगा जो मुझे करना था, तब वह उन्हें वापस लेने आएगा। जैसे ही लोगों को मालूम हुआ कि ये चीज़ें मेरे अधिकार में थीं तब मुझ से उन्हें लेने की भरपूर चेष्टायें की जाने लगीं। उन्हें पाने के लिए लोग हर सम्भव उपाय करने लगे। वे मुझे और अधिक सताने लगे। हर समय सैकड़ों लोग मुझसे उन चीज़ों को हथिया लेने की ताक में लगे रहते। लेकिन परमेश्वर के महान विवेक के बल पर वे मेरे पास उस समय तक सुरक्षित रहीं जब तक मैंने वह कार्य पूरा न कर दिया जो मेरे सुपुर्द किया गया था। बाद में, जैसा प्रबन्ध किया गया था, वह दूत उन्हें लेने आया और मैंने उसे उन सभी चीज़ों को वापस दे दिया जो आज तक उसी के पास हैं और आज है मई माह का दूसरा दिन, सन् अट्ठारह सौ अड़तीस।

पूरे विवरण के लिए देखो अनमोल मोती, पृष्ठ ५०-५४ और अन्तिम युग के सन्तों का मसीही गिरजा का इतिहास, प्रथम भाग, अध्याय १ से ६ तक।

प्राचीन अभिलेख, इस प्रकार धरती से लाया गया जिस प्रकार एक जाति की आवाज मानो मिट्टी से आ रही हो और उसका अनुवाद परमेश्वर की देन और शक्ति के द्वारा आधुनिक भाषा में किया गया, और जैसे दिव्य प्रतिज्ञा द्वारा इसका अनुमोदन किया गया हो, और विश्व के लिए सन् १८३० में मॉरमन धर्मशास्त्र के रूप में प्रथम बार प्रकाशित हुआ।

तीन गवाहों की साक्षी

पृथ्वी के हर एक देश, जाति और भाषा के लोगों को, जिन्हें यह साक्षी प्राप्त होगी, मालूम होवे कि परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की महान अनुग्रह से हमने उन स्वर्ण पटियों को देखा है जिन में इस साक्षी का लेखा है, जो कि नफी के लोग, लमान के लोग और उनके भाई-बन्धु तथा यारद के लोगों का अभिलेख है, जो कि उस मीनार से आए थे जिसकी चर्चा किया जा चुका है। हमें यह भी मालूम है कि इस अभिलेख का अनुवाद परमेश्वर की देन और सामर्थ्य द्वारा किया गया है, क्योंकि परमेश्वर की आवाज़ ने हमें इस बात की सूचना दी, इसलिए हमें पूर्ण ज्ञान है कि यह सत्य है। हम यह गवाही देते हैं कि उन स्वर्ण पृष्ठों पर की गई खोदित लिपि को हमने देखा है जो मनुष्य द्वारा नहीं, परन्तु परमेश्वर के सामर्थ्य से दिखलाई गई थी। हम गम्भीरता के साथ यह भी सूचित करते हैं कि परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से नीचे आया और अपने साथ स्वर्ण-पृष्ठों को लाया, जो उसने हमारे सामने रखा और हमने उन स्वर्ण पृष्ठों तथा उन में खोदी हुई लिपि को अपनी आखों से देखा है। और हम भली भांति जानते हैं कि परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु यीशु मसीह की अनुग्रह से हमने यह सब देखा और इन बातों की सच्चाई को प्रमाणित करते हैं। हमारी समझ में यह कृति बहुत विलक्षण है। फिर भी परमेश्वर की वाणी ने हमें आज्ञा दी कि हम इस बात का अभिलेख लिखें, इसलिए, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हुए, हम इन बातों की साक्षी देते हैं। हम यह भी जानते हैं कि यदि हम यीशु मसीह के प्रति विश्वसनीय रहे तो हम मनुष्य के रक्तरंजित पापमय पोशाक को उतार कर मसीह के न्याय सिंहासन के सामने बेदाग ठहरेंगे, और सदैव के लिए हम उसके साथ स्वर्ग में रहेंगे। और इसकी प्रतिष्ठा होगी पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को जो कि एक ही परमेश्वर है। आमीन।

ओलीवर कावड़ी
डेविड व्हिटमर
मार्टिन हेरिस।

आठ गवाहों की साक्षी

सभी राष्ट्र, जाति भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले लोगों को, जिनके हाथों में यह पुस्तक जाएगी, मालूम हो कि जोसफ स्मिथ ने, जो इस अभिलेख का अनुवादक है, हमें वे स्वर्ण पटियो को दिखाया है जिनकी चर्चा पहिले की गई है और जो देखने में स्वर्ण के बने हुए मालूम देते हैं। इनमें से जिन पृष्ठों का अनुवाद जोसफ स्मिथ ने किया है, उन पृष्ठों को हमने अपने हाथों से स्पर्श किया, और उन पर खोद कर लिखी गई लिपी को भी हमने देखा है, जो कि देखने में प्राचीन और विचित्र कारीगरी से लिखी गई है। इस बात को हम गम्भीरता के साथ लिख रहे है कि उसी जोसफ स्मिथ ने हमको उन स्वर्ण पटियों के विषय में बतलाया, हमने उन्हें देखा और हाथों में लिया। हमें यह भी मालूम है कि जिन स्वर्ण पटियो की चर्चा हमने की है वे निश्चय ही उसी स्मिथ के पास हैं। हम सारे विश्व को अपना नाम बताते हैं और सारे संसार को अपनी देखी हुई बातों की साक्षी देते हैं। परमेश्वर हमारा साक्षी है कि हम यह बात असत्य नहीं कहते।

क्रिश्चियन व्हिटमर,	हायरम पेज
जेकब व्हिटमर	जोसफ स्मिथ (जोसफ का पिता)
पीटर व्हिटमर	हायरम स्मिथ
जान व्हिटमर	सामुएल एच स्मिथ

मॉरमन धर्मशास्त्र

पुस्तक के नाम और उनके क्रम

	पृष्ठ	टिप्पणी संक्षेप
नफी की प्रथम पुस्तक	१	१ नफी
नफी की दूसरी पुस्तक	४४	२ नफी
याकूब की पुस्तक	२००	या०
इनोस की पुस्तक	२१६	इनो०
जराम की पुस्तक	२१८	ज०
ओमनी की पुस्तक	२२०	ओ०
मॉरमन की वाणी	२२२	मा० वा०
मूसायाह की पुस्तक	२२४	मू०
अलमा की पुस्तक	२८२	अल०
इलामन की पुस्तक	३३०	इला०
तृत्य नफी	३६५	३ नफी
चतुर्थ नफी	४२७	४ नफी
मॉरमन की पुस्तक	४२२	मा०
एथर की पुस्तक	४३८	ए०
मरोनी की पुस्तक	४६७	मरो०

अन्य पुस्तकों की टीका

सिद्धान्त और शर्तनामा	सि० श०
अनमोल मोती	अन०
धर्मशास्त्र	की पुस्तकें

हमारे उद्धारक, यीशु मसीह
चित्रकार—हेरी एण्डरसन

भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ
चित्रकार—टेड हेनिंगर

लेही दिग्दर्शक यंत्र पाता है
चित्रकार—एरनल्ड फ्रीबर्ग

प्रतिज्ञा के देश में लेही और उसके लोगों का पहुंचना
चित्रकार—एरनल्ड फ्रीबर्ग

मारमन के जल में अलमा द्वारा बपतिस्मा दिया जाना
चित्रकार—अरनल्ड फ्रीबर्ग

लमनायटी सामुएल भविष्यवाणी करता हुआ
चित्रकार—अरनल्ड फ्रीबर्ग

यीशु मसीह का नफायटी लोगों में प्रकट होना
चित्रकार—अरनल्ड फ्रीबर्ग

एक समय की महान जाति से मारमन का विदा होना
चित्रकार—अरनल्ड फ्रीबर्ग

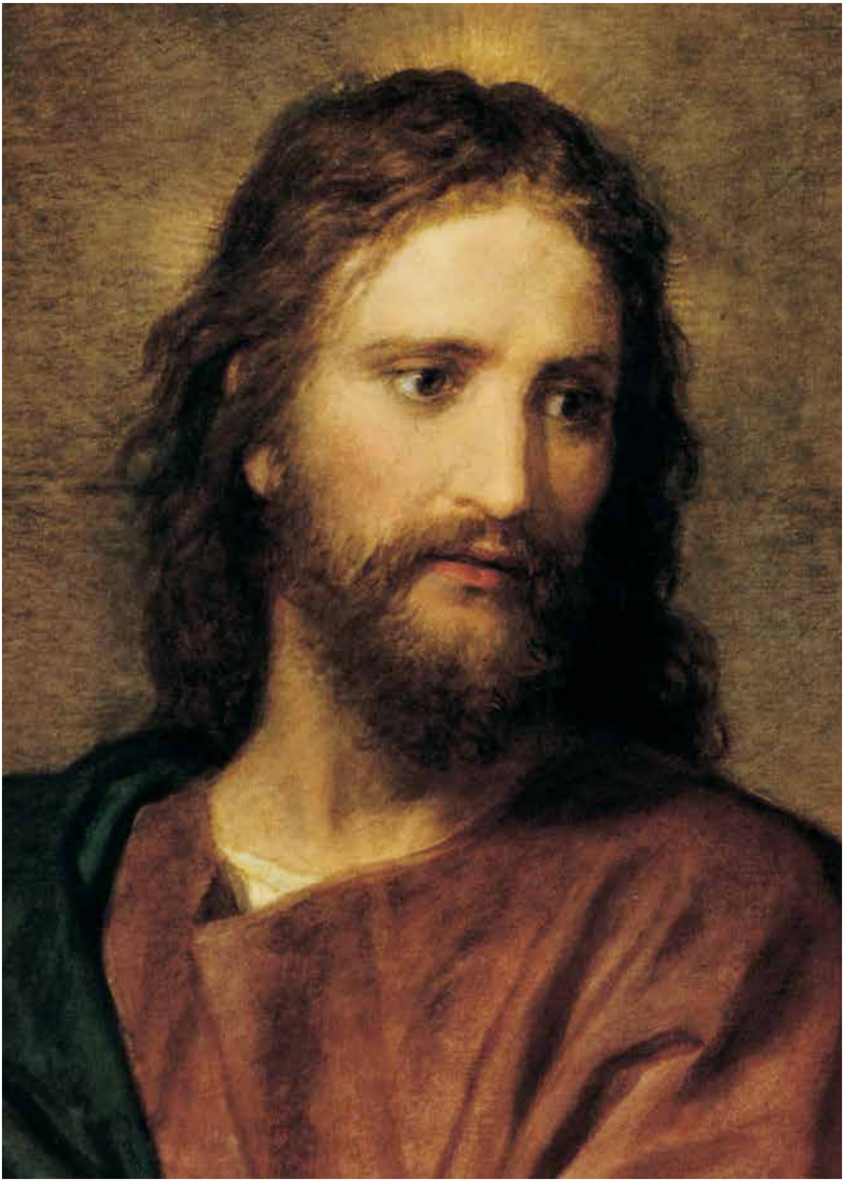

A FRIBERG

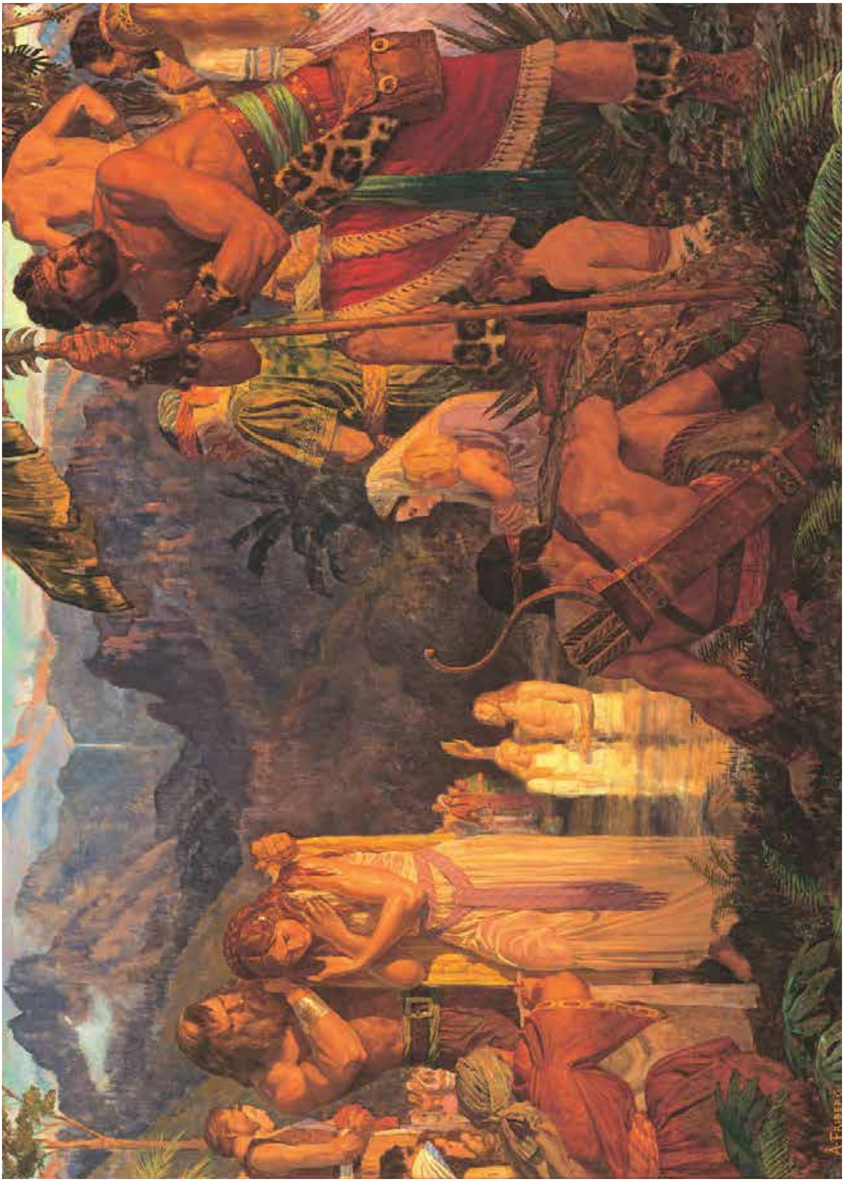
A. FRIBERG

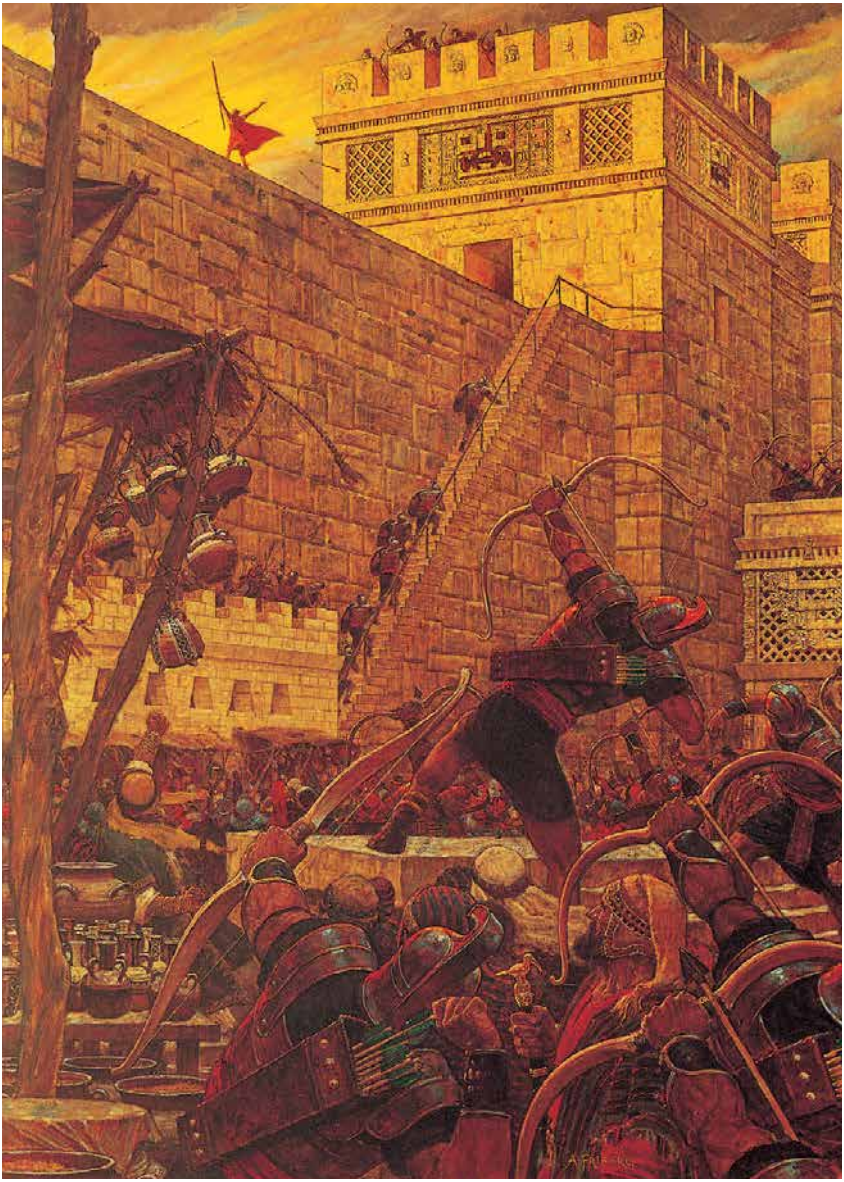

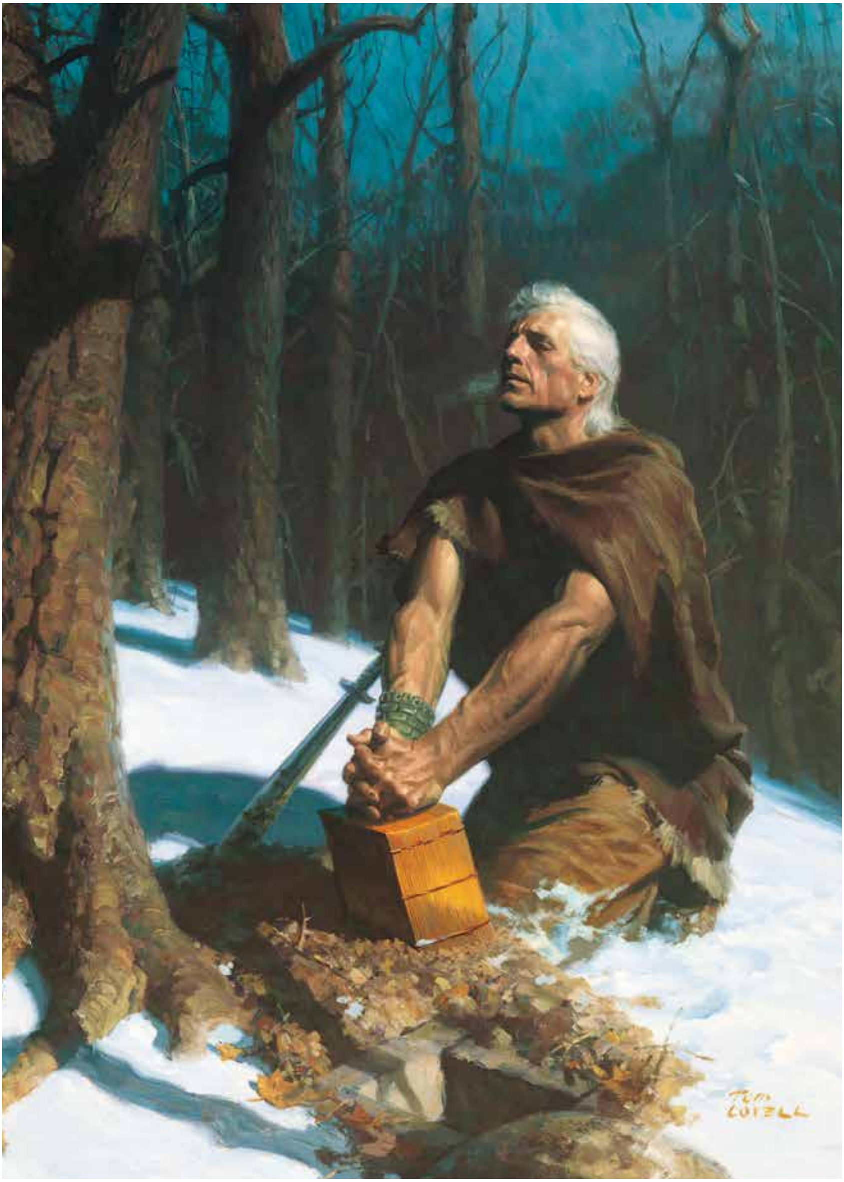
TOM LOVELL

मॉरमन धर्मशास्त्र

नफी की प्रथम पुस्तक

नफी का शासन और मन्त्रिमण्डल

लेही और उसकी पत्नी सारा, उसके चार पुत्र (जेठे से) लमान, लेमुएल, साम और नफी का वर्णन। परमेश्वर द्वारा लेही को यरूशलेम की भूमि से चले जाने की चेतावनी इसलिए दी गई क्योंकि वह यहां के लोगों के अन्याय की भविष्यवाणी कर रहा था और लोग उसकी जान लेना चाहते थे। नफी अपने भाइयों को साथ ले कर यहूदियों का अभिलेख लेने के लिए यरूशलेम वापस लौटता है। उनके कष्टों का वर्णन। वे इस्माइल की पुत्रियों को पत्नियों के रूप में ग्रहण करते हैं। वे अपने परिवारों को साथ ले कर जंगल की यात्रा को जाते हैं। उनके कष्ट और विपत्ति। उनकी यात्रा का मार्ग। उनका समुद्र तट पर पहुंचना। नफी के भाइयों का नफी के विरुद्ध विद्रोह करना। नफी उनको पराजित करता है और एक नाव बनाता है। उस स्थान का नाम सम्पन्न भूमि रखते हैं। सागर को पार कर के प्रतिज्ञा के देश में पहुंचते हैं। यह सब नफी के लेखानुसार है, या दूसरे शब्दों में, नफी ने, यह अभिलेख लिखा है।

अध्याय १

लेही का दिव्य-दर्शन द्वारा अग्नि-स्तम्भ और भविष्यवाणी की पुस्तक को देखना—वह यरूशलेम के निकट भविष्य में होने वाले भयंकर विनाश और मसीह के आगमन की भविष्यवाणी करता है..... यहूदी उसके प्राण लेने की चेष्टा करते हैं।

१. मैं, नफी एक अच्छे घराने में उत्पन्न हुआ, इसलिए मुझे अपने पिता की सभी विद्याओं में शिक्षित किया गया, और मैंने अपने समय के अनेक विपत्तियों को देखा फिर भी मेरे सारे जीवन में परमेश्वर की कृपा मेरे ऊपर बनी रही, हां, परमेश्वर की कृपा और रहस्य की बातों का मुझे भारी ज्ञान होने के कारण मैं अपने समय की होने वाली घटनाओं का विवरण लिख रहा हूं।

२. यह विवरण मैं अपने पिता की भाषा में लिख रहा हूं जिसमें यहूदियों का ज्ञान और मिश्र-वासियों (१) की भाषा सम्मिलित है।

३. और मैं यह जानता हूं कि जो अभिलेख मैं लिख रहा हूं वह सत्य है: और यह मैं अपने हाथ से अपने ज्ञान के अनुसार लिख रहा हूं।

४. ऐसा हुआ कि यहूदा के राजा सिदकियाह के शासन के (२) प्रथम वर्ष में (मेरे पिता सदैव से यरूशलेम में रहते थे) (३) कई भविष्यवक्ता उसी वर्ष आ कर भविष्यवाणी करने लगे कि लोगों को अपने पापों पर पश्चात्ताप करना होगा नहीं तो महान यरूशलेम नगर को नष्ट कर दिया जाएगा।

५. तब ऐसा हुआ कि मेरे पिता लेही अपने लोगों के लिए अपने पूरे हृदय से प्रार्थना करने लगे।

६. और ऐसा हुआ कि जब वे परमेश्वर से प्रार्थना कर ही रहे थे तब उनके सामने एक चट्टान पर अग्नि का एक स्तम्भ आकर ठहरा; और उन्होंने बहुत कुछ देखा और सुना; और जो कुछ उन्होंने देखा और सुना उससे वे थर थर कांपने लगे।

७. तब ऐसा हुआ कि जब वे यरूशलेम में अपने घर लौटे तब पवित्रात्मा और जो कुछ उन्होंने देखा था उससे प्रभावित होकर वे अपने पलंग पर लेट गए।

८. इस तरह पवित्रात्मा से प्रभावित होकर वह दिव्य-दर्शन में खो गए, और उन्होंने स्वर्गों को खुलते देखा, और उन्हें लगा कि वह परमात्मा

(१) मू० १:४ मार० ६:३२. (२) राजाओं का वृतान्त भाग २, २४:१७, १८. (३) इति० भाग २, ३६:१५, १६.

ईस्वी पूर्व लगभग ६०० वर्ष

को अपने सिंहासन पर बैठा देख रहे हैं, जो असंख्य दूतों की भीड़ से घिरे हैं और स्वर्गदूत अपने परमेश्वर का भजन और गुणगान कर रहे हैं।

९. और ऐसा हुआ कि उसने स्वर्ग के बीच में से एक को नीचे उतरते देखा जिसकी कान्ति दोपहर के सूर्य से भी अधिक तेज थी।

१०. और उसने बारह जनों को उसके पीछे आते देखा जिनकी उज्ज्वलता गगनमण्डल के तारों से भी अधिक तेज थी।

११. वे नीचे उतर कर पृथ्वी पर आए; और प्रथम आने वाला मेरे पिता के सामने आकर खड़ा हुआ और उनको एक पुस्तक दी और उसे पढ़ने को कहा।

१२. और ऐसा हुआ कि उस पुस्तक को पढ़ते ही वे परमेश्वर की आत्मा से प्रभावित हुए।

१३. वे पढ़ते हुए बोले: यरूशलेम को धिक्कार! धिक्कार! क्योंकि मैंने तेरे घृणित कार्यों को देखा है; हां, यरूशलेम के विषय में मेरे पिता ने अनेक बातों को पढ़ा—कि वह (४) नष्ट कर दिया जाएगा और वहां के निवासियों को भी नष्ट कर दिया जाएगा; बहुत से लोग तलवार के घाट उतारे जाएंगे, और बहुतों को गुलाम बना कर बेबलोन ले जाया जाएगा।

१४. और तब ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने अनेकों महान और आश्चर्यजनक बातों को पढ़ और देख लिया तब उन्होंने प्रभु से कई बातें कहीं जैसे: आप के कार्य महान और आश्चर्यजनक हैं, हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! आपका आसन ऊंचे स्वर्गों में है, और आपकी शक्ति, उदारता और दया सारे लोगों के ऊपर है; और क्योंकि आप दयालु हैं, इसलिए जो आप के शरण में आएंगे उन्हें आप नष्ट नहीं करेंगे।

१५. अपने परमेश्वर के यशगान में मेरे पिता ने इस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया क्योंकि उनकी आत्मा आनन्द-विभोर थी, और उन्होंने जो कुछ देखा था, या कि परमेश्वर ने उन्हें जो कुछ दिखाया था, उससे उनका पूरा हृदय आनन्द से भर उठा था।

१६. और अब मैं, नफी अपने (५) पिता द्वारा लिखा गया पूरा विवरण नहीं दे रहा हूं, क्योंकि मेरे पिता ने दिव्य-दर्शन और स्वप्न में जो कुछ देखा था, उसके विषय में उन्होंने बहुत कुछ लिखा है और उन्होंने जो कुछ अपने बच्चों से भविष्यवाणी की और कहा उस पर भी उन्होंने बहुत कुछ लिखा है जिसका मैं वर्णन नहीं लिख रहा हूं।

१७. लेकिन मैं अपने समय में घटने वाली घटनाओं का विवरण लिखूंगा। सुनो, मैंने जिन पटियों को अपने हाथों से बनाया है, उन पर मैं अपने पिता द्वारा लिखे गए विवरण को (६) संक्षेप में करके लिख रहा हूं: और अपने पिता के अभिलेख को संक्षिप्त में लिख देने के पश्चात् मैं अपने जीवन को लिखूंगा।

१८. इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि मेरे पिता को यरूशलेम को नष्ट किए जाने से सम्बन्धित अनेकों अद्‌भुत बातें दिखा दीं तो उसके पश्चात् वे लोगों में जाकर भविष्यवाणी करने लगे और लोगों को अपनी देखी और सुनी हुई बातों के विषय में बतलाने लगे।

१९. और ऐसा हुआ कि (७) यहूदी उनका उपहास करने लगे क्योंकि उन्होंने यहूदियों को दुष्टता और घिनौनेपन के बारे में बतलाया, तथा जो कुछ देखा और सुना था, और जो पुस्तक में मसीहा के आने के विषय में संसार के उद्धार के बारे में जो पढ़ा था वह भी उनको बताया।

२०. और जब यहूदियों ने इन बातों को सुना तब वे उसके ऊपर क्रोधित हो उठे, और जिस प्रकार उन्होंने पुराने भविष्यवक्ताओं के साथ व्यवहार किया था, उनको निर्वासित करके उन पर पत्थर बरसाते थे और उनकी हत्या की थी, उसी प्रकार उनकी भी जान लेने पर उतारू हो गए। लेकिन सुनो, मैं, नफी तुम्हें यह दिखाऊंगा

(४) २ इति० ३६:१७-२० यिर्म ३९:१-९. (५) १ नफी ६:१. (६) १ नफी ६:१. ९:२-५. १०:१. १९:१-६. २ नफी ५:२९-३३. या० १:१-४. ३:१३, १४. ४:१, २. ७:२६, २७. इनो० १३:१५-१८ ज० १४, १५. मा० वा० १:११. (७) २ इति० ३६:१६. ज० २६:८-११.

*ईसा से लगभग ६०० वर्ष पूर्व

कि परमेश्वर की दया उन सभी के ऊपर होती है जिनको वह चुनता है, क्योंकि उनका विश्वास उन्हें सुरक्षा की शक्ति प्रदान कर शक्तिशाली कर देता है।

अध्याय २

लेही का अपने परिवार के साथ लाल सागर के तट पर जंगल में जाना—उसके बड़े बेटों लमान और लेमुएल का अपने पिता के विरुद्ध असन्तोष प्रकट करना—नफी और साम का उसकी बातों पर विश्वास करना—ईश्वर का नफी को वचन देना।

१. सुनो, ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने मेरे पिता से स्वप्न में कहा : लेही तुमने जिन कामों को किया है, उनके लिए तुम धन्य हो; और तुमने मेरे विश्वासी होकर मेरे कहे अनुसार उनको वह बातें बताईं जिसका मैंने तुम्हें आदेश दिया था, इसलिए वे तुम्हारी जान लेने पर उतारू हैं।

२. और ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने मेरे पिता को स्वप्न में आज्ञा दी कि वह अपने परिवार को लेकर जंगल में चले जायें।

३. तब ऐसा हुआ कि वे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी थे, इसलिए उन्होंने उनके आदेश के अनुसार काम किया।

४. वे जंगल में चले गए। उन्होंने अपने घर को, अपनी पैतृक सम्पत्ति वाले देश को, अपने सोना, चांदी को, और अपनी मूल्यवान वस्तुओं को छोड़ दिया। उन्होंने अपने साथ केवल अपने परिवार को, खाने पीने की चीजों और तम्बुओं को छोड़ कर कुछ नहीं लिया।

५. वह लाल सागर के तट के निकट आया, और उसने लाल सागर के तट के निकट जंगल में अपने परिवार वालों के साथ यात्रा की, जिसमें मेरी मां, और मेरे बड़े भाई, लेमुएल और साम थे।

६. और ऐसा हुआ कि उस जंगल में तीन दिनों कि यात्रा कर लेने पर, एक नदी के पास घाटी में उसने अपना तम्बू लगाया।

७. और ऐसा हुआ कि उसने पत्थर की एक वेदी बना कर, परमेश्वर को आहुति चढ़ा कर, हमारे प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

८. और ऐसा हुआ कि उस नदी को, जो लाल सागर में जाकर गिरती थी, लमान नाम दिया : और वह घाटी नदी के मुहाने पर थी।

९. और जब मेरे पिता ने यह देखा कि नदी लाल सागर की तरंगों में जाकर गिरती है तब उन्होंने लमान से कहा : तुम इस नदी की तरह बनो और सदैव नेकी की तरंगों में बहते रहो।

१०. उन्होंने लेमुएल से भी कहा : तुम इस घाटी की तरह दृढ़ स्थिर और प्रभु के आदेशों के पालन करने में अडिग बने रहो।

११. उन्होंने यह लमान और लेमुएल से उनके हठीपन के कारण कहा : क्योंकि सुनो वे अपने पिता के विरुद्ध कई बातों में असंतोष प्रकट कर रहे थे क्योंकि वे दिव्यदर्शी मनुष्य थे और वे उन लोगों को यरूशलेम की भूमि के बाहर अपनी पैतृक सम्पत्ति की भूमि तथा सोना, चांदी एवं अन्य मूल्यवान वस्तुओं को छुड़ा कर जंगल में नष्ट होने के लिए ले गए थे। वे यह कहते थे कि उन्होंने अपने हृदय की मूर्खतापूर्ण कल्पनाओं के कारण यह सब किया है।

१२. इस प्रकार लमान और लेमुएल ने जो सब से बड़े थे, अपने पिता के विरुद्ध असन्तोष प्रकट किया। वे इसलिए शिकायत कर रहे थे क्योंकि जिस परमेश्वर ने उनको बनाया था उसकी लीला वे नहीं जानते थे।

१३. वे यह भी विश्वास नहीं करते थे कि भविष्यवक्ता के कहे अनुसार, वह महान नगर, यरूशलेम नष्ट कर दिया जाएगा। वे यरूशलेम में रहने वाले यहूदियों की तरह थे जो मेरे पिता की जान लेना चाहते थे।

१४. और तब ऐसा हुआ कि मेरे पिता ने लेमुएल की घाटी में पवित्रात्मा से प्रेरित होकर शक्ति से उनसे तब तक बातें कीं जब तक कि वे उनके समक्ष कांपने न लगे। उन्होंने इतना लज्जित किया और अपने विरुद्ध असन्तोष प्रकट करने को मना किया और उन्होंने उनकी आज्ञा का पालन किया।

१५. मेरे पिता इस समय एक तम्बू में निवास कर रहे थे।

१६. और ऐसा हुआ कि उस समय मैं, नफी आयु में बहुत कम था, फिर भी शरीर से अपनी अवस्था के लिए हृष्ट-पुष्ट और बलवान था,

और परमेश्वर के भेदों को जानने के लिए मेरी बड़ी अभिलाषा थी; और मैंने प्रभु को पुकारा, और सुनो, प्रभु ने मुझे दर्शन दिया और उसने मेरे हृदय को इतना द्रवित कर दिया कि जिससे मैंने अपने पिता द्वारा कहे गए हर एक शब्दों पर विश्वास किया; इसलिए अपने भाइयों की तरह मैंने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह नहीं किया।

१७. और मैंने साम से उन बातों के विषय में बातचीत की जिनको प्रभु ने अपनी पवित्रात्मा के द्वारा मुझ पर प्रकट किया था। और ऐसा हुआ कि उसने मेरी बातों पर विश्वास किया।

१८. लेकिन देखो, लमान और लेमुएल ने मेरी बातों को नहीं सुना; और उनके हठीपन से दुःखी होकर मैंने उनके लिए प्रभु को पुकारा।

१९. और ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने मुझसे कहा : नफी तुम अपने विश्वास के लिए धन्य हो, क्योंकि तुमने मुझे लगन और दीन हृदय से खोजा।

२०. और जहां तक तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तुम उतने समृद्ध होगे, और तुमको (१) प्रतिज्ञा के देश में ले जाया जाएगा; हां, एक देश में जिसको मैंने तुम्हारे ही लिए तैयार किया है, हां, यह देश सर्वश्रेष्ठ है।

२१. और जहां तक तुम्हारे (२) भाइयों की बात है वे तुम्हारे विरुद्ध विद्रोह करेंगे और उनको परमेश्वर की उपस्थिति से वंचित कर दिया जाएगा।

२२. और अगर तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करते रहोगे तब (३) तुमको अपने भाइयों के ऊपर राजा और शिक्षक बनाया जाएगा।

२३. इसलिए सुनो, जिस दिन वे मेरे विरुद्ध विद्रोह करेंगे, उसी दिन मैं उनको (४) कठोर श्राप दूंगा, और तुम्हारे वंश के ऊपर उनका कोई वश न चलेगा। वे मेरे प्रति भी विद्रोह करेंगे।

२४. और अगर ऐसा ज्ञात होता है कि वे मेरे विरुद्ध विद्रोह करते हैं तब वे तुम्हारे वंश के विरुद्ध उत्पात करेंगे जिसके फलस्वरूप वे मुझे याद करेंगे।

अध्याय ३

लेही के पुत्रों को पीतल की पटियों को लाने के लिए वापस यरूशलेम भेजा जाना—लबान का पटियों को देने से इन्कार करना—लमान और लेमुएल का स्वर्गदूत द्वारा झिड़की खाना।

१. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी परमेश्वर से बातचीत कर के अपने पिता के तम्बू में गया।

२. तब मेरे पिता ने मुझसे कहा: देखो, मैंने एक स्वप्न देखा है जिस में प्रभु ने मुझसे कहा कि तुम अपने भाइयों के साथ वापस यरूशलेम लौट जाओ।

३. क्योंकि देखो यहूदियों का अभिलेखन लबान के पास है, और उसके पास तुम्हारे पूर्वजों की वंशावली भी है, और वे (१) पीतल की पटियों में खुदे हुए हैं।

४. इसलिए प्रभु ने आज्ञा दी है कि तुम अपने भाइयों के साथ लबान के घर जाओ और उन अभिलेखों को ढूंढ़ कर, यहां इस जंगल में लाओ।

५. और अब देखो, तुम्हारे भाई यह कह कर असन्तोष प्रकट करते हैं कि मैं उनसे कठिन कार्य करवाना चाहता हूं; लेकिन देखो मैं उनसे यह कठिन कार्य नहीं करवा रहा हूं, यह तो प्रभु की आज्ञा है।

६. इसलिए मेरे बेटे, जाओ, तुम पर परमेश्वर की कृपा रहेगी, क्योंकि तुम असन्तोष नहीं प्रकट कर रहे हो।

७. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने पिता से कहा : मैं जाऊंगा और वह काम करूंगा जिसकी आज्ञा प्रभु ने दी है, क्योंकि यह मैं जानता हूं कि प्रभु मनुष्य के बच्चों को केवल उसी काम की आज्ञा देता है जिस काम को वह उनसे करवाना चाहता है और जिसके लिए वह उन्हें तैयार करता है।

८. और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने इन

(१) १ नफी १८:२२, २३ ए० १:४२. २:७-१२. (२) २ नफी ५:२० अल० ९:१३, १४. ३८:१. (३) १ नफी ३:२९. २ नफी ५:१९. (४) १ नफी १२:२२, २३. २ नफी ५:२१-२५. अल० ३:६-१९. १७:१५. ३ नफी २:१५, १६ मार० ५:१५.
(१) १ नफी ३:१२, १९, २०, २४. ४:२४, ३८. ५:१०-२२, १३:२३. १९:२२. २ नफी ४:२. ५:१२. मू० १:३, ४. २८:२०. अल० ३७:३-१२. ६३:१, ११-१४. ३ नफी १:२.

ईश्वी पूर्व लगभग ६०० वर्ष

शब्दों को सुना तब वह अत्यन्त ही प्रसन्न हुए क्योंकि वे जानते थे कि परमेश्वर का आशीर्वाद मुझको प्राप्त है।

९. और मैं, नफी और मेरे भाइयों ने, तम्बू लेकर यरूशलेम के देश को जाने के लिए जंगल से होकर यात्रा की।

१०. और ऐसा हुआ कि जब हम यरूशलेम देश में पहुंचे तब मैंने, और मेरे भाइयों ने एक दूसरे से विचार विमर्श किया।

११. लबान के घर कौन जाए (२) इसका निर्णय हमने पर्ची डाल कर किया। और ऐसा हुआ कि पर्ची लमान के नाम निकली; और लमान लबान के घर गया; और उसने अपने घर के अन्दर बैठे हुए लबान से बातें कीं।

१२. और उसने लबान से पीतल की पटियों को मांगा जिसमें अभिलेख खुदा हुआ था और जिसमें मेरे पिता की (३) वंशावली भी थी।

१३. और देखो, ऐसा हुआ कि लबान क्रोधित हो उठा, और उसने उसे अपने सामने से धक्का दे कर निकाल दिया और अभिलेख को भी नहीं दिया। उसने उससे कहा : तुम डाकू हो और मैं तुमको मार डालूंगा।

१४. लेकिन लमान उसके सामने से भाग आया और उसने हमें लबान द्वारा किए गए व्यवहार को बताया। हमें यह सब सुन कर बहुत दुःख हुआ, और मेरे भाई जंगल में पिता के पास लौटने ही वाले थे।

१५. लेकिन देखो, मैंने उनसे कहा कि जब तक कि परमेश्वर जीवित है, और हम लोग भी जीवित हैं, तब हम लोग वापस अपने पिता के पास नहीं लौटेंगे, जबतक कि हम परमेश्वर की आज्ञानुसार काम पूरा नहीं कर लेंगे।

१६. इसलिए परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में सच्चे रहो; इसलिए चलो, अपने पिता की पैतृक सम्पत्ति की धरती पर चलो, क्योंकि देखो, वे (४) सोना और चांदी, और हर एक प्रकार की मूल्यवान चीजों को छोड़ गए थे और उन्होंने यह सब परमेश्वर की आज्ञा के कारण किया था।

१७. क्योंकि वे जानते थे कि लोगों के पापों के कारण (५) यरूशलेम को नष्ट कर दिया जाएगा।

१८. क्योंकि देखो उन्होंने भविष्यवक्ताओं की बातों पर विश्वास नहीं किया। लेकिन अगर मेरे पिता यरूशलेम से निकल जाने की आज्ञा पाने पर भी वहीं रहते, तब देखो, वे भी नष्ट हो जाते। इसलिए उनको यहां से भाग जाना आवश्यक था।

१९. और देखो, यह परमेश्वर का विवेक है कि हम इन अभिलेखों को प्राप्त करें, जिससे कि हम (६) अपने पूर्वजों की भाषा को अपने बच्चों के लिए सुरक्षित रखें।

२०. और इसलिए भी कि हम भविष्यवक्ताओं की वाणियों को भी सुरक्षित रखें, जो कि उन्हें परमेश्वर की सामर्थ्य और पवित्रात्मा द्वारा सृष्टि के आरम्भ से आज तक दी गई हैं।

२१. इस प्रकार के शब्दों से मैंने अपने भाइयों से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का अनुरोध किया।

२२. और ऐसा हुआ कि हम अपने पैतृक सम्पत्ति वाली भूमि में गए और अपने (७) सोना, चांदी और मूल्यवान वस्तुओं को एकत्रित किया।

२३. इन चीजों को एकत्रित कर के हम लबान के घर फिर से गए।

२४. लबान के पास जाकर हमने उन अभिलेखों को प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की जो पीतल की (८) पटियों में अंकित थे, जिनके बदले में हम उसको अपना सोना, चांदी और मूल्यवान वस्तुओं को देना चाहते थे।

२५. और ऐसा हुआ कि लबान ने जब उन सब वस्तुओं को देखा जो बहुत अधिक मूल्य की थीं, तब वह लालच में पड़ गया, और हमें बाहर बलपूर्वक निकाल कर, हमें मार डालने के लिए, उसने अपने नौकरों को भेजा जिससे वह हमारे सम्पत्ति को अपने अधिकार में कर ले।

(२) यहोशू १८:६, १०, न्याय २०:९, प्रे० १:२६. (३) १ नफी ५:१४. (४) १ नफी २:४. (५) देखो ४. १ नफी १. (६) १ नफी १:२, ३ मू० १:४. (७) १ नफी, २:४, ३:१६. (८) देखो १. लगभग ईस्वी पूर्व ६००-५९२ के मध्य

२६. तब हम लबान के नौकरों के सामने से भाग खड़े हुए। हमें अपने सभी सम्पत्ति को छोड़ देना पड़ा और वे सभी चीजें लबान के हाथों लगीं।

२७. और ऐसा हुआ कि हमें जंगल से होकर भागना पड़ा। लबान के नौकर हमें पकड़ नहीं पाए और हम पत्थर की एक खोह में छुप गए।

२८. आगे ऐसा हुआ कि लमान मुझ पर और मेरे पिता पर क्रोधित हो उठा; और लमान की बातों को सुन कर लेमुएल भी हम पर नाराज हुआ। इसलिए लमान और लेमुएल ने हमसे कठोर वचन कहे और यहां तक कि उन्होंने हम छोटे भाइयों को डण्डों से पीटा।

२९. और ऐसा हुआ कि जब वे मुझे डंडों से मार रहे थे, तब देखो, प्रभु का एक दूत आकर उनके सामने खड़ा हो गया और उनसे बोला: तुम अपने छोटे भाई को डंडे से क्यों मार रहे हो? क्या तुम यह नहीं जानते कि तुम्हारे अन्याय के कारण प्रभु ने इसको तुम्हारे ऊपर (६) राज्य करने के लिए चुना है? देखो, तुम यरूशलेम फिर से जाओ और परमेश्वर लबान को तुम्हारे हाथों में सौंप देगा।

३०. प्रभु का दूत हमसे बातें करके चला गया।

३१. स्वर्गदूत के चले जाने पर लमान और लेमुएल इस प्रकार बड़बड़ाने लगे: लबान को हमारे हाथों में करना प्रभु के लिए किस प्रकार सम्भव हो सकता है? देखो, वह बलवान पुरुष है, और वह पचास व्यक्तियों को आज्ञा दे सकता है। हां, वह पचास लोगों की हत्या भी कर सकता है; तब वह हमें क्यों नहीं मार डालेगा?

अध्याय ४

युक्ति द्वारा नफी की पटियों को प्राप्त करना—अपनी ही तलवार द्वारा लबान का मारा जाना—जोराम का नफी और उसके भाइयों के साथ जंगल में जाना।

१. और ऐसा हुआ कि मैंने अपने भाइयों से इस प्रकार कहा: हम फिर यरूशलेम चलें, और हमें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में सत्यनिष्ठ बना रहना चाहिए; क्योंकि वह सारे जगत से भी अधिक शक्तिशाली है, तब क्या वह लबान और उसके पचास या दस सहस्र नौकरों से भी अधिक सामर्थ्यवान नहीं है?

२. इसलिए चलो चलें; हमें मूसा के समान बलवान रहना चाहिए; जिसने कि लाल सागर के जल से सचमुच बातें कीं और सागर के जल ने इधर उधर बंट कर राह बना दी, जिससे हमारे पूर्वज गुलामी त्याग कर सूखी भूमि पर आए; और फिरौन की सेना पीछा करती हुई आई और लाल सागर के जल में डूब मरी।

३. तुम्हें यह मालूम है—कि यह सत्य है; और तुम यह भी जानते हो कि एक स्वर्गदूत ने तुमसे बातें कीं: तब तुम क्यों सन्देह करते हो? प्रभु ने जिस प्रकार हमारे पूर्वजों की रक्षा मिश्र-वासियों से की, उसी प्रकार लबान से भी वह हमारी रक्षा करेगा।

४. मेरे इस प्रकार कहने पर भी वे क्रोध में बड़बड़ाते रहे; परन्तु पीछे-पीछे यरूशलेम के परकोटे तक चले आए।

५. इस समय तक रात हो चुकी थी; और मैंने—उन्हें दीवार के बाहर ही छिप जाने पर, मैं, नफी ने, चुपके से नगर में प्रवेश किया और लबान के घर की ओर बढ़ा।

६. और मुझे पवित्रात्मा द्वारा मार्ग दिखलाया गया। मैं पहले से यह नहीं जानता था कि मुझे क्या करना होगा।

७. फिर भी मैं आगे बढ़ा और जब मैं लबान के घर के निकट पहुंचा तब मैंने एक व्यक्ति को देखा, जो मेरे सामने धरती पर गिर पड़ा, क्योंकि वह मदिरा के नशे में था।

८. जब मैं उसके निकट गया तब देखा कि वह लबान था।

९. मैंने (१) उसकी तलवार को देखा और उसे म्यान से खींच लिया; उसकी मुठिया शुद्ध सोने की थी, और उस पर की गई कारीगरी अति

(६) १ नफी २:२२.
(१) २ नफी ५:१४ या० १:१०, मू० १:१६ सि० शर्त० १७:१.

उच्च कोटि की थी, और मैंने देखा कि उसका फल श्रेष्ठ दृढ़ लोहे का बना हुआ था।

१०. और ऐसा हुआ कि पवित्रात्मा द्वारा लबान को मार डालने के लिए मुझे विवश किया जा रहा था; लेकिन मैंने मन में सोचा: पहले कभी भी मैंने किसी व्यक्ति का रक्त नहीं गिराया। मैं पीछे हटा ताकि उसको मुझे मारना न पड़े।

११. लेकिन पवित्रात्मा ने मुझसे फिर कहा: देखो परमेश्वर ने उसे तुम्हारे हाथों में कर दिया है। हां, मैं यह भी जानता था कि वह मेरी जान लेना चाहता था; और वह प्रभु की आज्ञाओं को भी नहीं मानता था; और उसने हमारी सम्पत्ति को भी हथिया लिया था।

१२. और ऐसा हुआ कि पवित्रात्मा ने मुझसे कहा: उसे मार डालो, क्योंकि परमेश्वर ने उसे तुम्हारे हाथों में कर दिया है;

१३. देखो, प्रभु पापियों को मार कर अपने न्यायपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति करता है। एक देश के अविश्वास में नष्ट होने की अपेक्षा एक व्यक्ति का मारा जाना अच्छा है।

१४. और अब, जबकि मैं, नफी ने, इन शब्दों को सुना, तब जंगल में कहे गए प्रभु के ये शब्द मुझे याद हो आए; (२) जहां तक तुम्हारा वंश मेरी आज्ञाओं का पालन करेगा वहां तक वचन के देश में वे सम्पन्न होंगे।

१५. हां, मैंने यह भी सोचा कि प्रभु की आज्ञाओं का, मूसा के नियमों के अनुसार वे तब तक पालन नहीं कर सकते, जब तक कि उनके पास विधान न हो।

१६. और मैं यह भी जानता था कि यह विधान पीतल की पटियों पर खुदा हुआ था।

१७. और मैं यह जानता था कि प्रभु ने इसी उद्देश्य के लिए लबान को मेरे हाथों में कर दिया है, जिससे कि मैं उसकी आज्ञानुसार पटियों को प्राप्त करूं।

१८. इसलिए मैंने पवित्रात्मा की वाणी के अनुसार काम किया, और लबान के सिर के बालों को पकड़ कर, उसी की तलवार से उसका सिर काट लिया।

१९. उसी की तलवार से उसका सिर काट कर मैंने उसकी पूरी पोशाक को पहन लिया और उसके कवच को अपनी कमर पर बांध लिया।

२०. इन कामों को करने के पश्चात् मैं लबान के खजाने को गया। जब मैं लबान के खजाने की ओर जा रहा था तब मैंने लबान के उस नौकर को देखा जिसके पास खजाने की कुञ्जियां थीं। तब उससे लबान की आवाज़ में अपने साथ खजाने में चलने को कहा।

२१. उसने मुझे अपना मालिक समझा क्योंकि मैं उसकी पोशाक पहिने हुए था और उसकी तलवार को कमर में बांधे हुए था।

२२. और उसने यहूदियों के अधिकारियों के विषय में बातें कहीं क्योंकि वह जानता था कि उसका मालिक लबान रात को उनके पास गया था।

२३. तब मैंने उससे ऐसे बातें कीं जैसे मैं लबान ही हूं।

२४. और मैंने उससे कहा कि मुझे (३) पीतल की पटियों पर अंकित लिपि को शहर की दीवार के बाहर अपने बड़े भाइयों के पास ले जाना चाहिए।

२५. मैंने उससे अपने पीछे आने को भी कहा।

२६. और उसने सोचा कि मैंने गिरजा के सदस्य भाइयों के विषय में कहा है, और मैं सचमुच में लबान ही हूं, जिसको मैंने मार डाला था, इसलिए उसने मेरा अनुसरण किया।

२७. जब मैं अपने भाइयों के पास दीवार के बाहर जा रहा था तब उसने कई बार यहूदी अधिकारियों के विषय में बातें कीं।

२८. और ऐसा हुआ कि जब लमान ने मुझको देखा तब वह बहुत ही भयभीत हुआ और उसके साथ ही लेमुएल और साम भी डरे। वे मेरे सामने से भागे; क्योंकि उन्होंने समझा कि मैं लबान हूं, जो मुझे मार कर उनकी भी जान लेने के लिए आया है।

२९. और ऐसा हुआ कि मैंने उनको पुकारा और वे मेरी आवाज़ सुन कर मेरी उपस्थिति से भागने से रुके।

३०. और ऐसा हुआ कि जब लबान के नौकर ने मेरे भाइयों को देखा, तब वह भयभीत हो कर

(२) १ नफी २:२० (३) देखो १, १ नफी ३.

कांपने लगा, और मेरे सामने से वापस यरूशलेम में भागने ही वाला था।

३१. और मैं, नफी ने, हृस्ट-पुष्ट होने, और प्रभु से बहुत शक्ति पाने के कारण लबान के नौकर को पकड़ लिया, जिससे कि वह भाग न जाए।

३२. और ऐसा हुआ कि मैंने उससे बातें कीं और कहा कि जीवित प्रभु की, और मेरे जीवन की साक्षी है कि अगर वह हमारी बातों को सुनेगा तब उसकी जान नहीं ली जाएगी।

३३. तब मैंने प्रतिज्ञा-पूर्वक उससे कहा कि उसे डरना नहीं चाहिए; और अगर वह जंगल में हमारे साथ चलेगा तब वह हमारी ही तरह स्वतन्त्र व्यक्ति हो जाएगा।

३४. और उससे मैंने यह भी कहा : निश्चय ही परमेश्वर ने हमें यह काम करने को कहा है; और क्या परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में हमें लगनशील नहीं होना चाहिए? इसलिए, अगर तुम जंगल में मेरे पिता के पास गए, तब तुमको हम लोगों में स्थान मिलेगा।

३५. और ऐसा हुआ कि मेरे इस प्रकार बोलने से जोराम को हिम्मत हुई। (४) जोराम उस नौकर का नाम था; और उसने प्रतिज्ञा की कि वह मेरे पिता के पास जंगल में जाएगा। और उसने यह भी प्रतिज्ञा की कि वह उस समय से सदैव हमारे साथ ही रहेगा।

३६. हम उसको अपने साथ इसलिए रखने के इच्छुक थे क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि यहूदियों को पता लगे कि हम जंगल में भाग गए हैं, नहीं तो वे हमारा पीछा करके हमें मार डालते।

३७. और ऐसा हुआ कि जोराम ने हमसे प्रतिज्ञा की तब उसके प्रति हमारा भय जाता रहा।

३८. और ऐसा हुआ कि हम पीतल की पटियों और लबान को लेकर जंगल में अपने-पिता के पास तम्बू में गए।

अध्याय ५

लेही के विरुद्ध सारा की शिकायत—अपने पुत्रों के लौटने पर दोनों की प्रसन्नता—पीतल की पटियों पर अंकित विषय—लेही यूसुफ का एक वंशज—लबान भी उसी वंश का—लेही की भविष्य-वाणियां।

१. और ऐसा हुआ कि हमारे जंगल में अपने पिता के पास वापस लौट आने पर, देखो, उनको बड़ी प्रसन्नता हुई, और मेरी मां, सारा को भी बहुत आनन्द हुआ, क्योंकि हम लोगों के चले जाने के कारण वह रोती थी।

२. क्योंकि वह सोचती थी कि हम वन में मारे गए होंगे, और मेरे पिता के विरुद्ध शिकायत करते हुए वह कहती थी कि वह सपने देखने वाला व्यक्ति है; वह बोली : देखो, तुम हमें अपने पूर्वजों के देश से ले आए और हमारी संतान भी अब नहीं रही, और हम इस जंगल में नष्ट हो रहे हैं।

३. इस प्रकार की भाषा द्वारा मेरी मां ने मेरे पिता पर दोषारोपण किया।

४. और ऐसा हुआ कि मेरे पिता ने मेरी मां से इस प्रकार कहा : मैं जानता हूं कि मैं स्वप्नदर्शी हूं, क्योंकि अगर मैंने परमेश्वर की बातों को (१) दिव्य-दर्शन में नहीं देखा होता, तब मैं परमेश्वर की अच्छाइयों को नहीं जानता, और मैं यरूशलेम में ही रहता और अपने भाइयों के साथ नष्ट हो जाता।

५. लेकिन देखो, मैंने सुखमय प्रतिज्ञा द्वारा दिए देश को प्राप्त किया है, जिस के लिए मैं आनन्द मनाता हूं; हां, मैं यह भी जानता हूं कि लबान के हाथों से प्रभु मेरे पुत्रों की रक्षा करेगा और उन्हें इस जंगल में हमारे पास वापस ले आएगा।

६. इस प्रकार की भाषा द्वारा मेरे पिता ने मेरी मां सारा को तब हमारे लिए सांत्वना दी जब हम जंगल से होकर यरूशलेम, यहूदियों के अभिलेख लाने जा रहे थे।

७. और जब हम अपने पिता के तम्बू में वापस लौटे तब उनकी, प्रसन्नता की सीमा नहीं थी और मेरी मां को चैन मिला।

८. और वह बोली : अब मुझे निश्चित मालूम हुआ कि प्रभु ने मेरे पति को जंगल में भाग जाने की (२) आज्ञा दी थी, और मैं निश्चयपूर्वक यह भी

(४) १ नफी १६:७, २ नफी ५:६ या० १:१३ अल० ५४:२३ ४ नफी ३६:३७
(१) १ नफी १:१३, ३:१८. (२) १ नफी २:२.

जान गई हूं कि प्रभु ने मेरे पुत्रों की रक्षा की है और उन्हें लबान के हाथों से बचाया है और उन्हें जिस काम को करने की आज्ञा दी थी उसे पूरा करने के लिए उन्हें शक्ति दी, जिसके द्वारा उन्होंने उसे पूरा किया। इस प्रकार की भाषा में वह बोली।

९. और ऐसा हुआ कि उन्होंने बहुत अधिक आनन्द मनाया और प्रभु को बलिदान भेंट किए और अग्नि में आहुति चढ़ाई और इस्राएल के परमेश्वर को अनेक धन्यवाद दिए।

१०. इस्राएल के परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के पश्चात् मेरे पिता लेही ने उन अभिलेखों को, जो कि (३) पीतल की पटियों पर अंकित थे ले लिया और आरम्भ से उनकी जांच की।

११. और उसने देखा कि उन में मूसा की पांचों पुस्तकें थीं जिन में सृष्टि रचना का और हमारे प्रथम माता-पिता, आदम और हौवा का वर्णन था।

१२. और उसमें आदिकाल से यहूदा के राजा सिदकिय्याह के शासन के आरम्भ तक का यहूदियों का लेखा था।

१३. उसमें आदिकाल से सिदकिय्याह के शासन के आरम्भ काल तक के पवित्र भविष्यवाणियां थीं और भविष्यवक्ता यिर्मयाह द्वारा की गई भविष्यवाणियां भी थीं।

१४. और ऐसा हुआ कि मेरे पिता लेही ने पीतल की पटियों में अपने (४) पिता की वंशावली को भी पाया, इसलिए उनको पता लगा कि वह यूसुफ के वंश के थे : हां, वह यूसुफ जो याकूब का पुत्र था जिसको मिश्र में बेचा गया था, जिसको प्रभु के हाथों द्वारा बचाया गया जिससे कि वह अपने पिता याकूब की और उसके पूरे परिवार की अकाल में रक्षा करे।

१५. और उनको गुलामी और मिश्र से उसी परमेश्वर ने निकाला, जिस परमेश्वर ने उनकी रक्षा की थी।

१६. इस प्रकार मेरे पिता लेही ने अपने पिता के पूर्वजों के वंश का पता लगाया। और लबान भी यूसुफ के वंश का था, इसलिए उसने और उसके पुरखों ने अभिलेखों को अपने पास रखा था।

१७. और जब मेरे पिता ने इन सब बातों को देखा, तब वह पवित्रात्मा से प्रेरित होकर अपने वंश के विषय में इस प्रकार भविष्यवाणी करने लगा—

१८. पीतल की पटियां उसके वंश के सभी राष्ट्रों, जातियों और भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी लोगों में जाएंगी।

१९. उन्होंने कहा कि ये पीतल की पटियां कभी नष्ट नहीं होंगी और न समय व्यतीत होने के साथ धूमिल ही होंगी। और उन्होंने अपने वंश के विषय में बहुत सी भविष्यवाणियां कीं।

२०. और ऐसा हुआ कि यहां तक मेरे पिता और मैंने प्रभु द्वारा दिए गए आदेशों का पालन किया।

२१. जिस अभिलेख को प्राप्त करने की आज्ञा प्रभु ने हमें दी थी, उसे हमने प्राप्त किया, और उसकी हमने जांच की। और पता लगा कि वह हमारे लिए वांछनीय था; हां, और हमारे लिए मूल्यवान भी था, क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाओं को हम उसके द्वारा अपने बच्चों के लिए सुरक्षित रख सकेंगे।

२२. यह परमेश्वर की इच्छा थी कि हम उसे जंगल से वचन द्वारा दिए गए देश में जाते समय अपने साथ ले जायें।

अध्याय ६

नफी की भाषा—उसका वह लिखना जो परमेश्वर को पसन्द था।

१. और अब मैं, नफी, अपने लेख के इस भाग में अपने पूर्वजों की वंशावली को नहीं लिख रहा हूं; और न तो इन पटियों पर, जिन्हें मैं लिख रहा हूं, अन्यत्र ही लिखूंगा; क्योंकि वह तो उस अभिलेख में है जिसे मेरे (१) पिता ने अपने पास रखा है; इसलिए मैं उसे इसमें नहीं लिख रहा हूं।

२. मेरे लिए इतना कहना पर्याप्त है कि हम यूसुफ के वंश के हैं।

(३) देखो १, १ नफी ३. (४) १ नफी ३:१२, ५:१६, ६:१ अल० १०:३, ३७:३.

(१) १ नफी १:१६.

३. मेरे लिए यह आवश्यक नहीं है कि अपने पिता के लेखे का पूरा विवरण यहां लिखूं, क्योंकि उसे इन पटियों पर नहीं दिया जा सकता, क्योंकि मेरी इच्छा है कि इसमें परमेश्वर सम्बंधी विषयों के लिए स्थान रहे।

४. क्योंकि मेरी पूर्ण इच्छा है कि मैं लोगों से आग्रह करूं कि वे इब्राहीम, इसाक, और याकूब के परमेश्वर के पास आवें और नष्ट होने से बचें।

५. इसलिए संसार को प्रसन्न करने वाली बातों को मैं नहीं लिखता, लेकिन जो बातें सांसारिक नहीं हैं, और जो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाली बातें हैं, उनको में लिख रहा हूं।

६. इसलिए मैं अपने वंशजों को यह आज्ञा दूंगा कि वे इन पटियों में उन बातों को (२) स्थान न दें जो मानव सन्तान के लिए महत्व की न हों।

अध्याय ७

लेही के पुत्रों को पुनः वापस यरूशलेम भेजा जाना—इस्माइल और उसके परिवार का लेही को साथ देने को तैयार होना—मतभेद—नफी का रस्सी से बांधा जाना, विश्वास द्वारा उसका बन्धनमुक्त होना—उसके विद्रोही भाइयों का पश्चात्ताप।

१. अब मैं चाहता हूं कि आप यह जानें कि जब मेरे पिता, लेही ने अपने वंश के विषय में (१) भविष्यवाणी करना समाप्त कर लिया तब ऐसा हुआ कि प्रभु ने उस से फिर बातें कीं और कहा कि लेही के लिए यह ठीक नहीं होगा कि वह अकेले अपने परिवार को जंगल में ले जाए; परन्तु उसके पुत्रों को (२) पत्नी के रूप में कन्याओं को ग्रहण करना चाहिए, जिससे प्रभु के लिए वचन के देश में उनके वंशज उत्पन्न हों।

२. ऐसा हुआ कि प्रभु ने उनको आज्ञा दी कि मैं, नफी, और मेरे भाई यरूशलेम फिर वापस लौटें और (३) इस्माइल और उसके परिवार को जंगल में लावें।

३. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने भाइयों के साथ, फिर से यरूशलेम जाने के लिए जंगल से यात्रा की।

४. हम इस्माइल के घर गए और उसने हम पर अनुग्रह किया और हमने उससे परमेश्वर के कहे शब्दों को बताया।

५. और ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने इस्माइल और उसके परिवार वालों के हृदयों को इतना द्रवित कर दिया कि उन्होंने हमारे साथ जंगल से होकर हमारे पिता के तम्बू तक यात्रा की।

६. और तब ऐसा हुआ कि जब हम उस जंगल से होकर यात्रा कर रहे थे तब लमान, लेमुएल, इस्माइल की दो पुत्रियां और दो पुत्रों ने अपने परिवार के साथ, हमारे विरुद्ध हो, मेरे अर्थात् नफी, साम, इस्माइल और उसकी पत्नी और तीन कन्याओं के विरुद्ध विद्रोह किया।

७. इस विद्रोह में उनकी इच्छा वापस यरूशलेम लौटने की थी।

८. और मैं, नफी उनके हृदयों की कठोरता के कारण दुःखी हुआ और मैंने उससे, अर्थात् लमान, और लेमुएल से कहा: देखो, तुम मेरे बड़े भाई हो; कैसे तुम हृदय से इतने कठोर हो और बुद्धि से इतने अन्धे हो कि मुझे, तुम्हारे छोटे भाई को, तुमको सीख देनी पड़ रही है और तुम्हारे लिए उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ रहा है?

९. कैसे तुम प्रभु की बातों को नहीं सुनते?

१०. किस तरह तुम लोगों ने यह भुला दिया कि तुम लोगों ने (४) प्रभु के एक दूत को देखा था?

११. हां, तुम लोग यह भी कैसे भूल गए कि प्रभु ने हमें (५) लबान के हाथों से बचाने के लिए; और अभिलेख को प्राप्त करने के लिए कैसे महान कार्य किए हैं?

१२. हां, और तुम लोगों ने यह भी क्यों भुला दिया कि अगर मनुष्य का प्रभु पर विश्वास हो तब वह, उनके हित के लिए अपनी इच्छानुसार जो कुछ भी करना चाहे, कर सकता है? इसलिए हमें उसके प्रति सत्यनिष्ठ बना रहना चाहिए।

१३. और अगर हम उसके प्रति विश्वासी

(२) या० १:१-४, ३:१३, १४:४:१-३ इ० १३:१८ ज० १, २, १४, १५ ओम १, ३, ६, ११,२५ मा० वा० ३:११. अध्याय ७.
(१) १ नफी १:१६, २:१४. (२) १ नफी १६:७. (३) १ नफी ७, ६, १९. (४) १ नफी ३:२९. (५) १ नफी ४.

बने रहेंगे, तब हमें (६) वचन का सुखमय देश प्राप्त होगा; और तुम्हें (७) भविष्य में किसी समय मालूम होगा कि यरूशलेम के नष्ट किए जाने से सम्बन्धित प्रभु की वाणी सत्य होगी; क्योंकि यरूशलेम के नष्ट होने की सभी बातें जिन्हें प्रभु ने कही हैं वे अवश्य पूरी होंगी।

१४. इसलिए देखो, शीघ्र ही प्रभु की पवित्रात्मा वहां के लोगों के लिए प्रयत्न करना समाप्त कर देगी, क्योंकि देखो, (८) उन्होंने भविष्यवक्ताओं की नहीं सुनी और (९) यिर्मयाह को उन्होंने बन्दीगृह में डाल दिया है। और उन्होंने मेरे पिता की (१०) जान लेने की इतनी चेष्टा की कि उन्हें स्वदेश से बाहर खदेड़ दिया।

१५. और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुम वापस यरूशलेम लौटे तब तुम भी उनके साथ नष्ट हो जाओगे और अगर अब भी तुम वापस जाना चाहते हो; तब जाओ, लेकिन मेरे इन शब्दों को याद रखना कि अगर तुम वापस गए तब तुम भी नष्ट हो जाओगे; क्योंकि प्रभु की पवित्रात्मा ने ऐसा करने के लिए, मुझ पर दबाव डाला।

१६. और ऐसा हुआ कि जब मैं, नफी ने, इन शब्दों को अपने भाइयों से कहा, तब वे मुझ पर क्रोधित हो उठे। तब ऐसा हुआ कि उन्होंने मेरे ऊपर हाथ उठाए क्योंकि उन्हें बहुत अधिक क्रोध आ गया था और उन्होंने मुझ को रस्सी से बांध दिया, क्योंकि वे मेरे प्राण लेना चाहते थे और जंगल में छोड़ कर चले जाना चाहते थे जिससे कि मुझे हिंसक पशु खा जाए।

१७. लेकिन ऐसा हुआ कि मैंने प्रभु से यह कहते हुए प्रार्थना किया; हे प्रभु, आप में मेरा जो विश्वास है उसके द्वारा क्या आप मेरे भाइयों के हाथों से मेरी रक्षा करेंगे; हां, मुझे इतनी शक्ति दे, जिससे मैं इन बन्धनों को जिससे मैं बंधा हूं, तोड़ दूं।

१८. तब ऐसा हुआ कि मैंने जब इन शब्दों को कहा तब देखो, मैं हाथों और पैरों के बन्धनों से मुक्त हो गया, और अपने भाइयों के सामने खड़े होकर मैंने उनसे फिर बातें कीं।

१९. तब वे फिर मेरे ऊपर क्रोधित हुए और उन्होंने मेरे ऊपर हाथ उठाए; लेकिन देखो, इस्माइल की लड़कियों में से एक, और हां, उसकी मां और एक लड़के ने, मेरे भाइयों से मेरे लिए इतनी याचना की कि उनके हृदय पसीज गए; और मेरे प्राण लेने की चेष्टा उन्होंने छोड़ दी।

२०. और ऐसा हुआ कि वे अपने किए हुए पर पछताने लगे, यहां तक कि उन्होंने मेरे सामने घुटने टेक दिए और मेरे प्रति किए गए अपने दुर्व्यवहार के लिए मुझ से क्षमा मांगने लगे।

२१. और ऐसा हुआ कि मैंने उनके किए हुए कर्मों के लिए निष्कपट भाव से उन्हें क्षमा किया, और उन्हें सदुपदेश दिया कि वे अपने प्रभु परमेश्वर से भी क्षमा के लिए प्रार्थना करें। तब उन्होंने ऐसा ही किया। और जब वे प्रार्थना कर चुके तब हम लोगों ने अपने पिता के तम्बू की ओर पुन: यात्रा की।

२२. और ऐसा हुआ कि हम अपने पिता के तम्बू तक पहुंचे। मैं, मेरे भाई और इस्माइल के पूरे परिवार ने, मेरे पिता के तम्बू में पहुंचने के पश्चात् अपने प्रभु परमेश्वर को अनेक धन्यवाद दिए, और बलि चढ़ाई, और उसके लिए अग्नि में आहुति दी।

अध्याय ८

लेही का वृक्ष, नदी और लोहे की छड़ का स्वप्न—लमान और लेमुएल का वृक्ष के फलों का न खाना।

१. और ऐसा हुआ कि हमने हर प्रकार के (१) बीजों का संग्रह किया; जिन में सभी प्रकार के अनाजों के बीज और सभी प्रकार के फलों के बीज भी थे।

२. और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता उस जंगल में निवास कर रहे थे तब उन्होंने हम से कहा: देखो, मैंने एक स्वप्न देखा है; या दूसरे शब्दों में मैंने दिव्य-दर्शन पाया है।

३. और देखो, जिन दृश्यों को मैंने देखा है, उससे मैं प्रभु में आनन्द विभोर हूं; क्योंकि उनके

(६) १ नफी २:२०, १८:२२, २३. (७) २ नफी ६:८, ९. २५:१०. ओम० १५. इला० ८:२०, २१. (८) यिर्म० ४४:४-६. (९) यिर्म० ३७:१५. (१०) १ नफी २:१.
अध्याय ८. (१) १ नफी १८:२४.

आधार पर मुझे विश्वास है कि नफी और साम तथा उनके बहुत से वंशज बच जाएंगे।

४. लेकिन देखो, लमान और लेमुएल, तुम्हारे कारण मुझे भारी भय है, क्योंकि देखो, मैं सोचता हूं कि मैंने अपने स्वप्न में एक अन्धकारपूर्ण घोर निर्जन मरुभूमि को देखा है।

५. और ऐसा हुआ कि मैंने एक पुरुष को देखा जो श्वेत लबादा पहने हुए था, और वह आ कर मेरे सामने खड़ा हो गया।

६. और ऐसा हुआ कि उसने मुझसे बातें कीं और अपने पीछे-पीछे जाने को कहा:

७. और ऐसा हुआ कि उसका अनुगमन करते हुए मैंने देखा कि मैं एक अन्धकारमय घोर, निर्जन, मरुस्थल में हूं।

८. और अन्धकार में कई घण्टे चल चुका तो मैं प्रभु से—प्रार्थना करने लगा कि वह असीम कृपालु मुझ पर दया करें।

९. और ऐसा हुआ कि प्रभु से प्रार्थना करने पर, मैंने एक बहुत बड़ा खेत देखा।

१०. और ऐसा हुआ कि मैंने एक (२) वृक्ष देखा जिसके लुभावने फल हर एक को आनन्दित करने वाले थे।

११. और ऐसा हुआ कि मैं वहां गया और उस वृक्ष का फल खाया; और मुझे लगा कि वह इतना मीठा है कि ऐसा मीठा फल पहले मैंने कभी भी नहीं खाया था। हां, मैंने यह भी देखा कि वह फल सफेद था, इतना सफेद कि उतनी सफेदी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी।

१२. और जब मैं उन फलों को खा रहा था तब मेरी आत्मा आनन्द से परिपूर्ण हो उठी; इसलिए मेरी इच्छा हुई कि मेरा परिवार भी इन फलों को खाय; क्योंकि मैं यह जानता था कि यह फल खाने के लिए अन्य फलों से श्रेष्ठ था।

१३. जब मैं आंखें उठा कर अपने परिवार वालों को ढूंढ़ने लगा कि सम्भव है वे लोग भी वहां हों तब मैंने एक बहती हुई (३) नदी को देखा जो उस वृक्ष के निकट से बह रही थी, जिसका फल मैं खा रहा था।

१४. मैंने उसका उद्‌गम देखने के लिए जब उधर ताका तब मैंने देखा कि उसका उद्‌गम स्थान वहां से थोड़ी दूर पर था; और वहां पर मैंने तुम्हारी माता सायरा, साम और नफी को खड़े देखा, जो इस सोच में खड़े थे कि किधर जाएं।

१५. तब ऐसा हुआ कि मैंने उन्हें इशारे से अपनी ओर बुलाया और ऊंची आवाज़ में उनसे कहा कि मेरे पास आओ और अन्य सभी फलों से श्रेष्ठ इन फलों को खाने के भागीदार बनो।

१६. और तब ऐसा हुआ कि वे मेरे पास आए। और उन फलों को खाने में हिस्सेदार हुए।

१७. तब मैंने यह चाहा कि लमान और लेमुएल भी उन फलों को खाने में भाग लें; इसलिए मैंने नदी के उद्‌गम की ओर इस विचार से दृष्टि डाली कि शायद मैं उन्हें वहां देखूं।

१८. मैंने उनको वहां देखा, लेकिन (४) उन्होंने मेरे पास आकर उन फलों को खाने में भाग नहीं लिया।

१९. और मैंने (५) लोहे की एक छड़ को देखा जो नदी के किनारे-किनारे उस वृक्ष तक फैली थी, जिसके निकट मैं खड़ा था।

२०. मैंने एक सीधा सकरा रास्ता भी देखा जो उस लोहे की छड़ के साथ-साथ उस वृक्ष तक आया था जिसके निकट मैं खड़ा था और जो नदी कि उद्‌गम के पास से होता हुआ एक इतने बड़े मैदान में गया था जिसमें लगता था कि पूरा संसार समाया हो।

२१. और अब असंख्य लोगों को देखा जिनमें से बहुत से लोग उस पथ पर आगे बढ़ने की चेष्टा कर रहे थे जो उस वृक्ष तक आया था जिसके निकट मैं खड़ा हुआ था।

२२. और ऐसा हुआ कि वे उस पथ पर आने में सफल हुए जो उस वृक्ष तक आया था, और वे उस पर आगे बढ़े।

२३. और ऐसा हुआ कि अन्धकार का धुन्ध उठा; वह अत्यन्त गहन अन्धियारे का धुन्ध था जिसमें उस पथ पर चलने वाले रास्ता भूल गए और पथ से भटक कर खो गए।

(२) १ नफी ८:१५, २०, २४, २५, ३०. ११:८, ९, २१-२३, २५. (३) १ नफी ८:१९. १२:१६, १८.१५, २६:२९.
(४) २ नफी ५:२०. (५) १ नफी ८:२४, ३०. १५.२३, २४.

२४. और ऐसा हुआ कि मैंने दूसरों को उस पथ पर आने की चेष्टा करते हुए देखा जो उस पथ पर आए और जिन्होंने लोहे की उस छड़ के छोर को पकड़ लिया और उसे पकड़े हुए उस गहन अंधेरे धुंध में आगे बढ़े और आगे बढ़ते गए जब तक कि उन्होंने आकर उस वृक्ष के फलों को खाने में हिस्सा नहीं लिया।

२५. और उस वृक्ष के फलों को खाने में भागीदार होने के पश्चात् वे इधर-उधर देखने लगे मानो उन्हें लाज लग रही हो।

२६. और मैंने भी चारों ओर जब दृष्टि दौड़ाई तब उस जलयुक्त नदी के दूसरी ओर (६) एक बहुत बड़े महल को देखा जो धरती से बहुत ऊपर, हवा में स्थित प्रतीत होता था।

२७. वह महल बूढ़े और जवान स्त्री-पुरुषों से भरा हुआ था, और उनका पहनावा अत्यन्त ही सोभायमान था और वे खिल्ली उड़ाने के भाव में उनकी ओर उंगली उठा रहे थे जिन्होंने आकर उस वृक्ष के फल खाने में भाग लिया था।

२८. और उन फलों का स्वाद लेने वाले उनके उपहास के कारण लज्जित होकर वर्जित पथों पर चल कर खो गए।

२९. और अब मैं, नफी अपने पिता द्वारा कही गई सभी बातों को नहीं कहता।

३०. लेकिन मैं संक्षेप में लिखूंगा, देखो, उन्होंने भीड़ों को आगे बढ़ते देखा जो आकर (७) लोहे की छड़ का छोर पकड़ कर आगे बढ़ी, जो लगातार छड़ को पकड़े हुए बढ़ती गई, जब तक कि उस वृक्ष के फलों पर टूट नहीं पड़ी और उन्हें खाने में भाग नहीं लिया।

३१. उसने अन्य भीड़ों को भी उस बहुत बड़े महल की ओर बढ़ते देखा।

३२. और ऐसा हुआ कि बहुत से लोग उस नदी के उद्‌गम की गहराई में (८) डूब मरे, और बहुत से लोग अनजान राहों पर चल कर उनकी आंखों के सामने से अदृश्य हो गए।

३३. और उस (९) अनोखे महल में प्रवेश करने वालों की संख्या बहुत बड़ी थी। उस महल में प्रवेश करने के पश्चात् उन्होंने मेरी और उन अन्य लोगों की ओर जो फल खाने में भाग ले रहे थे, तिरस्कार-युक्त ढंग से उंगली उठाई, लेकिन हम लोगों ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

३४. ये शब्द मेरे पिता के हैं: जितने लोगों ने उनकी ओर ध्यान दिया, वे सब नष्ट हो गए।

३५. मेरे पिता ने कहा कि (१०) लमान और लेमुएल ने उन फलों को नहीं खाया।

३६. मेरे पिता ने अपने स्वप्न या दृष्टि—आभास के विषय में सब बातें बता लेने पर जो कि बहुत कुछ था, उन्होंने हम से कहा कि उन्होंने जो कुछ दिव्य-दर्शन द्वारा देखा है, उन बातों से उन्हें लमान और लेमुएल के लिए भारी भय था कि उन्हें (११) प्रभु की उपस्थिति से बाहर कर दिया जाएगा।

३७. तब उन्होंने माता-पिता की कोमल हृदय की ममता से उनको अपनी बातों को सुनने के लिए उपदेश दिया, जिससे शायद प्रभु उनके ऊपर दया करें और उन्हें निकाले नहीं; हां, मेरे पिता ने उनको शिक्षा दी।

३८. उनको उपदेश दे कर; और बहुत-सी बातों की भविष्यवाणी बता कर उनसे कहा कि वे प्रभु की आज्ञाओं का पालन करें; और वह उनसे बोलना समाप्त किया।

अध्याय ९

नफी की पटियों का विषय—दो प्रकार के अभिलेख—एक का विषय सिद्धान्तिक और दूसरा शासकों और युद्ध आदि से सम्बन्धित।

१. इन सभी बातों को मेरे पिता ने उस समय देखा, सुना और बताया जब कि वह लेमुएल की घाटी में (१) एक तम्बू में रहते थे। इनके अलावा उन्होंने अन्य बहुत-सी बातों को देखा, सुना, जिन्हें इन पटियों पर लिखना सम्भव नहीं।

२. और अब जब कि मैंने इन (२) पटियों के विषय में कहा है, तब देखो ये वे पटियां नहीं हैं

(६) पद्य ३१, ३३. १ नफी ११:३५, ३६: १२:१८. (७) १ नफी ८:१९, १५:२३, २४. (८) १ नफी ८:१३, १४. १५: २६-२९. (९) १ नफी ८:२६. (१०) पद्य ४, १७, १८. (११) २ नफी ५:२०.

अध्याय ९ (१) १ नफी २:६-१५. (२) देखो ६. १ नफी १.

ईसा से पूर्व ६००-५९२ के मध्य

जिन पर मैं अपने लोगों के इतिहास का पूरा वर्णन करता हूं; क्योंकि जिन पटियों पर मैं अपने लोगों का पूरा ब्योरा देता हूं, उनका नाम मैंने नफी दिया है; क्योंकि उनका नाम मेरे नाम पर रखा गया है; और ये पटियां भी नफी की पटियां कही गई हैं।

३. फिर भी मैंने प्रभु से इन पटियों को बनाने की आज्ञा पाई है, क्योंकि इनका विशेष उद्देश्य है कि मैं अपने लोगों के धार्मिक-प्रबन्ध का लेखा इन पटियों पर खोद कर अंकित करूं।

४. दूसरी पटियों पर राजाओं के शासन, युद्ध और अपने लोगों के मतभेद का लेखा खोद कर लिखूंगा; इसलिए एक पटियां विशेष कर धार्मिक विषय के लिए हैं और दूसरी पटियां विशेष कर राजाओं के शासन, युद्ध और मेरे लोगों के विवादों के लिखने के लिए हैं।

५. इसलिए प्रभु ने इन पटियों को (३) अपने विवेकमय उद्देश्य के लिए मुझे बनाने की आज्ञा दी है, जो मुझे ज्ञात नहीं है।

६. लेकिन परमेश्वर आरम्भ से सभी बातों को जानने वाला है, इसलिए, मानव जाति में अपने सभी कामों को पूरा करने के लिए वह रास्ता तैयार करता है, क्योंकि देखो, अपने सभी वचनों को पूरा करने के लिये उसके पास शक्ति है। और यह सत्य है। आमीन।

अध्याय १०

लेही द्वारा बेबलोन की गुलामी, और परमेश्वर का मेमना के आने की भविष्यवाणी—इस्राएल के घर का जैतून के वृक्ष की तरह तितर-बितर होना और पीछे एकत्रित होने का संकेत में प्रकट करना।

१. और अब मैं नफी अपने व्यवहार, शासन और धार्मिक कार्यों का वर्णन करने जा रहा हूं; और अपने विवरण को लिखने के लिए मुझे अपने पिता और भाइयों की भी कुछ बातों को लिखना पड़ेगा।

२. क्योंकि देखो, जब मेरे पिता ने अपने स्वप्न के विषय में बातें और सभी सम्भव प्रकार के परिश्रम करने के लिए सदुपदेश देना समाप्त किया तब उन्होंने मेरे भाइयों से यहूदियों के विषय में कहा—

३. महान नगर यरूशलेम और यहूदियों के नष्ट किए जाने और बेबलोन में बन्दी बना कर ले जाए जाने के पश्चात् प्रभु के समयानुसार वे पुनः वापस लौटेंगे; हां, यहां तक कि उनको गुलामी से (१) मुक्त कर जब उन्हें लाया जाएगा, तब उनको पैतृक भूमि पुनः वापस प्राप्त होगी।

४. हां, मेरे पिता द्वारा यरूशलेम को छोड़ने (२) के छः सौ वर्ष पश्चात् प्रभु परमेश्वर यहूदियों में (३) एक भविष्यवक्ता देगा, यहां तक कि एक मसीहा, दूसरे शब्दों में जगत का रक्षक भेजेगा।

५. उसने यह भी कहा कि इस दुःखियों के मसीहा, याने जगत के बचाने वाले के विषय में (४) कितने अधिक भविष्यवक्ताओं ने साक्षी दी है।

६. क्योंकि संसार के सभी लोग (५) भटके हुए पतित हो चुके थे, और ऐसे ही रहते अगर वे उस उद्धारक की शरण में न जाते।

७. उसने दुःखियों के इस मसीहा से (६) पहले एक भविष्यवक्ता के आकर, उसके लिए रास्ता तैयार करने के विषय में भी कहा—

८. हां, वह जंगल में भी जा कर चिल्लाएगा: तुम प्रभु के लिए रास्ता तैयार करो, और उसका रास्ता सीधा बनाओ; क्योंकि तुम्हारे बीच में एक जो खड़ा हुआ है जिसको तुम नहीं जानते; और वह मुझसे अधिक शक्तिशाली है और मैं उसके जूते के बन्धन खोलने योग्य नहीं हूं। इस विषय पर मेरे पिता ने बहुत कुछ कहा।

९. और मेरे पिता ने कहा कि वह यरदन से आगे बिथाब्रा में बपतिस्मा देगा; यहां तक कि वह मसीहा को भी पानी से बपतिस्मा देगा।

१०. और मसीहा को पानी से बपतिस्मा देने के पश्चात् वह देखेगा और इसका साक्ष्य देगा कि उसने परमेश्वर के मेमने को बपतिस्मा दिया, जो इस जगत को पापों से मुक्त करेगा।

(३) मार० वा० ७. अल ३७:२, १२, १४, १८. सि० शर्त० ३:१९-१०. ३४-४२. १ नफी १९:३. (१) २ नफी ६:८-११ दानि० ९:२. (२) १ नफी १९:८. २ नफी २५:१९. ३ नफी १:१. (३) १ नफी २२:२०, २१. ३ नफी २०:२३. (४) ३ नफी २०:२४. (५) २ नफी २:५-८. ९:६, ३८. २५:२०. ३१:२१. मू० १६:४, ५. अल्मा० ९:३०, ३२. १२:२०. (६) १ नफी ११:२७. २ नफी ३१:४-१८.

११. और ऐसा हुआ कि इन बातों को कहने के पश्चात् मेरे पिता ने मेरे भाइयों से यहूदियों में जिस इंजील का प्रचार होना चाहिए उसके विषय में बातें कीं। उसने यहूदियों के (७) अविश्वास के कारण नष्ट होने की भी चर्चा की। उसने कहा कि मसीहा के आने पर उनके द्वारा हत्या करने पर वह मर कर पुनर्जीवित हो उठेगा और पवित्र आत्मा द्वारा दूसरी जातियों में प्रकट होगा।

१२. यहूदियों से भिन्न जाति वालों के विषय में भी मेरे पिता ने बहुत कुछ कहा और उन्होंने इस्राएल के घराने के सम्बन्ध में भी बहुत बातें बताईं और कहा कि उनकी तुलना (८) जैतून के एक वृक्ष से करना चाहिए जिसकी शाखाओं को तोड़ कर सारे विश्व भर में बिखेर दिया गया हो।

१३. उन्होंने कहा कि इसलिए हमें एक मत होकर प्रभु की इस वाणी के अनुसार, कि हमें सारे विश्व भर में बिखर जाना चाहिए, (९) प्रतिज्ञा द्वारा दिए गए देश में जाना चाहिए।

१४. और इस्राएल के घराने के तितर-बितर होने के पश्चात् उनको फिर से एकत्रित किया जाएगा; या जब (१०) यहूदियों से भिन्न जाति वालों को सम्पूर्ण सुसमाचार प्राप्त हो जाएगा, तब जैतून की प्राकृतिक शाखाओं को, अर्थात् इस्राएल के घराने के अवशेषों की कलम को लगाया जाएगा, अर्थात् वे सच्चे मसीहा, अपने प्रभु और उद्धारक का ज्ञान पाएंगे।

१५. इस प्रकार की भाषा में मेरे पिता ने मेरे भाइयों से भविष्यवाणी और बातें कीं; इसके अलावे उन्होंने और भी बहुत सी बातें कीं जिन्हें मैं इस पुस्तक में नहीं लिखूंगा क्योंकि जितनी बातें मेरे लिए उपयुक्त थीं उन्हें मैंने अपनी (११) दूसरी पुस्तक में लिख दिया है।

१६. ये सभी बातें जिनके विषय में मैंने कहा, तब घटीं जब कि मेरे पिता लेमुएल की घाटी में एक (१२) तम्बू में रहते थे।

१७. और तब ऐसा हुआ कि मैं, नफी, अपने पिता द्वारा दिव्य-दर्शन में देखे गए, और ईश्वर के पुत्र मसीहा, जो जगत में आने वाला था, पर विश्वास से पवित्रात्मा द्वारा दिए गए सामर्थ्य द्वारा कहे गए सब शब्दों को सुन लेने पर, मैं, नफी ने भी (१३) पवित्रात्मा की उस शक्ति द्वारा, जो परमेश्वर से उन लोगों को प्राप्त होती है, जो उसको सतत, अनवरत में खोजते हैं, तथा जिस के द्वारा हर युग में वह मानव सन्तति पर प्रकट होता है; उसी सामर्थ्य के बल पर इन बातों को देखने, सुनने और जानने का इच्छुक हुआ।

१८. क्योंकि वह भूतकाल में, वर्तमान में, और सदा के लिए एक समान है, और संसार के आरम्भ से सब मनुष्यों के लिए रास्ता तैयार है, यदि वे प्रायश्चित कर उसकी शरण में आएं।

१९. क्योंकि जो परिश्रम कर के खोजेगा वह पाएगा और परमेश्वर का रहस्य उसके लिए पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा प्राचीन युग की तरह इस युग में और भविष्य में भी खोल दिया जाएगा; इसलिए परमेश्वर की गति एकमात्र अनन्त जीवन देने के लिए है।

२०. इसलिए हे मनुष्य, याद रखो कि तुमको तुम्हारे सारे कर्मों के लिए न्याय विचार के लिए ले जाया जाएगा।

२१. इसलिए अगर तुमने अपने परीक्षा-काल के समय में बुरे कर्म किए, तब तुम परमेश्वर के न्याय-सिंहासन के सामने अशुद्ध ठहरोगे; और परमेश्वर के साथ कोई भी अशुद्ध वस्तु नहीं रह सकती; इस कारण सदैव के लिए तुमको फेंक दिया जाएगा।

२२. और पवित्र आत्मा इन बातों को कहने का मुझे अधिकार देती है और मैं इसे इन्कार नहीं कर सकता।

अध्याय ११

नफी और परमेश्वर की आत्मा—लेही द्वारा भविष्य-सूचक स्वप्न देखना और उसका अर्थ निकाला जाना—नफी का कुमारी और ईश्वर-पुत्र का स्वप्न-दर्शन करना मसीह का धर्मोपदेश।

(७) रोमि० ११ या० ४:१५, १ नफी ४:१३, १२:२२, १३:३५ मार० ५:१४. (८) या० अध्याय ५, ६. (९) १ नफी २:२०, १८:२३. (१०) या० ५, ३ नफी १६:४-७, २१:१-११. (११) देखो ६, १ नफी १. (१२) देखो १, १ नफी ९. (१३) २ पत० १:२१.

१. तब ऐसा हुआ कि जिन बातों को मेरे पिता ने देखा था उन बातों को जानने की इच्छा और यह विश्वास करने के पश्चात् कि प्रभु मुझे भी उन बातों की जानकारी कराएगा; मैं जब इन विचारों में खोया हुआ था तब मैं परमेश्वर की आत्मा में लीन हो गया, और हां, मैंने एक बहुत ऊंचे पर्वत को देखा जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था और न उसके ऊपर कभी पैर ही धरा था।

२. तब आत्मा ने मुझ से कहा: देखो, तुम क्या चाहते हो?

३. और तब मैंने कहा: मैं उन बातों को देखना चाहता हूं जिन्हें मेरे पिता ने देखा था।

४. तब आत्मा ने मुझसे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि जिस वृक्ष (१) के विषय में उन्होंने कहा, उसे उन्होंने देखा था?

५. और मैंने कहा: हां, आप जानते हैं कि मैं अपने पिता के कहे गए हर एक शब्द पर विश्वास करता हूं।

६. जब मैंने इन शब्दों को कहा तब आत्मा ने ऊंचे शब्दों में कहा: प्रभु, सब से ऊंचे परमेश्वर का सुयश* हो क्योंकि वह सारे जगत का परमेश्वर है; हां, वह सब से ऊपर है। और धन्य हो तुम, नफी, क्योंकि तुम सबसे ऊंचे परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करते हो, इसलिए तुम ने जिन बातों को देखने की इच्छा प्रकट की है उन्हें तुम देखोगे।

७. और देखो जिस फल को तुम्हारे पिता ने चखा, उस फल वाले वृक्ष को देख लेने पर तुम्हें एक चिन्ह दिया जाएगा। तुम एक पुरुष को आकाश से उतरते देखोगे; और उसके गवाह तुम रहोगे; और उसको देख लेने पर तुम इसका प्रमाण रखोगे कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

८. और ऐसा हुआ कि आत्मा ने मुझ से कहा: देखो! और मैंने एक वृक्ष को देखा; और वह उसी प्रकार का वृक्ष था जिसको मेरे पिता ने देखा था; और उसकी सुन्दरता अन्य प्रकार के सभी सौन्दर्यों से श्रेष्ठ थी; और उसकी सफेदी हिम की सफेदी से भी अधिक सफेद थी।

९. और ऐसा हुआ कि उस वृक्ष को देख लेने पर मैंने आत्मा से कहा: मैं देखता हूं कि तुमने मुझे वह वृक्ष दिखाया है, जो सभी वस्तुओं से अधिक मूल्यवान है।

१०. और उसने मुझ से कहा: तुम्हारी क्या इच्छा है?

११. और मैंने उससे एक मनुष्य की तरह कहा: मैं उसका अर्थ जानना चाहता हूं: क्योंकि मैंने देखा कि वह भी एक मनुष्य के आकार में था; फिर भी मैं यह जानता था कि वह प्रभु की आत्मा थी; और उसने मुझ से उसी प्रकार बातें की जैसे एक (२) मनुष्य दूसरे मनुष्य से बातें करता है।

१२. और ऐसा हुआ कि उसने मुझ से कहा: देखो; और जब मैंने उसे देखने के लिए दृष्टि उठाई तब मैंने उसे नहीं देखा क्योंकि वह मेरी उपस्थिति से परे चला गया था।

१३. और ऐसा हुआ कि मैंने महान नगर यरूशलेम को और दूसरे नगरों को देखा। मैंने (३) नासरत नगर को देखा जिसमें एक कुमारी को देखा जो अत्यन्त ही गौर-सुन्दरी थी।

१४. तब ऐसा हुआ कि मैंने स्वर्ग को खुलते देखा और एक स्वर्गदूत नीचे उतर कर आया और मेरे सामने खड़ा हो गया: और उसने मुझ से कहा: नफी तुम क्या देखते हो?

१५. और मैंने उससे कहा: एक कुमारी को जो सभी अन्य कुमारियों से अधिक सुन्दर है।

१६. और उसने मुझ से कहा: क्या तुम परमेश्वर की कृपा को जानते हो?

१७. और मैंने उससे कहा: मैं जानता हूं कि वह अपने बच्चों से प्रेम करता है: फिर भी मैं सभी बातों का अर्थ नहीं जानता।

१८. और उसने मुझ से कहा: देखो, जिस कुमारी को तुम देख रहे हो, वह मानव शरीर में परमेश्वर के पुत्र की (४) माता है।

अध्याय ११. (१) १ नफी ८:१०-१२, ११:८, ९; १५:२१, २२. (२) यूहन्ना १४:१६, १७. (३) लूका० १:२६, २७. (४) लूका० १:३१, ३२. १ नफी ११:२०, २१:मू० ३:८. १५:२-५. एथा० ३:९.

*मूल में होशाना यह इब्रानी भाषा का शब्द है जिसका प्रयायवाची नहीं।

ईसा से ६०० वर्ष पूर्व ५९२ के मध्य

१९. और ऐसा हुआ कि मैंने उस कुमारी को आत्मा में कुछ काल के लिए विलीन होते देखा और तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा : देखो।

२०. और जब मैंने फिर से देखा तब मुझे वही कुमारी अपनी गोद में एक बच्चे को लिये हुए पुनः दिखाई दी।

२१. और वह स्वर्गदूत मुझ से बोला : परमेश्‍वर के मेमने को देखो, हां, यह अनन्त पिता का पुत्र है! क्या तुम उस वृक्ष का अर्थ जानते हो जिसको तुम्हारे पिता ने देखा था?

२२. और मैंने उसको उत्तर दिया, हां, वह परमेश्‍वर का (५) प्रेम है जो मनुष्य के बच्चों के हृदयों में प्रवेश करता है; इसलिए वह सभी अन्य वस्तुओं से अधिक प्राप्त करने लायक है।

२३. और उसने मुझ से कहाः हां, वह सब से अधिक आत्मा को आनन्दित करने वाली चीज़ है।

२४. इन शब्दों को कहने के पश्‍चात् वह मुझ से बोला देखो! और जब मैंने देखा तब मुझे ईश्‍वर का पुत्र लोगों में जाते हुए दिखाई दिया; और बहुत से लोगों ने उसके पैरों पर गिर कर उसकी स्तुति करते हुए दिखाई पड़े।

२५. और ऐसा हुआ कि मैंने लोहे की उस (६) छड़ को देखा जिसे मेरे पिता ने देखा था, जो कि परमेश्‍वर की वाणी थी और जो जीवन के जल से जीवन के वृक्ष तक ले जाता था : जीवन का जल परमेश्‍वर के प्रेम का प्रतिनिधित्व करता था; और मैंने देखा कि जीवन का वृक्ष भी परमेश्‍वर के प्रेम का प्रतिनिधित्व करता था।

२६. और तब स्वर्गदूत ने मुझ से फिर कहा : ईश्‍वर की कृपा को देखो!

२७. और मैंने जगत के उद्धारक को देखा जिसके विषय में मेरे पिता ने कहा था : और मैंने उस (७) भविष्यवक्ता को भी देखा जो उसके लिए रास्ता तैयार करेगा; और परमेश्‍वर के मेमना ने आगे बढ़ कर उससे बपतिस्मा लिया; और उसके बपतिस्मा लेने के पश्‍चात् मैंने स्वर्ग को खुलते और पवित्रात्मा को स्वर्ग में से नीचे उतर कर एक कबूतर के भेष में उसके ऊपर बैठते देखा।

२८. और मैंने उसको लोगों में जाकर सामर्थ्य और यश के साथ उपदेश देते देखा; और उसको सुनने के लिए भीड़ एकत्रित हो जाती; और मैंने देखा कि उन्होंने उसको अपने में से निकाल कर अलग कर दिया।

२९. और मैंने (८) बारह जनों को उसका अनुकरण करते भी देखा, जो कि सामने ही पवित्र-आत्मा में विलीन हो गए, और फिर वे दिखलाई नहीं दिए।

३०. और ऐसा हुआ कि उस स्वर्गदूत ने मुझसे फिर कहा : देखो! और मैंने स्वर्गों को फिर से खुलते देखा, और स्वर्गदूतों को लोगों पर उतरते और उनको उपदेश देते देखा।

३१. उसने मुझसे फिर कहा : देखो! मैंने परमेश्‍वर के मेमने को लोगों में जाकर उपदेश देते हुए देखा। मैंने उन लोगों की भीड़ को देखा जो बीमार थे, जिनमें अनेकों प्रकार की बीमारियों से पीड़ित लोग थे, और उनमें शैतान और दुष्ट-आत्माओं से ग्रसित लोग भी थे। स्वर्गदूत ने मुझ से बातें करते हुए यह सब दिखाया और वे सब परमेश्‍वर के मेमने की शक्ति द्वारा ठीक कर दिए गए, और शैतान और दुष्ट-आत्माओं को भगा दिया गया।

३२. और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझ से बोलते हुए फिर कहा : देखो! और मैंने लोगों को परमेश्‍वर के मेमने को ले जाते हुए देखा और अनन्त पिता के उस पुत्र का न्याय सांसारिक रीति के अनुसार किया गया; जिसको मैंने देखा और उसका साक्षी-प्रमाण हूं।

३३. और मैं, नफी ने, देखा कि उसको क्रूस पर चढ़ाया गया और जगत के पापों के लिए उसकी हत्या की गई।

३४. उसकी मृत्यु के पश्‍चात् मैंने बड़ी-बड़ी भीड़ों को मेमने के शिष्यों से लड़ने के लिए एकत्रित

(५) १नफी ११:२५मरो० ८:२६. (६) १नफी ८:१९. (७) १ नफी १०:७-१०.२नफी ३१:४-१४. (८) १ नफी ११:३४, ३५, ३६, १२:६, १३:२४, २६, ४०, ४१. १४:२०.

होते देखा : प्रभु के दूत द्वारा बारहों को मेमने के शिष्य कहा गया।

३५. संसार के लोगों की भीड़ एक साथ एकत्रित हुई; और मैंने देखा कि वे (६) एक बहुत बड़े मकान में थे जो कि उसी प्रकार का था जैसा कि मेरे पिता ने देखा था। और परमेश्वर का दूत पुनः मुझसे बोला : जगत और उसके विवेक को देखो; हां, देखो इस्राएल का घराना मेमने के बारह शिष्यों से लड़ने के लिए एक साथ एकत्रित हुआ है।

३६. और मैंने देखा कि वह बड़ा महल संसार का अहंकार था और मैं इसका लेख-प्रमाण देता हूं; और वह महल गिर पड़ा जिसका गिरना अत्यन्त ही भयावह था। और प्रभु के दूत ने फिर कहा : जो देश, जाति, भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी जनता और लोग मेमने के शिष्यों से लड़ेंगे उनका विनाश भी इसी प्रकार से होगा।

अध्याय १२

नफी का प्रतीज्ञा के देश का दर्शन पाना—भविष्य में नफी के वंश के निमित मुक्तिदाता का आना—उनकी धर्मपरायणता—दुराचार और पतन का पूर्व ज्ञान।

१. और ऐसा हुआ कि दूत ने मुझसे कहा : देखो, अपने वंश और अपने भाइयों के वंशों को देखो। और जब मैंने देखा तब मुझे प्रतिज्ञा का देश दिखाई दिया; और मुझे लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ भी दिखाई दी जिसकी संख्या समुद्र तट के बालू के समान थी।

२. और ऐसा हुआ कि मैंने जन समूहों को एक दूसरे से संग्राम करने के लिए एकत्रित होते हुए देखा; मैंने युद्ध होते और युद्ध के अफवाह फैलते और अपने लोगों को तलवार से कट कट कर बहुत बड़ी संख्या में मरते देखा।

३. और ऐसा हुआ कि मैंने देश में लड़ते और कलह में कई पीढ़ियों को गुजरते देखा, और मैंने बड़े-बड़े नगरों को देखा, हां इतने नगरों को जिनकी गिनती मैं नहीं कर सका।

४. और ऐसा हुआ कि मैंने प्रतिज्ञा के देश के ऊपर अन्धियारे का (१) कुहरा छाए हुए देखा; और मैंने बिजली चमकते, मेघ गरजते, भूकम्प आते और हर एक प्रकार के कोलाहल होते देखा; और मैंने पृथ्वी और चट्टानों को फटते और पर्वतों को गिर कर चूर चूर होते देखा; मैंने पृथ्वी के मैदानों को टूटते और अनेक नगरों को पृथ्वी के अन्दर धसते और आग से जलते हुए देखा : और भूकम्प के द्वारा नगरों को धूल में मिलते भी देखा।

५. और ऐसा हुआ कि इन सब घटनाओं को देखने के पश्चात् मैंने पृथ्वी के ऊपर से अंधियारे के भाप को हटते देखा, और प्रभु के भयानक न्याय द्वारा गिरे लोगों की भीड़ को देखा।

६. और मैंने स्वर्ग को खुलते और परमेश्वर के मेमने को स्वर्ग से (२) उतरते देखा; और उसने उतर कर उन लोगों को दर्शन दिया।

७. मैंने (३) बारह जनों पर पवित्र आत्मा को उतरते देखा और वे परमेश्वर के अभिषिक्त चुने हुए व्यक्ति थे और मैं इसका अभिलेख रख रहा हूं।

८. और दूत ने मुझसे कहा : मेमने के बारह शिष्यों को देखो जिनको तुम्हारे वंश वालों को उपदेश देने के लिए चुना गया है।

९. और उसने मुझसे कहा : क्या मेमने के बारह चेले तुम्हें याद हैं? देखो वे वही हैं जो इस्राएल के बारह जातियों के न्यायकर्ता होंगे; इसलिए, तुम्हारे वंश के बारह प्रचारकों का न्याय उन्हीं के द्वारा होगा; क्योंकि तुम इस्राएल के वंश के हो।

१०. और ये बारह प्रचारक जिन्हें तुम देख रहे हो तुम्हारे वंश के न्यायकर्ता होंगे। और, देखो, वे सदा के लिए पवित्र हैं; क्योंकि परमेश्वर के मेमना में विश्वास होने के कारण उनकी पोशाक उसके रक्त में धुल कर निर्मल सफेद हो चुकी है।

११. और दूत ने मुझसे कहा : देखो, और मैंने

(६) १ नफी ८:२६-२८. अध्याय १२. (१) १ नफी १९:१०-१२. २ नफी २६:३-७. इला० १४:२०-२७, ३ नफी अध्याय ८-१०. (२) २ नफी २६:१, ९, अल० १६:२०. ३ नफी ११:३-१७. (३) ३ नफी ११:२२. १२:१. १३:२५. १५:११. १८:३७. १९:४-३६. अध्याय २७, २८. ४ नफी १:१४.

(४) तीन पीढ़ियों को धर्मपरायणता से गुजरते देखा जिनकी पोशाक ईश्वर के मेमने की तरह निर्मल सफेद थी। और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा : मेमने में इसके विश्वास के कारण इनको मेमने के लहू से निर्मल किया गया है।

१२. और मैं नफी ने, चौथी पीढ़ी को भी धर्मानुकूल आचरण करते हुए गुजरते देखा।

१३. और ऐसा हुआ कि मैंने जन समूहों को एकत्रित होते देखा।

१४. और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा अपने और अपने वंशों को देखो।

१५. और ऐसा हुआ कि जब मैंने देखा तब मुझे (५) अपने वंश के लोगों को बहुत बड़ी भीड़, अपने भाइयों के वंश के विरुद्ध एकत्रित होते हुए दिखाई दी; वे एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्रित हुए थे।

१६. और मुझसे स्वर्गदूत ने कहा : दूषित जल के उस सोते को देखो जिसको तुम्हारे पिता ने देखा था, हां, (६) उस नदी को भी देखो जिसकी चर्चा तुम्हारे पिता ने की थी और उसकी गहराई अधोलोक की गहराई है।

१७. और अंधेरे का धुन्ध शैतान का प्रलोभन है, जो आंखों को अन्धा कर देता है, और मानव वंश के हृदयों को कठोर बनाता और लोगों को उस चौड़े रास्ते पर ले जाता है जहां वे नष्ट होते हैं और खो जाते हैं।

१८. और वह बड़ा महल जिसे तुम्हारे पिता ने देखा था, वह लोगों की निरर्थक कल्पना और अहंकार है। और अमर परमेश्वर के न्याय शब्दों और मसीह, जो परमेश्वर का मेमना है, जिसकी साक्षी पवित्र आत्मा है, जगत के आरम्भ से वर्तमान समय तक और वर्तमान समय से भविष्य में सदा के लिए रहेगा, उनसे उनको एक बहुत बड़ी और भयंकर खाई विभाजित कर रही है।

१९. और जब स्वर्गदूत इन शब्दों को कह रहा था, तब उसके कहे अनुसार मैंने अपने भाइयों के वंश वालों को मेरे अपने वंश के विरुद्ध उपद्रव मचाते हुए देखा; और मैंने अहंकार, और शैतान के प्रलोभनों के कारण मेरे वंश को मेरे भाइयों के वंश द्वारा पराजित करते हुए देखा।

२०. और ऐसा हुआ कि मैंने अपने भाइयों के वंश को मेरे वंश को पराजित करके देश भर में भारी संख्या में फैलते देखा।

२१. और मैंने उनको भारी जन समूहों में एकत्रित होते और उनमें युद्ध और युद्ध के अफवाह फैलते देखा; और इसी प्रकार के युद्ध और युद्ध के अफवाहों में (७) कई पीढ़ियों को गुजरते देखा।

२२. और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा : देखो, ये अविश्वास में ही दुर्बल हो जाएंगे।

२३. और ऐसा हुआ कि मैंने देखा कि वे अविश्वास में दुर्बल होकर (८) काले और घृणित हो गए, जिनमें आलस और सभी प्रकार के घृणित पापाचार होने लगे।

अध्याय १३

यहूदियों से भिन्न जाति वालों के राष्ट्र—एक महान घृणित गिरजा—अमरीका के इतिहास का पूर्वाभास—धर्मशास्त्र (बाइबिल) और मॉरमन धर्मशास्त्र।

१. और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझसे बोलते हुए कहा : देखो, और मैंने कई राष्ट्रों और राज्यों को देखा।

२. और दूत ने मुझसे पूछा : तुम क्या देखते हो? और मैंने उत्तर दिया मैं कई राष्ट्रों और राज्यों को देखता हूं।

३. और उसने मुझसे कहा: ये सब राष्ट्र और राज्य यहूदियों से भिन्न जाति वालों के हैं।

४. और ऐसा हुआ कि यहूदियों से भिन्न जाति वालों में मैंने एक बहुत (१) बड़े गिरजा की नींव को देखा।

(४) २ नफी, २६:९, १०. अल० ४५:१०-१४. इला० १३:५, ६, ९, १०. ३ नफी २७:३१, ३२. मा० ६. (५) मार० ६. (६) १ नफी ८:१३, १४, १५:२६-२९. (७) १ नफी १२:३. २ नफी २६:२. (८) २ नफी ५:२०-२५. अल० ३:६-१९. मार० ५:१५. अध्याय १३. (१) पद्य ६, २६, २८, ३२, ३४. १ नफी १४:३, ९-१७. ईसा से पूर्व ६०० और ५९२ के मध्य

५. और स्वर्गदूत ने मुझ से कहा: उस गिरजा की नींव को देखो जो अत्यन्त घृणित है, जो परमेश्वर के (२) संतों की हत्या करता, हां, उन्हें दारुण यन्त्रणा देता, बन्धनों से बांधता और उनकी गर्दनों पर लोहे के जुए रख कर उन्हें गुलाम बनाता है।

६. और ऐसा हुआ कि मैंने इस महान घृणित गिरजा को (३) देखा और मैंने देखा कि उसकी नींव डालने वाला स्वयं शैतान था।

७. और मैंने (४) सोना, चांदी, रेशम, गुलनारी कपड़े, उत्तम सन के वस्त्र तथा अनेकों प्रकार की अनमोल पोशाकों को देखा; और मैंने बहुत सी वेश्याओं को भी देखा।

८. और दूत ने मुझसे कहा : सोना, चांदी, रेशम, गुलनारी कपड़े, महीन बुने हुए वस्त्र, दूसरी अनमोल पोशाकों और वेश्याओं को देखो, ये सब इस घृणित गिरजा की आकांक्षाएं हैं।

९. और संसार से अपनी बड़ाई के लिए यह परमेश्वर के संतों को नष्ट करता और गुलामी में लाता है।

१०. और ऐसा हुआ कि मैंने कई सागर देखे जो गैर-यहूदियों को मेरे भाइयों के वंशजों से अलग करते थे।

११. और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझसे कहा : देखो, परमेश्वर का क्रोध तुम्हारे भाइयों के ऊपर है।

१२. और मैंने यहूदियों से भिन्न जाति वालों में एक व्यक्ति को देखा जो मेरे भाइयों के वंशजों से दूर इन समुद्रों के दूसरी ओर था; और मैंने परमेश्वर की आत्मा को उतर कर उस व्यक्ति पर प्रभाव डालते देखा जिससे वह समुद्रों को पार करता हुआ मेरे भाइयों के वंशजों के पास गया जो कि वचन द्वारा दिए गए देश में थे।

१३. और ऐसा हुआ कि मैंने परमेश्वर की आत्मा को दूसरे गैर-यहूदियों के ऊपर प्रभाव डालते देखा और वे गुलामी को त्याग कर सागर को पार करते हुए आगे बढ़े।

१४. और ऐसा हुआ कि मैंने गैर-यहूदियों के अनेकों जन-समूहों को प्रतिज्ञा के देश में देखा: और मैंने अपने भाइयों के ऊपर परमेश्वर के क्रोध को भी देखा; जो दूसरी जातियों के समक्ष तितर बितर हो गए और पीटे गए।

१५. और मैंने परमेश्वर की आत्मा को देखा जो यहूदियों से भिन्न जाति वालों के ऊपर थी: और उन्होंने प्रगति करते हुए देश को अपने उत्तराधिकार की भूमि बना लिया; और मैंने देखा कि वे श्वेतांग और अत्यन्त सुन्दर थे जैसे कि मृत्यु दण्ड से पूर्व मेरे (५) लोग थे।

१६. और ऐसा हुआ कि मैं नफी ने देखा कि जो यहूदियों से भिन्न जाति वाले गुलामी त्याग कर वहां गए थे, उन्होंने परमेश्वर के समक्ष अपने आपको दीन बना लिया; और परमेश्वर की शक्ति उनके साथ थी।

१७. और मैंने उन गैर-यहूदियों से युद्ध करने, उनकी मूल जाति के लोगों को जल पर, और थल पर भी एकत्रित होते देखा।

१८. और मैंने देखा कि परमेश्वर की शक्ति उनके साथ थी और परमेश्वर का क्रोध उन पर हुआ जो उनसे युद्ध करने के लिए एकत्रित हुए थे।

१९. और मैं, नफी ने देखा कि जो (६) दूसरी जाति गुलामी त्याग कर वहां गए थे उनको परमेश्वर की शक्ति द्वारा सभी दूसरे राष्ट्रों से मुक्त किया गया।

२०. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, देखा कि वे उस देश में समृद्ध हुए; और मैंने (७) एक पुस्तक देखी, जो उन लोगों में ले जाई गई।

२१. और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा : क्या तुम उस पुस्तक का अर्थ जानते हो?

२२.और मैंने उससे कहा : मैं नहीं जानता।

२३. और उसने कहा : देखो, वह एक यहूदी के मुख द्वारा प्रकट हो रही है। और मैं, नफी ने, यह देखा; तब उसने मुझसे कहा : जिस पुस्तक को तुम देख रहे हो वह यहूदियों का एक अभिलेख है

(२) पद्य ९, १ नफी १४:१३. प्रकाशित वा० १७:६. १८:२४. (३) १ नफी १४:९, १०, २२:२२, २३. (४) मार०८:३६-३८ प्रकाशित वा० १८:१०. १७. (५) मार० ९:१७-२२. (६) २ नफी १०:१०-१२. (७) पद्य २३, २८, ३८, ४०.

जिसमें परमेश्वर का अनुबंध है जो उसके और इस्राएल के घराने के बीच था; और उसमें पवित्र भविष्यवाणियां भी हैं: और वह उसी प्रकार का अभिलेख है जिस प्रकार (८) पीतल की पटियों पर खुदा हुआ है, केवल वह उतना विस्तृत नहीं है: फिर भी उसमें परमेश्वर द्वारा इस्राएल के घराने से किया गया वचन है; इसलिए वह गैर-यहूदियों के लिए बड़े महत्व का है।

२४. और परमेश्वर के दूत ने मुझसे कहा: तुमने देखा कि वह पुस्तक एक यहूदी के मुख से आई है; और जबकि वह एक यहूदी के मुख से आई है, तब उसमें उस प्रभु का सुसमाचार स्पष्ट रूप से विद्यमान है जिसका प्रमाण उसके बारह शिष्य देते हैं और यह साक्षी वे उसी सत्य के आधार पर देते हैं, जो परमेश्वर के मेमने में है।

२५. इसलिए ये सब बातें शुद्ध रूप में यहूदियों से गैर-यहूदियों के पास उस सच्चाई के अनुसार जा रही है, जो कि परमेश्वर में है।

२६. और मेमने के बारह शिष्यों के हाथों से यहूदियों और फिर यहूदियों से दूसरी जाति वालों के पास पहुंचने के पश्चात्, तुम एक बड़े और घृणित गिरजे की नींव को देख रहे हो, जो कि सभी अन्य गिरजाओं से अधिक घृणित है; क्योंकि देखो (९) मेमने की इंजील में से उन्होंने बहुत सी ऐसी बातों को निकाल दिया है, जो कि स्पष्ट और सब अधिक महत्वपूर्ण थीं और उन्होंने परमेश्वर के शर्तनामे की कई शर्तों को भी निकाल दिया है।

२७. और यह सब उन्होंने प्रभु के सही रास्ते को दूषित करने, मानव वंश के हृदयों को कठोर करने और उन्हें अन्धा बनाने के विचार से किया है।

२८. इसलिए तुम देखते हो कि इस महान घृणित गिरजा के हाथों में इस पुस्तक के पड़ जाने पर इस पुस्तक से, जो परमेश्वर के मेमने की यह पुस्तक है, बहुत सी स्पष्ट और अनमोल बातें निकाल दी गई हैं।

२९. और इन स्पष्ट और मूल्यवान बातों के निकल जाने के पश्चात् यह पुस्तक गैर-यहूदियों के सभी राष्ट्रों में गई जिसके पश्चात् उस सागर को पार कर गई जिसे तुमने दूसरी जातियों को गुलामी से मुक्त होकर पार करते देखा था। और तुम देखते हो—पुस्तक में बहुत सी स्पष्ट और मूल्यवान बातें, जो मानव सन्तति को समझाने में स्पष्ट और मूल्यवान थीं क्योंकि ये स्पष्ट बातें परमेश्वर के मेमने में थीं; मेमने की इंजील में से इन निकाली गई बातों के कारण बहुत से लोग ठोकर खाकर गिरते हैं; हां, इतने अधिक पतित होते हैं कि वे शैतान के वंश में आ जाते हैं।

३०. फिर भी तुम देखते हो कि जो (१०) दूसरी जाति के लोग गुलामी से मुक्त होकर वहां गए और परमेश्वर की शक्ति द्वारा, अन्य देशों से श्रेष्ठ चुने हुए उस देश में, सभी अन्य राष्ट्रों से ऊपर उठाए गए; यह वही देश है जिसे प्रभु परमेश्वर ने तुम्हारे पिता को वचन द्वारा उनके वंशजों को बिरासत में दिया है; इसलिए तुम देखते हो कि गैर-यहूदियों के द्वारा तुम्हारे उन (११) मिश्रित वंशजों को प्रभु परमेश्वर सम्पूर्ण नष्ट नहीं करने देगा जो कि तुम्हारे बन्धुओं में होंगे।

३१. वह गैर-यहूदियों द्वारा (१२) तुम्हारे भाइयों के वंशजों को भी नष्ट नहीं करने देगा।

३२. जिस गिरजा को तुमने बनते हुए देखा है उसके द्वारा मेमना के सुसमाचार में से अनेक स्पष्ट और महत्वपूर्ण भागों को निकाल देने के कारण जिस भयानक अंधकार में गैर-यहूदियों को तुम देख रहे हो, उसमें प्रभु परमेश्वर उन्हें सदैव के लिए नहीं रहने देगा।

३३. इसलिए परमेश्वर का मेमना कहता है: मैं यहूदियों से भिन्न जाति वालों के प्रति तब तक दयालु बना रहूंगा जब तक कि इस्राएल के घराने के अवशेष के महान न्याय का समय, नहीं आता।

३४. और ऐसा हुआ कि प्रभु का दूत मुझसे बोला: देखो, परमेश्वर का मेमना कहता है कि इस्राएल के घराने के अवशेष से मिलने के पश्चात्, यह अवशेष जिसके विषय में मैं कहता हूं, वे

(८) देखो १, १ नफी ३. (९) पद्य १८:३२. (१०) २ नफी १०:१०-१४. (११) अल० ४५:१०-१४. (१२) पद्य ३३, ३४. अल० ४५:१४. ३ नफी १६:७-१०, २१:४ मार० ५:१९-२१.

तुम्हारे पिता के वंशज हैं, उनका न्याय करके, और गैर-यहूदियों के हाथों से उनको (१३) दण्ड देने के पश्चात्, जबकि गैर-यहूदी भी वेश्याओं की जननी, घृणित गिरजा के कारण ठोकर खाकर गिरते हैं; जिससे कि मेमने के सुसमाचार की अधिकांश स्पष्ट मूल्यवान बातें हटा दी गई हैं, तब उस समय, मेमना कहता है कि मैं गैर-यहूदियों पर इतना कृपालू बनूंगा कि मैं अपनी शक्ति के द्वारा उनके लिए अपना बहुत अधिक स्पष्ट और मूल्यवान सुसमाचार लाऊंगा।

३५. मेमना कहता है : सुनो, मैं तुम्हारे वंशजों में स्पष्ट प्रकट होऊंगा, और वे मेरे उपदेश के कारण बहुत सी बातों को लिखेंगे जो कि स्पष्ट और मूल्यवान होंगी और तुम्हारे और तुम्हारे भाइयों के वंशजों के बहुत से लोगों का अविश्वास में नष्ट और संख्या में कम होने के पश्चात्, देखो, इन बातों को (१४) छुपा दिया जाएगा जो फिर मेमने की शक्ति और वरदान के द्वारा गैर-यहूदियों में प्रकट होगी।

३६. और मेमना कहता है कि उन्हीं में मेरा सुसमाचार, मेरी सत्य की शिला, और मुक्ति लिखी जाएगी।

३७. और वे लोग धन्य हैं (१५) जो उस दिन मेरा राज्य लाने का प्रयत्न करेंगे क्योंकि उनको पवित्रात्मा का उपहार और सामर्थ्य प्राप्त होगा : और अगर वे अंत तक सहनशील बने रहेंगे तब अन्तिम दिन उनका उत्थान किया जाएगा और मेमना के अनन्त राज्य में उनको बचा लिया जाएगा : और जो कोई शान्ति करेगा हां, वह महान आनन्ददायी समाचार होगा और वे पर्वत पर कितना सौंदर्यपूर्ण होंगे।

३८. और ऐसा हुआ कि मैंने अपने भाइयों के वंशजों के अवशेष और परमेश्वर (१६) के मेमने की पुस्तक को देखा जो एक यहूदी के मुख से निकली थी और जो गैर-यहूदियों से मेरे भाइयों के वंशजों के अवशेष लोगों को प्राप्त हुई थी।

३९. और उनको उसके प्राप्त होने के पश्चात् मैंने (१७) अन्य पुस्तकों को देखा जो कि मेमने की शक्ति द्वारा गैर-यहूदियों से उनको प्राप्त हुई थीं, जिसके द्वारा गैर-यहूदियों को, मेरे भाइयों के अवशेष वंशजों को और विश्व भर में फैले हुए यहूदियों को विश्वास आए कि मेमने के बारह शिष्यों के अभिलेख सत्य हैं।

४०. और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा : ये अन्तिम अभिलेख, जिन्हें तुमने यहूदियों से भिन्न जाति वालों में देखा है, वे मेमने के बारह शिष्यों के (१८) प्रथम अभिलेखों की सच्चाई की स्थापना करेंगे और उसमें से जो स्पष्ट और मूल्यवान बातों को निकाल दिया गया है उसकी स्पष्ट पूर्ति करेंगे : और हर एक जाति, भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों और लोगों को यह जानकारी देंगे कि परमेश्वर का मेमना शाश्वत पिता का पुत्र और जगत का उद्धारक है; और हर एक को उसकी शरण में जाना चाहिए, नहीं तो उनकी रक्षा नहीं हो सकेगी।

४१. और उनको मेमना के मुख से निकले वचनों के अनुसार उसके पास आना चाहिए; और मेमना के मुख से निकले वचनों को तुम्हारे वंशजों के प्रमाण लेखों और मेमने के बारह शिष्यों के अभिलेखों के साथ स्पष्ट किया जाएगा; इसलिए वे दोनों (१९) एक साथ ही स्थापित होंगे : क्योंकि सारे जगत का एक ही ईश्वर और एक ही गड़रिया है।

४२. और वह समय आएगा जब कि वह सभी राष्ट्रों—यहूदियों और गैर-यहूदियों में समान रूप से प्रकट होगा; और यहूदियों और दूसरों में प्रकट होने के पश्चात् वह गैर-यहूदियों और यहूदियों में प्रत्यक्ष होगा, और अन्तिम प्रथम और प्रथम अन्तिम होगा।

अध्याय १४

गैर-यहूदियों के लिए या तो आशीर्वाद या शाप—केवल दो गिरजा—वेश्याओं की जननी को दण्ड—भेद खोलने वाला यूहन्ना का धर्मार्थ कार्य—नफी के दिव्य-दर्शन का अन्त।

१. और ऐसा हुआ कि अगर यहूदियों से

(१३) देखो ४. (१४) २ नफी २७:६-२६. ३ नफी १६:४. मार० ८:४. (१५) २ नफी ३०:३. या० ५:७०-७५. ६:२-३. (१६) पद्य ४०. (१७) ३ नफी २७:२५-२६. (१८) पद्य ३८. (१९) २ नफी ३:१२. २ नफी २९:१३-१४. येह० ३७:१५-२३.

भिन्न जाति वाले लोग उस समय परमेश्वर के मेमने की सुनेंगे जबकि वह उनमें अपनी वाणी, (१) सामर्थ्य और कर्म द्वारा तब तक प्रकट रहेगा जब तक उनकी सारी रुकावटें हट नहीं जायेंगी—

२. और जो परमेश्वर के मेमने के प्रति अपने हृदयों को कठोर नहीं करते वे तुम्हारे पिता के वंशजों में गिने जाएंगे; हां, उनकी (२) गिनती इस्राएल के घराने में होगी और वे वचन द्वारा दिए गए देश के वरदानित निवासी होंगे। उनको फिर गुलामी के बन्धन में पड़ना नहीं पड़ेगा; और इस्राएल के (३) घराने को पुनः परेशान नहीं किया जाएगा।

३. और वह भारी गड्ढ़ा जो उनके लिए उस महान घृणित गिरजा के द्वारा खोदा गया है जिसकी स्थापना शैतान और उसके बच्चों के द्वारा की गई थी जिससे वह लोगों को बहका कर नर्क में ले जा सके—हां, वह महान गड्ढ़ा जो मनुष्य को गिराने के लिए खोदा गया था, वह खोदने वालों से ही भर जाएगा और यह उनको पूरी तरह नष्ट कर देगा, उनकी आत्मा नष्ट नहीं की जाएगी परन्तु उस अधोलोक में फेंकी जाएगी जिसका अन्त नहीं; यह परमेश्वर के मेमने का कहना है।

४. क्योंकि देखो, यह शैतान की गुलामी और परमेश्वर के न्यायानुसार उन लोगों पर होगा जो उसके सामने दुराचार और अति घृणित कार्य करेंगे।

५. और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत ने मुझ नफी से कहा : तुमने यह देखा कि अगर यहूदियों से भिन्न जाति वालों ने अपने पापों पर पश्चात्ताप किया तब यह उनके लिए भला होगा; और तुम परमेश्वर द्वारा इस्राएल के घराने के साथ किया गया शर्तनामा भी जानते हो; और तुम यह भी सुन चुके हो कि जो कोई अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं करेगा वह नष्ट हो जाएगा।

६. और अगर यहूदियों से भिन्न जाति वालों ने परमेश्वर के मेमना के विरुद्ध अपने हृदयों को कठोर बना लिए तब उनको (४) सन्ताप होगा।

७. क्योंकि परमेश्वर का मेमना कहता है कि वह समय आएगा जब कि मानव वंश में मैं (५) आश्चर्यजनक कार्य करूंगा; वह कार्य जो या तो एक हाथ की ओर अथवा दूसरे हाथ की ओर अनन्त जीवन के लिए होगा— जो या तो उनको शान्ति और अनन्त जीवन देने के लिए निर्णायक होगा, या फिर उनके हृदयों को कठोर कर के और विवेक से अन्धा बना के, उन्हें दास बनाएगा, और उनको सांसारिक जीवन और पारलौकिक जीवन दोनों से ही शैतान की गुलामी में ले जाएगा, जिसके विषय में मैंने चर्चा की है।

८. और ऐसा हुआ कि स्वर्गदूत इन शब्दों को कह लेने के पश्चात् मुझसे बोला : क्या तुम्हें इस्राएल के घराने के साथ बनाया हुआ शर्तनामा याद है? मैंने उससे कहा : हां।

९. और तब ऐसा हुआ कि उसने मुझसे कहा : उस महान घृणित गिरजा को देखो जो कि घृणित कार्यों की जननी है और जिसकी स्थापना करने वाला शैतान है।

१०. और उसने मुझसे कहा : देखो, केवल (६) दो गिरजा हैं : एक गिरजा परमेश्वर के मेमने का है, और दूसरा गिरजा है शैतान का; इसलिए जो परमेश्वर के मेमने के गिरजा का सदस्य नहीं है वह शैतान के उस महान गिरजे का सदस्य है (७) जो कि सभी घृणित कार्यों की जननी और सारे विश्व की दुराचारणी है।

११. और ऐसा हुआ कि जब मैंने देखा तब इस सारे विश्व की वेश्या को बहुत से सागरों के पानी के ऊपर बैठे हुए देखा, और उसका राज्य विश्व की सभी जगहों पर, सभी राष्ट्रों में, हर एक भाषा-भाषी समाज और लोगों में था।

१२. और ऐसा हुआ कि मैंने परमेश्वर के मेमने की गिरजा को देखा (८) जिस के सदस्य उस वेश्या के कारण बहुत कम थे, जो कई सागर के जल के ऊपर बैठी थी; फिर भी मैंने देखा कि मेमने, जो कि परमेश्वर के सन्त थे, का गिरजा भी सारे जगत के ऊपर फैला हुआ था, परन्तु उनका

(१) पद्य १४. १ नफी १३:३७. या० ६:२, ३. (२) ३ नफी २१:६, २२-२५. अध्याय ३०. ए० १३:१०. (३) २ नफी १०:१०-१४. (४) २ नफी २८:३२. ३ नफी १६:७-१५, २१:११-२१. (५) यशा० २९:१४. (६) पद्य ११-१७, २२:१४, २२-२६. (७) पद्य ११-१७. प्र० वा० १७:५-१५. (८) ३ नफी १४:१४. यशा० २४:६. मत्ति २४:३७.

राज्य उस महान दुराचारणी, जिसको मैंने देखा था, के दुराचार के कारण छोटा था।

१३. और ऐसा हुआ कि मैंने उस घृणित कार्यों की महान जननी को, सारे जगत भर में यहूदियों से भिन्न जाति वाले सभी राष्ट्रों में, भारी जन समूहों को परमेश्वर के मेमना से युद्ध करने के लिए, एकत्रित करते हुए देखा।

१४. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, परमेश्वर के मेमने की शक्ति को (९) देखा, कि वह मेमने के गिरजा के सन्तों के ऊपर और परमेश्वर के शर्तनामा के अन्तर्गत आने वाले लोगों के ऊपर आई जो सारे जगत में फैले हुए थे; और वे सत्य-निष्ठा के हथियार लिए हुए परमेश्वर के सामर्थ्य में शोभायमान हो रहे थे।

१५. और मैंने देखा कि उस अति घृणित गिरजा के ऊपर परमेश्वर का इतना अधिक क्रोध हुआ कि उसके सभी राष्ट्रों और लोगों में युद्ध का आतंक फैल गया।

१६. और जब कि दुराचार की उस जननी के सभी राष्ट्रों में (१०) युद्ध और युद्ध का आतंक फैल रहा था तब उस दूत ने मुझसे कहा: देखो, वेश्याओं की जननी के ऊपर परमेश्वर के क्रोध को देखो; और तुम इन सब बातों को देख रहे हो—

१७. और जब वह दिन आएगा जबकि परमेश्वर का (११) क्रोध वेश्याओं की जननी के ऊपर उड़ेला जाएगा, जो कि सारे विश्व का अति घृणित गिरजा है, और जिसकी नींव खुद शैतान है, तब उस दिन पिता अपने शर्तनामा को पूरा करने के लिए कार्य आरम्भ करेगा जिसे उसने इस्राएल के घराने के अपने लोगों के लिए बनाया था।

१८. और ऐसा हुआ कि दूत ने मुझसे कहा: देखो!

१९. और मैंने देखा तो मुझे एक व्यक्ति दिखाई दिया जो सफेद लबादा पहिने हुए था।

२०. और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा: देखो यह मेमने के बारह शिष्यों में से (१२) एक है।

२१. देखो, यह इन बातों का अवशेष देखेगा और लिखेगा; हां यह और भी बहुत सी बातों को देख कर लिखेगा।

२२. और यह जगत के अन्त होने के विषय में भी लिखेगा।

२३. इसलिए यह जो कुछ लिखेगा वह सब ठीक और सत्य होगा; और देखो, वह सब उस (१३) पुस्तक में लिखा हुआ है जिसको तुमने एक यहूदी के मुख से निकलते हुए देखा था; और जब वह यहूदी के मुख से निकला था, अर्थात् जिस समय यहूदी के मुख से वह पुस्तक आई, उस समय जो बातें उसमें लिखी गई थीं, वे सब स्पष्ट और शुद्ध थीं, और वे सब से मूल्यवान और हर एक को समझने में सरल थीं।

२४. और देखो जो बातें मेमना का यह शिष्य लिखेगा उनमें से बहुत सी बातों को तुमने देखा और जो बाकी है, उसे भी तुम देखोगे।

२५. और जिन बातों को तुम अब देखोगे उसे मत लिखना, क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने मेमना के उस शिष्य को उन बातों को लिखने के लिए नियुक्त किया है।

२६. और दूसरे भी जो उसके पास गए उनको वह सब कुछ दिखाया; और उन्होंने (१४) उन्हें लिखा जिसको, प्रभु के इच्छित समय पर इस्राएल के घराने में, अपने शुद्ध रूप में आने के लिए, उस सच्चाई के अनुरूप जो कि मेमने में है, मुहरबन्द कर दिया गया है।

२७. और मैं, नफी ने यह सुना और उसकी साक्षी देता हूं कि स्वर्गदूत के कहे अनुसार मेमना के उस चेले का नाम (१५) यूहन्ना था।

२८. और देखो, नफी को उन शेष बातों को जिसे मैंने देखा, लिखना मना है; इसलिए जो कुछ मैंने लिखा, वह पर्याप्त है; और मैंने जो कुछ देखा, उसका यह केवल एक छोटा भाग है।

२९. और मैं इस बात की साक्षी देता हूं कि

(९) १ नफी १३:३७-३८. या० ६:२, ३. (१०) १ नफी २२:१३, १४. यशा० ६६:१५, १६. (११) १ नफी २२:१५, १६. ३ नफी २०:२०. २१:२०, २१. मार० ८:४१. (१२) पद्य० २७. (१३) १ नफी १३:२०, ३८, ४०. (१४) २ नफी २७:६-२३. एे० ३:२१-२७. १२:२१. (१५) पद्य २०.

जिन बातों को (१६) मेरे पिता ने देखा था, उन्हें मैंने देखा और इन्हें प्रभु के दूत ने मुझे बताया।

३०. और अब मैं उन बातों के विषय में बोलना समाप्त करता हूं जिनको मैंने उस समय देखा था जब कि मैं आत्मा में खोया हुआ था; और जिन बातों को मैंने देखा और लिखा, वे सब सत्य और सब यथार्थ हैं। आमीन।

अध्याय १५

नफी द्वारा लेही की शिक्षा की व्याख्या—जैतून का वृक्ष—जीवन का वृक्ष—परमेश्वर की वाणी।

१. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी आत्मा में लीन होकर, इन सब बातों को देखने के पश्चात् जब सचेत हुआ, तब अपने पिता के तम्बू में वापस लौटा।

२. और तब मैंने अपने भाइयों से अपने पिता द्वारा कही गई बातों के विषय में एक दूसरे से वाद-विवाद करते हुए देखा।

३. क्योंकि उसने उनसे अनेक ऐसी बातें कही थीं जिनका समझना कठिन था और उन्हें वे ही समझते थे जो उनको समझने के लिए प्रभु से सहायता की मांग करते, परन्तु उन्होंने अपने हृदय की कठोरता के कारण जैसे चाहिए था, वैसे प्रभु की ओर सहायता के लिए नहीं देखा।

४. और जब मैं, नफी उनके हृदय की कठोरता के कारण दुःखी हुआ, और इसलिए भी, कि मैं जानता था कि जो कुछ मैंने देखा था उसे मनुष्य वंशजों की दुष्टता के कारण टाला नहीं जा सकता था, और वह अवश्य घटित होगा।

५. और ऐसा हुआ कि मैं अपने दुःख के कारण व्याकुल हो गया, क्योंकि मैं (१) अपना क्लेश दूसरों के क्लेशों से बढ़ कर मानता था, क्योंकि मैंने अपने लोगों का विनाश होते और उनका पतन होते देखा था।

६. और ऐसा हुआ कि जब मैंने कुछ शक्ति पाई तब मैंने अपने भाइयों से उनके वाद-विवाद का कारण जानने की इच्छा से बातें कीं।

७. तब उन्होंने कहा : देखो, (२) हम अपने पिता की उन बातों को समझ नहीं पा रहे हैं जिसे उन्होंने जैतून की प्राकृतिक शाखाओं और यहूदियों से भिन्न जाति वालों के विषय में कही थीं।

८. और मैंने पूछा : क्या तुमने इस विषय पर परमेश्वर से जांच की?

९. और उन्होंने मुझसे कहा : नहीं क्योंकि ऐसी बातों की जानकारी परमेश्वर हमको नहीं कराता।

१०. मैंने उनसे कहा: देखो, ऐसा क्यों है कि तुम प्रभु की आज्ञाओं का पालन नहीं करते? ऐसा क्यों है कि तुम अपने हृदयों की कठोरता के कारण नष्ट हो जाओगे?

११. क्या तुम्हें वे बातें याद नहीं हैं जिन्हें प्रभु ने कही थीं? अगर तुम अपने हृदयों को कठोर नहीं करो और मुझसे विश्वास में इस आशा से पूछो कि तुम्हें उत्तर मिलेगा और लगन के साथ तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, तब निश्चय ही तुमको इन बातों की जानकारी कराई जाएगी।

१२. देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि इस्राएल के घराने की तुलना (३) जैतून के वृक्ष से प्रभु की आत्मा द्वारा की गई है जो कि हमारे पूर्वजों में थी, और देखो, क्या हमारा सम्बन्ध इस्राएल के घराने से टूट नहीं गया है, और क्या हम इस्राएल के घराने की शाखा नहीं हैं?

१३. और जब प्राकृतिक शाखाओं को कलम करके यहूदियों से भिन्न जाति वालों की पूर्णता के लिए लगाने से हमारे पिता का तात्पर्य यह है कि अन्तिम दिनों में कई वर्षों की अन्तराल के पश्चात् मानव वंश में मसीह का मानव शरीर में प्रकट होने के कई पीढ़ियों के पश्चात्, जब हमारे (४) वंशज अविश्वास में क्षीण हो जाएंगे तब मसीह का पूर्ण सुसमाचार यहूदियों से भिन्न जाति वालों के पास आएगा और उनसे हमारे वंश वालों को प्राप्त होगा।

(१६) १ नफी ८:२. (१) इनो० १३. मार० ६. (२) १ नफी ६:१, १०:१४. (३) पद्य १३:१६. २ नफी ३:५, याबू० ५:६, १-४. (४) ३ नफी २१:४. पद्य १४, २०. १ नफी २२:८-१२. ३ नफी ५:२१, २६. १६:१०-१२. अध्याय २१. मार० ५:१०-१५, २०, २१.

ईसा पूर्व ६०० और ५९२ के मध्य

१४. और उन दिनों में हमारे वंश के बचे लोगों को पता चलेगा कि वे इस्राएल के घराने के हैं और वे वह लोग हैं जिनके साथ प्रभु का शर्तनामा है, और तब उनको अपने पूर्वजों का और उद्धारक के इंजील का ज्ञान होगा जिसका उपदेश उनके पुरखों को उसने दिया था; इस तरह उनको अपने उद्धारक की जानकारी प्राप्त होगी और उसके सिद्धांत का ज्ञान प्राप्त होगा, जिससे कि वे यह जान सकेंगे कि उसके पास कैसे जा कर बचा जा सकता है।

१५. और उस दिन क्या वे आनन्द नहीं मनाएंगे और अनन्त परमेश्वर जो उनकी आधार-शिला और मुक्तिदाता है, की प्रशंसा नहीं करेंगे? हां, उस दिन क्या सच्ची ईश्वरीय दाख लता से बल और पोषण नहीं प्राप्त करेंगे? हां, क्या वे परमेश्वर की गोद में नहीं आएंगे?

१६. देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि इस्राएल के घराने में उनको फिर से याद किया जाएगा, और उनको जो कि जैतून की प्राकृतिक शाखा है, कलम करके, सच्चे जैतून के वृक्ष में लगाया जाएगा।

१७. और हमारे पिता का भावार्थ यह है कि यह काम तब तक नहीं होगा जब तक कि उनको गैर-यहूदी तितर-बितर न कर दें; और यह उसकी इच्छानुसार गैर-यहूदियों के द्वारा किया जाएगा; जिससे कि परमेश्वर अपनी शक्ति उनको दिखा सकेगा; क्योंकि यहूदियों के द्वारा या इस्राएल के घराना द्वारा उसकी उपेक्षा की जाएगी।

१८. इसलिए हमारे पिता ने केवल हमारे वंशजों के बारे में ही नहीं कहा, बल्कि पूरे इस्राएल के घराने के विषय में कहते हुए उस वचन के विषय में भी कहा जो अंतिम दिनों में पूरा किया जाएगा; वह वचन प्रभु ने हमारे पिता इब्राहीम को यह कहते हुए दिया था: तुम्हारे वंशजों द्वारा संसार के सारी सजातियों को आशीर्वाद प्राप्त होगा।

१९. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने उनसे इन विषयों पर बातें कीं; हां, मैंने (५) अंतिम दिनों में यहूदियों की पुनर्स्थापना के विषय में कहा।

२०. और मैंने उनको यशायाह के शब्दों को कहकर सुनाया जिसने यहूदियों, या इस्राएल के घराने के पुनर्व्यवस्थित होने की बातें कहते हुए कहा था कि उनके पुनर्व्यवस्थित होने के पश्चात् उनको फिर से परेशान नहीं किया जाएगा। और मैंने अपने भाइयों से बहुत सी अन्य बातें भी कहीं, जिससे कि वे शान्त हो गए और प्रभु के सामने दीन बन गए।

२१. और उन्होंने मुझसे फिर कहा: जो वस्तु हमारे पिता ने स्वप्न में देखी उसका क्या अर्थ है? उन्होंने जिस (६) वृक्ष को देखा उसका क्या अर्थ है?

२२. और मैंने उनसे कहा: वह जीवन के वृक्ष का प्रतिनिधित्व करता था।

२३. और उन्होंने मुझसे कहा: लोहे की (७) छड़ की जो वृक्ष तक गई थी, जिसे हमारे पिता ने देखा था, उसका क्या अर्थ है?

२४. और मैंने उनसे कहा कि वह परमेश्वर की वाणी है: और जो परमेश्वर की वाणी को सुनेगा और भली प्रकार वाणी के अनुसार आचरण करेगा, वह कभी भी नष्ट नहीं होगा; और न तो प्रलोभन और न शत्रु के जलते गर्म तीर उन पर विजय प्राप्त कर उन्हें अन्धा बना कर नष्ट होने के लिए ले जा सकेंगे।

२५. इसलिए मैं, नफी ने, उन्हें परमेश्वर की वाणी को मानने के लिए आग्रह किया; हां, मैंने उन्हें अपनी आत्मा की सारी शक्ति, अपनी सारी योग्यता के साथ परमेश्वर की वाणी को और उसकी आज्ञाओं को हर समय और हर बातों में मानने का सदुपदेश दिया।

२६. और उन्होंने मुझसे कहा: हमारे पिता ने जो (८) जलमय नदी देखी, उसका क्या तात्पर्य है?

२७. और मैंने उनसे कहा कि जो जल मेरे पिता ने देखा था वह गन्दगी है; चूंकि उनकी बुद्धि अन्य बातों में इतनी उलझी हुई थी कि वे जल के मैलेपन को देख न सके।

२८. और मैंने उनसे कहा कि वह एक भयानक (९) खाड़ी थी जो पापियों को जीवन के वृक्ष और परमेश्वर के संतों से अलग करती थी।

(५) १ नफी १९:१३-१६. २२:११, १२. २ नफी ६:१०-१५. ९:१, २. १०:५-९. २५:१६, १७. ३०:७, ८. ३ नफी ५:२१-२६. २०:२९-३४, २१:२६-२९. २९:१. ८. मार० ५:१४. (६) १ नफी ८:१०-१२. (७) १ नफी ८:१९. (८) १ नफी ८:१३. (९) १ नफी १२:१८. २ नफी १:१३. अल० २६:२०. इला० ३:२९.

२९. और मैंने उनसे कहा कि वह उस भयंकर अधोलोक की प्रतीक थी जो कि स्वर्गदूत के कहे अनुसार पापियों को धर्मात्माओं से अलग करता है; जिसकी चमक जलती हुई अग्नि के समान थी, जो ऊपर जाकर परमेश्वर में सदैव के लिए लीन होती रहेगी और जिसका अन्त नहीं था।

३०. और मैंने उनसे कहा कि हमारे पिता ने यह भी देखा था कि परमेश्वर का न्याय भी पापियों को धर्मत्माओं से अलग करता है: जिसकी चमक जलती हुई अग्नि के समान थी, जो ऊपर जा कर परमेश्वर में सदैव के लिए लीन होती रहेगी और जिसका अन्त नहीं था।

३१. और उन्होंने मुझसे कहा: क्या इसका अभिप्राय है मानव जीवन में शरीर का कष्ट, या पार्थिव शरीर की मृत्यु के बाद आत्मा की अन्तिम अवस्था, या इसके द्वारा वे बातें बताई गई हैं जो सांसारिक हैं।

३२. और ऐसा हुआ कि मैंने उनसे कहा कि यह सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों से सम्बन्ध रखता है; क्योंकि वह दिन आएगा जब कि उनका न्याय उनके कर्मों के अनुसार किया जाएगा; हां, वे कर्म जो मानव शरीर में परीक्षा काल के समय में किए गए होंगे।

३३. इसलिए अगर वे पापकर्म करते हुए मरेंगे, तब उनको फेंक दिया जाएगा और उन विषयों के बारे में जो कि आध्यात्मिक है, जिनका सम्बन्ध सत्यनिष्ठा से है, उन को भी अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए परमेश्वर के समक्ष लाया जाएगा; और अगर उनके कर्म (१०) गन्दे होंगे तब उनको गन्दगी में ही रहना पड़ेगा, और अगर वे गन्दे होंगे तब परमेश्वर के राज्य में नहीं रह सकेंगे; नहीं तो परमेश्वर का राज्य भी गन्दा हो जाएगा।

३४. लेकिन देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर का राज्य दूषित नहीं है, और परमेश्वर के राज्य में कोई भी गन्दी वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती; इसलिए गन्दी वस्तुओं के लिए एक गन्दा स्थान तैयार करना चाहिए।

३५. और एक स्थान तैयार किया गया है, हां, और वह है (११) भयंकर अधोलोक जिसके विषय में मैंने चर्चा की थी, और उसका संस्थापक है शैतान; इसलिए मनुष्य की आत्मा अन्तिम अवस्था में या तो परमेश्वर के राज्य में निवास करती है, या फिर उस न्याय के कारण (१२) जिसकी चर्चा मैंने की थी, निकाल कर फेंक दी जाती है।

३६. इसलिए पापियों को धर्ममात्माओं से अलग किया गया है और उन्हें जीवन के वृक्ष से भी वंचित रखा गया है जिसके फल अन्य फलों से अधिक मूल्यवान और इच्छित है; हां, वह परमेश्वर द्वारा दिए गए सभी उपहारों से बड़ा है, इस तरह मैंने अपने भाइयों से कहा। आमीन।

अध्याय १६

इस्माइल की कन्याओं से लेही के लड़कों का विवाह—आगे की यात्रा—इस्माइल की मृत्यु।

१. और ऐसा हुआ कि जब मैं नफी ने, अपने भाइयों से बोलना समाप्त किया, तब देखो, उन्होंने मुझसे कहा: तुमने मुझसे ऐसी (१) कठोर बातें की हैं जो हमारी सहनशीलता से परे हैं।

२. और ऐसा हुआ कि मैंने उनसे कहा कि मैं यह जानता हूं कि दुष्टों के विरुद्ध मैंने सत्य के अनुसार कठोर बातें कही हैं और धर्मात्माओं के लिए मैंने जो साक्षी दी है, कि वे अन्तिम दिन ऊपर उठाए जाएंगे, वह न्यायसंगत है; इसलिए अपराधी सच्चाई को कठोर मानते हैं क्योंकि यह उनको दो टुकड़ों में करने जैसा आघात पहुंचाती है।

३. और अब मेरे भाइयो, अगर तुम धर्मात्मा होते और सत्य को सुनने के लिए तैयार होते और उसको मानते जिससे कि परमेश्वर के समक्ष सिर ऊंचा करके चलते, तब तुम सच्चाई के प्रतिकूल असंतोष नहीं प्रकट करते और यह नहीं कहते: तुम हमारे विरुद्ध कठोर वचन कहते हो।

४. और मैं नफी ने, अपने भाइयों को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए परिश्रम के साथ सदुपदेश दिया।

(१०) २ नफी ९:१६. मू० २:३७. अल० ११:३७. मार० ९:४, १४. (११) पद्य २९. २ नफी १:१३. २:२९. ९:८-१९. २६:३४, ३६. २८:१५, २१, २३. या० ६:१०. अल० १२:१६-१८. ३ नफी २७:११, १२. मरो० ८:१३, १४,२१. (१२) पद्य ३०. सि० शर्त० २६, ३७, ३८, ८६:३६, ४४, ८४. अध्याय १६. (१) पद्य २, ३. २ नफी १:२६, २७. इनो० २३. मरो० ९:४.

५. और ऐसा हुआ कि वे प्रभु के सामने इतने दीन बन गए कि जिससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि वे धर्मपथ पर चलेंगे।

६. ये सब बातें और कार्य तब हुए, जबकि मेरे पिता एक डेरे में उस घाटी में रहते थे जिसे वह (२) लेमुएल की घाटी कहते थे।

७. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, (३) इस्माइल की पुत्रियों में से एक को अपनी पत्नी के लिए लिया और मेरे भाइयों ने भी इस्माइल की अन्य पुत्रियों को पत्नियों के लिए लिया और जोराम ने इस्माइल की बड़ी लड़की को पत्नी के लिए लिया।

८. और मेरे पिता ने इस प्रकार प्रभु की उन सभी आज्ञाओं का पालन किया जो उनको दी गई थी। और मैं, नफी भी प्रभु का बहुत अधिक कृपापात्र बना रहा।

९. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मेरे पिता से रात को बातें कीं और उनको आज्ञा दी कि वह दूसरे दिन जंगल से होकर आगे यात्रा करें।

१०. और ऐसा हुआ कि सुबह को जब मेरे पिता उठ कर तम्बू के दरवाजे पर गए तब वहां एक (४) विचित्र कारीगरी से बनाई गई उत्तम पीतल के गोल गेंद को देख कर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उस गेंद में दो यन्त्र लगे हुए थे जिनमें से एक हमें रास्ता बतलाता था कि जंगल में हम किस रास्ते पर जाएं।

११. हमें जिन वस्तुओं को जंगल से होकर यात्रा पर ले जाना था उनको हमने एकत्रित किया : और प्रभु द्वारा दी गई सारी भोजन सामग्री को साथ में लिया और हमने हर एक प्रकार के बीजों को भी जंगल में ले जाने के लिए ले लिया।

१२. और हमने अपने तम्बुओं को ले कर लमान नदी को पार कर के जंगल में यात्रा की।

१३. हम चार दिनों तक लगभग दक्षिण-दक्षिण पूर्व दिशा की ओर चलते रहे; और तब हमने तम्बुओं को लगाया और उस स्थान का नाम शज़ार रखा।

१४. और ऐसा हुआ कि हम अपने धनुष और वाणों को लेकर वन में अपने परिवार के भोजन के लिए शिकार मार कर, हम जंगल में अपने परिवार के पास शज़ार में फिर लौट आए। इसके पश्चात् हम जंगल में फिर से उसी दिशा में उपजाऊ भूमि से होते हुए आगे बढ़े, जो कि लाल सागर के निकट, सीमा प्रदेश में थी।

१५. हम कई दिनों तक यात्रा करते रहे और यात्रा में भोजन के लिए हम अपने धनुष वाण, पत्थर और ढेलवांस से शिकार मार कर लाते थे।

१६. हमने दिग्दर्शक द्वारा दिखलाए रास्ते से यात्रा की जो हमें जंगल से अधिक उपजाऊ जगह पर ले गया।

१७. कई दिनों की यात्रा करने के पश्चात् हमने अपने तम्बुओं को कुछ दिनों के लिए खड़ा किया, जिससे कि हम कुछ आराम कर सकें और अपने परिवारों के लिए भोजन सामग्री प्राप्त कर सकें।

१८. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी जब भोजन के लिए शिकार मारने गया, तब मेरा (५) उत्तम लोहे का बना हुआ धनुष टूट गया और मेरे भाई धनुष टूटने के कारण मुझ पर क्रोधित हो उठे क्योंकि हमें भोजन नहीं प्राप्त हो सका था।

१९. और ऐसा हुआ कि हमें बिना भोजन प्राप्त किए ही अपने परिवारों के पास वापस लौटना पड़ा और यात्रा से थके होने के कारण बिना भोजन के उनको बहुत कष्ट हुआ।

२०. जंगल में विपत्ति और कष्ट झेलने के कारण लमान, लेमुएल और इस्माइल के लड़के अधिक असंतोष प्रकट करने लगे; और मेरे पिता ने अपने प्रभु परमेश्वर के विरुद्ध असन्तोष प्रकट किया; हां, वे इतने दुःखी थे कि वे प्रभु के विरुद्ध भी बड़बड़ाने लगे।

२१. और ऐसा हुआ कि मेरे धनुष के टूटने के कारण मुझे अपने भाइयों से बहुत क्लेश पहुंचा और उनके धनुष के लचीलेपन खो जाने से हमें इतना कष्ट पहुंचा कि हमें भोजन प्राप्त करना भी सम्भव न रहा।

२२. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने

(२) १ नफी २:८, १४. ९:१. (३) १ नफी ७:२-६, १९, २२. (४) पद्य १६:२६-३०. १ नफी १८:१२, २१. २ नफी ५:१२. अल० ३७:३८-४७. (५) १ नफी ४:९-२. नफी ५:१५. जरा० ८. ए० ७:९. भजन० १४, ३४.

भाइयों से बहुत बातें कीं, क्योंकि उन्होंने फिर से अपने हृदयों को इतना कठोर बना लिया कि वे अपने प्रभु परमेश्वर के विरुद्ध बातें करने लगे।

२३. और तब ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, लकड़ी का एक धनुष और एक सीधी लकड़ी से एक तीर बनाया; इस प्रकार मैं एक धनुष, एक ढेलवांस और पत्थरों से सज्जित हो गया। और मैंने अपने पिता से पूछा : मैं भोजन प्राप्त करने किधर जाऊं।

२४. और मेरे पिता ने प्रभु से पूछा क्योंकि मेरे शब्दों से उनका हृदय कोमल हो गया था; और मैंने अपनी आत्मा की शक्ति से बहुत सी बातें भी उनसे कही थीं।

२५. और ऐसा हुआ कि प्रभु की वाणी मेरे पिता के पास आई; और उनका हृदय इतना निर्मल हो गया कि प्रभु के विरुद्ध असंतोष प्रकट करने के लिए उनको भारी पश्चात्ताप हुआ।

२६. और ऐसा हुआ कि प्रभु की वाणी ने उनसे कहा : (६) यन्त्र पर ताको और देखो कि वहां क्या लिखा है।

२७. और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उस यन्त्र पर लिखी हुई बातों को देखा तब भय के मारे वह, मेरे भाई, इस्माइल के लड़के और हमारी पत्नियां कांपने लगीं।

२८. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, यन्त्र में लगे राह बताने वाले कलों को जब देखा तब मालूम हुआ कि वे हमारे विश्वास, परिश्रम और उसको मानने के (७) अनुसार कार्य करते हैं।

२९. और उस पर नया लेख भी हुआ था जो कि पढ़ने में सरल था और हमें प्रभु की विधि से जानकारी कराता था; और हमारे उस पर विश्वास और उद्यम के अनुसार उस पर लेख समय-समय पर परिवर्तन होता रहता था। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि थोड़े से साधन के द्वारा प्रभु महान कार्य कर सकता है।

३०. और ऐसा हुआ कि उस यन्त्र के कल द्वारा दी गई दिशा के अनुसार मैं, नफी, पर्वत की चोटी पर चढ़ गया।

३१. और तब ऐसा हुआ कि मैंने इतने जंगली पशु मारे कि हमारे परिवार के लिए पर्याप्त भोजन मिल गया।

३२. और तब मारे हुए जंगली पशुओं को लेकर मैं अपने तम्बुओं को लौट आया; और उन्होंने जब देखा कि मैंने भोजन प्राप्त कर लिया है, तब उनको कितनी बड़ी प्रसन्नता हुई! और तब ऐसा हुआ कि वे प्रभु के समक्ष दीन बन गए और उन्होंने उसे धन्यवाद दिया।

३३. और ऐसा हुआ कि हमने फिर से उसी दिशा की ओर यात्रा की और कई दिनों के पश्चात् हमने अपने तम्बुओं को लगाया जिससे हम वहां कुछ समय तक रहें।

३४. और ऐसा हुआ कि (८) इस्माइल की मृत्यु हो गई और उसे उस स्थान पर दफनाया गया जिसे नाहूम कहा जाता था।

३५. इस्माइल के मरने और जंगल में कष्ट झेलने के कारण इस्माइल की लड़कियां बहुत रोईं और यरूशलेम से उन्हें लाने के कारण वे यह कहते हुए मेरे पिता के विरुद्ध बड़बड़ाईं: हमारा पिता मर गया, जंगल में हम बहुत भटकीं और कष्ट झेलीं, हम भूखे प्यासे रहे और थकान सहीं; और इन सब कष्टों को झेलते हुए इस जंगल में हम मर जाएंगे।

३६. इस प्रकार उन्होंने मेरे पिता और मेरे विरुद्ध असंतोष प्रकट किया और वापस यरूशलेम लौटना चाहा।

३७. और लमान ने लेमुएल और इस्माइल के पुत्रों से कहा : देखो, हम लोग अपने पिता को मार डालें और अपने भाई नफी को भी, जो अपने बड़े भाइयों का शासक और शिक्षक बना हुआ है।

३८. अब वह कहता है कि परमेश्वर ने उससे बातें कीं और स्वर्गदूतों ने उसे उपदेश दिए हैं, लेकिन देखो हम जानते हैं कि वह हमसे झूठ बोलता है; और वह हमसे इन बातों को कहता, और अपनी चतुराई के द्वारा हमारी आंखों में धूल झोंक कर किसी अज्ञात जंगल में ले जाने के लिए वह कई कार्य कर रहा है; और हमें वहां ले जाकर वह अपने आप हमारे ऊपर राजा बन कर शासन करना चाहता है, जिससे वह हमसे अपनी

(६) १ नफी १६:१०. (७) अलमा ३७:४०. (८) १ नफी ७:२-६, १९.

इच्छानुसार व्यवहार कर सके। इस प्रकार मेरा भाई लमान ने उनके हृदयों में क्रोध उपजाया।

३९. और ऐसा हुआ कि प्रभु हमारे साथ था, हां, यहां तक कि प्रभु की वाणी ने उनसे बहुत बातें कहीं और उनको अति शुद्ध किया; और प्रभु द्वारा सुधारे जाने पर उनका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने अपने पापों पर इतना पश्चात्ताप किया कि प्रभु ने हमें भोजन द्वारा आशीर्वाद दिया, जिससे हम मरे नहीं।

अध्याय १७

जलराशि—प्रभु द्वारा नफी को नाव बनाने की आज्ञा देना—उसके भाइयों द्वारा विरोध करना और उनका पराजित होना।

१. और ऐसा हुआ कि हमने पुनः जंगल में यात्रा की; और इस बार हम लगभग पूरब दिशा की ओर गए। हमने उस जंगली प्रदेश में बहुत कष्ट सहे; और हमारी स्त्रियों ने उस जंगल में बच्चों को जन्म दिया।

२. और हमारे ऊपर परमेश्वर की इतनी बड़ी कृपा रही कि जबकि हम कच्चे मांस पर निर्भर थे तब हमारी स्त्रियों के स्तनों में बच्चों के लिए पर्याप्त दूध था; और हां, वे पुरुषों के समान सबल थीं और बिना असन्तोष प्रकट किए यात्रा करने लगी थीं।

३. और इस प्रकार, हमने देखा कि परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा किया ही जाएगा। और अगर मानव संतान परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करे, तब वह उनका पोषण करेगा और उन्हें शक्ति देकर ऐसी युक्ति देगा जिसके द्वारा उसके दिए कामों को वे पूरा कर सकेंगे; इसलिए जब हम उस जंगली प्रदेश में थे तब उसने हमें युक्तियां दीं।

४. और वहां हम कई वर्ष रहे,* हां, उस जंगल में हमने आठ वर्ष गुजारे।

५. और हम एक ऐसे स्थान पर आए जिसके फलों और मधु की अधिकता के कारण हमने उस स्थान को सम्पन्न भूमि का नाम दिया; इन सब वस्तुओं को प्रभु ने हमारे लिए तैयार किया था कि जिससे हमारा यहां अंत न हो जाए। और हमने समुद्र को देखा जिसका नाम हमने इराण्टुम रखा जिसका अर्थ होता है बड़ी जलराशि।

६. हमने समुद्र तट पर अपने तम्बुओं को खड़ा किया; और हमने इतनी कठिनाइयों और कष्टों को झेला कि जिसका वर्णन हम नहीं कर सकते; और जब हम समुद्र के तट पर पहुंचे, तब हमारे आनन्द का ठिकाना ही न रहा; और वहां के फलों की बहुतायत के कारण हमने उस स्थान का नाम सम्पन्न-भूमि रखा।

७. और ऐसा हुआ कि उस सम्पन्न-भूमि में कई दिनों तक निवास कर लेने पर प्रभु की वाणी मुझसे बोली: उठो, और पर्वत पर चढ़ जाओ। और ऐसा हुआ कि आज्ञानुसार उठ कर पर्वत पर चढ़ कर मैंने प्रभु से विनती की।

८. और तब ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझसे कहा: मैं जैसे तुम्हें दिखाऊंगा उसी प्रकार तुम एक नाव बनाओ, जिससे कि मैं तुम्हारे लोगों को इन समुद्रों के पार ले जा सकूं।

९. और मैंने कहा: प्रभु, मैं पिघलाने के लिए कच्ची धातु प्राप्त करने कहां जाऊं जिससे कि मैं आपके बताए अनुसार नाव बनाने के लिए औज़ार बना सकूं।

१०. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझे बताया कि औज़ार बनाने के लिए कच्ची धातु प्राप्त करने मुझे कहां जाना चाहिए।

११. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, जंगली पशु के चमड़ी की एक धौंकनी बनाई, जिससे कि मैं आग फूंक कर प्रज्ज्वलित कर सकूं; और धौंकनी बना लेने के पश्चात् मैंने आग जलाने के लिए दो पत्थरों को आपस में टकराया।

१२. क्योंकि जंगल में प्रभु ने हमें अधिक आग का उपयोग करने के श्रम से बचाए रखा था; क्योंकि उसने कहा था: मैं तुम्हारे भोजन को स्वादिष्ट बना दूंगा जिससे कि तुम्हें भोजन पकाना नहीं पड़ेगा।

१३. और यदि तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तब जंगल में मैं तुम्हारा प्रकाश बनूंगा; और मैं तुम्हारे लिए रास्ता तैयार करूंगा; अगर

*ईसा से ५९२ वर्ष पूर्व

तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे तब मैं तुम्हें (१) प्रतिज्ञा के देश की ओर ले जाऊंगा; और तुम जानोगे कि मैंने तुम्हारी अगुवाई की है।

१४. और प्रभु ने यह भी कहा: प्रतिज्ञा के देश में पहुंचने के पश्चात् तुम जानोगे कि मैं, प्रभु परमेश्वर हूं; और मैं तुम्हें यरूशलेम से निकाल कर लाया और मैंने तुम्हें नष्ट होने से बचाया है।

१५. इसलिए मैं, नफी ने, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रयत्न करता रहा और अपने भाइयों को ईमानदारी और उद्योग करने का सदुपदेश देता रहा।

१६. और ऐसा हुआ कि मैंने पत्थर से गला कर धातु प्राप्त की जिससे मैंने (२) औजार बनाए।

१७. और जब मेरे भाइयों ने देखा कि मैं एक (३) नाव बनाने वाला हूं तब वे मेरे विरुद्ध बड़बड़ाते हुए कहने लगे: हमारा भाई मूर्ख है क्योंकि समझता है कि वह एक नाव बना देगा; हां, वह यह भी सोचता है कि वह इस महान जलराशि को पार कर लेगा।

१८. इस प्रकार मेरे भाइयों ने मेरे विरुद्ध शिकायत की और उनकी इच्छा परिश्रम करने को नहीं थी, क्योंकि उनको विश्वास था कि मैं नाव नहीं बना सकूंगा और न तो यह विश्वास करते थे कि नाव बनाने की आज्ञा मुझे प्रभु की ओर से मिली है।

१९. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी, अपने भाइयों के हृदयों की कठोरता के कारण बहुत दु:खी हुआ; और जब उन्होंने मुझे दु:खी देखा तब अपने हृदयों में वे इतने-प्रसन्न हुए कि मुझसे बोले: हम जानते थे कि नाव नहीं बना सकोगे, क्यों कि हमें मालूम था कि तुम विवेकहीन हो; इसलिए तुम इतने महान कार्य को नहीं कर सकोगे।

२०. तुम हमारे पिता के समान ही अपने हृदय की मूर्खता पूर्ण कल्पनाओं के वश में हो; हां, वह हमें यरूशलेम देश से निकाल कर लाया और हम इन कई वर्षों से जंगल में मारे मारे फिरे हैं; और हमारी स्त्रियों ने शिशु के भार को सहते हुए कठोर परिश्रम किया है: और शिशुओं को जनने में मृत्यु को छोड़ कर अन्य सभी प्रकार के कष्ट सहे; और उनके लिए यह ठीक होता कि इन सब क्लेशों को सहने की अपेक्षा यरूशलेम से निकलने से पहले ही उनकी मृत्यु हो जाती।

२१. इन अनेक वर्षों को देखो जिन में हम जंगली प्रदेश में कष्ट झेलते रहे जब कि हमें अपने पैतृक भूमि और अपनी सम्पत्ति का आनन्द उठाना चाहिए था: तब हम प्रसन्न रहते।

२२. और हम जानते हैं कि जो लोग यरूशलेम में थे वे सत्यनिष्ठ थे: क्योंकि उन लोगों ने प्रभु की व्यवस्था, निर्णय, और सब आदेशों का पालन मूसा के नियम के अनुसार किया था। इसलिए हम जानते हैं कि वे धर्मात्मा हैं; और हमारे पिता ने उनके बारे में अपना निर्णय लिया, और हमें वहां से ले आये क्योंकि हमने उनकी बातों को माना; हां, और हमारा भाई भी उन्हीं की तरह है। इस प्रकार की भाषा में मेरे भाइयों ने हमारे विरुद्ध असंतोष प्रकट किया और उलाहना दिया।

२३. और ऐसा हुआ कि मैं, उनसे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि हमारे पूर्वज जो इस्राएल के वंशज थे, मिस्रियों के हाथों से, बिना प्रभु की बातों को माने, बाहर निकाले जा सकते थे?

२४. हां, क्या तुम यह मानते हो कि वे बिना प्रभु की आज्ञा के मूसा द्वारा गुलामी से मुक्त किए गए थे?

२५. तुम यह जानते हो कि इस्राएल के वंशज गुलामी में थे; और तुम यह भी जानते हो कि उनके ऊपर इतना अधिक परिश्रम का बोझ लदा था कि जिसे वे ढो नहीं पा रहे थे; इसलिए तुम यह जानते हो कि गुलामी से उनको मुक्त करना उनके हित में था।

२६. तुम यह भी जानते हो कि प्रभु ने मूसा को यह महान कार्य करने को सौंपा था; और तुम यह भी जानते हो कि उसकी वाणी के द्वारा लाल सागर का पानी इधर-उधर बंट गया और वे उससे होकर दूसरी ओर सूखी भूमि पर पहुंच गए।

२७. तुम यह भी जानते हो कि मिस्री लोग जो फिरौन की सेना में थे, लाल समुद्र में डूब गए।

(१) १ नफी २:२०, १८-२३. (२) पद्य ९, १०. (३) पद्य ८, ४९, ५१. १८:१-६.

२८. और तुम यह भी जानते हो कि रेगिस्तान में उनको उत्तम भोजन दिया गया।

२९. और हां, तुम यह भी जानते हो कि परमेश्वर की उस शक्ति के द्वारा जो कि उसके अन्दर थी, मूसा ने अपने शब्द से चट्टान पर चोट की, तब वहां से जल का सोता फूट पड़ा, जिससे कि इस्राएल की सन्तान अपनी प्यास बुझा सकें।

३०. यद्यपि उनका प्रभु परमेश्वर और उद्धारक जो उनके आगे-आगे चलते हुए दिन को उनका मार्ग प्रदर्शन कर रहा था और रात को प्रकाश देता था और उनके लिए उन सब कार्यों को कर रहा था जो कि मनुष्य के लिए हितकारी थे फिर भी उन्होंने अपने हृदयों को कठोर बना लिया और विवेक को खोकर मूसा और सच्चे चेतन परमेश्वर की निन्दा की।

३१. और ऐसा हुआ कि अपने शब्दों के अनुसार उसने उनका नाश किया; अपने वचन के अनुसार उसने उनका नेतृत्व किया, और अपने कहे अनुसार उसने उनके लिए सब कुछ किया; उसकी वाणी के द्वारा कहे हुए कामों को छोड़ कर कोई अन्य काम नहीं हुआ।

३२. और जब वे यरदन नदी के पार गए तब उसने उनको इतना शक्तिशाली बना दिया कि उन्होंने उस देश के निवासियों को बाहर भगा दिया और हां, उन्हें तितर-बितर करके नष्ट कर दिया।

३३. और क्या तुम यह सोचते हो कि इस देश के लोग जो प्रतिज्ञा के देश में थे और जिन्हें हमारे पूर्वजों ने निकाल बाहर किया था, धार्मिक लोग थे? देखो, मैं तुम से कहता हूं, नहीं।

३४. क्या तुम यह सोचते हो कि अगर वे धार्मिक लोग होते तो क्या हमारे पूर्वज उनसे अधिक प्रभु के कृपा पात्र होते? मैं तुमसे कहता हूं, नहीं।

३५. देखो, प्रभु हर एक को एक ही दृष्टि से देखता है; और जो लोग सत्यनिष्ठ होते हैं, वे परमेश्वर के अधिक प्रिय होते हैं, लेकिन देखो, इन लोगों ने परमेश्वर की हर एक बात को अस्वीकार किया; दुराचार से उनका घड़ा भर गया था; इसलिए परमेश्वर का पूरा क्रोध उनके ऊपर हुआ; और परमेश्वर ने उस देश को उनके लिए श्रापित किया और हमारे पूर्वजों के लिए आशिष में दिया; हां उसने उन्हें उनको नष्ट होने का श्राप दिया और हमारे पूर्वजों को उनके ऊपर शक्तिशाली होने का आशीर्वाद दिया।

३६. देखो, परमेश्वर ने सृष्टि की रचना लोगों से आबाद रहने के लिए की है; और उसने अपने बच्चों को इसका अधिकारी होने के लिए बनाया है।

३७. और वह एक धार्मिक राष्ट्र को खड़ा करता है और पापियों के राष्ट्रों को नष्ट करता है।

३८. और वह धार्मिक लोगों को अनमोल देशों में ले जाता है, और पापियों को नष्ट करता और उस देश को उनके लिए श्रापित करता है।

३९. वह ऊंचे स्वर्ग में राज्य करता है, क्योंकि वह उसका सिंहासन है, और यह पृथ्वी उसका चरण-पीठ है।

४०. और वह उनसे प्रेम करता है जो उसको अपना ईश्वर मानते हैं। देखो, उसने हमारे पूर्वजों से प्रेम किया, और उसने उनसे, हां, यहां तक कि इब्राहीम, इसाक, और याकूब से शर्तनामा बनाया और जिस शर्तनामे को उसने बनाया उसे याद रखा; इसलिए वह उनको मिश्र देश में से बाहर निकाल लाया।

४१. और उसने जंगल में उनको अपनी छड़ी से सीधा किया; क्योंकि उन्होंने तुम्हारी तरह अपने हृदयों को कठोर बना लिया था; और प्रभु ने उनके अधर्मों के कारण उनको दण्ड देकर सुधारा। उसने उनके मध्य में आग के समान जलते हुए उड़ने वाले सांपों को भेजा; और जब वे उन सांपों से डसे गए, तब उनके लिए उसने एक उपचार तैयार किया जिससे कि वे ठीक हो सकें; और उनको केवल देखने का ही परिश्रम करना पड़ता था, इसकी सरलता के कारण बहुत से लोग नष्ट हो गए।

४२. और समय समय पर उन्होंने अपने हृदयों को कठोर किया और मूसा और परमेश्वर की निन्दा की; फिर भी तुम जानते हो कि वह अपनी असीम शक्ति के द्वारा उन्हें वचन दिए गए देश में ले गया।

४३. और उन सब बातों के होते हुए अब वह समय आ गया है जबकि वे दुराचारी हो गए हैं; हां, उनके पापों का घड़ा भरने वाला है; और वे यह नहीं जानते लेकिन आज के दिन शायद वे नष्ट कर दिए जाएं, क्योंकि मैं यह जानता हूं कि वह समय अवश्य ही आएगा जबकि उनको नष्ट किया जाएगा, केवल कुछ को छोड़ कर जिनको गुलाम बना कर ले जाया जाएगा।

४४. इसलिए प्रभु ने (४) मेरे पिता को आज्ञा दी कि वह जंगल में चले जाएं; क्योंकि (५) यहूदी उनकी जान लेना चाहते थे; और हां, तुम भी (६) उनकी जान लेना चाहते थे; इसलिए तुम अपने हृदयों में हत्यारे हो और उन्हीं की तरह हो।

४५. तुम अन्याय करने में शीघ्रता करते हो, लेकिन अपने प्रभु परमेश्वर को याद करने में देर किया करते हो (७) तुमनें एक स्वर्गदूत को देखा, और उसने तुमसे बातें कीं, हां, तुमने समय समय पर उसकी वाणी को भी सुना; उसने तुमसे धीमी आवाज में बातें कीं; लेकिन तुम्हारा ध्यान उस ओर नहीं गया; और उसकी बातों का तुम पर कोई असर नहीं हुआ; इसलिए उसने तुमसे मेघ-गर्जन की तरह कड़कती आवाज़ में बातें की जिससे पृथ्वी कांपने लगी मानो फट ही जाएगी।

४६. और तुम यह भी जानते हो कि वह अपने सर्वशक्तियुक्त शब्दों के द्वारा इस जगत को (८) मिटा सकता है; (९) ऊबड़-खाबड़ जगह को समतल कर सकता है और समतल जगह को तोड़ सकता है। ओह! तब कैसे तुम अपने हृदयों में इतना कठोर बन सकते हो?

४७. देखो, तुम्हारे कारण मेरी आत्मा विदीर्ण हो रही है और मेरा हृदय दुःख से व्याकुल है; मुझे भय है कि शायद तुम्हें सदैव के लिए निकाल दिया जाए। देखो, मैं परमेश्वर की आत्मा से इतना परिपूर्ण हूं कि मेरे शरीर में अपनी कोई शक्ति नहीं।

४८. और ऐसा हुआ कि जब मैंने इन शब्दों को कहा तब मेरे भाई मुझ पर क्रोधित हो उठे, और मुझे गहरे समुद्र में फेंक देना चाहा; और जब उन्होंने मेरे निकट आ करके मुझ पर हाथ लगाना चाहा, तब मैंने उनसे कहा : सर्वशक्तिमान परमेश्वर के नाम पर मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि मुझे (१०) मत छूओ क्योंकि मेरे शरीर का रोम रोम परमेश्वर की शक्ति से परिपूर्ण है; और जो कोई मुझ पर हाथ छोड़ेगा, वह सूखे नरकट की तरह सूख जाएगा; और परमेश्वर की शक्ति के सामने वह शून्य के समान होगा, क्योंकि परमेश्वर उसको मार डालेगा।

४९. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, उनसे कहा कि वे अपने पिता के विरुद्ध असंतोष प्रकट करना बन्द कर दें और मेरे साथ परिश्रम करें क्योंकि परमेश्वर ने मुझे नाव बनाने की आज्ञा दी है।

५०. और मैंने उनसे कहा : (११) परमेश्वर मुझसे जिन सब कामों को करने को कहता है, मैं उन सब कामों को कर सकता हूं। अगर वह मुझको आज्ञा देता है कि मैं इस जल से कहूं कि वह भूमि हो जाए, तब वह भूमि बन जाएगा और मैं जैसा कहूंगा वह अवश्य ही वैसा ही होगा।

५१. और अब जब कि परमेश्वर की ऐसी शक्ति है और मानव सन्तानों में उसने—इतने अधिक चमत्कार के कार्य किए हैं, तब यह कैसे सम्भव हो सकता है कि वह मुझे नाव बनाने को न कहे?

५२. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने भाइयों से इतनी अधिक बातें कही कि वे पराजित हो गए और मेरे विरुद्ध तर्क न कर सके, और बहुत दिनों तक उन्होंने मुझको हाथ नहीं लगाया और न तो मुझ पर उंगली ही उठाई। उन्होंने मेरे सामने सूख जाने के भय से ऐसा नहीं किया क्योंकि परमेश्वर की आत्मा इतना सामर्थ्यवान है; और इस प्रकार उसका उनके ऊपर प्रभाव पड़ा।

५३. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझसे कहा : अपने भाइयों के सामने अपने हाथ को फैलाओ, वे तुम्हारे सामने (१२) सूख नहीं जाएंगे, लेकिन

(४) १ नफी २:२. (५) १ नफी २:१. (६) १ नफी १६:३७. (७) १ नफी ३:२९. (८) ३ नफी २६:३. (९) १ नफी १२:४, १९:११, १२. २ नफी २६:४-६. इला० १४:२१-२४. ३ नफी ८:५-१९. (१०) पद्य ५२:५५. २ नफी १:२६-२७. (११) १ नफी ३:७. या० ४:६. फिलि० ४:१३. (१२) पद्य ४८:५४, ५५.

मैं उनको झटका दूंगा, और यह इसलिए करूंगा जिससे कि वे यह जान सकें कि मैं उनका प्रभु परमेश्वर हूं।

५४. और ऐसा हुआ कि मैंने अपना हाथ अपने भाइयों की ओर बढ़ाया, परन्तु वे सूख नहीं गए; और प्रभु ने अपने कहे अनुसार उनको हिला दिया।

५५. और तब उन्होंने कहा : अब हम निश्चय जानते हैं कि प्रभु तुम्हारे साथ है क्योंकि हम जान गए हैं कि प्रभु की शक्ति ने हमें हिला दिया है। और वे मेरे सामने गिर पड़े, और वे मेरी प्रार्थना करना चाहते थे, लेकिन मैंने उनको रोकते हुए कहा : मैं तुम्हारा भाई हूं, और वह भी तुमसे छोटा; इसलिए तुम अपने प्रभु परमेश्वर की प्रार्थना करो, और अपने माता-पिता का आदर करो जिससे कि तुम्हारी आयु उस देश में लम्बी हो जिस देश को तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुमको देगा।

अध्याय १८

नाव बना कर तैयार की गई—याकूब और यूसुफ—नाव द्वारा यात्रा आरम्भ—अनुचित आनन्द और विद्रोह—समुद्र में आंधी—प्रतिज्ञा के देश पहुंचना।

१. और ऐसा हुआ कि उन्होंने प्रभु की प्रार्थना की और मेरे साथ सहयोग करने लगे; और हम विचित्र ढंग से लकड़ियों को तैयार करने लगे। और प्रभु ने समय-समय पर हमें दिखलाया कि हम किस ढंग से नाव के लिए लकड़ियों को बनाएं।

२. और मैं, नफी ने, मनुष्य द्वारा सीखे ढंग से लकड़ियों को नहीं (१) तैयार किया और न तो मैंने मनुष्य के ढंग से नाव को ही बनाया; परन्तु मैंने प्रभु द्वारा दिखलाए गए ढंग से नाव को बनाया; इसलिए वह नाव मनुष्य की तरह बनाई नहीं गई थी।

३. और मैं नफी, बारम्बार पर्वत पर गया और प्रभु से बारम्बार प्रार्थना की; इसलिए प्रभु ने मुझे महान कार्यों को दिखाया।

४. और ऐसा हुआ कि जब मैंने प्रभु द्वारा बतलाए गए ढ़ंग से नाव बना कर तैयार कर ली, तब मेरे भाइयों ने देखा कि वह एक उत्तम नाव थी और उसकी कारीगरी अति सुन्दर थी; तब उन्होंने फिर से प्रभु के आगे अपने आप को दीन बना लिया।

५. और ऐसा हुआ कि प्रभु की वाणी ने मेरे पिता से कहा कि हमें उठ कर नाव में जाना चाहिए।

६. और ऐसा हुआ कि जंगल से अधिक मात्रा में फल, मांस और मधु और प्रभु की आज्ञानुसार अन्य खाने पीने वाली वस्तुओं को संग्रह करके, पूरी तैयारी कर लेने के पश्चात् हम अपने पूरे बोझ, (२) बीजों और जिन चीजों को हम अपने साथ लाए थे, अपनी-अपनी आयु के अनुसार ले लेकर पत्नियों और बच्चों के साथ नाव में गए।

७. मेरे पिता को जंगल में दो पुत्र प्राप्त हुए थे; बड़े का नाम याकूब और छोटे का नाम यूसुफ था।

८. और ऐसा हुआ कि जब हम खाने पीने और अपनी उन सभी वस्तुओं को लेकर नाव में गए जिन्हें लेने की आज्ञा प्रभु ने हमें दी थी, तब हमने समुद्री यात्रा आरम्भ की और हमारी नाव वायु के सहारे प्रतिज्ञा (३) के देश की ओर बढ़ चली।

९. कई दिनों तक वायु के सहारे आगे बढ़ते रहने पर मेरे भाई और इस्माइल के लड़के और उनकी पत्नियां नाच गाने में मग्न हो आनन्द मनाने लगे, और अधिक धृष्टता के साथ उत्तर देने लगे, यहां तक कि वे जिस शक्ति के द्वारा वहां तक लाए गए थे, उसे भी भूल गए और बहुत अधिक असभ्य और अवज्ञाकारी हो गए।

१०. और मैं, नफी, भयभीत हुआ कि कहीं प्रभु हमारे पापों के कारण क्रोध में न आ जाए और हमें उसके क्रोध के कारण समुद्र की गहराई में समाना पड़े; इसलिए मैं, नफी ने, उनसे गंभीरता के साथ बातें करना आरम्भ किया; लेकिन देखो, वे मुझसे क्रोध में बोले: हम अपने छोटे भाई को अपने ऊपर (४) शासन नहीं करने देंगे।

११. और ऐसा हुआ कि लमान और लेमुएल ने मुझे ले जा कर-बन्धनों से बांध दिया और मेरे साथ क्रूर व्यवहार किया; फिर भी प्रभु ने इसलिए इस व्यवहार को सहा जिससे कि वह अपनी शक्ति दिखा सके और पापियों के प्रति अपने कहे वचन को पूरा कर सके।

१२. और ऐसा हुआ जबकि उन्होंने मुझे

(१) १ नफी १७:८. (२) १ नफी ८:१. १६:११. पद्य २४. (३) १ नफी २:२०. ५:५, २२. ७:१३. १२:१, ४. १३:१२, १४, ३०. १४:२. १८:२२, २३. (४) १ नफी २:२२. १६:३७, ३८. २ नफी १:२५-२७. ५:३, १६.

इस प्रकार से बांध दिया कि मैं हिलडुल भी नहीं सकता था, तब प्रभु द्वारा तैयार किए गए (५) दिग्दर्शक यन्त्र ने काम करना बन्द कर दिया।

१३. इसलिए उनको यह पता नहीं लगता था कि नाव को किधर से जाना चाहिए और उन्हें इतनी भ्रांति हुई कि नाव एक बहुत बड़ी आंधी में पड़ गई; हां, वह एक प्रचण्ड आंधी थी, और हम लगातार तीन दिनों तक पीछे की ओर बहते रहे; और तब वे समुद्र में डूबने के भय से भयभीत हो उठे; फिर भी उन्होंने मुझे बन्धनमुक्त नहीं किया।

१४. चौथे दिन जब हम पीछे की ओर बह रहे थे, वह प्रचण्ड आंधी और भी उग्र रूप धारण कर चलने लगी।

१५. और ऐसा हुआ कि हम समुद्र के गर्भ में समा जाने के निकट ही थे। चार दिनों तक लगातार पीछे बहने के पश्चात् मेरे भाइयों को यह ज्ञान हुआ कि परमेश्वर का न्याय-दण्ड उनके ऊपर है, और अगर उन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया तब वे अवश्य ही समाप्त हो जाएंगे; इसलिए वे मेरे पास आए और मेरी कलाइयों को बन्धनमुक्त कर दिया जो बहुत अधिक सूज गई थीं; और मेरे पैरों की नसें भी सूज गई थीं जिनसे मुझे बहुत अधिक पीड़ा हो रही थी।

१६. फिर भी मैंने परमेश्वर की ओर ताका और सारा दिन उसका यशगान करता रहा; और मैंने अपनी पीड़ा के कारण कोई असंतोष प्रकट नहीं किया।

१७. मेरे पिता ने उनसे और इस्माइल के (६) पुत्रों से बहुत बातें की; परन्तु जिसने भी मेरे पक्ष में कुछ कहा उनको उन्होंने भारी धमकी दी; और मेरे पिता जो वृद्ध हो चुके थे और अपनी सन्तानों के कारण बहुत कष्ट झेल चुके थे, रोगी हो गए, यहां तक कि उन्हें पलंग पकड़ना पड़ा।

१८. अत्यधिक शोक, सन्ताप और मेरे भाइयों के पापों के कारण वे अपने परमेश्वर से मिलने मिट्टी में समाने का समय आ पहुंचा था; हां, यहां तक कि कष्टों के कारण ऐसा लगता था कि जलसमाधि लेने का समय आ पहुंचा।

१९. (७) याकूब और यूसुफ जिनको कम आयु होने के कारण पौष्टिक भोजन की आवश्यकता थी, अपनी माता पिता की विपत्ति के कारण दु:खी थे; और (८) मेरी पत्नी की आंखों में आंसू भरे थे। वह भी मेरे बच्चों के साथ दु:खी थी, फिर भी मेरे भाइयों का कठोर हृदय पिघला नहीं और मुझे बन्धन मुक्त नहीं किया।

२०. और परमेश्वर की वह शक्ति जो उन्हें नष्ट कर देने का भय दिखला रही थी, केवल वही उनके हृदयों को कोमल कर सकती थी; इसलिए जब समुद्र उनको निगल लेने के निकट था तब, उन्होंने अपने किए पर पश्चात्ताप किया और मुझे मुक्त कर दिया।

२१. और ऐसा हुआ कि मुझे मुक्त कर देने पर मैंने दिग्दर्शक यंत्र को लिया, तब वह पूर्ववत् मेरी इच्छानुसार काम करने लगा। मैंने परमेश्वर से प्रार्थना की; और मेरे प्रार्थना करने के पश्चात् वायु शान्त हुई और आंधी चलना बन्द हुई और समुद्र एकदम शान्त हो गया।

२२. तब मैं, नफी ने, वचन द्वारा दिए प्रतिज्ञा के देश की (१०) और नाव का संचालन किया।

२३. और ऐसा हुआ कि कई दिनों तक समुद्री यात्रा करने के पश्चात् हम (११) प्रतिज्ञा के देश में पहुंचे; और नाव में से उतर कर भूमि पर गए और अपने तम्बुओं को लगाया और हमने उस देश को प्रतिज्ञा का देश कहा।

२४. और तब हमने भूमि जोत कर (१२) बीज बोना आरम्भ किया; हां, यरूशलेम से लाए हुए सभी बीजों को हमने बोया, और ऐसा हुआ कि पौधे अच्छी तरह उपजे और हमें अच्छी फसल प्राप्त हुई।

२५. और ऐसा हुआ कि जब हम जंगल में गए तब हमें पता लगा कि प्रतिज्ञा के देश के जंगलों में भांति-भांति के (१३) जंगली पशु हैं जिनमें

(५) देखो ४. १ नफी १६. (६) १ नफी ७:६. (७) पद्य ७. (८) १ नफी १६:७. (९) पद्य १२. (१०) पद्य १३. (११) १ नफी २:२०. (१२) १ नफी ८:१. (१३) इनो० २१, अल० १८:९. २०:६. ३ नफी ३:२२. ४:४. ६:१. एथर ९:१८, १९:३१-३४. १०:१९-२१.

*सम्भवत: लगभग ईसा से ५८९ वर्ष पूर्व

गाय, बैल, घोड़े, बकरियां, और अनेक प्रकार के बनैले पशु थे जो मनुष्य के उपयोग में आने वाले थे, हमने सभी प्रकार की कच्ची धातुओं को भी पाया जिन में सोना, (१४) चांदी और पीतल भी थे।

अध्याय १९

नफी द्वारा अपने लोगों का अभिलेख रखना—अनेक भविष्यवक्ताओं की चर्चा—जीनस और उसकी भविष्यवाणी।

१. और तब ऐसा हुआ कि प्रभु की आज्ञानुसार मैंने अपने लोगों का अभिलेख खोद कर अंकित करने के लिए कच्ची धातु से (१) पटियां बनाईं। और जिन पटियों को मैंने बनाया था उन पर मैंने अपने पिता के अभिलेख, हमारी जंगल की यात्रा, अपने पिता की (२) भविष्यवाणियां और स्वयं अपनी बहुत सी भविष्यवाणियों को अंकित किया।

२. और जिस समय मैंने इन पटियों को बनाया उस समय मुझे यह नहीं मालूम था कि मैंने उन्हें प्रभु की आज्ञा पर बनाया है; इसलिए मेरे पिता के अभिलेख उनके पिता की वंशावली, जंगल के हमारे अन्य विवरण, उन पटियों पर अंकित हैं जिनके विषय में मैंने कहा है, इसलिए जिन बातों से मुझे इन पटियों को बनाने की प्रेरणा मुझे मिली है, सत्य में उनकी चर्चा प्रथम पटियों में की गई है।

३. आज्ञा प्राप्त करने पर मैंने इन पटियों को जब बना (३) कर तैयार कर लिया, तब मुझको, यह आज्ञा मिली कि मैं इन पर उपदेश और भविष्यवाणियों के अधिक स्पष्ट और अमूल्य भागों को लिखूं; और जो बातें उन पर लिखी जायें वे मेरे उन लोगों के लिए आदेश के रूप में रखी जायें जो इस देश के स्वामी होंगे; और इनको रखने के अन्य कारण भी होंगे जो प्रभु को ही मालूम हैं।

४. इसलिए मैं नफी ने, (४) दूसरी पटियों पर अभिलेख लिखा जो विवरण देता है, या जो मेरे लोगों की लड़ाइयों और पतन का महान विवरण देता है। यह कार्य मैंने किया और अपने लोगों को यह भी आज्ञा दी कि मेरे न रहने पर उन्हें क्या करना चाहिए; और इन पटियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के हाथों में देना चाहिए, या एक भविष्यवक्ता के हाथों से दूसरे भविष्यवक्ता के हाथों में तब तक जाते रहना चाहिए जब तक कि प्रभु की दूसरी आज्ञाएं प्राप्त न हो जाएं।

५. और (५) इन पटियों को बनाने का विवरण इसके बाद दिया जाता है; और देखो मैं अपने कहे अनुसार आगे बढ़ता हूं, और मैं यह इसलिए करता हूं कि जिससे जो अधिक पवित्र बातें हैं उन्हें मेरे लोगों के ज्ञान के लिए सुरक्षित रखा जा सके।

६. इसलिए मैं इन पटियों पर वही लिख रहा हूं जिसे मैं पवित्र समझता हूं। और अगर मैं भूल करता हूं, क्योंकि प्राचीन युग में भी भूल हुई थी, तब मैं दूसरों की भूलों के कारण बहाना कर अपने आपको बचाने की चेष्टा नहीं करूंगा, और मेरी भूल हाड-मांस के मानव-शरीर के अन्दर जो त्रुटि है, उसके कारण होगी और इसी बहाने मैं अपने आप को क्षमा करूंगा।

७. कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें कुछ लोग शरीर और आत्मा, दोनों के लिए बड़े महत्व की मानते हैं, परन्तु दूसरे उनको कोई महत्व के नहीं मानते और उन्हें पैरों तले रौंदते हैं। हां, यहां तक कि इस्राएल के परमेश्वर को भी पैरों तले रौंदते हैं; मैं पैरों तले रौंदते कहता हूं लेकिन मैं दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहूंगा—वे उसे शून्य के समान अस्तित्वहीन मानते हैं और उसके उपदेशों को सुनते नहीं।

८. और देखो स्वर्गदूत के कहे अनुसार मेरे पिता के यरूशलेम छोड़ने के (६) छः सौ वर्ष पश्चात् वह आएगा।

९. और अपने पापों के कारण जगत उसका कोई महत्व का नहीं समझेगा, और उसे सताएगा, और वह सहनशील बना रहेगा, लोग उसे मारेंगे और वह मार सहेगा। हां, वे उस पर थूकेंगे, और वह सहेगा, क्योंकि मानव संतान के लिए उसमें

(१४) १ नफी १९:१. २ नफी ५:१४-१३. याकूब २:१२, १३. इला० ६:९-११. एथर ९:१७. १०:७, १२, २३. अध्याय १९. (१) देखो ९. १ नफी १. (२) १ नफी १:१६, १७. १९:२. (३) १ नफी ९:२. (४) १ नफी ९:४. (५) २ नफी ५:३०. सि० शर्त० देखो १०. (६) १ नफी १०:४.

प्रेमपूर्ण दया है और उनके लिए वह लम्बी यन्त्रणा झेलेगा।

१०. हमारे पूर्वज जिनको मिश्र में गुलामी से निकाला गया और जंगल में सुरक्षित रखा गया, उनका परमेश्वर, हां, इब्राहीम और इसाक और याकूब का परमेश्वर स्वर्गदूत के शब्दों के अनुसार, अपने आप को मानव रूप में, पापियों के हाथों में समर्पण करेगा जो (७) जीनुक के शब्दों के अनुसार ऊपर क्रूस पर चढ़ाने के लिए, और नाहूम के कहे अनुसार बलिदान होने के लिए, (८) और जीनस के अनुसार कब्र में गाड़े जाने के लिए जिसे उसने (९) तीन दिनों का अन्धकार कहा, जो उन लोगों के लिए जो समुद्र के द्वीपों के निवासी होंगे और जो विशेष कर इस्राएल के घराने के होंगे, उसके मरने का संकेत होगा।

११. क्योंकि भविष्यवक्ता ने कहा है: उस दिन प्रभु परमेश्वर इस्राएल के सभी घरों पर जाएगा, किसी के यहां उनकी सत्यनिष्ठा के कारण, अपनी (१०) वाणी के द्वारा उनके आनन्द और मुक्ति के लिए, और दूसरों के यहां अपनी शक्ति (११) मेघ-गर्जन और बिजली की चमक, आंधी अग्नि और अन्धकार के धुएं और भाप के साथ, पृथ्वी के फटने, और पर्वतों को ऊपर उठाए जाने के साथ जाएगा।

१२. और भविष्यवक्ता जीनस कहता है कि ये सब घटनायें अवश्य ही घटेंगी। और पृथ्वी की (१२) चट्टानें टुकड़े टुकड़े होंगी; और धरती के करुण क्रन्दन से समुद्र के टापुओं के राजाओं पर परमेश्वर की आत्माओं का प्रभाव पड़ेगा और वे कहेंगे: प्रकृति का राजा कष्ट झेल रहा है।

१३. और जो लोग यरूशलेम में हैं, उनके लिए भविष्यवक्ता कहता है कि वे इस्राएल के परमेश्वर को क्रूस पर चढ़ाएंगे, उससे अपना मन फिराएंगे और इस्राएल के परमेश्वर के चिन्ह, चमत्कार, शक्ति और कीर्ति को अस्वीकार करेंगे इसलिए उन्हें सभी लोगों द्वारा दण्ड दिया जाएगा।

१४. और भविष्यवक्ता कहता है कि इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर से अपना मन फिराने और उसके तिरस्कार करने के कारण वह एक जाति के रूप में इधर उधर भटकेंगे, नष्ट होंगे, सिसकी भरेंगे और संसार के सभी राष्ट्रों में उनका निरादर होगा।

१५. भविष्यवक्ता का कहना है कि जब भी वह दिन आएगा, जबकि (१३) वे इस्राएल के पवित्र परमेश्वर से अपना मन नहीं फिराएंगे, तब वह उनके पूर्वजों से किए हुए अपने वचन को याद करेगा।

१६. और हां, भविष्यवक्ता (१४) जीनस के शब्दों के अनुसार तब वह समुद्र के द्वीपों को याद करेगा; हां, प्रभु कहता है कि तब मैं इस्राएल के घराने के सभी लोगों को जगत के चारों दिशाओं से एकत्रित करूंगा।

१७. हां, भविष्यवक्ता कहता है कि सारा विश्व प्रभु की मुक्ति को देखेगा; और विश्व के सब राष्ट्र, जाति, भिन्न भिन्न भाषा बोलने वाले लोग आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

१८. और मैं नफी ने, इन बातों को अपने लोगों के लिए इसलिए लिखा कि जिससे सम्भवत: इन बातों से उनको अपने उद्धारक प्रभु को याद कराया जा सके।

१९. अगर यह उनको प्राप्त हो तब, मैं इस्राएल के सभी घरानों से कहता हूं।

२०. और देखो, यरूशलेम के लोगों के लिए मन में चिन्ता के कारण मैं इतना थक चुका हूं कि मेरे शरीर के जोड़ बलहीन हो रहे हैं; और अगर प्रभु दयावान होकर प्राचीन भविष्यवक्ताओं की तरह मुझे उनका भविष्य नहीं दिखाता, तब मैं भी उनके साथ नष्ट हो जाता।

२१. वहां के लोगों के विषय में उसने प्राचीन भविष्यवक्ताओं को सब कुछ दिखाया; और उसने बहुतों को हमारे विषय में भी बहुत कुछ दिखाया: इसलिए वहां के लोगों के विषय में

(७) अल० ३३:१५, ३४. ७ इला० ८:२०. ३ नफी १०:१५-१७. (८) पद्य १२:१६. या० ५:१,. ६:१ अल० ३३.३, १३, १५. ३४:७. इला० ८:१९. १५:११. ३ नफी १०:१६. (९) इला० १४:२०, २७. ३ नफी ८. १९-२३, १०:९. (१०) ३ नफी ९. (११) इला० १४:२०-२७. ३ नफी ८:५, २३. (१२) इला० १४:२१, २२. ३ नफी ८:१७-१८. (१३) देखो ५, १ नफी १५. (१४) देखो ८.

हमें जानना आवश्यक है क्योंकि वह सब (१५) पीतल की पटियों पर अंकित है।

२२. मैंने अपने भाइयों को इन सब बातों की शिक्षा दी और ऐसा हुआ कि मैंने पीतल की (१६) पटियों पर अंकित हुई बहुत सी बातों को उन्हें पढ़ कर सुनाया जिससे उनको प्रभु के द्वारा दूसरे देशों में बीते युगों के लोगों में किए गए कामों के विषय की जानकारी प्राप्त हो।

२३. मैंने मूसा की पुस्तक में से भी बहुत सी बातों को पढ़ कर उन्हें सुनाया; लेकिन उन्हें पूरी तरह अपने उद्धारक प्रभु पर विश्वास दिलाने के लिए मैंने उन्हें वह पढ़ कर सुनाया जो भविष्यवक्ता यशायाह ने लिखा था; क्योंकि मैं उन सभी शास्त्रों पर विश्वास करता हूं जो हमारे लाभ और शिक्षा के लिए हमें दिए गए हैं।

२४. इसलिए मैंने उनसे बातें करते हुए कहा : तुम भविष्यवक्ता की बातें सुनो : तुम जो इस्राएल के घराने के अवशेष हो और जो एक टूटी हुई शाखा हो; तुम भविष्यवक्ता के उन शब्दों को सुनो जो कि इस्राएल के पूरे घराने के लिए लिखे गए थे, तुमको भी उन्हीं की तरह जिनसे तुम तोड़ कर अलग कर दिए गए हो, बचने की आशा है क्योंकि भविष्यवक्ता ने ऐसा ही लिखा है।

अध्याय २०

पीतल की पटियों पर भविष्यवाणियों का अंकित किया जाना—यशायाह ४८ से तुलना करो।

१. ध्यान दो और इसे सुनो, हे याकूब के घराने वालो, जिन्हें इस्राएल के नाम से भी पुकारा गया है और जो (१) यहूदा के पानी से निकले अर्थात् बपतिस्मा के पानी से बाहर निकले, जो प्रभु के नाम को (२) शपथ लेते है और इस्राएल के परमेश्वर की चर्चा करते हैं, परन्तु वे न तो सच्चाई के साथ और (३) न तो शुद्धभाव से ही उसकी शपथ लेते हैं।

२. फिर भी वे अपने आपको (४) पवित्र नगर के निवासी कहते हैं लेकिन वे स्वयं इस्राएल के परमेश्वर पर आस्था (५) नहीं रखते, जो कि सर्वशक्तिमान प्रभु हैं और हां, उसका नाम सर्वशक्तिमान प्रभु भी है।

३. देखो (६) मैंने पूर्वकाल की बातों की घोषणा आरम्भ से ही की है; वे सब मेरे मुख से निकली। उन्हें मैंने एकाएक ही दिखाया।

४. मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि तुम हठी हो, और तुम्हारी गर्दन लोहे की और (७) भृकुटी पीतल की बनी हुई हैं।

५. यहां तक कि मैंने (८) इनकी घोषणा आरम्भ से की; और ऐसा होने से पूर्व ही मैंने तुम्हें इस भय से दिखाया कि तुम यह न कहो कि मेरी मूर्ति के द्वारा यह हुआ और खोद कर बनाई मूर्ति या गला कर बनाई गई मूर्ति द्वारा ऐसा करने की आज्ञा दी गई है।

६. तुमने इन सभी बातों को देखा और सुना : क्या तुम अब भी इन बातों की घोषणा नहीं करोगे? और जिन बातों को तुम नहीं जानते थे, यहां तक कि जो बातें गुप्त थीं, मैंने उन नई बातों को भी तुम्हें इस बार दिखलाया।

७. ये बातें आरम्भ की नहीं हैं, इनकी रचना तो अभी की गई है, यहां तक कि जब तुमने इन बातों को नहीं सुना था उससे पहिले ही इनकी घोषणा तुम्हारे लिए की गई थी जिससे कि तुम यह न कह सको : देखो यह मैं जानता था।

८. तुमने इन्हें सुना नहीं; हां, तुम उसे जानते भी नहीं थे; तुम्हारे कान खुले नहीं थे; क्योंकि मैं जानता था कि (९) तुम विश्वासघात करोगे क्योंकि तुम माता के गर्भ से ही नियम उल्लंघन करने वाले कहाते हो।

९. फिर भी मैं अपने नाम के कारण अपना क्रोध टाल रहा हूं और मैं अपनी मर्यादा और कीर्ति के लिए तुम्हारा नाश करने से रुक रहा हूं।

१०. क्योंकि देखो, मैंने तुम्हें शुद्ध तो किया, और दु:ख की जलती हुई भट्ठी में से तुमको परख कर चुन लिया है।

११. क्योंकि मैं अपने ही कारण, हां, अपने ही

(१५) ३ नफी १०:१६, १७. (१६) देखो १, १ नफी ३.

अध्याय २०. (१) यशा० ४८:१. (२) व्यवस्था ६:१३. यशा० ६५:१६. सपन्याह १:५. (३) यिर्म० ४:२, ५:२. (४) यशा० ५२:१. (५) मीका० ३:९-११. (६) यशा० ४१:२२. ४२:९. ४३:९. ४४:७, ८. ४५:२१. ४६:९, १०. (७) निर्ग० ३२:९ व्यवस्था ३१:२७. (८) देखो ६. (९) भजन सं० ५८:३.

कारण यह करूंगा, क्योंकि मैं अपने नाम को (१०) न तो दूषित होने दूंगा और न तो अपने यश को किसी अन्य को ही दूंगा।

१२. हे याकूब और इस्राएल, मेरी पुकार को सुनो, क्योंकि मैं ही (११) आदि हूं और मैं ही अन्त हूं।

१३. जगत की नीव भी मेरे (१२) हाथ ने रखी, और मेरे दाहिने हाथ ने आकाश को बनाया, (१३) मैं उनको पुकारता हूं तब वे एक साथ उपस्थित हो जाते हैं।

१४. तुम सब अपने आप एकत्रित (१४) हो और सुनो; इन बातों की घोषणा उनमें किसने की? प्रभु ने उससे प्रेम किया; हां, उसने उनसे जो कुछ कहा, उसको वह पूरा करेगा; और बाबुल के साथ (१५) वह अपनी इच्छानुसार बर्ताव करेगा और उसका हाथ कसदियों के ऊपर पड़ेगा।

१५. प्रभु यह भी कहता है कि मैंने उसे घोषणा करने को बुलाया (१६) मैं उसे लाया हूं और वह समृद्ध होगा।

१६. तुम मेरे निकट आओ; (१७) मैंने गुप्त में कुछ नहीं कहा; मैंने जो कुछ कहा वह आरम्भ से और जब इसकी घोषणा की गई थी तब से मैंने कहा; और मुझे परमेश्‍वर प्रभु और उसकी पवित्र आत्मा ने भेजा है।

१७. तुम्हारा उद्धारक, इस्राएल का पवित्र प्रभु इस प्रकार कहता है; तुम्हारा परमेश्‍वर प्रभु जो तुम्हें प्रगति करने की शिक्षा देता है, और तुम्हें वह रास्ता दिखलाता है जिस पर तुम्हें चलना चाहिए, वह मैं हूं जिसने उसे भेजा, वह कार्य मैंने किया।

१८. हां, अगर तुमने मेरी आज्ञाओं का पालन किया होता, तब तुम्हारी शान्ति एक नदी की तरह होती, और तुम्हारी सत्यनिष्ठा सागर के तरंगों की तरह होती।

१९. (१८) तुम्हारे वंशज बालू की तरह होते और तेरी निज सन्तान उसके कणों के समान होती। उनका नाम मेरे सम्मुख से न कभी काटा और न मिटाया जाता।

२०. (१९) तुम बाबुल से निकल जाओ और कसदियों से बच कर भागो और ऊंची आवाज़ में इसकी घोषणा करते हुए पृथ्वी के अन्त समय तक तुम कहो कि (२०) प्रभु ने अपने सेवक याकूब को बचाया।

२१. और वह (२१) उनको मरुभूमि से होकर ले गया, परन्तु वे प्यासे नहीं रहे; उसने उनके लिए चट्टान से पानी निकाला; उसने चट्टान को काटा, जहां से पानी बह निकला।

२२. और जो पापी हैं, वे यह नहीं समझते कि उसने ये सब कार्य और इससे भी बड़े कार्य उनके लिए किए हैं; और प्रभु कहता है कि फिर भी दुष्टों को शान्ति नहीं है।

अध्याय २१

पीतल की पटियों पर अंकित यशायाह के लेख का जारी रहना—यशायाह ४९ से तुलना करो।

१. और ध्यान लगा कर पुनः सुनो, हे इस्राएल के लोगों, तुम सब जो मेरे लोगों के पादरियों के पापों के कारण तोड़ कर निकाल दिए गए हो; हां, तुम सब जो तोड़ दिए गए हो, और विदेशों में छितरा दिए गए हो, हे इस्राएल के घराने के लोगो जो मेरे हो। (१) हे द्वीपों, हे दूर देशों के रहने वालो, सुनो, प्रभु ने मुझे गर्भ में से ही बुलाया, और माता के पेट में से ही उसने मेरे नाम की चर्चा की।

२. उसने मेरे मुख को पैनी तलवार की तरह बनाया, और अपने हाथ की छाया में मुझे छुपाया; उसने मुझे चमकीला तीर बना कर अपने तरकस में छुपा रखा।

३. और मुझसे कहा: हे इस्राएल, तू मेरा दास है, मैं अपनी महिमा प्रकट करूंगा।

४. तब मैंने कहा कि मैंने तो व्यर्थ परिश्रम किया: मैंने व्यर्थ में ही अपना बल खोया; फिर भी मेरा न्याय प्रभु के पास है और मेरे परिश्रम का

(१०) यशा० ४२:८. (११) यशा० ४१:४. प्रका० १:१७:२२, १३. (१२) भजन सं० १०२:२५. (१३) यशा० ४०:२६. (१४) देखो ६. (१५) यशा० ४४:२८. (१६) यशा० ४५:१-४. (१७) यशा० ४५:१९. (१८) उत्पत्ति २२. २७. होशे० १:१०. (१९) यिर्म० ५०:८, ५१:६, ४४, ४५. जक० २:६-७. (२०) यशा० ४४:२२, २३. (२१) भजन सं० १०७:३५-३८. यशा० ३५:६, ७. ४१:१७-१८. अध्याय २१. (१) पद्य ८. यशा० ५१:५. ६०:९. ६६:१९. १ नफी २२:४. २ नफी १०:२०-२२.

परिणाम भी मेरे ईश्वर के पास है।

५. और अब प्रभु कहता है—कि माता के गर्भ से मुझे इसलिए रचा कि मैं उसका सेवक होकर याकूब को उसकी ओर लौटा लाऊं—चाहे इस्राएल उसके पास इकट्ठे न हों, फिर भी मैं प्रभु की दृष्टि में यशस्वी ठहरूंगा, और मेरा परमेश्वर मेरा बल होगा।

६. और उसने कहा : यह तो साधारण सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उत्थान करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिए मेरा सेवक ठहरे; मैं तो तुझे (३) अन्य जातियों के लिए ज्योति दूंगा जिससे कि पृथ्वी के एक ओर से दूसरी ओर तक, तुम्हारे द्वारा मैं लोगों को मुक्ति दे सकूं।

७. इस्राएल का उद्धार करने वाला प्रभु जो पवित्र है, वह जिससे मनुष्य घृणा करता है, और सभी राष्ट्र और राजाओं के सेवक द्वेष करते हैं, उनसे वह कहता है कि उसे देख कर राजा खड़े हो जाएंगे, राजकुमार उसकी आराधना करेंगे क्योंकि प्रभु दृढ़निष्ठ है।

८. प्रभु इस प्रकार कहता है : (४) समुद्र के द्वीपों, जब मुझे स्वीकार हुआ, तब मैंने तुम्हारी पुकार सुनी है, और उद्धार करने के दिन मैंने तुम्हारी सहायता की है; और मैं तुम्हारी रक्षा करके, प्रभु और लोगों के बीच शर्त के अनुसार, पृथ्वी को स्थिर करने और विनष्ट विरासत के पुनरुद्धार के लिए, तुम्हें अपना (५) सेवक दूंगा।

९. जिससे कि तुम बन्दियों से कहो : निकल जाओ और (६) जो अन्धियारे में छिपे हैं उनसे कहो : अपने आपको प्रकट करो। वे मार्ग में अपना पेट भरेंगे और सब ऊंचे स्थानों पर उनको (७) चारागाह मिलेंगे।

१०. वे भूखे प्यासे नहीं रहेंगे और न तो उनको गर्मी और धूप मार सकेंगे; क्योंकि वह जो उन पर दया करता है (८) वही उनको जल के सोतों के पास ले चलेगा।

११. और मैं अपने (९) सब पर्वतों को मार्ग बना दूंगा और (१०) मेरे राज-मार्ग ऊंचे किए जाएंगे।

१२. और तब, हे इस्राएल के घराने वालो, देखो, ये (११) दूर से आएंगे, और देखो, ये उत्तर और पश्चिम से और सीनियों के देश से आएंगे।

१३. हे आकाश तू आनन्द के गीत (१२) गा, हे पृथ्वी, तू प्रसन्न हो क्योंकि जो पूरब में है, उनके पैर दृढ़ होंगे; और हे पर्वतो, आनन्द के गीत खुल कर गाओ, क्योंकि उन लोगों को अब और दण्डित नहीं किया जाएगा; क्योंकि प्रभु ने अपने लोगों को सांत्वना दी है और वह अपने पीड़ित लोगों पर दया करेगा।

१४. लेकिन देखो, सियोन ने कहा : प्रभु ने मुझको त्याग दिया है और प्रभु ने मुझे भुला दिया है, लेकिन वह दिखाएगा कि वह ऐसा नहीं है।

१५. क्या कोई माता अपने (१३) दूध पीते बच्चे को भूल कर अपने गर्भ से जने शिशु से ममता-रहित हो, सकती है? हां, वह तो भूल सकती है, लेकिन हे इस्राएल के घराने, मैं तुझे नहीं भूल सकता।

१६. देखो मैंने तुम्हारा चित्र अपने हाथों की हथेलियों पर खोद कर बनाया है; तुम्हारे घरों की दीवारें मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है।

१७. तुम्हारे बच्चे तुम्हें नष्ट करने वालों के विरुद्ध शीघ्रता करेंगे और तुम्हारी बर्बादी करने वाले तुम्हारे अनुगामी हो जाएंगे।

१८. अपनी आंखें उठा कर अपने चारों ओर देखो; (१४) वे सब एकत्रित होकर तेरे पास आएंगे। और प्रभु कहता है कि मेरे जीवन की शपथ, तू निश्चय उन सबों को गहने के समान पहिन लेगी और एक दुल्हन की तरह उन सबको अपने शरीर से बांध लेगी।

१९. तेरे उजड़े और निर्जन स्थान और तुम्हारे बर्बादी के देश अब वहां के निवासियों को दृष्टि से बहुत अधिक सकरे होंगे और वे जिन्होंने (१५) तुम्हें निगला था, बहुत दूर हो जाएंगे।

२०. प्रथम सन्तति जो मुझसे ले ली गई है,

(३) ३ नफी २१:११. (४) देखो १. (५) देखो ५. २ नफी ३. (६) २ नफी ३:५. (७) एंजे० ३४:१४-१ नफी २२, २५. (८) देखो २२, १ नफी २०. (९) देखो ७. (१०) यशा० ४०:३, ६२:१०. (११) यशा० ४३:५-७. (१२) यशा० ४४:२३. (१३) भजन सं० १०३:१३. (१४) मीका ४:११-१३. (१५) पद्य १७.

(१६) उनके पश्चात् की सन्ताप तेरे कान में फिर से कहेगी कि यह स्थान हमारे लिए बहुत संकरा है, हमारे रहने के लिए दूसरा स्थान दो।

२१. तब तुम अपने हृदय में कहोगी : किसने इनको मेरे लिए जन्माया, मैं तो अपने बच्चों को खो कर दासता में अकेली इधर उधर मारी मारी फिरती थी? इनको किस ने पाला? देखो, मैं अकेली रह गई थी; तब ये कहां थे?

२२. प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है : (१७) देखो मैं अपना हाथ अन्य जातियों की ओर उठाऊंगा (१८) और अपना झण्डा लोगों के लिए खड़ा करूंगा, (१९) और वे तेरे पुत्रों को गोद में ले कर आयेंगे और तेरी पुत्रियों को कन्धा पर बिठा के लाएंगे।

२३. और राजा तेरे सेवक होंगे और उनकी रानियां मां की तरह तेरी सेवा करेंगी; वे धरती की ओर मुख करके तेरा दण्डवत करेंगे, और तेरे चरणों की धूल चाटेंगे। तब तू जानेगी कि मैं ही प्रभु हूं और मेरी प्रतिज्ञा करने वाले लज्जित नहीं होंगे।

२४. (२०) क्या किसी बीर से उसका शिकार छीना जा सकता है या दोषी बन्दियों को मुक्त किया जा सकता है?

२५. लेकिन प्रभु यों कहता है कि बीर के बन्दियों को छुड़ा दिया जाएगा और भयानक शिकारी का शिकार मुक्त कर दिया जाएगा; क्योंकि मैं उनसे मुकाबला करूंगा और मैं तुम्हारे बच्चों की रक्षा करूंगा।

२६. और (२१) जो तुझ पर अत्याचार करते हैं, मैं उनको उन्हीं का मास खिलाऊंगा वे अपने रक्त पी कर ऐसा मतवाले होंगे जैसे कोई मीठी दाख-मदिरा पी कर मतवाला होता है और तब सब प्राणी यह जान जाएंगे कि मैं, तुम्हारा रक्षक और उद्धारक हूं और याकूब का सर्वशक्तिमान प्रभु हूं।

अध्याय २२

नफी द्वारा, यशायाह की भविष्यवाणियों की व्याख्या करना—प्रतिज्ञा के देश में गैर-यहूदियों के एक प्रबल राष्ट्र की भविष्यवाणी—लेही के वंशजों का गैर-यहूदियों द्वारा पालन-पोषण—सियोन के विरुद्ध लड़ने वालों का परिणाम।

१. और ऐसा हुआ कि मैं नफी के पीतल की (१) पटियों पर अंकित इन बातों को पढ़ लेने के पश्चात् मेरे भाई आ कर मुझसे बोले: तुमने जो पढ़ा उसका अर्थ क्या होता है? देखो, जो घटनायें शारीरिक न हो कर आध्यात्मिक होंगी उनको क्या आध्यात्मिक-दृष्टिकोण से समझना होगा?

२. तब मैं, नफी ने उनसे कहा : देखो वह सब भविष्यवक्ता में पवित्र-आत्मा की वाणी द्वारा प्रकट हुआ था; क्योंकि उसी आत्मा के द्वारा सभी बातों की जानकारी भविष्यवक्ताओं को कराई जाती है, जो कि मानव-संतति में शरीर-रूप में आते हैं।

३. इसलिए मैंने जिन बातों को पढ़ा है वे शरीर और आत्मा दोनों से सम्बन्ध रखती हैं; क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि इस्राएल का घराना कभी न कभी अवश्य ही सारे जगत और सभी राष्ट्रों में फैल जाएगा।

४. और देखो, बहुत से तो यरूशलेम में रहने वालों की जानकारी से भी बाहर हो चुके हैं। हां, सभी शाखाओं के अधिकांश लोगों को दूर ले जाया जा चुका है; और वे (२) समुद्री टापुओं में इधर उधर बिखर चुके हैं, जिसका ज्ञान हममें से किसी को भी नहीं है, हम केवल इतना ही जानते हैं कि उनको ले जाया गया है।

५. और जबकि उनको विदेशों में ले जाया गया है, तब इसके विषय में, और उन लोगों के विषय में, जो इस्राएल के पवित्र प्रभु के कारण भविष्य में तितर-बितर किए जाएंगे, भविष्यवाणियां की गई हैं; क्योंकि उसके प्रति वह अपने हृदय कठोर करेंगे इसलिए वह सब राष्ट्रों में बिखेर दिए जाएंगे और सब मनुष्यों द्वारा घृणा किए जाएंगे।

६. फिर भी, अन्य जातियों द्वारा देख-भाल

(१६) पद्य २१. (१७) यशा० ४९:१८-२०. (१८) यशा० ६२:१०, २ नफी १५. (१९) १ नफी, २२:८. २ नफी ६:६, ७. १०:८, ९. (२०) १ नफी २२:१२-१४. (२१) १ नफी १४:१५-१७, २२:१३, १४. २ नफी ६:१४-१८. अध्याय २२. (१) देखो १, १ नफी ३. (२) २ नफी १०:२०-२२.

करने, और प्रभु द्वारा (३) यहूदियों से भिन्न जाति वालों के ऊपर हाथ रखने और उन्हें अपने झण्डे के रूप में खड़ा करने, और उनके बच्चों को इनके द्वारा गोद में लेने और लड़कियों को कन्धों पर ले जाने के पश्चात् मैंने जो कुछ कहा है, वह कालवाचक है; क्योंकि हमारे पूर्वजों के साथ प्रभु का वचन इसी प्रकार है; और इसका सम्बन्ध भविष्य में हमसे और इस्राएल के वंश के सभी लोगों से है।

७. इसका यह भी अर्थ होता है कि एक समय आएगा जबकि इस्राएल के सारे वंश को तितर-बितर करने और उन्हें परेशान करने के पश्चात् प्रभु परमेश्वर यहूदियों से भिन्न जाति वालों (४) का एक प्रबल राष्ट्र खड़ा करेगा, हां, वह इसी देश में होगा, और उनके द्वारा (५) ही हमारे वंशजों को बिखेर दिया जाएगा।

८. हमारे वंशजों के तितर-बितर हो जाने के पश्चात् परमेश्वर यहोवा गैर-यहूदियों में एक (६) अद्‌भुत कार्य करेगा जो हमारे वंश वालों के लिए बड़े ही लाभ का होगा; इसलिए वह कार्य उसी प्रकार होगा जैसे अन्य जाति वालों के द्वारा देखभाल किया जाना या उनकी गोद में या कन्धों पर ढ़ोया जाना।

९. और वह कार्य अन्य जाति वालों के लिए भी (७) महत्व का होगा; न कि केवल गैर-यहूदियों के लिए ही, बल्कि इस्राएल के पूरे (८) घराने के लिए, स्वर्ग में निवास करने वाले पिता द्वारा इब्राहीम के साथ किए इकरार को सब पर प्रकट करना जिसके अनुसार तुम्हारे वंशजों से सारे जगत के प्राणियों को आशीर्वाद प्राप्त होगा।

१०. और मेरे भाइयो, मैं चाहता हूं कि तुम यह समझो कि विश्व की सारी जातियों को तब तक आशीर्वाद प्राप्त नहीं होगा, जब तक कि वह ज्ञान तत्व सभी राष्ट्रों के समक्ष प्रकट नहीं करेगा।

११. इसलिए यहोवा परमेश्वर विश्व के सभी राष्ट्रों के इस्राएल के वंशजों के सामने अपने तत्व ज्ञान का भेद खोलने का कार्य अपने वचन और इन्जील को उन तक लाकर करेगा।

१२. इसलिए वह उनको गुलामी से मुक्त करेगा और उनके पैतृक देश में एकत्रित करेगा और उनको अज्ञानता और अन्धकार में से निकालेगा; और वे यह जाने कि प्रभु उनका उद्धारक और रक्षक है, जो कि इस्राएल का सर्व-शक्तिमान प्रभु है।

१३. और उस अति घृणित गिरजा, जो कि सारे जगत की वेश्या है, उसका रक्त उन्हीं के सिरों पर होगा; क्योंकि वे (९) आपस में युद्ध करेंगे, और उनके हाथों की तलवार उन्हीं के सिरों पर चलेंगी और वे अपने ही रक्त को पीएंगे।

१४. और हे इस्राएल के वंशजो, तुमसे जो भी राष्ट्र युद्ध करेंगे उन्हें एक दूसरे के विरुद्ध कर दिया जाएगा और जो गड्‌ढ़ा वे प्रभु के लोगों को फंसाने के लिए खोदेंगे, उनमें वे स्वयं गिरेंगे। और सियोन के विरुद्ध (१०) लड़ने वालों को नष्ट कर दिया जाएगा, और वह महान-दुष्ट वेश्या जो प्रभु तक ले जाने वाले सत्य-पथ को विकृत करती है; हां, वह अति घृणित गिरजा धूल में मिल जाएगी और उसका गिरना बड़ा भयंकर होगा।

१५. क्योंकि भविष्यवक्ता कहता है कि देखो, वह समय शीघ्रता के साथ आ रहा है जबकि (११) शैतान का कोई वश मानव हृदय पर नहीं रहेगा; और वह समय भी शीघ्र आएगा जबकि सब अहंकार वाले और दुष्कर्म करने वाले कटे ठूंठ की तरह हो जाएंगे और वह दिन भी आ रहा है जबकि उनको (१२) भस्म कर दिया जाएगा।

१६. क्योंकि वह समय भी शीघ्र ही आ रहा है जब कि परमेश्वर का सम्पूर्ण क्रोध मानव-सन्तान के ऊपर उड़ेल दिया जाएगा; क्योंकि वह पापियों

(३) १ नफी २१:२२, २३. (४) ३ नफी २०:२७. (५) १ नफी १३:१२-२०. २ नफी २:११. ३ नफी १६:४. (६) १ नफी १३:३५, १४:७. २ नफी २५:१७:२६, २९:१, २. ३ नफी २१:१-९. ए० ४:१५. (७) १ नफी १३:३४-४२. १४:१-५. २ नफी २८:२. ३०:३. ३ नफी २१:६. २३:४. (८) १ नफी १३:३९. १४:१७. २ नफी २९:१३-१४. ३०:७, ८. ३ नफी ५:२३-२६. १६:४, ५. २१:२६-२९. (९) १ नफी १४:३, १५:१७, २१:२६. (१०) पद्य १९, २०. २ नफी २७:२, ३. (११) पद्य २६ या० ५:७६. (१२) पद्य १७:१८.

ईसा से ५८८-५७० पूर्व के मध्य

के द्वारा धार्मिकों को नष्ट करने नहीं देगा।

१७. इसलिए वह अपनी शक्ति के द्वारा धार्मिक लोगों की रक्षा करेगा भले ही उसका पूरा क्रोध आए, और धार्मिक लोग सुरक्षित रहेंगे और उनके शत्रु अग्नि के द्वारा नष्ट कर दिए जाएंगे। इसलिए धार्मिक लोगों को डरने की कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि भविष्यवक्ता ने ऐसा ही कहा है, कि वे अग्नि से भी सुरक्षित रहेंगे।

१८. देखो मेरे भाइयो, मैं तुमसे कहता हूं कि यह सब शीघ्र ही आने वाला है; हां, रक्तपात, अग्निकांड में धुएं की भाप अवश्य ही आयेंगे; और उनके आने की आवश्यकता इसी जगत पर है; और अगर मनुष्य ने अपने हृदयों को इस्राएल के पवित्र प्रभु के प्रति कठोर बना लिया था, तब यह सब कुछ उन्हें इसी मानव शरीर में ही झेलना होगा।

१९. क्योंकि देखो, धार्मिक लोग नष्ट नहीं होंगे; और वह समय अवश्य आएगा जब कि सियोन के विरुद्ध लड़ने वालों को अलग कर दिया जाएगा।

२०. और प्रभु निश्चय ही अपने लोगों के लिए रास्ता तैयार करेगा जिससे कि वह मूसा के कहे इन शब्दों को पूरा कर सके : तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे और मेरे लिए एक (१३) भविष्यवक्ता खड़ा करेगा और वह तुमसे जो कुछ कहे, तुम सभी बातों में उसको सुनना और ऐसा होगा कि वे सब लोग जो उसको नहीं सुनेंगे, उनको दूसरे लोगों के बीच से अलग कर दिया जाएगा।

२१. और अब, मैं, नफी यह घोषणा करता हूं कि जिस भविष्यवक्ता के विषय में मूसा ने कहा था वह इस्राएल का पवित्र प्रभु था, और वह सब का निर्णय न्यायानुसार करेगा।

२२. और (१४) धार्मिक लोगों को भय करने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि उनको परेशान नहीं किया जाएगा। लेकिन मानव समाज में शैतान के राज्य की स्थापना होगी जो कि मनुष्य के हाड़ मांस शरीरों के अन्दर होगा।

२३. क्योंकि वह समय शीघ्रता के साथ आएगा जबकि वे (१५) सब गिरजा जो कि लाभ के लिए बनाए गए हैं, और जो दूसरों पर अधिकार जमाने के लिए बनाए गए हैं, और वे गिरजा जो सांसारिक लोगों में ख्याति पाने के लिए बनाए गए, और वे गिरजा जो इह-लौकिक विषय वासना के लिए और हर प्रकार के अधर्म के कार्य करने के लिए बनाए गए हैं; हां, दूसरे शब्दों में जो शैतान के राज्य के लिए हैं उन्हें भय करने; कांपने और थरथराने की आवश्यकता है; ये वे हैं जिन्हें धूल में अवश्य मिलाने की आवश्यकता है; ये वे हैं जिन्हें ठूंठ की तरह उखाड़ा जाना चाहिए; और यह सब भविष्यवक्ता के कहे अनुसार होगा।

२४. और वह समय शीघ्रता के साथ आता है जब कि धार्मिक लोगों को पशुशाला के (१६) बछड़ों की तरह ऊपर ले जाया जाएगा; और इस्राएल के एकमेव पवित्र परमेश्वर अपने साम्राज्य में शक्ति, सामर्थ्य और महान यश के साथ राज्य करेगा।

२५. और वह अपने (१७) बच्चों को विश्व के चारों दिशाओं से एकत्रित करेगा और अपनी भेड़ों की गिनती करेगा : जो उसको जानती हैं, और तब एक ही बाड़ा और एक ही गड़रिया होगा; और वह अपनी भेड़ों को चराएगा, जो उसी में अपना चरागाह पाएंगी।

२६. और उसके लोगों की धार्मिकता के कारण, शैतान का कोई वश नहीं चलेगा; इसलिए उनको बहुत दिनों तक स्वतन्त्र नहीं रहने दिया जाएगा, और लोगों की धर्म-परायणता के कारण लोगों के हृदयों पर उसका कोई प्रभाव नहीं रहेगा और इस्राएल का पवित्र प्रभु राज्य करेगा।

२७. और अब, देखो, मैं, नफी, तुमसे कहता हूं कि यह सब मानव-शरीर के अनुसार आएगा।

२८. लेकिन, देखो, विश्व के सब राष्ट्र, जातियां, विभिन्न भाषा बोलने वाले और लोग इस्राएल के पवित्र प्रभु से सुरक्षित निवास करेंगे, अगर वे पश्चात्ताप करेंगे।

२९. और अब मैं, नफी, इन बातों को समाप्त

(१३) पद्य २१. ३ नफी २०:२३. २१:११. (१४) पद्य १६:१७, १९, २४, २८. (१५) १ नफी १४:१०. १५-१७. २ नफी २८:३-३२. ३ नफी, २७:७-१२. ४ नफी २५-२९. मार० ८:२८, ३२, ३३, ३६-३८. (१६) ३ नफी २५:२. (१७) भजन सं० ५०:५. यशा० ४६, ४३:६. ७ यिर्म ३:१४. इफि० १:१०. प्र० १८:४, ५.

करता हूं; क्योंकि इन पर मैं और नहीं कहना चाहता।

३०. इसलिए, मेरे भाइयों, मैं चाहता हूं कि पीतल की (१८) पटियों पर जो लिखा है, उसे तुम सत्य मानो; और वे इसकी साक्षी देती हैं कि एक मनुष्य को परमेश्वर की आज्ञाओं को अवश्य ही मानना चाहिए।

३१. इसलिए तुम्हें यह नहीं मानना चाहिए कि मैं और मेरे पिता ने ही केवल इनकी गवाही और इसकी शिक्षा दी है, इसलिए अगर तुम आज्ञाओं का पालन करोगे और अंत तक सहनशील बने रहोगे, तब अंतिम दिन तुम को बचा लिया जाएगा। और इस प्रकार यह ऐसा ही है। आमीन।

नफी की दूसरी पुस्तक

लेही की मृत्यु का विवरण। नफी के भाइयों का नफी के विरुद्ध विद्रोह। प्रभु द्वारा नफी को जंगल में भाग जाने की चेतावनी देना। जंगल में उसकी यात्राओं का विवरण, इत्यादि।

अध्याय १

स्वतन्त्रता की एक भूमि, धार्मिक लोगों के लिए आशीष किन्तु पापियों के लिए अभिशाप—लेही का उपदेश।

१. और ऐसा हुआ कि जब मैंने अपने भाइयों को शिक्षा देना समाप्त किया, तब हमारे पिता लेही ने भी उनसे बहुत बातें कीं और कहा कि यरूशलेम से उन्हें निकाल कर परमेश्वर ने कितने महान कार्य किए हैं।

२. और उसने सागर में उनके द्वारा किए गए (१) विद्रोह और परमेश्वर के उन्हें सागर में समाप्त न कर के, उनके प्राणों को छोड़ देने की बातें उनसे कहीं।

३. उसने उनसे (२) प्रतिज्ञा के देश के विषय में जो कि उन्होंने पा लिया था, कहा कि परमेश्वर ने हमें यरूशलेम से भाग आने की चेतावनी देकर हमारे प्रति कितना दयावान रहा है।

४. उसने कहा, देखो, मैंने (३) दिव्य-दर्शन द्वारा देखा है कि यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया है; और अगर हम यरूशलेम में होते तब हम भी नष्ट हो जाते।

५. यद्यपि हमने कष्टों को झेला, तथापि हमने प्रतिज्ञा का एक देश प्राप्त किया है, जो कि अन्य सभी देशों से श्रेष्ठ है; और प्रभु परमेश्वर ने इस देश को लेकर मेरे साथ शर्तनामा बनाया जिसके द्वारा यह देश मेरे वंशजों के लिए पैतृक-देश होगा। हां, प्रभु ने इस देश को सदैव के लिए वचन द्वारा मुझे, मेरे वंशजों को, और उन लोगों के लिए दे दिया है जो अन्य देशों से प्रभु के हाथों द्वारा वहां लाये जाएंगे।

६. इसलिए, मैं लेही, अपने अन्दर व्याप्त पवित्र आत्मा के दिए ज्ञान के अनुसार भविष्यवाणी करता हूं कि इस देश में केवल वे ही जाएंगे जिनको प्रभु के हाथों के द्वारा लाया जाएगा।

७. इसलिए यह देश उन्हीं को दिया गया है जिन्हें वह यहां लाएगा। और अगर उन लोगों ने उसकी दी हुई आज्ञाओं के अनुसार उसकी सेवा की, तब यह देश उनकी स्वतन्त्रता के लिए होगा; और उनको कभी भी गुलाम नहीं बनाया जायेगा; अगर कभी वे गुलाम बनें तब अपने ही पापों के कारण बनेंगे; और अगर उन्होंने अधिक पापकर्म किया तब उनके ही कारण यह देश उनके लिए अभिशाप (४) बन जाएगा, लेकिन धर्मियों के लिए सदा के लिए आशीष रहेगा।

८. और देखो, इस देश को अन्य राष्ट्रों की जानकारी से परे रखना विवेक के अनुकूल है; क्योंकि बहुत से राष्ट्र इसको इतना रौंद डालेंगे कि पैतृक देश वालों के लिए स्थान नहीं रहेगा।

(१८) देखो १ नफी ३.

(१) १ नफी १८:९-२०. (२) पद्य ५-१२. देखो १, १ नफी २. (३) १ नफी १७:१४. इला० ८:२१, २२. (४) अल० ४५:१०-१४, १६. मार० १:१७. ६:७-२२. ए० २:८-१२.

ईसा से ५८८ से पूर्व और ५७० के मध्य

९. इसलिए, मैं, लेही ने, एक प्रतिज्ञा प्राप्त की है कि जिन लोगों को परमेश्वर प्रभु यरूशलेम से बाहर ले आएगा, वे अगर उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे तब वे इस देश में प्रगति करेंगे; और उनको अन्य राष्ट्रों से सुरक्षित रखा जाएगा जिससे वे इस देश को अपने लिए रख सकेंगे। और अगर वे नियमों का पालन करते रहे तब उनको इस देश में आशीर्वाद प्राप्त होगा और उनको कष्ट देने वाला कोई नहीं रहेगा; और न तो उनके पैतृक देश को उनसे कोई ले ही सकेगा; और वे सदा के लिए शान्ति से रह सकेंगे।

१०. लेकिन देखो, सृष्टि और सभी मनुष्य की रचना का ज्ञान प्राप्त करने, सृष्टि रचना से लेकर प्रभु के महान और आश्चर्यमय कामों को जानने, विश्वास द्वारा सब कुछ करने की शक्ति प्राप्त होने, आरम्भ से सभी आज्ञाओं को प्राप्त करने और उसकी कृपा द्वारा प्रतिज्ञा के इस बहुमूल्य देश में लाने के महान आशीर्वाद परमेश्वर के हाथ से प्राप्त करने के पश्चात् वह समय आएगा जब कि वे अविश्वास में दुर्बल होंगे—अगर वह दिन आएगा जब कि वे इस्राएल के पवित्र प्रभु, सच्चे मसीह अपने मुक्तिदाता और प्रभु को त्याग देंगे, तब देखो, उसका उचित न्याय उनके सिर पर होगा।

११. हां, वह (५) अन्य राष्ट्रों को यहां लाएगा और वह उनको शक्ति देगा और वह उनसे देश का स्वामित्व का अधिकार लेकर नवागन्तुकों को देगा और इनको पराजित कर तितर बितर कर दिया जाएगा।

१२. जैसे ये पीढ़ी समाप्त होगी और दूसरी पीढ़ी आएगी, वैसे ही रक्तपात होगा, एक दूसरे के विरुद्ध आक्रमण करेंगे; इसलिए मेरे बेटों, मैं चाहता हूं कि तुम मेरी बातों को याद रखो, हां, मैं चाहता हूं कि तुम मेरी बातों को सुनो।

१३. ओह! मैं चाहता हूं कि तुम जागो, गहरी नींद से जागो, हां, नर्क की नींद से तुम जागो और जिस जंजीर से तुम बंधे हुए हो और जो मनुष्य को बांध कर गुलाम बना कर अनन्त दुःख और पीड़ा की गहरी खाई में ले जाती है, उसे तोड़ दे।

१४. जागो! धूल में से उठो और कांपते माता पिता की आवाज़ सुनो जिनके शरीरों को तुम शीघ्र ही शीतल और मूक कब्र में सुला दोगे जहां से कोई भी यात्री वापस नहीं लौट सकता; दो चार दिनों में ही मैं इस संसार के रास्ते से गुजर जाऊंगा।

१५. लेकिन देखो, प्रभु ने मेरी आत्मा को अधोलोक से बचा लिया है; मैंने उसकी शोभा को देखा है और मैं उसके प्रेम के बाहुओं में अनन्त के लिए लपेट लिया गया हूं।

१६. और मेरी इच्छा यह है कि तुम प्रभु के नियमों और व्यवस्थाओं का पालन करना याद रखो; देखो, यह प्रारम्भ से ही मेरी आत्मा की चिन्ता है।

१७. समय समय पर मेरा हृदय चिंता में डूबा रहता है, क्योंकि मैं इस बात से भयभीत हूं कि कहीं परमेश्वर, तुम्हारा प्रभु तुम्हारे हृदयों की कठोरता के कारण (६) तुम्हारे ऊपर अपने सम्पूर्ण क्रोध के साथ आ न जाए और तुम अलग हो जाओ और सदैव के लिए नष्ट कर दिए जाओ।

१८. या तुम्हारे ऊपर (७) अनेक पीढ़ियों तक श्राप रहेगा; और तुम्हारे ऊपर तलवार, अकाल और घृणा आएगी और तुम शैतान की गुलामी और इच्छानुसार चलाए जाओगे।

१९. हे मेरे पुत्रो, मैं चाहता हूं कि तुम्हारे ऊपर ये विपत्तियां न आएं और तुम प्रभु के चुने हुए और कृपापात्र बने रहो। लेकिन देखो, उसकी इच्छा पूरी होगी; क्योंकि उसकी रीति सदा के लिए धार्मिक है।

२०. और उसने कहा है कि (८) जहां तक तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे वहां तक देश में तुम प्रगति करोगे; लेकिन जब तुम मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तब तुमको मेरी उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा।

(५) १ नफी १३:१२-२०. मा० ५:१९-२०.
(६) १ नफी २:२३. २ नफी ५:२१-२४. अल० ३:६-१९. मा० ५:१५. (७) १ नफी १२:२०-२२. (८) यिर्म ६. ओ० ६. मू० १:७. २:२२,३१. अल० ९:१३,१४. ३६:१,३०. ३७:१३. ३८:१. ३ नफी ५:२२. ईसा से ५८८-५७० वर्षों पूर्व के मध्य

२१. और अब, तुमसे मेरी आत्मा सुखी होगी और तुम्हारे कारण सुखपूर्वक मैं अपने अन्तिम दिनों को व्यतीत कर सकूंगा और दु:ख क्लेश के साथ कब्र में नहीं जाऊंगा इसलिए तुम धूल से उठो मेरे पुत्रो, और मनुष्य बन कर एक ही विचार और एक ही हृदय होना निश्चय करके सभी बातों में संगठित हो जाओ जिससे कि तुम गुलामी में न चले जाओ;

२२. जिससे कि तुम दु:खदाई श्राप से श्रापित न किए जाओ; और निष्पक्ष परमेश्वर का क्रोध तुम्हारे ऊपर न आए जो तुमको नष्ट कर सकता है, हां, तुम्हें आत्मा और शरीर दोनों से नष्ट कर सकता है।

२३. जागो, मेरे बेटो; धर्म का कवच पहिन लो। जिस जंजीर से बंधे हुए हो उसको तोड़ दो, और अन्धकार से निकल आओ और धूल से उठ कर आ जाओ।

२४. अपने उस भाई के विरुद्ध विद्रोह मत करो जिसके अभिप्राय उत्तम (९) हैं और जिसने यरूशलेम को छोड़ने के समय से लेकर आज्ञाओं को बनाये रखा, और जो परमेश्वर के हाथों हमें आनन्द के इस देश में लाने का साधन बना रहा है, क्योंकि अगर वह नहीं होता तब हम वन में (१०) भूखों मर जाते; फिर भी तुमने उसके (११) प्राण लेना चाहा और तुम्हारे कारण उसने बहुत कष्ट सहे।

२५. और तुम्हारे कारण मैं उसके लिए बहुत अधिक भयभीत हूं और कांप रहा हूं; क्योंकि शायद उसको फिर से कष्ट उठाना पड़े; क्योंकि तुमने उस पर यह दोष लगाया है कि वह शक्तिशाली और तुम्हारा (१२) अधिकारी बनना चाहता है लेकिन मैं यह जानता हूं कि वह न तो बलवान और न ही तुम्हारा अधिकारी होना चाहता है; वह तो परमेश्वर की कीर्ति और तुम्हारे लिए अनन्त लाभ को खोज रहा है।

२६. और तुमने उसकी स्पष्टता के कारण उसके विरुद्ध असन्तोष प्रकट किया। तुम कहते हो कि (१३) उसने पैनी बातें कहीं, और कहते हो कि उसने तुम पर क्रोध किया; लेकिन देखो, उसकी पैनी बातें परमेश्वर की वाणी का बल थीं जो उसके अन्दर विद्यमान थीं, और जिसे तुम क्रोध कहते हो, वह थी सच्चाई जो कि परमेश्वर के अनुकूल थी जिसे उसने छुपाया नहीं और तुम्हारे पापों की वीरता के साथ स्पष्ट प्रकट किया।

२७. और ऐसा है कि परमेश्वर की शक्ति उसके साथ होना आवश्यक है, यहां तक कि तुमको उसके द्वारा आज्ञा देना और उन आज्ञाओं का पालन करना भी ठीक है। लेकिन देखो, वह तुम्हारा भाई नहीं, लेकिन उसके अन्दर व्याप्त पवित्रात्मा थी जिसने उसके मुख को खोल कर वह बातें कहीं जिन्हें वह रोक नहीं सका।

२८. और अब मेरे बेटो, लमान, लेमुएल और साम, और वे भी मेरे बेटो, जो इस्माइल के पुत्र हैं, देखो, अगर तुमने नफी की कही बातों को माना, तब तुम नष्ट नहीं होगे। और अगर तुमने उसकी बातों को सुना तब मैं तुम्हारे लिए आशीष छोड़े जाता हूं, हां, यहां तक कि यह मेरा प्रथम आशीर्वाद होगा।

२९. अगर तुमने उसकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया तब मैं अपना प्रथम आशीर्वाद भी वापस ले लूंगा और वह फिर उसके ऊपर चला जाएगा।

३०. और अब जराम, मैं तुमसे बोल रहा हूं; देखो, तुम लबान के सेवक हो, फिर भी तुम यरूशलेम देश से लाए गए और मैं जानता हूं कि तुम सदैव के लिए मेरे पुत्र के सच्चे मित्र हो।

३१. इसलिए कि तुम ईमानदार हो उसके वंश द्वारा तुम्हारे वंश वालों को आशिष प्राप्त होगा और तुम्हारा वंश उन्नति करके बहुत दिनों तक इस देश में निवास करेगा; और उनके दुष्कर्मों को छोड़ कर और कुछ भी उनकी प्रगति में बाधा नहीं पहुंचाएगा और न तो उनको नष्ट ही कर सकेगा।

३२. इसलिए अगर तुम प्रभु की आज्ञाओं का पालन करोगे तब प्रभु इस देश को तुम्हारे और मेरे वंश वालों की सुरक्षा के लिए उत्सर्ग कर देगा।

(९) १ नफी ११:१८:३. (१०) १ नफी १६:३२. (११) १ नफी १६:३७. (१२) १ नफी १६:३८. (१३) १ नफी १७:४८. (१४) १ नफी ४:२०, ३५.

अध्याय २

लेही द्वारा उसके पुत्र याकूब को उपदेश देना—हर एक कार्य में विरोधी विचार आवश्यक—निषेधित फल और जीवन का वृक्ष—आदम का पतन कि जिससे मनुष्य-मनुष्य को मुक्ति देने के लिए महान मध्यस्थ मसीह।

१. और अब, याकूब, मैं तुमसे बोल रहा हूं: मेरे कष्ट के समय वन में तुम (१) प्रथम जन्मे पुत्र हो। और अपने बाल्यकाल में तुमने अपने भाइयों की कठोरता के कारण बहुत कष्ट झेले और दु:खों का सामना किया।

२. फिर भी याकूब, वन में जन्मे मेरी प्रथम सन्तान, तुम परमेश्वर की महानता को जानते हो; और वह तुम्हारे कष्टों को तुम्हारे लाभ के लिए प्रतिष्ठित करेगा।

३. इसलिए तुम्हारी आत्मा को आशीष दिया जाएगा, और तुम अपने भाई नफी के साथ सुरक्षित रहोगे, और तुम्हारे दिन तेरे परमेश्वर की सेवा में बीतेंगे। इसलिए तुम अपने मुक्तिदाता के द्वारा बचा लिए गए हो; क्योंकि तुम देख चुके हो कि समय आ जाने पर वह मनुष्यों के लिए मुक्ति लेकर आएगा।

४. और तुम अपने बचपन में उसकी शोभा को देख चुके हो; इसलिए तुमको उसी प्रकार आशीर्वाद दिया गया है जिस प्रकार वह मानव शरीर में लोगों को आशीर्वाद देगा; क्योंकि आत्मा तो कल, आज और सदैव एक समान ही रहेगी। और रास्ता तो मनुष्य के पतन के समय से ही तैयार है और मुक्ति सबको प्राप्त हो सकती है।

५. और लोगों को भला बुरा जानने के लिए उन्हें पर्याप्त शिक्षा दी गई है। लोगों को नियम भी दिए गए हैं; और बिना नियम के किसी का न्याय नहीं होगा अर्थात् नियम के अनुसार ही लोगों को अलग किया जाएगा। हां, इस (२) सांसारिक नियम के अनुसार उनको अलग किया गया था, और (३) आध्यात्मिक नियमानुसार वे अच्छी बातों से दूर किए जाते हैं और सदैव के लिए अभागे बन बैठते हैं।

६. इसलिए मुक्ति पवित्र मसीह के द्वारा आती है क्योंकि वह दया और सच्चाई से परिपूर्ण है।

७. देखो, नियम की आवश्यकतानुसार उन सभी टूटे हृदय और शोकातुर-लोगों के किए पापों के लिए उसने अपने आपको बलिदान कर देने को प्रस्तुत कर दिया है, और नियम का उत्तर किसी भी अन्य के द्वारा नहीं दिया जा सकता।

८. इसलिए संसार के लोगों को यह बताने की कितनी बड़ी आवश्यकता है कि वे यह जाने कि कोई भी मनुष्य बिना उस पवित्र मसीह की योग्यताओं, दया, और कृपा के परमेश्वर के साथ नहीं रह सकता जो मनुष्य की तरह अपने प्राण को दे कर पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा पुन: जीवन प्राप्त करके मृत लोगों के लिए (४) पुन-र्जीवन की व्यवस्था स्वयं सबसे प्रथम पुनर्जीवन प्राप्त करके देगा।

९. जहां तक मानव वंश की मध्यस्थता की बात है, वह परमेश्वर का प्रथम फल होगा और जो उस पर विश्वास करेंगे उन्हें बचा लिया जाएगा।

१०. और सभी के लिए मध्यस्थता के कारण, सब लोग, परमेश्वर के पास आओ; और उसके सामने खड़े हो जाओ जिससे कि जो सच्चाई और पवित्रता उसके अन्दर है उसके अनुसार वह तुम्हारा न्याय कर सके। इसलिए नियम का पालन न करने के लिए जो फल दण्ड है जिसको पवित्र प्रभु ने दिया है और जो निश्चित है और आनन्द के प्रतिकूल है वह (५) प्रायश्चित के लिए आवश्यक है।

(१) १ नफी १८:७, १९. (२) २ नफी ९:४, ६, ७. अल० ११:४२-४५. १२:१२, १६, २४, २७, ३१, ३६; ४२:६-९. इला० १४, १६. (३) २ नफी ९:८-१५, २६. मू० १६:४-१०. अल० ११:४०-४५. १२:१६-१८, ३२, ३६, ३७. ४०:१३, १४, २६. ४२:६-११, १४. इला० १४:१५-१८. (४) २ नफी ९:४, ६-१९, २२. मू० १३:३५. १५:८, ९, २०-२७. १६:७-११. अल० ५:१५. ७:१२. ११:४१-४५. १२:१२-१८, २४, २५. २२:१४. ३३:२२. अध्याय ४०. ४१:२-५. ४२:२३. इला० १४:१५-१७, २५. ३ नफी २३:९-१३. २६:५. मोर० ६:२१. ७:६. ९:१३. मरो० ७:४१. १०:३४. यह० ३७:३-१०. रोमि० ८:१०. १ कुरु० १५:३५-४५. (५) पद्य १०. मू० १४:१२, १५:८. मरो० ७:२७, २८.

११. क्योंकि हर एक कामों में (७) विरोध स्वाभाविक है। वन में जन्मा मेरा पहला पुत्र, अगर ऐसा नहीं होता तब धर्मपरायणता नहीं लाई जा सकती थी और पापकर्म, पवित्रता, दु:ख, उचित और अनुचित कुछ भी नहीं होता। इसलिए सभी बातों का एक में मिश्रण होना आवश्यक है; इसलिए अगर एक ही बात होती तब उसे प्राणहीन मृत समान होना चाहिए जो न तो मृत ही है और न जीवित, न भ्रष्ट ही और न अभ्रष्ट, न आनन्द हो और न कष्ट हो, न विवेक ही हो और न अविवेक ही।

१२. अगर कोई वस्तु बिना आवश्यकता की बनाई गई हो तब उसकी रचना का कोई महत्व नहीं होगा। इसलिए ऐसी रचना परमेश्वर के विवेक, उसके अनन्त उद्देश्यों, सामर्थ्य, दया और न्याय पर भी असरकारक होगी।

१३. अगर तुम कहो कि कोई नियम नहीं है, तब तुम्हें यह भी कहना होगा कि कोई पाप कर्म भी नहीं है, अगर तुम कहते हो कि पाप नहीं है तब तुमको यह भी कहना होगा कि पवित्रता भी नहीं और अगर पवित्रता नहीं है तब आनन्द भी नहीं होगा। और अगर पवित्रता नहीं है और न तो आनन्द ही है तब न तो दण्ड ही होगा और न तो दु:ख ही होगा। अगर ये सब बातें नहीं हैं तब परमेश्वर भी नहीं हो सकता।

१४. और अब मेरे बेटो, मैं इन बातों को तुम्हारी भलाई और ज्ञान के लिए कह रहा हूं; क्योंकि एक परमेश्वर है, और उसने सभी वस्तुओं की रचना की है; उसने स्वर्ग और जगत को और उसमें की सारी वस्तुओं की रचना की, और कर्म में आने और कार्य करने वाली वस्तुओं को भी बनाया।

१५. मानव जीवन के अन्त में, अपने अनन्त उद्देश्य को लाने के लिए, हमारे प्रथम माता-पिता, धरती के पशु और हवा में उड़ने वाली पक्षियों और अन्य सारी वस्तुओं को बना लेने के पश्चात (८) विरोध की भी आवश्यकता थी, यहां तक कि जीवन के वृक्ष के विरोध में वर्जित फल की भी आवश्यकता थी; जिन में से एक मीठा और दूसरा कडुवा था।

१६. इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को कर्म करने में स्वतन्त्र किया है और वह बिना दो में से एक के द्वारा प्रभावित हुए कर्म कर नहीं सकता।

१७. और मैं, लेही, जो कुछ पढ़ा हूं, उससे विश्वास करता हूं कि परमेश्वर का एक दूत (९) जो कुछ लिखा है उसके अनुसार स्वर्ग में से गिर गया है; इसलिए वह शैतान बन गया है और वह सब ऐसे कार्य कर रहा है जो परमेश्वर के समक्ष बुरे ठहरते हैं।

१८. स्वर्ग से पतित होकर घृणास्पद बन जाने के कारण वह सारी मनुष्य जाति के लिए दुर्गति करने का उपाय ढूंढ़ रहा है। इसलिए उसने, हां, उस बूढ़े सर्प ने, जो कि शैतान है, और जो कि सारी मिथ्या बातों का जन्मदाता है, हौव्वा से कहा : उस वर्जित फल को खा लो, तुम मरोगे नहीं, परन्तु तुम परमेश्वर की तरह हो जाओगे और तुम्हें भले और बुरे का ज्ञान हो जाएगा।

१९. और जब आदम और हौव्वा ने उस वर्जित फल को खा लिया तब परिश्रम करके मिट्टी से भोजन प्राप्त करने के लिए उन्हें अदन की बाटिका से बाहर निकाल दिया गया।

२०. उन्होंने बच्चे जन्माए, यहां तक कि सारे संसार के परिवार उन्हीं से हुए।

२१. और लोगों की आयु परमेश्वर की इच्छानुसार होती थी जिससे कि उन्हें मानव शरीर में ही अपने किए दुष्कर्मों पर पश्चात्ताप करने का अवसर प्राप्त हो सके; इसलिए मानव जीवन उनके लिए परीक्षाकाल का समय हुआ, और उनके मानव जीवन की आयु परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई आज्ञाओं के अनुसार ही स्थिर

(६) २ नफी ९:७, २१, २२, २५, २६. १०:२५. २५:१६. या० ४:११, १२. मू० ३:११, १५-१९. ४:२, ६, ७. १३:२८. १८:२. अल० ५:२७. १३:५, ११. २१:९. २२:१४. २४:१३. ३०:१७. ३३:२२. ३४:८-१६, ३६. ३६:१७. ४२:१५, २३. इला० १४:१५, १६. ३ नफी ११:११. २७:१९. मो० ९:१३. मरो० ७:४१. ८:२०, १०:३३. (७) पद्य १५, १६. (८) पद्य ११. (९) पद्य १८. २ नफी ९:८. मू० १६:३. अनमोल मोती. मू० ४:३-४. इब्राहीम ३:२७, २८.३ उत्पत्ति ३:१. प्रका० १२:९. २०:२.

हुई। उसने यह आज्ञा दी है कि हर एक मनुष्य को अपने पापों पर पश्चात्ताप करना चाहिए क्योंकि उसने हर एक को यह दिखलाया है कि मनुष्य अपने माता-पिता के पापों के कारण खोए हुए हैं।

२२. अगर आदम ने पाप नहीं किया होता तब वह पतित नहीं होता और वह अदन की बाटिका में ही रहता। और जिन सारी चीजों की रचना हुई थी वे सब उसी आरम्भिक अवस्था में रहतीं; और भविष्य में भी वे सदैव के लिए उसी प्रकार रहतीं।

२३. और उनके बच्चे (१०) नहीं होते; इसलिए वे अपने निर्दोष अवस्था में रहते, और उन्हें कष्ट का अनुभव नहीं होता, और पाप का ज्ञान न होने से उन्हें भले का भी ज्ञान नहीं होता।

२४. लेकिन देखो, सभी कुछ उसके विवेक के अन्तर्गत हुआ जो सभी कुछ जानता है।

२५. आदम का (११) पतन इसलिए हुआ जिससे कि मनुष्य को भविष्य और वर्तमान में आनन्द की प्राप्ति हो।

२६. मसीह अपने उचित समय में आएगा जिससे कि वह मानव वंश को पतन से ऊपर उठाए। जाने के कारण सदैव के लिए (१२) स्वतंत्र होकर उन्हें भले और बुरे का ज्ञान रहेगा और वे स्वयं कर्म करने में स्वतंत्र रहेंगे न कि दूसरे के प्रभाव से कर्म करेंगे, केवल महान अन्तिम दिन में परमेश्वर के दिए गए नियमों के अनुसार उन्हें दण्ड भोगना पड़ेगा।

२७. इसलिए, शरीर से मनुष्य स्वतन्त्र है; और सभी वस्तु जो मानव हित के लिए हैं, वे उन्हें दी गई हैं। और मनुष्य के लिए महान मध्यस्थ के द्वारा वे स्वतन्त्रता और अनन्त जीवन, या शैतान की दासता और उसके बल के अनुसार दासता और मृत्यु चुनने में स्वतंत्र है; क्योंकि शैतान तो यह चाहता है कि सारा मानव समाज उसी की तरह आशाहीन हो जाए।

२८. और अब, मेरे बेटो, मैं चाहता हूं कि तुम उस महान मध्यस्थ की ओर देखो, और उसकी महान आज्ञाओं को सुनो; और उसकी वाणी के प्रति ईमानदार रहो, और उसकी पवित्र आत्मा की इच्छानुसार अनन्त जीवन को चुनो;

२९. तुम इस सांसारिक जीवन की इच्छा और मानव शरीर के अन्दर की तरह बुरी भावनाओं के अनुसार अनन्त मृत्यु को मत चुनो, जो शैतान की आत्मा को वह शक्ति देती है जिसके द्वारा वह लोगों को दास बना कर नरक में गिरा देती है जिससे कि वह अपने राज्य में तुम पर शासन कर सके।

३०. मेरे बेटो, मानव जीवन के अपने परीक्षा काल में अन्तिम दिनों में मैंने इन थोड़े से शब्दों को तुम से कहा, जिन्हें मैंने भविष्यवक्ता की वाणी में से चुना। तुम्हारी आत्मा के अनन्त सुख की अपेक्षा मेरा कोई अन्य उद्देश्य नहीं है। आमीन।

अध्याय ३

लेही का अपने पुत्र यूसुफ को उपदेश देना—मिश्र देश में यूसुफ द्वारा भविष्यवाणी—एक चुने हुए भविष्यदर्शी के विषय की भविष्यवाणी—मूसा का कर्तव्य—इब्रानी और नफायटी शास्त्र।

१. और अब, यूसुफ (१) मेरा अन्तिम पुत्र मैं तुमसे बोल रहा हूं। वन में मेरे कष्ट के दिनों में तुमने जन्म लिया; हां, मेरे सबसे अधिक चिन्ता के दिनों में तुम्हारी मां ने तुम्हें जन्म दिया।

२. और प्रभु तुम्हारे, और तुम्हारे वंश के साथ तुम्हारे भाइयों के वंश वालों के लिए भी (२) यह देश, जो कि सभी अन्य देशों से अधिक मूल्यवान है, पैतृक-देश के लिए उत्सर्ग कर दे, और अगर तुमने इस्राएल के पवित्र प्रभु की आज्ञाओं का पालन किया तब यह सदैव के लिए तुम्हारी सुरक्षा के लिए होगा।

३. और अब, यूसुफ, मेरे अन्तिम पुत्र, जिसको मैं वन में अपने दुःखों के समय में लाया, प्रभु तुमको सदैव के लिए आशीष दे जिससे कि तुम्हारा वंश (३) पूरी तरह कभी भी नष्ट न हो।

४. क्योंकि तुम मेरी (४) सन्तति हो और

(१०) पद्य २५. अन० मो० मू० ५:११. (११) पद्य २३. (१२) पद्य २७-२९. अल० अध्याय २९, ४१:७, ४२. २७ इला० १४:३० अध्याय ३ (१) १नफी १८:७, १९ (२) १नफी २:२०. १८:२२, २३. (३) १ नफी १३:३०. (४) १ नफी ५:१४-१६.

मैं यूसुफ के वंश का हूं जिसको दास बना कर मिश्र में ले जाया गया था और प्रभु ने यूसुफ के साथ महान शर्त बनाई थी।

५. इसलिए, यूसुफ ने हमारे इन दिनों को सचमुच में देखा था। और उसने प्रभु से यह वचन पाया था कि उसकी सन्तति में से परमेश्वर इस्राएल के वंश वालों के लिए एक धार्मिक शाखा खड़ा करेगा; वह मसीह नहीं होगा लेकिन एक शाखा होगी जो कि तोड़ दी जाएगी, फिर भी परमेश्वर के शर्तनामा में उनको याद रखा जाएगा कि मसीह उनमें अन्तिम दिनों में शक्ति के रूप में प्रकट होगा जिससे उनको अन्धकार में से निकाल कर प्रकाश में लाएगा—हां, उस छुपे अन्धकार और दासता में से निकाल कर स्वतन्त्रता में लाएगा।

६. क्योंकि यूसुफ ने सचमुच में इसकी साक्षी देते हुए कहा : प्रभु मेरे परमेश्वर एक (५) भविष्यदर्शी खड़ा करेगा जो कि मेरी सन्तति के लिए एक चुना हुआ भविष्यदर्शी होगा।

७. हां, यूसुफ ने सचमुच में कहा : प्रभु मुझसे इस प्रकार कहता है : तुम्हारी सन्तति में से मैं एक चुना हुआ भविष्यदर्शी खड़ा करूंगा; और तुम्हारी सन्तति में से उसको बहुत अधिक सम्मान प्राप्त होगा। और उसको मैं यह आज्ञा दूंगा कि वह तुम्हारी और तुम्हारे भाइयों की सन्तति के लिए एक काम करे जो कि उनके लिए बहुत अधिक महत्व का होगा, यहां तक कि जो शर्तनामा मैंने तुम्हारे पिता के साथ बनाया है, उससे उनकी जानकारी कराई जाएगी।

८. और मैं उसको एक आज्ञा यह दूंगा कि मेरे बताए काम को छोड़ कर वह कोई दूसरा काम न करे। और मैं उसको अपनी दृष्टि में महान बनाऊंगा क्योंकि वह मेरा काम करेगा।

९. और वह उस मूसा की तरह महान होगा जिसको मैंने कहा कि हे इस्राएलियों, मैं तुम्हारे लोगों को स्वतन्त्र करने के लिए खड़ा करूंगा।

१०. और तुम्हारे लोगों को मिश्र से स्वतन्त्र करने के लिए मैं मूसा को खड़ा करूंगा।

११. लेकिन मैं तुम्हारी सन्तति में से एक महान भविष्यदर्शी को खड़ा करूंगा और उसको शक्ति दूंगा जिससे वह तुम्हारी सन्तति के वंश तक न केवल मेरी वाणी को ही ले जाएगा—अपितु उनको मेरी उस वाणी पर विश्वास करवाएगा, जो कि उनके अन्दर पहुंच चुकी होगी।

१२. इसलिए, तुम्हारी संतति लिखेगी, और यहूदा की संतति भी लिखेगी, और जो कुछ तुम्हारी संतति और यहूदा की संतति के द्वारा लिखा जाएगा, वह (६) एक साथ बढ़ कर असत्य मत को पराजित कर देगा और तुम्हारी संतति में शान्ति और तृप्ति लाकर अन्तिम दिनों में अपने पूर्वजों का और मेरे साथ दिए गए शर्त का (७) ज्ञान उनको देगा, यह प्रभु का कहना है।

१३. और मेरे सारे लोगों में जब मेरा काम आरम्भ होगा तब वह निर्बल से सबल बना दिए जाएंगे, हे इस्राएल के घराने, प्रभु यहां तक कहता है, कि तुम्हें फिर से स्थापित कर दिया जाएगा।

१४. और यूसुफ ने भविष्यवाणी करते हुए कहा : देखो, प्रभु उस भविष्यदर्शी को आशीर्वाद देगा; और जो उसे नष्ट करने की चेष्टा करेंगे उन्हें पराजित किया जाएगा; क्योंकि जो वचन मैं प्रभु से अपनी सन्तति के विषय में पाया है, उसे पूरा किया जाएगा। देखो, मुझे निश्चय है कि उस वचन को पूरा किया जाएगा।

१५. और (८) मेरे नाम पर उसका नाम होगा और उसका नाम उसके पिता के नाम पर भी होगा। और प्रभु उसके हाथ के द्वारा जो काम करवाएगा उसमें वह मेरी तरह ही होगा और वह प्रभु के सामर्थ्य के द्वारा मेरे (९) लोगों के लिए मुक्ति लाएगा।

१६. हां, यूसुफ ने इस प्रकार भविष्यवाणी की : मूसा के वचन की तरह मैं इन बातों पर पूरा विश्वास करता हूं; क्योंकि प्रभु ने मुझको कहा है कि मैं तुम्हारे वंश को सदैव के लिए सुरक्षित रखूंगा।

१७. और प्रभु ने कहा : मैं एक मूसा को खड़ा

(५) पद्य ११, १४. मू० ८:१३-१८. ३ नफी २१:८-११. मा० ८:१६, २५. ए० ३:२१-२८. (६) यहे० ३७:१६-२०. (७) ३ नफी ५:२३. मार० ७:५, १०. (८) पद्य १४. (९) २ नफी २७:६-२६. इनो० १२-१८. अल० ३७:१-२०. ३ नफी १६:१०, ११. मा० ७:८-१०.

करूंगा और मैं उसकी एक छड़ी में बल दूंगा; और मैं अपना लिखित न्याय उसको दूंगा। लेकिन मैं उसको प्रवक्ता नहीं बनाऊंगा और वह अधिक बोलेगा नहीं। मैं अपने हाथों की उंगली से अपने नियम को उसके लिए लिखूंगा; और मैं उसके लिए एक प्रवक्ता बनाऊंगा।

१८. और प्रभु ने मुझसे भी कहा : मैं तुम्हारी सन्तति के लिए (१०) एक प्रवक्ता दूंगा, और देखो, तुम्हारी सन्तति के उद्योग के परिणाम और हित के लिए लिखने का मैं उसे अधिकार दूंगा और उसकी घोषणा वह भविष्यवक्ता करेगा।

१९. और जिन शब्दों को वह लिखेगा वह तुम्हारी सन्तति के पास आएंगे जो कि मेरे विवेक के अनुसार उनके लिए हितकारी होंगे। और ऐसा प्रतीत होगा कि मानो तुम्हारी सन्तति धूल में से पुकार रही है; क्योंकि उनका विश्वास मुझे मालूम है।

२०. और वे धूल में से (११) पुकारेंगे; हां, अनेकों पीढ़ियों के बीत जाने पर भी वे अपने भाइयों से क्षमा-याचना करेंगे। और ऐसा होगा कि उनके साधारण शब्दों में भी उनकी पुकार भी सुनी जाएगी।

२१. उनके विश्वास के कारण उनकी बातें उनके उन भाइयों के लिए मेरे मुख से निकलेंगे जो कि तुम्हारी सन्तति है; और वह वचन जो मैं तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, उसके प्रति मैं उनके दुर्बल शब्दों को विश्वास में दृढ़ करूंगा।

२२. देखो, मेरे पुत्र यूसुफ, इस प्रकार मेरे पिता ने भविष्यवाणी की थी।

२३. इसलिए, इस वचन के द्वारा तुम्हें आशीर्वाद दिया गया है; क्योंकि तुम्हारा वंश नष्ट नहीं होगा क्योंकि वे उस पुस्तक की लिखी बातों को मानेंगे।

२४. और उनमें एक बहुत शक्तिशाली होगा जो वचन और कर्म से बहुत भलाई करेगा और वह अपने बहुत अधिक विश्वास के कारण, परमेश्वर के हाथों में अत्यधिक चमत्कार करने का साधन होगा, और वह ऐसे कर्म करेगा जो ईश्वर की दृष्टि में महान होंगे और जो इस्राएल और तुम्हारे भाइयों के वंशजों को पुनर्स्थापित करने का कार्य होगा।

२५. और यूसुफ, तुम धन्य हो। देखो, तुम छोटे हो; इसलिए तुम अपने भाई नफी का कहना मानना, और तुम्हारे साथ वैसा ही होगा जैसा कि मैंने कहा है। अपने मरते हुए पिता की बातों को याद रखना। आमीन।

अध्याय ४

लमान और लेमुएल के पुत्र पुत्रियों को लेही द्वारा आशीर्वाद देना—इस्माइल के परिवार और साम की सन्तति को आशीर्वाद दिया जाना—लेही की मृत्यु और विद्रोह।

१. और अब, मैं, नफी अपने पिता के द्वारा उस भविष्यवाणी के विषय में कहूंगा जो कि उस यूसुफ से सम्बन्ध रखती है, जो कि मिश्र ले जाया गया था।

२. क्योंकि देखो, उसने उसके सारे वंश के विषय में सचमुच में भविष्यवाणी की। और जिन भविष्यवाणियों को उसने लिखा उतनी महान भविष्यवाणियां बहुत कम हैं। उसने हमारे और हमारे भविष्य के वंशों के विषय में भी भविष्यवाणी की, जिन्हें (१) पीतल की पटियों पर अंकित किया गया है।

३. और जब मेरे पिता ने यूसुफ के विषय की भविष्यवाणियां करना समाप्त कर दिया, तब उन्होंने लमान के लड़के और लड़कियों को बुला कर उनसे कहा; मेरे बेटे और बेटियों जो कि मेरे बड़े लड़के के पुत्र और पुत्रियां हो, तुम मेरी बातों को ध्यान से सुनो।

४. क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने कहा है कि जहां तक तुमने मेरी आज्ञाओं का पालन किया, वहां तक तुम इस देश में प्रगति करोगे; और जब तुम मेरी आज्ञाओं की अवहेलना करोगे तब तुमको मेरी उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा।

५. लेकिन देखो, मेरे बेटे और बेटियों, बिना तुम्हें आशीर्वाद दिए मैं अपनी कब्र में नहीं जा सकता,

(१०) सि० शर्त० १००:९-११. (११) २ नफी २६:१६. मार० ८:१४-१६, २३. २५, २६. (१) देखो १. १ नफी ३.

ईसा से ५८८-५७० वर्षों के पूर्व के मध्य

क्योंकि मैं यह जानता हूं कि जिस रास्ते से तुम्हें चलना चाहिए उसके अनुसार अगर तुम्हें शिक्षा दी गई तब तुम उससे अलग नहीं होओगे।

६. इसलिए अगर तुम्हें शाप दिया गया, तब मैं तुम्हें यह आशीर्वाद देता हूं कि वह शाप तुम पर नहीं लगेगा, और तुम्हारे माता-पिता उस शाप के उत्तरदाता होंगे।

७. इसलिए मेरे आशीर्वाद के कारण प्रभु-परमेश्वर तुम्हें नष्ट नहीं होने देगा और (२) वह तुम पर और तुम्हारे वंशजों पर सदैव के लिए दयालु बना रहेगा।

८. और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने लमान के पुत्र और पुत्रियों से बोलना समाप्त किया तब उन्होंने लेमुएल के पुत्र-पुत्रियों को अपने सामने बुलवाया।

९. और उन्होंने उनसे कहा: मेरे बेटों और बेटियों, तुम जो कि मेरे द्वितीय पुत्र की सन्तान हो; देखो मैं तुम्हें (३) वही आशीर्वाद देता हूं जो कि मैंने लमान के पुत्र और पुत्रियों को दिया है; इसलिए तुम पूरी तरह नष्ट नहीं होओगे; लेकिन अन्त में तुम्हारी सन्तान को आशीष प्राप्त होगा।

१०. और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता ने उनसे बोलना समाप्त किया तब उन्होंने (४) इस्माइल के लड़कों और उनके सब परिवार वालों से बातें कीं।

११. और जब उन्होंने उनसे बातें करना समाप्त किया, तब उन्होंने साम से कहा: तुम और तुम्हारा वंश धन्य है; क्योंकि वे इस देश के अधिकारी उसी प्रकार होंगे जिस प्रकार तुम्हारा भाई नफी होगा। और तुम्हारे वंशजों की (५) गिनती उसके वंशजों के साथ की जाएगी; और तुम्हारा वंश उसके वंश की तरह होगा; और तुम अपने सारे जीवन भर आशीष प्राप्त करते रहोगे।

१२. और ऐसा हुआ कि जब मेरे पिता लेही ने, अपने पूरे घराने से अपने हृदय की भावनाओं और प्रभु की आत्मा, जो उनके अन्दर व्याप्त थी, उसके अनुसार बातें कर लीं, तब उनके ऊपर बुढ़ापे का प्रभाव बढ़ा और उनकी मृत्यु हो गई और उन्हें कब्र में गाड़ दिया गया।

१३. और ऐसा हुआ कि मेरे पिता के मरने के कुछ ही दिनों के पश्चात् लमान, लेमुएल और इस्माइल के लड़के प्रभु की चेतावनी के कारण मुझ पर क्रोधित हो उठे।

१४. क्योंकि मुझे, नफी, को प्रभु की वाणी के अनुसार उनसे बोलना पड़ता था; मैंने, और मृत्यु से पूर्व मेरे पिता ने उनको बहुत उपदेश दिए थे, जिन में बहुत सी बातें, जो अधिक ऐतिहासिक हैं, वे मेरी (६) दूसरी पटियों पर अंकित हैं।

१५. अपनी इन पटियों पर मैं अपने आत्मज्ञान और धर्मशास्त्रों की (७) उन बातों को अंकित कर रहा हूं जो पीतल की पटियों पर खोद कर अंकित हुई हैं। क्योंकि धर्मग्रन्थों में मेरी आत्मा आनन्द विभोर है और मेरा हृदय उनके मनन में मग्न है, और मैं उन्हें अपनी सन्तानों के लाभ के लिए लिख रहा हूं।

१६. देखो, मेरी आत्मा प्रभु की बातों में आनन्दित है; और जिन बातों को मैंने देखा और सुना, उन पर मेरा हृदय लगातार चिन्तन कर रहा है।

१७. फिर भी परमेश्वर द्वारा अपने महान और आश्चर्यमय कामों को मुझे दिखाने के महान उपकारों के बावजूद मेरा हृदय पुकार उठता है; हे अभागे मनुष्य अर्थात् स्वयं मैं; मानव शरीर के कारण मेरा हृदय दुःखित होता है; मेरे दुष्कर्मों के कारण मेरी आत्मा भी दुःखी होती है।

१८. मैं लालच और पापों से घिरा हुआ हूं और ये मुझे आसानी से काबू कर लेते हैं।

१९. और जब मैं आनन्द मनाना चाहता हूं तब मेरा हृदय अपने किए हुए पापों के कारण कराह उठता है, फिर भी मैं जानता हूं कि मेरा विश्वास किस पर है।

२०. मेरा परमेश्वर मेरा सहारा रहा है; वन में मेरे कष्टों के समय में उसने मेरा पथ-प्रदर्शन किया; और उसने गहरे समुद्र में मेरी रक्षा की।

(२) १ नफी १३:३१. २ नफी १०:१८, १९. या० ३:३-९. इला० ७:२३, २४. १५:१०-१७. ३ नफी २०:२२. मार० ५:२०, २१. ए० १३:६, ८-११. (३) पद्य ५-७. (४) १ नफी ७:६. (५) या० १:१२-१४. (६) १ नफी ९:४. (७) १ नफी ६:१-६.

ईसा से ५८८-५७० वर्षों पूर्व के मध्य

२१. उसने अपने प्रेम से मुझे भर दिया, यहां तक कि मेरे शरीर का रोम-रोम तक उसके प्रेम से प्रभावित है।

२२. उन्होंने मेरे शत्रुओं को पराजित किया और उनको मेरे सामने भय से कंपा दिया।

२३. दिन में उन्होंने मेरी पुकार सुनी और रात को दिव्य दर्शनों द्वारा ज्ञान दिया।

२४. दिन में मैंने निर्भय हो उसके सामने गम्भीर प्रार्थना की; हां, मैंने अपनी आवाज़ ऊपर भेजी; और स्वर्गदूतों ने नीचे आकर मुझे उपदेश दिए।

२५. उस पवित्र-आत्मा के परों पर मेरे शरीर को उड़ा कर बहुत ही ऊंचे पर्वतों पर ले जाया गया और मेरी आंखों ने महान बातों को देखा, हां, यहां तक कि मानव के लिए वे आवश्यकता से अधिक महान थीं; इसलिए उन्हें लिखने को मुझे मना किया गया।

२६. अगर मैंने इतने महान बातों को देखा है, अगर प्रभु ने मानव-सन्तति पर कृपा करके मनुष्यों में आये, तब क्यों मेरी विपदाओं के कारण मेरा हृदय रोए और मेरी आत्मा दुःख की घाटी में पड़ी रहे, और मेरा शरीर नष्ट और मेरी शक्ति क्षीण हो?

२७. और मैं पाप के आगे क्यों झुकूं, क्या अपने इस मानव शरीर के कारण? हां, मैं लालच से क्यों पराजित होऊं कि जिससे मेरे हृदय में शैतान घुस कर मेरी शान्ति भंग करे और मेरी आत्मा को कष्ट पहुंचाए? अपने शत्रु के कारण मैं क्रोधित क्यों हूं?

२८. मेरी आत्मा, जागो! अब पाप की ओर मत झुको। हे मेरा हृदय, आनन्द मनाओ, और मेरी आत्मा के शत्रु को स्थान मत दो।

२९. मेरे शत्रुओं के कारण क्रोध मत करो। मेरे कष्टों के कारण मेरी शक्ति को शिथिल मत करो।

३०. हे मेरा हृदय, आनन्द मनाओ, और प्रभु को पुकारो और कहो : हे प्रभु, मैं सदैव तुम्हारा यशगान करूंगा; और परमेश्वर तुम जो मेरी मुक्ति की आधार शिला हो, तुममें मेरा हृदय आनन्द मनाएगा।

३१. हे प्रभु क्या तुम मेरी आत्मा का उद्धार करोगे? क्या तुम मुझे मेरे शत्रुओं के हाथों से बचाओगे। क्या तुम मुझे ऐसा कर दोगे कि पाप को देखते ही मैं कांप जाऊं?

३२. मेरे सामने अधोलोक का द्वार सदैव बन्द रहे क्योंकि मेरा हृदय टूट चुका है और मेरी आत्मा शोकार्त है। हे प्रभु, तुम मेरे सामने अपनी पवित्र धार्मिकता का द्वार बन्द न करना जिससे कि मुझे नीची तराई से होकर न चलना पड़े और जिससे कि मैं सत्य के पथ पर दृढ़ता के साथ चलने लगूं।

३३. हे प्रभु, क्या तुम मुझे अपनी धार्मिकता के वस्त्र में लपेट लोगे। हे प्रभु, क्या तुम मुझे शत्रुओं से बचाने के लिए राह तैयार करोगे? क्या तुम मेरे लिए रास्ते को सरल करोगे? तुम मेरे मार्ग में रुकावटें तो नहीं डालोगे—अपितु मेरे रास्ते को साफ करोगे; और मेरे रास्ते को नहीं; लेकिन मेरे शत्रुओं के रास्ते को घेरोगे?

३४. हे प्रभु, मैंने तुम पर विश्वास किया और सदैव तुम पर विश्वास करता ही रहूंगा! मैं मानव बाहुबल पर विश्वास नहीं करूंगा; क्योंकि मैं जानता हूं कि वह शापित है जो मानव बाहुबल पर विश्वास करता है। हां, वह शापित है जो मनुष्य पर भरोसा करता है और मानव शरीर को अपना शस्त्र बनाता है।

३५. हां, मैं जानता हूं कि परमेश्वर से जो कोई मांगेगा उसे वह उदारता के साथ देगा। हां, परमेश्वर मुझे देगा, अगर मैं अनुचित मांग नहीं करूंगा; इसलिए मैं अपनी आवाज़ आपके पास ले आऊंगा; हां, मेरे प्रभु, तुम जो मेरी सत्यनिष्ठा की आधारशिला हो, मैं अपनी पुकार तुम तक ले आऊंगा। देखो, हे मेरे सहारे, और मेरे अनन्त परमेश्वर, मेरे शब्द सदैव ऊपर तुम्हारे पास जायेंगे। आमीन।

अध्याय ५

परमेश्वर द्वारा नफी को चेतावनी देना और उसके प्राण लेने की चेष्टा करने वालों से उसका अलग होना—जराम, साम, याकूब, यूसुफ और दूसरों का उसके साथ जाना—लबान की तलवार—मन्दिर बनाया जाना—नफी एक राजा या रक्षक—

विद्रोहियों को काले चर्म का श्राप—पुरोहितों और अध्यापकों को प्रतिष्ठित करना।

१. ऐसा हुआ कि अपने (१) भाइयों के क्रोध के कारण मुझ, नफी को, प्रभु के आगे बहुत रोना पड़ा।

२. लेकिन देखो, उनका क्रोध इतना अधिक बढ़ गया कि वे मेरा प्राण लेने की ताक में रहने लगे।

३. हां, मेरे विरुद्ध असंतोष प्रकट करते हुए वे बोले : हमारा छोटा भाई हम पर शासन करना चाहता है; और उसके कारण हमें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा; इसलिए हम उसे मार डालें जिससे कि उसकी बातों से हमें और कष्ट सहना न पड़े। देखो, हम उसे अपने ऊपर शासक नहीं होने देंगे क्योंकि इन लोगों पर शासन करने का अधिकार बड़े होने के कारण हमारे पास है।

४. उन्होंने असन्तोष प्रकट करते हुए जो कुछ कहा उन सब शब्दों को मैं इन पटियों पर नहीं लिख रहा हूं। लेकिन मेरे लिए इतना कहना पर्याप्त होगा, कि वे मेरा प्राण लेना चाहते थे।

५. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने मुझे चेतावनी दी कि मैं, नफी, उनसे अलग होकर और जो मेरे साथ चलना चाहें, उन्हें साथ ले कर, वन में भाग जाऊं।

६. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने परिवार को साथ लिया, और जराम और उसके परिवार को भी; और अपने बड़े भाई साम और उसके परिवार और मेरे छोटे भाई याकूब, यूसुफ और अपनी बहिनों और दूसरे जो मेरे साथ जाना चाहते थे उन्हें भी साथ लिया। दूसरे लोग जो मेरे साथ जाना चाहते थे वे परमेश्वर की चेतावनी और दैवी ज्ञान में विश्वास करने वाले थे; इसलिए उन्होंने मेरी बातों में विश्वास किया।

७. और हमने अपने साथ अपने तम्बुओं और दूसरी चीजें जो ले जा सकते थे ले कर वन में कई दिनों की यात्रा की। कई दिनों की यात्रा के पश्चात् हमने अपने तम्बुओं को लगाया।

८. मेरे लोगों ने उस स्थान का नाम (२) नफी रखने का विचार किया; इसलिए हमने उस स्थान का नाम नफी रखा।

९. और जो लोग मेरे साथ थे वे अपने आपको नफी के लोग कहने लगे।

१०. और हमने मूसा के नियम के अनुसार प्रभु के न्याय, व्यवस्था और आज्ञाओं को माना।

११. और प्रभु हमारे साथ था; और हमने बहुत बड़ी प्रगति की; हमने बीज बोए और अच्छी उपज प्राप्त की। हमने हर एक प्रकार के पशु-पक्षी पाले।

१२. और मैं, नफी उस अभिलेख को जो कि (३) पीतल की पटियों पर अंकित था और (४) दिग्दर्शक यंत्र अथवा गेंद को भी अपने साथ लाया था जो कि प्रभु के हाथों द्वारा बनाया गया था।

१३. और उस स्थान पर हमारी बहुत अधिक समृद्धि और संख्या में वृद्धि हुई।

१४. और मैं, नफी (५) लबान की तलवार को भी लाया था और उसी प्रकार की कई तलवारें बनाईं क्योंकि मुझे इस बात का भय था कि जो लोग अब लमनाइटी (लमान के वंशज) कहलाते थे, हम पर आक्रमण करके हमें नष्ट कर दें; क्योंकि मेरे और मेरे बच्चों, और जो लोग मेरे लोग कहलाते थे, उनके विरुद्ध उनका (६) द्वेष मैं जानता था।

१५. मैंने अपने लोगों को घर बनाना (७) और लकड़ी, लोहा, तांबा, पीतल, इस्पात, सोना, चांदी और मूल्यवान धातु जिन की वहां बहुतायत थी, की कारीगरी सिखाई।

१६. और मैं, नफी ने, सुलेमान के (८) मन्दिर की तरह एक मन्दिर बनाया जो बनावट में तो सुलेमान के मन्दिर की तरह ही था, केवल यह उतनी मूल्यवान वस्तुओं से नहीं बना था, क्योंकि वे वस्तुएं इस देश में मिलती नहीं थीं; इस दृष्टि से यह मन्दिर बिलकुल सुलेमान के मन्दिर की

(१) २ नफी ४:१३. इनो० २०. मू० १०:१५. (२) ओम० १२, २७. मा० वा० १३. मू० ७:६, ७, ९, २१. ९:१-३, ४, १४. ११:१३. १९:१५, १६, २२. २१:२६. २३:३५-३८. २८:१, ५. २९:३. अल० २:२४. ५:३. १७:८. २०:१, २. २२:१:२६-३४. २५:१३. २७:१४. ४७:१. २०:५०, ८, ११:५४:६. इला० ४:१२. ५:२०, २१. (३) देखो १, १ नफी ३. (४) देखो ४, १ नफी १६. (५) देखो १, १ नफी ४. (६) देखो १, २ नफी ५. (७) यिर्म ८. ए० ७:९. (८) या० १:१७. अल० १६:१३. २३:२. २६:२९. इला० ३:९, १४. ३ नफी ११.

तरह नहीं था। लेकिन उस मन्दिर की बनावट सुलेमान के मन्दिर जैसी थी और यह श्रेष्ठ कारीगरी के साथ बनाया गया था।

१७. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने लोगों को कर्मठ और हाथों से परिश्रम करना सिखला दिया।

१८. और ऐसा हुआ कि उन्होंने मुझे अपना (९) राजा बनाना चाहा; लेकिन मैं चाहता था कि उनके ऊपर कोई राजा न रहे; फिर भी मैंने अपनी शक्ति के अनुसार उनके लिए, जो कुछ हो सकता था, किया।

१९. और देखो, प्रभु ने मेरे भाइयों से जो कुछ उनके विषय में कहा था कि मैं उनका (१०) शासक और शिक्षक होऊंगा, वह पूरा हुआ। इसलिए, प्रभु की आज्ञा द्वारा मैं उनका राजा और शिक्षक तब तक बना रहा जब तक कि उन्होंने मुझे (११) मार डालने की चेष्टा न की।

२०. इसलिए प्रभु का वह वचन भी पूरा हुआ जिसे उसने मुझसे कहा था: जब वे तुम्हारी बातों को नहीं सुनेंगे तब प्रभु की उपस्थिति से उनको अलग (१२) कर दिया जाएगा। और देखो, उसकी उपस्थिति से उन्हें अलग कर दिया गया था।

२१. और उसने उनको शापित करवाया, हां उनके दुराचारों के कारण उनके ऊपर दुःखदाई (१३) शाप आया। क्योंकि देखो, उन्होंने उसके प्रति अपने हृदय को कठोर बना लिया था और वे पत्थर की तरह हो गए थे; वे श्वेत और अति सुन्दर थे; और प्रभु ने इसलिए उनके चमड़े को काला कर दिया जिससे कि वे मेरे लोगों को लुभा न सकें।

२२. और प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कह रहा है: अगर उन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया, तब मैं उनको तुम्हारे लोगों के लिए घृणित बना दूंगा।

२३. और जो उनके वंशजों में मिलेंगे उनके वंशजों के ऊपर भी वही शाप होगा प्रभु ने ऐसा कहा और ऐसा ही हुआ।

२४. और उस श्राप के कारण जो कि उनके ऊपर था, वे आलसी हो गए और शरारती और धूर्त बन कर वन में शिकार के पशुओं को खोजने लगे।

२५. और मुझसे प्रभु परमेश्वर ने कहा: वे तुम्हारे वंशजों में मेरी याद जगाने के लिए, उनके (१४) विरुद्ध उत्पात मचायेंगे, और यदि वे मुझे स्मरण न रखेंगे और मेरी वाणी को नहीं सुनेंगे, तब वे उन्हें नष्ट भी कर देंगे।

२६. और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, याकूब और यूसुफ को अपने देश के लोगों के लिए (१५) पुरोहित और अध्यापक बना कर प्रतिष्ठित किया।

२७. और तब हम आनन्दपूर्वक रहने लगे।

२८. अब तक यरूशलेम को त्यागे तीस वर्ष हो चुके थे।

२९. और मैं, नफी ने, यहां तक का अपने लोगों का (१६) अभिलेख अपनी पटियों पर रखा।

३०. और ऐसा हुआ कि प्रभु परमेश्वर ने मुझसे कहा: (१७) दूसरी पटियों को बनाओ; और उनमें तुम उन बहुत सी बातों को अंकित करो जो कि मेरी दृष्टि में तुम्हारे लोगों के लिए लाभप्रद है।

३१. इसलिए कि मैं नफी ने, प्रभु की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी होने से, इन पटियों को बनाया जिन पर इन बातों को मैंने खोद कर अंकित किया।

३२. इन पर मैंने उन्हीं बातों को अंकित किया जो कि परमेश्वर को पसन्द हैं। और अगर मेरे लोगों को परमेश्वर की बातें पसन्द हैं, तब उन्हें इन पटियों पर अंकित बातें भी पसन्द होंगी।

३३. अगर मेरे लोगों को, विशेषकर अपने इतिहास को जानने की इच्छा होगी, तब उन्हें मेरी अन्य पटियों को ढूंढ़ना चाहिए।

(९) २ नफी ६:२. या० १:९, ११, १५. यिर्म ७:१४. ओ० १२, १९, २३, २४. मू० १:१०. ६:४-७. (१०) देखो ३, २ नफी २. (११) देखो पद्य २. (१२) देखो २, १ नफी २. (१३) देखो ४, १ नफी २. (१४) १ नफी २:२४, १२:१९. अल० ४५:९-१४. ४६:२४, मा० ६. (१५) २ नफी ६:२. या० १:१८, १९. (१६) देखो ६, १ नफी १. (१७) देखो ३, १ नफी ९.

ईसा से ५८८-५७० वर्षों पूर्व के मध्य

३४. मेरे लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि चालीस वर्ष बीत गए थे और हमारे भाइयों से हमारे युद्ध और विवाद हो चुके थे।

अध्याय ६

याकूब का लोगों को उपदेश देना—उसका यशायाह की भविष्यवाणियों को देखना।

१. नफी के भाई याकूब के वे शब्द जिन्हें उसने नफी के लोगों से कहा :

२. देखो, मेरे प्रिय बन्धुओ, मैं, याकूब, प्रभु के द्वारा बुलाया गया, और उसकी पवित्र विधि के अनुसार (१) निर्दिष्ट किया गया और मेरे उस भाई नफी द्वारा प्रतिष्ठित किया गया जिसको तुम (२) राजा और रक्षक की तरह देखते हो, और जिस पर अपनी रक्षा के लिए आश्रित हो, देखो, तुम जानते हो कि मैंने तुमसे बहुत विषयों पर बहुत सी बातें कहीं।

३. फिर भी मैं तुमसे फिर कह रहा हूं; क्योंकि मैं तुम्हारी आत्माओं की भलाई का इच्छुक हूं। हां, तुम्हारे लिए मेरी चिन्ता महान है और तुम जानते हो कि ऐसा ही सदैव रहा है। मैंने अपने पूरे परिश्रम के साथ तुम्हें सदुपदेश दिया और अपने पिता की वाणी को सिखाया, और सृष्टि रचना से ले कर जो बातें लिखी गई हैं, उन सभी विषयों पर मैंने बातें की।

४. और अब, मैं वर्तमान और भविष्य की बातें करूंगा; इसलिए मैं यशायाह की वाणी पढ़ कर सुनाऊंगा जिसे मेरे भाई की इच्छा थी कि मैं तुम्हें सुनाऊं। मैं तुम्हारी ही भलाई के लिए बोल रहा हूं, जिससे कि तुम शिक्षा ग्रहण करो और परमेश्वर के नाम को गौरवान्वित करो।

५. और अब मैं उन शब्दों को पढ़ूंगा जिसे यशायाह ने इस्राएल के घराने के विषय में कहा था; इसलिए उनका सम्बन्ध तुम से हो सकता है, क्योंकि तुम इस्राएल के वंश के हो। और यशायाह द्वारा बहुत सी बातें कही गई हैं जिनसे तुम्हारा सम्बन्ध हो सकता है, क्योंकि तुम इस्राएल के वंशज हो।

६. उसके शब्द ये हैं: (३) प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मैं अपना हाथ जाति-जाति के लोगों की ओर उठाऊंगा, और देश-देश के लोगों के सामने अपना झण्डा खड़ा करूंगा; तब वे तेरे पुत्रों को अपनी गोद में लिए आएंगे, और तेरी पुत्रियों को अपने कन्धे पर चढ़ा कर तेरे पास पहुंचाएंगे।

७. राजा तेरे बच्चों के निज-सेवक और उनकी रानियां दूध पिलाने वाली माता होंगी। वे भूमि की ओर मुख करके तेरे सामने झुकेंगे, और तेरे पैरों की धूलि चाटेंगे, तब तू यह जानेगी कि मैं ही प्रभु हूं; और मेरी प्रतिक्षा करने वाले कभी लज्जित नहीं होंगे।

८. और अब, मैं, याकूब, इन शब्दों की व्याख्या करूंगा। क्योंकि देखो, (४) प्रभु ने मुझे यह दिखाया है कि जो लोग यरूशलेम में थे, जहां से हम आए हैं, वे मारे गए और दास बनाए गए।

९. फिर भी प्रभु ने हमें यह दिखाया है कि वे वापस लौटेंगे। और उसने मुझे यह भी दिखाया है कि इस्राएल का पवित्र प्रभु परमेश्वर मानव शरीर में उनमें प्रकट होगा; और स्वर्गदूत के कहे शब्दों के अनुसार वे उसको कष्ट दे कर क्रूस पर चढ़ा देंगे।

१०. और इस्राएल के पवित्र प्रभु के प्रति अपने हृदयों को कठोर बना लेने और आंखें फेर लेने के पश्चात्, देखो, इस्राएल के पवित्र प्रभु का न्याय उनके ऊपर आएगा। और वह दिन आएगा जब कि उनको दण्ड और कष्ट दिया जाएगा।

११. स्वर्गदूत इस प्रकार कहता है कि इधर उधर भटकाने के पश्चात् बहुतों को शारीरिक पीड़ा दी जाएगी, परन्तु भक्तों की प्रार्थना के कारण उनको नष्ट नहीं किया जाएगा; उनको तितर बितर कर दिया जाएगा और दण्डित किया जाएगा और उनसे सब कोई घृणा करेंगे, फिर भी प्रभु उन पर दयावान बना रहेगा (५) और जब उनको अपने उद्धारक का ज्ञान होगा, तब उनको अपने पैतृक देश में पुनः इकट्ठा किया जाएगा।

अध्याय ६. (१) २ नफी ५:२६. या० १:१८, १९. (२) देखो ६, २ नफी ५. (३) यशायाह ४९:२२, २३. २ नफी १०:९. (४) १ नफी ७:१३, १४. (५) देखो ५, १ नफी १५.

ईसा से ५६६-५५९ वर्षों पूर्व के मध्य

१२. और धन्य है (६) यहूदियों से भिन्न वे जातियां जिनके विषय में भविष्यवक्ता ने लिखा; क्योंकि देखो, अगर ऐसा हुआ कि उन्होंने पश्चात्ताप किया और सियोन के विरुद्ध लड़े नहीं और उस अति (७) घृणित गिरजा का साथ नहीं दिया तब उन्हें बचा लिया जाएगा; क्योंकि प्रभु परमेश्वर अपने बच्चों से किए गए इकरार को पूरा करेगा; और इसी कारण से भविष्यवक्ता ने इन बातों को लिखा है।

१३. इसलिए सीओन के (८) विरुद्ध युद्ध करने और परमेश्वर से सौदा करने वाले उनके पैरों की धूल चाटेंगे; और प्रभु के लोगों को लज्जित नहीं होना पड़ेगा। वे लोग परमेश्वर के लोग हैं जो उसके आगमन की प्रतीक्षा करते हैं; क्योंकि वे अब भी मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं।

१४. और देखो, भविष्यवक्ता के शब्दों के अनुसार जब वे मसीह पर विश्वास करेंगे, तब वह उन्हें सम्हालने का (९) दुबारा प्रयत्न करेगा; इसलिए वह सामर्थ्य और महान यश के साथ प्रकट होगा और उनके शत्रुओं को नष्ट कर देगा, परन्तु जो उस पर विश्वास करेंगे उनमें से किसी को भी नष्ट नहीं किया जाएगा।

१५. और जो (१०) उस पर विश्वास नहीं करेंगे उन्हें अग्नि और प्रचण्ड आंधी, भूकम्पों युद्ध, महामारी, और अकाल से नष्ट कर दिया जाएगा। और उन्हें मालूम होगा कि प्रभु ही परमेश्वर है जो कि इस्राएल का एकमेव ईश्वर है।

१६. (११) क्या वीर के हाथ से शिकार छीना जा सकता है, या न्यायानुसार बनाये गए बन्दी को छुड़ाया जा सकता है?

१७. लेकिन प्रभु कहता है : बलवान के बन्दी छुड़ा लिए जाएंगे और भयानक मनुष्य का शिकार उसके हाथ से छीन लिया जाएगा; क्योंकि सर्व-शक्तिमान परमेश्वर अपने इकरार वाले लोगों को मुक्त करेगा। क्योंकि प्रभु इस प्रकार कहता है : मैं उनके साथ संघर्ष करूंगा, जो तुम्हारा विरोध करते हैं।

१८. और जो तुम्हें सताएंगे उन्हें मैं उन्हीं का मांस खिलाऊंगा; और मीठे अंगूर-रस की तरह उन्हें अपने रक्त को पी कर मतवाला होना पड़ेगा; और सबको यह मालूम होगा कि मैं, प्रभु याकूब का सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तुम्हारा रक्षक और उद्धारक हूं।

अध्याय ७

याकूब की शिक्षा का क्रम—यशायाह अध्याय ५० से तुलना करो।

१. हां, प्रभु इस प्रकार कह रहा है (१) क्या मैंने तुमको अलग कर दिया है, या सदा के लिए त्याग दिया है? क्योंकि प्रभु इस प्रकार कह रहा है : तुम्हारी माता से सम्बन्ध-विच्छेद का (२) प्रमाण-पत्र कहां है? मैंने तुमको किसके पास कर दिया, या मैंने तुमको (३) अपने किस ऋणदाता के हाथों बेच दिया? हां, मैंने तुमको किसके हाथों बेचा? देखो, तुम तो (४) अपने ही दुराचार के कारण बिक गए, और तुम्हारे ही नियमों के भंग करने के कारण तुम्हारी माता त्याग दी गई।

२. जब मैं आया तब क्यों कोई मनुष्य नहीं मिला; (५) और जब मैंने पुकारा तब तुम में से किसी ने मुझे उत्तर नहीं दिया। हे इस्राएल के वंश वालो, क्या मेरे हाथ इतने छोटे हो गए हैं कि मैं तुम्हें बचा नहीं सकता? या कि मेरी शक्ति जाती रही जिससे कि मैं तुम्हारा उद्धार नहीं कर सकता? देखो, (६) मैं भर्त्सना से समुद्र को सुखा देता हूं (७) नदियों को मरुभूमि बना

(६) १ नफी १३:१२-२३, ३०-३५, ३८-४२. १४:१-५. २ नफी १०:८-१४, १८, १९. ३ नफी १६:६-७. २०:२७. २१:२-६. २२-२५. मा० ५:१९. (७) देखो १ नफी १३. (१८) देखो १०, १ नफी २२. (९) २ नफी २१:११.२५-१७. २९:१. (१०) १ नफी १४:३, १५-१७. २२:१३-२३. २ नफी १०:१५-१६. २७:२-४. २८:१५-३२. ३ नफी १६:८-१५. २०:१५-२०. २१:११:२१, २९. मा० ५:२२-२४. ए० २:८-११. (११) यशा० ४९:२४-२६. (१) मला० २:१६. मत्ति १९:९. (२) व्यवस्था २४:१-४. यिर्म० ३:८. होशे २:२. (३) २ राजा ४:१. मत्ति १८:२५. (४) यशा० ५२:३. (५) नीति० १:२४-२७. यशा० ६५:१२. ६६:४. यिर्म० ७:१३. ३५:१५. सि० शर्त० १३३:६७. (६) नहूम १४:२१. भजन १०६:९. निर्म० १:४. सि० शर्त० १३३:६८. (७) यहो० ३:१५, १६.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

देता हूं और (८) उनमें की मछलियां जलहीन और प्यासे होने के कारण मर कर सड़ जाती और दुर्गन्ध देने लगती हैं।

३. मैं (९) आकाश को अंधेरे से ढ़क देता हूं, और (१०) टाट को उनका ओढ़ना बना देता हूं।

४. (११) प्रभु परमेश्वर ने मुझे विद्वानों की वाणी दी है जिससे कि, हे इस्राएल के वंश वालो, उचित अवसर पर मैं तुमको उपदेश दे सकूं। जब तुम थके होते हो तब वह नित्य सुबह तुम्हें जगाता है। वह मेरे कानों को खोलता है जिससे कि मैं एक शिष्य की तरह उसकी बातों को सुनूं।

५. प्रभु परमेश्वर ने मेरा कान खोल दिया, और मैं विद्रोही नहीं हुआ, और न मैं पीछे लौटा।

६. मैंने पीटने वालों की ओर अपनी पीठ दी और दाढ़ी नोचने वालों की ओर अपने गाल किए। अपमानित होने और थूकने वालों से मैंने मुंह नहीं छिपाया।

७. क्योंकि प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करेगा, इसलिए मैं व्याकुल नहीं होऊंगा; मैंने अपने चेहरे को चकमक पत्थर की तरह कठोर बना लिया, और मैं जानता हूं कि मुझे लज्जित नहीं होना पड़ेगा।

८. और प्रभु मेरे निकट है और वह मुझे धर्मी ठहराता है। मेरे साथ कौन द्वंद करेगा? आओ, हम आमने-सामने खड़े होएं। मेरा विरोधी कौन है? उसको मेरे निकट आने दो (१२) और मैं उस पर अपने मुंह के बल से आघात करूंगा।

९. क्योंकि प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करेगा; और सुनो, जो मुझे दोषी ठहराएंगे, वे सब (१३) कपड़े के समान पुराने हो जाएंगे, और उनको कीड़े खा जाएंगे।

१०. तुम में से कौन है जो प्रभु का भय मानता और उसके दास की बातें सुनता है, फिर भी, जो अंधियारे में चलता हो और उसके पास ज्योति न हो?

११. देखो, तुम सब जो आग जलाते और अपने आपको चिन्गारियों से घेरते हो, और अपनी जलाई हुई आग की ज्योति में चलते हो; (१४) मेरी ओर से तुम्हारी यह दशा होगी—तुम सन्ताप में पड़े रहोगे।

अध्याय ८

याकूब की शिक्षा का क्रम—यशायाह अध्याय ५१ से तुलना करो।

१. हे धर्म पर चलने वालो, मेरी सुनो, तुम उस चट्टान को देखो जिस चट्टान से तुम काट कर निकाले गए और उस पूरी खान को देखो जिस खान से तुम खोद कर निकाले गए।

२. तुम अपने पिता इब्राहीम को और जन्म देने वाली सारा को देखो; मैंने अकेले उसको बुलाया और उसको आशीष दी।

३. क्योंकि प्रभु ने (१) सियोन को शान्ति दी है; उसने (२) उसके सब मरु-प्रदेशों को शान्ति दी है; और वह उसके (३) जंगल को अदन की बाटिका और (४) उसके मरु-प्रदेशों को प्रभु की बाटिका के समान बनाएगा। उसमें आनन्द, हर्ष, कृतज्ञता और सुमधुर संगीत स्वर सुनाई पड़ेंगे।

४. हे मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर ध्यान दो और कान लगा कर मेरी बातें सुनो; क्योंकि मेरी ओर से (५) एक न्याय-व्यवस्था दी जाएगी और मेरा निर्णय लोगों के लिए एक ज्योति बना रहेगा।

५. मेरी न्यायप्रियता निकट है; मेरा उद्धार प्रगट हुआ है, और मेरी भुजा लोगों का न्याय करेगी। (६) द्वीप मेरी प्रतीक्षा करेंगे और मेरे भुजबल पर विश्वास करेंगे।

६. (७) आकाश की ओर अपनी आंखें उठाओ, और नीचे पृथ्वी को देखो; क्योंकि आकाश धुंए की तरह लोप हो जाएगा, और पृथ्वी कपड़े की तरह पुरानी हो जाएगी; और इस पर रहने वाले लोग इसी प्रकार मृत्यु को प्राप्त होंगे। लेकिन

(८) यिर्म ७:१८, २१. (९) निर्ग० १०२१. (१०) प्र० वा० ६:१२. (११) निर्ग० ४:११. (१२) यशा० ११:४. २ थिस्स २:८. (१३) विला० १३:२८. भजन १०२:२६. यशा० ५१:६, ८. (१४) सि० शर्त० १३३:७०. (१) पद्य १२. भज० १०२:१३. यशा० ४०:१. ५२:९. (२) यशा० ३५:१. (३) भज० १०७:३, ४, ३५-३७. यशा० ३२:१५-२०. ३५:१, २, ६, ७. ४३:१९, २०. (४) यश० ३५:१, २, ६, ७. ४३:१९-२०. (५) यशा० २:३. मी० ४:२. (६) देखो १, १ नफी २१. (७) भजन १०२:२५, २६. मत्ति २४:३५. २ पतरस ३:१०-१२.

मेरे द्वारा दी गई मुक्ति सदैव के लिए होगी और मेरे धर्म का अन्त नहीं होगा।

७. हे धर्म को जानने वालो, जिनके हृदय में मैंने अपनी (८) न्याय-व्यवस्था को लिखा, तुम मेरी बातों को सुनो, तुम न तो मनुष्य के तिरस्कार से और न ही उन के अपशब्दों से डरो।

८. क्योंकि (९) दीमक उन्हें कपड़े की तरह और कीड़े उन्हें ऊन की तरह खाएंगे। परन्तु मेरा धर्म अनन्तकाल तक, और मेरा उद्धार पीढ़ी तक बना रहेगा।

९. (१०) हे प्रभु की भुजा जाग और (११) बल धारण कर और (१२) प्राचीन काल की तरह जाग। क्या तुम वह नहीं हो जिसने (१३) रहब को टुकड़े टुकड़े किए और मगरमच्छ को घायल किया?

१०. क्या तू वह नहीं है जिसने गहरे सागर के जल को सुखा डाला और जिस की गहराई अपने मुक्त किए गए लोगों के लिए मार्ग बनाया था?

११. (१४) इसलिए प्रभु द्वारा मुक्त किए हुए जयगीत गाते हुए सियोन में आएंगे; और उनके सिरों पर अनन्त आनन्द और पवित्रता होगी; और वे आनन्द और हर्ष प्राप्त करेंगे, और शोक और विलाप उनसे दूर भागेंगे।

१२. मैं वह हूं हां, मैं वह हूं जो तुम्हें शान्ति देता है। देखो, तुम कौन हो जो मरणशील मनुष्य से डरते हो, उस मनुष्य से डरते हो जो घास के समान हो जाता है।

१३. और अपने रचयिता प्रभु, जिसने आकाश को ताना और पृथ्वी की नींव डाली (१५) उसे भूल गया, और सताने वाले के भय से नित्य थर थर कांपता रहा है जैसे वे तुझे नष्ट कर देने के लिए तैयार हैं? लेकिन (१६) तुझे सताने वाले का क्रोध कहां है?

१४. (१७) बन्दियों को मुक्त करने का समय शीघ्र आ रहा है जिससे कि वह मुक्त हो जाएगा और वह गड्ढे में नहीं मरेगा और न तो उसको रोटी की कमी होगी।

१५. लेकिन मैं, प्रभु तुम्हारा परमेश्वर हूं, जिसके सागर की लहरें गर्जती हैं; मेरा नाम सर्वशक्तिमान प्रभु है।

१६. और मैंने तेरे मुंह में अपने शब्दों को डाला और अपने हाथ की छाया में छुपा लिया जिससे कि मैं (१८) आकाश को पौधे की तरह लगाऊं और पृथ्वी की नींव डालूं और सियोन से कहूं (१९) देखो, तुम मेरी प्रजा हो।

१७. जाग, जाग और उठ कर खड़ी हो जा, हे यरूशलेम, तू ने जो (२०) प्रभु के हाथ से उसके क्रोध के प्याले में से पिया है—तूने उस प्याले के तीव्र मद को पूरा पी लिया है।

१८. जितने बच्चों को उसने जन्म दिया उनमें से कोई भी राह दिखाने वाला नहीं रहा; और जितने लड़कों को उसने पाला पोसा, उनमें से भी कोई उसके हाथ को थामने वाला नहीं रहा।

१९. ये (२१) दो लड़के तेरे पास आए हैं जो तेरे लिए शोक करेंगे— तेरे एकाकीपन, हानि, अकाल और युद्ध में मैं किसके द्वारा तुझे सांत्वना दूंगा?

२०. इन दो लड़कों को छोड़ कर तेरे अन्य लड़के मुर्छित होकर सभी सड़कों के सिरे पर जाल में फंसे बनैले बैल की तरह पड़े हैं; प्रभु का पूरा क्रोध, परमेश्वर की डांट-डपट उनके ऊपर पड़ी है।

२१. इस कारण सुन, तू दुःखित और मतवाली तो है परन्तु शराब पी कर नहीं;

२२. तेरा प्रभु और परमेश्वर अपने लोगों के लिए आग्रह करता है : देखो, मैं थरथरा देने वाले मद के प्याले को तेरे हाथ से ले लिया है; जो कि मेरे क्रोधमय तलछट का प्याला था; और अब उसमें से मुझे फिर भी कभी पीना नहीं पड़ेगा।

२३. लेकिन (२२) मैं उसे तेरे उन कष्ट देने वालों के हाथ में दूंगा जिन्होंने तेरी आत्मा से

(८) देखो ५. (९) देखो १३, २ नफी ७. (१०) भजन ४४:२३. यशा० ५२:१. (११) भज० ९३:१. प्रका० ११:१७. (१२) भजन ४४:१. (१३) भजन ७४:१३, १४. ८९:१०. यशा० २७:१. एहे० २९:३. (१४) यशा० ३५:८-१०. यिर्म० ३१:१२, १३. (१५) १ नफी २२:१७. (१६) देखो १०, १ नफी २२. (१७) पद्य २५. २ नफी ९:१२. यशा० ६०:१५. जर्क० ९:११. (१८) यशा० ६५:१७. ६६:२२. (१९) पद्य ३ भजन ४६:४-७. ४८:१-३. १०२:१३ पद्य १६. (२०) यि० २५:१५, १६. लूका० २१:२२-२४. (२१) पद्य २०. प्रका० ११:३-१३. (२२) यि० २५:१७. यो० ३:९-१६. जक० १२:२, ३, ८, ९. १४:३, १२-१५.

कहा : नीचे झुको जिससे कि हम तेरे ऊपर पांव धर कर आगे चलें—और तूने नीचे गिर कर उनके लिए अपने शरीर को भूमि और सड़क की तरह बना दिया।

२४. सियोन (२३) जागो, जागो, अपना बल धारण करो; हे पवित्र नगर यरूशलेम, अपने सुन्दर वस्त्रों को धारण कर लो; क्योंकि (२४) तेरे बीच अब खतनारहित और अस्वच्छ लोग प्रवेश नहीं कर पाएंगे।

२५. अपने ऊपर से धूल झाड़, उठ और बैठ जा, हे यरूशलेम, हे सियोन की बन्दी बेटी, अपने गले के (२५) बन्धन से अपने को मुक्त कर।

अध्याय ९

याकूब की शिक्षा का क्रम—अनन्त प्रायश्चित—रक्षक के कष्टों का पूर्व-दर्शन—जहां कोई नियम नहीं वहां कोई दण्ड भी नहीं।

१. और अब मेरे प्रिय भाइयों, मैंने इन बातों को इसलिए पढ़ा कि जिससे तुम प्रभु के उस इकरारनामे के विषय में जान जाओ जिसको उसने तुम्हारे और इस्राएल के पूरे वंश वालों के साथ बनाया है।

२. वह अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं के मुख से आरम्भ से लेकर, पीढ़ी दर पीढ़ी बोलता रहा है और तब तक बोलता रहेगा जब तक कि (१) उनको सच्चे गिरजा और परमेश्वर के घेरे में पुनः स्थापित करने का समय नहीं आ जाता; और वे अपने पैतृक देश में एकत्रित किए जाएंगे, और अपने सारे प्रतिज्ञा के देशों में निवास करेंगे।

३. देखो मेरे भाइयों, मैं इन बातों को तुमसे इसलिए कह रहा हूं जिससे कि तुम आनन्द मनाओ, और जो आशीर्वाद प्रभु परमेश्वर तुम्हारे वंश वालों को देगा उसके कारण तुम सदा के लिए अपना सिर ऊंचा करो।

४. क्योंकि मैं जानता हूं कि तुमने भविष्य के विषय में बहुत कुछ ढूंढ़ा, इसलिए तुम यह जानते हो कि मानव शरीर पुराना होकर मर जाएगा; लेकिन हम (२) अपने शरीर में परमेश्वर को देखेंगे।

५. हां, मैं जानता हूं कि तुम्हें यह मालूम है कि यरूशलेम जहां से हम आए हैं, वहां के लोगों को वह मानव शरीर में अपने आपको दिखाएगा; क्योंकि वहां प्रकट होना हितकर होगा; उस महान रचयिता का मानव शरीर में मनुष्य के लिए विवश होकर कष्ट झेलना और (३) मानव समाज के लिए मरना हितकारी होगा जिससे कि सब मनुष्य उसके शासनाधीन हो जाएं।

६. उस महान रचयिता की दयामय व्यवस्था का पालन करने के लिए हर एक को मरना पड़ता है (४) इसलिए पुनर्जीवन देने के लिए एक शक्ति चाहिए; और मनुष्य के पतन के कारण पुनर्जीवन आवश्यक है; और मनुष्य का पतन उसके नियमों के उल्लंघन के कारण हुआ, इसलिए उन्हें (५) परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिया गया।

७. इसलिए अनन्त प्रायश्चित की आवश्यकता (६) है—बिना अनन्त प्रायश्चित के इस भ्रष्टाचार को सदाचार में बदला नहीं जा सकता। मनुष्य का जो (७) प्रथम न्याय हुआ, वह उसपर सदा बना रहता, और इस दशा में इस शरीर को धरती माता में सड़ने, चूर्ण होने और कभी भी वहां से न उठने के लिए सुला दिया जाता।

८. ओह प्रभु का विवेक, उसकी दया और कृपा! क्योंकि देखो, अगर हमारा शरीर पुनर्जीवित नहीं होता तब हमारी आत्मा (८) उस स्वर्गदूत के अधीन हो जाती जो परमेश्वर की उपस्थिति से नीचे गिर गया था, और जो शैतान बन गया है, और जिसका कभी भी उत्थान नहीं होगा।

९. और हमारी आत्मा (९) उसी की तरह

(२३) पद्य ९:१७, यशा० ५२:१, २. (२४) यो० ३:१७. जक० १४:२१. (२५) देखो १७. अध्याय ९. (१) देखो ५, १ नफी १५. (२) पद्य १५, २२, २६, ३७. मू० १६:१०. अल० ५:१५, २२. ११:४१-४५. १२:१२-१८. ४०:२१. ४२:२३. इल० १४:१५-१८, ३ नफी २७:१४, १५. मा० ९:१३. मरो० १०:३४. (३) पद्य २१:२२ इला० १४:१५-१८. ३ नफी २७:१४, १५. (४) देखो ४, २ नफी २. (५) पद्य ९. अल० ४२:७, ९, ११, १४, २३. इला० १४:१६, १७. (६) देखो ६, २ नफी २. (७) पद्य ८-१६. मो० ३:२६, २७. १६:४-११, अल० ११:४५. १२:१८, २६, ३६. ४२:६, ९, १४. इला० १४:१६, १७. मो० ९:१३. (८) देखो ९, २ नफी २ (९) पद्य १६, २६, ३७, ४६. १ नफी १४:३, ४, ७. २ नफी २८:२०-२३. मू० १६:२-५. ११:३ नफी २६:७.

हो जाती और हम शैतान बन कर शैतान के दूत हो जाते और हमें परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर असत्य के जन्मदाता के साथ उसी की तरह कष्ट में रहना पड़ता; हां, उसके साथ जिसने हमारे प्रथम माता-पिता को बहकाया था और जो ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का भेष धारण कर लेता है और मानव वंश के लोगों के साथ गुप्त संगठन करके हत्या, और सभी प्रकार के अन्धकार में किए जाने वाले कामों में योगदान देता है।

१०. हमारे ऊपर परमेश्वर की कितनी बड़ी कृपा है, जो इस भयंकर राक्षस की पकड़ से हमारे बचने के लिए रास्ता तैयार करता है; हां, वह राक्षस (१०) मृत्यु और नर्क, जिसे मैं शरीर और आत्मा दोनों की मृत्यु कहता हूं।

११. इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के द्वारा दिए गए बचने की राह के कारण, यह मृत्यु जिसके विषय में मैंने कहा है, जो कि भौतिक और कब्र की है, वह मृतकों को मुक्त कर देगी।

१२. और यह मृत्यु, जिसके विषय में मैंने कहा है, आध्यात्मिक (११) मृत्यु है, वह अपने मृतकों को सौंप देगी; वह आध्यात्मिक मृत्यु जो कि नर्क है; इसलिए मृत्यु और नर्क को अपने मृतकों को मुक्त करना पड़ेगा, और नर्क बन्दी आत्माओं को मुक्त करेगा और कब्र को बन्दी शरीरों को मुक्त करना पड़ेगा और शरीरों को उनकी आत्माओं के साथ पुनर्सयुंक्त किया जाएगा; और ऐसा होगा इस्राएल के पवित्र प्रभु की पुनर्जीवन करने की शक्ति के द्वारा।

१३. ओहो; हमारे परमेश्वर की योजना कितनी बड़ी है। दूसरी ओर (१२) स्वर्ग धार्मिक लोगों की आत्माओं को सौंप देंगे; और आत्मा और (१३) शरीर फिर मिल जाएंगे और सभी मनुष्य भ्रष्टहीन बन कर अमर बन जाएंगे और जिस प्रकार हम इस मानव जीवन में हैं उसी प्रकार वे हो जाएंगे; केवल उनका ज्ञान पूर्ण ज्ञान होगा।

१४. इसलिए हमें (१४) अपनी भूलों का, अपनी अपवित्रता और अपने व्यभिचारों का सम्पूर्ण ज्ञान होगा; और जो धार्मिक लोग होंगे उन्हें अपने आनन्द और सत्यनिष्ठा का पूरा ज्ञान होगा और उन्हें पवित्रता का बाना, हां, उन्हें सदाचार का लबादा पहिनाया जाएगा।

१५. और ऐसा होगा कि हर एक मनुष्य अपनी इस प्रथम मृत्यु के पश्चात् पुनर्जीवन धारण कर लेने पर अमर होकर इस्राएल के पवित्र प्रभु के न्यायसिंहासन के सामने उपस्थित होगा; और तब उनका न्याय किया जाएगा और वह होगा परमेश्वर के पवित्र न्याय के अनुकूल।

१६. और निश्चय ही, जब तक प्रभु है, और उसकी वाणी कभी भी असत्य नहीं ठहर सकती कि जो धार्मिक हैं वे धार्मिक ठहरेंगे और (१५) जो गन्दे हैं वे गन्दे ठहरेंगे; इसलिए जो गन्दे हैं वे शैतान और उसके दूत हैं जो अनन्त ज्वाला में जाएंगे जिसे उन्हीं के लिए तैयार किया गया है और उनका संताप वैसे ही होगा जैसे उस अग्नि के ताल में गन्धक के पत्थर की दशा होती है जिसकी ज्वाला अनन्त काल के लिए उठती ही रहती है और जिसका अन्त नहीं होता।

१७. आहा, हमारे परमेश्वर का न्याय कितना महान है। क्योंकि वह अपने वचनों को पूरा करता है; ये वचन उसके मुख से निकले हैं, और उसके नियम अवश्य ही पूरे किए जाएंगे।

१८. लेकिन देखो, सत्यनिष्ठ, इस्राएल के पवित्र प्रभु के सन्त, जिन्होंने इस्राएल के पवित्र प्रभु पर विश्वास किया, जिन्होंने जगत के क्रोध को सहा और उसके अपवादों की ओर ध्यान नहीं दिया, वे परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे जो कि सृष्टि की नींव के समय से (१६) उनके लिए तैयार किया गया था; और उनको सदैव के लिए पूर्ण आनन्द प्राप्त होगा।

१९. ओहो, हमारे इस्राएल के पवित्र प्रभु की महान दया। वह अपने संतों को उस (१७) भयानक राक्षस शैतान से, मृत्यु से, अधोलोक से और उस

(१०) पद्य ११-१३. २६. मू० १६:७, ८. अल० १२:२४-२७. ४०:२३-२६. ४२:६-१५. इला० १४:१५-१९. मा० ९:१३.
(११) देखो १०. (१२) अल० ४०:१२, १४. ४ नफी १४. मरो० १०:३४. (१३) अल० ११:४२-४५. ४०:२१-२४.
अध्याय ४१. (१४) मू० ३:२५. अल० ११:४३, १२:१४. (१५) १ नफी १५:३३-३५. अल० ७:२१. मा० ९:१४.
(१६) अल० १३:३, ५, ७-९. २२:१३. ४२:२६. इला० ५:४७. ३ नफी २९:५. ए० ३:१४. ४:१४, १५, १९. १२:३२-३४, ३७.
मरो० ८:१२. (१७) देखो ११, १ नफी १५.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

गंधक के अग्नि-कुण्ड से जो कि बिना अन्त का सन्ताप है, रक्षा करता है।

२०. ओह, हमारे परमेश्वर की पवित्रता कितनी महान है। क्योंकि वह (१८) सब कुछ जानता है, और कोई ऐसी वस्तु नहीं जो कि उसकी जानकारी में न हो।

२१. और अगर मनुष्य उसकी बातों को सुनेंगे तब वह सब मनुष्यों को बचाने के लिए संसार में आएगा; क्योंकि देखो, वह सबके लिए कष्ट झेलेगा, हां, (१९) हर एक जीवित प्राणी, पुरुष, स्त्री जो आदम के वंश के होंगे उन सब के लिए वह कष्ट सहेगा।

२२. वह इस कष्ट को इसलिए झेलेगा कि (२०) पुनर्जीवन सब मनुष्यों को उपलब्ध हो सके, और सब मनुष्य उस महान और न्याय के दिन उसके सामने खड़े हो सकें।

२३. वह हर एक को (२१) पश्चात्ताप करने, और इस्राएल के पवित्र परमेश्वर पर सम्पूर्ण विश्वास करके उसके नाम पर बपतिस्मा लेने की आज्ञा देता है, अन्यथा उनको परमेश्वर के राज्य में बचाया नहीं जाएगा।

२४. अगर वे अपने पापों के लिए पश्चात्ताप नहीं करेंगे, उसके नाम में विश्वास नहीं करेंगे, उसके नाम से बपतिस्मा नहीं लेंगे और अन्त तक सहनशील नहीं बने रहेंगे तब उनको निश्चय ही नर्क में पड़ना होगा, क्योंकि इस्राएल के पवित्र प्रभु परमेश्वर ने ऐसा ही कहा है।

२५. इसलिए उसने एक नियम दिया है; और जहां नियम नहीं दिया गया हो वहां दण्ड भी नहीं दिया जा सकता; और जहां दण्ड नहीं वहां कोई दण्डनीय भी नहीं ठहर सकता, और जहां कोई दण्डनीय नहीं वहां इस्राएल के पवित्र प्रभु की दया का अधिकार उनके ऊपर (२२) प्रायश्चित के कारण होगा; क्योंकि उसके सामर्थ्य के द्वारा वे मुक्त किए जाते हैं।

२६. क्योंकि प्रायश्चित उन लोगों की आवश्यकता की पूर्ति करता है जिनको नियम प्राप्त नहीं हुए जिससे कि उन लोगों को उस भंयकर राक्षस से रक्षा की जा सके जो कि (२३) मृत्यु, नर्क, शैतान और गन्धकमय अग्निकुण्ड है और बिना अन्त का सन्ताप देने वाला है। इससे उनको जीवन देने वाले इस्राएल के पवित्र प्रभु परमेश्वर के साथ पुनर्स्थापित किया जाएगा।

२७. लेकिन शाप पड़े उन पर जिनको नियम दिया गया; हां, जिनको हमारी तरह परमेश्वर की सारी आज्ञायें प्राप्त हैं और जो उनकी अवहेलना करते और मानव जीवन के दिन व्यर्थ में नष्ट करते हैं, उनकी स्थिति भयंकर है।

२८. ओह, उस शैतान की धूर्त योजना! ओह, मानव की व्यर्थता, दुर्बलता और अज्ञानता! जब उन्हें (२४) कुछ ज्ञान प्राप्त होता है तब वे अपने आपको चतुर समझते और परमेश्वर के सलाह की ओर ध्यान न दे कर उसकी सम्मति की अवहेलना करते, और अपने आपको विद्वान समझते हैं; परन्तु ऐसे लोगों का ज्ञान मूर्खतापूर्ण है और उससे उनको कोई लाभ नहीं होता। ये लोग नष्ट हो जाएंगे।

२९. लेकिन विद्वान होना तब ठीक होगा जबकि वे परमेश्वर की सम्मति को मानें।

३०. शाप पड़े उन धनियों पर जो सांसारिकता में धनी हैं। ऐसे लोग धनी होने के कारण कंगालों से घृणा करते और विनीतों को क्लेश पहुंचाते हैं और उनका मन अपने वैभव में लगा रहता है; इसलिए उनका कोष ही उनका परमेश्वर होता है। और देखो, उनका कोष उनके साथ ही नष्ट हो जाएगा।

(१८) अल० ७:१३. १३:७. १८:३२. २६:३५. इला० ९:४१. ३ नफी २७:२६. मार० ८:१७. मरो० ७:२२. (१९) पद्य ५, ७. मू० ३:७. १५:१०. अल० ७:११-१३. ११:४०. २२:१४. ३४:८-१५. इला० १४:१५-१७. ३ नफी ९:२२. ११:११, १४, १५. २७:१४, १५. मा० ९:१३, १४. (२०) देखो ४, २ नफी २. (२१) मत्ति ३:५-६. मीका १:४. लूका० ३:३. यू० ३:५. प्रे० २:३८. २ नफी ३१:५. ९:१३, १७. मू० १८:८-१७. अल० १५:१२-१४. १९:३५. ६२:४५. इला० ३:२४-२६. ५:१७, १९. ३ नफी ७:२३-२६. ११:२१, ३८. १२:१, २. १८:५, ११, ३०. १९:१०-१३. २३:५. २६:१७, २१. २७:१, १६, २०. २८:१८. अध्याय ३०. ४ नफी १. मा० ७:८-१०. ९:२३. ए० ४:१८. मरो० ६:१-४. ८:५-२३. (२२) देखो ६, २ नफी २. (२३) देखो १०. (२४) पद्य २९, ४२. २ नफी २६:२०. २७:१५-२६. २८:४, १५.

३१. शाप पड़े उस बहरे पर जो नहीं सुनेगा; क्योंकि वह नष्ट हो जाएगा।

३२. शाप पड़े अन्धे पर जो नहीं देखेगा; क्योंकि वह भी नष्ट हो जाएगा।

३३. शाप पड़े बिना संस्कार के हृदय वाले पर, क्योंकि उसके दुष्कर्मों के ज्ञान अन्तिम दिन उसे दण्डित करेंगे।

३४. शाप पड़े झूठे पर, क्योंकि उसे नर्क में ढ़केल दिया जाएगा।

३५. शाप पड़े हत्यारे पर जो जानबूझ कर हत्या करता है, क्योंकि वह मरेगा।

३६. शाप पड़े उन पर जो (२५) व्यभिचार करते हैं क्योंकि उन्हें नर्क में ढ़केल दिया जाएगा।

३७. हां, शाप पड़े उन पर जो मूर्तिपूजा करते हैं क्योंकि शैतानों का शैतान इससे प्रसन्न होता है।

३८. और अन्त में उन सब लोगों पर शाप पड़े, जो अपने पापों में मरते हैं; क्योंकि वे (२६) परमेश्वर के पास लौटेंगे और उसके चेहरे को देखेंगे और अपने पापों में ही रहेंगे।

३९. हे मेरे प्रिय भाइयो, उस पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध नियमों के उल्लंघन की भयंकरता को याद रखो, और उस धूर्त के प्रलोभनों के आगे झुकने की भयंकरता को भी याद रखो। याद रखो कि सांसारिक विषय-वासनाओं में मन लगाए रखने से मृत्यु होती है और आध्यात्मिक मन से अनन्त जीवन मिलता है।

४०. हे मेरे प्रिय भाइयो, मेरी बातों पर कान दो। इस्राएल के पवित्र प्रभु की महानता को याद रखो। यह मत कहो कि मैंने तुम्हारे विरुद्ध कठोर बचन कहे हैं; अगर तुम ऐसा विश्वास करते हो तब तुम सच्चाई के विरुद्ध विद्रोह करते हो; क्योंकि मैंने तुम्हारे रचयिता के शब्दों को कहा है। मैं यह जानता हूं कि सत्य बातें हर प्रकार के दूषण के विरुद्ध कठोर होती है; लेकिन सत्यनिष्ठ उनसे भयभीत नहीं होते, क्योंकि उनको सत्य प्रिय होता है।

४१. तब हे मेरे प्रिय भाइयो, प्रभु के पास आओ, जो कि पवित्र है। याद रखो कि उसका रास्ता धार्मिक है। देखो, मनुष्य के लिए रास्ता (२७) सकरा है, लेकिन उसके सामने वह सीधा सरल है और द्वारपाल इस्राएल का पवित्र प्रभु है; और वह वहां अपने किसी सेवक को नहीं रखता; और उस द्वार के अलावा, अन्दर जाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है; और उसको धोखा भी नहीं दिया जा सकता, क्योंकि प्रभु-परमेश्वर उसका नाम है।

४२. और जो कोई उसके द्वार को खटखटाएगा उसके लिए वह द्वार को खोलेगा; और जो अपने को (२८) चतुर और विद्वान समझते हैं, जो धनी हैं, जो अपनी विद्या पर, अपनी बुद्धि पर, और अपनी सम्पत्ति पर फूलते हैं, हां, यही हैं वे लोग जिनका वह तिरस्कार करता है; जब तक कि यह लोग इनको त्याग नहीं देते, और अपने आपको प्रभु के सामने अज्ञानी और अत्यन्त दीन नहीं समझते, वह उनके लिए द्वार नहीं खोलेगा।

४३. लेकिन बुद्धिमान और विवेकी लोगों की निधियां उनसे सदा के लिए छुपा ली जाएंगी— हां, वह आनन्द जो सन्तों के लिए तैयार किया गया है, वह उनके लिए दुर्लभ होगा।

४४. हे मेरे भाइयो, मेरी बातों को याद रखो। देखो, मैं अपने लबादे को उतार कर तुम्हारे सामने झाड़ रहा हूं; मैं अपने मुक्तिदाता परमेश्वर से विनय करता हूं कि वह मुझे अपनी सब कुछ देखने वाली आंख से देखें, जिससे कि अन्तिम दिन जबकि सब मनुष्यों का उनके कर्मों के अनुसार न्याय होगा, तब तुम्हें यह ज्ञान रहे कि इस्राएल का परमेश्वर इस बात का साक्षी है कि मैंने अपनी आत्मा से तुम्हारे दुराचारों को झाड़ दिया है और मैं उसके सामने उज्ज्वल हो के तुम्हारे लहू से मुक्त होकर खड़ा हूं।

४५. हे मेरे प्रिय भाइयों; अपने पापों से मुख मोड़ लो; जो तुम्हें दृढ़ता के साथ जंजीर से बांधेगा उसकी जंजीर को उतार फेंको; उस

(२५) २ नफी २८-१५. या० २:२८. अल० ३९:३-९, ११. ३ नफी १२:२७-३२. (२६) पद्य १५. अलमा ४०:११. (२६) पद्य १५. अल० ४०, ११. (२७) २ नफी ३१:९, १७, १८. ३३:९. अल० ३७:४४, ४५. इला० ३:२९, ३०. ३ नफी १४:१३, १४. (२८) पद्य २९. २ नफी २८:४., १५.

परमेश्‍वर के पास आओ जो तुम्हारी मुक्ति की दृढ़ चट्टान है।

४६. अपनी आत्मा को उस श्रेष्ठ दिन के लिए तैयार करो जबकि सत्यनिष्ठ लोगों का न्याय होगा, कहीं उस न्याय के दिन तुम्हें भारी भय से सिमटना नहीं पड़े और अपने (२९) पूरे दोष का स्मरण न रहे और विवश होकर तुम्हें कहना पड़े : हे पवित्र प्रभु, पावन है तुम्हारा न्याय; हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्‍वर, मैं अपने दोष को जानता हूं; मैंने आपके नियम की अवहेलना की, और मेरे दुष्कर्म मेरे अपने पाप हैं : और मुझ पर शैतान ने (३०) अधिकार कर लिया था, और मैं उसको भयंकर दुर्गति का शिकार हो गया था।

४७. लेकिन देखो मेरे भाइयो, इन भयानक वास्तविकताओं की ओर तुम्हें जागृत करना क्या हितकर है? तुम्हारे विचार अगर शुद्ध होते तब क्या मुझे इन मर्मभेदी बातों को कहना पड़ता? अगर तुम पाप से मुक्त होते तब क्या मुझे सच्चाई की स्पष्टता को इतना स्पष्ट करना पड़ता?

४८. अगर तुम पवित्र होते तब पवित्रता के विषय में मुझे बोलना नहीं पड़ता; लेकिन तुम पवित्र नहीं हो, और मुझे तुम एक शिक्षक की तरह देखते हो, इसलिए पाप के परिणाम से तुम्हें अवगत कराना लाभप्रद होगा।

४९. देखो, पाप से मेरी आत्मा बहुत अधिक घृणा करती है, और सत्यनिष्ठा से मेरा हृदय आनन्दित होता है; और मैं अपने परमेश्‍वर के पवित्र नाम की स्तुति करता हूं।

५०. आओ मेरे भाइयो (३१) हर एक जो प्यासा है, जल के पास आए; और जिसके पास पैसे नहीं हैं, आए और मोल ले कर खाए; हां आओ मधु और दूध बिना पैसे के मोल लो।

५१. इसलिए जिसका कोई मूल्य नहीं उसके पीछे पैसे मत व्यय करो, और जिससे कोई लाभ नहीं उसके लिए परिश्रम मत करो। परिश्रम के साथ मेरी सुनो और जिन बातों को मैंने कहा उनको याद रखो; और इस्राएल के पवित्र प्रभु के पास आओ और वह खाओ जो कभी नष्ट नहीं होता और न ही भ्रष्ट होता है और अपनी आत्मा को इस विपुलता में आनन्द मनाने दो।

५२. देखो, मेरे प्रिय भाइयो; अपने परमेश्‍वर के वचनों को याद रखो; दिन में लगातार उससे प्रार्थना करो, और रात को उसके पवित्र नाम को धन्यवाद दो। अपने हृदय को आनन्द मनाने दो।

५३. और देखो, प्रभु का इकरारनामा कितना महान है, और कितनी महान है मानव वंश पर उसकी कृपा; उसकी महानता; आशीष और दया के कारण उसने हमें वचन दिया है कि हमारे वंशज सम्पूर्ण रूप से नष्ट (३२) नहीं होंगे, परन्तु वह उनको सुरक्षित रखेगा; और भविष्य की पीढ़ियों में वे इस्राएल के घराने की एक धार्मिक शाखा होंगे।

५४. और अब, मेरे भाइयों, शेष बातें मैं तुम्हें कल बताऊंगा, आमीन।

अध्याय १०

याकूब की शिक्षा का जारी रहना—मसीह का आगमन—प्रतिज्ञा के देश पर कोई राजा नहीं—सियोन के विरुद्ध जो लड़ेंगे वे नष्ट हो जाएंगे।

१. हे मेरे प्रिय भाइयों, अब मैं फिर तुमसे इस (१) धार्मिक शाखा के विषय में बोलूंगा जिसकी चर्चा मैंने की थी।

२. क्योंकि देखो, जो वचन हमें प्राप्त हुए हैं, वे मानव शरीर के अनुसार प्राप्त हुए हैं; जैसा कि मुझे दिखाया गया है (२) बहुत से हमारे वंशज अविश्‍वास के कारण नष्ट हो जाएंगे, फिर भी परमेश्‍वर बहुतों पर दयालु रहेगा; और उनको पुनर्स्थापित किया जाएगा, जिससे कि वे उसके पास आ सकेंगे जो उन्हें उद्धारक के विषय में सच्चा ज्ञान दे सकेगा।

३. इसलिए, जैसा कि मैंने कहा कि ईसामसीह—पिछली रात को एक स्वर्गदूत ने मुझसे कहा कि

(२९) देखो १४. (३०) देखो ९. (३१) यशा० ५५:१, २. (३२) देखो १६, १ नफी १३. पद्य ३१ अध्याय १०. (१) १ नफी १५:१२-१७. २ नफी ३:५, ९:५३. या० ५:२५, ४३-४५. अल० ४६:२४, २५. (२) देखो ४, नफी १५.

यही उसका नाम होगा—उनका यहूदियों में आना उचित होगा जो कि संसार में अधिक पापी हैं; और वे उसको क्रूस पर चढ़ाएंगे—यही हमारे परमेश्वर की इच्छा है, और इस संसार में दूसरा कोई राष्ट्र नहीं जो अपने परमेश्वर को क्रूस पर चढ़ाएगा।

४. क्योंकि अगर इस सबल चमत्कार को किसी अन्य राष्ट्र में लाया गया, तब वे पश्चात्ताप करेंगे, और जान जाएंगे कि वही उनका ईश्वर है।

५. लेकिन पुजारियों और दुराचारों के कारण यरूशलेम में रहने वाले उसके लिए अपनी गर्दन टेढ़ी कर लेंगे और वह क्रूस पर चढ़ाया जाएगा।

६. इसलिए, उनके दुराचारों के कारण उन पर विनाश, अकाल, महामारी और रक्तपात का प्रकोप होगा; और जो इनसे नष्ट नहीं होंगे वे सभी राष्ट्रों में तितर-बितर हो जाएंगे।

७. लेकिन देखो, प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: जब वह दिन आएगा जबकि वे यह विश्वास करने लगेंगे कि मैं ही ईसामसीह हूं, तब जो वचन मैंने उनके पूर्वजों के साथ बनाया था कि (३) मानव शरीर में ही उनको अपने पैतृक देश में पुनर्स्थापित किया जाएगा, उसको पूरा किया जाएगा।

८. और ऐसा होगा कि तितर-बितर होने के बहुत दिन पश्चात् वे सागर के द्वीपों और विश्व के चारों दिशाओं से एकत्रित किए जाएंगे; और परमेश्वर कहता है कि जो राष्ट्र उनको उनके पैतृक देश में ले जाएंगे वे मेरी दृष्टि में महान होंगे।

९. हां (४) यहूदियों से भिन्न जाति वालों के राजा उनके पालन करने वाले पिता होंगे और उनकी रानियां दूध पिलाने वाली मां होंगी; इसलिए यहूदियों से भिन्न जाति वालों को प्रभु महान वचन दिए हैं, क्योंकि उसने ऐसा ही कहा है और इसका प्रतिवाद कौन कर सकता है?

१०. लेकिन देखो, परमेश्वर कहता है, यह देश तुम्हारा (५) पैतृक देश होगा, और (६) इसमें यहूदियों से भिन्न जाति वाले सुखी होंगे।

११. यह देश भिन्न-भिन्न जाति वालों के लिए स्वतन्त्रता का देश होगा और उनका इस देश में कोई राजा न होगा।

१२. और मैं इस देश को सभी अन्य (७) राष्ट्रों से सुरक्षित करूंगा।

१३. और परमेश्वर कहता है कि जो कोई सियोन के विरुद्ध (८) लड़ेगा, वह नष्ट हो जाएगा।

१४. और जो कोई मेरे विरुद्ध कोई राजा खड़ा करेगा वह नष्ट हो जाएगा, क्योंकि मैं, प्रभु, स्वर्ग का राजा उनका राजा होऊंगा, और जो मेरी बातों को सुनेंगे, उनके लिए मैं सदा प्रकाश बनूंगा।

१५. इसलिए मैंने जो शर्तनामा मानव-सन्तति के साथ बनाया है, वह मानव शरीर के रहते ही निभाया जाएगा और इसके निमित मैं (९) अंधकार के गुप्त कार्यों, हत्या और घृणित कार्यों को नष्ट कर दूंगा।

१६. इसलिए जो (१०) सियोने के विरुद्ध लड़ेगा, चाहे वह यहूदी हो या दूसरी जाति के, चाहे दूसरों के दास हो या स्वतन्त्र, चाहे स्त्री हो या पुरुष, सब नष्ट हो जाएंगे क्योंकि ये वे लोग हैं जो संसार के (११) व्यभिचारी हैं; और हमारा परमेश्वर कहता है कि जो मेरे पक्ष में नहीं हैं, वह मेरा विपक्षी है।

१७. क्योंकि जो वचन मैंने मानव वंश को दिए हैं उन्हें मैं पूरा करूंगा, और यह उनके मानव शरीर के रहते ही करूंगा।

१८. इसलिए मेरे प्रिय भाइयो, हमारा

(३) देखो ५, १ नफी १५. (४) १ नफी १३:३५. ३१:१५, १७, १८. २२:५-९. २ नफी ६:६-७. (५) देखो १, १ नफी २. (६) १ नफी १३:१५, १९-३४-४२. १४:१-७. १५:१३, १७. २२:६-१०. ३ नफी १६:४-७. २१:२-६, २२-२५. मा० ५:१९. ए० २:१२. (७) १ नफी १३:१९. (८) पद्य १६. १ नफी २२:१४, १९. २ नफी २७:२, ३. (९) २ नफी ९:९. २६:२२. २७:२७. अल० ३७:२१-३२. इला० १:११, १२. २:३-१४. ३:२३. ६:१७-३०, ३७-४१. ७:४, ५, २०, २१, २५. ८:१, ४, २७, २८. ९:६. १०:३. ११:२, १०, २५-३३. ३ नफी १:२७-३०. २:१०-१९. अध्याय ३, ४, ५:४-६. ६:२८-३०. ७:६, ९:१२. ९:९. ४ नफी ४२, ४६. मा० १:१८, २:८, १०, २७. ८:२७, ४० ए० ८:९-२५. ९:१, ५, ६, २६. १०:३३. ११:१५, २२. १३:१५. १८. १४:८-१०. (१०) देखो ८. (११) देखो ७, १ नफी १४.

परमेश्वर इस प्रकार कह रहा है : मैं तुम्हारे वंशजों को (१२) दूसरी जाति वालों के हाथ से कष्ट दिलाऊंगा; फिर भी मैं दूसरी जाति वालों के हृदयों को दयालु बना दूंगा जिससे वे उनके लिए पिता के समान हो जाएंगे; इसलिए दूसरी जाति वालों को आशीर्वाद प्राप्त होगा और उनकी गिनती इस्राएल के घराने में की जाएगी।

१९. इसलिए मैं (१३) इस देश को तुम्हारे वंशजों और जिन लोगों की गिनती सदैव तुम्हारे वंश में की जाएगी, उनके लिए पैतृक देश के रूप में दूंगा क्योंकि परमेश्वर मुझसे कहता है कि यह देश अन्य दूसरे देशों से श्रेष्ठ है और मैं चाहता हूं कि इसमें रहने वाले सब लोग मेरी स्तुति करें।

२०. और अब हे मेरे भाइयो, यह देख कर कि हमारे दयालु परमेश्वर ने हमें इन बातों का इतना बड़ा ज्ञान दिया है, हम उसको याद करें और अपने पापों को अलग रख दें, अपने सर को नीचा न झुकने दें, क्योंकि हमें अलग फेंका नहीं गया है; यह सच है कि हम अपने पैतृक देश से निकाले गए हैं, लेकिन हमें उससे भी उत्तम देश में लाया गया है, क्योंकि प्रभु ने समुद्र को हमारा रास्ता बनाया है और हम समुद्र के एक द्वीप में हैं।

२१. और (१४) समुद्र के द्वीपों में रहने वाले लोगों के लिए प्रभु की प्रतिज्ञा महान है; जबकि वह द्वीप कहता है तब इसका अर्थ इससे भी अधिक है क्योंकि उन द्वीपों पर भी हमारे भाई निवास करते हैं।

२२. क्योंकि देखो, प्रभु परमेश्वर अपनी इच्छा और आनन्द के अनुसार इस्राएल के वंश वालों को समय-समय (१५) पर ले गया है, और अब देखो, प्रभु उन सभी को स्मरण कर रहा है जो तोड़ लिए गए हैं; इसलिए वह हमें भी याद कर रहा है।

२३. इसलिए अपने हृदयों में हर्षित हो उठो, और याद रखो कि कर्म करने में तुम स्वतन्त्र हो— और सदैव के लिए मृत्यु अथवा अनन्त जीवन चुनने में भी तुम स्वतन्त्र हो।

२४. इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, परमेश्वर की इच्छा के साथ पुर्नमिलाप कर लो न कि शैतान और मानवी विषय-वासना के साथ; और परमेश्वर से मेल कर लेने के पश्चात् यह याद रखो कि एकमात्र परमेश्वर की कृपा से और कृपा के द्वारा ही तुम बचोगे।

२५. इसलिए, परमेश्वर (१६) पुनर्जीवन की व्यवस्था द्वारा तुम्हें मृत्यु से ऊपर उठाए, और (१७) प्रायश्चित के द्वारा तुम्हें अनन्त मृत्यु से बचाए जिससे कि परमेश्वर के अनन्त राज्य में तुम्हें स्वीकार किया जाए, जिससे कि तुम दिव्य सौन्दर्य के साथ उसका यश-गान करो। आमीन।

अध्याय ११

याकूब की शिक्षा का जारी रहना—परमेश्वर की वाणी के गवाह—मुक्तिदाता के संकेत।

१. इस समय याकूब ने मेरे लोगों से बहुत-सी बातें कहीं; फिर भी केवल इन्हीं बातों को लिखना मैंने योग्य समझा और जो कुछ मैंने लिखा वह मेरे लिए पर्याप्त है।

२. और अब, मैं नफी, यशायाह के और शब्दों को लिख रहा हूं, क्योंकि मैं उसके शब्दों को अपने लोगों के लिए उपयुक्त समझता हूं, जिसे मैं अपने सभी वंश वालों में भेजूंगा क्योंकि उसने सच में (१) मेरे उद्धारक को उसी तरह देखा था जैसे कि मैंने देखा था।

३. और जिस प्रकार मैंने उसको देखा (२) उसी प्रकार मेरा भाई याकूब ने भी उसे देखा; इसलिए मैं उनकी कही बातों को और अपनी कही बातों को सत्य प्रमाणित करने के लिए अपने वंश वालों में भेजूंगा। इसलिए, परमेश्वर ने कहा कि मैं (३) तीन जनों को साक्षी के द्वारा अपनी बातों को स्थापित करूंगा। फिर भी परमेश्वर (४) और गवाहों को भेजेगा, और अपनी बातों को सत्य सिद्ध करेगा।

(१२) देखो २६ और २७, १ नफी १६. पद्य १४:१५. (१३) १ नफी १३:१५. देखो १, १ नफी २. (१४) १ नफी १९:१६. २२:३-५. यशा० ४९:१. ५१:५. ६०:९. ६६:१९. (१५) १ नफी २२:४, ५. (१६) देखो ४, २ नफी २. (१७) देखो ६, २ नफी २. अध्याय ११. (१) २ नफी १६:१. यशा० ६:१, ५. (२) २ नफी २:३, ४. (३) २ नफी २७:१२. ए० ५:३, ४. सि० शर्त० ५:११, १५. पुस्तक के आरम्भ में तीन गवाहों की साक्षी देखो. (४) २ नफी २७:१३, १४. ए० ५:२. पुस्तक के आरम्भ में आठ गवाहों की साक्षी देखो.

ईसा से ५९९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

४. देखो, अपने लोगों को मसीह का आना सिद्ध करने में मेरी आत्मा को आनन्द प्राप्त होता है, और इसके लिए मूसा का नियम दिया गया है; और जगत के आरम्भ से जो सबकुछ परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दिया गया है वह सब उसके द्वारा आदर्शभूत है।

५. और प्रभु ने हमारे पूर्वजों के साथ जो शर्तनामा बनाया है उसके लिए मेरी आत्मा भी आनन्दित होती है; हां, (५) मृत्यु से बचाने के लिए उसकी व्यवस्था में जो कृपा, न्याय, शक्ति और दया है, उसके लिए भी मेरी आत्मा आनन्दित होती है।

६. और अपने लोगों को यह प्रमाणित करने में भी मेरी आत्मा आनन्दित होती है कि बिना मसीह के आए सभी मनुष्य नष्ट हो जाएंगे।

७. क्योंकि अगर मसीह नहीं होता तब (६) परमेश्वर भी नहीं होता और अगर परमेश्वर नहीं होता तब न हम होते और न यह सृष्टि होती। परन्तु एक परमेश्वर है और मसीह है जो कि अपने उचित अवसर पर आएगा।

८. और अब मैं (७) यशायाह के कुछ शब्दों को लिखूंगा जिससे कि जो इन शब्दों को देखेंगे वे हर्षित होकर सब लोगों के लिए आनन्द मनाएंगे। ये शब्द वे हैं जिसे तुम अपने और हर एक मनुष्य के लिए पसन्द करोगे।

अध्याय १२

भविष्यवाणियां, जिस प्रकार पीतल की पटियों पर अंकित की गईं—यशायाह अध्याय २ से तुलना करो।

१. आमोस के पुत्र यशायाह का वचन, जो उसने यहूदा और यरूशलेम के विषय दर्शन में पाया।

२. और (१) अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि (२) प्रभु के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग प्रवाह की तरह उसकी ओर चलेंगे।

३. और बहुत से लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम (३) यहोवा के पर्वत पर चढ़ कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे; क्योंकि प्रभु की व्यवस्था सियोन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।

४. वह (४) हर एक जाति का न्याय करेगा, और देश-देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा और वे (५) अपनी तलवारों को पीट कर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध तलवार नहीं उठाएगी, और न ही लोग भविष्य में युद्ध-विद्या ही सीखेंगे।

५. हे याकूब के घराने वालो, आओ, हम प्रभु के प्रकाश में चलें (६) हां, आओ, क्योंकि तुम सब भटक गए हो और अपने दुष्कर्मों के पथ पर चले गए हो।

६. इसलिए, हे प्रभु, तूने अपने लोगों को जो कि याकूब के घराने के हैं, त्याग दिया है, क्योंकि वे (७) पूरब की रीति से और व्यवहारों से भर गए हैं, और पलिश्तियों की तरह ज्योतिषियों की बातें (८) सुनते और परदेशियों के बच्चों के साथ आनन्द मनाते हैं।

७. (९) उनका देश चांदी और सोने से भरपूर है, और उनके रखे हुए धन का कोई अन्त नहीं है; उनका देश घोड़ों से भरपूर है, और उनके रथ अनगिनित हैं।

८. (१०) उनका देश मूर्तियों से भरा है; वे अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं को जिन्हें उन्होंने अपनी उंगलियों से संवारा है, उसकी पूजा करते हैं।

(५) देखो ६, २ नफी २. (६) २ नफी २:१३, १४. अ० ४२:२२, २३. मा० ९:१९. (७) देखो यशा० अध्याय २ से लेकर १४ तक, अगला १३ अध्याय २ नफी द्वारा पीतल की पटियों से लिया गया. अध्याय १२. (१) मी० ४:१-३. (२) पद्य ३, ३ नफी २४:१. (३) सि० शर्त० १३३:३. (४) २ नफी २१:२-५. (५) २ नफी २१:९. (६) यशा०५३:६. १ नफी १३. २ नफी २८:१४. मू० १४:६. अल० ५:३७. (७) गिन० २३:७. (८) व्य० १८:१४. (९) व्यव० १७:१६, १७. (१०) यिर्म० २:२८.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

९. और अधम मनुष्य (११) झुकते नहीं और बड़े मनुष्य अपने को दीन नहीं बनाते इसलिए उनको क्षमा मत कर।

१०. (१२) हे पापियो, तू चट्टान में घुस जा, और मिट्टी में छुप जा नहीं तो तू उसके भय और प्रताप के द्वारा मारा जाएगा।

११. और ऐसा होगा कि लोगों की (१३) घमण्ड भरी आंखें नीची की जाएंगी और उनका घमण्ड दूर किया जाएगा; और उस दिन केवल प्रभु ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा।

१२. क्योंकि (१४) सर्वशक्तिमान परमेश्वर का दिन शीघ्र ही सभी जातियों के ऊपर आने वाला है, हां, सबके ऊपर आएगा, घमण्डियों (१५) और ऊंची गर्दन वालों के ऊपर, हर एक जो अपने को ऊंचा समझते हैं उन्हें झुकाया जाएगा।

१३. और (१६) लबानोन के सब देवदारों पर जो ऊंचे और बड़े हैं; और बासान के सब बांजवृक्षों पर आएगा।

१४. सब (१७) ऊंचे पर्वतों पर, सब ऊंची पहाड़ियों पर, और सब जाति के ऊपर आएगा जो कि ऊपर उठे हुए हैं;

१५. सब (१८) ऊंची मीनारों और सब दृढ़ शहर पनाहों पर आएगा;

१६. सागर की सब नावों पर और तर्शीश (१९) के सब जहाजों पर, और सब सुन्दर चित्रों पर वह दिन आता है।

१७. और (२०) मनुष्य का गर्व मिटाया जाएगा, और लोगों का घमण्ड नीचा किया जाएगा; और उस दिन केवल प्रभु ही ऊंचे पर विराजमान रहेगा।

१८. और वह सब (२१) मूर्तियों को बिलकुल नष्ट कर देगा।

१९. और जब प्रभु पृथ्वी को कम्पित करने के लिए उठेगा, तब (२२) उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे लोग चट्टानों की गुफाओं और भूमि के बिलों में जा घुसेंगे।

२०. उस दिन (२३) लोग अपनी चांदी सोने की मूर्तियों को जिन्हें उन्होंने दण्डवत करने के लिए बनाया था छछुन्दरों और चमगादड़ों के आगे फेंक देंगे।

२१. और जब प्रभु पृथ्वी को भयंकर रूप से कम्पित करने को उठेगा, तब वे उसके भय के कारण और उसके प्रताप के मारे (२४) चट्टानों की दरारों और पहाड़ियों के छेदों में घुसेंगे।

२२. सो तुम मनुष्य से परे रहो जिसकी श्वांस उसके नथनों में है, क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?

अध्याय १३

पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ३ से तुलना करो।

१. सुनो, प्रभु जो सर्वशक्तिमान् है, वह यरूशलेम और यहूदा का सब प्रकार सहारा और लाठी, अर्थात् अन्न का सारा आधार, और जल का सारा आधार दूर कर देगा;

२. (१) वीर और योद्धा को, न्यायकर्ता और भविष्यवक्ता को, चतुर और वृद्धों को;

३. पचास सिपाहियों के नायक और प्रतिष्ठित व्यक्ति को, सलाहकार, चतुर कारीगर और प्रवीण व्याख्याता को भी हटा देगा।

४. और मैं (२) बालकों को उनके राजकुमार बनाऊंगा और बच्चे उन पर प्रभुता करेंगे।

५. और लोग आपस में एक दूसरे पर, और हर एक अपने पड़ोसी पर अत्याचार करेंगे; और हर एक अपने पड़ोसी को सताएंगे; और लड़के वृद्ध लोगों से और नीच लोग सज्जनों से असभ्यता का व्यवहार करेंगे।

६. उस समय जब कोई अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़ कर कहेगा कि तेरे पास तो वस्त्र हैं, आ हमारा न्यायिक हो जा और उजड़े देश का विनाश न होने दे।

(११) यशा० २:९. (१२) पद्य १९:२१. प्र० ६:१५, १६. (१३) पद्य १७. २ नफी १५:१५, १६. (१४) सप० १:१४-१८. (१५) मला० ४.१. (१६) यशा० १४:८. ३७:२४. यहे० ३१:३. जक० ११:१, २. (१७) यशा० ३०:२५. (१८) यशा० ३३:१८. ३ नफी २१:१५, १८. (१९) १ राजा १०. २२. (२०) पद्य ११. (२१) पद्य २०. (२२) देखो १३. (२३) पद्य १८. (२४) देखो १३. अध्याय १३. (१) २ राजा० २४:१४. (२) सभो० १०:१६.

ईसा से ५५९ मे ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

७. उस दिन वह शपथ खा कर कहेगा, मैं चंगा करने वाला बनूंगा; क्योंकि मेरे घर में न रोटी है और न वस्त्र ही, मुझे तुम लोगों का न्यायी मत बनाओ।

८. क्योंकि (३) यरूशलेम तो नष्ट हो गया है और यहूदा गिर गया है, क्योंकि उनके वचन और उनके कर्म प्रभु के विरुद्ध हैं, जो उसकी तेजोमय आंखों के सामने विद्रोह को बढ़ावा देने वाले ठहरते हैं।

९. उनकी आकृति भी उनके विरुद्ध साक्षी देती है; और (४) सोदोम की तरह वे अपने पापों की घोषणा खुद करते हैं और उसे छुपाते नहीं। हाय! उनकी आत्मा। क्योंकि उन्होंने अपनी हानि स्वयं ही कर ली है।

१०. धार्मिक लोगों से कहो कि उनका भला होगा, क्योंकि वे अपने कर्मों का फल प्राप्त करेंगे।

११. हाय! यह दुष्ट नष्ट हो जाएंगे, क्योंकि उनको उनके कर्मों का फल मिलेगा।

१२. मेरे लोगों पर (५) बच्चे अन्धेर करते हैं, और स्त्रियां उन पर प्रभुता करती हैं। हे मेरे लोगो, जो (६) तेरी अगुवाई करते हैं, वे ही तुम्हें पथ-भ्रष्ट करते हैं और तेरे मार्ग को नष्ट कर देते हैं।

१३. प्रभु लोगों के लिए (७) विनय करने और न्याय करने के लिए खड़ा है।

१४. प्रभु अपने लोगों के वृद्ध जनों और न्यायकर्ताओं के साथ तर्क करता है कि तुम्हीं ने (८) दाख को बगीचे में से खा डाला, और दीनों का धन लूट कर अपने घरों में रख लिया है।

१५. सर्वशक्तिमान प्रभु की यह वाणी है: तुम क्यों मेरी प्रजा को (९) दलते, और दीन लोगों के चेहरे को पीसते हो? तुम्हारा क्या तात्पर्य है?

१६. प्रभु ने यह भी कहा है, क्योंकि सियोन की स्त्रियां घमण्ड करती और सिर ऊंचा किए, आंखों में मादकता लिए, और घुंघरुओं को छम-छमाती हुई ठुमक ठुमक कर चलती हैं—

१७. इसलिए प्रभु उनके सिर को (१०) गंजा करेगा, और (११) उनके शरीर को वस्त्रहीन करेगा।

१८. उन दिनों प्रभु पायल जैसे आभूषणों, सिर की टोपियों और चन्द्रहारों को उनसे ले लेगा।

१९. वह उनसे जंजीरों, चूड़ियों और गुलूबन्दों;

२०. घूंघटों, पैरों के आभूषण, पटुकों, सुगन्ध-पात्रों, कानों के आभूषण;

२१. अंगूठियों, नाक के आभूषण;

२२. सुन्दर वस्त्रों, ओढ़नियों, पादों, घुंघराले बाल करने वाले यंत्र;

२३. दर्पणों, उत्तम मलमल के वस्त्र, बुन्दियों, दुपट्टों आदि सभी की शोभा को अन्त कर देगा।

२४. और ऐसा होगा कि सुगन्ध के स्थान पर दुर्गन्ध होगी, कमरबन्द के स्थान पर चीथड़े होंगे; सुन्दर केश-विन्यास के स्थान पर (१२) गंजापन होगा, सुन्दर पटुके के स्थान पर टाट की पेटी पहिनेंगे और सुन्दरता के स्थान पर होगी कुरूपता।

२५. तेरे पुरुष तलवार से, और शूरबीर युद्ध में मारे जाएंगे।

२६. उसके (१३) फाटक ठण्डी सांस लेंगे और विलाप करेंगे और वह (१४) अकेली होकर भूमि पर बैठी रहेगी।

अध्याय १४

पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ४ से तुलना करो।

१. उस समय सात स्त्रियां एक पुरुष को पकड़ कर कहेंगी कि रोटी तो हम अपनी ही खाएंगी, और वस्त्र हम अपने ही पहनेंगी, केवल हम तेरी कहलाएं जिससे कि हमारी जग हंसाई दूर हो।

२. उस दिन (१) प्रभु की शाखा सुन्दर

(३) मी० ३:१२. (४) उत्प० १३:१३. १८:२०, २१. १९:५. (५) पद्य ४. (६) यशा० ९:१६. (७) मी० ६:२. (८) यशा० ५:७. (९) यशा० ५८:४. मी० ३:२, ३. (१०) व्य० २८:२७. (११) यिर्म० १३:२२. नहूम ३:५. (१२) यशा० २२:१२. मी० १:१६. (१३) यिर्म० १४:२. विला० १:४. (१४) विला० २:१०. अध्याय १४. (१) २ नफी ३:५. यशा० ६०:२१. ६१:३. २ नफी १०:१. या० २:२५.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

और यशस्वी होगी; और इस्राएल के बचे हुए लोगों के लिए पृथ्वी की उपज उत्तम और सुन्दर होगी।

३. और ऐसा होगा कि जो (२) लोग सियोन और यरूशलेम में बचे रहेंगे और जिनका नाम जीवन के लिए लिखा होगा, वे हर एक पवित्र कहलाएंगे।

४. यह सब होगा, जब प्रभु न्याय करने वाली और भस्म करने वाली आत्मा के द्वारा (३) सियोन की स्त्रियों के मल को धो चुकेगा और यरूशलेम के रक्त को दूर कर देगा।

५. और (४) तब प्रभु सियोन पर्वत के एक एक घर के ऊपर और उसके सार्वजनिक स्थानों के ऊपर (५) दिन को धुएं का बादल, और रात को धधकती अग्नि का प्रकाश रचेगा और समस्त विभव के ऊपर एक मण्डप छाया रहेगा।

६. वह दिन को धूप की गर्मी, (६) बचने का स्थान और आंधी पानी से बचने के लिए होगा।

अध्याय १५

पीतल की पटियों से धर्मशास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ५ से तुलना करो।

१. और तब मैं अपने प्रिय के लिए उसके दाख की बगीचे के विषय में गीत गाऊंगा। (१) मेरे प्रिये का दाख का बगीचा एक अति उपजाऊ टीले पर है।

२. उसने उसकी रक्षा के लिए चहारदीवारी बनाई, और पत्थर बीन कर उसमें उत्तम जाति की एक दाखलता लगाई; उसके बगीचे में उसने एक मीनार को और दाखरस निकालने के लिए एक यन्त्र बनाया; और ऐसा लग रहा था कि उसको अंगूर प्राप्त होगा; परन्तु उसमें (२) घटिया अंगूर ही लगे।

३. और अब, हे यरूशलेम के निवासियो और हे यहूदा के लोगों, मेरे और मेरे दाख के बगीचे के बीच न्याय करो।

४. मैंने अपने दाख के बगीचे के लिए क्या बाकी रखा? तब क्या कारण है कि जब मैंने अच्छे दाख की आशा की तब उसमें घटिया दाखें लगीं?

५. अब मैं तुमको यह बताता हूं कि मैं अपने दाख की बगीचे को क्या करूंगा—मैं उसके कांटेवाले बाड़े को उखाड़ दूंगा ताकि वह चट की जाए और उसकी (३) भीत को ढाह दूंगा ताकि वह रौंदी जाए।

६. मैं उसे उजाड़ दूंगा; वह न तो फिर छांटी या खोदी जाएगी और उसमें तरह तरह के (४) कटीले पेड़ उगेंगे; मैं (५) बादलों को भी आज्ञा दूंगा कि वे उस पर जल न बरसाएं।

७. क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु के दाख की बाटी इस्राएल का घराना है; और यहूदा के लोग उसके दाख के पौधे हैं; उसने न्याय की आशा की थी परन्तु अन्याय होते देखा; उसने धर्म की आशा की थी परन्तु उसे रुदन ही सुनाई पड़ा।

८. सन्ताप पड़े उन पर जो (६) घर से घर मिलाते जाते हैं कि कोई स्थान नहीं बचता और तुम देश के बीच अकेले रह जाओ।

९. सर्वशक्तिमान प्रभु ने मेरे कान में कहा है: निश्चय ही बहुत से घर सुनसान हो जाएंगे और बड़े बड़े सुन्दर नगर निर्जन हो जाएंगे।

१०. क्योंकि दस बीघे की दाख की खेती से केवल (७) थोड़ा सा दाखरस अंगूर प्राप्त होगा और होमेर भर के बीज से एक ही एपा अन्न उत्पन्न होगा।

११. (८) हाय उनको जो सुबह उठ कर बड़ी रात तक मदिरा पीते रहते हैं जब तक कि उन पर मदिरा का पूरा असर नहीं हो जाता।

(२) मत्ति १३:४१-४३. ४७:५०. २५:१-१२. (३) २ नफी १३:१६-२६. (४) यहेज० २०:३७, ३८. मला० ३:२. ४:१-३. (५) यशा० ३३:१४, १५. ६०:१-३. १९:२१. मला० ३:२, ३. (६) निर्ग० १३:२१. जक० २:५. (७) यशा० २५:४. अध्याय १५. (१) भज० ८०:८. यशा० २७:२. यिर्म० २:२१. मत्ति २१:३३. मार्क १२:१. लूका २०:९. सि० शर्त० १०१:४४-६२. (२) या० ५. (३) भज० ८०:१२. (४) यशा० ७:२३, २४. ३२:१३. (५) यिर्म० ३:३. (६) मी० २:२. (७) यहेज० ४५:११. (८) पद्य २२ नीति० २३:२९-३२. सभो० १०:१७. (९) आ० ६:५, ६.

१२. (९) उनके भोज में वीणा, सारंगी, बांसुरी और मदिरा ये सब पाए जाते हैं; (१०) परन्तु वे प्रभु के काम की ओर ध्यान नहीं देते, और उसके हाथों के काम को भी नहीं देखते।

१३. इसलिए मेरे लोग दासता की ओर जा रहे हैं (११) क्योंकि उनको सत्य का ज्ञान नहीं है; उनके प्रतिष्ठित पुरुष भूखों मरते हैं और जनसमूह प्यास से व्याकुल होते हैं।

१४. इसलिए नरक ने अपना विराट रूप धारण करके अपना विराट मुख खोल दिया है, और उनका वैभव और भीड़, उनका आडम्बर और आनन्द मनाने वाले, उसके मुख में जा गिरेंगे।

१५. (१२) औसत मनुष्य नीचे लाए जाएंगे, बलवान दुर्बल किए जाएंगे, और अभिमानियों की आंखें नीची की जाएंगी।

१६. परन्तु सर्वशक्तिमान प्रभु (१३) न्याय करने के कारण महान सिद्ध है, और परमेश्वर जो कि पवित्र है धर्मी होने के कारण पवित्र ठहरता है।

१७. तब मेमने अपने खेत में चरेंगे, परन्तु (१४) हृष्टपुष्टों के उजड़े स्थान परदेशियों को खाने के लिए मिलेंगे।

१८. हाय उनके लिए जो अधर्म की रस्सियों से और पाप को मानो गाड़ी के रस्से से खींच कर अपने पास लाते हैं।

१९. जो यह कहते हैं कि वह अपना काम (१५) शीघ्र करे जिससे कि हम उसे देखें; और इस्राएल के पवित्र प्रभु की सम्मति प्रकट होकर हमारे निकट आए कि जिससे हम उसको समझें।

२०. हाय उन पर जो बुरे को भला और भले का बुरा कहे, जो अंधियारे को प्रकाश और प्रकाश को अंधकार माने, और कड़ुवे को मीठा और मीठे को कड़ुवा माने।

२१. हाय उन पर जो अपने आपको ज्ञानी और बुद्धिमान मानते हैं।

२२. हाय उन पर जो मदिरा पीने में वीर और उसे तीखी बनाने में चतुर हैं।

२३. जो रिश्वत ले कर दोषियों को निर्दोष और निर्दोषों को दोषी ठहराते हैं।

२४. इस कारण जिस प्रकार अग्नि की लौ से खूंटी भस्म होती है और सूखी घास जल कर राख हो जाती है वैसे ही उन की जड़ नष्ट हो जाएगी और उनके फूल धूल बन कर हवा में उड़ जायेंगे; क्योंकि उन्होंने सामर्थ्यवान प्रभु की व्यवस्था को व्यर्थ समझा और इस्राएल के पवित्र परमेश्वर के वचन को तुच्छ जाना।

२५. इसलिए प्रभु का क्रोध उसके लोगों पर हुआ है, और उसने उनके विरुद्ध हाथ बढ़ा कर उनको मारा है, और पहाड़ थरथरा उठे हैं; और लोगों के फटे शव सड़कों के ऊपर पड़े हैं। इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अभी तक फैला हुआ है।

२६. वह दूर-दूर के देशों के लिए अपना (१६) झण्डा खड़ा करेगा और सीटी बजा कर उनको पृथ्वी के (१७) दूसरे किनारे से बुलाएगा; और देखो, वे शीघ्रता से वेग गति से दौड़े आएंगे।

२७. उन में कोई थकेगा नहीं, न कोई ठोकर खा कर गिरेगा; और कोई ऊंघने और सोने वाला नहीं होगा, किसी का फेंटा नहीं खुलेगा और न तो किसी के जूतों का बन्धन ही टूटेगा।

२८. उनके तीर पैने और धनुष पर वाण चढ़ाए हुए होंगे; उनके घोड़ों के टाप बज्र के समान और रथों के पहिए बवण्डल की तरह होंगे और उनके गर्जन सिंह के गर्जन के समान होंगे।

२९. वे युवा सिंह की तरह गरजेंगे हां, वे गरजेंगे और गुर्रा कर अपने शिकार को पकड़ कर सुरक्षित ले जाएंगे, और कोई भी उनसे उनका शिकार नहीं छुड़ा सकेगा।

३०. उस समय वे उन पर समुद्र के गर्जन की तरह गरजेंगे और यदि कोई देश की ओर देखेगा

(१०) अय्यूब ३४:२७. भज० २८:५. (११) यशा० १:३ हो० ४:६. लूका १९:४४. (१२) यशा० २:९, १७. (१३) यशा० २:११. (१४) यशा० १०:१६. (१५) यिर्म० १७:१५. (१६) यशा० ११:१०, १२. १३:२, १८. ३:४९:२२. ६६:१९. जक० ९:१६. (१७) २ नफी २९:२ मारो० १०:२८.

ईसा से ५९९ से ५४५ वर्षों के पूर्व के मध्य

तब उसे अन्धकार और संकट दिखाई पड़ेगा और ज्योति मेघों से छिप जाएगी।

अध्याय १६

पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ६ से तुलना करो।

१. जिस वर्ष उज्जिय्याह राजा मरा, (१) मैंने प्रभु को बहुत ही ऊंचे सिंहासन पर बैठे देखा; और उसके वस्त्र से मन्दिर भर गया।

२. उससे ऊंचे पर साराप दिखाई दिए जिनके छः छः पंखे थे, दो पंखों से वे अपने मुंह को ढ़के हुए थे और दो से अपने पैरों को और दो से वे उड़ रहे थे।

३. और वे एक दूसरे से पुकार पुकार कर कह रहे थे : सर्वशक्तिमान परमेश्वर पवित्र, पवित्र, पवित्र है (२) सारा जगत उसके यश से भरपूर है।

४. और उन पुकारने वालों के शब्द से द्वार के स्तम्भ हिल उठे और भवन धुएं से भर उठा।

५. तब मैंने कहा, हाय, मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठ वाला मनुष्य हूं, और अशुद्ध होंठ वाले लोगों के बीच में रहता हूं; क्योंकि मेरी आंखों ने उस राजा को देखा है जो सर्वशक्तिमान है।

६. तब उनमें से एक साराप हाथ में एक दहकता अंगार चिमटे से वेदी में से उठा कर मेरे पास उड़ कर आया।

७. उसने उस अंगार को मेरे मुख पर रख कर कहा : देख, इसने तेरे होंठों को छू लिया है, इसलिए तेरे पाप दूर कर दिए गए और तुझे क्षमा किया गया।

८. तब मैंने प्रभु की इस वाणी को सुना : मैं किसको भेजूं और हमारे लिए कौन आएगा? तब मैंने कहा, मैं यहां हूं, मुझे भेजो।

९. और उसने कहा, जा और इन लोगों से कहो : (३) तुम सुनते तो हो परन्तु समझते नहीं; देखते तो हो परन्तु कुछ पहचानते नहीं।

१०. तू इन लोगों के हृदय को मोटा और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आंखों को बन्द कर—ऐसा न हो कि वे अपनी आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें, मन बदलें और चंगे हो जाएं।

११. तब मैंने कहा : हे प्रभु, कितने समय तक? और उसने कहा (४) जब तक नगर न उजड़ जाए, और घरों में मनुष्य न रह जाएं, और देश एकदम जनशून्य न हो जाए।

१२. और प्रभु ने (५) लोगों को वहां से दूर हटा दिया और देश के बहुत से स्थान निर्जन हो गए।

१३. वहां के रहने वालों का चाहे दसवां भाग ही रह जाए, तो भी वह नाश किया जाएगा; परन्तु जैसे नींबू और बलूत के वृक्ष काट डालने पर भी उसके तने का ठूंठ खड़ा रहता है, उसी प्रकार (६) पवित्र वंश उसका ठूंठ ठहरेगा।

अध्याय १७

पीतल की पटियों से शास्त्र क्रम—यशायाह अध्याय ७ से तुलना करो।

१. और ऐसा हुआ कि यहूदा का राजा (१) अहाज़ जो योतम का पुत्र और उज्जियाह का पोता था, उसके दिनों में सीरिया का राजा रसीन और इस्राएल के राजा रमलयाह के पुत्र पेकह ने यरूशलेम से लड़ने के लिए चढ़ाई की, परन्तु उन्हें कोई सफलता न मिल सकी।

२. और ऐसा कहा गया है कि जब दाऊद के घराने को यह समाचार मिला कि सीरिया के लोगों, ने अप्रेमियों के साथ संधि कर ली है, तब उनका और प्रजा का भी मन ऐसा कांप उठा जैसे वन वृक्ष वायु चलने से कांप उठते हैं।

३. तब प्रभु ने यशायाह से कहा : अपने पुत्र शार्याशूब को साथ ले कर, धोबियों की सड़क से होकर आगे पोखरे की नाली के (२) छोर

अध्याय १६. (१) पद्य ५. १ राजा० २२:१९. यूहन्ना १२:४१. (२) भजन० ७२:१९. (३) मत्ति १३:१४, १५. यूहन्ना १२, ४०. (४) मीका ३:१२. (५) २ राजा २५:२२. (६) एज्रा० ९:२. अध्याय १७. (१) २ राजा १६:५. २ इति० २८:५, ६. (२) २ राजा० १८:१७. यशा० ३६:२. ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

पर आहाज़ से भेंट करने के लिए जा।

४. और उससे कहा : सावधान होकर शान्त रह और उन दोनों धुआं निकलती लुआठियों अर्थात् रसीन और सीरियाइयों के क्रोध से और रमलयाह के पुत्र से मत डर, और मन उदास मत कर।

५. क्योंकि सीरियाइयों, रमलयाह के पुत्र और अप्रेमियों ने यह कह कर तेरे विरुद्ध बुरी युक्ति ठानी है कि :

६. आओ हम यहूदा पर चढ़ाई करके उसको घबड़ा दें, और उनमें बलवा करा के ताबेल के पुत्र को राजा बना दें।

७. प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कह रहा है : (३) यह उपाय सफल नहीं होगा न ही यह घटेगा।

८. क्योंकि सीरिया का (४) सिर दमिश्क है और दमिश्क का सिर रसीन है। पैंसठ वर्ष के भीतर एप्रेम की शक्ति इतनी जाती रहेगी कि वह जाति नष्ट हो जाएगी।

९. और एप्रेम का सिर शोमरोन और शोमरोन का सिर रमलयाह का पुत्र है (५) यदि तुम लोग यह विश्वास न करो; तो निश्चय ही तुम भी स्थापित नहीं रह सकते।

१०. प्रभु ने अहाज से फिर कहा :

११. (६) अपने प्रभु परमेश्वर से कोई चिन्ह मांग; चाहे वह गहरे स्थान का हो, या ऊपर आसमान का।

१२. अहाज़ ने कहा : मैं नहीं मागूंगा और प्रभु की परीक्षा नहीं लूंगा।

१३. तब उसने कहा : हे दाऊद के घरानेवालों, सुनो, क्या तुम मनुष्यों को थका देना छोटी बात समझ कर अब मेरे प्रभु को भी थका दोगे?

१४. इसलिए प्रभु स्वयं एक चिन्ह देगा— देखो (७) एक कुमारी गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम (८) इमानुएल रखेगी।

१५. वह मक्खन और मधु खाएगा जिससे कि वह बुरे को त्यागेगा और भले को ग्रहण करेगा।

१६. क्योंकि (९) इससे पहिले कि वह लड़का बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने वह देश जिसके राजाओं से तू (१०) घबरा रहा है निर्जन हो जाएगा।

१७. (११) प्रभु तुझ पर, तेरी प्रजा पर, और तेरे पिता के घराने पर ऐसे दिनों को ले आएगा कि जब से (१२) एप्रेम यहूदा से अलग हो गया, तब से अर्थात् अश्शूर के राजा के दिन जैसा कभी नहीं आए।

१८. उस समय प्रभु उन मक्खियों को जो मिश्र की नदियों के उद्गम में रहती हैं, और उन मधुमक्खियों को जो अश्शूर देश में रहती हैं, सीटी बजाकर बुलाएगा।

१९. और वे सब आकर इस देश की निर्जन घाटियों, चट्टानों की दरारों में, काटों वाले पेड़ पौधों और सब जंगल झाड़ियों पर बैठ जाएंगी।

२०. उसी समय प्रभु नदी के उस पार वाले अश्शूर के राजारूपी भाड़े के (१३) छुरे से सिर और पांवों के रोएं और पूरी दाढ़ी मूंड़ेगा।

२१. उस समय ऐसा होगा कि मनुष्य केवल एक कलोर बछिया और दो भेड़ों को पालेगा;

२२. और तब ऐसा होगा कि वे इतना दूध देंगी कि वह मक्खन खाएगा; क्योंकि जितने लोग इस देश में बचे रहेंगे वे सब मक्खन और मधु खाया करेंगे।

२३. और उन दिनों ऐसा होगा कि जिन-जिन स्थानों में हजार टुकड़े चांदी की हज़ार दाख लताएं हैं, उन सब स्थानों में केवल (१४) कटीले पेड़ पौधे ही होंगे।

२४. वहां लोग तीर और धनुष लेकर जाया करेंगे, क्योंकि पूरा देश कटीले पेड़ों से परिपूर्ण हो जाएगा।

२५. और जितने पहाड़ों को कुल्हाड़ी से खोदा जाता है, उन सभी पहाड़ों पर कटीले पेड़ों के भय

(३) नी० २१:३०. यशा० ८:१०. (४) २ शमू० ८:६. (५) २ इति० २०:२०. (६) न्या० ६:३६-४०. मत्ति० १२:३८, ४०. (७) मत्ति १:२३. लूका १:३१, ३४. देखो ६, अल० ७. (८) यश० ८:८. (९) यशा० ८:४. (१०) २ राजा १५:३०. १६:९. (११) २ इति २८:१९-२१. (१२) १ राजा १२:१६-१९. (१३) २ राजा १६:७, ८. २ इति २८: २०, २१. (१४) देखो ४, २ नफी १५.

से कोई नहीं जाएगा, वे गाय बैलों के चरने और अन्य पालतू पशुओं के पैरों तले रोंदने के लिए होंगे।

अध्याय १८

पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ८ से तुलना करो।

१. फिर प्रभु ने मुझ से कहा : एक बड़ी पटिया लेकर उस मनुष्य के कलम से इन शब्दों को लिख : (१) महेर्शलाल-हाश-बज़। (अर्थात् लूट शीघ्र होती और शीघ्रता से सम्पत्ति छिन जाती है।)

२. और मैंने विश्वासपात्र पुरुषों उरिय्याह याजक और जेबरेव्याह के पुत्र को इस बात की साक्षी के लिए लिया।

३. और मैं भविष्यवाणी करने वाली स्त्री के पास गया, और वह गर्भवती हुई और एक पुत्र को जन्म दिया। तब प्रभु ने मुझसे कहा: उसका नाम महेर्शलाल-हाश-बज़ रख।

४. (२) इससे पहिले कि वह बालक अपने पिता और माता को पुकारना जाने, (३) दमिश्क और शोमरोन दोनों की धन सम्पत्ति को लूट कर अश्शूर का राजा अपने देश भेज देगा।

५. प्रभु ने मुझसे पुनः कहा—

६. जबकि लोग (४) शीलोह के धीरे-धीरे बहने वाले जल की अवहेलना करते, और (५) रिसीन और रमलयाह के पुत्र के संग हो कर आनन्द मनाते हैं,

७. इसलिए, सुनो, प्रभु उन पर महानदी (६) अर्थात् अश्शूर के राजा को उसके सारे प्रताप के साथ चढ़ा लाएगा; और वह उनके सब नालों को भर देगा और वह उफन कर बहेगा;

८. और वह यहूदा पर होकर आगे बढ़ेगा और वह उसके (७) गले तक पहुंच जाएगा, और हे (८) इमानुएल, उसके पंखों के फैलाव तेरे समस्त देश को ढ़क लेगा।

९. हे लोगों अगर तुमने (९) बुरे लोगों का साथ दिया तब तुमको टुकड़ों में तोड़ दिया जाएगा; हे पृथ्वी के दूर दूर देश के लोगों, कान लगाकर सुनो, अपनी अपनी कमर कसो तो कसो, तुम टुकड़े टुकड़े किए जाओगे; अपनी कमर कसो तो कसो, परन्तु तुम्हारा सर्वनाश हो जाएगा।

१०. तुम एक साथ विचार विमर्श करो परन्तु वह निष्फल होगा, तुम कुछ भी कहो, परन्तु तुम्हारा कहा हुआ किसी भी महत्त्व का नहीं होगा क्योंकि परमेश्वर हमारे संग है।

११. क्योंकि प्रभु ने दृढ़ता के साथ मुझसे कहा कि मैं इन लोगों की सी चाल न चलूं।

१२. उसने कहा : जिस बात को ये लोग विद्रोह कहें उस बात को तुम विद्रोह मत कहना, और जिस बात से ये लोग भय खाते हैं उससे तुम भय मत खाना।

१३. सर्वशक्तिमान प्रभु को ही पवित्र जानना; उसी का डर मानना, और उसी से भय खाना।

१४. और वह शरण लेने का स्थान होगा, परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिए (१०) वह ठोकर का पत्थर और ठेस की चट्टान, और यरूशलेम के निवासियों के लिए फन्दा और जाल होगा।

१५. और उनमें से अनेक (११) ठोकर खाकर गिरेंगे और क्षत-विक्षत् होंगे; फन्दे में फसेंगे और पकड़े जाएंगे।

१६. मेरे शिष्यों के बीच साक्षी को बांध दो और नियम का छाप लगा दो।

१७. और मैं उस प्रभु की प्रतीक्षा करूंगा जो अपने (१२) मुख को याकूब के घराने से छिपाये हैं, और मैं उसी को खोजूंगा।

१८. देखो, मैं और जिन लड़कों को प्रभु ने मुझे दिया है, उसी सियोन के पर्वत पर निवास करने वाले प्रभु की ओर से इस्राएल में चिन्ह और चमत्कार होंगे।

१९. जब लोग तुम से कहें कि (१३) ओझाओं

अध्याय १८. (१) पद्य ३. (२) यशा० ७:१६. (३) २ राजा १५:२९, ३०. (४) नहे० ३:१५. यूहन्ना ९:७. (५) यशा० ७:१-६. (६) यशा० १०:१२. (७) यशा० ३०:२८. (८) यशा० ७:१४. (९) योवेल ३:९-१४. (१०) यशा० २८:१६. लूक २:३४. रोमि० ९:३३. १ पत० २:८. (११) मत्ति २१:४४. लूका २०:१८. रोमि० ९:३२. (१२) यशा० ५४:८. (१३) १ साम० २८:८. यशा० १९:३.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

और जादूगरों से जाकर पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं, तब तुम यह कहना कि (१४) क्या लोगों को अपने परमेश्वर ही के पास जा कर न पूछना चाहिए? क्या जीवितों के लिए मुर्दों से पूछना चाहिए?

२०. (१५) व्यवस्था और शास्त्र की चर्चा करो; और अगर लोग इस वचन के अनुसार नहीं बोलते तब समझ लो कि उनके अन्दर ज्ञान का प्रकाश नहीं है।

२१. वे इस देश में कष्ट झेलते और भूखे मारे मारे फिरेंगे; और जब वे भूख से व्याकुल होंगे तब क्रोध में आकर अपने राजा और परमेश्वर को श्राप देंगे, और अपना मुख ऊपर उठाकर आकाश की ओर ताकेंगे।

२२. जब वे पृथ्वी की ओर दृष्टि करेंगे तब उन्हें संकटपूर्ण अन्धकार ही दिखाई देगा; और उनको घोर (१६) अन्धकार में ढकेल दिया जाएगा।

अध्याय १९

पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ९ से तुलना करो।

१. फिर भी (१) संकट भरा अन्धकार वैसा ही नहीं रहेगा जैसा कि वह उस समय के संकट के समय था जब कि उसने (२) जबलून और नप्ताली के देशों का अपमान किया, परन्तु अन्तिम दिनों में ताल की ओर, यरदन के पार की अन्य जातियों के गलील को यश देगा।

२. जो लोग अन्धकार में चल रहे थे उन्होंने एक बहुत बड़ा प्रकाश देखा; और जो लोग घने अन्धकारमय मृत्यु के देश में रहते थे, उन पर उस प्रकाश की ज्योति चमकी।

३. तू ने जाति को बढ़ाया, तू ने उसके आनन्द को बढ़ाया जैसे ढेर सा अनाज काटने के समय कृषक को आनन्द होता है, ठीक उसी तरह का आनन्द उन्होंने प्राप्त किया, और वे ऐसे प्रसन्न हैं जैसे लोग लूट बांटने के समय प्रसन्न रहते हैं।

४. क्योंकि तूने उसकी गर्दन के भारी जूए और उसके गर्दन के बहंगे, और उस पर अत्याचार करने वाले की लाठी को तोड़ दिया है।

५. क्योंकि योद्धाओं के घबरा देने वाले शोर सुनाई देंगे, और उनके रक्त-रंजित कपड़े सब अग्नि के ग्रास हो जाएंगे।

६. क्योंकि (३) हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ है, हमें एक पुत्र दिया गया है; और उसके कन्धे पर (४) शासन की प्रभुता होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला (५) पराक्रमी परमेश्वर, अनन्त पिता और (६) शान्ति का युवराज होगा।

७. उसकी प्रभुता और (७) शान्ति का कभी अन्त नहीं होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सदैव के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्हाले रहेगा। सर्वशक्मिान प्रभु में उत्साह के द्वारा यह होगा।

८. प्रभु ने याकूब के पास एक संदेश भेजा और वह इस्राएल पर प्रकट हुआ है।

९. और सारी प्रजा को, एप्रेमियों और शोमरोन वासियों को मालूम हो जाएगा जो हृदय में कठोरता और गर्व लिए बातें करते हैं।

१०. ईंटें तो गिर गई हैं, परन्तु हम कलापूर्ण पत्थरों से घर बनाएंगे; गूलर के वृक्ष काटे जा चुके हैं, परन्तु हम उनके बदले देवदारों को काम में लाएंगे।

११. इसलिए प्रभु रसीन के शत्रुओं को संगठित करके उसके विरुद्ध खड़ा करेगा।

१२. पहले सीरियाई और पीछे पलिश्तानी मुंह खोलकर इस्राएलियों को निगल लेंगे। (८) इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।

१३. फिर भी ये लोग अपने मारने वाले की ओर नहीं फिरे और न तो सर्वशक्तिमान प्रभु की ही खोज करते हैं।

१४. इसलिए प्रभु इस्राएल में से (९) सिर

(१४) यशा० २९. देखो ३, २ नफी २७. (१५) लूका १६:२९-३१. (१६) यशा० ५:३०. ९:१. अध्याय १९. (१) यशा० ८:२२. (२) मत्ति ४:१५, १६. (३) यशा० ७:१४. लूक० २:११. (४) मत्ति २८:१८. १ इति० १५:२५-२८. (५) तीतु० २:१३. देखो २८, मू० ७. (६) इफि० २:१४-१७. (७) दानि० २:४४. (८) पद्य १७, २१. यशा० ५:२५. १०:४. यिर्म ४:८. (९) पद्य १५.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

और द्रुम को और शाखा को (१०) एक ही दिन में शीघ्रता के साथ काट डालेगा।

१५. (११) वृद्ध और सम्पन्न तो सिर हैं और असत्य बातों को सिखाने वाला नबी दुम है;

१६ क्योंकि जो (१२) इनके मुखिया हैं वे इन्हें पथ भ्रष्ट करते हैं और जिन के वे नेता होते हैं वे नष्ट हो जाते हैं।

१७. इसलिए प्रभु न तो इनके (१३) तरुणों से प्रसन्न होगा और न तो इनके अनाथों और विधवाओं पर दया करेगा; क्योंकि (१४) हर एक ढोंगी और कुकर्मी हैं, और हर एक के मुख से मूर्खतापूर्ण बातें निकलती हैं। (१५) इतना होने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।

१८. क्योंकि दुष्टता (१६) आग की तरह जल रही है, वह गोखरु (कांटेदार झाड़ियां) और कांटों को भस्म करती है, वह घने वन की झाड़ियों में आग लगाती है और वह ऊपर की ओर धुआं की तरह उठती है।

१९. सर्वशक्तिमान प्रभु के क्रोध के कारण यह देश (१७) अन्धकारपूर्ण कर दिया गया है और यहां के लोग अग्नि में ईंधन के समान हैं; (१८) वे एक दूसरे पर दया भी नहीं दिखाते हैं।

२०. (१९) वे दाहिने ओर से भोजन छीन कर भी भूखे रहते, और बायें ओर से भी खाकर तृप्त नहीं होते; उनमें से हर एक मनुष्य अपनी अपनी बांहों का मांस खाता है।

२१. मनश्शै एप्रैम को और एप्रैम मनश्शै को खाता है, और वे दोनों मिलकर यहूदा के विरुद्ध हैं (२०) इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ, और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।

अध्याय २०

पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय १० से तुलना करो।

१. सन्ताप हो उनको जो दुष्टता द्वारा न्याय करते, और उन पर उत्पात करने की आज्ञा देते हैं;

२. कि जिनको न्याय की आवश्यकता हो उन्हें न्याय से वंचित करें, और मेरी प्रजा के दीन लोगों का हक मारें, कि ये विधवाओं को लूटें और अनाथों का माल हथिया लें।

३. तुम (२) उस दण्ड के दिन (३) और उस आपत्ति के दिन जो दूर से आएगी क्या करोगे? तुम सहायता के लिए किसके पास भाग कर जाओगे? और तुम अपना सांसारिक वैभव कहां रखोगे?

४. मेरे बिना वे बन्दियों के नीचे झुकेंगे और मरे हुओं के नीचे दबे पड़े रहेंगे। (४) इतने पर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ और उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है।

५. हे असीरियो, मेरे क्रोध की लाठी और उनके हाथ का सोंटा उन पर मेरा क्रोध है।

६. मैं उसको (५) एक ढोंगी जाति के विरुद्ध भेजूंगा, और जिन लोगों पर मेरा क्रोध हुआ है उनके विरुद्ध उसको आज्ञा दूंगा कि उनकी सम्पत्ति लेले और उन्हें लूट ले, और उनको सड़क के कीचड़ की तरह कुचले।

७. परन्तु उसकी ऐसी मनसा न होगी, न उसके मन में ऐसा विचार है; क्योंकि उसके मन में यही है कि मैं बहुत सी जातियों का नाश और अन्त कर डालूं।

८. क्योंकि वह कहता है, (६) क्या मेरे सब युवराज राजा के समान नहीं हैं?

९. क्या (७) कर्णलो (८) कर्कमीश के समान नहीं है? क्या हमात अर्पद के और शमरोन (९) दमिश्क के समान नहीं?

१०. जिस प्रकार मेरे हाथ ने मूर्तियों से भरे हुए उन राज्यों को गला दिया जिनकी मूर्तियां यरूशलेम और शोमरोन की मूर्तियों से बढ़ कर थीं;

११. जिस प्रकार मैंने शोमरोन और उसकी मूर्तियों से किया, क्या उसी प्रकार मैं यरूशलेम और उसकी मर्तियों से न करूं?

१२. इसलिए प्रभु (१०) सियोन पर्वत पर

(१०) यशा० १०:१७. (११) पद्य १४. (१२) यशा० ३:१२. (१३) भज० १४७:१०, ११. (१४) मीका० ७:२-३. (१५) देखो ८. (१६) यशा० १०:१७. मला० ४:१. (१७) यशा० ८:२२. (१८) मीका० ७:२-६. (१९) लैव्य २६:२६. (२०) देखो ८. अध्याय २०. (१) भजन० ५८:२. ९४:२०. (२) अय्यू० ३१:१४. (३) होशे ९:७. (४) देखो ८, २ नफी १९. (५) यिर्म० ३४:२२. (६) २ राजा १८:२४, ३३-३५. १९:१०, १३. (७) अमो ६:२. (८) २ कुरु ३५:२०. (९) २ राजा १६:९. (१०) २ राजा १९:३१.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

और यरूशलेम में अपना सब काम कर चुकेगा (११) तब मैं अश्शूर के राजा गर्व की बातों का, और उसकी घमण्ड भरी आंखों के लिए उसे दण्ड दूंगा।

१३. क्योंकि वह कहता है: मैंने अपने ही (१२) भुजाओं के बल और समझबूझ से यह काम किया है, क्योंकि मैं चतुर हूं; मैंने अनेक देशों के लोगों को उनकी सीमाओं पर से भगा दिया और उनके धन को लूट लिया है, मैंने एक पराक्रमी की तरह लोगों को नीचे गिराया है;

१४. मेरे हाथ ने लोगों की धन-सम्पत्ति को उसी प्रकार प्राप्त कर लिया है मानो उसने पक्षियों के घोंसलों को ही पा लिया हो, और जैसे कोई छूटे हुए अण्डों को बटोर ले वैसे ही मैंने सारी पृथ्वी को बटोर लिया है: और कोई भी पर मारने या चोंच खोलने व झांकने के लिए न था।

१५. क्या कुल्हाड़ी उसके विरुद्ध जो उससे काटता हो डींग मारे या आरी उसके विरुद्ध जो उसे खींचता हो बड़ाई करे? क्या लाठी अपने चलाने वाले को चलाए या छड़ी उसे उठाए जो काठ नहीं है।

१६. इसलिए प्रभु, सर्वशक्तिमान प्रभु उस राजा के हृष्टपुष्ट योद्धाओं को दुर्बल कर देगा, और उसके ऐश्वर्य के नीचे आग की सी जलन जलाएगा।

१७. इस्राएल की ज्योति तो आग के लिए होगी, और इस्राएल का पवित्र ज्वाला ठहरेगा; और वह उसके कटीले झाड़ियों और कांटों को (१३) एक ही दिन में जला कर राख कर देगा।

१८. और जिस प्रकार एक रोगी के क्षीण हो जाने पर जो दशा होती है वैसे ही वह उसके वन और फल देने वाले वाटिका की शोभा को पूरी तरह नष्ट कर देगा।

१९. उस वन के वृक्ष इतने थोड़े रह जाएंगे कि एक बच्चा भी उनको गिन कर लिख लेगा।

२०. उस समय ऐसा होगा कि इस्राएल के बचे हुए लोग और याकूब के घराने के भागे हुए (१४) अपने मारनेवाले पर फिर कभी भरोसा न रखेंगे, परन्तु इस्राएल के पवित्र प्रभु पर सच्चाई से भरोसा रखेंगे।

२१. (१५) याकूब के बचे हुए लोग सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर लौटेंगे।

२२. क्योंकि हे इस्राएल (१६) तेरे लोग समुद्र के बालू के समान ही क्यों न हों, फिर भी निश्चय है कि (१७) उनमें से जो बचेंगे वे लोग ही लौटेंगे; (१८) सत्यानाश तो पूरे न्यायानुसार ठहराया गया है।

२३. क्योंकि सामर्थ्यवान प्रभु ने सारे देश का न्याय में सत्यानाश करना स्थिर किया है।

२४. इसलिए सर्वशक्तिमान प्रभु इस प्रकार कहता है: हे सियोन में रहने वाले मेरे लोगों (१९) अश्शूर से मत डर, चाहे वह डंडों से तुझे मारे और (२०) मिश्र की तरह तेरे ऊपर छड़ी उठाए।

२५. क्योंकि अब थोड़ी ही देर है कि मेरी (२१) जलन और क्रोध उनका सत्यानाश करके शान्त होगा।

२६. और सर्वशक्तिमान प्रभु (२२) उसको कोड़ा लेकर ऐसा मारेगा जैसा उसने (२३) ओरेब नामक स्थान की चट्टान पर मिद्यानियों को मारा था और जैसा (२४) उसने मिस्रियों के विरुद्ध समुद्र पर लाठी उठाई ठीक उसी तरह उसकी ओर भी उठाएगा।

२७. उस समय ऐसा होगा कि (२५) उसका बोझ तेरे कन्धे पर से और उसका जुआठा तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा, और (२६) अभिषेक के कारण वह जुआठा तोड़ डाला जाएगा।

२८. वह अय्यात में आया और मिग्रोन में से होकर आगे बढ़ गया है; मिकमास में उसने अपने रथों को रोक कर पड़ाव डाला है।

२९. वे (२७) घाटी से पार निकल गए, उन्होंने गेबा में रात काटी, रामा कांप उठा, (२८) शाऊल का गिबा भाग निकला है।

(११) यिर्म ५०:१८. (१२) यशा० ३७:२४-३८. (१३) यशा० ९:१८, १९. ३७:३६. (१४) २ राजा १६:७-९. इति० २८:२०, २१. (१५) यशा० ११:११. योए० २:३२. (१६) रोमि० ९:२७. (१७) यशा० ६:१३. (१८) यशा० २८:२२. (१९) यशा० ३७:६, ७. (२०) निर्ग० १४. (२१) दानि० ११:३६. (२२) २ राजा १९:३५. (२३) न्याय० ७:२५. यशा० ९:४. (२४) निर्ग० १४:२६, २७. (२५) यशा० १४:२५. (२६) भज० १०५:१५. (२७) १ सामु० १३:२३. (२८) १ सामु० ११:४.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

३०. हे (२९) गल्लीम की बेटी जोर से पुकार, और लैशा के लोगों को सुना। हाय बेचारा (३०) अनातोत।

३१. (३१) मदमेनाह ठोकरें खाता है; गेबीम के निवासी भागने के लिए अपना-अपना सामान इकट्ठा कर रहे हैं।

३२. आज ही वह (३२) नोब में ठहरेगा; तब वह सियोन की बेटी को पहाड़ पर, और यरूशलेम की पहाड़ी पर (३३) हाथ उठा कर धमकाएगा।

३३. देखो, सर्वशक्तिमान प्रभु पेड़ों को भयंकर ढंग से छांट डालेगा; ऊंचे ऊंचे वृक्ष काटे जाएंगे, और जो ऊंचे हैं सो नीचे किए जाएंगे।

३४. वह घने वन को लोहे से काट डालेगा, और लबानोन एक प्रतापी के हाथ से नष्ट किया जाएगा।

अध्याय २१

पीतल की पटियों से धर्मशास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ११ से तुलना करो।

१. तब (१) इशै के तने में एक डाली निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकलेगी।

२. (२) और प्रभु की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, ज्ञान और प्रभु के भय की आत्मा उस पर ठहरेगी।

३. और प्रभु का भय उसे शीघ्र ही उचित अनुचित समझने के योग्य कर देगा; और वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुने के अनुसार निर्णय करेगा।

४. वह कंगालों का न्याय (३) धर्मानुसार और जगत के दीन लोगो का उचित निर्णय करेगा; और वह (४) पृथ्वी को अपने शब्दों की लाठी से मारेगा, और अपने मुख की फूंक से पापियों को नष्ट कर देगा।

५. धर्म उसका कमरबन्द होगा और सत्य-निष्ठा उसकी बागडोर।

६. (६) तब भेड़िया मेमने के संग रहेगा, और चीता बच्चे के संग लेटेगा, और बछड़ा शेर का बच्चा और पालतू बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा।

७. गाय और भालू एक साथ चरेंगे, और उनके बच्चे एक साथ बैठेंगे; और सिंह, बैल की तरह भूसा खाएगा।

८. दूध पीता बच्चा विषधर नाग के बिल पर खेलेगा, और जिस बालक का दूध पीना छुड़ा दिया गया हो, वह नाग के बिल में हाथ डालेगा।

९. मेरे (७) सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि (८) पृथ्वी प्रभु के ज्ञान से ऐसे भर जाएगी, जैसे जल समुद्र में भरा रहता है।

१०. उस समय (९) इशै की जड़ लोगों के लिए (१०) एक झण्डा होगी; (११) यहूदियों से भिन्न लोग उसे खोजेंगे, और उसका विश्राम-स्थान विख्यात होगा।

११. उस समय ऐसा होगा कि प्रभु अपना हाथ (१२) दूसरी बार बढ़ा कर अपने बचे हुए लोगों को (१३) अश्शूर, मिश्र, पत्रोस, कुश, एलाम, शिनार, हमात और समुद्र के द्वीपों से बचा लेगा।

१२. वह (१४) अन्य जातियों के लिए झण्डा खड़ा करेगा और (१५) इस्राएल के सब निकाले हुओं को और (१६) यहूदा के सब बिखरे हुए लोगों को पृथ्वी की चारों दिशाओं से इकट्ठा करेगा।

१३. (१७) एप्रैम फिर द्वेष न करेगा और यहूदा को कष्ट देने वालों को काट डाला जाएगा;

(२९) १ सामु० २५:४४. (३०) न्या० १८:७. (३१) यहो० २१:१८. (३२) यहो० १५:३१. (३३) १ सामु० २१:१. २२:१९. यिर्म० ११:३२. (३४) यशा० १३:२. (३५) अमो० २:९. अध्याय २१. (१) पद्य १० यशा० ५३:२. यिर्म २३:५, ६. प्रे० १३:२३. प्रका० ५:५. (२) यशा० ६१:१-३. (३) भज० ७२:२, ४. प्रका० १९:११. (४) अय्युब ४:९. मला० ४:६. २ थिस्स० २:८ प्रका० १:१६. २:१६. १९:१५. (५) इफि० ६:१४. (६) यशा० ६५:२५. यहे० ३४:२५. होशे० २:१८. (७) अय्युब ५:२३. यशा० २:४. ३५:९. (८) हब० २:१४. (९) पद्य १ रोमि० १५:१२. (१०) पद्य १२. देखो १६, २ नफी १५. (११) सि० शर्त० ४५:९, १०. (१२) देखो ६, २ नफी ६. (१३) जक० १०:१०. (१४) देखो १६, २ नफी १५. (१५) देखो १६, ३ नफी १५. (१६) देखो ५, १ नफी १५. (१७) यिर्म० ३:१८.

न तो एप्रेम यहूदा से डाह करेगा और न यहूदा एप्रेम को तंग करेगा।

१४. परन्तु वे पश्चिम की ओर पलिश्तियों के कन्धों पर झपटेंगे, और पूरब की ओर मिल कर उन्हें पराजित कर लूट लेंगे; वे एदोम और मोआब के ऊपर हाथ धर कर पकड़ लेंगे, और अम्मोनी उनके अधीन हो जाएंगे।

१५. और प्रभु (१८) मिश्र के समुद्र की जीभ को सुखा डालेगा, और महानदी पर अपना हाथ बढ़ा कर प्रचण्ड वायु की गति से उसे ऐसा हिलाएगा कि वह सात धारा होकर सूख जाएगी (१९) और लोग जूते पहिने हुए भी पार हो जाएंगे।

१६. और (२०) उसके बचे हुए लोगों के लिए अश्शूर से एक ऐसा राज-मार्ग बनेगा जैसा (२१) मिश्र देश से आने के समय इस्राएल के लिए बना था।

अध्याय २२

पीतल की पटियों से धर्मशास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय १२ से तुलना करो।

१. (१) उस दिन तुम यह कहोगे: हे प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रोधित हुआ था, परन्तु अब तेरा क्रोध शान्त हो गया है और तू मुझे शान्ति दे रहा है।

२. परमेश्वर मेरा उद्धारक है; मैं उस पर विश्वास करता हूं, और उससे डरता नहीं हूं; क्योंकि (२) प्रभु मेरा (३) बल और मेरा भजन है, और वह मेरा मोक्ष हो गया है।

३. इसलिए तुम (४) आनन्दपूर्वक मुक्ति के कुओं से जल भरोगे।

४. और उस दिन तुम कहोगे, (५) प्रभु की स्तुति करो, उससे प्रार्थना करो: सभी लोगों में उसके कामों का प्रचार करो, और कहो कि उसका नाम महान है।

५. प्रभु का यश-गान करो, क्योंकि (६) उसने बहुत ही अच्छे अच्छे काम किए हैं जो सारे विश्व के लोगों को मालूम हैं।

६. हे सियोन में बसने वालो, (७) तुम आनन्द में मग्न होकर ऊंचे स्वर में गा कर प्रभु का जय-जयकार करो, क्योंकि तुम्हारे मध्य में इस्राएल का पवित्र प्रभु महान है।

अध्याय २३

पीतल की पटियों से धर्मशास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय १३ से तुलना करो।

१. बाबुल का भार जिसे आमोस का पुत्र यशायाह ने भविष्य दर्शन में देखा।

२. (१) ऊंचे पर्वत पर एक झण्डा खड़ा करो, और ऊंचे स्वर से पुकारो और (२) हाथ से इशारा करो जिससे कि वे सामन्तों के फाटकों में प्रवेश करें।

३. मैंने स्वयं (३) अपने पवित्र किए हुओं को आज्ञा दी है, मैंने अपने वीरों को भी बुलाया है क्योंकि मेरा क्रोध उन पर नहीं है, जो मेरे प्रताप के कारण आनन्द मनाते हैं।

४. पहाड़ों पर एक बड़ी भीड़ का सा कोलाहल हो रहा है, मानो एक बहुत बड़ी सेना का हलचल हो। (४) देश-देश के राज्यों के लोग इकट्ठे होकर हंगामा और शोरगुल मचा रहे हैं। सर्वशक्तिमान प्रभु युद्ध के लिए अपनी सेना इकट्ठी कर रहा है।

५. वे दूर देश से, आकाश के एक किनारे से आए हैं, हां, (५) प्रभु अपने क्रोध के हथियारों से सारे देश को नाश करने के लिए आया है।

६. रोना चिल्लाना मचाओ, क्योंकि प्रभु का (६) दिन निकट है; उस सर्वशक्तिमान की ओर से यह सर्वनाश के रूप में आता है।

७. इस कारण सब के हाथ कमज़ोर हो जाएंगे, और हर एक मनुष्य का हृदय पिघल जाएगा।

(१८) जक० १०:११. (१९) प्र० १६:१२. (२०) सि० शर्त० १३:३:२७. जक० १०:११. यशा० ३५:८-१०. (२१) निर्ग० १४:२९. यशा० ५१:१०:६३:१२, १३. अध्याय २२. (१) यशा० २:११. (२) भज० ८३:१८. (३) निर्ग० १५:२. भज० ११८:१४. (४) यूह० ४:१०, १४. ७:३७. ३८. (५) १ इति० १६:८. भज० १०५:१-५. १४५:४-६. (६) भज० ६८:३२-३५. (७) यशा० ५४:१. सफ० ३:१४-२० जक० २:१०-१३. अध्याय २३. (१) देखो १६, २ नफी १५. (२) यशा० १०:३२. (३) यो० ३:११. (४) यो० ३:१४. सप० ३:८. जक० १२:२-९. १४:२, ३. (५) यो० ३:११. सप० ३:८. जक० १२:४, ८, ९. १४:३, ५, ९. (६) पद्य ९. सप० १:१४-१८. जक० १४:१, ५.

८. और वे डर जाएंगे; और उनको कष्ट और शोक होगा; वे विस्मित होकर एक दूसरे को देखेंगे; उनके मुख अग्नि की लपट के समान हो उठेंगे।

९. देखो, प्रभु का वह दिन रोष और क्रोध और निर्दयता के साथ आता है जबकि वह पृथ्वी को उजाड़ डालेगा और पापियों को नाश कर देगा।

१०. (७) क्योंकि आकाश के तारागण और बड़े-बड़े नक्षत्र अपना प्रकाश न देंगे, और सूर्य के अपने पथ पर आगे बढ़ते बढ़ते ही अन्धकार छा जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा।

११. (८) मैं जगत के लोगों को उनके पापों के कारण, और दुष्टों को उनके अधर्म के कारण दण्ड दूंगा; मैं अभिमानियों के अभिमान का नाश करूंगा, और उपद्रव करने वालों के धमण्ड को चूर कर दूंगा।

१२. मैं (९) मनुष्यों को सोने से, भी अधिक मूल्यवान करूंगा; ओपीर के सुनहरी कील से भी अधिक।

१३ इसलिए मैं (१०) आकाश को थरथरा दूंगा, और पृथ्वी अपने स्थान से हट जाएगी, यह सर्वशक्तिमान प्रभु के रोष के कारण और उसके अत्यन्त ही क्रोध के दिन होगा।

१४. और वे खदेड़े हुए हिरण या बिना चरवाहे की भेड़ों की तरह (११) अपने-अपने लोगों की ओर लौटेंगे, और अपने-अपने देशों को भाग जाएंगे।

१५. हर एक अहंकार वाले भालों से बेंधे जाएंगे; हां, दुष्टों का साथ देने वाले तलवार से मारे जाएंगे।

१६. उनके बच्चों को उनकी आंखों के सामने (१२) पटक कर टुकड़े टुकड़े कर दिया जायेगा; और उनके घर लूटे जाएंगे, और उनकी स्त्रियां भ्रष्ट की जाएंगी।

१७. देखो, मैं (१३) उनके विरुद्ध मादी लोगों को भड़काऊंगा जो न तो चांदी को कुछ महत्त्व देंगे और न सोने का ही लालच करेंगे।

१८. वे अपने धनुष-वाणों से युवकों को मारेंगे, और बच्चों पर कोई दया नहीं दिखाएंगे; और न तो वे लड़कों पर ही तरस खाएंगे।

१९. और (१४) बाबुल जो सब राज्यों का शिरोमणि है, और जो कसदी लोगों की शोभा और विशिष्ट स्थान है, वह ऐसा हो जाएगा जैसे (१५) सदोम और अमोरा की दशा उनके पलटे जाने के समय में हुई थी।

२०. (१६) वह फिर कभी न बसेगा और युग युग में कोई निवास नहीं करेगा; अरबी लोग भी उसमें डेरा नहीं डालेंगे, और न चरवाहे उसमें अपने पशुओं को ले जाएंगे।

२१. (१७) वहां हिंसक पशु बैठेंगे, और उल्लू, जीव जन्तु उनके घरों में भरे रहेंगे; और वनमानुष वहां नृत्य करेंगे।

२२. वहां द्वीपों के भांति भांति के जंगली पशु अपनी मांदों में से शोर मचाएंगे और अपने सुख-विलास के स्थान से पंख वाले नाग बोलेंगे, (१८) उसके नष्ट होने का समय निकट आ गया है। और उसके दिन अब बहुत नहीं रह गए हैं, क्योंकि मैं उसको शीघ्रता के साथ नाश कर दूंगा; क्योंकि मैं अपने लोगों के प्रति दयालु रहूंगा, लेकिन पापी नष्ट हो जाएंगे।

अध्याय २४

पीतल की पटियों से धर्मशास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय १४ से तुलना करो।

१. प्रभु (१) याकूब पर पुनः दया करेगा, और इस्राएल को फिर अपना कर उन्हें उन्हीं के देश में बसाएगा, और (२) परदेशी लोग उनसे मिल जाएंगे और अपने को याकूब के घराने में मिला लेंगे।

२. और जाति जाति के लोग उनको उन्हीं के स्थान में पहुंचाएंगे; हां, जगत के दूर देशों से भी उन्हें लाएंगे; और वे वचन द्वारा दिए गए देशों

(७) यशा० २४:२३. यहे० ३२:७-८. यो० २:३१. ३:१५. मत्ति २४:२९. मर० १३:२४. लूका० २१:२५ प्रका० ६:१२. (८) यशा० २:१७. २४:६. मला० ४:१. (९) यशा० ४:१-४. (१०) यशा० २४:१७-२०. हाग्गे २:६, ७. इब्रा० १२:२६. देखो ३, ३ नफी २६. (११) यिर्म० ५०:१६. ५१:९. (१२) भज० १३७:८, ९. नहे० ३:१०. (१३) यशा० २१:२. (१४) यशा० १४:४-२७. (१५) उत्प० १९:२४, २५. व्य० २९:२३. यिर्म० ४९:१८. ५०:४०. (१६) यिर्म० ५०:३, ३९. ५१:२९, ६२. (१७) यशा० ३४:११-१५. प्रका० १८:२. (१८) यिर्म० ५१:३३. अध्याय २४. (१) जक० १:१७. २:१२. (२) यशा० ६०:४, ५, १०.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

में वापस लौटेंगे। और इस्राएल का घराना प्रभु की भूमि पर, अधिकारी होकर, (३) दास और दासियां बनाएगा; क्योंकि जिन लोगों ने उनको दास बनाया था, वे उनको अपना दास बनाएंगे और जिन्होंने उन पर अत्याचार किया था, उन पर वे शासन करेंगे।

३. और उस दिन ऐसा होगा कि प्रभु तुझे तेरे संताप और घबराहट से और उस कठिन परिश्रम से जो तुझ से लिया गया है उसके बन्धन से तुझे मुक्त करेगा।

४. और उस दिन ऐसा होगा कि तू बाबुल के राजा पर (४) ताना मार कर यह कहेगा कि दूसरों को कष्ट देने वाले का कैसा नाश हो गया है, सोने की नगरी भी नष्ट हो गई है।

५. प्रभु ने दुष्टों के (५) सोंटे को और अन्याय से शासन करने वालों की लाठी को तोड़ दिया है।

६. जो क्रोध में लगातार मनुष्यों को मारते थे, जो देश देश पर क्रोध से शासन करते थे, उसे दण्ड दिया गया है जिसमें कोई भी बाधा नहीं डाल सकता।

७. अब सारी पृथ्वी को आराम मिला है, वह सुख से है; लोग आनन्द से गाने लगे हैं।

८. हां, लबानोन के (६) देवदार के वृक्ष तुझ पर आनन्द मनाते हुए कहते हैं: जब से तू गिराया गया तब से कोई हमें काटने के लिए नहीं आया।

९. (७) पाताल के तले अधोलोक में तुझसे मिलने के लिए हलचल हो रही है; वह तेरे लिए मुर्दों को अर्थात् पृथ्वी के सब नेताओं को जगाता है और देश देश के सब राजाओं को उनके सिंहासन पर से उठा कर खड़ा करता है।

१०. वे सब तुमसे कहेंगे, क्या तू भी हमारी ही तरह निर्बल हो गया है? क्या तू भी हमारी ही तरह हो गया है?

११. तेरे वैभव का अन्त कर दिया गया है और तेरी सारंगियों के स्वर सुनाई नहीं देते; कीड़े तेरा बिछौना हैं और कीड़े तेरा ओढ़ना हैं।

१२. (८) हे सुबह के चमकने वाले तारे, तू कैसे आकाश से गिर पड़ा? क्या तुझे काट कर धरती पर गिरा दिया गया है, जिससे जातियां निर्बल हो गई हैं?

१३. तू मन में कहता तो था कि मैं स्वर्ग पर चढ़ूंगा; मैं अपने सिंहासन को ईश्वर के तारागण से अधिक ऊंचा करूंगा; और (९) उत्तर दिशा की छोर पर सभा के पर्वत पर विराजमान होऊंगा।

१४. मैं बादलों से भी अधिक ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, (१०) जो सब से प्रधान हैं, मैं उसी के समान हो जाऊंगा।

१५. परन्तु तू (११) अधोलोक के गड्ढ़े की तह में ढकेला जाएगा।

१६. जो तुझे देखेंगे वे तुझे घृणा की दृष्टि से देखते हुए कहेंगे कि क्या यह वही पुरुष है जो पृथ्वी को चैन से रहने नहीं देता था और जो सब राष्ट्रों को घबराहट में डाल दिया करता था?

१७. जो जगत को जंगल बनाता, और उसके नगरों को उजाड़ देता और अपने बन्दियों को मुक्त नहीं करता था?

१८. देश देश के राजा अपने अपने महलों में अपने वैभव के साथ पड़े हैं।

१९. परन्तु तू घृणित शाख की तरह अपनी कब्र में से फेंक दिया गया, और जो मृत्यु से बचे, वे तलवार से बिंध कर गड्ढे में पत्थरों के बीच में पैरों से कुचली लोथ के समान पड़े हैं।

२०. तू उनके साथ कब्र में गाड़ा न जाएगा, क्योंकि तूने अपने देश को उजाड़ दिया, और अपनी प्रजा का घात किया है। (१२) कुकर्म करने वालों के वंश का नाम भी कोई नहीं लेगा।

२१. उनके पूर्वजों के पापों के (१३) कारण उनके पुत्रों को मारने की तैयारी करो कहीं ऐसा न हो कि वे फिर उठ कर पृथ्वी के अधिकारी बन जाएं, और जगत में बहुत से नगर बसा लें।

२२. सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है कि मैं उनके विरुद्ध उठूंगा, बाबुल (१४) का नाम, बचे

(३) यशा० ६०:१०-१२, १४. ६१:५. (४) यशा० १३:१९. हब० २:६-८. प्रका० १८:१५-१७. (५) भज० १२५:३. (६) यशा० ५५:१२, १३. यहे० ३१:१६. (७) यहेज० ३२:२१. (८) सि० शर्त० ७६:२६. (९) भज० ४८:२. (१०) यशा० ४७:८. २ थिस्स० २:४. (११) पद्य ९. (१२) अय्यूब० १८:१६, २१. भज० २१:१०. ३७:२८. १०९:१३. (१३) निर्ग० २०:५. मत्ति २३:३५. (१४) निति १०:७. यिर्म० ५१:६२.

हुए लोगों, (१५) उनके बेटों और भतीजों को मिटा दूंगा।

२३. सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि (१६) मैं उसको सारस का निवास और जल की झीलें बना दूंगा, और मैं उसको सर्वनाश की झाड़ू से झाड़ डालूंगा।

२४. सर्वशक्तिमान प्रभु ने यह स्थिर किया है और कहा है कि जैसा मैंने निश्चय किया है वैसा अवश्य ही होगा।

२५. कि मैं अश्शूर को अपने देश में लाऊंगा, और अपने पर्वतों पर उन्हें पैरों तले कुचल डालूंगा (१७) तब, उसका जुआठा उनकी गर्दनों पर से और उसका बोझ उनके कन्धों पर से उतर जाएगा।

२६. यही वह (१८) उद्देश्य है जो सारी पृथ्वी के लिए निश्चित किया गया है और यह वही हाथ है जो सभी जातियों पर बढ़ा हुआ है।

२७. क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु ने जो उद्देश्य निश्चित किया है, उसे कौन टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ा है, और उसे कौन पीछे कर सकता है?

२८. जिस वर्ष में (१९) आहाज़ राजा की मृत्यु हुई थी उसी वर्ष यह महत्वपूर्ण भविष्यवाणी हुई।

२९. हे सारे पलिश्तीन, तू (२०) इसलिए आनन्द न मना कि तुझे मारने वाले की लाठी टूट गई, क्योंकि सर्प की जड़ से एक भयंकर नाग उत्पन्न होगा, और (२१) उसका फल एक उड़ने वाला और तीव्र विषवाला अग्निसर्प होगा।

३०. तब कंगालों के प्रथम-जन्में खाएंगे और दरिद्र निडर होकर पाएंगे : और मैं तुम्हारे वंश को अकाल से मार डालूंगा और तुम्हारे वंश के बचे हुए लोगों को वह मार डालेगा।

३१. हे फाटक तू चिल्ला, हे नगर तू रुदन मचा, हे पलिश्तीन तू सबका सब पिघल जा; क्योंकि उत्तर से एक धुआं उठेगा और उसके निर्धारित समय में कोई भी अकेला न रहेगा।

३२. तब देश देश के दूतों को क्या उत्तर दिया जाएगा? यही कि (२३) प्रभु ने सियोन की नींव डाल दी है और उसकी प्रजा के दीन लोग उसमें शरण लेंगे।

अध्याय २५

नफी की व्याख्या—इस्राएल के वंश के तितर बितर होने और पीछे उनके एकत्रित होने की भविष्यवाणी—ईसा के जन्म का समय निर्दिष्ट।

१. अब मैं, नफी, जिन बातों को लिख चुका हूं और जो यशायाह के मुख से निकली थी, उन पर बोलूंगा। यह इसलिए कि यशायाह ने बहुत सी बातें कहीं जिसे (१) मेरे बहुत से लोगों के लिए समझना कठिन है; क्योंकि उन्हें नहीं मालूम है कि यहूदियों में किस रीति से भविष्यवाणी की जाती थी।

२. क्योंकि मैं, नफी ने, उन्हें यहूदियों की बहुत सी रीतियों को नहीं सिखाया; क्योंकि उनके काम अज्ञानता के काम थे और उनके कर्म घृणित थे।

३. इसलिए मैं यह अपने उन लोगों के लिए लिख रहा हूं जिनके हाथों में यह पड़ेगा जिससे उन्हें परमेश्वर के न्याय के विषय में ज्ञान प्राप्त हो, और उसकी वाणी के अनुसार उसका न्याय सभी जाति के लोगों के ऊपर आएगा।

४. इसलिए, हे मेरे लोगो, तुम जो इस्राएल के वंश के हो, मेरी बातों पर ध्यान दो; क्योंकि यशायाह की वाणी तुम्हारी समझ में नहीं आती है, परन्तु वे लोग उसे समझते हैं जो भविष्यवाणी की भावना से भरे होते हैं। लेकिन मैं तुम्हें एक भविष्यवाणी देता हूं जो उस आत्मा के बताए अनुसार है जो कि मेरे अन्दर व्याप्त है; इसलिए मैं सरलता और उस स्पष्टता के साथ भविष्यवाणी दूंगा जो (२) स्पष्टवादिता उस समय से मुझमें है जबकि मैं अपने पिता के साथ यरूशलेम से निकल कर आया था; क्योंकि देखो, स्पष्ट बोलने से मेरी आत्मा आनन्दित होती है, क्योंकि इससे मेरे लोग सीख सकते हैं।

५. हां, यशायाह की वाणी से मेरी आत्मा

(१५) अय्यू० १८:१९. (१६) यशा० ३४:११-१५. (१७) यशा० १०:२७. (१८) यशा० १३:४, १३. (१९) २ राजा १६:२०. (२०) २ कुरि० २६:६. (२१) २ राजा १८:८. (२३) भज० ८७:१, ५. १०२:१६. सप० ३:१२. जक० ११:११.
अध्याय २५. (१) याकूब ४:१४. (२) पद्य ७, ८. याकू० ४:१३.

आनन्दित होती है, क्योंकि मैं यरूशलेम से निकल कर आया हूं और मेरी आंखों ने यहूदियों की रीतियां देखी हैं, और मैं जानता हूं कि यहूदी भविष्यवक्ताओं की बातें समझते हैं और उनकी तरह उनसे कही गई बातों को समझने वाले दूसरे कोई नहीं हैं, सिवाय उन लोगों के जिन्होंने यहूदियों की तरह शिक्षा प्राप्त की हो।

६. लेकिन देखो, मैं, नफी ने, अपने बच्चों को यहूदियों की रीति के अनुसार शिक्षा नहीं दी है; लेकिन मैं स्वयं यरूशलेम में रह चुका हूं, इसलिए वहां के आसपास की परिस्थितियों से मैं परिचित हूं; और मैंने परमेश्वर के उस न्याय की चर्चा अपने बच्चों से की है जो यहूदियों में लाया गया था और जो मेरे वंशवालों में लाया जाएगा और जो यशायाह के कहने के अनुसार सब कुछ होगा जिसे मैं लिख नहीं रहा हूं।

७. लेकिन देखो, अब मैं अपनी भविष्यवाणी सरल रूप में देने जा रहा हूं; और मुझे विश्वास है कि इसे समझने में कोई भी भूल नहीं कर सकता; फिर भी जब यशायाह की भविष्यवाणी पूर्ण होने का समय आएगा, तब लोग निश्चय ही वह समय जान लेंगे।

८. इसलिए वे पूरी मानवता के लिए महत्व की होंगी परन्तु जो इसे सारहीन समझेंगे, उनसे मैं विशेष रूप से बात करूंगा, और अपने शब्दों को अपने ही लोगों तक सीमित रखूंगा; क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरी वाणी उनके लिए अन्तिम दिनों में विशेष महत्व की होंगी; क्योंकि अन्तिम दिनों में वे उसे अच्छी तरह समझ सकेंगे; इसलिए उन्हीं की भलाई के लिए मैंने यह लिखा है।

९. जिस प्रकार यहूदियों की एक पीढ़ी अपने पापों के कारण नष्ट हो गई, उसी प्रकार वे अपने पापों के कारण पीढ़ी पर पीढ़ी नष्ट हो गए परन्तु; वे कभी भी प्रभु के भविष्यवक्ताओं के द्वारा पहले से आगाह किए बिना नष्ट नहीं किए गए।

१०. इसलिए जैसे ही मेरे पिता यरूशलेम से निकल आये, वैसे ही उनके नष्ट होने की बात उन्हें बता दी गई थी; फिर भी उन्होंने अपने हृदयों को कठोर बना लिया; और मेरी भविष्यवाणी के अनुसार, जो दास बना कर बेबुलोन (३) ले जाए गए, उन्हें छोड़ कर, दूसरे सभी नष्ट कर दिए गए।

११. और जो आत्मा मेरे अन्दर है, उससे प्रेरित होकर मैं यह बोल रहा हूं। और जो दास बना कर ले जाए गए हैं वे यरूशलेम वापस लौट कर आएंगे और वे उस देश के फिर से अधिकारी होंगे; इसलिए उनको पैतृक देश में पुनः स्थापित किया जाएगा।

१२. लेकिन देखो, उन्हें युद्ध का सामना करना पड़ेगा, और युद्ध के आतंक से भयभीत होना पड़ेगा; और जब वह दिन आएगा जब कि पिता का इकलौता पुत्र, हां, जो कि स्वर्ग और पृथ्वी का पिता है, वह मानव शरीर में उनके बीच प्रकट होगा, तब देखो, वे उसे अपने पापों, हृदय की कठोरता और अहंकार के कारण अस्वीकार कर देंगे।

१३. सुनो, वे उसे क्रूस पर चढ़ा देंगे, और कब्र में दफना देने के तीन दिनों के पश्चात् वह पुनः अपने पैरों पर जीवन लेकर जीवित हो उठेगा; और जो लोग उसके नाम पर विश्वास लायेंगे उन्हें परमेश्वर के राज्य में बचा लिया जाएगा। इसलिए उसके विषय में भविष्यवाणी करने से मेरी आत्मा को आनन्द प्राप्त होता है, क्योंकि मैंने उसका (४) दिन देखा और मेरा हृदय उसके नाम का अतिशय यशगान करता है।

१४. और देखो, ऐसा होगा कि मसीह के मृत हो जाने के पश्चात्, जितने लोग उस पर विश्वास करेंगे उनमें वह प्रकट होगा और तब यरूशलेम पुनः नष्ट कर दिया जाएगा क्योंकि अभिशाप पड़े उन पर, जो परमेश्वर और उसके धर्म के विरुद्ध लड़ते हैं।

१५. इसलिए यहूदी सभी देशों में (५) तितर बितर हो जाएंगे; उन्हें अन्य जातियां भी बिखराएंगी; और हां, बाबुलोन को भी नष्ट कर दिया जाएगा।

१६. और उनके तितर बितर होने के पश्चात् प्रभु परमेश्वर उनकी कई पीढ़ियों को अन्य जातियों

(३) १ नफी १:१३. १०:३. देखो ७, १ नफी ७. (४) १ नफी ११:१३-३४. (५) १ नफी १०:१२. १९:१३, १४. २२:५. २ नफी १०:६.

के द्वारा तब तक यातनाएं दिलाएगा जब तक कि उनको परमेश्वर के (६) पुत्र यीशु में और सभी (७) मानव समाज के लिए आवश्यक प्रायश्चित में विश्वास न हो जाएगा—और जब उनके मसीह में विश्वास करने, का दिन आयेगा तब शुद्ध हृदय और शुद्ध हाथों से परमेश्वर पिता की प्रार्थना करेंगे, और अगर वे किसी अन्य मसीह की प्रतिक्षा नहीं करेंगे तब वह दिन शीघ्र आएगा जबकि वे इन सब बातों पर विश्वास करेंगे।

१७. और प्रभु अपनी प्रजा को पतन की स्थिति से निकाल कर, उनको पुनर्स्थापित करने के लिए (८) अपने हाथ को फिर से बढ़ाएगा। इसलिए वह मानव समाज में (९) आश्चर्यजनक काम करेगा जो कि लोगों के लिए विस्मयकारी होगा।

१८. इसलिए वह (१०) उनके मध्य में अपनी वाणी को लाएगा जिसके द्वारा अन्तिम दिनों में वह उनका न्याय करेगा, क्योंकि वह उनको इसलिए दिया जाएगा कि जिस से (११) वे उस सच्चे मुक्तिदाता पर विश्वास कर सकें जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था और साथ ही वह उन्हें इस बात पर भी विश्वास कराएगा कि उन्हें किसी दूसरे मुक्तिदाता के आने की प्रतिक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कोई अन्य मसीह नहीं आएगा और जो आगे आएंगे वे छल से लोगों को केवल ठगने के लिए आएंगे; क्योंकि भविष्यवक्ताओं के द्वारा केवल एक ही मुक्तिदाता की बातें कही गई हैं, और यह मुक्तिदाता वह होगा जो यहूदियों के द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा।

१९. भविष्यवक्ता के कहे अनुसार मेरे पिता के यरूशलेम से निकल आने के (१२) छः सौ वर्ष पश्चात् मुक्तिदाता आएगा; और भविष्यवक्ता की वाणी के अनुसार और परमेश्वर के दूत के अनुसार उसका नाम यीशु मसीह होगा, जो परमेश्वर का पुत्र है।

२०. हे मेरे भाइयों मैंने (१३) स्पष्ट बातें कहीं, जिससे कि तुम समझने में भूल न करो। जबकि मिस्र से इस्राएलियों को बाहर निकाल लाने वाला प्रभु मौजूद है जिसने मूसा को वह शक्ति दी जिसके द्वारा वह अपनी जाति वालों को विषधर सर्प से डसे जाने के बाद ठीक कर सका और वे उस सर्प की ओर आंख उठा कर देख सके जिसे वह उनके सामने लाया था, और जिसने उसे यह शक्ति दी कि वह चट्टान पर प्रहार करे और उसमें से जल निकल आये; हां सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि यह सब बातें जबकि सत्य हैं, और जबकि परमेश्वर है, तब आकाश के नीचे यीशु मसीह के नाम के अलावा दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसकी चर्चा मैंने की है और जिसकी शरण में—मनुष्य बच सकता है।

२१. इसलिए प्रभु परमेश्वर ने मुझे यह वचन दिया है कि मैं जिन बातों को लिख रहा हूं वह सुरक्षित रखी जाएगी और यह मेरे वंश वालों को पीढ़ी पर पीढ़ी दी जाएंगी जिससे कि यूसुफ को दिया गया यह वचन पूरा हो कि जब तक पृथ्वी रहेगी, तब तक उसका वंश नष्ट न होगा।

२२. इसलिए जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक यह बातें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचा करेंगी; और यह सब प्रभु इच्छा के अनुसार ही होगा; और जिन जातियों के पास यह बातें होंगी उनका (१४) न्याय इन लिखित शब्दों के अनुसार ही किया जाएगा।

२३. हम परिश्रम करके इसलिए लिख रहे हैं जिससे कि हम अपनी सन्तानों और भाइयों को मसीह में विश्वास करा सकें, और परमेश्वर के

(६) १ नफी १०:१४. १९:१५-१७. २ नफी ६:११, १४. १०:७-९. २५:१८. २६:१२. ३०:७. ३ नफी ५:२६. २०:३०-३३. मार० ३:२१. ५:१४. (७) देखो ६, २ नफी २. (८) २ नफी ६:१४. २१:११. २९:१. याकू० ६:२. (९) १ नफी १४:७. १ नफी २२:८. २ नफी २७:२६. २९:१. ३ नफी २१:९. २८:३१-३३. मार० ८:३४. (१०) १ नफी १३:३४, ३५, ३९, ४०. २ नफी २७:६-२६. ३ नफी १६:४. मार० ८:१४-१६,२५-३४. (११) १ नफी १३:३९-४२. २ नफी २५:१६, १७, २६:१२. मार० ३:२१, ५:१२, १५. (१२) देखो २, १ नफी १०:१३. (१३) देखो २. (१४) पद्य १८. २ नफी ३३:१०, १५. ३ नफी २७:२३-२७. २८:२९-३४. एथ० ४:८-१०.

साथ संधि कर लें; क्योंकि हम जानते हैं कि हम जो कुछ कर सकते हैं, उन्हें कर लेने पर भी हम उसी की कृपा से बच सके हैं।

२४. हम मसीह में (१५) विश्वास करने पर भी मूसा के नियमों का पालन करते हैं और हम दृढ़ता के साथ मसीह की प्रतीक्षा करते हैं और हम तब तक दृढ़ रहेंगे जब तक कि भविष्यवाणी पूरी न हो जाएगी।

२५. इसी उद्देश्य के लिए हमें विधान दिया गया था, जो हमारे लिए समाप्त हो गया, और हम अपने विश्वास के कारण मसीह में जीवित किए गए; फिर भी हम उस विधान का पालन आज्ञाओं के कारण कर रहे हैं।

२६. हम मसीह की चर्चा करते हैं, हम मसीह में आनन्दित होते हैं, हम लोगों को मसीह के विषय में उपदेश देते हैं, हम मसीह के विषय में भविष्यवाणी करते हैं और हम अपनी भविष्यवाणी के अनुसार लिखते हैं कि हमारी सन्तान यह जान सके कि वे अपने पापों की क्षमा के लिए कहां देखें।

२७. हम अपनी सन्तान से विधान के विषय में इसलिए बातें करते हैं कि जिससे विधान का अन्त होना जान सकें; विधान का अंत जब वे समझ लेंगे तब वे सम्भवत: उस जीवन को देख सकेंगे जो कि मसीह में है और तब यह जान सकेंगे कि विधान किस उद्देश्य से दिया गया था। और जब विधान मसीह में पूरा होकर अन्त हो जाएगा, तब उन्हें उसके प्रति अपने हृदयों को कठोर करने की आवश्यकता नहीं होगी।

२८. हे मेरी जाति के लोगो, तुम हठी लोग हो; इसलिए मैंने तुमसे स्पष्ट बातें कीं जिससे कि तुम समझने में भूल न करो। मैंने जो बातें कही हैं वे तुम्हारे विरुद्ध साक्षी होंगी; क्योंकि किसी भी मनुष्य को उचित मार्ग दर्शाने के लिए यह पर्याप्त है; क्योंकि उचित मार्ग है, मसीह को अस्वीकार न करना बल्कि उसे स्वीकार करना; क्योंकि उसे अस्वीकार करके तुम भविष्यवक्ताओं और विधान को भी अस्वीकार कर दोगे।

२९. और अब सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि सही रास्ता है मसीह को अस्वीकार न करना, परन्तु उसे स्वीकार करना; और मसीह ही इस्राएल का पवित्र प्रभु है; इसलिए तुम उसके समक्ष घुटने टेक कर अपने पूरे सामर्थ्य, मन, शक्ति, और आत्मा से प्रार्थना करो; और अगर तुमने ऐसा किया, तब तुमको अलग नहीं किया जाएगा।

३०. जब तक कि मूसा को दी गयी व्यवस्था पूरी नहीं हो जाती, तब तक परमेश्वर द्वारा दी गई उस व्यवस्था की विधियों और मर्यादाओं का पालन करना उचित है।

अध्याय २६

नफी की भविष्यवाणी का क्रम—नफायटियों में मसीह के प्रकट होने की भविष्यवाणी—उनका अन्तिम नाश—यहूदियों से भिन्न जाति वालों का युग।

१. मेरे बच्चों और भाइयों, मर कर जीवित हो उठने के पश्चात् मसीह (१) अपने आपको तुम्हें दिखाएगा; और वह जो कुछ कहेगा तुम्हारे लिए वही व्यवस्था होगी जिसका पालन करना तुम्हारा कर्तव्य होगा।

२. क्योंकि देखो, मैंने अपने लोगों की कई पीढ़ियों को भयंकर युद्ध और कलह में गुज़रते देखा है।

३. जब मसीह आएगा तब उसके जन्म, मृत्यु और मर कर जीवित होने के (२) संकेत मेरे लोगों को दिए जाएंगे; और वह दिन पापियों के लिए अति भयंकर होगा क्योंकि वे नष्ट हो जाएंगे; और वे इसलिए नष्ट होंगे क्योंकि वे भविष्यवक्ताओं और सन्तों को निकाल बाहर करते, उनको पत्थरों से मारते, और उनकी हत्या करते हैं; इसलिए सन्तों का रक्त (३) धरती पर

(१५) पद्य २५-३०. १ नफी ५:९. २ नफी ५:१०. २६:१. याकूब ४:४, ५. यिर्म० ५. मू० २:३. ३:१४-१६. १२:२८, २९, ३१-३७. १३:२७-३५. १६:१४, १५. अल० २५:१४-१६. ३०:३. ३१:९. ३४:१३, १४. इला० १५:५. ३ नफी १:२४, २५. ९:१७-१९. १२:१७, १८. १५:२-१०. अध्याय २६. (१) पद्य ९. १ नफी ११:७. १२:६. देखो २, १ नफी १२. (२) देखो १, १ नफी १२. (३) देखो ६, २ नफी २८. ३ नफी ६:२३, २५. ७:१०, १४, १९.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

से उठ कर परमेश्वर के पास जा कर उनके विरुद्ध रुदन करेगा।

४. सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है कि वह दिन आ रहा है जब अहंकारियों और पापकर्म करने वालों को भस्म कर दिया जाएगा और वे सूखे कटे घास फूस के समान होंगे।

५. और सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि जो भविष्यवक्ताओं और सन्तों को मारते हैं उनको धरती निगल लेगी; पर्वत उनको ढंक लेंगे, बवण्डर उन्हें उड़ा ले जाएगा, और मकान उनके ऊपर गिर कर चकनाचूर करके धूल में मिला देगा।

६. सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि वह दिन आ रहा है जबकि उनको मेघध्वनि, वज्रपात, भूकम्प आदि विनाश का सामना करना पड़ेगा; क्योंकि प्रभु के क्रोध की ज्वाला उनके विरुद्ध भड़क उठेगी, और वे उसमें तिनके के समान होंगे और वह दिन उन्हें निगल लेगा।

७. मेरा हृदय अपने उन लोगों के लिए हाहाकार कर उठता है जो उस दिन मारे जाएंगे, क्योंकि मैं, नफी ने, यह सबकुछ देखा है और प्रभु की उपस्थिति में अपनी इस वेदना के कारण मैं मृत्यु के निकट पहुंच जाता हूं; लेकिन फिर भी मैं कहता हूं: हे प्रभु, तुम्हारी योजना ठीक ही है।

८. लेकिन देखो, (४) वे नष्ट नहीं होंगे जो धार्मिक हैं और भविष्यवक्ताओं की बातों में विश्वास करते हैं और उनकी वाणियों को नष्ट नहीं करते, लेकिन दृढ़ता के साथ मसीह के आगमन के समय दिए गए संकेतों की प्रतीक्षा करते हुए सारे उपद्रवों की अवहेलना करते हैं।

९. लेकिन धर्म का पुत्र (५) उनके समक्ष प्रकट होकर उनको स्वस्थ करेगा; वह उनको चंगा करेगा और वे उसके साथ तीन पीढ़ियों तक शान्ति से रहेंगे और चौथी (६) पीढ़ी के भी बहुत से लोग धार्मिकता में ही गुज़रेंगे।

१०. इन सब घटनाओं के हो जाने के पश्चात् मेरे अपने लोगों के नष्ट होने का समय शीघ्रता के साथ आएगा; क्योंकि मैंने यह देखा है, जिससे कि मेरी अन्तर्आत्मा में जो क्लेष है उसे मैं अस्वीकार नहीं करता; इसलिए मैं यह जानता हूं कि अवश्य ही ऐसा ही होगा; वे अपने आपको बिना किसी मूल्य के ही बेच रहे हैं; वे अपने अहंकार और मूर्खता का फल पाएंगे; क्योंकि वे शैतान के सामने झुकते हैं और प्रकाश में किए जाने वाले कार्यों की अपेक्षा, अन्धकार में किए जाने वाले कार्यों को पसन्द करते हैं, इसलिए उनको नरक में गिरना ही पड़ेगा।

११. क्योंकि प्रभु की आत्मा सदैव मनुष्य के हित के लिए उद्योग नहीं करती रहेगी। और प्रभु की आत्मा मनुष्य के लिए प्रयत्न करना त्याग देगी तब विनाश शीघ्रतापूर्वक आएगा, और इससे मेरी आत्मा दु:खित होती है।

१२. जिस प्रकार मैं (७) यहूदियों से यह प्रतीति करवाने के लिए कहता हूं कि यीशु ही वही मसीह है, उसी प्रकार यहूदियों से भिन्न जाति वालों को भी (८) विश्वास दिलाने की आवश्यकता है कि ईशु ही मसीह है जो अनन्त परमेश्वर है।

१३. पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा वह उन सब लोगों में प्रकट होता है जो उस पर विश्वास करते हैं; हां, हर एक राष्ट्र, जाति, भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों और लोगों में वह चमत्कार, संकेत और आश्चर्यजनक काम, उनके विश्वास के अनुसार मानव वंश में किया करता है।

१४. लेकिन देखो, मैं तुमसे अन्तिम दिनों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करता हूं; यह भविष्यवाणी उन दिनों के विषय में है जबकि प्रभु परमेश्वर (९) इन बातों को मानव समाज के ऊपर घटाएगा।

१५. मेरा और मेरे भाइयों के वंशज जब अविश्वास से दुर्बल हो जाएंगे और भिन्न-भिन्न जातियों के द्वारा पीटे जाएंगे; हां जब कि (१०) प्रभु परमेश्वर उनको घेर लेगा और (११) उनके विरुद्ध एक पर्वत और दुर्गों को खड़ा कर देगा और उनका अहंकार तोड़ कर उन्हें धूल में मिला

(४) ३ नफी ६:१३. १०:१२, १३. (५) देखो २, १ नफी १२. (६) १ नफी १२:१२. अल० ४५:१०, १२. इला० १३: ५, ६, १०. ३ नफी २७:३२. मार० ६:५-२२. (७) देखो ६, २ नफी २५. (८) देखो १६, १ नफी १३. देखो १, नफी १३: ३४-३८, ४२. १४:१-३. मार० ३:२१. (९) देखो ६०, २ नफी २५. (१०) १ नफी १२:२२, २३. १५:१३. १३ मार० ५:१५, २०. ८:२७. (११) यशा० २९:३.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

देगा और वे शून्य के समान हो जाएंगे, फिर भी धार्मिकों की वाणियां लिखी जाएंगी, और भक्तों की प्रार्थनाएं सुनी जाएंगी और जो अविश्वास में क्षीण हो गए उन्हें भुलाया नहीं जाएगा।

१६. जो नष्ट हो जाएंगे, वे धरती में से उनसे (१२) बोलेंगे और उनकी बातें धूल में से धीमी-धीमी सुनाई देंगी और उनकी बोली में एक परिचित आत्मा की आवाज़ मालूम पड़ेगी क्योंकि प्रभु परमेश्वर उसे बल देगा जिससे कि वह उनके विषय में भूमि के अन्दर से धीमे-धीमे बोल सकेगा; और उनकी वाणी धूल में से फुस-फुसाएगी।

१७. क्योंकि प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: वे अपने अन्दर होने वाली बातों को एक पुस्तक में लिख कर मुहरबन्द करेंगे और जो अविश्वास करेंगे (१३) उन्हें वे प्राप्त न होंगी क्योंकि वे परमेश्वर की वस्तुओं को नष्ट करने की खोज में रहते हैं।

१८. इसलिए जिनको नष्ट किया गया है उन्हें शीघ्रता के साथ (१४) किया गया है। और उन भयंकर लोगों की भीड़ उस भूसे के समान होगी जो हवा से उड़ जाती है—हां, प्रभु परमेश्वर कहता है: यह अचानक ही होगा।

१९. और ऐसा होगा कि जो (१५) अविश्वास से दुर्बल होंगे, वे यहूदियों से भिन्न जाति वालों के द्वारा मारे जाएंगे।

२०. अपनी आंखों के अहंकार के कारण वे यहूदियों से भिन्न जाति वालों के ठोकर (१६) खा कर गिर पड़े हैं, क्योंकि उनको गिराने के लिए राह के रोड़े बहुत बड़े हैं जो कि उनके बनाए हुए अनेक (१७) गिरजे हैं; फिर वे (१८) परमेश्वर की शक्ति और चमत्कार की अवहेलना करते हैं, और अपनी (१९) समझ और ज्ञान का प्रचार करते हैं, जिससे कि उन्हें फायदा हो (२०) और वे दरिद्र की छाती पर दल सकें।

२१. और बहुत से ऐसे गिरजा बनाए गए हैं, जो द्वेष, विरोध और संघर्ष बढ़ाते हैं।

२२. प्राचीन काल की तरह, वर्तमान में भी शैतान के साथ (२१) गुप्त सन्धियां हैं, जो कि इन सभी बातों का जन्मदाता है; हां, वह हत्या और अन्धकार में किए जाने वाले कार्यों का जन्मदाता है; और वह उन्हें गर्दन पकड़ कर एक बड़े चाबुक से मारता हुआ तब तक ले जाता है, जब तक वह उन्हें ले जा कर सदा के लिए अपने बन्धन से बांध नहीं लेता।

२३. क्योंकि हे मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुमसे कहता हूं कि प्रभु परमेश्वर अन्धकार में काम करने वाला नहीं है।

२४. वह केवल वही कार्य करता है जिससे जगत की भलाई हो; क्योंकि वह जगत से इतना अधिक प्रेम करता है कि उसने उसके लिए अपना जीवन भी उत्सर्ग कर दिया है जिससे कि वह इस (२२) संसार के सारे लोगों को अपने पास बुला सके। इसलिए वह किसी को भी मुक्ति से वंचित रखने की आज्ञा नहीं देता।

२५. क्या वह किसी से ऐसा कहता है—मुझसे दूर हटो? सुनो, मैं तुमसे कहता हूं, वह ऐसा नहीं कहता; लेकिन वह कहता है: हे संसार में दूर दूर के देशों के रहने वालो, मेरे पास आओ (२३) और बिना मूल्य के, बिना दाम दिए दूध और मधु खरीदो।

२६. सुनो, क्या उसने किसी को भक्तों की भीड़ में से निकाला है या प्रार्थना के स्थानों में से निकाला है? देखो, मैं कहता हूं कि नहीं।

२७. क्या उसने किसी को यह आज्ञा दी है कि तुम मेरी मुक्ति में भाग न लो? देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं; अपितु उसने यह सभी को बेमोल दिया है; और उसने अपनी प्रजा को यह आज्ञा दी है कि वे लोगों से अपने पापों पर पश्चात्ताप करने का अनुरोध करें।

(१२) यशा० २९:४. (१३) इनो० १४. मार० ६:६. (१४) यशा० २९:५. मार० ६:६-१५. (१५) देखो १०. (१६) १ नफी १३:२९, ३४. १४:१-३. (१७) १ नफी १४:९, १०. २२:२३. २ नफी २८. मार० ८:२५-४१. (१८) २ नफी २८:५, ६. मार० ८:२६. ९:७-२६. मरो० ७:३३-३८. (१९) २ नफी २८:४. (२०) १ नफी २२:२३. २ नफी २८:१२, १३. मार० ८:२८, ३२, ३३, ३६-३९. (२१) देखो ९, २ नफी १०. (२२) देखो ३, २ नफी ९. (२३) यशा० ५५:१.

२८. देखो, क्या प्रभु ने किसी को यह आज्ञा दी है कि मेरे उपकारों से तुम लाभ मत उठाओ? सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं; लेकिन हर एक मनुष्य को समानरूप से अधिकार है, रोका किसी को नहीं गया है।

२९. वह पुरोहिती छल करने की आज्ञा नहीं देता; क्योंकि देखो, (२४) पुरोहिती करने वाले वे लोग हैं जो उपदेश देते हुए जगत को प्रकाश देने वाले बनते हैं, जिससे उनको सांसारिक लाभ और प्रशंसा मिले; परन्तु वे सियोन के लिए कुछ नहीं करते।

३०. देखो, प्रभु ने ऐसा करना मना किया है; इसलिए प्रभु परमेश्वर ने एक आज्ञा दी है कि हर एक मनुष्य को उदारता के साथ दान देना चाहिए और वह दान (२५) है प्रेम। बिना इसके मनुष्य का कोई महत्व नहीं। इसलिए अगर उनके पास यह दान अर्थात् प्रेम है, तब परिश्रम कर सियोन में नष्ट नहीं होंगे।

३१. लेकिन सियोन में परिश्रम करने वाले सियोन के लिए परिश्रम करेंगे; अगर वे अर्थलाभ के लिए परिश्रम करेंगे, तब वे नष्ट हो जाएंगे।

३२. और प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को पुनः आज्ञा दी है कि उन्हें हत्या नहीं करनी चाहिए; झूठ नहीं बोलना चाहिए; चोरी नहीं करनी चाहिए; अपने प्रभु परमेश्वर का नाम व्यर्थ में नहीं लेना चाहिए, ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, स्पर्धा नहीं करनी चाहिए, एक दूसरे से विवाद नहीं करना चाहिए, व्यभिचार नहीं करना चाहिए; इन अनुचित कामों में से कुछ भी नहीं करना चाहिए; क्योंकि इन कामों को जो कोई करेगा वह नष्ट हो जाएगा।

३३. इन पापों में से एक भी कार्य प्रभु द्वारा नहीं दिया गया है; क्योंकि वह ऐसे कार्य करता है जो कि मानव समाज के लिए हितकारी होते हैं; वह ऐसे कार्य करता है कि जो उनके लिए (२६) स्पष्ट है; वह उन सभी को अपने पास बुलाता है, अपनी अच्छाइयों में भाग लेने को कहता है; और अपने पास आने वालों में से वह किसी को अस्वीकार नहीं करता चाहे वह काला हो या श्वेत, परतन्त्र हो या स्वतन्त्र, स्त्री हो या पुरुष, वह नास्तिकों को भी नहीं भूलता; उसके लिए सब एक समान हैं क्या यहूदी हों या यहूदियों से भिन्न जाति वाले।

अध्याय २७

नफी की भविष्यवाणियों का क्रम—पापियों के ऊपर परमेश्वर का न्याय—मुहरबन्द पुस्तक—अज्ञानी पुस्तक—तीन साक्षी—एक अद्‌भुत कार्य और एक आश्चर्य।

१. लेकिन देखो, अन्तिम दिनों में, अर्थात् अन्य जातियों के समय में, यहूदी और गैर-यहूदी, दोनों, चाहे इस देश में आने वाले हों चाहे अन्य देशों के रहने वाले हों, हां सारी पृथ्वी के सब देशों के लोग (१) पाप के नशे में डूबे हुए हर प्रकार के घृणित कर्म करेंगे।

२. और जब वह दिन आएगा (२) तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर उनमें मेघगर्जन, भूकम्प, भयंकर कोलाहल, आंधी, महामारी और विनाशकारी ज्वाला के साथ आएगा।

३. और वे सब राष्ट्र जो सियोन के विरुद्ध लड़ते और उसे कष्ट देते हैं उनकी अवस्था ठीक उस व्यक्ति के समान है जो भूखा होने पर स्वप्न में भोजन करता है परन्तु जागने पर उसकी आत्मा भूखी ही रहती है; या उस प्यासे व्यक्ति के समान है जो प्यासा है और स्वप्न में जल पीता है परन्तु जागने पर प्यास से व्याकुल होता है और उसकी आत्मा प्यासी ही रहती है; हां विश्व के उन सारे जन समूहों की यही अवस्था है जो सियोन पर्वत के विरुद्ध लड़ते हैं।

४. क्योंकि देखो, तुम सब जो दुष्कर्म करने वाले हो, आश्चर्य में पड़े रहो क्योंकि तुम चिल्लाओगे और रुदन मचाओगे; क्योंकि तुम बिना दाख मदिरा पिए नशे में रहोगे; तुम लड़खड़ाते पग से चलोगे परन्तु बिना मदिरा पिए ही।

५. क्योंकि देखो, प्रभु ने तुम्हारे ऊपर गहरी निन्द्रा की भावना उड़ेल दी है; क्योंकि देखो,

(२४) ३ नफी १६:१०. २१:१९-२१. (२५) मरो० ७:४७, ४८. ८:२६. (२६) पद्य २३, २४. अध्याय २७.
(१) यशा० २९:६. (२) यशा० २९:६-१०. ईसा से ५९९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

तुमने अपनी आंखें बन्द कर ली हैं, और भविष्य-वक्ताओं को अस्वीकार किया है; और उसने तुम्हारे शासकों और दृष्टाओं को उनके पापों के कारण ढक दिया है।

६. और ऐसा होगा कि प्रभु परमेश्वर एक (३) पुस्तक के शब्द प्रकट करेगा, और यह शब्द उनके होंगे जो पृथ्वी की गोद में सो चुके है।

७. और सुनो, यह (४) पुस्तक मुहरबन्द होगी और इसमें जगत के आरम्भ से अन्त तक के विषय में (५) परमेश्वर का दैवी-ज्ञान होगा।

८. इसलिए जो बातें मुहरबन्द की गई हैं वे मुहरबन्द होने के कारण (६) लोगों की दुष्टता और दुराचरण के दिनों में नहीं बताई जायेंगी। इसलिए यह पुस्तक उनकी पहुंच से परे रखी जाएगी।

९. लेकिन यह पुस्तक एक व्यक्ति को दी जाएगी जो इस पुस्तक के उन शब्दों को दूसरों को देगा जो कि उन लोगों की वाणी है, जो धूल में सो गए हैं।

१०. लेकिन वह उन मुहरबन्द शब्दों को दूसरों तक नहीं पहुंचाएगा और न तो वह उस पुस्तक को ही दूसरों को देगा, क्योंकि यह पुस्तक परमेश्वर की शक्ति के द्वारा मुहरबन्द कर दी जाएगी और उसमें जो दैवी-ज्ञान है उसको उसी पुस्तक में तब तक रखा जायेगा जब तक प्रभु द्वारा (७) उपयुक्त अवसर न आ जाए; क्योंकि देखो, (८) जगत की नींव से लेकर उसके अन्त तक की सभी विषयों के भेद वे खोलते हैं।

११. और वह दिन आएगा जबकि उस पुस्तक के मुहरबन्द शब्दों को मसीह की शक्ति के द्वारा घरों की छतों के ऊपर से पढ़ा जाएगा (९) और उन सभी बातों का भेद खोला जाएगा जो सदैव मानव वंश में थी और तब तक रहेंगी जब तक कि जगत का अन्त न आ जाएगा।

१२. इसलिए इस पुस्तक को तब तक संसार की आंखों से छुपा कर रखा जाएगा जब तक कि जिस मनुष्य की चर्चा मैंने की है उसको दे न दी जाएगी, और जिस व्यक्ति को यह पुस्तक दी जाएगी, उसके अलावा परमेश्वर की शक्ति के द्वारा (१०) तीन गवाह भी इसको देखेंगे जो इस पुस्तक और इसके अन्दर के विषयों की सत्यता के साक्षी होंगे।

१३. इनके अलावे केवल (११) थोड़े ही इस पुस्तक को देख सकेंगे जो परमेश्वर की इच्छा द्वारा मानव वंश के लिए उसकी वाणी के गवाह होंगे; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने कहा है कि मेरे भक्तों के शब्द ऐसे होंगे जैसे वे मेरे (१२) मृत भक्तों से ही आ रहे हों।

१४. इसलिए प्रभु परमेश्वर इस पुस्तक के शब्दों को प्रकाश में लाने का कार्य करेगा; और वह (१३) जितने लोगों की साक्षी के उपयुक्त समझेगा, उतने लोगों को अपने शब्दों को गवाह रखेगा और जो (१४) परमेश्वर की वाणियों को अस्वीकार करेंगे उनको सन्ताप होगा;

१५. लेकिन देखो प्रभु परमेश्वर (१५) जिसको यह पुस्तक देगा, उससे कहेगा: इस पुस्तक की जो बातें मुहरबन्द नहीं हैं (१६) उन्हें लेकर (१७) दूसरों को दो, जिससे वह दूसरे विद्यवान व्यक्ति से यह कह सके: मैं तुम से याचना करता हूं कि तुम इसे (१८) पढ़ो। और ज्ञानी कहेगा: उस पुस्तक को तुम मेरे पास लाओ, मैं उसे पढूंगा।

१६. वे संसार में यश प्राप्ति और अपने हित के लिए ऐसा कहेंगे न कि परमेश्वर के यश के लिए।

१७. और वह व्यक्ति कहेगा: मैं उस पुस्तक को नही ला सकता क्योंकि वह मुहरबन्द है।

१८. तब विद्वान कहेगा: मैं उसे नहीं पढ़ सकता।

१९. तब ऐसा होगा कि प्रभु परमेश्वर

(३) १ नफी १३:३४, ३५. ३९-४२. २ नफी ३:६-२३. २६:१६, १७. २९:११. इनो० १३-१८. मार० ५:१२, १३. ८:१४-१६, २५-३२. (४) यशा० २९:११. (५) यशा० ४:१-७. (६) एथ० ४:६, ७. (७) एथ० ४:७, १५. (८) एथ० ४:१५. (९) एथ० ४:६, ७, १३-१७. (१०) देखो ३, २ नफी ११. (११) पुस्तक के आरम्भ में साक्षियों को देखो. (१२) २ नफी ३:१९, २०. २६:१६, १७. २७:६. ३३:१३-१५. मार० ९:३०. मरो० १०:२७. यशा० २९:४. (१३) देखो ४ नफी ११. (१४) २ नफी २८:२९, ३०. ३३:१३-१५. एथा० ४:८. (१५) पद्य १२, १९, २४. (१६) पद्य ९. (१७) १ कुरिन्थियों १:१९-२१. गिरजा का इतिहास, भाग,-प० २०. (१८) यशायाह २९:११. ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

(१९) उस बिना शिक्षा, प्राप्त व्यक्ति को वह पुस्तक पुनः देगा; और वह व्यक्ति कहेगाः मैं तो अशिक्षित हूं।

२०. तब प्रभु परमेश्वर उससे कहेगाः विद्वान उसको नहीं पढ़ेंगे क्योंकि वे उसे अस्वीकार कर चुके हैं, और मैं स्वयं अपना काम कर सकता हूं; इसलिए तुम मेरे उन शब्दों को पढ़ोगे जिन्हें मैं तुम्हें दूंगा।

२१. जो बातें (२०) मुहरबन्द हैं उन्हें मत छुओ क्योंकि मैं उन्हें उचित अवसर पर लाऊंगा; क्योंकि मैं मानव समाज को यह दिखलाना चाहता हूं कि मैं अपना काम स्वयं कर सकता हूं।

२२. और जब तुम उन शब्दों को पढ़ चुको जिनको पढ़ने की आज्ञा मैंने दी है और मेरे कहे अनुसार इसके (२१) गवाह मिल चुके, तब फिर से पुस्तक को मुहरबन्द करके मुझ में छुपा दो, जिससे कि जिस भाग को तुम नहीं पढ़ोगे उसे मैं तब तक सुरक्षित रखूंगा जब तक कि मेरे विवेक के अनुसार (२२) उन सब बातों को मानव समाज के लिए प्रकाश में लाने का समय नहीं आ जाता।

२३. क्योंकि देखो, मैं परमेश्वर हूं; और मैं चमत्कारों का भी परमेश्वर हूं; और मैं संसार को दिखाऊंगा कि मैं भूत में वर्तमान में और सदैव एक समान हूं; और मैं मानव समाज में उनके विश्वास के अनुसार ही काम करता हूं।

२४. और ऐसा होगा कि जिसको इन बातों को पढ़ने के लिए दिया जाएगा (२३) उससे प्रभु पुनः कहेगा।

२५. (२४) क्योंकि लोग अपनी वाणी और मुख से मेरे निकट आते हैं और आदर दिखाते हैं, लेकिन अपने हृदयों को मुझसे दूर करते हैं और लोगों के उपदेश के कारण मुझ से भय खाते हैं।

२६. इसलिए इनके बीच मैं (२५) अद्‌भुत काम करूंगा, हां, वह अत्यन्त ही आश्चर्यजनक काम होगा; तब इनके बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट हो जायेगी और जो चतुर बनते हैं उनकी चतुराई जाती रहेगी।

२७.सन्ताप हो उनको जो अपनी युक्तियों को प्रभु से छुपाने के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं और अपने काम अन्धकार में करके कहते हैं कि हमें कौन देखता है और हमें कौन जानता है? और वे यह भी कहते हैं कि तुम्हारी उल्टी समझ कुम्हार की मिट्टी के समान मानी जाएगी। लेकिन देखो, सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है कि मैं उनके सभी कामों को जानता हूं। क्या बनाई हुई वस्तु अपने बनाने वाले के विषय में कहे कि उसने मुझे नहीं बनाया? या रची गई वस्तु अपने रचने वालों के विषय में कहे कि वह मूर्ख है?

२८. लेकिन सुनो, सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता हैः मैं मानव वंश को दिखाऊंगा कि थोड़े ही दिनों में लबानोन एक उपजाऊ खेत बन जाएगा, और वह उपजाऊ खेत जंगल के समान माना जाएगा।

२९. और (२६) उन दिनों बहरे भी इस पुस्तक की वाणी सुनेंगे, और अन्धे अपनी अन्धी आंखों से देख सकेंगे।

३०. और प्रभु में विनीत लोगों का विश्वास और आनन्द बढ़ेगा, और लोगों में दरिद्र, इस्राएल के पवित्र प्रभु में हर्षित होंगे।

३१. जैसे (२७) प्रभु जीवित है वैसे ही यह भी निश्चय है कि भयंकर अत्याचारियों को तुच्छ रूप में कर दिया जाएगा, और जो तिरस्कार करते हैं, उन्हें निगल लिया जाएगा और वे सब जो दुष्कर्मों की ताक में रहते हैं, उन्हें अलग कर दिया जाएगा।

३२. और वे जो प्रभु की एक वाणी के लिए एक मनुष्य को दोषी ठहराते, उसको फंसाने के लिए जाल बिछाते हैं जिससे कि वे अन्दर जाने के द्वार पर झिड़की खाएं और न्याय पथ पर चलने वालों को महत्वहीन करते हैं।

३३. याकूब के घराने के इब्राहीम को मुक्त करने वाले प्रभु ने ऐसा कहा है (२८) याकूब को अब लज्जित नहीं होना पड़ेगा और न तो उसका चेहरा ही पीला पड़ेगा।

(१९) पद्य १२:१५, २४. (२०) एथ० ५:१. (२१) देखो ३, २ नफी ११. (२२) २ नफी २७:७, ८. एथ० ४:६, ७. (२३) पद्य १२, १५, १९. (२४) यशा० २९:१३, २४. (२५) देखो ६, २ नफी २५. (२६) देखो ३. (२७) देखो १०, १ नफी २२. (२८) देखो ५, १ नफी १५.

३४. लेकिन जब वह अपने वंशजों को देखेगा, और मेरे हाथ के कामों को अपने बीच पाएगा, तब वह मेरे नाम के और याकूब के पवित्र प्रभु के गौरव को बढ़ाएगा और इस्राएल के पवित्र परमेश्वर से भय खाएगा।

३५. (२९) जिनकी आत्मा भूल कर चुकी है उनको समझ आएगी और जो परमेश्वर के विरुद्ध असंतोष प्रकट करते थे, वे सिद्धांत को समझेंगे।

अध्याय २८

नफी की भविष्यवाणी का क्रम—अन्तिम दिनों के गिरजा और परिस्थितियां—शैतान के राज्य के हिलाए जाने की भविष्यवाणी—मनुष्य को बहकाने वाले उपदेश।

१. और अब, सुनो मेरे भाइयो, मैंने परमात्मा के वश में होकर इन सब बातों को कहा; इसलिए मैं जानता हूं कि यह सब अवश्य ही घटेगा।

२. जो बातें इस (१) पुस्तक में से लिखी जाएंगी वे सब मानव वंश के लिए अत्यन्त ही महत्व की होंगी, विशेष कर हमारे वंश के लिए जो कि इस्राएल के घराने के अवशेष हैं।

३. क्योंकि उन दिनों ऐसा होगा कि बहुत से (२) गिरजा जो प्रभु के लिए नहीं बनाए जाएंगे, वे एक दूसरे से कहेंगे; देखो, मैं प्रभु का गिरजा हूं, और दूसरा कहेगा: मैं प्रभु का गिरजा हूं और इसी प्रकार इन गिरजाओं के संस्थापक भी कहेंगे।

४. वे और उनके पुरोहित एक दूसरे से विवाद करेंगे और जो पवित्र आत्मा वाणी देती है उसको अस्वीकार करके अपनी (३) शिक्षा देंगे।

५. और वे इस्राएल के पवित्र प्रभु की (४) शक्ति को अस्वीकार करते हैं; और लोगों से कहते है: तुम हमारी बातों को सुनो और हमारे उपदेशों को मानो; क्योंकि अब परमेश्वर नहीं रहा, क्योंकि प्रभु और उद्धारक तो अपना काम कर गए और वे अपने सामर्थ्य को मनुष्यों को दे गए हैं।

६. वे कहेंगे कि तुम मेरे उपदेश को सुनो और अगर कोई कहे कि प्रभु के हाथ से एक चमत्कार दिखाया गया है, तब उनका विश्वास मत करो क्योंकि इन दिनों वह चमत्कारों का परमेश्वर नहीं रहा; वह तो अपना काम कर गया।

७. हां, बहुत से ऐसे लोग होंगे जो यह कहेंगे: खाओ, पिओ और आनन्द मनाओ, क्योंकि कल हमारी मृत्यु हो जाएगी, इसलिए जब तक जिओ मजे से जिओ।

८. और बहुत से ऐसे लोग भी होंगे जो कहेंगे: खाओ, पिओ और आनन्द से जिओ परन्तु फिर भी परमेश्वर से डरो और हमारे थोड़े पापों को वह (५) क्षमा कर देगा; हां, थोड़ा झूठ बोलो, दूसरों की बातों से लाभ उठाओ, अपने पड़ोसी के गिरने के लिए गड्ढा खोदो; इनमें कोई हानि नहीं; ये सब काम कर लो क्योंकि कल हम नहीं रहेंगे; और अगर हम अपराधी ठहरेंगे, तब परमेश्वर हमें थोड़ा सा दण्ड दे देगा और फिर हम परमेश्वर के राज्य में बचा लिए जाएंगे।

९. इस प्रकार के उपदेश देने वाले बहुत से लोग होंगे, जो अपने असत्य, निरर्थक और सारहीन सिद्धान्तों का प्रचार करेंगे और अपने हृदयों में फूले न समाएंगे और अपने विचारों को प्रभु से छुपाने का भारी प्रयत्न करेंगे; और उनके कर्म अन्धकार में किए जाने वाले होंगे।

१०. और सन्तों का (६) रक्त उनके विरुद्ध भूमि से पुकारेगा।

११. हां, वे सब पथ भ्रष्ट होकर भटक गए हैं; और पतित हो गए हैं।

१२. अहंकार, झूठे उपदेशको, झूठे सिद्धांत के कारण (७) उनके गिरजा भ्रष्ट होकर सांसारिकता में ऊपर उठे हुए हैं और अपने अहंकार के कारण वे फूले हुए हैं।

१३. वे अपने सुन्दर गिरजाओं के कारण गरीबों को ठगते और अपने हृदयों से दीनों और कंगालों के विरुद्ध उत्पात मचाते हैं, और अपने हृदयों में दीनों और कंगालों के विरुद्ध षड्यन्त्र

(२९) १ नफी १३:३५-३८. १४:१-३. अध्याय २८. (१) देखो ३, २ नफी २७. (२) देखो १७, २ नफी २६. (३) २ नफी २६:२०. (४) देखो १८:२. २ नफी २६. (५) पद्य २१, २५, २६. मार० ८:३१. (६) १ नफी १४:१३. २२:१४. २नफी ५, १६. मार० ८:२७. ४०:४१. ए० ८:२२-२४. सि० शर्त० ५८:५३, ६३:२८-३१, प्र० वा० ६:९-११. १८:२४. १९:२. (७) देखो १७, २ नफी २६.

रचते हैं क्योंकि वे अपने अहंकार में फूले हुए हैं।

१४. वे हठी हैं और अपने सिरों को ऊंचा किए हुए हैं; मसीह के थोड़े से अनुचरों को छोड़ कर बाकी सब अपने अहंकार, दुष्कर्म, घृणा कार्यों और दुराचारों के कारण पथ भ्रष्ट हो चुके हैं; फिर भी उनका पथ प्रदर्शन किया जाता है और वे (८) बहुत सी भूलें मनुष्य के उपदेश के कारण करते हैं।

१५. सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि वे बुद्धिमान, ज्ञानी और धनी जो अपने अहंकार में फूले हुए हैं, और वे सब जो झूठे सिद्धांत का प्रचार करते हैं व्यभिचार करते और प्रभु तक पहुंचने का सही रास्ता दूषित करते हैं, उन पर (९) सन्ताप हो, सन्ताप हो, सन्ताप हो।

१६. सन्ताप हो (१०) उन पर, जो व्यर्थ में न्याय पथ पर चलने वालों को पथ भ्रष्ट करते और सही बातों की निन्दा करते और उसे महत्वहीन कहते हैं। क्योंकि वह दिन शीघ्र आ रहा है जबकि प्रभु परमेश्वर संसार में निवास करने वालों में जाएगा और उस दिन जब कि (११) उनके पाप का घड़ा भर जाएगा तब वे नष्ट हो जाएंगे।

१७. लेकिन प्रभु परमेश्वर कहता है कि सुनो, जगत के लोग अगर अपने पापों पर पश्चाताप करेंगे, तब उनको नष्ट नहीं किया जाएगा।

१८. लेकिन देखो, वह अति घृणित गिरजा जो कि सारे संसार के व्यभिचार का अड्डा है (१२) अवश्य ही धरती पर गिरेगा और उसका गिरना बड़ा भयंकर होगा।

१९. क्योंकि शैतान का राज्य (१३) अवश्य ही कांपेगा और जो लोग उसके राज्य के हैं, उनसे पश्चाताप करवाना चाहिए, नहीं तो शैतान उन्हें अपनी अनन्त जंजीर से जकड़ लेगा और उनको क्रोधित करके नष्ट कर देगा।

२०. क्योंकि सुनो, उस दिन वह मनुष्य के हृदयों में (१४) क्रोध उत्पन्न करेगा और उन्हें भली बातों के विपरीत उत्तेजित कर देगा।

२१. और दूसरों को वह सांसारिक सुरक्षा में विश्वास दिला कर (१५) शान्त कर देगा जिससे वे यह कहेंगे: ज़िओन में सब कुछ ठीक है, हां सियोन प्रगति कर रहा है, सब कुछ ठीक है—इस प्रकार शैतान उनकी आत्माओं को ठगेगा और चतुराई के साथ अधोलोक में ले जाएगा।

२२. और देखो, वह दूसरों की झूठी प्रशंसा करके उन्हें बहकाता है और उनसे कहता है कि अधोलोक है ही नहीं; और वह उनसे कहता है: मैं शैतान नहीं हूं और न तो शैतान नाम का कोई है—इस प्रकार वह उनके कानों में तब तक फुस-फुसाता है जब तक कि वह उन्हें (१६) अपनी भयंकर जंजीर से बांध नहीं लेता, जिससे मुक्त होना सम्भव नहीं।

२३. हां, वे मृत्यु और अधोलोक के पंजे में (१७) फंस जाते हैं; और मृत्यु और अधोलोक, शैतान और उनमें फंसे हुए सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के समक्ष अपने अपने कर्मों के अनुसार न्याय के लिए खड़े होंगे, और वहां से उनको वहां जाना होगा जो स्थान उनके लिए तैयार किया गया है जोकि गन्धक, पत्थर और अग्नि का (१८) कुण्ड है और जो अनन्त दुखदाई

२४. इसलिए सन्ताप हो उन पर जो सियोन में चिन्तामुक्त होकर आराम से रहते हैं।

२५. सन्ताप हो उन पर, जो कहते हैं कि सब कुछ ठीक है।

२६. हां, सन्ताप हो उन पर, जो (१९) मनुष्य के उपदेश सुनते, और परमेश्वर की शक्ति और पवित्र आत्मा की देन को अस्वीकार करते हैं।

२७. हां, सन्ताप हो उन पर, जो कहते हैं: हमने तो सबकुछ पा लिया (२०) हमें और कुछ नहीं चाहिए।

(८) २ नफी २७:३५. (९) १ नफी २२:२३. २ नफी २६:२०-२२, ३२. अल० ३९:५. ३ नफी २९:४-९. मार० ८:४१. ९:२६. (१०) २ नफी २८:३. (११) १ नफी २२:१६-२३. ए० २:८-११. मार० ८:४१. (१२) १ नफी १४:३, ४, ६, ७, १५-१७. देखो ११, १ नफी १४. (१३) १ नफी २२:२२, २३. २ नफी २८:२०-३२. (१४) पद्य २८. (१५) २ नफी २६:२६, २८, ७-१४, २५. मार० ८:३१. (१६) २ नफी १:१३. २३:९-४५. पद्य १९. अल० १२:११, १७. ३६:१८. (१७) देखो १०, २ नफी ९. (१८) देखो ११, १ नफी १५. (१९) देखो १८, २ नफी २६. २ नफी २८:३२. (२०) पद्य २९. [illegible] ३ नफी २६:९, १०. ए० ४:८.

२८. और सन्ताप हो उन पर, जो परमेश्वर की सत्य बातों से भयखाते और (२१) क्रोधित होते हैं: क्योंकि जो दृढ़ चट्टान पर बना है वह आनन्द के साथ स्वीकार करता है; लेकिन जिसकी नींव बालू पर है, वह गिरने के भय से कांपता है।

२९. सन्ताप पड़े उन पर जो कहते हैं: हमने परमेश्वर की वाणी प्राप्त कर ली है, और (२२) हमें परमेश्वर की वाणी और अधिक नहीं चाहिए, क्योंकि हमने जो कुछ प्राप्त किया है, वह पर्याप्त है।

३०. क्योंकि देखो, प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है (२३) मैं मनुष्य को नियम पर नियम, आज्ञा पर आज्ञा, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां दूंगा; और धन्य हैं वे लोग जो मेरे उपदेश को सुनते हैं, और मेरी युक्तियों पर कान देते हैं क्योंकि वे विवेक सीखेंगे; (२४) क्योंकि जो ग्रहण करेंगे उन्हें मैं और दूंगा; और जो कहेंगे कि हमारे पास पर्याप्त है उनसे वह ले लिया जाएगा जो उनके पास है।

३१. शापित हैं वे लोग जो पवित्र आत्मा के दिए गए उपदेश की अपेक्षा मनुष्य पर विश्वास करते, सांसारिक शक्ति बढ़ाते (२५) या मनुष्य के उपदेश को सुनते हैं।

३२. सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है (२६) कि सन्ताप हो उन यहूदियों से भिन्न जाति वालों पर जो मुझे अस्वीकार करते हैं, जिनकी ओर मैं दिन प्रतिदिन अपना हाथ बढ़ाऊंगा; प्रभु परमेश्वर कहता है कि फिर भी अगर वे अपने पापों पर पश्चाताप करेंगे और मेरे पास आएंगे तब मैं उन पर दयालु बना रहूंगा; क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि सारा दिन मेरा हाथ बढ़ता रहता है।

अध्याय २९

नफी की भविष्यवाणी का क्रम—धर्मशास्त्र और भिन्न-भिन्न जातियां—अन्य अभिलेख—परमेश्वर की वाणी एक साथ संकलित की जायगी—

१. लेकिन देखो, उस दिन बहुत से लोग होंगे जब कि मैं उनमें (१) एक अद्भुत कार्य करूंगा जिससे कि जो अनुबंध मैंने मानव वंश के साथ किया है वह मुझे स्मरण रहे, जिससे कि मैं अपने उन लोगों को (२) प्राप्त करने के लिए अपना हाथ पुनः बढ़ाऊं जो कि इस्राएल के घराने के हैं।

२. और इसलिए भी कि मैं अपने उस प्रतिज्ञा को याद रख सकूं जो मैंने तुम नफी को, और तुम्हारे पिता को दी है कि मैं तुम्हारे वंश को स्मरण रखूंगा और तुम्हारे वंश की (३) वाणी मेरे मुख से निकल कर तुम्हारे वंश वालों में जाएगी; और मेरी वाणी संसार के हर छोरों से (४) फुसफुसायी जाएगी जो कि मेरे उन लोगों के लिए एक (५) झण्डा होगा, जो कि इस्राएल के घराने के हैं।

३. और मेरी वाणी के उच्चारण किए जाने के कारण यहूदियों से भिन्न जाति वाले कहेंगे: (६) एक धर्मशास्त्र! हमारे पास एक धर्मशास्त्र है, दूसरा धर्मशास्त्र हो ही नहीं सकता।

४. परन्तु प्रभु परमेश्वर इस प्रकार कहता है: हे मूर्खो, उन्हें एक धर्मशास्त्र प्राप्त होगा; और वह यहूदियों के द्वारा प्रकाश में लाया जाएगा जिनके साथ मेरा प्राचीन इकरारनामा है। यहूदियों से वह धर्मशास्त्र प्राप्त करने के लिए वे कितने कृतज्ञ होंगे? हां, यहूदियों से भिन्न जाति वालों का क्या तात्पर्य है? क्या उन्हें यहूदियों की यात्रायें, परिश्रम, कष्ट और गैर-यहूदी जाति वालों के लिए मुक्ति लाने में मेरे प्रति भक्ति और लगन याद है?

५. हे यहूदियों से भिन्न जाति वालों, क्या तुम्हें उन यहूदियों का स्मरण है जिनको मैंने वचन दिया है? नहीं; लेकिन तुमने उनको श्राप दिया, उनसे घृणा की और उनका पुनरुद्धार करने की कोई चेष्टा नहीं की। लेकिन देखो, मैं इन सब बातों को तुम्हारे अपने सिरों पर लौटाऊंगा; क्योंकि मैंने अपने लोगों को भुलाया नहीं है।

६. फिर भी (७) मूर्ख कहेंगे: हमारे पास

(२१) पद्य २०. (२२) पद्य २७. (२३) यशा० २८:१०. (२४) अल० १२:१०, ११. (२५) पद्य ३-१४. २ नफी २७:२५. (२६) देखो ४, नफी १४. अध्याय २९. (१) देखो ६, २ नफी २५. (२) देखो ६, २ नफी ६. (३) २ नफी ३:२१. देखो १२, २ नफी २६. (४) यशा० ५:२६. मरो० १०:२८. (५) यशा० ५:२६. १८:३. ४९:२२. ६२:१०. सि० शर्त० ४५:९. ६४:४२. (६) पद्य ४, ३-१४. (७) पद्य ३.

धर्मशास्त्र है, हमें और धर्मशास्त्र नहीं चाहिए। यहूदियों के द्वारा दिए गए धर्मशास्त्र के अलावा क्या तुमने और कोई धर्मशास्त्र प्राप्त किए हैं?

७. क्या तुम यह नहीं जानते कि एक से अधिक जातियां हैं? क्या तुम यह नहीं जानते कि मैं तुम्हारे प्रभु परमेश्वर ने सभी लोगों की रचना की है, और मैं उनको भी स्मरण रखता हूं जो समुद्र के द्वीपों में निवास करते हैं; और मैं ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथ्वी पर शासन करता हूं; और मैं मानव वंश में अपनी वाणी को लाता हूं, हां, यहां तक कि मैं सभी जातियों में अपनी वाणी देता हूं।

८. तुम किस कारण असंतोष प्रकट करते हो? क्या इसलिए कि तुम्हें मेरी अधिक वाणी प्राप्त होगी? क्या तुम यह नहीं जानते कि दो राष्ट्रों की गवाही तुम्हारे लिए इस बात की साक्षी है कि मैं परमेश्वर हूं, और मैं एक जाति को दूसरी जाति की तरह ही मानता हूं और जब दोनों (८) जातियां एक साथ होंगी तब दोनों जातियों की साक्षियां भी एक साथ हो जाएंगी।

९. और मैं ऐसा इसलिए करूंगा कि जिससे मैं बहुतों को यह प्रमाणित कर सकूं कि मैं भूत में, वर्तमान में और सदैव एक समान था, हूं और रहूंगा; और मैं अपनी इच्छानुसार अपनी वाणी बोलता हूं। और जब मैं एक वाणी कह चुका हूं तब तुम्हें इस बात पर सन्देह नहीं होना चाहिए कि मैं दूसरी वाणी भी कह सकता हूं; क्योंकि मेरा कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ है; न तो मनुष्य के अन्त तक समाप्त होगा और उसके पश्चात् भी कभी समाप्त नहीं होगा।

१०. इस कारण तुम्हारे पास एक धर्मशास्त्र होने से तुम्हें यह नहीं समझ लेना चाहिए कि उसमें मेरी सारी वाणियां विद्यमान हैं; और न तो तुम्हें यह समझना चाहिए कि मैंने और लिखने को मना किया है।

११. मैं पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और सागर के द्वीपों के लोगों को अपनी जो वाणी उनसे कहता हूं, उसे लिखने की आज्ञा देता हूं; क्योंकि (९) जो पुस्तकें लिखी जाएंगी उसी के आधार पर मैं (१०) जगत का और हर एक मनुष्य का उनके कर्मों के अनुसार, लिखित व्यवस्था के आधार पर ही न्याय करूंगा।

१२. क्योंकि सुनो, मैं (११) यहूदियों से बोलूंगा और वे लिखेंगे; और मैं (१२) नफायटियों को अपनी वाणी सुनाऊंगा और वे लिखेंगे; और (१३) इस्राएल की जिन शाखाओं को मैं ले गया, उनसे भी मैं बोलूंगा और वे भी लिखेंगे; मैं (१४) संसार की सारी जातियों से बोलूंगा और वे भी लिखेंगे।

१३. और ऐसा होगा कि (१५) यहूदियों को नफायटियों की वाणी और नफायटियों को यहूदियों की वाणी प्राप्त होगी; और नफायटियों और यहूदियों, दोनों को इस्राएल की खोई हुई शाखाओं की वाणियां प्राप्त होंगी; और इस्राएल के खोए हुए लोगों को इस्राएलियों और नफायटियों की वाणियां प्राप्त होंगी।

१४. तब ऐसा होगा कि उस समय मेरे वे लोग जो इस्राएल के वंश के होंगे, अपने-अपने अधिकार के देशों से अपने घर में एकत्रित होंगे और मेरे वचन (१६) एक साथ संकलित किए जाएंगे। और जो मेरी वाणियों और मेरे उन लोगों के विरुद्ध संग्राम करते हैं जो इस्राएल के वंशज हैं, उन्हें मैं दिखाऊंगा कि मैं परमेश्वर हूं और मैंने इब्राहीम के साथ यह अनुबंध किया था कि मैं उसके वंश को सदैव के लिए स्मरण रखूंगा।

अध्याय ३०

नफी की भविष्यवाणियों का क्रम—मतपरिवर्तित गैर-यहूदियों की वचन दिए गए लोगों में गिनती—यहूदियों और लमनायटियों को विश्वास करना होगा—पापियों को नष्ट किया जाएगा।

१. और अब, प्रिय भाइयों, मैं तुमसे बातें करूंगा; क्योंकि मैं, नफी, यह सहन नहीं करूंगा कि तुम

(८) २ नफी ३:१२. यहेज० ३७:१५-२०. (९) देखो ३, २ नफी २७. (१०) २ नफी २५:१८, २२. २९:१२-१४. ३ नफी २७:२३-२६. प्र० वा० २०:१२. (११) १ नफी १३:२३-२९. २ नफी ३:१२. (१२) १ नफी १३:३९-४२. २ नफी ३:१२, १८-२१. २६:१६, १७. २७:६-२६. (१३) ३ नफी १६:१-३. १७:४. (१४) पद्य ७-११, २ नफी २६:३३. (१५) २ नफी ३:१२. २९:८. मार० ५:१३, १४. (१६) देखो १५, यूहन्ना ११:५२.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

अपने आपको अन्य जातियों से अधिक धर्मात्मा समझने लगो, क्योंकि देखो, अगर तुम परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं करोगे तब तुम सब नष्ट हो जाओगे; और जो बातें कही गई हैं उनसे यह मत समझना कि अन्य जातियां एकदम नष्ट कर दी गई हैं।

२. क्योंकि देखो, अन्य जातियों में से जितने लोग अपने पापों पर पश्चात्ताप करेंगे उनकी गिनती उन लोगों के साथ होगी जिनको प्रभु ने वचन दिया है; और जो यहूदी अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं करेंगे उनको दूर फेंक दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु केवल उन्हीं के साथ वचनबद्ध होता है जो अपने पापों पर पश्चात्ताप करते और उसके पुत्र पर विश्वास करते हैं जो कि इस्राएल का पवित्र प्रभु है।

३. और अब मैं यहूदियों और अन्य जातियों के विषय में अधिक भविष्यवाणी करूंगा। जिस (१) पुस्तक के विषय में मैंने चर्चा की है उसके प्रकाश में आ जाने और अन्य जातियों के लिए लिखे जाने और मुहरबन्द करके प्रभु के अधिकार में कर देने के पश्चात् (२) बहुत से लोग उसकी लिखी बातों पर विश्वास करेंगे और उसे हमारे (३) वंश के बचे हुए लोगों तक पहुंचाएंगे।

४. और तब हमारे वंश के अवशेष हमारे विषय में जान सकेंगे कि हम किस प्रकार यरूशलेम से यहां आए और वे यहूदियों के वंशज हैं।

५. और (४) उनमें ईशु मसीह के सुसमाचार की घोषणा की जाएगी; इसलिए उनमें पूर्वजों के ज्ञान और ईशु मसीह के विषय में उस (५) ज्ञान की पुनर्स्थापना की जाएगी जो कि उनके पूर्वजों को था।

६. और तब वे यह समझ कर आनन्द मनाएंगे कि उनको परमेश्वर के हाथ द्वारा यह आशीर्वाद प्राप्त हुआ है; और उनकी आंखों का अन्धकार का परदा हटने लगेगा; और उनकी बहुत सी पीढ़ियां अज्ञानता में नहीं गुजरेंगी, बल्कि वे (६) उज्ज्वल और आनन्दयुक्त लोग हो जाएंगे।

७. और ऐसा होगा कि जो यहूदी तितर-बितर हो गए हैं वे भी (७) मसीह में विश्वास करना आरम्भ करेंगे; और देश में एकत्रित होने लगेंगे; और जो लोग मसीह में विश्वास करेंगे वे सब आनन्दमय हो जाएंगे।

८. और तब ऐसा होगा कि प्रभु परमेश्वर हर एक राष्ट्र, जाति, भिन्न भिन्न भाषा बोलने वालों और लोगों में पृथ्वी पर अपने लोगों को (८) पुनर्स्थापित करने का कार्य आरम्भ कर देगा।

९. (९) परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म के अनुसार, और पृथ्वी के दीन लोगों का निर्णय निष्पक्ष होकर करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा और अपनी फूंक से दुष्टों को मिटा डालेगा।

१०. क्योंकि वह समय शीघ्रता के साथ आता है जबकि परमेश्वर लोगों में (१०) एक बहुत बड़ा विभाजन करेगा और पापियों को नष्ट कर देगा; हां वह पापियों को अग्नि द्वारा नष्ट कर देगा और अपने लोगों को बचा लेगा।

११. (११) धर्म उसका कमरबन्द होगा और सत्यनिष्ठा उसकी बागडोर होगी।

१२. तब भेड़िया मेमने के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ लेटेगा, और बछड़ा, शेर का बच्चा और पालतू बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे; और उनकी अगुवाई करने वाला एक छोटा बालक होगा।

१३. गाय और भालू एक साथ चरेंगे और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे और सिंह बैल की तरह भूसा खाया करेगा।

१४. दूध पीता बच्चा विषधर सर्प के बिल

अध्याय ३०. (१) देखो ३, २ नफी २७. (२) १ नफी १३:३४-४२. १४:१, २, ५, १२-१४. २२:८, ९. ३ नफी १६:१६, १०, ११. २६:८. (३) १ नफी १०:१४. १५:१३-१८. २२:८-१२; ३ नफी १६:६-१३; २०:१३. (४) १ नफी १३:३८-४२, १५:१३-१८. ३ नफी १६:११, १२; २१:३-७. २४:२६ मार० ५:१५. (५) १ नफी १५:१४. २ नफी ३:१२. मार० ७:१, ९, १०. (६) २ नफी ५:२१. या० ३:८. अल० २३:१८. ३ नफी २:१४-१६. (७) देखो ६, २ नफी २५. (८) देखो ५, १ नफी १५. (९) यशा० ११:४. (१०) १ नफी १४:७. २२:१६, १७. (११) यशा० ११:५-९.

ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया बालक नाग के बिल में हाथ डालेगा।

१५. मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दु:ख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी प्रभु के ज्ञान से ऐसी परिपूर्ण हो जाएगी कि जैसे सागर में जल भरा रहता है।

१६. इसलिए (१२) सारी जातियों की बातें प्रकाश में लाई जाएंगी; हां, मानव वंश को सभी बातों की जानकारी कराई जायेगी।

१७. सभी बातों को प्रकाश में लाने के अलावा छुपाया कुछ भी नहीं जाएगा; प्रकाश में किए जाने वाले कामों के अलावे अन्धकार में किए जाने वाले कार्य होंगे ही नहीं; (१३) और पृथ्वी पर बन्द करके रखने वाली बातें भी नहीं होंगी।

१८. इस कारण जो बातें मानव वंश पर प्रकट की गई हैं वे सब उस दिन प्रकाश में लाई जाएंगी; और शैतान का मानव वंश के हृदयों पर (१४) बहुत दिनों तक कोई अधिकार नहीं रह जाएगा, और अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैं अपनी बातें समाप्त करता हूं।

अध्याय ३१

नफी की भविष्यवाणी का क्रम—मुक्तिदाता को क्यों बपतिस्मा दिया जाएगा—सीधा और सकरा रास्ता।

१. और अब, हे मेरे प्रिय भाइयों, मैं, नफी, तुमको भविष्य की बातें बताता समाप्त कर रहा हूं, और जो थोड़ी सी बातें होने को हैं, उनको और याकूब के थोड़े से शब्दों को छोड़ कर और अब मैं कुछ नहीं लिख सकता।

२. इसलिए मसीह के सिद्धांत के विषय में कुछ अवश्य ही कहने के अलावा मैंने जो कुछ लिखा है वह पर्याप्त है; इस कारण मैं तुमसे अपनी स्पष्ट भविष्यवाणी के अनुकूल ही कहूंगा।

३. स्पष्ट बातों से मेरी आत्मा को (१) आनन्द मिलता है; क्योंकि इसी प्रकार प्रभु परमेश्वर मानव समाज में कार्य करता है क्योंकि प्रभु परमेश्वर समझ की ज्योति देता है; मनुष्य की भाषा के अनुसार उनसे बातें करता है जिससे वे तत्व को समझें।

४. इस कारण मैं चाहता हूं कि तुम यह याद रखो कि मैंने तुमसे (२) उस भविष्यवक्ता के विषय में चर्चा की है जिसको प्रभु ने मुझे दिखाया है और जो परमेश्वर के उस मेमने को बपतिस्मा देगा जो जगत के पापों का उद्धार करेगा।

५. और अगर परमेश्वर के मेमने को जो कि पवित्र है (३) धर्मविधि को पूरा करने के लिए पानी द्वारा बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है तब हमें, जो कि अपवित्र हैं, पानी द्वारा बपतिस्मा लेने की कितनी बड़ी आवश्यकता है।

६. और अब, मेरे प्रिय भाइयों मैं तुमसे पूछता हूं, कि पानी द्वारा बपतिस्मा लेने से क्या परमेश्वर के मेमने ने सभी धार्मिकता की पूर्ति कर दी है?

७. क्या तुम यह नहीं जानते कि वह पवित्र था? लेकिन पवित्र होने पर भी उसने इस विधि का विरोध न करके मानव समाज के लिए यह उदाहरण प्रस्तुत किया है कि मानव शरीर के अनुसार वह पिता के आगे दीन बना और उसने पिता को यह साक्षी दी कि वह उसकी आज्ञाओं का पालन करके उसका आज्ञाकारी बना रहेगा।

८. इस कारण बपतिस्मा लेने के पश्चात् उसके ऊपर पवित्र आत्मा (४) एक कबूतर के रूप में उतरी।

९. यह पुन: मानव समाज को (५) सीधा रास्ता और उस द्वार का सकरापन दिखाता है जिससे होकर उनको अन्दर प्रवेश करने का उदाहरण उसने दिया है।

१०. वह मानव वंश से कहता है : तुम मेरा अनुकरण करो। इसलिए, मेरे प्रिय भाइयो, बिना पिता की आज्ञाओं का पालन किए हम क्या मसीह का अनुकरण कर सकते हैं?

(१२) २ नफी २९:६-१४. ए० ४:६, ७, १३-१७. (१३) १ नफी १४:२६. (१४) १ नफी २२:१५, २६. या० ५:७६. ए० ८:२६. अध्याय ३१. (१) देखो २, २ नफी २५. (२) देखो ६, १ नफी १०. (३) पद्य ६, ७. (४) १ नफी ११:२७. लूका ३:२२. यूहन्ना १:३२. सि० शर्त० ९३:१५. (५) देखो २७. २ नफी ९.

११. और पिता ने कहा : अपने पापों पर पश्चात्ताप करो, पश्चात्ताप करो, और (६) मेरे प्रिय पुत्र के नाम पर बपतिस्मा लो।

१२. और पुत्र के शब्द भी मुझे सुनाई दिए जिसने मुझसे कहा : जो मेरे नाम से बपतिस्मा लेगा, उसको पिता उसी तरह पवित्रात्मा देगा जिस प्रकार उसने मुझे पवित्रात्मा दी थी; इसलिए तुम मेरा अनुकरण करो और वह करो जो मैंने किया है।

१३. इसलिए, मेरे प्रिय भाइयो, अगर तुम परमेश्वर के पुत्र का अपने पूरे हृदय से बिना छल-कपट के, बिना परमेश्वर को धोखा देने के प्रयत्न के, सच्चे उद्देश्य से, अपने पापों पर पश्चात्ताप करते हुए पिता को यह साक्षी दोगे कि तुम मसीह का नाम बपतिस्मा लेकर अपने ऊपर लोगे। हां, पानी में जा कर अपने मुक्तिदाता के वचन के अनुसार अनुकरण करोगे, तब तुम्हें पवित्रात्मा मिलेगी; तब अग्नि और पवित्रात्मा द्वारा बपतिस्मा आता है; और तब तुम (७) स्वर्गदूतों की भाषा में बोल सकोगे और इस्राएल के पवित्र प्रभु का गुण-गान कर सकोगे।

१४. लेकिन सुनो मेरे प्रिय भाइयो, परमेश्वर के पुत्र की वाणी मुझे इस प्रकार सुनाई दी : अपने पापों पर पश्चात्ताप कर लेने पर, और पिता को दिए यह वचन, कि पानी द्वारा बपतिस्मा लेकर तुम मेरी आज्ञा का पालन करने को तत्पर हो और अग्नि और पवित्रात्मा द्वारा भी बपतिस्मा ग्रहण करके स्वर्गदूतों की भाषा भी बोलने लगे परन्तु मुझे अस्वीकार कर दिया, तब अच्छा होता कि तुम मुझे जानते ही नहीं।

१५. और मैंने पिता की आवाज को सुना जिन्होंने यह कहा : हां, मेरे प्रिय के शब्द सत्य और विश्वसनीय हैं। (८) जो अन्त तक सहनशील बना रहेगा वही बचेगा।

१६. और हे मेरे प्रिय भाइयो, इससे मैं यह जानता हूं कि जब तक एक मनुष्य चेतन परमेश्वर के पुत्र के उदाहरण का अनुकरण अन्त तक करते रहने में सहनशील बना नहीं रहता, तब तक वह बच नहीं सकता।

१७. इसलिए तुम वही करो जो मैंने तुम्हें बतलाया है और जो मैंने देखा है कि तुम्हारे प्रभु और उद्धारक करेंगे; मुझे यह इस कारण दिखलाया गया है कि तुम उस द्वार को जान सको जिसके (९) द्वारा तुम्हें अन्दर प्रवेश करना है। जिस द्वार से तुम्हें अन्दर प्रवेश करना है वह है अपने पापों पर पश्चात्ताप और पानी द्वारा बपतिस्मा लेना; और तब आता है अग्नि और पवित्र आत्मा द्वारा पापों को क्षमा किया जाना।

१८. और तब तुम इस सकरे रास्ते पर चलोगे जो तुम्हें अनन्त जीवन तक ले जाएगा; हां तब तुम द्वार से होकर अन्दर प्रवेश करोगे; तुमने पिता और पुत्र की आज्ञाओं का पालन किया; और तुमने पवित्रात्मा को प्राप्त किया जो पिता पुत्र के इस वचन का साक्षी है कि अगर तुमने सही रास्ते से अन्दर प्रवेश किया तब तुम पाओगे।

१९. और अब मेरे प्रिय भाइयों इस सीधे संकरे रास्ते पर चले जाने से, मैं पूछता हूं कि क्या सबकुछ किया जा चुका है? सुनो : मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, क्योंकि तुम केवल मसीह के वचन-अनुसार और उस पर अपने दृढ़ विश्वास के सहारे, उसके बचाने के महान सामर्थ्य पर आश्रित होकर ही वहां तक पहुंचे हो।

२०. इस कारण तुम मसीह में दृढ़ विश्वास रखते हुए आशा की अखण्ड ज्योति में और परमेश्वर और सभी मनुष्यों से प्रेम रखते हुए, सदैव आगे बढ़ते चलो। इसलिए अगर तुम आगे बढ़ते रहे, मसीह की वाणी का प्याला पीते रहे, और अन्त तक सहनशील बने रहे, तब सुनो, पिता इस प्रकार कह रहा है : तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा।

२१. और अब, देखो मेरे प्रिय भाइयो, (१०) यही वह रास्ता है; और दूसरा रास्ता कोई नहीं। न तो आकाश के नीचे कोई दूसरा नाम ही है, जिसके द्वारा मनुष्य परमेश्वर के राज्य में बचाया जा सकता हो। और देखो, यही मसीह का सिद्धांत है,

(६) देखो २१, २ नफी ९. (७) पद्य १४. २ नफी ३२:२, ३. (८) पद्य १५, १६. या० ६:७:११. मू० ५:११, १५, २६, २७. अल० २४:३०-३९:६. ३ नफी २७:१७. मार० १, १६, १७. इब्रा० ६:४-६. २ पत० २:२१. सि० शर्त० १३२:२७. (९) देखो ५. (१०) देखो ५.

पिता का भी यही सच्चा सिद्धांत है, और यही सिद्धांत है पुत्र और पवित्रात्मा का, जो (११) एक ही अन्तहीन परमात्मा है। आमीन।

अध्याय ३२

नफी की भविष्यवाणी का क्रम—स्वर्गदूतों की भाषा—पवित्रात्मा का पद।

१. और अब, देखो मेरे प्रिय भाइयों, मेरे विचार से तुम अपने हृदयों में यह सोचते हो कि सही रास्ते से अन्दर प्रवेश कर लेने पर क्या करना चाहिए। लेकिन तुम अपने हृदयों में ऐसा क्यों सोच रहे हो?

२. क्या तुम्हें यह याद नहीं है कि मैंने तुमसे कहा था कि पवित्रात्मा प्राप्त कर लेने पर तुम स्वर्गदूतों की भाषा बोलने लगोगे? पवित्रात्मा के अलावा तुम कैसे (१) स्वर्गदूतों की भाषा बोल सकते हो?

३. स्वर्गदूत पवित्रात्मा के सामर्थ्य से बोलते हैं; इसलिए वे मसीह की वाणी बोलते हैं। इसीलिए मैंने तुमसे कहा था कि मसीह की वाणी का प्याला पिओ; क्योंकि देखो, मसीह की वाणी तुम्हें बतलाएगी कि तुम्हें क्या करना चाहिए।

४. मेरे इन शब्दों के कहने पर भी अगर तुम नहीं समझते, तब वह इसलिए है कि तुम पूछते नहीं और न तो द्वार ही खटखटाते हो; इसीलिए तुमको उजियाले में नहीं लाया जाता है, तुम अन्धकार में ही नष्ट हो जाओगे।

५. इसलिए मैं तुमसे फिर कहता हूं कि अगर तुम सही रास्ते से अन्दर प्रवेश करोगे, और पवित्र आत्मा ग्रहण करोगे, तब वह तुम्हें बताएगा कि तुम्हें (२) क्या करना चाहिए।

६. देखो यह मसीह का सिद्धांत है, इसके अलावा तब तक और सिद्धांत नहीं दिया जाएगा जब तक कि वह स्वयं (३) मानव शरीर में तुम्हारे मध्य प्रकट नहीं होता। और जब वह मानव शरीर में प्रकट होगा तब वह जो कुछ कहेगा तुम्हें उसका पालन करना होगा।

७. और अब, मैं, नफी, आगे कुछ नहीं कह सकता; पवित्रात्मा और कहने से मुझे रोक रहा है, और मैं मनुष्य के अविश्वास, दुष्कर्म, अज्ञानता और हठीपन के कारण उसे रोने के लिए छोड़ रहा हूं क्योंकि वे ज्ञान, समझ और विवेक को अत्यन्त (४) स्पष्ट रूप से दिए जाने पर भी उन्हें स्पष्ट रूप से खोजते नहीं।

८. और अब, मेरे प्रिय भाइयों मुझे यह कहते दुःख हो रहा है कि मैं देखता हूं कि तुम अब भी अपने हृदयों में चिन्तन कर रहे हो। अगर तुम उस आत्मा को सुनो जो एक मनुष्य को (५) प्रार्थना करना सिखलाता है, तब तुम्हें यह ज्ञान होगा कि तुमको प्रार्थना अवश्य ही करनी चाहिए क्योंकि दुष्ट आत्मा मनुष्य को प्रार्थना करना नहीं सिखाता परन्तु वह उसे प्रार्थना न करना सिखाता है।

९. लेकिन देखो, मैं तुमसे सदैव प्रार्थना करने को कहता हूं, न कि शिथिल होने को; जिससे कि तुम कोई अहितकर कार्य न करो परन्तु सबसे पहले पिता से मसीह के नाम पर प्रार्थना करो जिससे कि वह तुम्हारे कार्य को पवित्र करे और तुम्हारे कार्य तुम्हारी आत्मा के लिए कल्याणकारी हों।

अध्याय ३३

नफी की अन्तिम साक्षी। जितना बोलने में शक्तिशाली उतना लिखने में नहीं—अपने लोगों के लिए उसकी भारी चिन्ता।

१. और अब, मैं, नफी, उन सब बातों को

(११) अल० ११:४४. ३ नफी ११:२७, २८, ३६. २८:१०. मार० ७:७. व्यवस्था० ६:४. गल० ३:२०. इफि० ४:५-६.
अध्याय ३२. (१) **देखो** ७, २ नफी ३१. (२) १ नफी १०:१७-१९. १३:३७. २ नफी ३१:१३. यिर्म० ४. अल० ५:४६-४८. ३ नफी १२:१, २. १६:६. अध्याय ३०, ए० ४:११-१२. मरो० १०:४-७. (३) **देखो** २, १ नफी १२. (४) **देखो** २ नफी २५. (५) १ नफी १:५. ७:२१. ८:८. १५:८-११. १७:७. १८:३, २१. २ नफी ४:२३, २४, २८-३५. या० ७:२२. इनो० ४, ११, १५-१८. मूमा० ३:४. ४:१-३, ११, १९-२२. ९:१७-१८. २१:१४. २६:३९. अल० ६:६. १७:३. १८:४१-४३. १९:१४-१६. २२:१६. २७:११, १२. ३१:१०, २६-३५. ३३:४-११, ३४-३९. ३८:८. ४३:४९, ५०. ४५:१. ४६:१३, १६. ५८:१०. ६२:५१. इथ्रा० ११:३-४, १०-१६. ३ नफी १:११-१४. १३:५-१३. १४:७-११. १७:३. १५:१७, २१. १८:१५-२४, ३०. १९:६-१०. १७:३६. २०:१. २७:१, २, ७, ९, २८, २९. २८:१-९, ३०. मार० ९:६, २१, २८, ३६, ३७. एथ० १:३४-४३. २:१४, १५, १८-२२. ३:१-५. मरो० ६:४, ५, ९, ७:६-१०, २६, ४८. ८:३, २६. १०:४-५.

लिख नहीं सकता जो कि हम लोगों को शिक्षा दी गई थी; और न तो मैं (१) लिखने में ही उतना शक्तिशाली हूं जितना बोलने में; क्योंकि जब कोई पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा बोलता है तब पवित्रात्मा की शक्ति मानव हृदय के अन्दर तक वह बात पहुंचा देती है।

२. लेकिन सुनो, बहुत से लोग पवित्र-आत्मा के प्रति अपने हृदयों को कठोर कर लेते हैं जिससे उनके हृदयों में पवित्रात्मा के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता है; इसलिए बहुत सी लिखी बातों को वे फेंक देते हैं और उन्हें कोई महत्व नहीं देते।

३. लेकिन मैं, नफी ने, इन बातों को लिखा है, और मैं इन्हें बड़े महत्व का समझता हूं, विशेष कर मेरे अपने लोगों के लिए। दिन में मैं लगातार उनके लिए प्रार्थना करता हूं, और रात को उनके कारण मेरी आंखें तकिए को भिगोती हैं; विश्वास के साथ मैं अपने परमेश्वर को पुकारता हूं और मुझे विश्वास है कि वह मेरी पुकार को सुनेगा।

४. और मैं यह जानता हूं कि परमेश्वर मेरे लोगों के हित के लिए मेरी प्रार्थनाओं की प्रतिष्ठा करेगा। और मैंने जिन बातों को निर्बलता के साथ लिखा है, उनके लिए प्रबल कर दी जाएंगी; क्योंकि वे बातें उनको भले कार्य करने की प्रेरणा दे रही हैं; ये उन्हें उनके (२) पूर्वजों की जानकारी देतीं, मसीह के विषय में चर्चा करतीं और उनसे उस पर विश्वास करने की और अन्त तक सहनशील बने रहने का आग्रह करती हैं, जिससे उनको अनन्त जीवन मिल सके।

५. वह स्पष्ट सच्चाई के अनुसार पापों के विरुद्ध (३) कठोर बातें कहती हैं; इसलिए जिन बातों को मैंने लिखा उससे शैतान की आत्मा को छोड़ कर, कोई क्रुद्ध नहीं होगा।

६. (४) स्पष्ट बातों से मुझे आनन्द मिलता है; सच्चाई में मुझे आनन्द मिलता है; मुझे अपने मसीह में आनन्द मिलता है क्योंकि उसने मेरी आत्मा को (५) अधोलोक से बचा लिया है।

७. अपने लोगों के लिए मेरे पास दया है, और मसीह में बहुत बड़ा विश्वास है जिससे उसके न्याय-सिंहासन के सामने मैं बहुत सी बेदाग आत्माओं से मिल सकूंगा।

८. यहूदियों के लिए मेरे पास दया है—मैं यहूदी इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि मेरा अर्थ उस स्थान से है जहां से मैं आया हूं।

९. मेरे पास अन्य जातियों के लिए भी दया है। लेकिन देखो, जब तक वे मसीह के साथ संधि नहीं कर लेते और (६) संकरे द्वार से बाड़े में प्रवेश करके मानव शरीर के परीक्षा काल के अन्त तक उस सीधे पथ पर नहीं चलते जो कि जीवन का मार्ग है, तबतक मैं उनके लिए कोई आशा नहीं करता।

१०. और अब, मेरे प्रिय भाइयों, यहूदियों और संसार के कोने कोने के लोगों इन बातों को सुनो और मसीह पर विश्वास लाओ; अगर तुम इन बातों पर विश्वास नहीं करते तब तुम मसीह पर विश्वास लाओ।

अगर तुम मसीह पर विश्वास करोगे, तब तुम इन बातों पर भी विश्वास करोगे, क्योंकि ये सब बातें मसीह की वाणी हैं और उसी ने मुझे दी हैं; और ये बातें सब को अच्छे कर्म करने की शिक्षा देती हैं।

११. और अगर ये बातें मसीह की नहीं हैं, तब तुम निर्णय करो—क्योंकि अन्तिम दिन मसीह इन्हें (७) बहुत बड़ी शक्ति और यश के साथ तुम्हें दिखाएगा कि ये सब उसी की वाणियां हैं; और हम एक दूसरे के समक्ष होकर उसके न्यायालय में खड़े होंगे, और तब तुम यह जानोगे कि मेरी त्रुटियों के होते हुए भी उसने इन बातों को लिखने की आज्ञा मुझे दी थी।

१२. मैं मसीह के द्वारा पिता से प्रार्थना करता हूं कि अगर हम सब नहीं तब हममें से बहुत से लोग उस अन्तिम और महान दिन उसके राज्य में बचा लिए जाएं।

१३. और अब मेरे प्रिय भाइयों, और वे सब जो इस्राएल के वंश के लोग हैं, और संसार के कोने-कोने के लोगों, मैं तुम सब से ऐसे बात करता हूं जैसे कोई (८) कब्र से बोल रहा हो; विदा, तब तक के लिए, जब तक वह महान दिन नहीं आता।

(१) ए० १२:२३-२७. (२) देखो ७, २ नफी ३. देखो ५, २ नफी ३०. (३) १ नफी १६:१-३. १७:४८. २ नफी १:२५-२७. इ० २३ यिर्म० १२. मा० वा० १७. मरो० ९:४. (४) देखो २. २ नफी २५. (५) देखो ११, १ नफी १५. (६) देखो २७, २ नफी ९. (७) ए० ४:८:१०. ५:४-६. मरो० ७:३५. १०:२७. (८) देखो १२, २ नफी २६. ईसा से ५५९ से ५४५ वर्षों पूर्व के मध्य

१४. और तुम जो परमेश्वर के उपकारों को स्वीकार नहीं करते, मेरे और यहूदियों की बातें नहीं सुनते और न तो परमेश्वर के मेमने के मुख से निकली बातों को मानते हो, सुनो, मैं तुमसे सदैव के लिए विदा चाहता हूं क्योंकि (९) मेरी ये बातें अन्तिम दिन को तुम्हें अपराधी ठहराएंगी।

१५. क्योंकि जिन बातों पर मैं (१०) इस संसार में मुहर लगा रहा हूं वे सब न्यायालय में तुम्हारे विरुद्ध लाई जाएंगी; क्योंकि प्रभु ने मुझे यही आज्ञा दी है और मैं इसका पालन अवश्य ही करूंगा। आमीन।

नफी के भाई याकूब की पुस्तक

उसके अपने भाइयों को दिए उपदेश के शब्द। मसीह के सिद्धांत पर विजय पाने का प्रयत्न करने वाले व्यक्ति को पराजित करना। नफी के लोगों के इतिहास की कुछ बातें।

अध्याय १

नफायटी और लमनायटी लोग—लेही के पुत्र नफी की मृत्यु—हृदय की कठोरता और पापयुक्त रीतियां।

१. ऐसा हुआ कि यरूशलेम से लेही को आए* पचपन वर्ष हो गए हैं, और लेही ने मुझ, याकूब को (१) उन छोटी पटियों के विषय में एक आज्ञा दी है जिन पर ये बातें लिखी हैं।

२. और उसने मुझ याकूब को यह आज्ञा दी थी कि जिन कुछ बातों को मैं अत्यन्त महत्वपूर्ण समझूं केवल उन्हीं बातों को इन पर अंकित करूं, और नफी के लोग कहे जाने वालों के इतिहास की चर्चा बहुत ही कम करूं।

३. क्योंकि उसने कहा है कि उसके लोगों का इतिहास उसकी (२) दूसरी पटियों पर अंकित किया जाए और मैं इन पटियों को सुरक्षित रख कर अपने वंश वालों को दूं, जिससे कि इसे उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए दिया जा सके।

४. और अगर कुछ पवित्र उपदेश, या महत्वपूर्ण दैवी ज्ञान या भविष्यवाणी हो जिनका शीर्षक (३) इन पटियों पर मुझे अंकित करना है, तब मसीह के लिए और अपने लोगों के हित के कारण उनका जितना विवरण हो सके, उन्हें मैं अंकित करूं।

५. अपने विश्वास और व्यग्रता के कारण हमको अपने लोगों के बारे में सचमुच यह प्रकट किया गया है कि हमको (४) किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

६. हमें बहुत से दैवी-ज्ञान प्राप्त हुए हैं, और बहुत सी भविष्यवाणियों के सार भी। इसलिए हमें आने वाले मसीह और उसके राज्य के विषय में जानकारी है।

७. इसलिए हमने अपने लोगों में परिश्रम किया जिससे कि वे मसीह के पास आयें और परमेश्वर की उदारता में भाग लें, उसकी शरण में प्रवेश कर सकें वरना वह क्रोध में आकर उनको उसी प्रकार प्रवेश करने से रोक देगा जिस प्रकार इस्राएल के वंश ने जंगली प्रदेश में पड़ कर, उत्तेजित होकर, उसके क्रोध को झेला था।

८. इस कारण, हम परमेश्वर के लिए सभी लोगों से आग्रह करते हैं कि वे परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करके उसे क्रोधित न करें, परन्तु सब मसीह पर विश्वास करें और उसकी मृत्यु, क्रूस पर का कष्ट और जगत के लज्जास्पद व्यवहार का अपने ऊपर लेने का ध्यान रखें; इसलिए मैं, याकूब अपने भाई नफी की (५) आज्ञा को पूरा करने का भार अपने ऊपर ले रहा हूं।

९. और अब नफी वृद्ध हो चला है और वह जानता है कि मृत्यु शीघ्र हो जाएगी; इसलिए उसने राजाओं की शासन पद्धति अनुसार एक मनुष्य को राजा नियुक्त कर दिया है।

(९) देखो १७, २ नफी २७. (१०) इला० १०:५-११. देखो १७, २ नफी २७. अध्याय १. याकूब की पुस्तक. (१) देखो २, १ नफी ६. (२) देखो ६, १ नफी १. (३) पद्य १, देखो २, १ नफी ६. (४) १ नफी अध्याय १२-१४, १५. १-१८. १९:१०-१७. २२:७, ८. २ नफी १:५-१२, २:३. अध्याय ३, ४:१-११, अध्याय १०, २५-२७. २९:११-१४. ३०:१-६. (५) पद्य १-४.

*ईसा से ५४४ से ४२१ वर्षों पूर्व के मध्य

१०. नफी लोगों के लिए एक महान रक्षक था, उनकी सुरक्षा के लिए लबान की तलवार वह काम में लाया और सारा जीवन लोगों की भलाई करता रहा, इसलिए लोग उससे बहुत ही अधिक प्यार करते थे।

११. इसलिए लोग उसके नाम को याद रखना चाहते थे। इसलिए जो भी उसके स्थान पर शासन करेगा उसका नाम (६) द्वितीय नफी, तृतीय नफी आदि होगा और लोगों द्वारा इसी प्रकार उनको पुकारा जाएगा।

१२. और ऐसा हुआ कि नफी की मृत्यु हो गई।

१३. जो लोग लमनायटी नहीं थे, वे नफायटी थे; फिर भी उनको नफायटी, याकूबियों, यूसुफियों, जोरमियों, लमनायटियों लमुवेलियों और इस्मायलियों के नाम से पुकारा जाता था।

१४. लेकिन मैं याकूब आगे उनको उनके भिन्न भिन्न नामों से नहीं पुकारूंगा परन्तु जो लोग नफी के लोगों को नष्ट करना चाहते हैं उन्हें लमनायटी और जो लोग नफी के मित्र होंगे उन्हें नफायटी या राजाओं के शासनानुसार उन्हें नफी के लोग कहूंगा।

१५. और अब (७) द्वितीय राजा के शासन काल में लोग अपने हृदयों में कठोर होने लगे; और जैसे दाऊद, सुलेमान और उसके पुत्र के काल में लोगों ने बुरी रीतियों को अपना लिया था, उसी प्रकार इन लोगों ने भी बहुपत्नी प्रथा और रखैलों को रखने की प्रथा अपना ली है।

१६. हां, वे अधिक सोना चांदी खोजने लगे हैं और अधिक अहंकारी भी हो गए हैं।

१७. इसलिए मैं, याकूब ने, प्रथम प्रभु से अपने कर्तव्य को प्राप्त करके (८) मन्दिर में उपदेश देते हुए इन शब्दों को मैंने उनसे कहा।

१८. क्योंकि अपने भाई नफी (९) द्वारा नियुक्त मैं याकूब और मेरा भाई यूसुफ इन लोगों के पुरोहित और शिक्षक हैं।

१९. अगर हमने परिश्रम के साथ लोगों को परमेश्वर की वाणी की शिक्षा नहीं दी तब हम उनके पापों का उत्तरदायित्व अपने सिरों पर लेकर परमेश्वर के प्रति अपनी जिम्मेवारियों का भार बढ़ा लेते हैं; इसलिए हम अपने पूरे बल के साथ परिश्रम करेंगे जिससे कि हमारे वस्त्र पर उनका (१०) रक्त न पड़े; नहीं तो उनका रक्त हमारे वस्त्र पर आ जायेगा, और हम अन्तिम दिन बेदाग नहीं ठहर सकेंगे।

अध्याय २

याकूब द्वारा व्यभिचार और दूसरे पापों की भर्त्सना करना—दुष्कर्म के कारण बहुपत्नी प्रथा वर्जित।

१. नफी की मृत्यु के पश्चात् नफी के भाई याकूब के शब्द जिसे उसने नफी के लोगों से कहा :

२. और अब मेरे प्रिय भाइयों, मैं, याकूब, परमेश्वर के प्रति मेरी जो जिम्मेवारी है उसे मैं अपनी बुद्धि के अनुसार निभाऊंगा जिससे कि मैं अपने (१) वस्त्र को तुम्हारे पापों से साफ कर सकूं। आज मैं मन्दिर में इसलिए आया हूं कि जिससे मैं तुम्हें परमेश्वर की वाणी सुना सकूं।

३. तुम स्वयं जानते हो कि मैं अपने कर्तव्य की पुकार पर सदैव उद्योगी रहा हूं; परन्तु अब मैं तुम्हारी आत्मा की उन्नति और आनन्द की इच्छा के बोझ से इतना दब गया हूं कि जितना पहले कभी नहीं दबा था।

४. क्योंकि देखो, इसी प्रकार तुमने प्रभु के उन वचनों को प्राप्त किया है, जिसे मैंने तुम्हें दिया है।

५. लेकिन देखो, तुम मेरी बात सुनो और यह समझ लो कि जगत के सामर्थ्यवान रचयिता की सहायता से मैं तुम्हारे विचारों को बता सकता हूं कि तुम किस प्रकार पापमय कर्म करते हो जो कि मेरे लिए और परमेश्वर के लिए अति घृणित है।

६. तुम्हारे दुष्कर्मों की साक्षी देने से मेरी आत्मा को दुःख होता है और अपने निर्माता के सामने मुझे लज्जा अनुभव होती है।

७. इससे भी मुझे कष्ट हो रहा है कि तुमसे सम्बन्धित बातों को मैं निर्भीकतापूर्वक तुम्हारी पत्नियों और बच्चों के समक्ष कह रहा हूं जिनमें से

(६) पद्य ९, १४, १५. २ नफी ५:१८. (७) पद्य ११. (८) देखो ८, २ नफी ५. (९) २ नफी ५-२६.
अध्याय २. (१) देखो १०, या० १.

बहुतों की (२) भावनाएं प्रभु के समक्ष अत्यन्त कोमल और सतीत्वमय है, जो परमेश्वर को प्रिय हैं।

८. और मैं यह सोचता हूं कि वे यहां परमेश्वर के आनन्द देने वाले उन शब्दों को सुनने के लिए आए हैं जो कि आहत हृदय को स्वस्थ करते हैं।

९. परमेश्वर की जो कठोर आज्ञा मुझे मिली है उससे मैं हूं, जो तुमको तुम्हारे पापों के अनुसार चेतावनी देने, जो चोट खाए हैं उनको सांत्वना देने और उनके घावों को ठीक करने के बदले उनके घावों को और बढ़ने और जिनको चोट नहीं पहुंची है उनको परमेश्वर के आनन्दमय शब्दों के बदले उनकी आत्मा और बुद्धि को भेदने के लिए कटार रखने को विवश हूं।

१०. अपने इस महान कर्तव्य की अवहेलना न करके परमेश्वर की इस कड़ी आज्ञा के अनुसार अपने कर्तव्य का पालन करते हुए मुझे तुम्हें तुम्हारे दुष्कर्मों और घृणित कार्यों को शुद्ध हृदय और टूटे हृदय वालों और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की (३) तीक्ष्ण दृष्टि के समक्ष बतलाना ही पड़ेगा।

११. इसलिए (४) परमेश्वर की स्पष्ट वाणी के अनुसार ही मुझे तुम्हें बतलाना पड़ेगा। क्योंकि देखो, जब मैंने परमेश्वर से पूछा तब उसने मुझसे कहा : याकूब कल सुबह तुम (५) मन्दिर जाओ और इन लोगों के लिए जो बातें मैं तुम्हें बताऊंगा उसकी घोषणा उनसे करो।

१२. और अब, मेरे प्रिय भाइयों, मैं तुम्हारे लिए इन शब्दों की घोषणा करता हूं कि तुममें से बहुत से लोगों ने सोना, चांदी, और हर प्रकार की मूल्यवान धातुओं को ढूंढ़ना आरम्भ कर दिया है, जो तुम्हारे और तुम्हारे वंशजों के लिए प्रतिज्ञा के इस (६) देश में बहुत (७) अधिक भरा पड़ा है।

१३. परमेश्वर की कृपा तुम्हारे ऊपर मुस्कराई है जिससे तुम्हें कई प्रकार की सम्पत्तियां प्राप्त हुई हैं; और तुममें से कुछ लोगों ने अपने भाइयों से भी अधिक मम्पत्ति प्राप्त कर ली है, इसलिए तुम अभिमान से फूल उठे हो, हठी हो गए हो और अपने मूल्यवान (८) वस्त्रों के कारण अपनी गर्दन टेढ़ी किए अपने भाइयों को इसलिए कष्ट देते हो क्योंकि तुम अपने आपको अपने भाइयों से श्रेष्ठ समझते हो।

१४. मेरे प्रिय भाइयों, क्या परमेश्वर उससे तुमको निर्दोष ठहराएगा? सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं। इसके लिए वह अपराधी ठहराता है और अगर वह दृढ़ रहा तब तुम्हारे ऊपर उसका न्यायदण्ड शीघ्र ही आएगा।

१५. वह तुम्हें दिखाएगा कि वह तुम्हें बेध सकता है और अपनी आंख से (९) एक बार ताक कर ही तुम्हें धूल में मिला सकता है।

१६. ओह! क्या ही अच्छा होता कि वह तुम्हें इस पाप और घृणा से बचा लेता। क्या ही अच्छा होता कि तुम उसकी आज्ञा को मानते और अपने हृदय के अहंकार से अपनी आत्मा को नष्ट नहीं होने देते।

१७. अपनी ही तरह अपने भाइयों को समझो, सभी से मेल-जोल रखो और अपनी सम्पत्ति से दूसरों की सहायता करो जिससे कि (१०) वे भी तुम्हारी तरह ही सम्पन्न हो जायें।

१८. लेकिन सम्पत्ति खोजने से पहले तुम परमेश्वर के राज्य को खोजो।

१९. और मसीह में आशा कर लेने के पश्चात् अगर धन प्राप्त करने की लालसा हो, तब धन प्राप्त करो, परन्तु उपकार करने की आशा से प्राप्त करो; वस्त्रहीन को वस्त्र देने के लिए, भूखों को भोजन कराने के लिए, बन्दियों को मुक्त करने के लिए, बीमारों को स्वस्थ करने के लिए और पीड़ित का क्लेश मिटाने के लिए।

२०. मेरे भाइयों, मैंने तुमसे अहंकार के विषय में कहा; और तुममें से जिन्होंने परमेश्वर की दी हुई वस्तुओं के कारण अपने हृदय के अहंकार से, अपने पड़ोसियों को कष्ट पहुंचाया है, तुम उसके विषय में क्या कहते हो?

(२) पद्य ९, २८, ३३, ३५. याकू० ३:७. मरो० ९:९, १०. (३) २ नफी ९:४४. या० २:१५. मू० २७:३१. (४) देखो ४, २ नफी ३३. (५) देखो ८, २ नफी ५. (६) १ नफी २:२०. ४:१४. ५:२२. १२:१, ४. १३:१२, १४, ३०. १७:१३, १४. १८:८, २३, २५. (७) देखो ७, २ नफी ५. (८) २ नफी २८:१४. मार० ८:३६-४०. (९) देखो ३. (१०) मू० ४:१६, २२, २६. अल० १:२६-३०. ४ नफी ३, २४-२६.

२१. क्या तुम यह नहीं सोचते कि जिसने सारे प्राणियों की रचना की है ऐसे कार्य उसके लिए घृणित हैं? और उसकी दृष्टि में जितना मूल्यवान एक है उतना दूसरा भी। और सभी शरीर मिट्टी के हैं; और सभी के समान अंत के लिए उसने उन्हें रचा है, जिससे कि वे उसकी आज्ञाओं का पालन कर सकें और सदैव के लिए उसका यशगान करें।

२२. इस अहंकार के विषय में मैं अब बोलना समाप्त करता हूं। अगर मुझे इस भारी अपराध के विषय में बोलना न पड़ता तब मेरा हृदय आनन्दित होता।

२३. लेकिन तुम्हारी भारी भूलों के कारण परमेश्वर की वाणी मुझ पर भार डाल रही है। क्योंकि सुनो, प्रभु इस प्रकार कह रहा है : ये लोग पाप कर्म करने में आगे बढ़ने लगे हैं, वे धर्मशास्त्र नहीं समझते क्योंकि दाऊद, सुलेमान और उसके पुत्र के विषय में जो कुछ लिखा है उसका बहाना करके वे अपने व्यभिचार से दोषमुक्त होने का प्रयास करते हैं।

२४. देखो, प्रभु कहता है कि दाऊद और सुलेमान ने सचमुच (११) कई पत्नियों और रखैलों को रखा था, परन्तु पहले ही से (१२) यह कर्म मेरे समक्ष घृणित था।

२५. इस कारण प्रभु कहता है कि मैं अपने हाथ की शक्ति के द्वारा इन लोगों को यरूशलेम से इसलिए निकाल लाया कि जिससे मैं यूसुफ के वंश में से (१३) एक धार्मिक शाखा खड़ी कर सकूं।

२६. इस कारण मैं यह नहीं सह सकूंगा कि ये लोग भी प्राचीन युग की तरह कार्य करें।

२७. इसलिए, मेरे भाइयों, मुझे सुनो, और परमेश्वर की वाणी सुनो : तुममें से हर एक की (१४) एक ही पत्नी होनी चाहिए और रखैल एक भी नहीं।

२८. क्योंकि मैं, प्रभु परमेश्वर, स्त्रियों के सतीत्व से प्रसन्न होता हूं। और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मेरे समक्ष (१५) व्यभिचार अत्यन्त ही घृणित है।

२९. सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है कि ये लोग मेरी आज्ञाओं का पालन करेंगे नहीं तो इनके कारण (१६) इस देश को श्राप दिया जाएगा।

३०. सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है कि अगर मैं अपने लिए किसी वंश को खड़ा करूंगा तब मैं (१७) उनको आज्ञाएं दूंगा नहीं तो वे (१८) निम्न बातों को सुनेंगे—

३१. क्योंकि देखो, यरूशलेम देश में मैं, प्रभु ने अपने लोगों की पुत्रियों को दुःख में, और रोते लिखते देखा है, हां मेरी प्रजा के सभी अन्य देशों में भी, अपने (१९) पतियों के घृणित कार्यों के कारण स्त्रियों को मैंने दुःख में विलाप करते देखा है।

३२. सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि जिन लोगों को, मैंने यरूशलेम देश से निकाला है उनकी सुन्दर कन्याओं का रुदन यदि उनके पुरुषों के विरुद्ध कहीं मेरे पास पहुंचा तब मैं उसको सह नहीं सकूंगा।

३३. सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि मेरी प्रजा की पुत्रियों को वे उनकी कोमलता के कारण दासता में नहीं ले जा सकेंगे, नहीं तो मैं (२०) उन्हें एक भीषण शाप दूंगा, यहां तक कि मैं उनका विनाश कर दूंगा; सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है कि प्राचीन काल की तरह वे (२१) व्यभिचार नहीं कर सकेंगे।

३४. देखो मेरे भाइयों, तुम यह जानते हो कि हमारे (२२) पिता लेही को ये आज्ञायें दी गई थीं; इसलिए तुम इन्हें पहले से ही जानते हो; इस कारण तुम भारी अपराध के अपराधी ठहरते हो; क्योंकि तुमने उस कार्य को किया है जो तुम्हें नहीं करना चाहिए था।

३५. देखो, हमारे भाई लमनायटियों से भी अधिक पाप तुमने किए हैं। तुमने अपनी सुकुमार

(११) १ राजा ११:१-३. २ सामु० ३:२-५, १४. ५:१३. ११:२६, २७. १२:७-१२, २४. १५:१६. १६:२१, २२. १९:५. २०:३. १ राजा १:१-४. (१२) १ राजा ११:९-११. व्य० ७:१-४. १७:१४-१७. एज्रा ९:१. २ नहे० १३:२३-२७. (१३) २ नफी ३:५. (१४) पद्य ३४. या० ३:५-७. (१५) देखो ९, २ नफी २८. (१६) या० ३:३. अल० ४५:१६. ए० २:७-१२. (१७) सि० शर्त० १३२. (१८) पद्य २७, ३४. या० ३:५. (१९) यहे० १६:२२-४३. (२०) देखो १६. (२१) देखो ६, २ नफी २८. (२२) १ नफी १:१६, १७. ६:१.

पत्नियों के हृदय को तोड़ा है और अपने बुरे उदाहरणों के द्वारा अपनी सन्तानों का विश्वास खो दिया है और उनका रुदन तुम्हारे विरुद्ध परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा है। और परमेश्वर (२३) के कठिन आदेश जो ऊपर से तुम्हारे विरुद्ध आ रहे हैं, उसके कारण बहुत से क्षत-विक्षत होकर मर चुके हैं।

अध्याय ३

याकूब की भर्त्सना का क्रम—नफायटियों से अधिक धार्मिक लमनायटी—विवाह में लमनायटियों की ईमानदारी के प्रति निष्ठा के कारण प्रशंसा—नफायटियों को पुनः चेतावनी।

१. लेकिन देखो, मैं याकूब, तुमसे बोलता हूं जो हृदय से शुद्ध हैं। बुद्धि की स्थिरता से परमेश्वर को देखो, और अपने (१) भारी विश्वास के साथ उससे प्रार्थना करो, और वह तुम्हारे कष्टों में तुम्हें सांत्वना देगा, तुम्हारे पक्ष का समर्थन करेगा, और जो तुम्हें नष्ट करने का उपाय खोजते हैं उनके ऊपर वह न्यायदण्ड भेजेगा।

२. हे तुम सब हृदय के शुद्ध लोगों, अपने सिरों को ऊपर उठा कर परमेश्वर के आनन्ददाई वचनों को ग्रहण करो, और उसके प्रेम का भोग लगाओ, और अगर तुम्हारी बुद्धि दृढ़ रही तब तुम सदैव के लिए उसके प्रेम में आनन्द विभोर रहोगे।

३. लेकिन धिक्कार है तुमको, जिनका हृदय शुद्ध नहीं है, और जो आज परमेश्वर के आगे दूषित ठहरते हैं; और अगर तुम पश्चात्ताप नहीं करोगे, तब तुम्हारे कारण इस (२) देश को श्राप मिलेगा; और लमनायटी जो तुम्हारी तरह दूषित नहीं हैं, फिर भी (३) कष्टदाई श्राप से शापित हैं, वे तुम्हारे विरुद्ध उत्पात मचाएंगे और तुम्हें नष्ट भी कर सकते हैं।

४. और वह समय शीघ्रता के साथ आयेगा जबकि अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब (४) तुम्हारे इस पैतृक देश पर वे अधिकार कर लेंगे और प्रभु परमेश्वर तुममें से धार्मिक लोगों को निकाल ले जाएगा।

५. देखो, तुम्हारे भाई लमनायटी जिन्हें तुम उनकी शापित चमड़ी और (५) उसकी गन्दगी के कारण घृणा करते हो, वे तुमसे अधिक धार्मिक हैं; क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की उस आज्ञा को नहीं भुलाया जो हमारे पूर्वजों को दी गयी थी कि (६) उन्हें केवल एक ही पत्नी रखनी चाहिए और रखैल एक भी नहीं, और उनमें व्यभिचार भी नहीं होना चाहिए।

६. वे इस आज्ञा का पालन करते हैं; इस आज्ञा का पालन करने के कारण प्रभु परमेश्वर उनको नष्ट नहीं होने देगा बल्कि उनके प्रति दयालू बना रहेगा और (७) एक दिन वे प्रभु द्वारा वरदानित लोग होंगे।

७. देखो, उनके पति अपनी पत्नियों को और पत्नियां अपने पतियों को प्रेम करती हैं; और पति-पत्नियां अपने बच्चों से प्रेम करते हैं; और तुम्हारे प्रति उनका अविश्वास और घृणा उनके पूर्वजों के पापों के कारण है; इसलिए अपने महान रचयिता की दृष्टि में तुम उनसे कितना श्रेष्ठ ठहरते हो?

८. हे मेरे भाइयों, अगर तुमने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया, तब मुझे भय है कि जब तुमको प्रभु के न्याय सिंहासन के सामने उनके साथ लाया जाएगा, तब उनकी खाल तुम्हारी खाल के सामने अधिक उज्ज्वल ठहरेगा।

९. इस कारण मैं तुम्हें एक आज्ञा देता हूं जो परमेश्वर की वाणी है और वह है तुम उनके (८) काले चर्म के कारण उनकी निन्दा मत करो और न तो उनकी गन्दगी के कारण उनकी निन्दा करो; लेकिन तुम अपनी गन्दगी को याद करो और यह भी याद रखो कि उनकी गन्दगी उन्हें अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई है।

१०. इसलिए तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि जो उदाहरण तुम अपने बच्चों के सामने रख रहे हो उससे उनका हृदय दुःखित है; और यह

(२३) याकूब २:२७, ३४. ३:५. अध्याय ३. (१) देखो ५, २ नफी ३२. (२) देखो १६, या० २. (३) देखो ४, १ नफी २. (४) ओम० ५-७, १२, १३. (५) देखो ४, १ नफी २. (६) देखो १४, या० २. (७) १ नफी १५:१३-१८. २२:८. देखो ६, २ नफी ३. (८) देखो ४, १ नफी २.

भी याद रखो कि अपने दोषों के कारण तुम उनका विनाश लाओगे और अन्तिम दिन उनका पाप तुम्हारे सर पर होगा।

११. हे मेरे भाइयों, मेरी बातों को सुनो; तुम अपनी आत्मा की आन्तरिक शक्ति को जगाओ; मृत्यु की नींद से जागो; अपने आपको उस अधोलोक की पीड़ा से बचाओ जिससे कि तुम (९) शैतान के दूत बनने से बच सको और (१०) उस आग और गन्धक के कुण्ड में फेंके जाने से बचो।

१२. और मैं, याकूब ने, नफी के लोगों से बहुत सी बातें व्यभिचार और कामुकता और हर प्रकार के पापों के परिणामों के बारे में कहीं और उनके विरुद्ध उन्हें चेतावनी दी।

१३. इन लोगों के बढ़ते हुए कार्य व्यापार के विवरण का एक प्रतिशत (११) भी इन पटियों पर नहीं लिखा जा सकता; लेकिन उनके बहुत से कार्य, उनके युद्ध, उनके विवाद और उनके राजाओं के राज्य शासन का वर्णन (१२) बड़ी पटियों पर अंकित किया गया है।

१४. इन पटियों को याकूब की पटियां कहा जाता है और इनको (१३) नफी के हाथों द्वारा बनाया गया था। और अब मैं इन बातों को कहना समाप्त करता हूं।

अध्याय ४

याकूब की शिक्षा का क्रम—मसीह की ओर संकेत करता हुआ, नफायटियों में मूसा का नियम—यहूदियों द्वारा उसका बहिष्कार किए जाने का भविष्य-दर्शन।

१. ऐसा हुआ कि मैं, याकूब ने, अपने लोगों को बहुत उपदेश दिये (पटियों पर अंकित करने के (१) कठिन कार्य के कारण मैंने उन सब बातों से थोड़े से ही शब्दों को अंकित किया है) और हम जानते हैं कि जो कुछ हम अंकित करते हैं वह स्थायी रहेगा;

२. और जो कुछ हम पटियों को छोड़ कर अन्यत्र लिखते हैं वह नष्ट हो जाएगा और अदृश्य हो जाएगा, परन्तु पटियों पर हम थोड़े से शब्द लिख रहे हैं जो हमारे बच्चों और प्रिय भाइयों को हमारे और उनके पूर्वजों के विषय में थोड़ा सा ज्ञान देगा—

३. इन बातों से हमें आनन्द मिलता है; और हम इस आशा से लगातार परिश्रम करके इन शब्दों को पटियों पर अंकित कर रहे हैं कि हमारे प्रिय भाई और बच्चे कृतज्ञ हृदय से इन्हें स्वीकार करेंगे, और प्रसन्नता के साथ इनसे शिक्षा ग्रहण करेंगे और अपने आदि पूर्वजों से सम्बन्धित ज्ञान को ग्लानि अथवा अनादर की दृष्टि से नहीं देखेंगे।

४. हम इस उद्देश्य से इन बातों को लिख रहे हैं ताकि वे यह जानें कि हम मसीह को जानते हैं, और उसके आने के कई सौ वर्ष पूर्व ही उसके यश की आशा रखते हैं; और केवल हम ही उसके गौरव की आशा नहीं रखते हैं बल्कि हम से पूर्व जितने पवित्र भविष्यवक्ता हुए हैं वे सब भी इसके यश की आशा करते थे।

५. देखो, उन्होंने मसीह में विश्वास किया, और उसके नाम से पिता की आराधना की, और हम भी पिता की आराधना उसी के नाम से करते हैं। (२) इसी उद्देश्य से हम मूसा के नियम का पालन करते हैं जो हमारी आत्मा को उसकी ओर करता है, और इसी कारण हमारी धार्मिकता के लिए इसे उसी तरह पवित्र किया गया है जैसे वन में इब्राहीम परमेश्वर की आज्ञा को मान कर अपने पुत्र इसाक को बलि चढ़ाने के लिए तैयार हो गया था, जो कि परमेश्वर और उसके इकलौते पुत्र का प्रतीक था।

६. इस कारण हम भविष्यवक्ताओं को ढूंढ़ते हैं, और हमें बहुत सा दैवी-ज्ञान और भविष्यवाणियों के सार प्राप्त हुए हैं; और इन सभी साक्षियों को प्राप्त करने के पश्चात् हमें आशा हुई है और हमारा विश्वास इतना दृढ़ हो चुका है कि हम (३) सचमुच मसीह के नाम पर आज्ञा दे सकते हैं

(९) देखो ९, २ नफी ९. (१०) देखो ११, १ नफी १५. (११) देखो २, १ नफी ६. (१२) देखो ६, १ नफी १. (१३) १ नफी १९:२३. २ नफी ५:३०-३२. अध्याय ४. (१) ए० १२:२३-२६. (२) देखो १५, २ नफी २५. (३) १ नफी ७:१७, १८. १७:४८, ५०, ५३-५५. या० ७:१३-१९. मू० १३:३-६. अल० १४:२६-२९. इब्र० १०:५-११. ३ नफी २८:१९-२२. मार० ८:२४. ए० १२:३०.

और वृक्ष, पर्वत और समुद्र की लहरें हमारी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

७. फिर भी प्रभु परमेश्वर हमारी त्रुटियों को हमें दर्शाता है जिससे कि हम यह समझ सकें कि मानव वंश पर उसकी महान कृपा और दया के बल पर ही हम यह सबकुछ कर सकते हैं।

८. देखो, परमेश्वर के काम महान और आश्चर्य-जनक हैं। उसके गूढ़ रहस्य कितने गहरे और मानव की खोज से परे हैं; और उसकी सब युक्तियों का भेद पाना मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है। कोई भी मनुष्य उसकी युक्तियों का पता तब तक नहीं पा सकता जब तक कि उस पर उसका भेद खोला नहीं जाता; इसलिए, भाइयो, परमेश्वर के देवी-ज्ञान की अवहेलना मत करो।

९. क्योंकि देखो, मनुष्य उसके (४) शब्द की शक्ति के द्वारा उस जगत पर आया जोकि उसके शब्द की शक्ति द्वारा रचा गया था। इसलिए अगर और बोलने से मनुष्य की रचना हुई तब वह क्यों पृथ्वी को आज्ञा नहीं दे सकता, या पृथ्वी पर उसकी इच्छा अनुसार उसके हाथों की कारागरी क्यों नहीं हो सकती?

१०. इस कारण, भाइयों, परमेश्वर को सम्मति देने का प्रयत्न मत करो, लेकिन उसके हाथ की सम्मति ग्रहण करो। क्योंकि देखो, तुम यह जानते हो कि वह अपने हर एक काम में विवेकमय अदाहरण न्याय और महान दया दिखाता है।

११. इस कारण, प्रिय भाइयों, उसके इकलौते पुत्र के (५) प्रायश्चित द्वारा उससे समझौता कर लो, तब (६) पुनर्जीवन की जो शक्ति मसीह में है कि तुम्हें पुनर्जीवन प्राप्त हो, और मसीह के मानव शरीर में आने से पूर्व अपने विश्वास और उसमें यश की आशा के कारण मसीह द्वारा तुम्हें अपने (७) प्रथम फल के रूप में परमेश्वर से मिलाया जाये।

१२. हे मेरे प्रिय, लोगों, मेरी इन बातों पर तुम आश्चर्य मत करो; हम क्यों नहीं मसीह के (८) प्रायश्चित की बातें करके उसके सम्बन्ध में सम्पूर्ण ज्ञान उसी प्रकार करें जिस प्रकार एक (९) पुनर्जीवन और आने वाले संसार के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं?

१३. देखो मेरे भाइयों, जो भविष्यवाणी करता है, उसे मनुष्य की समझ के लिए भविष्यवाणी करने दो; क्योंकि पवित्र आत्मा जो कुछ कहती है वह सत्य कहती है, असत्य नहीं। इस कारण जो चीज आज जैसी हैं और भविष्य में जैसी होंगी, वैसा ही वह कहता है; इस कारण ये सब बातें हमारे बीच (१०) स्पष्ट रूप से हमारी आत्माओं की मुक्ति के लिए प्रकट की गई हैं। लेकिन सुनो, इन बातों के केवल हम ही साक्षी नहीं हैं; क्योंकि परमेश्वर ने प्राचीन युग के भविष्यवक्ताओं से भी बातें की थीं।

१४. लेकिन देखो, (११) यहूदी हठी लोग थे; उन्होंने स्पष्ट बातों का निरादर किया और भविष्य-वक्ताओं के प्राण लिए और ऐसी बातों को ढूंढने लगे जिनको कि वे समझते भी नहीं थे। इसलिए वे अपने लक्ष्य से देखने के कारण प्राप्त अन्धेपन के कारण गिरेंगे; क्योंकि परमेश्वर ने अपनी सहजता उनसे लेकर, उनको बहुत (१२) सी ऐसी बातें दे दी हैं जिसे वे समझ नहीं सकते हैं, क्योंकि ऐसी ही उनकी इच्छा थी। उनकी यही इच्छा थी कि पतित हों, इसलिए परमेश्वर ने वैसा ही किया।

१५. और अब, मैं, याकूब, पवित्रात्मा द्वारा भविष्यवाणी करने को प्रेरित किया गया हूं; क्योंकि जो पवित्रात्मा मेरे अन्दर है, उसके द्वारा मैं देख रहा हूं कि यहूदियों के पतन के कारण वे अपने उस नींव के पत्थर को (१३) अस्वीकार कर देंगे जिस पर वे अपनी सुरक्षित नींव डाल सकते थे।

१६. लेकिन देखो, (१४) शास्त्रों के अनुसार यही पत्थर महान, अन्तिम और विश्वस्त नींव होगा जिस पर यहूदी निर्माण कर सकते हैं।

(४) २ नफी २:१४, १५. मू० २:२५. मरो० ९:१७. (५) देखो ६, २ नफी २. (६) देखो ४. २ नफी २. (७) मू० १५:२१-२३. अल० ४०:१६-२१. इला० १४:२५. ३ नफी २३:९-१३. १ कुर० १५:२०. १ थिस्स० ४:१६. प्रका० २०:४, ५. (८) देखो ६, २ नफी २. (९) देखो ४, २ नफी २. (१०) देखो २, २ नफी २५. (११) २ नफी २५:२. या० ६:४. (१२) देखो २, २ नफी २५. (१३) २ नफी १८:१४, १५. यशा० ८:१४-१५. (१४) भज० ११८:२२-२३

१७. और अब, मेरी प्रिय, विश्वस्त नींव को अस्वीकार करके ये लोग कैसे उस पर निर्माण कर सकते हैं जिससे कि वह (१५) कोने का आधार शिला हो सके?

१८. सुनो मेरे प्रिय भाइयों, मैं इस भेद को तुम्हारे सामने खोलूंगा; अगर मैं किसी भी तरह पवित्रात्मा में अपनी दृढ़ता में शिथिल नहीं होऊं और न तुम्हारे लिए अपनी आवश्यकता से अधिक व्यग्रता से ठोकर खा कर गिरूं।

अध्याय ५

याकूब द्वारा भविष्यवक्ता जीनस की चर्चा—अच्छे और जंगली जैतून वृक्ष का दृष्टांत—इस्राएल और यहूदियों से भिन्न जातियां।

१. देखो मेरे भाइयों, क्या तुम्हें यह याद नहीं है कि तुमने भविष्यवक्ता (१) जीनस के उन शब्दों को पढ़ा है जिसे उसने इस्राएल के वंश वालों से इस प्रकार कहा था:

२. हे इस्राएल के घराने वालो, प्रभु के भविष्य-वक्ता की वाणी को सुनो।

३. प्रभु इस प्रकार कहता है, हे इस्राएल के वंश वालो, मैं तुम्हें (२) जैतून के उस वृक्ष की तरह पसन्द करता हूं जिस प्रकार एक मनुष्य ने उसे ले जाकर अपने बगीचे में बोया और उसकी देखभाल की; और वह बढ़ कर पुराना हुआ और सुखने लगा।

४. और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी जब अपने बगीचे में गया और देखा कि उसका जैतून का वृक्ष सूखने लगा है; तब उसने कहा: मैं इसकी सूखी डालियों को काट दूंगा, जड़ के आस पास की मिट्टी खोद कर खाद पानी डालूंगा तब सम्भव है कि इसमें से नई डालियां निकल आयें और यह मरे नहीं।

५. और उसने अपने कहे अनुसार सूखी डालियों को काट डाला, जड़ के आस पास खोद कर मिट्टी मुलायम की और खाद पानी डाला।

६. और तब ऐसा हुआ कि कुछ दिनों के पश्चात् उसमें नई छोटी छोटी मुलायम डालियां निकलने लगीं; लेकिन देखो, जो मुख्य डालियां थीं वह नष्ट होने लगीं।

७. और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने उन्हें देखा और उसने अपने नौकरों से कहा: उस वृक्ष को खोने से मुझे कष्ट हो रहा है; इसलिए जाओ और (३) एक जंगली जैतून की डाली को काट कर मेरे पास लाओ; और हम उन सूखती हुई मुख्य डालियों को काट कर आग में डाल दें ताकि वे जल जायें।

८. बगीचे का स्वामी बोला कि देखो, मैं (४) इन छोटी कोमल डालियों की कलम जहां चाहूंगा बाधूंगा। इस कारण अगर इस वृक्ष की जड़ सूख जाए तो कोई बात नहीं, लेकिन इसके फलों को मैं अपने लिए सुरक्षित रखूंगा; इसी कारण मैं इन छोटी छोटी कोमल शाखाओं की कलम अपनी इच्छानुसार लगाऊंगा।

९. तुम (५) जंगली जैतून वृक्ष की शाखाओं की कलम लाकर इन सूखे शाखाओं के स्थान पर लगाओ; और इन शाखाओं को, जिनको मैंने तोड़ा है उन्हें मैं आग में डाल कर जला डालूंगा जिससे कि ये मेरे बगीचे की भूमि को बेकार न रोकें।

१०. और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी के कहे अनुसार सेवक ने (६) जंगली जैतून के वृक्ष की शाखाओं को लाकर वहां कलम लगाई।

११. बगीचे के स्वामी ने जड़ के आसपास मिट्टी खोद कर मुलायम करवाने, डालियों को छांटने, खाद पानी देने की आज्ञा देकर अपने सेवक से कहा: मुझे इस वृक्ष को खोने से कष्ट हो रहा है; इसलिए इसकी जड़ों को अपने लिए सुरक्षित रखने के लिए मैंने ऐसा किया है।

१२. इस कारण तुम जाओ, मेरे कहे अनुसार पेड़ की देखभाल करो।

१३. और (७) इन छोटी मुलायम डालियों को मैं अपने बगीचे के अन्दर जहां चाहूंगा वहां लगाऊंगा, परन्तु इससे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं; यह मैं इसलिए करूंगा जिससे कि मैं अपने लिए इस वृक्ष की प्राकृतिक डालियों को सुरक्षित रख

(१५) भज० ११८:२२, २३. अध्याय ५. (१) देखो ८, १ नफी १९. (२) १ नफी १०:१२, १४. १५:७, १२, १३, १६. २ नफी ३:५. या० ६:१-७. (३) पद्य ९, १०, १७, १८, ३०-३७, ४६, ५७, ६५, ७३. रोमि० ११:१७, २४. (४) पद्य ५:१३, १४, १९-२७, ३८-४०, ४३-४६, ५२, ५४, ६७, ६८. (५) देखो ३. (६) देखो ३. (७) देखो ४.

सकूं; और उसके फलों को अपनी आवश्यकता के लिए रख सकूं; क्योंकि इस वृक्ष को और इसके फलों को खोने से मुझे कष्ट होगा।

१४. और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपनी योजना पर चल कर, जैतून के उगाए हुए वृक्ष की प्राकृतिक शाखाओं को बगीचे के सब से (८) भीतरी भाग में इधर उधर अपनी इच्छानुसार बो दिया।

१५. और ऐसा हुआ कि (९) बहुत दिनों के पश्चात् बगीचे के स्वामी ने अपने सेवक से कहा: आओ हम बगीचे में चल कर परिश्रम करें।

१६. और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी और उसका सेवक बगीचे में परिश्रम करने के लिए गए। और तब ऐसा हुआ कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा देखो, यहां देखो, इस वृक्ष को देखो।

१७. और तब ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने जब देखा तब उसे वह वृक्ष दिखाई दिया जिसमें जंगली जैतून वृक्ष की डालियों के कलम लगाये गए थे; वे बढ़ कर (१०) फलने लगे थे। उसने देखा कि वे अच्छे थे और उनके फल प्राकृतिक फलों की तरह ही थे।

१८. और उसने अपने सेवक से कहा: देखो, (११) जंगली वृक्ष की डालियों ने उस जड़ के रस को ले लिया है और उस जड़ ने भूमि से बहुत शक्ति प्राप्त की है; और उस जड़ की शक्ति द्वारा जंगली डालियों ने अच्छे फल उत्पन्न किए हैं। अगर हम इन शाखाओं पर कलम नहीं लगाते, तब यह वृक्ष सूख जाता। और अब, देखो, मैं बहुत से उन फलों को प्राप्त करूंगा जिन्हें इस वृक्ष ने उत्पन्न किया है; मैं उन्हें अपने उस समय के लिए जमा करूंगा जब फलने का मौसम नहीं रहता।

१९. और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी अपने सेवक से बोला: आओ हम बगीचे के भीतर चलें और देखें कि क्या उस वृक्ष की प्राकृतिक डालियां भी बहुत फलदायनी हुई हैं या नहीं, जिससे मैं उनके फलों को अपने लिए जमा कर के उस मौसम के लिए रख लूं जब फल नहीं फलते।

२०. तब ऐसा हुआ कि वे बगीचे के उस स्थान पर गए जहां पर स्वामी ने उस वृक्ष की प्राकृतिक शाखाओं को छुपा कर बो दिया था, और उसने नौकर से कहा: इन्हें देखो; तब उसने देखा कि उस प्रथम डाली में बहुत से फल लगे हुए थे और उसने यह भी देखा कि वे फल भी उत्तम फल थे। और उसने अपने सेवक से कहा: इन फलों को तोड़ कर रख लो जिससे कि मैं इनको अपने लिए सुरक्षित रख सकूं; देखो इतने दिनों तक मैंने इनकी देखभाल की है, तभी इसमें बहुत से फल लगे हैं।

२१. तब ऐसा हुआ कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा: आपने कैसे यहां इस वृक्ष को या उस वृक्ष की इस डाल को यहां बोया; क्योंकि देखिए, यह स्थान तो सारे बगीचे की सबसे (१२) खराब भूमि है।

२२. बगीचे के स्वामी ने उससे कहा: मुझे सलाह मत दो; मैं जानता था कि यह खराब भूमि है; इसी कारण मैंने तुम से कहा कि मैंने बहुत दिनों तक इसकी देखभाल की है, और तुम देख रहे हो कि इसमें बहुत से फल लगे हुए हैं।

२३. तब ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी बोला: इधर देखो, मैंने उस वृक्ष की एक दूसरी डाली को इधर बोया था और तुम जानते हो (१३) कि यह भूमि उस प्रथम स्थान से भी अधिक बंजर भूमि है। लेकिन उस वृक्ष को देखो। मैंने इसकी भी बहुत दिनों तक देखभाल की और इसमें बहुत से फल लगे हैं; इसलिए इन फलों को एकत्रित करो और भविष्य के लिए रखो जिससे कि मैं इन्हें अपने लिए सुरक्षित रख सकूं।

२४. और तब ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी अपने सेवक से फिर बोला: वहां देखो, (१४) एक और शाखा को जिसे मैंने बोया था; देखो, मैंने उसकी देखभाल की और उसमें भी फल लगे हैं।

२५. और उसने अपने सेवक से कहा: वहां की उस अन्तिम शाखा को देखो, मैंने उसे (१५) अच्छी जगह बोया; मैंने बहुत दिनों तक उसकी देखभाल की परन्तु (१६) उसके कुछ ही भागों में अच्छे फल लगे और (१७) बाकी भागों में जंगली फल

(८) पद्य १३, १९, ३८, ३९, ५२. (९) पद्य २५, २९, ७६. (१०) मत्ति १२:३३. यूहन्ना १५:१६. रोमि० ११:१६. (११) देखो ३. (१२) पद्य २२. (१३) पद्य २१, २२, २५, ४३, ४४. (१४) अल० १६:१७. (१५) पद्य ४३. १ नफी २:२०. (१६) इला० १५:३. (१७) इला० १५:४.

ईसा से ५४४ से ४२१ वर्षों पूर्व के मध्य

ही लगे हैं; लेकिन देखो, मैंने इसकी देखभाल भी अन्य वृक्षों की तरह ही की है।

२६. तब ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने नौकर से कहा: (१८) जिन डालियों में अच्छे फल नहीं लगे हैं उन्हें तोड़ कर आग में डाल दो।

२७. लेकिन सेवक ने उससे कहा: हम डालियों को छांट कर जड़ के आसपास मिट्टी खोद कर मुलायम कर दें और खाद पानी कुछ दिन और दें, तब शायद ये आपके लिए अच्छे फल दें और आप उन्हें भविष्य के लिए सुरक्षित रख सकें।

२८. और तब ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी और उसके सेवक ने बाग के फलों की देखभाल की।

२९. (१९) बहुत समय बीत जाने पर बाग का स्वामी अपने (२०) सेवक से बोला: आओ, हम बाग में चलें जिससे कि हम वहां परिश्रम करें; क्योंकि देखो, समय निकट आ रहा है जब कि (२१) फलों के समाप्त होने का मौसम आ जाएगा; इस कारण अपने लिए मुझे फलों को सुरक्षित रख लेना चाहिए।

३०. और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी और उसका सेवक, दोनों बगीचे में गए; और वे उस स्थान पर आए जहां पर उस वृक्ष की प्राकृतिक डालियों को तोड़ डाला गया था और जंगली वृक्ष की डालियों के कलम बांधे गए थे; और वहां उन्होंने देखा कि उस वृक्ष में (२२) हर प्रकार के फल लदे हैं।

३१. और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने हर प्रकार के फलों को उनकी संख्या के अनुसार चखा। बगीचे का स्वामी बोला देखो, मैंने बहुत दिनों तक इस वृक्ष की देखभाल की और मैंने अपने निमित भविष्य के लिए बहुत से फल सुरक्षित रख लिए हैं।

३२. लेकिन देखो, इस समय इसमें बहुत से फल आये हैं, लेकिन इनमें (२३) कोई भी फल अच्छा नहीं है, परन्तु सभी तरह के (२४) बुरे फल हैं; इससे मुझे कोई लाभ नहीं और न तो हमें अपने परिश्रम का ही कोई लाभ हुआ; और अब इस वृक्ष को खोने के विचार से मुझे दुख हो रहा है।

३३. और बगीचे का स्वामी अपने सेवक से बोला: हम इस वृक्ष का क्या करें जिससे इसके अच्छे फलों को मैं फिर से अपने लिए प्राप्त कर सकूं?

३४. और सेवक ने अपने स्वामी से कहा; देखिए, आपने एक जंगली जैतून वृक्ष की डालियों का कलम बांधा था, इसलिए उन्होंने जड़ का पोषण किया, इसी कारण वह नष्ट नहीं हुआ, इसलिए आप उन्हें देख रहे हैं, कि वे अब भी अच्छी हालत में हैं।

३५. तब ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने नौकर से कहा: जब तक बुरे फल लगते हैं तब तक मुझे न तो इस वृक्ष से ही कोई लाभ है और न इस की जड़ से ही कोई लाभ होगा।

३६. फिर भी मैं जानता हूं कि जड़ें अच्छी हैं, और मैंने उन्हें अपने लिए सुरक्षित रखा; और अपनी अधिक शक्ति के द्वारा (२५) उन्होंने जंगली डालियों से अधिक अच्छे फल दिए।

३७. लेकिन देखो, जंगली डालियों ने बढ़ कर जड़ों को अपने वश में कर लिया है, और जड़ों को अपने वश में करने के कारण जंगली डालियां अधिक बुरे फल ही दे रही हैं, और तुम देख रहे हो कि (२६) बहुत अधिक बुरे फल फलने के कारण इन डालियों का नष्ट होना आरम्भ हो गया है; ये फल शीघ्र ही पक जाएंगे और हमने इन्हें सुरक्षित रखने के लिए अगर कुछ नहीं किया, तब सम्भव है इन्हें आग में डालना पड़े।

३८. और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने सेवक से कहा: चलो हम बगीचे के (२७) सबसे नीचे के भाग पर चल कर प्राकृतिक शाखाओं को देखें कि क्या वे भी बुरे फल देती हैं।

३९. तब उन दोनों ने बगीचे के भीतर प्रवेश किया और देखा कि उन प्राकृतिक शाखाओं के फल भी भ्रष्ट हो गए थे; हां—(२८) प्रथम शाखा के फल (२९) दूसरी शाखा के फल (३०)

(१८) पद्य २५. (१९) पद्य १५, २३, ७६. (२०) २ नफी २७:९. सि० शर्त० १०१:५५. १०३:२१. (२१) १ नफी २२:१५-२६. २ नफी २७:१-३. ३०:१०. पद्य ४७, ६२-६४-६६, ७१, ७५, ७६. ६:२. ३ नफी २९:४. मार० ८:४१. एथ० ४:१६. पद्य ३२, ४ नफी २६. (२२) पद्य ३२. (२३) पद्य ३०, ३५:३७, ४२, ४६. (२४) देखो २३. (२५) देखो ३. (२६) देखो २३. (२७) देखो ८. (२८) पद्य २०. (२९) पद्य २. (३०) पद्य २५.

और अन्तिम शाखा के फल भी भ्रष्ट हो गए थे।

४०. अन्तिम (३१) शाखा के जंगली फलों ने वृक्ष के (३२) उस भाग पर अधिकार कर लिया था जहां अच्छे फल लगे थे यहां तक हुआ कि वह शाखा मुरझा कर सूख गई।

४१. और ऐसा हुआ कि बगीचे का स्वामी रो (३३) रोकर अपने सेवक से बोला: मैं अपने बगीचे के लिए और क्या कर सकता था?

४२. देखो, मैंने समझा था कि इन फलों के अलावा सारे बगीचे के फल भ्रष्ट हो गए हैं, लेकिन ये भी भ्रष्ट हो गए जो एक बार अच्छे फल फले थे; और अब मेरे सारे बगीचे के वृक्ष (३४) किसी काम के नहीं रहे, वे केवल काट कर आग में ही डालने लायक हैं।

४३. और देखो, इस अन्तिम शाखा को जिसकी डालें (३५) सूख चुकी हैं, मैंने इसे (३६) अच्छी जगह बोया, जो जगह मेरे बगीचे में सबसे श्रेष्ठ जगह थी।

४४. और तुम देख रहे हो कि मैंने (३७) विघ्न डालने वाले सभी पौधों को काट कर इस स्थान को बोने के लिए साफ किया था।

४५. और तुम देख ही रहे हो कि (३८) इसका एक भाग अच्छे फल दे रहा है और दूसरा (३९) भाग बुरे फल दे रहा है; लेकिन मैंने इसकी डालियों को तोड़ कर आग में नहीं डाला, इसलिए देखो, इसकी जंगली डालियां अच्छी डालियों पर अधिकार जमा कर उन्हें सुखाये डाल रही है।

४६. और अब, देखो, हमने जो अपने बगीचे की देखभाल की उसकी उपेक्षा कर उस बगीचे के वृक्ष खराब हो गए और अब इनमें (४०) अच्छे फल नहीं फलेंगे; मैंने इन्हें सुरक्षित रखने की आशा की थी और इनके फलों को भविष्य में अपने उपयोग में लाने के लिए आशा की थी। लेकिन देखो, ये जंगली जैतून वृक्ष की तरह हो गए हैं और इनका (४१) कोई मूल्य नहीं रहा, लेकिन ये काट कर अग्नि में डाल देने के ही लायक हैं; और इनको खो देने का मुझे कष्ट है।

४७. मैं (४२) अपने बगीचे में और क्या कर सकता था? क्या मैंने अपने हाथ ढ़ीले करके इनकी देखभाल नहीं की? नहीं, मैंने इनकी देखभाल की, जड़ के आसपास मिट्टी खोद कर मुलायम की, इनकी डालियां छांटीं, खाद दी; और मैंने अपने हाथ से लगभग दिनभर परिश्रम किया और अब (४३) अन्त निकट आ रहा है। अपने बगीचे के सब वृक्षों को काट कर अग्नि में जला देने का मुझे कष्ट हो रहा है। वह कौन है जिसने मेरे बगीचे को भ्रष्ट किया है?

४८. और ऐसा हुआ कि सेवक ने अपने स्वामी से कहा: क्या यह आपके बगीचे के लिए बड़े गर्व की बात है? क्या जंगली शाखाओं ने अच्छी जड़ों पर अपना अधिकार नहीं जमाया? और शाखाओं के पेड़ों पर अधिकार कर लेने के कारण, देखिए वे जड़ों की शक्ति को लेकर जड़ों के बल से भी अधिक तीव्र गति से बढ़ी। देखिए, मैं कहता हूं कि आपके बगीचे के वृक्ष क्या इसी कारण भ्रष्ट नहीं हुए?

४९. और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने सेवक से कहा: चलो हम बगीचे के वृक्षों को काट कर आग में डाल देने के लिए चलें, जिससे कि वे मेरे बगीचे की भूमि को बिना बात घेरे न रहें, क्योंकि मैंने अपने बगीचे के लिए सब कुछ किया (४४) और मैं कर ही क्या सकता था?

५०. लेकिन देखो, सेवक ने बगीचे के स्वामी से कहा: इन्हें कुछ दिनों के लिए और छोड़ दीजिये।

५१. और स्वामी ने कहा: हां, मैं इन्हें और कुछ दिनों के लिए छोड़ दूंगा, क्योंकि इन वृक्षों को खोने से मुझे कष्ट होगा।

५२. इस कारण (४५) जिन शाखाओं को मैंने अपने बगीचे के भीतर बोया है, उन्हें ले चल कर (४६) उसी वृक्षों पर उनकी कलम बांधें जहां से वे लाई गई थीं; और हम उन (४७) शाखाओं को तोड़ दें जिनके फल सब से कड़वे हैं और उनके स्थान पर प्राकृतिक वृक्ष की शाखाओं की कलम बांध दें।

(३१) पद्य २५. इब्र १५:४. (३२) पद्य २५. इब्र० १५:३. (३३) यशा० ५:४. (३४) देखो २३. (३५) देखो १६. (३६) पद्य २५. (३७) मरो० ९:२३. (३८) देखो १६. (३९) देखो १७. (४०) देखो २३. (४१) २ नफी २०:३३. अल० ५:५२. ३ नफी २७:११. (४२) पद्य ४१:४९. (४३) देखो २१. (४४) पद्य ४१, ४९. (४५) देखो ४. (४६) देखो ४, पद्य ५७, ६५.

५३. स्वामी ने कहा: मैं ऐसा ही करूंगा जिससे कि वह वृक्ष नष्ट न हो जाएं और सम्भव है कि मैं अपने लिए उसकी जड़ों को सुरक्षित रख सकूं।

५४. और देखो, उन प्राकृतिक शाखाओं की (४८) जड़ें अब भी जीवित हैं जिन्हें मैंने अपनी इच्छानुसार जहां चाहा वहां बोया था; इसलिए उनको भी अपने उद्देश्य के लिए सुरक्षित रखने के निमित मैं इस वृक्ष की (४९) शाखाओं को (५०) उनमें ले जा कर कलम बांधूंगा। हां, मैं उनमें उनके मूल वृक्ष की शाखाओं की कलम बांधूंगा जिससे कि मैं अपने स्वयं के लिए (५१) उन जड़ों को सुरक्षित रख सकूं जिससे कि यथेष्ट बड़े होने पर सम्भव है कि मेरे लिए वे अच्छे फल दे सकें और मैं अपने बगीचे के अच्छे फलों का अब भी आनन्द ले सकूं।

५५. और ऐसा हुआ कि उन्होंने (५२) प्राकृतिक वृक्ष जो जंगली वृक्ष बन गया था, से डालियां ले कर उन प्राकृतिक वृक्षों में कलम बांधी, जो जंगली हो गए।

५६. उन्होंने उन प्राकृतिक वृक्षों से भी, जो जंगली हो चुके थे, डालियों को ले (५३) कर मूल वृक्ष में कलम बांधी।

५७. और बगीचे का स्वामी अपने सेवक से बोला—वृक्ष की उन (५४) जंगली डालियों को छोड़ कर जिनमें अत्यन्त अधिक कड़वे फल हैं दूसरी डालियों को मत तोड़ो; और उन डालियों में मेरे कहे अनुसार कलम बांधो।

५८. और हम पुन: अपने बगीचे की देखभाल करेंगे, और उनकी डालें छांटेंगे; और उन डालियों को तोड़ेंगे जो (५५) पक कर नष्ट हो जाती हैं और उनको आग में डालेंगे।

५९. और मैं यह सब इसलिए करूंगा कि जिससे जड़ सम्भव है कि उनकी अच्छाइयों के कारण शक्ति पकड़ ले; और शाखाओं के परिवर्तन से बुरे फलों के स्थान पर अच्छे फल लगने लगें।

६०. प्राकृतिक शाखाओं और जड़ों को सुरक्षित रखने और मूल वृक्ष में प्राकृतिक शाखाओं की कलम फिर से बांधने के कारण, और मूल वृक्ष की जड़ें सुरक्षित रखने से मेरे बगीचे के वृक्ष सम्भव हैं कि फिर से अच्छे फल देने लगें; और पुन: अपने बगीचे के फलों से मुझे आनन्द प्राप्त हो और मूल वृक्ष की (५६) शाखाओं और जड़ों को सुरक्षित रखने से मुझे सुख प्राप्त हो।

६१. इसलिए जाओ और (५७) नौकरों को बुला लाओ जिससे कि हम अपनी शक्ति के साथ बगीचे में परिश्रम करें जिससे कि हम उन प्राकृतिक फलों को प्राप्त करने की तैयारी करें जो कि अच्छे और सभी अन्य फलों से अधिक मूल्यवान हैं।

६२. इसलिए (५८) अन्तिम बार अपनी शक्ति के साथ परिश्रम करने के लिए चलो, क्योंकि देखो, अन्त निकट आ रहा है, और अन्तिम बार बगीचे की डालियों को छाटूंगा।

६३. (५९) अन्त से कलम बांधना आरम्भ करो जिससे कि अन्तिम प्रथम हो जाए और (६०) प्रथम अन्तिम हो जाए, और नए पुराने, प्रथम और अन्तिम, अन्तिम और प्रथम सभी वृक्षों की जड़ों के आसपास की मिट्टी को खोद कर मुलायम कर दो जिससे कि सब वृक्षों को (६१) अन्तिम बार खाद और पानी मिल जाए।

६४. इसलिए अन्तिम बार मिट्टी खोदो, डालियां छांटों, खाद दो क्योंकि अन्त निकट आ गया है। और अगर ये अन्तिम कलम लगाई गई डालियां लग गईं और बढ़ कर उन्होंने प्राकृतिक फल दिए तब उन्हें बढ़ने देने के लिए परिश्रम करना होगा।

६५. और जब वे बढ़ने लगे तब (६२) जिन डालियों में कड़वे फल लगें, उन्हें काट कर अच्छी डालियों की शक्ति और आकार के अनुसार छोड़ दो, परन्तु सभी भ्रष्ट डालियों को एक साथ मत काटना वरना उनकी जड़ें कलम की गई

(४८) पद्य ११, ३५, ३७, ४८, ५४, ६०. (४९) ३ नफी २१:५, ६. मार० ५:१५. (५०) देखो ४८. (५१) देखो ४८. (५२) देखो ४९. (५३) देखो ४८. (५४) देखो पद्य ५८, ६५, ६६, ७३, ७४. (५५) देखो ५४. (५६) देखो ४८. (५७) पद्य ७०, ७२, ७४, ७५. या० ६:२. (५८) देखो २१. (५९) मत्ति २०:१६. ११:२५., २६. (६०) सि० शर्त० ८८:५१-६२. १ नफी १३:४२. (६१) देखो २१. (६२) देखो ५४.

शाखाओं के लिए अधिक शक्तिमान होंगी और वे नष्ट हो जाएंगी और मैं अपने बगीचे के वृक्षों को खो दूंगा।

६६. क्योंकि अपने वृक्षों को खोने का मुझे दुःख होगा; इसलिए जैसे जैसे अच्छी शाखा बढ़े, वैसे ही वैसे बुरी शाखाओं को काट कर अलग करते जाओ जिससे कि जड़ और डालियां शक्ति में एक समान हों और यह तब तक करते जाओ जब तक कि अच्छे फल वाली डालियां बुरे फल वाली डालियों को वश में न कर लें, और बुरी डालियों को काट कर अग्नि में डाल दो जिससे कि उनसे मेरे बगीचे की भूमि पर विघ्न न उपस्थित हो; इस प्रकार मैं अपने बगीचे में से भ्रष्टता निकाल बाहर करूंगा।

६७. और मैं (६३) प्राकृतिक वृक्ष की डालियों में फिर से प्राकृतिक वृक्ष की कलम बांधूंगा।

६८. और मैं (६४) प्राकृतिक वृक्ष की डालियों की, वृक्ष की प्राकृतिक डालियों में कलम बाधूंगा; इस प्रकार मैं उन दोनों को पुनः निकट लाऊंगा, जिससे कि वे प्राकृतिक फल देंगे और वे दोनों (६५) एक हो जाएंगे।

६९. और जो भ्रष्ट हैं उनको मेरे (६६) बगीचे के बाहर फेंका जाएगा; क्योंकि देखो, इसी एक बार मैं अपने बगीचे को छांटूंगा।

७०. और ऐसा हुआ कि बगीचे के स्वामी ने अपने (६७) सेवक को भेजा; और सेवक ने जा कर वैसा ही किया जैसा स्वामी ने कहा था, वह जा कर (६८) अन्य सेवकों को भी बुला लाया जो संख्या में (६९) थोड़े थे।

७१. और बगीचे का स्वामी उनसे बोला : जाओ और बगीचे में (७०) परिश्रम करो। क्योंकि देखो; अब अन्तिम बार मैं अपने बगीचे की देखभाल करूंगा; क्योंकि (७१) अन्त निकट है; और मौसम शीघ्रता के साथ बदल रहा है; और अगर तुमने मेरे साथ लगन के साथ परिश्रम किया तब जो फल मैं अपने भविष्य के लिए संचित करूंगा उससे तुमको भी (७२) आनन्द प्राप्त होगा।

७२. और ऐसा हुआ कि (७३) सेवकों ने जा कर पूरी शक्ति से परिश्रम किया और उनके साथ बगीचे के स्वामी ने भी परिश्रम किया और सेवकों ने सभी बातों में बगीचे के स्वामी की आज्ञाओं का पालन किया।

७३. और बगीचे में पुनः प्राकृतिक फल फलने लगे; और प्राकृतिक शाखा अत्यधिक बढ़ने लगी; और जंगली डालियों को तोड़ तोड़ कर (७४) फेंका जाने लगा और उन्होंने जड़ों और शाखाओं को उनकी शक्ति के अनुपात से (७५) बराबर किए रखा।

७४. इस प्रकार बगीचे के स्वामी की आज्ञानुसार तब तक परिश्रम के साथ काम करते रहे जब तक (७६) कि बगीचे में से सब भ्रष्ट डालियों को फेंका न गया और स्वामी ने अपने लिए वृक्षों को अच्छे प्राकृतिक फल देने वाला न बना लिया; और (७७) वे सब वृक्ष एक से हो गए; और उनके फल भी वैसे ही हो गए; और बगीचे के स्वामी ने अपने लिए आरम्भ से भी अधिक बहूमूल्य प्राकृतिक फलों को संचित कर लिया।

७५. और ऐसा हुआ कि जब बगीचे के स्वामी ने देखा कि उसके फल अच्छे थे और उसका (७८) बगीचा भ्रष्ट नहीं रहा, तब उसने अपने सेवकों को बुला कर कहा : देखो, हमने इस अन्तिम बार अपने बगीचे की देखभाल की, और तुमने देखा कि यह मैंने अपनी इच्छानुसार किया है; और मैंने प्राकृतिक फलों का संग्रह किया जो कि पहले की तरह ही अच्छे हैं। धन्य हो तुम क्योंकि तुमने मेरे बगीचे में मेरे साथ परिश्रम किया और मेरी आज्ञा को माना, और फिर से प्राकृतिक फलों को लाये जिससे कि मेरा बगीचा भ्रष्ट नहीं रहा, (७९) और जो बुरे थे उन्हें निकाल फेंका;

(६३) पद्य ५६. (६४) पद्य ५५. (६५) पद्य ६६, ७३, ७४. (६६) पद्य ६६, ७४, ७५. १ नफी २२:१५-१७, १९-२६. २ नफी ३०:९, १०. (६७) सि० शर्त० १०१:५५, ६०. १०३:२१. २ नफी २७:९. (६८) देखो सी० शर्त० (६९) १ नफी १४:१२. (७०) सि० शर्त० ६:३, ४. ११:३. २१:९. २४:१९. ३१:४, ५. ३३:३, ४. ३९:१७. ४३:२८. (७१) देखो ६८. (७२) पद्य ७५. १ नफी १३:३७, ३८. या० ६:३. (७३) देखो ५३. (७४) देखो ६५. (७५) देखो ६६. (७६) ६५. (७७) देखो ६६. (७८) देखो ६६. (७९) देखो ७२.

देखो, मेरे बगीचे के फलों के कारण तुम भी मेरे साथ (८०) आनन्द मनाओ।

७६. क्योंकि देखो, जब फलों के फलने का मौसम नहीं रहेगा जो शीघ्र आनेवाला है, तब (८१) बहुत दिनों तक के लिए मैंने फलों को सुरक्षित रख लिया है; और मैंने अपने बगीचे की (८२) देखभाल अन्तिम बार की है, डालियां छांटी, जड़ के आस पास मिट्टी खोदी, और खाद दी; इसलिए जैसा कि मैंने कहा वैसे ही अपने निमित बहुत दिनों तक के लिए फलों को संचित कर लिया है।

७७. और जब वह (८३) समय फिर से आएगा जब कि मेरे बगीचे में भ्रष्ट फल फिर से फलेंगे, तब मैं अच्छे और बुरे फलों को तुड़वाऊंगा; और अच्छे फलों को मैं अपने लिए रख लूंगा और बुरे फलों को उनके स्थान पर ही फेंक दूंगा। और तब अन्त समय आएगा; और मैं अपने बगीचे को आग (८४) से जलवा दूंगा।

अध्याय ६

याकूब द्वारा जैतून वृक्ष के दृष्टांत की व्याख्या करना—बगीचे का छांटा जाना।

१. और अब, देखो मेरे भाइयों, मैंने यह कहा था कि मैं भविष्यवाणी करूंगा, सो सुनो, मेरी भविष्यवाणी यह है: इस्राएल के घराने के विषय में भविष्यवक्ता (१) जीनुस, जिन्होंने उसकी एक (२) प्राकृतिक जैतून वृक्ष से तुलना की थी, वह निश्चय ही घटेगा।

२. और जिस दिन वह अपने लोगों को प्राप्त करने के लिए (३) दुबारा हाथ बढ़ाएगा, वही वह दिन होगा जब कि प्रभु के सेवक उसकी (४) शक्ति के साथ उसके बगीचे की देखभाल करने और छांटने के लिए अन्तिम बार जाएंगे; और तब (५) अन्त शीघ्र आएगा।

३. और कितने धन्य हैं (६) वे लोग जिन्होंने उसके बगीचे में परिश्रम किया है; और कितने (७) हतभाग्य हैं वे लोग जिनको उनके स्थानों पर फेंका जाएगा। और जगत को अग्नि से (८) जलाया जाएगा।

४. और इस्राएल के घराने की जड़ और शाखाओं को याद रखने के लिए हमारा परमेश्वर हम पर कितना दयालू है; और वह उनके लिए पूरे दिन अपना हाथ आगे बढ़ाता रहता है; किन्तु वे (९) हठी और स्वार्थी लोग हैं; लेकिन जितने लोग अपने हृदय को कठोर नहीं करेंगे; उनको परमेश्वर के राज्य में बचा लिया जाएगा।

५. इसलिए, मेरे प्रिय भाइयों, मैं विवेकमय शब्दों में तुमसे कहता हूं कि तुम पश्चात्ताप करो, और सच्चे हृदय से परमेश्वर के पास आओ और जैसे वह तुम्हारे लिए प्रयत्नशील है वैसे ही तुम भी उसके लिए प्रयत्न करो। और दिन के प्रकाश में जब तक उसकी दया का हाथ तुम्हारी ओर बढ़ा है, तुम अपने हृदय को कठोर मत करो।

६. हां, आज, अगर तुम सब उसकी वाणी को सुनो, तब अपने हृदय को कठोर मत करना; क्योंकि तुम मरना क्यों चाहोगे?

७. क्योंकि देखो, सारा दिन परमेश्वर की अच्छी वाणी द्वारा पोषित किए जाने के पश्चात् क्या तुम दूषित फल खाओगे जिससे कि तुम्हें काट कर अग्नि में डाल दिया जाये?

८. सुनो, क्या तुम इन शब्दों को अस्वीकार कर दोगे? क्या तुम भविष्यवक्ताओं की बातों को अस्वीकार कर दोगे? मसीह के विषय में इतने लोगों द्वारा कही गई बातों को सुनने के पश्चात् उसे क्या तुम अस्वीकार कर दोगे; और मसीह की अच्छी वाणी, परमेश्वर की शक्ति, पवित्रात्मा की देन को अस्वीकार करते हुए पवित्रात्मा की अवहेलना करके क्या तुम प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति प्राप्त करने की महान योजना का उपहास करोगे?

९. क्या तुम यह नहीं जानते कि अगर तुमने

(८०) देखो ७२. (८१) सि० शर्त० १०१:६२. १ नफी २२:२६. देखो १४, २ नफी ३०. (८२) देखो २१. (८३) प्रकाशित० २०:७-८. (८४) प्रका० २०:१४, १५. या० ६:३. ३ नफी २६:३, ४. सि० शर्त० २९:२३. अध्याय ६. (१) देखो ८, १ नफी १९. (२) देखो २, या० ५. (३) देखो ९, २ नफी ६. (४) देखो २१, या० ५. (५) देखो २०, १ नफी १३. (६) देखो २१, या० ५. सि० शर्त० ४३:१७-२०, २८. (७) देखो २०, १ नफी १३. (८) पद्य ७-१०. सि० शर्त० ४१:१. (९) या० ५:७७. ३ नफी २६:३.

ऐसा किया तब प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति और पुनर्जीवन प्राप्त करने की शक्ति जो मसीह में है, वह तुम्हें परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने लज्जित कर (१०) भीषण अपराध से दोषित कर खड़ा कर देगी।

१०. न्याय को अस्वीकार नहीं किया जा सकता और जो बल न्याय में है उसके अनुसार तुम्हें उस अग्नि और गंधक के (११) कुण्ड में जाना ही पड़ेगा जिसकी लपटों की प्यास बुझाई नहीं जा सकती और जिसका धुंआ सदा के लिए उठता ही रहेगा और यह अग्नि और, गंधक का कुण्ड (१२) अन्तहीन क्लेश है।

११. तब, हे मेरे प्रिय भाइयो, पश्चात्ताप करो और (१३) सीधे द्वार से प्रवेश करो, और जो रास्ता संकरा है उस पर तब तक चलते जाओ जब तक कि तुम्हें अनन्त जीवन न प्राप्त हो जाए।

१२. ओह बुद्धिमान बनो; इससे अधिक मैं और क्या कह सकता हूं?

१३. अन्त में मैं तुम्हें तब तक के लिए विदा दे रहा हूं जब तक हम परमेश्वर के उस आनन्ददाई न्याय सिंहासन के सामने न मिलें जो कि पापियों को भयंकर आतंक और भय से दहलाता है। आमीन।

अध्याय ७

सीरम द्वारा मसीह को अस्वीकार करना और एक चिन्ह मांगने पर मारा जाना—उसका अपने पापों को स्वीकार करना और मर जाना—एक सुधार का आरम्भ होना—नफायटियों के विरुद्ध लमनायटियों का द्वेष—याकूब का अपने पुत्र इनोस को पटियों का देना।

१. और तब ऐसा हुआ कि कुछ वर्षों के बीत जाने पर नफी के लोगों में एक मनुष्य आया जिसका नाम सीरम था।

२. और ऐसा हुआ कि वह नफी के लोगों में यह प्रचार करने लगा कि मसीह नहीं होगा। उसने लोगों में और कई बातों का प्रचार किया जो कि लोगों को प्रसन्न करने के लिए थीं। ऐसा उसने इसलिए किया ताकि वह मसीह के सिद्धांत को पराजित कर सके।

३. और वह परिश्रम के साथ प्रचार करता रहा ताकि वह लोगों के हृदय को जीत सके और उसने अनेक हृदयों पर विजय प्राप्त भी की। वह यह जानता था कि मेरा विश्वास मसीह पर था जो भविष्य में आने वाला है, इसलिए वह मुझसे भेंट करने का अवसर खोज रहा था।

४. वह विद्वान था, और उसे लोगों की भाषा का अच्छा ज्ञान था; इसलिए शैतान की शक्ति के अनुसार वह लोगों की बहुत चापलूसी और बातें कर सकता था।

५. वह आशा करता था कि वह मुझे अपने विश्वास से डिगा सकेगा परन्तु वह यह नहीं जानता था कि इन विषयों पर मुझे बहुत दैवी-ज्ञान प्राप्त हुआ था, और बहुत सी बातों को मैंने देखा था; क्योंकि मैंने सचमुच में (१) स्वर्गदूतों को देखा था; जिन्होंने मुझे उपदेश दिए थे। मैंने समय समय पर प्रभु की वाणी को भी सुना था जिन्होंने शब्दों में मुझसे बातें की थीं; इसलिए मैं अपने विश्वास से डिग नहीं सकता था।

६. और ऐसा हुआ कि वह मेरे पास आया और बुद्धिमानी के साथ इस प्रकार बोला: भाई याकूब, मैं तुमसे मिलने का अवसर बहुत दिनों से ढूंढ़ रहा था; क्योंकि मैंने यह सुना था और जानता हूं कि तुम बहुत अधिक उस सिद्धांत का प्रचार कर रहे हो जिसे मसीह का सिद्धांत कहते हैं।

७. और तुमने बहुत से लोगों को सन्मार्ग से हटाया है जिससे कि वे परमेश्वर के सच्चे रास्ते को दूषित कर रहे हैं, और वे मूसा के नियम का पालन नहीं कर रहे हैं, जो कि सच्चा रास्ता है; और तुम मूसा के नियम को एक ऐसे व्यक्ति की पूजा में परिवर्तित कर रहे हो, जिसके लिए तुम

(१०) देखो ११, या० ४. (११) या० ७:१६. मू० १५:२६. अल० ३६:५, ६. ३ नफी २६:७. (१२) देखो ११, १ नफी १५. (१३) सि० शर्त० १६:१०-१२. मू० ३:२५, २७. २८:३. १ नफी १५:२६, ३०, ३५. २ नफी ६:१६-१६, २६. २८:२३. अल० १२:१७. ३ नफी २७:११, १७. २६:७. मरो० ८:२१. (१४) देखो २६, २ नफी ६. (१५) मरो० १०:३४. अध्याय ७. (१) २ नफी २:३, ४. १०:३. ११:३. या० १:१७. २:११. ७:१२. अल० १६:३४. २४:१४. इला० ५:११. १३:३७. १६:१४. मरो० ७:२२

कहते हो कि आज से कई सौ वर्षों पश्चात आएगा। और अब देखो, मैं, सीरम तुमसे यह घोषणा करता हूं कि यह ईश्वर-निन्दा है। कोई भी मनुष्य ऐसी बातें नहीं जानता, क्योंकि वह भविष्य की बातें नहीं बता सकता। इस प्रकार उसने मेरे विरुद्ध मत प्रकट किया।

८. लेकिन देखो, प्रभु परमेश्वर ने अपनी आत्मा को मेरी आत्मा में इतना अधिक उड़ेल दिया कि मैंने उसकी हर बात पर उसे पराजित कर दिया।

९. और मैंने उससे कहा : क्या तुम उस मसीह को अस्वीकार करते हो जो आने वाला है? और उसने कहा : अगर कोई मसीह है तब मैं उसे अस्वीकार नहीं करता; लेकिन मैं जानता हूं कि मसीह नहीं है, न कभी था, और न कभी होगा।

१०. और मैंने उससे कहा : क्या तुम धर्मशास्त्रों पर विश्वास करते हो? और उसने कहा : हां।

११. तब मैंने उससे कहा : तुम उन्हें समझते नहीं; क्योंकि वे सचमुच में उसकी साक्षी देते हैं। देखो, मैं तुम से कहता हूं कि किसी भी भविष्यवक्ता ने इस मसीह के विषय को छोड़ कर न तो कुछ लिखा, और न तो कोई भविष्यवाणी ही की है।

१२. और इतना ही नहीं, यह तो मुझ पर प्रकट भी किया गया है क्योंकि मैंने इसे सुना और देखा है; और यह पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा भी मुझ पर प्रकट किया गया है; इसलिए मैं जानता हूं कि अगर मानव समाज के लिए (२) प्रायश्चित नहीं किया गया। तब सारा मनुष्य समाज नष्ट हो जाएगा।

१३. और ऐसा हुआ कि उसने मुझसे कहा : तुम जिस पवित्रात्मा को इतना जानते हो उसकी शक्ति के द्वारा मुझे कोई चिन्ह दिखाओ।

१४. और मैंने उससे कहा : मैं कौन हूं कि उस बात का चिन्ह तुम्हें दिखलाने के लिए परमेश्वर को लालच दूं जिसे तुम जानते हो कि सत्य है? फिर भी तुम उसे अस्वीकार कर रहे हो, क्योंकि (३) तुम शैतान के हो। फिर भी यह मेरी इच्छा नहीं; लेकिन अगर परमेश्वर ने तुमको मारा, तब यह तुम्हारे लिए इस बात का चिन्ह होगा कि स्वर्ग और पृथ्वी पर दोनों जगह उसकी शक्ति है; और वह मसीह आएगा, और हे प्रभु मेरी नहीं तेरी इच्छा पूरी हो।

१५. और ऐसा हुआ कि जब मैं, याकूब ने (४) इन शब्दों को कहा, तब परमेश्वर की शक्ति उसके ऊपर इतनी आई कि वह धरती पर गिर पड़ा। तब ऐसा हुआ कि कई दिनों तक उसकी देखभाल की जाती रही।

१६. और ऐसा हुआ कि उसने लोगों से कहा : कल इकट्ठे हो, (५) क्योंकि मैं मर जाऊंगा; इसलिए मरने से पहले मैं लोगों से बातें करना चाहता हूं।

१७. और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन एक भारी भीड़ इकट्ठी हुई; और उसने उनसे स्पष्ट बोलते हुए उनको जिन बातों की शिक्षा दी थी उसे अस्वीकार करते हुए मसीह को, पवित्र आत्मा की शक्ति को और स्वर्गदूतों द्वारा दिए जाने वाले उपदेशों को स्वीकार किया।

१८. उसने उनसे स्पष्ट कहा कि उसको (६) शैतान की शक्ति के द्वारा धोखा दिया गया था। उसने (७) अधोलोक, अनन्तता और (८) अनन्त दण्ड पर भी बातें कहीं।

१९. और उसने कहा : मैं इस बात से डरता हूं कि मैंने (९) अक्षम्य अपराध किए हैं, क्योंकि मैंने परमेश्वर को असत्य कहा; क्योंकि मैंने मसीह को अस्वीकार किया और कहा कि मैं धर्मशास्त्रों पर विश्वास करता हूं; और धर्मशास्त्र सचमुच उसकी साक्षी देते हैं। इस प्रकार से असत्य कहने के कारण मैं भयभीत हो रहा हूं कि मेरा अपराध भयंकर है; लेकिन मैं परमेश्वर के प्रति अपने अपराध को स्वीकार करता हूं।

२०. और ऐसा हुआ कि जब उसने इन शब्दों को कह लिया तब और कुछ न कह सका और (१०) उसने अपनी आत्मा को त्याग दिया।

२१. और जब (११) भीड़ ने यह देखा कि

(२) देखो ६, २ नफी २. (३) पद्य ४, १८. (४) देखो ३, या० ४. (५) पद्य २०. (६) पद्य ४, १४. (७) देखो ११, १ नफी १५. (८) देखो १३, या० ६. (९) देखो ११, या० ६. (१०) पद्य १६. (११) पद्य १७.

उसने अपनी आत्मा को त्यागने से पहले इन बातों को कहा है तब उन्हें इतना आश्चर्य हुआ कि परमेश्वर की शक्ति उनके ऊपर उतरी जिसके प्रभाव से लोग धरती पर प्रभु के आदर में झुक गए।

२२. यह घटना मेरे, याकूब के लिए प्रसन्नता की हुई, क्योंकि मैंने, अपने स्वर्ग में रहने वाले पिता से इसकी मांग की थी; उसने मेरी पुकार को सुना और मेरी प्रार्थना का उत्तर दिया।

२३. और ऐसा हुआ कि लोगों में शान्ति और परमेश्वर के प्रेम की स्थापना पुनः हुई; और वे (१२) धर्मशास्त्र का अध्ययन करने लगे और उन्होंने उस पापी के शब्दों पर विश्वास करना भी छोड़ दिया।

२४. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों में फिर से (१३) सत्य ज्ञान की स्थापना करने के लिए अनेक उपायों को काम में लाया गया; परन्तु सब व्यर्थ हुए क्योंकि उनको युद्ध और रक्तपात में आनन्द प्राप्त होता था, और हमारे विरुद्ध, जो उनके भाई थे, अपार (१४) द्वेष था। और वे अपने अस्त्र-शस्त्रों के बल पर हमें लगातार नष्ट कर देना चाहते थे।

२५. इसलिए नफी के लोगों ने उनके विरुद्ध अपनी सेनाओं के द्वारा अपनी सारी शक्ति के साथ और अपनी मुक्ति की आधारशिला परमेश्वर में विश्वास करते हुए अपनी सुरक्षा की व्यवस्था दृढ़ की। इसी कारण वे अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले हुए।

२६. और ऐसा हुआ कि मैं, याकूब, वृद्ध होने लगा और इन लोगों का अभिलेख अब (१५) नफी की अन्य पटियों पर अंकित किया जाएगा, इसलिए मैं यह घोषणा करते हुए इस अभिलेख को समाप्त करता हूं कि हमारा समय बीत गया है और हमारा अतीत का जीवन हमारे लिए एक स्वप्न की तरह है, जिसमें हम लोग अकेले और गम्भीर भटकते हुए और यरूशलेम से निकाले गए, कष्टों और वन-प्रदेशों में जन्मे, और अपने भाइयों द्वारा (१६) घृणा किए गए थे, जिससे युद्ध और विवाद हुए; और निसन्देह हम लोगों ने अपना समय दुःख में काटा।

२७. और मैं, याकूब ने, देखा कि मैं शीघ्र ही अपनी कब्र में जाऊंगा; इसलिए मैंने अपने पुत्र इनोस से कहा : इन (१७) पटियों को तुम ले लो, और जिन (१८) बातों की आज्ञा मुझे नफी ने दी थी, उसे मैंने उसको बताया और उसने उन आज्ञाओं का पालन करने का वचन दिया। और अब मैं (१९) इन पटियों पर लिखना समाप्त करता हूं जो कि थोड़ी ही थीं; और पढ़ने वालों को मैं इस आशा के साथ विदा दे रहा हूं कि बहुत से मेरे भाई मेरी वाणी को पढ़ेंगे। भाइयो विदा दो।

इनोस की पुस्तक

नफी के लोगों का अभिलेख, लमनायटियों में जाने के विषय पर प्रभु के वचन—इन दो लोगों का चरित्र, स्थिति और युद्ध।

१. देखो मैं (१) जानता था कि मेरे पिता धार्मिक व्यक्ति थे, क्योंकि उन्होंने मुझे अपनी भाषा में, परमेश्वर के अनुकूल, चेतावनी के साथ शिक्षा दी थी—और इसके लिए मेरे परमेश्वर का नाम धन्य है।

२. और अपने पापों को क्षमा प्राप्त करने से पूर्व, परमेश्वर के समक्ष मुझे जो द्वन्द लड़ना पड़ा, उसके विषय में मैं तुम्हें बताऊंगा।

३. देखो मैं बनैले पशुओं को खोजने वन में गया; और जो बातें मैं अपने पिता से अनन्त जीवन और सन्तों के विषय में सुना करता था वह मेरे हृदय में अच्छी तरह प्रवेश कर चुकी थीं।

४. मेरी आत्मा को भूख लगी; और मैंने अपने

(१२) अल० ६३:१२. (१३) इनो० १४, २०. (१४) पद्य २६. इनो० १४:२०. यिर्म० ६. मू० १०:११-१८. २८. २ अल० २६:२३-२५. (१५) देखो ६, १ नफी १. (१६) देखो १४. (१७) देखो २, १ नफी ६. (१८) या० १:१-४. (१९) देखो २, १ नफी ६. इनोस की पुस्तक. (१) या० ७:२७.

ईसा से ५४४ से ४२१ वर्षों पूर्व के मध्य

रचयिता के सामने घुटने टेक कर अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रार्थना की और अपनी आत्मा के लिए विनती की; मैंने सारा दिन उसको पुकारा और हां जब रात हुई, तब भी मैंने अपनी आवाज़ ऊंची की, जिससे कि वह स्वर्ग में पहुंच गयी।

५. और मुझे एक वाणी सुनाई दी जो मुझसे बोली : इनोस, तुम्हारे पापों को क्षमा किया गया और तुम्हें आशीर्वाद दिया जाएगा।

६. और मैं, इनोस, जानता हूं कि परमेश्वर झूठ नहीं बोलता; इस कारण मेरे पाप धुल गए।

७. और मैंने कहा: प्रभु, यह कैसे हुआ?

८. और उसने मुझसे कहा : तुम्हारे मसीह में विश्वास के कारण जिसको तुमने पहले न तो कभी देखा और न ही सुना है। वह बहुत वर्षों पश्चात् मानव शरीर में प्रकट होगा; इस कारण, जाओ, तुम्हारा विश्वास तुम्हें पवित्र करेगा।

९. जब मैंने इन बातों को सुना तब मेरे अन्दर अपने भाई, नफायटियों की भलाई करने की इच्छा जागृत हुई; इस कारण, उनके लिए मैंने अपनी आत्मा को ईश्वर के प्रति पूरी तरह समर्पित कर दिया।

१०. और जिस समय मैं इस तरह अपने आत्मा के आन्तरिक संघर्ष में लीन था, तब सुनो, परमेश्वर की वाणी पुनः मेरी बुद्धि में मुझे सुनाई दी, जो बोली : मैं तुम्हारे भाइयों से, उनके मेरी आज्ञाओं के पालन करने की निष्ठा के अनुसार भेंट करूंगा; मैंने उनको यह देश (२) दिया और यह देश पवित्र है; मैं इसको एकमात्र दुराचार के कारण ही श्राप दूंगा अन्यथा नहीं; इस कारण अपने वचन के अनुसार ही मैं तुम्हारे भाइयों से भेट करूंगा; और मैं उनके अपने दुष्कर्मों के कारण ही, उनके सिर पर दुःख लाऊंगा।

११. और मैं, इनोस ने, जब इन बातों को सुना तब प्रभु में मेरा विश्वास अडिग हो गया, और अपने भाई लमनायटियों के लिए मैंने बहुत प्रार्थनायें कीं।

१२. और तब ऐसा हुआ कि मेरी प्रार्थना और लगन के पश्चात् प्रभु ने मुझसे कहा : मैं तुम्हारे विश्वास के कारण तुम्हारी इच्छाओं की पूर्ति करूंगा।

१३. और देखो, यही मेरी इच्छा थी जिसे मैं चाहता था कि वह पूरी करे—कि अगर मेरे नफायटी लोग पतित होकर पापी हो गए और उनको नष्ट कर दिया गया और लमनायटी अगर नष्ट नहीं किए गए तब मेरे (३) नफायटी लोगों का विवरण प्रभु सुरक्षित रखें; चाहे यह वह ऐसा अपने पवित्र बाहुबल के द्वारा ही क्यों न करे और किसी भविष्य के दिनों में लमनायटियों को दे जिससे उनको मुक्ति प्राप्त हो सके।

१४. क्योंकि वर्तमान समय में उनको सच्चे मत में लाने के लिए (४) हमारा प्रयत्न विफल हो गया है। और उन्होंने अपने क्रोध में आकर यह प्रतिज्ञा की है कि अगर उनसे हो सका तब वे हमारे अभिलेख को, हमें और हमारे पूर्वजों के आचार विचार को नष्ट कर देंगे।

१५. मैं यह जानता था कि प्रभु परमेश्वर हमारे अभिलेख को बचा सकता है, इस कारण मैं लगातार उससे विनती करता रहा, क्योंकि उसने मुझसे कहा था; विश्वास से तुम जो कुछ मांगोगे और यह विश्वास करोगे कि मसीह के नाम से तुम्हें मिलेगा, तब वह तुम्हें दिया जाएगा।

१६. मुझे विश्वास था और मैंने अभिलेख को (५) सुरक्षित रखने के लिए विनती की; और उसने मुझसे अनुबंध किया कि वह अपनी इच्छानुसार उसे लमनायटियों को उचित समय पर देगा।

१७. और मैं, इनोस, यह जानता था कि यह उसी वचन के अनुसार होगा जिसे कि उसने दिया था; इस कारण मेरी आत्मा को शान्ति मिली।

१८. और प्रभु ने मुझसे कहा : तुम्हारे पूर्वजों ने भी मुझसे यही इच्छा प्रकट की थी; और यह उनके विश्वास के अनुसार ही होगा; क्योंकि उनका विश्वास भी तुम्हारी ही तरह था।

१९. और ऐसा हुआ कि मैं, इनोस, नफी के लोगों में जाकर, भविष्य में घटने वाली बातों पर भविष्यवाणी करने लगा और मैंने जो कुछ

(२) देखो १, १ नफी २. (३) पद्य १५-१८. देखो ३, २ नफी २७. (४) पद्य २०. या० ७:२४. (५) पद्य १३. (६) देखो ३, २ नफी २७. सि० शर्त० ३:१८-२०. १०:४८-५१.

ईसा से ५४४ से ४२१ वर्षों पूर्व के मध्य

देखा और सुना था उसकी साक्षी भी देने लगा।

२०. और मैं इस बात की साक्षी देता हूं कि नफी के लोगों ने, लमनायटी लोगों में परमेश्वर पर विश्वास की (७) पुनः स्थापना करने का प्रयत्न परिश्रम के साथ किया, लेकिन हमारा प्रयत्न व्यर्थ हुआ; उनका (८) द्वेष स्थिर रहा और वे अपने बुरे स्वभाव के अनुकूल चलते रहे जिससे कि वे, जंगली, भयंकर, रक्त के प्यासे होकर मूर्तिपूजक और गन्दे हो गए; वे पशुओं का शिकार करके खाते हुए, तम्बुओं में रहते और छोटा सा चमड़ा अपनी कमर पर लपेटे, सिर मुड़ाए, वन प्रदेश में भटकते रहते। वे धनुष, गदा और कुल्हाड़ी बनाने में कुशल हो गए। उनमें से अनेक केवल कच्चे मांस को छोड़ कर और कुछ नहीं खाते; और लगातार हमें नष्ट कर देने की चेष्टा करते रहते।

२१. और ऐसा हुआ कि नफी के लोग भूमि जोतते (९) अनेक प्रकार के अनाज और फल उत्पन्न करते, हर एक प्रकार के पशुओं के झुण्ड जैसे गाय, भेड़, बकरी और अनेक घोड़े पालते थे।

२२. और हममें बहुत अधिक भविष्यवक्ता थे। और लोग हठी थे, जिनको समझना कठिन था।

२३. और (१०) घोर कठोरता, युद्ध की भविष्यवाणी और प्रचार, विवाद, विनाश, लगातार लोगों को मृत्यु की चेतावनी, अनन्त की स्थिरता, परमेश्वर की शक्ति और न्याय के विषय में बतलाने के अलावा इनमें और कुछ नहीं था, और यह सब बातें उनमें परमेश्वर का भय लगातार बनाए रखने के लिए थी।

२४. और अपने जीवन में मैंने नफायटियों और लमनायटियों में युद्ध होते देखा।

२५. और ऐसा हुआ कि मैं वृद्ध हो चला, और हमारे पिता लेही को (११) यरूशलेम से आए *एक सौ उनहत्तर वर्ष गुजर चुके।

२६. और मैंने देखा कि मुझे शीघ्र ही अपनी कब्र में जाना पड़ेगा। परमेश्वर की शक्ति के द्वारा मैं इन लोगों में प्रचार और भविष्यवाणी करने और जो सत्य मसीह में है उसकी घोषणा करने के लिए लाया गया था। मैंने इसकी घोषणा अपने सारे जीवन भर की और इस संसार से भी अधिक मैं इसमें आनन्दित हुआ।

२७. और मैं शीघ्र अपने विश्राम-स्थान को जाऊंगा जो कि मेरे उद्धारक के पास है; क्योंकि मैं जानता हूं कि उसकी ही शरण में मुझे विश्राम मिलेगा। मैं उस दिन के लिए आनन्द मनाता हूं जबकि मेरा यह पार्थिव शरीर (१२) अमर रूप धारण करके उसके समक्ष खड़ा होगा और मैं उसके चेहरे को आनन्द के साथ देखूंगा, और वह मुझसे कहेगा : हे आशीर्वाद-प्राप्त, तुम मेरे पास आओ, (१३) तुम्हारे लिए मेरे पिता के महलों में एक स्थान तैयार किया गया है। आमीन।

जराम की पुस्तक

इनोस के पुत्र जराम का अभिलेख रखना—नफायटियों का प्रभु की सेवा करना और उनकी प्रगति करना।

१. अब मैं, जराम, अपने पिता इनोस की आज्ञानुसार थोड़े से शब्दों को लिख रहा हूं जिससे कि हमारे वंश की सूची रखी जा सके।

२. और जबकि ये (१) पटियां छोटी हैं, और इन बातों को अपने भाई (२) लमनायटियों के हित की दृष्टि से लिखा जा रहा है, तब यह आवश्यक है कि मैं कुछ लिखूं; परन्तु मैं अपनी भविष्यवाणी और दैवी-ज्ञान को नहीं लिखूंगा, क्योंकि जो कुछ मेरे पूर्वजों के द्वारा लिखा जा चुका है उससे अधिक मैं और क्या लिख सकता हूं? क्या उन्होंने मुक्ति का भेद नहीं खोला? मैं तुमसे कहता हूं कि हां; और मेरे लिए यह पर्याप्त है।

३. देखो, इन लोगों में बहुत उद्योग करने की

(७) पद्य १४. या० ७:२४. (८) देखो १४, या० ७. (९) देखो १ नफी १८:२५. (१०) देखो १, १ नफी १६. (११) १ नफी १:४. २:२, ३. (१२) देखो ४, २ नफी २. १ कुर० १५:५३. २ तीमु० १:१०. (१३) ए० १२:३२-३४. सिद्धांत और शर्तनामा ७२:४. ९८:१८. यूहन्ना १४:२, ३. जराम की पुस्तक. (१) देखो २, १ नफी ६. (२) देखो ३, २ नफी २७.

ईसा से ५४४ से ४२१ वर्षों पूर्व के मध्य

आवश्यकता है (३) क्योंकि इनका हृदय कठोर है, इनके कान बहरे हैं, इनकी बुद्धि अन्धी है, और यह हठी हैं; लेकिन फिर भी परमेश्वर इन पर दयालू है और उसने इन्हें इस देश से अब तक मिटाया नहीं है।

४. और हम लोगों में कई लोगों को दैवी-ज्ञान प्रकट हुआ है क्योंकि वे हठी नहीं हैं। और जितने हठी नहीं हैं और विश्वासयुक्त हैं उनका सम्पर्क पवित्र आत्मा से है जो कि मानव वंश में उनके विश्वास के अनुसार प्रकट होती है।

५. और अब, देखो, *दो सौ वर्ष गुज़र चुके और नफी के लोग इस देश में बढ़ चुके हैं। वे मूसा के नियम का (४) पालन करते और प्रभु के लिए विश्राम दिन को पवित्र रखते हैं। वे भ्रष्ट नहीं हुए और न तो वे परमेश्वर की निन्दा ही करते हैं। इस देश के नियम भी कठोर हैं।

६. वे और लमनायटी, दोनों, देश भर में फैले हुए हैं। लमनायटी नफी के लोगों से बहुत अधिक हैं और उन्हें (५) हत्या करना और पशुओं का रक्त पीना पसन्द है।

७. और ऐसा हुआ कि वे हम नफी के लोगों से युद्ध करने के लिए अनेक बार आए। लेकिन हमारे राजा और नेता प्रभु के विश्वास में महान थे; और उन्होंने लोगों को प्रभु के अनुकूल शिक्षा दी; इसलिए हमने लमनायटियों को पराजित करके उन्हें अपनी भूमि से खदेड़ दिया, और हम अपने शहरों और पैतृक-स्थानों को सुरक्षा के लिए दृढ़ करने लगे।

८. और हमारी जनसंख्या में बहुत वृद्धि हुई और हम सारे देश में फैल गए और हम (६) सोना, चांदी, आदि मूल्यवान वस्तुओं में धनी हो गए और काष्ठकारी, मकान बनाने, यन्त्र बनाने, लोहे और तांबे की वस्तुओं को बनाने, पीतल और कठोर लोहे के हर प्रकार की भांति भांति के खेत जोतने आदि के औजार, युद्ध के हथियार, जैसे पैने तीर और तरकस छोटी बरछी, भाला आदि बनाने और हर तरह से युद्ध की तैयारी में दक्ष हो गए।

९. इस प्रकार लमनायटियों का सामना करने की तैयारी के कारण, वे हम पर सफलता प्राप्त नहीं कर सके। लेकिन प्रभु की वह वाणी जो उसने हमारे पूर्वजों से कही थी : (७) कि जब तक तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे, तब तक तुम इस देश में प्रगति करोगे, वह स्पष्ट हो गयी।

१०. और ऐसा हुआ कि प्रभु के भविष्यवक्ता नफी के लोगों को प्रभु की वाणी के अनुसार यह चेतावनी दी गई कि अगर वे आज्ञाओं का पालन नहीं करेंगे और पापों में गिर गए, (८) तब उनको इससे समाप्त कर दिया जाएगा।

११. इस कारण, भविष्यवक्ताओं, पुरोहितों और शिक्षकों ने बहुत समय से सब कष्ट सहने वाले लोगों को परिश्रम करने के लिए उपदेश दिए; और लोगों को (९) मूसा के नियम और उनके दिए जाने के उद्देश्य की शिक्षा दी; और उनसे आग्रह किया कि मसीह के आगमन की वे प्रतीक्षा करें और ऐसा विश्वास करें कि वह जैसे मानो अतीत में था। इस तरह उन्होंने उनको शिक्षा दी।

१२. और ऐसा हुआ कि ऐसा करने से उन्होंने उनको देश से नष्ट होने से बचा लिया; क्योंकि उन्होंने लगातार उनको पश्चात्ताप करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, अपनी वाणी द्वारा उनके हृदयों को निस्सन्देह प्रभावित किया।

१३. और ऐसा हुआ कि *दो सौ अड़तीस वर्ष व्यतीत हो गए—और अधिकांश समय युद्ध, विवाद और मतभेद में बीता।

१४. और मैं, जराम, और अधिक नहीं लिखूंगा, क्योंकि पटियां छोटी हैं। लेकिन देखो, मेरे भाइयो, तुम (१०) नफी की अन्य पटियों को देख सकते हो; क्योंकि हमारे युद्धों का वर्णन जैसा कि हमारे

(३) इनोस २३. (४) देखो १५, २ नफी २५. (५) देखो १४, या० ७. इनो २०. (६) देखो १४, १ नफी १८. (७) देखो ८, २ नफी १. (८) १ नफी १२:१९, २०. अल० ४५:१०, १४. इला० १३:५-१०. ३ नफी २७:३२. मार० ६. (९) देखो १५, २ नफी २५. (१०) देखो २, १ नफी ६: और ६, १ नफी १.

*ईसा से ३९९ वर्ष पूर्व

राजाओं ने लिखा और जिन विषयों को उन्होंने लिखवाया वे सब उसी में अंकित हैं।

१५. और मैं इन पटियों को अपने पुत्र ओमनी को दे रहा हूं, जिससे कि मेरे पूर्वजों की आज्ञानुसार इनको रखा जा सके।

ओमनी की पुस्तक

ओमनी, अमरोन, चेमिस, अविनदोम, और अमलेकी के सम्मिलित लेख—मूसाया का नफी का देश छोड़ना—उसका यरूशलेम से आए हुए अन्य लोगों द्वारा बसाए ज़राहेमला का देश पाना—उसको राजा बनाया जाना—कोरण्टमूर, अन्तिम यारदी—राजा बिन्यामीन—अन्य देशान्तरगमन।

१. देखो, ऐसा हुआ कि मैं, ओमनी, अपने पिता द्वारा आज्ञा दिए जाने के कारण अपने वंश की सूची को सुरक्षित रखने के लिए (१) इन पटियों पर लिख रहा हूं।

२. इसलिए मैं यह चाहता हूं कि तुम यह जानो कि नफी के लोगों को उनके शत्रु लमनायटियों के हाथों से बचाने के लिए मैंने अपने जीवन में तलवार से बहुत युद्ध किए हैं। लेकिन देखो, मैं स्वयं एक पापी हूं क्योंकि प्रभु की आज्ञा और व्यवस्था का जिस प्रकार पालन करना चाहिए था, वैसा मैंने नहीं किया।

३. और ऐसा हुआ कि †दो सौ छहत्तर वर्ष गुजर चुके और हमें कई शान्तिकाल प्राप्त हुए और कई बार गम्भीर युद्ध और रक्तपात हुआ। हां, कुल ‡दो सौ बयासी वर्ष गुज़र चुके, और मैंने इन पटियों को अपने पूर्वजों की (२) आज्ञानुसार रखा; और अब मैं अन्त करते हुए अपने पुत्र अमरोन को इसकी जिम्मेदारी दे रहा हूं।

४. और अब मैं, अमरोन, अपने पिता की पुस्तक में थोड़ी सी वे बातें लिख रहा हूं जो कि मुझे लिखनी है।

५. देखो, ऐसा हुआ कि *तीन सौ वर्ष गुज़र चुके और नफायटी लोगों में जो (३) अधिक पापी थे उनको नष्ट कर दिया गया है।

६. क्योंकि प्रभु उन्हें यरूशलेम देश से निकाल कर लाये और शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचाने के कारण वह यह सहन नहीं कर सकता कि उसका यह वचन मिथ्या हो जिसको उसने हमारे पूर्वजों से कहते हुए कहा था : (४) जितनी तुम हमारी आज्ञा का पालन नहीं करोगे उतनी ही तुम उस देश में प्रगति नहीं करोगे।

७. इसलिए प्रभु महान न्याय के लिए उनके बीच आया; फिर भी उसने धार्मिकों को छोड़ दिया जिससे कि वे नष्ट न हों, और उसने शत्रुओं के हाथों से उनकी रक्षा की।

८. और ऐसा हुआ कि मैंने पटियां अपने भाई चेमिस को दीं।

९. अब मैं, चेमिस, उन थोड़ी सी बातों को, जो मुझे लिखनी हैं, उसी पुस्तक (५) में लिख रहा हूं जिसमें मेरे भाई ने लिखा है; क्योंकि मैंने उसे देखा है जिसे मेरे भाई ने अपने हाथ से अन्त में लिखा; और उसने यह उसी दिन लिखा जिस दिन उसने इन पटियों को मुझे दिया था। हम इन (६) अभिलेखों को अपने पूर्वजों के आज्ञानुकूल ही रख रहे हैं, और मैं भी लिखना समाप्त कर रहा हूं।

१०. देखो मैं, अविनदोम, चेमिस का पुत्र हूं। ऐसा हुआ कि मैंने अपने, नफी के लोगों और लमनायटियों के बीच बहुत युद्ध और विवाद देखे हैं; और मैंने अपने भाइयों की रक्षा के लिए अपनी तलवार से कई लमनायटियों की जाने ली हैं।

११. और देखो, इन लोगों का विवरण उन पटियों पर खोदा गया है जो पीढ़ी पर पीढ़ी से राजाओं के पास हैं, और जो दैवी-ज्ञान और भविष्यवाणी लिखी जा चुकी है, उन्हें छोड़ मैं और कोई दैवी-ज्ञान और भविष्यवाणी नहीं जानता; इस कारण जो पर्याप्त है वह लिखा जा चुका है। मैं लिखना समाप्त कर रहा हूं।

१२. देखो, मैं अविनदोम का पुत्र अमलेकी हूं।

ओमनी की पुस्तक. (१) देखो २, १ नफी ६. (२) या० १:१-४. ७:२७. ज० १, २, १५. (३) ज० १०. (४) देखो ८, २ नफी १. (५) देखो २. (६) देखो ६. †ईसा से ३२३ वर्ष पूर्व, ‡ईसा से ३१७ वर्ष पूर्व, *ईसा से २७९ वर्ष पूर्व

सुनो, मैं उस मूसायाह के विषय में कुछ कहूंगा जिसको ज़राहेमला के देश का राजा बनाया गया था; इसलिए कि प्रभु द्वारा उसको यह चेतावनी मिली थी कि जितने लोग प्रभु की बातों को मानेंगे उन सबको साथ ले कर वह (७) नफी के देश से वन में भाग जाए।

१३. और ऐसा हुआ कि उसने वैसा ही किया जैसी कि उसको प्रभु ने आज्ञा दी थी। और जितने लोग प्रभु के आज्ञाकारी थे वे सब वन में चले गए; उनका पथ-प्रदर्शन अनेक उपदेश और भविष्यवाणियों द्वारा किया गया। उन्हें लगातार परमेश्वर की वाणी द्वारा चेतावनी और सदुपदेश मिलता रहा; और उसके बाहुबल द्वारा वन में उनकी अगुवाई तब तक की जाती रही, जब तक कि वे उस देश में पहुंच न गए जिसे (८) ज़राहेमला कहा जाता है।

१४. उन्होंने वहां उन लोगों को पाया जो (९) ज़राहेमला के लोग कहलाते थे। अब ज़राहेमला के लोगों में बहुत आनन्द मनाया गया; और ज़राहेमला में इसलिए भी बहुत आनन्द मनाया गया क्योंकि मूसायाह के लोगों को प्रभु ने पीतल की उन (१०) पटियों के साथ भेजा था जिनमें यहूदियों का प्रमाण-लेख था।

१५. देखो, ऐसा हुआ कि मूसायाह को पता लगा कि ज़राहेमला के लोग यरूशलेम से उस समय आए थे (११) जबकि यहूदा के राजा सिदकियाह को बन्दी बना कर बाबेल ले जाया गया था।

१६. और उन्होंने जंगल में से होकर यात्रा की, और प्रभु का हाथ उन्हें सागर के पार उस देश में लाया जहां पर उन्होंने मूसायाह (१२) को पाया; वे उस समय से वहां रहते आए थे।

१७. जिस समय मूसायाह ने उन्हें पाया उस समय उनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ चुकी थी। फिर भी उनमें कई युद्ध हो चुके थे और उनमें भारी मतभेद हो चुका था, और समय समय पर तलवार से कट कर गिर चुके थे; उनकी भाषा (१३) भ्रष्ट हो चुकी थी और वे कोई प्रमाण-लेख अपने साथ नहीं लाए थे।

१८. लेकिन ऐसा हुआ कि मूसायाह ने उन्हें अपनी भाषा में शिक्षा देना निश्चित किया। और मूसायाह की भाषा में शिक्षा देने के पश्चात् ज़राहेमला ने अपनी स्मृति के अनुसार अपने पूर्वजों की वंशावली को बताया जिसे लिखा गया लेकिन (१४) इन पटियों पर नहीं।

१९. और ऐसा हुआ कि ज़राहेमला के लोग और मूसायाह के लोग एक हो गए; और मूसायाह को (१५) उनका राजा नियुक्त किया गया।

२०. और ऐसा हुआ कि मूसायाह के समय में उनके पास एक बड़ा पत्थर लाया गया जिस (१६) पर लिपि खुदी हुई थी; और उसने उस लिपि का (१७) अनुवाद परमेश्वर की शक्ति के द्वारा किया।

२१. उनमें (१८) कोरण्टमूर और उसके मारे गए लोगों का विवरण था (१९) ज़राहेमला के लोगों ने कोरण्टमूर को (२०) पाया था; और वह उन लोगों के साथ नौ माह तक रहा।

२२. उसमें उसके पूर्वजों के विषय में भी कुछ शब्द लिखे थे। उसके पूर्वज (२१) उस मीनार से आए थे जब कि प्रभु ने लोगों की भाषा में गड़बड़ी उत्पन्न कर दी थी; और प्रभु का क्रोध न्यायानुसार उनके ऊपर पड़ा था; और उनकी (२२) हड्डियां वहां से उत्तर की ओर बिखरी पड़ी हैं।

२३. देखो, मैं अमलेकी ने मूसायाह के समय जन्म लिया था; और मैंने उसकी मृत्यु भी देखी; और उसके स्थान पर उसका पुत्र बिन्यामीन राज्य करने लगा है।

२४. और देखो, मैंने राजा बिन्यामीन के समय में नफायटी और लमनायटी लोगों में गम्भीर युद्ध और बहुत अधिक रक्तपात होते देखा है। लेकिन

(७) देखो २. २ नफी ५. (८) अल० २:१५. (९) पद्य १५:१९. मू० २५:२-४. अल० २२:३०-३२. हला० ६:१०. ८:२१. (१०) देखो १, १ नफी ३. (११) २ राजा २५:१-७ देखो ६. (१२) पद्य १४. (१३) पद्य १८. (१४) देखो १०. (१५) पद्य १२. (१६) पद्य २१. (१७) मू० ८:१३-१८. (१८) ए० १२:१-३. १३:१, २, १३-३१ अध्याय १४, १५. (१९) ए० ११:२०, २१. १३:२१. (२०) देखो ६. (२१) मू० २८:१७. ए० १:१-६. उत्तपति ११:१-९. (२२) मू० ८:८-१२. देखो १७.

ईसा से २७९ से १३० वर्षों पूर्व के मध्य

देखो नफायटी अधिक बलवान ठहरे; हां, यहां तक हुआ कि राजा बिन्यामीन ने लमनायटियों को (२३) ज़राहेमला देश से बाहर भगा दिया।

२५. और ऐसा हुआ कि मैं वृद्ध हो चला; मेरे सन्तान न होने के कारण और राजा बिन्यामीन के प्रभु के सामने भला व्यक्ति ठहरने के कारण, मैं इन पटियों को (२४) उसे दे दूंगा जिससे सब लोगों को इस्राएल के पवित्र परमेश्‍वर के पास आने का सदुपदेश मिलेगा और भविष्यवाणी, दैवी-ज्ञान, स्वर्गदूतों द्वारा उपदेश, अनेक भाषाओं का ज्ञान, अनेक भाषाओं का अनुवाद करने का सामर्थ्य और सभी उत्तम बातों में विश्‍वास करने की शिक्षा मिलेगी; क्योंकि जो श्रेष्ठ बातें हैं वे केवल प्रभु को छोड़ कर कहीं अन्यत्र से नहीं आती और जो बुरी बातें हैं वे शैतान से आती हैं।

२६. और अब मेरे प्रिय भाइयों, मैं चाहता हूं कि तुम मसीह के पास आओ, जो कि इस्राएल का पवित्र प्रभु है, और उसकी मुक्ति और उसके उद्धार करने की शक्ति में भागीदार बनो। हां, उसके पास आओ, और अपनी पूरी आत्मा को उसके लिए आहुति में दे दो और उपवास और (२५) प्रार्थना में लगे रहो और अन्त तक सहनशील बने रहो; क्योंकि प्रभु चेतनस्वरूप है और वह तुमको बचा लेगा।

२७. और अब मैं उन लोगों के विषय में कुछ कहूंगा जो कि वन में गए हैं जिससे कि वे वापस (२६) नफी के देश में लौट सकें; क्योंकि उनमें एक बहुत बड़ी संख्या उन लोगों की थी जिनकी इच्छा थी कि वे अपने पैतृक देश के अधिकारी हों।

२८. इस कारण वे वन में गए। उनका नेता बलवान और हठी था, इस कारण उसने उन लोगों में असंतोष पैदा कर दिया; और पचास लोगों को छोड़कर (२७) बाकी सब वन में मारे गए। जो बचे थे वे (२८) ज़राहेमला के देश में वापस लौट गए।

२९. और ऐसा हुआ कि उन लोगों ने, (२९) बहुत से अन्य लोगों को अपने साथ ले कर वन में फिर से यात्रा की।

३०. और मेरा, अमलेकी का, एक भाई था और उसने भी उनके साथ यात्रा की। तबसे मैं उनके विषय में कुछ भी नहीं जानता। और अब मैं अपनी कब्र में सोने के निकट हूं; और ये पटियां (३०) भी भर चुकी हैं; और अब मैं कहना समाप्त करता हूं।

मॉरमन की वाणी

नफी की छोटी पटियां और मॉरमन की वाणी का संक्षेप—मॉरमन की पुस्तक के पूर्व भाग का अन्य भाग से सम्बन्ध।

१. और अब मैं, मॉरमन, जिस (१) अभिलेख को लिख रहा था उसे अपने पुत्र मरोनी के हाथों में देने वाला हूं। देखो, मैंने लगभग अपने सारे नफायटी लोगों को नष्ट होते देखा है।

२. और मसीह के आने के (२) कई* सौ वर्ष पश्‍चात् में इन पटियों को अपने (३) पुत्र के हाथों में दे रहा हूं। और मुझे प्रतीत हो रहा है कि वह मेरे पूरे लोगों को नष्ट होते देखेगा। परन्तु परमेश्‍वर कृपा कर के उसे बचा ले (४) जिससे कि वह उन लोगों और मसीह के विषय में लिख सके जिससे कि किसी समय उनको लाभ पहुंच सके।

३. और अब मैं उस विषय में कुछ कहूंगा, जिसे मैं लिख चुका हूं; जब मैं उन (५) नफी की पटियों से (६) राजा बिन्यामीन के समय तक के विवरण को (७) संक्षिप्त कर चुका, जिनके विषय में अमलेकी ने चर्चा की है, तब उन (८) अभिलेखों में, जो मुझे दिए गए थे, मैंने खोजा और मुझे (९)

(२३) देखो ८. (२४) देखो २, १ नफी ६. (२५) देखो ५, २ नफी ३२. (२६) देखो २, २ नफी ५. (२७) मू० ९:१. २, ४. (२८) देखो ८. (२९) मू० ९:३, ४. (३०) पद्य ११:१९.

ईसा से २७९ से १३० वर्षों पूर्व के मध्य

मारमन की वाणी. (१) ३ नफी ५:१०. मा० १:१-४. २:१७, १८. ५:९. ६:१, ६. ८:१, ४, ५, १४-१६. ९:३२-३६. मरो० ९, २३, २४. १०:१-५. (२) मा० ६:५. (३) मा० ६:६. (४) मार० ८:१-८. (५) मार० ५:९. (६) देखो ६, १ नफी १. (७) ओम० २३-२५. (८) मा० ४:२३. (९) देखो २, १ नफी ६.

पटियां मिलीं, जिनमें याकूब से ले कर, इस राजा बिन्यामीन के शासन तक के भविष्यवक्ताओं के ये छोटे विवरण और नफी के (१०) अनेक वाणियां प्राप्त हुईं।

४. और जो बातें इन पटियों पर हैं, उनसे मुझे आनन्द मिलता है, क्योंकि उनमें मसीह के आने की भविष्यवाणियां हैं; और हमारे पूर्वजों को यह मालूम था कि इनकी बहुत सी भविष्यवाणियां पूरी की जा चुकी हैं; और हां, मुझे भी मालूम है कि हम लोगों के विषय में आज तक जो भविष्य-वाणियां की गई थीं, उन्हें भी पूरा किया गया है और भविष्य में भी पूरा किया जाएगा।

५. इसलिए मैंने उन पर अपने (११) विवरण को समाप्त करने के लिए (१२) इन बातों को चुना है, और अपने अभिलेख की शेष बातों को मैं नफी की (१३) पटियों में से लूंगा; और मैं अपने लोगों की बातों का (१४) एक सौवां भाग भी नहीं लिख सकता।

६. लेकिन देखो मैं (१५) इन पटियों को जिनमें ये भविष्यवाणियां और दिव्य-ज्ञान हैं, अपने अन्य (१६) अभिलेखों के साथ रखूंगा, क्योंकि वे मेरे चुने हुए हैं, और मैं जानता हूं कि वे मेरे भाइयों को भी पसन्द होंगे।

७. यह मैं (१७) विवेकमय उद्देश्य के लिए कर रहा हूं; क्योंकि मेरे अन्दर जो पवित्र आत्मा है, वह मुझसे ऐसा करने को कह रही है। मैं सब का ज्ञाता नहीं हूं; लेकिन प्रभु को भविष्य में घटने वाली सभी घटनाओं का ज्ञान है; इसलिए वह अपनी इच्छानुसार मुझसे काम करवाता है।

८. और परमेश्वर से मैं अपने भाइयों के लिए यही प्रार्थना करता हूं कि वे परमेश्वर का ज्ञान पुनः प्राप्त करें, हां उन्हें मसीह के उद्धार का ज्ञान हो; जिससे कि वे पुनः आनन्दमय हो जाएं।

९. और मैं मॉरमन, *अपने उस (१८) अभिलेख को पूरा करने जा रहा हूं जिसे मैं नफी की पटियों से लिख रहा हूं; और जिसे मैं अपने परमेश्वर के दिए हुए ज्ञान और समझ के अनुसार लिख रहा

१०. इस कारण, ऐसा हुआ कि (१९) इन पटियों को अमलेकी द्वारा राजा बिन्यामीन के हाथों में दे देने के पश्चात् उसने उन्हें लेकर उन अन्य (२०) पटियों के साथ रख दिया जिनमें वे अभिलेख थे जिसे राजाओं की एक पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी को राजा बिन्यामीन के समय तक देती आई थी।

११. और राजा बिन्यामीन द्वारा दिए जाने के समय से उन्हें पीढ़ी पर पीढ़ी दिया जाता रहा है और अन्त में वे मेरे (२१) हाथ में आई हैं, और मैं, मॉरमन, परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे अब से सुरक्षित रहें। और मैं जानता हूं कि वे सुरक्षित रखी जाएंगी; क्योंकि उनमें महान बातें लिखी हैं जिनके अनुसार उस महान और अन्तिम दिन (२२) हम लोगों और (२३) उनके भाइयों का (२४) न्याय परमेश्वर की लिखी वाणी के अनुसार होगा।

१२. और अब इस राजा बिन्यामीन के विषय में—उसके अपने लोगों में कुछ विवाद है।

१३. और ऐसा हुआ कि नफी के (२५) देश से उतर कर लमनायटियों की सेना ने उसके लोगों पर आक्रमण किया। लेकिन देखो, राजा बिन्यामीन ने अपनी सेना को एकत्रित करके उनका सामना किया और स्वयं (२६) लबान की तलवार से युद्ध में अपने बाहुबल से लड़ा।

१४. और प्रभु की शक्ति से समर्थ हो उन्होंने शत्रुओं पर विजय पाई और कई सहस्त्र लमनायटियों को मार डाला। और ऐसा हुआ कि वे लमनायटियों से तब तक संघर्ष करते रहे, जब तक उन्होंने उन्हें अपने पैतृक देश से पूरी तरह बाहर न खदेड़ दिया।

१५. और ऐसा हुआ कि इसके पश्चात् झूठे मसीह हुए जिन का मुख बन्द किया गया और उनको

(१०) देखो १, और २ नफी. (११) पद्य ६. (१२) ३ नफी ५:१४-१८. मारमन १:१. (१३) १ नफी ९:२. देखो ६. देखो पद्य ३ और ६, १ नफी १. (१४) पद्य ३. ३ नफी ५:८-११. २६:६-१२. मा० ५:९. (१५) पद्य ५. (१६) देखो ३. (१७) सि० शर्त० ३. १०. (१८) २ नफी ३०:६. (१९) पद्य ३. (२०) देखो ६. (२१) ३ नफी ५:८-११. मा० ४:२३. (२२) इलामन १५:३. देखो १५, या० ५. (२३) इलामन १५:४. देखो १६, या० ५. (२४) २ नफी २५:१८. २९:११. ३३:११, १४, १५. ३ नफी २७:२३-२७. एथर ४:८-१०. ५:४. (२५) देखो २, २ नफी ५. (२६) देखो १, १ नफी ४.

*लगभग ईस्वी ३८५

उनके पापों के अनुसार दण्ड दिया गया;

१६. और लोगों में झूठे भविष्यवक्ताओं, झूठे उपदेशकों और शिक्षकों के होने और उनके पापों के अनुसार उनको दण्ड मिलने के पश्चात् और लमनायटियों के प्रति अनेक तरह के विवाद और मतभेद होने के उपरान्त, देखो ऐसा हुआ कि राजा बिन्यामीन ने पवित्र भविष्यवक्ताओं के सहयोग से जो कि उसके लोगों में थे।

१७. क्योंकि देखो, राजा बिन्यामीन एक पवित्र व्यक्ति था और अपने लोगों पर धार्मिकता के साथ शासन करता था; और देश में अनेक पवित्र लोग थे जो क्षमता और अधिकार के साथ परमेश्वर के वचनों को बोलते थे; वे लोगों के हठीपन के कारण (२७) कड़ाई से भी बोलते थे।

१८. इस कारण उनके सहयोग से राजा बिन्यामीन ने अपनी पूरी शारीरिक शक्ति और आत्मबल और भविष्यवक्ताओं की सहायता से फिर से देश में शान्ति की स्थापना की।

मुसायाह की पुस्तक

अध्याय १

राजा बिन्यामीन का अपने पुत्रों का उपदेश देना—मूसायाह् का अपने पिता का उत्तराधिकारी चुना जाना—मूसायाह् का अभिलेख का पाना—इत्यादि।

१. और अब (१) सारे जराहेमला देश में, और राजा बिन्यामीन के सारे लोगों में कोई विवाद नहीं है, इसलिए राजा बिन्यामीन ने अपने बाकी जीवन भर लगातार शान्ति का अनुभव किया।

२. और ऐसा हुआ कि उसके तीन पुत्रों ने जन्म लिया; और उसने उनका नाम मूसायाह्, इलारम और इलामन रखा। और उसने उनको (२) अपने पूर्वजों की सब भाषाओं में शिक्षित करने का निश्चय किया जिससे कि वे ज्ञानी पुरुष बनें; और उन्हें पूर्वजों के मुख से की गई उन भविष्यवाणियों के विषय में ज्ञान हो, जो उनको स्वयं प्रभु से प्राप्त हुई थीं।

३. उसने उनको उन अभिलेखों के विषय में भी शिक्षा दी जो कि (३) पीतल की पटियों पर खुदे हुए थे, जिनके विषय में उसने कहा: मेरे पुत्रों, मैं चाहता हूं कि तुम यह स्मरण रखो कि अगर ये पटियां न होतीं जिनमें ये अभिलेख और आज्ञायें हैं, तब हम अज्ञानता में कष्ट झेलते और यहां तक कि हम वर्तमान समय में भी परमेश्वर के भेदों से भी अनजान होते।

४. क्योंकि बिना इन पटियों के हमारे पिता लेही के लिए यह सम्भव नहीं था कि वह इन सब बातों का स्मरण रख कर अपने बच्चों को इनकी शिक्षा देता; मिश्र की भाषा की शिक्षा (४) मिलने के कारण ही उसने इन पर उत्कीर्ण लिपि को पढ़ कर अपने बच्चों को शिक्षित किया, जिससे कि उन्होंने अपने बच्चों को उसकी शिक्षा दी, और इस तरह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन आज तक होता रहा है।

५. मेरे बेटो, मैं तुमसे कहता हूं कि अगर परमेश्वर के द्वारा ये सब सुरक्षित नहीं रखे जाते, जिनको पढ़ कर हम उसके रहस्यों को समझ सकते हैं, और उसकी आज्ञाएं सदा हमारी आंखों के सामने रहती हैं, तो हमारे पूर्वज तक अविश्वास में समाप्त हो जाते और हम अपने लमनायटी भाइयों की तरह होते जिनको इन बातों की कोई जानकारी नहीं है, और इन बातों की शिक्षा देने पर भी जो अपने पूर्वजों से प्राप्त अनुचित (५) परम्परा के कारण विश्वास नहीं करते।

६. हे मेरे बेटो, मैं चाहता हूं, कि तुम यह याद रखो कि ये सब बातें सत्य हैं और ये अभिलेख भी सत्य हैं। और देखो, नफी की पटियां भी सत्य हैं जिनमें यरूशलेम से निकलने के समय से लेकर आज तक के हमारे पूर्वजों के विवरण और कथन हैं, और हम उनकी सत्यता पर विश्वास इसलिए

(२७) देखो १, १ नफी १६.

मुसायाह की पुस्तक. (१) ओम १३. (२) पद्य ४. १ नफी १:२. मा० ८:३२. (३) देखो १, १ नफी ३. (४) देखो २. (५) देखो १४, या० ७. अल० १६:४.

लगभग ३८५ ईस्वी

ईसा से लगभग १३० वर्ष पूर्व

कर सकते हैं क्योंकि वह हमारी आंखों के सामने हैं।

७. और अब मेरे बेटों, मैं चाहता हूं कि तुम परिश्रम के साथ इनका अध्ययन करो, जिससे कि तुम उनसे लाभ उठा सको; मैं यह भी चाहता हूं कि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करो, जिससे कि तुम प्रभु के द्वारा हमारे पूर्वजों को दिए गए (६) वचनों के अनुसार देश में समृद्ध हो सको।

८. और राजा बिन्यामीन ने अपने पुत्रों को बहुत सी अन्य बातों की शिक्षा दी, जो इस पुस्तक में नहीं लिखी जा रही है।

९. और ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन ने अपने लड़कों को शिक्षा देना समाप्त किया, तब वह वृद्ध हो चला था, वह जान गया था कि वह भी सब लोगों की तरह शीघ्र ही उसी राह से होकर गुजर जाएगा; इसलिए उसने सोचा कि शासन का भार शीघ्र ही अपने किसी एक पुत्र को दे देना चाहिए।

१०. इसलिए उसने *मूसायाह को अपने सामने बुलवाया और उसने उससे इन शब्दों को कहा : मेरे बेटे, मैं चाहता हूं कि तुम इस पूरे देश पर के सब लोगों में अर्थात् (७) जराहेमला और (८) मूसायाह के लोगों में, जो देश में निवास करते हैं, घोषणा करो कि वे सब इकट्ठे हों; क्योंकि कल मैं उनमें स्वयं अपने मुख से यह घोषणा करूंगा कि इन लोगों के जिनको प्रभु हमारे परमेश्वर ने हमें दिया है, (९) तुम राजा और शासक हो।

११. और मैं इन लोगों को (१०) एक नाम दूंगा जिसके द्वारा इनकी पहचान उन सारे लोगों में से की जाएगी, जिन्हें प्रभु ने यरूशलेम के देश से निकाल कर लाया था; यह मैं इसलिए करूंगा क्योंकि ये लोग प्रभु की आज्ञाओं का पालन लगन से करते हैं।

१२. और मैं उनको एक ऐसा नाम दूंगा जो पाप के अलावा अन्य किसी कारण से कभी भी मिटाया नहीं जा सकेगा।

१३. हां, और मैं तुमसे यह भी कहता हूं कि ये परमेश्वर के अत्यधिक कृपापात्र लोग अगर दुष्कर्म में गिर कर पापी और व्यभिचारी हो गए तब प्रभु उनको त्याग देगा और वे अपने भाइयों की तरह दुर्बल हो जाएंगे; और वह अपनी अद्वितीय और आश्चर्यमय शक्ति के द्वारा उनकी रक्षा भी नहीं करेगा, जिस तरह उसने अब तक हमारे पूर्वजों की रक्षा की थी।

१४. इस कारण मैं तुम से कहता हूं कि अगर वह अपने हाथ बढ़ा कर हमारे पूर्वजों की रक्षा नहीं करता, तो वे लमनायटियों के हाथों में पड़ कर उनकी घृणा के पात्र बन जाते।

१५. और ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन ने अपने पुत्र से यह कहना समाप्त किया, तब उसने अपने पुत्र को सारा शासन भार दे दिया।

१६. और उसने (११) पीतल की पटियों पर अंकित अभिलेखों को; (१२) नफी की पटियों को; (१३) लबान की तलवार और (१४) दिग् दर्शक यंत्र, जो प्रभु के हाथों द्वारा हमारे पूर्वजों का, वन में उनके विश्वास और लगन के अनुसार पथ-प्रदर्शन करने के लिए तैयार किया गया था, वह सब उसके अधिकार में दे दिया।

१७. इस कारण जब ये अविश्वासी रहे तब उन्होंने न तो उन्नति ही की और न यात्रा में ही प्रगति की, उलटे उन्हें पीछे (१५) ढकेल दिया गया और उनसे परमेश्वर अप्रसन्न हो गया; इस कारण उन पर अकाल और भारी कष्टों की मार पड़ी, जिससे उनको अपने कर्तव्यों का पालन करने की चेतावनी मिले।

१८. और ऐसा हुआ कि मूसायाह (१६) ने अपने पिता के कहे अनुसार कार्य किया और (१७) जराहेमला देश के सब लोगों को एकत्रित होने की घोषणा की और कहा कि वे (१८) मन्दिर में जाकर उसके पिता की उन बातों को सुने जो वह उनसे कहेगा।

(६) देखो ८, २ नफी १. (७) ओ० १४. (८) देखो १६, मू० २७:३५. २८:१८. २९:४०. इला० १५:३. (९) मू० २:३०. ६.३, ४. (१०) पद्य १२. मू० ५:११. (११) देखो १, १ नफी ३. (१२) देखो ६, १ नफी १. (१३) देखो १, १ नफी ४. (१४) देखो ४, १ नफी १६. (१५) १ नफी १८:१२, १३. (१६) पद्य १०. मू० २:१. (१७) ओ० १३. (१८) देखो ८, २ नफी ५.

ईसा से लगभग १२४ वर्ष पूर्व

अध्याय २

राजा बिन्यामीन का अपने लोगों को भाषण देने के लिए मीनार बनाना—परमेश्वर से डरने वाले राजा का धार्मिक शासन।

१. और ऐसा हुआ कि जब मूसायाह (१) अपने पिता की आज्ञानुसार सारे देश में घोषणा कर चुका तब सारे देश के लोग एकत्रित हुए जिससे वे (२) मन्दिर में जाकर राजा बिन्यामीन की उन बातों को सुन सकें जो वह उनसे कहने वाला था।

२. और उनकी संख्या इतनी बड़ी थी कि उन्होंने उनकी गिनती नहीं की; क्योंकि उनकी जनसंख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई थी और उन्होंने प्रगति की थी।

३. और वे अपने पशुओं के प्रथम जन्मे पशु-बच्चों को भी साथ लेते गए जिससे कि वे (३) मूसा के नियमानुसार उनकी बलि चढ़ा सकें और अग्नि में आहुति दे सकें।

४. और यरूशलेम देश से उन्हें लाने के लिए, शत्रुओं से उनकी रक्षा करने के लिए, धार्मिक लोगों को उनका शिक्षक और एक ऐसे न्यायप्रिय राजा को नियुक्त करने के लिए अपने प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद दे सकें; जिसने कि (४) ज़राहेमला के देश में शान्ति की स्थापना की और जिसने उन्हें परमेश्वर के नियमों को मानने की शिक्षा दी जिससे कि वे आनन्द मनावें और परमेश्वर और सब मनुष्यों के प्रति प्रेम से भर उठें।

५. और ऐसा हुआ कि जब वे (५) मन्दिर के निकट आए तब उन सब ने मन्दिर के आस पास अपने परिवार वालों के अनुसार अपने अपने तम्बू खड़े किए। परिवारों में पत्नियां, उनके पुत्र और पुत्रियां और नाती पोते, नातिन, पोतियां, परिवार के बड़े और छोटे सब थे और हर एक परिवार अलग अलग था।

६. और उन्होंने अपने अपने तम्बुओं को (६) मन्दिर के चारों ओर खड़ा किया और हर एक व्यक्ति ने अपने तम्बू का द्वार मन्दिर की ओर किया, जिससे कि वे अपने तम्बू में रह कर राजा बिन्यामीन की उन बातों को सुन सके जो वह उनसे कहने वाला था।

७. क्योंकि भीड़ इतनी बड़ी थी कि राजा बिन्यामीन मन्दिर के अन्दर उन सभी लोगों को शिक्षा नहीं दे सकता था, इस कारण उसने (७) एक मीनार बनवायी जिससे कि वह उस पर से बोले और उसके लोग उसकी बातों को सुन सकें।

८. और ऐसा हुआ कि उसने मीनार पर से अपने लोगों से बोलना आरम्भ किया; और भारी जन-समूह के कारण सब उसकी बातों को सुन नहीं पा रहे थे; इस कारण उसने आज्ञा दी कि उसकी बातें लिख कर उन लोगों को दी जाएं, जो उसके कहे शब्दों को सुनने में असमर्थ थे, जिससे कि वे भी उसकी वाणी को जान सकें।

९. और उसके कहे और लिखे गए शब्द ये हैं: मेरे भाइयों, तुम जो यहां एकत्रित हुए हो, तुम जो मेरी उन बातों को सुन रहे हो जिसे मैं आज तुमसे कहूंगा; मैंने तुम्हें यहां आने की आज्ञा इसलिए नहीं दी है कि तुम मेरे उन शब्दों को महत्वहीन कर दो जिन्हें मैं कहने जा रहा हूं; परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम उन्हें मानो, और अपने कानों को खोल दो जिससे कि तुम सुनो, और अपने हृदयों को खोल दो जिससे कि तुम समझो, और अपनी बुद्धि का पर्दा हटा दो जिससे कि परमेश्वर के गुप्त रहस्यों को तुम्हारी दृष्टि के समक्ष खोल दिया जाए।

१०. मैंने तुम्हें यहां आने की आज्ञा इसलिए नहीं दी है कि तुम मुझसे डरो या कि मुझे एक नश्वर मनुष्य से कहीं अधिक समझो।

११. लेकिन मुझमें भी तुम्हारी ही तरह, शरीर और बुद्धि की हर तरह की दुर्बलता है, फिर भी मैं इन लोगों द्वारा चुना गया और (८) अपने पिता द्वारा प्रतिष्ठित किया गया, और प्रभु के हाथ द्वारा इन लोगों का शासक और राजा बनाया गया; और मैं उसकी अद्वितीय शक्ति के द्वारा (९) तुम्हारी सेवा अपने पूरे बल, बुद्धि और प्रभु के द्वारा दी गई क्षमता से करने के लिए सुरक्षित रखा गया।

१२. मैं तुमसे कहता हूं कि मैंने अब तक के

(१) मू० १:१०, १८. (२) देखो ८, २ नफी ५. (३) देखो १५. २ नफी २५. (४) ओ० १३. (५) देखो ८, २ नफी ५.
(६) देखो ८, २ नफी ५. (७) पद्य ८. (८) ओ० २३, २४. (९) पद्य १४, १६-१९. ईसा से १२४ वर्ष पूर्व

अपने जीवन को तुम्हारी सेवा में लगाया है और बदले में मैंने तुमसे सोने, चांदी या किसी अन्य प्रकार की मूल्यवान वस्तुओं की मांग नहीं की है।

१३. और न तो मैंने तुम्हें कालकोठरी में बन्द किया और न ही तुम्हें एक दूसरे का दास बनने दिया। मैंने तुम्हें लूटने, चोरी करने और व्यभिचार करने भी नहीं दिया और न तो किसी प्रकार का पापकर्म ही करने दिया, अपितु तुम्हें हर बात में प्रभु की आज्ञा मानने की शिक्षा दी है।

१४. और यहां तक कि मैंने तुम्हारी सेवा करने के लिए अपने हाथों द्वारा परिश्रम किया, ताकि तुम पर कर का बोझ न लदे और न तो किसी प्रकार का अन्य बोझ पड़े, जिसका ढोना, तुम्हारे लिए कठिन हो—और ये सब बातें जो मैंने कही हैं, उसके साक्षी आज स्वयं तुम हो।

१५. फिर भी मेरे भाइयों, मैंने इन कामों को इसलिए नहीं किया कि मैं अहंकार करूं और इन बातों को मैं इसलिए भी नहीं कह रहा हूं कि मैं तुम पर दोष लगाऊं; मैं इन बातों को तुम्हें इसलिए बता रहा हूं जिससे तुम यह जान सको कि आज मैं क्यों प्रभु के सामने निर्दोष खड़ा हो सकता हूं।

१६. देखो, मैं तुमसे यह कहना चाहता हूं कि मैंने जो यह कहा है कि मैंने अपना जीवन (१०) तुम्हारी सेवा में बिताया है, उससे मैं अहंकार नहीं करना चाहता क्योंकि मैं तो केवल परमेश्वर की सेवा में था।

१७. और सुनो, मैं तुमको ये बातें इसलिए बता रहा हूं ताकि तुममें विवेक आये; जिससे तुम यह समझ सको कि जब तुम अपने साथी की सेवा करते हो, तब तुम अपने परमेश्वर की सेवा करते हो।

१८. देखो, तुमने मुझे अपना राजा कहा, और अगर मैंने, जिसे कि तुम ने राजा कहा, तुम्हारी सेवा में परिश्रम किया, तब क्या तुम्हें एक दूसरे की सेवा करने में परिश्रम नहीं करना चाहिए?

१९. और यह भी देखो कि मैं, जिसे तुम राजा कहते हो, (११) अपना जीवन तुम्हारी सेवा में बिताते हुए भी परमेश्वर की सेवा कर रहा था, जिसके लिए मैं तुम्हारे धन्यवाद का अधिकारी हूं। तो तुम्हें अपने स्वर्ग में रहने वाले राजा के प्रति कितना कृतज्ञ होना चाहिए।

२०. मैं तुम से कहता हूं, मेरे भाइयों, कि जिस ईश्वर ने तुम्हें रचा, जीवित और सुरक्षित रखा और आनन्द मनाने का कारण दिया, तथा एक दूसरे के साथ शान्ति से रहने का अवसर दिया, उसको अगर तुमने अपनी आत्मा की पूरी शक्ति के साथ धन्यवाद दिया गुणगान किया।

२१. मैं तुमसे कहता हूं कि जिसने आरम्भ से तुम्हें रचा, श्वांस दे कर दिन प्रतिदिन तुम्हें सुरक्षित रखा, जिससे तुम जीवित रहो और अपनी इच्छा से कर्म करो, यहां तक कि वह पल पल तुम्हें सहारा दे रहा है, तब मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुम ने उसकी सेवा अपनी पूरी आत्मा से की, तब भी तुम उसके लिए लाभरहित सेवक ही रहोगे।

२२. और देखो, तुमसे वह केवल इतना ही चाहता है कि तुम उसकी आज्ञाओं का पालन करो और उसने तुमसे (१२) यह प्रतिज्ञा की है कि अगर तुमने उसकी आज्ञा का पालन किया तब तुम देश में प्रगति करोगे; और वह जो कुछ कहता है उससे वह हटता नहीं है; इसलिए अगर तुमने उसकी आज्ञा का पालन किया तब वह तुम्हें आशीष देगा और तुम्हारी प्रगति करेगा।

२३. प्रथम तो उसने तुम्हारी रचना की और तुम्हें जीवन दिया जिसके लिए तुम उसके ऋणी हो।

२४. दूसरे वह चाहता है कि जैसी वह आज्ञा देता है तुम वैसा ही करो और अगर तुम वैसा ही करते हो तब वह अविलम्ब तुम्हें आशीर्वाद देता है; इस तरह वह तुम्हारा ऋण चुका देता है। तब भी तुम उसके ऋणी रहते हो, ऋणी रहोगे और सदा सदा के लिए ऋणी बने रहोगे; इसलिए तुम किस बात पर घमंड करोगे।

२५. और अब मैं पूछता हूं कि तुम अपने विषय में क्या कह सकते हो? तुम्हारे तरफ से मैं उत्तर देता हूं कि कुछ भी नहीं। (१३) तुम्हें पृथ्वी की धूल से रचा गया था फिर भी तुम इतना भी नहीं कह

(१०) पद्य ११, १७-१९. (११) पद्य ११, १६-१८. (१२) देखो ८, २ नफी १. (१३) २ नफी २:१५. २९:७. या० २:२१. ४:९. मू० ४:२१. ७:२७. २८:१७. अल० १८:२८, ३४, ३६. २२:१०-१३. ४२:२. मा० ६:१५. ९:११, १२, १७. ए० ३:१५, १६. मरो० १०:३. उत्पत्ति २:७. ३:१९.

सकते कि तुम पृथ्वी की धूल के बराबर हो; क्योंकि वह तो उसका है जिसने तुम्हें रचा है।

२६. और यहां तक कि मैं भी, तुम जिसे अपना राजा कहते हो, तुमसे किसी अंश में बढ़ कर नहीं हूं; क्योंकि मैं भी धूल का बना हूं, और तुम देखते ही हो कि मैं वृद्ध हो चला हूं और इस नश्वर तन को धरती माता को सौंपने वाला हूं।

२७. इस कारण, जैसा कि मैंने कहा कि मैंने (१४) तुम्हारी सेवा की है जिससे मैं परमेश्वर के समक्ष शुद्ध अन्त:करण से जा सकूं। यहां तक कि इस समय मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित करवाया है कि जिससे मैं निर्दोष ठहराया जाऊं और जब मैं परमेश्वर के सामने न्याय के लिए खड़ा होऊं और तुम्हारे विषय में उसने मुझे जो आज्ञा दी थी उसके सम्बन्ध में मेरा न्याय करे, तब तुम्हारा रक्त मेरे ऊपर न रहे।

२८. मैं तुम से कहता हूं कि मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित करवाया है जिससे कि इस समय जब कि मैं अपनी कब्र में जाने वाला हूं, तब मैं अपने वस्त्रों से तुम्हारा लहू छुड़ा लूं, जिससे कि मैं शान्ति से जा सकूं और मेरी अमर आत्मा न्यायप्रिय परमेश्वर के गुणगान (१५) गाने वालों के साथ हो जाए।

२९. और मैं तुमसे कहता हूं कि मैंने तुम्हें इसलिए एकत्रित करवाया है, जिससे मैं तुम्हारे लिए यह घोषणा कर सकूं कि अब मैं तुम्हारा न तो शिक्षक ही रह सकता हूं और न तुम्हारा राजा ही।

३०. क्योंकि इस समय, भी तुम से बोलने के प्रयत्न में, मेरा पूरा शरीर कांप रहा है; लेकिन प्रभु परमेश्वर मुझे सहारा दे रहा है और तुम से बोलने की जिम्मेदारी दी है और मुझे आज्ञा दी है कि मैं आज तुम्हारे लिए यह घोषणा करूं कि मेरा पुत्र मूसायाह (१६) तुम्हारा राजा और शासक है।

३१. और अब, मेरे भाइयों, मैं चाहता हूं कि तुम वही करो जो अभी तक करते आए हो। जिस तरह तुमने मेरी और मेरे पिता की आज्ञाओं का पालन करके प्रगति की है, और अपने शत्रुओं के हाथों में पड़ने से अपने को सुरक्षित रखा, ठीक उसी तरह अगर तुमने मेरे पुत्र की या परमेश्वर की उन आज्ञाओं का पालन किया, जो तुम्हें उसके द्वारा प्राप्त होंगी, तब तुम देश में प्रगति करोगे, और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे शत्रुओं की कोई शक्ति काम न करेगी।

३२. लेकिन हे मेरे लोगों, सावधान रहो, तुम लोगों में विवाद न उठ खड़ा हो, और तुम (१७) कहीं उस दुष्टात्मा के आज्ञाकारी न बन जाओ जिसकी चर्चा मेरे पिता मूसायाह ने की थी।

३३. क्योंकि देखो, जो उस आत्मा की सुनता और उसकी बातों को मानता है उस पर घोर दुख पड़ता है, और जो उसकी सुन कर उसकी आज्ञा मानता है वह पाप में रह कर मरता है, तब वह अपनी आत्मा के लिए धिक्कार पाता है, और वह अपने ज्ञान के विपरीत परमेश्वर के नियम का उल्लंघन करने के लिए, अनन्त दण्ड पाता है।

३४. मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हारे छोटे बच्चों को छोड़ कर तुम लोगों में और कोई नहीं है जिन्हें इन बातों की शिक्षा न दी गई हो, किन्तु क्या तुम यह जानते हो कि तुम अपने स्वर्गवासी पिता के अनन्त ऋणी हो, और तुम्हारे पास जो कुछ है और भविष्य में जो रहेगा वह सब कुछ उसकी सेवा में लगा देना चाहिए? तुम्हें उन (१८) अभिलेखों के विषय में भी शिक्षा मिली है जिनमें वे भविष्यवाणियां हैं जिनको लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय तक के पवित्र भविष्यवक्ताओं ने कही थी।

३५. और हमारे पूर्वजों ने जो कुछ आज तक कहा वह सब भी उन अभिलेखों में हैं। और देखो, उन्होंने वह भी कहा, जिसकी प्रभु ने उनको आज्ञा दी थी, इसलिए वे सब उचित और सत्य हैं।

३६. और अब, मेरे भाइयों मैं तुमसे कहता हूं कि इन बातों का ज्ञान प्राप्त करने और शिक्षा मिलने के पश्चात् अगर तुमने पाप किया और जो कुछ कहा गया है उसके विरुद्ध गए तो तुम प्रभु की आत्मा से अलग हो जाओगे और वह तुम्हारे

(१४) पद्य ११, १२, १४-१९. (१५) मा० ७:७. (१६) मू० १:१०. ६:३, ४. (१७) देखो ६, २ नफी २. ९:३९. १८:१९. २८:२०-२२. ३२:८. मू० २:३७. ३:६, ४:१४. १६:३. अ० ३:२६, २७. ५:२०, ३९-४२. ३०:४२, ५३. ३४:३४, ३५, ३९. ४०:१३, १४. इला० ७:१५, १६. १३:३७. ३ नफी २७:११, ३२. मा० १:१९. ५:१८. मरो० ७:११-१४, १७. १०:३०. (१८) देखो १, ३ या० ६.

अन्दर रह कर तुम्हें विवेक के उस पथ पर चलने के लिए पथ प्रदर्शित न कर सकेगा जिस पर चला कर तुम्हें आशीर्वाद, द्वारा समृद्ध और सुरक्षित रख सके।

३७. तब मैं तुम से कहता हूं कि जो मनुष्य ऐसा करता है वह खुले रूप में परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करता है; इसलिए वह (१९) दुष्टात्मा की आज्ञा मानने वालों में अपना नाम लिखता है और सभी धार्मिकता का शत्रु बन जाता है; इसलिए उसके अन्दर परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता, क्योंकि वह अपवित्र मन्दिरों के अन्दर निवास नहीं करता है।

३८. इस कारण अगर वह मनुष्य पश्चाताप नहीं करता है, और परमेश्वर का शत्रु ही रह कर मरता है तब दिव्य न्याय की मांग उसकी अमर आत्मा को अपने दोषों से अवगत कराती है जिससे कि वह प्रभु की उपस्थिति से डरता है और वह उसके हृदय को अपराध, पीड़ा, कष्ट से ऐसे भर देती है (२०) जैसे न बुझने वाली आग हो जिसकी लपटें सदैव उठती ही रहती हैं।

३९. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि उस पर दया का कोई अधिकार नहीं; इसलिए उसकी अन्तिम स्थिति है (२१) कभी भी समाप्त न होने वाला सन्ताप।

४०. हे वृद्ध लोगो, तरुणों और तुम छोटे बच्चों जो मेरी बातों को समझ सकते हो, क्योंकि मैंने स्पष्ट बातें तुमसे इसलिए कही हैं कि तुम समझ सको। मैं तुमसे अनुरोध करता हूं कि तुम उन लोगों की भयानक परिस्थिति के प्रति जागरुक रहो जो पाप में पतित हो चुके हैं।

४१. और मैं इस बात का इच्छुक हूँ कि तुम उन आशीष प्राप्त और आनन्दित लोगों की स्थिति को ध्यान में रखो जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं। क्योंकि देखो, उनको सभी बातों में आशीर्वाद प्राप्त है चाहे वह शरीरिक हो या आत्मिक; और अगर वे अन्त तक सच्चे रहे, तब उनको स्वर्ग में ले लिया जाएगा, जिससे कि वे अनन्त सुख की स्थिति में परमेश्वर के साथ रहेंगे। ओह! स्मरण रखो कि यह बातें सत्य हैं; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने यह कहा है।

अध्याय ३

राजा बिन्यामीन के उपदेश का जारी रहना—मसीह के विषय में एक और भविष्यवाणी—प्रायश्चित के विषय में और बातें।

१. मेरे भाइयों, मैं तुम्हारा ध्यान फिर से अपनी ओर चाहता हूं क्योंकि मैं तुमसे भविष्य में होने वाली बातों को कहना चाहता हूं।

२. और जिन बातों की जानकारी मुझे तुम्हें देनी है उन बातों को परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने मुझे बताया है। और उसने मुझसे कहा: जागो; और मैं जागा और अपने सामने उस स्वर्गदूत को खड़ा पाया।

३. और उसने मुझसे कहा: जागो और उन बातों को सुनो जिन्हें मैं तुम्हें बताऊंगा; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें महान आनन्द की बातों को बताने के लिए आया हूं।

४. क्योंकि प्रभु ने तुम्हारी प्रार्थनाओं को सुना है, और तुम्हारी धार्मिकता पर ध्यान दिया है, और उसने मुझे तुम्हारे पास भेज कर यह घोषणा करने को कहा है कि तुम आनन्द मनाओ; और तुम अपने लोगों में भी घोषणा कर सकते हो कि वे भी आनन्द विभोर हो उठे।

५. क्योंकि देखो, वह समय निकट है, समीप आ रहा है, जब कि वह शक्ति, अर्थात् सर्वशक्तिमान प्रभु जो शासन कर रहा है और जो (१) अनादि से था और अनन्त तक रहेगा, वह स्वर्ग से उतर कर मनुष्य के (२) मिट्टी के शरीर में अर्थात् मानव वंश में रहेगा और लोगों में बड़े बड़े (३) चमत्कार के काम करेगा जैसे रोगियों को स्वस्थ करना, मृतकों

(१९) १ नफी ३:२४. ५:१४. (२०) देखो १६. (२१) देखो १३, या० ६. अध्याय ३. (१) २ नफी १९:६. २६:१२. मू० १५:१, ५. अल० ११:३८, ३९, ४४. १३:७-९. इला० १४:१२. मरो० ७:२२. ८:१८. सि० शर्त० २९:३३. ३९:१. ७६:४. (२) २ नफी ९:१८-२१. २ नफी २:४. ६:९. ९:५, २१. २५:१२. ३२:६. मू० ७:२७. १५:१-७. अल० ७:९-१३. १९:१३. इला० १४:४. ३ नफी १:१४. ९:१५, १६. १०:१८, १९. अध्याय ११-२८. मा० ३:२१. (३) १ नफी ११:३१. २ नफी १०:४. २६:१३. अल० ७:११.

ईसा से १२४ वर्ष पूर्व

को जिलाना, लंगड़ों को चलाना, अन्धों को आंखें देना, बहिरों को सुनने की शक्ति देना और अनेक प्रकार के रोगों को ठीक करना।

६. वह मानव सन्तान के हृदयों में रहने वाले शैतानों अर्थात् (४) शैतानी आत्माओं को निकाल फेंकेगा।

७. और सुनो, वह मृत्यु के अतिरिक्त इतना अधिक प्रलोभन, शारीरिक पीड़ा, उपवास, प्यास, थकान झेलेगा कि जितना कि मनुष्य सहन नहीं कर सकता; क्योंकि देखो, अपने लोगों की दुष्टता और घृणित कार्यों के कारण उसका कष्ट इतना अधिक होगा कि उसके शरीर के हर एक रोम-रोम से रक्त बहेगा।

८. और वह परमेश्वर का पुत्र, स्वर्ग और पृथ्वी का पिता, आरम्भ से सभी वस्तुओं का रचयिता यीशु मसीह कहलायेगा, और उसकी मां मरियम (५) कहलायेगी।

९. और सुनो, वह अपने लोगों के लिए आएगा, जिससे कि उस पर विश्वास करने से ही मानव वंश को मुक्ति मिल सके; इतना होने पर भी उसे एक साधारण मनुष्य माना जायेगा और कहा जायेगा कि उसके अन्दर शैतान है, और वे उसको यातनायें देंगे और (७) क्रूस पर चढ़ा देंगे।

१०. और वह मर कर (८) तीसरे दिन जी उठेगा, और देखो, वह जगत का न्याय करने के लिए खड़ा होगा; और सुनो, यह सब इसलिए किया जाएगा कि जिससे मानव-वंश में धार्मिक न्याय आ सके।

११. क्योंकि देखो, आदम के द्वारा किए गए पाप के कारण जिन लोगों का पतन हुआ है और जो बिना अपने विषय में परमेश्वर की इच्छा जाने ही मृत्यु प्राप्त हो चुके हैं अथवा (९) अनजाने में पाप कर बैठे हैं, उन सब के पापों का (१०) शमन उसका रक्त करता है।

१२. लेकिन संताप हो, संताप पड़े उस पर, जो यह जानता है कि वह परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहा है, क्योंकि मुक्ति किसी ऐसे के पास नहीं आती; वह तो एकमात्र पापों पर पश्चाताप करने और प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से आती है।

१३. और प्रभु परमेश्वर ने सारे मानव समाज में अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं को भेज कर इन बातों की घोषणा हर एक जाति, राष्ट्र और भिन्न भिन्न भाषा बोलने वालों में की है कि जो कोई यह विश्वास करेगा कि मसीह आएगा, उसी के पापों को क्षमा किया जाएगा, और वह महान आनन्द से हर्षित होगा जैसे कि वह उनमें आ ही गया हो।

१४. फिर भी प्रभु परमेश्वर ने देखा कि उसके लोग हठी हैं, इस कारण उसने उनके लिए एक नियम निश्चित किया और वह नियम है (११) मूसा का नियम।

१५. और उसने अपने आगमन के अनेक आश्चर्य, संकेत और छाया उनको दिखाये; और उनसे पवित्र भविष्यवक्ताओं ने भी उसके आगमन की बातें कहीं; फिर भी उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया और वह यह नहीं समझे कि बिना उसके (१२) रक्त के प्रायश्चित के मूसा का नियम व्यर्थ हो जाता है।

१६. अगर छोटे बच्चों के लिए पाप करना सम्भव होता तब उनको बचाना असम्भव होता; लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि वे धन्य हैं; क्योंकि देखो, आदम की तरह या प्राकृतिक स्वभाव से अगर वे पतित होते तब उनके (१३) पापों का प्रायश्चित मसीह का रक्त करता है।

१७. और मैं तुमसे कहता हूं कि सर्वशक्तिमान प्रभु यीशु के नाम को छोड़ कर और कोई दूसरा नाम, रास्ता या मुक्ति नहीं है जिससे मानव वंश को मुक्ति प्राप्त हो सके।

१८. क्योंकि देखो, वह न्याय करता है और उसका न्याय उचित होता है; और (१४) जो

(४) देखो १७, मू०२. (५) देखो १९, २ नफी ९. (६) अल० ७:१०. (७) १ नफी ११:३३. १९:१०, १३. २ नफी ६:९, १०:३, २५:१३. मू० १५:७. ३ नफी ११:१४, १५. (८) १ नफी १९:१०. २ नफी २५:१३. इल० १४:२०, २७. ३ नफी १०:९. (९) देखो ६, २ नफी २. (१०) २ नफी ९:२५, २६. मू० ३:२०-२२. १५:२४-२५. अल० ९:१५, १६. २९:५. ४२:२१. इला० १५:१४, १५. मरो० ८:२२. (११) देखो १५, २ नफी ५. (१२) देखो ६, २ नफी २. (१३) पद्य १८, १९. मू० १५:२५. मरो० ८:८, १२, २२. (१४) देखो १३.

छोटे बच्चे शैशव में ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं वे नष्ट नहीं होते; लेकिन मनुष्य अगर बच्चों के समान दीन नहीं हो पाते, और यह विश्वास नहीं करते कि अतीत, वर्तमान और भविष्य में मुक्ति सर्वशक्तिमान प्रभु मसीह के प्रायश्चित के रक्त (१५) द्वारा मिलती थी, मिलती है और मिलेगी, तब वे अपनी आत्माओं के पतन के लिए मानो हलाहल पीते हैं।

१९. अगर मनुष्य पवित्रात्मा के आकर्षणों पर आकर्षित नहीं होता और अपने स्वाभाविक प्रकृति को त्याग कर प्रभु मसीह के प्रायश्चित द्वारा सन्त बन कर तथा बच्चों की तरह आज्ञाकारी, विनीत, दीन, सहनशील, प्रेम से परिपूर्ण हो कर उन सारी बातों को जिन्हें प्रभु उनके लाभ के लिए लागू करता है, उसी तरह स्वीकार नहीं करता जैसे एक बच्चा अपने पिता की बातों को स्वीकार करता है तब वह अपने प्राकृतिक स्वभाव से ही परमेश्वर का शत्रु है, और आदम के पतन के समय से शत्रु था और सदैव रहेगा।

२०. और मैं तुमसे यह भी कहता हूं कि वह समय आएगा जब कि उद्धारक का ज्ञान हर एक राष्ट्र, जाति भिन्न भिन्न भाषा बोलने वालों और लोगों में फैलेगा।

२१. और सुनो, जब वह समय आएगा तब (१६) केवल छोटे बच्चों और पश्चाताप करने वालों और सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर पर विश्वास करने वालों को छोड़ कर दूसरे कोई भी निर्दोष नहीं ठहरेंगे।

२२. यहां तक कि इस समय भी प्रभु, तुम्हारे परमेश्वर ने जिन बातों की आज्ञा तुम्हें दी है उन बातों की शिक्षा तुम्हें अपने लोगों को देनी चाहिए थी फिर भी वे मेरे कहे शब्दों के अनुसार परमेश्वर की दृष्टि में निर्दोष नहीं ठहरते।

२३. और अब मैंने उन बातों को कह लिया जिन्हें कहने की आज्ञा प्रभु परमेश्वर ने मुझे दी थी।

२४. और प्रभु इस प्रकार कहता है: न्याय के दिन वे इन लोगों के विरुद्ध उज्ज्वल गवाह के रूप में खड़े होंगे; इसलिए हर एक मनुष्य को उनके भले बुरे कर्मों के अनुसार न्याय किया जाएगा।

२५. और अगर वे पापी ठहरे तब उन्हें अपने अपराधों और घृणित कार्यों को स्वयं देखने का भयंकर दंड दिया जाएगा, जिससे वे प्रभु की उपस्थिति से सकुचाएंगे और दुर्गति और (१७) अनन्त यातना सहेंगे, जहां से उनके लिए वापस लौटना सम्भव नहीं, इस तरह वे अपनी आत्माओं के पतन का ज़हर स्वयं ही पीयेंगे।

२६. इस कारण उन्होंने परमेश्वर के क्रोध के प्याले से पिया है जिससे कि न्याय से वे उसी प्रकार नहीं बच सकते जिस प्रकार आदम वर्जित फल खाकर पतन के न्याय से नहीं बच सका; इस कारण वे कभी भी दया के पात्र नहीं बन सकते।

२७. और उनका सन्ताप ठीक उसी प्रकार होगा जैसा कि कभी भी न बुझने वाली आग और गन्धक का कुण्ड, जिसका धुआं सदैव-सदैव के लिए उठता रहता है। ऐसी ही आज्ञा प्रभु ने मुझे दी है। आमीन।

अध्याय ४

राजा बिन्यामीन के वक्तव्य का समाप्त होना—मोक्ष की स्थितियां—मनुष्य का परमेश्वर पर आश्रय—निष्पक्षता, विवेक, और परिश्रम का निर्देशन।

१. और ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन (१) प्रभु के स्वर्गदूत द्वारा बताए हुए शब्दों को कह चुका तब उसने भीड़ पर अपनी दृष्टि डाली, और देखो, वे सब धरती पर लोट रहे थे, क्योंकि उनके ऊपर प्रभु का भय आ गया था।

२. और उन्होंने अपने आप को धरती के धूल से भी अधिक बदतर विषय-वासनाओं में लिप्त देखा, और वे सब एक स्वर में चिल्लाए: ओह! हम पर दया करो और मसीह के (२) प्रायश्चित के रक्त को हम पर लगाओ जिससे हमारे पापों को क्षमा किया जाए और हमारे हृदयों को शुद्ध किया जाए; क्योंकि हम यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, जो परमेश्वर का पुत्र है और जिसने स्वर्ग और जगत की सब वस्तुओं की रचना की है और जो मानव वंश में आएगा।

(१५) देखो ६, २ नफी २. (१६) देखो १३. (१७) देखो १३, या० ६. अध्याय ४. (१) पद्य ११. मू० ३:२. (२) देखो ६. २ नफी २.

३. और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने ये शब्द कहे तब प्रभु की आत्मा उनके ऊपर आई और राजा बिन्यामीन के कहे अनुसार, भविष्य में आने वाले यीशु मसीह पर अपने भारी विश्वास के कारण वे अपने पापों से मुक्त होकर और आत्मसन्तोष पाकर वे महान आनन्द से भर उठे।

४. और राजा बिन्यामीन ने पुन: बोलने के लिए मुख खोला और कहा: मेरे मित्रों, मेरे भाइयो, मेरे बन्धुओं और मेरे लोगों, मैं फिर से तुम्हारा ध्यान अपनी ओर चाहता हूं कि जिससे तुम मेरी उन शेष बातों को सुनो और समझो जिन्हें मैं कहने जा रहा हूं।

५. क्योंकि देखो, परमेश्वर की महानता से अगर तुम्हें तुम्हारी हीनता, तुच्छता और पतन का ज्ञान हुआ है।

६. मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुम्हें परमेश्वर की उदारता, अद्वितीय शक्ति, उसके विवेक, उसकी सहनशीलता, (३) मानव वंश के लिए दीर्घकाल के कष्टों का ज्ञान हुआ है; और यह भी ज्ञान हुआ है कि (४) जगत की नींव के समय से (५) प्रायश्चित की जो व्यवस्था है उससे तुम को मुक्ति मिलती है और इस व्यवस्था से तुमको प्रभु पर विश्वास करना चाहिए, और लगन के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए अपने जीवन के अन्त तक, पार्थिव शरीर के जीवन तक, विश्वास करते रहना चाहिए।

७. तब मैं तुमसे कहता हूं कि यही वह मनुष्य है जो प्रायश्चित से मुक्ति पाता है, जिसकी व्यवस्था जगत की नींव से (५) सब मनुष्यों के लिए तैयार की गई थी; जो व्यवस्था आदम के पतन के समय से थी और जो लोग वर्तमान समय में हैं और जो जगत के अन्त तक रहेंगे उन सभी के लिए है।

८. यही वह युक्ति है जिसके द्वारा मुक्ति आती है। जिस मुक्ति की चर्चा यहां की गई है उस मुक्ति को छोड़कर और कोई मुक्ति है ही नहीं और जिन स्थितियों को मैंने तुम्हें बताया है उनको छोड़ कर और कोई स्थिति है ही नहीं जिसके द्वारा मनुष्य बच सके।

९. परमेश्वर पर विश्वास करो; विश्वास करो कि वह है, और यह भी विश्वास करो कि स्वर्ग और पृथ्वी की सारी वस्तुओं को उसने रचा है; विश्वास करो कि स्वर्ग और पृथ्वी पर उसमें संपूर्ण विवेक है और वह सर्वशक्तिमान है; विश्वास करो कि जो कुछ प्रभु जानता है, वह मनुष्य नहीं जानता।

१०. और पुन: विश्वास करो कि तुम्हें अपने पापों पर पश्चाताप करना है और पाप-कर्म को त्याग दो और परमेश्वर के सामने गर्वहीन बन जाओ; और अपने सच्चे हृदय से क्षमा याचना करो, और अब, अगर तुम इन बातों पर विश्वास करते हो तब तुम इनके अनुसार आचरण करो।

११. और मैं अपने कहे अनुसार पुन: कहता हूं कि जब तुमने, प्रभु के यश की जानकारी प्राप्त कर ली है, या तुमने उसके उपकारों और प्रेम को अनुभव किया, और अपने पापों की क्षमा प्राप्त की जिससे तुम्हारी आत्मा को महान आनन्द प्राप्त होता है, तब मैं चाहता हूं कि तुम महत्वहीन प्राणियों, सदैव परमात्मा की महानता और अपनी तुच्छता, और अपने लिए उसकी दयालुता और अति-सहनशीलता याद रखो और अपने आपको अति दीन बना कर प्रतिदिन प्रभु का नाम पुकारो और भविष्य की उन बातों पर विश्वास में दृढ़ रहो जो (६) स्वर्गदूत के मुख से कही गई थीं।

१२. और देखो, मैं तुमसे कहता हूं, कि अगर तुमने ऐसा किया, तब तुम सदैव आनन्द मनाओगे, और परमेश्वर के प्रेम से भरे रहोगे और सदैव अपने पापों की क्षमा प्राप्त करोगे; और जिसने तुम्हें रचा है, उसके यश के ज्ञान में अर्थात् उस ज्ञान में जो कि सत्य और न्याययुक्त है, तुम प्रगति करोगे।

१३. तब तुम्हारा विचार एक दूसरे को हानि करने का नहीं होगा परन्तु शान्ति से रहने और एक दूसरे के अधिकारों को मानने का होगा।

१४. तब तुम अपने बच्चों को भूखे और नंगे रहने का कष्ट नहीं देखोगे, और न तो उनके द्वारा परमेश्वर के नियमों को उल्लंघन करने का कष्ट ही तुमको सहना पड़ेगा और न ही वे एक दूसरे से

(३) देखो ६, २ नफी २. (४) पद्य ७. मू० १८:१३. अल० १२:२५-१३. १३:३, ५, ७, ८. १८:३९. २२:१३. ४२:२६ इला० ५:४७. ३ नफी १:१४. २६:५. ए० ३:१४. (५) देखो ६, २ नफी २. (६) देखो १.

ईसा से १२४ वर्ष पूर्व

लड़े-झगड़ेंगे, और न तो वे (७) उस शैतान की सेवा ही करेंगे जो पापों का स्वामी है अथवा दुष्ट आत्मा है जिसके विषय में हमारे पूर्वजों ने कहा था कि वह सब धार्मिकता का शत्रु है।

१५. लेकिन तुम उन्हें सत्य और मर्यादा युक्त पथ पर चलने की शिक्षा दोगे; उन्हें एक दूसरे को प्यार और सेवा करने की शिक्षा दोगे।

१६. और तुम उनकी सहायता करोगे जिनको तुम्हारी सहायता की आवश्यकता होगी; और जिनको किसी वस्तु की आवश्यकता होगी, तुम उनको अपनी सम्पत्ति से सहायता करोगे और किसी (८) भिखारी को मरने के लिए निराश नहीं लौटाओगे।

१७. कदाचित् तुम कहो: उस व्यक्ति ने अपने ऊपर विपत्ति स्वयं लाई है; इस कारण मैं सहायता का हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ाऊंगा और मैं उसको अपना भोजन अथवा अन्य कोई वस्तु नहीं दूंगा जिससे उसका कष्ट दूर हो क्योंकि उसका दण्ड न्यायपूर्ण है।

१८. लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि हे मनुष्य, जो कोई ऐसा करता है उसके लिए पश्चाताप का कारण बन जाता है और अगर इसके लिए उसने पश्चाताप नहीं किया तब वह सदा के लिए नष्ट हो जाएगा, और उसको परमेश्वर के राज्य में कोई रुचि नहीं होगी।

१९. क्योंकि देखो, क्या हम सब (९) भिखारी नहीं है? जो भोजन, वस्त्र, सोना, चांदी आदि अन्य मूल्यवान सम्पत्तियां हमारे पास हैं उन सबके लिए क्या हम उस परमेश्वर पर आश्रित नहीं हैं?

२०. और देखो, इस वर्तमान समय में ही तुम उसके नाम को पुकार कर, अपने पापों को क्षमा करने की भीख मांग रहे थे। और क्या तुम्हारा भीख मांगना व्यर्थ में गया? नहीं? उसने तो अपनी आत्मा को तुम्हारे ऊपर उड़ेल दिया और तुम्हारे हृदयों को आनन्द से परिपूर्ण कर दिया और उसने तुम्हें इतना अधिक आनन्द दिया कि तुम और अधिक कुछ कह न सके और तुम्हारा मुंह बन्द हो गया।

२१. और जिस परमेश्वर ने तुम्हारी रचना की और अपनी जीविका के लिए जिस पर तुम निर्भर रहते हो और (१०) जिसने तुम्हें उन वस्तुओं को दिया जो तुम्हारे पास है, और तुम्हारी है, जो तुम्हें वह सब कुछ देता है, जो उचित है, जिसे तुम इस विश्वास के साथ उससे मांगते हो कि वह मिलेगा; ओह! तब तुम्हें भी वह वस्तु जो तुम्हारे पास है, दूसरों को देनी चाहिए।

२२. और अगर तुम उस व्यक्ति को दोषी ठहराते हो जो अपने को नष्ट होने से बचाने के लिए तुम्हारी वस्तु तुमसे मांगता है, तब तुम स्वयं अपनी वस्तु को न देने के लिए कितने बड़े दोषी ठहरोगे, क्योंकि वह वस्तु ईश्वर की है, जिसका अधिकार तुम्हारे जीवन पर भी है; इस पर भी तुम उसकी प्रार्थना नहीं करते और न अपने दुष्कर्मों के लिए प्रायश्चित करते हो।

२३. मैं तुमसे कहता हूं कि सन्ताप हो ऐसे मनुष्य पर, क्योंकि उसकी वस्तु उसी के साथ नष्ट हो जाएगी; मैं इन बातों को उनसे कह रहा हूं जो इस संसार की वस्तुओं से धनी हैं।

२४. और अब मैं उन गरीबों से कहता हूं जिनके पास अधिक नहीं है, केवल उनके अपने लिए पर्याप्त है और उनकी स्थिति वैसी ही दिन पर दिन बनी रहती है; मेरा तात्पर्य उनसे है जो (११) भिखारी को इसलिए नहीं दे सकते क्योंकि उनके पास देने के लिए है ही नहीं; मैं चाहता हूँ कि तुम अपने मन में कहो: मैं इसलिए नहीं दे रहा हूं क्योंकि मेरे पास है ही नहीं, लेकिन अगर मेरे पास होता, तो मैं अवश्य देता।

२५. और अगर तुमने ऐसा कहा तब तुम निर्दोष ठहरोगे, नहीं तो दोषी ठहराये जाओगे, और तुम्हारा दोषी ठहराया जाना न्यायपूर्ण होगा, क्योंकि जो तुम्हारा नहीं है, उसका तुमने लोभ किया।

२६. और अब, मैंने जिन बातों को तुमसे कहा उन बातों के लिए—अर्थात् दिन प्रति दिन अपने पापों को क्षमा करवाने की व्याख्या को स्थिर रखने के लिए, जिससे कि तुम परमेश्वर के समक्ष निर्दोष जा सको, मैं चाहता हूं कि तुम अपनी

(७) देखो १७, मू० २. (८) पद्य १६, २०, २२-२५. (९) देखो ८. (१०) देखो ५, २ नफी ३२. (११) देखो ८.

अवस्थानुसार गरीबों को अपनी वस्तुओं को दो, जैसे (१२) भूखों को भोजन देना, नंगों को वस्त्र देना, रोगियों को देखने जाना और उनकी आत्मिक और शारीरिक सांत्वना के लिए उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सहायता पहुंचाना।

२७. और देखो यह सब विवेक और व्यवस्था के अनुसार किया जाना चाहिए, क्योंकि किसी व्यक्ति को अपनी शक्ति से अधिक तेज गति से दौड़ने की आवश्यकता नहीं, है। यह भी आवश्यक है कि मनुष्य परिश्रम करे जिससे कि वह अपने परिश्रम का फल पाये; इस कारण सब कार्य व्यवस्थित होने चाहिए।

२८. और मैं चाहता हूं कि तुम यह स्मरण रखो कि तुम में से जो कोई भी अपने पड़ोसी से कोई वस्तु (१३) मांग कर लाता है, तब मांगते समय वापस लौटाने का जो वचन वह देता है उसके अनुसार उसे उस वस्तु को लौटा कर वचन पूरा करना चाहिए; अन्यथा तुम पाप करोगे; और सम्भवत: अपने पड़ोसी से भी तुम पाप करवाओगे।

२९. और अन्त में, मैं उन सब बातों को नहीं बता सकता जिनके द्वारा तुम पाप कर सकते हो; क्योंकि उनके इतने भिन्न-भिन्न तरीके हैं कि मैं उनकी गिनती भी नहीं कर सकता।

३०. परन्तु मैं तुमको इतना बता सकता हूं कि अगर तुम सावधान नहीं रहोगे और अपने विचारों, वाणी, कर्म और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से असावधान हो जाओगे और जो बातें तुमने हमारे प्रभु के आने के विषय में सुनी हैं, उन पर अन्त तक विश्वास नहीं करोगे, तब तुम अवश्य ही नष्ट हो जाओगे और अब, हे मनुष्य इनको स्मरण रखो, और नष्ट मत होओ।

अध्याय ५

राजा बिन्यामीन के वक्तव्य का प्रभाव—लोगों का अपने पापों पर पश्चात्ताप करना और मसीह के साथ अनुबन्ध करना और उसके नाम से उनका पुकारा जाना।

१. और ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन अपने लोगों से इस प्रकार कह चुका तब उसने उनमें कुछ लोगों को भेज कर पता लगाया कि उसकी बातों पर वे लोग विश्वास कर रहे हैं या नहीं।

२. और वे सब एक स्वर से चिल्ला कर बोले: हां, हम उन सभी बातों पर विश्वास करते हैं जिन्हें आपने हमसे कहा; और हम जानते हैं कि वे सब उचित और सत्य है क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु की आत्मा ने हमारे अन्दर अर्थात् हमारे हृदय में एक महान परिवर्तन कर दिया है, जिससे कि हम शैतान के कार्यों को नहीं करेंगे, परन्तु सदैव अच्छे कर्म ही करेंगे।

३. और स्वयं हम लोग परमेश्वर की असीम कृपा और आत्मा के प्रकाशन द्वारा भविष्य के दृश्यों को देख रहे हैं; और उपयुक्त होने पर हम सभी विषयों पर भविष्यवाणी भी कर सकते हैं।

४. और जिन बातों को हमारे राजा ने हमसे कहा उन बातों पर अपने विश्वास के कारण ही हम इस महान ज्ञान तक पहुंचे हैं, जिसके द्वारा हम इस प्रकार के अत्यधिक आनन्द से विभोर हो रहे हैं।

५. और हम अपने अवशेष जीवन भर, परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और हर एक बात में जो कुछ वह आज्ञा देगा, उन सभी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए, परमेश्वर के साथ अनुबंध करने को तैयार हैं, जिससे कि हम अपने ऊपर (१) कभी भी समाप्त न होने वाली घोर पीड़ा न ले बैठें जैसा कि (२) स्वर्गदूत ने कहा है कि कहीं हम परमेश्वर के क्रोध के प्याले के भागी न हो जाये।

६. और राजा बिन्यामीन इन्हीं शब्दों को उनसे सुनना चाहता था; और इसलिए उसने उनसे कहा: तुमने वही बातें कहीं जो मैं सुनना चाहता था; और जो अनुबंध तुमने किया है वह न्यायोचित अनुबंध है।

७. और जो अनुबंध तुमने किया है उसके कारण तुम मसीह की सन्तान, मसीह के पुत्र और पुत्रियां कहलाओगे, क्योंकि देखो, उसने

(१२) २ नफी २६:३०. या० २:१६. मू० १८:२७-२६. २१:१७. अल० १:२७, ३०. ४:१२, १३. ३४:२८, २६. ३ नफी १२:४२. १३:१-४. ४ नफी ३. मा० ८:३७, ३६. मरो० ७:६-. (१३) ३ नफी १२:४२. अध्याय ५. (१) देखो १३, या० ६. (२) मू० ३:२, ३. ४:१.

आज तुम्हें धर्म से प्राप्त कर लिया है; क्योंकि तुम कहते हो कि उसका विश्वास करने से तुम्हारा हृदय बदल चुका है; इस कारण तुमने (३) उससे जन्म लिया और उसके पुत्र और पुत्रियां बन गए।

८. और इस नेतृत्व के नीचे तुम स्वतन्त्र किए गए हो, और इसके अतिरिक्त दूसरा और कोई नेतृत्व नहीं जिसके नीचे तुम स्वतन्त्र हो सको। (४) दूसरा और कोई नाम नही है, जिसके द्वारा मुक्ति प्राप्त हो सके; इसी कारण मैं चाहता हूं कि तुमसब मसीह के नाम को (५) गृहण करो, जिन्होंने परमेश्वर के साथ अनुबंध किया है कि अपने जीवन के अन्त तक उसके आज्ञाकारी बने रहेंगे।

९. और ऐसा होगा कि जो कोई ऐसा करेगा वह अपने आपको परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर ले जाएगा, क्योंकि वह जान लेगा कि किस नाम से उसे पुकारा जाता है; और (६) वह नाम मसीह का नाम होगा।

१०. और ऐसा होगा कि जो कोई मसीह का नाम नही अपनायेगा, उसे किसी अन्य नाम से पुकारा जाएगा; इस कारण वह अपने आपको परमेश्वर के बांयी ओर पाएगा।

११. और मैं चाहता हूं कि तुम यह भी स्मरण रखो कि यही वह नाम है जिसे तुम्हें देने को मैंने कहा था जो कि पाप के सिवा किसी अन्य कारण से (७) कभी भी मिटाया नहीं जाएगा; इस कारण, ध्यान रखो कि तुम पाप न कर बैठो कि तुम्हारे हृदयों से यह नाम मिट जाये।

१२. मैं तुमसे कहता हूं कि जो (८) नाम तुम्हारे हृदय में लिखा जा चुका है, उसे सदैव बनाये रखने को स्मरण रखो, जिससे कि तुम अपने आपको (९) परमेश्वर के बांये हाथ की ओर न पाओ, परन्तु तुम उस वाणी को और उस नाम को सुनो और जानो जिसके द्वारा वह तुमको पुकारेगा।

१३. क्योंकि एक आदमी अपने स्वामी को कैसे जानेगा जिसकी सेवा उसने पहले न की हो और जो उसके लिए अज्ञात हो और उसकी समझ और हृदय से सर्वथा परे हो?

१४. और क्या एक मनुष्य अपने पड़ोसी के गधे को लेकर अपने यहां रख लेता है? मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, वह उसे अपने पशुओं के साथ चारा भी नही देगा और उसे खदेड़ कर बाहर कर देगा। मैं तुमसे कहता हूं कि अगर (१०) तुम, जिस नाम से बुलाए जाओगे, उसे नहीं जानोगे, तब तुम्हारी भी यही दशा होगी।

१५. इस कारण मैं चाहता हूं कि तुम अटल और अचल रहते हुए सदैव अच्छे कर्म करते जाओ जिससे कि (११) सर्वशक्तिमान, प्रभु यीशु मसीह मुहर लगा कर तुम्हें अपना बना ले और तुम्हें स्वर्ग में लाया जा सके और तुम, विवेक, शक्ति, न्याय और जिसने स्वर्ग और पृथ्वी पर (१२) सब वस्तुओं को रचा और जो सबसे श्रेष्ठ है, उसकी दया के द्वारा अनन्त मुक्ति और अनन्त जीवन प्राप्त कर सको। आमीन।

अध्याय ६

लोगों के नामों का लिखा जाना—पुरोहितों की नियुक्ति—मूसायाह के शासन का आरम्भ होना—राजा बिन्यामीन की मृत्यु।

१. और अब, राजा बिन्यामीन ने लोगों से बोलना समाप्त करने के पश्चात् सोचा कि जिन लोगों ने परमेश्वर के साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करने का अनुबंध किया है, उनका नाम लिखना उचित होगा।

२. और ऐसा हुआ कि छोटे बच्चों को छोड़ कर और कोई एक व्यक्ति भी नही निकला जिसने कि (१) मसीह के नाम को न ग्रहण किया हो।

३. और तब ऐसा हुआ कि जब राजा बिन्यामीन ने ये सब कार्य पूरे कर लिए और अपने (२) पुत्र

(३) मू० २७:२४-२७. अल० ५:१४, ४९. २२:१५. ३६:२३, २६. ३८:६. यूहन्ना १:१३. ३:३. तीतुस ३:५. (४) १ नफी १०:६. २ नफी २:८. ११:६. २५:२०. ३१:२१. मू० ४:८.२३:२८.१५:१९. १६:४. अल० २१:९. ३४:९. ३८:९. प्र० ४:१२. (५) पद्य ९-१४. मू० २६:१८, २४. अल० १:१९. ५:३८. ३४:३८. ३ नफी २७:५-९. मार० ८:३८. (६) देखो ५. (७) मू० १:११, १२. (८) देखो ५. (९) पद्य १०. (१०) देखो ५. (११) मू० ३:५. १७, १८, २१. (१२) मू० ३:८. ४:२. अल० ११:३९. ३ नफी ९:१५. मा० ९:१७. ए० ३:१४-१६. ४:६. कुलू १:१६. अध्याय ६. (१) देखो ५, मू० ५. (२) देखो ६, मू० १.

मूसायाह को शासक और राजा के रूप में, प्रतिष्ठित कर चुका और राज्य का सारा शासन कार्य उसको देकर उसने (३) पुरोहितों को नियुक्त किया जिससे वे लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं को सिखा और सुना सकें और उनको उनके द्वारा की गई (४) प्रतिज्ञा की याद दिलाया करें; तब उसने लोगों को जाने की आज्ञा दी और वे अपने परिवारों के साथ अपने घरों को वापस लौटे।

४. और अपने पिता के स्थान पर मूसायाह (५) शासन करने लगा। उसने* अपने जीवन के तीसवें वर्ष से और लेही के यरुशलेम छोड़ने के (६) समय से लगभग चार सौ छियत्तर वर्ष बीत जाने पर, शासन करना आरम्भ किया।

५. राजा बिन्यामीन† तीन वर्ष और जीवित रहा और तब उसका देहान्त हो गया।

६. और ऐसा हुआ कि राजा मूसायाह प्रभु के अनुकूल चलता रहा और उसके निर्णयों, व्यवस्थाओं और आज्ञाओं को हर एक बात में मानता रहा।

७. और राजा मूसायाह ने लोगों से खेत जुतवाए। उसने स्वयं भी भूमि जोती, जिससे कि वह लोगों पर निर्भर न रहे और सभी बातों में अपने पिता का अनुसरण कर सके। और तीन वर्षों तक उसके सारे लोगों में कोई विवाद न हुआ।

अध्याय ७

लेही और नफी के देश की साहसिक यात्रा—आमोन और राजा लिमही—लेही और नफी के लोग लमनायटियों के दास।

१. और ऐसा हुआ कि राजा मूसायाह को लगातार तीन वर्षों तक शान्तिपूर्वक शासन करने के पश्चात्, उनके विषय में जानने की इच्छा हुई, जो (१) लेही-नफी के देश में, अर्थात् लेही—नफी के नगर में बसने के लिए चले गए थे; क्योंकि जिस समय से उन लोगों ने (२) ज़राहेमला देश को छोड़ा था, तब से उनके विषय में उसके लोगों ने कुछ सुना नहीं था; इस कारण वे लोग उसे अपनी लगातार पूछ-ताछ से तंग कर रहे थे।

२. और ऐसा हुआ कि ‡राजा मूसायाह ने सोलह बलवान पुरुषों को अनुमति दी कि वे (३) लेही-नफी के देश में जा कर अपने भाइयों के विषय में पता लगायें।

३. दूसरे ही दिन उन लोगों ने यात्रा की और उनमें आमोन नामक एक पुरुष था जो बहुत बलवान था और वह (४) ज़राहेमला के वंश का था; और वही व्यक्ति उस दल का नेता था।

४. उनको लेही-नफी के (५) देश की यात्रा करने के लिए वन से होकर गुज़रने वाले रास्ते का ज्ञान नहीं था; इस कारण चालीस दिनों तक उन्हें वन में भटकना पड़ा।

५. चालीस दिनों तक भटकने के पश्चात् वे एक पहाड़ के पास पहुंचे जो कि (६) शिलोम देश से उत्तर की ओर है और उन्होंने वहां पर अपने तम्बुओं को लगाया।

६. और आमोन अपने साथ अपने तीन भाइयों को ले कर (७) नफी के देश में गया जिनके नाम थे अमलकी, हेलम और हेम।

७. और देखो, नफी और शिलोम देश के लोगों के राजा से वे मिले; और राजा के सिपाहियों ने उनको घेर लिया और उन्हें बांध कर कारागार में डाल दिया।

८. दो दिनों के पश्चात् उन्हें बन्धनमुक्त करके राजा के पास फिर उपस्थित किया गया; और वे राजा के समक्ष खड़े हुए और उन्हें आज्ञा दी गई कि जो प्रश्न वह पूछे, उस का उत्तर वे दें।

९. और उसने उनसे कहा : (८) देखो, मैं उस नूह का पुत्र लिमही हूं जो उस जनीफ का पुत्र था

(३) देखो १५, २ नफी ५. मू० १८:१८, २४, २८. २१:३३. २३:१६, १७. २५:१९, २१. २६:७. २७:१, ५, २२. २९:४२. अल० १:३, २६. ४:७, १६, १८, २०. ५:३. ६:१, ८. ८:११, २३. १३:१-२०. १५:१३. १६:५, १८. १८:३४. २३:४-१६. २४:७. २९:१३. ३०:२०-२३, २६, ३१. ४३:२. ४६:३८. ४९:३०. ३ नफी ६:२१, २२, २७. ११:२१, २२. १२:१. १८:३६, ३७. ४ नफी १४. मरो० २:१-३. अध्य० ३, ४. ६:१, ७. ७:२. ८:१, २, २८. (४) पद्य १. २ मू० ५:५-७. (५) मू० १:१०-१५. (६) १ नफी १:४. २:४. अध्याय ७ (१) देखो २, २ नफी ५. (२) ओ० १३. (३) देखो २, २ नफी ५. (४) ओ० १४. (५) देखो २, २ नफी ५. (६) पद्य ७:१६, २१. मू० ९:६, ८, १४. १०:८. ११:१२, १३. २२:८, ११. २४:१. अल० २३:१२. (७) देखो २ नफी २, ५. (८) मू० ११:१. १९:१६.

*ईसा से लगभग १२४ वर्ष पूर्व †ईसा से लगभग १२१ वर्ष पूर्व ‡ईसा से लगभग १२१ वर्ष पूर्व

जो अपने पूर्वजों के इस देश को अपना पैतृक देश बनाने के लिए (९) ज़राहेमला के देश से आया था, और (१०) जो लोगों द्वारा राजा बनाया गया था।

१०. और अब, मैं यह जानना चाहता हूं कि तुम किस कारण (११) इतना साहस करके नगर की दीवाल के पास आए जबकि मैं स्वयं अपने अंग-रक्षकों के साथ नगर-द्वार के बाहर था?

११. इसी कारण मैंने तुम्हें जीवित रखा जिससे कि मैं पूछ सकूं, नहीं तो मैं अपने अंग-रक्षकों से तुम्हें (१२) मरवा डालता। तुम्हें बोलने की आज्ञा दी जाती है।

१२. और जब आमोन ने देखा कि उसको बोलने की आज्ञा दी गई है तब उसने आगे बढ़ कर राजा के समक्ष (१३) घुटने टेक दिए और तब फिर उठ कर बोला: हे राजा, अभी तक जीवित रहने और बोलने की आज्ञा दिए जाने के लिए, मैं परमेश्वर के समक्ष कृतज्ञ हूं; और मैं निर्भीकतापूर्वक बोलने की चेष्टा करूंगा।

१३. मुझे यह विश्वास है कि अगर आप मुझे जानते तो इन बेड़ियों को मुझे पहनाने नहीं देते, क्योंकि मैं आमोन (१४) ज़राहेमला का वंशज हूं, और मैं (१५) ज़राहेमला देश से अपने उन भाइयों का समाचार जानने के लिए आया हूं जिनको (१६) जनीफ उस देश से लाया था।

१४. और जब लिमही ने आमोन की बातें सुनीं तब वह बहुत ही प्रसन्न होकर बोला: अब मैं यह निश्चित जानता हूं कि मेरे वे भाई जो ज़राहेमला देश में थे, (१७) जीवित हैं, और अब, मैं आनन्द मनाऊंगा और कल मेरे अपने लोग भी आनन्द मनाएंगे।

१५. क्योंकि देखो, हम लमनायटियों की दासता में हैं और हम पर इतना (१८) कर लगाया गया है, जिसका बोझ ढ़ोना हमारे लिए कठिन है। और अब, देखो, हमारे भाई हमें दासता से अर्थात् लमनायटियों के हाथों से निकाल लेंगे और हम उनके दास हो जाएंगे क्योंकि नफायटियों का दास होना लमनायटियों के राजा को कर देने से अच्छा है।

१६. और राजा लिमही ने अपने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे आमोन और उसके भाइयों को बेड़ी-मुक्त कर दें और उन्हें आज्ञा दी कि (१९) जो पहाड़ शिलोम से उत्तर की ओर है वहां जाकर अपने भाइयों को नगर में ले आयें जिससे कि वे खा पीकर और विश्राम करके यात्रा की थकान दूर करें; क्योंकि उन्हें (२०) अनेक कष्ट उठाने पड़े थे; उन्हें भूख, प्यास और थकान झेलनी पड़ी थी।

१७. और तब ऐसा हुआ कि दूसरे दिन राजा लिमही ने अपने सब लोगों में घोषणा करवाई कि वे उसकी उन बातों को सुनने के लिए (२१) मन्दिर में एकत्रित हों, जो वह उनसे कहना चाहता था।

१८. और जब लोग एकत्रित हो गए तब उसने उनसे इस प्रकार कहा: हे मेरे लोगों अपने सिरों को ऊपर उठाओ और शान्त हो; क्योंकि देखो, वह समय निकट है, अर्थात् दूर नहीं है जब कि हम अपने शत्रुओं की अधीनता में नहीं रहेंगे, यद्यपि हमारे अनेक संघर्ष अब तक व्यर्थ सिद्ध हुए थे; फिर भी मुझे विश्वास है एक अंतिम सफल संघर्ष करना शेष है।

१९. इसलिए अपने सिरों को ऊपर उठाओ, आनन्द मनाओ और उस ईश्वर पर विश्वास करो कि जो इब्राहीम का, इसाक का और याकूब का ईश्वर था और जो इस्राएलियों को मिश्र से और लाल सागर से चला कर सूखी भूमि पर लाया, और जिसने उन्हें मधुर भोजन खिलाया, कि वे मरुभूमि में नष्ट न हो जाएं; और उसने अनेक अन्य कार्य उनके लिए किए हैं।

२०. और वही परमेश्वर हमारे पूर्वजों को यरूशलेम देश से लाया और अभी तक हम लोगों को उसने सुरक्षित रखा; और देखो, उसने हमारे ही पापों और घृणित कार्यों के कारण हमें दासता में बांधा है।

२१. और आज तुम इस बात के गवाह हो कि (२२) जनीफ, जो कि इन लोगों का राजा बनाया गया था, अपने पूर्वजों के देश को प्राप्त करने के लिए

(९) ओ० १३. (१०) मू० १९:२६. (११) मू० २१:२३, २४. (१२) मू० २१:२३. (१३) अल० ४७:२२, २३. (१४) ओ० १४. (१५) ओ० १३. (१६) मू० ९:१. (१७) मू० २१:२५, २६. (१८) पद्य २२. मू० १९:१५. (१९) पद्य ५. (२०) पद्य ४. (२१) देखो ८, २ नफी ५. (२२) मू० ९:१. ईसा से १२४ वर्ष पूर्व

(२३) आवश्यकता से अधिक अभिलाषी था, इसी कारण उसने राजा लमान की चतुराई और धूर्तता से धोखा खाकर सन्धि कर ली और देश का एक भाग यहां तक कि (२४) लेहि-नफी के नगर और (२५) शिलोम के नगर और इन शहरों के आस-पास की भूमि उसे दे दी।

२२. और यह सब उसने केवल इसलिए किया कि जिससे इन लोगों को अपने अधीन कर ले, अर्थात् दास बना ले। और देखो, इस समय हम लमनायटियों के राजा को अपना मक्का, जौ और यहां तक कि सभी अन्य अनाजों की उपज का (२६) आधा भाग कर स्वरूप देते हैं और अपने पशु पक्षियों में जो वृद्धि होती है उनका आधा भाग भी हमें उन्हें देना पड़ता है; यहां तक कि हमारे पास जो कुछ भी है उन सब का आधा भाग लमनायटियों का राजा हमसे बलपूर्वक ले लेता है अन्यथा वह हमारी जान ले लेगा।

२३. क्या इसे सहन करना दुखदाई नहीं है? क्या हमारे लिए यह अत्यधिक कष्टप्रद नहीं है? अब देखो, हमारे पास शोक मनाने का कितना बड़ा कारण है।

२४. हां मैं तुमसे कहता हूं कि हमारे रोने का कारण कितना बड़ा है; क्योंकि देखो, हमारे कितने भाई मारे गए और उनका रक्त व्यर्थ में ही बहाया गया, और यह सब दुराचार के कारण ही हुआ है।

२५. क्योंकि अगर ये लोग पाप में गिर नहीं गए होते, तो प्रभु उन पर यह विपत्ति नही आने देता। लेकिन देखो वे उसकी बातों को नहीं सुनते; उनमें आपस में ही इतना विवाद उठ खड़ा हुआ कि उन्होंने एक दूसरे का रक्त बहाया।

२६. और, प्रभु के (२७) एक भविष्यवक्ता को मार डाला जो कि परमेश्वर का चुना हुआ था, जो उन्हें उनके पापों और घृणित कार्यों से अवगत कराता था, और भविष्य में होने वाली बहुत सी बातें कीं, यहां तक कि मसीह के आने की भी भविष्यवाणी करता था।

२७. और क्योंकि उसने उनसे कहा कि (२८) मसीह ही वह परमेश्वर था जो सब का पिता था और कहा कि वह मनुष्य के स्वरूप को ग्रहण करेगा और जिस रूप में मनुष्य की (२९) रचना आरम्भ में हुई थी, वही वह स्वरूप होगा; या दूसरे शब्दों में उसने कहा कि मनुष्यों की रचना परमेश्वर के स्वरूप में हुई और परमेश्वर (३०) हाड़-मांस के शरीर में मानव समाज में आएगा और लोगों में जाएगा।

२८. यही कहने के कारण उन्होंने (३१) उसे मार डाला; और उन्होंने ऐसे बहुत से कार्य किए जिससे परमेश्वर का क्रोध उन पर आया। इस कारण कौन चिन्ता करता है कि वे दंडित हैं और भारी कष्ट से पीड़ित हैं?

२९. क्योंकि देखो, प्रभु ने कहा है: मैं अपने लोगों के पाप के समय, उन्हें सहायता नही दूंगा; बल्कि मैं उनके रास्तों पर घेरा (बाड़) लगा दूंगा, जिससे कि वे प्रगति न कर सकें; और उनके अपने कर्म ही उनके लिए रुकावट बन जायेंगे।

३०. और पुनः वह कहता है: अगर मेरे लोग मैल बोवेंगे, तब वे बवण्डर में मल के भूसे को काटेंगे; और उसका परिणाम विष है।

३१. और वह पुनः कहता है: मेरे लोग अगर कूड़ा-कर्कट बोवेंगे तब वे पूर्वीय हवा काटेंगे जो कि तुरन्त नाश लाती है।

३२. और अब, देखो, प्रभु का वचन पूरा हुआ और तुम दंडित हुए और तुम पर विपदा आई।

३३. और अगर तुम अपने पूरे हृदय से प्रभु की ओर लौटोगे और उस पर विश्वास लाओगे, और अपने मन की पूरी लगन से उसकी सेवा करोगे तब वह अपनी इच्छा से तुम्हें दासता में से निकाल देगा।

अध्याय ८

आमोन का चौबीस खुदी हुई स्वर्ण पटियों के पाए जाने का पता पाना—उसका उन पटियों को भविष्यवक्ता और दिव्य-दर्शी राजा मूसायाह को दिए जाने की सलाह देना।

१. राजा लिमही ने अपने लोगों से अनेक

(२३) मू० ९:३. (२४) देखो २, २ नफी ५. (२५) देखो ६. (२६) देखो १८. (२७) मू० १७:१२-२०. (२८) १ नफी १९:७-१०. २ नफी २:१४, १५. १०:३. २५:१२. २६:१२. मू० ३:५, ८. १५:१-५. १६:१५. २७:३०, ३१. अल० ११:३८, ३९. ३ नफी ९:१५. ११:१४. मा० ३:२१. ९:११. १२. ए० ४:७. (२९) अल० १८:३४. ए० ३:१५, १६. ३० (३०) देखो २, मू० ३. (३१) देखो ३७. (३२) मू० १२:६.

ईसा से लगभग १२१ वर्ष पूर्व

बातें कहीं जिनमें से थोड़ी-सी बातों को यहां लिखा गया है और जब उसने कहना समाप्त कर लिया तब उसने अपने लोगों से उनके उन बन्धुओं के विषय में सारी बातें बतलाईं जो (१) ज़राहेमला देश में थे।

२. और उसने आमोन से आग्रह किया कि वह लोगों के समक्ष खड़ा होकर वह सब बतलाये जो कि उनके बन्धुओं पर (२) जनीफ के उस देश से निकल कर आने के समय से लेकर (३) उसके आने के समय तक बीता है।

३. और उसने राजा बिन्यामीन की शिक्षा के (४) अन्तिम शब्दों को भी बताया और राजा लिमही के लोगों को समझाया कि जिससे वे उसकी कही सब बातों को समझ सकें।

४. और यह सब करने के पश्चात् राजा लिमही ने भीड़ को छुट्टी दी और हर एक को अपने-अपने घरों को लौटने को कहा।

५. और उसने (५) उन पटियों को आमोन के समक्ष लाने को कहा जिसमें उसके लोगों का विवरण उस समय से लिखा था जिस समय से उन लोगों ने (६) ज़राहेमला देश को छोड़ा था, ताकि वह उन्हें पढ़ें।

६. जैसे ही आमोन ने उन पटियों को पढ़ा वैसे ही राजा ने पूछा कि क्या वह भाषाओं का अनुवाद कर सकता है, और आमोन ने उत्तर दिया कि नहीं।

७. और राजा ने उससे कहा: अपने लोगों के दुख से दु:खी हो कर मैंने (७) अपने तैंतालीस लोगों को वन में इसलिए भेजा ताकि वे (८) ज़राहेमला देश को खोजे और हम उनसे, अपने भाइयों की दासता से छुटकारा दिलवाने का आग्रह कर सकें।

८. वे कई दिनों तक वन में भटकते रहे (९) अनेक नदियों वाले देश से होकर उन्होंने यात्रा की, और एक ऐसे देश को खोज निकाला, जहां पर मानव और पशुओं की हड्डियां बिखरी पड़ी थीं और जहां पर हर एक तरह के मकानों के खंडहर चारों ओर दिखाई दे रहे थे, वह एक ऐसा देश था, जहां कभी वे लोग बसे थे जो संख्या में इतने अधिक थे, जितने इस्राएल के सब निवासी थे। यद्यपि उन्होंने कई दिनों तक परिश्रम किया परन्तु उन्हें जराहेमला देश न मिला और वे असफल हो वापस लौट आए।

९. जो कुछ उन्होंने कहा उसे सत्य प्रमाणित करने के लिए साक्षी-स्वरूप वे शुद्ध स्वर्ण की खुदी हुई (११) चौबीस पटियों को लाए।

१०. और देखो, वे (१२) तांबे और पीतल के (१३) कवच भी लाए जो बड़ी और अच्छी हालत में हैं।

११. वे तलवारों को भी लाए, जिनके मूठ नष्ट हो चुके हैं और फल मुर्चा से बिगड़ चुके हैं, और हमारे देश का ऐसा कोई नहीं है जो उन पटियों पर खुदी भाषा को पढ़ सके। इसी कारण मैंने तुमसे पूछा कि क्या तुम इनका अर्थ बता सकते हो?

१२. मैं तुमसे फिर कहता हूं: क्या तुम किसी को जानते हो जो अनुवाद कर सके? मैं इन अभिलेखों को अपनी भाषा में अनुवाद करने का इच्छुक हूं; क्योंकि सम्भव है कि जहां से इन अभिलेखों को लाया गया है वहां के नष्ट हुए लोगों के बचे हुए लोगों के विषय में हमें कुछ पता लग सके; या इनसे उन नष्ट हुए लोगों के विषय में ही हमें कुछ पता लगे; और मैं यह जानने को इच्छुक हूं कि वे वे कैसे नष्ट हुए।

१३. तब आमोन ने उससे कहा: हे राजा, मैं निश्चय ही एक आदमी को बता सकता हूं जो इन अभिलेखों का अनुवाद कर सकता है; क्योंकि वह सभी प्राचीन अभिलेखों को देख कर अनुवाद कर सकता है; और यह योग्यता उसको परमेश्वर की देन है। और जिसे (१४) अनुवादक कहा गया है, वह हर एक नहीं हो सकता, क्योंकि वह तो वही होता है जिसको आज्ञा दी जाती है वरना वह ऐसी चीज़ों को देखने लगेगा जो उसे देखनी नही चाहिए

(१) ओ० १३. (२) देखो १६, मू० ७. (३) मू० ७:३. (४) मू० अध्याय ३-५. (५) देखो जनीफ का लेखा, मू० ९. (६) ओ० १३. (७) मू० २१:२५. (८) ओ० १३. (९) अल० ५०:२९. इला० ३:३, ४. मार० ६:४. (१०) मू० २१: २६, २७. इला० ३:३-१२. देखो एथर की पुस्तक. (११) मू० २१:२७. २८:११. अल० ३७:२१-३१. इल० ६:२६. एथ० १:१-५. १५:३३. (१२) ए० १५:१५, २४. (१३) ए० १०:२३. (१४) पद्य १४:१९. ओ० २०-२२. मू० २१:२७, २८. २८:११-१९. अल० १०:२. ३७:२१-२६. ए० ३:२३, २८. ४:५. मि० शर्त० १७:१.

ईसा से लगभग १२१ वर्ष पूर्व

और वह नष्ट हो जाएंगे। और जिसे उन्हें देखने की आज्ञा प्राप्त होती है, वह दिव्यदर्शी कहलाता है।

१४. और देखो, (१५) वह व्यक्ति है ज़राहेमला देश के लोगों का राजा जिसे परमेश्वर की ओर से इन कामों को करने की आज्ञा मिली है और उसे यह महान योग्यता परमेश्वर की ओर से उपहार स्वरूप मिली है।

१५. और राजा ने कहा कि एक दिव्यदर्शी (१६) एक भविष्यवक्ता से महान होता है।

१६. और आमोन ने कहा कि एक दिव्यदर्शी, एक दिव्यज्ञान प्रकाशक और एक भविष्यवक्ता भी होता है; और यह एक ईश्वर की देन है जिससे बढ़ कर केवल परमेश्वर की शक्ति को छोड़ कर और कोई अन्य देन नहीं हो सकती, और परमेश्वर की शक्ति किसी को प्राप्त नहीं हो सकती; फिर भी एक मनुष्य में परमेश्वर द्वारा दी गई भारी क्षमता हो सकती है।

१७. लेकिन एक दिव्यदर्शी अतीत की बातों को भी जान सकता है और वह भी जो भविष्य में होगा और उन्हीं के द्वारा सभी बातों को उद्‌घाटित किया जाता है, अर्थात् गुप्त बातों को प्रकट किया जाता है और छिपा रहस्य प्रकाश में आता है और जिन बातों की जानकारी नहीं है उनके द्वारा उनकी जानकारी कराई जाती है और जिन बातों की जानकारी साधारण रूप से नहीं हो सकती, उनका भी भेद वे खोलते हैं।

१८. इस प्रकार परमेश्वर ने एक साधन दिया है कि मनुष्य विश्वास से महान चमत्कार कर सकता है, और इस तरह वह अपने साथी लोगों के लिए भारी सहायक सिद्ध होता है।

१९. और जब आमोन ने कहना समाप्त किया तब राजा को बहुत प्रसन्नता हुई और परमेश्वर को इन शब्दों में धन्यवाद दिया: निःसन्देह इन पटियों में (१७) बहुत बड़ा भेद छुपा हुआ है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन अनुवादकों को इसी प्रकार के भेदों को मानव पुत्रों पर प्रकट करने के लिए तैयार किया गया है।

२०. ओह! परमेश्वर के कार्य कितने आश्चर्य-जनक हैं और वह अपने लोगों के लिए कितने दिनों तक कष्ट झेलता रहा है; हां, और मानव-पुत्रों की बुद्धि कितनी अंधी और ना समझ है; वे विवेक नहीं खोजते, और न तो वे यही चाहते हैं कि विवेक द्वारा अनुशासित हों।

२१. हां, वे उन जंगली भेड़ों के समान हैं जो गडेरिये से दूर भागते और तितर-बितर हो जाते, हैं, और हिंसक पशुओं द्वारा खदेड़े और मार कर खा लिए जाते हैं।

जनीफ का लेखा—उसके लोगों का ज़राहेमला देश को छोड़ने के समय से लमनायटियों के हाथों से मुक्त करने तक का विवरण।

अध्याय ९ से २२।

अध्याय ९

लेही—नफी के देश पर अधिकार करने के लिए जनीफ का जाना—लमनायटियों में एक भेदी—राजा लमान की धूर्तता।

१. मुझ नफी को, नफायटियों की सभी भाषाओं में शिक्षा मिलने, और (१) नफी के देश, अर्थात हमारे पूर्वजों के प्रथम पैतृक देश की जानकारी होने के कारण, *मुझे लमनायटियों में उनकी सेना की शक्ति का भेद लगाने के लिए भेजा गया था, जिससे कि हमारी सेना उनके ऊपर चढ़ाई करके उन्हें नष्ट कर दे—लेकिन उनमें अच्छी बातों को देख कर मेरी इच्छा हुई कि उन्हें नष्ट न किया जाए।

२. इस कारण वन में मेरे भाइयों से मेरा विवाद हो गया, क्योंकि मैं चाहता था कि हमारा शासक उनसे समझौता कर ले, लेकिन उस निष्ठुर और खून के प्यासे व्यक्ति ने आज्ञा दी कि मुझे मार डाला जाए; लेकिन अधिक रक्तपात के पश्चात् मैं बचा लिया गया; क्योंकि पिता- पिता के विरुद्ध, भाई-भाई के विरुद्ध तब तक लड़ते रहे जब तक उस वन में हमारी (२) अधिकांश सेना नष्ट न हो गई; और हम जो बाकी बचे थे ज़राहेमला

(१५) मू० २१:२८. २८:१३. (१६) पद्य १६-१९. मि० शर्न० २१:१. (१७) २ नफी २७:७, ८, १०, ११. ए० ३:२१-२८. ४:१-८-५:१. अध्याय ९. (१) देखो २, २ नफी ५. (२) ओ० २८.

देश उनकी पत्नियों और बच्चों को वह घटना बताने के लिए वापस लौटे।

३. और मैंने, अपने पूर्वजों के देश पर अधिकार करने के लिए (३) आवश्यकता से अधिक इच्छुक होने के कारण, जितने लोग उस देश पर अधिकार करने की इच्छा रखते थे, उन सभी लोगों को को एकत्रित किया और उनके साथ उस देश में जाने के लिए वन की यात्रा की; लेकिन हम अकाल और भारी कष्टों से मारे गए क्योंकि हम अपने प्रभु परमेश्वर को कुछ देर के लिए भूल गए थे।

४. फिर भी उस जंगली प्रदेश में कई दिनों तक भटकने के पश्चात् हमने उस स्थान पर पहुंच कर अपने तम्बुओं को लगाया जहां पर हमारे भाई (४) मारे गए थे और जहां से हमारा (५) पैतृक देश निकट था।

५. और ऐसा हुआ कि मैं पुनः अपने चार साथियों के साथ नगर में गया और राजा के विचार जानने के लिए उसके पास गया कि मैं अपने लोगों को साथ ले जाकर शान्ति के साथ उस भूमि पर अधिकार कर सकता हूं या नहीं।

६. और मैं राजा के पास गया और उसने मेरे साथ संधि की कि मैं (६) लेही-नफी का देश और (७) शिलोम का देश अपने अधिकार में कर सकता हूं।

७. और उसने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे वहां से निकल जायें, और मैं अपने लोगों के साथ वहां पर गया जिससे हम उसे अपने अधिकार में कर सकें।

८. और हम मकान बनाने और नगर की दीवारों की मरम्मत करने लगे, हां, यहां तक कि लेही-नफी और शिलोम के नगरों की दीवारों की भी हम मरम्मत करने लगे।

९. और हमने भूमि जोतना भी आरम्भ कर दिया और हां, हमारे पास (८) सभी प्रकार के बीज थे; मक्के के बीज थे, गेंहू के बीज थे, जौ के बीज थे, नीयास के बीज थे, सीउम के बीज थे और सभी प्रकार के फलों के बीज भी थे; और देश में हमारी जनसंख्या में वृद्धि होने लगी और हम प्रगति करने लगे।

१०. यह राजा लमान की (११) धूर्तता और चालाकी थी कि उसने उन स्थानों पर से अपना अधिकार हटा लिया कि जिससे हम उन पर अपना अधिकार कर लें और वह हमको अपना दास बना ले।

११. इस कारण ऐसा हुआ कि जब हम *बारह वर्षों तक वहां रह चुके तब राजा लमान को चिन्ता होने लगी कि मेरे लोग उस देश में बलवान न हो जाएं, कि वे उन्हें (१२) बलपूर्वक अपना दास बनाने में असफल हो जाएं।

१२. वे (१३) आलसी और मूर्तिपूजक लोग थे, इस कारण वे हमें (१४) दासता में करने के इच्छुक थे, जिससे कि वे हमारे हाथों के परिश्रम की कमाई से अपना पेट भर सकें; हां जिससे वे हमारे खेतों की उपज को खा पीकर आनन्द मना सकें।

१३. इसलिए ऐसा हुआ कि राजा लमान अपने लोगों को मेरे लोगों से विवाद करने के लिए उकसाने लगा; इस कारण देश में युद्ध और कलह होने लगे।

१४. क्योंकि नफी के देश में, मेरे शासन के *तेरहवें वर्ष में (१५) शिलोम के दक्षिण में जब कि मेरे लोग अपने पशुओं को पानी पिला रहे थे, चारा खिला रहे थे और भूमि जोत रहे थे तब लमनायटियों की अगणित भीड़ ने उन पर आक्रमण करके उनको जान से मारने, उनके पशुओं को और उनके खेतों को तथा अनाज को छीनने लगे।

१५. और हां, ऐसा हुआ कि वे सब जान लेकर भागे और जो पकड़े न जा सके वे (१६) नफी के शहर में भाग आए और मुझ से अपने प्राणों की रक्षा करने की मांग की।

१६. और ऐसा हुआ कि मैंने उनको धनुष-वाण, तलवार, गदा, ढ़ेलवांस इत्यादि हर एक प्रकार के उन अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित किया

(३) मू० ७:२१. ओ० २९. (४) पद्य २. ओ० २८. (५) देखो २. २ नफी ५. (६) देखो २. २ नफी ५. (७) देखो ६. मू० ७. (८) १ नफी ८:१. १८:२४. इनो० २१. अमेरिका में पैदा होने वाले दो कम महत्व के प्राचीन अनाजों के नाम. (११) पद्य ११. १२. मू० ७:२२. १०:१८, १९, २६, २८. २१:३, १३. (१२) देखो ११. (१३) इ० २०. (१४) देखो ११. (१५) देखो ६. मू० ७. (१६) देखो २. २ नफी ५.

*ईसा से लगभग १८७ वर्ष पूर्व

जिनका हम आविष्कार कर सके थे और मैं अपने लोगों के साथ लमनायटियों के विरुद्ध युद्ध लड़ने के लिए गया।

१७. हां, हम प्रभु के बल से शक्तिमान हो लमनायटियों के विरुद्ध लड़ने के लिए गए; क्योंकि हमने प्रभु से याचना की कि वह हमारी शत्रुओं के हाथों से रक्षा करे, क्योंकि हमें स्मरण हो आया था कि उसने हमारे पूर्वजों की रक्षा की थी।

१८. और परमेश्वर ने हमारी पुकार को सुना और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया; और हम उसके बल से समर्थ होकर आगे बढ़े; हां, हम लमनायटियों के विरुद्ध आगे बढ़े और एक दिन और रात में हमने तीन सहस्त्र और तैंतालिस शत्रुओं को मार डाला और हम तब तक उनको मारते रहे जब तक कि उनको अपने देश से बाहर न खदेड़ दिया।

१९. और मैंने स्वयं अपने हाथों से उनके मृतकों को गाड़ने में सहायता की और देखो, दो सौ सत्तर और नौ मेरे अपने लोगों के मारे जाने के कारण हमें भारी दुख हुआ और विलाप करना पड़ा।

अध्याय १०

राजा लमान की मृत्यु—अपने अत्याचारियों के विरुद्ध जनीफ और उसके लोगों का प्रबल होना।

१. और ऐसा हुआ कि हम पुनः शान्तिपूर्वक राज्य की स्थापना करने और शान्ति से देश में रहने लगे। मैंने सभी प्रकार के युद्ध के हथियारों को बनवाया जिससे कि जब लमनायटी लोगों के विरुद्ध आक्रमण करें तब उनके लिए मेरे पास युद्ध के हथियार रहें।

२. और मैंने देश के चारों ओर प्रहरी नियुक्त कर दिए जिससे कि लमनायटी अचानक हम पर हमला करके हमें नष्ट न कर सकें; और इस प्रकार मैंने अपने लोगों को, और अपने पशु-पक्षियों को सुरक्षा प्रदान कर उन्हें अपने शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचाया।

३. और ऐसा हुआ कि इस प्रकार हमने (१) अपने पूर्वजों के देश पर *बाईस वर्ष तक अधिकार प्राप्त किए रहे।

४. मैंने पुरुषों से खेत जोतवा कर (२) हर एक प्रकार के अनाजों और फलों को उत्पन्न करवाया।

५. और मैंने स्त्रियों से कपड़े बनवाए, परिश्रम करवाया और (३) सभी प्रकार के सन द्वारा उत्तम वस्त्र और दूसरे प्रकार के फलों के वस्त्रों को बनवाया जिससे कि हम अपने वस्त्रहीन शरीर पर वस्त्र धारण कर सकें। इस प्रकार हमने देश में अपनी प्रगति की और बाईस वर्षों तक शान्ति से रहे।

६. और तब ऐसा हुआ कि राजा लमान की मृत्यु हो गई, और उसके स्थान पर उसका पुत्र राज्य करने लगा। और वह अपने लोगों को हमारे लोगों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसाने लगा; जिससे वे हमारे लोगों के विरुद्ध आ कर युद्ध करने की तैयारी करने लगे।

७. लेकिन मैंने (४) शेमलोन देश के आस-पास अपने भेदियों को भेजा जिससे मैं उनके युद्ध की तैयारी की स्थिति का पता पा सकूं और उनके विरुद्ध अपनी रक्षा कर सकूं जिससे कि वे हमारे लोगों पर चढ़ाई करके उन्हें नष्ट न कर दें।

८. और ऐसा हुआ कि उन्होंने (५) शिलोम के उत्तर की ओर से बहुत बड़ी सेना लेकर, (६) धनुष-वाण, तलवार, गदा, पत्थर और ढ़ेलवांस लेकर, सिरों को मुड़ाए चर्म के कमरबन्द बांधे हुए आक्रमण किया।

९. और मैंने अपने लोगों की स्त्रियों और बच्चों को वन में छुपा दिया और अपने सभी नौजवानों और उन वृद्धों को जो युद्ध-हथियार चला सकते थे, एकत्रित करके युद्ध में चलने की आज्ञा दी; और मैंने हर एक को उनकी आयु के अनुसार नियुक्त किया।

१०. और ऐसा हुआ कि प्रभु के बल से बलशाली होकर हमने लमनायटियों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया और यहां तक कि इस वृद्धा-

(१) देखो २, २ नफी ५. (२) देखो ८, मू० ९. (३) अल० १:२९. इलामन ६:१३. (४) मू० ११:१२. १९:६. २०:१. २४:१. अल० २३:१२. (५) देखो ६, मू० ७. (६) इनो० २०. अल० ३:४, ५. १७:१४, १५. ४३:१८-२१.

*ईसा से लगभग १७८ वर्ष पूर्व

वस्था में भी मैं स्वयं युद्ध में भाग लेने के लिए चला।

११. लमनायटियों को प्रभु और उसके बल के विषय में कोई जानकारी नहीं थी इसलिए वे स्वयं अपने ही बल पर आश्रित थे। फिर भी मनुष्य की दृष्टि से वे बलवान लोग थे।

१२. वे जंगली, क्रूर और रक्त के प्यासे लोग थे जो अपने पूर्वजों की (७) परम्पराओं में विश्वास करते थे, जो इस प्रकार थे कि वे अपने पूर्वजों के पापों के कारण यरूशलेम देश से निकाले गए, वन में अपने भाइयों द्वारा छले गए, और सागर को पार करते समय भी उनके साथ छल किया गया।

१३. और फिर, जब वे सागर को पार करके अपने (८) प्रथम अधिकृत देश में आए तब उनके साथ विश्वासघात किया गया और यह सब नफी द्वारा प्रभु की आज्ञाओं का पालन अधिक सच्चाई के साथ करने के कारण ही हुआ—इसलिए वह प्रभु का प्यारा था क्योंकि प्रभु ने उसकी प्रार्थनाओं को सुना और उनका उत्तर दिया, और उसने वन में (९) उनकी यात्राओं की अगुवाई की।

१४. और उसके भाई उस पर क्रोधित इस कारण हुए कि वे प्रभु की लीला से अनभिज्ञ थे; और सागर में वे इसलिए भी उस पर क्रोधित हुए थे क्योंकि उन्होंने प्रभु के विरुद्ध अपने हृदयों को कठोर बना लिया था।

१५. और पुनः जब वे आनन्द देश में पहुंचे, तब उस पर वे इस कारण क्रोधित हुए क्योंकि उनके अनुसार उसने उनके हाथों से (१०) शासन का अधिकार ले लिया था; और वे उसको मार डालना चाहते थे।

१६. और वे उस पर पुनः इस कारण क्रोधित हुए क्योंकि वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार (११) उन अभिलेखों को लेकर वन में चला गया जो पीतल की पटियों पर खुदे हुए थे; क्योंकि वे कहते थे कि उसने उनको लूट लिया था।

१७. इस प्रकार उन्होंने अपने बच्चों को शिक्षा दी जिससे वे उनसे घृणा करें, उनकी हत्या करें, उनको लूटें और उनको नष्ट करने के लिए सब कुछ करें; इस कारण नफी के वंश वालों के प्रति उनके हृदयों में (१२) अन्तहीन घृणा है।

१८. इसी उद्देश्य के लिए राजा लमान ने (१३) चालाकी, झूठ, छल, और वचनों द्वारा मुझे धोखा दिया कि मैं अपने लोगों को इस देश में लाया, जिससे कि वे हमें नष्ट कर सकें और हम इतने वर्षों से इस देश में कष्ट झेलते रहे हैं।

१९. और मैं, ज़नीफ ने अपने लोगों को लमनायटियों के विषय में इन सभी बातों को बताने के पश्चात्, उन्हें परमेश्वर पर विश्वास करके अपनी पूरी शक्ति से उनके विरुद्ध युद्ध करने के लिए उत्साहित किया; इस कारण हमने आमने-सामने उनसे युद्ध किया।

२०. और ऐसा हुआ कि हमने फिर उन्हें अपने देश से बाहर खदेड़ दिया; और हमने उनके सैनिकों को इतनी बड़ी संख्या में मारा कि उनकी गिनती भी हमने नहीं की।

२१. और ऐसा हुआ कि हम पुनः वापस अपने स्थान पर लौट आए और मेरे लोग (१४) पुनः अपने पशुओं की देखभाल और कृषिकार्य करने लगे।

२२. और अब, मैंने वृद्ध होने के कारण, *अपने राज्य को अपने लड़कों में से एक को दे दिया है, इस कारण अब मैं और कुछ नहीं कहता। मेरे लोगों को परमेश्वर आशीर्वाद दें। आमीन।

अध्याय ११

दुष्ट राजा नूह और उसके पुजारी—भविष्यवक्ता अभिनन्दी द्वारा प्रचलित दुराचारों की निन्दा करना—राजा नूह का उसकी जान लेने की चेष्टा करना।

१. और ऐसा हुआ कि जनीफ ने अपने राज्य को नूह को दे दिया जो कि उसके पुत्रों में से एक था; इस कारण नूह उसके स्थान पर शासन करने लगा; परन्तु उसने अपने पिता का अनुसरण नहीं किया।

२. क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया और अपनी इच्छानुसार कार्य किया उसकी (१) अनेक पत्नियां और रखैलें थीं।

(७) देखो १४, याकू० ७. (८) १ नफी १८:२३. (९) २ नफी ५:५-९. (१०) २ नफी ५:१-४. (११) २ नफी ५:१२. (१२) देखो १४, या० ७. (१३) देखो ११, मू० ९. (१४) मू० ९:९, १४. अध्याय ११. (१) देखो १४, या० २.

*ईसा से लगभग १६० वर्ष पूर्व

और उसने अपने लोगों से पाप करवाए और ऐसे कार्य करवाए जो प्रभु की दृष्टि में घृणित थे। हां, उन्होंने (२) व्यभिचार और अन्य प्रकार के दुराचार के कर्म किए।

३. और उसने उनकी सभी वस्तुओं के पांचवें भाग का कर लगाया। उनके सोने और चांदी का पांचवां हिस्सा, तांबे का पांचवां हिस्सा, पीतल का पांचवां हिस्सा, लोहे आदि का पांचवां हिस्सा, पशुओं का पांचवां हिस्सा और यहां तक कि उनके अनाज का पांचवां हिस्सा का वह करस्वरूप लेने लगा।

४. यह सब उसने अपनी पत्नियों और रखैलों के लिए और अपने पुरोहितों की (४) पत्नियों और रखैलों के लिए लिया; इस प्रकार उसने अपने राज्य के मामलों में परिवर्तन किया।

५. क्योंकि उसने अपने पिता के द्वारा प्रतिष्ठित (५) पुरोहितों को हटा कर उनके स्थान पर उन (६) नए पुरोहितों को नियुक्त किया जो अपने हृदय में अहंकार से फूले हुए थे।

६. इस तरह उनके आलस, उनकी मूर्तिपूजा और उनके व्यभिचार को, राजा नूह द्वारा अपने लोगों पर लगाए गए (७) कर से सहारा मिला; और लोगों ने घोर परिश्रम करके दुराचार को समर्थन दिया।

७. राजा और उसके (८) पुरोहितों की निरर्थक चिकनी चुपड़ी बातों में पड़ कर लोग भी मूर्तिपूजक हो गए क्योंकि उन्होंने उनसे बहकाने वाली बातें कहीं।

८. और ऐसा हुआ कि राजा नूह ने बहुत से सुन्दर-सुन्दर और बड़े-बड़े मकान बनवाए और उन्हें लकड़ी, सोना, चांदी, लोहा, पीतल और तांबा आदि मूल्यवान धातुओं की कारीगरी से सजाया।

९. और उसने अपने लिए भी एक भारी महल बनवाया जिसके मध्य में उसने अपना सिंहासन भी बनवाया जो पूरा का पूरा श्रेष्ठ लकड़ी का बना था, और सोने, चांदी तथा अन्य मूल्यवान धातुओं से सजाया गया था।

१०. और उसने अपने कारीगरों को आज्ञा दी कि वे उसके (९) मन्दिर की दीवारों को लकड़ी, पीतल, तांबे की श्रेष्ठ कारीगरी से सजायें।

११. और अन्य आसनों से ऊंचे आसन जो (१०) उसके मुख्य पुरोहितों के लिए थे, उन्हें उसने शुद्ध सोने से सुसज्जित करवा के, उनके आगे कवच सा बनवाया जिससे जब उसके पुरोहित लोगों से झूठ और व्यर्थ की बातें कहें तब वे उन पर अपने हाथों और शरीरों को आराम के लिए टेक सकें।

१२. और ऐसा हुआ कि (११) मन्दिर के निकट उसने एक (१२) मीनार बनवायी; यह मीनार बहुत ही ऊंची थी, इतनी ऊंची कि उसके ऊपर खड़े हो कर वह (१३) शिलोम देश को, (१४) शेमलोन देश को जो लमनायटियों के अधिकार में था, और आस-पास के अन्य सारे देशों को देख सकता था।

१३. उसने शिलोम देश में बहुत से मकान बनवाए, और शिलोम से उत्तर की ओर एक पहाड़ पर जो कि उस देश से नफी के लोगों के (१५) भागने के समय शरण का स्थान था, उसने (१६) एक बहुत बड़ी मीनार बनवायी; इस प्रकार के कार्य उसने उस धन से किए जिसे उसने लोगों के ऊपर कर लगा कर प्राप्त किया था।

१४. उसका मन उसके धन पर था और वह (१७) अपनी पत्नियों और रखैलों के साथ मदिरा पीकर विषय वासनाओं में लिप्त होकर अपना समय व्यतीत किया करता था और उसके (१८) पुरोहित भी उसी के समान वैश्याओं के साथ समय व्यतीत किया करते थे।

१५. और उसने देश में यत्र-तत्र बगीचे लगाए; और अंगूर-रस निकालने के लिए मकान बनवाए

(२) देखो ९, २ नफी २८. (४) देखो १४, या० २. (५) देखो ३, मू० ६. (६) पद्य ७, ११, १४. मू० १२, १७, २५. १३:१. १७:१, ६, १२-१८. १९:२१, २३. २०:३, १८, २३. २१:२०, २३. २३:९. १२:३१-३५, ३९. २४:१-६, ८-११. (७) पद्य ३. (८) देखो ६. (९) देखो ८, २ नफी ५. (१०) देखो ६. (११) मू० १९:५-६. (१२) देखो ८, २ नफी ५. (१३) देखो ६. मू० ७. (१४) देखो ४, मू० १०. (१५) मू० ७:५. (१६) ओम० १२:१३. (१७) देखो १४, या० २. (१८) देखो ६.

*ईसा से लगभग १६० वर्ष पूर्व

और अंगूरी शराब का बहुत अधिक उत्पादन होने लगा; इसलिए वह और उसके लोग घोर शराबी हो गए।

१६. और ऐसा हुआ कि जब उसके लोग अपने पशुओं को चराते तब लमनायटी आकर कुछ लोगों को मार डालते।

१७. उनको देश से बाहर रखने के लिए राजा नूह ने देश के चारों ओर प्रहरियों को भेजा लेकिन उसने उनको पर्याप्त संख्या में नहीं भेजा, इसलिए लमनायटियों ने आकर उनको मार डाला और उनके बहुत से पशुओं को देश से बाहर खदेड़ ले गए; इस प्रकार लमनायटी उनको नष्ट करने और उनके प्रति अपना द्वेष दिखलाने लगे।

१८. और ऐसा हुआ कि राजा नूह ने उनके विरुद्ध अपनी सेना भेजी और उसकी सेना ने कुछ समय के लिए उनको पीछे खदेड़ दिया; और वे विजय के उपलक्ष में आनन्द मनाते हुए वापस लौटे।

१९. और इस भारी विजय के कारण वे अपने हृदयों में अहंकार से फूल उठे; और अपने शक्ति पर घमण्ड करते हुए कहने लगे कि उनके पचास सैनिक सहस्त्रों लमनायटियों से लड़ सकते हैं; इस प्रकार वे घमंड करने और रक्तपात और अपने भाइयों के रक्त बहाने में आनन्द मनाने लगे और यह सब उनके राजा और (१९) पुरोहितों की दुष्टता के कारण ही हुआ।

२०. और ऐसा हुआ कि उनमें एक व्यक्ति अभिनन्दी नाम का था और *वह उनमें आगे बढ़ कर भविष्यवाणी करते हुए कहने लगा: सुनो, प्रभु इस प्रकार कहता है और मुझे आज्ञा देते हुए उसने इस प्रकार कहा है—इन लोगों में जाओ और उनसे इस प्रकार कहो कि प्रभु कहता है—सन्ताप हो इन लोगों को, क्योंकि मैंने इनकी दुष्टता, घृणित कार्य और व्यभिचार देखे हैं और अगर इन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब मैं क्रोध में उनके पास आऊंगा।

२१. अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया और अपने प्रभु परमेश्वर की ओर नहीं लौटे तब मैं उन्हें इनके शत्रुओं के हाथों में कर दूंगा और वे (२०) दास बना लिए जाएंगे और अपने शत्रुओं के हाथों द्वारा कष्ट पायेंगे।

२२. और ऐसा होगा कि वे जान जायेंगे कि मैं प्रभु हूं, उनका परमेश्वर, और मैं एक ईर्षालु परमेश्वर हूं जो कि अपने लोगों के दुराचार पर दंड देता हूं।

२३. और अगर इन लोगों ने पश्चात्ताप नहीं किया और अपने प्रभु परमेश्वर की ओर नहीं लौटे तब उनको (२१) दासता में लाया जाएगा; और सर्वशक्तिमान परमेश्वर को छोड़कर और कोई भी उनकी रक्षा नहीं करेगा।

२४. और हां, ऐसा होगा कि जब वे मुझे पुकारेंगे तब मैं उनकी पुकार को (२२) देर से सुनूंगा; और मैं उनको उनके शत्रुओं से दंड दिलवाऊंगा।

२५. और अगर उन्होंने मोटे कपड़े और राख से पश्चात्ताप नहीं किया और अपने प्रभु परमेश्वर को जोर से नहीं पुकारा तब न तो मैं उनकी प्रार्थना सुनूंगा, और न मैं उनको उनके कष्टों से ही उभारूंगा; इसी प्रकार प्रभु ने कहा और यही तुम्हें बताने की आज्ञा उसने मुझे दी है।

२६. और तब ऐसा हुआ कि जब अभिनन्दी ने इन शब्दों को कहा तब वे उस पर क्रोधित हो उठे और उसकी जान लेनी चाही; परन्तु परमेश्वर ने उनके हाथों से उसकी रक्षा की।

२७. और जब राजा नूह ने उन बातों को सुना जिसे अभिनन्दी ने लोगों से कहा: तब वह भी क्रोधित हो उठा और बोला; अभिनन्दी कौन है जो मेरा और मेरे लोगों का न्याय करता है, या वह प्रभु कौन है जो मेरे लोगों पर इतना अधिक कष्ट लाएगा?

२८. मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम अभिनन्दी को यहां लाओ जिससे कि मैं उसे मार डालूं, क्योंकि ये सब बातें उसने इसलिए कही हैं कि जिससे वह मेरे लोगों को एक दूसरे के विरुद्ध भड़का सके और मेरे लोगों में विवाद खड़ा कर दे; इस कारण मैं उसको मार डालूंगा।

२९. लोगों की आंखों पर पर्दा पड़ा हुआ था;

(१९) देखो ६. (२०) पद्य २३. देखो ११, मू० ९. १२:२. (२१) देखो २१. (२२) पद्य २५. मू० २१:१४, १५.

*ईसा से लगभग १५० वर्ष पूर्व

इस कारण उन्होंने अभिनन्दी की कही बातों के प्रति अपने हृदयों को कठोर कर लिया, और वे उस समय से उसे पकड़ने के प्रयत्न में रहने लगे। और राजा नूह ने भी प्रभु की बातों के प्रति अपने हृदय को कठोर कर लिया और अपने बुरे कर्मों के लिए पश्चात्ताप नहीं किया।

अध्याय १२

बुरे कर्म करने वालों को फटकारने के कारण अभिनन्दी का कारागार में डाला जाना—झूठे पुरोहितों का उसका न्याय करने को बैठना—उनका पराजित होना।

१. और ऐसा हुआ कि* दो वर्षों का समय व्यतीत हो जाने पर अभिनन्दी अपना भेष बदल कर आया जिससे कि लोग उसे पहचान नही पाए, और वह उनमें भविष्यवाणी करते हुए कहने लगा : प्रभु ने मुझे आज्ञा देते हुए कहा है—अभिनन्दी, तुम जाओ और मेरे लोगों को यह भविष्यवाणी बताओ कि चूंकि उन्होंने मेरी वाणियों के प्रति अपने हृदयों को कठोर बना लिया है; अपने बुरे कर्मों पर पश्चात्ताप नहीं किया, इस कारण मैं क्रोध में उनको दंड दूंगा; हां, उनके पापों और घृणित कार्यों के कारण मैं अपने भीषण क्रोध में उनको दंडित करूंगा।

२. हां, इस पीढ़ी पर सन्ताप पड़े। और प्रभु ने मुझ से कहा : अपना हाथ उठाकर भविष्यवाणी करते हुए कहो : प्रभु कहता है कि ऐसा होगा कि अपने पापों के कारण इस पीढ़ी को (१) दासता में लाया जाएगा, और इनके गालों (२) पर थप्पड़ लगेगा; (३) वे मनुष्यों द्वारा खदेड़े और जान से मारे जाएंगे; और उनका मांस उड़ने वाले गिद्ध, कुत्ते और हिंसक पशु खाएंगे।

३. और ऐसा होगा कि राजा नूह के जीवन का मूल्य उतना ही आंका जाएगा जितना कि जलती हुई भट्ठी में (४) कपड़े का मूल्य किया जाता है; और तब वह जानेगा कि मैं प्रभु हूं।

४. और ऐसा होगा कि मैं अपने इन लोगों को भारी विपत्तियों से मारूंगा, हां, मैं इनको अकाल और महामारी से मारूंगा; और मैं ऐसा करूंगा कि वे पूरे दिन व्याकुल हो (५) चिल्लाएंगे।

५. और मैं उनकी पीठों पर बोझ (६) बंधवाऊंगा; और वे मूक गधों की तरह हांके जाएंगे।

६. मैं उन पर ओला बरसाऊंगा जो उन्हें मारेगा, और वे (७) पुरवैया हवा के द्वारा भी मारे जाएंगे; उनके देश को कीड़े कष्ट पहुंचाएंगे और उनके अनाज खा लेंगे।

७. वे एक बहुत बड़ी महामारी द्वारा मारे जाएंगे—और मैं यह सब उनके पापों और घृणित कार्यों के कारण ही करूंगा।

८. और ऐसा होगा कि अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब उनको पृथ्वी के ऊपर से (८) पूरी तरह नष्ट कर दिया जाएगा; फिर भी वे अपना (९) एक अभिलेख छोड़ जाएंगे जिसे मैं उन (१०) अन्य जातियों के लिए सुरक्षित रखूंगा जो इस देश पर अधिकार करेंगे; हां मैं यह इसलिए करूंगा कि जिससे इन लोगों के घृणित कार्यों का भेद अन्य जातियों पर खुले। इसी प्रकार की अनेक बातों की भविष्यवाणी अभिनन्दी ने इन लोगों के विरुद्ध की।

९. और ऐसा हुआ कि वे उस पर क्रोधित हो उठे और उसे बांध कर राजा के पास उठा कर ले गए और उससे कहा : देखो, हम आपके पास एक ऐसे आदमी को लाए हैं जिसने आपके लोगों के विरुद्ध बुरी भविष्यवाणी की है और कहता है कि परमेश्वर उनको नष्ट कर देगा।

१०. और यह आपके जीवन के विषय में भी भविष्यवाणी करते हुए कहता है कि आपका जीवन जलती हुई अग्नि में (११) कपड़े के समान होगा।

११. और फिर यह कहता है कि आप खेत के सूखे डण्ठल की तरह होंगे जो पशुओं के पैरों तले कुचले जाते हैं।

१२. और फिर यह कहता है कि आप एक

(१) देखो २१, मू० ११. (२) मू० २१:३. (३) पद्य ५. मू० २१:३, ४, १३. (४) मू० १९:२०. (५) मू० २१:१-१५. (६) मू० २१:३. (७) मू० ७:३१. (८) १ नफी १२:१९. २ नफी २६:१०-११. अल० ४५:९-१४. इला० १३:५-६. ३ नफी २७:३२. मा० ६. (९) मा० ८:१४-१६. देखो ३, २ नफी २७. (१०) देखो १८, १ नफी १३. (११) पद्य ३.

*ईसा से लगभग १४८ वर्ष पूर्व

गोखरू के फूलों की तरह होंगे जो पूर्ण रूप से फूल जाने पर, वायु के चलने से धरती पर गिर जाता है और कहता है कि यह सब प्रभु ने कहा है। और कहता है कि अगर आपने पश्चात्ताप नहीं किया तब यह सब आपके पापों के कारण आपके ऊपर बीतेगा।

१३. और हे राजा, आपने कौन सा ऐसा महापाप किया है और आपके लोगों ने कौन सा ऐसा महापाप किया है जो हम परमेश्वर द्वारा अपराधी ठहराए जाएंगे और इस व्यक्ति के द्वारा न्याय किया जाएगा?

१४. और हे राजा, देखिए, हम निर्दोष हैं और आपने कोई पाप नहीं किए हैं; इसलिए इस व्यक्ति ने आपके विषय में झूठी बातें कहीं और इसकी भविष्यवाणी व्यर्थ है।

१५. और देखिए, हम बलवान हैं, इसलिए हम दास नहीं बनेंगे और न तो हम अपने शत्रुओं द्वारा बन्दी बनाए जाएंगे; हां, आपने देश में प्रगति की है और आगे भी प्रगति करेंगे।

१६. देखिए, यह वह आदमी है जिसे हम आपके हाथों में दे रहे हैं, जिससे आपको जो उचित प्रतीत हो वैसा ही व्यवहार इसके साथ करें।

१७. और ऐसा हुआ कि राजा नूह ने अभिनन्दी को कारागार में डलवा दिया; और उसने आज्ञा दी कि उसके (१२) पुरोहित इकट्ठे हो जिससे कि वह उनके साथ विचार विमर्श कर सके कि उसका क्या किया जाए।

१८. और ऐसा हुआ कि उन्होंने राजा से कहा: उसे यहां लाओ जिससे कि हम उससे प्रश्न करें; और राजा ने आज्ञा दी कि उसे उनके सामने लाया जाए।

१९. और वे उससे प्रश्न पूछने लगे जिससे कि उसे बातों में पराजित करके उस पर दोष लगाया जा सके; परन्तु उसने निर्भीकता के साथ उनके सभी प्रश्नों के उत्तर दे कर उनको आश्चर्य चकित कर दिया; क्योंकि उसने उनके सभी प्रश्नों का उत्तर दिया और सभी बातों में उनको पराजित किया।

२०. और ऐसा हुआ कि उनमें से एक ने उससे यह कहते हुए पूछा: जो शब्द लिखे गए हैं और जो हमारे पूर्वजों के द्वारा सिखाए गए हैं उसका क्या अर्थ है।

२१. (१३) पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, तेरा परमेश्वर राज्य करता है।

२२. तेरे प्रहरी पुकार रहे हैं, वे एक साथ जय जयकार कर रहे हैं; क्योंकि वे साक्षात् देख रहे हैं कि यहोवा सिय्योन को लौट रहा है।

२३. हे यरूशलेम के खण्डहरो, एक संग उमंग में आ कर जय जयकार करो; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है, उसने यरूशलेम को छुड़ा लिया है।

२४. यहोवा ने सारी जातियों के सामने अपनी पवित्र भुजा प्रकट की है; और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर द्वारा किया हुआ उद्धार निश्चय देख लेंगे।

२५. और तब अभिनन्दी ने उनसे कहा: क्या तुम पुरोहित (१४) हो, और इन लोगों को शिक्षा देने का और भविष्यवाणी के अर्थ को समझने का मिथ्या बहाना करते हो, और फिर भी इनका अर्थ मुझसे पूछते हो?

२६. मैं तुमसे कहता हूं कि प्रभु की राहों को दूषित करने का सन्ताप पड़े तुम पर। क्योंकि अगर तुम इन बातों को समझते हो तब तुमने इनकी शिक्षा नहीं दी; इस कारण तुमने प्रभु के रास्तों को दूषित किया है।

२७. तुमने समझने के लिए अपना मन नहीं लगाया; इस कारण तुम समझदार नहीं रहे। इस कारण तुमने इन लोगों को क्या शिक्षा दी?

२८. और उन्होंने कहा: हम मूसा के नियम की शिक्षा देते हैं।

२९. और उसने उनसे फिर कहा: अगर तुम मूसा (१५) के नियम की शिक्षा देते हो तब तुम उसका पालन क्यों नहीं करते? तुम धन पर क्यों

(१२) देखो ६, मू० ११. (१३) यशायाह ५२:७-१०. (१४) देखो ६, मू० ११. (१५) देखो १५, २ नफी २५.

मन लगाए हुए हो? तुम (१६) व्यभिचार क्यों करते हो और अपना बल वैश्याओं के पीछे क्यों नष्ट करते हो और लोगों से पाप क्यों करवाते हो जिससे कि इन लोगों के विरुद्ध भविष्यवाणी करने के लिए प्रभु को मुझे भेजना पड़ा; हां, बहुत ही अशुभ भविष्यवाणी।

३०. क्या तुम नहीं जानते कि मैं सत्य कहता हूं? हां, तुम जानते हो कि मैं सत्य कहता हूं; और परमेश्‍वर के आगे तुम्हें कांपना चाहिए।

३१. और ऐसा होगा कि तुम अपने पापों के कारण मारे जाओगे, क्योंकि तुमने कहा कि तुम मूसा के नियम की शिक्षा देते हो। और मूसा के नियम के विषय में तुम क्या जानते हो? क्या मुक्ति मूसा के नियम के द्वारा आती है? तुम क्या कहते हो?

३२. और उन्होंने उत्तर दिया कि हां, मुक्ति (१७) मूसा के नियम द्वारा आती है।

३३. लेकिन तब अभिनन्दी ने कहा : मैं जानता हूं कि अगर तुमने परमेश्‍वर के नियमों का पालन किया तब तुम बच जाओगे; हां, अगर तुमने उन नियमों का पालन किया जिन्हें प्रभु ने मूसा को यह कहते हुए सीनै पर्वत पर दिया था।

३४. (१८) मैं तेरा परमेश्‍वर यहोवा हूं, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है।

३५. तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्‍वर न मानना।

३६. तू अपने लिए कोई मूर्ति खोद कर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, पृथ्वी पर, व पृथ्वी के जल में है।

३७. और तब अभिनन्दी ने उनसे कहा, क्या तुमने यह सब किया? मैं तुमसे कहता हूं कि नही, तुमने यह नहीं किया। और क्या तुमने इन लोगों को यह सब करने की शिक्षा दी? मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं तुमने यह नहीं किया।

अध्याय १३

भविष्यवक्ता अभिनन्दी की दिव्य-शक्ति के द्वारा रक्षा किया जाना, पुरोहितों का विरोध करना और नियम और सुसमाचार का उच्चारण करना।

१. जब राजा ने इन बातों को सुना तब उसने (१) अपने पुरोहितों से कहा : ले जाओ और इसे मार डालो; क्योंकि हम इसे क्या करें, यह तो पागल है।

२. और उन्होंने आगे बढ़ कर उस पर हाथ उठाना चाहा; लेकिन वह उनके विपक्ष में खड़ा रहा और उनसे बोला :

३. मुझे मत छुओ, क्योंकि अगर तुमने मुझ पर हाथ छोड़ा तब परमेश्‍वर तुमको मारेगा, क्योंकि अभी मैं वह सन्देश नहीं दे पाया हूं जिसे देने के लिए प्रभु ने मुझे भेजा है; और न तो मैं वही बतला पाया हूं (२) जिसे बतलाने की मांग तुमने की है; इस कारण परमेश्‍वर इस समय मुझे नष्ट होते नहीं देख सकेगा।

४. लेकिन जो आज्ञा परेमश्‍वर ने मुझे दी है उस आज्ञा को मैं अवश्य ही पूरा करूंगा; और तुमसे सत्य कहने के कारण तुम मुझ पर क्रोधित हो। और फिर परमेश्‍वर की वाणी को कहने के कारण तुमने मुझे (३) पागल समझा।

५. और ऐसा हुआ कि जब अभिनन्दी ने इन शब्दों को कहा तब राजा नूह के लोगों को उसे हाथ लगाने का साहस नहीं हुआ क्योंकि उसके ऊपर प्रभु की आत्मा थी; और उसका मुख उसी तरह तेजोमय शोभा से चमक रहा था जिस प्रकार सीनै पर्वत पर प्रभु से बातें करते हुए (४) मूसा कान्तिमान हो उठा था।

६. और उसने परमेश्‍वर की शक्ति और अधिकार द्वारा बोलते हुए कहा :

७. तुम देख रहे हो कि मुझे मारने की शक्ति तुममें नहीं है इस कारण मैं अपना सन्देश पूरा सुना रहा हूं। और मैं देखता हूं कि इससे तुम्हारा हृदय विदीर्ण हो जायेगा क्योंकि मैं तुम्हारे पापों के विषय में सत्य कह रहा हूं।

८. और हां, मेरी बातों से तुम आश्‍चर्य-चकित होकर क्रोधित हो उठते हो।

९. लेकिन मैं अपना सन्देश समाप्त कर लूं

(१६) देखो ६, २ नफी २८. (१७) देखो १५, २नफी २५. (१८) निर्गमन २०:२-४. अध्याय १३. (१) देखो ६, मू० ११. (२) मू० १२:२०-२४. (३) पद्य १. (४) निर्ग० ३४:२९-३५.

ईसा से लगभग १४८ वर्ष पूर्व

तत्पश्चात् मुझे कोई परवाह नहीं कि मेरा क्या होता है। यह भी सम्भव है कि मैं बचा लिया जाऊं।

१०. लेकिन मैं तुम्हें यह बताए देता हूं कि इसके बाद तुम मेरे साथ जो भी व्यवहार करोगे, वह, जो कुछ भविष्य में आएगा, उसी का एक (५) उदाहरण और पूर्वछाया होगी।

११. और अब मैं परमेश्वर की शेष आज्ञाओं को पढ़ कर तुम्हें सुनाता हूं, क्योंकि मैं देख रहा हूं कि वे तुम्हारे हृदयों में नहीं लिखी हैं; और मैं यह भी देख रहा हूं कि तुमने अपने अधिकांश जीवन में पापों को ही सीखा और शिक्षा दी है।

१२. और तुम्हें याद होगा कि मैंने (६) कहा था : तू अपने लिए कोई मूर्ति खोद कर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, पृथ्वी पर, या पृथ्वी के भीतर जल में है।

१३. और फिर : (७) तू उनको दण्डवत न करना और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा ईर्ष्यालु ईश्वर हूं, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूं।

१४. और जो मुझसे प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर दया करता हूं।

१५. प्रभु, अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि प्रभु उसको निर्दोष न ठहराएगा, जो उसका नाम व्यर्थ में लेगा।

१६. विश्राम दिन को पवित्र रखने के लिए स्मरण रखो।

१७. छः दिन परिश्रम करके अपना सब काम-काज करना।

१८. परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है। उसमें तुम कोई काम-काज न करना, और न तेरा बेटा, बेटी, दास, दासी, पशु और न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो।

१९. क्योंकि छः दिन में प्रभु ने आकाश, पृथ्वी, समुद्र, और जो कुछ उनमें है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दिया और उसको पवित्र ठहराया।

२०. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे धरती पर तेरा जीवन, जो प्रभु ने तुझे दिया है, लम्बा हो।

२१. तू हत्या न करना।

२२. तू व्यभिचार न करना। तू चोरी न करना।

२३. तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।

२४. तू किसी के घर का लालच न करना; न तो किसी की स्त्री का लालच करना, और न किसी के दास-दासी, या बैल गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना।

२५. और ऐसा हुआ कि जब अभिनन्दी ने इन बातों को कहना समाप्त किया तब उसने उनसे कहा : क्या तुमने इन लोगों को इन बातों का पालन करने की शिक्षा दी कि जिससे वे इन आज्ञाओं को रख सकें?

२६. मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, क्योंकि अगर तुमने ऐसा किया होता तब प्रभु मुझे इन लोगों के विरुद्ध भविष्यवाणी करने को नहीं भेजता।

२७. और तुम कहते हो कि मुक्ति मूसा के नियम के द्वारा आती है। मैं तुमसे कहता हूं कि अब भी मूसा के नियम का (८) पालन करना तुम्हारे लिए हितकर होगा; लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि वह समय आएगा जब कि मूसा के नियम का पालन करना आवश्यक (९) नहीं रह जाएगा।

२८. मैं तुमसे इतना और कहता हूं कि मुक्ति केवल नियम के द्वारा ही नहीं आती है; मूसा के नियम का विरोध न करते हुए स्वयं परमेश्वर अपने लोगों के पापों और बुरे कर्मों के शमन के लिए (१०) प्रायश्चित की विधि अगर नहीं देगा, तब लोग निश्चय ही नष्ट हो जाएंगे।

२९. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि इस्राएल के वंश को एक नियम देने की आवश्यकता थी, हां एक कठोर नियम की; क्योंकि वे हठी लोग थे और शीघ्र ही पाप कर्म कर बैठते थे और अपने

(५) मू० १७:१३-१९. १६:२०. अल० २५:७-१२. (६) मू० १२:३६. (७) निर्ग २०:५-१७. (८) देखो १५, २ नफी २५. (९) ३ नफी ९:१९, २०. १५:२-१०. (१०) देखो ६, २ नफी २.

प्रभु परमेश्वर को स्मरण करने में विलम्ब करते थे।

३०. इस कारण उनको एक (११) धार्मिक व्यवहार का नियम दिया गया जिसे उन्हें दिन प्रतिदिन परमेश्वर और उसके प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने की याद में दृढ़ता के साथ पालन करना था।

३१. लेकिन देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि यह सब आने वाली बातों के संकेत हैं।

३२. और अब, क्या उन्होंने नियम को समझा? मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, उन्होंने नियम को नहीं समझा। उन्होंने अपने हृदय की कठोरता के कारण ही नियम को नहीं समझा; क्योंकि उन्होंने यह नहीं समझा कि परमेश्वर द्वारा उद्धार किए जाए बिना कोई मनुष्य नही बच सकता।

३३. क्योंकि सुनो, क्या मूसा ने मसीह के आने और परमेश्वर का अपने लोगों का उद्धार करने की भविष्यवाणी नहीं की थी? और जगत के आरम्भ से सभी भविष्यवक्ताओं ने क्या थोड़ी बहुत बातें इन विषयों पर नहीं कही हैं?

३४. क्या उन्होंने यह नहीं कहा कि (१२) परमेश्वर स्वयं मानव समाज में मानव शरीर धारण करके महान शक्ति के साथ पृथ्वी पर आएगा?

३५. और हां, क्या उन्होंने यह नहीं कहा कि वह मनुष्य के लिए (१३) मर कर जी उठने की विधि को प्राप्त करेगा और उसे स्वयं पीड़ा और कष्ट झेलना पड़ेगा?

अध्याय १४

अबिनन्दी का राजा नूह के पुरोहितों को यशायाह का उद्धारण देना—यशायाह ५३ से तुलना करो।

१. हां यशायाह ने भी क्या नहीं कहा है: जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?

२. क्योंकि वह उसके सामने एक कोमल अंकुर की तरह, और एक जड़ के समान निर्जल भूमि में उगेगा; उसका न तो रूप है न सुन्दरता; और जब हम उसको देखेंगे तो उसमें कोई आकर्षण नहीं होगा कि हम उसको चाहें।

३. वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ है; वह एक दु:खी पुरुष, शोकयुक्त है और हम उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया और हमने उसका आदर नहीं किया।

४. निश्चय उसने हमारे कष्टों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया; फिर भी हमने उसे परमेश्वर द्वारा दंडित, पीड़ित और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा।

५. परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया; वह हमारे दुराचार के हेतु ही आहत हुआ; हमारी ही शान्ति के लिए वह दंडित हुआ, कि उसके कोड़े खाने से हम लोगों के घाव भर जाएं।

६. हम तो सब के सब भेड़ों की तरह भटक गए हैं। हममें से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया और प्रभु ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

७. वह सताया गया, उसे यातना दी गई, तो भी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार बध के लिए लाया गया मेमना ऊन कतरने के समय भेड़ चुपचाप रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।

८. उसे बन्दीगृह और न्यायालय से ले जाया गया; और उसके दोबारा प्रकट होने की घोषणा कौन करेगा? क्योंकि वह जीवितों की भूमि से अलग कर दिया गया; मेरे ही लोगों के दुराचार के कारण उस पर आघात हुए।

९. और मृत्यु के पश्चात् उसकी कब्र भी दुष्टों और धनवानों के संग बनाई गई, यद्यपि उसने कोई दुष्कर्म नहीं किया था और न उसके मुंह से कभी छल की बात निकली थी।

१०. फिर भी प्रभु को यही भाया कि उसे घायल करे; उसी ने उसको कष्ट दिया; जब

(११) देखो १५, २ नफी २५. (१२) देखो २, मू० ३. (१३) देखो ४, २ नफी २.

तुम अपने पाप के लिए उसकी आत्मा की भेंट दोगे तब वह अपने वंशज देख पाएगा; वह बहुत दिन जीवित रहेगा और उसके द्वारा प्रभु की इच्छा पूरी होगी।

११. वह अपनी आत्मा का दु:ख देखेगा और सन्तुष्ट होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मनिष्ठ सेवक बहुतेरों को धार्मिक बनाएगा; क्योंकि वह उनके पापकर्म का बोझ स्वयं उठाएगा।

१२. इस कारण मैं उसे महानता का एक भाग बांट कर दूंगा, और वह अपनी सम्पदा समर्थ लोगों में बांटेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण तक मृत्यु को समर्पित कर दिया; और वह अपराधियों के संग गिना गया; और उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिए सिफारिश की।

अध्याय १५

अभिनन्दी की भविष्यवाणी—अपने लोगों को मुक्त करने के लिए स्वयं परमेश्वर का आना—यीशु मसीह क्यों पिता और पुत्र कहलाते हैं?

१. और तब अभिनन्दी ने उनसे कहा: मैं चाहता हूं कि तुम यह समझो कि (१) स्वयं परमेश्वर मानव समाज में आकर अपने लोगों को मुक्त करेगा।

२. और (२) मानव शरीर में रहने के कारण उसे परमेश्वर का पुत्र कहेंगे, और पिता की इच्छानुसार शरीर के शासनाधीन होने के कारण वह पिता और पुत्र ठहरता है।

३. पिता इस कारण क्योंकि उसे परमेश्वर की शक्ति के बल पर (३) लाया गया; और (४) पुत्र मानव हाड़ मांस के शरीर के कारण; इस तरह वह पिता और पुत्र हुआ।

४. और वे (५) एक ही परमेश्वर हैं, हां, वही स्वर्ग और धरती का (६) अनन्त पिता।

५. इस प्रकार मानव शरीर पवित्र आत्मा के (७) अधीन हुआ, अथवा पुत्र पिता के अधीन होकर (८) एक ही परमेश्वर प्रलोभन का सामना करते हुए उन (९) प्रलोभनों के वशीभूत न होना, लेकिन स्वयं अपने ही लोगों के द्वारा उसका तिरस्कार होता है उसको कष्ट दिया जाता है और अपने ही लोगों द्वारा परित्याग किया जाता है।

६. मानव समाज में (१०) बड़े-बड़े चमत्कार करने के पश्चात् उसे, यशायाह के वचनानुसार, (११) जैसे भेड़ ऊन कतरने के समय चुप रहती है, उसी प्रकार उसे ले जाया जाएगा और वह मुंह नहीं खोलेगा।

७. हां, उसी प्रकार उसको ले जाया जाएगा, उसको (१२) क्रूस पर चढ़ा कर मार डालेंगे, और उसका शरीर (१३) मृत्यु के वशीभूत होगा और पुत्र की इच्छा पिता की इच्छा में लीन हो जाएगी।

८. और इस प्रकार परमेश्वर मृत्यु की (१४) जंजीर को तोड़ता है और मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है, और पुत्र को मनुष्य के बीच (१५) मध्यस्थ बनने का अधिकार देता है।

९. स्वर्ग में आरूढ़ होकर, मानव पुत्रों के लिए करुणा से भरा हुआ दया का प्याला लेकर, न्याय और उनके मध्य खड़े होकर; मृत्यु की (१६) जंजीर को तोड़ कर उसने मनुष्य के पापों और अपराधों को (१७) अपने ऊपर लेकर, उनका उद्धार करके न्याय की मांग को तृप्त कर दिया है।

१०. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि उसके प्रकट होने की (१८) घोषणा कौन करेगा? देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि पापों के लिए उसकी आत्मा की जब (१९) आहुति दी जाएगी तब वह अपनी सन्तति को देखेगा। और अब तुम क्या कहते हो? और उसकी (२०) सन्तति कौन होगी?

११. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि जिन लोगों

(१) देखो २८, मू० ७. (२) देखो २, मू० ३. (३) १ नफी ११:१३-२१; मू० ३:८-९. अल० ७:१०. १९:१३. ३ नफी १:१४. मा० ९:१२. (४) देखो २, मू० ३. (५) देखो ११, २ नफी ३१. (६) देखो १, मू० ३. (७) पद्य २. (८) देखो ११, २ नफी ३१. (९) देखो १६, २ नफी ९. (१०) देखो ३, मू० ३. (११) मू० १४:७. यशा० ५३:७. (१२) देखो ७, मू० ३. (१३) पद्य २, ५. (१४) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (१५) देखो ५, २ नफी २. (१६) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (१७) मू० १४:५-८, ११, १२. (१८) मू० १४:८. (१९) १४:१०. (२०) पद्य ११-१३. ईसा से लगभग १४८ वर्ष के मध्य

ने उन पवित्र भविष्यवक्ताओं की वाणी को सुना है जिन्होंने प्रभु के आने की भविष्यवाणी की है और उनकी बातों पर विश्वास किया है कि प्रभु अपने लोगों को मुक्त करेगा और जो अपने पापों को क्षमा किए जाने वाले दिन की प्रतीक्षा में है; तब, मैं तुमसे कहता हूं कि वे उसके वंशज हैं, और वे ही परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी होंगे।

१२. क्योंकि यही वे लोग हैं जिनके पापों के (२१) बोझ को उसने उठाया और यही वे लोग हैं जिनको पापों से मुक्त करने के लिए वह मरा। क्या वे उसकी सन्तान नहीं हैं?

१३. और क्या सभी भविष्यवक्ता, जिन्होंने भविष्यवाणी करने के लिए अपना मुख खोला, क्या उन्होंने नियम-भंग नहीं किया? मेरा तात्पर्य उन सभी पवित्र भविष्यवक्ताओं से है जो जगत के आरम्भ से हुए हैं। मैं तुमसे कहता हूं कि वे उसी की सन्तान हैं।

१४. और यही (२२) वे लोग हैं जो शान्ति लाये, सुसमाचार लाये, मुक्ति का प्रचार किया, और सिय्योन से कहा: तुम्हारा परमेश्वर राज कर रहा है।

१५. और ओह! पहाड़ों पर उनके पांव कितने सुहावने थे।

१६. और पुन: पहाड़ों पर उनके पांव कितने सुहावने लगते हैं, जो अब भी शान्ति की स्थापना करते हैं।

१७. और फिर पहाड़ों पर उनके पांव कितने सुहावने लगते हैं जो इस समय से आगे सदैव शान्ति की स्थापना करते रहेंगे।

१८. और सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि यही सब कुछ नहीं है। क्योंकि देखो पहाड़ों पर उसके पांव कितने सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति का संस्थापक है, हां, यहां तक कि वह प्रभु जिन्होंने अपने लोगों का उद्धार किया; हां वह जिन्होंने अपने लोगों को मुक्ति प्रदान की है।

१९. और मुक्ति की वह व्यवस्था जिसे उसने (२३) पृथ्वी की नींव के समय बनाई थी, नहीं होती तब मैं तुमसे कहता हूं कि (२४) सब मानव जाति नष्ट हो जाती।

२०. लेकिन देखो, मृत्यु की जंजीर (२५) तोड़ दी जाएगी और पुत्र का शासन होगा, और मृतकों पर उसका अधिकार होगा; इस कारण वह मृतकों को (२६) पुनर्जीवित करने की व्यवस्था लागू करेगा।

२१. और तब आता है पुनर्जीवन; हां, (२७) प्रथम पुनर्जीवन और उनका भी पुनर्जीवन जो पहले थे, वर्तमान में हैं और जो मसीह के पुनर्जीवित होने के समय तक रहेंगे—क्योंकि वह इसी नाम से पुकारा जाएगा।

२२. सभी भविष्यवक्ता और उनकी बातों पर विश्वास करने वाले या जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, वे सब प्रथम पुनर्जीवित किए जाने के समय में पुनर्जीवन प्राप्त करेंगे; इस कारण वे प्रथम पुनर्जीवित होंगे।

२३. और उनके ऊपर उस परमेश्वर के साथ रहने के लिए ले जाया जाएगा जिसने कि उनको मुक्त किया; इस प्रकार मृत्यु की जंजीर को तोड़ने वाले मसीह के द्वारा उनको मुक्ति मिलती है।

२४. और ये वे लोग हैं जिनका प्रथम पुनर्जीवन में भाग है और ये वह हैं जो मसीह से पूर्व (२८) अज्ञानता में मृत्यु को प्राप्त हुए हैं और जिनके प्रति मुक्ति की घोषणा नहीं की गई है। और इस प्रकार प्रभु इन को पुनर्स्थापित करता है और वे प्रथम पुनर्जीवित में भाग लेते हैं अर्थात् प्रभु द्वारा उद्धार किए जाने पर उनको अनन्त जीवन प्राप्त होता है।

२५. और छोटे बच्चों (२९) को भी अनन्त जीवन मिलता है।

२६. लेकिन देखो, परमेश्वर के सामने भय खाओ, और कांपो, क्योंकि तुम्हें कांपना चाहिए; क्योंकि जो उसके विरुद्ध विद्रोह करते और अपने पापों में मरते हैं उनमें से किसी का भी वह उद्धार नहीं करेगा; हां, यहां तक कि जब से संसार का आरम्भ हुआ तब से जो लोग पाप करते हुए नष्ट

(२२) मू० १२:२१-२४. यशा० ५२:७-१०. (२३) देखो ४, मू० ४. (२४) देखो ५ और ७, २ नफी ९. (२५) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (२६) देखो ४, २ नफी २. (२७) देखो ७, या० ४. (२८) देखो १०, मू० ३. (२९) देखो १३, मू० ३. (२१) मू० १४:१२.

हुए और जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध स्वेच्छा से विद्रोह किया और परमेश्वर की आज्ञाओं को जानते हुए भी उनका पालन नहीं किया; यही वे लोग हैं (३०) जिनका प्रथम पुनर्जीवन में कोई हिस्सा नहीं है।

२७. इस कारण क्या तुम्हें कांपना नहीं चाहिए? क्योंकि ऐसे लोगों के लिए मुक्ति नहीं आती; क्योंकि प्रभु ने ऐसे किसी भी व्यक्ति का उद्धार नहीं किया; और न तो ऐसे किसी को वह मुक्त करेगा; क्योंकि वह अपनी व्यवस्था को भंग नहीं कर सकता और वह (३१) न्याय की मांग को भी ठुकरा नहीं सकता।

२८. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि वह समय आएगा जबकि प्रभु की मुक्ति की घोषणा हर एक राष्ट्र, जाति, भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वालों और लोगों में की जाएगी।

२९. हां, प्रभु, (३२) तेरे प्रहरी पुकार रहे हैं, वे एक साथ जयजयकार कर रहे हैं; क्योंकि वे साक्षात् देख रहे हैं कि यहोवा सिय्योन को लौट रहा है।

३०. हे यरूशलेम के खण्डहरों, एक साथ उमंग में आकर जयजयकार करो; क्योंकि यहोवा ने अपनी प्रजा को शान्ति दी है, उसने यरूशलेम का उद्धार किया है।

३१. यहोवा ने सारी जातियों के सामने अपनी पवित्र भुजा प्रकट की है; और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय ही देखेंगे।

अध्याय १६

अभिनन्दी की भविष्यवाणी का क्रम—मसीह ही एकमात्र मुक्तिदाता—मर कर जीवित होना और न्याय।

१. और तब ऐसा हुआ कि अभिनन्दी ने जब इन बातों को कहना समाप्त कर लिया तब अपना हाथ आगे फैला कर बोला: वह समय आएगा जब कि सब प्रभु की मुक्ति को देखेंगे; और यह सब होगा (१) जब कि सभी राष्ट्र, जाति, भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले, और लोग साक्षात् देख कर परमेश्वर के समक्ष यह स्वीकार करेंगे कि उसका न्याय उचित है।

२. और तब दुष्टों को निकाल बाहर किया जाएगा और (२) उनके चिल्लाने, रोने, विलाप करने और दांत पीसने का कारण होगा; और वह कारण होगा प्रभु की वाणी पर ध्यान न देना; इस कारण प्रभु उनका उद्धार नहीं करेगा।

३. क्योंकि वे सांसारिक विषय-वासना में लिप्त रहने वाले हैं और उनके ऊपर शैतान (३) का प्रभाव है; हां, (४) उस बूढ़े सर्प का प्रभाव है जिसने हमारे प्रथम माता-पिता को बहकाया; और जो उनके पतन का कारण था और जो पूरी मानवता के विषयी, कामी, भलाई के स्थान पर दुष्कर्म करने और शैतान का दास बनाने का कारण था।

४. इस प्रकार (५) सभी मानव समाज नष्ट हो गया था; और अगर परमेश्वर अपने लोगों का उस नष्ट और पतित अवस्था में उद्धार नहीं करता, तब वे सदा के लिए नष्ट हो जाते।

५. लेकिन याद रखो कि जो अपनी विषय-वासना में लिप्त रहने वाले स्वभाव में ही दृढ़ रहता है और पापकर्म ही किए जाता है और परमेश्वर का विद्रोही बना रहता है और पतित ही रहता है, उसके ऊपर (६) शैतान का पूरा अधिकार रहता है। इस कारण, परमेश्वर के शत्रु होने से उनके लिए मानो उद्धार बना ही नहीं है; और शैतान भी परमेश्वर का शत्रु है।

६. और जो भविष्य में होने वाला है उसे ऐसे कहा जाए कि मानो वह घट चुका है, तो कहा जा सकता है कि अगर मसीह इस संसार में नहीं आया होता, तब उद्धार होता ही नहीं।

७. और अगर मसीह मर कर जीवित नहीं होता अर्थात् (७) मृत्यु की जंजीरों को तोड़

(३०) देखो ११, या० ६. (३१) पद्य २४. (३२) अल० ४२:१-२६. (३३) यशा० ५२:८-१०. मू० १२:२२-२४.
अध्याय १६. (१) मू० ३:२०, २१. १५:२८, ३१. (२) देखो ११, १ नफी १५. मत्ति १३:४२. (३) देखो ६, २ नफी ६.
(४) देखो ६, २ नफी २. (५) देखो ५ और ७, २ नफी ६. (६) देखो ६, २ नफी ६. (७) देखो ७ और १४, मू० १५.

ईसा से लगभग १४८ वर्ष पूर्व

देता जिससे कि (८) कब्र विजयी ही न रहता और (९) मृत्यु की पीड़ा न होती तब पुनर्जीवित होने की व्यवस्था भी नहीं होती।

८. लेकिन (१०) पुनर्जीवन होने के कारण (११) कब्र विजयी नहीं हुई और मृत्यु की (१२) पीड़ा मसीह में लीन हो जाती है।

९. वह जगत का (१३) उजियाला और जीवन है; हां, वह प्रकाश जो अन्तहीन है, और जो कभी बुझ नहीं सकता; और हां, वह जीवन जिसका कभी अन्त नहीं, जिससे कि और मृत्यु नहीं होगी।

१०. यहां तक कि यह (१४) मरणशील अमरत्व धारण करेगा और दूषित होने वाला अदूषणीय रूप धारण करके परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने, अपने भले बुरे कर्मों का न्याय करने के लिए ले जाया जायेगा।

११. और अगर उनके कर्म अच्छे ठहरे तब उनको अनन्त जीवन और अनन्त आनन्द प्राप्त होगा; और अगर उनके कर्म बुरे ठहरे तब उनको अनन्त नरक-दण्ड देकर उस (१५) शैतान को दे दिया जाएगा जो कि उन पर प्रभाव डाले हुए था और जो स्वयं नरक-दण्ड भोगी है।

१२. वे स्वयं अपनी वासनामय इच्छाओं का अनुसरण करते रहे; और जब तक प्रभु का दयामय हाथ उनकी ओर फैला रहा, तब तक प्रभु को कभी पुकारा नहीं, पापों के विरुद्ध चेतावनी देने पर भी पापों को त्यागा नहीं; और अपने पापों के लिए पश्चात्ताप करने की आज्ञा देने पर भी उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया।

१३. और क्या तुम्हें अपने पापों के लिए कांपना और पश्चात्ताप नहीं करना चाहिए और क्या यह स्मरण नहीं रखना चाहिए कि केवल मसीह के द्वारा ही तुम बचाए जा सकते हो?

१४. इस कारण अगर तुम (१६) मूसा के नियम की शिक्षा देते हो, तब यह भी शिक्षा दो कि यह भविष्य में होने वाली बातों की पूर्व-छाया है।

१५. यह सिखाओ कि मुक्ति प्रभु मसीह के द्वारा आती है जो कि स्वयं (१७) अनन्त पिता है। आमीन।

अध्याय १७

अभिनन्दी का धर्म के लिए प्राण त्याग करना—अग्नि द्वारा मृत्यु पीड़ा सहते हुए उसका अपने हत्यारों के प्रति प्रतिकार की भविष्यवाणी करना—अलमा का मत-परिवर्तन।

१. और ऐसा हुआ कि जब अभिनन्दी ने इन बातों को कहना समाप्त किया तब राजा ने अपने (१) पुरोहितों को आज्ञा दी कि वे उसे ले जाकर मार डालें।

२. लेकिन उनमें अलमा नाम का एक व्यक्ति था जो कि नफी का वंशज था। वह एक तरुण व्यक्ति था और उसने अभिनन्दी द्वारा कही गई बातों पर विश्वास किया, क्योंकि उनके पापों के विरुद्ध जो प्रमाण अभिनन्दी ने दिए थे, वे सब उसे मालूम थे; इस कारण वह राजा से विनय करने लगा कि वह अभिनन्दी पर क्रोध न करे, और उसे शान्ति के साथ चला जाने दे।

३. लेकिन राजा का क्रोध और भी भड़क उठा और उसने अलमा को उनमें से निकलवा दिया और अपने सेवकों को उसके पीछे भेजा कि वे उसे मार डालें।

४. लेकिन वह उनके सामने से जान बचा कर भाग खड़ा हुआ और छुप गया और वे उसे ढूंढ़ न सके। वह कई दिनों तक छुपा रहा और छुप करके ही उसने अभिनन्दी द्वारा कहे गए सभी शब्दों को लिखा।

५. और ऐसा हुआ कि राजा ने अपने प्रहरियों से अभिनन्दी को घिरवा लिया; और उन्होंने उसे बांध कर कारागार में डाल दिया।

(८) मू० १५:८, २०. अल० २२:१४. २७:२८. (९) पद्य ८. अल० २२:१४. २४:२३. मा० ७:५. (१०) देखो ४, २ नफी २. (११) पद्य ७. (१२) पद्य ७. (१३) अल० ३८:९. ३ नफी ९:१८. १५:९. १८:१६, २४. ए० ३:१४. ४:१२. मरो० ७:१८. यू० ८:१२. ९:५. १४:६. सि० शर्त० ८४:४५. ८८:७-१३. (१४) देखो ४, २ नफी २ और १० और १३, २ नफी ९. (१५) देखो ९, २ नफी ९. (१६) देखो १५, २ नफी २५. (१७) देखो १, मू० ३. अध्याय १७. (१) देखो ६, मू० ११.

ईसा से लगभग १४८ वर्ष पूर्व

६. तीन दिनों के पश्चात् अपने (२) पुरोहितों से विचार-विमर्श करके उसने उसे पुनः अपने सामने बुलवाया।

७. और उसने उससे कहा : अभिनन्दी, हमने तुम्हारे विरुद्ध एक अभियोग पाया है, और तुम मृत्यु-दण्ड के योग्य हो।

८. क्योंकि तुमने कहा था कि (३) स्वयं परमेश्वर मानव वंश में आएगा; इस कारण तुमको मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा, अन्यथा तुम वह अशुभ शब्द जो तुमने मेरे और लोगों के विरुद्ध कहें हैं, वापस लो।

९. तब अभिनन्दी ने उससे कहा : इन लोगों के विषय में मैंने जो बातें तुमसे कही हैं मैं उन्हें वापस नहीं लूंगा, क्योंकि वे सब सत्य हैं; और तुमको उनकी सत्यता स्वयं मालूम होनी चाहिए क्योंकि उसी के कारण मैं तुम्हारे हाथों में पड़ गया हूं।

१०. और मैं मृत्यु का सामना करूंगा परन्तु मैं उन बातों को वापस नहीं लूंगा और वे तुम्हारे विरुद्ध साक्षी के रूप में होंगी। और अगर तुमने मुझे मार डाला तब तुम एक निर्दोष का रक्त बहाओगे और यह भी अन्तिम दिन तुम्हारे विरुद्ध साक्ष्य होगा।

११. राजा नूह उसे मुक्त करने ही वाला था क्योंकि उसकी बातों से उसे भय हो रहा था; वह यह सोच रहा था कि परमेश्वर का न्याय उसके ऊपर पड़ेगा।

१२. लेकिन (४) पुरोहितों ने उसके विरुद्ध आवाज़ उठाते हुए उस पर दोष लगाते हुए कहा : इसने राजा की निन्दा की है। राजा यह सुन कर क्रोध से भड़क उठा, और उसे मारे जाने के लिए दे दिया।

१३. और ऐसा हुआ कि वे उसे बांध कर ले गए और उसे जलती लकड़ियों से जला कर (५) मार डाला।

१४. और जब आग से वह जलने लगा तब वह उनसे बोला :

१५. देखो, जैसा तुमने मेरे साथ किया है, वैसा ही (६) तुम्हारे वंश के साथ होगा और बहुतों को आग से जल कर नष्ट होना पड़ेगा; और यह इसलिए होगा कि अपने परमेश्वर प्रभु द्वारा दी जाने वाली मुक्ति में वे विश्वास करते हैं।

१६. और ऐसा होगा कि अपने अन्याय के कारण तुम सभी प्रकार के रोगों से पीड़ित होगे।

१७. हां, तुम चारों ओर से पीटे जाओगे, और इधर-उधर ऐसे खदेड़े जाओगे जैसे जंगली पशुओं के झुण्ड, जंगली भयानक हिंसक पशुओं के द्वारा खदेड़े जाते हैं।

१८. तब उन दिनों तुमको (७) खोजा जाएगा और तुम अपने शत्रुओं के हाथों द्वारा ले जाए जाओगे, और तब तुम भी मेरी ही तरह अग्नि द्वारा मृत्यु पीड़ा सहोगे।

१९. इस प्रकार परमेश्वर उनको मारेगा जो उसके लोगों को नष्ट करते हैं। हे परमात्मा मेरी आत्मा को स्वीकार करो।

२०. और * जैसे ही अभिनन्दी ने इन शब्दों को कहा वैसे ही वह (८) अग्नि से जलकर मृत्यु को प्राप्त होकर गिर पड़ा; हां, परमेश्वर की आज्ञाओं को अस्वीकार न करने के कारण उसे मार डाला गया, और वह अपनी बातों की सत्यता पर अपनी मृत्यु से मुहर लगा गया।

अध्याय १८

मॉरमन का जल—अलमा का हिलम और दूसरों को बपतिस्मा देना—मसीह का गिरजा—अलमा और उसके अनुयाइयों को नष्ट करने के लिए राजा नूह का सेना भेजना।

१. ऐसा हुआ कि अलमा जो राजा नूह के सेवकों के सामने से जान बचा कर भाग गया था, अपनी भूलों और पापों के लिए पश्चात्ताप करने लगा और गुप्त रूप से लोगों में जा कर अभिनन्दी की बातों का प्रचार करने लगा।

२. हां, वह भविष्य में होने वाली बातों का, मृतकों के (१) पुनर्जीवित होने का और लोगों

(२) देखो ६, मू० ११. (३) मू० ७:२७. १३:३४. (४) देखो ६, मू० ११. (५) पद्य १८-२०. मू० ७:२८. (६) मू० १३:१०. अल० २५:७-१२. (७) अल० २५:८-९. (८) देखो ५. अध्याय १८. (१) देखो ४, २ नफी २.

*ईसा से १४८ वर्ष पूर्व

के उद्धार का प्रचार करने लगा, जो कि मसीह की शक्ति, उनके कष्टों, उसकी मृत्यु और उसके पुनर्जीवित होकर स्वर्ग में जाने से आएगा।

३. जितने लोग उसकी बातों को सुनने के लिए तैयार होते उन सभी को वह गुप्त रूप से शिक्षा देता जिससे कि राजा को पता न लगे। बहुत से लोगों को उसकी बातों पर विश्वास हुआ।

४. और जितने लोगों ने उसका विश्वास किया वे सब (२) मारमन नामक स्थान पर गए जिसका नाम मारमन राजा के नाम पर पड़ा था और जो उस देश की सीमा पर था, जहां पर मौसम के के अनुसार समय-समय पर बनैले पशु विचरण करते थे।

५. (३) मारमन के एक स्थान पर निर्मल जल का एक सोता था और उस सोते के निकट छोटे छोटे वृक्षों का एक घना कुंज था, जहां अलमा दिन में अपने ढूंढ़ने वाले राजा के सेवकों से छुप कर रहने लगा।

६. और जितने लोगों ने उसका विश्वास किया, वे सब उसकी बातों को सुनने के लिए वहां जाते।

७. और ऐसा हुआ कि *कुछ दिनों के पश्चात् मॉरमन में अच्छी संख्या में लोग अलमा की बातों को सुनने के लिए एकत्रित हुए। हां, वे सभी जो उसकी बातों पर विश्वास करते थे, वहां एकत्रित हुए। और उसने उनको पापों के लिए पश्चात्ताप, मुक्ति और प्रभु पर विश्वास करने के विषय में आदेश दिया और शिक्षा दी।

८. और ऐसा हुआ कि उसने उनसे कहा: देखो, यहां, (४) मारमन का जल है (उस जल को ऐसा ही कहा जाता था) और जबकि तुम परमेश्वर के दल में आना चाहते हो, और उसके लोग कहलाना चाहते हो और तुम एक दूसरे के बोझ को ढ़ोने में सहायता देना चाहते हो कि जिससे वह हल्का हो जाए।

९. और जो दुःख से रोते हैं उनके दुःख से दुःखी होने को तैयार हो, और जिनको सान्त्वना की आवश्यकता है उन्हें आश्वासन देना चाहते हो, और सदैव सभी बातों में चाहे जहां भी तुम हो, मृत्यु तक परमेश्वर की साक्षी के रूप में खड़े होना चाहते हो, जिससे कि परमेश्वर द्वारा तुम्हारा उद्धार हो सके और तुम्हारी गिनती (५) प्रथम पुनर्जीवन पाने वालों में हो जिससे कि तुम्हें अनन्त जीवन प्राप्त हो सके।

१०. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुम्हारे हृदयों की यही इच्छा है, तब एक गवाह के रूप में तुमने उसके साथ अनुबंध किया है कि तुम उसकी सेवा करोगे और उसकी आज्ञाओं का पालन करोगे जिससे कि वह तुम्हारे ऊपर अपनी आत्मा को और अधिक उड़ेल सके तब प्रभु के नाम पर (६) बपतिस्मा लेने के विरुद्ध तुम्हारे पास क्या कारण है?

११. और जब लोगों ने इन शब्दों को सुना तब तालियां पीटते हुए अपनी प्रसन्नता प्रकट की और कहा: हमारे हृदयों की यही इच्छा है।

१२. और ऐसा हुआ कि अलमा ने प्रथम हिलम को ले जा कर जल में खड़ा करके पुकारते हुए कहा: हे प्रभु, अपनी आत्मा को अपने सेवक के ऊपर उड़ेल दे, जिससे वह इस कार्य को अपने हृदय की पवित्रता के साथ करे।

१३. और जब उसने इन शब्दों को कहा तब प्रभु की पवित्र आत्मा उसके ऊपर आई और वह बोली: हिलम, तुमने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ यह प्रतिज्ञा की है कि जब तक तुम जीवित रहोगे तब तक तुम उसकी सेवा करोगे और इसकी साक्षी पर, सर्वशक्तिमान परमेश्वर से (७) अधिकार प्राप्त करके मैं तुम्हें बपतिस्मा देता हूं; और प्रभु की आत्मा तुम्हारे ऊपर उड़ेल दी जाये; और उस मसीह की मुक्ति द्वारा वह तुम्हें अनन्त जीवन दे, जिसे कि उसने (८) पृथ्वी की नींव के समय से तैयार किया था।

१४. और जब अलमा ने इन शब्दों को कह लिया तब अलमा और हिलम दोनों पानी में डूब गए; और फिर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के कारण आनन्द मनाते हुए जल में से निकले और बाहर आए।

१५. और पुनः अलमा ने एक दूसरे व्यक्ति

(२) पद्य ५, ८, १६, ३०. अल० ५:३. ३ नफी ५:१२. मा० १:५. (३) पद्य ४. (४) पद्य ५. (५) देखो ७, या० ४.
(६) देखो २१, २ नफी ९. (७) अल० ५:३. ३ नफी ११:२५. (८) देखो ४, मू० ४.

को जल में ले जाकर उसी प्रकार बपतिस्मा दिया, लेकिन इस बार उसने अपने को जल में नहीं डुबोया।

१६. इसी प्रकार उसने उन सभी लोगों को बपतिस्मा दिया जो (९) मारमन गए थे, और जिनकी संख्या दो सौ चार की थी; हां, उन सबों ने (१०) मारमन के जल में बपतिस्मा लिया और परमेश्वर की कृपा से भर उठे।

१७. उस समय से उनको परमेश्वर का गिरजा या मसीह का गिरजा कहा जाने लगा। और ऐसा हुआ कि जिस किसी को परमेश्वर की शक्ति और अधिकार द्वारा (११) बपतिस्मा दिया गया उसे उसके गिरजा में सम्मिलित किया गया।

१८. और ऐसा हुआ कि परमेश्वर से अधिकार प्राप्त करके अलमा ने, उन को उपदेश देने और परमेश्वर के राज्य के विषय में शिक्षा देने के लिए, हर पचास लोगों पर एक-एक पुरोहित को (१२) नियुक्त किया।

१९. और उसने उनको आज्ञा दी कि जो कुछ उसने उनको सिखाया और जो बातें पवित्र भविष्य-वक्ताओं के मुख से कही गई हैं, उनको छोड़ कर वे और किसी अन्य बात की शिक्षा न दें।

२०. हां, उसने उनको यह आज्ञा भी दी कि वे पश्चात्ताप करें और जिस प्रभु ने अपने लोगों को मुक्त किया है, उस पर विश्वास करने के अलावा अन्य किसी बातों का उपदेश न दें।

२१. और उसने आज्ञा दी कि उनमें आपस में किसी भी प्रकार का विवाद नहीं होना चाहिए, और सभी विषयों को एक ही दृष्टि से देखना, एक ही विश्वास, और एक ही बपतिस्मा होना चाहिए और सभी के हृदयों को एकता के बन्धन से और एक दूसरे के प्रति प्रेम के बन्धन से बंधा होना चाहिए।

२२. इस प्रकार उनको प्रचार करने की आज्ञा उसने दी। और इस प्रकार वे परमेश्वर की सन्तान हुए।

२३. और उसने उनको आज्ञा दी कि वे (१३) सातवें दिन को मानें और उसे पवित्र रखें और प्रतिदिन अपने प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद दें।

२४. और उसने उनको यह भी आज्ञा दी कि जिन (१४) पुरोहितों को उसने नियुक्त किया है उनको अपनी जीविका के लिए (१५) स्वयं अपने हाथों से परिश्रम करना चाहिए।

२५. और निश्चय हुआ कि (१६) प्रति सप्ताह में एक दिन वे एकत्रित होकर लोगों को उपदेश दें, और अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करने की शिक्षा दें; और जितनी बार सम्भव हो सके वे स्वयं एकत्रित हों।

२६. और पुरोहित (१७) अपनी जीविका के लिए लोगों पर निर्भर न रहें; लेकिन अपने परिश्रम के लिए उन्हें परमेश्वर की कृपा मिलेगी जिससे वे आत्मा से धनी होंगे और परमेश्वर के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे, जिससे कि वे लोगों को परमेश्वर से प्राप्त बल और अधिकार के साथ शिक्षा देंगे।

२७. और अलमा ने पुनः यह आज्ञा दी कि (१८) हर एक को अपनी अवस्था के अनुसार अपनी अपनी वस्तुओं से दूसरों की सहायता करनी चाहिए; अगर किसी के पास अधिक है तो वह अधिक दे; और जिसके पास कम है वह कम दे, और जिसके पास कुछ नहीं है उसको दिया जाना चाहिए।

२८. इस प्रकार उन्हें ज़रूरतमंद पुरोहितों और हर एक निर्धन और वस्त्रहीन लोगों को अपनी स्वेच्छा और परमेश्वर के प्रति सद्भावना के साथ, अपनी संपत्ति से देना चाहिए।

२९. ईश्वर की आज्ञा पाकर इस प्रकार उसने लोगों से कहा; और वे परमेश्वर की राह पर चलते हुए एक दूसरे की शारीरिक और आत्मिक आवश्यकताओं के अनुसार दान देने लगे।

३०. ऐसा हुआ कि यह सब कार्य मारमन में, (१९) मारमन के उस (२०) वन में हुआ जो कि

(९) देखो २. (१०) पद्य ५, ८. (११) देखो २१, २ नफी ९. (१२) देखो ३, मू० ६. (१३) मू० १३:१६-१९. मरकु० २:२७, २८. सि० शर्त० ५९:९, १०. ६८:२९. (१४) देखो ३, मू० ६. (१५) पद्य २६, २८. (१६) अल० ३२:११. (१७) पद्य २४. (१८) देखो १०, या० २. (१९) देखो २, मु० १८. (२०) पद्य ५, ८, मु० २६:१५.

ईसा से लगभग १४७ वर्ष पूर्व

मारमन के (२१) जल के निकट था; हां मारमन का स्थान, मारमन का जल और, मारमन का वन उनकी दृष्टि में कितने सुहावने हैं जहां पर उनको उनके उद्धारक ने जाना; और कितने भाग्यवान हैं वे लोग, क्योंकि वे उसका यश सदैव गाएंगे।

३१. और यह सब कार्य देश की (२२) सीमा पर किया गया जिससे कि राजा को पता न लग सके।

३२. लेकिन देखो, ऐसा हुआ कि राजा को अपने लोगों में कुछ हलचल का पता लगा और उन पर दृष्टि रखने के लिए उसने अपने नौकरों को भेजा। इस कारण जिस दिन वे प्रभु की वाणी को सुनने के लिए एकत्रित हो रहे थे तब राजा को उनका पता लग गया।

३३. और तब राजा ने कहा कि अलमा लोगों को मेरे विरुद्ध विद्रोह करने के लिए भड़का रहा है; इस कारण उनको नष्ट करने के लिए उसने अपनी सेना को भेजा।

३४. और ऐसा हुआ कि राजा की सेना के आने की (२३) सूचना अलमा और प्रभु के लोगों को लग गयी; इसलिए वे अपने तम्बुओं को उखाड़ कर और अपने अपने परिवारों को लेकर वन में चले गए।

३५. उन लोगों की संख्या चार सौ पचास थी।

अध्याय १९

असफल खोज—गिडियन का विद्रोह—लमनायटियों का आक्रमण—राजा नूह का अग्नि द्वारा मृत्यु-यातना सहना—उसके पुत्र लिमही का अधीनस्थ राजा होना।

१. और ऐसा हुआ कि प्रभु के लोगों को खोजने में असफल होकर राजा की सेना (१) वापस लौट आई।

२. और अब देखो, राजा की सेना कम होने से छोटी हो गई थी और उसके बचे हुए लोगों में फूट पड़ गई।

३. थोड़ी संख्या के लोग राजा को धमकाते और उनमें भारी विवाद उठ खड़ा हुआ।

४. और उनमें गिडियन नाम का एक बलवान व्यक्ति था जो राजा का शत्रु था, इस कारण उसने क्रोध में अपनी तलवार खींच कर शपथ ली कि वह राजा को मार डालेगा।

५. और ऐसा हुआ कि उसने राजा से युद्ध किया; और जब राजा ने देखा कि वह उसे पराजित करने ही वाला है तब वह जान बचा कर भागा और (२) उस मीनार के ऊपर चढ़ गया जो (३) मन्दिर के निकट थी।

६. और गिडियन ने उसका पीछा किया और वह उस मीनार पर चढ़ कर राजा को मारने ही वाला था कि राजा ने अपनी दृष्टि शिमलोन (४) देश के चारों ओर दौड़ाई और देखा कि लमनायटियों की सेना सीमा के अन्दर घुस आई है।

७. और राजा ने अपनी आत्मा से दुखी होकर पुकारते हुए कहा: गिडियन, तुम मुझे छोड़ दो, क्योंकि लमनायटी हमारे ऊपर चढ़ आए हैं और वे हमें और हमारे लोगों को नष्ट कर देंगे।

८. लेकिन राजा को अपने लोगों के लिए उतनी चिन्ता नहीं थी जितनी कि उसको स्वयं अपने प्राणों के लिए थी।

९. और राजा ने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे लमनायटियों से जान बचा कर भाग जाएं और वह स्वयं उनके आगे-आगे भाग चला और वे लोग अपनी स्त्रियों और बच्चों को साथ लेकर वन में भागे।

१०. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों ने उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ कर मारना आरम्भ किया।

११. और ऐसा हुआ कि राजा ने आज्ञा दी कि सभी पुरुष अपनी (५) अपनी पत्नियों और बच्चों को छोड़ कर लमनायटियों के सामने से भाग जाएं।

१२. लेकिन बहुत से ऐसे लोग थे जो अपनी स्त्रियों और बच्चों को छोड़ कर भागने की अपेक्षा उनके साथ मर जाना अच्छा समझते थे। परन्तु दूसरे अपनी स्त्रियों और बच्चों को छोड़ कर भाग गए।

१३. और ऐसा हुआ कि जो लोग अपनी स्त्रियों और बच्चों के साथ ठहर गए थे उन्होंने अपनी

(२१) पद्य ५. (२२) पद्य ४. (२३) मू० २३:१. अध्याय १९. (१) मू० १८:३३, ३४. (२) मू० ११:१२. (३) देखो ८, २ नफी ५. (४) देखो ४, मू० १०. (५) पद्य १९, २१.

ईसा से लगभग १४५ वर्ष पूर्व

(६) सुन्दर कन्याओं के द्वारा अपने प्राणों की रक्षा करने की याचना करवाई।

१४. और ऐसा हुआ कि उनकी स्त्रियों की (७) सुन्दरता से प्रभावित होकर लमनायटियों ने उन पर दया की।

१५. इस कारण लमनायटियों ने उनके प्राण न लिए और उन्हें बन्दी बना कर (८) नफी के देश में वापस ले गए और उन्हें उस देश में बसने का अधिकार इन शर्तों पर दिया कि वे राजा नूह को लमनायटियों के हाथों में दे देंगे और उनके पास जो कुछ सम्पत्ति है उसका (९) आधा, सोना, चांदी और अन्य मूल्यवान वस्तुओं का आधा भाग उन्हें देंगे, और इस प्रकार वे लमनायटियों के राजा को हर वर्ष कर देते रहेंगे।

१६. जिन लोगों को बन्दी बना कर ले जाया गया था उनमें राजा के पुत्रों में से एक था जिस का नाम (१०) लिमही था।

१७. लिमही की इच्छा थी कि उसके पिता को नष्ट न किया जाए। वह स्वयं अच्छा व्यक्ति था और अपने पिता के पापों को जानता था।

१८. और ऐसा हुआ कि गिडियन ने गुप्त रूप से राजा और उसके साथियों का पता लगाने के लिए लोगों को वन में भेजा। और ऐसा हुआ कि वन में उनकी भेंट राजा और उसके (११) पुरोहितों को छोड़ कर अन्य लोगों से हुई।

१९. उन लोगों ने अपने हृदयों में नफी के देश में वापस लौटने की प्रतिज्ञा की थी और निश्चय किया था कि अगर उनकी (१२) स्त्रियां, बच्चे, और (१३) उनके साथ जो रह गए थे, मारे गए होंगे, तब वे उनका बदला लेकर उन्हीं के साथ नष्ट हो जाएंगे।

२०. राजा ने उनको वापस न लौटने की आज्ञा दी, इस कारण वे उस पर क्रोधित हो उठे और उसे (१४) अग्नि द्वारा जला कर मार डाला।

२१. और वे (१५) पुरोहितों को भी पकड़ कर मार डालना चाहते थे परन्तु वे जान बचा कर भाग गए।

२२. और अब वे नफी के देश में वापस लौटने ही वाले थे, तब गिडियन के भेजे लोगों से उनकी भेंट हो गई। गिडियन के लोगों ने उनको बताया कि उनकी (१६) स्त्रियों और बच्चे का क्या हुआ; और लमनायटियों ने उनकी सभी वस्तुओं का (१७) आधा कर रूप में देने की शर्त पर उनको उस देश में बसने की अनुमति दी है।

२३. और लोगों ने गिडियन के आदमियों से बताया कि उन्होंने राजा को (१८) मार डाला है और (१९) उसके पुरोहित उनके सामने से वन के और भीतर भाग गए हैं।

२४. और ऐसा हुआ कि शिष्टाचार के पश्चात् वे आनन्द मनाते हुए नफी के देश वापस लौटे क्योंकि (२०) उनकी स्त्रियां और बच्चे मारे नहीं गए थे; और उन्होंने गिडियन से बताया कि राजा का उन्होंने (२१) क्या किया था।

२५. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों के राजा ने उनको यह शपथ दी कि उसके लोग उनका वध नहीं करेंगे।

२६. और राजा के पुत्र होने के कारण लोगों ने लिमही को राज्य दिया और उसने भी लमनायटियों के राजा को यह शपथ दी कि उसके लोगों के पास जो कुछ भी होगा उसका (२२) आधा भाग वे कर स्वरूप उसे देंगे।

२७. और ऐसा हुआ कि लिमही राज्य की स्थापना और अपने लोगों में शान्ति स्थापना करने लगा।

२८. और लमनायटियों के राजा ने उसके देश के चारों ओर (२३) प्रहरी नियुक्त किया जिससे कि वह लिमही के लोगों को उस देश के अन्दर ही रख सके और वे वन में न जा सकें; और

(६) पद्य १४. (७) पद्य १३. (८) देखो २, २ नफी ५. (९) देखो ११, मू० ९. (१०) देखो ८, मू० ७. (११) देखो ६, मू० ११. (१२) पद्य ११-१२. (१३) पद्य १२. (१४) मू० १२:३, १०-१२. (१५) देखो ६, मू० ११. (१६) पद्य १४, १५. (१७) देखो ११, मू० ९. (१८) पद्य २०. (१९) देखो ६, मू० ११. (२०) पद्य १४, १५, १६, २२. (२१) पद्य २०, २३. (२२) देखो ११, मू० ९. (२३) मू० २१:५. २२:६-१०.

नफायटियों से जो कर (२४) वह प्राप्त करता था, उसी में से उन प्रहरियों का वेतन भुगतान करता था।

२६. और तब दो वर्षों तक राजा लिमही ने अपने राज्य में शान्ति बनाए रखी और लमनायटियों ने उनको न तो कष्ट ही दिया और न उनको नष्ट करने की चेष्टा ही की।

अध्याय २०

राजा नूह के पुरोहितों द्वारा लमनायटियों की कन्याओं का हरण—लमनायटियों का, राजा लिमही और उसके लोगों से इसका बदला लेने का प्रयास करना—उनका पीछे हटाया जाना और शान्त करना।

१. (१) शिमलोन में एक स्थान था जहां पर लमनायटियों की लड़कियां गाने, नाचने और आनन्द मनाने के लिए एक साथ एकत्रित होती थीं।

२. और ऐसा हुआ कि एक दिन गाने और नाचने के लिए कम संख्या में लड़कियां एकत्रित हुईं।

३. और राजा नूह के (२) पुरोहित (३) नफी के शहर में वापस लौटने से लजाते थे और उन्हें यह भय भी था कि लोग (४) उनको मार डालेंगे, इस कारण अपनी स्त्रियों और बच्चों के पास लौटने का साहस नहीं किया।

४. वे वन में ही रह गए, और लमनायटियों की कन्याओं के विषय में पता लगने पर वे उनकी ताक में उन पर निगाह रखे हुए थे।

५. और जब थोड़ी संख्या में लड़कियां नृत्य करने के लिए आईं तब वे अपने गुप्त स्थानों से निकल निकल कर आए और उन्हें पकड़ कर वन में चले गए; हां वे लमनायटियों की चौबीस (५) कन्याओं को वन में हरण कर ले गए।

६. और जब लमनायटियों को पता लगा कि उनकी कन्यायें खो गई हैं तब वे लिमही के लोगों पर क्रोधित हो उठे, क्योंकि उन्होंने सोचा कि यह काम लिमही के लोगों का ही है।

७. इस कारण उन्होंने अपनी सेना को भेजा, हां, यहां तक कि राजा स्वयं अपने लोगों के आगे हुआ; और वे नफी के देश में लिमही के लोगों को नष्ट करने के लिए पहुंचे।

८. लिमही (६) मीनार पर से उनको और उनकी सारी युद्ध की तैयारियों को जान चुका था; इसलिए उसने अपने लोगों को एकत्रित करके उन्हें खेतों और वनों में छुपा दिया।

९. और ऐसा हुआ कि जब लमनायटी आए तब लिमही के लोग अपने छुपे स्थानों पर से उन पर टूट पड़े और उन्हें मारने लगे।

१०. और ऐसा हुआ कि युद्ध बहुत ही भयंकर हुआ क्योंकि अपने शत्रु को मारने के लिए योद्धा सिंह के समान लड़ रहे थे।

११. और ऐसा हुआ कि लिमही के लोग लमनायटियों को खदेड़ने लगे यद्यपि उनकी संख्या लमनायटियों की आधी भी नहीं थी। लेकिन वे अपने प्राणों के लिए, अपनी स्त्रियों के लिए और अपने बच्चों के लिए युद्ध कर रहे थे; इस कारण वे अत्यन्त ही साहस के साथ अजगरों की तरह लड़ रहे थे।

१२. और ऐसा हुआ कि उन्होंने उनके मृतकों में लमनायटियों के राजा को भी पाया, परन्तु वह मरा नहीं था, केवल घायल होकर धरती पर गिर पड़ा था और उसके लोग उसे छोड़ गए थे क्योंकि वे बहुत शीघ्रता के साथ भागे थे।

१३. वे उसके घावों पर पट्टी बांध कर लिमही के पास लाए और उससे बोले: देखो, यह लमनायटियों का राजा है; यह एक चोट के कारण अपने मृतकों में गिर पड़ा था और इसके लोग इसे छोड़ कर भाग गए थे, और देखो हम इसे आपके सामने लाए हैं; और आओ, अब हम इसे मार डालें।

१४. लेकिन लिमही ने उनसे कहा: तुम उसे मारो मत परन्तु उसे मेरे निकट लाओ जिससे मैं उसे देख सकूं। और वे उसे उसके पास ले गए। और लिमही ने उससे कहा, मेरे लोगों के विरुद्ध युद्ध करने का तुम्हारे पास क्या कारण है? देखो, जो

(२४) देखो ११, मू० ६. अध्याय २०. (१) देखो ४, मू० १०. (२) देखो ६, मू० ११. (३) देखो २, २ नफी ५. (४) मू० १६:२१. (५) पद्य ६, ७, १५, २३. मू० २३:३०-३५. (६) मू० ११:१२. ईसा से १४५ से १२३ वर्षों पूर्व के मध्य

शपथ मैंने ली है वह मेरे लोगों ने (७) भंग नहीं की है; इसलिए जो शपथ तुमने मेरे लोगों को दी है, उसे तुमने क्यों भंग किया?

१५. और तब राजा ने कहा: मैंने अपनी शपथ इसलिए तोड़ी है क्योंकि तुम्हारे लोगों ने (८) मेरे लोगों की कन्याओं का हरण किया है; इस कारण क्रोध में मैं अपने लोगों को तुम्हारे लोगों के ऊपर युद्ध करने के लिए लाया।

१६. इस विषय पर लिमही ने कुछ सुना नहीं था; इसलिए उसने कहा: मैं अपने लोगों में खोज करूंगा और जिसने यह किया होगा उसे नष्ट कर दिया जाएगा। और उसने अपने लोगों में खोज करवाई।

१७. और जब गिड़ियन ने यह बात सुनी तब राजा का सेनाध्यक्ष होने के कारण वह राजा से जाकर बोला: मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि धैर्य रखो, और इन लोगों में मत ढूंढो और इन पर इसका दोष मत लगाओ।

१८. क्या तुमने अपने पिता के (९) पुरोहितों को भूल गए जिनको नष्ट करने के लिए ये लोग ढूंढ रहे थे? और क्या वे वन में नहीं हैं? क्या उन्होंने लमनायटियों की (१०) कन्याओं को नहीं चुराया है?

१९. और अब, देखो, राजा को यह बताओ जिससे वह अपने लोगों को यह बता कर उन्हें शान्त कर दें; क्योंकि देखो, वे हमारे विरुद्ध आने की तैयारी करने लगे हैं; और संख्या में हम बहुत कम हैं।

२०. और देखो, वे बहुत अधिक संख्या में आ रहे हैं, और अगर राजा ने उन्हें शान्त नहीं किया, तब हम नष्ट हो जाएंगे।

२१. क्योंकि क्या अभिनन्दी के वे शब्द सत्य सिद्ध (११) नहीं हुए जिन्हें उसने हमारे विरुद्ध भविष्यवाणी करते हुए कहा था—यह सब कुछ प्रभु की वाणी न सुनने और अपने पापों से विमुख न होने के कारण होगा?

२२. और अब हम राजा को शान्त करें और उसके साथ की गई अपनी (१२) प्रतिज्ञा को पूरी करें; क्योंकि अपने प्राणों को खोने से अच्छा है कि हम दास बन कर रहें; इसलिए इतना रक्त बहाना हम रोक दें।

२३. और तब लिमही ने राजा से अपने पिता और उसके उन (१३) पुरोहितों के विषय में सारी बातें बताईं जो जंगली प्रदेश में भाग गए थे और उनकी (१४) कन्याओं के हरण का दोष उन्हीं पर पर लगाया।

२४. और ऐसा हुआ कि राजा उसके लोगों के प्रति शान्त हुआ, और वह उनसे बोला: चलो, निरस्त्र होकर मेरे लोगों से मिलने चलो; और मैं शपथ ले कर प्रतिज्ञा करता हूं कि मेरे लोग तुम्हारे लोगों को मारेंगे नहीं।

२५. और ऐसा हुआ कि वे लमनायटियों से मिलने के लिए निरस्त्र होकर राजा के पीछे गए; और वे लमनायटियों से मिले और लमनायटियों के राजा ने अपने लोगों के सामने नीचे झुक कर लिमही के लोगों की ओर से अभय दान की याचना की।

२६. और जब लमनायटियों ने लिमही के लोगों को निरस्त्र देखा तब उन पर उन्हें दया आ गई और वे शान्त हो गए और राजा के साथ अपने देश को लौट गए।

अध्याय २१

अभिनन्दी की और भविष्यवाणी का पूरा होना—दासता में नफी के लोगों का भारी कष्ट झेलना—प्रभु द्वारा उनके शत्रुओं के हृदयों को कोमल करना—चौबीस पटियों की और बातें।

१. और ऐसा हुआ कि लिमही और उसके लोग नफी के नगर में वापस लौट आए और शान्ति के साथ रहने लगे।

२. कुछ दिनों के पश्चात लमनायटी पुनः नफायटियों के विरुद्ध क्रोध से अशान्त हो उठे और चारों ओर से सीमा के अन्दर घुसने लगे।

३. परन्तु वे अपने राजा द्वारा लिमही से की गई (१) शपथ के कारण लोगों को मारने

(७) मू० १९:२५, २६. (८) पद्य १-६. (९) देखो ६, मू० ११. (१०) पद्य ५. (११) मू० १२:१-८. (१२) मू० १९:२६. (१३) देखो ६, मू० ११. (१४) पद्य ५. अध्याय २१. (१) मू० १९:२५. ईसा से १४५ से १२३ वर्ष के मध्य

का साहस न कर पाये; लेकिन वे उसके (२) गालों पर थप्पड़ मारते; और उनकी पीठ पर (३) भारी भारी बोझ रख कर उनको (४) मूक गधों की तरह हांकते।

४. हां, यह सब इसलिए कि जिससे प्रभु की वाणी सत्य (५) सिद्ध ठहरे।

५. इस समय नफायटियों को बहुत बड़ा कष्ट भोगना पड़ रहा था और उनके हाथों से उन्हें बचने का कोई भी उपाय नहीं था, क्योंकि लमनायटी उन्हें (६) चारों ओर से घेरे हुए थे।

६. और ऐसा हुआ कि अपने दुखों के कारण लोग अपने राजा से असन्तोष प्रकट करने लगे; और उनकी इच्छा अपने शत्रुओं से लड़ने की हुई। और उन्होंने अपने राजा को अपनी शिकायतों से भारी कष्ट दिया, इसलिए उसने आज्ञा दे दी कि वे अपनी इच्छानुसार कार्य करें।

७. और वे पुनः एकत्रित हुए और कवच से सुसज्जित होकर लमनायटियों को अपने देश से बाहर भगाने के लिए गए।

८. और ऐसा हुआ कि लमनायटी ने उनको पराजित करके पीछे भगा दिया और बहुतों को मार डाला।

९. और तब लिमही के लोगों में भारी रोना-पीटना मचा; विधवायें अपने पतियों के लिए रो रही थीं, लड़के, और लड़कियां अपने पिताओं के लिए रो रही थीं, और भाई भाई के लिए रो रहे थे।

१०. इस समय देश में बहुत विधवायें हो गई थीं और वे दिन प्रतिदिन घोर विलाप कर रही थीं क्योंकि उनके ऊपर लमनायटियों का बहुत बड़ा भय छा गया था।

११. और ऐसा हुआ कि उनके लगातार रुदन से लिमही के शेष लोगों में लमनायटियों के विरुद्ध क्रोध हुआ और वे अशान्त हो उठे; और वे फिर युद्ध के लिए गए परन्तु फिर भारी हानि के साथ उन्हें पीछे भगा दिया गया।

१२. वे पुनः तीसरी बार गए परन्तु उन्हें फिर उसी प्रकार पराजित होना पड़ा; और जो बचे, वे नफी के नगर में वापिस लौट आए।

१३. और उन्होंने अपने आप को धूल के समान दीन बना लिया और दासता का (७) जुआ लाद कर मार खाने, इधर उधर हांके जाने और अपने शत्रुओं की इच्छानुसार बोझ ढोने लगे।

१४. वे अत्यन्त ही विनीत होकर नम्र हो गए, और उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से परमेश्वर को पुकारा, हां अपने कष्टों के निवारण के लिए वे सारा दिन अपने परमेश्वर को पुकारते रहे।

१५. परन्तु उनके पापों के कारण परमेश्वर उनकी पुकार को सुनने में (८) बिलम्ब कर रहा था; फिर भी प्रभु ने उनकी पुकार को सुना और लमनायटियों के हृदयों को वह कोमल करने लगा जिससे वे उनके भार को हलका करने लगे; परन्तु फिर भी प्रभु ने उनको उस समय दासता से मुक्त करना उचित नहीं समझा।

१६. और ऐसा हुआ कि वे धीरे धीरे उस देश में उन्नति करने लगे; अनाज अधिक उत्पन्न होने लगा और उनके पशु पक्षी भी बढ़ने लगे, जिससे वे भूख से भी अब पीड़ित नहीं रहते।

१७. इस समय वहां नारियों की (९) बाहुल्यता थी, वे पुरुषों से अधिक संख्या में थी; इस कारण लिमही ने आज्ञा दी कि (१०) हर एक पुरुष विधवाओं और उनके बच्चों की जीविका के लिए उन्हें दान दें जिससे कि वे भूख से मरें नहीं; उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि पुरुष बड़ी संख्या में मारे गए थे।

१८. और अब लिमही के लोग जहां तक हो सकता था एक साथ संगठित होकर दल में रहते और अपने अनाज और पशु की रक्षा करते।

१९. और राजा नगर की दीवाल के बाहर (११) बिना अपने अंगरक्षकों के स्वयं अपने आपको सुरक्षित नहीं समझता था, क्योंकि उसे भय था कि कहीं वह किसी तरह लमनायटियों के हाथों में न पड़ जाए।

२०. उसने लोगों को बताया कि वे देश के

(२) मू० १२:२. (३) पद्य १३. मू० १२:५. (४) पद्य १३. मू० १२:५. (५) मू० १२:२-७. २०:२१. (६) देखो २३, मू० १९. (७) मू० १२:२-८. (८) मू० ११:२४, २५. (९) पद्य १०:११. (१०) देखो १०, या० २. (११) मू ७:७, १०.

चारों ओर निगरानी रखें जिससे कि वे उन (१२) पुरोहितों को किसी तरह से पकड़ लें जो वन में भाग गए थे, और जिन्होंने लमनायटियों की (१३) कन्याओं का हरण किया था और जिसके कारण उनका इतना विनाश हुआ था।

२१. वे उन्हें पकड़ कर (१४) दण्ड देने के लिए इसलिए भी इच्छुक थे; क्योंकि वे रात को आते और उनके अनाज और बहुत सी मूल्यवान वस्तुओं को लेकर चले जाते थे; इसलिए वे उनकी प्रतीक्षा में थे।

२२. और ऐसा हुआ कि तब से लमनायटियों और लिमही* के लोगों के मध्य आमोन और उसके भाइयों के देश में आने के (१५) समय तक कोई झंझट नहीं हुआ।

२३. और जब राजा अपने अंग-रक्षकों के साथ नगर के द्वार के बाहर था तब उसने आमोन और उसके भाइयों को पाया था और उन्हें नूह के पुरोहित समझकर पकड़वा कर बंधवा लिया और उन्हें बन्दीगृह में डलवा दिया। अगर वे नूह के पुरोहित होते, तब वह उन्हें मरवा डालता।

२४. लेकिन जब उसे पता लगा कि वे उसके पुरोहित नहीं थे, परन्तु उसके भाई थे (१६) जो ज़राहेमला देश से आए थे तब वह (१७) अति आनन्द से हर्षित हो उठा।

२५. आमोन के आने से पहिले राजा लिमही ने (१८) कुछ लोगों को ज़राहेमला देश खोजने को भेजा था, लेकिन वे असफल होकर वन में (१९) भटक गए थे।

२६. फिर भी, उन्होंने एक ऐसा देश पाया था जो कभी आबाद था और (२०) जहां सूखी हुई हड्डियां बिखरी पड़ी थीं; हां, वह देश जहां मनुष्य बसे थे और जो नष्ट हो चुका था, उस देश को (२१) वे ज़राहेमला समझ कर नफी के देश की सीमा के अन्दर (२२) आमोन के आने से कुछ ही दिन पूर्व पहुंचे थे।

२७. और वे अपने साथ उन लोगों का (२३) एक अभिलेख लाए जिनकी हड्डियां वहां बिखरी पड़ी थीं; और यह अभिलेख धातु की पटियों पर खुदा हुआ था।

२८. और लिमही आमोन के मुख से यह जान कर प्रसन्नता से भर उठा कि राजा मूसायाह को परमेश्वर की (२४) देन है जिसके द्वारा वह इस प्रकार की खुदी लिपियों का अनुवाद कर सकता है; और आमोन भी आनन्दित हुआ।

२९. आमोन और उसके भाइयों को इसलिए दुख हुआ क्योंकि उसके बहुत से भाई मारे गए थे।

३०. और राजा नूह (२५) और उसके पुरोहितों ने जो पाप और परमेश्वर के विरुद्ध कार्य लोगों से करवाए थे, उनसे भी उनको दुख हुआ; और उन्होंने अभिनन्दी (२६) के मरने का भी शोक मनाया; और उन्हें (२७) अलमा और उसके लोगों के चले जाने का भी दुख हुआ, जिन्होंने परमेश्वर के गिरजा की स्थापना परमेश्वर की शक्ति और अभिनन्दी द्वारा कही गई बातों पर विश्वास करने के कारण की थी।

३१. हां, उनके जाने का शोक मनाया क्योंकि उनको पता नहीं था कि वे किधर भाग गए थे। वे प्रसन्नता के साथ उनके साथ सम्मिलित हो गए होते, क्योंकि उन्होंने भी परमेश्वर के साथ अनुबंध किया था कि वे उसकी सेवा करेंगे और उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

३२. और आमोन के आने के समय से राजा लिमही और उसके बहुत से लोग भी परमेश्वर की सेवा करने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए परमेश्वर के साथ अनुबंधित हुए थे।

३३. और ऐसा हुआ कि राजा लिमही और उसके बहुत से लोग बपतिस्मा लेने के इच्छुक हुए; लेकिन देश में परमेश्वर की ओर से (२८) अधिकार प्राप्त बपतिस्मा देने वाला कोई न था और आमोन ने अपने आप को अयोग्य सेवक समझ कर बपतिस्मा देना स्वीकार नहीं किया।

(१२) देखो ६, मू० ११ (१३) मू० २०:५. (१४) पद्य २३. मू० ७:७-११. (१५) मू० ७:६-१३. (१६) ओ० १३. (१७) मू० ७:१४. (१८) मू० ८:७. (१९) मू० ८:८. (२०) मू० ८:७-११. (२१) मू० ८:७, ८. (२२) मू० ७:६-११. (२३) देखो ११, मू० ८. (२४) देखो १४, मू० ८. (२५) देखो ६, मू० ११. (२६) मू० १७:१२-२०. (२७) मू० १८:३४; ३५. (२८) मू० १८:१३, १७. ३ नफी ११:२५. निर्ग० २८:१. इब्रा० ५:४.

ईसा से लगभग १२२ वर्ष पूर्व

३४. इस कारण वे प्रभु की पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा कर रहे थे और इस समय उन्होंने कोई गिरजा की स्थापना नहीं की। वे अलमा और उसके उन भाइयों की तरह बनने के इच्छुक थे जो कि वन में भाग गए थे।

३५. वे (३०) बपतिस्मा लेने के इच्छुक इसलिए थे कि यह इस बात का साक्षी और प्रमाण हो कि वे परमेश्वर की सेवा अपने हृदय से करना चाहते थे। फिर भी वे समय की प्रतीक्षा करते रहे; और उनके बपतिस्मा लेने का विवरण (३१) आगे दिया जाएगा।

३६. आमोन और (३२) उसके लोगों का, और राजा लिमही और उसके लोगों का सारा प्रयत्न लमनायटियों के हाथों और (३३) दासता से निकलने का था।

अध्याय २२

लमनायटियों के जुआ को उतार फेंकने की योजना—गिडियन की राय—लमनायटियों को नशे में किया जाना—बन्दी लोगों का भागना और वापस ज़राहेमला लौटना—ज़नीफ के लेखा का अन्त।

१. ऐसा हुआ कि आमोन और राजा लिमही लोगों से सलाह करने लगे कि दासता में से किस प्रकार वे निकल सकते हैं; इस उद्देश्य से उन्होंने सब लोगों को एकत्रित किया जिससे कि इस विषय पर वे लोगों के विचार जान सकें।

२. उनको केवल अपनी स्त्रियों, बच्चों, पशु-पक्षियों, और तम्बुओं को लेकर वन में चले जाने के अलावा अन्य कोई उपाय सूझ नहीं रहा था; क्योंकि लमनायटी इतनी अधिक संख्या में थे कि उनसे विवाद करके तलवार के बल पर दासता से मुक्त होना सम्भव नहीं था।

३. तब ऐसा हुआ कि (१) गिडियन उठ कर खड़ा हुआ और राजा के सामने आकर बोला: हे राजा, जब हमारे भाई लमनायटियों से हमारा विवाद चल रहा था तब तुमने अनेकों बार मेरी बातों को सुना था।

४. और अब, हे राजा, अगर आपने, मुझ-अपने सेवक को बेकार नहीं पाया है, आपने अब तक मेरी बातों पर कुछ ध्यान दिया है और उनसे (२) कोई लाभ पहुंचा है तब मैं चाहता हूं कि इस समय भी आप उसी तरह मेरी बातों को सुनें, और मैं आपका सेवक बन कर इन लोगों को दासता में से निकाल लाऊंगा।

५. और राजा ने उसे बोलने की अनुमति दे दी। तब गिडियन ने कहा:

६. शहर के (३) पिछले रास्ते की ओर देखो जो पीछे की दीवाल से होकर गया है। रात को लमनायटी प्रहरी नशे में होते हैं; इसलिए हम अपने लोगों में घोषणा करें कि वे अपने पशु-पक्षियों को एकत्रित कर लें जिससे कि वे रात को उन्हें वन में हांक ले जाएं।

७. और आप की आज्ञानुसार मैं जाकर उनको शराब की (४) अन्तिम भेंट दूंगा और वे (५) नशे में हो जाएंगे, और जब वे नशे में होकर सो जाएंगे तब हम पड़ाव के बांये ओर की (६) गुप्त राह से निकल जायेंगे।

८. इस प्रकार हम अपने स्त्री और बच्चों, पशु और पक्षियों के साथ वन में चले जाएंगे और (७) शिलोम देश के समीप से होकर आगे बढ़ेंगे।

९. और ऐसा हुआ कि राजा ने गिडियन की बातों को सुना।

१०. और राजा लिमही ने लोगों से उनके पशु पक्षियों को एकत्रित करवाया; और (८) उसने कर के रूप में दी जाने वाली शराब लमनायटियों को भिजवाई; उसने उपहार के रूप में भी और मदिरा भिजवायी; और जो मदिरा राजा लिमही ने भिजवायी थी, उसको उन्होंने (९) खूब छक कर पिया।

११. और ऐसा हुआ कि राजा लिमही के लोग अपने पशु-पक्षियों को लेकर रात में (१०) शिलोम देश की सीमा के निकट से होकर जंगली प्रदेश में चले गए जहां से वे (११) ज़राहेमला देश की ओर

(२९) पद्य ३५. (३०) देखो २१, २ नफी ९. (३१) मू० २५:१७, १८. (३२) मू० ७:२, ३. (३३) मू० २१:१३. अध्याय २२. (१) मू० २०:१७. अल० २:८, ९. (२) मू० २०:१७-२२. (३) पद्य ७. (४) मू० १९:२६. (५) पद्य ६-१०. (६) पद्य ६. (७) पद्य ११, देखो मू० ७. (८) पद्य ७. (९) पद्य ६, ७. (१०) पद्य ८, देखो ६, मू० ७. (११) ओ० १३.

आमोन और (१२) उनके भाइयों के नेतृत्व में मुड़ कर आगे बढ़े।

१२. और वे अपना सब सोना, चांदी और जिन मूल्यवान वस्तुओं को ढो सकते थे, उन्हें और खाने पीने की सामग्रियों को लेकर, जंगली प्रदेश में गए और अपनी यात्रा पर आगे बढ़ चले।

१३. कई दिनों तक वन-प्रदेश से होकर यात्रा करने के पश्चात् वे (१३) ज़राहेमला देश में पहुंचे और मूसायाह के लोगों में मिल कर उसकी प्रजा बन गए।

१४. और ऐसा हुआ कि मूसायाह ने उनको प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया और उसने (१४) उनके और लिमही के लोगों द्वारा पाये गए अभिलेखों (१५) को भी स्वीकार किया।

१५. और ऐसा हुआ कि जब लमनायटियों को पता लगा कि लिमही के लोग रात को देश से निकल कर वन में चले गए हैं तब उनको पकड़ने के लिए उन्होंने एक (१६) सेना भेजी।

१६. और दो दिनों तक उनका पीछा करने के पश्चात् वे उनके पद का अनुसरण न कर सके; इस कारण वे वन में (१७) भटक गए।

अध्याय २३ और २४ में अलमा और प्रभु के उन लोगों का अभिलेख जो राजा नूह के लोगों द्वारा वन में भगाए थे।

अध्याय २३

अलमा का राजा बनने से इनकार करना—हिलम के देश पर लमनायटियों का अधिकार करना—लमनायटी सम्राट के अधीन राजा नूह के दुष्ट पुरोहितों के मुखिया अमुलोन का शासन करना।

१. अलमा को (१) प्रभु द्वारा यह चेतावनी मिलने पर कि (२) नूह की सेना उस पर आक्रमण करेगी उसने इस बात की जानकारी अपने लोगों से कराई, जिससे कि वे अपने पशु-पक्षियों को एकत्रित करके, अपने अनाज को लेकर, राजा नूह की सेना के आने से पहिले ही वन में चले गए।

२. प्रभु ने उनको बलवान बना दिया, जिसके कारण राजा नूह के लोग उन्हें नष्ट करने के लिए पकड़ नहीं पाए।

३. और वे आठ दिनों तक भागते रहे।

४. तब वे एक अति सुन्दर, आनन्दमय निर्मल जल वाले स्थान पर पहुंचे।

५. यहां उन्होंने अपने तम्बुओं को लगाया और मकान बनाने लगे; वे परिश्रमी थे और उन्होंने बहुत परिश्रम किया।

६. और लोगों की इच्छा थी कि अलमा उनका राजा बने क्योंकि वह लोगों का प्रिय था।

७. लेकिन उसने उनसे कहा : देखो, हमें राजा की आवश्यकता नहीं, क्योंकि प्रभु इस प्रकार कह रहा है : तुम किसी (४) एक दूसरे से अधिक मत समझो या किसी एक व्यक्ति को अपने आपको दूसरों से अधिक नहीं समझना चाहिए; इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हें राजा की आवश्यकता नहीं।

८. फिर भी अगर यह सम्भव होता कि तुम्हारे राजा सदैव धार्मिक व्यक्ति ही हुआ करते, तब तुम्हारे लिए राजा का होना ठीक होता।

९. लेकिन राजा नूह और उसके पुरोहितों के (५) पापों को याद रखो; और मैंने स्वयं (६) जाल में फंस कर ऐसे बहुत से कार्य किए थे जो प्रभु की दृष्टि में घृणित थे, जिसके कारण मुझे (७) घोर पश्चात्ताप करना पड़ा।

१०. फिर भी, भारी दु:ख झेलने के पश्चात्, प्रभु ने मेरी पुकारों को सुना और मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और उसने मुझे अपने हाथों का साधन बना कर (८) तुम सबको अपनी सच्चाई से अवगत कराया।

११. फिर भी इस में मैं अपना यश नहीं मानता क्योंकि मैं यश के योग्य नहीं हूं।

१२. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि तुम

(१२) मू० ७:२, ३. (१३) ओ० १३. (१४) जनीफ का लेखा मू० ९. (१५) देखो ११, मू० ८. (१६) मू० २३:३०-३९. (१७) मू० २३:३०, ३६, ३७. अध्याय २३. (१) मू० १८:३४, ३५. (२) मू० १८:३३, ३४. १९:१. (४) पद्य ८-१५. मू० १८:२१-२९. २७:३-५. देखो १०, या० २. (५) मू० ११:१-१५. (६) मू० १७:१-४. २४:८-१२. (७) मू० १८:१. (८) मू० १८:३५.

ईसा से पूर्व १४५ से १२३ के मध्य

राजा नूह द्वारा सताए गए थे, और तुम उसके और उसके पुरोहितों की (९) दासता में थे और उन्हीं के द्वारा तुम पाप में लाए गए; इस कारण तुम पापों की रस्सियों से बांधे गए थे।

१३. और जबकि इन बन्धनों से तुम्हें परमेश्वर की शक्ति के द्वारा मुक्त किया गया है और राजा (१०) नूह और उसके पुरोहितों के हाथों से निकाला गया है और पापों के बन्धनों से स्वतन्त्र किया गया है, तब मैं चाहता हूं कि जिस स्वतन्त्रता में तुम्हें मुक्त किया गया है उसमें तुम दृढ़ रहो और अपने ऊपर (११) राजा बनाने के लिए किसी व्यक्ति का विश्वास मत करो।

१४. और भी किसी व्यक्ति का अपने (१२) शिक्षक या उपदेशक होने के लिए विश्वास मत करो, सिवाए परमेश्वर के व्यक्ति के, जो उसकी राह पर चलता है और जो उसकी आज्ञाओं का पालन करता है।

१५. अलमा ने इस प्रकार अपने लोगों को शिक्षा दी कि हर एक व्यक्ति अपने पड़ोसियों से वैसा ही प्रेम करे (१३) जैसा कि वह स्वयं अपने आपसे प्रेम करता है, और उन लोगों में किसी प्रकार का विवाद भी नहीं होना चाहिए।

१६. और उनके गिरजा की स्थापना करने के कारण अलमा उनका (१४) मुख्य पुरोहित था।

१७. और ऐसा हुआ कि बिना परमेश्वर से अधिकार प्राप्त किए, किसी को भी उपदेश या शिक्षा देने की आज्ञा नहीं दी गई थी। इसलिए उसने उनके सभी पुरोहित और शिक्षकों को प्रतिष्ठित किया; और न्यायी लोगों को छोड़ कर किसी अन्य को प्रतिष्ठित भी नहीं किया गया।

१८. इस कारण वे अपने लोगों की देखभाल करते रहे और उन्हें धर्म का ज्ञान कराते रहे।

१९. और ऐसा हुआ कि वे उस देश में बड़ी प्रगति करने लगे और उन्होंने उस देश का नाम (१५) हिलम रखा।

२०. और हिलम देश में उनकी जनसंख्या में भारी वृद्धि हुई और उन्होंने बहुत उन्नति की; वहां पर उन्होंने एक शहर बसाया जिसका नाम हिलम का शहर दिया।

२१. फिर भी प्रभु ने अपने लोगों को सुधारना उचित समझा; हां, उसने उनकी सहनशीलता और विश्वास की परीक्षा ली।

२२. फिर भी—जो उस पर विश्वास करते हैं, वह अन्तिम दिन (१६) उबार लिए जायेंगे। और हां, ऐसा ही इन लोगों के साथ हुआ।

२३. क्योंकि मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि उन्हें दासता में लाया गया था और इब्राहीम, इसहाक और याकूब के प्रभु को छोड़ कर दूसरा कोई भी उन्हें दासता से मुक्त नहीं कर सका।

२४. और ऐसा हुआ कि उसने ही उन्हें मुक्त किया और अपनी असीम शक्ति को भी उन्हें दिखाया और उन्होंने अत्यधिक आनन्द मनाया।

२५. क्योंकि देखो, ऐसा हुआ कि जबकि वे हिलम देश के (१७) हिलम शहर में थे और जबकि वे आस-पास की भूमि जोत रहे थे तब लमनायटियों की एक सेना सीमा पर थी।

२६. और तब ऐसा हुआ कि हिलम के भाई अपने-अपने खेतों में से भाग कर हिलम शहर में एकत्रित हुए; वे लमनायटियों को देख कर बहुत ही भयभीत हो गए थे।

२७. लेकिन अलमा उनमें जा कर खड़ा हुआ, और उसने सदुपदेश देते हुए भयभीत न होने की सम्मति दी, और कहा कि वे अपने प्रभु परमेश्वर को स्मरण करें, जो उनकी रक्षा करेगा।

२८. इस कारण वे अपने भय को शान्त करके लमनायटियों के हृदयों को कोमल करने के लिए अपने प्रभु को पुकारने लगे जिससे कि वे उनको, उनकी स्त्रियों और बच्चों को जीवन दान दें।

२९. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने लमनायटियों के हृदयों को कोमल कर दिया। और अलमा और उसके भाइयों ने जा कर अपने आपको लमनायटियों के हाथों सौंप दिया; लमनायटियों ने (१८) हिलम देश को अपने अधीन कर लिया।

३०. ऐसा हुआ कि लमनायटियों की जो

(९) मू० ११:२-१५. (१०) पद्य १-३ मू० १८:३४, ३५. (११) पद्य ६-९. मू० २९:५-३६. (१२) मू० १८:१८-२९. (१३) मू० १८:२१. ३ नफी १४:१२. (१४) मू० १८:१८. देखो ३. मू० ६. (१५) पद्य २०, २५, २६, २९, ३५, ३८, ३९. २७:१६. अल० २४:१. (१६) १ नफी १३:३७. १६:२. अल० २६:७. ३६:२८. ३८:५. ३ नफी १५:१. २७:१४, १५, २२. मा० २:१९. ए० ४:१९. यूहन्ना १२:३२. (१७) देखो १५.

सेना राजा लिमही के लोगों का पीछा कर रही थी वह (१९) कई दिनों तक वन में खोई, भटकती रही।

३१. और देखो, उन्होंने राजा नूह के (२०) उन पुरोहितों को (२१) अमुलोन नामक स्थान पर पाया जिस पर वे अधिकार करके भूमि जोतने लगे थे।

३२. उन पुरोहितों के मुखिया का नाम अमुलोन था।

३३. और ऐसा हुआ कि अमुलोन ने लमनायटियों से जीवन रक्षा के लिए विनयपूर्वक प्रार्थना की; और उसने अपनी स्त्रियों को भी उनके पास भेजा जो कि (२२) लमनायटियों की पुत्रियां थीं जिससे वे उनसे अपने पतियों को नष्ट न करने की याचना करें।

३४. और (२३) उनकी पत्नियों के कारण लमनायटियों को अमुलोन और उनके भाइयों पर दया आ गई और उन्होंने उन्हें नष्ट नहीं किया।

३५. और अमुलोन और उसके भाई लमनायटियों के साथ मिल गए और वे नफी के देश की खोज में जंगली प्रदेश से होकर यात्रा कर रहे थे जबकि उन्होंने (२४) हिलम देश को पाया जिस पर अलमा और उसके भाइयों का अधिकार था।

३६. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों ने अलमा और उसके भाइयों से यह प्रतिज्ञा की कि अगर वे उनको (२५) नफी के देश जाने वाले रास्ते को दिखा देंगे, तब वे उनके प्राणों और उनकी स्वतन्त्रता को छोड़ देंगे।

३७. परन्तु जब अलमा ने नफी के देश में जाने वाले रास्ते को दिखा दिया तब लमनायटियों ने अपनी प्रतिज्ञा को नहीं रखा; अपितु हिलम देश के चारों ओर उन्होंने अलमा और उसके भाइयों पर (२६) प्रहरी नियुक्त कर दिए।

३८. बचे हुए लमनायटी नफी के देश चले गए जिनमें से कुछ प्रहरियों की स्त्रियों और बच्चों को लेकर हिलम देश वापस लौट आए।

३९. और लमनायटियों के राजा ने (२७) अमुलोन को अपने उन लोगों पर शासन करने और राजा होने की अनुमति दे दी जो कि हिलम देश में थे फिर भी उसे लमनायटियों के राजा की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य करने का अधिकार नहीं था।

अध्याय २४

अमुलोन का अलमा और उसका अनुसरण करने वालों को कष्ट देना—प्रभु द्वारा उनके बोझों को हलका करना और दासता से मुक्त करना—उनका ज़राहेमला लौटना।

१. और ऐसा हुआ कि अमुलोन ने लमनायटियों के राजा का अनुग्रह प्राप्त किया; इस कारण लमनायटियों के राजा ने उसे और उसके भाइयों को उनके लोगों का, और (१) शिमलोन, (२) शिलोम और (३) अमुलोन में रहने वाले लोगों का (४) शिक्षक नियुक्त होने की अनुमति दे दी।

२. क्योंकि लमनायटियों ने इन सभी देशों पर अधिकार कर लिया था; इस कारण लमनायटियों के राजा ने इन सभी देशों पर शासक नियुक्त किया था।

३. इस समय लमनायटियों के राजा का नाम उसके पिता के नाम पर (५) लमान था; इस कारण वह राजा लमान कहलाता था। वह बहुत से लोगों का राजा था।

४. और उन सभी देशों में जो उसके लोगों के अधिकार में थे, उसने अमुलोन के भाइयों को (६) शिक्षक नियुक्त किया; इस तरह नफी की भाषा सारे लमनायटियों में सिखाई जाने लगी।

५. और वे ऐसे लोग थे जो एक दूसरे के साथ मित्र जैसा व्यवहार करते थे; फिर भी वे परमेश्वर को नहीं जानते थे और न तो अमुलोन के (८) भाई उन्हें उनके प्रभु परमेश्वर के विषय में ही कुछ सिखाते थे और न तो वे उनको मूसा के

(१९) मू० २२:१६. (२०) देखो ६, मू० ११. (२१) पद्य ३२, ३५, ३९. मू० २४:१, ४, ५, ८-११. २५:१२. अल० २१:२-४. २३:१४. २४:१, २८-३०. २५:४-१२. ४३:१३, १४. (२२) मू० २०:५, ६, १८. (२३) पद्य ३३. (२४) देखो १५. (२५) देखो २, २ नफी ५. (२६) पद्य ३८. (२७) देखो २१. अध्याय २४. (१) पद्य ४-६. (२) देखो ४, मू० १०. (३) देखो ६, मू० ७. (४) देखो २१, मू० २३. (५) मू० ९:१०, ११. १०:६. (६) पद्य १. (८) देखो ६, मू० ११.

ईसा से पूर्व १४५ से १२३ के मध्य

नियम की शिक्षा ही देते थे और न तो वे उन्हें अभिनन्दी के कहे वचनों को ही सिखाते थे।

६. लेकिन उन्होंने उन्हें अपना लेखा रखने की शिक्षा दी और उनको, एक दूसरे को लिखने की सलाह भी दी।

७. इस प्रकार लमनायटी धन सम्पदा में बढ़ने लगे एक दूसरे के साथ व्यापार करते और अपनी भारी उन्नति करते और धीरे-धीरे धूर्तता में चतुर और सांसारिकता में निपुण हो गए और उन्हें हर एक प्रकार के पापाचार में, और अपने जाति वालों को छोड़ कर सबको लूटने में आनन्द मिलता था।

८. और तब ऐसा हुआ कि (११) अमुलोन अलमा और उसके भाइयों पर अधिकार दिखाने लगा और उन्हें कष्ट देने लगा और अपने बच्चों से उनके बच्चों को उत्पीड़ित करने लगा।

९. क्योंकि अमुलोन जानता था कि अलमा राजा का एक (१२) पुरोहित था और यही वह व्यक्ति था जिसने अभिनन्दी के शब्दों का विश्वास किया और राजा के समक्ष से भगाया गया था, इस कारण वह उस पर क्रोधित था; यद्यपि वह राजा लमान की प्रजा था, फिर भी वह उन पर अपना अधिकार दिखाता और उनसे परिश्रम करवाता, और उनसे परिश्रम करवाने के लिए उसने लोगों को नियुक्त किया।

१०. और ऐसा हुआ कि उनको इतना अधिक दुःख हुआ कि वे परमेश्वर को बहुत अधिक पुकारने लगे।

११. और अमुलोन ने उन्हें आज्ञा दी कि वे पुकारना बन्द करें, और उन पर निगरानी रखने के लिए उसने प्रहरियों को नियुक्त किया कि जिससे जो परमेश्वर को पुकारता हुआ पकड़ा जाए उसको मार डाला जाए।

१२. और अलमा और उसके लोग अपने प्रभु परमेश्वर को पुकारने के लिए शब्द नहीं निकाल सके परन्तु उन्होंने अपने हृदयों को उसके सामने खोल दिया; और उसे उनके हृदयों की बातें मालूम थीं।

१३. और ऐसा हुआ कि उनके कष्टों के बीच प्रभु की वाणी यह कहते हुए उन्हें सुनाई दी, अपने सिरों को ऊपर उठाओ और सान्त्वना ग्रहण करो, क्योंकि तुमने जो प्रतिज्ञा मुझसे की है वह मैं जानता हूं; और मैं अपने लोगों से अनुबंध करूंगा, और उन्हें दासता से मुक्त करूंगा।

१४. और तुम्हारे ऊपर जो बोझ (१३) लादा जाता है उसे मैं हल्का करूंगा जिससे तुम्हें उनका वजन दासता में होते हुए भी मालूम नहीं पड़ेगा; और यह मैं इसलिए करूंगा कि तुम इस समय से मेरे लिए साक्षी बन कर खड़े हो सको और तुम यह निश्चयपूर्वक जानो कि मैं प्रभु परमेश्वर कष्ट के समय अपने लोगों में आता हूं।

१५. और जो बोझ अलमा और उसके भाइयों के ऊपर लादा जाता था वह अब (१४) हल्का हो गया; क्योंकि प्रभु ने उनको बलवान कर दिया जिससे वे अपने बोझों को सरलता के साथ ढो सकें, और उन्होंने प्रसन्नता और सहनशीलता के साथ प्रभु की सभी इच्छाओं को स्वीकार किया।

१६. और ऐसा हुआ कि उनका विश्वास और सहनशीलता इतनी महान थी कि प्रभु की वाणी उनको पुनः सुनाई दी जो उनसे बोली: तुम शान्ति ग्रहण करो, क्योंकि कल तुमको मैं दासता से मुक्त करूंगा।

१७. और उसने अलमा से कहा: तुम इन लोगों के आगे-आगे चलना और मैं तुम्हारे साथ चल कर इन लोगों को (१५) मुक्त करूंगा।

१८. और ऐसा हुआ कि अलमा और उसके लोगों ने रात को अपने पशु-पक्षियों और अनाज को एकत्रित किया; हां, वे रात भर अपने पशु-पक्षियों को एकत्रित करते रहे।

१९. और सुबह प्रभु ने लमनायटियों को (१६) गहरी नींद में सुला दिया, और उनसे काम लेने वाले भी गहरी नींद में सो गए।

२०. और अलमा और उसके लोग वन में चले गए; और पूरे एक दिन की यात्रा करके एक घाटी में उन्होंने तम्बू लगाया और उस घाटी को अलमा नाम दिया क्योंकि उसने वन में उनको राह दिखायी थी।

२१. और अलमा की घाटी में उन्होंने प्रभु

(११) मू० २३:३२. (१२) मू० १७:२-४. (१३) पद्य ९:१५. (१४) पद्य ६, १४. (१५) पद्य १३, २१. मू० २५:१०. २७:१६. अल० ५:५, ६. २९:११, १२. ३६:२, २९. (१६) पद्य २३..

के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रकट किया क्योंकि वह उनके प्रति दयावान था और उसने उनके बोझों को हलका कर दिया था और उन्हें (१७) दासता में से निकाल लाया था; क्योंकि जब वे दासता में थे तब प्रभु को छोड़ कर उन्हें कोई दूसरा मुक्त न कर सका था।

२२. और उनके सभी पुरुष, उनकी सभी स्त्रियों और बच्चे जो अपने प्रभु के गुण-गान करने में आवाज़ निकाल सकते थे, उन सबों ने परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

२३. और तब प्रभु ने अलमा से कहा: तुम शीघ्रता से अपने लोगों को इस स्थान से निकाल ले जाओ क्योंकि लमनायटी (१८) जाग गए हैं और वे तुम्हारा पीछा कर रहे हैं; इस कारण इस स्थान से तुम निकल जाओ, और मैं (१९) इस घाटी में लमनायटियों को रोक लूंगा, जिससे कि यहां से आगे वे तुम्हारा पीछा नहीं कर सकेंगे।

२४. और ऐसा हुआ कि उस घाटी से निकल कर उन लोगों ने जंगल की राह पकड़ी।

२५. जंगल में (२०) बारह दिनों तक रहने के पश्चात् *वे (२१) ज़राहेमला देश में पहुंचे; और राजा मूसायाह ने (२२) उनको आनन्द के साथ ग्रहण किया।

अध्याय २५

मूलक का वंशज ज़राहेमला—जनीफ की लेखा और अलमा का विवरण लोगों के लिए पढ़ा जाना—अलमा द्वारा सारे देश में मसीह के गिरजा की स्थापना करने की अनुमति देना।

१. राजा मूसायाह ने सभी लोगों को एकत्रित करवाया।

२. इस समय वहां नफी के पुत्र या नफी के वंशज उतनी अधिक संख्या में नहीं थे जितने कि (१) मूलक के वंशज ज़राहेमला के लोगों और उसके साथ वन प्रदेश में आने वाले लोगों के वंशज थे।

३. और जितने लमनायटी थे, उतने नफी और ज़राहेमला के लोग नहीं थे; हां वे उनके आधे भी नहीं थे।

४. नफी और ज़राहेमला के सब लोग अलग-अलग (२) दो दलों में एकत्रित हुए।

५. और ऐसा हुआ कि (३) जनीफ के अभिलेख को स्वयं मूसायाह ने पढ़ कर अपने लोगों को सुनाया और दूसरों से भी उसे पढ़वा कर सुनवाया; हां, उसने जनीफ के लोगों का (४) ज़राहेमला देश छोड़ने के समय से उनके (५) ज़राहेमला वापस लौटने तक के विवरण को पढ़ा।

६. और अलमा और उसके भाइयों के विवरण का और जब से वे (६) ज़राहेमला देश छोड़ कर गए थे और जब तक कि वे (७) वापस न आ गए, तब तक के उनके कष्टों के विवरण को भी उसने पढ़ा।

७. जब मूसायाह ने उन अभिनेखों को पढ़ना समाप्त किया तब जो लोग वहां पर ठहरे हुए थे, वे आश्चर्यचकित हो उठे।

८. क्योंकि वे यह निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि वे उन बातों के विषय में क्या सोचें; क्योंकि जब उन्होंने उनको देखा (८) जो दासता से मुक्त किए गए थे, तब वे आनन्दविभोर हो उठे।

९. और जब उन्हें अपने उन भाइयों का स्मरण हो आया जो लमनायटियों द्वारा मारे गए थे, तब वे दुःखी भी हुए और उन्होंने आंसू भी बहुत बहाए।

१०. और फिर जब उन्होंने परमेश्वर की तात्कालिक सहायता और लमनायटियों के हाथों से और दासत्व से (९) अलमा और उसके भाइयों को बचाने के लिए अपनी शक्ति के प्रयोग करने की बातों को सोचा तब उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए अपनी आवाज़ उठाई।

११. और फिर जब उन्होंने लमनायटियों की, जोकि उन्हीं के भाई थे, पापमय और दूषित स्थिति के विषय में सोचा, तब वे उनकी आत्माओं के कल्याण के लिए दुःख और पीड़ा से भर उठे।

१२. और ऐसा हुआ कि अमुलोन और उसके भाई जिन्होंने (१०) लमनायटियों की लड़कियों

(१७) देखो १५. (१८) पद्य १६. (१९) पद्य २०, २२. (२०) देखो ३, मू० २३. (२२) ओ० १३. (२२) मू० २२:२४.
अध्याय २५. (१) ओ० १४. (२) पद्य १३. (३) मूसायाह का शीर्षक देखो ९. (४) मू० ९:३, ४. (५) मू० २२:१३.
(६) मू० ९:३, ४. (७) मू० २४:२५. (८) मू० २२:११-१३. (९) मू० २४:२६-२५. (१०) मू० २०:३-५.

*ईसा से लगभग १२२ वर्ष पूर्व

को पत्नियों के लिए ले लिया था, उसकी (११) सन्तान अपने पिताओं की करतूतों से अप्रसन्न हो गईं और उन्होंने पिताओं के नामों को छोड़ कर नफी का नाम ग्रहण कर लिया जिससे कि वे नफी की सन्तान कहलायें, और उनकी गिनती उन लोगों में हो सके जो नफायटी कहलाते थे।

१३. और ज़राहेमला (१२) के सभी लोगों की गिनती नफायटियों में होती थी, क्योंकि उस राज्य को नफी के वंशजों को छोड़ कर किसी अन्य को नहीं दिया गया था।

१४. और तब ऐसा हुआ कि जब मूसायाह ने (१३) बोलना और लोगों को पढ़ कर सुनाना समाप्त किया तब उसने इच्छा प्रकट की कि अलमा भी लोगों से कुछ कहे।

१५. और जब वहां लोग बड़े-बड़े दलों में एकत्रित हुए थे, तब अलमा ने उनसे बातें कीं; वह जा कर पापों पर पश्चात्ताप, और प्रभु पर विश्वास करने का उपदेश देते हुए एक दल से दूसरे दल में गया।

१६. और उसने लिमही और उसके भाइयों को सदुपदेश दिया कि जितने लोगों को (१४) दासता से मुक्त किया गया है, उन्हें यह याद रखना चाहिए कि वह प्रभु था जिसने उनको मुक्त किया था।

१७. और ऐसा हुआ कि जब अलमा लोगों को अनेक विषयों पर शिक्षा दे चुका और वह बोलना समाप्त कर चुका, तब राजा लिमही और उसके सब लोग भी बपतिस्मा लेने के इच्छुक हुए।

१८. इसलिए अलमा ने जल में प्रवेश करके उनको उसी तरह (१५) बपतिस्मा दिया जिस प्रकार उसने मॉरमन के जल में (१६) अपने भाइयों को बपतिस्मा दिया था; और जितने लोगों को उसने बपतिस्मा दिया, वे सब परमेश्वर की गिरजा के सदस्य इसलिए हुए क्योंकि अलमा के शब्दों पर उनका विश्वास था।

१९. और ऐसा हुआ कि राजा मूसायाह ने अलमा को सारे ज़राहेमला देश में गिरजाओं की स्थापना करने की अनुमति दे दी; और उसको हर एक गिरजा के लिए पुरोहितों और शिक्षकों को (१७) नियुक्त करने का अधिकार भी दिया।

२०. यह इसलिए किया गया क्योंकि इतने अधिक लोग थे जिनको एक ही अध्यापक द्वारा न तो शासन में ही रखा जा सकता था और न तो एक ही समय में सब परमेश्वर की वाणी को सुन ही सकते थे।

२१. इसलिए वे सब अलग-अलग दलों में एकत्रित होते थे जिन्हें गिरजा कहा जाता था; और हर एक गिरजा के अपने पुरोहित और शिक्षक थे, और हर एक पुरोहित अलमा के मुख से निकली वाणियों के अनुसार ही उपदेश देते थे।

२२. इस प्रकार अनेक गिरजाओं के होते हुए भी एक ही गिरजा था और वह परमेश्वर का गिरजा था; क्योंकि उन सभी गिरजाओं में पापों पर पश्चात्ताप करना और परमेश्वर पर विश्वास करने को छोड़ कर और कुछ नहीं सिखाया जाता था।

२३. इस समय ज़राहेमला देश में सात गिरजा थे; और ऐसा हुआ कि जो लोग (१८) मसीह का या परमेश्वर का नाम अपने ऊपर लेना चाहते थे वे सब परमेश्वर के गिरजा में सम्मिलित हो जाते थे।

२४. और वे परमेश्वर के लोग कहलाते थे, और प्रभु ने उनके ऊपर अपनी पवित्र-आत्मा को उड़ेल दिया था, और उनको आशीर्वाद प्राप्त था और वह देश में सम्पन्न थे।

अध्याय २६

अविश्वासियों और दुष्टों की कुछ बातें—प्रभु द्वारा अलमा को बताया जाना कि उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

१. और ऐसा हुआ कि बहुत-सी नई पीढ़ियों के लोग राजा बिन्यामीन की (१) बातों को समझ नहीं पा रहे थे क्योंकि जब उसने अपने लोगों से बातें की थीं तब वे छोटे बच्चे थे; और

(११) मू० २०:५, २३, ३३. (१२) ओ० १९. (१३) पद्य ५-७. (१४) मू० २२:११, १३. २४:१६-२५. (१५) देखो २१, २ नफी ९. मू० २१:३२-३५. (१६) मू० १८:८-१७. (१७) देखो ३, मू० ६. (१८) देखो ५, मू० ५. अध्याय २६. (१) मू० अध्याय २-५.

ईसा से लगभग १२२ वर्ष पूर्व

वे अपने पिताओं की परम्पराओं पर विश्वास भी नहीं करते थे।

२. वे, न तो (२) पुनर्जीवित होने के विषय में जो कुछ कहा गया था, उस पर विश्वास करते थे और न ही मसीह के आने पर ही विश्वास करते थे।

३. वे अपने अविश्वास के कारण परमेश्वर की वाणी को समझ नहीं पा रहे थे; और उनके हृदय भी कठोर हो गए थे।

४. और वे न तो (३) बपतिस्मा ही ग्रहण करते थे और न गिरजा ही में (४) सम्मिलित होते थे और अपने विश्वासों में वे भिन्न थे और इसी प्रकार वे सदैव अपनी विषयवासना और पापों में ही लिप्त रहे; क्योंकि उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर को कभी नहीं पुकारा।

५. मूसायाह के शासन के समय वे परमेश्वर के लोगों के आधे भी नहीं थे; परन्तु अपने भाइयों के साथ विवाद होने के कारण उनकी संख्या में वृद्धि हुई।

६. क्योंकि जो गिरजा में थे उनमें से बहुतों को इन्होंने अपनी चिकनी चुपड़ी बातों से बहकाया और उनसे (५) अनेक पापकर्म करवाए; इस कारण यह आवश्यक हो गया कि जिन लोगों ने गिरजा में रहते हुए पाप किए थे, उनको गिरजा चेतावनी दे।

७. और ऐसा हुआ कि उन लोगों को शिक्षकों के द्वारा (६) पुरोहितों के पास लाया गया, और पुरोहित उनको अलमा के पास ले गए जो उनका (७) प्रधान पुरोहित था।

८. राजा मूसायाह ने अलमा को गिरजा पर अधिकार प्रदान किया था।

९. और अलमा उनके विषय में कुछ जानता नहीं था; परन्तु उनके विरुद्ध बहुत से गवाह थे; और लोगों ने खड़े होकर उनके बहुत से पापों की साक्षी दी।

१०. गिरजा में इस प्रकार का कार्य पहले कभी नहीं हुआ था; इस कारण अलमा की आत्मा दुःखी हुई और उसने उनको राजा के सामने उपस्थित करवाया।

११. और उसने राजा से कहा : देखो, यहां बहुत से वे लोग हैं जिनको हम आपके सामने लाए हैं और जिन पर इनके भाइयों ने अभियोग लगाया है; और ये अनेक पापों में पकड़े गए हैं। ये अपने पापों के लिए पश्चात्ताप भी नहीं करते हैं, इस कारण हम इनको आपके सामने लाए हैं जिससे कि आप इनके अपराधों के अनुसार इनका न्याय करें।

१२. लेकिन राजा मूसायाह ने अलमा से कहा : मैं इनका न्याय नहीं करूंगा; इस कारण इनका न्याय करने के लिए मैं इन्हें तुम्हारे हाथों में दे रहा हूं।

१३. अब अलमा की आत्मा पुनः चिन्ता में पड़ गई और इस भय से कि परमात्मा की दृष्टि में वह कहीं कोई भूल न कर बैठे, उसने जाकर, इस विषय पर प्रभु से सम्मति मांगी।

१४. और ऐसा हुआ कि जब उसने परमेश्वर के सामने अपने हृदय को खोल कर रख दिया तब प्रभु की वाणी उसको इस प्रकार कहती हुई सुनाई दी :

१५. अलमा, तुम धन्य हो, और धन्य हैं वे लोग जिन्होंने मॉरमन के (८) जल में (९) बपतिस्मा लिया। तुम धन्य हो क्योंकि तुमने अकेले मेरे सेवक अभिनन्दी के शब्दों पर भारी विश्वास किया।

१६. और वे लोग इस कारण धन्य हैं क्योंकि उन्होंने अकेले तुम्हारे उन शब्दों पर बहुत बड़ा विश्वास किया जिन्हें तुमने उनसे कहा था।

१७. और इन लोगों में (१०) गिरजा की स्थापना करने के लिए तुम धन्य हो; और उनको दृढ़ किया जाएगा और वे लोग मेरे होंगे।

१८. हां, धन्य हैं ये लोग जो मेरा (११) नाम ग्रहण करने को तैयार हैं; क्योंकि उनको मेरे नाम से पुकारा जाएगा; और वे मेरे हैं।

(२) देखो ४, २ नफी २. (३) देखो २१, २ नफी ९. (४) मू० १८:१७. २५:१८-२३. अल० ४:४, ५. ३ नफी २६:२१. (५) पद्य ७:१३, १६, २५-३६. अल० ५:५७, ५८. ६:३. (६) देखो ३, मू० ६. (७) मू० २३:१६. २९:४२. अल० ४:४, १८, २०. ५:३, ४४, ४९. ६:८. ८:११, २३. १३:१-२०. १६:५. ३०:२१, २२, २३, २९. ४३:२. ४६:६, ३८. ४९:३०. इला० ३:२५. (८) देखो २१, २ नफी ९. (९) देखो २०, मू० १८. (१०) मू० २५:१९-२४. (११) देखो ५, मू० ५.

१९. और तुमने इन (१२) पापियों के विषय में मेरी जो सम्मति मांगी है उसके लिए तुमको आशीर्वाद दिया जाता है।

२०. तुम मेरे सेवक हो, और मैं तुमको वचन देता हूं कि तुमको अनन्त जीवन दिया जाएगा; और तुम मेरी सेवा करोगे और मेरे नाम पर जा कर तुम मेरी भेड़ों को एकत्रित करोगे।

२१. और जो मेरी वाणी सुनेगा वह मेरी भेड़ होगा और तुम केवल उसी को गिरजा में स्वीकार करना और मैं भी केवल उसी को स्वीकार करूंगा।

२२. क्योंकि देखो, यह मेरा (१३) गिरजा है; जिसे (१४) बपतिस्मा दिया जाएगा, उसे पश्चात्ताप के बाद बपतिस्मा दिया जाएगा। और जिसे तुम स्वीकार करो उसे मेरे नाम से स्वीकार करो; और उसी को मैं प्रसन्नता के साथ क्षमा करूंगा।

२३. क्योंकि जगत का पाप अपने ऊपर लेने वाला मैं हूं; वह मैं ही हूं जिसने उनको (१५) रचा; और जो अन्त तक विश्वास करेगा उनको अपने दाहिने हाथ की ओर स्थान देने वाला भी मैं ही हूं।

२४. क्योंकि देखो, (१६) मेरे नाम पर उनका नाम है; और अगर वे जानते होंगे तब वे आएंगे और मेरे दाहिने हाथ की ओर उन्हें अनन्त काल के लिए स्थान मिलेगा।

२५. और ऐसा होगा कि जब दूसरी बार तुरही बजेगी तब वे मेरे सामने आकर खड़े होंगे, जो मुझे कभी जानते नहीं थे।

२६. और तब वे जानेंगे कि मैं उनका प्रभु परमेश्वर हूं और मैं ही उनका उद्धारक हूं; परन्तु उनका उद्धार नहीं किया जाएगा।

२७. और तब मैं उनसे यह स्वीकार करूंगा कि मैंने उनको कभी नहीं जाना; और तब उनको उस (१७) अनन्त अग्नि में ले जाया जाएगा जिसे शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है।

२८. इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई मेरी वाणी को नहीं सुनेगा उसे तुम मेरी गिरजा में स्वीकार (१८) मत करना, क्योंकि अन्तिम दिन मैं भी उसे स्वीकार नहीं करूंगा।

२९. इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जाओ; और जो कोई मेरे विरुद्ध (१९) नियमों को भंग करता है, तब उसका न्याय, तुम उसके द्वारा किए गए पापों के अनुसार ही करो; और अगर वह अपने पापों को तुम्हारे और मेरे सामने स्वीकार करता है और अपने सच्चे हृदय से पश्चात्ताप करता है, तब तुम उसे क्षमा कर दो और मैं भी उसे क्षमा कर दूंगा।

३०. हां, और जितनी बार मेरे लोग पश्चात्ताप करेंगे, मैं, उतनी बार अपने विरुद्ध नियमों को भंग करने के कार्य को क्षमा करूंगा।

३१. और तुम (२०) एक दूसरे के विरुद्ध किए गए अपराधों को भी क्षमा करोगे, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि कोई अपने पड़ोसी के अपराधों को, पश्चात्ताप करने पर भी क्षमा नहीं करेगा, वह स्वयं अपने आपको अपराधी ठहराएगा।

३२. अब मैं तुम से कहता हूं कि जाओ, और जो कोई अपने पापों के लिए पश्चात्ताप नहीं करेगा उसकी गिनती मेरे लोगों में (२१) नहीं की जाएगी; और इसका पालन अब से आगे किया जाएगा।

३३. और ऐसा हुआ कि इन शब्दों को जब अलमा ने सुना, तब उसने इनको लिख लिया जिससे कि वह इन्हें लिखित रूप में अपने पास रखे और जिससे कि वह उस गिरजा के लोगों का, परमेश्वर की (२२) आज्ञानुसार, न्याय कर सके।

३४. और ऐसा हुआ कि जो लोग पाप में पकड़े गए थे उनका न्याय अलमा ने जा कर प्रभु की वाणी के अनुसार किया।

३५. और जिन्होंने अपने पापों को (२३) स्वीकार किया और उनके लिए पश्चात्ताप किया, उनकी गिनती उसने गिरजा के लोगों में की।

३६. और जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार नहीं किया और पश्चात्ताप नहीं किया उनकी गिनती गिरजा के लोगों में (२४) नहीं की गई

(१२) देखो ५. (१३) देखो ४. (१४) देखो २१, २ नफी ९. (१५) देखो १२, मू० ५. (१६) देखो ५, मू० ५. (१७) देखो ११, १ नफी १५. (१८) देखो ४. (१९) देखो ५. (२०) ३ नफी १३:१४, १५. (२१) पद्य ३४-३६. अल० १:२४. (२२) पद्य २८-३२. (२३) पद्य २९, ३०. (२४) पद्य ३२.

और उनका नाम मिटा दिया गया।

३७. और ऐसा हुआ कि अलमा ने गिरजा के सभी कामों को व्यवस्थित किया, और परमेश्वर के सम्मुख विवेक से काम करते हुए, गिरजा के मामलों में उन्होंने फिर से शान्ति और प्रगति प्राप्त की और बहुतों को (२५) बपतिस्मा दे कर अपने में स्वीकार किया।

३८. और यह सब कार्य अलमा और उसके सहयोगियों ने किया जो गिरजा में दृढ़निष्ठ होकर हरवस्तु में परमेश्वर के नाम की शिक्षा दे रहे थे और उन लोगों के द्वारा, जो कि परमेश्वर के गिरजा के सदस्य नहीं थे, सताये जाने पर भी हर प्रकार का कष्ट झेल रहे थे।

३९. और उन्होंने अपने भाइयों को चेतावनी दी और स्वयं उनको भी, हर एक को उनके पापों अथवा उनके द्वारा किए गए पापों के अनुसार—प्रभु की वाणी से, चेतावनी मिली और उन्हें लगातार (२६) प्रार्थना करने और हर एक बात में कृतज्ञता प्रकट करने की आज्ञा परमेश्वर की ओर से मिली।

अध्याय २७

उपद्रव का निषेध और समानता का समावेश किया जाना—अविश्वासियों में अलमा के एक, और राजा के चार पुत्र—उनका चमत्कारित मत परिवर्तन—उनका धर्म प्रचारक बनना।

१. और ऐसा हुआ कि गिरजा पर अविश्वासियों का उत्पीड़न इतना बढ़ा कि उसके अनुयायी असंतोष प्रकट करने लगे और इस विषय पर उन्होंने अपने नेताओं से शिकायत की और अलमा से जाकर असन्तोष प्रकट किया। अलमा ने इस मामले को राजा मूसायाह के समक्ष रखा, और मूसायाह ने इस पर अपने पुरोहितों से सलाह की।

२. और ऐसा हुआ कि राजा मूसायाह ने देश में चारों ओर यह घोषणा की कि कोई भी अविश्वासी ईश्वर के गिरजा के लोगों को न सताये।

३. और सभी गिरजाओं में यह कड़ाई के साथ आज्ञा दी गई कि उनमें आपस में भी किसी प्रकार के उपद्रव नहीं होने चाहिए, अपितु सब मनुष्यों में समानता (१) होनी चाहिए।

४. और उनकी शान्ति न तो अहंकार और न ही गर्व भंग कर सके; और हर एक मनुष्य निर्वाह के लिए अपने हाथों से परिश्रम करते हुए अपने पड़ोसियों (२) को अपनी तरह ही समझे।

५. और उनके सब (३) पुरोहित और शिक्षक, जीवन-निर्वाह के लिए, परिस्थिति से विवश, और बीमारी के समय को छोड़ कर (४) अपने हाथों से परिश्रम करें, और ऐसा करने के कारण उनके ऊपर परमेश्वर की बहुत बड़ी कृपा हुई।

६. और देश में फिर से शान्ति आई और जनसंख्या बहुत अधिक हो गई और लोग देश के उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम में जा कर बसने और देश की चारों दिशाओं में नगर और गांव बसाने लगे।

७. और प्रभु उनमें जा कर उनकी उन्नति करवाता, और वे लोग बहुत अधिक धनवान हो गए।

८. अब, मूसायाह के (५) लड़कों की गिनती अविश्वासियों में की जाती थी; और उनमें अलमा का एक पुत्र भी था, जिसका नाम अपने पिता के नाम पर अलमा ही था; फिर भी वह बहुत दुष्ट और मूर्तिपूजक हो गया था; वह बातूनी था और लोगों की बहुत झूठी प्रशंसा करता था; इसलिए उसने बहुतों से अपने समान दुष्कर्म करवाये।

९. और वह ईश्वर की गिरजा की प्रगति में बहुत बड़ा बाधक था; क्योंकि वह लोगों के मन को हर कर, लोगों में बहुत अधिक असंतोष पैदा करके, परमेश्वर के शत्रु को उनके ऊपर अपना प्रभाव जमाने का मौका देता।

१०. और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर और स्वयं राजा की आज्ञाओं के विपरीत, वह मूसायाह के लड़कों के साथ गुप्त रूप से जा कर परमेश्वर

(२५) देखो २१, २ नफी ९. (२६) देखो ५, २ नफी ३२. अध्याय २७. (१) देखो १०, या० २. मू० २९:३२. अल० ३०:११.
(२) देखो १२, मू० ४. देखो १३, मो० २३. (३) देखो ३, मू० ६. (४) मू० १८:२४, २६. (५) पद्य १०:३४.

की गिरजा को नष्ट करने का (६) प्रयत्न कर रहा था।

११. और जैसा कि मैंने कहा कि जब वे लोगों में जा कर परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे तब उनके समक्ष प्रभु का एक स्वर्गदूत (७) प्रकट हुआ; वह उनके सामने बादल के समान नीचे उतरा; और वह उनसे मेघ-गर्जन के समान बोला, जिससे वे जिस (८) धरती पर खड़े थे, वह हिलने लगी।

१२. और उनको इतना अधिक आश्चर्य हुआ कि वे धरती पर गिर पड़े और जो बातें वह कह रहा था उसे कुछ समझ नहीं पाए।

१३. फिर भी उस स्वर्गदूत ने पुनः पुकारते हुए कहा : अलमा, उठ कर खड़े हो, तुम परमेश्वर की गिरजा को क्यों सता रहे हो? क्योंकि प्रभु ने कहा है (९) यह मेरा गिरजा है और इसको मैं व्यवस्थित करूंगा; और मेरे ही लोगों के पापों के अतिरिक्त, और कुछ भी इसे मिटा नहीं सकेगा।

१४. और स्वर्गदूत पुनः बोला : देखो, प्रभु ने इन लोगों की और अपने उस सेवक की प्रार्थनाओं को सुना जो कि तुम्हारा पिता है; क्योंकि उसने भारी विश्वास के साथ तुम्हें सत्य का ज्ञान कराने के लिए प्रार्थना की है, इसलिए परमेश्वर की शक्ति और अधिकार का तुम्हें विश्वास दिलाने के उद्देश्य से मैं आया हूं, और लोगों के विश्वास के अनुसार उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर भी दिया जाता है।

१५. और अब देखो, क्या तुम परमेश्वर की शक्ति का प्रतिवाद कर सकते हो? क्योंकि सुनो, क्या मेरी वाणी धरती को नहीं (१०) कंपाती है? और क्या तुम मुझे अपने सामने नहीं (११) देख रहे हो? और मैं परमेश्वर द्वारा भेजा गया हूं।

१६. अब मैं तुमसे कहता हूं : जाओ, और (१२) हिलम और (१३) नफी के देशों में अपने पूर्वजों की दासता की बात याद रखो और यह भी याद रखो कि उनके लिए उसने कितने बड़े-बड़े कार्य किए हैं, क्योंकि वे दासता में थे और उसने उनको (१४) मुक्त किया, और अब, अलमा, मैं तुमसे कहता हूं कि अपने रास्ते जाओ, और गिरजा को नष्ट करने की चेष्टा मत करना, जिससे कि उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जाए; और इस पर भी तुम अपना हठ करोगे तो निकाल कर फेंक दिए जाओगे।

१७. स्वर्गदूत के ये अन्तिम शब्द थे, जिन्हें वह अलमा से कह कर चला गया।

१८. और तब ऐसा हुआ कि अलमा और जो उसके साथ थे, धरती पर (१५) पुनः गिर पड़े क्योंकि वे अत्यधिक आश्चर्यचकित हो उठे थे; और उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से प्रभु के एक स्वर्गदूत को (१६) देखा था और उसकी वाणी मेघ-गर्जन की तरह थी जिसने धरती को (१७) कंपा दिया था; और वे यह जानते थे कि प्रभु की शक्ति के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है जो धरती को हिला सके और ऐसे कंपा दे जैसे वह फट जाएगी।

१९. अलमा को इतना अधिक आश्चर्य हुआ कि वह (१८) मूक बना रहा और अपना मुंह न खोल सका और इतना निर्बल हो गया कि वह अपना हाथ भी न हिला सका; इस कारण उसके साथी उसे निस्सहाय अवस्था में उठा कर ले गए और उसे उसी अवस्था में उसके पिता के सामने ले जा कर लिटा दिया।

२०. और उन्होंने उसके पिता को उन सारी बातों को बताया जो उनके साथ घटी थीं; और उसके पिता ने आनन्द मनाया क्योंकि वह जानता था कि वह परमेश्वर का बल था।

२१. और उसने एक भारी जन समूह एकत्रित करवाया जिससे कि वे इसके साक्षी हों कि प्रभु ने उसके पुत्र और उसके साथियों के लिए क्या किया था।

(६) मू० २८:३, ४. अल० २६:१७, १८. ३६:६, ९, ११. ३८:७. (७) पद्य १५, १८. अल० ३६:५-११. ३८:७. (८) पद्य १५, १८. अलमा ३६:७. ३८:७. (९) मू० २६:२२. (१०) देखो ८. (११) देखो ७. (१२) देखो १५, मू० २३. (१३) देखो २. २ नफी ५. (१४) मू० १८:३४. २३:१-४. २४:१७-२१. (१५) पद्य १२. (१६) देखो ७. (१७) देखो ८. (१८)

ईसा से सम्भवतः १२०-१०० वर्ष पूर्व के मध्य

२२. और उसने (१९) पुरोहितों को भी एकत्रित करवाया, और वे (२०) उपवास करते हुए अपने प्रभु परमेश्वर से अलमा का मुख (२१) खोलने की प्रार्थना करने लगे कि जिससे वह बातें करने लगे और उसके (२२) हाथ-पैर में बल आ जाए— और लोगों की आंखें खुलें जिससे कि वे परमेश्वर के यश और उपकारों को देख और समझ सकें।

२३. और ऐसा हुआ कि जब वे दो दिन और दो रात (२३) उपवास करते हुए प्रार्थना कर चुके, तब अलमा के शरीर में बल का संचार हुआ और वह उठ कर खड़ा हुआ और उन्हें सांत्वना देते हुए उसने बातें कीं।

२४. उसने कहा कि मैंने अपने पापों पर पश्चात्ताप किया है और प्रभु द्वारा मेरा उद्धार किया गया है; और देखो, पवित्र आत्मा से मेरा (२४) पुनर्जन्म हुआ है।

२५. और प्रभु ने मुझसे कहा: आश्चर्य मत करो, क्योंकि सभी मानव समाज को, हां, सभी स्त्री और पुरुष, सभी देश, जातियों, भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों और लोगों को (२५) फिर से जन्म लेना चाहिए; हां, परमेश्वर की सन्तान बन कर, अपनी कामुक और पतित अवस्था को त्याग कर, परमेश्वर द्वारा उद्धार किए जाने पर, धर्म में प्रवेश करके परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियां बनना ही चाहिए।

२६. इस प्रकार वे नए प्राणी हो जाते हैं; और अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तब वे किसी प्रकार भी परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी नहीं हो सकते।

२७. मैं तुमसे कहता हूं कि अगर ऐसा नहीं हुआ तब उन्हें निकाल कर फेंक दिया जाएगा; और यह मैं इसलिए जानता हूं कि क्योंकि मैं स्वयं फेंके जाने वाला था।

२८. फिर भी भारी कष्टों में भटकने के पश्चात्, अपने पापों के लिए पश्चात्ताप करते हुए, मृत्यु के निकट पहुंचने पर प्रभु ने मुझे (२६) अनन्त जलते रहने से बचा लिया। मैं, परमेश्वर द्वारा पुनर्जीवित किया गया।

२९. मेरी आत्मा को कठोर पीड़ा और पापों की बेड़ियों से बचा लिया गया है। मैं भयानक अन्धकारमय खोह में था; परन्तु अब मैं परमेश्वर के आश्चर्यजनक प्रकाश में हूं। मेरी आत्मा (२७) अनन्त सन्ताप से पीड़ित थी; लेकिन उससे मैं बचा लिया गया और अब मेरी आत्मा को कोई दुःख नहीं है।

३०. मैंने अपने उद्धारक को अस्वीकार कर दिया था और हमारे पूर्वजों के द्वारा जो कुछ कहा गया था उसे भी मैंने स्वीकार नहीं किया था; लेकिन अब वे यह पूर्वज्ञान प्राप्त कर सकते हैं कि वह आएगा और उसे अपने सभी रचे हुए प्राणियों का भी स्मरण है, इसलिए वह अपने को सब पर प्रकट करेगा।

३१. हां, उसके सामने (२८) हर एक के घुटने झुकेंगे और सबकी जीभ अपने पापों को स्वीकार करेगी, और उस अन्तिम दिन जबकि सभी मनुष्य उसके सामने न्याय के लिए खड़े होंगे, तब भी यह सब स्वीकार करेंगे कि वह परमेश्वर है; और यह भी स्वीकार करेंगे कि जो बिना परमेश्वर के पृथ्वी पर रहते हैं उन के ऊपर (२९) अनन्त दण्ड न्यायपूर्ण है; और उसकी मर्मभेदी (३०) दृष्टि के सामने वे थर-थर कांपेंगे और सकुचाएंगे।

३२. तब ऐसा हुआ कि इस समय से अलमा और उसके साथी, जो स्वर्गदूत के प्रकट होने के समय उसके साथ थे, अविश्वासी लोगों के द्वारा सताए जाते और मार खाते हुए भी, जो कुछ उन्होंने देखा था, उसका और प्रभु का घूम-घूम कर प्रचार करने लगे।

३३. लेकिन इस सबके होते हुए भी, उन्होंने गिरजा के अनुयायियों को, अपने विश्वास में

(१९) देखो ३, मू० ६. (२०) पद्य २३. अल० ५:४६. ६:६. ८:२६. १०:७. १८:३, ९. २८:६. ३०:२. इला० ३:३५. ३ नफी १३:१६-१८. २७:१. ४ नफी १२. मरो० ६:५. (२१) पद्य १९:२३. (२२) पद्य १९:२३. (२३) पद्य २२. देखो २०. (२४) देखो ३, मू० ५. (२५) देखो ३, मू० ५. (२६) देखो ११, १ नफी १५. (२७) देखो १३, या० ६. (२८) मू० १६:१, २. डी एन सी (सि० शर्त०) ८८:१०४. (२९) देखो १३, या० ६. (३०) देखो ३, या० २. ईसा से लगभग ९२ वर्ष पूर्व

दृढ़ और अत्यधिक कष्ट और भारी दु:ख झेलते हुए भी परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए, बहुत आश्वासित किया।

३४. और उनमें (३१) चार मूसायाह के पुत्र थे जिनका नाम था, आमोन, आरुन, ओमनार और हिमनी।

३५. और उन्होंने सारे ज़राहेमला (३२) देश में और राजा मूसायाह के शासन में रहने वाले सभी लोगों में गिरजा की जो हानि उन्होंने की थी, उसका बड़े परिश्रम और उत्साह से सुधार करते हुए, और अपने सभी पापों को स्वीकार करते हुए, जो (३३) कुछ उन्होंने देखा था उसको बतलाते और भविष्यवाणियों और धर्मशास्त्रों को समझाते हुए, यात्रा की।

३६. इस प्रकार वे बहुतों को सत्य से अर्थात् अपने उद्धार के ज्ञान से परिचित करवाने के परमेश्वर के साधन थे।

३७. और वे कितने धन्य हैं क्योंकि उन्होंने शान्ति (३४) फैलाई; उन्होंने भलाई की उत्तम सुसमाचार फैला कर लोगों में घोषणा की कि प्रभु शासन करता है।

अध्याय २८

मूसायाह का अपने लड़कों को लमनायटियों में प्रचार करने की अनुमति देना—चौबीस पटियों का अनुवाद किया जाना—अलमा को लेखाओं का संरक्षक नियुक्त किया जाना।

१. और ऐसा हुआ कि यह सब करने के पश्चात् मूसायाह के (१) लड़के कुछ चुने हुए लोगों के साथ अपने राजा पिता के पास लौट आए, और वे उसकी अनुमति चाहते थे कि उन चुने हुए लोगों के साथ वे नफी के (२) देश में जाएं जिससे कि जिन बातों को उन्होंने सुना था, उसे, और परमेश्वर की वाणी को, अपने भाई लमनायटियों को दे सकें।

२. जिससे कि सम्भवत: उनका प्रभु परमेश्वर उनको जान सके और वे उनके पूर्वजों की भूलों से उनको अवगत करा सकें, जिससे कि उनके अन्दर नफायटियों के विरुद्ध जो (३) द्वेष है, उसे मिटाया जा सके और वे अपने प्रभु परमेश्वर में भी आनन्द मना सकें जिससे कि वे एक दूसरे के साथ मित्रवत् व्यवहार करें और उनके परमेश्वर प्रभु द्वारा उनको दिए गए सारे देश में किसी भी प्रकार का विवाद न रहे।

३. वे मुक्ति की घोषणा सभी प्राणियों से की जाने के इच्छुक थे क्योंकि वे किसी मनुष्य की आत्मा को नष्ट होते नहीं देख सकते थे; यहां तक कि किसी की आत्मा के (४) अन्तहीन सन्ताप भुगतने के ध्यान से ही वे कांपने लगते और भयभीत हो उठते थे।

४. इस तरह प्रभु की आत्मा का प्रभाव उन पर पड़ा क्योंकि वे (५) घोर पापी थे, और प्रभु ने अपनी असीम दया से उन्हें छोड़ दिया; फिर भी वे दुराचार के कारण अपनी आत्माओं में दुखी थे और इस बात से वे कष्ट झेल रहे थे कि कहीं उनको सदैव के लिए निकाल कर फेंक न दिया जाए।

५. और ऐसा हुआ कि वे कई दिनों तक नफी के (६) देश में जाने की आज्ञा अपने पिता से मांगते रहे।

६. और राजा मूसायाह ने जाकर प्रभु से पूछा कि उसे अपने पुत्रों को लमनायटियों में जाकर प्रचार करने देना चाहिए या नहीं।

७. और प्रभु ने मूसायाह से कहा: उनको जाने दो, क्योंकि उनमें से बहुत से लोग उनकी बातों पर विश्वास करेंगे और उनको अनन्त जीवन मिलेगा और मैं तुम्हारे लड़कों की (७) रक्षा लमनायटियों के हाथों से करूंगा।

८. और ऐसा हुआ कि मूसायाह ने उनको उनकी इच्छा के अनुसार जाने की आज्ञा दे दी।

९. और उन्होंने लमनायटियों में प्रचार करने के विचार से जंगली प्रदेश से होकर यात्रा की; और मैं उनकी यात्रा का (८) वर्णन आगे दूंगा।

१०. अब अलमा का कोई नहीं था जिसको वह राज्य दे सकता। क्योंकि उसके पुत्र वहां नहीं थे जो कि उसके राज्य को स्वीकार करते।

(३१) पद्य १०. (३२) ओम १३. (३३) पद्य १०-१७. (३४) मू० १५:१४-१७. अध्याय २८. (१) मू० २७:३४. (२) देखो २, २ नफी ५. (३) देखो १४, या० ७. (४) देखो १३, या० ६. (५) मू० २७:८-११. (६) देखो २, २ नफी ५. (७) अल० १७:३५. १९:२२, २३. (८) अल० अध्याय १७-२८.

११. इस कारण उसने (९) पीतल की पटियों पर लिखित अभिलेखों को, नफी की (१०) पटियों को और परमेश्वर की आज्ञानुसार जिन चीजों को वह अपने पास रखे हुए था, उन सब को और वह स्वर्ण (११) पटियों पर जो अभिलेख खुदे हुए थे जिसको लिमही के लोगों ने पाया था और जो लिमही के हाथों द्वारा उसको दिया गया था, उसका अनुवाद करके लिखवाया।

१२. और यह उसने इसलिए किया कि उसके लोगों की यह भारी इच्छा थी कि वे उन लोगों के विषय में जाने, जो (१२) कि नष्ट किए जा चुके थे।

१३. और उसने उनका अनुवाद उन (१३) दो पत्थरों की सहायता से किया, जो कमान के दो किनारों से बंधे हुए थे।

१४. इन वस्तुओं को भाषाओं का अनुवाद करने के लिए आरम्भ में तैयार किया गया था। और इन्हें पीढ़ी पर पीढ़ी दिया गया था, और दिया जाता रहा है।

१५. और इनको प्रभु के हाथों द्वारा सुरक्षित रखा गया था जिससे कि उस हर एक व्यक्ति को, जिसके अधिकार में यह देश आये, अपने लोगों के दुराचार और घृणित कार्यों का पता लग सके।

१६. और जिनके पास ये वस्तुएं होंगी उनको प्राचीन काल की तरह (१४) दर्शी कहा जाएगा।

१७. जब मूसायाह ने इन अभिलेखों का अनुवाद करना समाप्त कर लिया, तब पता लगा कि उसमें (१५) उन नष्ट हुए लोगों का वर्णन, उनके नष्ट होने के समय से लेकर उस (१६) महान मीनार के बनाए जाने के समय तक जब कि प्रभु ने लोगों की भाषा में (१७) गड़बड़ी उत्पन्न कर दी और वे सारे संसार में बिखर गए थे, उस समय से लेकर आदम की (१८) रचना के समय तक का विवरण था।

१८. अब, इस विवरण से मूसायाह के लोगों को बहुत शोक हुआ; हां वे दुख से भर उठे; फिर भी उससे लोगों को बहुत ज्ञान मिला जिसकी उन्हें प्रसन्नता भी थी।

१९. और यह विवरण यहां से आगे दिया जाएगा; क्योंकि जो कुछ इस विवरण में (१९) है वह हर एक को जानना हितकर होगा।

२०. जैसा कि मैंने कहा कि यह सब करने के पश्चात् राजा मूसायाह ने पीतल की (२०) पटियों और जिन दूसरी वस्तुओं को वह अपने पास रखे हुए था, उन सब को ले जाकर अलमा के पुत्र अलमा को दे दिया; हां, (२१) सभी अभिलेखों को, और (२२) अनुवाद करने वाली वस्तुओं को ले जाकर दे दिया और उसे आज्ञा दी कि वह उनको सुरक्षित रखे और लोगों का लेखा भी वह रखे जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दिया जा सके, जैसे लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय से दिया जाता रहा है।

अध्याय २९

राजा मूसायाह का शासन सम्बन्धी उपदेश—प्रजातन्त्र ढंग के राज्य को योग्य बतलाना—न्यायाधीश का चुना जाना—वृद्ध अलमा की मृत्यु—मूसायाह की मृत्यु से नफायटी राजाओं के शासन का अन्त होना।

१. जब मूसायाह यह सब कर चुका, तब उसने सारे देश के सारे लोगों में अपने सेवकों को भेज कर पता लगाना चाहा कि वे किसको अपना राजा बनाना चाहते हैं।

२. तब ऐसा हुआ कि लोगों ने इस प्रकार अपने विचार को प्रकट किया: हमारी इच्छा है कि आपका पुत्र आरुन हमारा राजा और शासक हो।

३. लेकिन आरुन (१) नफी देश गया हुआ था, इसलिए राजा उसको राज्य नहीं दे सकता था; आरुन राज्य लेना भी नहीं चाहता था और न ही मूसायाह के दूसरे (२) पुत्र ही राज्य लेना चाहते थे।

४. इसलिए राजा मूसायाह ने अपने सन्देश-

(९) देखो १, १ नफी ३. (१०) देखो ६. १ नफी १. (११) देखो ११, मू० ८. (१२) देखो १०, मू० ८. (१३) देखो १४, मू० ८. (१४) मू० ८:१३-१८. (१५) देखो १०, मू० ८. (१६) बावेल का मिनार ओम० २०-२२. एथ० १:१-५. (१७) एथ० १:३३. (१८) देखो १३, मू० २. (१९) एथर का पुस्तक. (२०) देखो १,१ नफी ३. (२१) पद्य ११. फिर देखो ११, १२, १३ और १४. मू० ८. (२२) देखो १४, मू० ८. अध्याय २९. (१) देखो २,२ नफी ५. (२) मू० २७:३४

ईसा से लगभग ९२ वर्ष तक

वाहकों को फिर लोगों में लिखित सन्देश देकर भेजा। वे लिखित शब्द ये थे;

५. देखो, हे मेरे लोगों, या मेरे भाइयों, क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा ही मानता हूं, मैं चाहता हूं कि तुम उस विषय पर विचार करो जिस पर विचार करने के लिए तुम बुलाए गए हो—क्योंकि तुम एक राजा चाहते हो।

६. मैं तुमसे यह घोषणा कर रहा हूं कि यह राज्य (३) न्यायपूर्वक जिसका है, वह राज्य लेने से अस्वीकार कर रहा है।

७. और अगर उसके स्थान पर किसी दूसरे को नियुक्त किया गया, तब मुझे भय है कि तुम में विवाद उठ खड़ा होगा। और कौन जाने कि मेरा पुत्र जो इस राज्य का उत्तराधिकारी है, वह (४) क्रोधित होकर इन लोगों में से कुछ को अपने साथ कर ले, जिससे कि तुम लोगों में युद्ध और कलह हो जाए, जिसके कारण बहुत रक्तपात होगा और प्रभु का पथ भ्रष्ट हो जाएगा जिससे बहुत से लोगों की आत्मा नष्ट हो जाएगी।

८. अब मैं तुमसे कहता हूं कि हमें विवेकी बनना चाहिए और इन बातों पर विचार करना चाहिए क्योंकि मेरे पुत्र को नष्ट करने का अधिकार हमारे पास नहीं है और न ही हमें दूसरे को नष्ट करने का अधिकार है, जो उसकी जगह पर नियुक्त होगा।

९. अगर कहीं मेरा पुत्र पुनः अहंकारी बन कर व्यर्थ के कामों में रत हो गया, तब वह जो कुछ कहता था उसे याद आ जाएगा और राज्य पर अपने अधिकार का वह दावा करेगा जिसके कारण वह और ये लोग बहुत पाप करेंगे।

१०. हमें विवेकी बन कर इन बातों पर विचार करना चाहिए और हमें वह काम करना चाहिए जिससे इन लोगों में शान्ति लाई जा सके।

११. इसलिए अपने अवशेष जीवन भर मैं ही तुम्हारा राजा रहूंगा; फिर भी (५) हम न्यायाधीशों को नियुक्त कर दें जिससे कि वे लोगों का न्याय हमारे नियमों के अनुसार किया करें और हम इन लोगों के मामलों को नए सिरे से व्यवस्थित करें; क्योंकि हम बुद्धिमान लोगों को निर्णायक नियुक्त करेंगे; जो इन लोगों का न्याय परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार करेंगे।

१२. यह अच्छा है कि एक मनुष्य का न्याय मनुष्य की अपेक्षा परमेश्वर करे, क्योंकि परमेश्वर का न्याय सदैव उचित होता है, लेकिन मनुष्य का न्याय सदैव ठीक नहीं होता।

१३. अगर वह सम्भव होता कि सदैव धार्मिक पुरुष ही तुम्हारे राजा होते जो परमेश्वर के नियमों की स्थापना करते और लोगों के न्याय उसकी आज्ञाओं के अनुसार करते, और हां, तुम ऐसे व्यक्तियों को अपना राजा बना पाते जो वैसा ही करते जैसा कि मेरे पिता (६) बिन्यामीन ने अपने लोगों के लिए किया था—तब मैं तुम से कहता हूं कि तुम्हारे ऊपर शासन करने के लिए सदैव राजा का होना उचित होता।

१४. और मैंने स्वयं अपनी सारी शक्ति और योग्यतानुसार तुम्हें परमेश्वर के नियमों की शिक्षा देने के और सारे देश में शान्ति की स्थापना करने के लिए परिश्रम किया जिससे कि युद्ध न हों, विवाद न हों, न लोग लूटे जाएं, हत्या न हों और न तो किसी तरह के पाप हों।

१५. और जिस किसी ने भी पाप किया उसको मैंने अपने पूर्वजों के द्वारा दिए गए नियमों के अनुसार दण्ड दिया।

१६. अब मैं तुमसे कहता हूं कि सभी लोग धर्मात्मा नहीं होते इसलिए तुम्हारे ऊपर शासन करने के लिए राजा या राजाओं का होना हितकर न होगा।

१७. क्योंकि देखो, एक दुष्ट राजा कितना दुराचार कर सकता है; और कितना विनाश ला सकता है।

१८. याद करो (७) राजा नूह और उसके लोगों को, उनके पापों और घृणित कामों को

(३) पद्य २, ३, ७, ९. (४) पद्य २, ३, ६, ९. (५) पद्य २५-२७. ३४:३८, ३९, ४१. अल० २:३-७. ४:१६-१७. ५०:३९. इला० १:३-५, १३. २:२. ३:३७. ५:१, २, ४. ६:१५-१९, ३९. ७:४. ८:२७, २८. अध्याय ९. ३ नफी १:१. ३:१. ६:१९, २१-३०. ७:१, ३. (६) ओम० २३-२५. मोरमन की वाणी ३, १०-१८. मू० अध्याय १-६. (७) मू० ११:१-१५. १२:१७-१९. १७:१-२०.

ईसा से लगभग ९२ वर्ष तक

देखो, उन पर कितना विनाश आया; और उनके पापों के कारण ही उनको दासता (८) में लाया गया था।

१९. और अगर उनके पश्चात्ताप के कारण उनके विवेकी रचयिता की मध्यस्थता न होती, तब वे अब तक दासता में ही होते।

२०. लेकिन देखो, उसने उनको मुक्त किया, क्योंकि (९) वे उसके समक्ष दीन बन गए; और उन्होंने उसको बहुत पुकारा इसलिए उसने उनको दासता में से मुक्त किया; और इसी प्रकार प्रभु लोगों में अपनी शक्ति द्वारा काम करते हुए उनकी ओर अपनी दया का हाथ बढ़ाता है जो कि उस पर विश्वास करते हैं।

२१. और सुनो, अब मैं तुमसे कहता हूं कि किसी राजा को बिना बहुत अधिक विवाद और रक्त पात के सिंहासन पर से हटाया नहीं जा सकता।

२२. क्योंकि देखो, पापकर्म में उसके मित्र उसके साथी होते हैं, और वह अपने अंगरक्षकों को अपने साथ रखता है और उससे पूर्व जो धार्मिकता के साथ शासन कर चुके हैं, उनके नियमों को वह नष्ट कर देता है और वह परमेश्वर के नियमों को भी पैरों तले रौंदता है।

२३. और वह अपने पापों के अनुकूल नए नियमों को बना कर लोगों में भेजता है; और जो उसके नियमों का पालन नहीं करता उसको वह नष्ट कर देता है; और जो उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं उनके विरुद्ध युद्ध करने के लिए वह अपनी सेना भेजेगा और अगर उससे हो सकेगा तो वह उनको नष्ट कर देगा; और इस तरह एक अधर्मी राजा परमेश्वर के सभी रास्तों को भ्रष्ट कर देता है।

२४. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि इस प्रकार की घृणापूर्ण स्थितियां तुम्हारे ऊपर आना हितकर नहीं होगा।

२५. इसलिए लोगों के (१०) मत के अनुसार निर्णायकों को चुनो जिससे कि तुम्हारा न्याय उन नियमों के अनुसार हो, जो तुम्हारे पूर्वजों के द्वारा बनाए गए थे, और जो कि ठीक हैं और जो कि प्रभु के हाथ द्वारा उनको दिए गए थे।

२६. यह सामान्य नहीं कि उचित बातों के विपरीत लोगों का मत हो परन्तु यह सामान्य है कि थोड़े लोगों की इच्छा अनुचित बात के अनुकूल हो—इसलिए तुम इसका पालन करो और लोगों की इच्छा के अनुसार काम करना, अपना नियम बना लो।

२७. और ऐसा समय आता है जबकि लोकमत दुराचार का चुनाव करती है, तब वह समय होगा जबकि परमेश्वर का न्याय तुम्हारे ऊपर आएगा; हां (११) यह वह समय होगा जबकि वह बहुत बड़े विनाश के साथ तुम्हारे पास आएगा जैसा कि वह इस देश में पहले भी आ चुका है।

२८. और अगर तुम्हारे निर्णायक ऐसे हों जो दिए गए नियमों के अनुसार तुम्हारा न्याय न करें तब तुम उनका न्याय उच्च न्यायाधीशों के द्वारा करवा सकोगे।

२९. अगर तुम्हारे उच्च न्यायाधीश न्याय-पूर्वक निर्णय न करें, तब तुम अपने कुछ साधारण निर्णायकों को एकत्रित करके लोगों के (१२) मतानुसार उनका न्याय करवा सकते हो।

३०. मैं प्रभु के भय से तुम्हें यह सब करने की आज्ञा देता हूं; और मैं इसलिए भी यह आज्ञा तुम्हें देता हूं कि जिससे तुम्हारे ऊपर कोई राजा न रहे; और अगर ये लोग पाप करेंगे तब ये स्वयं जिम्मेदार होंगे।

३१. क्योंकि देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि बहुत से लोगों के पाप उनके राजाओं के दुराचार के कारण हुए हैं; इस कारण उनके पापों का उत्तरदायित्व उनके राजाओं पर पड़ा।

३२. और अब मैं इच्छुक हूं कि यह पाप इस देश में, विशेषकर इन लोगों में न किया जाए; परन्तु मैं चाहता हूं कि यह (१३) देश स्वतन्त्रता का हो और हर एक मनुष्य अपने अधिकारों और उपलब्धियों का पूरा आनन्द तब तक उठा सके, जब तक कि प्रभु इस देश में हमें रहते हुए इस पर हमारा अधिकार देखना उचित समझता हो;

(८) मू० १२:२-८. (९) मू० २१:१४. २२:५-१४. (१०) देखो ५. (११) अल० २:३-७. १०:१९. इल० ५:२. ६:३८-४०. (१२) देखो ५. (१३) २ नफी १:७. अल० ४६:१०-२८, ३४-३६.

हां, यहां तक कि जब तक हमारी सन्तति इस देश में रहे।

३३. और राजा मूसायाह ने एक धार्मिक राजा की परीक्षाओं और कष्टों का भेद खोलते हुए उनको अन्य बहुत सी बातें लिखीं; हां, उसने लोगों की आत्माओं की कष्टपूर्ण बातें, और लोगों द्वारा अपने राजाओं से की जाने वाली असन्तोष की बातें उनको समझायीं।

३४. और उसने उनको बताया कि ये बातें नहीं होनी चाहिए; अपितु बोझ (१४) सब के ऊपर होना चाहिए जिससे कि हर एक अपने भाग के बोझ को ढोए।

३५. और एक अधर्मी राजा के शासन के अन्तर्गत जो हानि उनको उठानी पड़ती है, उसका भेद भी उसने लोगों पर खोल दिया।

३६. हां, उसके सभी दुराचार, घृणित कार्य, युद्ध, विवाद, रक्तपात, चोरी, लूटमार, व्यभिचार और सभी प्रकार के पापाचार जिनकी गिनती नहीं की जा सकती, सबका भेद खोलते हुए उसने उनसे कहा कि ये सब बातें नहीं होनी चाहिए, क्योंकि ये परमेश्वर के नियमों का भारी विरोध करती हैं।

३७. और ऐसा हुआ कि जब राजा मूसायाह ने लोगों में इन बातों को भेजा तब उसकी बातों पर उनको विश्वास हो गया।

३८. इस कारण राजा की इच्छा लोगों ने त्याग दी और वे इस बात के भारी इच्छुक हो गए कि सारे देश में सभी को (१५) समान अवसर प्राप्त हो; और हर एक मनुष्य अपने पापों का उत्तरदायित्व अपने ही ऊपर लेने की इच्छा प्रकट करे।

३९. इसलिए ऐसा हुआ कि सारे (१६) देश में लोग समूहों में मत द्वारा उन निर्णायकों को चुनने के लिए एकत्रित हुए जो दिए गए नियम के अनुसार उनका न्याय कर सके; और वे इस दिए गए अधिकार के लिए अत्यन्त ही प्रसन्न हुए।

४०. और मूसायाह के प्रति उनके प्रेम में भारी वृद्धि हुई और वे उसको अन्य लोगों से अधिक आदर की दृष्टि से देखने लगे; क्योंकि लोग उसे जनता के शासक और स्वार्थी के रूप में नहीं देखते थे; हां, उसमें आत्मा को नष्ट कर देने वाली लोलुपता नहीं थी; क्योंकि उसने लोगों से धन नहीं लिया और रक्तपात में भी वह आनन्द नहीं लिया; लेकिन उसने देश में शान्ति स्थापित की, और लोगों को किसी भी प्रकार के बन्धन में न रख कर उन्हें मुक्त रखा; इस कारण लोग उसको इतना आदर करते थे जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

४१. और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने ऊपर शासन करने के लिए ऐसे निर्णायकों को (१७) नियुक्त किया जो उनका न्याय नियमों के अनुसार कर सकें; और यह कार्य उन्होंने सारे देश भर में किया।

४२. और ऐसा हुआ कि अलमा जो कि (१८) प्रधान पुरोहित था और जिसकी नियुक्ति उसके पिता ने की थी और जिनको गिरजा के सभी विषयों का अधिकार दिया गया था, उसको प्रथम प्रधान नियुक्त किया गया।

४३. तब ऐसा हुआ कि अलमा प्रभु के अनुकूल चलता रहा, और उसने उसके नियमों का पालन किया और न्यायपूर्वक निर्णय करता रहा और देश में लगातार शान्ति बनी रही।

४४. इस प्रकार सारे जराहेमला (१९) देश में और नफायटी कहे जाने वाले लोगों में न्यायाधीशों का (२०) शासन आरम्भ हुआ; और अलमा प्रथम मुख्य न्यायाधीश हुआ।

४५. और तब ऐसा हुआ कि उसका पिता बयासी वर्ष का होकर, परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा कर, मृत्यु को प्राप्त हुआ।

४६. और ऐसा हुआ कि मूसायाह अपने शासन के तैंतीसवें वर्ष में (२१) तिरसठ वर्ष की आयु का होकर स्वर्गवासी हो गया; और इस समय लेही को यरूशलेम छोड़े कुल पांच सौ नौ वर्ष हुए थे।

४७. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर राजाओं के (२२) शासन का अन्त हो गया; और इस प्रकार अलमा का भी (२३) अन्त हो गया जो कि उनकी गिरजा का संस्थापक था।

(१४) देखो ५. (१५) देखो ५. (१६) देखो १३. (१७) देखो ५. (१८) देखो ७, मू० २६. (१९) देखो ५. (२०) ओम० १३. (२१) मू० ६:४. (२२) पद्य ४१, ४२. (२३) पद्य ४५.

अलमा की पुस्तक

अलमा के पुत्र

नफी के लोगों का सर्वोच्च निर्णायक, और गिरजा के प्रधान पुरोहित प्रथम अलमा के पुत्र द्वितीय अलमा का विवरण। निर्णायकों के शासन और लोगों में युद्ध और विवाद का विवरण। सर्वोच्च निर्णायक प्रथम अलमा के लेखानुसार नफायटी और लमनायटियों में युद्ध का भी विवरण।

अध्याय १

गिरजा के शत्रु निहोर द्वारा गिडियन की हत्या—न्याय के लिए उसको लाया जाना और प्राण दण्ड—पुरोहिती छल और उपद्रव—सुधारी गई परिस्थितियां—पुरोहित और साधारण जनता एक समान।

१. ऐसा हुआ कि नफी के लोगों पर निर्णायकों के शासन के प्रथम वर्ष में, जनता का अच्छा हित करके, परमेश्वर के सीधे पथ पर चल कर, अपने स्थान पर शासन करने के लिए बिना उत्तराधिकारी को नियुक्त किए ही, राजा मुसायाह उसी राह से होकर (१) गुजर गया, जिस राह से होकर संसार के सभी लोग जाते हैं; फिर भी उसने ऐसे नियम बनाए थे जिनको लोगों ने स्वीकार किया; इसलिए लोग सहर्ष (२) उसके बनाए नियमों के अनुसार रहते थे।

२. न्याय के आसन पर अलमा के बैठने के प्रथम वर्ष में (३) एक पुरुष जो डीलडौल में लम्बा चौड़ा था और अपने बल के लिए प्रसिद्ध था, न्याय के लिए उसके सामने लाया गया।

३. उसने गिरजा के विरुद्ध, जनता में भ्रमपूर्ण प्रचार को, परमेश्वर की वाणी कह कर प्रचार करते हुए घोषणा की कि हर एक पुरोहित और शिक्षक को लोकप्रिय बनना चाहिए; और अपनी जीविका के लिए उन्हें अपने हाथों से परिश्रम (४) नहीं करना चाहिए, अपितु उनका भरण-पोषण लोगों के द्वारा होना चाहिए।

४. उसने लोगों से यह भी बतलाया कि अन्तिम दिन (५) हर एक मनुष्य को बचा लिया जाना चाहिए और उन्हें न तो भयभीत होना चाहिए और न ही भय से कांपना चाहिए, बल्कि उन्हें सिर ऊपर उठा कर आनन्द मनाना चाहिए, क्योंकि प्रभु ने सभी मनुष्यों को रचा है, और उसने सभी का उद्धार भी किया है; और अन्त में सभी मनुष्यों को अनन्त जीवन भी प्राप्त होगा।

५. और ऐसा हुआ कि उसने इन बातों का इतना अधिक प्रचार किया कि बहुत से लोग उसकी बातों पर विश्वास करने लगे, और उसे धन दे कर सहायता पहुंचाने लगे।

६. और वह अपने मन ही मन घमंड से फूलने लगा, और मूल्यवान वस्त्र पहनने और अपने विचारों के अनुसार गिरजा की स्थापना भी करने लगा।

७. और ऐसा हुआ कि जब वह अपनी बातों का प्रचार उन लोगों में करने जा रहा था जो उसका विश्वास करते थे तब उसकी भेंट एक व्यक्ति से हुई जो परमेश्वर के गिरजे का था और एक शिक्षक भी था और वह उससे घोर विवाद करने लगा जिससे कि वह गिरजा के लोगों को अपनी ओर कर सके; लेकिन उस व्यक्ति ने उसका प्रतिरोध करके परमेश्वर की वाणी द्वारा उसको सदुपदेश दिया।

८. उस व्यक्ति का नाम गिडियन था और यही वह व्यक्ति था जो लिमही के लोगों को दासता से मुक्त कराने के लिए परमेश्वर (६) के हाथों का साधन बना था।

९. गिडियन ने उसकी सभी बातों का परमेश्वर की वाणी द्वारा प्रतिरोध किया जिससे वह गिडियन पर क्रोधित हो उठा और अपनी तलवार खींच कर उस पर वार करने लगा। इस समय गिडियन

(१) मू० २९:४६. (२) पद्य १४, १८. (३) पद्य १५. (४) मू० १८:२४, २६, २७:३-५. (५) अल० १५:१५; २१:६.
(६) मू० २२:३-१६.

वृद्ध हो चुका था, इसलिए वह उसके वारों का सामना न कर सका और उसकी तलवार से वह मारा गया।

१०. और जिसने उसको मारा था उसको पकड़ कर गिरजा के लोगों ने, अलमा के समक्ष उसके अपराध के अनुसार, उसका न्याय करने के लिए ले आए।

११. और ऐसा हुआ कि अलमा के समक्ष खड़े होकर निर्भीकता के साथ उसने अपने लिए प्रतिवाद किया।

१२. लेकिन अलमा ने उससे कहा : देखो, लोगों में पहली बार पुरोहिती छल का प्रचार हुआ है। और सुनो, तुम न केवल पुरोहिती-छल के अपराधी हो, परन्तु तुमने तलवार के बल पर उसको कार्यान्वित करने की चेष्टा भी की है; और अगर इन लोगों में पुरोहिती-छल बलपूर्वक लाया गया तो वह इन लोगों का पूरी तरह विनाश सिद्ध होगा।

१३. और तुमने एक (७) धार्मिक मनुष्य का रक्त बहाया है, हां, एक ऐसे मनुष्य का जिसने कि इन लोगों के हित के लिए बहुत काम किए थे; और अगर हम तुम्हें छोड़ दें, तब उसका रक्त क्रोध में हमारे ऊपर बदला लेने आएगा।

१४. इसलिए हमारे अन्तिम राजा मूसायाह ने हमें जो नियम दिए हैं और जो कि इन लोगों के द्वारा स्वीकार किए गए हैं, उस नियम के अनुसार तुमको (८) प्राणदण्ड दिया जा रहा है क्योंकि उस नियम का पालन लोगों के द्वारा किया ही जाना चाहिए।

१५. और ऐसा हुआ कि लोग उसे जिसका नाम (९) निहोर था, मण्टी नामक पहाड़ की चोटी पर ले गए और वहां उसने स्वर्ग और पृथ्वी के मध्य स्वीकार किया कि जो कुछ उसने लोगों को सिखाया था, वह सब परमेश्वर की वाणी के विरुद्ध था, और वहां उसे कलंकपूर्ण मृत्यु प्राप्त हुई।

१६. फिर भी, इससे देश में (१०) पुरोहिती-छल के प्रसार का अन्त नहीं हुआ; क्योंकि बहुत से ऐसे लोग थे जो व्यर्थ की सांसारिक वस्तुओं से प्रेम करते थे और जाकर झूठे मत का प्रचार (११) धन और प्रतिष्ठा के लिए करते थे।

१७. फिर भी, कहीं पता न लग जाए इस भय से कोई झूठ बोलने का साहस नहीं करता था क्योंकि असत्य बोलने वालों को दण्ड देने का विधान था; इसलिए वे अपने विश्वास के अनुसार प्रचार करने का बहाना करते थे; और इस प्रकार (१२) अपने विश्वास के कारण कोई मनुष्य कानून के अधिकार में नहीं आता था।

१८. और नियम के भय से वे (१३) चोरी करने का भी साहस नहीं करते थे क्योंकि चोरी करने वालों को दण्ड दिया जाता था; और न वे किसी को लूटते और न ही हत्या करते, क्योंकि हत्या करने वालों को प्राणदण्ड दिया जाता था।

१९. लेकिन ऐसा हुआ कि जो लोग परमेश्वर की गिरजा के नहीं थे, वे परमेश्वर की गिरजा के लोगों को कष्ट देने लगे, और (१४) मसीह का भी नाम उन्होंने अपने ऊपर ले लिया।

२०. हां, उन्होंने उनको कष्ट दिया और व्यंगों द्वारा हर प्रकार के दुःख पहुंचाए क्योंकि वे विनम्र थे; और उन्हें अपने ऊपर कोई अहंकार नहीं था और परमेश्वर की वाणी का, बिना मोल के, बिना पैसे के, एक दूसरे से आदान-प्रदान करते थे।

२१. गिरजा के लोगों में एक कठोर नियम था कि गिरजा के लोग उन लोगों को (१५) दुःख न दें जो गिरजा से बाहर थे और न ही गिरजा के लोग आपस में किसी को सतायें।

२२. फिर भी उन में बहुत से ऐसे लोग थे जो अहंकारी होने लगे और अपने विरोधियों से भारी विवाद करने लगे; यहां तक कि मार-पीट करने लगे; हां, अपने मुक्कों से एक दूसरे पर (१६) प्रहार करते।

२३. यह अलमा के शासन के दूसरे वर्ष में हुआ और यह गिरजा के दुर्भाग्य का भारी कारण हुआ; हां, यह गिरजा के लिए भारी परीक्षा की घड़ी थी।

२४. क्योंकि बहुतों के हृदय कठोर हो गए, इसलिए उनके नामों को (१७) मिटा दिया गया,

(७) पद्य ६. (८) पद्य १.१८. (९) अल० २:१, २०.१६:११.२४:२८-३०. (१०) पद्य ५, ६, १२. (११) पद्य ५, ६, १२. (११) पद्य ५, ६. (१२) अल० ३०:७-१२. (१३) अल० ३०:१०. (१४) देखो ५, मू० ५. (१५) पद्य २२-२५. (१६) पद्य २१, २३. (१७) मू० २६:३२, ३६.

ईसा से ९१ वर्ष पूर्व

जिससे कि प्रभु के लोगों में वे स्मरण नहीं किए जाते थे। और बहुतों ने अपने को उनसे अलग भी कर लिया।

२५. जो लोग विश्वास में दृढ़ थे उनके लिए यह एक महान परीक्षा थी, फिर भी वे दृढ़ रहे और परमेश्वर के नियमों के पालन में अडिग रहे और उन्होंने अपना उत्पीड़न धीरज के साथ सहन किया।

२६. और अब (१८) पुरोहितों ने परमेश्वर की वाणी के प्रचार के लिए (१९) परिश्रम करना बन्द कर दिया तब लोगों ने भी परमेश्वर की वाणी को सुनने के लिए परिश्रम करना बन्द कर दिया। और जब पुरोहित ने लोगों को परमेश्वर की शिक्षा दी, तब पुनः सबकी लगन वापस लौट आई; और पुरोहित अपने आपको अपने श्रोताओं से अधिक नहीं समझते थे, क्योंकि प्रचारक श्रोताओं से श्रेष्ठ नहीं होते, और न ही शिक्षक सीखने वालों से अच्छे होते हैं; इस प्रकार वे सब एक समान थे और सभी अपनी शक्ति के अनुसार परिश्रम करते थे।

२७. और हर एक मनुष्य (२०) अपनी वस्तुओं को जो उसके पास होती उन्हें कंगालों और जिसको आवश्यकता होती उनको, रोगियों और दुःखियों को देता; और वे मूल्यवान वस्त्र धारण नहीं करते फिर भी वे साफ-सुथरे रहते थे।

२८. इस प्रकार उन्होंने गिरजा के कार्यों को स्थापित किया; और अपने ऊपर किए जाने वाले उत्पीड़नों के होने पर भी, उन्होंने पुनः शान्ति प्राप्त की।

२९. और गिरजा की स्थिरता के कारण लोग बहुत ही सम्पन्न हो गए और उनकी आवश्यकता की सभी वस्तुएं उनके पास बहुतायत से हो गईं— उनके पास पशु-पक्षी, सभी पालतू पशु बछड़े, अनाज, सोना, चांदी आदि मूल्यवान धातु (२१) रेशम, सन के उत्तम धागों के बने और दूसरे प्रकार के सुन्दर वस्त्र हो गए।

३०. इस प्रकार अपनी उन्नति के समय में उन्होंने किसी (२२) नंगे, भूखे, प्यासे, रोगी या जिसको सेवा की आवश्यकता हो उसे कभी निराश नहीं लौटाया; और उन्होंने अपने हृदयों में धन का लालच भी कभी नहीं किया। इसलिए वे सभी के प्रति उदार बने रहे, चाहे बूढ़ा हो या बालक; परतन्त्र हो या स्वतन्त्र, स्त्री हो या पुरुष, गिरजा से बाहर हो या गिरजा में, चाहे कंगालों के प्रति आदर रखने वाले हो या नहीं।

३१. इस प्रकार जो उनकी गिरजा के अनुयायी नहीं थे, उनसे वे बहुत अधिक सम्पन्न हो गए।

३२. क्योंकि जो लोग उनकी गिरजा में नहीं थे, वे टोना टोटका, मूर्ति पूजा, आलस, बकवास, द्वेष और विवाद में समय व्यतीत करते; और मूल्यवान कपड़े पहनते; अहंकार में भरे रहते; झूठ बोलते, चोरी करते, लोगों को लूटते, व्यभिचार करते, हत्या करते और हर एक प्रकार के पापाचार करते; फिर भी, जहां तक हो सकता था, (२३) नियम को उन पर लागू किया जाता था, जो नियम को भंग करते थे।

३३. और ऐसा हुआ कि इस प्रकार नियम को लागू करने से जिसके अन्तर्गत जो जैसा करता है, वैसा ही दण्ड भी पाता है, लोग कुछ शान्त हुए और दूसरों की जानकारी में दुष्कर्म करने का साहस नहीं करते; इसलिए निर्णायकों के शासन के पांचवे वर्ष तक नफी के लोगों में बहुत शान्ति बनी रही।

अध्याय २

अमलिकी का राजा बनने का प्रयत्न करना—बहुमत द्वारा उसको अस्वीकार किए जाने पर भी उसका राजा बनना—युद्ध में उसकी हार—उसका लमनायटियों से मिलना—अलमा का अमलिकी को मारना और उसकी सेना को नष्ट करना।

१. और ऐसा हुआ कि शासन के* पांचवे वर्ष के आरम्भ में लोगों के बीच विवाद होने लगा; क्योंकि अमलिकी नाम का एक व्यक्ति बहुत बड़ा धूर्त और सांसारिक मामलों में चतुर था। वह उसी प्रकार का (१) व्यक्ति था जिसने

(१८) देखो ३, मू० ६. (१९) मू० १८:२४, २६. २७:४, ५. (२०) देखो १०, या० २. (२१) मू० १०:५. अल० ४:६. इला० ६:१३. (२२) देखो १०, याकू० २. (२३) पद्य १४, १७, १८, ३३. मू० २९:१५, ४१. अध्याय २. (१) अल० १:१५.

*ईसा से लगभग ९० वर्ष पूर्व

(२) गिडियन को तलवार से मार डाला था और जिसको (३) मृत्यु-दण्ड नियम के अनुसार दिया गया था।

२. अमलिकी ने अपनी धूर्तता से बहुत लोगों को अपनी ओर खींच लिया; इतना कि वे बहुत ही प्रबल हो गए और अमलिकी को अपना राजा बनाने का प्रयत्न करने लगे।

३. इसने गिरजा के लोगों को, और जो लोग अमलिकी के आग्रह पर उसकी ओर नहीं हुए थे, उनको सावधान किया; क्योंकि वे जानते थे कि उनके नियम के अनुसार ऐसे कार्य (४) जनता की इच्छा के द्वारा ही हो सकते हैं।

४. अगर अमलिकी ने जनता को अपने पक्ष में कर लिया तब दुष्ट व्यक्ति होने के कारण, गिरजा के लोगों के अधिकारों और सुविधाओं को वह नष्ट कर देता; क्योंकि परमेश्वर की गिरजा को नष्ट करना उसका उद्देश्य था।

५. और ऐसा हुआ कि अधिक मतभेद और विलक्षण विवादों के कारण, सारे देश में लोग, अपने विचारों के अनुकूल अलग-अलग दो दलों में अमलिकी के पक्ष या विपक्ष में एकत्रित हुए।

६. इस प्रकार एकत्रित होकर उन्होंने अपने मतों के विचारों को निर्णायकों के समक्ष रखा।

७. और ऐसा हुआ कि (५) बहुमत अमलिकी को राजा न बनने के पक्ष में हुआ।

८. इससे जो लोग अमलिकी के विपक्ष में थे, उनके हृदय आनन्द से भर उठे; लेकिन जो लोग उसके पक्ष में थे उनको अमलिकी ने भड़का कर, अपने विपक्षियों के विरुद्ध क्रोधित कर दिया।

९. और ऐसा हुआ कि उन लोगों ने एकत्रित होकर अमलिकी को अपने राजा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

१०. जब अमलिकी को उनका राजा बनाया गया तब उसने उनको आज्ञा दी कि वे अपने भाइयों के विरुद्ध युद्ध-हथियार ग्रहण करें; उसने अपने विरोधियों को अपने अधीन करने के लिए ऐसा किया।

११. अब अमलिकी के पक्ष वाले लोग अमलिसायटी कहे जाने लगे और बाकी लोग नफायटी या परमेश्वर के लोग कहलाने लगे।

१२. नफी के लोग अमलिसायटियों की अभिलाषा को जानते थे, इसलिए वे उनका सामना करने के लिए तैयारी करने लगे; हां, उन्होंने अपने आपको (६) तलवारों, छुरियों, तीर कमानों, पत्थरों, ढेलवासों आदि नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित किया।

१३. इस प्रकार अमलिसायटियों के आने के समय उनका सामना करने के लिए वे तैयार हो गए। और उनकी संख्या के अनुसार उपनायक, नायक और सेनाध्यक्ष नियुक्त किए गए।

१४. और ऐसा हुआ कि अमलिकी ने भी अपने लोगों को, उनके भाइयों से युद्ध करने के लिए, हर एक प्रकार के युद्ध-हथियारों से सुसज्जित करके, युद्ध-भूमि में ले जाने के लिए उनमें शासक और मुखियों को नियुक्त किया।

१५. और ऐसा हुआ कि अमलिसायटी लोग अमनिहू पहाड़ पर आए जो कि उस (७) सिदोन नदी के पूरब में था, जो कि (८) ज़राहेमला देश के निकट से होकर बहती थी, और वहां वे नफायटियों से युद्ध करने लगे।

१६. नफी के लोगों का (९) मुख्य निर्णायक और शासक होने के कारण अलमा अपने लोगों, (१०) नायकों और सेनाध्यक्षों के साथ सेना के आगे-आगे अमलिसायटियों से युद्ध करने के लिए चला।

१७. और वे (११) सिदोन से पूरब में (१२) पहाड़ पर अमलिसायटियों को मारने लगे। अमलिसायटी भी शक्ति के साथ नफायटी लोगों से युद्ध करने लगे जिससे कि नफायटी अमलिसायटियों के द्वारा मारे गए।

(२) अल० १:८. (३) अल० १:१५. (४) देखो ५, मू० २९. (५) देखो ५, मू० २९:२५-२७. (६) २ नफी ५:१४. इनो० २०. ज० ८. मू० १०:८. अल० ३:५. ४३:१८-२०. इला० १:१४. ३ नफी ३:३६. मा० ६:९. (७) पद्य १७, २७, ३४, ३५. अल० ३:३. ४:४. ६:७. ८:३, १६:६, ७. २२:२७. ४३:२२, २७, ३२, ३५, ३९-४१, ५०-५३, ४४:२२. ४९:१६. ५०:११. ५६:२५. मार० १:१०. (८) ओम १३. (९) मू० २९:४२. (१०) पद्य १३, १४. (११) देखो ७. (१२) पद्य १५. ईसा से ८७ वर्ष पूर्व

१८. फिर भी प्रभु ने नफायटियों के हाथों को दृढ़ कर दिया और उन्होंने इतना अधिक अमलिसायटियों को मारा कि वे उनके सामने से भागने लगे।

१९. और ऐसा हुआ कि नफायटी पूरे दिन अमलिसायटियों का पीछा करते रहे और उनकी बहुत बड़ी संख्या को मार डाला। अमलिसायटियों के कुल बारह हज़ार पांच सौ बत्तीस और नफायटियों के छ: हजार पांच सौ बासठ योद्धा मारे गए।

२०. और ऐसा हुआ कि जब अलमा अमलिसायटियों का और पीछा न कर सका, तब उसने अपने लोगों को (१३) गिडियन की घाटी में तम्बू लगाने की आज्ञा दी। यह घाटी उस गिडियन के नाम पर थी जो कि (१४) निहोर द्वारा तलवार से मारा गया था और इसी घाटी में रात बिताने के लिए नफायटियों ने तम्बू लगाया।

२१. और अलमा ने बचे हुए अमलिसायटियों का पीछा करने के लिए भेदियों को भेजा जिससे कि वह उनकी योजनाओं और षड्यन्त्रों को जान सके ताकि वह उनसे अपने आपकी रक्षा करे और अपने लोगों को नष्ट होने से बचा सके।

२२. उसने जिनको अपने साथियों को अमलिसायटियों के पड़ाव देखने भेजा था, उनके नाम थे —जेराम, अमनोर, मण्टी और लिमहोर; ये वे लोग थे जो अपने-अपने लोगों के साथ अमलिसायटियों के पड़ाव पर दृष्टि रखने के लिए भेजे गए थे।

२३. और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन वे वापस नफायटियों के पड़ाव में तीव्र गति से विस्मित और भयभीत हुए आए और बोले :

२४. सुनो, हमने (१५) अमलिसायटियों के पड़ाव का अनुसरण किया और (१६) ज़राहेमला देश के ऊपर मिनोन देश में (१७) नफी के देश की राह पर लमनायटियों की एक बहुत बड़ी भीड़ को देख कर हम विस्मित रह गए; और देखो, अमलिसायटी उन्हीं से मिल गए हैं।

२५. और उन्होंने उस देश में हमारे भाइयों पर आक्रमण कर दिया है; और वे अपने पशुओं, पत्नियों और बच्चों के साथ (१८) हमारे नगर की ओर भाग रहे हैं; और अगर हम लोगों ने शीघ्रता नहीं की तब वे हमारे नगर को अपने अधिकार में कर लेंगे, और हमारे पिता, पत्नियां और बच्चे मारे जाएंगे।

२६. और ऐसा हुआ कि नफी के लोग अपने-अपने तम्बुओं को ले कर (१९) गिडियन की घाटी से निकल कर अपने ज़राहेमला नगर की ओर चले।

२७. और देखो, जबकि वे (२०) सिदोन नदी पार कर रहे थे, तब लमनायटियों और अमलिसायटियों ने, जो समुद्र की बालू के समान असंख्य थे, उनको नष्ट करने के लिए उन पर आक्रमण कर दिया।

२८. अपने शत्रुओं के हाथों से रक्षा करने के लिए नफायटियों ने प्रभु से बहुत प्रार्थना की, इसलिए प्रभु ने उनकी विनती को सुना और वे प्रभु के हाथ द्वारा शक्तिमान किए गए, और लमनायटी और अमलिसायटी उनसे परास्त हुए।

२९. और ऐसा हुआ कि अलमा ने अमलिकी से आमने-सामने होकर तलवार द्वारा युद्ध किया और दोनों ने एक दूसरे को परास्त करने के लिए भारी द्वन्द किया।

३०. और ऐसा हुआ कि अलमा ने जो कि परमेश्वर का आदमी था और जो भारी विश्वास रखता था पुकारा : हे प्रभु, दया करो और मेरी जान बचाओ जिससे कि मैं इन लोगों को बचाने और सुरक्षित रखने के लिए आपके हाथों का साधन बनूं।

३१. इन शब्दों के कहने के पश्चात् अलमा ने पुन: अमलिकी के साथ द्वन्द किया; और उसको इतना बलवान बना दिया था कि उसने तुरन्त अमलिकी को तलवार से मार डाला।

३२. और उसने लमनायटियों के राजा से भी युद्ध किया, परन्तु लमनायटियों का राजा भाग खड़ा हुआ और उसने अलमा से युद्ध करने के लिए अपने अंगरक्षकों को भेजा।

३३. लेकिन अलमा और उसके अंगरक्षक

(१३) पद्य २६. मू० २२:३-१६. अल० १:८, ९. ६:७. ८:१. (१४) देखो ९. अल० १. (१५) पद्य १, ११. ३:४, १३-१८. (१६) ओ० १३. (१७) देखो २, २ नफी ५. (१८) जराहेमला. (१९) देखो १३. (२०) देखो ७. ईसा से ८७ वर्ष पूर्व

उनसे तब तक युद्ध करते रहे, जब तक कि उन्होंने उनमें से कुछ को मार न डाला और दूसरों को भगा न दिया।

३४. इस प्रकार उसने (२१) सिदोन नदी के पश्चिम तट को शत्रुओं से साफ कर दिया और जो लमनायटी मारे गए थे उनके शवों को सिदोन नदी में फिकवा दिया, जिससे कि उसके लोग सिदोन नदी के पश्चिम की ओर जा कर लमनायटियों और अमलिसायटियों से युद्ध करने के लिए राह बना सकें।

३५. और ऐसा हुआ कि जब सब लोग नदी पार कर चुके, तब भी लमनायटियों और अमलिसायटियों की इतनी अधिक संख्या थी कि गिनती भी नहीं हो सकती थी, फिर भी वे उनका सामना न करते हुए, जान बचा कर भागे।

३६. वे देश के पश्चिम की ओर सीमा से दूर वन की ओर भागे और नफायटियों ने अपनी शक्ति के अनुसार उनका पीछा किया और बहुतों को मार डाला।

३७. हां, उनको चारों ओर से घेर कर तब तक मारा और खदेड़ा गया जब तक कि वे पश्चिम और उत्तर की ओर तितर-बितर होकर उस वन में प्रवेश न कर गए जिसको हिरमन्त कहा जाता था, और यह वन का वह भाग था जो जंगली और हिंसक पशुओं से भरा हुआ था।

३८. और ऐसा हुआ कि बहुत से घायल उस वन में मर गए, जिनको हिंसक पशु और गिद्ध खा गए; और उनकी हड्डियों को वहां पाया गया है और धरती पर ढ़ेर लगा दिया गया है।

अध्याय ३

अमलिसायटियों का चिन्ह और लमनायटियों पर अभिशाप—नफायटियों की एक और विजय।

१. और ऐसा हुआ कि जो नफायटी लोग युद्ध के हथियारों से मारे गए, वे अपने मृतकों को दफ़नाने के पश्चात् अपनी-अपनी भूमि में अपने घरों पर अपनी पत्नियों और बच्चों के पास वापस लौट आए। उनके मृतकों को गिना नहीं गया क्योंकि उनकी संख्या बहुत ही अधिक थी।

२. बहुत-सी स्त्रियां और बच्चे भी तलवार के द्वारा मारे गए थे और उनके पशु-पक्षियों को भी मार डाला गया था; उनके बहुत से खेतों की उपज भी नष्ट हो गई थी, क्योंकि लोगों की भीड़ के पैरों तले वह कुचल गई थी।

३. और जितने लमनायटी और अमलिसायटी (१) सिदोन नदी के तट पर मारे गए थे उनके शरीरों को (२) सिदोन नदी के जल में फेंक दिया गया; और देखो, उनकी हड्डियां (३) समुद्र के गहरे जल में हैं, जो संख्या में बहुत हैं।

४. और अमलिसायटी अपने माथे के (४) लाल चिन्ह के द्वारा नफायटियों से अलग पहिचाने जाते थे; फिर भी वे लमनायटियों की तरह अपने (५) सिरों को मुंड़ाते नहीं थे।

५. लमनायटियों के सिर मुंड़े हुए होते, और कमर पर चर्म लपेटे रहने के अलावा उनका सारा शरीर (६) नंगा रहता और वे कवच (७), धनुष वाण, पत्थर, ढेलवांस आदि कसे रहते।

६. और जिस प्रकार उनके पूर्वजों के चर्म अपने भाइयों, जिनमें नफी, याकूब, यूसुफ, और साम थे, और जो धर्मी और पवित्र थे, के विरुद्ध नियम-उल्लंघन और विद्रोह करने के कारण चिन्ह स्वरूप श्राप द्वारा (८) काले कर दिए गए थे, उसी प्रकार लमनायटियों के चर्म भी काले थे।

७. उन लोगों को नष्ट करने का प्रयत्न उनके भाई कर रहे थे, इस कारण उन्हें शापित किया गया और प्रभु परमेश्वर ने उनके ऊपर एक (९) चिन्ह लगाया; हां, लमान, लेमुएल और इस्माईल के लड़कों और इस्मलायटी स्त्रियों पर चिन्ह लगाया गया।

८. और यह इसलिए किया गया कि जिससे उनके वंशज उनके भाइयों के वंशजों से अलग पहचाने जा सकें और प्रभु परमेश्वर अपने लोगों को सुरक्षित रखें, और वे उन असत्य परम्पराओं

(२१) देखो ७. (१) अल० २:३४. (२) देखो ७, अल० २. (३) अल० ४४:२२. (४) पद्य १३, १५, १६, १८, १९. (५) पद्य ५. इनो० २०. (६) इनो० २०. अल० ४६:२०. (७) देखो ६, अल० २. (८) देखो ४, १ नफी २. (९) देखो ४. १ नफी २.

में विश्वास न करने लगे जो कि उनके विनाश का कारण बन जाए।

९. और ऐसा हुआ कि जिस किसी ने भी अपने वंशजों को लमनायटियों के वंशजों में मिलने दिया, वह उनके श्राप को अपने वंशजों के ऊपर भी लाया।

१०. इसलिए जो लमनायटियों के बहकाने में आ जाता, उसे भी उन्हीं में गिना जाता और उसके ऊपर भी चिन्ह लगाया जाता।

११. और ऐसा हुआ कि उस समय से जो भी लमनायटियों की परम्पराओं में विश्वास न कर यरूशलेम से लाए हुए अभिलेखों पर और अपने पूर्वजों की उचित परम्पराओं पर विश्वास करता, और जो परमेश्वर की आज्ञाओं पर विश्वास करता और उसका पालन करता, ऐसे सब लोग नफायटी अर्थात् नफी के लोग कहे जाते थे।

१२. और यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने लोगों का और लमनायटियों का (१०) अभिलेख रखा।

१३. और अब हम पुन: अमलिसायटियों की ओर लौटेंगे क्योंकि उनके ऊपर भी एक चिन्ह रखा गया; हां, उन्होंने स्वयं अपने ऊपर एक चिन्ह लगाया और वह (११) माथे पर लाल चिन्ह था।

१४. इस तरह परमेश्वर का वचन पूरा हुआ क्योंकि उसने जो शब्द नफी से कहे थे वे ये थे: देखो, मैंने लमनायटियों को श्राप दिया है और मैं उन पर एक चिन्ह लगाऊंगा जिससे कि वे और उनके वंश इस समय से आगे सदैव तुमसे और तुम्हारे वंश से अलग किए जा सकें; परन्तु अगर उन्होंने पश्चात्ताप किया और वे मेरी ओर लौटे, तब मैं उन पर दया करूंगा।

१५. और पुन: मैं उस पर भी एक चिन्ह लगाऊंगा, जो अपने वंशजों को तुम्हारे भाइयों के वंशजों के साथ इसलिए मेल-मिलाप करता है कि वे भी शापित हो जायें।

१६. और पुन: जो तुम्हारे वंशजों के विरुद्ध लड़ेंगे, उन पर मैं एक (१२) चिन्ह लगाऊंगा।

१७. और मैं पुन: कहता हूं कि जो तुम्हें छोड़ कर अलग होंगे वे तुम्हारे वंश के नहीं कहलाएंगे; और मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशज कहे जाने वालों को, आज से और सदैव के लिए आशीर्वाद दूंगा; प्रभु के ये ही वचन नफी और नफी के वंशजों के लिए थे।

१८. इस समय अमलिसायटियों को यह मालूम नहीं था कि वे (१३) अपने माथे पर चिन्ह लगा कर परमेश्वर की वाणी को पूरा कर रहे हैं; फिर भी परमेश्वर के विरुद्ध खुले रूप में उतर आए; इसलिए उनके ऊपर श्राप पड़ना आवश्यक हो गया।

१९. अब मैं चाहता हूं कि तुम यह देखो कि वे अपने ऊपर स्वयं श्राप लाये; और इसी प्रकार हर एक मनुष्य जो श्रापित है, स्वयं अपने ऊपर अपना नाश लाता है।

२०. ऐसा हुआ कि जराहेमला देश में लमनायटियों और अमलिसायटियों द्वारा जो युद्ध लड़ा गया था, उसे हुए अभी बहुत दिन नहीं बीते थे जबकि लमनायटियों की एक दूसरी सेना ने नफी के लोगों के ऊपर उसी स्थान पर चढ़ाई कर दी (१४) जिस स्थान पर उनकी प्रथम सेना अमलिसायटियों से मिली थी।

२१. और ऐसा हुआ कि एक सेना उन्हें उस देश से भगाने के लिए भेजी गई।

२२. इस बार अलमा घायल होने के कारण लमनायटियों से युद्ध करने के लिए न जा सका।

२३. लेकिन उसने उनसे लड़ने के लिए एक बहुत बड़ी सेना भेजी; जिसने जा कर बहुत से लमनायटियों को मार डाला, और बचे हुओं को अपने देश की सीमा के बाहर खदेड़ दिया।

२४. और तब वे वापस लौट आए और उन्होंने फिर से देश में शान्ति स्थापित की; और कुछ दिनों तक, शत्रुओं से उनको कोई कष्ट नहीं पहुंचा।

२५. *ये सब युद्ध और विवाद निर्णायकों के शासन के पांचवें वर्ष में आरम्भ और समाप्त हुए।

२६. और एक ही वर्ष में हज़ारों हज़ारों जीवात्माएं अनन्त जगत में भेज दी गईं, जिससे कि वे अपने कर्मफल को प्राप्त करें; बुरे या भले कर्मो के

(१०) देखो ६, १ नफी १. (११) देखो ४. (१२) देखो ४. (१३) पद्य ४. (१४) अल० २:२४. *ईसा से ८७ वर्ष पूर्व

अनुसार वे अनन्त आनन्द या (१५) अनन्त कष्ट भली या बुरी (१६) आत्मा की आज्ञाओं का पालन करते हुए भोगेंगे।

२७. क्योंकि भविष्यवाणी के अनुसार, मनुष्य, जिसकी आज्ञा का पालन करना स्वीकार करता है, उसी से वह अपना वेतन भी पाता है; इसलिए इसे सत्य के अनुसार होने दो। इस प्रकार निर्णायकों के शासन का पांचवां वर्ष समाप्त हुआ।

अध्याय ४

गिरजा का विस्तार—सफलता, अहंकार और पाप—नफीह् का मुख्य निर्णायक बनाया जाना।

१. ऐसा हुआ कि नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन* छठे वर्ष में (१) ज़राहेमला देश में कोई उपद्रव या युद्ध नहीं हुआ।

२. लेकिन उनको (२) अपने भाइयों, (३) पशु-पक्षियों और खेत के जो अनाज लमनायटियों के पैरों के द्वारा रौंदने से नष्ट हो गए थे, उन सबके लिए बहुत अधिक कष्ट हुआ।

३. उनको इतने अधिक दुःख थे कि हर एक आत्मा को रोने का कोई न कोई कारण था; और वे यह विश्वास करते थे कि उनके ऊपर उनकी ही दुष्टता और घृणित कार्यों के कारण, यह विपत्ति परमेश्वर द्वारा न्याय-दण्ड के लिए भेजी गयी थी; इसलिए वे अपने कर्तव्य के प्रति सजग हो गए।

४. और वे गिरजा की स्थापना और अधिक पूर्णता के साथ करने लगे; और बहुत से लोग (४) सिदोन के जल में (५) बपतिस्मा ले कर परमेश्वर की गिरजा में (६) सम्मिलित हो गए; जिन्होंने बपतिस्मा लिया, उनको उस अलमा के हाथ से बपतिस्मा दिया गया जिसको उसके पिता अलमा के हाथों, गिरजा का (७) प्रधान पुरोहित नियुक्त किया गया था।

५. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन के †सातवें वर्ष में तीन हज़ार पांच सौ लोगों ने गिरजा के साथ संयुक्त होकर (८) बपतिस्मा ग्रहण किया। इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का सातवां वर्ष समाप्त हुआ; इस समय लगातार शान्ति बनी रही।

६. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन के ‡आठवें वर्ष में अधिक धन (९) उत्तम रेशम और सूती कपड़ों, पशु-पक्षियों, सोना, चांदी आदि मूल्यवान वस्तुओं, जिन्हें गिरजा के लोगों ने उद्योग कर प्राप्त किया था, उन सबके कारण उनको अधिक अहंकार हो गया; और उनकी दृष्टि में इनका महत्व भी अधिक होने लगा और वे मूल्यवान वस्त्र पहनने लगे।

७. इससे अलमा और जिन लोगों को अलमा ने गिरजा का शिक्षक, पुरोहित, और प्रचारक (१०) नियुक्त किया था, उन सबको बहुत अधिक क्लेश होने लगा; उनमें से अनेकों को अपने लोगों में दुष्टता का प्रारम्भ देख कर बहुत ही शोक हुआ।

८. क्योंकि उन्होंने दुःख के साथ देखा कि उनकी आंखों में अहंकार हो गया है, और वे (११) सांसारिक धन सम्पत्ति और व्यर्थ की वस्तुओं में मन लगाए हुए हैं, जिससे वे एक दूसरे का तिरस्कार करने लगे और जो उनके विचारों और इच्छाओं से मेल नहीं रखते थे उन्हें वे कष्ट देने लगे।

९. और इस प्रकार निर्णायकों के शासन के आठवें वर्ष में गिरजा के लोगों में भारी विवाद होने लगा क्योंकि उनमें ईर्ष्या, विरोध, डाह, उत्पीड़न (१२) अहंकार, जो लोग परमेश्वर के गिरजा से बाहर थे, उनसे भी अधिक हो गया।

१०. इस प्रकार निर्णायकों के शासन का आठवां वर्ष समाप्त हुआ; और गिरजा के लोगों की दुष्टता गिरजा से बाहर के लोगों के लिए भारी बाधा बन गयी, और इस प्रकार गिरजा की प्रगति रुकने लगी।

११. और ऐसा हुआ कि **नौवें वर्ष के आरम्भ

(१५) देखो १३, या० ६. (१६) देखो १७, मू० २. अध्याय ४. (१) ओ० १३. (२) अल० २:१९. ३:१, २६. (३) अल० ३:२. (४) देखो २१, २ नफी ९. (५) देखो ७, अल० २. (६) देखो ४, मू० २६. (७) देखो ७, मू० २६. (८) देखो २१, २ नफी ९. (९) देखो २१, अल० १. (१०) देखो ३, मू० ६. (११) पद्य ६, ९-१२. (१२) देखो ११. *ईसा से ८६ वर्ष पूर्व †ईसा से ८५ वर्ष पूर्व ‡ईसा से ८४ वर्ष पूर्व **ईसा से ८३ वर्ष पूर्व

में अलमा ने गिरजा की (१३) दुष्टता को देखा और उसने यह भी देखा कि गिरजा के उदाहरण अविश्वास करने वालों को एक दुराचार से दूसरे दुराचार की ओर ले जा रहे हैं; और इस तरह उनका विनाश होने लगा है।

१२. हां, उसने लोगों में बहुत अधिक असमानता देखी, क्योंकि कुछ लोग अहंकार में भरे हुए दूसरों की अवहेलना करते और उनकी ओर पीठ फेर लेते जो (१४) आवश्यकता में होते, नंगे होते, भूखे होते, प्यासे होते या बीमार और दुख में होते।

१३. जब, इसके कारण लोगों में बहुत दुख था, तब भी लोग अपने आपको दीन बना कर उन लोगों की सहायता कर रहे थे, जिनको उनकी सहायता की आवश्यकता थी। (१५) जैसे वस्तुओं को देना, भूखों को भोजन देना और मसीह, जो भविष्य-वाणी की भावनानुसार आने वाला था, उसके लिए सभी तरह के कष्ट झेलना।

१४. उस दिन की प्रतीक्षा में, इस प्रकार उन्होंने अपने पापों पर प्रायश्चित द्वारा क्षमा का अधिकार प्राप्त किया था; और मसीह की इच्छा और शक्ति के द्वारा मरे हुए लोगों के (१६) पुनर्जीवन और मृत्यु (१७) की बेड़ियों से मुक्त होने के कारण वे आनन्द में भरे हुए थे।

१५. और ऐसा हुआ कि अलमा परमेश्वर के दीन अनुयायियों के दुख और उनके ऊपर शेष लोगों द्वारा लादे गए कष्टों को देख (१८) कर बहुत दुखी हुआ; फिर भी प्रभु की पवित्र आत्मा ने उसकी अवहेलना नहीं की।

१६. और उसने गिरजा के (१९) वयस्क लोगों में से एक बुद्धिमान व्यक्ति को चुन कर लोगों की (२०) इच्छानुसार उसको अधिकार दिया कि जिससे उसके पास यह शक्ति रहे कि वह लोगों से उनके पापों और अपराधों के अनुसार उनसे दिए (२१) गए नियमों का पालन करवा सके।

१७. जिस व्यक्ति को प्रधान निर्णायक नियुक्त किया गया था उसका नाम नफीह था; वह न्याय के आसन पर बैठ कर लोगों का न्याय और शासन करने लगा।

१८. इस समय अलमा ने उसे गिरजा का (२२) प्रधान पुरोहित नियुक्त नहीं किया, क्योंकि प्रधान पुरोहित के पद को उसने स्वयं अपने पास रखा; परन्तु उसने न्याय आसन को नफीह को दे दिया।

१९. और उसने यह इसलिए किया कि जिससे वह अपने लोगों, अर्थात् नफी के लोगों को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक करने के लिए, परमेश्वर की वाणी का प्रचार कर सके, जिससे कि परमेश्वर की वाणी द्वारा उनके अहंकार, धूर्तता, और विवाद को निकाल सके, क्योंकि उसने देखा कि शुद्ध साक्षी के अतिरिक्त उन्हें बचाने का और कोई उपाय नहीं था।

२०. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के नौवें वर्ष के आरम्भ में अलमा ने न्याय-आसन को (२३) नफीह को दे दिया, और वह स्वयं दिव्य-ज्ञान और भविष्यवाणी के अनुसार उसकी वाणी के साक्ष्य के लिए परमात्मा की धार्मिक व्यवस्था में (२४) प्रधान-पुरोहित पद के काम में पूरी तरह लग गया।

अध्याय ५

प्रधान पुरोहित अलमा का देश भर के नगरों और गांवों में लोगों को पवित्र प्रभु के अनुसार वाणी को सुनना

उसका गिरजा के अनुभवों का फिर से वर्णन करना—दुष्कर्मों की भर्त्सना करना—लोगों से पश्चात्ताप करने को कहना।

१. और ऐसा हुआ कि *अलमा पहिले (१) ज़राहेमला देश में, फिर सारे देश भर में, लोगों को परमेश्वर की वाणी सुनाने लगा।

२. और उसी के लेखानुसार, ज़राहेमला नगर में स्थापित गिरजा के लोगों को, उसने इन बातों को, यह कहते हुए सुनाया:

(१३) देखो ११. (१४) देखो १०, या० २. (१५) देखो १०, या० २. (१६) देखो ४, २ नफी २. (१७) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (१८) पद्य ३-१२. (१९) पद्य ७. (२०) देखो ५, मू० २९. (२१) अल० १:१, १४, १८. (२२) देखो ७, मू० २६. (२३) पद्य १७, १८, अल० ८:१२. (२४) देखो ७, मू० २६. अध्याय ५. (१) ओम० १३.

*ईसा से लगभग ८३ वर्ष पूर्व

३. मैं अलमा हूं और मेरे पिता अलमा ने परमेश्वर से (२) सामर्थ्य और अधिकार प्राप्त करके, मुझे परमेश्वर की गिरजा का (३) प्रधान पुरोहित नियुक्त किया है, और सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि नफी के देश की सीमाओं के देश में, उसने एक गिरजा की स्थापना आरम्भ की थी; हां, उस देश का नाम (४) मॉरमन देश था; और उसने अपने भाइयों को मॉरमन के जल में (५) बपतिस्मा दिया।

४. और देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर की दया और शक्ति के द्वारा उनको राजा नूह के हाथों से (६) मुक्त किया गया था।

५. और देखो, इसके पश्चात् उन्हें, लमनायटियों के हाथों द्वारा (७) जंगली प्रदेश में दासता में लाया गया; हां, मैं तुमसे कहता हूं कि वे बन्दी थे परमेश्वर ने पुनः अपनी वाणी की शक्ति के द्वारा उन्हें (८) मुक्त किया; और हम इस देश में लाए गए और (९) इस पूरे देश में भी हम परमेश्वर के गिरजा की स्थापना करने लगे।

६. और अब, मेरे भाइयो, मैं तुम से कहता हूं कि तुम, जो इस गिरजा के लोग हो, क्या तुमने अपने पूर्वजों की (१०) दासता की बातें पर्याप्त रूप से स्मरण रखी हैं? और क्या तुमने उसकी दया और दीर्घ कष्टों को भी पर्याप्त रूप से स्मरण रखा है; और क्या तुमने इसका भी पर्याप्त रूप से स्मरण रखा है कि उसने उनकी आत्माओं को (११) अधोलोक से बचा लिया है?

७. देखो, वह उनके हृदयों में परिवर्तन लाया; हां, उसने उनको गहरी नींद से जगाया और वे परमेश्वर के प्रति जागृत हुए। सुनो, वे अन्धकार के बीच में थे, फिर भी अनन्त जगत के प्रकाश से उनकी आत्मा प्रकाशित की गई; हां, वे मृत्यु की (१२) बेड़ियों से और अधोलोक की जंजीरों (१३) से जकड़े हुए थे, और सदैव के लिए सर्वनाश उनकी प्रतीक्षा में था।

८. और अब, मेरे भाइयो, मैं तुमसे पूछता हूं कि क्या वे नष्ट हो गए? देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं।

९. और मैं तुमसे पुनः पूछता हूं कि क्या (१४) मृत्यु के बन्धन तोड़ दिए गए या नहीं और अधोलोक की (१५) जंजीरें जो उनको जकड़े हुए थी, खोल दी गईं या नहीं? मैं तुमसे कहता हूं कि हां, उन्हें खोल दिया गया और उनकी आत्मा विकसित हुई और उन्होंने मुक्तिदायक प्रेम के गीत गाए। और मैं तुमसे कहता हूं कि वे बचा लिए गए।

१०. और अब मैं तुमसे पूछता हूं कि किस परिस्थिति में बचे हुए हैं? हां, वे किस आधार पर मुक्ति की आशा कर सकते हैं? मृत्यु की बेड़ियों और (१६) अधोलोक (१७) की जंजीरों से उन्हें मुक्त करने का क्या कारण है?

११. सुनो, कारण मैं बता सकता हूं—क्या अलमा, मेरे पिता ने, (१८) अभिनन्दी के मुख से कही गई बातों पर विश्वास नहीं किया? और क्या वे पवित्र भविष्यवक्ता नहीं थे? क्या उन्होंने प्रभु की वाणी को नहीं कहा जिस पर मेरे पिता ने विश्वास किया?

१२. और उनके विश्वास के अनुसार उनके हृदय में भारी परिवर्तन हुआ। देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि यह सब सत्य है।

१३. और सुनो, उन्होंने उन बातों को (१९) तुम्हारे पूर्वजों को भी बतलाया और उनके हृदयों में भी महान परिवर्तन हुए, और उन्होंने अपने आपको विनीत बना कर सच्चे और चेतन प्रभु पर विश्वास किया और देखो, वे (२०) अन्त तक विश्वासी बने रहे; इसलिए वे बचा लिए गए।

१४. और अब, देखो गिरजा के मेरे भाइयो, क्या तुमने (२१) परमात्मा से आध्यात्मिक रूप से जन्म लिया है? क्या तुमने अपनी आकृति में उसकी किरणों को प्राप्त किया है? क्या तुमने अपने हृदयों में महान परिवर्तन का अनुभव किया है?

(२) देखो ७, मू० २६. (३) देखो ७. मू० १८. (४) देखो २, मू० १८. (५) देखो २१, २ नफी ९. (६) मू० २३:१-३. (७) मू० २३:३७-३९. २४:८-१५. (८) मू० २४:१७-२५. (९) पद्य १. (१०) देखो ६ और ७. (११) देखो ११, १ नफी १५. (१२) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (१३) देखो १६, २ नफी २८. (१४) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (१५) देखो १६, २ नफी २८. (१६) देखो ७, और ६, २ नफी ९. (१७) देखो १६, २ नफी २८. (१८) मू० १७:२-४. (१९) मू० १८:१-३१. (२०) २ नफी ३१:१५. (२१) देखो ३, मू० ५.

ईसा से लगभग ८३ वर्ष पूर्व

१५. जिसने (२२) तुम्हें रचा है, उसकी मुक्ति पर क्या तुम विश्वास करते हो? क्या तुम विश्वास की आंख से इस पार्थिव शरीर को अमर (२३) बनते और इस भ्रष्टता को शुद्ध बनते देख सकते हो कि इस पार्थिव शरीर में किए गए कर्मों के अनुसार न्याय के लिए परमेश्वर के समक्ष खड़े होना होगा?

१६. मैं तुमसे कहता हूं कि क्या उस दिन प्रभु की उस वाणी को सुनने की कल्पना तुम कर सकते हो जो यह कहती थी: तुम जो सौभाग्यशाली हो, मेरे पास आओ, क्योंकि सुनो, इस धरती के ऊपर तुम्हारे कर्म न्यायनिष्ठ रहे हैं।

१७. या कि तुम यह समझते हो कि उस दिन तुम प्रभु से यह झूठ बोल सकोगे कि हे प्रभु, इस धरती के ऊपर हमारे कर्म धर्मानुसार रहे हैं—और वह तुम्हें बचा लेगा?

१८. या फिर, तुम परमेश्वर के न्यायालय में, (२४) अपने अपराधों और पश्चात्ताप से भरी हुई आत्माओं को लेकर, अपने सभी अपराधों की स्मृति लेकर, और परमेश्वर की आज्ञाओं की अवज्ञा की याद को लेकर, अपने आपको लाए जाने की कल्पना कर सकते हो?

१९. मैं तुमसे कहता हूं कि क्या तुम उस दिन शुद्ध हृदय और निर्मल हाथों से परमेश्वर की ओर देख सकते हो? मैं तुमसे कहता हूं कि क्या तुम अपनी आकृति के ऊपर परमेश्वर की खुदी हुई मूर्ति को लेकर ऊपर देख सकते हो?

२०. मैं तुमसे कहता हूं कि क्या तुम (२५) शैतान के वशीभूत होकर बचाने की बात सोच सकते हो?

२१. मैं कहता हूं, उस दिन तुम जानोगे कि तुम बच नहीं सकते; अपने वस्त्रों को बिना उज्ज्वल धोए कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता; हां, जिसके विषय में हमारे पूर्वजों ने कहा है कि वह अपने लोगों को मुक्त करने आएगा उसके (२६) रक्त से तब तक उन्हें अपने वस्त्रों को शुद्ध करते रहना चाहिए जब तक कि वे सब धब्बों से धुल कर निर्मल न हो जाएं।

२२. और अब मेरे भाइयो, मैं पूछता हूं कि तुम अगर रक्तरंजित और नाना प्रकार के मैल से मैले वस्त्र के साथ परमेश्वर के न्यायालय में खड़े हुए; तब तुम्हें कैसा अनुभव होगा?

२३. क्या वे यह साक्षी नहीं देंगे कि तुम हत्यारे और सभी प्रकार की दुष्टता के अपराधी हो?

२४. देखो मेरे भाइयो, क्या तुम सोचते हो कि कोई ऐसा व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में इब्राहीम, इसाक, याकूब, और पवित्र भविष्यवक्ताओं के साथ, जिन के वस्त्र निर्मल धुले हुए, बेदाग शुद्ध और उज्ज्वल हैं, बैठ सकता है?

२५. मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं; तुम केवल रचयिता को आरम्भ से झूठा ठहराना चाहते हो, या मान लो कि वह आरम्भ से झूठा है, फिर भी तुम यह नहीं सोच सकते कि स्वर्ग के राज्य में ऐसे लोगों को स्थान मिल सकेगा; परन्तु उन्हें बाहर फेंक दिया जाएगा क्योंकि वे (२७) शैतान के राज्य के बच्चे हैं।

२६. और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूं मेरे भाइयो कि अगर हृदय परिवर्तन का अनुभव तुम्हें है और अगर तुमने आनन्द दाई प्रेम के गीत को गाने की इच्छा की है, तब मैं तुमसे पूछता हूं कि क्या इस समय भी तुम्हारी यही इच्छा है?

२७. क्या तुमने यात्रा करते हुए अपने आपको परमेश्वर के सामने निर्दोष रखा है? अगर इस समय तुम्हें मरने के लिए पुकारा जाये, तब तुम क्या स्वत: कह सकते हो कि तुम पर्याप्त विनीत थे? और तुम्हारे वस्त्र उस मसीह के (२८) रक्त से धुल कर उज्ज्वल हो गए हैं; जो कि अपने लोगों का, उनके पापों से उद्धार करने के लिए आएगा?

२८. देखो, क्या तुम अहंकार रहित हो गए हो? मैं तुमसे कहता हूं कि अगर नहीं, तब तुम परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार नहीं हो। सुनो, तुम्हें शीघ्र तैयार हो जाना चाहिए क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है और ऐसे लोग जो तैयार नहीं हैं उन्हें अनन्त जीवन नहीं मिलेगा।

२९. देखो, तुममें से क्या कोई ऐसा है जिसने द्वेष नहीं छोड़ा है? मैं तुमसे कहता हूं कि वह तैयार नहीं है; परन्तु मैं चाहता हूं कि वह शीघ्र तैयार हो ले, क्योंकि वह समय निकट है, और वह यह नहीं जानता

(२२) देखो १२, मू० ५. (२३) देखो ४, २ नफी २ और १०, १३, ३ नफी ९. (२४) देखो १४, २ नफी ९. (२५) देखो १७, मू० २. (२६) देखो ६, २ नफी २. (२७) देखो ९, २ नफी ९. (२८) देखो ६, २ नफी २. ईसा से लगभग ८३ वर्ष पूर्व

कि वह समय कब आ पहुंचेगा, और तब ऐसा व्यक्ति निर्दोष नहीं ठहरेगा।

३०. और मैं तुमसे पुन: कहता हूं कि क्या तुममें कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपने भाई की हंसी उड़ाता या उसको कष्ट देता है?

३१. सन्ताप हो ऐसे व्यक्ति को, क्योंकि वह तैयार नहीं है और वह समय निकट है जबकि उसे अपने किए पर पश्चात्ताप करना चाहिए वरना वह बच नहीं सकता।

३२. हां, तुम सब पाप कर्म करने वालों पर सन्ताप हो; पश्चात्ताप करो, क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने यह कहा है।

३३. देखो, उसने सभी मनुष्यों को निमन्त्रण भेजा है क्योंकि दया का हाथ उनकी ओर फैलाया गया है, और वह कहता है: पश्चात्ताप करो, और मैं तुम्हें स्वीकार करूंगा।

३४. हां, वह कहता है: मेरे पास आओ, और (२९) जीवन के वृक्ष के फल खाने में भाग लो; हां, तुम स्वतन्त्रता के साथ जीवन की रोटी और जल खाओगे और पिओगे।

३५. हां, मेरे पास धार्मिक कर्मों को लेकर आओ, तब तुमको काट कर (३०) अग्नि में नहीं डाला जाएगा—

३६. क्योंकि देखो, जो कोई अच्छा फल नहीं लाता अर्थात् जो कोई धार्मिक कर्म नहीं करता उसी के लिए रोने चिल्लाने के कारण हो सकते हैं।

३७. हे, पापकर्म करने वालो; तुम जो व्यर्थ की सांसारिकता में फूले हुए हो, तुम जो धार्मिक राह जानने का बहाना करते हो, फिर भी उसी प्रकार भटक गए हो जैसे बिना गड़रिए की भेड़ें और यह भी नहीं जानते कि एक गड़रिए ने तुम्हें पुकारा और अब भी तुम्हें पुकार रहा है, लेकिन फिर भी तुम उसकी आवाज़ को नहीं सुन रहे हो।

३८. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि (३१) अच्छा गड़रिए तुम्हें पुकार रहा है; हां, वह अपने ही नाम पर तुम्हें पुकार रहा है और वह नाम है यीशु मसीह; और तुमने अगर उस अच्छे गड़रिए की उस आवाज़ को नहीं सुना, जिस नाम से तुम पुकारे जाते हो, तब देखो, तुम अच्छे गड़रिए की भेड़ें नहीं हो।

३९. और अब अगर तुम उस (३२) अच्छे गड़रिए की भेड़ें नहीं हो, तब तुम किस बाड़े की हो? सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हारा गड़रिया शैतान है, और तुम उसी के बाड़े की हो; और अब इसे कौन अस्वीकार कर सकता है? देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई अस्वीकार करता है वह झूठा और (३३) शैतान का बच्चा है।

४०. क्योंकि तुमसे कहता हूं कि (३४) जो कुछ उचित है वह परमेश्वर के पास से आता है, और जो कुछ अनुचित है वह शैतान के पास से आता है।

४१. इसलिए अगर एक आदमी (३५) अच्छे काम करता है, तब वह (३६) अच्छे गड़रिए की वाणी को सुनता और उसका अनुसरण करता है; और जो (३७) दुष्ट कर्म करता है, वह (३८) शैतान की सन्तान बनता है, क्योंकि वह उसी की आवाज़ को सुनता और उसका अनुसरण करता है।

४२. और जो ऐसा करता है वह उसी से अपना वेतन पाता है; इसलिए वेतन में वे मृत्यु पाते हैं, क्योंकि (३९) धार्मिकता संबंधी सभी कार्य उसके लिए मर चुके होते हैं।

४३. और अब मेरे भाइयो, मैं चाहता हूं कि तुम मेरी सुनो क्योंकि मैं अपनी आत्मा की शक्ति के साथ कहता हूं और मैंने तुमसे स्पष्ट और परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार कहा जिससे कि तुम भूल नहीं करो।

४४. क्योंकि (४०) यीशु मसीह के रूप में जो पवित्र प्रभु है, उसी के अनुसार इस तरह बोलने के लिए मेरी पुकार हुई है; हां, मुझे यह आज्ञा हुई है कि मैं भविष्य में होने वाली उन बातों की साक्षी दूं जिन्हें हमारे पूर्वजों के द्वारा कहा गया है।

४५. और यही सब कुछ नहीं है। क्या तुम नहीं

(२९) देखो २, १ नफी ८. (३०) देखो ११, १ नफी १५. (३१) पद्य ३९, ४१, ५७, ५९, ६०. इला० ७:१८. ३ नफी १५:२४. १६:१-५. १८:३१. (३२) देखो ३१. (३३) देखो ९, २ नफी ९. (३४) ओम० २५. ए० ४:१२. मरो० ७:१२-१९. १०:६. (३५) ३ नफी १४:१६-२०. (३६) देखो ३१. (३७) ३ नफी १४:१६-२०. (३८) देखो ९, २ नफी ९. (३९) देखो ३, २ नफी २. (४०) देखो ७, मू० २६.

जानते कि इन बातों को मैं स्वयं भी जानता हूं। सुनो, मैं जानता हूं कि जिन बातों को मैंने तुमसे कहा वह सत्य है। और तुम यह कैसे मानते हो कि मैं इन बातों को निश्चित जानता हूं?

४६. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर की पवित्रात्मा ने उन बातों की जानकारी मुझसे कराई है। देखो, इन बातों को स्वयं जानने के लिए मैंने कई दिनों तक (४१) उपवास और प्रार्थना की है। और अब मैं जानता हूं कि वे सब सत्य हैं; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने अपनी पवित्र-आत्मा के द्वारा उन बातों को मुझ पर प्रकट किया है; और दैवी-ज्ञान की यह भावना मेरे अन्दर है।

४७. और इसके अतिरिक्त, मैं तुमसे यह भी कहता हूं कि इस प्रकार मुझ पर यह प्रकट किया गया है कि हमारे पूर्वजों के द्वारा कही गई वे बातें, मेरी दैवी-ज्ञान की भावना और परमेश्वर की पवित्र-आत्मा द्वारा किए गए उद्‌घाटन के अनुसार सत्य है।

४८. मैं तुमसे कहता हूं कि भविष्य में होने वाली घटनाओं के विषय में जो कुछ मैं तुमसे कहूंगा वह मैं स्वयं जानता हूं कि सत्य है: और मैं तुमसे कहता हूं कि मैं यह भी जानता हूं कि पिता का इकलौता पुत्र यीशु मसीह जो दया, कृपा और सच्चाई से परिपूर्ण है, आएगा। और सुनो, वह जग के (४२) पापों को ले लेने के लिए आएगा; हां, जो सब लोग उसके नाम पर दृढ़ विश्वास रखते हैं उन सब के पापों को वह ले लेगा।

४९. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि (४३) मुझे आदेश हुआ है कि मैं अपने सब भाइयों को, जो इस देश में निवास करते हैं, उपदेश दूं; हां, वृद्धों और तरुणों को, दासों और स्वतन्त्र लोगों को; हां, मैं तुमसे कहता हूं कि आयु के अधिक, मध्य आयु के, और नई पीढ़ी के लोगों को पुकार कर सुनाऊं कि उनको पश्चात्ताप करके (४४) पुनर्जन्म लेना चाहिए।

५०. हां, आत्मा इस प्रकार कहती है: संसार के कोने-कोने के लोगों, पश्चात्ताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है; हां, परमेश्वर का पुत्र अपने गौरव, सामर्थ्य, वैभव, शक्ति और राज्य के साथ आ रहा है। हां, मेरे प्रिय भाइयो, मैं तुमसे कहता हूं कि आत्मा बोल रही है: देखो, सारे जगत के राजा की कीर्ति; और स्वर्ग के राजा का भी यश मानव वंश में शीघ्र ही चमकने वाला है।

५१. और हां, पवित्र-आत्मा मुझसे दीर्घ वाणी में कह रही है: जाओ और इन लोगों से कहो—पश्चात्ताप करो, क्योंकि बिना पश्चात्ताप किए तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

५२. और मैं पुन: तुमसे कहता हूं कि पवित्र-आत्मा कहती है: देखो, कुल्हाड़ी वृक्ष की जड़ पर रखी गयी है; इस कारण जो वृक्ष अच्छे फल नहीं देते उन्हें (४५) काट कर गिरा दिया जाएगा और उस अग्नि में फेंक दिया जाएगा जो कभी तृप्त नहीं होती। अर्थात् सुनो, और याद रखो कि यह पवित्र-आत्मा ने कहा है।

५३. और अब मेरे प्रिय भाइयो, मैं तुमसे कहता हूं, कि क्या तुम इन सब बातों का सामना कर सकते हो? क्या तुम इन सब बातों को अलग रख कर पवित्र आत्मा को पैरों तले कुचल सकते हो; क्या तुम अपने हृदयों के अहंकार में फूल सकते हो; क्या तुम अब भी (४६) मूल्यवान वस्त्र पहिनने के लिए हठ करोगे और संसार की व्यर्थ की वस्तुओं, तथा धन में अपना मन लगाओगे?

५४. क्या तुम अब भी अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानोगे; क्या तुम अब भी अपने उन भाइयों को कष्ट पहुंचाने के लिए हठ करोगे जो अपने आप को विनीत किए हुए हैं और पवित्र परमेश्वर की राह पर चलते हैं, जिनको पवित्र आत्मा द्वारा शुद्ध कर गिरजे में लाया गया है और जो ऐसे काम करते हैं, जो कि पश्चात्ताप के अनुकूल हैं।

५५. और हां, क्या तुम कंगालों और दीनों की ओर (४७) पीठ फेर कर अपनी वस्तुओं को उन्हें देना अस्वीकार करोगे।

५६. और अन्त में तुम सब जो अपने पापों में ही डूबे रहना चाहते हो, मैं तुमसे कहता हूं कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अगर शीघ्र पश्चात्ताप नहीं किया,

(४१) देखो २०, मू० २७. (४२) देखो ६, २ नफी २. (४३) देखो ७, मू० २६. (४४) देखो ३, मू० ५. (४५) पद्य ३५, ५६. या० ६:७, ३ नफी २७:११, १२. (४६) २ नफी २८:११-१४. मार० ८:३६, ३९. (४७) देखो १०, या० २.

तब उन्हें (४८) काट कर आग में फेंक दिया जाएगा।

५७. और अब, तुम सब, जो (४९) अच्छे गड़रिए की वाणी के अनुसार चलना चाहते हो, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम पापियों में से निकल आओ और अलग रहो, और उनकी अशुद्ध वस्तुओं को मत छुओ; और सुनो, उनका नाम (५०) मिटा दिया जाएगा, जिससे कि दुष्टों का नाम धार्मिक लोगों के नामों के साथ नहीं गिना जाएगा और परमेश्वर की वह वाणी पूरी होगी जो कहती है: पापियों के नामों को मेरे अपने लोगों के नामों के साथ मिश्रित नहीं किया जाएगा।

५८. क्योंकि सत्यनिष्ठ लोगों के नाम जीवन की पुस्तक में लिखे जाएंगे, और मैं उनको अपने दाहिने हाथ की ओर स्थान दूंगा। और अब मेरे भाइयो, इसके विपरीत तुम्हें क्या कहना है? मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुम इसके विपरीत कुछ कहते भी हो तो कोई बात नहीं, क्योंकि परमेश्वर की वाणी अवश्य ही पूरी होगी।

५९. क्योंकि तुममें कौन ऐसा गड़रिया है जिसके पास बहुत भेड़ें हों और वह भेड़ों की निगरानी नहीं रखता कि कोई भेड़िया प्रवेश कर उसकी भेड़ों को मार न डालें? और देखो अगर कोई भेड़िया उसकी भेड़ों में प्रवेश कर जाता है तब क्या उसे वह खदेड़ नहीं देता? और हां, अन्त में उससे हो सकेगा, तब वह उसे नष्ट भी कर देगा।

६०. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि (५१) अच्छा गड़रिया तुम्हें पुकार रहा है; और अगर तुमने उसकी पुकार को सुन लिया तब तुम्हें अपने बाड़े में लाएगा; तुम उसकी भेड़ें हो, और वह तुम्हें आज्ञा देता है कि अपने में किसी भेड़िये को मत आने दो, जिससे कि तुम नष्ट न हो जाओ।

६१. और अब मैं, अलमा उसकी भाषा में तुम्हें आज्ञा देता हूं कि मैंने जिन बातों को तुमसे कहा है उनका पालन करना।

६२. मैं तुम्हें वह आज्ञा देता हूं, जो कि गिरजा की आज्ञा है; और जो लोग गिरजा के नहीं हैं उनको यह कह कर आमन्त्रित करता हूं; आओ और (५२) पश्चात्ताप में बपतिस्मा लो जिससे कि तुम भी (५३) जीवन के वृक्ष के फल खाने में भागीदार बनो।

अध्याय ६

जो सुधार ज़राहेमला में आरम्भ हुआ उसका प्रसार गिडियन नगर में होना।

१. और ऐसा हुआ कि जिस गिरजा की स्थापना ज़राहेमला में हुई थी, उसके लोगों से जब अलमा ने कहना समाप्त किया, तब उसने गिरजा की अगुवाई और देखभाल करने के लिए पुरोहितों और उपदेशकों को, परमेश्वर की व्यवस्थानुसार हाथ धर कर (१) नियुक्त किया।

२. और ऐसा हुआ कि जो गिरजा के अनुयायी नहीं थे, उनमें से जिन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप किया, उन्हें (२) पश्चात्ताप में बपतिस्मा देकर गिरजा में स्वीकार किया गया।

३. और ऐसा भी हुआ कि गिरजा के जिन लोगों ने अपनी भूलों पर पश्चात्ताप नहीं किया और परमेश्वर के सामने अपने आप को विनीत नहीं किया—मेरा अर्थ उनसे है जो अपने हृदयों के अहंकार में भरे हुए थे—उनको अस्वीकार कर दिया गया और (३) उनके नामों को मिटा दिया गया जिससे उनके नामों की गिनती सत्यनिष्ठ लोगों में नहीं हुई।

४. इस प्रकार (४) ज़राहेमला नगर में गिरजा की व्यवस्था आरम्भ हुई।

५. अब मैं यह चाहता हूं कि तुम यह समझो कि परमेश्वर की वाणी सब के प्रति उदार थी और किसी को भी परमेश्वर की वाणी को सुनने के लिए एकत्रित होने से वंचित नहीं किया गया था।

६. फिर भी परमेश्वर की सन्तति को यह आज्ञा दी गई थी कि वे बहुधा एक साथ एकत्रित होकर जो लोग परमेश्वर को नहीं जानते थे, उनकी आत्मा की भलाई के लिए (५) उपवास और भारी प्रार्थना में सम्मिलित हों।

७. और तब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने इन

(४८) देखो ४५. (४९) देखो ३१. (५०) मू० २६:३२-३६. (५१) देखो ३१. (५२) देखो २१, २ नफी ९. (५३) देखो २, १ नफी ८. अध्याय ६. (१) देखो ३, मू० ६. (२) देखो २१, २ नफी ९. (३) मू० २६:३२-३६. अल० ५:५७, ५८. (४) ओ० १३. अल० २:२६. (५) देखो २०, मू० २७.

नियमों को बना दिया, तब वह ज़राहेमला में स्थित गिरजा से विदा होकर (६) सिदोन नदी के पूरब, (७) गिडियन की घाटी में गया; वहां उसने एक नगर को बसते देखा था जिसको गिडियन का नगर कहा जाता था और जो गिडियन की घाटी में था, जिसे उस गिडियन का नाम दिया गया था जो कि (८) निहोर के हाथों, तलवार से (९) मारा गया था।

८. और अलमा, अपने पूर्वजों द्वारा कही गई बातों के दैवी-ज्ञान की सत्यता और स्वयं अपने अन्दर की भविष्यवाणी की भावना के अनुसार और (१०) पवित्र व्यवस्था से लाये जाने वाले, परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की साक्षी के अनुसार जो कि अपने लोगों का पापों से उद्धार करने आएगा, (११) गिडियन की घाटी में स्थापित गिरजे में जाकर, परमेश्वर की वाणी की घोषणा करने लगा। और वह उसी प्रकार लिखी गई। आमीन।

अध्याय ७

अलमा के अभिलेख के अनुसार उसकी वे बातें जिसे उन्होंने गिडियन के लोगों को सुनाया। उसके उद्धारक की साक्षी—धार्मिकता के लिए उसका लोगों की प्रशंसा करना।

१. देखो मेरे प्रिय भाइयो, जब कि मुझे तुम्हारे पास आने का मौका दिया गया है; तब मैं तुमसे अपनी भाषा में बोलने का प्रयत्न करूंगा; हां, स्वयं अपने मुख से, और (१) न्याय आसन पर लगे रहने और बहुत से कार्यों में व्यस्त रहने के कारण मैं तुम्हारे पास न आ सका था, इसलिए मैं देख रहा हूं कि यह प्रथम बार है कि मैं तुमसे अपने मुख से बोल रहा हूं।

२. और अगर उस न्याय-आसन को किसी (२) दूसरे को नहीं दिया जाता, तब मैं, अब भी यहां नहीं आ सकता था। और प्रभु ने अत्यन्त दया कर मुझको तुम्हारे पास आने का अवसर दिया है।

३. और देखो, मैं बहुत बड़ी आशा और इच्छा लेकर आया हूं कि मैं तुमको परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन बनाए हुए पाऊंगा, और तुम उसकी कृपा प्राप्त करने के लिए सविनय प्रार्थना करते होंगे, जिससे कि मैं तुमको उसके सामने निर्दोष पाऊंगा और तुम्हें अपने ज़राहेमला के भाइयों की तरह भयानक संकट की स्थिति में नहीं पाऊंगा।

४. लेकिन धन्य है परमेश्वर का नाम, क्योंकि उन्होंने मुझे जानकारी दी है; हां, इस बात की महान आनन्ददायक जानकारी कि उसकी धार्मिकता में उनकी पुनः स्थापना हो गई है।

५. और परमेश्वर की जो आत्मा मेरे अन्दर है उसके अनुसार मैं विश्वास करता हूं कि मुझे तुमसे भी वही आनन्द प्राप्त होगा; लेकिन मैं नहीं चाहता कि तुमसे मेरा आनन्द (३) ज़राहेमला के लोगों की तरह अधिक दुख और कष्ट के पश्चात् प्राप्त हो, क्योंकि देखो, मेरा उनसे आनन्द बहुत से कष्टों और दुखों से होकर गुजरने के पश्चात् मिला है।

६. लेकिन देखो, तुम अपने भाइयों की तरह उतने अविश्वास की स्थिति में नहीं हो; मैं विश्वास करता हूं कि तुम अपने हृदयों के अहंकार में फूले हुए नहीं हो; मैं विश्वास करता हूं कि तुम (४) धन और व्यर्थ की सांसारिक वस्तुओं पर मन नहीं लगाए हुए हो; मैं विश्वास करता हूं कि तुम मूर्तिपूजक नहीं हो, परन्तु सच्चे चेतन परमेश्वर को पूजते हो और अपने पापों की क्षमा अपने अनन्त विश्वास के साथ चाहते हो।

७. क्योंकि सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि बहुत सी बातें होने को हैं—और देखो, उन सब से अधिक महत्व की एक बात है—क्योंकि वह समय दूर नहीं है जब कि मुक्तिदाता अपने लोगों में आकर रहेगा।

८. सुनो, मैं यह नहीं कहता कि वह अपने नश्वर मानव शरीर के रहते आएगा; क्योंकि आत्मा ने मुझसे नहीं कहा कि यह होगा; यह मैं नहीं जानता परन्तु मैं इतना अवश्य ही जानता हूं कि प्रभु परमेश्वर के पास वह शक्ति है जिसके द्वारा वह अपने कहे अनुसार सब कुछ कर सकता है।

(६) देखो ७, अल० २. (७) देखो १३, अल० २. (८) अल० १:९, १५. (९) अल० १:१५. (१०) देखो ७, मू० २६. (११) देखो १३, अल० २. अध्याय ७. (१) मू० २९:४२. (२) अल० ४:१६-१८. (३) ओम० १३. (४) देखो ४६, अल० ५.

ईसा से लगभग ८३ वर्ष पूर्व

९. लेकिन सुनो, पवित्र आत्मा ने मुझसे इतना कहते हुए कहा: इन लोगों से पुकार कर कहो—पश्चात्ताप करो, और प्रभु का रास्ता तैयार करो, और उस रास्ते पर चलो जो सीधा है; क्योंकि देखो स्वर्ग का राज्य निकट है, और पृथ्वी पर परमेश्वर का पुत्र आने वाला है।

१०. और सुनो, यरूशलेम, जो देश हमारे पूर्वजों का है, वहां वह (५) उस मरियम के पेट में जन्म लेगा जो कि (६) कुमारी होगी और जो अमूल्य चुनी हुई पात्र होगी जिसके ऊपर पवित्र आत्मा की छाया होगी और उसी की शक्ति के द्वारा वह गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी; हां वह परमेश्वर का पुत्र होगा।

११. और वह इस जगत पर नाना प्रकार की पीड़ा, दुख और प्रलोभन झेलेगा; और यह इस कारण होगा कि यह कहना सत्य सिद्ध हो कि वह (७) अपने लोगों की पीड़ा और रोगों को अपने ऊपर ले लेगा।

१२. और वह मृत्यु भी अपने ऊपर ले लेगा जिससे वह अपने लोगों की (८) मृत्यु के उस बंधन को भी खोल सके जो उसके लोगों को बांधे हुए है; और वह मानव शरीर के अनुसार उनकी दुर्बलताओं को भी अपने ऊपर ले लेगा जिससे कि उसका प्याला दया से भर उठेगा, और जिससे वह मानव शरीर की दुर्बलताओं के अनुसार अपने लोगों की सहायता कर सके।

१३. पवित्र आत्मा (९) सभी कुछ जानती है, परन्तु फिर भी परमेश्वर का पुत्र मनुष्य की तरह कष्ट झेलेगा जिससे कि वह अपने लोगों के (१०) पापों को अपने ही ऊपर ले जिससे कि वह अपनी मुक्त करने की शक्ति के द्वारा उनके नियम उल्लंघन को मिटा सके; और सुनो, जो साक्ष्य मुझमें है वह यही है।

१४. अब मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हें पश्चात्ताप करना चाहिए और (११) दुबारा जन्म लेना चाहिए क्योंकि आत्मा के लिए कहा गया है कि यदि तुम दुबारा जन्म नहीं लेते तब तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते; इसलिए आओ और (१२) पश्चात्ताप में बपतिस्मा ग्रहण करो, जिससे कि तुम अपने पापों से मुक्त किए जा सको और तुम परमेश्वर के उस मेमने पर विश्वास कर सको जो कि (१३) जगत के पापों को ले लेता है और जो कि सभी अधर्मों से शुद्ध करने और बचाने में बहुत ही शक्तिशाली है।

१५. हां, मैं तुमसे कहता हूं कि आओ, डरो मत, और अपने प्रत्येक पाप को एक तरफ रखो जो कि आसानी से तुम्हारे ऊपर आक्रमण करते हैं, और तुम्हें विनाश के बन्धन से नष्ट होने तक के लिए बांध डालते हैं, आओ और आगे बढ़ो और अपने परमेश्वर को दिखाओ कि तुम अपने पापों का प्रायश्चित करने के इच्छुक हो और उसके साथ उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए एक अनुबंध बनाने के इच्छुक हो और इस दिन (१४) बपतिस्मा के पानी के अन्दर जाकर इसकी साक्षी देने के भी इच्छुक हो।

१६. और जो कोई ऐसा करेगा और उस दिन से परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करेगा, उसे यह याद रहेगा कि मैं उससे कहता हूं, हां, उसे याद रहेगा कि मैंने उससे कहा था कि उसे अनन्त जीवन मिलेगा, जैसी कि पवित्र आत्मा मेरे अन्दर गवाही दे रही है।

१७. और अब मेरे प्रिय भाइयो, क्या तुम इन बातों पर विश्वास करते हो? देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि हां, मैं जानता हूं कि तुम विश्वास करते हो, और यह मैं उस पवित्र आत्मा के द्वारा जानता हूं जो मेरे अन्दर व्याप्त है। और अब इनमें, अर्थात्, जिन बातों को मैंने तुमसे कहा, उनमें तुम्हारा विश्वास दृढ़ होने के कारण मुझे महान आनन्द है।

१८. जैसा कि मैंने तुमसे आरम्भ से कहा कि मेरी यह बहुत बड़ी इच्छा थी कि मैं तुम्हें तुम्हारे (१५) भाइयों की तरह संकटमय स्थिति में न पाऊं और तुम्हें उसके अनुसार पाकर मेरी इच्छा सफलीभूत हुई।

१९. क्योंकि मैं देख रहा हूं कि तुम धर्मपथ पर चल रहे हो; मुझे ज्ञात है कि तुम उस पथ पर चल

(५) मु० ३:८. (६) १ नफी ११:१३-२१. मु० ३:८. (७) मु० १४:३-५. (८) देखो ७, और १०, २ नफी ९. (९) देखो १८, २ नफी ९. (१०) मु० १४:५, ८, १२. १५:१२. (११) देखो ३, मु० ५. (१२) देखो २१, २ नफी ९. (१३) देखो ६, २ नफी २. (१४) देखो २१, २ नफी ९. (१५) पद्य ३-६.

रहे हो जो तुम्हें परमेश्वर के राज्य तक ले जाएगा; हां, मैं देख रहा हूं कि उसके (१६) पथ को सीधा बना रहे हो।

२०. मैं देख रहा हूं कि उसके शब्दों के साक्ष्य द्वारा तुम्हें बतलाया गया है कि वह टेढ़े रास्ता पर नहीं चल सकता; और न तो वह अपनी कही बातों से बदल ही सकता है; न उसकी ऐसी छाया ही है जो दाहिने से बांए जा सके या उचित छोड़ कर अनुचित पर जाए; इस कारण उसका रास्ता सदैव (१७) एक समान ही रहता है।

२१. और वह (१८) अपवित्र मन्दिरों में नहीं रहता है; और न तो मलिनता या कोई अशुद्ध वस्तु ही परमेश्वर के राज्य में स्वीकार की जाएगी; इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि वह समय आएगा, और वह अन्तिम दिन होगा जब कि जो मलिन हैं वे (१९) मलिनता में ही रह जाएंगे।

२२. और अब मेरे प्रिय भाइयो, मैंने तुमसे इन बातों को इसलिए कहा कि जिससे मैं परमात्मा के प्रति जो तुम्हारे कर्तव्य हैं उसके प्रति तुम्हें सजग कर दूं, जिससे कि तुम उसके समक्ष निर्दोष जा सको और प्रभु की पवित्र व्यवस्था के अनुसार चल सको जिसको तुमने प्राप्त किया है।

२३. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि तुम विनीत बनो, विनम्र और नेक बनो; दूसरों के अनुरोध के प्रति सरल बनो, सहनशीलता से भरे रहो और कष्टों का सामना करते रहो; सभी बातों में शान्त रहो; हर समय परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में कर्मठ रहो; जिन आत्मिक और शारीरिक चीजों की तुम्हें आवश्यकता हो उसे (२०) मांगो, और जो कुछ तुम्हें प्राप्त हो उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दो।

२४. और तुम्हें सदैव इसका ध्यान रहे कि तुम्हारे पास (२१) विश्वास हो, आशा हो, कंगालों के लिए दान हो; और तब तुम अच्छे कामों में लगे रहोगे।

२५. और परमेश्वर तुमको आशीष दे, और तुम्हारे वस्त्रों को बेदाग रखे, जिससे कि अन्त में तुमको इब्राहीम, इसहाक और याकूब तथा उन पवित्र भविष्यवक्ताओं के साथ स्वर्ग में बैठने के लिए ले जाया जाए जो कि सृष्टि के आरम्भ से हैं, और तुम्हारे वस्त्र उसी तरह बेदाग होंगे जैसे उनके वस्त्र थे, और तुम वहां से कभी भी बाहर नहीं जाओ।

२६. और अब मेरे प्रिय भाइयो, मैंने इन बातों को उस पवित्र आत्मा के अनुसार ही कहा, जो कि मेरे अन्दर इनकी गवाही दे रही है; और मेरी आत्मा इस बात से अति आनन्दित हो रही है कि तुमने मेरी बातों को लगन के साथ ध्यान लगा कर सुना।

२७. और अब, परमेश्वर की कृपा तुम्हारे ऊपर, तुम्हारे घरों और भूमि के ऊपर, तुम्हारे पशु-पक्षियों के ऊपर, तुम्हारे पास जो कुछ भी हो उनके ऊपर, तुम्हारी स्त्रियों और बच्चों के ऊपर तुम्हारे विश्वास और अच्छे कर्मों के अनुसार आज से और सदैव के लिए स्थिर रहे। यही मेरा कहना है। आमीन।

अध्याय ८

मीलक में अलमा की सफलता—अमोनिहा के लोगों द्वारा उसका बाहर निकाला जाना—एक स्वर्गदूत द्वारा सांत्वना दिया जाना और उसका वापस लौटना—प्रचार के लिए अमूलक का उसके साथ होना—बहुत बड़ी शक्ति का दिया जाना।

१. और अब ऐसा हुआ कि अलमा गिडियन (१) देश से, गिडियन के लोगों को इतनी बातों की शिक्षा दे कर वापस लौटा, जिन्हें यहां लिखा नहीं जा सकता; और उसने जिस प्रकार (२) ज़राहेमला देश में गिरजे की व्यवस्था की थी, उसी प्रकार वहां भी परिश्रमपूर्वक व्यवस्था करके वह ज़राहेमला में अपने घर, विश्राम करने के लिए आया।

२. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का नौवां वर्ष समाप्त हुआ।

३. और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के दसवें वर्ष में, वहां से विदा

(१६) देखो २७, २ नफी ६. (१७) १ नफी १०:१९. अल० ३७:१२. (१८) मू० २:३७. अल० ३४:३६. इला० ४:२४.
(१९) देखो १५, २ नफी ६. (२०) देखो ५, २ नफी ३२. (२१) अल० १३:२९. ए० १२:३१-३४. मरो० ७. अध्याय ८.
(१) देखो १३, अल० २. (२) ओ० १३.

ईसा से ८३ वर्ष पूर्व

होकर अलमा ने (३) मीलक देश की यात्रा की जो कि (४) सिदोन नदी के पश्चिम की ओर, और जंगली प्रदेश की सीमा से भी पश्चिम की ओर है।

४. और उसने सारे (५) मीलक देश में (६) प्रभु की पवित्र व्यवस्था के अनुसार लोगों में शिक्षा देना आरम्भ कर दिया, जिसके लिए वह नियुक्त किया गया था।

५. और ऐसा हुआ कि जंगल की सीमा पर बसे हुए उस देश के सब भाग से लोग उसके पास आये; देश भर में (७) उनको बपतिस्मा दिया गया।

६. जब उसने मीलक में अपना काम (८) समाप्त कर लिया तब उसने वहां से विदा होकर मीलक देश से उत्तर की ओर तीन दिनों की यात्रा की; और वह एक नगर में पहुंचा जिसका नाम (९) अमोनिहा था।

७. नफी के लोगों में अपने देश, अपने नगरों, अपने ग्रामों यहां तक कि अपने छोटे से छोटे गांवों के नाम भी उन लोगों के नाम पर रखने की प्रथा थी जो उनके प्रथम अधिकारी थे; और ऐसा ही (१०) अमोनिहा के नाम के साथ भी था।

८. और ऐसा हुआ कि जब अलमा अमोनिहा नगर में आया, तब वह वहां के लोगों में परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने लगा।

९. इस समय अमोनिहा के नगर के लोगों के हृदयों को शैतान अपने वश में किए हुए था; इसलिए वे अलमा की बातों को नहीं सुनते थे।

१०. फिर भी अलमा ने अपनी आत्मा से परिश्रम किया (११) प्रबल प्रार्थनाओं द्वारा परमेश्वर से द्वन्द्व किया कि वह नगर के लोगों के ऊपर अपनी पवित्र आत्मा को उड़ेल दे, और वह उनको (१२) बपतिस्मा दे कर पश्चात्ताप करवाये।

११. फिर भी वे अपने हृदयों को कठोर बनाए रहे और उससे बोले: देखो, हम जानते हैं कि तुम अलमा हो, और हम यह भी जानते हैं कि तुम उस गिरजा के (१३) प्रधान पुरोहित हो जिसकी स्थापना तुमने अपनी परम्परा के अनुसार देश के अनेक भागों में की है; और हम तुम्हारे गिरजे के नहीं हैं और न हम इस तरह की मूर्खतापूर्ण परम्पराओं में विश्वास ही करते हैं।

१२. और अब हम यह जानते हैं कि हम तुम्हारे गिरजे के नहीं हैं, तब हमारे ऊपर तुम्हारा कोई वश भी नहीं है; और तुमने (१४) न्याय आसन को भी नफीह को दे दिया है; इस कारण तुम हमारे प्रधान निर्णायक भी नहीं हो।

१३. और जब लोगों ने यह कहा और उसकी सभी बातों को अस्वीकार किया, उस को गालियां दीं, उसके ऊपर थूका और उसको अपने नगर से निकलवा दिया, तब वह वहां से विदा हो उस नगर की ओर चला; जिसे आरोन कहा जाता था।

१४. और ऐसा हुआ कि जब वह वहां की यात्रा पर (१५) अमोनिहा के लोगों की दुष्टता के कारण दुख के बोझ से दबा हुआ और आत्मा से बहुत दुखी हो कर चला जा रहा था तब ऐसा हुआ कि प्रभु का एक स्वर्गदूत उसके सामने प्रकट हुआ और बोला:

१५. अलमा तुम धन्य हो; इसलिए तुम अपना सिर ऊपर उठाओ और आनन्द मनाओ, क्योंकि आनन्द मनाने के तुम्हारे पास महान कारण हैं; क्योंकि जबसे तुमने परमेश्वर की प्रथम आज्ञा पाई है तब से तुम उसकी आज्ञाओं का पालन करने में ईमानदार रहे हो। देखो, मैं वही हूं जिसने तुमको वह (१६) प्रथम आज्ञा दी थी।

१६. और सुनो, मैं इसलिए भेजा गया हूं कि तुम्हें आज्ञा दूं कि तुम वापस अमोनिहा शहर वापस लौटो और वहां के लोगों को फिर से उपदेश दो; हां, उनमें प्रचार करते हुए कहो कि पश्चात्ताप करो नहीं तो परमेश्वर उनको (१७) नष्ट कर देगा।

(३) पद्य ४, ५, ६. अल० ३१:६. ३५:१३. ४५:१८. (४) देखो ७, अल० २. (५) देखो ७, मू० २६. (६) देखो ३. (७) देखो २१, २ नफी ९. (८) देखो ३. (९) ७, ९, १४, १६, १८. अल० ६. ९:१. १४:२३. १५:१. १६. १६:२, ३, ९, ११. २५:२. ४९:१, ३, १०, ११, १४, १५. इला० ५:१०. (१०) देखो ६. (११) देखो ५, २ नफी ३२. (१२) देखो २१, २ नफी ९. (१३) देखो ७, मू० २६. (१४) अल० ४:१६, १७. (१५) देखो ९. (१६) मू० २७:११-१६. *ईसा से ८२ वर्ष पूर्व

१७. क्योंकि सुनो, वे इस समय तुम लोगों की स्वतन्त्रता को नष्ट करने की युक्तियों का अध्ययन कर रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर ऐसा ही कह रहा है : और यह उन विधानों, न्यायों और आज्ञाओं के विपरीत होगा जो कि उसने अपने लोगों को दिए हैं।

१८. और तब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने प्रभु के स्वर्गदूत द्वारा अपने सन्देश को प्राप्त कर लिया, तब वह शीघ्रता के साथ वापस अमोनिहा देश में लौटा। उसने (१८) अमोनिहा नगर में दूसरे रास्ते से प्रवेश किया, जो कि नगर के दक्षिण में था।

१९. जब वह नगर में प्रवेश कर रहा था तब वह भूखा था और उसने एक आदमी से कहा : क्या तुम परमेश्वर के एक विनीत सेवक को कुछ खाने को दोगे?

२०. और उस मनुष्य ने उससे कहा : मैं एक नफायटी हूं और यह मैं जानता हूं कि तुम परमेश्वर के एक पवित्र भविष्यवक्ता हो क्योंकि तुम वही मनुष्य हो जिसके विषय में दिव्य-दर्शन में एक (१९) स्वर्गदूत ने मुझ से कहा था : तुम एक अतिथि को स्वीकार करना। इसलिए तुम मेरे साथ मेरे घर चलो और मैं तुम्हें अपना भोजन दूंगा; और मैं जानता हूं कि तुम मेरे और मेरे परिवार वालों के लिए (२०) आशीष बनोगे।

२१. और ऐसा हुआ कि उस मनुष्य ने अपने घर में उसे अतिथि के रूप में स्वीकार किया; उस व्यक्ति का नाम अमूलक था; और उसने रोटी और मांस लाकर अलमा के आगे रख दिया।

२२. और ऐसा हुआ कि अलमा रोटी खाकर तृप्त हुआ; और उसने अमूलक और उसके परिवार वालों को आशीर्वाद और परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

२३. जब वह खा पीकर तृप्त हो गया तब उसने अमूलक से कहा : मैं अलमा हूं और मैं सारे देश के प्रभु के गिरजे का (२१) प्रधान पुरोहित हूं।

२४. और देखो, इन लोगों में दैवी-ज्ञान की और भविष्यवाणी की भावनानुसार परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने के लिए मैं बुलाया गया हूं; और मैं इस देश में आया था परन्तु यहां के लोगों ने मुझे स्वीकार नहीं किया और मुझे (२२) बाहर निकाल दिया और मैं इस देश से सदा के लिए पीठ फेर लेने ही वाला था।

२५. लेकिन देखो, मुझे यह आज्ञा दी गई है कि मैं यहां लौट आऊं और इन लोगों से (२३) भविष्यवाणी करूं और इनके अत्याचारों के विरुद्ध साक्षी दूं।

२६. और अब, अमूलक तुमने मुझे स्वीकार किया और भोजन खिलाया, इस कारण तुम (२४) धन्य हो; क्योंकि मैं बहुत भूखा था और मैंने कई दिन (२५) उपवास किया था।

२७. और लोगों में प्रचार आरम्भ करने के पूर्व अलमा अमूलक के यहां कई दिनों तक रहा।

२८. और ऐसा हुआ कि लोग और भी घोर दुराचार में लिप्त रहने लगे।

२९. और अलमा के पास यह वाणी आई : तुम जाओ, और मेरे सेवक अमूलक से भी कहो कि वह भी जाए और इन लोगों से भविष्यवाणी करते हुए कहो— तुम पश्चात्ताप करो, क्योंकि प्रभु इस तरह कह रहा है कि अगर तुम पश्चात्ताप नहीं करोगे तब मैं इन लोगों में क्रोधित होकर आऊंगा; और हां, मैं (२६) अपने भयंकर क्रोध को हटाऊंगा नहीं।

३०. और लोगों में परमेश्वर की वाणी की घोषणा करने के लिए अलमा और अमूलक दोनों आगे बढ़े; और वे पवित्र आत्मा से भर उठे।

३१. और उनको इतना बल दिया गया कि वे किसी भी कालकोठरी में बन्द नहीं किए जा सकते थे; और न तो उन्हें कोई मार सकता था; परन्तु वे अपने सामर्थ्य का तब तक उपयोग नहीं करते थे जब तक कि उनको (२७) बेड़ियों से बांध कर बन्दीगृह में डाल नहीं दिया जाता था।

(१७) पद्य २९. अल० ९:४, १२, १८, २४. १०:१९, २३, २७. १६:२, ३, ९-११. (१८) देखो ६. (१९) अल० १०:७-९.
(२०) पद्य २२, २६. अल० १०:७, ११. (२१) देखो ७, मू० २६. (२२) पद्य १३. (२३) पद्य १६. (२४) देखो २०.
(२५) देखो ६, मू० २७. (२६) देखो १७. (२७) अल० १४:१७-२९.

ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

यह इसलिए किया गया कि प्रभु उनके द्वारा अपनी शक्ति को दिखा सके।

३२. और ऐसा हुआ कि वे लोगों में जाकर, प्रभु को दी गई आत्मा और शक्ति के अनुसार उपदेश देने और भविष्यवाणी करने लगे।

अलमा और अमूलक के वे शब्द जिनकी घोषणा उन्होंने अमोनिहा में रहने वाले लोगों के लिए की थी। अलमा के अभिलेख के अनुसार उनको कारागार में बन्द किया जाना और परमेश्वर के द्वारा दिए गए चमत्कारी सामर्थ्य के द्वारा, जो कि उनके अन्दर था, उनका मुक्त होना।

अध्याय ९ से १४ के अन्त तक

अध्याय ९

अमोनिहा के लोगों में अलमा का प्रचार करना और उनको पश्चात्ताप करने के लिए आह्वान करना—उसके साक्ष्य का अस्वीकार किया जाना।

१. और मैं अलमा ने पुन: परमेश्वर से यह आज्ञा प्राप्त की कि मैं (१) अमूलक को साथ लेकर उन लोगों में उपदेश दूं कि जो कि (२) अमोनिहा नगर में रहते थे लेकिन ऐसा हुआ कि जब मैं उपदेश दे रहा था, तब लोग मुझसे यह कहते हुए विवाद करने लगे:

२. तुम कौन हो? क्या तुम यह समझते हो कि हम एक आदमी के वक्तव्य पर विश्वास कर लेंगे चाहे वह यही क्यों न प्रचार करे कि यह पृथ्वी नष्ट हो जाएगी?

३. वे जो कह रहे थे उसका अर्थ वे स्वयं नहीं जानते थे; क्योंकि वे यह नहीं जानते थे कि पृथ्वी नष्ट हो जाएगी।

४. और उन्होंने यह भी कहा: अगर तुम यह भविष्यवाणी करते हो कि यह महानगरी (३) एक दिन में ही नष्ट कर दी जाएगी तब भी हम तुम्हारे शब्दों पर विश्वास नहीं करेंगे।

५. इस समय वे यह नहीं जानते थे कि परमेश्वर इस तरह के कार्यों को कर सकता है, क्योंकि वे कठोर हृदय के हठी लोग थे।

६. और उन्होंने कहा: वह परमेश्वर कौन है जिसने हम लोगों में एक व्यक्ति के अतिरिक्त, अन्य अधिकारियों को इस तरह की महान और विस्मयजनक बातों की सच्चाई की घोषणा करने के लिए नहीं भेजा?

७. और वे मुझ पर हाथ छोड़ने के लिए आगे आए; परन्तु देखो, उन्होंने ऐसा नहीं किया। और मैं साहस के साथ उनसे घोषणा करने के लिए खड़ा रहा, हां, मैंने यह कहते हुए साहस के साथ घोषणा की:

८. देखो, हे दुष्ट और कुटिल पीढ़ी, तुम अपने पूर्वजों की परम्पराओं को कैसे भूल गए; और हां, तुम उतनी जल्दी परमेश्वर की आज्ञाओं को भी कैसे भूल गए?

९. क्या तुम्हें यह याद नहीं कि हमारे पिता लेही को यरूशलेम से परमेश्वर के हाथों द्वारा लाया गया था? तुम्हें यह भी याद नहीं कि जंगली प्रदेश में उनकी अगुवाई उसी ने की थी?

१०. और तुम इतने शीघ्र यह भी भूल गए कि कितनी बार उसने हमारे पूर्वजों की उनके शत्रुओं के हाथों से रक्षा की और उनको, यहां तक कि उनके अपने भाइयों से भी उन्हें सुरक्षित रखा।

११. और हां, अगर हमारे लिए उसकी अद्वितीय शक्ति, दया, और उसका दीर्घ कष्ट झेलना नहीं होता तब तो हम निश्चय ही पृथ्वी के ऊपर से इस वर्तमान काल से बहुत पहले ही मिट जाते और सम्भवत: हम (४) अन्तहीन कष्ट और वेदना में होते।

१२. देखो, वह तुम्हें पश्चात्ताप करने की आज्ञा देता है; और पश्चात्ताप किए बिना तुम परमेश्वर के राज्य के अधिकारी किसी तरह भी नहीं हो सकते। लेकिन सुनो, इतना ही नहीं, उसने तुम्हें पश्चात्ताप करने की आज्ञा दी है, नहीं तो वह तुम्हें इस पृथ्वी पर से (५) एकदम नष्ट कर देगा; हां, वह (६) क्रोध में तुम्हारे पास आएगा और वह अपने भयंकर क्रोध को वापस नहीं लौटाएगा।

(१) अल० ८:२९. (२) देखो ६, अल० ८. (३) अल० १६:९, १०. (४) देखो १३, या० ६. (५) देखो १७, अल० ८. (६) अलमा ८:२९.

१३. सुनो, क्या तुम्हें उसके वे शब्द याद नहीं जिन्हें उसने लेही से कहा था कि (७) जहां तक तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे, वहां तक तुम इस देश में प्रगति करोगे? और फिर यह कहा गया था : जहां तक तुम मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे वहां तक तुम को परमेश्वर की उपस्थिति से अलग रखा जाएगा।

१४. अब मैं चाहता हूं कि तुम स्मरण रखो कि जहां तक लमनायटियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं किया वहां तक उनको प्रभु की उपस्थिति से अलग रखा गया है। अब हम यह देखते हैं कि इस बात में प्रभु की वाणी सत्य प्रमाणित हुई है, और (८) लमनायटी लोगों को उसकी उपस्थिति से उस समय से अलग कर दिया गया है, जब से उन्होंने इस देश में नियम उल्लघंन करना आरम्भ किया था।

१५. फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि न्याय के दिन जितना वे सहन कर सकेंगे, उतना तुम नहीं सहन कर सकोगे, अगर तुम पापों में ही लिप्त रहे; और हां, अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया, तब इस जीवन में भी जितना उनसे सहा जाएगा, उतना तुमसे नहीं।

१६. क्योंकि लमनायटियों के लिए कई वचन दिए गए हैं वह इसलिए कि वे अपने पूर्वजों की (९) परम्पराओं के कारण अज्ञानता की स्थिति में हैं; इस कारण प्रभु उनके ऊपर दयालु रहेगा और उनको देश में (१०) अधिक दिनों तक बनाए रखेगा।

१७. और किसी समय उनको उसकी वाणी में विश्वास और उनके पूर्वजों की त्रुटिपूर्ण परम्पराओं का ज्ञान कराया जाएगा; और उनमें से बहुत बच जाएंगे, क्योंकि प्रभु उन पर दया करता है, जो उसके नाम को पुकारते हैं।

१८. लेकिन देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुम अपने पापों में दृढ़ रहे तब तुम देश में लम्बे समय तक रह नहीं सकोगे, क्योंकि तुम पर लमनायटियों को भेजा जाएगा, और अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब वे किस समय आवेंगे इसका तुम्हें पता नहीं लगेगा और वे तुम्हारे पास तुम्हारे (११) सम्पूर्ण विनाश के साथ आएंगे; और वह होगा (१२) प्रभु के भयंकर क्रोध के अनुसार।

१९. क्योंकि वह यह सहन नहीं कर सकता कि तुम दुराचार में जीवित रह कर उसके लोगों को नष्ट कर दो; मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं; वह यह सहन कर सकता है कि (१३) नफी कहलाये जाने वाले उसके सब लोग लमनायटियों द्वारा नष्ट कर दिए जाएं, अगर वह अपने प्रभु परमेश्वर द्वारा इतना प्रकाश और ज्ञान दिए जाने पर भी किसी प्रकार पापों और आज्ञा-उल्लंघन में फंस जाते हैं।

२०. हां, प्रभु के इतने कृपापात्र बने रहने पर; हां, अन्य सभी राष्ट्रों अन्य भाषा-भाषी लोगों या अन्य जातियों से अधिक प्रिय बने रहने के पश्चात्; और उनकी इच्छा, विश्वास और प्रार्थना के अनुसार अतीत, वर्तमान, और भविष्य की बातों के विषय में सभी जानकारियां देने के पश्चात्;

२१. परमेश्वर की पवित्र-आत्मा के उनसे आकर भेंट कर लेने पर; स्वर्गदूतों से वार्तालाप और परमेश्वर की वाणी द्वारा उनसे बातें किए जाने पर भी; दैवी-ज्ञान और भविष्यवाणी की भावना प्राप्त कर लेने पर भी और अन्य अनेक देन जैसे अनेक भाषाओं को बोलने, उपदेश देने, पवित्र-आत्मा और (१४) अनुवाद करने की क्षमता को प्राप्त कर लेने के पश्चात्;

२२. और हां, प्रभु के हाथ द्वारा यरूशलेम देश से सुरक्षित निकाल लाने, अकाल और रोगों से बचाए जाने और हर प्रकार के रोगों से सुरक्षित किए जाने, युद्ध में प्रबल किए जाने पर कि जिससे वे नष्ट न हो जाएं, (१५) समय-समय पर दासता से निकाले जाने पर और अब तक सुरक्षित रखे जाने पर और प्रगति करते हुए सभी प्रकार की वस्तुओं में सम्पन्न हो जाने पर भी—

(७) २ नफी १:९. ४:४. देखो २, १ नफी २. (८) देखो २, १ नफी २. (९) मू० १०:११-१७. (१०) इनो० १३, देखो १३, देखो ३, २ नफी २७. इला० १५:१०-१६. (११) अल० १६:२, ३, ९-११. (१२) अल० ८:२९. ९:१२. (१३) १ नफी १२:१५, १९, २०. १५:५. अल० ४५:१०-१४. इला० १३:५-१०. १५:१७. मार० ६. (१४) ओम० २०:२२. मू० ८:१३-१६, २८:११-१७. (१५) मू० २२:११-१३. २४:१७-२०.

२३. और अब सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि अगर ये लोग, जिन्होंने प्रभु के हाथ से इतने आशीष प्राप्त किए हैं, अपने प्राप्त किए प्रकाश और ज्ञान के विपरीत अधर्म करते हैं, तब मैं तुमसे कहता हूं कि अगर उन्होंने नियम उल्लंघन किया, तब उनकी अपेक्षा लमनायटियों को कहीं अधिक सहन किया जाएगा।

२४. क्योंकि देखो, प्रभु का आश्वासन लमनायटी (१६) के लिए है, परन्तु अगर तुमने नियम उल्लंघन किया तब वह तुम्हें नहीं प्राप्त होगा; क्योंकि क्या प्रभु ने यह स्पष्ट प्रतिज्ञा और दृढ़ निर्णय नहीं दिया कि अगर तुमने उसके विरुद्ध विद्रोह किया, तब तुम्हें पृथ्वी पर (१७) से बिल्कुल नष्ट कर देगा?

२५. और अब इस कारण कि तुम नष्ट न किए जाओ, प्रभु ने अपने स्वर्गदूत को बहुत से अपने लोगों के पास यह कहलवा कर भेजा: कि तुम जाओ और पुकार कर मेरे लोगों से कहो—तुम पश्चात्ताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।

२६. और अब बहुत दिन नहीं हैं जबकि परमेश्वर का पुत्र अपने यश के साथ आएगा; और उसका यश होगा पिता के इकलौते पुत्र का, जो कि कृपा, निष्पक्षता, सच्चाई, सहनशीलता, और दया से परिपूर्ण होगा और वह दीर्घ कष्ट झेलेगा और वह अपने लोगों की पुकार शीघ्रता के साथ सुनेगा और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा।

२७. और सुनो, वह उन लोगों को मुक्त करने आएगा, जो उसके नाम पर पश्चात्ताप में (१८) बपतिस्मा लेंगे।

२८. इसलिए तुम प्रभु का रास्ता तैयार करो, क्योंकि वह समय निकट है जबकि हर एक मनुष्य जिस प्रकार वह है उसी के अनुसार अपना परिणाम प्राप्त करेगा—अगर वे सत्यनिष्ठ रहे तब वे मसीह की शक्ति और उद्धार के अनुसार अपनी आत्मा के लिए मुक्ति प्राप्त करेंगे; और अगर वे पापी रहे तब वे शैतान के (१९) सामर्थ्य और बन्धन के अनुसार अपनी आत्मा के लिए नरक-दण्ड का फल भोगेंगे।

२९. अब सुनो, यही वह वाणी है जो उस स्वर्गदूत की है जो लोगों से कह रही है।

३०. और अब मेरे प्रिय भाइयो, क्योंकि तुम मेरे भाई हो, इस कारण तुम मेरे प्रिय हो; मैं देखता हूं कि परमेश्वर की वाणी के प्रति तुम्हारे हृदय अधिक कठोर बने हुए हैं और मैं यह भी देख रहा हूं कि तुम (२०) खोए हुए और पतित लोग हो तब तुम्हें ऐसे कार्य करने चाहिए जो पश्चात्ताप के अनुकूल हों।

३१. जब मैं, अलमा ने, इन बातों को कहा तब देखो, ऐसा हुआ कि लोग मुझ पर क्रोधित हो उठे क्योंकि मैंने उनको (२१) कठोर हृदयी और हठी लोग कहा था।

३२. और इस कारण भी वे क्रोधित हो उठे क्योंकि मैंने उनको (२२) खोए हुए और पतित कहा था और वे मुझको पकड़ना चाहते थे जिससे कि मुझे बन्दीगृह में डाल दें।

३३. लेकिन ऐसा हुआ कि प्रभु ने यह सहन नहीं किया कि इस समय वे मुझे पकड़ कर कारागार में डालें।

३४. और ऐसा हुआ कि अमूलक भी आगे खड़ा होकर प्रचार करने लगा। इस समय अमूलक के सभी शब्द नहीं लिखे गए परन्तु उसकी बातों का एक अंश इस पुस्तक में लिखा गया है।

अध्याय १०

अमूलक के पूर्वज—मनासाह के द्वारा लेही, यूसुफ का वंशज—अमूलक का अपने विचार—परिवर्तन को बताना—उसका वक्तव्य—उसका कपटी वकीलों और निर्णायकों को दोषी ठहराना—ज़ीज़रोम।

१. अब अमूलक के ये वे शब्द हैं जिनका उसने (१) अमोनिहा के देश में रहने वाले लोगों में, यह कहते हुए प्रचार किया:

(१६) देखो १०. (१७) देखो १३. (१८) देखो २१, २ नफी ९. (१९) देखो ६, २ नफी ९. (२०) पद्य ३२.अलमा १२:२२. (२१) पद्य ५, २ नफी २५:२८.मू० ३:१४. (२२) पद्य ३०. अध्याय १०. (१) देखो ६, अल० ८:२६. १ नफी ५, १४.

ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

२. मैं अमूलक हूं; मैं अभिनन्दी के वंशज, इस्माइल के पुत्र, गिड्डोनाह का पुत्र हूं। और यह वही अभिनन्दी था जिसने मन्दिर की दीवाल पर के उस लेख का अनुवाद किया था जो कि परमेश्वर की उंगली द्वारा लिखा गया था।

३. और अभिनन्दी लेही के पुत्र नफी का वंशज था जो यरूशलेम से आया था और (२६) उस यूसुफ जो कि अपने भाइयों के द्वारा मिश्र में बेच दिया गया था के पुत्र मनासाह का वंशज था।

४. और देखो, जो लोग मुझे जानते हैं उनमें मैं कम सम्मानित व्यक्ति नहीं हूं; और सुनो, मेरे (२) बहुत से बन्धु और मित्र हैं और मैंने अपने हाथों के परिश्रम से बहुत-सा धन प्राप्त किया है।

५. फिर भी मैं प्रभु की बहुत-सी लीलाओं, भेदों और अद्‍भुत शक्ति से कभी परिचित नहीं था। मैंने कहा कि मैं कभी भी इन बातों को अच्छी तरह नहीं जानता था; लेकिन देखो, मैं भूल करता हूं, क्योंकि मैंने उसके बहुत से रहस्यों और अद्‍भुत शक्तियों को देखा है; हां, इन लोगों के जीवन की रक्षा तक मैंने इनको देखा है।

६. फिर भी मैंने अपने हृदय को कठोर बना लिया था, क्योंकि मेरी पुकार अनेकों बार हुई परन्तु मैंने सुना नहीं; इसलिए मैं इन बातों के विषय में जानता था फिर भी मैं इनसे अनभिज्ञ बना रहा; इस कारण मैं अपने हृदय के पापों से इस सातवें माह के चौथे दिन तक, जो कि निर्णायकों के शासन के दसवें वर्ष में था, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करता रहा।

७. जबकि मैं अपने एक निकट के सम्बन्धी को देखने के लिए जा रहा था, तब देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत (३) प्रकट हुआ और मुझसे बोला: अमूलक, तुम वापस अपने घर लौट जाओ, क्योंकि तुम प्रभु के एक भविष्यवक्ता को भोजन खिलाओगे; हां, वह एक पवित्र व्यक्ति और परमेश्वर का एक चुना हुआ मनुष्य है; क्योंकि इन लोगों के पापों के कारण वह कई दिनों से (४) उपवास किए हुए है और वह भूखा है, तुम उसे अपने घर ले जाकर भोजन कराओ और वह तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को (५) आशीर्वाद देगा; और परमेश्वर का आशीर्वाद भी तुम्हारे और तुम्हारे घर वालों के ऊपर रहेगा।

८. और ऐसा हुआ कि मैं (६) उस स्वर्गदूत की वाणी को मान कर अपने घर की ओर वापस चला। और जब मैं वापस वहां जा रहा था, तब मैंने उस (७) व्यक्ति को पाया जिसके विषय में स्वर्गदूत ने मुझसे कहा था: तुम उसे अपने घर में स्वीकार करो और देखो यह वही मनुष्य था जो कि तुमसे प्रभु की बातों के विषय में बोल रहा था।

९. और उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा कि वह एक पवित्र व्यक्ति है; इस कारण मैं जानता हूं कि वह एक (८) पवित्र व्यक्ति है क्योंकि यह बात परमेश्वर के एक स्वर्गदूत द्वारा कही गई थी।

१०. और मैं यह भी जानता हूं कि जिन बातों की गवाही इन्होंने दी है वे सब सत्य हैं; क्योंकि देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि प्रभु जीवित है और उसने इन बातों को मुझ पर प्रकट करने के लिए अपने एक स्वर्गदूत को मेरे पास पास भेजा; और उसने यह काम उस समय किया जब कि यह अलमा (९) मेरे घर में ठहरा हुआ था।

११. क्योंकि देखो, उसने मेरे घर को (१०) आशीर्वाद दिया है, और उसने मुझ को, मेरे घर की स्त्रियों को, मेरे बच्चों को, मेरे पिता को और मेरे सम्बन्धियों को भी आशीर्षित किया और उसके कथनानुसार प्रभु का आशीर्वाद हमारे ऊपर स्थित है।

१२. और जब अमूलक ने इन बातों को कह लिया, तब यह जान कर लोगों को बड़ा ही आश्चर्य होने लगा कि जिन बातों का दोष उन लोगों पर लगाया गया था (११) उसकी एक से अधिक गवाहों ने गवाही दी, और उसकी भी गवाही दी जो उनके अन्दर की भविष्यवाणी की भावना के अनुसार भविष्य में घटित होने वाली बातें थीं।

१३. फिर भी, उनमें कुछ ऐसे थे जो उनसे प्रश्न पूछना चाहते थे, जिससे कि वे अपनी धूर्त

(२६) १ नफी ५:१४. (२) पद्य ११. अल० १५:१६. (३) पद्य ८, ९. अल० ८:२०. (४) देखो २०, मू० २७. (५) देखो २०, अल० ८. (६) अल० ८:२०. (७) अल० ८:२०. (८) पद्य ७. (९) अल० ८:२७. (१०) देखो २०, अलमा ८. (११) अल० ९:६.

युक्तियों द्वारा उनको बातों में पकड़ कर, उनके विरुद्ध गवाहों को खोज कर, उन्हें अपने न्यायाधीशों के सुपुर्द कर दें, जिससे उनका न्याय नियम के अनुसार हो और उन्हें अपने लगाए गए दोष के अनुसार या तो मार डाला जाए या बन्दीगृह में डाल दिया जाए।

१४. और जो लोग उनको नष्ट करना चाहते थे वे (१२) वकील थे जो लोगों द्वारा उनके मुकदमों के समय निर्णायकों के समक्ष नियम का पालन करवाने के लिए नियुक्त किए गए थे या पारिश्रमिक पर लगाये गए थे।

१५. ये वकील मनुष्य के सब छल-प्रपंचों और धूर्तता में प्रवीण थे; और यह इसलिए कि जिससे वे अपने व्यवसाय में दक्ष हों।

१६. और ऐसा हुआ कि वे अमूलक से प्रश्न पूछने लगे जिससे कि वे उससे परस्पर विरोधी शब्दों को कहलवा सकें या उसके कहे शब्दों का विरोध कर सकें।

१७. परन्तु वे यह नहीं जानते थे कि अमूलक उनके अभिप्राय को जान सकता था। लेकिन ऐसा हुआ कि जब वे प्रश्न पूछने लगे तब उसने उनके विचारों को समझ लिया और बोला: हे दुष्ट और कुटिल पीढ़ी, (१३) वकीलो और पाखण्डियो: तुम शैतान के लिए नींव डाल रहे हो; क्योंकि तुम परमेश्वर के पवित्र लोगों को पकड़ने के लिए जाल और फन्दे डाल रहे हो।

१८. तुम धार्मिक लोगों के रास्ते को दूषित करने के लिए युक्तियां तैयार कर रहे हो, और इन लोगों को एकदम नष्ट कर देने के लिए परमेश्वर के क्रोध को अपने सिरों पर ले आना चाहते हो।

१९. हमारा अन्तिम राजा मूसायाह अपने उत्तराधिकारी के न होने पर जब राज्य त्यागने लगा था और जब उसने शासन जनमत द्वारा किए जाने की व्यवस्था की तब उसने ठीक कहा था कि अगर कभी वह समय आएगा जबकि लोगों का (१४) मत दुराचार चुनेगा अर्थात् अगर वह समय आएगा जब कि ये लोग दुष्कर्म में पतित होंगे तब उन्हें अपने विनाश के लिए तैयार रहना पड़ेगा।

२०. और अब मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर तुम्हारे अत्याचारों का न्याय अच्छी तरह कर रहा है: वह अपने स्वर्गदूत द्वारा अच्छी तरह इन लोगों को यह कह कर पुकार रहा है—तुम पश्चात्ताप करो, पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्ग का राज्य बहुत निकट है।

२१. हां, वह अपने दूत की वाणी द्वारा अच्छी तरह पुकार कर कह रहा है: मैं अपने लोगों के लिए अपने हाथों में निष्पक्षता और न्याय लेकर उनमें आने वाला हूं।

२२. और हां मैं तुमसे कहता हूं कि अगर उन सत्यनिष्ठ लोगों की प्रार्थनायें न सुनी गई होतीं जो इस समय इस देश में हैं, तब इसी समय तुम्हारा विनाश आ जाता; और यह विनाश नूह के समय की तरह बाढ़ से नहीं, वरन् अकाल, महामारी और तलवार से लाया जाएगा।

२३. लेकिन तुम्हें धार्मिक लोगों की (१५) प्रार्थनाओं के कारण छोड़ दिया गया है; इसलिए अब अगर तुम धार्मिक लोगों को अपने में से निकाल बाहर करोगे, तब प्रभु अपने हाथ को रोक नहीं सकेगा; परन्तु वह अपने (१६) भीषण क्रोध के साथ तुम्हारे विरुद्ध आएगा; और तब तुम अकाल, महामारी और तलवार से मारे जाओगे; और अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब वह समय निकट ही है।

२४. और तब ऐसा हुआ कि लोग अमूलक के विरुद्ध और भी क्रोधित हो उठे और चिल्ला कर कहने लगे: यह व्यक्ति हमारे नियमों की निन्दा कर रहा है जो कि उचित हैं, और हमारे उन वकीलों को गालियां दे रहा है जिन्हें हमने (१७) नियुक्त किया है।

२५. लेकिन अमूलक हाथ फैला कर उनसे भी ऊंची आवाज़ में बोला: हे पापी और कुटिल पीढ़ी, तुम्हारे हृदयों पर शैतान इतनी दृढ़ता से अधिकार क्यों किए हुए है? तुम उसके आगे क्यों झुक गए, कि उसका अधिकार तुम्हारे ऊपर हो गया और उसने तुम्हारी आंखों पर पर्दा डाल दिया, जिससे कि तुम सत्य को समझ न सको?

(१२) पद्य १५:१८-२४. २७:२६-३२. अल० ११:२०-३७. १४:१८, २३-२८. (१३) देखो १२. (१४) मू० २९:२७. (१५) देखो ५, २ नफी ३२. (१६) देखो १७, अल० ८. (१७) देखो १२.

ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

२६. क्योंकि देखो, क्या मैंने तुम्हारे नियम के विरुद्ध गवाही दी है? तुम समझ नहीं रहे हो; तुम कहते हो कि मैंने तुम्हारे नियम के विपरीत बातें कही हैं; लेकिन नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया; मैंने तो तुम्हारे नियम के पक्ष में बातें कहीं हैं जिसके द्वारा तुम अपराधी ठहरते हो।

२७. और अब, देखो मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हारे (१८) वकीलों और निर्णायकों (१९) की अधार्मिकता के कारण इन लोगों के नाश की नींव रखी जाने लगी है।

२८. और तब ऐसा हुआ कि जब अमूलक ने इन शब्दों को कह लिया तब लोगों ने उसके विरुद्ध चिल्लाते हुए कहा: अब हम यह जानते हैं कि यह शैतान का बच्चा है, क्योंकि हमारे नियम के विपरीत बातें कह कर इसने हमसे असत्य कहा। और अब यह कहता है कि इसने झूठ नहीं कहा।

२९. और इसने पुनः हमारे वकीलों और निर्णायकों की निन्दा की है।

३०. और ऐसा हुआ कि वकीलों ने इन बातों को उसके विरुद्ध स्मरण रखने का अपने हृदय में निश्चय कर लिया।

३१. और उनमें जीज़रोम नाम का एक व्यक्ति था। यह व्यक्ति उन लोगों में सबसे अधिक प्रवीण होने के कारण तथा बहुत अधिक उपार्जन करने के कारण अमूलक और अलमा पर दोषारोपण करने में सबसे आगे था।

३२. इस समय इन वकीलों का उद्देश्य (२०) लाभ उठाने का था और उन्होंने अपने (२१) धन्धे के अनुसार लाभ उठाया भी।

अध्याय ११

निर्णायक और उनका हर्जाना—नफायटियों के सिक्के और उनके माप—अमूलक द्वारा जीज़रोम का पराजित होना।

१. मूसायाह के नियम में यह था कि हर एक निर्णायक को, या जो निर्णायक नियुक्त किए जाये; उनको (१) उतने समय के अनुसार, जो वे उनके सामने लाए गए लोगों के न्याय करने में लगाते थे, वेतन दिया जाए।

२. अगर कोई व्यक्ति ऋण में होता है और वह उसे चुकाता नहीं, तब उसकी शिकायत निर्णायक से की जाती; तब निर्णायक अपने अधिकार को काम में लाते हुए अपने अफसरों को भेज कर उस व्यक्ति को अपने सामने बुलवाता; और वह उस व्यक्ति का न्याय नियम के अनुकूल और उसके विरुद्ध दी गई गवाहियों के अनुसार करता, और इस तरह उस व्यक्ति को ऋण चुकता करने के लिए विवश होना पड़ता, अन्यथा उसकी संपत्ति जब्त कर ली जाती, या चोर लुटेरों की तरह लोगों में से बाहर निकाल दिया जाता।

३. और निर्णायक अपने काम के (२) समय के अनुसार वेतन पाते जो कि एक दिन के लिए (३) एक सोने का सेनिन या उसके बराबर मूल्य का चांदी का एक सिनम (४) होता; और यह दिएं गए नियम के अनुसार था।

४. अब उनके सोने और चांदी के सिक्कों के नाम, उनके मूल्य के अनुसार दिए जाएंगे। ये नाम नफायटियों के द्वारा दिए गए हैं, परन्तु इन लोगों ने अपने सिक्कों का मूल्यांकन यरूशलेम के यहूदियों की तरह नहीं किया और न तो ये यहूदियों की तरह मापते ही थे; परन्तु ये, लोगों के विचार और परिस्थितियों के अनुसार अपने सिक्कों के मूल्य मापतौल में परिवर्तन तब तक करते रहे जब तक कि राजा मूसायाह (५) द्वारा मूल्य और मापतौल को स्थाई न कर दिया गया।

५. सिक्कों के मूल्य इस प्रकार हैं—सोने का एक (६) सेनिन, सोने का एक सीयन, सोने का एक शम और सोने का एक लिमनाह।

६. चांदी का एक (७) सीनम, चांदी का एक अमनूर, चांदी का एक इज़रोम और चांदी का एक ओण्टी।

७. चांदी का एक सीनम सोने के एक सेनिन के (८) बराबर था, जो कि जव और सभी प्रकार के अनाज के तौल के लिए था।

(१८) देखो १७, अलमा ८. (१९) देखो १२. (२०) अल० ११:२०. (२१) अल० ११:३, २०. अध्याय ११. (१) पद्य ३, २०. अल० १०:३१, ३२. (२) पद्य २०. अल० १०:३१, ३२. (३) पद्य ५, ७, ८. अल० ३०:३३. ३ नफी १२:२६. (४) पद्य ६, ७, ११, १२, १५. (५) मू० २९. (६) देखो ३. (७) देखो ४. (८) पद्य ३. ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

८. सीयन भर सोना सेनिन से दूने मूल्य का होता था।

९. और शम भर सोना सीयन से दूने मूल्य का होता था।

१०. और सोने के एक लिमनाह का मूल्य उन सबके बराबर था।

११. और चांदी का एक अमनूर दो सीनम के समान था।

१२. चांदी का इज़रोम चार सीनम के समान था।

१३. और एक ओण्टी (९) उन सबके समान मूल्य का था।

१४. उनके कम मूल्य की गणना इस प्रकार थी—

१५. एक शिबलन एक सीनम के आधे मूल्य का था इस कारण जब जव के आधे वजन के लिए शिबलन का प्रयोग होता था।

१६. और एक शिबलम एक शिबलन का आधा था।

१७. और एक लीह शिबलम का आधा था।

१८. और अब उनके अनुसार यह उन की गिनती है।

१९. सोने का एक एण्टियन तीन शिबलन के बराबर था।

२०. वे एकमात्र अपने लाभ के लिए कार्य कर रहे थे क्योंकि उन्हें अपने काम के (१०) अनुसार वेतन मिलता था; इसलिए उन्होंने लोगों को विद्रोह करने के लिए भड़काया, और लोगों में हर प्रकार से अशान्ति पैदा की और दुष्टता को बढ़ाया जिससे कि उन्हें और काम मिले और अपने पास लाए गए मामलों के अनुसार उन्हें धन प्राप्त हो; इस कारण उन्होंने लोगों को अलमा और अमूलक के विरुद्ध भड़काया।

२१. और जीज़रोम ने अमूलक से यह कहते हुए प्रश्न किया: क्या तुम मेरे कुछ उन प्रश्नों के उत्तर दोगे जिन्हें मैं तुमसे पूछूंगा? जीज़रोम एक ऐसा व्यक्ति था, जो शैतान के विधि में दक्ष था, जिससे वह उपयुक्त बातों को भ्रष्ट कर सकता था; इसलिए उसने अमूलक से कहा: क्या तुम उन प्रश्नों के उत्तर दोगे जिन्हें मैं तुम्हारे सामने रखूंगा?

२२. तब अमूलक ने उससे कहा: अगर प्रभु की उस आत्मा के अनुकूल रहा जो कि मेरे अन्दर है, तब मैं अवश्य ही उत्तर दूंगा; क्योंकि मैं प्रभु की आत्मा के विपरीत कोई भी बात नहीं कहूंगा। और जीज़रोम ने उससे कहा: देखो, यहां चांदी के छ: (११) ओण्टी हैं, और अगर तुमने उस महान परमेश्वर की आस्था को अस्वीकार कर दिया तब मैं इन्हें तुम्हें दे दूंगा।

२३. तब अमूलक ने कहा: हे अधोलोक की सन्तान, तुम मुझे लालच क्यों दे रहे हो? क्या तुम यह नहीं जानते कि धार्मिक लोग इस प्रकार के लालच की ओर कोई ध्यान नहीं देते?

२४. क्या तुम यह विश्वास करते हो कि परमेश्वर नहीं है? परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, तुम यह जानते हो कि परमेश्वर है, तुम परमेश्वर से अधिक उस धन से प्रेम करते हो।

२५. और तुमने परमेश्वर के समक्ष मुझसे झूठ कहा। तुमने मुझसे कहा—देखो ये (१२) छ: ओण्टी हैं जिनका मूल्य बहुत अधिक है—और तुम्हारे हृदय में उन्हें अपने ही पास रखने की इच्छा थी; और तुम्हारी यही इच्छा थी कि मैं उस सच्चे चेतन प्रभु को अस्वीकार कर दूं जिससे तुम्हें मुझे नष्ट करने का कारण मिल जाए। और अब देखो, इस महान दुष्टता के कारण तुम्हें तुम्हारा पुरस्कार मिलेगा।

२६. और जीज़रोम ने उससे कहा: तुम कहते हो कि एक सच्चा जीवित परमेश्वर है?

२७. और अमूलक ने कहा: हां, एक सच्चा और जीवित परमेश्वर है।

२८. तब जीज़रोम ने कहा: क्या एक से अधिक परमेश्वर है?

२९. और उसने उत्तर दिया, नहीं।

३०. तब जीज़रोम ने उससे कहा: तुम ये सब बातें कैसे जानते हो?

३१. और उसने कहा: एक (१३) स्वर्गदूत ने इन बातों की जानकारी मुझे कराई है।

३२. और जीज़रोम ने पुन: कहा: वह कौन है जो आएगा? क्या वह परमेश्वर का पुत्र है?

३३. और उसने उससे कहा, हां।

(९) पद्य ६, २२, २५. (१०) पद्य १, ३. अलमा १०:३२. (११) देखो ९. (१२) देखो ९. (१३) अलमा १०:१०.

३४. तब जीज़रोम ने पुनः कहाः क्या वह अपने लोगों को (१४) उनके पापों में रहते हुए बचा लेगा? और अमूलक ने उत्तर में उससे कहाः मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, क्योंकि उसके लिए अपने शब्द को अस्वीकार करना असम्भव है।

३५. तब जीज़रोम ने लोगों से कहाः देखो, तुम इन बातों को याद रखना क्योंकि यह कहता है कि परमेश्वर एक ही है; और फिर यह भी कहता है कि परमेश्वर का पुत्र, आएगा लेकिन वह अपने लोगों को बचाएगा नहीं—इससे प्रतीत होता है कि यह परमेश्वर को (१५) आज्ञा देने का अधिकार रखता है।

३६. तब अमूलक ने उससे पुनः कहाः देखो, तुमने असत्य कहा क्योंकि तुम कहते हो कि मैंने ऐसा कहा मानो मेरे पास परमेश्वर को आज्ञा देने का अधिकार है, क्योंकि मैंने यह कहा कि वह अपने लोगों को पापों में रहते हुए नहीं बचाएगा।

३७. और मैं तुमसे पुनः कहता हूं कि वह उनको उनके पापों में रहते हुए नहीं बचाएगा; क्योंकि मैं उसकी वाणी को अस्वीकार नहीं कर सकता, और उसने कहा था कि कोई भी अपवित्र वस्तु स्वर्ग के राज्य की अधिकारी नहीं हो सकती; इस कारण, बिना स्वर्ग के राज्य के अधिकारी हुए ही तुम कैसे बचाए जा सकते हो? इसलिए तुम अपने पापों में बचाए नहीं जा सकते हो।

३८. तब जीज़रोम ने उससे कहाः क्या परमेश्वर का पुत्र (१६) ही अनन्त पिता है?

३९. तब अमूलक ने उससे कहाः हां, वही स्वर्ग और पृथ्वी और उनमें की सारी वस्तुओं का अनन्त पिता है; और आरम्भ और अन्त, वही है—प्रथम और अन्तिम।

४०. और वह पृथ्वी पर अपने लोगों को मुक्त करने के लिए आएगा; और जो लोग उसके नाम पर विश्वास करेंगे, उनके पापों को वह अपने ऊपर ले लेगा; और यही वे लोग होंगे जो अनन्त जीवन पाएंगे, और मुक्ति अन्य किसी के पास नहीं आएगी।

४१. इसलिए पापी ऐसे रह जाएंगे, जैसे प्रायश्चित द्वारा (१७) मुक्ति उनके लिए है ही नहीं, केवल (१८) मृत्यु के बंधन ही खोले जाएंगे; क्योंकि देखो, उस दिन सभी मृतक, जीवित होकर परमेश्वर के सामने अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाने के लिए खड़े होंगे।

४२. एक मृत्यु है जिसे पार्थिव मृत्यु कहते हैं; और मसीह की मृत्यु इस पार्थिव मृत्यु की बेड़ी (१९) को तोड़ देगी, जिससे कि सभी इस पार्थिव मृत्यु से उठाए जाएंगे।

४३. आत्मा और शरीर पहले की तरह ठीक से एक दूसरे से मिलाए जाएंगे; (२०) शरीर के सभी अंगों को उसी तरह पुनः पूर्ण किया जाएगा, जिस प्रकार कि अभी हम हैं; और हम जिस प्रकार वर्तमान समय में ज्ञान रखते हैं, उसी तरह ज्ञान रखते हुए (२१) और अपने सारे अपराधों की स्पष्ट समृति रखे हुए परमेश्वर के सामने लाए जाएंगे।

४४. और यह पुनर्जीवन (२२) सबके लिए आएगा, चाहे वह युवा हो या वृद्ध, स्वतंत्र हो या दास, स्त्री हो या पुरुष, पापी हो या धार्मिक; और यहां तक कि उनके सिर का एक बाल भी नहीं खोयेगा; लेकिन जैसे कि वे अब हैं वैसे ही, सम्पूर्ण मानव शरीर में पुनर्स्थापित किए जाएंगे और उनको अपने कर्मों के अनुसार, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, न्याय किए जाने के लिए पुत्र मसीह, ईश्वर पिता और पवित्र-आत्मा जो कि एक, और अनन्त परमेश्वर है (२३) के न्यायालय में ले जाया जाएगा।

४५. अब, देखो, मैंने तुमसे पार्थिव शरीर की मृत्यु और उसके पुनर्जीवित होने के विषय में कहा। मैं तुमसे कहता हूं कि इस पार्थिव शरीर को प्रथम जीवन और मरण से निकाल (२४) अमर बना के उठाया जाएगा जिससे यह (२५) पुनः मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा; आत्माएं शरीर से कभी भी अलग न होने के लिए उनसे मिला दी जाएंगी;

(१४) पद्य २६, ३७. इला० ५:१०, ११. (१५) पद्य ३६. (१६) पद्य ३९. देखो १, मू० ३. (१७) अल० १२:१८. (१८) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (१९) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (२०) देखो ४, २ नफी २. (२१) देखो १४, २ नफी ९. (२२) देखो ४, २ नफी २. (२३) देखो ११, २ नफी ३१. (२४) देखो ४, २ नफी २. (२५) अल० १२:१८, २०.

ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

इस प्रकार पूर्ण हो, वे कभी भी दूषित न होने के लिए धर्मानुकूल और अमर हो जाएंगे।

४३. जब अमूलक ने इन बातों को कहना समाप्त कर लिया तब लोग आश्चर्यचकित रह गए और जीज़रोम कांपने लगा। इस तरह अमूलक की की वाणी समाप्त हुई अथवा इतना ही मैंने लिखा।

अध्याय १२

अलमा द्वारा अमूलक की साक्षी का अनुमोदन करना—जीवन के वृक्ष का सिद्धान्त—प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति की योजना की व्याख्या।

१. जब अलमा ने यह देखा कि अमूलक के शब्दों ने जीज़रोम को चुप कर दिया है, क्योंकि उसने देखा कि (१) झूठ बोल कर धोखे द्वारा उसे नष्ट करने की उसकी बात को अमूलक ने पकड़ लिया और जब उसे अपनी भूल की चेतना से (२) कांपते हुए देखा, तब उसने अपना मुंह खोला। वह अमूलक की बातों का समर्थन करते हुए उसे आगे की बातों को समझाने लगा, अर्थात् जितनी शास्त्र की बातों को अमूलक ने समझाया था उससे आगे कि बातों का भेद वह खोलने लगा।

२. अलमा ने जो कुछ जीज़रोम से कहा वे सब बातें आसपास के लोगों ने सुनीं क्योंकि वहां बहुत बड़ी भीड़ थी, और उसने इस प्रकार कहा:

३. जीज़रोम, अब तुम देख रहे हो कि तुम अपनी असत्य बातों और हठीलेपन में पकड़े गए हो, क्योंकि तुमने न केवल मनुष्यों से ही झूठ बोला, अपितु तुमने परमेश्वर से भी झूठ कहा; क्योंकि देखो, वह तुम्हारे (३) सभी विचारों को जानता है, और तुम देख ही रहे हो कि उसी की पवित्र-आत्मा द्वारा तुम्हारे विचारों की जानकारी हमें कराई गई है।

४. और तुम देख ही रहे हो कि हम जानते हैं कि झूठ बोल कर इन लोगों को बहकाने की तुम्हारी योजना (४) उतनी ही धूर्ततापूर्ण थी जितनी धूर्ततापूर्ण योजनायें स्वयं शैतान की होती हैं, जिससे कि तुम इन लोगों को हमारे विरुद्ध भड़का सको ताकि वे हमें बुरा भला कहें और हमें यहां से बाहर निकाल दें।

५. यह योजना तुम्हारे शत्रु की थी और उसने तुम्हारे अन्दर अपनी शक्ति का प्रयोग किया। और अब मैं चाहता हूं कि तुम यह याद रखो कि मैं जो कुछ तुमसे कहता हूं वह सभी लोगों से कहता हूं।

६. और देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि यह सब इन लोगों को फंसाने के लिए उस शत्रु का फन्दा था जिससे वह तुम्हें अपने अधीन कर ले, और अपनी (५) जंजीर से घेर ले और अपनी दासता में (६) रखने की शक्ति के अनुसार सदैव के लिए नष्ट हो जाने के निमित्त उस जंजीर से बांध दे।

७. जब अलमा ने इन बातों को कहा, तब जीज़रोम और भी अधिक कांपने लगा, क्योंकि परमेश्वर की शक्ति का उसे और भी अधिक विश्वास होने लगा; और उसे यह भी विश्वास हो गया कि अलमा और अमूलक को उसके विषय में जानकारी थी, और उसे यह भी विश्वास हो गया कि उसके (७) हृदय के विचारों और इच्छाओं को वे जानते हैं; क्योंकि उनको यह शक्ति दी गयी थी जिससे वे पवित्र आत्मा की भविष्यवाणी को जान सकें।

८. और जीज़रोम उत्साह के साथ जिज्ञासु हो पूछने लगा जिससे वह परमेश्वर के राज्य के विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त कर सके। और उसने अलमा से कहा: अमूलक ने जो कहा है कि भले और बुरे दोनों मृत (८) पुनर्जीवित किए जाएंगे और परमेश्वर के सामने उनके कर्मों के अनुसार न्याय के लिए लाया जाएगा, उसका क्या अर्थ है?

९. और तब इसकी व्याख्या करते हुए अलमा ने उससे कहा: बहुतों को परमेश्वर के २६ *रहस्यों के भेद दिए हैं; फिर भी उन्हें कड़ाई के साथ आज्ञा दी गई है कि वे उनका भेद न खोलें केवल (९) उतना ही भेद खोलें जितना कि परमेश्वर मानव सन्तान को उनकी प्रभु के प्रति जिज्ञासा और श्रम के अनुसार देने की इच्छा रखता है।

१०. इसलिए जो अपने हृदय को कठोर बनाएगा वह उसकी वाणी का (१०) कम अंश प्राप्त करेगा;

(१) अल० ११:२०-३८. (२) अल० ११:४६. (३) देखो १८, २ नफी ९. (४) अल० ११:२०-३८. (५) देखो १६, २ नफी २८. (६) देखो २३. या० ६. (७) पद्य ३. (८) देखो ४, २ नफी २. पद्य १०, ११. अल० २६:२२. (९) ३ नफी २६:६-११. ए० ४:१-७. (१०) देखो ९.

ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

और जो अपने हृदय को कठोर नहीं करेगा उसे उसकी वाणी का (११) अधिकांश भाग तब तक प्राप्त होता रहेगा, जब तक कि वह पूरे रहस्यों को जान कर उन्हें अच्छी तरह समझ नहीं जाएगा।

११. और जो अपने हृदयों को कठोर बना लेंगे उनको उसकी वाणी का न्यूनतम अंश तब तक प्राप्त होगा, जब तक कि वे उसके रहस्यों के विषय में कुछ भी नहीं जानेंगे; और तब शैतान के द्वारा वे (१२) बन्दी बनाए जायेंगे और उसकी इच्छानुसार नष्ट कर दिया जाएगा। (१३) अधोलोक की जंजीर का अर्थ यही होता है।

१२. और अमूलक ने (१४) मृत्यु और उस (१५) नश्वरता से अमरत्व प्राप्ति और परमेश्वर के न्याय के विषय में स्पष्ट ही कहा।

१३. तब अगर हमारे हृदय कठोर बनाए गए हैं, हां, अगर हमने अपने हृदयों को उसकी वाणी के प्रति इतना कठोर कर लिया है जैसे कि वह हमारे अन्दर है ही नहीं, तब हमारी स्थिति भयंकर है, क्योंकि इस स्थिति में हमें दण्डनीय ठहराया जाएगा।

१४. क्योंकि हमारी बातें ही हमें अपराधी ठहराएंगी, हां, हमारे सभी कर्म हमें दण्डनीय सिद्ध करेंगे; हमें कलंकहीन नहीं पाया जाएगा; और हमारे विचार हमें अपराधी ठहराएंगे; और ऐसी भयंकर स्थिति में हम अपने परमेश्वर की ओर देखने का साहस नहीं कर सकते; और हम प्रसन्नतापूर्वक उसकी उपस्थिति से छुपने के लिए अपने ऊपर चट्टानों और पर्वतों के गिरने की इच्छा करेंगे।

१५. लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए; हमें आगे बढ़ कर उसके यश, शक्ति, शौर्य, महिमा और राज्य के सामने जाकर अपने अपने अनन्त कलंक को स्वीकार करके यह कहना चाहिए कि उसके सभी न्याय उचित हैं; और वह जो कुछ करता है वह ठीक ही करता है, और वह मानव सन्तान के प्रति दयालु है, और वह उन हर एक लोगों को बचाने का सामर्थ्य रखता है जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं और बुरे कर्मों पर पश्चात्ताप कर उसका परिणाम प्राप्त करते हैं।

१६. और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि तब मृत्यु आती है—दूसरी मृत्यु जो कि (१६) आत्मिक मृत्यु है; तब यह वह समय होगा जबकि कोई अपने पापों में मरेगा, तब शारीरिक मृत्यु के साथ उसकी आत्मिक मृत्यु भी होगी; हां, (१७) धार्मिकता की बातों के प्रति उसकी मृत्यु होगी।

१७. तब ही वह समय होगा जब उनकी यन्त्रणा (१८) आग और गन्धक की उस झील के समान होगी जिसकी लपटें सदैव उठती ही रहती हैं; और तब ही वह समय होगा जब वे शैतान की इच्छा के वशीभूत होकर उसकी शक्ति और बन्धन के अनुसार अनन्त विनाश के लिए (१९) जंजीर से जकड़ दिए जाएंगे।

१८. मैं तुमसे कहता हूं कि तब उनके लिए ऐसे होगा जैसे उनके लिए प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति पाना है ही नहीं; क्योंकि परमेश्वर के न्याय के अनुसार उनका उद्धार किया ही नहीं जाएगा; और अधिक भ्रष्टता न होने से वे (२०) मर भी नहीं सकेंगे।

१९. और जब अलमा ने बोलना समाप्त किया तब लोग और भी आश्चर्यचकित हो गए।

२०. लेकिन उनमें एण्टिनूह नाम का एक व्यक्ति था, जो उनमें एक मुख्य शासक था; वह आगे बढ़ कर बोला: इसका क्या अर्थ है, जो तुमने कहा कि (२१) मनुष्य मर कर जी उठेगा और उसको नश्वरता से बदल कर अमर कर दिया जाएगा जिससे आत्मा कभी नष्ट नहीं होगी?

२१. उस शास्त्र का क्या अर्थ है—जो यह कहता है कि (२२) परमेश्वर ने अदन की बाटिका के पूर्व की ओर करूबों और ज्वालामय तलवार को नियुक्त कर दिया कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे प्रथम माता-पिता उसमें प्रवेश कर जीवन के वृक्ष के फल को खाकर सदैव के लिए अमर हो जायें।

(११) देखो ९. (१२) देखो ९, २ नफी ९. (१३) देखो १६, २ नफी २८. (१४) अल० ११:४१-४५. (१५) देखो ४, २ नफी २. (१६) पद्य ३२. अल० १३:३०. देखो १५, २ नफी ९. देखो ११, १ नफी १५. या० ३:११. (१७) पद्य ३२. १ नफी १५:३३. अल० ४०:२६. इला० १४:१८. (१८) देखो १२, या० ६. (१९) देखो १६, २ नफी २८. (२०) पद्य २०. अल० ११:४५. (२१) पद्य १२:१८. (२२) उत्पत्ति ३:२४.

और इस तरह हम देखते हैं कि यह संभव नहीं था कि वह सदा जीवित रहते।

२२. तब अलमा ने उससे कहा: यही वह बात है जिसे मैं समझाने वाला था। अब हम यह देखते हैं कि वर्जित फल खाने से परमेश्वर की वाणी के अनुसार आदम का पतन हुआ; इस प्रकार हम देखते हैं कि उसके पतन से मानव जाति (२३) पथभ्रष्ट होकर पतित हो गई।

२३. और अब देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि अगर आदम के लिए उस समय जीवन के वृक्ष के फल का भोग करना (२४) सम्भव होता, तब मृत्यु नहीं होती, तब उसकी वाणी निरर्थक होती और परमेश्वर को झूठा ठहराती क्योंकि उसने कहा था: (२५) अगर तुमने खाया तब तुम अवश्य ही मर जाओगे।

२४. और हम देखते हैं कि मनुष्य की मृत्यु होती है, हां, वह मृत्यु जिसके विषय में (२६) अमूलक ने कहा था, जो कि शारीरिक मृत्यु है; फिर भी मनुष्य को समय दिया गया था जिसमें वह पश्चात्ताप कर सकता था; इसलिए यह जीवन (२७) परीक्षा काल की स्थिति में होता है; और यह समय परमेश्वर से मिलने और तैयारी करने के लिए होता है; उस अनन्त स्थिति की तैयारी का समय होता है जिसके विषय में हम लोगों ने कहा है और जो कि मरे हुओं के (२८) पुनर्जीवित होने के पश्चात् आता है।

२५. अब, अगर पृथ्वी की नींव के समय से उद्धार की योजना नहीं बनाई गई होती, तब मृतकों को पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता था, लेकिन उद्धार की योजना बनाई गई थी जो (२९) मृतकों के लिए पुनर्जीवन लाएगी जिसके विषय में कहा जा चुका है।

२६. और तब देखो, हमारे प्रथम माता-पिता के लिए आगे बढ़कर (३०) जीवन के वृक्ष के फल खाना सम्भव होता तब वे सदैव के लिए दुखद स्थिति में होते क्योंकि उन्हें परीक्षण काल का अवसर प्राप्त नहीं होता: और इस तरह से प्रायश्चित द्वारा मुक्ति की योजना निरर्थक होती और परमेश्वर की वाणी का भी कोई महत्व नहीं रहता।

२७. लेकिन देखो, ऐसा नहीं हुआ था; मनुष्य के लिए मृत्यु नियुक्त थी और उन्हें मरना था; और मृत्यु के पश्चात् उन्हें न्याय के लिए आना है, और यह वही न्याय है जिसके विषय में हमने कहा था और यही अन्त है।

२८. और जब परमेश्वर ने मनुष्य के लिए यह सब नियुक्त कर दिया तब, देखो, जो कुछ नियुक्त किया था उन सब के विषय में मनुष्य को बतलाना उन्होंने हितकर समझा;

२९. इसलिए उन्होंने उन स्वर्गदूतों को भेज कर उनसे (३१) बातें करवाईं जिन्होंने मनुष्यों को उसकी महिमा दिखाई।

३०. और वे उसी समय से उसका नाम पुकारने लगे; इसलिए परमेश्वर मनुष्यों से (३२) वार्ता करने लगा, और उनको प्रायश्चित द्वारा मुक्ति की योजना की जानकारी कराई जिसे कि (३३) पृथ्वी की नींव के समय से तैयार किया गया था; और यह जानकारी उसने उनके विश्वास, पापों पर पश्चात्ताप और उनके पवित्र कर्मों के अनुसार कराई।

३१. इसलिए हमने मनुष्यों को आदेश दिया क्योंकि उन्होंने मानव जीवन के विषय में (३४) प्रथम आज्ञा का उल्लंघन कर ईश्वर की तरह भले और बुरे जानने वाले होकर अपने आप को कर्म करने की स्थिति में कर लिया अर्थात् वह अपनी (३५) इच्छा और आनन्द के अनुसार भले या बुरे कर्म करने की स्थिति में कर दिए गए—

३२. इसलिए परमेश्वर ने (३६) प्रायश्चित द्वारा पापों से मुक्ति प्राप्त करने की योजना बतलाने के पश्चात् उनको आज्ञायें दीं, जिससे कि वे दुष्कर्म न करें जिनको करने से (३७) दूसरी मृत्यु होती है

(२३) अल० ९:३०, ३२. देखो ५ और ७, २ नफी ९. (२४) पद्य २६. अल० ४२:२-९. (२५) उत्पत्ति २:१७. (२६) अल० ११:४१-४५. (२७) अल० ३४:३२-३५. ४२:४, १३. (२८) देखो ४, २ नफी २. (२९) देखो ४, २ नफी २. (३०) पद्य २३. अल० ४२:२-९. (३१) अनमोल मोती मूसा ५-६. (३२) अनमोल मोती मूसा ५:४, ५. (३३) देखो ४, मूसा ४. (३४) २ नफी २:१८, १९. उत्पत्ति २:१६, १७. (३५) २ नफी २:१६. (३६) अनमोल मोती ५:४-९. (३७) पद्य १६, याकू० ३:११. अल० १३:३०.

जो कि धार्मिकता की दृष्टि से अनन्त मृत्यु होती (३८) है; और जिस पर प्रायश्चित द्वारा पापों से क्षमा की योजना का कोई असर नहीं होता क्योंकि परमेश्वर की सर्वोच्च श्रेष्ठता के अनुसार (३९) न्याय को नष्ट नहीं किया जा सकता।

३३. लेकिन परमेश्वर ने अपने, पुत्र के नाम पर मानव समाज को पुकारा है, (प्रायश्चित द्वारा अपने पापों से क्षमा प्राप्त करने की जो योजना है, वह यही है) और कहा: (४०) अगर तुमने अपने पापों पर पश्चात्ताप किया और अपने हृदयों को कठोर नहीं किया, तब मैं तुम पर अपने एकमात्र पुत्र के द्वारा दया करूंगा।

३४. इस कारण जो भी कोई अपने पापों पर पश्चात्ताप करेगा और अपने हृदय को कठोर नहीं करेगा वह मेरे एकमात्र इकलौते पुत्र के द्वारा दया प्राप्ति का अधिकार प्राप्त करने का अधिकारी होगा और अपने बुरे कर्मों को क्षमादान करवा सकेगा; और ये ही मेरे आरामगृह में आ सकेंगे।

३५. और देखो, मैं क्रोध में शपथ लेकर कहता हूं कि जो कोई अपने हृदय को कठोर (४१) करके अत्याचार करेगा, वह मेरे विश्रामगृह में प्रवेश नहीं करेगा।

३६. और अब, मेरे भाइयो, देखो मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुमने अपने हृदयों को कठोर बनाया तब तुम प्रभु के विश्रामगृह में (४२) प्रवेश नहीं कर सकोगे; इसलिए तुम्हारे अत्याचार उसको तुम्हारे ऊपर क्रोध करने के लिए उसी प्रकार भड़का रहे हैं जिस प्रकार (४३) प्रथम बार भड़काया था, हां, उसके प्रथम और अन्तिम क्रोध में कही गई वाणी के अनुसार आत्मा को (४४) सदैव के लिए नष्ट कर दिया जाएगा; इसलिए उसकी वाणी के अनुसार (४५) प्रथम मृत्यु के साथ (४६) अन्तिम मृत्यु भी होगी।

३७. और अब, मेरे भाइयो, जब कि हम इन बातों को जानते हैं जो कि सत्य है, तब हम अपने पापों पर पश्चात्ताप करें और अपने हृदयों को कठोर न करें जिससे कि हम अपने प्रभु परमेश्वर के (४७) दूसरे नियमों को भंग करके और उसे उत्तेजित करके, उसके क्रोध को अपने ऊपर न आने दें; लेकिन परमेश्वर के (४८) विश्रामगृह में प्रवेश करें जो कि उसी की वाणी के अनुसार तैयार किया गया है।

अध्याय १३

अलमा के उपदेश का क्रम—परमेश्वर के पुत्र का पवित्र पद—मुख्य पुरोहित—नियुक्ति क्यों—मल्कीसेदक और इब्राहीम।

१. मेरे भाइयों, मैं पुन: उस समय का दिग्दर्शन करवाना चाहता हूं जब कि प्रभु परमेश्वर ने अपने बच्चों को इन आज्ञाओं को दिया था; और मैं चाहता हूं कि तुम यह स्मरण रखो कि लोगों को इन बातों की शिक्षा देने के लिए प्रभु परमेश्वर ने अपनी पवित्र-व्यवस्था के अनुसार (१) पुरोहितों को नियुक्त किया जो कि उसके पुत्र द्वारा दी गई व्यवस्था के अनुसार ही था।

२. और वे पुरोहित उसके (२) पुत्र की व्यवस्थानुसार नियुक्त किए गए थे जिससे कि लोग यह जान सकें कि किस प्रकार उसके पुत्र से उद्धार की आशा करें।

३. और वे इस प्रकार नियुक्त किए गए थे—परमेश्वर के (३) भविष्यज्ञान के अनुसार, उनके अत्यधिक विश्वास और अच्छे कर्मों के कारण पृथ्वी की नींव के समय से उनकी पुकार हुई, और उन्हें तैयार किया गया; उन्हें सबसे पहले (४) भले या बुरे को चुनने का अवसर दिया गया; उन्होंने अत्यधिक विश्वास के साथ भले को (५) चुना, इसलिए उन्हें धार्मिक प्रेरणा प्राप्त हुई; हां, वह दैवी प्रेरणा जिसके द्वारा उद्धार प्राप्त होता है।

४. इस प्रकार अपने विश्वास के कारण उन्हें यह (६) दैवी-प्रेरणा प्राप्त हुई, जब कि दूसरे

(३८) देखो १७. (३९) मूसा० ५-२७. अल० ३४:१५, १६. ४२:१३-२५. (४०) अनमोल मोती मूसा० ५:८. (४१) अनमोल मोती मूसा ५:१५. (४२) पद्य ३१. (४३) पद्य ३५. (४४) देखो ३७. (४५) देखो ३७. (४६) पद्य २३. (४७) अनमोल मोती मूसा० अध्याय ४-७. (४८) पद्य ३४, ३५. अल० १३:६, १६:२९. १६:१७. अध्याय १३. (१) अनमोल मोती ६:७. ८:१९. सिद्धान्त और शर्तनामा ८४:६-२८, १०७. (२) देखो १. (३) देखो ४, मूसा ४. (४) पद्य ७. (५) २ नफी २:१६. अलमा १२:३१. (६) देखो १.

ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

अपने हृदय की कठोरता और विवेक के अन्धेपन के कारण परमेश्वर की आत्मा को अस्वीकार कर देते; अन्यथा वे भी अपने भाइयों के समान अवसर प्राप्त कर सकते थे।

५. अर्थात् आरम्भ में उन्होंने अपने भाइयों के समान ही अवसर प्राप्त किया था; इस प्रकार यह दैवी-प्रेरणा (७) पृथ्वी की नींव के समय से उन लोगों के लिए तैयार की गई थी जो उस इकलौते पुत्र के प्रायश्चित होने और विश्वास करने के कारण अपने (८) हृदयों को कठोर नहीं बनाते हैं।

६. इस तरह दैवी-प्रेरणा की पुकार पर उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं को मानव सन्तान को सिखाने के लिए (९) पवित्र-व्यवस्था उच्च पुरोहित के पद पर नियुक्त किया गया ताकि वे उसके (१०) विश्रामगृह में प्रवेश कर सकें।

७. यह (११) उच्च पुरोहित पद उसके पुत्र की व्यवस्था के अनुसार था, जो व्यवस्था (१२) पृथ्वी की नींव के समय से थी; दूसरे शब्दों में (१३) इसके बिना दिन के आरम्भ या वर्ष के अन्त होने के कारण (१४) उसे सदा से और सदैव के लिए, उसके सब वस्तुओं के (१५) पूर्वज्ञान के अनुसार तैयार किया गया था।

८. तब उनको इस तरह नियुक्त किया गया— जब उनकी पुकार दैवी-प्रेरणा से हुई, तब वे पवित्र व्यवस्थानुसार नियुक्त किए गए और इस प्रकार वे उस धार्मिक व्यवस्था का (१६) उच्च पुरोहित का पद धारण करते हैं, जिसकी प्रेरणा व्यवस्था और श्रेष्ठ पुरोहिती पद (१७) आदि और अन्तहीन है।

९. इस प्रकार एकमात्र पिता के उस इकलौते पुत्र की व्यवस्था के अनुसार वे सदैव के लिए (१८) उच्च पुरोहित बन जाते हैं जो कि (१९) आदि और अन्तहीन है जो कि कृपा, निष्पक्षता और सच्चाई से परिपूर्ण है।

१०. और जैसा कि मैंने इस (२०) श्रेष्ठ पुरोहिती पद के विषय में कहा, अनेक लोग नियुक्त होकर (२१) परमेश्वर के श्रेष्ठ पुरोहित बने और यह उनके भारी विश्वास, पापों पर पश्चात्ताप और परमेश्वर के सामने धार्मिकता के कारण हुआ। उन्होंने नष्ट हो जाने की अपेक्षा पश्चात्ताप करना और धार्मिकता को चुना।

११. इसलिए उनकी पुकार इस पवित्र-व्यवस्था अनुसार हुई और वे पवित्र हुए, और उनके वस्त्र मेमने के (२२) लहू से धुल कर उज्ज्वल हुए।

१२. जब वे पवित्र आत्मा के द्वारा शुद्ध किए गए और उनके वस्त्र उज्ज्वल हुए और परमेश्वर के सामने शुद्ध और बेदाग ठहरे और बुरे कर्मों को केवल घृणा की दृष्टि से देखने लगे तब उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर के (२३) विश्रामगृह में प्रवेश किया; और ऐसे लोगों की संख्या जिनको शुद्ध किया गया, और जो परमेश्वर के विश्रामगृह में प्रविष्ट हुए, बहुत अधिक थी।

१३. और अब, मेरे भाइयो, मैं चाहता हूं कि तुम परमेश्वर के सामने दीन बनो और ऐसे कर्म करो जिससे प्रायश्चित द्वारा उपयुक्त फल प्राप्त कर सको और तुम भी उस विश्रामगृह में प्रवेश कर सको।

१४. हां, तुम अपने आपको उसी तरह दीन बनाओ जिस प्रकार उस (२४) मल्कीसेदेक के समय में लोगों ने अपने आपको दीन बना लिया था, जो कि उसी व्यवस्थानुसार श्रेष्ठ पुरोहित था जिसकी चर्चा मैंने की है और जिसने (२५) सदा के लिए श्रेष्ठ पुरोहिती का पद अपने ऊपर ले लिया था।

१५. और यही वह मल्कीसेदेक है, जिसे इब्राहीम ने दशांश दिया, हां, स्वयं हमारे पूर्वज इब्राहीम ने अपने पास जो कुछ था उसका (२६) दशांश दिया।

१६. ये व्यवस्थायें इस प्रकार दी गई थीं कि जिससे परमेश्वर के पुत्र की कृपा और उसकी आज्ञानुसार अपने पापों की क्षमा के निमित लोग

(७) देखो ४, मूसा ४. (८) देखो ६, २ नफी २. (९) देखो ७, मूसा २६. (१०) देखो ३४, अल० १२. (११) देखो ७, मू० २६. (१२) देखो ४, मू० ४. (१३) अनमोल मोती इब्रा० १:२-४. (१४) देखो १, मू० ३. (१५) पद्य ३. देखो १८, २ नफी ९. (१६) देखो ७, मू० २६. (१७) देखो १, मू० ३. (१८) देखो ७, मू० २६. (१९) देखो १, मू० ३. (२०) देखो ७, मूसा २६. (२१) सि० शर्त० १०७:४०-५५. ८४:६-२२. (२२) देखो ६, २ नफी २. (२३) देखो ४८, अल० १२. (२४) पद्य १५-१८. (२५) पद्य ७-९. देखो १३. (२६) उत्पत्ति १४:२०.

ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

उसकी ओर निहारें कि जिससे वे (२७) प्रभु के विश्रामगृह में प्रवेश कर सकें।

१७. तब मल्कीसेदेक सदोम का राजा था; और उसके लोग अत्याचार और घृणित कार्यों में डूबे हुए थे; हां, वे सब भटक गए थे; वे सभी तरह के दुष्कर्म करने लगे थे।

१८. लेकिन मल्कीसेदेक ने जो बहुत अधिक विश्वास करने वाला था और परमेश्वर की व्यवस्थानुसार श्रेष्ठ (२८) पुरोहितीपद प्राप्त किए हुए था, लोगों को अपने पापों पर पश्चात्ताप करने का उपदेश दिया। और देखो, उन लोगों ने पश्चात्ताप किया; और मल्कीसेदेक ने अपने समय देश में शान्ति स्थापित की, इस कारण वह शान्ति का राजकुमार कहलाया क्योंकि वह सदोम का राजा था और वह अपने पिता के अधीन शासन करता था।

१९. उसके (२९) पूर्व और उसके (३०) पश्चात् बहुत हुए, लेकिन उससे बढ़ कर कोई नहीं हुआ; इसी कारण उसकी चर्चा हुई है।

२०. विषय को दोहराने की आवश्यकता नहीं क्योंकि जितना मैंने कहा है उतना यथेष्ट है। देखो, (३१) शास्त्र तुम्हारे सामने है; अगर तुमने उनका उपयोग नहीं किया, तब वह तुम्हारे नाश का कारण होगा।

२१. और तब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने इन शब्दों को कहना समाप्त किया, तब उसने अपने हाथ को उनके आगे फैला कर ऊंचे शब्दों में कहा: पश्चात्ताप करने का यही समय है, क्योंकि मुक्ति का दिन निकट आ रहा है।

२२. हां, (३२) स्वर्गदूतों के मुख से प्रभु की वाणी सभी राष्ट्रों से घोषणा कर रही है; हां यह घोषणा कर रही है कि सम्भव है उन्हें भारी आनन्द के समाचार मिलेंगे; हां ये समाचार वह अपने सभी लोगों को दे रहा है; यहां तक कि उनको भी, जो सारी पृथ्वी पर विदेशों में बिखर गए हैं; इसलिए वे सन्देश हमारे पास भी आये हैं।

२३. और वे स्पष्ट रूप से बतलाए गए हैं जिससे कि हम समझें और (३३) भूल न कर सकें; और यह इसलिए क्योंकि हम एक अनजान देश में विचरण करने वाले हैं; इसलिए हम विशेष कृपापात्र हैं, क्योंकि हमारे अंगूर के बगीचे के हर भाग में हमें यह अति आनन्द के समाचार मिल रहे हैं।

२४. क्योंकि देखो, हमारे देश में स्वर्गदूत अनेक लोगों से इसकी घोषणा कर रहे हैं; और यह इसलिए कि जब वह अपनी महिमा के साथ आए, तब उसकी वाणी को स्वीकार करने के लिए मानव सन्तान के हृदय तैयार रहें।

२५. और अब हम स्वर्गदूतों से उसके आगमन का समाचार सुनने की प्रतीक्षा में हैं; क्योंकि वह समय निकट है लेकिन हम नहीं जानते कि कब मैं परमेश्वर से विनती करता हूं कि वह मेरे समय में हो, लेकिन आगे पीछे होने से भी मुझे आनन्द होगा।

२६. और उसके आने के समय (३४) स्वर्गदूतों के मुख से अच्छे और पवित्र लोगों को बतलाया जाएगा जिससे कि हमारे पूर्वजों के शब्द जो उन्होंने उसके विषय में अपनी भविष्यवाणी की भावना के अनुसार कहे थे, सच ठहरे।

२७. और अब, मेरे बन्धुओ, मैं अपने हृदय से आकुलता, यहां तक कि कष्ट के साथ कहता हूं कि तुम मेरी बातों को सुनो, और अपने पापों को उतार फेंको और अपने पश्चात्ताप के दिन में विलम्ब मत करो।

२८. परन्तु प्रभु के सामने तुम अपने आपको दीन बना लो, और उसके पवित्र नाम को पुकारो, जागते रहो और (३५) लगातार प्रार्थना करते रहो जिससे कि तुम लालच में न पड़ो, अपितु उन पर विजय पाओ; और इस तरह पवित्र आत्मा का अनुसरण करो और तुम दीन, विनीत, आज्ञाकारी, प्रेम से परिपूर्ण और अति सहनशील बनो।

२९. (३६) प्रभु में विश्वास होने के कारण; अनन्त जीवन प्राप्त होने की आशा के कारण; अपने हृदयों में सदैव परमेश्वर के प्रति प्रेम होने

(२७) देखो ४८, अल० १२. (२८) देखो ७. मू० २६. (२९) सि० शर्त० १०७:४०-५५. (३०) सि० शर्त० ८४:६-२२. (३१) अल० १४:१,८, १४. (३२) पद्य २४. मू० ३:२-२७. अल० ८:१४-१७, २०. १०:७-१०. २०:११-३१. (३३) देखो २, २ नफी २५. (३४) इला० १३:७. १४:२६, २८. ३ नफी ७:१८. (३५) देखो ५, २ नफी ३२. (३६) देखो २१, अल० ७.

ईसा से ८२ वर्ष पूर्व

के कारण तुम अन्तिम दिन (३७) ऊपर उठाए जाओगे और उसके (३८) विश्रामगृह में प्रवेश कर सकोगे।

३०. और प्रभु तुम्हें पश्चात्ताप दे जिससे कि तुम उसका क्रोध अपने ऊपर न लाओ और (३९) अधोलोक की जंजीर से बांधे न जाओ, और तुम्हारी (४०) दूसरी मृत्यु न हो।

३१. और अलमा ने बहुत-सी अन्य बातें कहीं जिनको इस पुस्तक में नहीं लिखा गया।

अध्याय १४

अलमा और अमूलक का बन्दी बनाया जाना—उनके अनुयाइयों पर अत्याचार—अग्नि द्वारा मृत्यु—जीज़रोम का पश्चात्ताप करना और उनके लिए वकालत करना—भविष्यवक्ताओं को मुक्त होना और उनके शत्रुओं का मारा जाना।

१. और तब ऐसा हुआ कि जब उसने लोगों से बोलना समाप्त किया तब उनमें से बहुतों ने उसकी बातों पर विश्वास किया और वे पश्चात्ताप और (१) शास्त्रों का अध्ययन करने लगे।

२. लेकिन उनमें से बहुत से लोग अलमा और अमूलक को नष्ट कर देने की इच्छा करने लगे; क्योंकि जीज़रोम के (२) विरुद्ध स्पष्ट बोलने से वे अलमा पर क्रोधित हो उठे थे; और उन्होंने यह भी कहा कि (३) अमूलक ने उनसे असत्य कहा और उनके नियमों, वकीलों और न्यायाधीशों की निन्दा की है।

३. और वे अलमा और अमूलक पर इसलिए भी क्रोधित हो उठे थे क्योंकि उन्होंने उनके उन दुष्कर्मों के विरुद्ध स्पष्ट गवाही दी थी, जिन्हें वे गुप्त रखना चाहते थे।

४. लेकिन ऐसा हुआ कि उन्होंने उनको गुप्त न रहने दिया, और वे उनको पकड़ कर दृढ़ बन्धनों से बांध दिया और उन्हें अपने देश के प्रधान निर्णायक के पास ले गए।

५. और लोगों ने जाकर उनके विरुद्ध (४) गवाही दी कि उन्होंने उनके नियमों, वकीलों और देश के निर्णायकों और देश के लोगों की निन्दा की है; और यह भी कहा कि केवल एक ही परमेश्वर है और वह अपने पुत्र को लोगों में भेजेगा परन्तु वह उनको (५) बचाएगा नहीं, और उन्होंने इस तरह की कई अन्य बातों का अलमा और अमूलक पर दोष लगाया। यह सब देश के प्रधान निर्णायक के सामने किया गया।

६. और ऐसा हुआ कि जो बातें कही गई थीं उससे जीज़रोम चकित हो उठा; उसने जो (६) अपनी असत्य बातों द्वारा लोगों को भ्रम में डाल रखा था उसे भी वह जान चुका था; और अपने स्वयं की भूलों के कारण उसकी अन्तरात्मा उसे दुख देने लगी; हां, उसे अधोलोक की वेदना घेरने लगी।

७. और तब ऐसा हुआ कि वह लोगों से रोते हुए कहने लगा : देखो, मैं दोषी हूं और ये लोग परमेश्वर के समक्ष निर्दोष हैं। और वह उनके लिए उस समय से अनुनय—विनय करने लगा; लेकिन लोगों ने यह कहते हुए उसकी निन्दा की; क्या तुम भी शैतान ग्रसित हो? और उन्होंने उस पर थूक कर उसे और उन लोगों को (७) बाहर निकाल दिया जो अलमा और अमूलक द्वारा कही गई बातों पर विश्वास कर रहे थे; और लोगों को भेज कर उन पर पथराव भी करवाया।

८. और वे उनकी स्त्रियों और बच्चों को और जो भी कोई परमेश्वर की वाणी पर विश्वास कर रहा था या जिनको शिक्षा दी गई थी उन सभी लोगों को पकड़-पकड़ कर लाए और उन्हें और उनके (८) पवित्र शास्त्रों को उन्होंने (९) अग्नि में डाल दिया जिससे कि वे सब अग्नि में जल कर नष्ट हो जाएं।

९. और ऐसा हुआ कि वे अलमा और अमूलक को बलिदान के स्थान पर ले गए जिससे कि वे (१०) अग्नि द्वारा उनका नष्ट होना देख सकें।

१०. जब अमूलक ने अग्नि में जलते हुए

(३७) देखो १६, मू० २३. (३८) देखो ४८, अल० १२. (३९) देखो १६, २ नफी २८. (४०) देखो १६, अल० १२. अध्याय १४. (१) पद्य ८, १४. अल० १३:२०. (२) अल० १२:३-७. (३) अल० १०:२४-३२. (४) पद्य २. (५) अल० ११:३३-३७. (६) अल० १०:३१. ११:२१-३८. (७) अल० १५:१. (८) पद्य ९, १५. अल० १५:२. (९) पद्य १:१४. अल० १३:२०. (१०) देखो ८.

स्त्रियों और बच्चों की पीड़ा को देखा तब उसे बहुत ही दुख हुआ और उसने अलमा से कहा : हम इस हृदय-विदारक दृश्य को कैसे देखें? इसलिए हम अपने हाथों को फैला कर (११) परमेश्वर की शक्ति का उपयोग करें जो कि हमारे अन्दर है और हम इन्हें ज्वाला में जलने से बचा लें।

११. लेकिन अलमा ने कहा: पवित्र आत्मा मुझे अपने हाथ को फैलाने से मना कर रही है; क्योंकि देखो, प्रभु उनका गौरव के साथ स्वागत कर रहा है; इस काम से उसे कष्ट हो रहा है, अर्थात् अपने हृदय की कठोरता के अनुसार ये लोग उनके साथ जो ऐसा व्यवहार कर रहे हैं इससे उसे कष्ट होता है, इसलिए वह इनके साथ जो (१२) न्याय करेगा वह उचित होगा; और उन निर्दोषों का लहू इनके विरुद्ध साक्षी के रूप में खड़ा होगा, हां, और अन्तिम दिन इनके विरुद्ध ऊंचे शब्दों में चिल्लाएगा।

१२. तब अमूलक ने अलमा से कहा: देखो, वे लोग शायद हमें भी जलाएंगे।

१३. और अलमा ने कहा: प्रभु की जो इच्छा! लेकिन देखो, हमारा काम समाप्त नहीं हुआ है; इसलिए वे हमें जला नहीं सकेंगे।

१४. तब ऐसा हुआ कि जब अग्नि में डाले हुए लोगों का शरीर और उनके साथ फेंके गए अभिलेख (१३) अग्नि में जल गए तब बंधे हुए अलमा और अमूलक के सामने प्रधान न्यायाधीश आकर खड़ा हुआ और उनके (१४) गालों पर तमाचा मारता हुआ बोला: तुमने जो कुछ देखा उसे देख कर भी क्या तुम पुन: इन लोगों को शिक्षा दोगे कि उनको (१५) ज्वाला और गन्धक के ताल में (१६) फेंका जायेगा?

१५. देखो, तुम देख ही रहे हो कि जिनको अग्नि में डाला गया उनको बचाने की शक्ति तुम में नहीं हैं; और न तो तुम्हारे विश्वास के कारण परमेश्वर ने ही उनकी रक्षा की । और निर्णायक ने उनके (१७) गालों पर पुन: मार कर कहा: तुम अपने विषय में क्या कहते हो?

१६. यह निर्णायक उस निहोर के मत और (१८) विश्वास का था जिसने गिडियन की (१९) हत्या की थी।

१७. और ऐसा हुआ कि अलमा और अमूलक ने उसको कोई उत्तर न दिया; और उसने उनको पुन: मारा (२०) और कारागार में डालने के लिए उन्हें अपने अफसरों को दे दिया।

१८. कारागार में तीन दिनों तक रहने पर (२१) निहोर के पेशे के बहुत से वकील, निर्णायक पुरोहित और शिक्षक कारागार के भीतर उनको देखने के लिए आए और उनसे अनेक बातों पर प्रश्न किए परन्तु उन्होंने उनको कोई उत्तर न दिया।

१९. और तब ऐसा हुआ कि न्यायाधीश उनके समक्ष खड़ा होकर उनसे बोला: तुम इन लोगों की बातों का उत्तर क्यों नहीं देते? क्या तुम यह नहीं जानते कि तुम्हें अग्नि में डलवा देने की शक्ति मुझमें है? और उसने उनको बोलने की आज्ञा दी परन्तु वे मौन ही रहे।

२०. और ऐसा हुआ कि वे वहां से अपने रास्ते चले गए परन्तु दूसरे दिन सुबह पुन: वापस आए और निर्णायक ने पुन: उनके गालों पर (२२) मारा। और बहुत से लोग आगे बढ़ कर उन्हें यह कहते हुए चांटे मारने लगे कि क्या तुम फिर खड़े होकर इन लोगों का न्याय करोगे और हमारे (२३) नियमों की निन्दा करोगे? अगर तुम में शक्ति है तब तुम अपने आपको (२४) मुक्त क्यों नहीं कर लेते?

२१. उन्होंने इसी प्रकार की बहुत-सी बातें उनसे दांत पीसते हुए कहीं, और उन पर थूका तथा उनसे बोले: अगर हम अभिशप्त होंगे तो देखने में कैसे लगेंगे?

२२. इसी प्रकार की हर बुरी बातें उनसे कही गईं; और वे कई दिनों तक उनका उपहास करते रहे। उन्हें भूखा मारने के लिए उनका भोजन बन्द कर दिया और प्यासे मारने के लिए जल बन्द

(११) पद्य २६-२९. अल० ८:३०-३१. (१२) पद्य २६-२९. अल० १६:२, ३, ९-११. (१३) देखो ८. (१४) देखो ९. (१५) पद्य १५, १७, २०, २४, २५. (१६) अल० १२:१७. (१७) देखो १५. (१८) अल० १:१५. (१९) अल० १:१७-१४. २:२०. (२०) देखो १५. (२१) अल० १:१५. (२२) देखो, १५. (२३) पद्य २, ५. (२४) पद्य २४.

ईसा से लगभग ८२ वर्ष पूर्व

कर दिया; उनके वस्त्र लेकर उन्हें बे वस्त्र कर दिया गया; इस तरह उन्हें (२५) दृढ़ बन्धनों से बांध कर कारागार में डाल दिया गया।

२३. और ऐसा हुआ कि जब वे इस प्रकार कई दिनों तक कष्ट झेल चुके (नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के दसवें वर्ष के दसवें माह के बारहवें दिन) तब अमोनिहा देश के मुख्य निर्णायक, शिक्षक, और वकील कारागार में जहां अलमा और अमूलक बन्धनों से बंधे थे वहां गए।

२४. और प्रधान निर्णायक ने उनके आगे खड़े होकर उन्हें पुनः मारा और उनसे कहा: अगर तुममें परमेश्वर की शक्ति है तब (२६) तुम इन बन्धनों से मुक्त हो जाओ और तब हम विश्वास करेंगे कि प्रभु तुम्हारे कहे अनुसार इन लोगों को नष्ट कर देगा।

२५. और ऐसा हुआ कि उनमें से अन्तिम व्यक्ति तक ने आगे बढ़ कर वही बातें दोहराते हुए कहीं; और जब अन्तिम व्यक्ति उनसे बोल चुका तब अलमा और अमूलक के ऊपर (२७) परमेश्वर की शक्ति आई, और वे उठकर खड़े हो गए।

२६. और अलमा ने पुकार कर कहा: हे प्रभु, हम कब तक इन भारी कष्टों को झेलें? हे, प्रभु मसीह में हमारे विश्वासानुकूल शक्ति दे और हमें मुक्त कर, और जिन (२८) बन्धनों से वे बंधे हुए थे उन्हें उन्होंने तोड़ डाला; और जब लोगों ने यह देखा तब नष्ट किए जाने के (२९) भय से सब भाग खड़े हुए।

२७. और ऐसा हुआ कि वे इतने अधिक भयभीत थे कि कारागार के बाहरी द्वार पर पहुंचने से पूर्व ही गिर पड़े; और पृथ्वी बहुत अधिक कम्पायमान हुई और कारागार की दीवार दो टुकड़ों में टूट गयी, इसलिए वे गिर पड़े और (३०) प्रधान निर्णायक, वकील, पुरोहित और शिक्षक जिन्होंने अलमा और अमूलक को मारा था वे दीवार के गिरने से मारे गए।

२८. और अलमा और अमूलक भले-चंगे कारागार से बाहर निकल गए; क्योंकि प्रभु ने मसीह पर उनके विश्वास के अनुसार उन्हें बल दिया। वे सीधे कारागार से बाहर आए और (३१) बन्धन मुक्त हो गए; और (३२) कारागार धरती पर गिर पड़ा और अलमा और अमूलक को छोड़ कर जितने लोग कारागार की दीवाल के (३३) अन्दर थे वे सब के सब मारे गए और अलमा और अमूलक सीधे नगर में आए।

२९. लोगों ने भीषण गर्जन को सुना था इसलिए उसका कारण जानने के लिए उनकी भारी भीड़ भागती हुई आई; और जब उन्होंने अलमा और अमूलक को कारागार में से आते हुए और (३४) कारागार की दीवालों को ध्वस्त होते हुए देखा तब वे बहुत अधिक भयभीत हुए और अलमा और अमूलक के सामने से उसी प्रकार भाग खड़े हुए जिस प्रकार दो शेरों के सामने से बकरी अपने बच्चों के साथ भागती है; इस प्रकार वे अलमा और अमूलक के सामने से भाग खड़े हुए।

अध्याय १५

जीज़रोम का चमत्कारी ढंग से चंगा होना, और उसका गिरजा में सम्मिलित होना और उपदेश देना—बहुतों का बपतिस्मा लेना—अलमा और अमूलक का ज़राहेमला लौटना।

१. और ऐसा हुआ कि अलमा और अमूलक को नगर छोड़ कर चले जाने की आज्ञा हुई; और वे वहां से विदा हो (१) सिदोम देश में आए; और देखो, वहां उन्होंने उन लोगों को पाया जो अमोनिहा से (२) निकाले गए थे और जिन पर पथराव किया गया था क्योंकि उन्होंने अलमा की बातों पर विश्वास किया था।

२. और उन्होंने उनसे जो कुछ (३) उनकी स्त्रियों, बच्चों और उन पर बीता था वह सब बताया और जिस (४) शक्ति द्वारा उन्हें बचाया गया था उसके विषय में भी बतलाया।

३. और जीज़रोम सिदोम में अपने दुष्कर्म के

(२५) पद्य ४, २३, २६. अल० ८:३१. (२६) पद्य २०. (२७) अल० ८:३०, ३१. (२८) देखो २५. (२९) पद्य २७. (३०) पद्य २३. (३१) पद्य २६. (३२) पद्य २७. (३३) पद्य २७. (३४) पद्य २७, २८. अध्याय १५. (१) पद्य ३, ४, ११, १३, १४, १७. (२) अल० १४:७. (३) अल० १४:८-१४. (४) अल० १४:२६-२९. ईसा से लगभग ८१ वर्ष पूर्व

कारण भारी मानसिक दुख से उत्पन्न ज्वर से पीड़ित था, क्योंकि वह सोच रहा था कि अलमा और अमूलक अब नहीं रहे और वे दोनों (५) उसी के पाप के कारण मार डाले गए हैं। इस भारी दुष्कर्म के साथ उसके अन्य पाप उसके विवेक को भारी सन्ताप दे रहे थे जिससे उसे शांति नहीं मिल रही थी इसलिए वह तीव्र ज्वर से जलने लगा।

४. जब उसने सुना कि अलमा और अमूलक (६) सिदोम देश में उपस्थित हैं तब उसके हृदय में कुछ साहस हुआ और उसने अविलम्ब उनके पास एक सन्देशवाहक को भेज कर उनको अपने पास आने की इच्छा प्रकट कर बुलाया।

५. और ऐसा हुआ कि वे उसके भेजे हुए सन्देश का अविलम्ब पालन करते हुए जीज़रोम के घर के अन्दर गए। उन्होंने उसे बीमार अपनी खटिया पर पाया और उसका (७) स्वास्थ्य जलते हुए ज्वर से बहुत अधिक गिर चुका था। और उसको अपने अत्याचारों के कारण बहुत अधिक (८) मानसिक कष्ट भी था; और जब उसने उनको देखा तब अपना हाथ आगे बढ़ा कर उनसे अपने को स्वस्थ करने कीं प्रार्थना की।

६. तब ऐसा हुआ कि अलमा ने उसका हाथ पकड़ कर उससे कहा: क्या तुम मसीह की मुक्ति दिलाने की शक्ति में विश्वास करते हो?

७. और उसने उत्तर देते हुए कहा: हां, मैं उन सभी बातों में विश्वास करता हूं जिनकी शिक्षा तुमने दी है।

८. और अलमा ने कहा: अगर तुम मसीह द्वारा मुक्ति में विश्वास करते हो तब तुम स्वस्थ हो सकते हो।

९. और उसने कहा, हां, मैं तुम्हारे कहे अनुसार विश्वास करता हूं।

१०. तब अलमा ने प्रभु को पुकार कर कहा: हे प्रभु, हमारे परमात्मा, इस मनुष्य पर दया कर और मसीह में इसके विश्वास के अनुसार इसे चंगा कर।

११. जब अलमा ने इन शब्दों को कहा तब जीज़रोम उछल कर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा; इससे सब लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ; और इसकी जानकारी सारे (९) सिदोम शहर में फैल गई।

१२. और अलमा ने जीज़रोम को प्रभु के लिए (१०) बपतिस्मा दिया; और वह उस समय से लोगों को उपदेश देने लगा।

१३. और अलमा ने (११) सिदोम देश में गिरजे की स्थापना की और (१२) पुरोहितों, शिक्षकों तथा उन लोगों को प्रभु के लिए बपतिस्मा देने के लिए प्रतिष्ठित किया जो बपतिस्मा लेने के लिए इच्छुक दिखते थे।

१४. और ऐसा हुआ कि (१३) बपतिस्मा लेने वालों की संख्या बहुत अधिक थी, क्योंकि सिदोम देश के हर एक भाग से लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी और उन्होंने बपतिस्मा लिया।

१५. लेकिन (१४) अमोनिहा की जनता कठोर हृदय और हठी बनी रही; उन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया और (१५) अलमा और अमूलक के सामर्थ्य को शैतान की शक्ति कहा; क्योंकि वे (१६) निहोर पेशे के थे और अपने पापों पर पश्चात्ताप पर विश्वास नहीं करते थे।

१६. अमूलक ने परमेश्वर की वाणी के लिए (१७) अमोनिहा देश में अपना सोना, चांदी और मूल्यवान वस्तुओं का परित्याग कर दिया था, और इसलिए वह अपने (१८) पुराने मित्रों, पिता और सम्बन्धियों के द्वारा त्याग दिया गया था;

१७. इस कारण जब अलमा ने लोगों को अपने हृदयों के अहंकार को वश में करते, और परमेश्वर के सामने अपने आपको दीन बनाते और (१९) उपासना स्थानों तर वेदी के समक्ष परमेश्वर की आराधना करने के लिए एकत्रित होकर शैतान से रक्षा करने, मृत्यु और नष्ट न होने के लिए लगातार प्रार्थना करते देखा, तब (२०) सिदोम

(५) अल० १०:३१. ११:२१-३८. १४:६-७. (६) देखो १. (७) पद्य ३. (८) पद्य ३. अल० १४:१६. (९) देखो १. (१०) देखो २१, २ नफी ९. (११) देखो १. (१२) देखो ३, मू० ६. (१३) देखो २१, २ नफी ९. (१४) देखो ६, अल० ८. (१५) अल० १४:२६-२९. (१६) अल० १:२-१५. २:२०. (१७) अल० १०:४. (१८) अल० १०:४, ११. (१९) देखो १. (२०) अल० १६:१३. २१:६. २२:७. २३:२. इला० ३:९, १४.

देश में अलमा ने गिरजा की स्थापना की जिसके पश्चात्—

१८. जैसा कि मैंने कहा, अलमा इन सब बातों को देखता हुआ अमूलक को साथ लेकर (२१) ज़राहेमला देश में आया और अपने घर ले गया और क्लेश में शान्ति दे कर प्रभु में उसका विश्वास दृढ़ किया।

१९. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का दसवां वर्ष समाप्त हुआ।

अध्याय १६

एक युद्ध की पुकार—लमनायटियों द्वारा अधर्मी शहर अमोनिहा का नष्ट किया जाना—जोरम और उसके पुत्रों द्वारा शत्रु का मर्दन किया जाना। निहोर की निर्जनता—गिरजा का व्यापक रूप में स्थापित होना।

१. नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के *ग्यारहवें वर्ष के दूसरे महीने के पांचवे दिन में ऐसा हुआ कि (१) ज़राहेमला देश में बहुत दिनों तक युद्ध और कलह न होने और शान्ति बने रहने के पश्चात् सारे देश में युद्ध की पुकार सुनाई दी।

२. क्योंकि देखो, लमनायटियों की सेना जंगल की ओर से निकल कर सीमा को पार कर (२) अमोनिहा नगर में घुस आई और लोगों को मारने और नगर को नष्ट करने लगी।

३. और तब ऐसा हुआ कि नफायटियों द्वारा यथेष्ट सेना संगठित कर उन्हें देश से बाहर खदेड़ने से पूर्व ही, अमोनिहा में रहने वालों और (३) नूह की सीमा के आस-पास रहने वाले लोगों को (४) नष्ट कर कुछ को कैद कर वे जंगल में ले गए।

४. तब जो लोग बन्दी बनाकर जंगल में ले गए थे उनको मुक्त करने की इच्छा नफायटियों की हुई।

५. नफायटियों की सेना का प्रधान अध्यक्ष (उसका नाम जोरम था और उसके दो पुत्र थे जिनका नाम था लेही और अहा) जोरम और उसके दो पुत्र जानते थे कि अलमा गिरजे का (५) प्रधान पुरोहित था और वह भविष्यवाणी करता था, इसलिए वे उसके पास गए और यह जानने की इच्छा की कि क्या प्रभु उन्हें उनके उन भाइयों की खोज में जंगल में जाने के पक्ष में है या नहीं जिनको लमनायटियों ने (६) बन्दी बना लिया था।

६. और ऐसा हुआ कि अलमा ने इस विषय पर प्रभु से जांच की और लौटकर उनसे कहा: देखो, लमनायटी (७) दक्षिण के जंगल में (८) मण्टी की सरहद से परे, सिदोन नदी पार करेंगे देखो, (९) सिदोन नदी के पूरब में तुम उनसे मिलोगे, और वहां प्रभु तुम्हारे उन भाइयों को तुम्हें वापस कर देगा जिन्हें लमनायटी (१०) बन्दी बनाकर ले गए हैं।

७. और तब (११) जोरम और उसके पुत्र अपनी सेना के साथ (१२) सिदोन नदी को पारकर (१३) मण्टी की सरहद से आगे उस दक्षिणी जंगल में गए जो कि सिदोन नदी के पूरब में था।

८. वहां उन्होंने लमनायटियों की सेना से युद्ध किया और लमनायटी तितर-बितर हो गए और उन्हें वन में खदेड़ दिया गया; और वे अपने उन भाइयों को वापस ले आये जिन्हें लमनायटी बन्दी बना कर ले गए थे। (१४) बन्दियों में से एक भी नहीं खोया था। वे अपने भाइयों द्वारा वापस लाये गए और उन्हें (१५) अपनी भूमि वापस मिली।

९. लमनायटी देश से बाहर खदेड़ दिए गए (१६) अमोनिहा के लोग मारे गए; हां, वहां के सब प्राणी मारे गए और उनका वह शहर, जिसे उसकी विशालता के कारण कहा जाता था कि परमेश्वर उसे (१७) नष्ट नहीं कर सकता।

(२१) ओम० १३. अध्याय १६. (१) ओ० १३. (२) देखो ९, अल० ८. (३) पद्य ९-११. अल० ६, १८. २५:२. (४) अल० ४९:१२-१५. (५) देखो ७, मू० २६. (६) पद्य ३, ४. (७) देखो ७, अल० २. (८) पद्य ७. अल० १७:१. २२:२७. ४३:२२, २४, २५, ४२. ५६:१४. ५७:२२. ५८:१. १३:२५-२८, ३९. ५९:६. (९) देखो ७, अल० २. (१०) पद्य ३, ४. (११) पद्य ५. (१२) देखो ७, अल० २. (१३) देखो ८. (१४) पद्य ३-६. (१५) पद्य ३. (१६) पद्य २, ३. अल० ९:१८. (१७) अल० ९:४, ५.

*ईसा से लगभग ८१ वर्ष पूर्व

वह भी नष्ट कर दिया गया और इस तरह निर्णायकों का ग्यारहवां वर्ष समाप्त हुआ।

१०. लेकिन देखो, एक ही दिन में वह निर्जन हो गया; और कुत्ते और वन के हिंसक पशुओं ने शवों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

११. फिर भी कई दिनों पश्चात् मृत शरीरों को एकत्रित कर छिछले गड्ढ़ों में ढंक दिया गया। और तब वहां इतनी अधिक दुर्गन्ध उठी कि कई वर्षों तक कोई भी वहां की भूमि लेने न गया। इस नीरवता को लोग (१८) निहोरों की निर्जनता कहने लगे; क्योंकि वहां के मृत लोग निहोर के पेशे के थे; और उनका देश निर्जन ही रहा।

१२. और लमनायटी नफायटियों के विरुद्ध नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के *चौदहवें वर्ष तक पुनः युद्ध करने नहीं आए। इस प्रकार नफी के लोग लगातार तीन वर्षों तक अपने पूरे देश में शान्ति से रहे।

१३. और अलमा और अमूलक जाकर लोगों को उनके (१९) मन्दिरों, आराधना स्थानों और (२०) यहूदियों के (२१) गिरजाघरों की तरह बने (२२) मन्दिरों में लोगों को अपने पापों पर पश्चात्ताप करने का उपदेश देने लगे।

१४. और जो लोग उनकी बातों को सुनने को तैयार थे उन्हें वे परमेश्वर की वाणी लगातार बिना भेदभाव के सुनाते।

१५. और इस प्रकार अलमा, अमूलक और बहुत से लोग जो सारे देश में प्रचार करने के लिए चुने गए थे परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने लगे। और सारे देश के नफायटियों में स्थापित गिरजा सार्वजनिक हो गया।

१६. और उनमें किसी प्रकार (२३) भेदभाव नहीं था; और प्रभु ने अपनी पवित्र आत्मा को सारे देश के ऊपर उड़ेल दिया ताकि मानव सन्तान की बुद्धि अर्थात् हृदयों को जब वह आएगा, तब उसकी वाणी को स्वीकार करने के लिए तैयार कर सके।

१७. जिससे कि वे उसकी वाणी के प्रति कठोर बनकर, और अविश्वासी होकर, नष्ट न हो जाएं, बल्कि प्रसन्नतापूर्वक वाणी को उसी प्रकार स्वीकार करें जिस प्रकार कि कलम की हुई अंगूर की डाल सच्ची प्राकृतिक अंगूर की लता में लगायी जाती है; जिससे कि वे अपने प्रभु परमेश्वर के (२४) विश्रामगृह में प्रवेश कर सकें।

१८. और जो (२५) उपदेशक लोगों में प्रचार करने गए उन्होंने (२६) असत्य बोलने, धोखा देने, द्वेष करने, विवाद करने, डाह रखने, निन्दा करने, चोरी करने, लूटने, हत्या करने, परस्त्री गमन करने और हर प्रकार की कामुक वासनाओं के विरुद्ध यह कहते हुए प्रचार किया कि ये बातें नहीं होनी चाहिए।

१९. और जो कुछ निकट भविष्य में होने वाला था उसको बतलाते; हां, परमेश्वर के पुत्र के आने की और उसके कष्टों और मृत्यु की और (२७) मृतकों के पुनर्जीवित किए जाने की बातों को पुष्ट करते।

२०. और बहुतों ने प्रश्न पूछा कि परमेश्वर का पुत्र कहां आएगा; और उनको बताया गया कि वह (२८) उनके समक्ष पुनर्जीवित होने के पश्चात् प्रकट होगा; और इस बात को लोगों ने बड़े आनन्द और हर्ष के साथ सुना।

२१. और सारे देश में गिरजे की स्थापना हो जाने पर—शैतान पर विजय प्राप्त करने और सारे देश में परमेश्वर की वाणी शुद्ध रूप से प्रचार किए जाने और लोगों के ऊपर प्रभु के आशीर्वाद उड़ेले जाने के पश्चात्, नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों का चौदहवां वर्ष समाप्त हुआ।

अलमा के अभिलेख के अनुसार मूसायह के पुत्रों का विवरण जो परमेश्वर की वाणी के लिए

(१८) अल० १:२-१५. (१९) देखो ८, २ नफी ५. (२०) देखो २०, अल० १५. (२१) अल० २१:४, ५, ११, १६, २०. २३:२, ४. २६:२९. ३१:१२, १३. ३२:१, २, ५, ९-१२. ३३:२. इला० ३:९, १४.३ नफी १३:२, ५. (२२) २ नफी ५:१६. (२३) मू० १८:१९-२९. २३:१५. २७:४. ४ नफी ३. (२४) देखो ४८, अल० १२. (२५) देखो ३, मू० ६. देखो ७, मू० २६. (२६) ३ नफी ३०. (२७) देखो ४, २ नफी २. (२८) देखो २, १:१२.

ईसा से लगभग ७८ वर्ष पूर्व

राज्य के उत्तराधिकार को त्याग कर नफी के देश में लमनायटियों में उपदेश देने गए। उनके कष्ट और छुटकारा।

अध्याय १७ से लेकर २६ तक

अध्याय १७

इस्माइल के देश में आमोन—उसका राजा लमोनी का नौकर होना—राजा के पशुओं की साहस के साथ रक्षा करना।

१. जब कि अलमा (१) गिडियन देश से दक्षिण की ओर (२) मण्टी देश को जा रहा था तब वह (३) मूसायाह के उन पुत्रों को देखकर आश्चर्य में पड़ गया जो कि (४) ज़राहेमला देश की ओर जा रहे थे।

२. मूसायाह के ये पुत्र अलमा के साथ उस समय थे जबकि (५) प्रथम बार स्वर्गदूत उनके समक्ष प्रकट हुआ था; इस कारण वह अपने उन भाइयों को देखकर अति आनन्दित हुआ और इस बात से उसे और भी प्रसन्नता हुई कि वे अब भी प्रभु में विश्वास के कारण उसके धर्मबन्धु थे; और सत्य में उनका विश्वास और भी दृढ़ हो चुका था, क्योंकि वे विवेकी पुरुष थे और प्रभु की वाणी को भली प्रकार जानने के लिए उन्होंने परिश्रम के साथ (६) शास्त्रों का अध्ययन किया था।

३. इतना ही नहीं उन्होंने (७) प्रार्थना और उपवास भी बहुत किए थे; इस कारण उनमें भविष्यवाणी करने की भावना और गुप्त बातों के भेद खोलने की योग्यता थी और जब वे शिक्षा देते तब परमेश्वर के द्वारा प्राप्त बल और अधिकार के साथ शिक्षा देते थे।

४. और उन्होंने लमनायटियों में*चौदह वर्षों तक उपदेश दिए थे और बहुतों को सत्य पथ पर लाने में उन्हें सफलता मिली थी; हां, उनकी वाणी के बल द्वारा अनेकों को परमेश्वर की वेदी के समक्ष, उसके आगे उसका नाम लेने और अपने पापों को स्वीकार करने के लिए लाया गया।

५. अपनी यात्राओं पर उन्हें बहुत से कष्ट झेलने पड़े और अनेक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा; उन्हें मानसिक कष्ट के साथ शारीरिक कष्ट भी उठाने पड़े जैसे भूखे-प्यासे रहना, थक जाना, और बहुत अधिक मानसिक परिश्रम करना।

६. उनकी यात्रायें इस प्रकार थीं—निर्णायकों के शासन के प्रथम वर्ष में अपने पिता तथा अन्य लोगों की जो इच्छा थी कि वे राज्य का शासन अपने ऊपर लें, उसे (८) अस्वीकार करके वे अपने पिता मूसायाह (९) से विदा हुए।

७. वे अपनी तलवार, भाला, धनुष, वाण और ढेलवांस इसलिए लेकर (१०) ज़राहेमला देश से विदा हुए ताकि जंगल में वे अपने लिए भोजन प्राप्त कर सकें।

८. इस प्रकार वे अपने (११) चुने हुए साथियों के साथ (१२) नफी के देश में लमनायटियों में परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने के हेतु वन को गए।

९. और तब ऐसा हुआ कि (१३) अधिक उपवास और प्रार्थना करते हुए उन्होंने जंगल में इसलिए कई दिनों तक यात्रा की कि जिससे प्रभु अपनी पवित्र-आत्मा का एक अंश उनके साथ रहने दे, जिससे कि अगर सम्भव हो, तब वे अपने लमनायटी भाइयों को सत्य का ज्ञान कराने में और उनके पूर्वजों की (१४) घृणित परम्पराओं का ज्ञान कराने के लिए, जो कि गलत थीं, परमेश्वर के हाथों में साधन बन सकें।

१०. और ऐसा हुआ कि प्रभु अपनी पवित्र-आत्मा द्वारा उनके पास आया और उनसे बोला : (१५) शान्त हो। और वे शान्त हुए।

११. और उनसे प्रभु ने यह भी कहा: (१६) अपने लमनायटी भाइयों के पास जाओ और मेरी वाणी की स्थापना करो; अपने दीर्घ कष्टों में सहनशील बने रहो जिससे कि तुम मुझमें अपने विश्वास का उन्हें अच्छा उदाहरण दिखा सको और मैं तुम्हें अनेक लोगों को मुक्ति दिलाने

(१) देखो १३, अल० २. (२) देखो ८, अल० १६. (३) मू० २७:३४. (४) ओ० १३. (५) मू० २७:११-१७. (६) या० ७:२३. (७) देखो ५, २ नफी ३२. देखो २०, मू० २७. (८) मू० २८:१, ५-९. २९:४१-४४. (९) मू० २९:३. (१०) ओ० १३. (११) मू० २८:१. (१२) देखो २, २ नफी ५. (१३) देखो २०, मू० २७. (१४) देखो १४, याकू० ७. (१५) पद्य १२, अल० २६:२७. (१६) अल० २६:२७.

*ईसा से लगभग ९१-७७ वर्ष पूर्व

के लिए अपने हाथ का साधन बनाऊंगा।

१२. तब ऐसा हुआ कि लमनायटियों में जाकर प्रभु की वाणी की घोषणा करने का, मूसायाह के पुत्रों और उनके साथियों के हृदयों में, साहस हुआ।

१३. और तब ऐसा हुआ कि जब वे लमनायटियों के देश की सीमा पर पहुंचे तब वे एक दूसरे से इस विश्वास के साथ विदा होकर अलग-अलग हुए कि प्रभु की कृपा से अपने अभियान के अन्त पर वे फिर मिलेंगे; जिस काम को उन्होंने अपने हाथों में लिया था उसे वे (१७) महान कार्य समझते थे।

१४. और निश्चय ही वह महान कार्य था क्योंकि उन्होंने उन जंगली, कठोर और क्रूर लोगों में (१८) परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने की जिम्मेदारी ली थी जो नफायटियों की हत्या करने और उनको लूटने में आनन्द प्राप्त करते थे; और उनके हृदय में धन अर्थात् सोना, चांदी और रत्नों की चाह थी और वे इन्हें हत्या और लूट द्वारा प्राप्त करना चाहते थे जिससे कि उन्हें इन वस्तुओं के लिए अपने हाथों से परिश्रम न करना पड़े।

१५. इस तरह वे बड़े आलसी थे, जिनमें से लोग मूर्तिपूजक थे और अपने पूर्वजों की परम्परा के कारण वे शापित थे (१९) उस पर भी अपने पापों पर पश्चात्ताप करने से उनको प्रभु की (२०) कृपा प्राप्त हो सकती थी।

१६. इसलिए उन्हें सम्भवतः पश्चात्ताप करवाने और मुक्ति की योजना बतलाने का ही वह (२१) काम था जिसकी जिम्मेदारी मुसायाह के पुत्रों ने ली थी।

१७. इसलिए एक दूसरे से (२२) अलग होकर परमेश्वर के उस सामर्थ्य और वाणी के अनुसार जो उनको दी गई थी, वे अकेले उन लोगों में गए।

१८. उनमें आमोन प्रधान था, अर्थात् वही उनपर शासन किया करता था। उनके विभिन्न कार्यक्षेत्रों के अनुसार उनको आशीर्वाद और परमेश्वर की वाणी देकर अर्थात् समझा कर वह उनसे विदा हुआ; इस प्रकार उस पूरे देश में उन्होंने अनेक यात्रायें कीं।

१९. और आमोन (२३) इस्माइल देश गया जो कि इस्माइल के उन पुत्रों (२४) के नाम पर इस्माइल देश कहा जाता था, जो लमनायटी हो गये थे।

२० और जब आमोन ने इस्माइल देश में प्रवेश किया तब लमनायटियों ने उसे उसी प्रकार पकड़ कर बांध दिया, जैसी उनकी हाथ में आए नफायटियों को पकड़ कर बांध कर अपने राजा के पास ले जाने की आदत थी, और राजा अपनी इच्छानुसार उन्हें या तो मार डालता, या बन्दी बनाए रखता, या अपने देश से बाहर निकाल देता।

२१. उसी प्रकार आमोन को इस्माइल देश (२५) के राजा के सामने ले जाया गया, जिसका नाम था लमोनी; और वह (२६) इस्माइल का वंशज था।

२२. और राजा ने आमोन से पूछा कि वह देश में लमनायटियों के साथ रहना चाहता है या अपने लोगों के पास जाना चाहता है।

२३. तब आमोन ने उससे कहा: हां कुछ समय तक मैं इन लोगों के साथ रहना चाहता हूं; सम्भवतः मैं मृत्यु पर्यन्त यहीं रहूंगा।

२४. ऐसा हुआ कि राजा लमोनी आमोन से अति प्रसन्न हुआ और उसे (२७) बन्धनों से मुक्त करवा दिया; और चाहा कि आमोन उसकी एक कन्या को विवाह करके पत्नी रूप में ग्रहण करे।

२५. लेकिन आमोन ने कहा: नहीं, लेकिन मैं तुम्हारा सेवक रहूंगा। इसलिए आमोन राजा लमोनी का नौकर बना। और ऐसा हुआ कि उसे अन्य नौकरों के साथ लमनायटियों की रीति अनुसार लमोनी के पशुओं की देखभाल करने के लिए नियुक्त किया गया।

२६. जब वह तीन दिनों तक राजा की नौकरी में रह चुका तब वह लमनायटी नौकरों के साथ

(१७) पद्य १४-१६. (१८) देखो १४, या० ७. (१९) देखो ४, १ नफी २. (२०) देखो १०, अल० ९. (२१) देखो १७. (२२) पद्य १३. (२३) पद्य २०, २१. अल० २०:१४, १५. २१:१८, २०. २२:१, ४. २३:९. २४:५. २५:१३. (२४) देखो ३, १ नफी ७. (२५) देखो २३. (२६) देखो ३, १ नफी ७. (२७) पद्य २०.

ईसा से लगभग ९० वर्ष पूर्व

पशुओं को लेकर एक जल के स्थान, जिसका नाम था (२८) सीबू का जल, जा रहा था जहां कि लमनायटी अपने पशुओं को जल पिलाने के लिए ले जाया करते थे।

२७. जब आमोन और राजा के नौकर जल के उस स्थान पर पशुओं को हांक कर ले जा रहे थे, तब कुछ लमनायटी जो वहां पर अपने पशुओं को जल पिलाने के लिए उपस्थित थे उन्होंने आमोन और राजा के नौकरों के पशुओं को भड़का कर (२९) इस तरह तितर-बितर कर दिया कि जिससे वे चारों ओर भाग खड़े हुए।

२८. तब राजा के नौकर असन्तोष प्रकट करते हुए कहने लगे: अब राजा हमें भी उसी प्रकार मार डालेगा जिस प्रकार उसने (३०) हमारे भाइयों को मार डाला था क्योंकि इन्होंने उनके पशुओं को भी अपनी दुष्टता से तितर-बितर कर दिया था। वे यह कहते हुए अधिक रोने लगे: देखो, हमारे पशु भी तितर-बितर हो चुके हैं।

२९. तब वे मृत्युदण्ड के भय से रोने लगे। जब आमोन ने यह देखा तब उसका हृदय आनन्द से विभोर हो उठा; क्योंकि उसने स्वत: कहा कि मैं अपने इन साथी नौकरों को अपना सामर्थ्य दिखाऊंगा अर्थात् राजा के पशुओं को वापस प्राप्त करने में वह योग्यता दिखाऊंगा जो मुझमें है, जिससे कि मैं इनके हृदय पर विजय प्राप्त कर इनको अपनी बातों पर विश्वास करा सकूं।

३०. ये बातें आमोन ने उन लोगों के कष्टों को देखकर सोचा जिन्हें वह अपना बन्धु कहता था।

३१. तब ऐसा हुआ कि उसने यह कहते हुए उनको आश्वासन दिया: मेरे भाइयो, ढांढस रखो और हम अपने (३१) पशुओं को खोजने चलें; और हम उन्हें एकत्रित कर पानी की जगह वापस लाएं; और इस प्रकार हम राजा के पशुओं को सुरक्षित रख सकेंगे और वह हमें प्राणदण्ड नहीं देगा।

३२. और ऐसा हुआ कि वे पशुओं को खोजने के लिए गए और आमोन का अनुसरण करते हुए तीव्र गति से जाकर राजा के पशुओं को एकत्रित करके उस जल के स्थान पर फिर से ले आये।

३३. और (३२) लोग फिर से उनके पशुओं को तितर-बितर करने के लिए खड़े हुए; परन्तु आमोन ने अपने साथी बन्धुओं से कहा: पशुओं को चारों ओर से घेर लो जिससे कि वे भाग न सकें; और मैं उनका सामना करने जाता हूं जो हमारे पशुओं को तितर-बितर करते हैं।

३४. इसलिए उन्होंने वैसा ही किया जैसी कि आमोन ने आज्ञा दी, और वह स्वयं आगे बढ़ कर सीबू के (३३) जल के पास खड़े हुए उन लोगों का सामना करने के लिए खड़ा हुआ जिनकी संख्या कम न थी।

३५. इसलिए उन्हें आमोन से भय नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने सोचा कि उनका कोई भी आदमी उनके मनोरंजन के लिए उसे मार सकता है। वे यह नहीं जानते थे कि प्रभु ने मूसायाह को यह वचन दिया था कि वह उनके हाथों से उसके पुत्रों (३४) की रक्षा करेगा और न तो वे प्रभु के विषय में ही कुछ जानते थे; इस कारण वे अपने भाइयों के नष्ट होने में आनन्द प्राप्त करते थे; इसलिए वे राजा के (३५) पशुओं को तितर-बितर करने के लिए खड़े हुए थे।

३६. लेकिन आमोन आगे बढ़ कर खड़ा हुआ और अपने ढेलवांस से उन पर पत्थर वर्षाने लगा; हां, उसने बड़े बल के साथ उन पर पत्थर वर्षाए; और उनमें से (३६) इतने लोगों को मार डाला कि जिससे वे लोग उसके बल पर चकित हो उठे; फिर भी अपने साथियों के मारे जाने पर उन्हें बड़ा क्रोध आया और उन्होंने उसे गिराने का निश्चय कर लिया; इसलिए जब उन्होंने जान लिया कि वे उसे पत्थरों से नहीं मार सकते तब वे गदा लेकर उसे मारने दौड़े।

३७. लेकिन देखो, जो भी उसको मारने के लिए गदा उठाता उसका (३७) हाथ वह तलवार से काट देता; क्योंकि उनके प्रहारों से अपनी रक्षा करने के लिए वह उनके हाथों पर तलवार की धार से मारता

(२८) पद्य ३४. अल० १८:७. १९:२०, २१. (२९) पद्य २९, ३१-३३, ३५, ३६. अल० १८:३. १९:२०, २१. (३०) अल० १८:४-७. १९:२०. (३१) पद्य ३२. (३२) पद्य २७, ३५. (३३) देखो २८. (३४) मुसायाह २८:७. अल० १९:२३. (३५) पद्य २७. ३३. (३६) पद्य ३८. अल० १८:१६, २०. (३७) पद्य ३८, ३९. अल० १८:१६, २०. ईसा से लगभग ९० वर्ष पूर्व

और इस तरह इतने अधिक लोग घायल हुए कि उन्हें और अधिक आश्चर्य होने लगा और वे उसके सामने से भागने लगे। यद्यपि उनकी संख्या कम नहीं थी फिर भी उसने अपने बाहुबल से उन्हें भगा दिया।

३८. उनमें से छः ढेलवांस के द्वारा गिर पड़े थे और उसने उनके नेता को छोड़ कर किसी दूसरे को तलवार द्वारा जान से नहीं मारा; और जितने हाथों ने उस पर वार किया था उन सभी हाथों को उसने काट दिया जो (३८) संख्या में कम नहीं थे।

३९. जब वह उनको दूर खदेड़ आया तब वह वापस आया और पशुओं को पानी पिला कर उन्हें राजा के चारागाह में वापस ले गया और आमोन द्वारा उसको मारने की चेष्टा करने वालों के (३९) कटे हाथों को लेकर वे राजा के पास गए। जो कुछ उसने किया था उसके प्रमाण के लिए वे उन कटे हाथों को ले गए थे।

अध्याय १८

राजा लमोनी का आमोन को महान आत्मा समझना—उसके सच्चे परमात्मा के विषय में शिक्षा दिया जाना—प्रभु की आत्मा का प्रभाव पड़ना।

१. ऐसा हुआ कि राजा लमोनी ने अपने नौकरों को अपने समक्ष खड़े होकर (१) जो कुछ उन्होंने देखा था उसकी गवाही देने को कहा।

२. और जब उन्होंने जो कुछ देखा था उसकी गवाही दे चुके और उसके पशुओं की रक्षा करने में आमोन की स्वामी भक्ति का पता उसे लगा और जो उसको मारना चाहते थे उनका सामना करने में जो बल उसने दिखाया था, उन सब से राजा को महान आश्चर्य हुआ, और उसने कहा: निश्चय ही यह मनुष्य से अधिक है। देखो, क्या यह (२) वह महान आत्मा नहीं है जिसने इन लोगों को हत्यायें करने के कारण इस प्रकार का कठोर दण्ड दिया है?

३. और उन्होंने राजा को उत्तर दिया, हम नहीं जानते कि वह महान आत्मा है या मनुष्य पर हम इतना जानते हैं कि वह राजा के (३) शत्रुओं द्वारा मारा नहीं जा सकता और न ही जब वह हमारे साथ रहेगा तब आपके पशुओं को उसकी चतुरता और शक्ति के कारण कोई तितर-बितर कर सकता है। इन कारणों से हम जानते हैं कि वह आपका मित्र है। और अब, हे राजा, हम यह नहीं विश्वास कर सकते कि कोई भी मनुष्य इस प्रकार महान शक्तिशाली हो सकता है, क्योंकि उसे मारा नहीं जा सकता।

४. और जब राजा ने इन शब्दों को सुना तब उसने उनसे कहा: अब मैं जान गया हूं कि वह (४) महान आत्मा है, और वह इस समय तुम्हारे प्राणों की रक्षा करने के लिए आया है जिससे कि मैं तुम्हें भी तुम्हारे भाइयों की (५) तरह मार न डालूं। यह वह महान आत्मा है जिसके विषय में हमारे पूर्वजों ने कहा था।

५. लमोनी ने परम्परानुसार अपने पिता से यह सुना था कि एक महान आत्मा थी। वे (६) एक महान आत्मा पर अविश्वास नहीं करते थे फिर भी वे यह विश्वास करते थे कि वे जो कुछ करते थे वे सब उचित ही करते थे; फिर भी लमोनी इस विचार से अति भयभीत हुआ कि उसने अपने सेवकों को मार कर भूल तो नहीं की थी।

६. क्योंकि उसने अपने नौकरों में से (७) अनेकों को इस कारण मरवा डाला था कि उनके बन्धुओं ने ही उनके पशुओं को जल के स्थान पर तितर-बितर कर दिया था। इस तरह उनके पशु बिखर गए थे और वे मारे गए थे।

७. लमनायटियों में यह रीति थी कि वे (८) सीबू के जल के निकट खड़े होकर पशुओं को भड़का देते थे जिससे कि वे उनमें से बहुतों को हांक कर अपने स्थानों पर ले जाएं। लूट की यह प्रथा उनमें प्रचलित थी।

८. तब ऐसा हुआ कि राजा लमोनी ने अपने सेवकों से यह कहते हुए पूछा: वह व्यक्ति कहां है जिसके पास इस तरह का महान बल है?

९. तब उन्होंने उससे कहा: देखिए वह आपके (९) घोड़ों को घास खिला रहा है। राजा ने अपने सेवकों को, पशुओं को पानी पिलाने के लिए ले

(३८) पद्य ३४, ३८. (३९) पद्य ३७, ३८. अल० १८:१६, २०. अध्याय १८. (१) अल० १७:३१-३८. (२) पद्य ३-५, ११, १८, २६-२८. अल० २२:९-११. (३) अल० १७:३४-३८. (४) देखो २. (५) पद्य ५-६. अल० १७:२८-३१. (६) देखो २. (७) देखो ५. (८) देखो २८, अल० १७. (९) पद्य १०. देखो १३, १ नफी १८.ईसा से लगभग ९० वर्ष पूर्व

जाने से पूर्व आज्ञा दी थी कि उसके घोड़ों और रथ को तैयार करके उसे नफी के देश में ले जाएं; क्योंकि (१०) नफी के देश में उसके पिता ने, जो कि सारे देश का राजा था, एक (११) भारी भोज के लिए उसे आमन्त्रित किया था।

१०. जबकि राजा लमोनी ने आमोन को घोड़ों और (१२) रथों को तैयार करते हुए देखा तब वह उसकी ईमानदारी पर और भी आश्चर्य करते हुए बोला: निश्चय ही मेरे सेवकों में इस व्यक्ति से बढ़ कर स्वामिभक्त और कोई दूसरा आदमी नहीं है; क्योंकि उसे (१३) मेरी सभी आज्ञाओं का पालन करना याद रहता है।

११. अब मैं निश्चय ही यह जान गया हूं कि यही वह (१४) महान आत्मा है, और मैं चाहता हूं कि वह मेरे पास आए, लेकिन उसे बुलाने का मुझे साहस नहीं हो रहा है।

१२. और ऐसा हुआ कि जब आमोन ने राजा और उसके सेवकों के लिए (१५) घोड़े और (१६) रथों को तैयार कर लिया, तब वह राजा के पास गया और उसने देखा कि राजा के मुखड़े की आकृति में परिवर्तन हुआ; और इस कारण वह राजा के सामने से चला जाना चाहता था।

१३. तब राजा के सेवकों में से एक ने कहा रबाना जिसका अर्थ शक्तिशाली या बहुत बड़ा राजा होता है, (क्योंकि वे अपने राजाओं को शक्तिशाली मानते थे) इसलिए उसने उससे भी कहा: रबाना, राजा चाहता है कि तुम ठहरो।

१४. इसलिए आमोन ने राजा की ओर घूम कर उससे कहा: हे राजा, तुम क्या चाहते हो जो मैं तुम्हारे लिए करूं? तब प्रचलित समय के अनुसार एक (१७) घण्टे तक राजा ने कुछ नहीं कहा, क्योंकि वह समझ नहीं पा रहा था कि वह उनसे क्या बोले।

१५. तब ऐसा हुआ कि आमोन ने राजा से पुन: पूछा: तुम मुझ से क्या चाहते हो? लेकिन राजा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

१६. तब ऐसा हुआ कि आमोन जिसके अन्दर परमेश्वर की आत्मा निवास करती थी, राजा के विचारों को जान गया और उसने उससे कहा: क्या तुम इस कारण आश्चर्य कर रहे हो कि तुमने सुना कि मैंने तुम्हारे नौकरों और पशुओं की (१८) रक्षा की और उनके सात बन्धुओं को ढेलवांस और तलवार से मार डाला और दूसरों के हाथों को काट डाला जिससे कि मैं तुम्हारे पशुओं और सेवकों की रक्षा कर सकूं; क्या इसलिए तुम आश्चर्य कर रहे हो?

१७. मैं तुमसे कहता हूं, कि किसलिए तुम इतना अधिक आश्चर्य कर रहे हो? देखो मैं एक मनुष्य हूं और मैं तुम्हारा सेवक हूं; इसलिए तुम्हारी जो कुछ उचित इच्छा होगी, उसे मैं करूंगा।

१८. जब राजा ने इन शब्दों को सुना तब उसे और भी आश्चर्य हुआ, क्योंकि उसने देखा कि आमोन उसके विचारों को जान लेता है; लेकिन इसका विरोध न करते हुए राजा लमोनी ने मुंह खोल कर उससे कहा: तुम कौन हो? क्या तुम वह (१९) महान पवित्र-आत्मा हो, जो सब कुछ जानती है?

१९. तब आमोन ने उसे उत्तर दिया: मैं वह नहीं हूं।

२०. तब राजा ने कहा: तुम मेरे मन की बातों को कैसे जानते हो? तुम निर्भय होकर इन बातों के विषय में कहो; और यह भी बताओ कि तुमने किस (२०) बल पर मेरे उन बन्धुओं के हाथों को काटा जिन्होंने मेरे पशुओं को तितर-बितर करना चाहा था—

२१. और अब अगर तुमने इन बातों को बताया तब तुम जो कुछ मांगोगे मैं तुम्हें दूंगा; और अगर आवश्यकता हुई, तब मैं तुम्हारी रक्षा अपनी सेना द्वारा करूंगा; लेकिन मैं जानता हूं कि तुम उन सबसे अधिक शक्तिशाली हो; फिर भी तुम जो इच्छा करोगे उसे मैं पूरा करूंगा।

२२. आमोन बुद्धिमान और किसी को हानि न पहुंचाने वाला था। उसने लमोनी से कहा: अगर मैं तुम्हें यह बताऊं कि मैं किस शक्ति के द्वारा

(१०) देखो २, २ नफी ५. (११) अल० २०:९, १२. (१२) पद्य ९, १२. अल० २०:६. ३ नफी ३:२२. (१३) पद्य ९. (१४) देखो १३, १ नफी १८. (१६) देखो १६. (१७) ३ नफी ८:१९. (१८) अल० १७:३१-३८. (१९) देखो २. (२०) अलमा १७:३१-३८.

इन कामों को कर रहा हूं तब क्या तुम मेरी बातों को सुनोगे? और मैं तुमसे यही चाहता हूं।

२३. और राजा ने उसे उत्तर देते हुए कहा: हां, मैं तुम्हारी सब बातों पर विश्वास करूंगा। इस प्रकार चतुराई से वह पकड़ में आ गया।

२४. तब आमोन ने निर्भय हो उससे बोलते हुए कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि एक ईश्वर है?

२५. मैं यह नहीं जानता कि इसका क्या अर्थ है।

२६. तब आमोन ने उससे कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि एक महान आत्मा है?

२७. तब उसने उत्तर दिया: हां।

२८. तब आमोन ने कहा: यही वह परमेश्वर है। और उसने उससे पुनः कहा: क्या तुम यह विश्वास करते हो कि यह महान आत्मा, जो कि परमेश्वर है, स्वर्ग की और पृथ्वी की सारी वस्तुओं का रचयिता है?

२९. तब उसने कहा: हां, मैं विश्वास करता हूं कि पृथ्वी की सारी वस्तुओं का रचयिता वही है, परन्तु मैं स्वर्ग नहीं जानता।

३० तब आमोन ने उससे कहा: स्वर्ग वह स्थान है जहां परमेश्वर अपने सभी दूतों के साथ रहता है।

३१. और राजा लमोनी ने कहा: क्या वह पृथ्वी से ऊपर है?

३२. तब आमोन ने कहा: हां, और वह ऊपर से सारी मानव सन्तान को देखता रहता है; और वह सब के हृदयों के विचारों और इच्छाओं को जानता है; क्योंकि आरम्भ से ही वे सब उसी के हाथों द्वारा रचे गए थे।

३३. और राजा लमोनी ने कहा: जो कुछ तुमने कहा उन सब पर मैं विश्वास करता हूं। क्या तुम ईश्वर द्वारा भेजे गए हो?

३४. आमोन ने उससे कहा: मैं एक मनुष्य हूं; और (२१) आरम्भ में मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में ही रचा गया था, और मैं उसी की पवित्र-आत्मा द्वारा इन लोगों को इन बातों की शिक्षा देने के लिए बुलाया गया हूं, जिससे कि इन लोगों को जो कुछ सत्य और उचित है उसकी जानकारी कराई जाए।

३५. और उसकी आत्मा का एक अंश मुझमें विराजमान है जो कि परमेश्वर में मेरे विश्वास और इच्छा के अनुसार मुझे ज्ञान और बल देता है।

३६. इन शब्दों को कहने के पश्चात् आमोन ने जगत के आरम्भ से लेकर, और (२२) आदम के रचे जाने और मनुष्य के पतन की सारी बातें बताते हुए लोगों की (२३) लेखा और उन पवित्र शास्त्रों को उसके सामने रख दिया जिसे कि उसके पिता लेही के यरूशलेम छोड़ने तक भविष्यवक्ताओं ने कहा था।

३७. उनसे उसने (राजा और उसके सेवकों के लाभार्थ) उनके पूर्वजों की (२४) वन की सारी यात्राओं, उनके भूखे प्यासे रहने और गमन आदि की बातें बताईं।

३८. और उसने उनसे लमान, लेमुएल और इस्माइल के पुत्रों के विद्रोह की बातें कहीं; हां, उसने उनके विद्रोह की सारी बातें बताईं; उसने लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय से लेकर वर्तमान समय तक के (२५) सारे लेखाओं और शास्त्रों की व्याख्या करते हुए उन्हें समझाया।

३९. इतना ही नहीं, उसने मुक्ति की योजना, जो कि (२६) जगत की नींव के समय से ही तैयार की गई थी, की व्याख्या की और उन्हें मसीह के आने और उसके सभी कामों के विषय में बताया।

४०. और ऐसा हुआ कि जब उसने राजा से ये सब बातें कहीं और उनकी व्याख्या की तब राजा ने उसकी (२७) सभी बातों पर विश्वास किया।

४१. और वह परमेश्वर को पुकार कर कहने लगा: हे प्रभु, दया करो, नफी के लोगों के ऊपर आपने जो असीम दया की है, वही दया मुझ पर और मेरे लोगों के ऊपर करो।

४२. और जब उसने यह कह लिया, तब वह पृथ्वी पर (२८) मरे हुए के समान गिर पड़ा।

४३. और तब ऐसा हुआ कि उसके (२९)

(२१) पद्य ३२, मू० ७:२७. ए० ३:१३-१६. (२२) पद्य ३४. देखो १३, मू० २. (२३) देखो १, १ नफी ३. अलमा ६३:१२. (२४) नफी की प्रथम पुस्तक को देखो. (२५) १ नफी ६:२. (२६) देखो ४, मू० ४. (२७) पद्य २३. (२८) पद्य ४३. अल० १६:१, ५-१२. (२९) अल० १६:४, ६.

ईसा से लगभग ९० वर्ष पूर्व

नौकरों ने उसे उठा कर उसकी पत्नी के पास ले जाकर एक खटिए पर सुला दिया; और वह (३०) दो दिन और दो रात उसी प्रकार मरे हुए के समान पड़ा रहा: और उसकी स्त्री, पुत्र, पुत्रियां, लमनायटियों की रीति अनुसार उसको खो देने के कारण बहुत ही विलाप करते रहे।

अध्याय १९

आश्चर्यजनक परिवर्तन—अविश—एक लमनायटी स्त्री—लमनायटी राजा और रानी का धर्म स्वीकार करना—इस्माइल देश में आमोन का गिरजा की स्थापना करना।

१. और ऐसा हुआ कि (१) दो दिन और दो रात व्यतीत हो जाने पर वे राजा को मरा हुआ समझ कर उस कब्र में लिटाने के लिए ले जाना चाहते थे जिसे उन्होंने अपने मृतकों को दफनाने के लिए तैयार किया था।

२. रानी आमोन के यश को सुन चुकी थी, इसलिए उसने चाहा कि वह उसके पास आये—और उसे बुलवाया।

३. और ऐसा हुआ कि आमोन ने उस आज्ञा का पालन किया और रानी के पास गया और जानना चाहा कि वह उससे क्या करवाना चाहती है।

४. और वह उससे बोली: (२) मेरे पति के सेवकों ने मुझे बतलाया है कि तुम पवित्र परमेश्वर के एक भविष्यवक्ता हो और उसके नाम पर बड़े बड़े कार्य करने की क्षमता है तुम में;

५. अगर यह सच है तब मैं चाहती हूं कि तुम मेरे पति के पास जाओ क्योंकि वह खटिए पर (३) दो दिनों और दो रातों से पड़ा हुआ है; और कुछ उसे जीवित कहते हैं और कुछ उसे मरा हुआ कहते हैं, और कहते हैं कि उसके शरीर से दुर्गन्ध आने लगी है और उसे (४) कब्र में दफन कर देना चाहिए, लेकिन मैं उसके शरीर से कोई दुर्गन्ध उठते नहीं पाती।

६. आमोन यही चाहता था और वह जानता था कि राजा लमोनी परमेश्वर के प्रभाव में है, वह जानता था कि उसकी बुद्धि पर से अविश्वास का काला परदा उतार फेंका गया है, और एक प्रकाश ने जो कि परमेश्वर के यश और उसकी श्रेष्ठता का प्रकाश है उसके विवेक को प्रकाशमान कर दिया है; हां, इस प्रकाश ने उसकी आत्मा में महान आनन्द पैदा कर दिया है और उसके विवेक से अन्धकार दूर भगा दिया है, और उसकी आत्मा में अनन्त जीवन की ज्योति जला दी है। वह जानता था कि यही उसके (५) स्वाभाविक शरीर को वश में किए है और वह परमात्मा में खोया हुआ है।

७. इस प्रकार रानी जो उससे चाहती थी वही एकमात्र इच्छा उसकी भी थी। इसलिए रानी की इच्छा के अनुसार वह राजा को देखने के लिए गया; और उसने राजा को देखा। वह मरा नहीं था।

८. और उसने रानी से कहा: इसकी मृत्यु नहीं हुई है, लेकिन यह परमेश्वर में लीन है और कल सुबह (६) उठेगा; इसलिए इसे कब्र में मत गाड़ो।

९. और आमोन ने उससे पूछा कि क्या तुम यह विश्वास करती हो? और वह उससे बोली: तुम्हारे और हमारे सेवकों के शब्दों की अपेक्षा मेरे पास और कोई साक्षी नहीं है; फिर भी मैं विश्वास करती हूं कि जैसा तुम कहते हो वैसा ही होगा।

१०. और आमोन ने उससे कहा: अपने गहरे विश्वास के लिए तुम धन्य हो। हे स्त्री, मैं तुमसे कहता हूं कि सारे नफायटी लोगों में इस प्रकार का विश्वास नहीं है।

११. तब ऐसा हुआ कि वह उस समय से अपने पति की निगरानी तब तक करती रही जब तक आमोन के कहे अनुसार उसको उठना था।

१२. और वह (७) आमोन के कहे अनुसार उठा; और उठते ही अपनी स्त्री की ओर हाथ फैला कर बोला: परमेश्वर का नाम धन्य है, धन्य है तू।

१३. देखो, जिस प्रकार निश्चय ही तुझे मैं

(३०) अल० १९:१, ५. अध्याय १९. (१) पद्य ५. अल० १८:४३. (२) पद्य ९. अल० १८:४३. (३) पद्य १. अल०: १८:४३. (४) पद्य १. (५) अल० १८:४२. (६) पद्य ११, १२. (७) पद्य ८.

जीवित देख रहा हूं, उसी प्रकार मैंने अपने मुक्तिदाता को देखा है, वह आएगा और (८) एक नारी की उदर से जन्म लेगा और वह उन सभी लोगों का उद्धार करेगा जो उसके नाम पर विश्वास करेंगे। जब उसने ये शब्द कहे तब उसका हृदय झूम उठा और वह मारे आनन्द के खड़ा न रह सका और पवित्र आत्मा के वशीभूत हो उसकी स्त्री भी खड़ी न रह सकी।

१४. अब आमोन ने यह देख कर—कि उसकी प्रार्थना के अनुसार प्रभु परमेश्वर ने अपनी आत्मा उसके लमनायटी भाइयों के ऊपर उड़ेल दी है, जिन्होंने नफायटियों यानि प्रभु के लोगों में अपने अत्याचार और अपनी दुष्ट परम्परा के अनुसार अत्यन्त शोक पहुंचाया था, तो वह अपने घुटनों पर गिर कर, अपनी पूरी आत्मा से प्रार्थना करने लगा और परमेश्वर ने उसके भाइयों के लिए जो कुछ किया था, उसके लिए कृतज्ञता प्रकट करने लगा। और वह भी आनन्द से भर उठा। और इस प्रकार वे तीनों धरती पर साष्टांग लेट गए।

१५. जब राजा के सेवकों ने देखा कि वे धरती पर गिर पड़े हैं तब वे भी परमेश्वर को पुकारने लगे, क्योंकि उन पर भी प्रभु का भय समा गया था क्योंकि (९) उन्होंने ही राजा के समक्ष खड़े होकर आमोन के महान बल की साक्षी दी थी।

१६. तब ऐसा हुआ कि वे अपने पूरे बल के साथ प्रभु का नाम तब तक पुकारते रहे जब तक कि (१०) एक अविश नाम की लमनायटी स्त्री को छोड़ कर बाकी सबके सब धरती पर गिर न पड़े। यह स्त्री अपने पिता के एक दिव्य दर्शन के कारण कई वर्षों से प्रभु में विश्वास करने लगी थी।

१७. इस प्रकार वह प्रभु में विश्वास करती रही परन्तु उसने किसी से बतलाया नहीं था और जब उसने लमोनी के सेवकों, अपनी स्वामिनी रानी, राजा और आमोन को धरती पर लम्बे गिरे हुए देखा तब वह जान गयी कि यह प्रभु की शक्ति है और उसने विचार किया कि जो कुछ उनमें हुआ है उसे अगर लोगों को बतलाया जाये और वे यह आकर देख लें तब वे भी सम्भव है कि परमेश्वर की शक्ति में विश्वास करने लगें, इसलिए वह एक घर से दूसरे घर दौड़-दौड़ कर यह समाचार लोगों को देने लगी।

१८. और लोग राजा के महल में एकत्रित होने लगे। वहां लोगों की बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई और जब उन्होंने राजा, रानी और उनके नौकरों को धरती पर सीधे गिरे मृत समान पड़े हुए पाया तब उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। और उन्होंने आमोन को भी देखा जो कि एक नफायटी था।

१९. तब वे आपस में बड़बड़ाने लगे और किसी ने कहा राजा और उसके घर वालों पर यह भारी विपत्ति इसलिए आ पड़ी है क्योंकि उसने एक नफायटी को देश में (११) रहने दिया।

२०. दूसरे उनको झिड़की देते हुए बोले: राजा ने अपने घरवालों के ऊपर यह विपत्ति इसलिए लाई है क्योंकि (१२) सीबू के जल के निकट उनके पशुओं को तितर-बितर कर दिए जाने के कारण उसने उन्हें (१३) मरवा डाला था।

२१. और उन्हें उन लोगों द्वारा भी झिड़की दी गई जो सीबू के जल के निकट खड़े थे और जिन्होंने उन पशुओं को भड़का दिया जो राजा के थे। वे आमोन पर इसलिए (१४) क्रोधित थे क्योंकि उसने राजा के पशुओं की रक्षा करते हुए सीबू के जल के निकट उनके कई बन्धुओं को मार डाला था।

२२. तब उनमें से एक जो आमोन के ऊपर अति क्रुद्ध था क्योंकि उसका भाई आमोन की (१५) तलवार से मारा गया था, अपनी तलवार खींच कर आमोन पर वार करने के लिए आगे बढ़ा और जैसे ही उसने उसको मारने के लिए तलवार उठाई वैसे ही वह मर कर गिर पड़ा।

२३. इस तरह आमोन मारा नहीं जा सका क्योंकि प्रभु ने उसके पिता मूसायाह (१६) से कहा था: तुम्हारे विश्वास के अनुसार मैं उसकी रक्षा

(८) देखो ४, १ नफी ११. (९) अल० १८:१, २. (१०) पद्य १७, २८, २९. (११) अल० १७:२२, २३. (१२) देखो ३०, अल० १७. (१३) देखो २८, अल० १७. (१४) अल० १७:२७. १८:७. (१५) अल० १७:३८. (१६) मू० २८:७. अल० १७:३५.

ईसा से लगभग ९० वर्ष पूर्व

करूंगा, और मूसायाह ने विश्वास कर उसे प्रभु को सौंप दिया था।

२४. और तब ऐसा हुआ कि जब भीड़ में लोगों ने देखा कि वह व्यक्ति जिसने आमोन को मारने के लिए तलवार उठायी थी, मर कर गिर (१७) पड़ा है, तब उन पर भय छा गया और उसे और उसके साथ पृथ्वी पर गिरे हुओं में से किसी को भी छूने का उन्हें साहस नहीं हो रहा था; और वे आपस में आश्चर्य करने लगे कि इस महान शक्ति का कारण क्या है और इन सब बातों का तात्पर्य क्या है?

२५. और तब ऐसा हुआ कि उनमें से बहुत से लोग आमोन को (१८) महानात्मा और दूसरे उसे महानात्मा द्वारा भेजा हुआ कहने लगे।

२६. लेकिन दूसरे उन्हें झिड़कते हुए कहने लगे कि वह उन्हें यातना देने के लिए नफायटियों द्वारा भेजा हुआ एक दानव है।

२७. उनमें कुछ लोग थे जिन्होंने कहा कि आमोन महानात्मा द्वारा उनके पापों के कारण उन्हें कष्ट देने के निमित भेजा गया है; और यह महान-आत्मा सदैव नफायटियों को उनके हाथों से रक्षा करने के लिए नफायटियों का साथ देता रहा है; और उन्होंने यह भी कहा कि इसी महानात्मा ने उनके अनोकों लमनायटी भाइयों को नष्ट किया था।

२८. इस प्रकार वे आपस में भारी झगड़ा करने लगे। जब वे इस प्रकार झगड़ रहे थे तब वह (१९) स्त्री वहां आई जो इतनी बड़ी भीड़ एकत्रित होने का कारण थी। जब उसने लोगों को आपस में इस तरह लड़ते-झगड़ते पाया तो उसे बड़ा दुख हुआ और उसकी आंखों में आंसू आ गए।

२९. और तब ऐसा हुआ कि उस स्त्री ने रानी के हाथ को पकड़ा जिससे कि वह उसे धरती पर से उठा सके। उसने जैसे ही रानी का हाथ छुआ वैसे ही वह उठ कर खड़ी हो गई और जोर से पुकारा: धन्य है मसीह, जिसने मुझे (२०) भयानक अधोलोक से बचा लिया है। हे पवित्र परमेश्वर, इन लोगों पर दया कर।

३०. और जब वह यह बोल चुकी तब आनन्द-विह्वल हो उसने अपने हाथ जोड़ लिए और बहुत से शब्द बोली जो समझे न जा सके। यह करने के पश्चात् उसने राजा लमोनी का हाथ पकड़ा, और देखो, वह उठ कर अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

३१. और वह उसी समय अपने लोगों में विवाद होता देख आगे बढ़ कर उन्हें झिड़कते हुए उन बातों की शिक्षा देने लगा जिन्हें उसने (२१) आमोन के मुख से सुना था; और जितने लोगों ने उसकी बातों को सुना उन सबों ने विश्वास किया और मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वास करने लगे।

३२. उनमें बहुत से ऐसे भी थे जो उसकी बातों को सुनना नहीं चाहते थे; इसलिए वे अपनी राह चले गए।

३३. जब आमोन उठा तब उसने और लमोनी के सभी सेवकों ने भी लोगों को उपदेश दिए। सभी ने इसी बात की पुष्टी की कि उनका हृदय परिवर्तित हो गया है और अब दुष्कर्म करने की उनकी इच्छा नहीं है।

३४. और देखो, बहुतों ने यह कहा कि उन्होंने स्वर्गदूतों को देखा है और उनसे बातें की हैं; इस प्रकार वे परमेश्वर के विषय में और उसकी धार्मिकता के विषय में बातें करने लगे।

३५. और ऐसा हुआ कि उनकी बातों पर बहुतों ने विश्वास किया; और जिन्होंने विश्वास किया, उन्होंने (२२) बपतिस्मा लिया और धार्मिक बन कर उन्होंने अपने लोगों में एक गिरजे की स्थापना की।

३६. इस प्रकार लमनायटियों में प्रभु का काम आरम्भ हुआ और प्रभु ने अपनी आत्मा को उन पर उड़ेलना आरम्भ किया; और हम देखते हैं कि उसका हाथ उन सभी लोगों तक पहुंचता है जो पश्चात्ताप करते और उसके नाम पर विश्वास करते हैं।

अध्याय २०

आमोन और राजा लमोनी का मिदोनी की यात्रा करना—उनका लमोनी के पिता से मिलना जो कि सारे देश का राजा है—उसका पहले

(१७) पद्य २२. (१८) देखो २, अल० १८. (१९) पद्य १६, १७, २६. (२०) देखो १ नफी १५. (२१) अल० १८: ३६-३९. (२२) देखो २१, २ नफी ९.

ईसा से लगभग ९० वर्ष पूर्व

विरोध फिर विरोध त्यागना—उसके द्वारा भारी कृपा किया जाना।

१. ऐसा हुआ कि जब उन्होंने उस देश में गिरजे की स्थापना कर ली तब राजा लमोनी ने इच्छा प्रकट की कि आमोन उसके साथ (१) नफी के देश चले ताकि वह उसका अपने पिता से परिचय करवा सके।

२. तब प्रभु की वाणी आमोन को यह कहती हुई सुनाई दी: तुम नफी देश में मत जाओ, क्योंकि सुनो, राजा तुम्हारी जान लेना चाहेगा; परन्तु तुम (२) मिदोनी देश जाओ, क्योंकि तुम्हारे भाई आरुन, मुल्की और अम्माह (३) वहां बन्दीगृह में हैं।

३. जब आमोन ने यह सुना तब उसने लमोनी से कहा: सुनो, मेरे भाई और बन्धु मिदोनी में (४) बन्दी हैं। वहां मैं उन्हें छुड़ाने जा रहा हूं।

४. तब लमोनी ने आमोन से कहा: मैं जानता हूं कि तुम प्रभु की शक्ति के द्वारा सभी कुछ कर सकते हो। लेकिन मैं भी तुम्हारे साथ मिदोनी चलूंगा; क्योंकि (५) मिदोनी देश का राजा जिसका नाम आण्टीओमनी है, मेरा मित्र है; इसलिए मैं मिदोनी देश चलूंगा जिससे कि मैं उस देश के राजा को प्रसन्न कर सकूं और वह तुम्हारे भाइयों को (६) मुक्त कर दे। तब लमोनी ने पूछा: तुम से किसने कहा कि तुम्हारे भाई बन्दीगृह में हैं?

५. और आमोन ने उससे कहा: परमेश्वर को छोड़ कर अन्य किसी ने भी नहीं; और उसने मुझ से कहा: (७) जाओ, तुम अपने भाइयों को मुक्त करो क्योंकि वे मिदोनी देश के कारागार में बन्द हैं।

६. जब लमोनी ने यह सुना तब उसने अपने सेवकों से अपने (८) घोड़ों और (९) रथों को तैयार करने को कहा।

७. और उसने आमोन से कहा: आओ, मैं तुम्हारे साथ (१०) मिदोनी देश चलूंगा और वहां तुम्हारे भाइयों को मुक्त कर देने के लिए राजा से निवेदन करूंगा।

८. और तब ऐसा हुआ कि जब आमोन और लमोनी वहां की यात्रा कर रहे थे तब उनकी भेंट लमोनी के पिता से हुई जो (११) सारे देश का राजा था।

९. और तब लमोनी का पिता उससे बोला: जिस दिन मैंने अपने पुत्रों और लोगों के लिए (१२) भोज दिया था उस महत्वपूर्ण दिन तुम क्यों नहीं आए थे?

१०. और उसने यह भी कहा: तुम इस नफायटी के साथ कहां जा रहे हो जो कि एक असत्य बोलने वाले के लड़कों में से एक है।

११. तब ऐसा हुआ कि लमोनी ने अपने पिता के क्रुद्ध होने के भय से उसको अपनी यात्रा का लक्ष्य बतलाया।

१२. उसने अपने राज्य में बिलम्ब होने और अपने पिता द्वारा दिए गए (१३) भोज में उपस्थित न होने का कारण भी बतलाया।

१३. जब लमोनी ने अपने पिता से इन सब बातों को बतलाया तब उसका पिता उस पर क्रोधित हो उठा, जिससे उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसका पिता उससे बोला: लमोनी, तुम इन नफायटियों को (१४) मुक्त करवाने जा रहे हो जो असत्यवादी की सन्तान हैं। देखो, उन्होंने हमारे पूर्वजों को लूटा और उनकी सन्तानें हमारे मध्य आई हैं जिससे कि वे (१५) अपनी चतुराई और झूठी बातों से हमें धोखा देंगी और पुन: हमारी सम्पत्ति को लूटेंगी।

१४. तब लमोनी के पिता ने लमोनी को आज्ञा दी कि वह अपनी तलवार से आमोन को मार डाले। उसने उसे (१६) मिदोनी देश न जा कर, अपने साथ (१७) इस्माइल देश चलने की आज्ञा दी।

१५. लेकिन लमोनी ने उससे कहा: न तो मैं आमोन को मारूंगा और न ही मैं इस्माइल

(१) देखो २, २ नफी ५. (२) पद्य ३-७, १४, १५, २८, ३०. अल० २१:१२, १३, १८. २२:१, ३. २३:१०. (३) पद्य ३-७, १३, १५, २२, २४, २६-३०. अल० २१:१३-१५. २२:२. (४) देखो ३. (५) देखो २. (६) देखो ३. (७) पद्य २. (८) देखो १३, १ नफी १८. (१०) देखो २. (११) अल० २२:१. (१२) देखो ११, अल० १८. (१३) देखो ११, अल० १८. (१४) पद्य ४:७. (१५) देखो १४, या० ७. (१६) देखो २. (१७) देखो २३, अल० १७.

ईसा से लगभग ९० वर्ष पूर्व

देश वापस लौटूंगा। मैं मिदोनी देश ही जाऊंगा जिससे कि मैं आमोन के भाइयों को (१८) मुक्त करवा सकूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि वे धार्मिक और सच्चे परमेश्वर के पवित्र भविष्यवक्ता हैं।

१६. जब उसके पिता ने इन शब्दों को सुना तब वह उस पर क्रोधित हो उठा और उसने उसे मार कर धरती पर गिरा देने के लिए तलवार खींच ली।

१७. तब आमोन आगे बढ़ कर उससे बोला: सुनो, तुम अपने पुत्र को हत्या नहीं करोगे फिर भी यह अच्छा है कि तुम्हारे गिरने के बदले वह गिरे, क्योंकि देखो, उसने अपने पापों पर पश्चात्ताप किया है; परन्तु अगर इस समय तुम अपने क्रोध में आकर गिरे, तब तुम्हारी आत्मा को बचाया नहीं जा सकेगा।

१८. और तुम्हें यह भी शीघ्र समझना चाहिए कि अगर तुमने अपने पुत्र को मारा जो कि निर्दोष है, तब उसका रक्त धरती से बदला लेने के लिए अपने परमेश्वर को पुकारेगा; और तब शायद तुम अपनी आत्मा को खो बैठो।

१९. जब आमोन ने इन शब्दों को उससे कहा तब उसने उत्तर दिया: मैं जानता हूं कि अगर मैंने अपने पुत्र को मारा तब निर्दोष का रक्त बहाऊंगा; क्योंकि वह तुम हो जिसने उसको नष्ट करवाना चाहा।

२० और उसने उसको मारने के लिए अपना हाथ उठाया। लेकिन आमोन ने उसके वारों को रोक कर उसके हाथ पर ऐसा मारा कि उसका वह हाथ बेकार हो गया।

२१. जब राजा ने देखा कि आमोन उसको जान से मार सकता है तब वह अपने प्राणों की रक्षा के लिए उससे याचना करने लगा !

२२. लेकिन आमोन ने अपनी तलवार को उठा कर उससे कहा: अगर तुमने मेरे भाइयों को (१९) कारागार से नहीं छुड़वाया तब मैं तुम्हें मार डालूगा।

२३. तब राजा ने अपनी जान खो देने के भय से कहा: अगर तुमने मुझे छोड़ दिया तब जो कुछ मांगोगे वह सब कुछ, यहां तक कि मैं अपना आधा राज्य भी तुम्हें दे दूंगा।

२४. जब आमोन ने देखा कि उसने वृद्ध राजा को अपनी इच्छा के अनुसार वश में कर लिया है तब वह उससे बोला: अगर तुम मेरे भाइयों को (२०) कारागार से मुक्त कर दो, लमोनी का राज्य उसके पास रहने दो, और उस पर क्रोध न करो और (२१) उसे अपनी इच्छानुसार कार्य करने दो, तब मैं तुम्हें छोड़ सकता हूं; अन्यथा मैं तुम्हें मार कर धरती पर गिरा दूंगा।

२५. जब आमोन ने इन शब्दों को कहा तब राजा अपने जीवनदान के लिए पुलकित हुआ।

२६. और जब उसने देखा कि आमोन उसको नष्ट करना नहीं चाहता है और यह भी देखा कि उसके पुत्र लमोनी के प्रति आमोन का बहुत अधिक प्रेम है तब उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और बोला: तुमने केवल यही इच्छा की है कि मैं तुम्हारे भाइयों को (२२) मुक्त कर दूं और मेरा पुत्र लमोनी अपना राज्य अपने पास रखे तब देखो, मैं तुम्हारी यह इच्छा पूरी करता हूं कि वह इस समय से सदैव के लिए अपने राज्य के, अपने अधिकार में रखेगा और मैं अब उसपर शासन नहीं (२३) करूंगा।

२७. और मैं तुम्हें यह भी वचन देता हूं कि तुम्हारे भाई (२४) बन्दीगृह से मुक्त किए जाएंगे, और तुम अपने भाइयों के साथ मेरे राज्य में आओ; क्योंकि तुम्हें देखने के लिए मेरी भारी इच्छा है। जो कुछ आमोन और उसके पुत्र लमोनी ने कहा था उससे राजा को बड़ा अचम्भा हुआ था; इसलिए वह उनसे और अधिक जानना चाहता था।

२८. और तब ऐसा हुआ कि आमोन और लमोनी (२५) मिदोनी देश की यात्रा पर आगे बढ़े। मिदोनी में लमोनी ने वहां के राजा की कृपा प्राप्त की इसलिए आमोन के भाइयों को (२६) कारागार से बाहर निकाला गया।

२९. और जब आमोन उनसे मिला तब उसे

(१८) देखो १४. (१९) पद्य २४, २६, २७. (२०) देखो १६. (२१) पद्य २६. अलमा २१:२१, २२:२२:१. (२२) पद्य २७. अल० २२:२. (२३) अल० २१:२१, २२. २२:१. (२४) पद्य २६. (२५) देखो २. (२६) पद्य ४, ७.

बड़ा दुख हुआ क्योंकि वे बिना वस्त्र के थे और (२७) दृढ़ बन्धनों से बंधे रहने के कारण उनकी चमड़ी कट गई थी। उन्होंने (२८) भूख प्यास और अन्य प्रकार की यातनाओं को सहा था, फिर भी वे अपने कष्टों में सहनशील बने रहे।

३०. ऐसा हुआ था कि वे अपने दुर्भाग्य से अति निर्दयी और हठी लोगों के हाथों में पड़ गए थे, जिन्होंने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया उलटे उनको एक घर से दूसरे घर तक और एक जगह से दूसरी जगह तक तब तक खदेड़ते और पीटते रहे, जब तक कि उन्होंने उन्हें (२९) मिदोनी देश में खदेड़ कर बन्दीगृह में डाल न दिया। वहां पर उन्हें दृढ़ बन्धनों से बांधकर कारागार में डाल दिया गया, जहां वे कई दिनों तक पड़े रहे और उन्हें लमोनी और आमोन ने मुक्त किया।

आरुन, मुल्की और उनके भाइयों के द्वारा लमनायटियों में उपदेश देने का विवरण।

अध्याय २१ से २६

अध्याय २१

अमलकायटियों के द्वारा आरुन और मुल्की को अस्वीकार किया जाना और उनका मिदोनी जाना—उनका बन्दी बनना—उनका मुक्त होना और प्रचार करना—आमोन का और अधिक सफल होना—प्रार्थना भवन का बनाया जाना।

१. जब आमोन और उसके भाई लमनायटियों के देश की (१) सीमा पर (२) अलग-अलग हुए तब आरुन उस देश की ओर गया जिसे लमनायटी अपने पूर्वजों के आदि देश के नाम पर (३) यरूशलेम कहते थे, जो कि दूर मॉरमन देश की सीमा से लगा हुआ था।

२. लमनायटी, अमलकायटी और (४) अमूलन के लोगों ने एक बहुत बड़ा नगर बसाया था जिसे वे (५) यरूशलेम कहते थे।

३. लमनायटी तो कठोर लोग थे ही, परन्तु अमलकायटी और (६) अमूलनायटी तो और भी अधिक कठोर थे; इसलिए लमनायटियों के हृदय और भी कठोर हुए ताकि वे दुष्टता और घृणित कर्मों में उनसे आगे रहें।

४. और ऐसा हुआ कि आरुन (७) यरूशलेम में आकर पहले अमलकायटी लोगों में प्रचार करने लगा। उसने उनके उन (८) प्रार्थना भवनों में उपदेश देना आरम्भ किया जो उन्होंने (९) निहोर के प्रार्थना भवनों के समान बनाए थे क्योंकि बहुत से अमलकायटी निहोर के विचारों के थे।

५. इसलिए जब आरुन ने उनके एक (१०) प्रार्थना भवन में प्रवेश किया और जैसे ही उनसे बोलना आरम्भ किया वैसे ही एक अमलकायटी खड़ा होकर यह कहते हुए उससे विवाद करने लगा: वह कौन-सी बात है जिसकी गवाही तुमने दी है? क्या तुमने किसी (११) स्वर्गदूत को देखा है? स्वर्गदूत हमारे सामने क्यों नहीं प्रकट होता? देखो, क्या ये लोग उतने ही भले नहीं है जितने कि तुम्हारे लोग हैं?

६. तुम यह भी कहते हो कि अगर हमने पश्चात्ताप नहीं किया तब हम नष्ट हो जाएंगे तुम हमारे हृदय के विचारों और आशय को कैसे जानते हो? तुम कैसे जानते हो कि हमारे लिए पश्चात्ताप करने के कारण हैं? तुम कैसे जानते हो कि हम धार्मिक लोग नहीं हैं? देखो, हमने (१२) कई गिरजा घर बनाए हैं और हम परमेश्वर की आराधना करने के लिए एकत्रित होते हैं। हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर (१३) सभी लोगों को बचाएगा।

७. तब आरुन ने उससे कहा : क्या तुम यह विश्वास करते हो कि परमेश्वर का पुत्र मानव समाज को उनके पापों से बचाने के लिए आएगा।

८. और उस व्यक्ति ने उससे कहा: हम यह नहीं विश्वास करते कि तुम इस प्रकार की

(२७) पद्य ३०. (२८) अल० २१:१४. (२९) देखो २. (३०) पद्य २९. अध्याय २१. (१) अल० १७:१३. (२) पद्य २, ४. अल० २४:१. ३ नफी ९:७. (३) देखो २, मू० १८. (४) देखो २१, मू० २३. (५) पद्य १, ४. (६) देखो २१, मू० २३. (७) पद्य १, २. (८) देखो २१, अल० १६. (९) अल० १:२-१५. (१०) देखो २१, अल० १६. (११) मू० २७:१०-१६, ३४. (१२) देखो २०, अल० १५. (१३) अल० १:४. १५:१५.

कोई बात जानते हो। हम इस प्रकार की पारम्परिक असंगत बातों पर भी विश्वास नहीं करते। हम न तो यह विश्वास करते हैं कि तुम भविष्य की बातों को जानते हो और न ही हम यह मानते हैं कि तुम्हारे और हमारे पिताओं ने जो भविष्य की बातें कहीं थीं उनके विषय में वे जानते थे।

९. तब आरुन मसीह के आने (१४) मृतकों के पुनर्जीवित होने, और बिना मसीह की मृत्यु और कष्टों तथा उसके (१५) रक्त के शमन से मुक्ति प्राप्त करना असम्भव है, के विषय में शास्त्र से उन्हें दिखलाने लगा।

१०. और ऐसा हुआ कि जब वह इन बातों की व्याख्या करने लगा तब वे लोग उसपर क्रोधित हो उसकी हंसी उड़ाने लगे और वह जो कुछ कह रहा था उसे नहीं सुनते थे।

११. जब उसने देखा कि वे लोग उसकी बातें नहीं सुनेंगे तब वह उनके (१६) प्रार्थना भवन से चला आया और एक गांव में पहुंचा जिसे आनीआन्दी कहते थे, वहां उसने (१७) मुलकी, अम्माह और उसके भाइयों को लोगों में परमेश्वर की वाणी का प्रचार करते पाया। उनमें बहुत से लोग प्रभु की वाणी पर विवाद कर रहे थे।

१२. और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने देखा कि लोग अपने हृदयों को कठोर कर रहे हैं तब वे वहां से विदा होकर (१८) मिदोनी देश आए। वहां पर उन्होंने परमेश्वर की वाणी का प्रचार किया परन्तु बहुत कम लोगों ने उनकी उन बातों पर विश्वास किया जिनकी शिक्षा उन्होंने दी थी।

१३. फिर भी आरुन और उसके कुछ बन्धुओं को पकड़ कर (१९) बन्दीगृह में डाल दिया गया और बाकी बचे हुए मिदोनी से भागकर आस-पास के स्थानों में चले गए।

१४. जो कारागार में डाल दिए गए थे उन्हें बहुत-सी यातनायें झेलनी पड़ीं और उन्हें लमोनी और आमोन द्वारा मुक्त करके भोजन खिलाया गया और वस्त्र पहिनाए गए।

१५. इस प्रकार उन्हें यातनायें झेलनी पड़ीं और प्रथम बार मुक्त किया गया जिसके पश्चात् वे पुनः परमेश्वर की वाणी की घोषणा करने के लिए आगे बढ़े।

१६. जहां-जहां परमेश्वर की आत्मा उन्हें ले गई वहां-वहां वे गए और उन्होंने अमलकायटियों के हरएक (२०) प्रार्थना भवन और लमनायटियों के हर समूह में जहां उन्हें प्रवेश होने का मौका मिला, परमेश्वर की वाणी का प्रचार किया।

१७. और ऐसा हुआ कि प्रभु उन्हें इतना आशीर्वाद देने लगा कि उन्होंने बहुतों को सत्य के ज्ञान से परिचित कराया और बहुतों को उनके पापों से अवगत कराया और उनके पूर्वजों की असंगत (२१) परम्पराओं से भी उन्हें जानकारी कराई।

१८. और ऐसा हुआ कि आमोन और लमोनी (२२) मिदोनी देश से (२३) इस्माइल देश में वापस आए जो कि उनका उत्तराधिकार द्वारा प्राप्त देश था।

१९. और राजा लमोनी यह नहीं चाहता था कि आमोन (२४) उसकी सेवा करे या उसका नौकर रहे।

२०. उसने इस्माइल देश में (२५) प्रार्थना भवन बनवाए और अपनी प्रजा को एकत्रित करवाया।

२१. वह अपनी प्रजा को एकत्रित देख हर्षित हुआ और उन्हें बहुत-सी बातों की शिक्षा दी। उसने इस बात की भी घोषणा की कि वे उसकी प्रजा हैं और वे (२६) स्वतन्त्र हैं और राजा और उसके पिता के उत्पीड़न से भी उन्हें स्वतन्त्रता प्राप्त है, क्योंकि उसके पिता ने इस्माइल और आस-पास के स्थानों के लोगों के ऊपर उसे शासन करने का अधिकार दे दिया है।

२२. और उसने यह भी घोषणा की कि लोग, अगर लमोनी राजा के शासनाधीन देश में हैं, तब अपनी इच्छानुसार, चाहे जहां भी हों, अपने

(१४) देखो ४, २ नफी २. (१५) देखो ६, २ नफी २. (१६) देखो २१, अल० १६. (१७) पद्य १३, १४. अल० २०:२, ३, २८-३०. (१८) देखो २, अल० २०. (१९) पद्य १४, १५. अल० २०:२६-३०. (२०) देखो २१, अल० १६. (२१) देखो १४, या० ७. (२२) देखो २, अल० २०. (२३) देखो २३, अल० १७. (२४) अल० १७:२५. (२५) देखो २१, अल० १६. (२६) अल० २०:२४, २६. २२:१.

अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करने के लिए स्वतन्त्र हैं।

२३. और आमोन ने राजा लमोनी के लोगों को उपदेश दिया और धार्मिकता के विषय में बहुत-सी बातों की शिक्षा दी। वह प्रतिदिन परिश्रम के साथ उन्हें सदुपदेश देता रहा और लोग उसकी बातों पर ध्यान देते रहे और वे परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करने में लवलीन हुए।

अध्याय २२

नफी के देश में आरुन—राजा और उसके पूरे परिवार का मत परिवर्तन—नफायटी और लमनायटियों के मध्य देश का बंटवारा।

१. जब कि आमोन इस तरह लगातार लोगों को शिक्षा दे रहा था तब हम उसे छोड़कर आरुन और उसके भाइयों के विवरण की ओर लौटें। जब वह (१) मिदोनी देश से विदा हुआ तब परमात्मा की आत्मा उस (२) नफी देश में उस राजा के द्वार पर ले गई जो कि लमोनी के (३) पिता के इस्माइल (४) देश को छोड़कर (५) अन्य सभी देशों का राजा था।

२. और ऐसा हुआ कि वह अपने साथियों के साथ राजा के महल में गया और राजा के सामने घुटने टेक कर उससे बोला: हे राजा देखो, हम आमोन के बन्धु हैं जिनको आपने (६) बन्दीगृह से मुक्त किया है।

३. और अगर आप हमें क्षमा करें तब हम आपके सेवक रहेंगे। तब राजा ने उनसे कहा: उठो, मैं तुम्हें जीवनदान देता हूं और मैं तुम्हें अपना सेवक भी नहीं बनाऊंगा; लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम मुझे उपदेश दो क्योंकि मैं तुम्हारे भाई आमोन की (७) उदारता और उसकी महान बातों से परेशान हूं और मैं यह जानने की इच्छा रखता हूं कि वह तुम्हारे साथ (८) मिदोनी से आया क्यों नहीं।

४. तब आरुन ने राजा से कहा: सुनो, परमात्मा की आत्मा उसे अन्यत्र बुला ले गई है। वह (९) इस्माइल देश में लमोनी के लोगों को शिक्षा देने गया है।

५. तब राजा ने उससे कहा: तुमने जो (१०) परमेश्वर की आत्मा कहा है, वह क्या है? यही वह बात है जो मुझे व्याकुल किए हुए है।

६. और आमोन ने जो यह कहा है कि (११) अगर तुमने पश्चात्ताप किया तब तुम बचाए जाओगे और अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब अन्तिम दिन तुम फेंक दिए जाओगे, इसका क्या अर्थ है?

७. तब आरुन ने उसको उत्तर देते हुए कहा: क्या तुम विश्वास करते हो कि एक ईश्वर है? तब राजा ने कहा: मैं जानता हूं कि अमलकायटी लोग कहते हैं कि ईश्वर है, और मैंने उन्हें (१२) प्रार्थना करने के लिए भवन बनाने की आज्ञा दी है जिससे कि वे एकत्रित होकर उसकी आराधना करें। और अब जब कि आप कहते हैं कि ईश्वर है तब मैं विश्वास करूंगा।

८. और जब आरुन ने यह सुना तब उसका हृदय आनन्द मनाने लगा और उसने कहा: हे राजा सुनो! जितना तुम्हें जीवित रहने पर विश्वास है उतना ही निश्चय परमेश्वर के होने का है।

९. और राजा ने कहा: क्या परमेश्वर वही महान (१३) आत्मा है जो हमारे पूर्वजों को यरूशलेम देश से निकाल कर लाया था?

१०. और आरुन ने उससे कहा: हां, वही वह महानात्मा है जो पृथ्वी और स्वर्ग की सारी वस्तुओं की रचयिता है। क्या यह विश्वास करते हो?

११. और उसने कहा: हां, मैं विश्वास करता हूं कि वह महानात्मा सभी वस्तुओं का रचयिता है और मैं चाहता हूं कि तुम इन बातों के विषय में मुझे बताओ और मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास करूंगा।

१२. और ऐसा हुआ कि जब आरुन ने देखा

(१) देखो २, अल० २०. (२) देखो २, २ नफी ५. (३) अल० २०:८. (४) देखो २३. अल० १७. (५) अल० २०:८, ९.
(६) अल० २०:२६, २७. (७) अल० २०:२६. (८) देखो २, अल० २०. (९) देखो २३, अल० १७. (१०) पद्य ४.
(११) अल० २०:१७-१८. (१२) देखो २०, अल० १५. (१३) देखो २, अल० १८. ईसा से लगभग ९०-७७ वर्ष पूर्व

कि राजा उसकी बातों पर विश्वास करेगा, तब उसने (१४) शास्त्रों से पढ़कर, राजा को सुनाते हुए (१५) आदम की रचना से आरम्भ करते हुए परमेश्वर का अपने आकार में मनुष्य की रचना करने, उन्हें आज्ञाओं को देने और उनके नियम उल्लंघन से पतन होने की बातें बताईं।

१३. तब आरुन ने आदम की रचना से लेकर मानव समाज के पतन, उनकी सांसारिक वासना की स्थिति और मुक्ति की उस योजना की व्याख्या करते हुए शास्त्रों को खोल कर उसके समक्ष रख दिया, जो कि जगत की नींव के समय से मसीह के द्वारा उन लोगों के लिए तैयार (१६) किए गए गए थे जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।

१४. और जब कि मनुष्य पतित हो चुका है तब वह स्वयं कोई योग्यता नहीं प्राप्त कर सकता परन्तु उसके पापों का (१७) प्रायश्चित मसीह के कष्टों और मृत्यु से उनके विश्वास और पश्चात्ताप आदि के द्वारा हो जाता है; और वह (१८) मृत्यु के बन्धन को तोड़ देता है जिससे कब्र (१९) की विजय नहीं होती और (२०) मृत्यु का बन्धन यश की आशा द्वारा निगल लिया जाता है। आरुन ने राजा को इन सब बातों की व्याख्या कर समझाया।

१५. और ऐसा हुआ कि जब आरुन ने राजा को इन बातों की व्याख्या करके समझाया तब राजा ने कहा: जिस अनन्त जीवन के विषय में तुमने कहा है, उसको प्राप्त करने के लिए मैं क्या करूं? हां, (२१) परमेश्वर में जन्म लेने के लिए मैं क्या करूं जिससे कि (२२) मैं अपने हृदय से इस दुष्ट आत्मा को निकाल फेंकूं और उसकी आत्मा को स्वीकार करूं जिससे कि मैं आनन्द से भर उठूं और अन्तिम दिन फेंक,नहीं दिया जाऊं, सुनो इस महान आनन्द को प्राप्त करने के लिए मेरे पास जो कुछ है वह सब कुछ छोड़ देने को तैयार हूं, यहां तक कि मैं अपने राज्य को भी त्यागने को तैयार हूं।

१६. लेकिन आरुन ने उससे कहा: अगर तुम्हें इस बात की इच्छा है तब अगर तुम परमेश्वर के (२३) आगे झुके, और झुक कर अपने पापों पर पश्चात्ताप करके उसे प्राप्त करने के विश्वास के साथ (२४) उसके नाम को पुकारोगे तब तुम जिसको प्राप्त करने की आशा करते हो वह तुम्हें प्राप्त होगा।

१७. और जब आरुन ने ये शब्द कहे तब ऐसा हुआ कि राजा प्रभु के सामने अपने घुटनों पर झुका और यहां तक हुआ कि वह (२५) धरती पर सीधा गिरकर (२६) बलपूर्वक पुकारता हुआ बोला:

१८. हे परमेश्वर, आरुन ने मुझे बताया है कि एक परमेश्वर है; और अगर परमेश्वर है, और तुम परमेश्वर हो तब तुम क्या अपनी जानकारी मुझे दोगे? तुम्हें जानने के लिए मैं अपने सभी पापों को त्याग दूंगा जिससे मैं मर कर जिलाया जाऊं और अन्तिम दिन बचा लिया जाऊं। जब राजा ने यह शब्द कहे तब वह (२७) मृत समान हो गया।

१९. और तब ऐसा हुआ कि उसके सेवक दौड़कर गए और रानी से राजा को जो कुछ हुआ था, वह सब बतलाया तब वह राजा के पास आई और जब उसने राजा को मृत समान पड़े पाया और आरुन और उसके भाइयों को इस प्रकार खड़े देखा मानो (२८) राजा के गिरने के कारण वे ही हों, तब वह क्रोधित हो उठी और आज्ञा दी कि या तो उसके सेवक या राजा के सेवक उनको ले जाकर मार डालें।

२०. राजा के नौकरों ने राजा के गिरने के कारण को देखा था, इसलिए आरुन और उसके बन्धुओं पर हाथ लगाने का उन्हें साहस न हुआ और वे उनके लिए विनती करते हुए रानी से बोले: देखो, जबकि उनमें से एक ही हम सभी से बलवान है तब उनको मारने के लिए हमें आप क्यों आज्ञा देती हैं? हम उनके सामने गिर पड़ेंगे।

(१४) पद्य १३. देखो १३, मू० २. (१५) देखो १, १ नफी ३. अल० ६३:१२. (१६) देखो ४, मू० ४. (१७) देखो ६, २ नफी २. (१८) देखो ७ और १०, २ नफी ९. (१९) देखो ८, मू० १६. (२० देखो ९, मू० १६. (२१) देखो ३, मू० ५. (२२) देखो १७, मू० २. (२३) पद्य १७, १८. (२४) देखो ५, २ नफी ३२. (२५) पद्य १६. (२६) देखो ५, २ नफी ३२. (२७) पद्य १९. (२८) पद्य १८.

ईसा से लगभग ९० से ७७ वर्ष पूर्व

२१. जब रानी ने सेवकों के भय को देखा तब स्वयं बहुत भयभीत हुई क्योंकि उसने सोचा कि उसपर विपत्ति आ सकती है। उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि वे जाकर (२९) लोगों को बुला लावें जिससे कि वे आरुन और उसके बन्धुओं को मार डालें।

२२. तब आरुन रानी के निश्चय और लोगों के हृदय की कठोरता को जानकर डरा कि अगर वहां भीड़ एकत्रित हो गई तब उनमें भारी विवाद होगा और शान्ति भंग होगी। इसलिए उसने हाथ बढ़ाकर धरती पर से राजा को उठाया और उससे कहा: खड़े होओ। और वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और अपना बल पुन: प्राप्त किया।

२३. यह रानी और कुछ नौकरों की उपस्थिति में हुआ। और जब उन्होंने यह देखा तब वे चकित और भयभीत हुए। और राजा ने आगे बढ़कर उन्हें उपदेश दिया। उसने उन्हें इतना उपदेश दिया कि राजा का (३०) पूरा परिवार मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वासी हो गया।

२४. रानी की आज्ञा के कारण वहां एक बहुत (३१) बड़ी भीड़ एकत्रित हो गई, और आरुन और उसके बन्धुओं के कारण उनमें बहुत अधिक असन्तोष की ध्वनि होने लगी थी।

२५. लेकिन राजा ने आगे बढ़कर उन्हें उपदेश दिया। तब वे आरुन और उसके साथियों के प्रति शान्त हुए।

२६. और तब ऐसा हुआ कि जब राजा ने देखा कि लोग शान्त हो गए हैं तब उसने आरुन और उसके साथियों को भीड़ के मध्य में खड़े होकर लोगों को उपदेश देने को कहा।

२७. और ऐसा हुआ कि राजा ने अपने सारे देश के लोगों में (३२) घोषणा की जो पूरब के समुद्र से पश्चिम के समुद्र तक के प्रदेशों में रहते थे और जो (३३) ज़राहेमला देश से एक पतले वन से विभाजित था जो कि पूरब के समुद्र से लेकर पश्चिम के समुद्र तक और समुद्र तट की उस वन की सीमा पर था जो कि ज़राहेमला से उत्तर की ओर (३४) मण्टी की सीमा से होकर (३५) सिदोन नदी के उद्गम के ऊपर से पूरब से पश्चिम तक था—इस प्रकार लमनायटी और नफायटी विभाजित हुए।

२८. अधिक आलसी लमनायटी वन में तम्बुओं में रहते थे। वे (३६) नफी के देश में पश्चिम के वन में फैले हुए थे और ज़राहेमला देश के पश्चिम में समुद्र तट तक और अपने पूर्वजों के प्रथम निवास-स्थान पश्चिमी नफी देश में रहते थे। इस प्रकार वे समुद्र तट के किनारे-किनारे तक बसे हुए थे।

२९. पूरब के समुद्र तट पर भी बहुत से लमनायटी थे जहां पर उन्हें नफायटी लोगों ने खदेड़ दिया था। इस प्रकार नफायटी लोग लगभग लमनायटियों से घिरे हुए थे; फिर भी नफायटी लोग सिदोन नदी के उद्गम से पूरब और पश्चिम में वन की सीमा तक और वन के आस-पास के देश को अपने अधिकार में किए हुए थे। उत्तर में उस देश तक उनका अधिकार था जिसे वे (३७) सम्पन्न देश कहते थे।

३०. और उनके देश की सीमा वहां तक थी जिस देश को वे (३८) नीरव देश कहते थे जो कि उत्तर में इतनी दूर तक फैला था जहां (३९) लोग बसे थे और नष्ट हो गए थे जिनकी (४०) हड्डियों के विषय में हम बता चुके हैं और जिन्हें (४१) ज़राहेमला के लोगों ने पाया था और (४२) जहां वे लोग प्रथम आए थे।

३१. वहां से वे लोग (४३) दक्षिणी जंगल में आए। इस तरह उत्तर का देश, (४४) नीरव देश और दक्षिण का देश (४५) सम्पन्न देश कहलाता था जिसके वन में हर प्रकार के पशु

अल० १६. (३५) देखो, अल० २. (३६) देखो २, २ नफी ५. (३७) पद्य ३१-३३. अल० ५०:३२. ५१:२८, ३०:३२. ५२:९, १५, १७, १८, २७, ३९. ५३:३, ४. ५५:२६. ६३:५. इला० १:२३, २८, २९. ४:५, ६. ५:१४. ३ नफी ३:२३. ११:१. (३८) पद्य ३१, ३२. अल० ४६:१७. ५०:३४. ६३:५. ३ नफी ३:२३. मार० ३:५, ७. ४:१-३, ८, १३, १९. (३९) एथर की पुस्तक. (४०) मूसा ८:७-१२. २१:२५-२८. २८:११-१९. एथर की पुस्तक. (४१) ओम० २०-२२. (४२) पद्य ३१, ३२. ओ० १४-२२. इला० ६:१०. ८:२१, २२. (४३) इला० ६:१०. (४४) देखो ३८ और इलामन ३:५, ६. (४५) देखो ३७.

ईसा से लगभग ९०-७७ वर्ष पूर्व के मध्य

पाए जाते हैं जिनमें से कुछ (४६) उत्तर देश वहां भोजन प्राप्त करने के लिए आ गए थे।

३२. अब एक नफायटी के लिए पूरब के सम्पन्न देश से पश्चिम के समुद्र तक के नीरव देश की यात्रा करने में (४७) डेढ़ दिन लगते थे। इस प्रकार नफी और ज़राहेमला का देश लगभग जल से घिरा हुआ था जहां उत्तर की भूमि से दक्षिण की भूमि एक (४८) डमरुमध्य द्वारा जुड़ी हुई थी।

३३. और ऐसा हुआ कि सम्पन्न देश में पूरब से लेकर पश्चिम समुद्र तक नफायटी लोग बस गए; और इस तरह नफायटियों ने अपनी बुद्धिमानी, प्रहरियों और अपनी सेनाओं के द्वारा दक्षिण में लमनायटियों को दबा दिया जिससे कि वे उत्तर की भूमि पर अधिकार न कर सकें।

३४. इसलिए लमनायटी केवल नफी के देश और आस-पास के जंगलों में और अधिकार नहीं जमा सकते थे। वह नफायटियों की बुद्धिमानी थी क्योंकि लमनायटी उनके शत्रु थे और वे चारों ओर उनके द्वारा किए गए उपद्रवों को सह नहीं सकते थे और अपनी इच्छानुसार नफायटी आवश्यकता पड़ने पर भाग भी सकते थे।

३५. अब मैं यह सब कहने के पश्चात् आमोन, आरुन, ओमनर, हिमनी और उनके बन्धुओं की ओर लौटता हूं।

अध्याय २३

धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा किया जाना—बहुत से लमनायटियों का मत परिवर्तन—अमलकायटी और अमुलोनायटी लोगों का सत्य को अस्वीकार करना—एण्टी-नफी-लेही नामाकरण।

१. सुनो, ऐसा हुआ कि लमनायटियों के राजा ने अपने लोगों में (१) ढिंढोरा पिटवाया कि परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने के लिए आमोन, आरुन, ओमनर, हिमनी या उनके कोई बन्धु उनके देश के किसी भाग में, कहीं भी जाएं तब वे उनपर हाथ न लगाएं।

२. हां, उसने लोगों में अपनी आज्ञा घोषित की कि वे उनको पकड़ कर बन्धनों से बांधें नहीं और न ही उन्हें कारागार में डालें और उन पर न थूकें, न उन्हें मारे, न अपने (२) प्रार्थना भवनों से बाहर निकालें, न कोड़ा मारें, न पथराव करें, और उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक अपने घरों में, (३) मन्दिरों में और (४) उपासना गृहों में जाने दें।

३. इस प्रकार वे जाकर अपनी इच्छानुसार वाणी का प्रचार कर सकें क्योंकि राजा और उसका (५) सारा घराना मत परिवर्तन करके प्रभु में विश्वासी हो गया था। इसलिए उसने सारे देश भर के अपने लोगों में यह (६) आज्ञा जारी की जिससे कि परमेश्वर की वाणी का विरोध न हो लेकिन उसका प्रचार सारे देश भर में हो और लोगों को अपने पूर्वजों की (७) अनुचित परम्पराओं की जानकारी हो और वे जान सकें कि वे सब भाई बन्धु हैं और एक दूसरे की हत्या, लूट, चोरी, व्यभिचार और किसी अन्य प्रकार की भूलें न करें।

४. और ऐसा हुआ कि जब राजा ने यह (८) आज्ञा जारी की तब आरुन और उसके भाई बन्धु लमनायटियों में परमेश्वर की वाणी की शिक्षा देने के लिए एक नगर से दूसरे नगर (९) प्रार्थना के एक भवन से दूसरे भवन जाते हुए गिरजा की स्थापना करने (१०) पुरोहितों और शिक्षकों को सारे देश भर में नियुक्त करने लगे। इस प्रकार उन्हें भारी सफलता मिलने लगी।

५. सहस्त्रों को प्रभु की जानकारी कराई गई और सहस्त्रों नफायटियों की परम्पराओं में विश्वास करने लगे और उन्हें वर्तमान समय तक के (११) अभिलेखों और भविष्यवाणियों से परिचित कराया गया।

६. और जितना निश्चय प्रभु के रहने का है उतना ही जितने लोगों ने विश्वास किया अर्थात्

(४६) देखो १३, १ नफी १८. (४७) इला० ४:७. (४८) अल० ५०:३४. ५२:९. ६३:५. इला० ४:७. मार० २:२९. ३:५.
अध्याय २३. (१) पद्य २-४. अल० २२:२७. (२) देखो २१, अल० १६. (३) देखो ८, २ नफी ५. (४) देखो २०, अल० १५. (५) अल० २२:२३. (६) देखो १. (७) देखो १४, याकू० ७. (८) देखो १. (९) देखो २१, अल० १६. देखो ८, २ नफी ५. देखो २०, अल० १५. (१०) देखो ३, मू० ६. (११) देखो १, १ नफी ३. अल० ६३:१२.

जितने लोग आमोन और उसके बन्धुओं के दैवी ज्ञान और भविष्यवाणी की भावना में प्रचार और उनमें परमेश्वर के चमत्कार द्वारा सच्चाई की जानकारी में लाए गए और जो लमनायटी उनके प्रचार में, और मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वासी हुए, निश्चय है कि वे (१२) कभी भी पथ भ्रष्ट न हुए।

७. क्योंकि वे धार्मिक लोग हो गए। उन्होंने विद्रोह का अस्त्र डाल दिया और परमेश्वर और अपने बन्धुओं के विरुद्ध लड़ना भी बन्द कर दिया।

८. ये वे लोग हैं जो मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वासी हुए।

९. (१३) इस्माइल देश में रहने वाले लमनायटी।

१०. (१४) मिदोनी देश के लमनायटी।

११. (१५) नफी नगर में रहने वाले लमनायटी।

१२. (१६) सिलोम और सिमलोन (१७) देशों में, और लेमुएल और सिमनीलोम नगरों में रहने वाले लमनायटी।

१३. ये नाम उन शहरों के हैं जहां के लमनायटी लोगों ने मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वासी होकर विद्रोह के अस्त्र डाल दिए थे, हां, उन्होंने अपने सारे अस्त्र-शस्त्र त्याग दिए; और वे सब के सब लमनायटी थे।

१४. अमलकायटी लोगों में से केवल एक को छोड़कर और किसी ने भी मत परिवर्तन नहीं किया और न तो (१८) अमुलोनायटी ने ही मत परिवर्तन किया परन्तु उन्होंने अपने हृदयों को कठोर बना लिया। अन्य देहातों और नगरों के लमनायटी लोग भी अपने हृदयों को कठोर बनाए रहे।

१५. इसलिए हमने लमनायटियों के उन सारे नगरों के नाम दिए जहां के लोग पश्चात्ताप करके सत्य के प्रकाश में आए और मत परिवर्तन किया।

१६. इसलिए तब ऐसा हुआ कि राजा और वे लोग जिन्होंने मत परिवर्तन कर लिया था उनकी इच्छा हुई कि उन्हें एक नाम दिया जाए जिसके द्वारा वे अपने अन्य भाइयों से अलग पहिचाने जा सकें; इसलिए राजा ने आरुन और उसके कई (१९) पुरोहितों से ऐसे नाम के लिए राय ली जिसके द्वारा वे अलग पहिचाने जाएं।

१७. और ऐसा हुआ कि उन्हें (२०) एण्टी-नफी-लेही नाम दिया गया और वे इसी नाम से पुकारे जाने लगे।

१८. और वे बहुत ही प्रगतिशील हो गए और वे नफायटी के मित्र बनकर उनके अनुरूप होकर उनसे मेल-मिलाप रखने लगे और परमेश्वर के श्राप ने (२१) उनका पीछा छोड़ दिया।

अध्याय २४

परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध लमनायटियों की चढ़ाई—मत परिवर्तित लमनायटियों का शस्त्र धारण करने से इन्कार करना—और मत परिवर्तन किया जाना।

१. और ऐसा हुआ कि अमलकायटी, (१) अमुलोनायटी और वे लमनायटी जो कि अमुलोन देश (२) हीलम देश, (३) यरूशलेम देश, याने आस-पास के सारे देशों में रहने वाले थे और जिन्होंने मत परिवर्तन नहीं किया था और (४) एण्टी-नफी-लेही का नाम धारण नहीं किया था उन्हें अमलकायटियों और अमुलोनायटियों के द्वारा अपने बन्धुओं को भड़काया गया और वे क्रोधित हो गए।

२. और उनका द्वेष बहुत अधिक बढ़ गया, यहां तक कि वे राजा के विरुद्ध विद्रोह करने लगे और उसे अपना राजा मानने से भी इन्कार करने लगे। इसलिए उन्होंने एण्टी-नफी-लेही के लोगों के विरुद्ध अस्त्र ग्रहण किया।

३. तब राजा ने अपने राज्य को अपने लड़के

(१२) अल० २७:२७. इला० १५:६-१६. (१३) देखो २३, अल० १७. (१४) देखो २, अल० २०. (१५) देखो २ नफी ५. (१६) देखो ६, मू० ७. (१७) देखो ४, मू० १०. (१८) देखो २१, मू० २३. (१९) देखो ३, मू० ६. (२०) अल० २४: १-३, ५, २०. २५:१, १३. २७:२, २१, २५. ४३:११. (२१) देखो ४, १ नफी २. २ नफी ३०:६. ३ नफी २:१४-१६. अध्याय२४. (१) देखो २१, मू० २३. (२) देखो १५, मू० २३. (३) देखो २, अल० २१. (४) देखो २०, अल० २३.

ईसा से लगभग ९० से ७७ वर्ष के मध्य

को दे दिया और उसका नाम उसने एण्टी-नफी-लेही रखा।

४. जिस वर्ष लमनायटी परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध युद्ध की तैयारी कर रहे थे उसी वर्ष राजा का देहान्त हो गया।

५. तब आमोन, उसके बन्धु और उनके साथ आए हुए लोगों ने उनके भाइयों को नष्ट करने के लिए युद्ध की तैयारी को देखा। तब वे मिडियन देश आये जहां आमोन अपने सब भाइयों से मिला; और वहां से वे सब (५) इस्माइल देश में आए जिससे कि वे लमोनी और उसके भाई (६) एण्टी-नफी-लेही से लमनायटियों के विरुद्ध बचाव करने के लिए विचार विमर्श कर सकें।

६. मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वास करने वालों में से कोई भी व्यक्ति अपने बन्धुओं के विरुद्ध अस्त्र ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं था और न तो उन्होंने युद्ध की तैयारी में कोई भाग ही लिया; और उनके राजा ने भी उन्हें भाग न लेने की आज्ञा दी थी।

७. इस विषय पर राजा ने जो शब्द कहे थे वे शब्द ये हैं: मेरे प्रिए लोग, महान परमेश्वर ने अपनी उदारता से हमारे इन नफायटी भाइयों को हमारे पास प्रचार करके हमारे (७) पूर्वजों की अनुचित परम्पराओं से जानकारी कराने के लिए जो भेजा है उसके लिए हम उसे धन्यवाद देते हैं।

८. देखो, हमारे हृदयों को कोमल करने के लिए, जिससे कि हम अपने इन नफायटी भाइयों से (८) सम्पर्क स्थापित कर सकें, अपनी आत्मा के एक अंश को देने के लिए मैं अपने महान परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं।

९. और सुनो, मैं अपने परमेश्वर को इसलिए भी धन्यवाद देता हूं क्योंकि इस सम्पर्क को खोलने से हम अपने पापों और उन बहुत से हत्याओं को भली प्रकार जान सके हैं जिन्हें हमने किया है।

१०. और मैं अपने महान परमेश्वर को इसलिए भी धन्यवाद देता हूं कि उसने इन दुष्कर्मों, पर पश्चात्तांप करने का अवसर हमें प्रदान किया है, और उसने हमारे उन अनेक पापों और हत्याओं को क्षमा किया है जिसे कि हमने किया है और हमारे हृदयों से अपराधों को अपने पुत्र की अच्छाइयों के द्वारा निकाल दिया है।

११. और अब, सुनो मेरे भाइयो, हम अपने अनेक किए हुए दुष्कर्मों और हत्याओं पर इतना कर सकते हैं कि उन पर पश्चात्ताप करें (जबकि हम मानव वंश में सब से पथ भ्रष्ट थे) और परमेश्वर से उन्हें अपने हृदयों से निकालने से पहले हमें पर्याप्त पश्चात्ताप करना होगा और तब वह हमारे धब्बों को निकालेगा।

१२. और अब, मेरे सबसे अधिक प्रिय भाइयो, जब कि परमेश्वर ने हमारे धब्बों को निकाल दिया है, और हमारी तलवारें चमकीली हो गई हैं तब हम उन्हें (९) अपने भाइयों के लहू से न रंगे।

१३. देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, हम अपनी तलवारों को अपने भाइयों के रक्त से न रंगे और अगर हम अपनी तलवारों को पुनः रंगेंगे तब हमारे महान परमेश्वर के पुत्र के उस रक्त से धोकर उन्हें स्वच्छ नहीं किया जा सकेगा जो हमारे पापों के (१०) प्रायश्चित के लिए गिराया जाएगा।

१४. और महान परमेश्वर ने हम पर दया की, और हमें इन बातों की जानकारी कराई जिससे कि हम नष्ट न हों; हां, उसने हमें इन बातों की जानकारी पहले से इसलिए कराई क्योंकि वह हमारी आत्माओं को और हमारे बच्चों को भी प्यार करता है; इसलिए वह अपनी दया में अपने दूतों द्वारा हमसे मिलता है जिससे कि मुक्ति की योजना हमें और हमारी भावी सन्तान को मालूम हो।

१५. ओहो! हमारे परमेश्वर कितने दयावान हैं! और अब सुनो, हम अपने धब्बों (११) को साफ करने के लिए इतना ही कर सकते थे, और जबकि हमारी तलवारें निर्मल हो चुकी हैं तब हम उन्हें (१२) छुपा दें जिससे कि वे निर्मल चमकती रहें और अन्तिम दिन अर्थात् उस दिन जब कि हम उसके सामने न्याय के लिए ले जाए जाएंगे तब वे यह

(५) देखो २३, अल० १७. (६) देखो २०; अल० २३. (७) देखो १४, या० ७. (८) अल० २३:१८. (९) पद्य ६, १३, १५-१६. (१०) देखो ६, २ नफी २. (११) देखो ६. (१२) पद्य १७-१९. अल० २५:१४, २६, ३२. ५३:१०, ११. ५६:६-८.

साक्षी देंगी कि हमने अपनी तलवारों को अपने भाइयों के लहू से नहीं रंगा है क्योंकि उसने हमको अपनी वाणी दी है और उससे हम को शुद्ध किया है।

१६. और अब, मेरे भाइयो, अगर हमारे भाई हमको नष्ट करना चाहते हों, तब देखो, हम अपनी तलवारों को छुपा दें, हां, यहां तक कि हम उन्हें (१३) धरती के अन्दर गहरे गाड़ दें, जिससे कि वे चमकती रहें और अन्तिम दिन साक्षी स्वरूप हों कि हमने उन्हें कभी काम में प्रयोग नहीं किया है; और अगर हमारे भाई हमें नष्ट करना चाहेंगे तब हम अपने परमेश्वर के पास जाएंगे और हम बचा लिए जाएंगे।

१७. जब राजा ने इन बातों को कहना समाप्त किया तब जितने लोग वहां एकत्रित हुए थे उन सबों ने अपनी अपनी तलवारें और दूसरे अस्त्र-शस्त्र जो मानव रक्त बहाने के काम में लाए जाते थे धरती में गहरे गाड़ दिए।

१८. यह उन्होंने इसलिए किया क्योंकि उनके दृष्टिकोण से यह परमेश्वर और मनुष्य के लिए साक्षी थी कि वे फिर कभी मनुष्य का रक्त हथियारों से नहीं गिराएंगे । इसके द्वारा वे परमेश्वर को विश्वास दिलाते हुए उससे शर्त कर रहे थे कि अपने भाइयों के रक्त बहाने की अपेक्षा वे (१४) अपने प्राण देंगे; अपने भाइयों की वस्तुओं को लेने की अपेक्षा उन्हें देंगे और आलस में समय गवाने के बदले घोर परिश्रम करेंगे।

१९. इस प्रकार हम देखते हैं कि जब इन लमनायटियों को सत्य से जानकारी कराई जाती है और जब वे सत्य पर विश्वास करने लगते हैं तब वे उस पर दृढ़ रहते हैं और पाप कर्म करने की अपेक्षा (१५) मर जाना अच्छा समझते हैं; और हम इस प्रकार यह भी देखते हैं कि उन्होंने शान्ति का अस्त्र गाड़ दिया यानि शान्ति के लिए युद्ध के के हथियार गाड़ दिए।

२०. और ऐसा हुआ कि उनके लमनायटी भाइयों ने राजा को और (१६) एण्टी-नफी-लेही के लोगों को देश से नष्ट कर बाहर खदेड़ने के लिए और दूसरे राजा को राजसिंहासन पर बैठाने के विचार से युद्ध की तैयारी करके नफी के देश पर चढ़ाई की।

२१. जब लोगों ने देखा कि वे उनके विरुद्ध आ रहे हैं तब लोग उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ कर उनके सामने धरती पर सीधे लेट गए और प्रभु का नाम पुकारने लगे। जब वे इस तरह उनके सामने पड़े हुए थे तब लमनायटी उन पर टूट पड़े और तलवार से मारने लगे।

२२. इस प्रकार बिना विरोध प्राप्त किए उन्होंने उनमें से एक सहस्त्र और पांच लोगों को मार डाला; और हम जानते हैं कि जो इस प्रकार मारे गए थे उन्हें आशीर्वाद प्राप्त हुआ और वे अपने परमेश्वर के साथ रहने के लिए चले गए।

२३. जब लमनायटियों ने देखा कि उनके बन्धु तलवार से बचने के लिए न भागते हैं और न ही बचने के लिए दाहिने बायें हटते हैं और धरती पर मरने के लिए लेट जाते हैं और तलवार से मरते मरते भी परमेश्वर का गुणगान करते हैं—

२४. तब वे उन्हें मारने से विरक्त हुए और उनमें से बहुतों का हृदय अति दुखित हुआ क्योंकि अपने किए हुए कर्म पर उन्हें पश्चात्ताप हुआ।

२५. और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने अस्त्र-शस्त्रों को फेंक दिया और उन्हें पुन: धारण नहीं किया क्योंकि उनके द्वारा की हुई हत्यायें उन्हें डंक मार रही थीं; और जिन्होंने मारने के लिए हाथ उठाया था वे उनकी दया पर निर्भर हो बन्धु भाव से आगे आए।

२६. और तब ऐसा हुआ कि उस दिन परमेश्वर के लोगों के साथ मारे गए लोगों से अधिक लोग आकर मिल गए; और जो लोग मारे गए थे, वे धार्मिक लोग थे इसलिए हमें सन्देह का कोई कारण नहीं कि वे बचाए गए थे।

२७. उन लोगों में कोई एक भी व्यक्ति पापी नहीं था जो मारा गया था; लेकिन एक सहस्त्र से भी अधिक लोग सत्य के ज्ञान में लाए गए और इस तरह हम देखते हैं कि प्रभु अपने लोगों की मुक्ति के लिए कई तरह से काम करते हैं।

२८. अधिकांश लमनायटी जिन्होंने अपने बन्धुओं की हत्या की थी वे अमलकायटी और

(१३) देखो १२. (१४) पद्य १६, २१-२७. (१५) देखो १४. (१६) देखो २०, अल० २३.

अमुलोनायटी थे जिनमें अधिकांश (१७) निहोर के मतानुयायी थे।

२९. और जो लोग प्रभु के लोगों के साथ मिल गए थे उनमें से कोई भी अमलकायटी या (१८) अमुलोनायटी (१९) या निहोर का मतानुयायी नहीं था परन्तु वे लमान और लेमुएल के सगे वंशज थे।

३०. इस प्रकार हम भली प्रकार देख सकते हैं कि जब कोई व्यक्ति परमेश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा ज्ञान प्रकाश में लाया जाता है और धार्मिकता के विषय में बहुत बड़ा ज्ञान प्राप्त करके पुन: पापांग में गिर जाता है तब वे और भी अधिक कठोर हो जाते हैं और (२०) उनकी स्थिति और भी अधिक बुरी हो जाती है जैसे कि उन्हें इन सब बातों का कोई ज्ञान ही नहीं था।

अध्याय २५

लमनायटियों के द्वारा आक्रमण किया जाना—अमुलोनायटियों द्वारा बदला लिया जाना—प्राणोत्सर्ग—अभिनन्दी की और भविष्यवाणियों का पूरा होना।

१. और सुनो, तब ऐसा हुआ कि वे लमनायटी और अधिक क्रोधित हो उठे, क्योंकि उन्होंने अपने ही भाइयों को मार डाला था; इसलिए उन्होंने इसका बदला नफायटियों से लेने की शपथ ली और उस समय (१) एण्टी-नफी-लेही के लोगों को मारने का और अधिक प्रयास नहीं किया।

२. लेकिन वे अपनी सेना को लेकर ज़राहेमला देश की सीमा के अन्दर घुस गए और (२) अमोनिहा के लोगों पर टूट पड़े और (३) उन्हें नष्ट कर दिया।

३. इसके पश्चात् उन्होंने नफायटी लोगों से कई युद्ध किए जिनमें वे ही खदेड़े और मारे गए।

४. लमनायटियों में जो लोग मारे गए थे उनमें (४) अमूलोन और उसके भाइयों के लगभग पूरे वंश थे जो नूह के पुरोहित थे और वे नफायटियों के द्वारा मारे गए थे।

५. बाकी बचे हुए लमनायटी पूरब के जंगल में भाग गए और वहां अन्य लमनायटियों पर बल-पूर्वक शक्ति और अधिकार जमा कर उनके विश्वास के कारण बहुत से लमनायटियों को जला कर (५) नष्ट कर दिया।

६. उनमें से बहुत से लोग बहुत बड़ी हानि सहने और कष्ट झेलने के कारण अपने देश में आरुन द्वारा दिए गए (६) उपदेश के शब्दों को याद कर उद्विग्न होने लगे। इसलिए वे अपने पूर्वजों की परम्परा (७) पर अविश्वास और प्रभु पर विश्वास करने लगे और यह भी मानने लगे कि उसने नफायटियों को बहुत अधिक शक्ति दी है; इस प्रकार उनमें से बहुत से लोगों ने जंगल में मत परिवर्तन कर लिया।

७. और तब ऐसा हुआ कि उनके शासक ने जो (८) अमूलोन के अवशेष वंश का था, इन बातों पर विश्वास करने वालों को (९) मार डालने की ठानी।

८. इस प्रकार धर्म के लिए प्राण त्याग करने से उनके बन्धु क्रोधित हो उठे और उस वन में विवाद होने लगा और लमनायटी (१०) अमूलोन और उसके भाइयों के वंशजों को ढूंढ-ढूंढ कर मारने लगे और वे वहां से भाग कर पूरब के वन में जा छुपे।

९. और देखो, वे लमनायटियों द्वारा आज तक ढूंढ कर मारे जाते हैं। इस तरह (११) अभिनन्दी के वे शब्द सत्य सिद्ध हुए जिन्हें उसने उन पुरोहितों के विषय में कहा था जिन्होंने उसे अग्नि द्वारा मृत्यु देना निश्चित किया था।

१०. क्योंकि उसने उनसे कहा था: (१२) मेरे साथ जो कुछ तुम करोगे उसी प्रकार की बातें भविष्य में होंगी।

११. अभिनन्दी प्रथम व्यक्ति था जो परमेश्वर पर विश्वास करने के कारण (१३) अग्नि द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ था; और उसके कहने का यही

(१७) अल० १:२-१५. (१८) देखो २१, मू० २३. (१९) अल० १:२-१५. (२०) पद्य १, २८, २९. देखो ८, २ नफी ३१. अल० २१:३-११. २३:१४. ३२:१९. ४७:३६. अध्याय २५. (१) देखो २०, अल० २३. (२) देखो ६, अल० ८. (३) अल० १६:२, ३, ९-११. (४) देखो २१, मू० २३. (५) देखो ६, मू० १७. (६) अल० २१:५-१२. (७) देखो १४, या० ७. (८) देखो २१, मू० २३. (९) देखो ६, मू० १७. (१०) देखो २१, मू० २३. (११) मू० १७:१५-२०. (१२) मू० १३:१०. (१३) मू० १७:१३-२०.

ईसा से लगभग ९० से ७७ वर्ष के मध्य

तात्पर्य था कि जिस प्रकार उसने कष्ट सहे उसी प्रकार बहुत से लोग (१४) अग्नि में जल कर प्राण त्यागेंगे।

१२. और उसने नूह के पुरोहितों से कहा था कि जिस प्रकार उसे मृत्यु दी जा रही है उसी प्रकार उनके वंशज बहुतों के मारे जाने के कारण होंगे, और वे बहुत दूर तक तितर-बितर कर दिए जाएंगे और जिस प्रकार बिना गड़रिए के भेड़ जंगली जानवरों के द्वारा खदेड़े और मारे जाते हैं उसी प्रकार वे भी मारे और खदेड़े जाएंगे और अब, सुनो, ये शब्द सच सिद्ध हुए क्योंकि वे लमनायटियों के द्वारा (१५) खदेड़े, और ढूंढ-ढूंढ कर मारे गए।

१३. और तब ऐसा हुआ कि जब लमनायटियों ने देखा कि वे नफायटियों पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते तब वे वापस अपने देश लौट गए और उनमें से बहुत से लोग (१६) इस्माइल और (१७) नफी के देश में जा कर रहने लगे और परमेश्वर के उन लोगों के साथ मिल गए जो कि (१८) एण्टी-नफी-लेही के लोग थे।

१४. और उन्होंने भी अपने युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों को अपने भाइयों की तरह (१९) गाड़ दिया और धार्मिक बन गए; और प्रभु के पथ पर चलते हुए उसकी आज्ञाओं और व्यवस्थाओं का पालन करने लगे।

१५. हां, उन्होंने (२०) मूसा के नियमों का भी पालन किया क्योंकि मूसा के नियमों का पालन करना इसलिए आवश्यक था क्योंकि वे सब पूरे नहीं हुए थे। वे मूसा के नियमों का विरोध न करते हुए मसीह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे मानते थे कि मूसा के नियम मसीह के आगमन के समान ही हैं और उन नियमों का पालन तब तक करना चाहिए जब तक वह उनके सामने प्रकट नहीं होता।

१६. वे यह नहीं विश्वास करते थे कि मूसा के नियमों के द्वारा मुक्ति प्राप्त हो सकती है परन्तु वे यह मानते थे कि मूसा के नियम मसीह में उनके विश्वास को दृढ़ करते हैं। इस प्रकार उस भविष्य-वाणी की भावना पर आश्रित होकर वे विश्वास के द्वारा अनन्त मुक्ति पाने की आशा करते रहे जो भविष्य में आने वाली बातों के विषय में बतलाता था।

१७. और देखो, आमोन, आरुन, ओमनार, हिमनी तथा उनके भाइयों ने लमनायटियों में सफलता प्राप्त करने के लिए यह देख कर अति आनन्द मनाया कि प्रभु ने उनको उनकी (२१) प्रार्थनानुसार सफलता दी और अपनी वाणी को उनके प्रति सभी तरह से सत्य सिद्ध किया।

अध्याय २६

आमोन का प्रभु का यशगान करना—धार्मिकता में अहंकार करना—अपने और अपने बन्धुओं के प्रति उसका आशीर्वादों को गिनना।

१. और अब अपने बन्धुओं के प्रति आमोन ने जो शब्द कहे थे वे ये हैं: मेरे भाइयो और बन्धुओं देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि हमारे पास आनन्द मनाने के कितने महान कारण हैं क्योंकि जब हमने (१) ज़राहेमला देश (२) से यात्रा आरम्भ की थी तब क्या हम यह जानते थे कि परमेश्वर हमें इतनी बड़ी सहायता देगा?

२. और अब मैं तुम से पूछता हूं कि कौन-सा महान आशीर्वाद उसने हमें दिया है? क्या तुम बता सकते हो?

३. सुनो, मैं तुम्हारे लिए उत्तर देता हूं; हमारे बन्धु लमनायटी अन्धकार में थे, हां, वे सब से अधिक अन्धकारमय खोह में थे, लेकिन देखो, उनमें से (३) कितनों ने परमेश्वर की विलक्षण ज्योति को देखने का अवसर प्राप्त किया। और यही वह आशीर्वाद है जो हमें प्राप्त हुआ है कि इस महान कार्य को करने के लिए परमेश्वर के हाथ में हम साधन बनाए गए।

४. देखो, (४) सहस्त्रों आनन्द मनाते हैं और उन्हें परमेश्वर के बाड़े में लाया गया है।

५. देखो, खेत में अनाज पका था, और धन्य हो तुम, क्योंकि तुमने हंसिया से परिश्रम के साथ फसल

(१४) पद्य ५-७. (१५) पद्य ८, ९. मू० १७:१८. (१६) देखो २३, अल० १७. (१७) देखो २, २ नफी ५. (१८) देखो २०, अल० २३. (१९) देखो १२, अल० २४. (२०) देखो १५, २ नफी २५. (२१) देखो ५, २ नफी ३२. अध्याय २६. (१) मू० २८:९. अल० १७:६-९. (२) ओ० १३. (३) अल० २३:८-१३. (४) अल० २३:५.

ईसा से लगभग ९० से ७७ वर्ष के मध्य

काटी, हां, तुमने सारा दिन परिश्रम किया और अपने गट्ठरों की संख्या को देखो, उन्हें खलियान में एकत्रित कर लिया जाएगा जिससे कि वे भ्रष्ट न हो जाएं।

६. हां, अन्तिम दिन में वे (५) आंधी द्वारा बर्बाद नहीं किए जाएंगे, और न तो बवण्डर द्वारा ही वे रौंदे जाएंगे; लेकिन जब आंधी आएगी तब इकट्ठे करके उनके स्थान पर उन्हें रख दिया जाएगा जहां आंधी का प्रकोप नहीं पहुंच पाएगा; और न तो तेज़ हवा द्वारा उन्हें शत्रुओं की इच्छा की (६) दिशा में ले जाया जा सकेगा।

७. लेकिन देखो, वे प्रभु के हाथों की कटी फसल हैं और वे उसी की हैं; और अन्तिम दिन वह उन्हें (७) ऊपर उठाएगा।

८. हमारे परमेश्वर का नाम धन्य है; हम उसके नाम का गुणगान करें, हां, हम उसके पवित्र नाम को धन्यवाद दें क्योंकि वह सदैव धार्मिकता का काम करता है।

९. अगर हम (८) ज़राहेमला देश से बाहर निकल कर यहां नहीं आते तब हमारे ये अति प्रिय भाई जो हमसे अत्यधिक प्रेम करते हैं, अभी तक हमसे (९) द्वेष से दग्ध रहते और हां, वे परमेश्वर से भी अनजान बने रहते।

१०. और जब आमोन ने ये शब्द कहे तब उसके भाई आरुन ने उसे झिड़कते हुए कहा: आमोन, मुझे भय है कि तुम्हारा आनन्द तुम्हें अहंकार में घसीटे लिए जा रहा है।

११. लेकिन आमोन ने उससे कहा: न मैं अपने बल पर, न ही अपने विवेक पर अहंकार कर रहा हूं लेकिन सुनो, मेरा आनन्द परिपूर्ण है, हां, मेरा हृदय आनन्द से भर उठा है, और मैं अपने परमेश्वर में आनन्द मनाऊंगा।

१२. हां, मैं जानता हूं कि मैं कुछ भी नहीं हूं; जहां तक बल का प्रश्न है, मैं तो निर्बल हूं; इसलिए मैं स्वयं पर अहंकार नहीं करूंगा, लेकिन मैं परमेश्वर पर अहंकार करूंगा क्योंकि उसी के बल पर मैं सब कुछ कर सकता हूं, हां, सुनो, हमने कई बड़े-बड़े चमत्कार किए हैं इस देश में और उनके लिए हम सदैव उसी के नाम का गुणगान करेंगे।

१३. देखो, उसने हमारे कितने सहस्त्र भाइयों को (१०) अधोलोक की पीड़ा से मुक्त किया है, और उन्हें मुक्ति के प्रेम गीत गाने के लिए लाया गया है और यह सब उसी की वाणी के द्वारा हुआ है जो कि हमारे अन्दर है; इसलिए क्या आनन्द मनाने के हमारे पास महान कारण नहीं है?

१४. हां उसकी सदा बड़ाई करने के लिए हमारे पास कारण है, क्योंकि वह सर्वोच्च परमेश्वर है और उसने हमारे बन्धुओं को (११) अधोलोक की जंजीरों से मुक्त कर दिया है।

१५. हां, वे अनन्त अन्धकार और विनाशकारी परिस्थितियों से घिरे हुए थे, लेकिन देखो, वह उन्हें अपने अनन्त प्रकाश में लाया; हां, उन्हें अनन्त मुक्ति दिलाई; और अब वे उसके अद्वितीय पारितोषिक प्रेम द्वारा घिरे हुए हैं; और हम इस महान और आश्चर्यजनक काम को करने के लिए उसके हाथों के साधन बने थे।

१६. इसलिए हम परमेश्वर का गुणगान करें; हां, हम आनन्द मनाएंगे, क्योंकि हमारा आनन्द पूर्ण है; हम परमेश्वर की सदैव बड़ाई करते रहेंगे। देखो, प्रभु का गुणगान कौन अधिक कर सकता है ? कौन उसकी शक्ति, दया और मानव वंश के लिए उसका कष्ट झेलते रहने पर अतिशय बातें बोल सकता है ? सुनो मैं तुमसे कहता हूं कि मैं जो कुछ अनुभव करता हूं उसके विषय में मैं न्यून से न्यून अंश भी नहीं कह सकता।

१७. यह कौन सोच सकता था कि हमारा परमेश्वर इतना दयावान होगा कि वह हमें भयानक, पापमय और दूषित स्थिति में से बाहर खींच लेगा ?

१८. देखो, हम अपने क्रोध में भरे हुए आगे बढ़कर (१२) उसके गिरजे को नष्ट कर देने की धमकी दे रहे थे।

१९. ओहो, तब उसने हमें दुखद ढ़ग से नष्ट होने के लिए क्यों नहीं छोड़ दिया? हां उसने

(५) इला० ५:१२. ३ नफी १४:२५, २७. (६) देखो ६, २ नफी ९. (७) देखो १६, मू० २३. (८) ओम० १३. (९) देखो १४, या० ७. (१०) देखो १६, २ नफी २८. (११) देखो १५, २ नफी २८. (१२) मू० २७:१०, ३४.

अपने न्याय की तलवार को हमारे ऊपर गिराकर हमें (१३) अनन्त आशाहीन स्थिति में छोड़ क्यों नहीं दिया ?

२०. हे मेरी आत्मा, जैसी वह स्थिति थी उसको सोचते ही तू गायब हो जाता है। देखो, उसने अपने न्याय को हमारे ऊपर सफल नहीं किया लेकिन अपनी महान दया द्वारा हमें (१४) अनन्त मृत्यु और दुर्गति की खाई से निकाल कर हमारी आत्माओं को उसने मुक्ति दी है।

२१. और अब, सुनो मेरे बन्धुओ, वह कौन सा प्राकृतिक मनुष्य है जो इन बातों को जानता है? मैं तुमसे कहता हूं कि केवल पश्चात्ताप करने वाले अनुतापी के सिवाय और कोई भी नहीं जानता।

२२. हां परमेश्वर के (१५) हृदयों को केवल उन्हें ही खोलने दिया जाता है जो पश्चात्ताप करते, विश्वास का प्रयोग करते, अच्छे कर्म (१६) करते और लगातार प्रार्थना करते हैं हां, उन्हें ही उन रहस्यों को खोलने दिया जाता है कि जो पूर्व कभी खोले नहीं गए थे, और जिस प्रकार हम अपने इन सहस्त्रों भाइयों को पश्चात्ताप की स्थिति में लाये हैं उसी प्रकार सहस्त्रों आत्माओं को पश्चात्ताप में लाने का अवसर उन्हें भी दिया जाएगा।

२३. मेरे भाइयो, क्या तुम्हें याद है कि जब हमने ज़राहेमला देश के अपने भाइयों से कहा था कि हम नफी देश में जाकर अपने लमनायटी भाइयों में प्रचार करने जा रहे हैं तब उन्होंने हंस कर हमारा तिरस्कार किया था।

२४. क्योंकि उन्होंने हम से कहा था: क्या तुम सोचते हो कि तुम लमनायटियों को सत्य (१६) के ज्ञान में ला सकोगे? क्या तुम उन्हें समझा कर सन्तुष्ट कर सकते हो कि उनके पूर्वजों की परम्पराएं अनुचित थीं क्योंकि वे उन्हीं की तरह अति हठी लोग थे जिनके दिन भीषण से भीषण पाप में गुजरे थे और जिनके ढ़ंग आरम्भ से ही अपराधमय थे? मेरे भाइयो यही उन्होंने कहा।

२५. और उन्होंने यह भी कहा था: हम उनके विरुद्ध हथियार उठाएं जिससे कि हम उन्हें और उनके पापों को देश से मिटा दें, नहीं तो वे हमें पराजित करके हमें नष्ट कर देंगे।

२६. लेकिन सुनो मेरे प्रिय भाइयो, हम जंगल में उन्हें नष्ट करने के विचार से नहीं आए लेकिन इस विचार से आए कि शायद हम उनकी कुछ आत्माओं की रक्षा कर सकें।

२७. जब हम (१७) हताश हो वापस लौटना चाहते थे तब प्रभु ने हमें सांत्वना देते हुए कहा था: अपने लमनायटी भाइयों में जाओ और अपने कष्टों को (१८) सहनशीलता के साथ झेलो और मैं तुम्हें सफलता दूंगा।

२८. और सुनो, हम लोग आए, उनमें गए; और हम अपने कष्टों को झेलने में (१९) सहनशील बने रहे और हर प्रकार के सुखों से वंचित रहे; हां, हम संसार की दया पर निर्भर हो एक घर से दूसरे घर जाते रहे—न कि केवल संसार की दया पर ही परन्तु परमेश्वर की दया पर भी हम निर्भर थे।

२९. और हमने उनको उनके घरों के अन्दर और सड़कों पर शिक्षा दी; हां, हमने उनको उनके पहाड़ों पर उनके (२०) मन्दिरों और (२१) प्रार्थना के भवनों में जाकर शिक्षा दी, और हम बाहर (२२) खदेड़े गए और हमारी हंसी उड़ाई गई, हम पर थूका गया, और हमारे गालों पर थप्पड़ मारे गए। हम पर पथराव किया गया और हमें पकड़ कर (२३) दृढ़ बन्धनों से बांधकर कारागार में डाल दिया गया; और हम परमेश्वर की शक्ति और ज्ञान के द्वारा पुन: मुक्त किए गए।

३०. और हमने सभी प्रकार के कष्ट इसलिए सहे कि जिससे हम कुछ आत्माओं को बचाने का कारण बनें; और हमने यह सोचा था कि अगर हम कुछ आत्माओं को (२४) बचा सकेंगे तब हमारा आनन्द परिपूर्ण होगा।

३१. अब सुनो, हम अपने परिश्रम के फल देख सकते हैं। क्या वे कम हैं? मैं तुमसे कहता

(१३) देखो १३, या० ६. (१४) देखो ९, १ नफी १५. (१५) देखो ५, २ नफी ३२. (१६) अल० १२:९. (१७) अल० १७:९-१२. (१८) पद्य २८. अल० १७:११. (१९) देखो १८. (२०) देखो ८, २ नफी ५. (२१) देखो २१, अल० १६. (२२) अल० २०:२९, ३०. २१:११. (२३) अल० २०:२९; ३०. (२४) पद्य २६.

हूं कि नहीं, वे (२५) बहुत हैं; और उनके भाइयों के प्रति और हमारे प्रति उनके प्रेम के कारण हम उनकी सच्चाई को भी देख सकते हैं।

३२. क्योंकि देखो, अपने शत्रुओं के प्राण लेने के बदले वे अपने ही प्राणों की (२६) बलि दे देंगे और अपने भाइयों के प्रति प्रेम के कारण अपने (२७) युद्ध के हथियारों को उन्होंने धरती में गहरे गाड़ दिया है।

३३. और सुनो, मैं तुमसे पूछता हूं कि सारे देश में इतना प्रेम पहले कभी था? देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, यहां तक कि नफायटी लोगों में भी इतना अधिक प्रेम नहीं था।

३४. क्योंकि सुनो, वे अपने को मारने नहीं देंगे इसलिए वे अपने भाइयों के विरुद्ध हथियार उठा लेंगे। लेकिन देखो, इनमें (२८) कितनों ने अपने प्राण दे दिए हैं; और हम जानते हैं कि वे अपने प्रेम और पाप के प्रति घृणा के कारण अपने परमेश्वर के पास चले गए हैं।

३५. अब क्या आनन्द मनाने के हमारे पास कारण नहीं है? हां, मैं तुमसे कहता हूं कि जगत के आरम्भ से किसी भी मनुष्य के पास आनन्द मनाने के इतने महान कारण नहीं थे जितने कि हमारे पास हैं; हां, मेरा आनन्द अपने परमेश्वर के लिए अहंकार में लीन हो जाता है। क्योंकि उसीके पास सारी शक्ति सारा विवेक और (२९) समझ है; वह सब कुछ समझता है और वह दयावान है, यहां तक कि वह उन्हें मुक्ति देता है जो पश्चात्ताप करते और उसके नाम पर विश्वास करते हैं।

३६. अब अगर यह अहंकार करना है, तब मैं अहंकार करूंगा, क्योंकि यही मेरा जीवन और ज्योति, मेरा आनन्द और मुक्ति है, और यही है मेरे लिए अनन्त दुख से छुटकारा। हां, धन्य है मेरे परमात्मा का नाम जिसने कि इन लोगों का ध्यान रखा जो कि (३०) इस्राएल के वृक्ष की एक शाखा है जो कि अपने तने से इस अनजान देश में (३१) खोए हुए थे; हां, मैं कहता हूं कि मेरे परमेश्वर का नाम धन्य है जिसने कि इस (३२) अनजान देश में भटकने वाले हम लोगों का ध्यान रखा।

३७. अब मेरे भाइयो, हम देखते हैं कि परमेश्वर हरएक लोगों का ध्यान रखता है चाहे वे जिस देश में रहते हों; हां, वह अपने लोगों की गिनती रखता है और उसकी दया का प्याला सारे जगत में होता है। यह मेरा आनन्द, और मेरी महान कृतज्ञता है; और मैं सदैव अपने परमेश्वर को धन्यवाद दूंगा। आमीन।

अध्याय २७

एण्टी-नफी-लेही के लोगों का जराहेमला में शरण लेना—उनका आमोन के लोग कहलाना—जसन का देश उनको दिया जाना।

१. ऐसा हुआ कि जो लमनायटी नफायटियों को नष्ट करने के लिए गए थे उन्हें (१) अनेकों संघर्ष के पश्चात् जब ज्ञात हुआ कि उनको नष्ट करना सम्भव नहीं है, तब वे पुनः (२) नफी के देश वापस लौटे।

२. और तब अपनी हानि के कारण अमलकायटी बहुत ही क्रोधित हो उठे। और जब उन्होंने देखा कि नफायटियों से बदला नहीं लिया जा सकता है तब वे क्रोध में भरे हुए अपने बन्धु (३) एण्टी-लेही-नफी के लोगों के विरुद्ध लोगों को भड़काने लगे; इसलिए वे उन्हें फिर से नष्ट करने लगे।

३. तब ये लोग अस्त्र लेकर आत्मरक्षा करने से अस्वीकार करके अपने शत्रुओं को इच्छानुसार प्राण देने लगे।

४. जिन लोगों से आमोन और उसके बन्धु अति प्रेम करते थे और जो उनसे अति प्रेम करते थे क्योंकि वे यह मानते थे कि उन्हें अनन्त के लिए नष्ट होने से बचाने के लिए वे स्वर्गदूत की तरह भेजे गए हैं, उन लोगों के इस विनाश को देखकर आमोन और उसके बन्धु दया से द्रवित हो राजा से बोले:

५. हम परमेश्वर के इन लोगों को एकत्रित

(२५) अल० २३:८-१३. अल० २६:४. (२६) अल० २४:२०-२४. (२७) देखो १२, अल० २४. (२८) अल० २४-२२. (२९) देखो १८, २ नफी ९. सि० शर्त० ८८:४१. (३०) देखो २, या० ५. (३१) या० ५:२५, ४०, ४३, ४५. याकू० ७:२६.
अध्याय २७. (१) अल० २५:२, ३. (२) देखो २, २ नफी ५. (३) देखो १०, अल० २३.

करें और अपने शत्रुओं के हाथों से बचकर (४) ज़राहेमला के अपने बन्धुओं नफायटियों के पास भाग चलें ताकि हम नष्ट न किए जाएं।

६. लेकिन राजा ने उनसे कहा: देखो, हमने नफायटियों की हत्यायें की हैं और उनके विरुद्ध बहुत से पाप किए हैं, इस कारण वे हमें नष्ट कर देंगे।

७. और आमोन ने कहा: मैं जाकर प्रभु से पूछूंगा, और अगर उसने कहा कि तुम अपने बन्धुओं के पास जाओ, तब हम वहीं जाएंगे।

८. तब राजा ने उससे कहा: हां, अगर प्रभु ने हमें जाने को कहा तब हम अपने बन्धुओं के पास जाएंगे और हम उनके दास बनकर तब तक रहेंगे जब तक कि हम उनकी बहुत-सी की गई हत्याओं और पापों की क्षति पूर्ति न कर दें।

९. लेकिन आमोन ने उससे कहा: (५) दास रखना हमारे भाइयों के उस नियम के विरुद्ध है जिसे मेरे पिता ने स्थापित किया था; इसलिए अपने भाइयों की दया पर निर्भर हो हम वहां चलें।

१०. लेकिन राजा ने उससे कहा: (६) प्रभु से पूछो, और उसने अगर जाने को कहा, तब हम चलेंगे, नहीं तो हम इसी देश में नष्ट हो जाएंगे।

११. और तब ऐसा हुआ कि आमोन ने प्रभु से जाकर पूछा, और प्रभु ने उससे कहा:

१२. इन लोगों को इस देश से बाहर निकाल ले जाओ जिससे कि ये नष्ट न हो। अमलकायटियों के हृदयों पर शैतान का भारी अधिकार होने के कारण वे लमनायटियों को अपने भाइयों के विरुद्ध क्रोधित करके उन्हें मार डालने को (७) भड़काते हैं; इसलिए तुम इस देश से बाहर निकल जाओ; और इस पीढ़ी में धन्य हैं ये लोग, मैं इन्हें सुरक्षित रखूंगा।

१३. और तब ऐसा हुआ कि जो कुछ प्रभु ने (८) कहा था वह सब आमोन ने जाकर राजा से बताया।

१४. और उन्होंने अपने सभी लोगों को एकत्रित किया, हां, प्रभु के सभी लोगों को और उनके सभी पशुओं और पक्षियों को एकत्रित करके उस जंगल में आए जो नफी और ज़राहेमला देशों को विभाजित करता था जहां से वे ज़राहेमला की सीमा के निकट आए।

१५. और ऐसा हुआ कि आमोन ने उनसे कहा: देखो, मैं और मेरा भाई ज़राहेमला देश में पहले जाएंगे और तुम सब हमारे वापस लौटने तक यहीं ठहरे रहो; और हम अपने बन्धुओं के हृदयों को टटोलेंगे और पता लगाएंगे कि क्या तुम्हें वहां आना चाहिए कि नहीं।

१६. जब आमोन ज़राहेमला देश में जा रहा था तब वह और उसके भाइयों की भेंट अलमा से उस स्थान पर हुई जिसकी (९) चर्चा की जा चुकी है। यह भेंट आनन्दपूर्ण रही।

१७. तब आमोन को इतना आनन्द हुआ कि वह आनन्द से परिपूर्ण हो गया, हां, वह अपने परमेश्वर के आनन्द में इतना लीन हो गया कि उसका बल जाता रहा और वह (१०) पुन: धरती पर गिर पड़ा।

१८. तब क्या यह अत्यधिक आनन्द नहीं था ? देखो, यह वह आनन्द है जिसे केवल सच्चे अनुतापी और आनन्द को खोजने वाले दीन लोगों को छोड़कर और कोई नहीं पाता।

१९. इस समय अपने भाइयों से मिलने के लिए अलमा का आनन्द सचमुच में महान था, और आरुन, ओमनार और हिमनी को भी बड़ी प्रसन्नता हुई थी परन्तु इनका आनन्द इनकी शक्ति से बाहर नहीं हुआ।

२०. और तब ऐसा हुआ कि अलमा अपने भाइयों को वापस (११) ज़राहेमला देश ले गया और तब वहां से वह उन्हें (१२) अपने घर ले गया। और जो कुछ (१३) नफी के देश में उनके लमनायटी बन्धुओं के मध्य उन पर बीता था वह सब जाकर (१४) प्रधान निर्णायक को बतलाया।

२१. तब ऐसा हुआ कि मुख्य निर्णायक ने सारे देश भर में (१५) एण्टी-नफी-लेही के लोगों को स्वीकार किए जाने के विषय में (१६)

(४) ओम० १३. (५) मू० २९:३२, ३८, ४०. (६) पद्य ११. (७) पद्य २, ३. (८) पद्य १२. (९) अल० १७:१-४. (१०) अल० १९:१४-१७. (११) ओ० १३. (१२) अल० १५:१८. (१३) अल० ४:१६-१८. (१४) देखो २, २ नफी ५. (१५) देखो ५, मू० २९. (१६) देखो २०; अल० २३.

लोगों के विचार जानने के लिए ढिंढ़ोरा पिटवाया।

२२. और ऐसा हुआ कि लोगों का विचार उनके पास आया जो इन शब्दों में था: सुनो, हम (१७) जारसन नामक प्रदेश को उनके लिए खाली कर देंगे जो कि पूरब में समुद्र के निकट है और जो (१८) सम्पन्न देश और दक्षिण की भूमि को मिलाता है; और इस सम्पन्न देश जारसन को हम अपने बन्धुओं को उत्तराधिकार के लिए दे देंगे।

२३. और सुनो, जारसन देश में अपने बन्धुओं की रक्षा करने के लिए हम अपनी सेना को नफी देश और जारसन देश के मध्य में रखेंगे; यह हम अपने बन्धुओं के लिए उनके द्वारा पाप होने के भय से आत्मरक्षा के निमित अस्त्र न धारण करने के कारण करेंगे। यह भारी भय उन्हें अनेकों हत्याओं और भयंकर दुष्टताओं के कारण दुखद पश्चात्ताप के कारण उत्पन्न हुआ है।

२४. और सुनो, हम अपने बन्धुओं के लिए यही करेंगे जिससे कि वे जारसन देश के उत्तराधिकारी हों और हम उनके शत्रुओं से उनकी रक्षा (१९) इस शर्त पर करेंगे कि वे हमें सेना के निर्वाह के लिए अपने द्रव्य के एक अंश को दें।

२५. जब आमोन ने यह सुना तब ऐसा हुआ कि वह (२०) एण्टी-लेही-नफी के लोगों के पास वन में जहां पर उन्होंने पड़ाव डाले हुए थे वहां पर अलमा के साथ वापस वन में लौट आया और उसने इन सब बातों को बताया। और अलमा ने जो (२१) बातें आमोन, आरुन और उनके भाइयों से की थीं वह भी सब बतायीं।

२६. और ऐसा हुआ कि उन लोगों को अति हर्ष हुआ। और तब उन्होंने (२२) जारसन देश में जाकर उस देश पर अधिकार स्थापित कर लिया, और नफायटियों द्वारा उन्हें आमोन के लोग कहा जाने लगा और उस समय से वे सदैव इसी नाम से पुकारे जाने लगे।

२७. वे लोग नफी के लोगों के साथ हुए और उनकी गिनती भी परमेश्वर के गिरजे के लोगों में हुई। वे परमेश्वर में लीन और मनुष्यों का उपकार करने के कारण प्रसिद्ध हुए क्योंकि वे श्रेष्ठ ईमानदार और सच्चे लोग थे; और मसीह में उनका विश्वास (२३) अन्त तक दृढ़ रहता था।

२८. और अपने बन्धुओं के रक्त बहाने को वे अति घृणा की दृष्टि से देखते थे; और उन्हें अपने बन्धुओं के विरुद्ध हथियार उठाने के लिए कभी भी बहकाया नहीं जा सकता था; और मरने के पश्चात् (२४) पुनर्जीवित होने पर आशा और विचार के कारण मृत्यु से वे भयभीत नहीं होते थे। इस कारण उनके लिए मृत्यु पर (२५) मसीह की विजय थी।

२९. इस कारण आत्मरक्षा के लिए अपने बन्धुओं पर तलवार या छुरी उठाने से पहले अपने बन्धुओं के द्वारा (२६) तीव्र पीड़ा और अति क्लेशदाई मृत्यु को वे सहते थे।

३०. इस तरह वे उत्साही, प्रिय और प्रभु के भारी कृपापात्र लोग थे।

अध्याय २८

लमनायटियों का नफायटियों से युद्ध करना—भयंकर संग्राम—लमनायटियों का हारना—महारुदन।

१. जब (१) आमोन के लोग (२) जारसन देश में भली प्रकार रहने लगे और जारसन देश में एक गिरजे की स्थापना हो चुकी और नफायटी सेना जारसन देश और (३) ज़राहेमला देश की चारों सीमाओं पर रखी जा चुकी तब लमनायटियों की सेना अपने बन्धुओं का पीछा करती हुई वन में पहुंची।

२. इस तरह उनमें भीषण युद्ध हुआ; ऐसा युद्ध लेही के (४) यरूशलेम छोड़ने के समय से लेकर सारे लोगों में कभी नहीं हुआ था; और

(१७) पद्य २३, २४, २६. अल० २८:१, ८. ३०:१, १९. ३१:३. ३५:१, २, ६, ८, १३, १४, ४३:४, १५, १८, २२, २५. (१८) देखो ३७, अल० २२. (१९) अल० ४३:१३. (२०) देखो २०, अल० २३. (२१) मू० २७:१०-१७. (२२) देखो १७ (२३) देखो १२, अल० २३. (२४) देखो ४, २ नफी ११. (२५) देखो ८, मू० १६. (२६) अल० २४:२०-२३. २७:३. अध्याय २८. (१) अल० २७:२६. (२) देखो १७, अल० २७. (३) ओम० १३. (४) १ नफी २:२, ३.

*ईसा से ७७ वर्ष पूर्व

सहस्त्रों सहस्त्र लमनायटी मारे गए और विदेशों में खदेड़े गए।

३. नफी के लोग भी बहुत अधिक मारे गए, फिर भी लमनायटी खदेड़े और तितर-बितर कर दिए गए, और नफी के लोग वापस अपनी भूमि पर लौट आए।

४. यह वह समय था जब कि सारे देश के सारे नफी के लोगों में महारुदन और विलाप सुनाई दिया।

५. विधवा अपने पति के लिए, पिता अपने पुत्र के लिए बहिन अपने भाई के लिए और भाई पिता के लिए विलाप कर रहे थे; इस प्रकार उन सब लोगों में अपने मारे गए सम्बन्धियों के लिए विलाप सुनाई दे रहा था।

६. निश्चय ही यह दुखद समय था, हां यह समय गम्भीर धार्मिकता (५) अधिक उपवास और प्रार्थना करने का समय था।

७. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का पन्द्रहवां वर्ष समाप्त हुआ।

८. यह आमोन और उसके भाइयों का, नफी के देश में उनकी यात्रा के, उस देश में उनके दुखों, उनके शोक, उनके कष्टों और उनके (६) अगम्य आनन्द और (७) जारसन देश में उनके बन्धुओं का स्वागत और सुरक्षा का विवरण है। और अब सभी लोगों को मुक्ति देने वाला प्रभु उनकी आत्मा को आशीर्वाद दे।

९. और यही विवरण है नफी के लोगों का आपसी विवाद का और नफायटी और लमनायटियों में युद्ध का, और निर्णायकों के शासन के*पंद्रहवें वर्ष समाप्त होने का।

१०. (८) प्रथम वर्ष से पंद्रहवें वर्ष तक अनेकों सहस्त्र लोगों के प्राण नष्ट हुए; हां, इस वर्ष भीषण रक्तपात हुए।

११. अनेकों सहस्त्र लोगों के तन धरती में गाड़े गए, जबकि अनेक सहस्त्र लोगों के तन ढेरों में पड़े पृथ्वी पर (९) सड़ रहे हैं; और कई सहस्त्र अपने मृत परिवार वालों के लिए रुदन कर रहे हैं क्योंकि प्रभु के वचन के अनुसार उन्हें भय करने का कारण था कि सम्भव है वे अनन्त सन्ताप में पड़ेंगे।

१२. जबकि सहस्त्रों अपने परिवार के मृत लोगों के लिए रो रहे हैं तब वहीं वे लोग अति आनन्द में इस आशा से हैं कि प्रभु के वचनों के अनुसार वे जीवित करके परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर कभी भी अन्त न होने वाले आनन्द के साथ निवास करने के लिए ले जाए गए हैं।

१३. इस प्रकार हम देख सकते हैं कि पाप और आज्ञाओं को भंग करने, लोगों के हृदयों को फंसाने की धूर्तमय योजनाओं के द्वारा शैतान की शक्ति के कारण मनुष्य में कितनी बड़ी भिन्नता होती है।

१४. और हम इस तरह देख सकते हैं कि (१०) प्रभु के अंगूर के बगीचे में मनुष्य को परिश्रम करने की कितनी बड़ी आवश्यकता है; और इसी तरह हम दुख और आनन्द मनाने के महान कारणों को भी देख सकते हैं; दुख मनुष्य की मृत्यु और नष्ट होने के कारण, और आनन्द मसीह का प्रकाश जीवन प्रदान करने के कारण होते हैं।

अध्याय २९

अलमा का सभी लोगों से पश्चात्ताप करने का अनुरोध करने की उत्कण्ठा करना— परमेश्वर की वाणी का विवेक में विभाग करना—अपने भाइयों की सफलता से अलमा का आनन्द मनाना।

१. ओह! अगर मैं स्वर्गदूत होता और अपने हृदय की इच्छा पूरी कर सकता तब मैं परमेश्वर की तुरही के समान अपने शब्दों से पृथ्वी को कम्पायमान करते हुए सब लोगों को पश्चात्ताप करने को कहता।

२. हां, मेघगर्जन के सदृष्य शब्दों में मैं हरएक मनुष्य से पश्चात्ताप और मुक्ति की योजना की घोषणा करते हुए यह कहूंगा कि उन्हें पश्चात्ताप करना और हमारे परमेश्वर के पास आना चाहिए जिससे कि इस सारे जगत के ऊपर और कष्ट न हो।

३. लेकिन सुनो, मैं एक मनुष्य हूं, और ऐसी

(५) देखो २०, मू० २७. (६) अल० २६, २७:१६-१९. (७) देखो १७, अल० २७. (८) अल० अध्याय १-२८.
(९) अल० १६:११. (१०) या० ५.
*ईसा से लगभग ७६ वर्ष पूर्व

इच्छा करके मैं पाप कर रहा हूं; क्योंकि परमेश्वर ने जो काम मेरी जिम्मेवारी पर छोड़ा है उसी से मुझे सन्तुष्ट होना चाहिए।

४. मुझे एक निष्पक्ष परमेश्वर की इच्छा में हेंगा नहीं मारना चाहिए, क्योंकि मैं जानता हूं कि वह मनुष्य को उनकी इच्छानुसार देता है चाहे वह इस जीवन में हो या मरणोपरान्त; हां, मैं जानता हूं कि वह मनुष्य को उनकी इच्छानुसार देता है चाहे वह मुक्ति हो या विनाश।

५. हां, मैं यह भी जानता हूं कि हरएक मनुष्य के सामने अच्छा और बुरा दोनों आते हैं; (१) जो अच्छे और बुरे में भिन्नता नहीं जानता वह निर्दोष है; लेकिन जो (२) भला और बुरा जानता है उसको उसी की इच्छानुसार दिया जाता है चाहे वह भला चाहता हो या बुरा, जीवन चाहता हो या मृत्यु, आनन्द चाहता हो या अन्त:करण का पछतावा।

६. अब जबकि मैं इन बातों को जानता हूं तब जिस काम को करने के लिए मैं बुलाया गया हूं उससे अधिक करने की इच्छा मैं क्यों करूं?

७. स्वर्गदूत होने और जगत के कोने-कोने के लोगों से बातें करने की (३) इच्छा मैं क्यों करूं?

८. क्योंकि देखो हरएक राष्ट्र और भाषा के लोगों को अपनी वाणी की शिक्षा और अपने ज्ञान के द्वारा जो कुछ परमेश्वर देखता है कि उन्हें (४) मिलने योग्य है, उन सब को देने के लिए उनके ही राष्ट्र अथवा भाषा के लोगों के द्वारा देता है, इसलिए हम देखते हैं कि परमेश्वर विवेकमय उपदेश देता है जो कि उचित और सत्य होता है।

९. जो प्रभु ने मुझे आज्ञा दी है वह मैं जानता हूं और मैं उसी में अपना यश मनाता हूं। मैं (५) अपने पर गर्व नहीं करता परन्तु मैं उस आज्ञा पर गर्व करता हूं जिसे प्रभु ने मुझे दिया है। और मेरा गर्व यही है कि कुछ आत्माओं को पश्चात्ताप में लाने के लिए परमेश्वर के हाथ का मैं सम्भवत: एक साधन बन सकूं; और यही मेरा आनन्द है।

१०. और सुनो, जब मैं अपने बहुत से बन्धुओं को पश्चात्ताप करते और अपने प्रभु परमेश्वर के पास आते देखता हूं तब मेरी आत्मा आनन्द से भर उठती है और मैं याद करता हूं कि प्रभु ने (६) मेरे लिए क्या किया है, हां, उसने मेरी प्रार्थनाओं को सुना और तब मैं उसके दयामय उस हाथ का भी स्मरण करता हूं जिसे उसने मेरी ओर फैलाया है।

११. हां, मुझे अपने पूर्वजों का बन्दी होना भी याद है, क्योंकि निश्चय ही मैं यह जानता हूं कि प्रभु ने उन्हें दासता से मुक्त किया था और इसी के द्वारा उसने अपने गिरजे की स्थापना की थी, हां, प्रभु परमेश्वर, इब्राहीम के परमेश्वर, इसाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर ने उन्हें मुक्त किया था।

१२. हां, अपने पूर्वजों की दासता मुझे सदैव याद रही है; और जिस परमेश्वर ने उन्हें मिश्रियों के हाथों से मुक्त किया, उसी परमेश्वर ने उनको (७) दासता से भी मुक्त किया था।

१३. और उसी परमेश्वर ने उनमें अपने गिरजे की स्थापना की; और उसी परमेश्वर ने मुझको अपनी (८) पवित्र पुकार से इन लोगों में प्रचार करने के लिए पुकारा और इस काम में मुझे भारी सफलता दी जिससे मेरा आनन्द पूर्ण है।

१४. मैं अपनी ही सफलता पर आनन्द नहीं मना रहा हूं, परन्तु अपने उन (९) भाइयों की सफलता पर मेरा आनन्द और भी पूर्ण हुआ जो कि (१०) नफी के देश में गए थे।

१५. सुनो, उन्होंने बहुत अधिक परिश्रम किया और बहुत फल पैदा किए हैं और कितना बड़ा प्रतिफल उन्हें मिलेगा।

१६. जब मैं अपने इन भाइयों की सफलता पर ध्यान देता हूं तब आनन्द के मारे मेरी आत्मा मानो शरीर से बाहर हो जाती है, इतना महान है मेरा आनन्द!

१७. और अब, परमेश्वर मेरे इन भाइयों को

(१) देखो १०, मू० ३. (२) देखो १२, २ नफी २. (३) पद्य १. (४) अल० १२:९-११. (५) अल० २६:१२. (६) मू० २७:११-३१. (७) मू० २४:१६-२२. (८) अल० ५:३. (९) अल० १७:१-८. (१०) देखो २, २ नफी ५.

ईसा से लगभग ७६ वर्ष पूर्व

अपने राज्य में बैठने की आज्ञा दे और जो लोग इनके परिश्रम के फल हैं वे फिर से बाहर न जाएं लेकिन सदा के लिए उनका यशगान किया करें। परमेश्वर स्वीकृति दे कि मैने जैसा कहा है वैसा ही हो। आमीन।

अध्याय ३०

मसीह के विरुद्ध कोरिहर, उसका जारसन से निकाला जाना और गिडियन में उसका बन्दी बनना—जराहेमला में दोष लगाया जाना—उसका चिन्ह मांगना और गूंगा हो जाना—उसकी घृणास्पद मृत्यु।

१. सुनो, ऐसा हुआ कि जब (१) आमोन के लोग (२) जारसन देश में भली प्रकार स्थापित हो गए और लमनायटी देश से (३) बाहर खदेड़ दिए गए और उनके मृतकों को उस देश के लोगों द्वारा दफना दिया गया—

२. उनके मृतकों की (४) संख्या अधिक होने के कारण उनकी गिनती नहीं हुई और न तो नफायटियों के मृतकों की गिनती ही हुई लेकिन वे अपने मृतकों को दफनाने, (५) उपवास और शोक मनाने और प्रार्थना करने के दिनों के पश्चात् (नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के सोलहवें वर्ष में) सारे देश में शान्ति बनी रही।

३. और हां, लोग प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते थे और परमेश्वर की उस व्यवस्थाओं के अनुसार कड़ाई के साथ चलते थे जो कि मूसा के (६) नियमानुसार थे; क्योंकि उन्हें मूसा के नियमों का पालन तब तक करते रहने की शिक्षा दी गई थी जब तक कि वे पूरे न हो जाते।

४. इस तरह नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के पूरे सोलहवें वर्ष में किसी प्रकार की अशान्ति न हुई।

५. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के सत्रहवें वर्ष में भी लगातार शान्ति बनी रही।

६. लेकिन सत्रहवें वर्ष के *अन्त समय जराहेमला देश में एक व्यक्ति आया जो कि मसीह का विरोधी था, क्योंकि मसीह के विषय में भविष्यवक्ताओं ने जो बातें कही थीं उनके विरुद्ध वह लोगों में प्रचार करने लगा।

७. इस समय एक व्यक्ति के विश्वास के विपरीत कोई (७) नियम नहीं बना था, क्योंकि यह परमेश्वर की कड़ाई से दी गई आज्ञा के विपरीत था कि कोई ऐसा नियम बनाया जाए जिसके द्वारा सबको एक समान किया जा सके।

८. क्योंकि शास्त्र इस तरह कहता है (८) आज चुन लो कि तुम किसकी सेवा करोगे।

९. अगर कोई आदमी परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा करता है तब यह उसका सौभाग्य है अर्थात् अगर वह परमेश्वर पर विश्वास करता है तब उसकी सेवा करना उसका विशेषाधिकार है; लेकिन अगर वह उस पर विश्वास नहीं करता है तब उसको दण्ड देने के लिए कोई नियम नहीं है।

१०. लेकिन अगर वह हत्या करता है तब उसको मृत्युदण्ड दिया जाता है; अगर उसने चोरी की तब भी उसको दण्ड मिलेगा; व्यभिचार के लिए भी दण्ड दिया जाता है; हां, इन सब अपराधों के लिए दण्ड दिया जाता है।

११. क्योंकि एक नियम था जिसके द्वारा लोगों का न्याय उनके अपराधों के अनुसार किया जाता था; फिर भी लोगों के अपने (९) विचारों को विरुद्ध कोई नियम नहीं था; इसलिए लोगों को उनके अपराधों के लिए ही दण्ड दिया जाता था; इसलिए सब लोग (१०) एक समान थे।

१२. और यह मसीह का विरोधी जिसका नाम कोरिहर था, वह नियम की पकड़ से बाहर था; लोगों में प्रचार करने लगा कि मसीह नहीं होगा वह प्रचार करता हुआ कहने लगा:

१३. हे लोगो तुम जो कि व्यर्थ और बुद्धिहीन आशा में बंधे हुए हो, तुम इन अविवेकपूर्ण बातों का बोझा अपने ऊपर क्यों लादे हुए हो? तुम मसीह की प्रतीक्षा में क्यों हो? कोई भी मनुष्य भविष्य में होने वाली बातों को नहीं जानता।

१४. सुनो, ये बातें जिन्हें तुम भविष्यवाणी

(१) अल० २७:२६. (२) देखो १७, अल० २७. (३) अल० २८:२, ३. (४) देखो ३. (५) देखो २०, मू० २७. (६) देखो १५, २ नफी २५. (७) पद्य ९, ११. अल० १:१७. (८) यहोशू २४:१५. (९) पद्य ७, ९. (१०) पद्य ७. मू० २७:३. २९:३२.

*ईसा से ७४ वर्ष पूर्व

कहते हो और कहते हो कि उन्हें पवित्र भविष्य-वक्ताओं ने दी है, वे तुम्हारे पूर्वजों की मूर्खता-पूर्ण परम्परागत बातें हैं।

१५. तुम कैसे जानते हो कि वे सत्य हैं? सुनो, जिन बातों को तुम देखते नहीं उनके विषय में तुम कुछ जान नहीं सकते; इस कारण तुम नहीं जानते कि कोई मसीह होगा।

१६. तुम भविष्य की ओर देखते हो और कहते हो कि हमने अपने पापों को क्षमा होते देखा है। लेकिन देखो, यह सब उन्मादी बुद्धि की बातें हैं; और तुम्हारी बुद्धि की यह अव्यवस्था तुम्हारे पूर्वजों की परम्परा के कारण है जो तुम्हें उन बातों पर विश्वास करने को बाध्य करती हैं जो कि है ही नहीं।

१७. उसने और भी बहुत-सी बातें उनसे कहीं और यह भी बताया कि मनुष्य के पापों के लिए कोई प्रायश्चित नहीं है, और इस जीवन में जो जैसा चाहता है वैसा ही करता है; इस कारण हर एक मनुष्य अपनी बुद्धि के अनुसार उन्नति करता और अपने बल के अनुसार विजय प्राप्त करता है; और जो कुछ वह करता है वह अपराध नहीं होता।

१८. इस प्रकार उसने लोगों में प्रचार किया और बहुतों को बहकाया जो अपने पापकर्म में सिर ऊंचा किए रहे; उसने बहुत-सी स्त्रियों और पुरुषों को व्यभिचार में लिप्त करवाया—और उनसे कहा कि एक मनुष्य की मृत्यु के साथ ही सब कुछ अन्त हो जाता है।

१९. यही व्यक्ति (११) जारसन देश में (१२) आमोन के उन लोगों में प्रचार करने के लिए गया जो कि एक समय में लमनायटी थे।

२०. लेकिन सुनो, वे बहुत से नफायटियों से भी अधिक बुद्धिमान थे; क्योंकि वे उसे पकड़ कर बांध कर आमोन के सामने ले गए जो कि लोगों का (१३) प्रधान पुरोहित था।

२१. तब ऐसा हुआ कि उसने उसे देश से बाहर उठवा कर भिजवा दिया। तब वह (१४) गिडियन देश गया और वहां भी उसने प्रचार करना आरम्भ किया परन्तु वहां उसे कोई सफलता नहीं मिली क्योंकि लोग उसे बांध कर (१५) प्रधान पुरोहित और देश के मुख्य निर्णायक के पास ले गए।

२२. ऐसा हुआ कि प्रधान पुरोहित ने उससे कहा: तुम प्रभु के पथ को क्यों दूषित करते हो? तुम इनके आनन्द में बाधा डालने के लिए क्यों कहते हो कि मसीह नहीं आएगा? तुम पवित्र भविष्यवक्ताओं की सब भविष्यवाणियों के विरुद्ध बातें क्यों करते हो?

२३. उस मुख्य पुरोहित का नाम गिडोना था। और कोरिहर ने उससे कहा: क्योंकि मैं तुम्हारे पूर्वजों की मूर्खतापूर्ण परम्पराओं की शिक्षा नहीं देता और उन पर अन्यायपूर्ण ढंग से शक्ति और अधिकार जमाने के लिए, ताकि वे अपने सिर ऊपर न कर सकें बल्कि तुम्हारे कहे अनुसार चलें, मैं इन लोगों की मूर्खतापूर्ण व्यवस्थाओं और प्राचीन पुरोहितों के के द्वारा स्थापित संस्कारादि से अपने आप को बांधना भी नहीं सिखाता।

२४. तुम कहते हो कि ये स्वतन्त्र लोग हैं। सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि ये दासता में हैं। तुम कहते हो कि प्राचीन भविष्यवाणियां सत्य हैं। सुनो, मैं कहता हूं कि तुम यह नहीं जानते कि वे सत्य हैं या नहीं।

२५. तुम कहते हो कि माता-पिता के नियम उल्लंघन के कारण ये लोग अपराधी और पतित हैं। किन्तु सुनो, मैं कहता हूं कि माता-पिता के कारण एक बच्चा अपराधी नहीं ठहरता।

२६. तुम यह कहते हो कि मसीह आएगा। परन्तु सुनो, तुम यह नहीं जानते कि एक मसीह होगा। तुम यह भी कहते हो कि वह जगत के पापों के कारण मारा जाएगा—

२७. और इस प्रकार इन लोगों को तुम अपने पूर्वजों की मूर्खतापूर्ण परम्पराओं और अपनी इच्छाओं के पीछे बहका रहे हो; और तुम इस प्रकार इन्हें दबाए रहते हो मानो वे तुम्हारे दास हों जिससे कि उनके परिश्रम पर तुम ठूंस-ठूंस कर खाओ और वे ऊपर देखने का साहस न करें और अपने अधिकारों का आनन्द न ले सकें।

२८. हां, वे अपने उन पुरोहितों को अप्रसन्न करने

(११) देखो १७, अल० २७. (१२) अल० २७:२६. (१३) देखो ७, मू० २६. (१४) देखो १३, अल० २. (१५) देखो ७, मू० २६.

के भय से अपने उन अधिकारों का लाभ नहीं उठा सकते जो उनके हैं। वे उन्हें जुए में अपनी इच्छानुसार जोतते हैं और उन्हें अपनी परम्पराओं और स्वप्नों, चित्त की तरंगों, दर्शनों और रहस्यों की बहाने बाजियां द्वारा उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि अगर उन्होंने उनके कहे अनुसार नहीं किया तब वे उस अनजाने को अप्रसन्न करेंगे जिसे वे परमेश्वर कहते हैं जो कि कभी देखा या जाना नहीं गया और न कभी अतीत में था और न कभी भविष्य में होगा।

२९. जब मुख्य पुरोहित और प्रधान निर्णायक ने उसके हृदय की कठोरता को देखा और यह जाना कि वह परमेश्वर की भी निन्दा करता है तब उन्होंने उसे कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु उसे बंधवा दिया और (१६) सिपाहियों को देकर ज़राहेमला देश भिजवा दिया, जिससे कि उसे अलमा और प्रधान निर्णायक जो कि सारे देश का शासक था, के सामने ले जाया जाए।

३०. और तब ऐसा हुआ कि जब उसे अलमा और प्रधान निर्णायक के सामने लाया गया (१७) तब उसने जैसा गिडियन में व्यवहार किया था वैसी ही उसने ईश्वर की निन्दा की।

३१. उसने अलमा के सामने अहंकारमय शब्दों से तर्क करते हुए (१८) पुरोहितों और शिक्षकों की निन्दा करते हुए उन पर दोषारोपण किया कि वे अपने पूर्वजों की मूर्खतापूर्ण परम्पराओं के पीछे लोगों को उनकी कमाई को खाने के लिए ले जाते हैं।

३२. तब अलमा ने उससे कहा: तुम जानते हो कि हम उन लोगों के परिश्रम की कमाई से अपना पेट नहीं भरते हैं; क्योंकि मैंने निर्णायकों के शासन के आरम्भ से ही अपने हाथों से (१९) परिश्रम किया है और साथ ही देश में चारों ओर अपने लोगों में परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने के लिए मैंने कई यात्रायें भी की हैं।

३३. और गिरजा में परिश्रम करने से मैंने कभी इनकार नहीं किया और मैंने जो परिश्रम किया उसके लिए केवल (२०) न्याय आसन को छोड़ कर न तो मैंने कभी एक (२१) सेनिन भी स्वीकार किया है और न ही मेरे भाइयों ने ही स्वीकार किया है। न्याय आसन पर हमने जो लिया वह अपने समय के नियम के अनुसार लिया है।

३४. और अगर हम गिरजा में परिश्रम करने के के लिए कुछ नहीं लेते हैं तब सत्य की घोषणा करने से अपने भाइयों के आनन्द में हमें आनन्द मिलने के अलावे क्या लाभ हो सकता है?

३५. जब तुम स्वयं यह जानते हो कि हमें कोई लाभ नहीं होता तब तुम क्यों कहते हो कि हम इन लोगों में अपने (२२) स्वार्थ के लिए प्रचार करते हैं? और तुम यह विश्वास करते हो कि हम इन लोगों को धोखा देते हैं जिससे उनके हृदयों में इतना आनन्द होता है?

३६. और कोरिहर ने उसे उत्तर दिया, हां।

३७. तब अलमा ने उसे उत्तर दिया: क्या तुम विश्वास करते हो कि एक परमेश्वर है?

३८. और उसने उत्तर दिया (२३) नहीं।

३९. तब अलमा ने उससे कहा: क्या तुम पुन: अस्वीकार करोगे कि एक परमेश्वर है और मसीह को भी अस्वीकार करोगे? क्योंकि सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर है और मसीह भी आएगा।

४०. और अब तुम यह बतलाओ कि परमेश्वर के न होने या मसीह के न आने की साक्षी तुम्हारे पास क्या है? मैं तुम से कहता हूं कि (२४) तुम्हारे अपने शब्दों के अलावे तुम्हारे पास कोई प्रमाण नहीं है।

४१. लेकिन सुनो, इन बातों के सत्य होने के सभी प्रमाण मेरे पास हैं; और तुम्हारे पास भी इनके सत्य होने के सभी प्रमाण हैं; क्या फिर भी तुम उन्हें अस्वीकार करोगे? क्या तुम विश्वास करते हो कि ये सब सत्य हैं?

४२. देखो, मैं जानता हूं कि तुम विश्वास करते हो, परन्तु तुम एक असत्यवादी भावना द्वारा ग्रसित हो और तुमने परमेश्वर की आत्मा को अपने अन्दर से निकाल बाहर कर दिया है जिससे कि उसके लिए तुम्हारे अन्दर कोई स्थान नहीं है बल्कि शैतान तुम्हारे ऊपर अधिकार किए हुए है और वह तुम्हें अपनी इच्छानुसार घुमाते हुए

(१६) ओम० १३. (१७) पद्य २३-२८. (१८) देखो ३, मू० ६. (१९) मू० १८:२४. २७:५. (२०) देखो ३, अल० ११. (२१) अल० ११:१. ३, २०. (२२) पद्य २७. (२३) पद्य २८, २९, ४८. (२४) पद्य २८.

परमेश्वर के बच्चों को नष्ट करने के उपाय रचता रहता है।

४३. तब कोरिहर ने अलमा से कहा: अगर तुमने कोई (२५) चिन्ह दिखाया तब मैं विश्वास करूंगा कि परमेश्वर है। हां, मुझे दिखाओ कि उसके पास शक्ति है, तब मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास करूंगा।

४४. लेकिन अलमा ने उससे कहा: तुमने पर्याप्त चिन्ह पाए हैं; क्या तुम अपने परमेश्वर को लालच देना चाहते हो? जबकि तुम्हारे पास अपने इन सब भाइयों और पवित्र भविष्यवक्ताओं की साक्षियां हैं तब भी क्या तुम यह कहोगे कि मुझे एक चिन्ह दिखाओ? (२६) शास्त्र तुम्हारे सामने रखा हुआ है और सभी परमेश्वर के होने की सूचना देते हैं; यहां तक कि पृथ्वी और उस पर की सारी वस्तुएं (२७) उसकी गति और सभी दूसरे ग्रह जो नियमित रूप से गतिमय हैं, वे सब यह साक्षी देते हैं कि कोई महान रचयिता है।

४५. फिर भी तुम इन लोगों के हृदयों को को बहकाते हुए घूमते हो कि परमेश्वर नहीं है? क्या फिर भी तुम इन सब साक्षियों को अस्वीकार करोगे? तब उसने कहा: हां, अगर तुम कोई (२८) चिन्ह नहीं देते तब मैं सब अस्वीकार करूंगा।

४६. तब ऐसा हुआ कि अलमा ने उससे कहा: देखो तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण मुझे दुख हुआ और तुम अब भी सत्य की आत्मा को इन्कार करते हो जिससे कि तुम्हारी आत्मा नष्ट हो सकती है।

४७. लेकिन सुनो, यह अच्छा है कि तुम्हारी असत्य और चापलूसी बातों से बहुत से लोगों को नष्ट करने की अपेक्षा तुम्हारी स्वयं की आत्मा नष्ट हो: इसलिए अगर तुम अब भी इन्कार करोगे तब परमेश्वर तुम्हारे ऊपर आघात करेगा और तुम (२९) मूक हो जाओगे जिससे तुम फिर कभी अपना मुंह खोल नहीं सकोगे और इन लोगों को बहका नहीं पाओगे।

४८. तब कोरिहर ने उससे कहा: मैं परमेश्वर की आस्था को अस्वीकार नहीं करता लेकिन मैं यह विश्वास नहीं करता कि एक परमेश्वर है; और मैं यह भी कहता हूं कि तुम भी नहीं जानते कि एक परमेश्वर है; और अगर तुमने कोई (३०) संकेत नहीं दिया तब मैं विश्वास नहीं करूंगा।

४९. तब अलमा ने उससे कहा: मैं यही संकेत देता हूं कि तुम मेरे कहे अनुसार गूंगे बन जाओगे; और मैं परमेश्वर के नाम पर कहता हूं कि तुम मूक हो जाओगे जिससे तुम (३१) कुछ और बोल नहीं सकोगे।

५०. जब अलमा ने ये शब्द कहे तब उसके कहे अनुसार कोरिहर मूक बन गया जिससे कि वह और कुछ कह न सके।

५१. जब मुख्य निर्णायक ने यह देखा तब उसने हाथ बढ़ा कर कोरिहर से लिख कर पूछा: क्या परमेश्वर की शक्ति पर तुम्हें विश्वास हुआ? जिसके होने के विषय में तुमने अलमा से संकेत मांगा था? क्या और एक संकेत देखने का कष्ट तुम पाना चाहते हो? देखो, उसने तुम्हें एक संकेत दिखाया; क्या अब भी तुम विवाद करोगे?

५२. और कोरिहर ने आगे हाथ बढ़ा कर लिखा: मैं जानता हूं कि मैं मूक बन गया हूं क्योंकि मैं बोल नहीं सकता; और मैं यह जानता हूं कि परमेश्वर की शक्ति के अलावे और कुछ मुझ पर यह नहीं कर सकता था और मैं यह भी जानता था कि एक (३२) परमेश्वर है।

५३. लेकिन सुनो, शैतान ने मुझे धोखा दिया, क्योंकि वह (३३) एक स्वर्गदूत के रूप में मेरे पास प्रकट हुआ और मुझ से उसने कहा: जाओ और इन लोगों पर पुन: अधिकार करो, क्योंकि वे सब एक अनजान परमेश्वर के पीछे भटक गए हैं। उसने मुझसे कहा: कोई परमेश्वर नहीं है, और उसने मुझे जो कुछ कहना था सिखाया। और उसी के शब्दों की शिक्षा दी क्योंकि यह जिन्हें सांसारिक विषयवासना प्रिय थी उन लोगों के लिए रुचिकर था। मैंने इन बातों की शिक्षा तब तक दी जब तक मुझे अधिक सफलता न मिल गई और मैं भी सचमुच

(२५) पद्य ४५, ४८, ४९, ५०. (२६) देखो १, ? नफी ३ अल० ६३:१२. (२७) इला० १२:११, १५. (२८) देखो २५.
(२९) पद्य ४९, ५०, ५२. (३०) देखो २५. (३१) पद्य ४७:५०. (३२) पद्य ४१:४२. (३३) २ नफी ९:९.

ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

में विश्वास करने लगा कि वह सब सत्य था। इसी कारण मैंने सत्य का विरोध तब तक किया जब तक कि यह यह महान श्राप मेरे ऊपर आ न गया।

५४. जब उसने यह सब कह लिया तब अलमा से याचना की कि वह परमेश्वर से प्रार्थना करे जिससे कि वह (३४) श्राप हटा लिया जाए।

५५. लेकिन अलमा ने उससे कहा: अगर यह श्राप तुम पर से हटा लिया गया तब तुम फिर इन लोगों को बहकाओगे, इसलिए यह प्रभु की इच्छानुसार तुम्हारे साथ रहेगा।

५६. और ऐसा हुआ कि कोरिहर के ऊपर से श्राप नहीं हटाया गया; लेकिन उसे बाहर निकाल दिया गया और वह एक घर से दूसरे घर (३५) भोजन की भीख मांगते हुए घूमने लगा।

५७. तब जो कुछ कोरिहर पर बीता था उसका ज्ञान अविलम्ब सारे देश भर में कराया गया; हां, इसका ढिढोंरा प्रधान निर्णायक द्वारा देश के सारे लोगों में करवाते हुए उन लोगों के लिए घोषणा करवायी गई जिन्होंने कोरिहर के शब्दों पर विश्वास किया था ताकि वे शीघ्रतापूर्वक पश्चात्ताप करें नहीं तो उन पर भी वही न्याय दण्ड पड़ सकता था।

५८. और ऐसा हुआ कि कोरिहर की दुष्टता का उन्हें विश्वास हो गया; इसलिए वे फिर से मत परिवर्तन कर प्रभु के विश्वासी हो गए। इससे कोरिहर की दुष्टता का अन्त हो गया। और कोरिहर पेट पालने के लिए घर-घर भीख मांगता रहा।

५९. और ऐसा हुआ कि जब वह उन लोगों में गया जो नफायटियों से अपने आपको अलग कर के (३६) जोरमायटी कहलाते थे क्योंकि उनका नेतृत्व जोरम नाम का एक व्यक्ति कर रहा था—तब वह लोगों के पैरों तले तब तक कुचला जाता रहा जब तक कि वह मर न गया।

६०. इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रभु के पथ को दूषित करने वाले का अन्त इस तरह हुआ और हम यह भी देखते हैं कि अन्तिम दिन शैतान अपने बच्चों को सहारा न देकर शीघ्र गति से (३७) अधोलोक में घसीट ले जाता है।

अध्याय ३१

स्वधर्म त्यागी जोरमायटियों को पुनः धर्म में लाने के लिए अलमा का नेतृत्व करना—पवित्र वेदी—आराधना करने का जोरमायटी ढंग।

१. ऐसा हुआ कि जब कोरिहर का अन्त हो गया तब अलमा को सन्देश मिला कि (१) जोरमायटी प्रभु के पथ को दूषित कर रहें हैं और जोरम जो कि उनका नेता है वह लोगों को मूक मूर्ति की पूजा करने के लिए बहका रहा है। लोगों के इस बुरे कर्मों के कारण अलमा का हृदय दुखी होने लगा।

२. अपने लोगों में यह पाप कर्म उसके लिए दुख का महान कारण था; और जोरमायटियों के नफायटियों से अलग होने के कारण उसका हृदय अति दुखी था।

३. इस समय जोरमायटी (२) आदिनाम नामक देश में एकत्रित थे जो कि (३) जराहेमला देश से पूरब की ओर और (४) जारसन देश से दक्षिण की ओर सागर तट तक और दक्षिण के उस वन तक फैला हुआ था जो कि लमनायटियों से भरा हुआ था।

४. इस समय नफायटियों को बहुत भारी भय था कि अगर कहीं (५) जोरमायटी लमनायटियों के साथ मिल गए तब इससे नफायटियों को बहुत बड़ी हानि होगी।

५. लोगों से उचित कार्य करवाने के लिए वाणी का प्रचार भारी असरकारक होता है—हां, यह लोगों के विवेक पर तलवार या उस अन्य किसी भी बात से अधिक शक्तिमय तथा प्रभावपूर्ण होता है जो उनके साथ घटा हो—इसलिए अलमा ने सोचा कि शीघ्रतापूर्ण परमेश्वर की वाणी के उपयोग द्वारा प्रयत्न करना चाहिए।

६. इसलिए उसने हिमनी को (६) जराहेमला के गिरजे में छोड़ कर आमोन, आरुन ओमनर और

(३४) पद्य ५६. (३५) पद्य ५८. (३६) अल० ३१:१-४, ७-१२. ३५:२, ३, ७-११, १३, १४. ३८:३. ३९:२, ११. ४३:४-६, १३, २०, ४४. ५२:२०, ३३. (३७) देखो ११, १ नफी १५. अध्याय ३१. (१) देखो ३६, अल० ३०. (२) अल० ४३:५, १५, २२. (३) ओम० १३. (४) देखो १७, अल० २७. (५) देखो ३६, अल० ३०. (६) ओम० १३. ईसा सेलगभग ७४ वर्षपूर्व

अमूलक और जीजरोम जो (७) मेलक में थे, साथ लेकर अपने दो पुत्रों को भी साथ में लिया।

७. उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र को साथ नहीं लिया जिसका नाम था इलामन। उसने अपने जिन दो पुत्रों को साथ में लिया उनका नाम था (८) शिबलन और (९) कोरियन्दन। ये दोनों नाम उनके हैं जो उसके साथ (१०) जोरमायटियों में परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने के लिए गए थे।

८. इस समय यद्यपि जोरमायटी नफायटियों से भिन्न मतानुयायी थे परन्तु उनमें परमेश्वर की वाणी का प्रचार पहले हुआ था।

९. लेकिन (११) मूसा के नियमानुसार परमेश्वर की आज्ञाओं और उसकी व्यवस्थाओं का पालन न करके वे भारी भूल में पड़े हुए थे।

१०. और लालच में न पड़ने के लिए प्रतिदिन परमेश्वर से (१२) सविनय प्रार्थना करने गिरजे के कार्यक्रम में भी भाग नहीं लेते थे।

११. हां बारीकी से देखने पर वे कई तरह से प्रभु की राह को दूषित कर रहे थे; इस कारण अलमा और उसके भाई उनके देश में परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने के लिए गए।

१२. जब उन्होंने उस देश में प्रवेश किया तब उन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि जोरमायटी (१३) प्रार्थना भवन बना कर सप्ताह में एक दिन जिसे वे प्रभु का दिन कहते थे, एकत्रित होते थे; और इस ढंग से आराधना करते थे जैसा कि अलमा ने पहले कभी भी नहीं देखा था।

१३. क्योंकि उन्होंने अपने प्रार्थना भवनों के मध्य में सिर से भी ऊंचा (१४) खड़ा होने के स्थान बनाए थे जिसके ऊपर केवल एक व्यक्ति के खड़े होने का स्थान था।

१४. इसलिए जिसे आराधना करना होता वह आगे बढ़ कर उसके ऊपर खड़ा होता और आसमान की ओर हाथ फैला कर ऊंची आवाज में पुकार कर कहता:

१५. हे पवित्र, परमेश्वर, हम विश्वास करते कि तुम परमेश्वर हो, और हम विश्वास करते हैं कि तुम पवित्र हो, और तुम आत्मा थे, आत्मा हो, और तुम सदैव के लिए आत्मा ही रहोगे।

१६. पवित्र परमेश्वर, हम विश्वास करते हैं कि तुमने हमें अपने बन्धुओं से अलग कर दिया है; और हम अपने बन्धुओं की उस परम्परा में विश्वास नहीं करते जिसे उनके पूर्वजों के भोलेपन द्वारा उन्हें प्राप्त हुई है; परन्तु हम यह विश्वास करते हैं कि तुमने हमें अपने पवित्र बच्चों के रूप में चुना है; और तुमने हमें यह भी ज्ञान कराया है कि कोई मसीह नहीं होगा।

१७. आप भूत में, वर्तमान में, और सदैव एक समान थे, एक समान हैं और एक समान रहेंगे; और आपने हमें बचा लेने के लिए चुना जब कि हमारे चारों ओर क्रोध द्वारा अधोलोक में फेंक दिए जाने के लिए चुने गए हैं जिसके लिए, हे पवित्र परमेश्वर हम तुम्हें धन्यवाद देते हैं; और हम आपको इसलिए भी धन्यवाद देते हैं कि आपने हमें इसलिए चुना कि जिससे हम अपने बन्धुओं की उस मूर्खतापूर्ण परम्पराओं द्वारा बहकाए न जाएं जिसने उन्हें मसीह पर विश्वास करने से बांध रखा है जो उनके हृदयों को, हमारे परमेश्वर से दूर रखे हुए हैं।

१८. और हे पवित्र परमेश्वर, हम आप के चुने हुए और पवित्र लोग होने के कारण हम आपको पुन: धन्यवाद देते हैं। आमीन।

१९. तब ऐसा हुआ कि जब अलमा, उसके भाइयों और पुत्रों ने इन प्रार्थनाओं को सुना तब उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

२०. क्योंकि हर एक आगे बढ़ कर वही प्रार्थना करता।

२१. प्रार्थना की इस वेदी को वे राम्यूम्ज कहते थे जिसका अर्थ होता है पवित्र चबूतरा।

२२. इस चबूतरे पर से हर एक व्यक्ति अपनी ओर से परमेश्वर को यही प्रार्थना अर्पित करते हुए उसके (१५) चुने हुए लोग होने के और अपने बन्धुओं की (१६) परम्पराओं के पीछे न ले जाने के और उन भविष्य में होने वाली बातों पर

(७) देखो ३, अल० ८. (८) अल० ३८. (९) अल० ३९-४२. (१०) देखो ३६, अल० ३०. (११) देखो १५, २ नफी २५. (१२) देखो ५, २ नफी ३. (१३) देखो २१, अल० १६. (१४) पद्य २१, २३. (१५) पद्य १६, १७. (१६) पद्य १६.

उनके मन को न लगाने के लिए धन्यवाद देता जिनके विषय में वे कुछ भी जानते न थे।

२३. इस प्रकार लोग धन्यवाद अर्पित करके अपने घरों को वापस लौट गए और तब तक अपने परमेश्वर की कोई चर्चा न की जब तक कि वे पुन: उस (१७) पवित्र चबूतरे पर अपने ढंग से कृतज्ञता प्रकट करने के लिए न आए।

२४. जब अलमा ने यह सब देखा तब उसका हृदय बड़ा दुखी हुआ; क्योंकि उसने देखा कि वे दुष्ट और विपरीत विचार वाले लोग थे, हां, उसने यह भी देखा कि उनके हृदय में सोने चांदी और हर प्रकार के कीमती वस्तुओं की चाह थी।

२५. और उसने यह भी देखा कि वे अहंकार में भरे हुए बहुत शेखी बघारा करते हैं।

२६. और उसने स्वर्ग की ओर अपनी आवाज कर पुकार कर कहा: हे प्रभु अपने सेवकों को मानव शरीर में यहां नीचे कितने दिनों तक इस तरह के लोगों में पाप कर्मों को देखने के लिए रखोगे?

२७. हे परमेश्वर, वे आपको पुकारते हैं फिर भी उनके हृदय उनके अहंकार में डूबे हुए हैं। सुनो, हे प्रभु, वे अपने मुख से तो तुम्हें पुकारते हैं परन्तु वे व्यर्थ की सांसारिक वस्तुओं में फूले हुए हैं।

२८. हे परमेश्वर, उनके मूल्यवान कपड़े, उनके छल्लों, उनकी चूड़ियां, उनके सोने के अन्य आभूषणों और उनकी अन्य मूल्यवान वस्तुओं को देखो जिनसे वे सजे हुए हैं; और उनके हृदयों को देखो जो इन वस्तुओं पर लगे हुए हैं, और फिर भी वे तुम्हें पुकार कर कहते हैं—हे परमेश्वर जब कि दूसरे नष्ट होंगे, हम (१८) तुम्हारे चुने हुए लोग होने के कारण आपको धन्यवाद देते हैं।

२९. हां, और वे यह भी कहते हैं कि तुमने उन्हें यह (१९) जानकारी कराई है कि मसीह नहीं होगा।

३०. हे, प्रभु परमेश्वर, इन लोगों में इतनी अधिक दुष्टता और पाप को आप कब तक सहन करेंगे? हे प्रभु मुझे बल दो जिससे कि मैं अपनी दुर्बलताओं पर विजय पाऊं। क्योंकि मैं दुर्बल हूं और इन लोगों में इतनी दुष्टता है कि जिससे मेरी आत्मा को दुख होता है।

३१. हे प्रभु, मेरा हृदय अति दुखी है; क्या मसीह में आप मुझे सान्त्वना देंगे? हे प्रभु मुझे शक्ति दो जिससे कि इन लोगों के पापों के द्वारा आए हुए कष्टों को मैं धैर्य के साथ सह सकूं।

३२. हे प्रभु, मेरी आत्मा को सान्त्वना दो और मेरे साथ जो लोग परिश्रम करने वाले आमोन, आरुन, ओमनर, अमूलक, जीजरोम और मेरे (२०) दोनों पुत्र हैं उनको भी शान्ति दो हां, हे प्रभु, तुम इन सभी लोगों को सांत्वना दो। इनकी आत्माओं को मसीह में शान्ति प्राप्त करने दे।

३३. उन्हें आप शक्ति दें जिससे इन लोगों की दुष्टता के कारण अपने ऊपर आने वाले कष्टों को वे सह सकें।

३४. हे प्रभु इन लोगों को पुन: मसीह के द्वारा तुम्हारे पास लाने में हमें सफलता दो।

३५. हे प्रभु सुनो, उनकी आत्मा मूल्यवान है, और उनमें से बहुत से लोग हमारे बन्धु हैं; इसलिए हे प्रभु, हमें शक्ति और विवेक दो जिससे हम अपने इन बन्धुओं को पुन: आपके पास ला सकें।

३६. तब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने ये शब्द कहे तब उसने अपने सब साथियों को (२१) थपकियां दीं। और देखो, जब उसने थपकियां दीं तब वे सब पवित्रात्मा से भर उठे।

३७. इसके पश्चात् वे सब (२२) अपने खाने-पीने और पहनने की बिना चिन्ता किए एक दूसरे से अलग हो गए।

३८. और प्रभु ने उनके खाने के लिए भोजन और पीने के लिए पानी की व्यवस्था की जिससे उन्हें भूखे-प्यासे न रहना पड़े; और उसने उन्हें बल भी दिया जिससे कि उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट मालूम न पड़ें अपितु उनके कष्ट (२३) मसीह के आनन्द में लीन हो जाएं। यह सब अलमा की प्रार्थना अनुसार हुआ क्योंकि उसने (२४) विश्वास के साथ प्रार्थना की थी।

अध्याय ३२

धनहीनों का मुक्ति के सन्देश को सुनना—अलमा

(१७) पद्य १३, २१. (१८) पद्य १८. (१९) पद्य १६. (२०) पद्य ७. (२१) ३ नफी १८:३७. (२२) ३ नफी १३:२५-३४. (२३) पद्य ३२. (२४) पद्य २६:३५.

ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

की स्तुति और उपदेश—विश्वास करने की इच्छा से विश्वास का बढ़ना।

१. और ऐसा हुआ कि वे उनके (१) प्रार्थना भवनों और घरों में जाकर लोगों को परमेश्वर की वाणी का उपदेश देने लगे; यहां तक कि वे वाणी का प्रचार सड़कों पर से करने लगे।

२. और उनमें अधिक परिश्रम करने के पश्चात् उन्हें दीन लोगों में सफलता मिलने लगी; क्योंकि देखो, उनके साधारण भद्दे पहनावे के कारण उन्हें प्रार्थना भवनों से बाहर कर दिया गया था।

३. इसलिए उन्हें मैला समझा जाने के कारण परमेश्वर की आराधना करने के लिए प्रार्थना भवनों में घुसने नहीं दिया जाता था। कंगाल होने के कारण वे अपने बन्धुओं के द्वारा अशुद्ध समझे जाते थे और (२) सांसारिक सम्पत्ति में उनके पास बहुत ही कम वस्तुएं थीं और वे हृदय से भी दीन थे।

४. जब अलमा ओनिदाह नामक पहाड़ पर लोगों को उपदेश दे रहा था तब सांसारिक धन-सम्पत्ति में कंगाल और हृदय से दीन लोगों की एक बहुत भीड़ उसके पास आई।

५. वे अलमा के पास आए और जो उनमें सबसे आगे था उसने अलमा से कहा: सुनो, कंगाली के कारण दूसरे लोग विशेषकर हमारे पुरोहित मेरे इन बन्धुओं की अवहेलना करते हैं, इस कारण ये क्या करें? उन्होंने हमें अपने उन प्रार्थना (३) भवनों से निकाल दिया है जिन्हें बनाने के लिए हमने बहुत अधिक परिश्रम किया था। उन्होंने (४) हमारी अति दीन दशा के कारण निकाला और हमारे पास प्रार्थना करने का कोई स्थान नहीं है, इसलिए हम क्या करें?

६. जब अलमा ने यह सुना तब तुरन्त उसने उसको अपनी ओर करके उसके चेहरे को हर्ष के साथ देखा, क्योंकि उनके कष्टों ने (५) उन्हें दीन बना दिया था और वे वाणी सुनने को तैयार थे।

७. इस कारण भीड़ के अन्य लोगों से कुछ न कह कर जिन्हें वह देख सकता था और जो सचमुच में पश्चात्ताप करने वाले लोग थे उनसे उसने हाथ फैला कर पुकार कर कहा:

८. मैं देखता हूं कि तुम हृदय के दीन हो; अगर ऐसा है, तब तुम धन्य हो।

९. सुनो, तुम्हारे भाई ने कहा कि (६) हम क्या करें—क्योंकि हम अपने प्रार्थना भवनों से निकाले गए हैं जिससे कि हम अपने परमेश्वर से प्रार्थना नहीं कर सकते।

१०. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि अपने परमेश्वर की प्रार्थना बिना अपने (७) उपासना गृहों के अन्दर क्या तुम नहीं कर सकते?

११. और भी मैं तुमसे पूछता हूं कि क्या तुम्हें परमेश्वर की आराधना (८) सप्ताह में एक बार से अधिक नहीं करनी चाहिए?

१२. मैं तुमसे कहता हूं कि यह ठीक ही हुआ कि तुम अपने (९) प्रार्थना भवनों से निकाले गए, जिससे कि तुम दीन बने रहो और विवेक सीखो। निकाले जाने से तुम अपने (१०) बन्धुओं द्वारा उपेक्षित किए गए क्योंकि तुम अति दरिद्र हो और इससे तुम हृदय से विनीत हुए हो और तुम्हें आवश्यकतानुसार दीन किया गया है।

१३. तुम्हें (११) विनीत बनने को विवश किया गया इस कारण तुम धन्य हो: क्योंकि जब मनुष्य को विनीत बनने को विवश किया जाता है तब वह पश्चात्ताप करता है और जब कोई भी पश्चात्ताप करता है तब वह दया को प्राप्त करता है; और जो दया करता है और (१२) अन्त तक सहनशील बना रहता है उसे ही बचाया जाएगा।

१४. और अब जैसा कि मैंने कहा कि तुम्हें (१३) विनीत बनने को विवश किया गया और यह तुम्हारे लिए आशीर्वाद था तब क्या तुम यह नहीं विश्वास करते कि परमेश्वर की वाणी के लिए जो अपने आपको विनीत बनाते हैं उन्हें और भी अधिक आशीर्वाद प्राप्त होता है?

१५. हां, जो सचमुच में अपने आप को विनीत बनाते, अपने पापों पर पश्चात्ताप करते और (१४) अन्त तक सहनशील बने रहते हैं उन्हीं को

(१) देखो २१, अल० १६. (२) पद्य ४, ५, १२. अल० ३४:४०. (३) देखो २१, अल० १६. (४) देखो २. (५) पद्य १२-१६. (६) पद्य ५. (७) देखो २१, अल० १६. (८) मू० १८:२५. (९) देखो २१, अल० १६. (१०) पद्य ३-५. (११) पद्य १२, १४-१६. (१२) देखो ८, २ नफी ३१. (१३) देखो ११. (१४) देखो ८, २ नफी ३१. ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

आशीर्वाद दिया जाएगा। हां, ऐसे लोगों को उन लोगों से बहुत अधिक आशीर्वाद दिया जाएगा जो अपनी निर्धनता के कारण विनीत बनते हैं।

१६. इस कारण धन्य हैं वे लोग जो (१५) बिना विवश किए दीन बनते हैं; दूसरे शब्दों में धन्य हैं वे लोग जो परमेश्वर की वाणी में विश्वास करते और बिना हृदय के हठ के बपतिस्मा लेते लेते हैं, हां, धन्य हैं वे लोग जो बिना वाणी का ज्ञान कराए, या बिना विवश कर ज्ञान कराए विश्वास करते हैं।

१७. हां, बहुत से लोग हैं जो कहते हैं अगर तुमने स्वर्ग से कोई संकेत दिया तब हम निश्चयपूर्वक जानेंगे और तभी हम विश्वास करेंगे।

१८. अब हम पूछते हैं कि क्या यह विश्वास है? सुनो, मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; क्योंकि अगर कोई मनुष्य कुछ जानता है तब यह उसकी उस बात पर विश्वास करने का कारण नहीं, क्योंकि वह उसे जानता है।

१९. और जो परमेश्वर की इच्छा को जानते हुए (१६) भी उसकी इच्छानुसार नहीं करता वह उस व्यक्ति से कितना अधिक शापित है जो केवल विश्वास करते हुए या विश्वास करने के कोई कारण के होते हुए भी पाप में पतित हो जाता है।

२०. इस बात का निर्णय तुम स्वयं करो। देखो, मैं तुमसे कहता हूं कि जैसा एक हाथ की ओर है वैसा ही दूसरे हाथ की ओर भी है; और हर एक मनुष्य जैसा करेगा वैसा ही फल वह पाएगा।

२१. और विश्वास के विषय में मैंने जैसा कहा—विश्वास से किसी विषय का (१७) वास्तविक तत्व नहीं जाना जा सकता इसलिए अगर तुममें विश्वास है तब तुम उसकी आशा करते हो जो सत्य तो है परन्तु उसे देखा नहीं है।

२२. और अब सुनो, मैं तुमसे कहता हूं और मैं यह चाहता हूं कि इसे तुम स्मरण रखो कि परमेश्वर उन सभी लोगों पर दयावान होता है जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं; इसलिए वह सबसे पहले चाहता है कि तुम विश्वास करो, यहां तक कि उसकी वाणी पर भी विश्वास करो।

२३. वह अपनी वाणी को स्वर्गदूतों के द्वारा न कि केवल पुरुषों को ही बल्कि स्त्रियों को भी देता है। इतना ही नहीं, अनेकों बार छोटे बच्चों को भी बुद्धिमानों और विद्वानों को मात करने वाली वाणियां दी गई हैं।

२४. और अब मेरे प्रिय भाइयो, तुम्हें कष्ट पहुंचाने और निकाले जाने के कारण मुझसे जानना चाहते हो कि तुम्हें (१८) क्या करना चाहिए—तुम यह मत समझो कि जो कुछ सत्य है उसके अनुसार मैं तुम्हारा निर्णय करना चाहता हूं—

२५. मैं यह नहीं कहता कि तुम सभी लोगों को विनीत (१९) बनने के लिए विवश किया गया है; क्योंकि मैं सच कहता हूं, कि तुममें से कुछ ऐसे हैं जो स्वयं अपने आप को विनीत कर लेंगे चाहे वे जिस परिस्थिति में हों।

२६. और अब विश्वास के विषय में जैसा कि मैंने कहा—यह विश्वास यथार्थ ज्ञान नहीं होता—और यही बात मेरी बातों पर लागू होती है। तुम उनकी निश्चित यथार्थता को उसी तरह नहीं जान सकते जितना कि विश्वास के सम्पूर्ण तथ्य के होने को नहीं जानते।

२७. लेकिन, सुनो, अगर तुम आगे और अपनी आन्तरिक शक्तियों को जागृत करके मेरी बातों पर अनुसन्धान किया और विश्वास का एक अंश भी काम में लाए और विश्वास करने की इच्छा भी की तब इस इच्छा को अपने अन्दर तब तक काम करने दो जब तक कि तुम मेरी बातों के एक अंश पर भी विश्वास न करने लगो।

२८. अब हम वाणी की एक बीज से तुलना करेंगे। मान लो कि एक बीज तुम्हारे हृदय में बोया जाएगा, सुनो, अगर वह सच्चा या अच्छा बीज है और अगर तुमने अपने अविश्वास के कारण उसे फेंक नहीं दिया, जिससे कि तुम प्रभु की आत्मा का विरोध करो, तब वह तुम्हारी छाती के अन्दर विकास करेगा और जब तुम्हें इस विकास का अनुभव होगा तब तुम अपने मानस में कहोगे—यह बीज एक उत्तम बीज है अर्थात् यह अच्छी वाणी है क्योंकि यह मेरी आत्मा का विकास करती है;

(१५) देखो ११. (१६) सि० और शर्त० ४१:१. (१७) पद्य १७-१६. (१८) पद्य ५. (१९) देखो ११.

हां, उसने मेरे विवेक को बढ़ाना आरम्भ किया और इसका स्वाद मुझे अच्छा लग रहा है।

२९. अब सुनो, क्या यह तुम्हारे विश्वास की वृद्धि नहीं करेगा? मैं तुमसे कहता हूं कि हां; फिर भी इससे तुम्हारा ज्ञान पूर्ण नहीं हुआ।

३०. लेकिन सुनो, जब बीज का विकास होता है और उसमें अंकुर निकलता और उगना आरम्भ होता है तब तुम्हें कहना ही पड़ेगा कि वह बीज अच्छा था क्योंकि उसका विकास होता है, अंकुर फूटता है और उगना आरम्भ होता है।

३१. और तब क्या तुम निश्चित हो जाते हो कि वह बीज ठीक था? मैं तुमसे कहता हूं कि अवश्य ही; क्योंकि हर एक बीज अपने ही तरह उपज उत्पन्न करता है।

३२. इस कारण अगर कोई बीज उगता है तब वह अच्छा बीज होता है, परन्तु अगर वह उगता नहीं तब सुनो, वह अच्छा बीज नहीं होता, इस कारण उसे फेंक दिया जाता है।

३३. और अब, सुनो, जब कि तुमने परीक्षा की और बीज को बोया जिसका विकास हुआ, अंकुर फूटा और उगना आरम्भ हुआ, तब तुम्हें यह जानना ही चाहिए कि वह बीज अच्छा था।

३४. और अब, सुनो, क्या तुम्हारा ज्ञान पूर्ण हो गया? हां, उस विषय पर तुम्हारा ज्ञान पूर्ण हो हो जाता है और तुम्हारा विश्वास स्थिर होता है; और यह क्योंकि तुम जानते हो, तुम जानते हो कि वाणी ने तुम्हारी आत्मा का विकास किया और तुम यह भी जानते हो कि उसका अंकुर फूटा जिससे तुम्हारी समझ में प्रकाश होता है और तुम्हारी बुद्धि की वृद्धि होती है।

३५. ओह! तब क्या यह यथार्थ नहीं होता? मैं तुमसे कहता हूं हां, क्योंकि यह प्रकाश है, और जो प्रकाश होता है वह अच्छा होता है क्योंकि यह निर्णय करने लायक होता है, इस कारण तुम्हें जानना चाहिए कि यह ठीक है; और अब सुनो, इस प्रकाश का अनुभव कर लेने के पश्चात् क्या तुम्हारा ज्ञान पूर्ण होता है?

३६. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं; और न तो तुम्हें अपने विश्वास को अलग धर देना चाहिए, क्योंकि अभी तो तुमने बीज को बोकर उसके अच्छे होने की परीक्षा करने में अपने विश्वास को प्रयोग में लाया है।

३७. और सुनो, जब वृक्ष बढ़ना आरम्भ होगा तब तुम कहोगे: हम इस वृक्ष की भली प्रकार देखभाल करें जिससे इस में जड़ हों, यह बढ़े और हमें फल दे। और सुनो, अगर तुमने उसकी अच्छी तरह देखभाल की तब उसमें जड़ होंगे, वह बढ़ेगा। और फल देगा।

३८. लेकिन अगर तुमने उस वृक्ष की अवहेलना की और उसके सींचने की परवाह न की, तब देखो, उसमें जड़ें न होंगी और जब सूर्य का धूप उसे झुलसाएगा तब जड़ न होने से वह सूख जाएगा, और तुम उसे उखाड़ कर फेंक दोगे।

३९. यह इसलिए नहीं कि बीज अच्छा नहीं था, और यह भी नहीं कि उसके फल अच्छे नहीं होंगे, परन्तु इसलिए कि तुम्हारी भूमि ऊसर है, और तुमने उसको खाद मसाले देकर उसकी देखभाल भी नहीं की; इस कारण उसके फल भी तुम नहीं पा सकते।

४०. इसी प्रकार तुमने वाणी की अगर परवाह न की और विश्वास की एक ही आंख से उसके फल को देखा, तब तुम जीवन के वृक्ष के फल को कभी नहीं तोड़ सकोगे।

४१. अगर तुमने वाणी का पालन-पोषण किया, हां अगर वृक्ष जब बढ़ना आरम्भ करता है तभी तुमने उसका पालन-पोषण अगर परिश्रम द्वारा विश्वास के साथ धैर्यपूर्वक फल को प्राप्त करने की आशा से किया तब उसमें जड़ पड़ेंगी; और देखो, वह बढ़कर वृक्ष होगा और अनन्त जीवन प्राप्त करेगा।

४२. और वाणी का पालन-पोषण करने में तुमने जो परिश्रम, विश्वास और धैर्य किया जिससे कि वह तुम्हारे अन्दर जड दे, देखो, कुछ समय पश्चात् तुम उसके फल का भोग करोगे जो कि सब से (२०) मूल्यवान है और सभी मीठी वस्तुओं से अधिक मीठी, सभी श्वेत वस्तुओं से अधिक श्वेत और हां, सभी शुद्ध वस्तुओं से अधिक शुद्ध भी है; और तुम इस फल का भोग इच्छा भर करोगे जिससे कि तुम भूखे और प्यासे न रहोगे।

(२०) देखो २, १ नफी ८.

ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

४३. तब मेरे बन्धुओ, तुम विश्वास, परिश्रम, धैर्य, दीर्घ समय तक कष्ट झेलने और वृक्ष में फल लगने की प्रतीक्षा के उपहार को काटोगे।

अध्याय ३३

अलमा के उपदेश का क्रम—सच्ची आराधना का उपासना गृहों तक ही सीमित नहीं रहना—भविष्यवक्ता जीनस और जीनक की पुनः चर्चा किया जाना।

१. जब अलमा ने इन बातों को कहना समाप्त किया तब उन लोगों ने यह जानने की इच्छा प्रकट की कि जिस फल की चर्चा अलमा ने की थी उसे प्राप्त करने के लिए उन्हें एक परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए या नहीं, अर्थात् बीज को किस प्रकार बोना चाहिए, या उस वाणी को किस प्रकार उन्हें अपने हृदयों में बोना चाहिए जिसकी चर्चा उसने की थी, या उन्हें अपने विश्वास को किस प्रकार प्रयोग में लाना चाहिए।

२. और अलमा ने उनसे कहा : सुनो, तुमने कहा कि तुम (१) अपने परमेश्वर की आराधना इस कारण नहीं कर सकते क्योंकि तुम्हें तुम्हारे (२) प्रार्थना भवनों से बाहर निकाल दिया गया है। लेकिन सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुम यह समझते हो कि तुम परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकते तब तुम भारी भूल करते हो, और तुम्हें (३) शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए; और अगर तुम यह समझते हो कि शास्त्रों ही से यह शिक्षा तुम्हें मिली है, तब तुम उन्हें समझते नहीं हो।

३. क्या तुम्हें स्मरण है कि प्राचीन भविष्यवक्ता (४) जीनस ने (५) प्रार्थना या उपासना के विषय में क्या कहा था?

४. क्योंकि उसने कहा था: हे परमात्मन, तुम दयावान हो क्योंकि तुमने जंगल में होते हुए भी मेरी प्रार्थना को सुना; हां जब कि मैंने उन लोगों के विषय में प्रार्थना की जो मेरे शत्रु थे, तब भी तुम दयावान थे और उन्हें तुमने मेरी ओर कर दिया।

५. और हे परमात्मन् तुम उस समय भी मुझ पर दयावान थे जबकि मैंने तुम्हें अपने खेत में से पुकारा था; जब मैंने तुम्हें अपनी प्रार्थना में पुकारा तब तुमने मेरी पुकार को सुना।

६. और हे परमेश्वर, जब मैंने अपने घर जाकर प्रार्थना की तब तुमने मुझ को सुना।

७. और जब मैं अपनी छोटी कोठरी में गया और तुमसे प्रार्थना की तब भी तुमने मेरी सुनी।

८. जब तुम्हारे बच्चे किसी मनुष्य को न पुकार कर तुमको पुकारते हैं तब तुम उन पर कृपा करते हो, और उनकी पुकार को सुनते हो।

९. हां, हे परमेश्वर, तुम मुझ पर दयावान थे और तुमने अपने एकत्रित जनसमुदाय में से भी मेरी पुकार को सुना।

१०. और हां, जब मैं अपने शत्रुओं के द्वारा बाहर निकाल दिया गया था और उनके द्वारा अपमानित किया गया था तब भी तुमने मेरी पुकार को सुना था; हां तुमने मेरी पुकार को सुना और मेरे शत्रुओं पर तुम क्रोधित हुए और अपने क्रोध में आकर उनको शीघ्रता के साथ नष्ट किया।

११. और तुमने मेरे कष्टों और मेरी ईमानदारी के कारण मेरी पुकार को सुना; और तुमने इस तरह मुझ पर दया अपने पुत्र के कारण की, इस कारण मैं अपनी सभी कष्टों में तुमको पुकारूंगा क्योंकि मेरा आनन्द तुम से है; क्योंकि अपने पुत्र के कारण तुमने मुझे न्याय दण्ड से बचा लिया है।

१२. और तब अलमा ने उनसे कहा : क्या तुम उन (६) शास्त्रों पर विश्वास करते हो, जो प्राचीन लोगों द्वारा लिखा गया था?

१३. सुनो, अगर तुम उनपर विश्वास करते हो तब तुम उस पर भी विश्वास करो जो कि (७) जीनस ने कहा था। सुनो उसने कहा था : आपने अपने पुत्र के कारण न्यायदण्डों को अलग कर दिया है।

१४. अब, सुनो मेरे प्रिय भाइयो, मैं तुमसे पूछना चाहता हूं कि क्या तुमने शास्त्रों को पढ़ा है? अगर तुमने शास्त्रों को पढ़ा है तब तुम परमेश्वर के पुत्र पर अविश्वास कैसे कर सकते हो?

(१) अल० ३२:५. (२) देखो २१, अल० १६. (३) देखो १, १ नफी ३, अल० ६३:१२. (४) देखो ८, १ नफी १९.
(५) देखो ५, २ नफी ३२. (६) देखो ३. (७) देखो ८, १ नफी १९. (८) देखो ३. ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

१५. क्योंकि यह नहीं लिखा है कि केवल भविष्यवक्ता (९) जीनस ने ही इन बातों को कहा बल्कि (१०) जीनक ने भी इन बातों को कहा था।

१६. क्योंकि सुनो, उसने कहा था : हे प्रभु तुम इन लोगों पर इस कारण क्रोधित हो क्योंकि ये तुम्हारी उस दया को नहीं समझते जिसे तुमने अपने पुत्र के कारण इन पर प्रकट की है।

१७. और अब, मेरे भाइयो, तुम देख रहे हो कि एक दूसरे प्राचीन भविष्यवक्ता ने भी परमेश्वर के पुत्र की साक्षी दी है परन्तु लोग उसकी बातों को समझ नहीं सके इस कारण उन्होंने उस पर पथराव करके उसे मार डाला।

१८. लेकिन सुनो, इतना ही सब कुछ नहीं है; केवल इन भविष्यवक्ताओं ने ही परमेश्वर के पुत्र के विषय में नहीं कहा है।

१९. सुनो, उसकी चर्चा मूसा ने भी की थी; और सुनो (११) मरुस्थल में एक निशान खड़ा किया जाएगा जिससे जो कोई उसे देखेगा, वह बच जाएगा। और बहुतों ने उसे देखा और बच गये।

२०. लेकिन बहुत कम लोगों ने उन बातों को समझा और यह उनके हृदय की कठोरता के कारण। लेकिन बहुत से तो इतने अधिक कठोर हृदय थे, कि उन्होंने उस निशान की ओर देखा भी नहीं, इस कारण वे नष्ट हो गए। उन्होंने इस कारण नहीं देखा क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं था कि वह उनके कष्टों को दूर करेगा।

२१. हे मेरे भाइयो, अगर केवल निगाह उठाकर देखने से ही तुम्हारे सब दुख दूर हो जाते तब तुम क्या शीघ्रता के साथ नहीं देखते, या अविश्वास में अपने हृदय को कठोर बना लेते और आलस में आकर अपनी आंखों को उठा कर देखते भी नहीं और नष्ट हो जाते?

२२. अगर ऐसा है, तब सन्ताप पड़े तुम पर; अगर ऐसा नहीं है तब तुम अपनी दृष्टि को इधर-उधर दौड़ा कर देखो और परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करना आरम्भ करो कि वह आकर अपने लोगों को बचा लेगा और उन के पापों के (१२) प्रायश्चित के लिए कष्ट झेलेगा और मरेगा; और वह मरकर पुन: जीवित होगा और इससे वह (१३) पुनर्जीवित होने की व्यवस्था लाएगा, जिससे कि सभी मनुष्य उसके सामने अन्तिम और न्याय के दिन अपने-अपने कर्मों के अनुसार न्याय के लिए खड़े होंगे।

२३. और अब मेरे भाइयो, मैं यह इच्छा करता हूं कि तुम इन बातो को अपने हृदय में धारण करो और अपने विश्वास से इसे सींचकर उसे बढ़ाओ। और सुनो, यह एक वृक्ष के समान तुममें फल-फूल कर तुमको अनन्त जीवन देगा और तब परमेश्वर तुम्हारे बोझ को अपने पुत्र के आनन्द के द्वारा हल्का करेगा अगर तुम चाहो तब यह सब कुछ कर सकते हो। आमीन।

अध्याय ३४

अमूलक का साक्षी देना—महान और अन्तिम बलिदान—दया भी किस प्रकार न्याय को सन्तुष्ट करती है—पश्चात्ताप में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

१. ऐसा हुआ कि जब अलमा ने इन बातों को उन लोगों से कह लिया तब वह भूमि पर बैठ गया और अमूलक खड़ा होकर उन्हें शिक्षा देते हुए बोला:

२. मेरे भाइयो, मैं सोचता हूं कि यह असम्भव है कि उस मसीह, जो कि हमारी शिक्षा के अनुसार ईश्वर का पुत्र है, के आने के विषय में जो बातें कही गई हैं, उनसे तुम अनभिज्ञ होंगे, हां, मैं यह जानता हूं कि हम लोगों से मतभेद होने के पूर्व तुम लोगों को इसकी बहुत अधिक शिक्षा दी गई है।

३. जब कि तुम लोगों ने मेरे प्रिय भाई से यह जानने की इच्छा की है कि वह तुम्हें बतलाए कि तुम्हें (१) अपने कष्टों के लिए क्या करना चाहिए; और उसने तुम्हारी बुद्धि को तैयार करने के लिए बातें कहीं और विश्वास और धैर्य पर उपदेश दिया—

४. हां, तुम्हारे पास इतना विश्वास होना चाहिए कि तुम (२) अपने हृदय में वाणी को

(९) देखो ८, १ नफी १९. (१०) देखो ७, १ नफी १९. (११) गिनती की पु० २१:९; यूहन्ना ३:१४. (१२) देखो ६, २ नफी २. (१३) देखो ४, २ नफी २. अध्याय ३४. (१) अल० ३२:५. (२) अल० ३३:२३ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

बो सको और उसकी अच्छाइयों का अनुसन्धान कर सको।

५. और जो बड़ा प्रश्न तुम्हारे मन में है कि क्या वाणी मसीह के साथ है या कि (३) मसीह होगा ही नहीं, उसे हमने देखा।

६. और तुमने यह भी देखा कि मेरे भाई ने तुम्हें अनेक उदाहरणों से प्रमाणित कर दिया है कि वाणी मसीह में है, जो मुक्ति तक ले जाती है।

७. मेरे भाई ने (४) जीनस और (५) जीनक की वाणियों का भी उल्लेख कर यह दिखाया है कि मुक्ति परमेश्वर के पुत्र के द्वारा मिलती है; और (६) मूसा की वाणी द्वारा भी यह सिद्ध किया है कि ये बातें सत्य हैं।

८. और अब मैं स्वयं यह साक्षी दूंगा कि ये सब बातें सत्य हैं। सुनो, मैं यह जानता हूं कि अपने लोगों के पापों को अपने ऊपर लेने, और संसार के पापों के (७) प्रायश्चित के लिए वह मानव समाज में आएगा; क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने ऐसा ही कहा है।

९. पापों के लिए प्रायश्चित करना हितकर है क्योंकि अनन्त परमेश्वर की योजना के अनुसार प्रायश्चित (८) करना ही चाहिए, नहीं तो मानव समाज को नष्ट होने से बचाया ही नहीं जा सकता, हां, सभी कठोर हैं; सभी पतित और भटके हुए हैं और नष्ट होंगे; केवल (९) प्रायश्चित जो कि हितकारी है, उसी के द्वारा वे बच सकेंगे।

१०. क्योंकि यह भी हितकारी है कि एक महान और अन्तिम बलिदान हो; यह बलिदान न तो एक व्यक्ति का होगा, न ही पशु का और न ही किसी पक्षी का; क्योंकि वह मानवी बलिदान नहीं होगा; वह होगा अपरिमित और असीम अनन्त बलिदान।

११. ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जिसके रक्त का बलिदान दूसरे के पापों का प्रायश्चित कर सके। अब अगर एक व्यक्ति हत्या करता है तब हमारे नियम के अनुसार, जो कि उचित है, क्या हत्यारे के भाई का प्राण लिया जाएगा? मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं।

१२. लेकिन कानून तो हत्यारे का प्राण चाहता है; इस कारण (१०) अपरिमित प्रायश्चित की तरह और कुछ भी नहीं है जो कि जगत के पापों के लिए पर्याप्त हो।

१३. इस कारण यह हितकारी है कि एक महान और (११) अन्तिम बलिदान हो; और तब यह होगा अथवा यह हितकर होगा कि (१२) रक्तपात का अन्त हो; और तब (१३) मूसा का नियम पूर्ण होगा; हां वह सब हर तरह से पूरा होगा, कुछ भी नहीं छूटेगा।

१४. और सुनो, नियम का सम्पूर्ण अर्थ यही है, कि हर अणु उसी महान और (१४) अन्तिम बलिदान की ओर संकेत कर रहा है; और वह अन्तिम बलिदान होगा परमेश्वर के पुत्र का, जो कि (१५) निस्सीम और अनन्त है।

१५. इस प्रकार वह उन सभी के लिए मुक्ति लाएगा जो उसके नाम पर विश्वास करेंगे और (१६) अन्तिम बलिदान का यही उद्देश्य है कि वह न्यायदंड पर विजय प्राप्त करने वाली दया उत्पन्न कर सके और मनुष्यों में पश्चात्ताप के लिए विश्वास ला सके।

१६. इस प्रकार दया न्याय की मांग को (१७) सन्तुष्ट कर सकती है और उन्हें सुरक्षा की बांहों में ले लेती है, जबकि वह व्यक्ति जो अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं करता उसे न्याय विधान का सामना करना पड़ता है; इस कारण केवल उसीके लिए मुक्ति की अनन्त योजना लाई जाती है; जो कि अपने पापों पर पश्चात्ताप करने में विश्वास करता है।

१७. इस कारण मेरे भाइयों, परमेश्वर तुम्हें अपने पापों पर पश्चात्ताप करना आरम्भ करने की प्रेरणा दे, जिससे तुम उसके पवित्र नाम को पुकारना आरम्भ करो, कि वह तुम पर दया करे।

(३) अल० ३१:१६. (४) अल० ३३:३ देखो ८, १ नफी १९. (५) अल० ३३:१५ देखो ६, १ नफी १९. (६) अल० ३३:१९. (७) देखो ६, २ नफी २. (८) देखो ५, और ७, २ नफी ९. (९) देखो ६, २ नफी २. (१०) पद्य १०, १४. (११) पद्य १४. (१२) ३ नफी ९:१९. (१३) देखो १५, २ नफी २५. (१४) पद्य १३, १५. (१५) पद्य १०. (१६) पद्य १३, १४, १५. (१७) देखो ३९, अल० १२.

ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

१८. हां, दया के लिए तुम उसे पुकारो; क्योंकि वह महान है।

१९. हां, तुम अपने आपको विनीत बना लो और उससे (१८) प्रार्थना करते रहो।

२०. जब तुम अपने खेतों में अपने सभी पशुओं के साथ हो तब तुम उसे पुकारो।

२१. अपने पूरे घरवालों के साथ जब तुम अपने घर पर हो, तब तुम सुबह दोपहर और शाम को उसे पुकारो।

२२. हां, अपने शत्रुओं के बल के विरुद्ध तुम उसे पुकारो।

२३. हां, तुम उसे उस शैतान के विरुद्ध पुकारो जो कि सभी प्रकार की धार्मिकता का शत्रु है।

२४. अपने खेतों की फसलों के लिए तुम उसे पुकारो जिससे कि तुम्हें अच्छी फसल मिले।

२५. अपने खेतों के पशुओं के लिए तुम उसे पुकारो, जिससे उनकी वृद्धि हो।

२६. इतना ही नहीं, तुम अपनी आत्मा को अपनी कोठरी और गुप्त स्थानों और जंगलों में उसके लिए उड़ेल दो।

२७. हां, जब तुम उसे नहीं पुकारते, तब अपने हृदयों को अपने और अपने आस-पास वालों के कल्याण के लिए सदा उसकी प्रार्थना में लीन और पूर्ण रखो।

२८. और अब, सुनो मेरे प्रिय भाइयो, मैं तुमसे कहता हूं कि यह मत समझो कि यही सब कुछ है; क्योंकि यह सब कुछ कर लेने के पश्चात् भी अगर तुमने किसी दीन, गरीब या किसी नंगे को (१९) बिना सहायता दिए लौटा दिया, और रोगियों और दुखियों को, सहायता देने की स्थिति में होने पर भी सहायता न दी—तब मैं तुम से कहता हूं कि इन में से एक भी कार्य न करने से तुम्हारी प्रार्थना (२०) व्यर्थ हो जायेगी और तुम्हारे लिए कोई लाभ नहीं होगा और तुम उसी प्रकार ढोंगी होगे जैसे कि अविश्वासी होते हैं।

२९. इसलिए अगर तुम उदार रहना भूल जाते हो तब तुम उस गंदगी की तरह हो, जिसे शुद्ध करने वाले अलग निकाल कर फेंक देते हैं (क्योंकि उसका कोई महत्व नहीं रहता) और वह लोगों के पैरों तले रौंदी जाती है।

३०. और अब, मेरे भाइयो, तुमने इतने साक्षियों को प्राप्त किया है, जिनके द्वारा तुमने यह देखा कि पवित्र (२१) शास्त्रों ने इन बातों को प्रमाणित किया है जिससे कि मैं चाहता हूं कि तुम आगे बढ़कर पश्चात्ताप का फल प्राप्त करो।

३१. हां, मैं चाहता हूं कि तुम आगे आओ और अपने हृदय को और कठोर मत बनाओ; क्योंकि अभी ही तुम्हारी मुक्ति का दिन है; और इस कारण तुमने पश्चात्ताप किया और अपने हृदय को कठोर न बनाए रखा, तब तुरन्त मुक्ति की महान योजना तुम्हारे पास लायी जाएगी।

३२. क्योंकि सुनो, यह मानव जीवन परमेश्वर से मिलने की तैयारी करने के लिए है; हां, इस जीवन के दिन लोगों के लिए (२२) परिश्रम करने के दिन होते हैं।

३३. और अब, जैसा कि मैंने तुमसे पहिले कहा है कि जब तुम्हें इतने अधिक साक्षी प्राप्त हुए हैं, तब मैं आग्रह करता हूं कि तुम अपने पश्चात्ताप के दिन को अन्तिम दिन के लिए मत टालो; क्योंकि इस जीवन के दिन हमारे अनन्त जीवन की तैयारी के लिए दिए गए हैं; अगर हम इसमें अपने भविष्य का सुधार नहीं करते, तब सुनो, अन्धेरी रात का समय आता है जिसमें कोई परिश्रम नहीं किया जा सकता।

३४. तुम जब उस भयंकर संकट के समय में लाए जाओगे, तब तुम यह नहीं कह सकोगे कि मैं पश्चात्ताप करूंगा और अपने परमेश्वर के पास लौटूंगा। नहीं, तुम यह नहीं कह सकोगे; क्योंकि जो आत्मा तुम्हारे प्राण त्याग के समय तुम्हारे शरीर के अन्दर होगी, उसी आत्मा को अनन्त जगत में तुम्हारे शरीर को प्राप्त करने की शक्ति होगी।

३५. क्योंकि सुनो, अगर तुमने अपने पश्चात्ताप के दिन को अपनी मृत्यु तक टाल देते हो, तब तुम शैतान के वशीभूत हो जाते हो और वह तुम पर अपनी मुहर लगाकर तुम्हें अपना लेता है; इस

(१८) देखो ५, २ नफी ३२. (१९) देखो १२, मू० ४. (२०) मरो० ७:६-८. (२१) देखो १, १ नफी ३, अल० ६३:१२.
(२२) देखो २७, अल० १२.

कारण प्रभु की आत्मा तुमसे अलग हो जाती है, और उसके लिए तुम्हारे अन्दर कोई स्थान नहीं रह जाता है और तुम्हारे ऊपर शैतान का (२३) पूरा अधिकार हो जाता है; और यह पापियों की अन्तिम स्थिति होती है।

३६. और यह मैं जानता हूं क्योंकि प्रभु ने यह कहा है कि वे (२४) अपवित्र मन्दिर में निवास नहीं करते बल्कि धार्मिक लोगों के हृदय में निवास करते हैं; और हां, उन्होंने यह भी कहा कि धार्मिक लोग उनके राज्य में कभी भी बाहर न जाने के लिए बैठेंगे और उनके वस्त्र मेमने के रक्त के द्वारा सफेद किए जाएंगे।

३७. और अब, मेरे प्रिय भाइयो, मैं चाहता हूं कि तुम इन बातों को स्मरण रखो, और परमेश्वर के सामने भय के साथ अपनी मुक्ति का मार्ग बनाओ और मसीह के आगमन को और कभी मत इनकार करो।

३८. पवित्रात्मा का और विरोध मत करो, लेकिन उसे स्वीकार करो और (२५) मसीह का नाम अपने ऊपर लो; और अपने आपको धूल के समान विनीत बना लो और चाहे जिस स्थान पर रहो, परमेश्वर की आराधना हृदय से और सच्चाई के साथ करते रहो, और जो दया और आशीर्वाद उसने तुम्हें दिए हैं उनके लिए कृतज्ञता प्रकट करते रहो।

३९. और मेरे भाइयो, मैं तुम्हें यह भी सदुपदेश देता हूं कि (२६) तुम लगातार प्रार्थना में सावधान रहो जिससे कि शैतान के प्रलोभनों में तुम फंस न जाओ और वह तुम्हारे ऊपर अधिकार न कर ले और तुम अन्तिम दिन में उसकी प्रजा न बन जाओ; क्योंकि देखो, वह कोई अच्छा प्रतिफल नहीं देता।

४०. और अब, मेरे प्रिय भाइयो, मैं तुम्हें सहनशील बने रहने और हर प्रकार के कष्टों को झेलते रहने का सदुपदेश देता हूं; कि तुम उनकी निन्दा न करो जिन्होंने तुम्हारी (२७) गरीबी के कारण तुम्हें निकाल बाहर किया है और तुम उन्हीं की तरह पापी न बन जाओ।

४१. परन्तु तुम धैर्य धारण करो और इस दृढ़ विश्वास के साथ उन कष्टों को सहन करो कि एक दिन सभी कष्टों से तुम्हें छुटकारा मिलेगा।

अध्याय २७

नफायटी धर्म प्रचारकों का जारसन देश वापस लौटना—उनके द्वारा मत-परिवर्तित—जोरमायटियों का स्वदेश से निर्वासित किया जाना और उनसे मिलना—युद्ध की तैयारियां।

१. ऐसा हुआ कि जब अमूलक ने इन बातों को कहना समाप्त किया तब वे भीड़ में से निकल कर (१) जारसन देश में आ गए।

२. और हां, उसके अन्य भाई भी परमेश्वर की वाणी का प्रचार (२) जोरमायटियों में करके वापस जारसन देश को लौट गए।

३. और ऐसा हुआ कि जो जोरमायटी अधिक लोकप्रिय थे, वे प्रचार की गई बातों पर विचार विमर्श करने के पश्चात् क्रोधित हो उठे, क्योंकि वे बातें उनकी कला को नष्ट कर रही थीं; इस कारण वे परमेश्वर की वाणी को सुनना नहीं चाहते थे।

४. उन्होंने सारे देश के सभी लोगों को एकत्रित करके जिस वचन को उनसे कहा गया था, उसपर परामर्श किया।

५. तब उनके शासक, पुरोहित, और उनके शिक्षकों ने अपने विचारों को लोगों पर प्रकट नहीं होने दिया; इस कारण उन्होंने गुप्त रूप से लोगों के विचारों का पता लगा लिया।

६. और तब ऐसा हुआ कि सभी लोगों के विचारों को जान लेने के पश्चात् जो लोग अलमा के द्वारा कही गई वाणी के पक्ष में थे, उन्हें देश से बाहर निकाल दिया। देश से निर्वासित किए गए लोगों की संख्या बहुत अधिक थी और वे सब भी (३) जारसन देश में आ गए।

७. और ऐसा हुआ कि अलमा और उसके भाइयों ने उनकी सहायता की।

८. अब, जोरमायटी (४) आमोन के उन

(२३) देखो ६, २ नफी ६. (२४) देखो १८, अल० ७. (२५) देखो ५, मू० ५. (२६) देखो ५, २ नफी ३२. (२७) अल० ३२:३-५. अध्याय ३५. (१) देखो १७, अल० २७. (२) देखो ३६, अल० ३०. (३) देखो १७, अल० २७. (४) अल० २७:२६.

ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

लोगों पर क्रोधित थे, जो जारसन देश में रहते थे और (५) जोरमायटियों के प्रधान शासक ने जो कि अति दुष्ट था, आमोन के लोगों के पास यह सन्देश भेजा कि उसके उन लोगों को (६) जो उनके देश में चले गए थे, वे उन्हें अपने देश से बाहर निकाल दीं।

९. और उसने उन्हें बहुत-सी धमकियां दीं। लेकिन (७) आमोन के लोग उनकी बातों से डरे नहीं; इसलिए उन्होंने उन कंगाल जोरमायटी को जो उनके पास आए, बाहर नहीं निकाला, बल्कि उन्हें स्वीकार किया; उन्हें (८) भोजन, पानी और वस्त्र दिया और रहने के लिए पैतृक भूमि दी; और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की।

१०. इन कार्यों से जोरमायटी आमोन के लोगों पर क्रोधित हो उठे, और वे लमनायटियों में मिलकर उन्हें उनके विरुद्ध भड़काने लगे।

११. इस तरह (९) जोरमायटी और लमनायटी आमोन और नफी के लोगों के विरुद्ध युद्ध की तैयारी करने लगे।

१२. इस तरह नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का *सत्तरहवां वर्ष समाप्त हुआ।

१३. और (१०) आमोन के लोग (११) जारसन देश को, नफायटी सेना द्वारा लमनायटी और जोरमायटी सेनाओं से युद्ध करने के लिए, खालीकर (१२) मलक देश में आ गए; और इस तरह लमनायटियों और नफायटियों में निर्णायकों के शासन के अट्ठारहवें वर्ष में युद्ध आरम्भ हुआ। अब (१३) यहां से आगे उनके युद्धों का विवरण दिया जाएगा।

१४. और अलमा, आमोन उनके भाई और (१४) अलमा के दोनों पुत्र बहुत से (१५) जोरमायटियों को पश्चात्ताप करवाने में परमेश्वर के हाथ के साधन बनने के पश्चात् (१६) ज़राहेमला देश में, जितने लोग पश्चात्ताप करने वाले थे और जो (१७) स्वदेश से बाहर निकाल दिए गए थे, उन सब के साथ वापस लौटे आये। परन्तु निर्वासितों की पैतृक भूमि (१८) जारसन देश में ही थी इसलिए वे भी अस्त्र-शस्त्र लेकर अपनी, अपनी पत्नियों, बच्चों और भूमि की रक्षा करने के लिए तत्पर हुए।

१५. अलमा अपने लोगों के पापों, युद्ध, रक्तपात और विवाद, जो उन में हो रहा था उसके कारण इस समय बड़ा दुखी हुआ। अलमा लोगों में पवित्र वाणी का प्रचार करने गया था, अर्थात् पवित्र वाणी का प्रचार करने के लिए हरएक नगर में भेजा गया था; और लोगों के हृदयों को कठोर होना आरम्भ होते और वाणी की दृढ़ता के कारण लोगों को बुरा मानते देखकर, उसका हृदय बड़ा दुःखी हुआ।

१६. इस कारण उसने अपने सभी पुत्रों को बुलवाया जिससे कि वह हरएक को अलग-अलग धर्म की जिम्मेदारियां सुपुर्द कर दे। हमारे पास उसकी आज्ञाओं का विवरण है, जो उसने उसके समय में लेख के अनुसार, उन्हें दी थीं।

अलमा की वे आज्ञायें जिन्हें उसने अपने पुत्र इलामन को दी थी।

अध्याय ३६-३७

अध्याय ३६

अलमा का अपने पापमय अतीत की चर्चा करना, उसका चमत्कारी ढंग से मत-परिवर्तन करना और प्रचार में उसका उत्साह।

१. मेरे बेटे, मेरी बातों पर कान दो; क्योंकि मैं सौगन्ध खाकर कहता हूं कि (१) जब तक तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करोगे तब तक तुम देश में प्रगति करोगे।

२. मैं चाहता हूं कि हमारे पूर्वजों की (२) दासता को तुम मेरी तरह ही स्मरण रखो; क्योंकि वे दासता में थे और उन्हें इब्राहीम, इसाक और याकूब के परमेश्वर के अलावा और कोई अन्य

(५) देखो ३६, अल० ३०. (६) पद्य ६. (७) अल० २७:२६. (८) देखो १२, मू० ४. (९) देखो ३६, अल० ३०. (१०) अल० २७:२६. (११) देखो १७, अल० २७. (१२) देखो ३, अल० ८. (१३) अल० अध्याय ४३, ४४. (१४) अल० ३२:७. (१५) ओम० १३. (१६) देखो ३६, अल० ३०. (१७) पद्य ६. (१८) देखो १७, अल० २७. (१) देखो ८, २ नफी १. (२) मू० २३:२३-२४:१७-२१.

*ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

मुक्त करने वाला नहीं था; और उसी ने उन्हें उनके कष्टों से मुक्त किया।

३. और अब, हे मेरे पुत्र इलामन, सुनो, तुम अपने यौवन में हो, मैं तुमसे याचना करता हूं कि तुम मेरे शब्दों को सुनो, और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं जानता हूं कि जो कोई परमेश्वर पर विश्वास रखेगा उसका उसकी परीक्षाओं में, कष्टों और दुःखों में सहायता मिलेगी और उसे अन्तिम दिनों में ऊपर (३) उठा लिया जाएगा।

४. और मैं यह नहीं चाहता कि तुम यह सोचो कि मैं लौकिक के स्थान पर आत्मिक और सांसारिक के स्थान पर परमेश्वर की बातें स्वयं जानता हूं।

५. अब सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि अगर मैं परमेश्वर से (४) जन्म नहीं लेता, तब मैं इन बातों को नहीं जान सकता था; यह जानकारी मुझे परमेश्वर ने अपने (५) पवित्र स्वर्गदूतों के मुख से कराई है, यह मेरी स्वयं की योग्यता के कारण नहीं है।

६. क्योंकि मैं (६) मूसायाह के पुत्रों के साथ परमेश्वर के गिरजे को नष्ट करने की चेष्टा में घूम रहा था; लेकिन सुनो, परमेश्वर ने अपने (७) पवित्र स्वर्गदूत को भेजकर हम लोगों को इस पथ पर चलने से रोका।

७. और सुनो, उसने हमसे इस तरह बातें की मानो (८) वह मेघ गर्जन की वाणी हो, और हमारे पैरों तले सारी धरती हिल उठी और हम धरती पर गिर पड़े, हमारे ऊपर प्रभु का भय छा गया।

८. लेकिन सुनो, उस वाणी ने मुझसे कहा उठो। और मैं (९) उठा और खड़ा हुआ। तब मैंने एक स्वर्गदूत को देखा।

९. और उसने मुझसे कहा : तुम स्वयं (१०) नष्ट हो जाओगे परमेश्वर के गिरजे को नष्ट करने की चेष्टा मत करो।

१०. और ऐसा हुआ कि मैं (११) धरती पर गिर पड़ा और (१२) तीन दिन और तीन रात मैं अपने मुख को खोल नहीं सका और न ही मैं अपने हाथ पैरों को काम में ला सका।

११. और स्वर्गदूत ने मुझसे और भी बातें कहीं जिसे मैं तो नहीं सुन सका परन्तु मेरे भाइयों ने सुना क्योंकि जब मैंने ये शब्द सुने—तुम (१३) अपने आप नष्ट हो जाओगे, परमेश्वर के गिरजे को नष्ट करने का प्रयत्न मत करो—मैं यह सोचकर इतना भयभीत और चकित हुआ कि कहीं मैं नष्ट न हो जाऊं और इस डर से मैं धरती पर गिर पड़ा और कुछ नहीं सुन सका।

१२. लेकिन मैं (१४) अनन्त दुःख से पीड़ित हुआ और मेरी आत्मा को मेरे सभी पापों की यंत्रणा ने अत्यधिक झकझोर दिया।

१३. हां, मुझे अपने सभी पाप और दुष्टता स्मरण हो आए, जिसके कारण मुझे अधोलोक की यातनायें सताने लगीं; हां, मैंने अपने आपको परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हुए और उसकी आज्ञाओं का पालन न करते हुए देखा।

१४. और हां, मैंने उसकी बहुत-सी सन्तानों की हत्या की, अर्थात् मैं उनको बहका कर नष्ट होने के लिए ले गया; कहने का स्पष्ट तात्पर्य यह है कि मेरे पाप इतने अधिक थे कि परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के विचार से ही मेरी आत्मा अवर्णनीय भय से व्याकुल हो उठी।

१५. ओह! मैं सोचता था कि अपने परमेश्वर के समक्ष अपने कर्मों का न्याय करने के लिए लाए जाने की अपेक्षा मैं आत्मा और शरीर से नष्ट कर दिया जाता तो अच्छा होता।

१६. और तब मैं (१५) तीन दिन और तीन रात तीव्र घृणित आत्मग्लानि से पीड़ित था।

१७. और तब ऐसा हुआ कि जब मैं आत्मग्लानि से पीड़ित था तब अपने बहुत से पापों के स्मरण के कारण मैं और भी दुःखित हुआ; और सुनो, मुझे यह भी स्मरण हुआ कि मेरे पिता ने लोगों से भविष्यवाणी करते हुए यह कहा था कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जगत के पापों के (१६) प्रायश्चित के लिए आएगा।

१८. जब मेरी बुद्धि इस बात पर स्थिर हुई,

(३) देखो १६, मू० २३. (४) देखो ३, मू० ५. (५) मू० २७:११-१७. (६) मू० २७:१०. (७) देखो ५. (८) मू० २७:११. (९) मू० २७:१३, १५. (१०) मू० २७:१६. (११) मू० २७:१८. (१२) पद्य १६, मू० २७:१९-२३. (१३) मू० २७:११. (१४) देखो १३, या० ६. (१५) पद्य १०, मू० २७:१९-२३. (१६) देखो ६, २ नफी २. ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

तब मैंने अपने हृदय में पुकारा : हे परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु, मुझ पर जो कटुता के बीच, (१७) मृत्यु की अनन्त जंजीरों से घिरा हुआ है, दया करो।

१९. और जब मैंने यह सोचा तब मुझे अपनी वेदनाओं का और स्मरण न रहा; हां, मैं अपने पापों की स्मृति से और पीड़ित नहीं हुआ।

२०. और ओह ! क्या आनन्द, और क्या ही श्रेष्ठ प्रकाश मैंने देखा ! हां, जितनी अधिक मेरी आत्मा दु:ख से भरी हुई थी, उतनी ही आनन्द से भर उठी।

२१. हां, मेरे बेटे, मैं तुमसे कहता हूं कि मेरी पीड़ा की तरह अति दु:खदाई और कड़वी बात और कुछ नहीं हो सकती। और मैं पुन: तुमसे कहता हूं मेरे पुत्र, कि दूसरी ओर, मेरे आनन्द की तरह अति उत्तम और मीठी बात कुछ और नहीं हो सकती।

२२. हां, अपने विचार से मैंने (१८) अपने पिता लेही की तरह परमेश्वर को अपने आसन पर उन अगणित स्वर्गदूतों की भीड़ से घिरा हुआ देखा जो अपने परमेश्वर का गान और स्तुति करने की स्थिति में थे; और मेरी आत्मा वहां जाने के लिए आकुल हो उठी।

२३. लेकिन सुनो, (१९) मेरे हाथ पैरों में बल पुन: आ गया और मैं अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ और लोगों पर यह प्रकट किया कि मैंने (२०) परमेश्वर से पुनर्जन्म प्राप्त किया है।

२४. और तब से इस वर्तमान समय तक मैंने लगातार परिश्रम किया है जिससे लोगों से पश्चात्ताप करवाऊं और मैं उन्हें भी (२१) अति आनन्द का स्वाद चखाऊं जिसका स्वाद मैंने चखा था; जिससे वे भी (२२) परमात्मा से जन्म लें और (२३) पवित्र आत्मा से भर उठें।

२५. हे मेरे पुत्र, अब सुनो, प्रभु ने मेरे परिश्रम का फल अति आनन्द में दिया;

२६. क्योंकि जिन शब्दों को उसने मुझे बतलाया उन शब्दों के कारण बहुतों ने (२४) परमेश्वर से जन्म लिया, और जैसा आनन्द मैंने चखा उसी तरह उन्होंने भी चखा और जैसा मैंने देखा उसी तरह उन्होंने भी देखा, इस कारण जिन बातों को मैंने कहा, वे भी उन बातों को उसी तरह जानते हैं जिस तरह मैं जानता हूं और जो ज्ञान मुझमें है, वह परमेश्वर के विषय में है।

२७. और हर एक तरह की परीक्षाओं, कष्टों, और दिए गए दु:खों में मुझे सहायता दी गयी; हां, परमेश्वर ने मुझे (२५) कारागार से मुक्त किया, बन्धनों से छुड़वाया, और मृत्यु से बचाया; और हां, मैं उस पर विश्वास करता हूं और वह अब भी मेरी रक्षा करेगा।

२८. और मैं जानता हूं कि (२६) अन्तिम दिन में वह मुझे यश के साथ अपने साथ रहने के लिए ऊपर उठाएगा; और मैं सदैव के लिए उसका यशगान करता रहूंगा, क्योंकि वह हमारे पूर्वजों को मिश्र देश से सुरक्षित निकाल लाया था और उसने मिश्रियों को लाल सागर में निगल लिया था; और वह अपनी शक्ति के द्वारा उन्हें वचन दिए गए देश में ले गया और समय-समय पर दासता और बन्दी अवस्था से मुक्त करता रहा है।

२९. और हां, वह हमारे पूर्वजों को यरूशलेम देश से निकाल कर लाया; और अपनी अनन्त शक्ति के द्वारा उन्हें दासता और बन्दी अवस्था से समय-समय पर वर्तमान दिनों तक मुक्त करता रहा; और मैंने उनकी बन्दी अवस्था को सदैव स्मरण रखा; और मेरी तरह तुम भी उनकी बन्दी अवस्था को स्मरण रखना।

३०. लेकिन सुनो मेरे पुत्रो, इतना ही नहीं तुम्हें यह भी जानना चाहिए कि (२७) जहां तक तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करोगे, वहां तक तुम देश में प्रगति करते रहोगे; और तुम्हें यह भी जानना चाहिए कि जहां तक तुम परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना करोगे वहां तक तुम उसकी उपस्थिति से अलग कर दिए

(१७) देखो २६, २ नफी २८. (१८) १ नफी १:८. (१९) मू० २७:२३. (२०) देखो ३, मू० ५. (२१) पद्य २०-२२. (२२) देखो ३, मू० ५. (२३) १ नफी १०, १७-१९, २ नफी ३१:१३, १४, १७; १८; ३२:२, ५; अल० ३१:३६, ३४, ३८. इला० ५:४५; ३ नफी ९:२०; ११:३५, ३६; १२:१, २; १८:३७; १९:१३, १४. अध्याय ३०. ४ नफी १. (२४) देखो ३, मू० ५. (२५) अल० १४:२६-२९. (२६) देखो १६, मू० २३. (२७) देखो ८, २ नफी १. ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

जाओगे। यह सब उसी के शब्दों के अनुसार लिखा गया है।

अध्याय ३७

इलामन को अभिलेखों और अन्य पवित्र स्मारक की वस्तुओं का सौंपा जाना—गाजीलम—लिया होना—एक प्रकार की ईश्वर की वाणी।

१. और अब मेरे पुत्र इलामन, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम उन अभिलेखों को (१) अपने अधिकार में ले लो, जो मुझे सौंपे गए थे।

२. और मैं तुम्हें यह भी आज्ञा देता हूं कि तुम इन लोगों के विवरण को उसी तरह रखो जैसे कि मैंने (२) नफी की पटियों पर अंकित करके रखा है, और जिन बातों को मैंने गुप्त रखा उन्हें तुम भी गुप्त रखो, क्योंकि ये (३) विवेकपूर्ण उद्देश्य के लिए गुप्त रखे जाते हैं।

३. (४) पीतल की इन पटियों पर जो अंकित है, वह पवित्र धर्मशास्त्रों का अभिलेख और हमारे (५) पूर्वजों की आरम्भ से वंशावली भी है।

४. सुनो, हमारे पूर्वजों के द्वारा जो यह भविष्यवाणी की गई थी कि उन अभिलेखों को रखा जाएगा और (६) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दिया जाता रहेगा, और प्रभु के हाथ से वे तब तक सुरक्षित रखे जायेंगे जब तक कि वे हरएक राष्ट्र, जाति भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों और लोगों में पहुंच न जाएंगी और वे उनके रहस्यों को जान न जाएंगे।

५. और अब सुनो, अगर वे रखी गई तब उनकी (७) निर्मलता सुरक्षित रखनी चाहिए; हां, वे अपनी उज्ज्वलता सुरक्षित रखेंगी; और वे सब पटियां भी अपनी उज्ज्वलता सुरक्षित रखेंगी जिनमें पवित्र लेख है।

६. अब तुम सम्भवतः यह सोचो कि यह मेरी मूर्खता है; लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि छोटी-छोटी साधारण बातों से बड़ी-बड़ी घटनाएं होती हैं और कभी-कभी साधारण क्षुद्र-सी बातें बुद्धिमान को भ्रम में डाल देती हैं।

७. और प्रभु परमेश्वर अपने महान और अनन्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी न किसी माध्यम से काम करता है; और प्रभु किसी (८) क्षुद्र माध्यम से विवेकियों को चकित कर अनेकों के लिए मुक्ति लाता है।

८. परमेश्वर के विवेक में, इन वस्तुओं को सुरक्षित रखना आवश्यक है; क्योंकि इसने (९) इन लोगों के ज्ञान को बढ़ाया है, इनकी भूलों का इन्हें विश्वास कराया और परमेश्वर की जानकारी कराने के साथ इनकी आत्माओं को मुक्ति दिलाई है।

९. हां, मैं तुमसे कहता हूं कि इन पटियों पर अंकित यह अभिलेख अगर न होते तब आमोन और उसके भाई सहस्त्रों लमनायटियों के पूर्वजों की त्रुटिपूर्ण (१०) परम्पराओं का उन्हें विश्वास नहीं करा सकते थे; हां, इन अभिलेख के शब्दों ने उनसे पश्चात्ताप करवाया, अर्थात् इन्होंने उनके प्रभु परमेश्वर की जानकारी करवाई और अपने मुक्तिदाता यीशु मसीह में आनन्द मनाना सिखलाया।

१०. और यह कौन जानता है कि उनमें से हजारों को, और हमारे उन हजारों घमंडी नफायटी भाइयों को वे, जो पापों और दुष्टताओं से अपने-अपने हृदय को कठोर कर रहे हैं, अपने मुक्तिदाता की जानकारी करवाने में वे कितने महत्व के साधन सिद्ध होंगे।

११. और अभी मुझे इनके सभी रहस्यों के भेद बतलाए नहीं गए है; इसलिए मैं धैर्य रखूंगा।

१२. इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इन रहस्यों के (११) भेद विवेकमय कारण से गुप्त रखे गए हैं और यह कारण परमेश्वर को मालूम है; क्योंकि वह अपने सभी कार्यो पर विवेकपूर्ण विचार किया करता है और (१२) उसका पथ सीधा होता है जिस पर उसकी यात्रा (१३) अनन्त जीवनदायनी है।

१३. स्मरण रखो, स्मरण रखो ऐ मेरे पुत्र

(१) मू० २८:२०. (२) देखो ६, १ नफी १. (३) पद्य १२, १४, १८. इनो० १३-१८. मा० वाणी० ६-११. (४) देखो १, १ नफी ३. (५) देखो ४, १ नफी ५. (६) १ नफी ५, १६:१९. (७) १ नफी ५:१९. (८) सि० शर्त० ६४:३३. (९) मू० १:३-५. (१०) अल० १८:३६, २२:१२. (११) देखो ३. (१२) देखो २७, २ नफी ४. (१३) १ नफी १०:१९, अल० ७:२०.

ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

इलामन, परमेश्वर की आज्ञायें कितनी दृढ़ हैं। और उसने कहा था : (१४) अगर तुमने मेरी आज्ञाओं का पालन किया तब तुम देश में उन्नति करोगे—और अगर तुमने उन आज्ञाओं का पालन नहीं किया तो तुम उसकी उपस्थिति से अलग कर दिए जाओगे।

१४. अब याद रखो मेरे बेटे, परमेश्वर ने इन वस्तुओं को तुम्हें सौंपा जो कि पवित्र हैं; उसने उन्हें पवित्र रखा और (१५) अपने विवेकमय उद्देश्य के लिए उन्हें सुरक्षित भी रखेगा, जिससे कि वह भविष्य की पीढ़ियों को अपनी शक्ति दिखला सके।

१५. और अब सुनो, भविष्यवाणी की भावना में मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुमने परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया तब ये वस्तुएं जो कि पवित्र हैं, परमेश्वर की शक्ति द्वारा तुमसे ले ली जाएंगी, और तुम्हें शैतान को सौंप दिया जाएगा, जिससे कि वह तुम्हें हवा में तिनके के समान उड़ा सके।

१६. लेकिन तुमने अगर परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया, और प्रभु की आज्ञानुसार इन वस्तुओं को रखा (क्योंकि इन वस्तुओं को काम में लाने के लिए तुम प्रभु से आज्ञा प्राप्त करना) तब सुनो, तुमसे इन वस्तुओं को जगत या अधोलोक की कोई भी शक्ति छीन नहीं सकेगी, क्योंकि अपने वचनों को पूरा करने में परमेश्वर शक्तिमान है।

१७. वह जो भी वचन तुम्हें देगा उसे वह निभाएगा, क्योंकि उसने जो भी वचन हमारे हमारे पूर्वजों को दिए थे उसे उसने निभाए थे।

१८. क्योंकि उसने उन्हें वचन दिए थे कि इन वस्तुओं को वह अपने विवेकमय उद्देश्य के लिए सुरक्षित रखेगा जिससे कि वह (१६) भविष्य की पीढ़ियों को अपनी शक्ति दिखला सके।

१९. और अब सुनो, उसने (१७) अनेकों सहस्त्र लमनायटियों को सच्चाई का ज्ञान कराया और अपने इस एक उद्देश्य की पूर्ति की है; और उसने उनमें अपनी शक्ति दिखलाई और वह (१८) भविष्य की पीढ़ियों को भी उनके द्वारा अपनी शक्ति दिखलाएगा; इस कारण उनको सुरक्षित रखा जाएगा।

२०. इसलिए पुत्र इलामन, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि मेरी सभी बातों का पालन करने में तुम परिश्रम करना और साथ ही परमेश्वर की आज्ञाओं का जैसी वे लिखी हुई हैं; पालन करने में भी परिश्रम करना।

२१. और अब मैं तुम से (१९) उन चौबीस पटियों के विषय में कहूंगा जिन्हें मैं चाहता हूं कि तुम अपने पास रखो, जिससे कि अज्ञात रहस्यों और गुप्त कामों अर्थात् (२०) उन लोगों के गुप्त कामों के भेद जो कि नष्ट हो चुके हैं इन लोगों पर प्रकट हो; हां, उनके द्वारा की गई हत्यायें, चोरियां, लूट और अन्य घृणित कार्य की जानकारी इन लोगों को हो; और तुम इन (२१) अनुवादों को सुरक्षित रखना।

२२. क्योंकि सुनो, प्रभु ने देखा कि उसके लोगों ने अन्धकार में काम करना (२२) गुप्त हत्यायें और अन्य घृणित कार्य करना आरम्भ कर दिया है, इस कारण प्रभु ने कहा कि अगर वे पश्चात्ताप नहीं करेंगे, तब उनको पृथ्वी के ऊपर से (२३) मिटा दिया जाएगा।

२३. और प्रभु ने कहा : मैं अपने सेवक गाजीलम द्वारा (२४) एक पत्थर तैयार करवाऊंगा जो अंधकार में चमक कर प्रकाश देगा जिससे मैं अपने उन लोगों का पता लगाऊंगा जो (२५) मेरी सेवा करते हैं, और उनके उन भाइयों के कार्यों का पता लगाऊंगा जो कि गुप्त और अंधकार में किए गए घृणित और नीच कर्म हैं।

२४. और अब मेरे बेटे, इन (२६) अनुवादों को इसलिए तैयार किया गया था कि जिससे परमेश्वर की वह वाणी पूर्ण हो जिसे उसने इस प्रकार कहा था :

२५. मैं उनके हरएक (२७) गुप्त दुष्टता और घृणित कार्यों को अंधकार में से निकाल कर

(१४) देखो ८, २ नफी १. (१५) पद्य २, १२, १८; देखो ३. (१६) पद्य १९. (१७) अल० २३:५-१३. (१८) पद्य १८.
(१९) देखो ११, मू० ८. (२०) देखो ६, २ नफी १०. (२१) पद्य २३-२६, देखो १४, मू० ८. (२२) देखो ६, २ नफी १०.
(२३) देखो १०, मू० ८. (२४) देखो १४, मू० ८. (२५) देखो ६, २ नफी १०. (२६) देखो १४, मू० ८. (२७) देखो ६, २ नफी १०.

प्रकाश में लाऊंगा; और अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब मैं उन्हें (२८) धरती पर से मिटा दूंगा; और उनकी दुष्टता और घृणित कार्य को प्रकाश में लाकर उन सभी राष्ट्रों के सामने लाऊंगा जो इस समय से आगे भविष्य में देश के ऊपर अधिकार करेंगे।

२६. और अब, मेरे बेटे, हम यह देखते हैं कि उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया; इस कारण वे (२९) नष्ट कर दिए गए और इस तरह यहां तक परमेश्वर की वाणी पूरी हुई; हां, उनके गुप्त घृणित कार्य अन्धकार में से निकाल कर प्रकाश में लाकर हमारी (३०) जानकारी में लाए गए।

२७. और अब मेरे बेटे, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम उनकी शपथों, शर्तों, गुप्त घृणित कार्यों, उनके सब चिन्हों और चकित करने वाले कार्यों को लेकर अपने अधिकार में गुप्त रखो, जिससे ये लोग उन्हें जान न सकें, नहीं तो ये लोग भी अन्धकार में गिर जाएंगे और इन्हें भी नष्ट कर दिया जाएगा।

२८. क्योंकि सुनो, इस सारे देश पर यह शाप है कि परमेश्वर की शक्ति के द्वारा जो लोग अन्धेरे में काम करते हैं और जब उनके पाप के घड़े भर जाते हैं, तब वे नष्ट कर दिए जाते हैं; इस कारण मैं यह इच्छा करता हूं कि ये लोग नष्ट न किए जाएं।

२९. इसलिए उनकी शपथों और शर्तों की योजनाओं को इन लोगों से छिपाकर इन्हें केवल उनके दुष्ट कर्मों, हत्याओं, और घृणित कुकर्मों की बातें बताओ और इन्हें उन दुष्टताओं, हत्याओं और घृणित कर्मों को न करने की शिक्षा दो; और इन्हें तुम यह भी शिक्षा दो कि वे लोग इन्हीं बुरे कर्मों के कारण नष्ट कर दिए गए थे।

३०. क्योंकि सुनो, उन्होंने उन सभी भविष्य-वक्ताओं की हत्या की जिन्होंने उनमें जाकर उनके पापों से उन्हें अवगत कराया; और जिन लोगों की हत्या उन्होंने की उनके रक्त ने परमेश्वर से उनके हत्यारों से बदला लेने के लिए पुकारा और इस तरह परमेश्वर का न्याय इन अन्धकार और गुप्त षड्यन्त्र के कार्यों के करने वाले उनके हत्यारों के ऊपर पड़ा।

३१. और अंधकार और गुप्त षड्यन्त्रों के कार्यों को करने वाले लोगों के लिए देश सदा के लिए (३१) शापित रहेगा और अगर पाप का घड़ा भरने से पूर्व उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब वे नष्ट भी कर दिए जाएंगे।

३२. और अब, मेरे बेटे, मैंने जिन शब्दों को तुमसे कहा, उन्हें याद रखना; और उन गुप्त योजनाओं को विश्वास करके इन लोगों को दे मत देना परन्तु इन लोगों को पापों और बुरे कर्मों से सदैव घृणा करने की शिक्षा देना।

३३. उन लोगों को पश्चात्ताप करने और प्रभु मसीह पर विश्वास करने का उपदेश देना; उन्हें विनीत, अहंकार रहित और हृदय से नम्र रहने और मसीह पर विश्वास करके शैतान के दिए गए लालचों में न पड़ने की शिक्षा देना।

३४. उन्हें अच्छे कर्मों को करने से न थकने की और हृदय से विनीत और नम्र रहने की शिक्षा देना, क्योंकि इसी प्रकार के लोग अपनी आत्मा के लिए शान्ति प्राप्त करेंगे।

३५. ऐ मेरे बेटे, याद रखना और अपनी युवावस्था में बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सीखना; हां, अपनी युवावस्था में ही परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने को सीखना।

३६. हां, सभी सहायता के लिए (३२) परमेश्वर को पुकारो; अपने सभी कर्मों को प्रभु के लिए करो, और जहां भी जाओ, वहां प्रभु के लिए जाओ; तुम्हारे सभी विचार प्रभु के आधार पर हों; और तुम्हारे हृदय का प्रेम सदैव के लिए प्रभु पर रहे।

३७. अपने सभी कामों के लिए प्रभु से राय लो, और वह तुम्हारी भलाई के लिए तुम्हारा निर्देशन करेगा; रात को जब तुम विश्राम करो तब प्रभु का स्मरण करो जिससे कि वह सोते समय तुम्हारी रक्षा करे, और जब भोर को उठो तब परमेश्वर के प्रति तुम्हारा हृदय कृतज्ञता से भरा रहे; और अगर तुमने यह सब किया तब (३३) अन्तिम दिन तुम्हें उठा लिया जाएगा।

३८. और अब, मेरे बेटे, मैं तुमसे उस वस्तु के विषय में कहना चाहता हूं जिसको हमारे

(२८) देखो १०, मू० ८. (२९) देखो १०, मू० ८. (३०) देखो ६, २ नफी १०. (३१) पद्य २८, अल० ४५:१६. (३२) देखो ५, २ नफी ३२. (३३) देखो १६, मू० २३

पूर्वजों ने (३४) गेंद, निर्देशक, या लियाहोना कहा, जिसका अर्थ दिग्दर्शक यन्त्र होता है और जिसे प्रभु ने तैयार किया था।

३९. और सुनो, उस कारीगरी की वस्तु को कोई भी मनुष्य नहीं बना सकता। उसे हमारे पूर्वजों को जंगल में यात्रा करने के समय राह दिखाने के लिए तैयार किया गया था।

४०. और वह उनके परमेश्वर में विश्वास के अनुसार काम करता रहा, इसलिए अगर उन्होंने विश्वास किया कि जिस ओर परमेश्वर उन्हें ले जाना चाहता है, उसी ओर उस यन्त्र का कांटा धुरी पर घूमकर राह बताएगा; तो वैसा ही हुआ; इसलिए परमेश्वर की शक्ति से यह चमत्कार दिन प्रतिदिन उनके लिए हुए।

४१. ये चमत्कार तो साधारण-सी बात थी परन्तु फिर भी उन लोगों के लिए आश्चर्यजनक काम करते थे। वे आलसी हो गए और विश्वास करना भूल गए और उन्होंने परिश्रम करना भी छोड़ दिया तब उन आश्चर्यजनक कामों का होना समाप्त हो गया और उन्होंने अपनी यात्रा में प्रगति नहीं की।

४२. इसलिए वे जंगल में ही रह गए, अर्थात् अपनी सीधी यात्रा पर आगे न बढ़े और अपने पापों के कारण उन्हें भूख और प्यास का कष्ट झेलना पड़ा।

४३. और अब, मेरे बेटे, मैं चाहता हूं कि तुम यह समझो कि ये सब बातें प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहतीं; क्योंकि जिस प्रकार हमारे पूर्वज इस दिग्दर्शक यंत्र पर ध्यान देने में आलसी हो गए थे और (ये सांसारिक वस्तुएं थीं) तब वे समृद्ध न हो सके थे; उसी प्रकार ये बातें उन विषयों पर भी लागू होती हैं, जो आध्यात्मिक हैं।

४४. क्योंकि सुनो, जिस प्रकार हमारे पूर्वजों को उस दिग्दर्शक यन्त्र पर ध्यान देना सरल था जो उन्हें वचन दिए देश की ओर सीधी राह दिखाता था, उसी प्रकार मसीह की उन बातों पर ध्यान देना सरल है जो तुम्हें (३५) अनन्त आनन्द प्राप्ति की ओर सीधी राह बताता है।

४५. और अब मैं कहता हूं कि क्या यह वैसी ही बात नहीं है? क्योंकि जिस प्रकार इस (३६) दिग्दर्शक यंत्र द्वारा बताई गई राह पर चलकर हमारे पूर्वज (३७) वचन दिए गए देश में आए, उसी प्रकार मसीह की वाणी द्वारा बताई गई राह पर चलकर हम इस दुखदाई घाटी में से निकल कर वचन दिए आनन्द देश में पहुंचेंगे।

४६. हे मेरे बेटे, राह की सरलता के कारण हमें आलस नहीं करना चाहिए; क्योंकि यही बात हमारे पूर्वजों के साथ हुई थी। क्योंकि उनके लिए यह योजना थी कि यदि वे देखेंगे तब जीवित रहेंगे ठीक उसी तरह की परिस्थिति हमारे लिए लिए भी है। राह तैयार की जा चुकी है, और अगर हम देख कर चलें तो सदैव के लिए जीवित रहेंगे।

४७. और अब, मेरे बेटे, इन पवित्र वस्तुओं को सम्भाल कर रखना और परमेश्वर की ओर देखकर जीवित रहो। इन लोगों में जाओ, वाणी की घोषणा करो, और शान्त रहो। मेरे बेटे, विदा हो।

अध्याय ३८

अलमा की वे आज्ञायें जो उसने अपने पुत्र सिबलोन को दी थी।

भक्ति के लिए प्रशंसा करना, विनीत रहने और आत्मसंयम की सम्मत्ति देना।

१. मेरे बेटे, मेरी बात पर कान दो, क्योंकि मैं जिस प्रकार हलामन से बातें कहीं उसी प्रकार तुमसे भी कह रहा हूं, कि (१) जितना तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करोगे उतना ही देश में तुम प्रगति करोगे; और अगर तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तब तुम्हें उसकी उपस्थिति से अलग कर दिया जाएगा।

२. अब मेरे बेटे, मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर में दृढ़ता और भक्ति के कारण तुमसे मुझे महान आनन्द प्राप्त होगा; क्योंकि मैं विश्वास करता हूं कि जिस प्रकार अपनी तरुण अवस्था

(३४) देखो ४, १ नफी १६. (३५) देखो २७, २ नफी ९. (३६) पद्य ३८, देखो ४, १ नफी १६. (३७) देखो १, नफी २. अध्याय ३८. (१) देखो ८, २ नफी १.

में तुम परमेश्वर की ओर देख रहे हो उसी प्रकार आगे भी उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहोगे; क्योंकि धन्य हैं वे लोग जिनको भक्ति अन्त तक (२) रहती है।

३. मेरे बेटे, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हारी भक्ति, परिश्रम, सहनशीलता और (३) जोरमायटी लोगों में दीर्घ यातनायें सहने के कारण तुमसे मुझे महान आनन्द प्राप्त भी हो चुका है।

४. क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम बन्धनों से बांधे गए थे और मैं यह भी जानता हूं कि तुम पर प्रभु की वाणी बोलने के कारण पथराव किए गए थे; और तुमने इन सब कष्टों को धैर्य के साथ झेला, क्योंकि तुम्हारे साथ प्रभु थे; और अब तुम यह जानते हो कि प्रभु ने तुम्हें बचाया था।

५. और अब मेरे बेटे सिबलोन, मैं चाहता हूं कि तुम यह स्मरण रखो कि जितना विश्वास तुम प्रभु पर करोगे उतना ही तुम्हें तुम्हारी परीक्षाओं, कष्टों और दुखों से मुक्त किया जाएगा और (४) अन्तिम दिन को ऊपर उठा लिया जाएगा।

६. मेरे बेटे, मैं यह नहीं चाहता कि तुम यह सोचो कि ये सब बातें मैं स्वयं जानता हूं मेरे अन्दर परमेश्वर की जो आत्मा है वही इन बातों की जानकारी मुझे कराती है; क्योंकि अगर मैं (५) परमात्मा में जन्म नहीं लेता तब मैं इन बातों को कदापि नहीं जान पाता।

७. सुनो, प्रभु ने अपनी महान दया के कारण अपने स्वर्गदूत को भेजकर मुझसे कहा कि मैं उसके लोगों में विनाश के कार्यों को बन्द करवाऊं; और हां, मैंने (६) स्वर्गदूत को आमने-सामने देखा और उसने मुझसे बातें कीं, और उसकी वाणी मेघ-गर्जन के समान थी जिससे सारी धरती हिल उठी।

८. और ऐसा हुआ कि तीन दिन और (७) तीन रात मैं भारी आत्मवेदना से अति पीड़ित रहा; और जब मैंने प्रभु यीशु मसीह को पुकारा तब कहीं जाकर मैं अपने पापों के प्रति क्षमा प्राप्त कर सका। लेकिन सुनो, मैंने उसको पुकारा और मैंने आत्मशान्ति पाई।

९. और अब मेरे बेटे, मैंने तुम्हें यह इसलिए बतलाया कि जिससे तुम मुझ से यह सीखो कि कि (८) बचने का कोई भी अन्य रास्ता या उपाय नहीं है, सिवाय मसीह में या मसीह के द्वारा। सुनो, वह (९) जगत का जीवन और प्रकाश है। सुनो वह सत्य का वचन और धर्म है।

१०. जिस तरह तुमने परमेश्वर की वाणी का प्रचार करना आरम्भ किया है, मैं चाहता हूं कि उसी प्रकार तुम करते रहो; और मैं यह भी चाहता हूं कि इस काम में तुम परिश्रमी और धैर्यवान बने रहो।

११. देखना कहीं तुम अहंकार में न पड़ जाना और अपने ज्ञान और बल पर घमण्ड न करना।

१२. साहस से काम लो परन्तु आवश्यकता से अधिक नहीं; अपनी उत्तेजनाओं पर लगाम रखो, जिससे कि तुम प्रेम से परिपूर्ण रहो; और आलस मत करना।

१३. (१०) जोरमायटियों की तरह प्रार्थना मत करना क्योंकि तुम देख ही रहे हो कि वे मनुष्य को सुनाने और अपनी बुद्धिमानी की प्रशंसा के लिए प्रार्थना करते हैं।

१४. यह मत कहना : हे परमेश्वर हम तुझे धन्यवाद देते हैं क्योंकि हम अपने भाइयों से उत्तम हैं; परन्तु यह कहना : हे परमेश्वर, हमारी अयोग्यता को क्षमा करो और हमारे भाइयों को दया की दृष्टि से देखो—हां, अपनी अयोग्यता को परमेश्वर के सामने सदैव स्वीकार करो।

१५. परमेश्वर तुम्हारी आत्मा को आशीर्वाद दे, और अन्तिम दिन को अपने राज्य में शान्ति के साथ बैठने के लिए स्वीकार करे। मेरे बेटे, अब जाओ और इन लोगों को परमेश्वर की वाणी का उपदेश दो। शान्त रहो मेरे बेटे और विदा हो।

अलमा की वे आज्ञायें जिन्हें उसने अपने पुत्र कोरियन्दन को दी थीं।

अध्याय ३९ से ४२

(२) देखो ८, २ नफी ३१. (३) देखो ३६, अल० ३०. (४) देखो १६, मू० २३. (५) देखो ३, मू० ५. (६) मू० २७:११-१७. (७) मू० २७:१९-२३. अल० ३६:१०, १६. (८) देखो ४; मू० ५. (९) देखो १३, मू० १६. (१०) देखो ३६, अल० ३०.

ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

अध्याय ३९

व्यभिचार के कारण कोरियन्दन को झिड़का जाना—उसके पापमय आचरण से जोरमायटियों के विश्वास पर प्रभाव पड़ना—मसीह की उद्धार-योजना का पूर्वकाल पर प्रभावित होना।

१. और अब मेरे बेटे, मैंने जो कुछ तुम्हारे भाई से कहा उससे कुछ अधिक मुझे तुमसे कहना है; क्योंकि क्या तुमने अपने भाई की स्थिरता, उसकी भक्ति, और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में उसके परिश्रम को नहीं देखा? देखो, क्या उसने तुम्हारे लिए अच्छा उदाहरण नहीं पेश किया।

२. क्योंकि (१) जोरमायटी लोगों में मेरी बातों पर जितना ध्यान तुम्हारे भाई ने दिया उतना ध्यान तुमने नहीं दिया। मेरे पास प्रतिकूल ये बातें हैं कि तुम अपने बल और बुद्धि पर अहंकार करते रहे।

३. इतना ही नहीं मेरे बेटे, तुमने वह काम किया जिसके द्वारा मुझे बहुत कष्ट हुआ; तुम धार्मिक प्रचार के काम को त्याग कर सीरन देश में लमनायटियों की सीमा के अन्दर वेश्या ईसाबेल के पीछे गए थे।

४. उसने बहुतों को अपनी ओर आकर्षित किया है; परन्तु तुम्हारे लिए यह कोई बहाना नहीं था तुम्हें तो उस काम में लगे रहना चाहिए था जिसको सौंपा गया था।

५. मेरे बेटे, क्या तुम यह नहीं जानते कि इस तरह के कर्म प्रभु के लिए घृणापूर्ण है? हां, यह केवल निर्दोषों को रक्त बहाने और पवित्र आत्मा को अस्वीकार करने को छोड़ कर सब से (२) अधिक घृणापूर्ण कर्म है।

६. क्योंकि सुनो, जब कि पवित्र आत्मा तुम्हारे अन्दर एक बार स्थान प्राप्त कर चुकी है, और जानते हुए भी उसको अस्वीकार करते हो तब सुनो, यह पाप (३) क्षमा योग्य नहीं; और जो कोई परमेश्वर के प्रकाश और ज्ञान में हत्या (४) करता है उसके लिए क्षमा प्राप्त करना सरल नहीं है; हां मेरे बेटे, मैं तुमसे कहता हूं कि उसके लिए क्षमा प्राप्त करना सरल नहीं है।

७. और अब मेरे बेटे, मैं परमेश्वर से कामना करता हूं कि तुम इतनी बड़ी भूल के अपराधी न हुए होते। अगर यह तुम्हारे हित में न होता तब मैं तुम्हारे अपराधों की चर्चा करके तुम्हारी आत्मा को दुख न देता।

८. लेकिन सुनो, तुम अपने अपराधों को परमेश्वर से नहीं छुपा सकते; और अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब वे सब अन्तिम दिन को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी के रूप में खड़े होंगे।

९. और अब मेरे बेटे, मैं चाहता हूं कि तुम अपने पाप कर्मों को त्याग दो, सांसारिक सौन्दर्य के पीछे मत जाओ और (५) इनसे दूर रहो; और अगर तुमने यह सब नहीं किया तब तुम किसी भी तरह से परमेश्वर के अधिकारी नहीं हो सकते। यह सब याद रखो, अपने आपको सम्भालो, और बुरे कर्मों से हाथ खींच लो।

१०. मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम अपने ऊपर ली हुई जिम्मेवारियों के विषय में अपने बड़े भाइयों से सम्मतियां लिया करो क्योंकि अभी तुम अपनी तरुणावस्था में हो और तुम्हें अपने भाइयों से सहायता पाने की आवश्यकता है। और तुम उनकी सम्मतियों पर ध्यान दिया करना।

११. किसी भी व्यर्थ की या मूर्खतापूर्ण बातों में मत पड़ो; शैतान की बातों में पड़ कर (६) उन दुष्ट वैश्याओं के पीछे अपने हृदय को मत दौड़ाओ। हे बेटे सुनो, जोरमायटियों के ऊपर तुमने कितने बड़े अत्याचार किए हैं; क्योंकि जब उन्होंने तुम्हारे आचरण को देखा तब उन्होंने मेरी बातों पर विश्वास नहीं किया।

१२. और अब, परमेश्वर की आत्मा मुझसे कहती है: अपने बच्चों को अच्छे काम करने की आज्ञा दो नहीं तो वे बहुतों के हृदयों को बहका कर नष्ट कर देंगे; इस कारण मेरे बेटे, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि परमेश्वर के भय के कारण तुम अपने पापों से हाथ खींच लो।

१३. और अपनी पूरी बुद्धि, बल और योग्यता के साथ प्रभु की ओर घूमो; जिससे और लोगों को पापकर्म की ओर न ले जा सको परन्तु उनमें लौट कर अपनी भूलों को स्वीकार कर सको।

(१) देखो ३६, अल० ३०. (२) पद्य ७, ११, देखो ९, २ नफी २८. (३) मरो० ८:२८. (४) पद्य ५. (५) ३ नफी १२:३०. (६) पद्य ३, ७-९.

१४. धन और निरर्थक सांसारिक वस्तुओं को मत खोजो; क्योंकि तुम उन्हें अपने साथ नहीं ले जा सकते।

१५. और अब मेरे बेटे, मैं तुमसे मसीह के आगमन के विषय में कुछ कहना चाहता हूं। सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि निश्चय ही जगत के पापों को हरने के लिए वह आएगा; हां, वह अपने लोगों के लिए मुक्ति का सुसमाचार लेकर आएगा।

१६. और अब मेरे बेटे, तुम इस उद्देश्य से पुकारे गए थे कि जिससे इन लोगों में इस सुसमाचार की घोषणा करो और उनके विचारों को अनुकूल करो अर्थात् उनके पास मुक्ति आ सके और वे उसके आने के समय उसकी वाणी को सुनने के लिए अपनी सन्तानों को तैयार कर सकें।

१७. और अब, इस विषय पर मैं तुम्हारे विचारों का भार कुछ कम करना चाहता हूं। तुम आश्चर्य कर रहे हो कि इसकी जानकारी इतने आगे से क्यों कराई गई है। सुनो, क्या इस समय एक आत्मा परमेश्वर के लिए उतनी ही मूल्यवान नहीं है जितनी कि उसके आने के समय में होगी?

१८. क्या मुक्ति की योजना इन लोगों को बतानी उतनी ही आवश्यक नहीं है जितनी कि इन लोगों की सन्तानों को बतानी आवश्यक होगी?

१९. क्या प्रभु के लिए (७) इस समय अपने स्वर्गदूत को भेज कर हमसे इन शुभ सन्देशों की घोषणा करना उतना ही सरल नहीं है जितना कि हमारी सन्तानों से या उसके आने के पश्चात् सरल होगा?

अध्याय ४०

अलमा द्वारा कोरियन्दन को उपदेश देने का क्रम—पुनर्जीवन सारे विश्व के लिए—मृत्यु और पुनर्जीवन में धार्मिक और पापियों की भिन्न स्थितियां—वास्तव में पूर्व-स्थिति की स्थापना।

१. अब मेरे बेटे, यहां मैं तुमसे और कुछ कहना चाहता हूं; क्योंकि मैं देखता हूं कि (१) मृत लोगों के पुनर्जीवन प्राप्त करने के विषय में तुम चिन्तित हो।

२. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि मसीह के आने तक पुनर्जीवन प्राप्त नहीं होगा, दूसरे शब्दों में यह (२) नश्वर अमरत्व को प्राप्त नहीं करता, और यह भ्रष्टता शुद्धता में परिवर्तित नहीं होती।

३. सुनो, वह मृतकों के लिए पुनर्जीवन लाता है। परन्तु मेरे बेटे, पुनर्जीवन अभी नहीं होगा। यद्यपि बहुत से रहस्य हैं जिसका भेद केवल परमेश्वर ही जानता है, तथापि मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूं। मैं एक ऐसी बात तुम्हें बताता हूं जिसके विषय में मैंने परिश्रम करके परमेश्वर से जांच की और वह है पुनर्जीवित होने के विषय में।

४. सुनो, एक समय निर्धारित किया गया है, जबकि सभी मरे हुए लोग जीवित हो उठेंगे। वह समय कब आएगा यह कोई नहीं जानता; केवल परमेश्वर ही वह निर्धारित समय जानता है।

५. मरे हुए लोग केवल एक ही बार, दो बार या तीन बार जिलाए जाएंगे—यह महत्वपूर्ण नहीं; क्योंकि यह सब केवल परमेश्वर ही जानता है; मेरे लिए इतना ही जानना पर्याप्त है कि एक समय निर्धारित है जब कि सभी मृत लोग जिलाए जाएंगे।

६. मरने और पुनर्जीवित होने के बीच में कुछ समय का होना आवश्यक है।

७. और अब मैं यह जांच करूंगा कि सांसारिक मृत्यु और पुनर्जीवित होने तक मनुष्य की आत्माओं का क्या होता है।

८. मनुष्य के लिए कितनी बार पुनर्जीवित हो उठने का समय निर्धारित किया गया है यह महत्व की बात नहीं; क्योंकि सभी मनुष्य एक ही समय मृत्यु को नहीं प्राप्त होते और यह भी कोई महत्व नहीं रखता; क्योंकि सभी समय परमेश्वर के लिए एक समान है। समय की विभक्ति केवल मनुष्य के लिए है।

९. इस कारण मनुष्यों के पुनर्जीवित हो उठने के लिए समय निर्धारित है और मृत्यु और पुन:जीवित हो उठने के बीच एक समय है। इस समय के बीच मनुष्य की आत्माओं का क्या होता है इसकी जांच मैंने परिश्रम के साथ प्रभु से की; और मैंने जो कुछ जाना वह यह है।

(७) मू० ३:२-२७. २७:११-१७. अल० ११:३१, १३:२४. देखो ४, २ नफी २, १० और १३, २ नफी ९.

अध्याय ४०. (१) देखो ४, २ नफी २. (२) मू० १६:१०, ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

१०. जब पुनर्जीवित हो उठने का समय आएगा तब उन्हें मालूम होगा कि परमेश्‍वर ही मनुष्यों के लिए निर्धारित समय को जानता है।

११. और अब, मृत्यु और पुनर्जीवित होने के मध्य में आत्मा की स्थिति पर—सुनो, एक स्वर्गदूत के द्वारा मुझे यह मालूम हुआ कि सभी लोगों की आत्मा ज्योंही इस पार्थिव शरीर से अलग होती है, त्योंही (३) सभी लोगों की आत्मा चाहे वे भली हों या बुरी, उस परमेश्‍वर के पास ले जाई जाती है जिसने उन्हें जीवन दिया था।

१२. और तब ऐसा किया जाएगा कि धार्मिक लोगों की आत्माओं को वह आनन्द प्राप्त होगा (४) जिसे स्वर्ग कहते हैं, जो कि विश्राम और शान्ति का वह समय होगा जहां अपने सभी कष्टों, चिन्ताओं और दुखों से छुटकारा मिलेगा।

१३. और तब ऐसा भी होगा कि पापियों की आत्मा जो बुरी हैं, क्योंकि उनके अन्दर प्रभु की आत्मा का कोई भाग या न्यून अंश भी नहीं है, क्योंकि उसने अच्छे कर्मों के बदले बुरे कर्मों को चुना था; जिससे उनके (५) अन्दर शैतान की आत्मा प्रवेश कर चुकी थी और उनके शरीर पर अधिकार कर लिया था, उनको बाहरी अन्धकार में फेंक दिया जाएगा; (६) और तब रुदन मचेगा, चिल्लाहट होगी, दांत पीसे जाएंगे और यह सब होगा उन्हीं के पापों के द्वारा क्योंकि शैतान की इच्छा ने उन्हें अपनी दासता में कर लिया था।

१४. पापियों की आत्मा का यही हाल होगा; हां, वे (७) अन्धकार में भयानक स्थिति में होंगी और परमेश्‍वर की कोपाग्नि से भयानक दिखाई देंगी; इस प्रकार वे इस स्थिति में और धार्मिक लोग (८) स्वर्ग में तब तक रहेंगे जब तक कि उनको पुनर्जीवित न किया जाएगा।

१५. कुछ लोग हैं जो पुनर्जीवित होने से पहले आत्मा के इस सुख या दुख को प्रथम पुनर्जीवन मानते हैं। हां, मैं स्वीकार करता हूं कि कहे अनुसार आत्मा को ऊपर (९) उठा कर सुख या दुर्गति में करना पुनर्जीवन कहा जा सकता है।

१६. और सुनो, पुनः यह कहा गया है कि (१०) एक प्रथम पुनर्जीवन है उनके लिए जो पहले थे, या वर्तमान में हैं और जो मसीह के मर कर पुनर्जीवन है उनके लिए जो पहले थे, या वर्तमान में हैं और जो मसीह के मर कर पुनर्जीवित होने के समय तक रहेंगे।

१७. मैं यह नहीं सोचता कि यह प्रथम पुन-र्जीवित होना जिसके विषय में इस प्रकार कहा गया है—वह (११) आत्मा का पुनर्जीवित होना और उसका सुख या दुख में पड़ना होता है। यह मत सोचो कि ऐसा होता है।

१८. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं; लेकिन इसका अर्थ होता है (१२) आदम के समय से मसीह के पुनर्जीवित हो जाने तक के लोगों की आत्मा का शरीर के साथ (१३) पुनर्मिलन होना।

१९. जिन धार्मिक और पापियों के विषय में कहा जा चुका है उनके विषय में मैं यह नहीं कहता कि उन सब की आत्मा और शरीर का पुनर्मिलन एक ही साथ होगा; मेरे लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि सबका यह पुनर्मिलन होगा; दूसरे शब्दों में उन सबका (१४) पुनर्मिलन प्राप्त करना उन लोगों से पहिले होगा जो मसीह के मृत होकर पुनर्जीवित होने के पश्‍चात् मृत्यु को प्राप्त होंगे।

२०. अब मेरे बेटे, मैं यह नहीं कहता कि मसीह के फिर से जीवित हो जाने के समय वे सब भी पुनः जी उठेंगे; लेकिन सुनो, मैं अपने विचार देता हूं कि मसीह के पुनः जीवित होकर स्वर्ग में जाने के समय (१५) धार्मिक लोगों की आत्माओं का मिलन उनके शरीरों के साथ होगा।

२१. यह उसके पुनर्जीवित होने के समय होगा, या उसके पश्‍चात् यह मैं नहीं कह सकता; लेकिन मैं यह कह सकता हूं कि (१६) मृत्यु और शरीर के पुनर्जीवित होने के मध्य एक काल है, और आत्मा के सुख या दुःख और मनुष्यों को पुनर्जीवित होकर आत्मा और शरीर के मिलन के साथ

(३) पद्य १५, १७सभो० १२:७. (४) देखो १२, २नफी ९. (५) देखो ९, २नफी ९. (६) मू० १६:२, देखो ११, १नफी १५. (७) पद्य १३. (८) देखो १२, २ नफी ९. (९) देखो ३. (१०) देखो ७, याकू० ४. (११) देखो ३. (१२) देखो ४, २ नफी ९. (१३) पद्य १९, २०. (१४) पद्य १६, १८, २०. (१५) देखो ७, या० ४. (१६) पद्य ६, ९, ११-१५.

ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

परमेश्वर के सामने उनके कर्मों के अनुसार न्याय के मध्य एक अवधि है।

२२. यह उन बातों को पूर्वावस्था में लाता है जिनको भविष्यवक्ताओं के मुख से कहा गया है।

२३. (१७) आत्मा को शरीर से और शरीर को आत्मा से मिलाया जाएगा और शरीर के हरएक भाग और जोड़ को शरीर के साथ पूर्वावस्था में किया जाएगा; यहां तक कि सिर का एक बाल भी खोया नहीं जाएगा; बल्कि हरएक अवयवों को शरीर में पुनर्स्थापित किया जाएगा।

२४. और अब मेरे बेटे, यह वह पूर्वावस्था है जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं के मुख से कहा गया था।

२५. और तब परमेश्वर के राज्य में धार्मिक लोग चमकेंगे।

२६. लेकिन सुनो, (१८) पापियों की भयानक मृत्यु होती है; क्योंकि वे धार्मिक बातों के लिए मृतक के समान होते हैं क्योंकि वे अशुद्ध होते हैं और कोई भी (१९) अशुद्ध वस्तु परमेश्वर के राज्य की अधिकारी नहीं होती; परन्तु उन्हें अपने किए हुए बुरे कर्मों के फल भोगने के लिए बाहर फेंक दिया जाता है, और वे कड़वे प्याले का मल पीते हैं।

अध्याय ४१

अलमा द्वारा कोरियन्दन को उपदेश का क्रम—पुनर्स्थापना से अभिप्राय—मनुष्यों का न्याय उनके कर्मों और इच्छाओं के अनुसार—स्वयं निर्णय करना।

१. और अब मेरे बेटे, जिस पुनर्स्थापना के विषय में मैंने कहा था उसके विषय में मुझको कुछ कहना है; क्योंकि सुनो, कुछ लोग इस विषय के कारण शास्त्र को छोड़कर बहुत दूर भटक गए हैं। और मैं देखता हूं कि इस विषय पर तुम भी चिन्तित हो। परन्तु सुनो, मैं तुम्हें समझाऊंगा।

२. मैं तुमसे कहता हूं मेरे बेटे, परमेश्वर के न्याय के साथ पुनर्स्थापना आवश्यक है; क्योंकि यह अनिवार्य है कि सभी वस्तुयें उनकी पूर्वावस्था में की जाएं। सुनो, मसीह की शक्ति और उसके पुनर्जीवित होने के अनुसार यह आवश्यक और उचित है कि (१) मनुष्य की आत्मा उसके शरीर के साथ पुन: मिला दी जाए और शरीर का हरएक भाग शरीर के साथ जोड़ दिया जाए।

३. परमेश्वर के न्याय के अनुसार यह भी आवश्यक है कि लोगों का न्याय उनके कर्मों के अनुसार हो; और (२) अगर इस जीवन में उनके कर्म अच्छे रहे और उनके हृदयों की इच्छायें अच्छी रहीं, तब अन्तिम दिन को वे इन अच्छाइयों के साथ पूर्वावस्था को प्राप्त होंगे।

४. और (३) अगर उनके कर्म बुरे हैं तब वे बुरे कर्मों के लिए पूर्वावस्था को प्राप्त होंगे। इसलिए सभी बातें यथावत् उनके पूर्व प्राकृतिक स्थिति के अनुसार की जाएगी—पार्थिव (४) अमर किया जाएगा, दूषित शुद्ध किया जाएगा, और परमेश्वर के राज्य में अधिकार प्राप्त करने के लिए अनन्त आनन्द प्राप्त होगा या (५) शैतान के राज्य में प्रवेश कर अनन्त दुर्गति प्राप्त होगी; एक हाथ की ओर वह है और दूसरे हाथ की ओर यह।

५. एक (६) आनन्द और अच्छाइयों की इच्छानुसार आनन्द और उत्तम अवस्था में कर दिया जाता है और (७) दूसरा अपनी बुराइयों की इच्छा अनुसार बुरी स्थिति में किया जाता है; क्योंकि जिस प्रकार उसने सारे दिन बुरे कर्म किए थे उसी प्रकार जब अन्धकार आयेगा तब उसको पुरस्कार भी मिलेगा।

६. और ऐसा ही दूसरी ओर है। अगर उसने पश्चात्ताप कर लिया और (८) अपने अन्त समय तक धार्मिकता की कामना की तब उसको धार्मिकता का इनाम मिलेगा।

७. ये वे लोग हैं जिन्हें प्रभु ने मुक्त किया है; हां, ये वे लोग हैं जिनको (९) अन्तहीन अन्धकार से बचा लिया गया है; इस प्रकार वे या तो उत्थान करें या पतित हों; क्योंकि सुनो, वे अच्छे कर्म या

(१७) अल० ११:४१, ४५, ४१:२. देखो ४, २ नफी २. (१८) देखो १७, अल० १२. (१९) अल० ११:३७. अध्याय ४१. (१) देखो १७, अल० ४०. (२) पद्य ६, ७, १४. (३) पद्य १०-१३, १५. (४) मू० १६:१०, देखो ४, २ नफी २. (५) देखो १३, या० ६. (६) देखो २. (७) देखो ३. (८) देखो २. (९) देखो १०, या० ६. ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

बुरे कर्म करने के लिए स्वयं निर्णायक हैं।

८. (१०) परमेश्वर का निर्णय बदला नहीं जा सकता; इसलिए रास्ता तैयार किया जा चुका है जिससे उस पर कोई भी चलकर बच सकता है।

९. और अब मेरे बेटे, सिद्धान्त की जिन बातों पर तुमने भूल करने का साहस किया था उन्हीं बातों पर अपने परमेश्वर के विरुद्ध भूल करने का एक बार भी और साहस मत करना।

१०. पूर्वावस्था में किए जाने की कही गई बातों को सुनकर यह मत सोचना कि तुम्हें पूर्वावस्था में करके पाप से आनन्द प्राप्त होगा। सुनो मैं तुम से कहता हूं कि पाप (११) कभी भी आनन्ददायी नहीं हुआ है।

११. और अब मेरे बेटे, जो सभी मनुष्य सांसारिक विषय-वासनाओं में लिप्त हैं, वे सब कड़ुआहट के मध्य पापों के बन्धनों से बंधे हुए हैं; वे इस संसार में बिना परमेश्वर के होकर परमेश्वर के स्वभाव के प्रतिकूल भटक गए हैं; इसलिए वे (१२) आनन्द की प्राकृतिक अवस्था के प्रतिकूल हैं।

१२. और अब सुनो, क्या पूर्वावस्था का अर्थ होता है किसी वस्तु को उसके प्राकृतिक स्वरूप में लेकर अप्राकृतिक स्थिति में कर देना अर्थात् उसके प्राकृतिक स्वरूप को प्रतिकूल अवस्था में करना?

१३. हे मेरे बेटे, ऐसी बात नहीं है (१३) पूर्वावस्था का अर्थ होता है दुष्टता के लिए दुःख फिर से लाना अर्थात् सांसारिक विषय-वासना के लिए वह जो वासनायुक्त है, शैतानी के लिए वह जो शैतानीपूर्ण है (१४) अच्छाइयों के लिए वह जो अच्छाइयां हैं, धार्मिकता के लिए वह जो धार्मिक है; न्याय के लिए वह जो न्यायपूर्ण है; और दया के लिए वह जो दयापूर्ण है।

१४. इस कारण मेरे बेटे, अपने बन्धुओं के प्रति दयावान रहना; उचित व्यवहार करना, धर्मानुसार निर्णय करना और लगातार भलाई करना; अगर तुमने यह सब किया तब फल को प्राप्त करोगे; हां, तुममें दया, न्याय, धर्म द्वारा निर्णय की पुनर्स्थापना की जाएगी; और तुम्हें पुनः अच्छे फल प्राप्त होंगे।

१५. क्योंकि जो तुम दोगे वह तुम्हें वापस लौटा कर उसकी तुममें पुनर्स्थापना की जाएगी; इसलिए पुनर्स्थापना की व्यवस्था पापियों को (१५) पूर्ण रूप से अपराधी ठहराती है न कि उन्हें ठीक बताती है।

अध्याय ४२

अलमा द्वारा कोरियन्टन को उपदेश देने का क्रम—न्याय और दया की व्याख्या—जीवन का वृक्ष—मानव जीवन परीक्षा का समय—आध्यात्मिक और लौकिक मृत्यु—पश्चात्ताप—प्रायश्चित—नियम—दण्ड, सब आवश्यक।

१. और अब मेरे बेटे, मैं देखता हूं कि तुम उन विषयों पर चिन्तित हो जिन्हें तुम समझ नहीं पा रहे हो — और वह है पापी को दण्ड देने में परमेश्वर का न्याय; क्योंकि तुम सोचते हो कि पापी को दुर्गति की स्थिति में करना उचित नहीं।

२. अब सुनो मेरे बेटे, मैं तुम्हें इस बात को समझाऊंगा। क्योंकि सुनो, जब प्रभु परमेश्वर ने हमारे प्रथम माता-पिता को भूमि जोतकर परिश्रम करने के लिए अदन के बाग से बाहर निकाला तब (१) जहां से वे निकाले गए थे उस अदन के बगीचे के पूरब की ओर उसने जीवन के वृक्ष की रक्षा करने के लिए एक स्वर्गदूत को और चारों ओर घूमने वाले ज्वाला की तलवार को रखा।

३. अब हम देखते हैं कि उचित और अनुचित जानकर मनुष्य परमेश्वर की तरह हो गया; और वह अपने हाथ को बढ़ाकर जीवन के वृक्ष को खाकर अमर हो सकता था, इसलिए प्रभु परमेश्वर ने स्वर्गदूत और ज्वाला की तलवार को नियुक्त किया जिससे मनुष्य उस फल को न प्राप्त कर सके।

४. इस प्रकार हम देखते हैं कि मनुष्य को पश्चात्ताप करने का एक समय दिया गया है; हां, (२) एक परीक्षा का समय जिसमें पश्चात्ताप

(१०) मार० ६:१६. (११) पद्य ११, १२. (१२) पद्य १०, १२. (१३) देखो ३. (१४) देखो २. (१५) अल० ४२:२८.
अध्याय ४२. (१) देखो १३, मू० २. (२) देखो २७, अल० १२.

करने और परमेश्वर की सेवा करने का अवसर दिया गया है।

५. क्योंकि सुनो, अगर आदम उसी समय हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल खा लेता तब परमेश्वर की वाणी के अनुसार वह (३) अमर हो जाता और पश्चात्ताप करने का अवसर उसे नहीं मिलता; और हां, परमेश्वर की वाणी (४) व्यर्थ हो जाती और मुक्ति की महान योजना भी निरर्थक हो जाती।

६. लेकिन सुनो, मनुष्य के लिए मृत्यु नियुक्त थी, इसलिए जब कि वह जीवन के वृक्ष से वंचित किया गया था तब उसे धरती पर से भी वंचित करना उचित था, इस कारण मनुष्य (५) सदैव के लिए ईश्वर की उपस्थिति से वंचित हो गया, हां, वह पतित मनुष्य हो गया।

७. और अब तुम देखते हो कि हमारे प्रथम माता-पिता (६) आध्यात्मिक और (७) शारीरिक दोनों तरह से प्रभु की उपस्थिति से अलग हटा दिए गए थे; और इस प्रकार हम देखते हैं कि वे (८) स्वयं अपनी ही इच्छा के अनुगामी हो गए।

८. और अब सुनो, यह (९) आवश्यक नहीं था कि मनुष्य को शारीरिक मृत्यु से बचाया जाए, क्योंकि यह आनन्द की महान योजना को नष्ट कर देता।

९. इसलिए जब कि (१०) आत्मा कभी मरती नहीं और जब कि पतन सभी मानव जाति पर (११) आध्यात्मिक और (१२) सांसारिक मृत्यु लाया, तब वे परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिए गए, इस कारण यह आवश्यक था कि उनकी आध्यात्मिक मृत्यु से रक्षा की जाए।

१०. इस कारण वे सांसारिक विषय-वासनाओं में लिप्त होकर इन्द्रिय लिप्सा में लीन होने से शैतानी स्वभाव के हो गए, जिससे यह (१३) परीक्षाकाल उनकी तैयारी करने का समय है; और यह समय तैयारी का समय बन गया।

११. और अब याद रखो मेरे बेटे, कि अगर मुक्ति की योजना नहीं होती (या उसको अलग रख दो) तब जैसे ही वे (१४) मृत्यु को प्राप्त होते तब वैसे ही परमेश्वर की उपस्थिति से अलग किए जाने के कारण उनकी (१५) आत्मा की दुर्गति होती।

१२. स्वयं आज्ञा भंग करने के कारण मनुष्य ने जो अपना पतन किया था उसमें से उनको वापस लेने का कोई साधन नहीं था।

१३. इस कारण एकमात्र मनुष्य के (१६) इस परीक्षाकाल में, हां, इसी परीक्षा के समय में पश्चात्ताप करने के अलावे न्यायानुसार मुक्ति की योजना लाई नहीं जा सकती थी; इन स्थितियों की अपेक्षा दया का कोई महत्व नहीं रहता, अपितु वह (१७) न्याय के काम को नष्ट करता परन्तु न्याय के कर्म को नष्ट नहीं किया जा सकता; अगर ऐसा नहीं होता तब ईश्वर का (१८) ईश्वरत्व नहीं रह जाता।

१४. इस प्रकार हम देखते हैं कि (१९) पूरी मानव जाति पतित हो चुकी थी और वे न्याय के अधीन थे; हां, परमेश्वर का वह न्याय जो उन्हें (२०) सदैव के लिए परमेश्वर से अलग कर रहा था।

१५. तब दया की योजना बिना (२१) प्रायश्चित के लायी नहीं जा सकती थी; इसलिए न्याय की मांग (२२) पूरी करने के लिए और दया की योजना लागू करने के निमित परमेश्वर स्वयं प्रायश्चित करता है जिससे कि परमेश्वर परिपूर्ण न्यायी और दयालु सिद्ध होता है।

१६. अब मनुष्यों को पश्चात्ताप की योजना दण्ड-विधान के कारण ही है— ऐसा दण्ड-विधान जो कि (२३) आत्मा के जीवन के समान ही (२४) अनन्त आनन्द योजना के विरुद्ध हो।

१७. अब एक मनुष्य बिना पाप किए पश्चात्ताप कैसे कर सकता है? अगर नियम नही होता तब

(३) पद्य ३. (४) पद्य ६, ८ अल० १२:२३, २६. (५) देखो २३, अल० १२. (६) देखो २, २ नफी २. (७) देखो ३, २ नफी २. (८) देखो १२, २ नफी २. (९) २ नफी २. (९) देखो ४. (१०) पद्य ११. (११) देखो ३, २ नफी २. (१२) देखो २, २ नफी २. (१३) देखो २७, अल० १२. (१४) देखो १२. (१५) देखो ११. (१६) देखो २७, अल० १२. (१७) देखो ३९, अल० १२. (१८) देखो ६, २ नफी ११. (१९) देखो ५ और ६, २ नफी ९. (२०) देखो २३, अल० १२. (२१) देखो ६, २ नफी २. (२२) देखो ३९, अल० १२. (२३) देखो १३, या० ६. (२४) पद्य ८, ९ देखो ५ और ७. २ नफी ९.

वह कैसे पाप करता? बिना दण्ड-विधान के नियम कैसे हो सकता है?

१८. एक दण्ड-विधान नियुक्त था, और एक उचित नियम दिया गया था जो कि मनुष्य के अन्तःकरण में पश्चात्ताप की भावना लाता है।

१९. अब अगर यह नियम नहीं दिया गया होता कि एक हत्यारे को मृत्युदण्ड दिया जाए — तब क्या वह इस बात से भय खाता कि हत्या करने से उसको मृत्युदण्ड मिलेगा?

२०. और अगर पाप के विरुद्ध नियम नहीं दिया गया होता तब मनुष्य पाप करने से भय नहीं खाता।

२१. अगर कोई नियम नहीं दिया गया होता तब अगर (२५) मनुष्य पाप करते, तब न्याय और दया से क्या होता, क्योंकि इनका मनुष्य पर कोई दावा नहीं होता?

२२. लेकिन नियम दिया गया है और दण्ड-विधान भी है, जिसके साथ उस पश्चात्ताप की अनुमति भी दी गई है, जिस पर दया का अधिकार है; अन्यथा (२६) प्राणियों पर न्याय का अधिकार होता है जो नियम का पालन करवाता है और नियम दण्ड देता है; अगर ऐसा नहीं होता तब न्याय-विधान नष्ट हो जाता और परमेश्वर के (२७) ईश्वरत्व का अन्त हो जाता है।

२३. परन्तु परमेश्वर के ईश्वरत्व का अन्त नहीं है, और परितापी के ऊपर दया का प्रभाव पड़ता है और (२८) प्रायश्चित के द्वारा दया आती है। यह प्रायश्चित ही मरे (२९) हुए लोगों के लिए फिर से जीवन लाता है; और मरकर जीवित होना मनुष्य को परमेश्वर की उपस्थिति में फिर से लाता है। इस प्रकार उनको उनके कर्मों का न्याय नियम और न्याय के अनुसार करने के लिए (३०) पुनः परमेश्वर के सामने लाया जाता है।

२४. क्योंकि सुनो, न्याय अपने पूरे विधानानुसार काम करता है और दया उस पर अधिकार करती है जो उसके क्षेत्र में है; इस तरह और कोई नहीं; केवल सच्चे परिपाती ही बचाए जाते हैं।

२५. क्या तुम सोचते हो कि दया न्याय को दबा सकती हे? मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं, लेशमात्र भी नहीं। अगर ऐसा होता तब परमेश्वर (३१) का ईश्वरत्व समाप्त हो जाता।

२६. इस प्रकार परमेश्वर अपने उस महान और अनन्त उद्देश्यों को पूर्ण करता है जिन्हें उसने (३२) पृथ्वी की नींव के समय से तैयार किया था। इस प्रकार मनुष्य के लिए मुक्ति और उत्थान या नाश और अधोगति आते हैं।

२७. इसलिए हे मेरे बेटे, जो आना चाहे वह आए और आकर जीवन के जल को बिना किसी रोक-टोक के प्राप्त करे; और जो न आना चाहे उसे विवश कर लाया नहीं जाएगा; परन्तु अन्तिम दिन को उसे (३३) उसी के कर्मानुसार परिणाम प्राप्त होगा।

२८. अगर उसने बुरे कर्म करने की इच्छा की थी और पश्चात्ताप नहीं किया, तब सुनो, उसको परमेश्वर (३४) की पुनर्स्थापना की विधि अनुसार बुरा ही दिया जाएगा।

२९. और अब मेरे बेटे, मैं चाहता हूं कि ये बातें तुम्हें और चिन्तित न करें; केवल तुम्हें तुम्हारे पाप कष्ट दें और यह कष्ट ही तुमसे पश्चात्ताप करवाएंगे।

३०. हे मेरे पुत्र, (३५) मेरी इच्छा है कि तुम परमेश्वर के न्याय को अब और अस्वीकार मत करो। अपने पापों के कारण परमेश्वर के न्याय को किसी भी अंश में अस्वीकार करने का प्रयत्न मत करो; परन्तु अपने हृदय पर परमेश्वर के न्याय, दया, और उसके दीर्घ कष्टों का पूरा अधिकार होने दो—और अपने को विनीत कर धूल बराबर बना लो।

३१. और अब मेरे बेटे, इन लोगों में वाणी का प्रचार करने के लिए परमेश्वर द्वारा तुम पुकारे गए हो। अब अपने रास्ते जाओ, और परमेश्वर की वाणी का प्रचार सच्चाई और

(२५) देखो १०, मू० ३. (२६) देखो ३९, अल० १२. (२७) देखो १८ और ६. २ नफी ११. (२८) देखो ६, २ नफी २. (२९) देखो ४, २ नफी २. (३०) अल० ४०:२१-२६. (३१) देखो ६, २ नफी ११. (३२) देखो ४, मू० ४. (३३) अल० ४१:१५. (३४) देखो ३, अल० ४१. (३५) पद्य १.

बुद्धिमानी के साथ करो जिससे कि तुम लोगों से पश्चात्ताप करवाओ जिससे कि दया की महान योजना उनके ऊपर असरकारक हो। परमेश्वर तुम्हें मेरे शब्दों के अनुसार सफलता दे। आमीन।

अध्याय ४३

एक और लमनायटी आक्रमण—मरोनी और लेही की सेनाओं का शत्रुओं को घेरना और उन्हें पराजित करना।

१. और तब ऐसा हुआ कि अलमा के पुत्र लोगों में परमेश्वर की वाणी की घोषणा करने के लिए गए। अलमा स्वयं आराम न कर सका और वह भी परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने के लिए गया।

२. अब उनके प्रचार के विषय में हम इसके अलावा और अधिक कुछ न कहेंगे कि उन्होंने वचन और सत्य का, भविष्यवाणी और दैवी ज्ञान की भावनानुसार प्रचार किया। उन्होंने परमेश्वर की (१) उस पवित्र व्यवस्था के अनुसार प्रचार किया, जिससे वे प्रेरित हुए थे।

३. अब मैं निर्णायकों के शासन के *अट्ठारहवें वर्ष में नफायटियों और लमनायटियों में हुए युद्ध के विवरण की ओर लौटता हूं।

४. क्योंकि सुनो, (२) जोरमायटी लमनायटियों में मिल गए। अट्ठारहवें वर्ष के आरम्भ में नफायटी लोगों ने देखा कि लमनायटी उनके विरुद्ध आक्रमण करने के लिए आ रहे हैं; इसलिए उन्होंने भी युद्ध कीं तैयारियां की; हां, उन्होंने अपनी सेनाओं को (३) जारसान देश देश में एकत्रित किया।

५. और ऐसा हुआ कि लमनायटी सहस्त्रों की संख्या में (४) आदिनाम नामक देश में आकर एकत्रित हुए, जो कि (५) जोरमायटियों का देश है; और उनका नेता एक व्यक्ति था, जिसका नाम जराहेमनाह था।

६. और अब उनमें लमनायटियों से अधिक अमलकायटियों के दुष्ट और हिंसक होने के कारण, जराहेमनाह ने मुख्य सेनापतियों के पदों पर अमलकायटियों और (६) जोरमायटियों को ही नियुक्त किया।

७. उसने यह इसलिए किया कि जिससे वे नफायटियों के प्रति (७) अपनी घृणा को बनाये रखें और उन्हें अपनी इच्छा के अनुकूल अधीन कर लें।

८. क्योंकि सुनो, उसकी योजना थी कि लमनायटियों को नफायटियों के विरुद्ध भड़का कर क्रोधित कर दें; उसने ऐसा इसलिए किया कि जिससे लमनायटियों पर उसका भारी प्रभाव रहे और साथ ही नफायटियों को दासता में लाकर उन्हें अपने वश में कर लें।

९. इस समय नफायटियों की योजना थी—अपने शत्रुओं से अपनी भूमि, अपने घरों, अपनी स्त्रियों और बच्चों की रक्षा करना; और साथ ही उनका उद्देश्य था—अपने अधिकारों, सुविधाओं, और (८) अपनी स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखना, जिससे कि वे अपनी इच्छानुसार परमेश्वर की आराधना का सकें।

१०. क्योंकि वे यह जानते थे कि अगर वे लमनायटियों के हाथों में पड़ गए तब जो कोई भी जीवित, सच्चै परमेश्वर की अपनी आत्मा और सत्यता से आराधना करेगा, उसे लमनायटी नष्ट कर देंगे।

११. और हां, वे उन (९) एण्टी-नफी-लेही के लोगों के विरुद्ध लमनायटियों के अत्यधिक द्वेष को भी जानते थे, जो (१०) आमोन के लोग कहलाते थे और जो शस्त्र धारण नहीं करते थे, क्योंकि उन्होंने (११) ऐसी प्रतिज्ञा की थी, जिसे वे तोड़ना नहीं (१२) चाहते थे—इसलिए अगर वे लमनायटियों के हाथों में पड़ जाते, तो नष्ट हो जाते।

१२. और नफायटी यह नहीं चाहते थे कि (१३) वे नष्ट हो जाएं; इसी कारण उन्होंने उन्हें (१४) उनकी सन्तति के लिए भूमि दे दी थी।

१३. और आमोन के लोग अपनी वस्तुओं

(१) देखो ७, मू० २६. (२) देखो ३६, अल० ३०. (३) देखो २६, अल० २७. (४) देखो २, अल० ३१. (५) अल० ३१:३. (६) देखो ३६, अल० ३०. (७) देखो १४, या० ७. (८) देखो १३, मू० २९. (९) अल० २७:२. (१०) देखो २०, अल० २३. (११) अल० २७:२६. (१२) अल० २४:१६-१९. (१३) अल० २७:२३,२४. (१४) अल० २७:२२.

*ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

का एक (१५) भारी हिस्सा उन्हें उनकी सेनाओं के खर्च के लिए दिया करते थे; और इस प्रकार नफायटी बाध्य होकर अकेले ही उन लमनायटियों का सामना करने के लिए तैयार हुए जिनमें लमान, लेमुएल, इस्माइल के पुत्रों के वंशज सम्मिलित थे और उनके साथ वे सब भी थे, जो नफायटियों से असन्तुष्ट थे और वे थे—अमलकायटी, (१६) जोरमायटी और (१७) नूह पुरोहित के वंश के लोग।

१४. इस समय उनके वंशज संख्या में उतने ही थे, जितने कि नफी के लोग; इस प्रकार नफी के लोगों को अपने बन्धुओं का सामना करना पड़ा और रक्तपात तक हुआ।

१५. और ऐसा हुआ कि जब लमानयटियों ने अपनी सेनाओं को (१८) आदिनाम देश में एकत्रित किया था, तब सुनो, नफायटियों की की सेना उनका सामना करने के लिए (१९) जारसन देश में तैयार थी।

१६. नफायटियों का नेता अर्थात् जो व्यक्ति मुख्य सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया था उसने नफायटियों की सारी सेना के संचालन का अधिकार अपने हाथ में ले लिया। और उसका नाम मरोनी था।

१७. मरोनी ने सेना के सारे अधिकार और व्यवस्था को अपने हाथ में ले लिया। जब उसको नफायटियों की सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त किया गया था, तब उसकी आयु केवल पच्चीस वर्ष की थी।

१८. और ऐसा हुआ कि उसने लमनायटियों का सामना (२०) जारसन देश की सीमा पर किया; और उसके सैनिक (२१) तलवारों, कटारों, और हर प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित थे।

१९. लमनायटियों की सेना ने देखा कि नफी के लोगों ने अर्थात् मरोनी ने अपने सीने के लिए कवच, सिरों की रक्षा के लिए शिरस्त्राण, हाथों में ढाल से तैयार किया है और मोटे वस्त्रों को भी पहनाया हुआ है।

२०. जराहेमला की सेना किसी भी इन वस्तुओं से सजी हुई नहीं थी; उनके पास केवल तलवार, छुरियां धनुष-बाण, पत्थर और ढेलवांस ही थे और जोरमायटियों और अमलकायटियों को छोड़ कर अन्य सभी (२२) वस्त्रहीन थे, केवल कमर में एकमात्र चर्म लपेटे हुए थे।

२१. न तो उनके पास सीने के लिए कवच ही थे और न ही ढाल थे—इसलिए नफायटियों से संख्या में बहुत अधिक होने पर भी, उनके अस्त्र-शस्त्रों के कारण, वे नफायटी सेना से भयभीत थे।

२२. और सुनो, ऐसा हुआ कि उन्होंने नफायटियों के विरुद्ध (२३) जारसन देश की सीमा पर आने का साहस नहीं किया; इसलिए वे (२४) आदिनाम देश से निकल कर जंगल में चले गए और जंगल में से घूम फिर कर (२५) सीदोन नदी के सिरे से होकर आगे बढ़े जिससे कि वे (२६) मण्टी देश को अपने अधिकार में कर लें, क्योंकि वे समझते थे कि मरोनी की सेना यह नहीं जान पाएगी कि वे किस ओर चले गए हैं।

२३. लेकिन ऐसा हुआ कि जैसे ही वे जंगल में गए, वैसे ही मरोनी ने भेदियों को उन पर दृष्टि रखने के लिए भेजा। वह अलमा की भविष्यवाणी को जानता था, इसलिए उसने कुछ लोगों को उसके पास इस इच्छा से भेजा कि वह प्रभु से जांच करें कि नफायटियों की सेना लमनायटियों के विरुद्ध आत्मरक्षा के लिए जाए कि नहीं।

२४. और ऐसा हुआ कि प्रभु की वाणी अलमा के पास आई और अलमा ने मरोनी के सन्देशवाहकों को बताया कि लमनायटियों की सेना वन में घूम फिर कर आगे बढ़ रही है, जिससे कि वे (२७) मण्टी देश के कमजोर लोगों पर हमला कर सकें। उस सन्देशवाहक ने जाकर यह समाचार मरोनी को दिया।

२५. तब मरोनी ने (२८) जारसन देश में, इस विचार से कि उनकी अनुपस्थिति में

(१५) अल० २७:२४. (१६) देखो ३६, अल० ३०. (१७) देखो ६, मू० ११. (१८) देखो २, अल० ३१. (१९) देखो १७, अल० २७. (२०) देखो १७, अल० २७. (२१) देखो ६, अल० २. (२२) पद्य ३७, इनो० २०, अल० ३:४, ५. (२३) देखो १७, अल० २७. (२४) देखो २, अल० ३१. (२५) देखो ७, अल० २. (२६) देखो ८, अल० १६. (२७) देखो ८, अल० १६. (२८) देखो १७, अल० २७.

ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

लमनायटियों की कुछ सेना वहां आक्रमण करके नगर को अपने अधीन न कर ले, अपनी सेना के एक भाग को वहां नियुक्त किया और बाकी सेना के साथ वह (२९) मण्टी देश में जा पहुंचा।

२६. वहां पर उसने लोगों को, अपनी भूमि, अपने देश, अपने अधिकारों और अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिए लमनायटियों से युद्ध करने के लिए एकत्रित किया; इसलिए वे सब लमनायटियों के आक्रमण के लिए तैयार हो गए।

२७. और ऐसा हुआ कि मरोनी ने अपनी सेना को (३०) सिदोन नदी के निकट, नदी से पश्चिम में, उस घाटी में छुपा दिया, जो जंगल में थी।

२८. मरोनी ने चारों ओर भेदियों को नियुक्त कर दिया, जिससे वे लमनायटियों की सेना के आने की सूचना उसे दें।

२९. और जब कि मरोनी लमनायटियों का यह विचार जानता था कि वे (३१) उसके बन्धुओं को नष्ट करना या अपने वश में करके उन्हें दास बनाना चाहते थे, जिससे कि वे सारे देश भर में अपना राज्य स्थापित कर सकें।

३०. और वह यह भी जानता था कि (३२) नफायटियों का उद्देश्य केवल अपनी भूमि, अपनी स्वतन्त्रता, और अपने गिरजे की रक्षा करना है, तब उसने युक्ति द्वारा उनकी रक्षा करना अनुपयुक्त नहीं समझा; इस कारण उसने अपने (३३) भेदियों से पता लगाया कि लमनायटी किस राह से आगे जाएंगे।

३१. इसलिए वह अपनी सेना को विभक्त करके एक भाग को घाटी में लाया और (३४) रिप्लाह पहाड़ के पूरब और दक्षिण में उसे छुपा दिया;

३२. और बची हुई सेना को उसने पश्चिम की घाटी में (३५) सिदोन नदी से दक्षिण में (३६) मण्टी देश की सीमा तक छुपा दिया।

३३. इस प्रकार अपनी इच्छानुसार सेना को रखकर उनका सामना करने के लिए वह तैयार हुआ।

३४. और तब ऐसा हुआ कि (३७) पहाड़ के उत्तर की ओर से लमनायटियों की सेना वहां आई, जहां मरोनी की कुछ सेना छुपी हुई थी।

३५. जब लमनायटी सेना (३८) रिप्लाह पहाड़ से, होकर घाटी में से होकर (३९) सिदोन नदी को पार करने लगी, तब जो सेना, पहाड़ से दक्षिण की ओर छुपी हुई थी और जिनका सेनापति लेही नाम का आदमी था, उसने अपनी सेना को लेकर पूरब की ओर से, उनको पीछे से घेर लिया।

३६. और तब ऐसा हुआ कि जब लमनायटियों ने नफायटियों को पीछे से आते हुए देखा तब वे घूमकर लेही की सेना से युद्ध करने लगे।

३७. दोनों ओर के योद्धा मरने लगे, परन्तु लमनायटियों की बहुत अधिक हानि होने लगी क्योंकि (४०) नंगे होने से नफायटियों की (४१) तलवारों और कटारों के हर प्रहार से वे मरने लगे।

३८. जबकि कभी कभी तलवारों और रक्त बहने से नफायटी भी मरते थे, परन्तु उनके शरीर के विशेषांग ढके हुए थे अर्थात् लमनायटियों के आघातों से उनके शरीरों के कोमलांग (४२) सीने के कवच, हाथ कवच या ढाल और शिरस्त्राण से सुरक्षित थे; इसलिए नफायटी लमनायटियों को भारी संख्या में मार रहे थे।

३९. और तब ऐसा हुआ कि भारी संख्या में मरते हुए लोगों को देख कर लमनायटी भयभीत हो गए और (४३) सिदोन नदी की ओर भागने लगे।

४०. लेही और उसके आदमियों ने उसका पीछा किया और उन्होंने उनको सिदोन नदी के जल में खदेड़ दिया और वे नदी को पार कर गए और लेही ने अपनी सेना को (४४) सिदोन नदी के तट

(२९) देखो ८, अल० १६. (३०) देखो ७, अल० २. (३१) पद्य ८, १०. (३२) पद्य ९, ४५, ४८, ४९. देखो १३, मू० २९. अल० ४४:५. ४६:१२-२०, ४८:१०-१६. (३३) पद्य २३, २८. (३४) पद्य ३४, ३५. (३५) देखो ७, अल० २. (३६) देखो ८, अल० १६. (३७) पद्य ३१, ३५. (३८) पद्य ३१, ३४. (३९) देखो ७, अल० २. (४०) पद्य २०, देखो २. (४१) पद्य १८. (४२) पद्य १९, २१, ४४, अल० ४४:९, ४६:१३, ४९:६, २४, इला० १:१४, मार० ६:९. (४३) देखो ७, अल० २. (४४) पद्य २७.

ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

पर रखा जिससे वे नदी को पार करके वापस न आ सकें।

४१. तब ऐसा हुआ कि (४५) उस घाटी में (४६) सिदोन नदी के दूसरी ओर मरोनी और उसकी सेना से लमनायटियों का सामना हुआ और वे उन पर टूट पड़े और लमनायटियों को मारने लगे।

४२. और लमनायटी उनके सामने से (४७) मण्टी देश की ओर भागने लगे और फिर से उनका सामना मरोनी की सेना से हुआ।

४३. इस बार लमनायटियों ने भीषण युद्ध किया; आरम्भ से इस समय तक, इतने बल और साहस के साथ लमनायटी कभी भी पहले नहीं लड़े थे।

४४. (४८) जोरमायटी और अमलकायटी जो उनके सेनापति और मुखिया थे, और ज़राहेमला जो उनका मुख्य सेनापति या नेता था, उन लोगों ने उन्हें साहस दिलाया, और वे अजगरों की तरह लड़ने लगे थे; और उनके हाथों से बहुत से नफायटी मारे गए, क्योंकि उनके प्रहारों से बहुतों के (४९) सिर के टोप दो टुकड़ों में फट गए, और वे, अनेकों कवचों को भेद कर सैनिकों को धायल कर देते और उनके हाथों को काट डालते; इस प्रकार महा क्रोध में उन्होंने अनेकों को मार डाला।

४५. फिर भी नफायटियों को अपने अच्छे उद्देश्य से साहस मिल रहा था, क्योंकि वे न तो राज्य स्थापना के लिए लड़ रहे थे और न ही शक्ति के लिए, परन्तु (५०) अपने घर अपनी स्वतन्त्रता, अपनी पत्नियों और बच्चों, अपनी सब अन्य सम्पत्तियों और परमेश्वर की आराधना करने के लिए अधिकार और अपने गिरजे के लिए लड़ रहे थे।

४६. और वे वह कर रहे थे जिसे उन्होंने परमेश्वर के प्रति अपना कर्तव्य समझा था; क्योंकि प्रभु ने उनसे और उनके पूर्वजों से कहा था (५१) जहां तक तुम प्रथम और दूसरी भूल के अपराधी नहीं रहोगे, वहां तक तुम अपने शत्रुओं के हाथों मारे नहीं जाओगे।

४७. और प्रभु ने पुनः कहा है कि तुम अपने परिवार की रक्षा करो, इसके लिए चाहे तुम्हें रक्त-पात ही क्यों न करना पड़े। इसलिए नफायटी (५२) अपनी, अपने परिवारों की, अपनी भूमि, अपने देश, अपने अधिकारों और अपने धर्म की रक्षा के लिए लमनायटियों से युद्ध कर रहे थे।

४८. और जब मरोनी के लोगों ने लमनायटियों (५३) भयंकरता और क्रोध को देखा, तब वे पीछे हट कर उनके सामने से भागने ही वाले थे। जब मरोनी ने यह जाना तब उसने उनको उनकी (५४) भूमि, स्वतंत्रता और दासता से मुक्त रहने का समाचार देकर उत्साहित किया।

४९. और ऐसा हुआ कि वे घूम कर लमनायटियों पर टूट पड़े और (५५) अपनी स्वतन्त्रता और दासता से मुक्त रहने के लिए सबने एक स्वर से अपने प्रभु परमेश्वर को पुकारा।

५०. और लमनायटियों के विरुद्ध शक्ति के साथ खड़े हुए और जिस समय उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता के लिए प्रभु को पुकारा, उसी समय लमनायटी उनके सामने से भागने लगे और (५६) सिदोन नदी के जल तक भाग गए।

५१. लमनायटी नफायटियों से संख्या में अधिक थे। उनकी संख्या दुगनी थी, फिर भी वे खदेड़े गए और भाग कर (५७) घाटी में (५८) सिदोन नदी तट पर एक स्थान पर एकत्रित हुए।

५२. इसलिए मरोनी की सेनाओं ने उनको चारों ओर से घेर लिया। वे नदी के दोनों ओर से घिर गए, क्योंकि सुनो, पूरब की ओर लेही के सैनिक थे।

५३. इसलिए जब जराहेमना ने सिदोन नदी के पूरब में लेही के आदमियों को, और सिदोन नदी के पश्चिम में मरोनी की सेना को देखा और अपने को घिरा हुआ पाया, तब वे सब भयभीत हो उठे।

५४. जब मरोनी ने उनको भयभीत देखा तब

(४५) पद्य ३२. (४६) पद्य ३२. (४७) पद्य ३२. देखो ८, अल० १६. (४८) पद्य ६. (४९) देखो ४२. (५०) पद्य ३०, ४७, अल० ४४:५. (५१) सि० शर्त० ९८:२३-४८, अल० ४८:१४-१६. (५२) देखो ३२. (५३) पद्य ४४. (५४) देखो ३२. (५५) देखो ३२. (५६) देखो ७, अल० २. (५७) पद्य ३२. (५८) पद्य ३२. ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

उसने अपने आदमियों को आज्ञा दी कि वे उनका रक्तपात करना समाप्त कर दें।

अध्याय ४४

मरोनी की उदारता--उसके प्रस्ताव को जराहेमना का अस्वीकार करना, परन्तु बाध्य होकर शर्तों को मानना—लमनायटियों का शान्ति के लिए शर्तबद्ध होना—अलमा की लेखाओं का अन्त।

१. और ऐसा हुआ कि वे रुक गए और एक कदम पीछे हट गए। और मरोनी ने जराहेमना से कहा* सुनो, जराहेमना, हम रक्तपात करना नहीं चाहते। यह जानते हुए भी कि तुम हमारे हाथों में हो, हम तुम्हें मारना नहीं चाहते।

२. सुनो, हम शक्ति के लिए तुम्हारे विरुद्ध युद्ध कर तुम्हारा रक्त बहाने नहीं आए हैं, और न ही हम किसी को दासता में बांधना चाहते हैं। लेकिन तुम (१) इन्हीं बातों के लिए हमारे विरुद्ध आए हो; और हां, हमारे धर्म के कारण तुम हम पर क्रोधित हो।

३. लेकिन तुम देख रहे हो कि प्रभु हमारे साथ है; और यह भी देख रहे हो कि उन्होंने तुम्हें हमारे हाथों में दे दिया है। और अब मैं चाहता हूं कि तुम यह समझो कि यह (२) हमारे धर्म और मसीह में हमारे विश्वास के कारण हुआ है। और अब तुम यह देख ही रहे हो कि हमारे इस विश्वास को तुम नष्ट नहीं कर सकते।

४. अब यह देखो कि यही परमेश्वर का सच्चा धर्म है; तुम देखते हो कि जब तक हम परमेश्वर के प्रति, अपने विश्वास और अपने धर्म के प्रति ईमानदार रहेंगे तब तक वह हमें सहारा देता रहेगा, और सुरक्षित रखेगा; अगर हमने पाप नहीं किया और अपने विश्वास को अस्वीकार नहीं किया, तब तक वह (३) हमें नष्ट होता नहीं देख सकेगा।

५. और अब, जराहेमना, जिस परमेश्वर ने हमारे हाथों को सबल किया, जिससे हमने तुम्हें पराजित किया, उस परमेश्वर के नाम पर (४) अपने विश्वास, अपने धर्म, प्रार्थना करने के अपने अधिकार, अपने गिरजा, अपने स्त्री-बच्चों का पवित्र सहारा, स्वतन्त्रता का वह धागा जो हमें अपनी भूमि और देश से बांधता है, और परमेश्वर के पवित्र वाणी जिसके द्वारा हमें आनन्द प्राप्त होता है; और जो हमें सबसे प्रिय है, इन सब के नाम पर—

६. और हां, इतना ही नहीं, जीवित रहने की जो तुम्हारी इच्छा है, उसके लिए मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम अपने युद्ध के हथियार हमें दे दो, तब हम तुम्हारा रक्तपात करना नहीं चाहेंगे और तुम्हें जीवनदान देंगे, अगर तुम अपने रास्ते चले जाओ और फिर युद्ध करने नहीं आओ।

७. और अब, अगर तुम यह नहीं करोगे, तब तुम हमारे हाथों में हो और मैं अपने आदमियों को आज्ञा दूंगा कि वे तुम पर टूट पड़े और तुम्हारे शरीरों पर घातक प्रहार करें जिससे तुम नष्ट हो जाओ; और तब हम देखेंगे कि इन लोगों पर किसका अधिकार हो; हां, हम देखेंगे कि दासता में किन लोगों को लाया जाये।

८. और तब ऐसा हुआ कि जब जराहेमना ने इन बातों को सुना, तब उसने आगे बढ़ कर (५) अपनी तलवार, छुरी और धनुष मरोनी के हाथों में दे दी और उससे कहा : देखो, ये हमारे युद्ध के हथियार हैं; हम इन्हें तुम्हें दे रहे हैं, लेकिन (६) हम तुमसे शपथ नहीं कर सकते क्योंकि हम यह जानते हैं कि हम और हमारी सन्तान उस शपथ को तोड़ देंगे, लेकिन हमारे अस्त्र-शस्त्रों को लेकर हमें वन में चले जाने दो; अन्यथा हम अपनी तलवारों को अपने पास ही रखेंगे और या तो हम लड़ कर नष्ट हो जाएंगे या विजयी होंगे।

९. सुनो, हमें तुम्हारा जैसा विश्वास नहीं है; हम विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर ने हमें तुम्हारे हाथों में कर दिया है; लेकिन हम यह विश्वास करते हैं कि तुम्हारी चतुराई ने हमारी तलवारों से तुम्हारी रक्षा की है। देखो, (७) तुम्हारी सीने के कवच और ढाल ने तुम्हारी जानें बचाई हैं।

१०. और जब जराहेमना ने इन शब्दों को

(१) अल० ४३:८. (२) अल० ४३:४६, ५०. (३) देखो ८, २ नफी १. (४) देखो ३२, अल० ४३. (५) अल० ४३:२०. (६) पद्य ६-११, १५, १६, २०. (७) देखो ४२, अल० ४३.

कहना समाप्त किया तब मरोनी ने, जो तलवार और युद्ध के हथियार ले लिए थे, उन्हें जराहेमना को वापस लौटाते हुए कहा: सुनो, हम विरोध समाप्त कर दें।

११. मैंने जो शब्द कहे थे वे अब मुझे याद नहीं हैं, इसलिए जितना निश्चय परमेश्वर के चेतन होने का है, उतना ही निश्चय मेरा है कि तुम (८) बिना यह शपथ किए यहां से नहीं जा सकते कि तुम पुन: हमारे विरुद्ध युद्ध करने नहीं आओगे। अब जब कि तुम हमारे हाथों में हो, तब या तो जिन शर्तों को मैंने रखा है उन्हें मानना पड़ेगा या हम तुम्हारे रक्त को भूमि पर बहाएंगे।

१२. जब मरोनी ने इन शब्दों को कहा तब जराहेमना मरोनी पर क्रुध हो उठा और उसने अपनी तलवार वापस ले ली और मरोनी को मारने के लिए दौड़ा; परन्तु जैसे ही उसने तलवार उठाई वैसे ही मरोनी के एक सैनिक ने उसकी तलवार को मूठ से तोड़ दिया और वह टूट कर धरती पर जा गिरी और उसने प्रहार करके ज़राहेमना के (९) सिर की त्वचा बाल सहित काट दी जो धरती पर जा गिरी। और ज़राहेमना वहां से भाग कर अपने सैनिकों के मध्य में जा घुसा।

१३. और ऐसा हुआ कि जो सैनिक निकट खड़ा था, और जिसने जराहेमना के सिर की त्वचा को बाल सहित काट दिया था, उसने उसे बालों से पकड़ कर धरती पर से उठा लिया और अपनी तलवार की नोक पर रख कर उसे उन्हें दिखाता हुआ ऊंची आवाज में बोला:

१४. जैसे यह (१०) कटी हुई त्वचा जो तुम्हारे नेता की है धरती पर गिरी हुई है उसी प्रकार तुम भी धरती पर गिरोगे अगर युद्ध के अस्त्र-शस्त्र देते हुए तुमने शान्ति स्थापित रखने की (११) प्रतिज्ञा नहीं की।

१५. उस समय बहुत से लोग थे जिन्होंने इन शब्दों को सुना और तलवार पर उस (१२) कटी बाल सहित सिर के चमड़े को देखा और वे सब भयभीत हो उठे; और बहुतों ने आकर मरोनी के पैरों पर अपने अस्त्र-शस्त्रों को डाल दिया, और शान्ति में शर्तबद्ध हुए। और जितनों ने (१३) शान्ति की शर्त स्वीकार की, वे सब वन में चले जाने दिए गए।

१६. और तब ऐसा हुआ कि जराहेमना अत्यन्त ही क्रोधित हो उठा और उसने अपने बचे हुए सैनिकों को भीषण युद्ध करने के लिए भड़काया।

१७. लमनायटियों के इस हठीपन से मरोनी को भी क्रोध आ गया; इसलिए उसने अपने आदमियों को उन पर आक्रमण कर मार डालने की आज्ञा दी। और ऐसा हुआ कि वे उन्हें मारने लगे और लमनायटी भी उनसे अपनी तलवारों से बल के साथ लड़ने लगे।

१८. लेकिन सुनो, (१४) उनके नंगे चाम और सिर नफायटियों की तेज तलवारों के सामने खुले हुए थे; इसलिए वे घायल कर मृत्यु के घाट उतार दिए जाते थे और वे नफायटियों की तलवारों से शीघ्रतापूर्वक मरने लगे और जैसा कि (१५) मरोनी के उस सैनिक ने भविष्यवाणी की थी, उसी प्रकार वे गिराए जाने लगे।

१९. जब जराहेमना ने यह देखा कि वे सब नष्ट होने वाले हैं, तब उसने मरोनी से बहुत ही विनय की और वचन दिया कि अगर बचे हुए लोगों को प्राण-दान दिया जाए तब वह और उसके साथ के उसके आदमी यह शर्त स्वीकार करेंगे कि (१६) वे उनके विरुद्ध फिर कभी युद्ध करने नहीं आएंगे।

२०. और तब ऐसा हुआ कि मरोनी ने रक्त-पात बन्द करवा दिया। उसने लमनायटियों से से युद्ध के अस्त्र-शस्त्र ले लिए; और जब वे (१७) शान्ति के लिए शर्तबद्ध हुए तब उन्हें वन में चला जाने दिया गया।

२१. भारी संख्या में उनके मृतकों के कारण मृत लोगों की गिनती नहीं की गई; हां, नफायटियों और लमनायटियों के बहुत अधिक लोग मारे गए गए थे।

२२. और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने मरे हुए लोगों के शवों को (१८) सिदोन नदी के जल में फेंक दिया जो बह कर सागर की गहराई में समा गए।

(८) देखो ६. (९) पद्य १३-१५. (१०) पद्य १८. (११) देखो ६. (१२) देखो ९. (१३) देखो ६. (१४) देखो २२, अल० ४३. (१५) पद्य १४. (१६) देखो ६. (१७) देखो ६. (१८) देखो ७, अल० २. २ नफी ३२.

*ईसा से लगभग ७४ वर्ष पूर्व

२३. और नफायटियों की, या मरोनी की सेना के लोग वापस लौट कर अपने-अपने घरों और भूमि पर चले गए।

२४. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का *अट्ठारहवां वर्ष समाप्त हुआ। और अलमा के अभिलेख जो (१६) नफी की पटियों पर लिखा गया था, का अन्त इस प्रकार हुआ।

अपने समय में जो लेखा इलामन ने रखा, उसके अनुसार नफी के लोगों का, उनके युद्ध और विग्रह का विवरण।

अध्याय ४५ से ६२

अध्याय ४५

नफायटियों के अन्त की भविष्यवाणी—मूसा के विदा से अलमा के विदा की तुलना—गिरजा में कलह।

१. सुनो, ऐसा हुआ कि इस समय नफी के लोगों को महान आनन्द हुआ, क्योंकि प्रभु ने पुनः उनके शत्रुओं के हाथों से उनकी रक्षा की थी; इस कारण उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर को धन्यवाद दिया; हां, उन्होंने, (१) बहुत उपवास किए (२) प्रार्थनाएं कीं और बहुत ही आनन्द के साथ परमेश्वर की आराधना की।

२. और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के उन्नीसवें वर्ष में अलमा अपने पुत्र इलामन के पास आया और उससे बोला: जो अभिलेख रखे गए हैं, (३) उनके विषय में मैंने जो कुछ तुमसे कहा था, उन पर क्या तुम विश्वास करते हो?

३. और इलामन ने उससे कहा: हां, मैं विश्वास करता हूं।

४. और अलमा ने फिर कहा: क्या तुम यीशु मसीह पर विश्वास करते हो जो कि आएगा?

५. और उसने उत्तर दिया: हां, मैं उन सभी शब्दों पर विश्वास करता हूं, जिन्हें आपने कहा था।

६. और अलमा ने उससे फिर कहा: क्या तुम मेरी आज्ञाओं का पालन करोगे?

७. और उसने उत्तर दिया: हां, मैं आपकी आज्ञाओं का पालन हृदय से करूंगा।

८. तब अलमा ने उससे कहा: धन्य हो तुम, और प्रभु तुम्हें इस देश में प्रगति कराएगा।

९. परन्तु सुनो मुझे तुमसे कुछ भविष्यवाणियां करनी हैं, परन्तु भविष्य के विषय में मैं जो कुछ कहूंगा, उसे तुम्हें गुप्त रखना होगा; हां, मैं जो कुछ भविष्यवाणी करूंगा, उसे उसके पूरा होने तक भी तुम प्रकट मत करना; इसलिए मैं जो शब्द कहूंगा, उन्हें तुम लिख लो।

१०. और वे शब्द ये हैं: सुनो भविष्यवाणी की भावना जो मेरे अन्दर है, उसके अनुसार नफायटियों में यीशु मसीह के प्रकट होने के (४) चार सौ वर्ष पश्चात् ये लोग अविश्वास में (५) नष्ट हो जाएंगे।

११. हां, तब वे युद्ध, महामारी, अकाल और रक्तपात तब तक देखेंगे जब तक कि (६) वे नष्ट न हो जाएंगे।

१२. यह उनके अविश्वास, अन्धकार में किए जाने वाले कर्मों, सांसारिक विषय-वासनाओं और हर प्रकार के पाप कर्मों के कारण होगा; हां, मैं तुमसे कहता हूं कि उतने महान प्रकाश और ज्ञान के विरुद्ध पाप करने के कारण उस दिन से (७) पूरी चौथी पीढ़ी भी समाप्त नहीं होने पाएगी, जबकि यह घोर पतन होगा।

१३. और जब वह महान दिन आएगा तब वह समय भी शीघ्र आएगा जबकि जो लोग वर्तमान समय में हैं, या उनके वे वंश जिनकी गिनती नफी के लोगों में हो रही है, उनकी गिनती नफी के लोगों में नहीं की जाएगी।

१४. लेकिन जो बचे रहेंगे और उस महान और भयंकर दिन नष्ट नहीं होंगे, उनकी गिनती (८) लमनायटियों में होगी, सिवाय उन लोगों के जो परमेश्वर के शिष्य कहलायेंगे; उनका लमनायटी (९) तब तक पीछा करेंगे, जब तक वह नष्ट नहीं हो जायेंगे। और दुष्कर्मों के कारण यह भविष्यवाणी सत्य होगी।

(१६) देखो ६, १ नफी १. अध्याय ४५. (१) देखो २०, मू० २७. (२) देखो ५. (३) अल० ३७. (४) देखो ४, १ नफी १२. (५) मरो० ९. (६) २ नफी २६:१०, मो० ६. (७) देखो ४, १ नफी १२. (८) १ नफी १३:३१, ६:२४. (९) मरोनी १:१-३.

*ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

१५. और तब ऐसा हुआ कि जब अलमा ने इन बातों को इलामन से कह लिया, तब उसने इलामन को और अपने अन्य पुत्रों को आशीर्वाद दिया; उसने धार्मिक लोगों के लिए धरती को भी आशीर्वाद दिया।

१६. और उसने कहा: प्रभु परमेश्वर इस तरह कहता है—जो लोग दुष्ट कर्म करने वाले हैं उनके पापों के घड़े जब भर जाएंगे तब (१०) यह देश हर एक राष्ट्र, जाति, भाषा-भाषी लोगों और मनुष्यों के लिए शापग्रस्त होगा और उनको मिटा देगा; और जैसा मैंने कहा है वैसा ही होगा; क्योंकि देश पर यह आशीर्वाद और शाप परमेश्वर की ओर से है; क्योंकि प्रभु पापों की ओर तनिक भी छूट की दृष्टि से नहीं देखता।

१७. और जब अलमा ने इन शब्दों को कह लिया तब उसने गिरजे को और उस समय से विश्वास में दृढ़ रहने वालों को आशीर्वाद दिया।

१८. और जब अलमा ने यह सब कर लिया तब वह (११) जराहेमला देश से (१२) मलक देश में जाने को निकला, परन्तु ऐसा हुआ कि उसके विषय में और कुछ सुना नहीं गया; उसकी मृत्यु या कब्र में गाड़े जाने के विषय में हम कुछ नहीं जानते हैं।

१९. सुनो, यह हम जानते हैं कि वह धार्मिक था, और गिरजा में यह चर्चा चली कि उसे पवित्र आत्मा द्वारा ले जाया गया, या प्रभु के हाथों से उसको उसी तरह दफनाया गया जिस प्रकार मूसा को दफनाया गया था। लेकिन सुनो, शास्त्र कहता है कि प्रभु मूसा को अपने पास ले गया; और हम यही समझते हैं कि अलमा की आत्मा को भी उसने अपने पास स्वीकार कर लिया है; इस कारण उसकी मृत्यु और कब्र में गाड़े जाने के विषय में हम कुछ नहीं जानते हैं।

२०. नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के *उन्नीसवें वर्ष के आरम्भ में इलामन सुसमाचार की घोषणा करने के लिए लोगों में गया।

२१. क्योंकि सुनो, लमनायटियों से युद्ध और छोटे-छोटे मतभेदों और लोगों में अशान्ति के कारण उनमें वचन का प्रचार करना आवश्यक हो गया था, और हां सारे गिरजों में एक नियम बनाना भी आवश्यक हो गया था।

२२. इसलिए इलामन और उसके भाई, नफी के लोगों के अधिकार से सारे देशों में गिरजा की स्थापना करने गए और सभी नगरों की सभी गिरजाओं में उन्होंने (१३) पुरोहितों और शिक्षकों को नियुक्त किया।

२३. इलामन और उसके भाइयों द्वारा गिरजाओं में शिक्षकों और पुरोहितों की नियुक्ति के पश्चात् उनमें मतभेद उत्पन्न हो गया और वे इलामन और उसके भाइयों की ओर कोई ध्यान नहीं देते।

२४. अपनी बहुत अधिक सम्पत्ति के कारण वे घमण्ड में चूर होकर हृदय से अहंकारी हो गए; इसलिए वे अपनी ही आंखों से अपनी धन सम्पत्ति देखने लगे और वे परमेश्वर के पथ पर सीधे चलने के लिए उनकी बातों को सुनते ही नहीं थे।

अध्याय ४६

राजा बनने के लिए अमलिकियाह का षड्यन्त्र—मरोनी और स्वाधीनता की पदवी—स्वतन्त्र रहने के लिए लोगों का शर्तबद्ध होना—अमलिकियाह का भाग जाना।

१. ऐसा हुआ कि जो लोग इलामन और उसके भाइयों की बातें नहीं सुनते थे, वे अपने ही बन्धुओं के विरुद्ध एकत्रित हुए।

२. और सुनो, वे इतने क्रोधित हो उठे कि उन्होंने उनको मार डालने का निश्चय कर लिया।

३. जो लोग क्रोधित हो उठे थे उनका मुखिया एक व्यक्ति था, जो कि शरीर से दीर्घ और बलवान व्यक्ति था; और उसका नाम था अमलिकियाह।

४. और अमलिकियाह ने स्वयं राजा बनना निश्चय कर लिया था; और जो लोग क्रोधित थे, वे भी चाहते थे कि वह राजा बने और उनमें अधिकांश वे लोग थे जो देश के छोटे निर्णायक थे और वे शक्ति के भूखे थे।

५. वे अमलिकियाह के इस बहकावे में पड़ गए थे कि अगर वे उसका साथ देकर उसे अपना राजा

(१०) देखो ४, २ नफी १. (११) ओम० १३. (१२) देखो ३, अल० ८. (१३) देखो ३, मू० ६.

*ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

बनाएंगे, तब वह उनको लोगों का शासक बना देगा।

६. इस तरह अमलिकियाह ने उनको बहका कर विरोधी बना दिया। उन्होंने इलामन और उसके भाइयों के उपदेश पर कोई ध्यान नहीं दिया और गिरजा के (१) प्रधान पुरोहित होने के नाते उनकी गिरजा की देखभाल की भी कोई परवाह नहीं की।

७. गिरजा में बहुत से लोग थे, जिन्होंने अमलिकियाह की चिकनी चुपड़ी बातों पर विश्वास किया, इस कारण वे गिरजा से भी विरोध करने लगे; और इस प्रकार नफी के लोगों की स्थितियां संकटपूर्ण और खतरनाक हो गईं। वे लमनायटियों के ऊपर अपनी महान (२) विजय और प्रभु के हाथों द्वारा अपनी रक्षा किए जाने के महान आनन्द को भी भूल गए।

८. हम इस प्रकार देखते हैं कि मानव-सन्तान कितनी जल्दी अपने प्रभु परमेश्वर को भूल जाती है, हां, कितनी जल्दी पाप कर्म करने लगती है और दुष्टों के द्वारा बहकाई जाती है।

९. और हम यह भी देखते हैं कि एक अति दुष्ट, लोगों से कितने भारी पाप करवा सकता है।

१०. हम देखते हैं कि अमलिकियाह चतुर षड्यन्त्रकारी और बहुत ही चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाला व्यक्ति था, जिससे वह बहुत से लोगों को पापकर्म करवाने के लिए बहका ले गया। और (३) स्वतन्त्रता की उस नींव को नष्ट करने की योजना बनाने लगा, जिसको परमेश्वर ने उनको दिया था, अर्थात् उस आशीर्वाद को नष्ट करने का उपाय ढूंढ रहा था जिसको परमेश्वर ने धार्मिक लोगों के कारण देश को दिया था।

११. जब नफी की सेनाओं के (४) प्रधान सेनापति मरोनी ने कलह की इन बातों को सुना तब वह अमलिकियाह पर क्रोधित हो उठा।

१२. और उसने अपने कपड़े फाड़ (५) डाले और फटे कपड़े के एक टुकड़े पर यह लिखा—(६) अपने परमेश्वर, अपने धर्म, अपनी स्वतन्त्रता, अपनी शक्ति, अपनी स्त्रियों और बच्चों की याद में—और एक लम्बे डण्डे के छोर पर बांध दिया।

१३. और उसने (७) अपने शिरस्त्राण को पहिना, कवच और ढाल को बांधा और अपनी कमर के चारों ओर युद्ध सज्जा से सज कर उस डण्डे को लिया, जिसकी छोर पर उसके फटे कपड़े का वह टुकड़ा बंधा था, उसने उसे (८) स्वतन्त्रता की पदवी कहा और धरती पर झुक कर अपने परमेश्वर से (९) गम्भीर प्रार्थना की कि वह उसके भाइयों को स्वतन्त्र (१०) रहने का तब तक आशीर्वाद दे जब तक कि मसीह (११) मतावलम्बियों का एक भी समूह देश पर अधिकार रखने के लिए शेष रहे।

१४. क्योंकि ईसा मसीह के विश्वासी ऐसे ही थे, जिन्हें वह लोग जो गिरजा के नहीं थे, परमेश्वर की गिरजा वाले कह कर संबोधित करते थे।

१५. और जो लोग गिरजा के सदस्य थे, वे विश्वासी थे; हां, वे सभी जो मसीह में सच्चे विश्वासी थे, वे प्रसन्नतापूर्वक मसीह का नाम अपने ऊपर ले लेते, यानि आने वाले मसीह पर विश्वास के कारण उनको मसीही कहा जाता था।

१६. इसलिए इस समय मरोनी ने मसीही लोगों और देश की (१२) स्वतन्त्रता के लिए प्रार्थना की।

१७. जब उसने (१३) अपने हृदय को खोल कर परमेश्वर के आगे रख दिया तब उसने (१४) निर्जन देश से (१५) दक्षिण के सारे देशों को, अर्थात् (१६) उत्तर और दक्षिण की भूमि को चुना हुआ और (१७) स्वतन्त्रता का देश कहा।

१८. और उसने कहा, निश्चय ही परमेश्वर हमें जो कि (१८) मसीह का नाम अपने ऊपर लेने के कारण उपेक्षित हैं, तब तक कुचले और नष्ट नहीं होने देगा जब तक कि हम स्वयं यह अपने पापों के द्वारा नहीं लाते।

१९. जब मरोनी ने इन शब्दों को कह लिया तब

(१) देखो ७, मू० २६. (२) अल० अध्याय ४३, ४४. (३) देखो १३, मू० २९. (४) अल० ४३:१६. (५) पद्य १३, २१-२७. (६) देखो ३२, अल० ४३. (७) देखो ४२, अल० ४३. (८) देखो ३२, अल० ४३. (९) देखो ५, २ नफी ३२. (१०) देखो ३२, अल० ४३. (११) पद्य १४-१६. अल० ४८:१०. (१२) देखो ३२, अल० ४३. (१३) देखो ५, २ नफी ३२. (१४) ३ नफी ३:२४, मो० ३:५ (१५) देखो ३८, अल० २२. (१६) अल० २३:३१, ६३-४. (१७) देखो ३२, अल० ४३. (१८) देखो ५, मो० ५.

लोगों में वह अपने वस्त्र के उस टुकड़े (१९) को हवा में हिलाते हुए गया जिससे कि सभी लोग फटे वस्त्र के टुकड़े पर उसने जो कुछ लिखा (२०) था, उसे देख लें और उसने जोर से पुकारते हुए कहा:

२०. सुनो, जो लोग देश के लिए यह पदवी चाहते हैं, उन्हें प्रभु की शक्ति से सबल होकर आगे आना और यह शपथ लेना चाहिए कि वे अपने अधिकारों को, अपने धर्म को, सुरक्षित (२१) रखेंगे, जिससे कि उन्हें प्रभु परमेश्वर आशीर्वाद दे।

२१. और ऐसा हुआ कि जब मरोनी ने इन शब्दों की घोषणा की तब सुनो, लोग कमर में युद्ध के अस्त्र-शस्त्र बांधे, इस प्रतिज्ञा में अपने (२२) वस्त्रों को फाड़ते हुए आये, कि वे अपने प्रभु परमेश्वर को नहीं छोड़ेंगे; दूसरे शब्दों में यह कि उन्होंने अगर परमेश्वर के नियमों को भंग किया या पाप में गिरे, या अपने ऊपर (२३) मसीह का नाम लेने में लज्जा दिखलाई, तब प्रभु उन्हें उसी प्रकार चीर डाले जैसा कि उन्होंने अपने (२४) वस्त्रों को चीर डाला है।

२२. यही वह शपथ थी जो उन्होंने ली और अपने-अपने लबादों को मरोनी के चरणों के पास यह कहते हुए उतार-उतारकर फेंका, कि हम अपने परमेश्वर से बचनबद्ध होते हैं कि अगर हम पापों में पतित हों, तब वह हमें (२५) अपने उत्तर के देश बन्धुओं की तरह नष्ट कर दे; हां, अगर हम पापों में गिरे तब पैरों तले कुचले जाने के लिए जिस तरह हमने अपने लबादों को तुम्हारे पैरों के पास फेंका है, उसी तरह वह हमें अपने शत्रुओं के पैरों पर फेंक दे—

२३. मरोनी ने उनसे कहा : सुनो, हम याकूब के अवशेष वंशज है; हां, हम उस युसुफ के बचे वंश के हैं जिसके (२६) लबादे को उसके भाइयों ने चीर-फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला था; और अब, हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना और उनको स्मरण करना सीखें, नहीं तो हमारे वस्त्र हमारे ही भाइयों द्वारा फाड़ डाले जाएंगे और हम कारागार में फेंक दिए जाएंगे, या बेच दिए जाएंगे, या मार ही डाले जाएंगे।

२४. यूसुफ के अवशेष वंश की तरह हम अपनी (२७) स्वतन्त्रता को बचाए रखें; हम याकूब के उन शब्दों को याद रखें जिन्हें उसने अपनी मृत्यु से पूर्व कहा था, क्योंकि उसने यूसुफ के फटे कपड़े के एक टुकड़े को सुरक्षित देखा जो सड़ा नहीं। और उसने कहा (२८) जिस प्रकार मेरे पुत्र के वस्त्र के इस टुकड़े को सुरक्षित रखा गया उसी प्रकार मेरे पुत्र के वंश के एक अंश को परमेश्वर के हाथों द्वारा सुरक्षित रखा जाएगा और वह उसे अपने पास ले लेगा, जबकि यूसुफ के बाकी वंशज इस वस्त्र के अन्य टुकड़ों की तरह नष्ट हो जाएंगे।

२५. अब मेरी आत्मा को यह दुःख दे रहा है; फिर भी मुझे अपने पुत्र के उस वंशज के कारण आनन्द भी मिल रहा है जो परमेश्वर के पास ले जाया जाएगा।

२६. अब सुनो, यह याकूब की वाणी है।

२७. अब यह कौन जाने कि युसुफ के बचे वंश के लोग जो हमारे विरोधी हो गए हैं, वे ही यूसुफ के फटे हुए वस्त्र की तरह नष्ट हो जाएंगे? और अगर हम भी मसीह के विश्वास में दृढ़ नहीं रहे तो हम भी नष्ट हो सकते हैं।

२८. और तब ऐसा हुआ कि जब मरोनी ने इन शब्दों को कह लिया तब वह स्वयं आगे बढ़ा और उन सभी स्थानों में अपने अनुचरों को भेजा जहां मतभेद उत्पन्न हो गया था, और जो लोग (२९) अपनी स्वतन्त्रता को बनाए रखना चाहते थे उन सबको, अमलिकियाह और जो लोग विरोधी हो गए थे और जिनको अमलिकियाहटी कहा जाने लगा था, के विरुद्ध खड़ा होने के लिए, एकत्रित किया।

२९. तब ऐसा हुआ कि जब अमलिकियाह ने देखा कि मरोनी के लोग अमलिकियाटी लोगों से बहुत अधिक हैं और उसके साथी अपने उद्देश्य में सन्दिग्ध है, तब पराजित होने के भय

(१९) देखो ५. (२०) पद्य १२. (२१) देखो ३२ अल० ४३. (२२) देखो ५. (२३) देखो ५, मू० ५. (२४) देखो २१, २५. (२५) देखो एथर की पुस्तक. (२६) उत्पत्ति ३७:३१-३३. (२७) देखो ३२. अल० ४३. (२८) पद्य २७, ३ नफी ५:२३, २४:१०-१७. (२९) देखो ३२, अल० ४३.

ईसा से लगभग ७३ वर्ष पूर्व

से जो लोग उसके साथ जाना चाहते थे, उन्हें अपने साथ लेकर, वह (३०) नफी के देश में भाग गया।

३०. तब मरोनी ने सोचा कि लमनायटियों का और अधिक शक्तिशाली होना हितकर नहीं होगा, इस कारण उसने सोचा कि अमलिकियाहटियों को उनसे मिलने न दिया जाये, उन्हें बन्दी बनाकर लाए और अमलिकियाह को मृत्युदण्ड दे, क्योंकि वह जानता था कि अमलकियाह लमनायटियों को भड़का कर उनके विरुद्ध कर देगा और उनपर आक्रमण करवा देगा; वह यह जानता था कि अमलिकियाह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह करेगा।

३१. इसलिए मरोनी की जो सेना एकत्रित हुई थी, उसे युद्ध-सज्जा से सजाकर शान्ति बनाए रखने के लिए ले जाना आवश्यक समझा—और ऐसा हुआ कि वह अपनी सेना को लेकर जंगल में कूच कर गया जिससे कि वह जंगल में अमलिकियाह का रास्ता रोक सके।

३२. और ऐसा हुआ कि उसने ऐसा अपनी इच्छानुसार किया और वन में आगे बढ़कर अमलिकियाह की सेना का रास्ता रोक लिया।

३३. तब ऐसा हुआ कि अमलिकियाह अपने थोड़े से साथियों के साथ भाग खड़ा हुआ और उसके बाकी लोग मरोनी को सर्मपित हुए जो वापस ज़राहेमला देश में ले जाए गए।

३४. मरोनी वह व्यक्ति था जिसे मुख्य निर्णायकों और (३१) जनता ने नियुक्त किया था, इसलिए नफायटियों की सेना उसके अधीन थी और वह अपनी इच्छानुसार उनकी स्थापना और उनपर शासन कर सकता था।

३५. तब जिन अमलिकियाटियों ने स्वतन्त्रता को सुरक्षित (३२) रखने के लिए वचन नहीं दिया जिससे कि वे अपनी स्वतन्त्र सरकार को बनाए रखें, उन्हें उसने मृत्युदण्ड दिया; ऐसे लोग जिन्होंने स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने का वचन नहीं दिया, वे बहुत कम संख्या में थे।

३६. और उसने नफायटियों के अधिकार के सारे देश की मीनारों पर से (३३) स्वतन्त्रता शीर्षक झण्डों को फहराया; इस तरह मरोनी ने स्वतन्त्रता के झण्डे को नफायटियों में स्थापित किया।

३७. उन्हें देश में फिर से शान्ति मिली और निर्णायकों के शासन के *उन्नीसवें वर्ष की समाप्ति तक शान्ति बनी रही।

३८. और इलामन और (३४) प्रधान पुरोहितों ने गिरजा में भी शान्ति स्थापित की; यहां तक कि गिरजा में चार वर्षों तक बहुत ही शान्ति और आनन्द बना रहा।

३९. और बहुत से लोग यह दृढ़ विश्वास करते हुए मरे कि प्रभु यीशु मसीह ने उनकी आत्माओं को बचा लिया; इस तरह वे आनन्द मनाते हुए संसार से चले गए।

४०. और कुछ लोग उस ज्वर से पीड़ित होकर मरे, जो वर्ष के कुछ मौसमों में अधिक हुआ करता था। परन्तु उन उत्तम पौधों और जड़ी-बूटियों के कारण बहुत कम लोग ज्वर से मरे, जिन में परमेश्वर ने बीमारियों के उन कारणों को नष्ट करने के तत्व बनाए थे, जो मौसम की प्रकृति के अनुसार लोगों पर असरकारक होते थे।

४१. परन्तु बहुत से लोग वृद्ध होकर मरे; और जो लोग मसीह पर विश्वास के साथ मृत्यु को प्राप्त हुए, वे उसमें आनन्दित हैं जैसा कि हमें सोचना चाहिए।

अध्याय ४७

विश्वासघात द्वारा अमलिकियाह का लमनायटियों का राजा बनना—उसकी भयंकर दुष्टता।

१. अब हम अपने अभिलेख में अमलिकियाह और उसके साथ (१) वन में भागे हुए लोगों की ओर लौटते हैं; क्योंकि सुनो, जो उनके साथ गए थे उन्हें वह अपने साथ लेकर (२) नफी के देश में लमनायटियों के मध्य चला गया और नफी के लोगों के विरुद्ध उन्हें भड़का कर इतना क्रोधित कर दिया कि राजा ने अपने सारे देश के सभी लोगों में यह घोषणा करवाई कि वे फिर से एकत्रित

(३०) देखो २, २ नफी ५. (३१) देखो ५, मू० २९. (३२) देखो ३२, अल० ४३. (३३) पद्य १२:१३. (३४) पद्य ६, देखो ७, मू० २६. अध्याय ४७: (१) अल० ४६:३३. (२) देखो २, २ नफी ५. ईसा से लगभग ७२ वर्ष पूर्व

होकर नफायटी लोगों पर आक्रमण करने के लिए जाएं।

२. और ऐसा हुआ कि जब यह घोषणा उनमें की गई तब वे बहुत ही भयभीत हुए। वे राजा को भी नाराज करने से डरते थे और अपने प्राण खोने के भय से नफायटियों से युद्ध करने से भी भयभीत थे। तब उनमें से अधिकांश ने राजा की आज्ञा को नहीं माना।

३. और तब ऐसा हुआ कि आज्ञा भंग करने के कारण राजा उन पर क्रोधित हो उठा; इसलिए राजा ने अमलिकियाह को अपनी सेना के उन सैनिकों का प्रधान बनाया जो उसके प्रति आज्ञाकारी थे, और उसे आज्ञा दी कि वह जाकर उन लोगों को सशस्त्र होने को बाध्य करे।

४. अब सुनो, अमलिकियाह की यही इच्छा थी; चूंकि वह पापकर्म करने में चतुर था इसलिए उसने (३) लमनायटियों के राजा को सिंहासन पर से उतारने की योजना अपने हृदय में बना ली।

५. अब जो लमनायटी राजा के पक्ष में थे उनको उसने अपने अधिकार में पाया; और जो आज्ञाकारी नहीं थे उनको वह अपने पक्ष में करना चाहता था; इसलिए वह उस जगह गया जिस स्थान को ओनिदाह कहते थे क्योंकि सभी भागे हुए लमनायटी वहीं भागकर गए थे; क्योंकि जब उन्हें पता लगा कि सेना आ रही है तब उन्होंने सोचा कि वह उन्हीं को नष्ट करने आ रही है, इस कारण वे भागकर ओनिदाह गए जो कि एक सुरक्षित स्थान था।

६. उन्होंने एक व्यक्ति को अपना राजा और नेता नियुक्त किया था क्योंकि उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वे नफायटियों के विरुद्ध नहीं जाएंगे।

७. और ऐसा हुआ कि वे लड़ने के तैयारी में एण्टीपस नामक पर्वत के शिखर पर एकत्रित हुए।

८. राजा की आज्ञा के अनुसार उनसे लड़ने की इच्छा अमलिकियाह की नहीं थी; लेकिन उसकी इच्छा थी लमनायटियों की सेनाओं को अपने अनुकूल करने की, जिससे वह उनका सेनाध्यक्ष होकर (४) राजा को गद्दी पर से उतार कर स्वयं राज्य को अपने अधिकार में कर ले।

९. और सुनो, तब उसने अपनी सेना का (५) एण्टीपस पर्वत के निकट की घाटी में पड़ाव डलवाया।

१०. और ऐसा हुआ कि रात्रि के समय उसने गुप्त रूप से अपने दूत को लिहोण्टी, जो वहां एकत्रित लोगों का नेता था के पास यह सन्देश देकर भेजा कि वह पर्वत पर से उतर कर नीचे आए, क्योंकि वह उससे कुछ मन्त्रणा करना चाहता है।

११. जब लिहोण्टी ने यह सन्देश पाया तब पर्वत पर से नीचे उतरने का उसे साहस नहीं हुआ। तब अमलिकियाह ने दुबारा अपने दूत को भेजा और इच्छा प्रकट की कि वह नीचे उतर आए। तब ऐसा हुआ कि लिहोण्टी फिर भी नीचे नहीं उतरा और तब उसने तीसरी बार अपने सन्देश-वाहक को भेजा।

१२. और तब ऐसा हुआ कि जब अमलिकियाह को यह पता लगा कि वह लिहोण्टी को उस पर्वत पर से नीचे नहीं बुला सकता, तब वह स्वयं ऊपर लिहोण्टी के डेरे तक गया और उसने चौथी बार लिहोण्टी के पास सन्देश भेजा और इच्छा प्रकट की कि वह अपने अंगरक्षकों के साथ आए।

१३. और तब ऐसा हुआ कि जब लिहोण्टी अपने अंगरक्षकों के साथ नीचे आकर अमलिकियाह के पास आया, तब अमलिकियाह ने उससे इच्छा प्रकट की कि वह अगर रात्रि के समय में अपनी सेना को लाकर उन लोगों को घेर ले जिनको राजा ने उसको सुपुर्द कर उसके अधीन किया था, तब वह उन्हें लिहोण्टी के हाथों में दे देगा, अगर वह उसे (अमलिकियाह) सारी सेना का सहायक सेनाध्यक्ष बना दे।

१४. और ऐसा हुआ कि लिहोण्टी ने अपने आदमियों के साथ नीचे आकर अमलिकियाह के आदमियों को घेर लिया जिससे कि प्रातः जागने से पूर्व ही वे लिहोण्टी की सेना से घिर गए।

१५. जब उन्होंने देखा कि वे घिर गए हैं, तब अमलिकियाह से याचना करने लगे कि उन्हें

(३) पद्य ८, १६, ३५. (४) पद्य ४, १६, ३५. (५) पद्य ७, १०.

उनके उन बन्धुओं के साथ कर दिया जाए, जिससे कि वे नष्ट न हों। अमलिकियाह की यही इच्छा थी।

१६. और ऐसा हुआ कि राजा की आज्ञा के (६) विपरीत उसने अपने आदमियों को उन्हें दे दिया। अमलिकियाह की यही इच्छा थी, जिससे कि वह (७) राजा को गद्दी पर से उतारने की अपनी योजना को पूरा कर सके।

१७. लमनायटियों में यह प्रथा थी कि अगर उनका प्रधान नेता मारा गया तो उसके अधीन (८) प्रथम सहायक को प्रधान के पद पर नियुक्त किया जाता था।

१८. और ऐसा हुआ कि अमलिकियाह ने लिहोण्टी को अपने एक अनुचर द्वारा थोड़ा-थोड़ा विष दिलाकर मरवा डाला।

१९. जब लिहोण्टी मर गया तब लमनायटियों ने अमलिकियाह को अपना प्रधान नेता और (९) प्रधान सेनापति नियुक्त किया।

२०. तब अमलिकियाह अपनी सेना के साथ (१०) (अपनी इच्छानुसार सफल होकर) नफी देश के मुख्य शहर नफीनगर गया।

२१. तब राजा अपने अंगरक्षकों के साथ यह समझ कर उससे मिलने आया कि अब अमलिकियाह उसकी (११) आज्ञा का पालन कर, इतनी बड़ी सेना एकत्रित कर नफायटियों के विरुद्ध युद्ध करने जाएगा।

२२. लेकिन सुनो, जब राजा उसे मिलने के लिए आया तब अमलिकियाह ने उससे मिलने के लिए अपने सेवकों को भेजा। वे जाकर राजा के सामने इस तरह झुके कि मानो उसकी महानता के कारण वे उसका आदर कर रहे हों।

२३. तब ऐसा हुआ कि (१२) जिस प्रथा को लमनायटियों ने नफायटियों से ग्रहण किया था उस प्रथा के शान्ति के प्रतीक के रूप में राजा ने उनको उठाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

२४. जब उसने पहले व्यक्ति को धरती पर से उठाया, तब उसने राजा के वक्षस्थल में छुरी भोंक कर उसके हृदय को वेध डाला और वह धरती पर गिर पड़ा।

२५. तब राजा के सेवक भागे और अमलिकियाह के सेवकों ने यह कहते हुए शोर मचाया।

२६. सुनो, राजा के सेवकों ने राजा को छुरी भोंक कर उसके हृदय को वेध डाला है और वह गिर गया और वे भाग गए हैं। देखो, आकर देखो।

२७. और तब अमलिकियाह ने अपनी सेनाओं को आज्ञा दी कि वे आगे बढ़कर देखें कि राजा को क्या हो गया है; जब वे उस स्थान पर आए तब उन्होंने राजा को अपने रक्त में पड़े पाया और अमलिकियाह दिखावटी क्रोध में बोला : जो लोग राजा को प्यार करते थे उन्हें उसके हत्यारे सेवकों का पीछा करना चाहिए जिससे उन्हें मृत्युदण्ड दिया जा सके।

२८. और ऐसा हुआ कि जो राजा से प्रेम करने वाले थे, वे सभी ये शब्द सुनकर आगे आए और राजा के सेवकों को पकड़ने के लिए दौड़े।

२९. जब राजा के सेवकों ने सेना को अपने अपने पीछे आते देखा तब वे भयभीत होकर वन में भागे और जान बचाकर (१३) जराहेमला देश में जाकर (१४) आमोन के लोगों में मिल गए।

३०. और जो सेना उनको पकड़ने के लिए दौड़ी थी वह असफल होकर वापस लौट गई : और अमलिकियाह ने अपनी धूर्तताई से लोगों के हृदयों को जीत लिया।

३१. दूसरे दिन (१५) नफी नगर में अपनी सेना के साथ उसने प्रवेश किया, और नगर को अपने अधिकार में ले लिया।

३२. तब ऐसा हुआ कि अमलिकियाह ने रानी के पास दूत भेजकर उसे राजा के सेवकों द्वारा राजा के मारे जाने और अपनी सेना द्वारा उनको पकड़ने का असफल प्रयत्न करने और उनके भाग जाने की बातें बताईं, जिससे रानी को राजा के मारे जाने का पता लगा।

३३. जब रानी को यह समाचार मिला तब उसने अमलिकियाह के पास सन्देश भेजकर उसने

(६) पद्य ३. (७) पद्य ४, ८, ३५. (८) पद्य १३. (९) पद्य १३, १७. (१०) देखो २, नफी ५. (११) पद्य ३.
(१२) मू० ७:१२. (१३) मोम० १३. (१४) अल० २७:२६. (१५) पद्य २०.

अपनी इच्छा बताई कि वह नगर के लोगों को छोड़ दे, और यह इच्छा भी प्रकट की कि वह उसके पास अपने राजा के मरने के विषय में साक्षियों को अपने साथ लेकर आए।

३४. तब ऐसा हुआ कि अमलिकियाह अपने (१६) उसी सेवक को जिसने कि राजा की हत्या की थी और (१७) उन सभी को जो उसके साथ थे, साथ लेकर रानी के पास उस स्थान पर गया जहां वह बैठी हुई थी, और उन्होंने इसी बात की गवाही दी कि राजा अपने ही सेवकों के द्वारा मारा गया था और उन्होंने यह भी कहा : वे भाग गए, क्या यह उनके विरुद्ध प्रमाण नहीं? इस प्रकार रानी से राजा के मरने के विषय में उन्होंने साक्षी दी।

३५. और अमलिकियाह ने रानी का अनुग्रह प्राप्त कर उसे अपनी पत्नी बना लिया : इस प्रकार अपनी धूर्तता और अपने छली सेवकों की सहायता से (१८) उसने राज्य प्राप्त कर लिया : हां, वह सारे देश में और उन सभी लमनायटियों में राजा के रूप में स्वीकार किया गया जो लमनायटी, लेमुएल्टी और इस्मलायटी के वंश के लोग थे और साथ ही वे नफायटी लोग भी थे जो नफी के शासन से लेकर वर्तमान समय तक स्वजातीय लोगों से असन्तुष्ट होकर उनसे अलग हो गए थे।

३६. इन असन्तुष्ट लोगों को वही शिक्षायें, वही विवरण, और प्रभु के विषय में वही ज्ञान प्राप्त हुए थे, जो अन्य नफी के लोगों को प्राप्त हुए थे, फिर भी यह बताते हुए असाधारण बात सी लगती है कि वे असन्तुष्ट हो कुछ ही दिनों के पश्चात् लमनायटियों से अधिक (१९) कठोर, अस्थिर पशुमनोवृत्ति के, दुष्ट, और क्रोधी स्वभाव के हो गए थे। वे लमनायटियों की तरह मद्यपान कर कुकर्म करने लगे और हर प्रकार की सांसारिक विषय-वासनाओं में पतित होकर अपने प्रभु परमेश्वर को पूरी तरह भूल बैठे।

अध्याय ४८

अमलिकियाह का नफायटियों के विरुद्ध लमनायटियों को भड़काना—विग्रह का सामना करने के लिए मरोनी का तैयारी करना—एक सच्चा देश भक्त और परमेश्वर का प्रबल अनुचर।

१. जब अमलिकियाह ने राज्य पर अधिकार कर लिया तब वह लमानयटियों के हृदयों को नफी के लोगों के विरुद्ध भड़काने लगा; उसने लमनायटियों से उनकी मीनारों पर से नफी के लोगों के विरुद्ध बोलने के लिए आदमियों को नियुक्त किया।

२. इस तरह उसने उनके हृदयों को नफायटियों के विरुद्ध इतना भड़काया कि निर्णायकों के शासन के उन्नीसवें वर्ष के अन्त होते-होते उसने अपने अब तक की सभी आकांक्षाओं को पूरा कर, लमनायटियों का राजा बन, सारे देश पर और सारे देश के लमनायटियों के साथ नफायटियों पर भी शासन की योजना बनाने लगा।

३. इसलिए उसने अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण कर लिया क्योंकि उसने लमनायटियों के हृदयों को कठोर और बुद्धि को विवेकहीन कर दिया था और उन्हें भड़का कर इतना क्रोधित कर दिया कि उसने नफायटियों से लड़ने के लिए उनकी एक बहुत बड़ी सेना एकत्रित कर ली।

४. अपने आदमियों की भारी संख्या के कारण नफायटियों पर विजय प्राप्त कर उन्हें दासता में लाने का उसने निश्चय कर लिया था।

५. और उसने (१) जोरमायटियों को मुख्य सेनापतियों के पदों पर नियुक्त किया क्योंकि वे नफायटियों की शक्ति, मोर्चे बन्दियों और उनके नगरों के कमजोर स्थानों से परिचित थे; इसलिए उसने उन्हें अपनी सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त किया।

६. और तब वे अपने डेरे को उठाकर (२) ज़राहेमला देश की ओर जंगल में ले गए।

७. जिस समय अमलिकियाह षड्यन्त्र और छल द्वारा शक्ति प्राप्त कर रहा था उस समय दूसरी ओर मरोनी लोगों को अपने प्रभु परमेश्वर पर ईमानदार रहने के लिए तैयार कर रहा था।

८. वह नफायटियों की सेना को शक्तिशाली

(१६) पद्य २४. (१७) पद्य २२. (१८) पद्य ४, ८, १६. (१९) देखो २०, अल० २४:३०. अध्याय ४८. (१) देखो ३६, अल० ३०. (२) ओम० १३.

बनाने (३) और गड्ढ़ों को या सुरक्षा स्थानों को स्थापित करने में लगा हुआ था। वह अपनी सेनाओं, नगरों और देश की सीमा की सुरक्षा के लिए उसे चारों ओर से मिट्टी और पत्थरों की दीवालों से घेर रहा था: हां, देश के चारों ओर वह नाकेबन्दी कर रहा था।

९. और अपने कमजोर मोर्चे बन्दियों के स्थानों पर उसने अधिक सैनिकों को नियुक्त किया : इस प्रकार उसने उस भूमि को नाकेबन्दी और शक्तिकरण किया जो नफायटियों के अधिकार में थी—

१०. इस प्रकार वह उनकी स्वतन्त्रता, उनकी भूमि, उनकी स्त्रियों और बच्चों और उनकी शान्ति की (४) रक्षा करने की तैयारी कर रहा था, जिससे कि वे अपने प्रभु परमेश्वर पर विश्वास करते हुए जीवित रहें और उसे बनाए रख सकें, जिसे उनके शत्रु ईसाई धर्म का (५) पक्ष या हित कहते थे।

११. मरोनी एक दृढ़ और शक्तिशाली व्यक्ति था। वह अति तीक्ष्ण बुद्धि का था और उसे रक्तपात पसन्द नहीं था। उसकी आत्मा (६) स्वतन्त्रता और उसके देश की स्वतन्त्रता और उसके अपने बन्धुओं की दासता से मुक्त रहने में आनन्दित होती थी।

१२. वह एक ऐसा व्यक्ति था, जिसका हृदय उन अनेक सुविधाओं और आशीर्वादों के कारण फूल उठता था, जिन्हें परमेश्वर ने उसके लोगों को दिया था; और उसने अपने लोगों के हितों और सुरक्षा के लिए बहुत अधिक परिश्रम किया।

१३. और हां, वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसका मसीह में विश्वास दृढ़ था, और उसने अपने (७) लोगों की, अपने अधिकारों की, अपने देश की और अपने धर्म की रक्षा अपने रक्त को बहा कर भी करने की शपथ ली थी।

१४. नफायटियों को अपनी (८) रक्षा करने की शिक्षा मिली थी और आवश्यकता पड़ने पर यह कार्य अपने रक्त को बहा कर भी उन्हें करना था; और उन्हें यह भी शिक्षा मिली थी कि वे कभी किसी पर भी आक्रमण न करें, और अपनी रक्षा करने के लिए शत्रुओं के अलावे किसी पर भी कभी तलवार न उठावें।

१५. और उनका यह विश्वास था कि ऐसा करने से परमेश्वर उनको देश में प्रगति का अवसर देगा, दूसरे शब्दों में (९) अगर वे परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करने में ईमानदार रहेंगे तब परमेश्वर उन्हें देश में उन्नति करने का अवसर देगा; और उनके खतरों के अनुसार उन्हें प्राण बचाने के लिए भागने या युद्ध की तैयारी करने की चेतावनी देता रहेगा;

१६. और परमेश्वर उन्हें यह भी बतायेगा कि अपने (१०) शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिए उन्हें कहां जाना चाहिए और ऐसा करके परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा : और मरोनी का यही विश्वास था और इस विश्वास में उसका हृदय आनन्दित होता था। रक्तपात करने में नहीं बल्कि उपकार करने में, अपने लोगों की रक्षा करने में, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में और हां, बुरे कर्मों का विरोध करने में उसका हृदय आनन्दित होता था।

१७. मैं तुम से सच कहता हूं कि अगर अतीत और वर्तमान में सभी लोग मरोनी जैसे होते और भविष्य में उसी की तरह लोग हों, तब सुनो, अधोलोक की शक्ति ही सदैव के लिए नष्ट हो जाती; और मानव वंश के हृदयों पर (११) शैतान का कभी भी कोई अधिकार नहीं हो पाता।

१८. सुनो, वह मूसायाह के पुत्र आमोन और उसके दूसरे पुत्रों और अलमा और उसके पुत्रों की तरह ही था क्योंकि वे सब परमेश्वर के आदमी थे।

१९. अब सुनो, इलामन और उसके भाई अपने लोगों की सेवा करने में मरोनी से कम नहीं थे; क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की वाणी का प्रचार किया, और जिसने भी उनकी बातों को सुना उन

(३) अल० ४९:१३, १८-२४, ५०:१-६, १०; ५१:२३, २७. ५२:२. १७, ५३:३-७. ५५:२५, २६, ३३. ५६:१५, २०, २१. ५७:४. ५८:२३. ६२:२०-२४. इला० १:२०, २१, २२, २७. ४:७. ३ नफी ३:१४, मा० २:४, २१:३:६. (४) देखो ३२. अल० ४३. (५) देखो ११, अल० ४६. (६) देखो ३२, अल० ४३. (७) देखो ३२, अल० ४३. (८) देखो ५१, अल० ४३. (९) देखो ८. २ नफी १. (१०) अल० १६:५-८. ४३: २३, २४. ३ नफी ३:१.८ २१. (११) १ नफी २२:२६.

सभी को उन्होंने पश्चात्ताप में (१२) बपतिस्मा दिलवाया।

२०. इस प्रकार वे लोगों में प्रचार करते रहे और उनकी वाणी के कारण लोगों ने अपने आप को इतना विनीत कर लिया था कि वे प्रभु के बहुत ही कृपापात्र बन गए थे, और इस तरह वे आपस की लड़ाई और कलह से चार वर्षों तक मुक्त रहे।

२१. लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि (१३) उन्नीसवें वर्ष के अन्त होने से पूर्व आपस की शान्ति की उपेक्षा करके अपने लमनायटी भाइयों के साथ बाध्य होकर उन्हें संघर्ष करना पड़ा।

२२. यह स्पष्ट है कि युद्ध की इच्छा न रहते हुए भी लमनायटियों से उनका संघर्ष कई वर्षों तक समाप्त नहीं हुआ।

२३. लमनायटियों के विरुद्ध अस्त्र ग्रहण करने में उन्हें दुःख हो रहा था : क्योंकि रक्तपात करने में उन्हें सुख नहीं मिलता था; इतना ही नहीं, उन्हें इस बात से भी कष्ट होता था कि अपने बहुत से बन्धुओं को परमेश्वर से मिलने की बिना तैयारी किए ही अनन्त जगत में भेज देने का वे कारण बनते थे।

२४. इस पर भी वे अपनी जान नहीं दे सकते थे, और न यह सहन कर सकते थे कि उन लोगों के द्वारा जो कभी उनके बन्धु-बान्धव थे, हां, जो गिरजा से अलग हो गए थे और उनको छोड़कर चले गए थे, और लमनायटियों से उनका नाश करवाने के लिए उनसे मिल गए थे, अपनी स्त्रियों और बच्चों का बर्बरतापूर्ण क्रूर संहार हो।

२५. हां, वे यह सहन नहीं कर सकते थे कि जब तक कि उनमें से कोई भी परमेश्वर के आदेशों का पालन करने वाला जीवित हो, उनके बन्धु नफायटियों के रक्तपात पर आनन्दित हो; क्योंकि परमेश्वर ने यह (१४) वचन दिया था कि अगर वे उसके आदेशों का पालन करेंगे तो अपने देश में प्रगति करेंगे।

अध्याय ४६

आक्रमणकारी लमनायटियों को हैरान करना और उन्हें पीछे हटाना—अपनी असफलता पर अमलिकियाह का भारी क्रोध करना—गिरजे की प्रगति।

१. और तब ऐसा हुआ कि *उन्नीसवें वर्ष के ग्यारहवें माह के दसवें दिन, लमनायटियों की सेना को (१) अमोनिहा की ओर बढ़ते देखा गया।

२. और सुनो, उस नगर को फिर से बनाया गया था और मरोनी ने नगर की सीमा पर उसकी रक्षा के लिए एक सेना को नियुक्त कर रखा था जिसने लमनायटियों के वाणों और पत्थरों से (२) अपनी रक्षा करने के लिए मिट्टी की दीवाल सी बना रखी थी। क्योंकि वे पत्थरों और तीरों से युद्ध करते थे।

३. सुनो, मैंने कहा कि अमोनिहा नगर को फिर से बनाया गया था। मैं तुमसे कहता हूं कि हां, उसके कुछ भागों को फिर से बनाया गया था; और जबकि लमनायटियों ने वहां के लोगों के पापों के कारण उसे (३) एक बार नष्ट कर दिया था तब उन्होंने उसे फिर से सरलतापूर्वक नष्ट कर डालने की आशा की थी।

४. लेकिन सुनो, उनकी कितनी बड़ी निराशा थी; क्योंकि नफी के सैनिकों ने मिट्टी की (४) एक दीवाल खोदकर खड़ी कर ली थी, जो इतनी ऊंची थी कि उसके ऊपर से लमनायटी अपने वाणों और पत्थरों को फेंक कर उन पर चोट नहीं पहुंचा सकते थे और न तो द्वार को छोड़कर उसके ऊपर से होकर उन तक पहुंच ही सकते थे।

५. इस समय सुरक्षा के लिए नफायटियों की बुद्धिमानीपूर्ण तैयारी से लमनायटियों के मुख्य सेनापतियों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

६. अपनी भारी संख्या के कारण लमनायटियों के नेताओं ने यह समझ रखा था कि पूर्व के समान

(१२) देखो २१, २ नफी ६. (१३) पद्य २. (१४) देखो ८, २ नफी १. अध्याय ४६. (१) देखो ६ और १०, अल० ८. (२) देखो ३, अल० ४८. (३) अल० १६:२, ३, ६-११. (४) देखो ३, अल० ४८.

*ईसा से ७२ वर्ष पूर्व

ही इस बार भी उन्हें सफलता मिलेगी; और इस बार उन्होंने अपने आप (५) को ढाल, छाती के कवच, और मोटे चमड़ों के वस्त्रों से अपने नंगे शरीरों को ढकने की तैयारी भी कर ली थी।

७. इस प्रकार तैयारी कर लेने से उन्होंने यह समझ रखा था कि वे अपने उन बन्धुओं को सरलता के साथ परास्त कर उन्हें या तो दासता में बांध लेंगे या अपनी इच्छानुसार उनका संहार करेंगे।

८. लेकिन सुनो, वे उनका सामना करने के लिए इस ढंग से तैयार थे कि जिसकी जानकारी लेही की सन्तानों को कभी नहीं थी और इससे उनको आश्चर्यचकित हो जाना पड़ा। इस समय वे लमनायटियों से (६) मरोनी के निर्देशानुसार संघर्ष करने को तैयार थे।

९. और ऐसा हुआ कि युद्ध की उनकी इस तरह की तैयारी को देखकर लमनायटियों और अमलकायटियों को अत्यन्त ही विस्मित होना पड़ा।

१०. इस समय अगर राजा अमलिकियाह अपनी सेना का प्रधान बनकर (७) नफी देश से आता तब सम्भव है कि वह नफायटियों पर (८) अमोनिहा नगर में लमनायटियों के द्वारा आक्रमण करवा देता क्योंकि उसे अपने आदमियों का रक्तपात करवाने में कोई संकोच नहीं होता था।

११. लेकिन सुनो, अमलिकियाह स्वयं युद्ध करने नहीं आया। उसके प्रधान सेनापतियों को अमोनियाह नगर में नफायटियों पर आक्रमण करने का साहस नहीं हुआ, क्योंकि मरोनी ने नफायटियों की सुरक्षा में उलट फेर करके ऐसा प्रबन्ध किया था कि लमनायटियों को अत्यन्त निराशा हुई और वे अपनी छावनियों से उनपर आक्रमण करने नहीं आए।

१२. इस कारण उन्हें वन में पीछे हटना पड़ा और वे (९) नूह देश की ओर यह सोचकर बढ़े कि अब सम्भव है वहां नफायटियों पर आक्रमण किया जा सके।

१३. क्योंकि उन्हें यह नहीं मालूम था कि मरोनी ने वहां (१०) गढ़बन्दी कर रखी है; या सुरक्षा के लिए सारे देश भर के नगरों को सुदृढ़ बना रखा है; इसलिए दृढ़ निश्चय कर वे नूह देश की ओर बढ़े : हां, उनके प्रधान सेनापतियों ने आगे बढ़कर शपथ ली कि वे उस नगर के लोगों को नष्ट कर डालेंगे।

१४. लेकिन देखो, उनको इस बात से अति आश्चर्य हुआ कि (११) नूह जो कि निर्बल स्थान था, मरोनी के प्रयत्न से (१२) अमोनियाह नगर से भी अधिक शक्तिशाली हो गया था।

१५. यह मरोनी की बुद्धिमानी थी; क्योंकि वह जानता था कि वे अमोनियाह नगर से भयभीत होकर (१३) नूह नगर की ओर बढ़ेंगे क्योंकि पहिले वह देश भर में सबसे शक्तिहीन स्थान था; इसलिए वे वहीं युद्ध करने के लिए जाएंगे; और उसकी इच्छानुसार यही हुआ।

१६. और सुनो, मरोनी ने उस नगर के लोगों का मुख्य सेनापति लेही को नियुक्त किया; और यह (१४) लेही वही व्यक्ति था जिसने लमनायटियों से (१५) सिदोन नदी के पूरब की घाटी में युद्ध किया था।

१७. और अब सुनो, ऐसा हुआ कि जब लमनायटियों को यह पता लगा कि नगर की रक्षा लेही कर रहा है तब उन्हें फिर निराशा हुई क्योंकि वे लेही से भयभीत थे; फिर भी उनके प्रधान सेनापतियों ने नगर पर (१६) आक्रमण करने की शपथ ले रखी थी; इस कारण उन्होंने अपनी सेनाओं को आगे बढ़ाकर लाए।

१८. दीवाल की (१७) उंचाई और चारों ओर की खोदी हुई खाई के कारण लमनायटी प्रवेश द्वार के अलावा किसी अन्य स्थान से उनके सुरक्षा-गड्ढ़ों में प्रवेश नहीं कर सकते थे।

१९. इस तरह नफायटी लोग उन लोगों को नष्ट कर देने के लिए तैयार थे जो ऊपर चढ़कर गढ़ में प्रवेश कर उनको मारने के लिए वाणों और पत्थरों से प्रहार करने की चेष्टा करते।

(५) देखो ४२, अल० ४३. (६) देखो ३; अल० ४८. (७) देखो २, २ नफी ५. (८) देखो ६, अल० ८. (९) पद्य १३-१५, १६:३. (१०) देखो ३, अल० ४८. (११) देखो ९. (१२) देखो ६, अल० ८. (१३) देखो ९. (१४) अल० ४३:३५. (१५) देखो ७, अल० २. (१६) देखो पद्य १३. (१७) देखो ३, अल० ४८. ईसा से लगभग ७२ वर्ष पूर्व

२०. उनके सबसे शक्तिशाली लोगों का एक दल द्वार पर तलवारों और ढेलवासों से उन लोगों को नष्ट करने को तैयार खड़ा था जो उनके सुरक्षित स्थान में (१८) द्वार से प्रवेश करने की चेष्टा करते; इस तरह वे लमनायटियों से अपनी रक्षा करने के लिए तैयार थे।

२१. और ऐसा हुआ कि लमनायटी सेनापति अपनी सेनाओं को (१९) प्रवेश द्वार पर लाकर अन्दर उनके सुरक्षित स्थान पर प्रवेश के लिए नफायटियों पर आक्रमण कर लड़ने लगे: लेकिन देखो, बार-बार वे पीछे ढकेल दिए गए और उनको बहुत बड़ी संख्या में मार डाला गया।

२२. जब उनको ज्ञात हो गया कि वे द्वार से होकर अन्दर प्रवेश नहीं कर सकते तब उन्होंने मिट्टी की दीवाल को खोद कर अपनी सेनाओं के लिए रास्ता बनाना आरम्भ किया ताकि युद्ध करने का उन्हें समान अवसर मिले; लेकिन सुनो, इस प्रयत्न में भी तीरों और पत्थरों की वर्षा के कारण उन्हें असफल होना पड़ा; और दीवाल ढाहकर खाई पाटने के स्थान पर उनके मृतकों और घायलों के शरीरों से ही कहीं-कहीं खाई पट गई।

२३. इस तरह नफायटियों को अपने शत्रुओं पर प्रबलता प्राप्त हुई; और इस तरह लमनायटी नफायटियों को नष्ट करने का तब तक प्रयत्न करते रहे जब तक कि उनके सब (२१) प्रधान सेनापति मारे नहीं गए; हां, एक सहस्त्र से भी अधिक लमनायटी मारे गए और दूसरी ओर एक भी नफायटी ने अपना प्राण नहीं खोया।

२४. लगभग पचास नफायटी (२२) प्रवेश द्वार से छोड़े गए लमनायटियों के बाणों से घायल हुए, लेकिन वे (२३) ढालों, कवचों और शिर-स्त्राणों से इतने ढके हुए थे कि घाव केवल उनके पैरों पर ही हुए थे जिन में से कुछ के घाव बहुत गहरे थे।

२५. और ऐसा हुआ कि जब लमनायटियों ने देखा कि उनके (२४) प्रधान सेनापति मारे गए तब वे मैदान छोड़ कर वन में भाग गए और राजा अमलिकियाह, जो जन्म से नफायटी था, को अपनी महान हानि का समाचार देने के लिए (२५) नफी देश वापस लौट गए।

२६. और वह अपने लोगों पर अत्यन्त ही क्रुद्ध हुआ, क्योंकि नफायटियों के ऊपर अपनी इच्छानुसार उसे सफलता नहीं मिल सकी; वह उन्हें दासता के जुआ में रख न सका।

२७. हां, वह अत्यन्त क्रोधित हो उठा और उसने परमेश्वर को गाली दी और मरोनी की निन्दा करते हुए (२६) उसने शपथ ली कि वह उसका रक्त पियेगा; यह इसलिए कि मरोनी ने अपने लोगों की रक्षा करने की तैयारी में परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया था।

२८. और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों ने अपने प्रभु परमेश्वर को उनके शत्रु के हाथों से अपनी अद्वितीय शक्ति से उनको बचाने के लिए धन्यवाद दिया।

२९. इस तरह नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का उन्नीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

३०. और उनमें लगातार शान्ति बनी रही और गिरजा में भारी प्रगति हुई, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की उस वाणी की ओर विशेष ध्यान दिया और परिश्रम किया जो उनको इलामन, सिबलन, कोरियन्दन, आमोन और उसके भाइयों द्वारा और उन सब लोगों द्वारा बताई गई थी जो (२७) परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था द्वारा नियुक्त थे, और पश्चात्ताप में बपतिस्मा लेकर, लोगों में प्रचार करने के लिए भेजे गए थे।

अध्याय ५०

मरोनी का जराहेमला और नफी के देश की मध्य-सीमा पर मोर्चेबन्दी को दृढ़ करना—मोरियन्दन का उत्तर के देश पर अधिकार करने की योजना बनाना—टेनकम द्वारा उसका मारा जाना—नफियाह का उत्तराधिकारी पहोरन का होना।

(१८) पद्य ४, १८, २१, २४. (१९) देखो १८. (२०) देखो ३, अल० ४८. (२१) अल० ४८:५. (२२) पद्य १८. (२३) देखो ४२, अल० ४३. (२४) अल० ४८:५. (२५) देखो २, २ नफी ५. (२६) अल० ५१:९, १०. (२७) देखो ७, मू० २६.

ईसा से लगभग ७२ वर्ष पूर्व

१. और तब ऐसा हुआ कि मरोनी ने युद्ध की तैयारी को समाप्त नहीं किया अर्थात् लमनायटियों से अपने लोगों की रक्षा करने के अपने प्रयत्नों का उसने अन्त नहीं किया। निर्णायकों के शासन के *बीसवे वर्ष के आरम्भ में उसने अपनी सेनाओं को आज्ञा दी कि वे नफायटियों के अधिकार के देशभर में स्थित सभी नगरों के चारों ओर (१) मिट्टी को खोदकर ऊंची प्राचीर खड़ी करें।

२. नगरों के चारों ओर मिट्टी के इन दीवालों के ऊपर मनुष्य की ऊंचाई तक लकड़ी लगवाई।

३ चारों ओर लकड़ी के ऊपर उसने नोकदार छड़ें लगवाईं जो कि दृढ़ और ऊंची थीं।

४. उसने मीनारें बनवाईं जहां से उन छड़ों के ऊपर से होकर देखा जा सकता था, और उन मीनारों के ऊपर ऐसे सुरक्षित अटारियां बनवाईं, जहां लमनायटियों के तीरों और पत्थरों से उनको कोई हानि नहीं पहुंच सकती थी।

५. उन अटारियों पर से पत्थरों की वर्षा कर वे उन लोगों को अपनी इच्छा और बल के अनुसार मार डालने के लिए तैयार थे जो नगर की दीवालों के निकट आने का साहस करते।

६. सारे देश के सभी नगरों के चारों ओर मरोनी ने इस तरह गढ़बन्दी कर, अपने शत्रुओं के आने के विरुद्ध तैयारी कर ली।

७. और ऐसा हुआ कि मरोनी ने अपनी सेनाओं को पूरब के वन में भेजा; वहां उन्हें जो भी लमनायटी मिले, उनको उन्होंने पूरब के वन से उनके अपने देश में खदेड़ दिया जो कि (२) ज़राहेमला देश के दक्षिण में था।

८. और (३) नफी का देश पूरब के समुद्र से पश्चिम के समुद्र तक सीधी पंक्ति में फैला हुआ था।

९. और तब ऐसा हुआ कि जब मरोनी ने पूरब के उस वन से सभी लमनायटियों को निकाल दिया, जो उनके अपने देश के उत्तर में था, तब उसने उन लोगों को जो ज़राहेमला देश में और उसके आस-पास बसे थे आज्ञा दी कि वे पूरब के वन में समुद्र तट तक के स्थानों को जाकर अपने अधिकार में कर लें।

१०. और उसने अपने अधिकार के देशों की दक्षिणी सीमाओं पर भी सेनाओं को नियुक्त (४) कर दिया और उन्हें अपने लोगों और सेनाओं की सुरक्षा के लिए कोटें बनाने की आज्ञा दी।

११. इस प्रकार उसने पूरब के वन में लमनायटियों के सभी दृढ़ किलों को मिटा दिया, और हां, उसने पश्चिम में भी, नफायटी और लमनायटी देशों के (५) मध्य (६) ज़राहेमला देश और (७) नफी देश के बीच—पश्चिम समुद्र से लेकर (८) सिदोम नदी के उद्‌गम तक और (९) उत्तर की ओर नफायटियों के अधिकार के सभी देशों, यहां तक कि (१०) सम्पन्न देश के उत्तर के सभी देशों की सीमाओं को अपनी इच्छानुसार दृढ़ कर लिया।

१२. इस प्रकार मरोनी, ने अपनी सैनिक शक्ति से, जो दिन प्रतिदिन बढ़ रही थी, क्योंकि उसके द्वारा लोगों को सुरक्षा मिल रही, अपने अधिकार के देशों के ऊपर से लमनायटियों की शक्ति को नष्ट कर देने का प्रयत्न किया जिससे कि उनके अधिकार के देशों पर उनका कोई प्रभाव न रहे।

१३. और तब ऐसा हुआ कि नफायटियों ने एक नगर की नींव डालना आरम्भ किया और उसका नाम उन्होंने (११) मरोनी नगर रखा, जो पूरब के समुद्र तट पर और दक्षिण में लमनायटियों के अधिकार के देश की सीमा के निकट था।

१४. उन्होंने दूसरा नगर, मरोनी नगर और आरुन नगर के मध्य में वहां बसाना आरम्भ किया, जहां पर दोनों नगरों की सीमा थी, और उन्होंने उस नगर या स्थान का (१२) नफियाह नाम रखा।

१५. उसी वर्ष उन्होंने उत्तर में कई नगरों को बसाना आरम्भ किया और एक नगर को उन्होंने विशेष रूप से बनाना आरम्भ किया जिसका नाम उन्होंने (१३) लेही रखा, जो कि उत्तर में समुद्र तट पर था।

(१) देखो ३, अल० ४८. (२) ओम० १३. (३) देखो २, २ नफी ५. (४) देखो ३, अल० ४८. (५) पद्य ८. (६) ओम० १३. (७) देखो २, २ नफी ५. (८) देखो ७, अल० २. (९) देखो १६, अल० ४६. (१०) देखो ३७, अल० २२. (११) पद्य १४, अल० ५१:२२-२४. ५९:५. ६२:३२, ३४. ३ नफी ८:९. ९:४. (१२) अल० ५१:२४-२६. ५९:५, ७-११. ६२:१४, १८, २६, ३०. (१३) पद्य २५:२८, ३६, अल० ५१:१, २४, २६. ५९:५. ६२:३०.

ईसा से ७२ वर्ष पूर्व

१६. इस प्रकार बीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

१७. इस प्रकार नफी के लोगों ने प्रगति के पथ पर चलते हुए, नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के *इक्कीसवें वर्ष में प्रवेश किया।

१८. लोगों ने बहुत उन्नति की और बहुत ही अधिक धनी हो गए; उनकी संख्या में भी भारी वृद्धि हुई और देश में उनकी स्थिति भी दृढ़ हो गई।

१९. इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव-सन्तान के प्रति अपने वचनों को पूरा करने में प्रभु के व्यवहार कितने दयापूर्ण और न्यायपूर्ण होते हैं : और हां, हम यह देख सकते हैं कि वर्तमान में भी उसने लेही से जो कहा था वह सब सत्य होता जा रहा है। उन्होंने लेही से कहा था—

२०. धन्य (१४) हो तुम और तुम्हारी सन्तान; और उन्हें आशीर्वाद दिया जाएगा, और वे जितना ही मेरी आज्ञाओं का पालन करेंगे उतनी ही देश में प्रगति करेंगे। लेकिन यह भी याद रखो कि वे जितनी मेरी आज्ञाओं का अवहेलना करेंगे उतनी ही उनको परमेश्वर की उपस्थिति से अलग किया जाएगा।

२१. और हम देखते हैं कि नफी के लोगों के प्रति ये वचन सिद्ध हुए हैं; क्योंकि उनके आपसी विवाद, लड़ाई, हत्यायें, लूटमार, मूर्तिपूजा, व्यभिचार और अन्य घृणित कार्य जो उनके अन्दर हो रहे थे, उनके युद्ध और विनाश के कारण बने।

२२. और जो परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करने में ईमानदार थे, उन्हें सदैव बचाया गया, जब कि उनके सहस्त्रों पापी बन्धु दास बनाए गए, या तलवार से मारे गए, या अविश्वास में लुप्त होकर लमनायटियों में मिल गए।

२३. लेकिन सुनो, नफी के लोग मरोनी के काल में जितने आनन्दित रहें उतने, नफी के समय से लेकर निर्णायकों के शासन के *इक्कीसवें वर्ष के वर्तमान समय तक कभी भी नहीं रहे।

२४. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन का बाइसवां वर्ष भी शान्ति के साथ समाप्त हुआ और तेइसवां वर्ष भी शान्ति से बीता।

२५. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन के चौबीसवें वर्ष के †आरम्भ में भी नफी के लोगों में शान्ति बनी रहती, अगर उनमें (१५) लेही की भूमि और (१६) मोरियन्दन की भूमि को लेकर आपस में विवाद न उठ खड़ा होता जो लेही नामक स्थान की सीमा पर मिलते थे और जो दोनों ही समुद्र तट पर थे।

२६. क्योंकि सुनो, जिन लोगों के अधिकार में (१७) मोरियन्दन देश था वे (१८) लेही देश के एक भाग को अपने अधिकार में करने की चेष्टा करने लगे। इसलिए उनमें भारी झगड़ा होने लगा, जो इतना उग्र रूप धारण किया कि मोरियन्दन के लोगों ने अपने बन्धुओं के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण कर लिए और तलवार से उन्हें मार डालने की ठानी।

२७. लेकिन जिन लोगों के अधिकार में (१९) लेही देश था, वे मरोनी के डेरे पर भाग गए और उससे सहायता की मांग की; क्योंकि सुनो, भूल उनकी नहीं थी।

२८. और ऐसा हुआ कि जब मोरियन्दन के के लोगों को जिनका नेता मोरियन्दन नाम का एक व्यक्ति था, यह पता लगा कि लेही के लोग मरोनी के डेरे पर भाग गए हैं, तब वे यह सोच कर बहुत भयभीत हुए कि मरोनी शायद आकर उन्हें नष्ट कर दे।

२९. इस कारण मोरियन्दन ने उनके हृदयों में यह भर दिया कि उन्हें उस देश को भाग चलना चाहिए जो कि (२०) उत्तर की ओर है और (२१) जहां बड़े बड़े जलाशय हैं, और उस उत्तर के देश को अपने अधिकार में कर लेना चाहिए।

३०. और सुनो, वे अपनी इस योजना को पूरी करते (जो शोक मनाने का एक भारी कारण होता) परन्तु मोरियन्दन ने एक उत्तेजित स्वभाव के व्यक्ति होने के कारण अपनी एक सेविका को क्रोधित हो उठने पर, उसे बहुत पीटा।

३१. और ऐसा हुआ कि वह भाग कर मरोनी के डेरे पर पहुंची और उससे सारा हाल कह सुनाया और यह भी बतलाया कि उनकी योजना उत्तर के देश को भाग जाने की है।

(१४) देखो ८, २ नफी १. (१५) देखो १३. (१६) पद्य २६, २८, ३६. ५१:२६. ५५:३३. ५६:५. (१७) देखो १६. (१८) देखो १३. (१९) देखो १३. (२०) मू० ८:८, इला० ३:४, मार० ६:४. (२१) देखो १६, अल० ४६.

*ईसा से ७१ वर्ष पूर्व †ईसा से ६८ वर्ष पूर्व

३२. और सुनो, जो लोग सम्पन्न देश में थे, उन्हें इस बात का भय हुआ हक वे मोरियन्दन की बात मान कर और उसके लोगों के साथ संगठित हो कर, देश के उस भाग को अपने अधिकार में कर लेंगे जो नफी के लोगों के लिए भयंकर परिणाम का कारण होगा और वह परिणाम होगा उनकी (२२) स्वतन्त्रता का नष्ट होना।

३३. इसलिए मरोनी ने सेना को कई दिनों की तैयारी के साथ, मोरियन्दन के लोगों को उत्तर के देश में भागने से रोकने के लिए भेजा।

३४. और ऐसा हुआ कि उस सेना ने उन लोगों को तब तक नहीं रोका, जब तक कि वे (२३) मरुदेश की सीमा पर पहुंच न गए; और वहां पर जहां (२४) एक सकरी घाटी है, जिसके पश्चिम और पूरब में समुद्र है और जिससे होकर उत्तर के देश में जाया जा सकता है, सेना ने उनकी राह को रोक लिया।

३५. और ऐसा हुआ कि जिस सेना को मरोनी ने भेजा था उसका सेनापति टेनकम नामक एक व्यक्ति था। उसने मोरियन्दन के लोगों से भेंट की, परन्तु मोरियन्दन के लोग इतने हठी थे (क्योंकि उसने अपनी दुष्टता और चिकनी चुपड़ी बातों से उनपर प्रभाव डाल रखा था) कि उनमें लड़ाई होने लगी, जिसमें टेनकम ने मोरियन्दन को मार डाला और उसकी सेना को पराजित कर दिया और उन्हें बन्दी बना कर मरोनी के डेरे पर ले गया। इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का चौबीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

३६. इस प्रकार मोरियन्दन के लोग वापस लाए गए। और जब उन्होंने शान्ति बनाए रखने का वचन दिया, तब उन्हें पुनः (२५) मोरियन्दन देश में बसाया गया और वे (२६) लेही के लोगों के साथ मिल गए और उनके देश में भी उन्हें बसाया गया।

३७. और ऐसा हुआ कि जिस वर्ष नफी के लोगों में शान्ति हुई, तब नफीह जिसका पद (२७) द्वितीय प्रधान निर्णायक का था, और जिसने परमेश्वर के सामने उचित ढ़ंग से अपना काम किया था, मृत्यु को प्राप्त हो गया।

३८. फिर भी उसने अलमा को उन (२८) अभिलेखों और उन वस्तुओं को अपने अधिकार में लेने नहीं दिया, जिसे अलमा और उसके पूर्वजों ने अति पवित्र माना था; इसीलिए अलमा ने ने अपने पुत्र इलामन को उनका अधिकारी नियुक्त किया था।

३९. सुनो, ऐसा हुआ कि नफियाह का पुत्र अपने पिता के स्थान पर न्याय आसन पर बैठाया गया; हां, उसको प्रधान निर्णायक और लोगों का शासक के पद पर, न्यायपूर्वक और पवित्र व्यवस्थाओं के साथ निर्णय करने, शान्ति बनाए रखने (२९) लोगों की स्वतन्त्रता रखने, अपने प्रभु परमेश्वर की आराधना करने की छूट देने, और जीवन भर परमेश्वर के कार्यों को सहारा देने और लोगों के अपराध के अनुसार उन्हें दण्ड देने की शपथ लेने पर, नियुक्त किया गया।

४०. अब सुनो, उसका नाम पहोरन था। और पहोरन अपने पिता की गद्दी पर बैठा और उसने नफी के लोगों के ऊपर चौबीसवें वर्ष के अन्त से शासन करना आरम्भ किया।

अध्याय ५१

राजा के लोगों और स्वतन्त्र लोगों—स्वतन्त्र लोगों द्वारा मुख्य निर्णायक पहोरन को उसके पद पर रखना—राजा के लोगों का पराजित किया जाना—अमलिकियाह् का आक्रमण, उसकी पराजय और मृत्यु।

१. और तब ऐसा हुआ कि नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के *पच्चीसवें वर्ष के आरम्भ से उनके द्वारा (१) लेही के लोगों और (२) मोरियन्दन के लोगों में उनके भूमि के विवाद को समाप्त किए जाने के पश्चात् शान्ति का पच्चीसवां वर्ष प्रारम्भ हुआ।

२. फिर भी देश में वे बहुत दिनों तक शान्ति बनाए न रख सके। मुख्य निर्णायक (३) पहोरन

(२२) देखो १३, मू० २९. (२३) देखो ३८, अल० २२. (२४) देखो ४८, अल० २२. (२५) देखो १६. (२६) देखो १३. (२७) अल० ४:१६-१८. (२८) अल०३७. (२९) देखो १३, मू० २९. अध्याय ५१. (१) देखो १३, अल० ५०. (२) देखो १३, अल० ५०. (३) अल० ५०:४०.

*ईसा से लगभग ६७ वर्ष पूर्व

को लेकर उनमें विवाद उठ खड़ा हुआ; क्योंकि सुनो, कुछ लोग ऐसे थे जो नियम के कुछ विशेष (४) अंशों में परिवर्तन करवाना चाहते थे।

३. परन्तु पहोरन नियम में कोई परिवर्तन करना नहीं चाहता था और न ही वह नियम में कोई परिवर्तन होते देख ही सकता था; इसलिए जो लोग उसके पास नियम में परिवर्तन करवाने के लिए प्रतिनिधि बन कर गए, उनकी बातों पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया।

४. इसलिए जो लोग नियम में परिवर्तन चाहते थे वे उसके ऊपर क्रोधित हो उठे और यह इच्छा करने लगे कि उसे अब देश का मुख्य निर्णायक नहीं रहना चाहिए; इस कारण लोगों में भारी विवाद होने लगा, परन्तु कोई रक्तपात न हुआ।

५. और ऐसा हुआ कि जो लोग पहोरन को न्याय—आसन पर से उतारना चाहते थे, उन्हें (५) राजा के लोग कहा जाने लगा, क्योंकि वे चाहते थे, कि नियम में ऐसा परिवर्तन लाया जाए, जिससे प्रजातन्त्र शासन समाप्त हो जाए और देश में एक राजा द्वारा शासन होने लगे।

६. और जो लोग यह चाहते थे कि पहोरन देश का प्रधान निर्णायक बना रहे वे अपने को (६) स्वतन्त्र लोग कहने लगे; इस प्रकार लोगों में विभाजन हो गया क्योंकि स्वतन्त्र लोग वचन-बद्ध थे कि (७) वे प्रजातन्त्र-प्रणाली द्वारा अपने अधिकारों और अपने धर्म की विशेष सुविधाओं की रक्षा करेंगे।

७. और ऐसा हुआ कि उनके विवाद का जनता के मत द्वारा अन्त किया गया। (८) स्वतन्त्र लोगों के पक्ष में जनता का बहुमत हुआ और पहोरन अपने न्याय-आसन पर बना रहा, जो पहोरन के बन्धुओं और बहुत से (९) उन स्वतन्त्र लोगों में भी आनन्द मनाने का कारण हुआ, जिन्होंने (१०) राजा के लोगों को चुप कर दिया था जिससे वे और विरोध न कर सकें, बल्कि बाध्य होकर उन्हें भी (११) स्वतन्त्रता का पक्ष ग्रहण करना पड़ा।

८. जो लोग राजा द्वारा देश का शासन करवाना चाहते थे वे ऊंचे वंश के लोग थे और वे स्वयं राजा बनना चाहते थे; और उनका पक्ष वे लोग ले रहे थे जो आम जनता के ऊपर अपना प्रभाव और अधिकार प्राप्त करना चाहते थे।

९. लेकिन सुनो, नफी के लोगों में ऐसे विवादों के लिए यह बुरा अवसर था; क्योंकि अमलिकियाह लमनायटियों को पुनः नफी के लोगों के विरुद्ध भड़का था, और अपने सारे देश भर के सैनिकों को एकत्रित कर, उन्हें सशस्त्र कर, परिश्रम के साथ युद्ध की तैयारी कर रहा था; क्योंकि उसने (१२) मरोनी का रक्त पीने की प्रतिज्ञा की थी।

१०. लेकिन सुनो, आगे हम यह देखेंगे कि उसकी यह प्रतिज्ञा मूर्खतापूर्ण थी, फिर भी उसने और उसकी सेना ने आकर नफायटियों पर चढ़ाई करने की तैयारी की।

११. नफायटियों के द्वारा उसके सैनिकों के मारे जाने के कारण उसकी सेना उतनी बड़ी नहीं थी, जितनी बड़ी पहले थी; लेकिन अपनी पहले की महान हानि की परवाह न कर उसने एक इतनी बड़ी सेना एकत्रित कर ली थी कि ज़राहेमला देश पर चढ़ाई करने में उसे कोई भय न हुआ।

१२. अमलिकियाह स्वयं लमनायटियों की सेना का संचालन करते हुए आया। यह घटना निर्णायकों के शासन के पच्चीसवें वर्ष में उसी समय घटी, जबकि लोगों (१३) ने प्रधान निर्णायक पहोरन के विषय में अपने विवाद का अन्त करना आरम्भ ही किया था।

१३. और तब ऐसा हुआ कि जब (१४) राजा के पक्ष वाले लोगों ने यह सुना कि लमनायटी उनके विरुद्ध चढ़ाई कर रहे हैं, तब हृदय में वे प्रसन्न हुए; वे प्रधान निर्णायक (१५) और स्वतन्त्र लोगों से इतने अप्रसन्न थे कि शस्त्र लेकर अपने देश की रक्षा करना भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

१४. और जब मरोनी ने यह देखा और यह भी जाना कि लमनायटी देश की सीमा पार करके

(४) पद्य ३, ५. (५) पद्य ७, ८, १३, १७-२१. (६) पद्य ७. (७) देखो १३, मू० २६. (८) पद्य ६. (९) देखो १३, मू० २६. (१०) देखो ५ (११) देखो १३, मू० २६. (१२) अल० ४९:२७. (१३) पद्य २-८. (१४) देखो ५. (१५) देखो २३, मू० २६.

ईसा से लगभग ६७ वर्ष पूर्व

आक्रमण करने के लिए आ रहे हैं, तब जिन लोगों की रक्षा करने के लिए उसने इतना अधिक परिश्रम किया था, उनका हठ देख कर उसे अति क्रोध आया; हां, वह बहुत ही क्रोधित हुआ; उसकी आत्मा उन लोगों के विरुद्ध क्रोध से भर उठी।

१५. तब उसने देश के शासक के पास प्रतिनिधि द्वारा (१६) जनता का मत लिख कर भेजा कि वह उसे पढ़े और उसे (मरोनी को) यह अधिकार दिया जाए कि उन असन्तुष्ट लोगों को या तो बल-पूर्वक देश की रक्षा करने के लिए विवश करे या मृत्यु-दण्ड दे।

१६. क्योंकि लोगों में ऐसे मतभेदों और विवादों को समाप्त करना उसका प्रथम कर्तव्य था; क्योंकि देखो, अबतक उनके विनाश का भी यही कारण होता था। और ऐसा हुआ कि जनमत अनुसार इसकी स्वीकृति दे दी गई।

१७. तब ऐसा हुआ कि मरोनी ने अपनी सेना को आज्ञा दी कि वह जाकर (१७) राजा के पक्ष वाले लोगों के अहंकार और उनके उच्च वंश होने के घमंड को चूर कर मिट्टी में मिला दे या वे शस्त्र ग्रहण कर स्वतन्त्रता की रक्षा करने में सहयोग दें।

१८. और ऐसा हुआ कि सेना ने उनके विरुद्ध चढ़ाई की और उनके अहंकार और उच्च वंश के होने के गर्व को ऐसा तोड़ा कि वे युद्ध के अस्त्र-शस्त्र लेकर मरोनी के आदमियों से लड़ने लगे और मरोनी के लोगों ने उन्हें मार कर धरती पर गिरा दिया।

१९. उन असन्तुष्ट लोगों में से चार सहस्त्र तलवार से मारे गए और उनके नेताओं में से जो लड़ाई में मारे नहीं गए, उन्हें बन्दी बना कर कारागार में डाल दिया क्योंकि इस समय उनका न्याय करने का समय ही नहीं था।

२०. और उन असन्तुष्ट लोगों में से बचे हुए लोग तलवार से कट कर धरती पर गिरने की अपेक्षा, स्वतन्त्रता के झण्डे के आगे झुक गए और बाध्य होकर अपनी मीनारों और नगरों पर (१८) स्वतन्त्रता की पताका को फहराने लगे और उन्होंने देश की रक्षा के लिए अस्त्र गृहण किए।

२१. इस प्रकार मरोनी ने राजा के लोगों का अन्त कर दिया, जिससे कि (१९) राजा के लोग नाम से पुकारे जाने वाले कोई नहीं बचे; और इस प्रकार जो लोग अपने आप को उच्च वंश के लोग मानते थे, उनके अहंकार और श्रेष्ठ रक्त होने के गर्व को भी उसने समाप्त कर दिया; और उन्हें अपने बन्धुओं की तरह ही विनीत कर, वीरता के साथ (२०) दासता के विरुद्ध स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने को तैयार किया।

२२. सुनो, ऐसा हुआ कि जब मरोनी अपने लोगों में आपस की लड़ाई-झगड़ों को समाप्त कर, शान्ति और सभ्यता ला रहा था और लमनायटियों से संघर्ष करने की तैयारी के नियम बना रहा था तब, लमनायटी सागर तट पर (२१) मरोनी देश में आ घुसे जो कि सीमा पर था।

२३. और ऐसा हुआ कि मरोनी नगर में नफायटी पर्याप्त रूप से बलवान नहीं थे; इसलिए अमलिकियाह ने उनको भगा दिया और बहुतों को मार डाला और ऐसा हुआ कि अमलिकियाह ने नगर पर और उसके सभी कोटों पर अधिकार कर लिया।

२४. जो लोग (२२) मरोनी नगर से बचकर भाग निकले थे वे (२३) नफियाह नगर में आए जहां लेही नगर (२४) के लोग भी एकत्रित होकर लमनायटियों का सामना करने की तैयारी कर रहे थे।

२५. लेकिन ऐसा हुआ कि अमलिकियाह ने लमनायटियों को (२५) नफियाह नगर लड़ने के लिए नहीं भेजा बल्कि उन्हें समुद्र तट पर ही रोक कर, हर एक नगर में रक्षा और देखभाल के लिए आदमियों को नियुक्त किया।

२६. इस प्रकार पूरब के समुद्र तट पर बसे सीमा पर के (२६) नफियाह नगर (२७) लेही

(१६) देखो ५, मू० २६. (१७) देखो ५. (१८) अल० ४६:१२, १३. (१९) देखो ५. (२०) देखो १३, मं० २६. (२१) देखो ११, अल० ५०. (२२) देखो ११, अल० ५०. (२३) देखो १२, अल० ५०. (२४) अल० ५०. (२५) देखो १२, अल० ५०. (२६) देखो १२, अल० ५०. (२७) १३, अल० ५०.

ईसा से ६७ वर्ष पूर्व

नगर, (२८) मोरियन्दन नगर, ओमनार नगर (२९) गिंड नगर (३०) मूलक आदि नगरों पर उसने अधिकार कर लिया।

२७. इस प्रकार लमनायटियों ने अमलिकियाह की धूर्तताई द्वारा इतने अधिक नगरों को उनकी भारी आबादी के साथ अपने अधिकार में कर लिया। उनमें से प्रत्येक नगर (३१) की मरोनी की प्रणाली द्वारा गढ़बन्दी की गई थी, जो लमनायटियों के लिए किले के रूप में काम आने लगी।

२८. और तब ऐसा हुआ कि वे (३२) सम्पन्न देश की सीमा की ओर नफायटियों को भगाते और बहुतों को मारते हुए बढ़े।

२९. लेकिन ऐसा हुआ कि टेनकम से उनका सामना हुआ जिसने भागते हुए (३३) मोरियन्दन को मार डाला था और जो उसके लोगों का सामना किया था।

३०. जब अमलिकियाह अपनी असंख्य सेना के साथ (३४) सम्पन्न देश और उत्तर (३५) के देश पर अधिकार करने के लिए बढ़ रहा था, तब उसी ने उसका रास्ता रोका।

३१. लेकिन देखो, जब टेनकम और उसके आदमियों ने जो बड़े लड़ाकू थे, उसको पीछे हटा दिया तब उसे बड़ी निराशा हुई; क्योंकि टेनकम का हर एक आदमी शक्ति और युद्ध कला में लमनायटियों से इतना प्रवीण था कि उन्हें लमनायटियों पर प्रबलता प्राप्त हुई।

३२. और ऐसा हुआ कि उन्होंने उनको बहुत हैरान किया और इतना तंग किया कि अन्धकार होने तक वे उन्हें मारते रहे। टेनकम और उसके आदमियों ने (३६) सम्पन्न देश की सीमा पर छावनी डाल दी और अमलिकियाह ने समुद्र तट की सीमा पर अपना डेरा लगाया। इस तरह वे पीछे हटाए गए।

३३. और ऐसा हुआ कि जब रात हुई तब टेनकम और उसका एक सेवक गुप्त रूप से अपने डेरे में से निकल कर अमलिकियाह के डेरे में गए जो दिन के परिश्रम और गर्मी के कारण थके हुए सो रहे थे।

३४. और ऐसा हुआ कि टेनकम ने गुप्त रूप से राजा के शिविर में प्रवेश किया, और उसके हृदय में भाला भोंक दिया जिससे तत्क्षण उसकी मृत्यु हो गई और वह अपने सेवकों को जगा नहीं सका।

३५. और वह गुप्त रूप से अपने डेरे में वापस लौट आया जब कि उसके लोग सो रहे थे; और उसने उनको जगाकर, उसने जो कुछ किया था वह सब उन्हें बताया।

३६. और उसने अपनी सेनाओं को सतर्क कर दिया कि शायद लमनायटी जाग गए हों और उन पर आक्रमण कर दें।

३७. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का पच्चीसवां वर्ष समाप्त हुआ और इस तरह अमलिकियाह के दिन पूरे हुए।

अध्याय ५२

अमरोन का अमलिकियाह का उत्तराधिकारी होना—मरोनी का टेनकम और लेही के साथ मूलक नगर को वापस लेना और उनकी भारी विजय—लमनायटी सेनाध्यक्ष याकूब की मृत्यु।

१. और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के छब्बीसवें वर्ष के प्रथम माह के प्रथम दिन जब लमनायटी जागे, तब उन्होंने अमलिकियाह को अपने तम्बू में मरा हुआ पाया उन्होंने यह भी देखा कि टेनकम उस दिन उनके साथ युद्ध करने के लिए तैयार है।

२. जब लमनायटियों ने यह देखा तब वे भयभीत हुए और (१) उन्होंने उत्तर के देश की ओर बढ़ने के अपने विचार को त्याग दिया और (२) मूलक नगर में वापस लौटकर अपने (३) कोटों में शरण ली।

३. और ऐसा हुआ कि अमलिकियाह का

(२८) देखो १७, अल० ५०. (२९) अल० ५५:७, १६, २५, २६ इला० ५:१५. (३०) अल० ५२:२, १६, १७, १९, २०, २२, २६, २८, ३४, ५३:२, ६. (३१) देखो ३, अल० ४८. (३२) देखो ३७, अल० २२. (३३) अल० ५०:३५. (३४) देखो ३७, अल० २२. (३५) देखो १६, अल० ४६,. (३६) देखो ३७, अल० २२. अध्याय ५२. (१) देखो १६, अल० ४६. (२) देखो ३०, अल० ५१. (३) देखो ३, अल० ४८.

*ईसा से ६६ वर्ष पूर्व

भाई लोगों का राजा नियुक्त किया गया। उसका नाम था अमरोन। इस प्रकार राजा अमलिकियाह का भाई अमरोन उसकी जगह राज्य करने के लिए नियुक्त हुआ।

४. उसने आज्ञा दी कि जिन नगरों को उसके लोगों ने रक्त बहाकर अपने अधिकार में किया है, उन्हें वे अपने ही अधिकार में रखें; क्योंकि अत्यधिक रक्त बहाकर ही उन्होंने उन नगरों पर विजय प्राप्त की थी।

५. टेनकम ने यह देखा कि जिन नगरों और स्थानों पर लमनायटियों ने विजय पाई है, उन्हें वे अपने ही अधिकार में रखना चाहते हैं। और उसने उनकी भारी संख्या को देख कर उनके गढ़ों पर आक्रमण करना भी हितकर नहीं समझा।

६. लेकिन उसने अपने आदमियों को आस-पास ही रखा, मानो वह युद्ध की तैयारी कर रहा हो; और वह सचमुच चारों ओर (४) दीवाल खड़ी कर और किलेबन्दी कर, उनसे अपनी रक्षा करने की तैयारी कर रहा था।

७. और इस प्रकार वह तब तक तैयारी करता रहा, जब तक कि मरोनी ने उसकी सेना को और भी सबल करने के लिए बहुत से आदमियों को भेज न दिया।

८. मरोनी ने उसको यह भी आज्ञा दी कि वह अपने हाथ आए हुए बन्दियों को बन्दी बनाए रखे क्योंकि लमनायटी उनके बहुत से लोगों को बन्दी बनाए हुए हैं, जिनको मुक्त करवाने के लिए इन बन्दियों को उपयोग में लाया जाएगा।

९. उसने उसे यह आज्ञा भी भेजी कि वह (५) सम्पन्न देश को दृढ़ करके (६) उत्तर देश की तरफ जाने वाली (७) संकरी घाटी पर भी अधिकार कर ले, नहीं तो वहां लमनायटी अपना अधिकार जमा कर उन्हें सभी तरफ से तंग करेंगे।

१०. मरोनी ने उसके पास आज्ञा भेजकर यह इच्छा प्रकट की कि वह देश के उस भाग की रक्षा सावधानी से करता रहे और उस ओर से लमनायटियों को मिटाने के सभी अवसरों को अपने उपयोग में यथासंभव लावे, जिससे कि वह छल या किसी अन्य युक्ति के द्वारा उन नगरों को वापस ले सके जो उनके कब्जे से निकल गए हैं; और साथ ही वह स्वयं भी आस-पास के उन नगरों को (८) किले बन्दी सुदृढ़ करेगा जो लमनायटियों के हाथों में नहीं गए हैं।

११. उसने उससे यह भी कहा कि मैं तुम्हारी सहायता के लिए आता, परन्तु पश्चिम के समुद्र तट की सीमा पर लमनायटी स्थित हैं; मैं उनका सामना करने के लिए जा रहा हूं, इसलिए तुम्हारी सहायता के लिए इस समय नहीं आ सकता।

१२. इस समय राजा अमरोन (९) ज़राहेमला देश से चला गया था और उसने अपने भाई के मारे जाने का समाचार रानी को दिया और बहुत अधिक लोगों को एकत्रित करके नफायटियों के विरुद्ध पश्चिम के समुद्र तट की सीमा की ओर बढ़ा।

१३. इस प्रकार वह नफायटियों को तंग करने और उनकी सेनाओं के कुछ भाग को उस ओर खींचने का प्रयत्न कर रहा था; साथ ही उसने उन लोगों को आज्ञा दी जिन्हें जीते हुए नगरों को अपने अधिकार में बनाए रखने के लिए छोड़ गया था कि वे नफायटियों को पूरब के समुद्र की ओर भी तंग करते रहें और अपनी सेना की शक्ति के अनुसार उनकी अधिक से अधिक भूमि पर अधिकार करते रहें।

१४. नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के छब्बीसवें वर्ष के अन्त में नफी के लोग इस प्रकार संकटपूर्ण स्थिति में थे।

१५. लेकिन सुनो, निर्णायकों के शासन के *सत्ताइसवें वर्ष में मरोनी जो कि देश के दक्षिण और पश्चिम की सीमाओं—की रक्षा के लिए सेनाओं को स्थापित कर रहा था और (१०) सम्पन्न देश की ओर बढ़ रहा था जिससे कि वह अपने आदमियों द्वारा उन नगरों को वापस लेने में टेनकम की सहायता कर सके, जो कि शत्रुओं के हाथों में चले गए थे।

१६. उसने टेनकम को आज्ञा दी कि वह (११) मूलक नगर पर धावा बोले और हो सके तो उस पर पुनः अधिकार कर ले।

(४) देखो ३, अल० ४८. (५) देखो ३७, अल० २२. (६) देखो ४८, अल० २२. (७) देखो १६, अल० ४६. (८) देखो ३, अल० ४८. (९) ओम १३. (१०) देखो ३७, ३२. (११) देखो ४०, अल० ५१. *ईसा से ६५ वर्ष पूर्व

१७. और तब ऐसा हुआ कि टेनकम मूलक नगर पर हमला करने और लमनायटियों के विरुद्ध आगे बढ़ने की तैयारियां करने लगा; लेकिन उसने देखा कि जब तक लमनायटी अपने दृढ़ (१२) गढ़ों में रहेंगे तब तक उन पर विजय पाना सम्भव नहीं है; इसलिए वह अपने विचार को बदल (१३) कर सम्पन्न नगर वापस लौट आया और मरोनी की प्रतिक्षा करने लगा, जिससे कि उसकी सेना को और शक्ति मिल सके।

१८. और ऐसा हुआ कि मरोनी अपनी सेना के साथ सम्पन्न देश में नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के सत्ताइसवें वर्ष के अन्त में पहुंचा।

१९. और *अट्ठाइसवें वर्ष के आरम्भ में मरोनी, टेनकम और अन्य प्रधान सेनापति ने इस बात पर विचार विनिमय किया कि उन्हें क्या करना चाहिए, जिससे लमनायटी अपने सुदृढ़ गढ़ों से लड़ने के लिए बाहर आ सकें—या किस प्रकार उन्हें बातों में बहका कर बाहर निकाला जा सके जिससे उन पर विजय प्राप्त कर (१४) मूलक नगर वापस लिया जा सके।

२०. और ऐसा हुआ कि जो लमनायटी सेना मूलक नगर की रक्षा कर रही थी, उसके सेनापति याकूब के पास सन्देशवाहकों को भेज कर उन्होंने यह इच्छा प्रकट कि की वह अपनी सेना के साथ दोनों नगरों के मध्य मैदान में मिले। लेकिन याकूब जो कि एक (१५) जोरमायटी था, मैदान में उनसे मिलने नहीं आया।

२१. जब मरोनी को सामान्य स्थिति में उनका सामना करने की आशा जाती रही, तब उसने लमनायटियों को उनके गढ़ों में से छल द्वारा निकालने की दूसरी योजना बनाई।

२२. इसलिए उसने टेनकम को कुछ आदमियों के साथ समुद्र तट के निकट जाने की आज्ञा दी, और मरोनी अपनी सेना के साथ रात को जंगल में (१६) मूलक नगर से पश्चिम की ओर चला गया; इस प्रकार सुबह जब लमनायटी प्रहरियों को, टेनकम का पता लगा, तब उन्होंने दौड़ कर अपने नायक याकूब को बताया।

२३. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों की सेना टेनकम की छोटी-सी सेना को देखकर, उन पर आसानी से विजय प्राप्त करने की आशा से टेनकम के विरुद्ध आगे बढ़ी। जब टेनकम ने लमनायटियों की सेनाओं को अपने विरुद्ध आते हुए देखा, तब वह समुद्र के किनारे-किनारे उत्तर की ओर पीछे हटने लगा।

२४. और ऐसा हुआ कि जब लमनायटियों ने देखा कि वह भाग रहा है, तब उन्हें साहस हुआ और वे तीव्र गति से उसका पीछा करने लगे। इस प्रकार जब टेनकम लमनायटियों को जो उसका असफल पीछा कर रहे थे, दूर ले जा रहा था, तब सुनो, मरोनी ने अपने साथ की कुछ सेना को नगर में प्रवेश करने और नगर को अपने अधीन करने की आज्ञा दी।

२५. और ऐसा ही उन्होंने किया और जिन्होंने युद्ध के हथियारों को त्यागा नहीं उन्हें उन्होंने मार डाला।

२६. इस प्रकार मरोनी ने (१७) मूलक नगर पर अपनी सेना की एक टुकड़ी द्वारा अधिकार कर लिया, जब कि वह स्वयं अपनी बची हुई सेना के साथ टेनकम का पीछा करने के पश्चात् वापस लौटती हुई लमनायटियों की सेना का सामना करने के लिए आगे बढ़ा।

२७. और ऐसा हुआ कि लमनायटी टेनकम का पीछा तब तक करते रहे जब तक कि वे आनन्द नगर के निकट न पहुंच गए, जहां उन्होंने नगर की रक्षा के लिए नियुक्त लेही और उसकी छोटी-सी सेना को देखा।

२८. जब लमनायटियों के प्रधान नायकों ने अपने विरुद्ध लेही और उसकी सेना को बढ़ते हुए देखा, तब घबराए हुए इस भय से भागे कि कहीं (१८) मूलक नगर में प्रवेश करने से पूर्व ही वह

(१२) देखो ३, अल० ४८. (१३) देखो ३७, अल० २२. (१४) देखो ३०, अल० ५१. (१५) देखो ३६, अल० ३०. (१६) देखो ३०, अल० ५१. (१७) देखो ३०, अल० ५१. (१८) देखो ३७, अल २२. (१९) देखो ३०, अल० ५१.

*ईसा से ६४ वर्ष पूर्व

उन्हें पकड़ न लें; क्योंकि वे थके हुए थे और लेही के आदमी थके हुए नहीं थे।

२९. इस समय लमनायटियों को यह पता नहीं था कि मरोनी अपनी सेना के साथ उनके पीछे है; उन्हें केवल लेही और उसके आदमियों का भय था।

३०. लेही उनको तब तक पकड़ना नहीं चाहता था, जब तक कि वे मरोनी के पास पहुंच नहीं जाते।

३१. और ऐसा हुआ कि लमनायटी बहुत दूर वापस लौट भी नहीं पाए थे, जब कि वे नफायटियों से घिर गए। उनके एक ओर मरोनी के सैनिक थे और दूसरी ओर लेही के आदमी थे, जो सभी ताजे और बलवान थे, परन्तु लमनायटी लम्बी यात्रा के कारण थके हुए थे।

३२. और मरोनी ने अपने आदमियों को आज्ञा दी कि वे उन पर आक्रमण करें और उन्हें तब तक मारते रहें, जब तक कि वे अपने युद्ध के हथियार सर्मपित न कर दें।

३३. और ऐसा हुआ कि याकूब ने, जो कि एक (२०) जोरमायटी था और अति साहसी था, क्रोध के साथ लमनायटियों को मरोनी के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

३४. मरोनी उनकी राह पर था, इस कारण याकूब ने (२१) मूलक नगर तक जाने के लिए उनके बीच से होकर रास्ता बनाने का निश्चय किया।

३५. और ऐसा हुआ कि वे दोनों हाथों से भयंकर युद्ध करने लगे जिसमें दोनों ओर के बहुत से लोग मारे गए तथा मरोनी घायल हुआ और याकूब मारा गया।

३६. और लेही ने पीछे की ओर से अपने आदमियों के साथ इतनी तीव्र गति के साथ धावा किया कि पीछे के लमनायटियों ने अपने हथियार डाल दिए, और बचे हुए लमनायटी इस उलझन में पड़ गए कि वे भागे या युद्ध करें।

३७. मरोनी ने उनकी घबराहट को देखकर उनसे कहा: अगर तुम अपने युद्ध के हथियारों को हमें दे दोगे तभी तुम्हारे रक्तपात का अन्त हो सकेगा।

३८. और ऐसा हुआ कि जब लमनायटियों ने इन शब्दों को सुना, तब उनके जो मुख्य नायक मारे नहीं गए थे, उन्होंने आगे बढ़कर अपने-अपने अस्त्र-शस्त्रों को मरोनी के पैरों के पास डाल दिया और अपने आदमियों को भी उन्होंने वैसा ही करने की आज्ञा दी।

३९. लेकिन सुनो, बहुत से ऐसे भी थे जिन्होंने ऐसा नहीं किया और जिन लोगों ने अपनी तलवार नहीं दी; उन्हें पकड़ कर बांध दिया गया और उनके अस्त्र-शस्त्र ले लिए गए और उन्हें (२२) उनके बन्धुओं के साथ सम्पन्न देश चलने के लिए बाध्य किया गया।

४०. इस समय बन्दियों की संख्या मृतकों की संख्या से अधिक थी, हां दोनों ओर के मारे गए लोगों से भी अधिक उनकी संख्या थी।

अध्याय ५३

सम्पन्न नगर का दृढ़ किया जाना—नफायटियों की फूट से शत्रुओं को लाभ पहुंचाना—इलामन और उसके दो सहस्र युवकों की सेना।

१. और ऐसा हुआ कि उन्होंने लमनायटी बन्दियों पर प्रहरियों को नियुक्त किया और उनके मारे गए आदमियों को और उन नफायटियों को, जो मारे गए थे, को गाड़ने के लिए उन्हें बाध्य किया; और जब वे परिश्रम कर रहे थे तब उनपर नजर रखने के लिए मरोनी ने आदमियों को नियुक्त किया।

२. और मरोनी लेही के साथ (१) मूलक नगर गया और उसे अपने अधिकार में करके, लेही को दे दिया। इस लेही ने मरोनी का साथ उसके अधिकांश युद्धों में दिया था; और वह मरोनी की तरह का व्यक्ति था, और दोनों ही एक-दूसरे की कुशलता में आनन्द मनाते थे; हां, वे एक-दूसरे को प्रिय थे और दोनों लोगों को को भी प्रिय थे।

३. और ऐसा हुआ कि जब लमनायटियों ने अपने और नफायटियों के मृतकों को गाड़ना समाप्त कर लिया, तब उन्हें वापस (२) सम्पन्न देश ले जाया गया और मरोनी की आज्ञा से टेनकम

(२०) देखो ३६, अल० ३०. (२१) देखो ३०, अल० ५१. (२२) देखो ३७, अल० २२. अध्याय ५३. (१) देखो ३०, अल० ५१. (२) देखो ३७, अल० २२.

ने देश के या सम्पन्न नगर के चारों ओर उनसे (३) एक नाला खुदवाना आरम्भ करवाया।

४. और उसने उनसे उस नाले के भीतर किनारे पर सुरक्षा के लिए ऊंची लकड़ी की दीवार बनवाई और नाले में से मिट्टी को लकड़ी की इस दीवार के पास फिंकवाया; इस प्रकार वे लमनायटियों से तब तक परिश्रम करवाते रहे जब तक कि (४) सम्पन्न देश को चारों ओर से मिट्टी और लकड़ी के अति ऊंची दृढ़ दीवार से घेर न लिया।

५. और तब से यह नगर अति सुदृढ़ बना रहा; और इसी नगर में उन्होंने लमनायटी बन्दियों को रखा; हां, उसी दीवाल के अन्दर जिसे उन्होंने उनसे उन्हीं के हाथों से बनवाया था। इस समय मरोनी को बाध्य होकर लमनायटियों से परिश्रम करवाना पड़ रहा था, क्योंकि जब वे परिश्रम करते थे तब उन पर दृष्टि रखना आसान होता था; और जब वह लमनायटियों पर आक्रमण करना चाहता था तब वह अपने साथ अपनी सारी सेना को चाहता था।

६. और ऐसा हुआ कि इस प्रकार मरोनी ने लमनायटियों की सबसे बड़ी सेना पर विजय पाई और (५) मूलक नगर पर अपना अधिकार स्थापित किया जो कि नफी के देश में लमनायटियों के दृढ़ केन्द्रों में से एक था; और उसने अपने बन्दियों को वहां रखने के लिए भी उसे एक दृढ़ केन्द्र बनाया।

७. और ऐसा हुआ कि उस वर्ष उसने लमनायटियों से और युद्ध करने का कोई प्रयत्न नहीं किया, परन्तु उसने अपने लोगों को युद्ध की तैयारियों में लगाए रखा और लमनायटियों के विरुद्ध रक्षा के लिए (६) गढ़ों को बनवाता रहा और स्त्रियों और उनकी सन्तानों को अकाल से बचाता हुआ, सेनाओं के लिए भोजन सामग्री जुटाता रहा।

८. इस समय ऐसा हुआ कि पश्चिम के समुद्र तट के दक्षिण में, मरोनी की अनुपस्थिति में नफायटियों में मतभेद के कारण, फूट उत्पन्न होने से लमनायटियों ने लाभ उठाया और उन्हें इतनी सफलता मिली कि उन्होंने देश के उन भागों में उनके कई नगरों पर अधिकार कर लिया।

९. और इस प्रकार अपने ही पापों के कारण, हां, अपने मतभेद की वजह से फूट के कारण ही, अति भयावह स्थितियों में उन्हें पड़ना पड़ा।

१०. और अब सुनो, मुझे (७) उन आमोन के लोगों के विषय में कुछ कहना है जो कि आरम्भ में लमनायटी थे; लेकिन आमोन और उसके भाइयों द्वारा, अर्थात् परमेश्वर की शक्ति और वाणी के द्वारा परमेश्वर के विश्वास में जिन्होंने (८) मत परिवर्तन कर लिया था; और उन्हें (९) ज़राहेमला देश लाया गया था और तब से उनकी रक्षा नफायटी कर रहे थे।

११. और वे अपनी (१०) शपथ के कारण अपने बन्धुओं के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण नहीं करते थे; क्योंकि उन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी कि, अब और अधिक रक्तपात वे नहीं करेंगे और अपनी प्रतिज्ञा के कारण ही वे नष्ट हो गए होते; हां अगर आमोन और उसके भाइयों की उन पर दया और गहरा प्रेम न होता, तो वे अपने बन्धुओं के हाथों पड़ गए होते।

१२. इसी कारण वे ज़राहेमला देश में लाए गए और तब से नफायटी उनकी रक्षा कर रहे थे।

१३. लेकिन जब उन्होंने यह देखा कि उनके कारण नफायटियों को खतरे, कष्ट और उत्पीड़न झेलने पड़ रहे हैं तब वे सहानुभूति से भर उठे और अपने देश की रक्षा के लिए शस्त्र उठाने को तैयार हो गए।

१४. लेकिन सुनो, जब वे युद्ध के हथियार ग्रहण करने ही वाले थे तब इलामन और उसके भाइयों के आग्रह के कारण वे विवश हो गए क्योंकि उन्होंने जो (११) प्रतिज्ञा की थी उसे वे तोड़ने ही वाले थे।

१५. और इलामन इस बात से भयभीत था कि अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ने से वे अपनी आत्मा

(३) देखो ३, अल० ४८. (४) देखो ३७, अल० २२. (५) देखो ३०, अल० ५१. (६) देखो ३, अल० ४८. (७) अल० २७:२६. (८) अल० २३:८-१३. (९) ओम० १३. (१०) अल० २४:१७-१९. (११) अल० २४:१७-१९.

ईसा से लगभग ६४ वर्ष पूर्व

खो देंगे; इसलिए जिन्होंने यह प्रतिज्ञा की थी, उन्हें इस संकटपूर्ण समय में अपने बन्धुओं को कष्टों का सामना करते देखने को बाध्य किया गया।

१६. लेकिन सुनो, उनके बहुत से लड़के थे जिन्होंने हथियार लेकर शत्रुओं से अपनी रक्षा न करने की प्रतिज्ञा नहीं की थी; इस कारण वे सभी, जो शस्त्र ग्रहण कर सकते थे, इस समय एकत्रित हुए और उन्होंने अपने आप को नफायटी कहा।

१७. और उन्होंने नफायटियों की (१२) स्वतन्त्रता के लिए, अपने प्राणों को देकर देश की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की; यहां तक उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे कभी भी अपनी स्वतन्त्रता नहीं खोएंगे और सभी स्थितियों में नफायटियों की और दासता से अपनी रक्षा करने के लिए लड़ेंगे।

१८. सुनो, ये दो सहस्त्र युवक थे जिन्होंने यह प्रतिज्ञा की और अपने देश की रक्षा करने के लिए अपने शस्त्रों को ग्रहण किया।

१९. और अब यह सुनो, कि इन लोगों से नफायटियों को अब तक कोई हानि नहीं पहुंची थी, अपितु इस संकटमय स्थिति में वे उनके लिए भारी सहायक सिद्ध हुए; क्योंकि उन्होंने युद्ध के हथियार को ग्रहण किया और वे चाहते थे कि इलामन उनका सेनापति बने।

२०. वे सभी नई उमर के तरुण और अत्यन्त साहसी, वीर और चपल थे; इतना ही नहीं, उन्हें जिन कामों का उत्तरदायित्व दिया जाता था उन्हें वे ईमानदारी से निभाते थे।

२१. हां, वे सत्यवादी और बुद्धिमान थे, क्योंकि उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की और उसके सामने सीधे चलने की शिक्षा दी गई थी।

२२. और तब ऐसा हुआ कि इलामन अपने इन दो सहस्त्र तरुण सेना का सेनापति बन दक्षिण में, पश्चिम समुद्र तट पर लोगों की सहायता करने के लिए आगे बढ़ा।

२३. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का अट्ठाइसवां वर्ष समाप्त हुआ।

अध्याय ५४

अमरोन द्वारा बन्दियों की अदला-बदली करने की मांग को स्वीकार किया जाना—लमनायटी राजा का क्रोधपूर्ण उत्तर।

१. निर्णायकों के शासन के *उन्तीसवें वर्ष में अमरोन ने मरोनी के पास बन्दियों का अदला-बदली करने का सन्देश भेजा।

२. मरोनी इस सन्देश को पाकर अति आनन्दित हुआ; क्योंकि लमनायटी बन्दियों के निर्वाह के लिए जो सामग्री व्यय करनी पड़ती थी, उसे वह अपने लोगों के लिए उपयोग में लाना चाहता था; और साथ ही वह अपने लोगों की सेना को शक्तिशाली भी बनाना चाहता था।

३. इस समय लमनायटी अनेक स्त्रियों और बच्चों को बन्दी बनाकर ले गए थे; और मरोनी के बन्दियों में एक भी स्त्री या बच्चा नहीं था; या मरोनी ने एक भी स्त्री या बच्चे को बन्दी नहीं बनाया था; इसलिए मरोनी ने चालाकी द्वारा जितने भी सम्भव हो उतने लमनायटियों के हाथों में पड़े हुए नफायटी बन्दियों को मुक्त करवाने का निश्चय किया।

४. इसलिए मरोनी ने लिखकर एक पर्चा अमरोन के उसी सेवक द्वारा भेजा, जो उसके पास उस पर्चे को लाया था। उसने अमरोन के पास इन शब्दों को लिखा था :

५. सुनो, अमरोन तुम जो युद्ध हम लोगों के विरुद्ध कर रहे हो, उसके विषय में मैंने तुम्हारे पास लिखा, अर्थात् तुम्हारे भाई ने जो युद्ध आरम्भ किया था उसे तुम उसकी मृत्यु के पश्चात् जारी रखना चाहते हो।

६. देखो, मैं तुम्हें परमेश्वर के न्याय और उसके भयंकर क्रोध की उस तलवार के विषय में बताना चाहता हूं, जो कि तुम्हारे सर पर लटक रही है, अगर तुमने पश्चात्ताप करके अपनी सेनाओं को अपनी भूमि पर या (१) नफी की भूमि पर वापस नहीं करते, जो कि तुम्हारे अधिकार में हैं।

७. हां, मैं तुम्हें यह बात बताऊंगा अगर तुम उनको सुन सकते हो; हां, मैं तुम्हें उस (२)

(१२) देखो १३, मू० २६. अध्याय ५४. (१) देखो २, २ नफी ५. (२) देखो ११, १ नफी १५. * ईसा से ६३ वर्ष पूर्व

भयानक अधोलोक के विषय में बताऊंगा जिसमें और (३) तुम्हारे भाई जैसे हत्यारों को जाना पड़ेगा अगर वे पश्चात्ताप नहीं करते और अपने हत्यारी इच्छाओं का त्याग नहीं करते, और अपनी सेना के साथ अपनी भूमि पर वापस नहीं लौटते।

८. लेकिन तुमने इन बातों को अस्वीकार करके प्रभु के लोगों के विरुद्ध लड़ाई की है और मैं सोचता हूं कि ऐसा तुम फिर करोगे।

९. और अब सुनो, हम तुम्हें स्वीकार करने को तैयार हैं और हां, अगर तुमने अपने दुष्कर्मों को नहीं त्यागा, तब तुम अपने ऊपर उस परमेश्वर का जिसे तुमने अस्वीकार किया है, क्रोध अपने ऊपर लाओगे, और नष्ट हो जाओगे।

१०. और जब तक हमारा प्रभु हमारे साथ है, हमारी भूमि और हमारे नगर हमारे पास रहेंगे और हमारी सेनायें तुम्हारे ऊपर चढ़ाई करके, तुम्हें मौत के घाट उतार देंगी, अगर तुम स्वयं अपनी सेना वापस नहीं लौटाते; क्योंकि हम अपने नगरों और हां, हम अपने धर्म और और परमेश्वर के कामों को बनाए रखेंगे।

११. लेकिन देखो, मैं सोचता हूं कि व्यर्थ में ही मैं इन बातों को तुमसे कह रहा हूं; या मुझे ऐसा लगता है कि तुम अधोलोक की एक सन्तान हो; इस कारण मैं यह लिखकर इस पर्चे को समाप्त करना चाहता हूं कि तब तक बन्दियों की अदला-बदली नहीं करूंगा, जब तक कि तुम मेरी इस शर्त को नहीं मना लेते कि मेरे एक बन्दी के बदले तुम (४) एक पुरुष उसकी स्त्री और बच्चों को मुक्त करोगे; अगर तुम्हें यह स्वीकार हो तब मैं बन्दियों की अदला-बदली करूंगा।

१२. और सुनो, अगर तुमने ऐसा नहीं किया तब मैं तुम्हारे विरुद्ध अपनी सेनाओं के साथ आऊंगा; हां, यहां तक कि मैं अपनी स्त्रियों और बच्चों तक को सशस्त्र करूंगा और तुम्हारे विरुद्ध आऊंगा और तुम्हारा पीछा करते हुए तुम्हारे अपने देश में आऊंगा, जो कि हमारा (५) प्रथम पैतृक देश है; और हां तब रक्त के बदले रक्त और प्राण के बदले प्राण लिया जाएगा; और मैं तुम्हारे विरुद्ध तब तक लड़ूंगा जब तक कि तुम इस धरती पर से नष्ट नहीं हो जाते।

१३. सुनो, मैं क्रोध में हूं, और मेरे लोग भी क्रोध में हैं; तुम हमें मारना चाहते हो और हम केवल अपनी रक्षा करना चाहते हैं। और अगर तुम हमें और अधिक नष्ट करना चाहोगे, तब हम भी तुम्हें नष्ट करना चाहेंगे; और हां हम (६) अपना देश वापस चाहेंगे जो कि हमारा प्रथम पैतृक देश है।

१४. मैं यह पर्चा समाप्त करता हूं। मैं मरोनी हूं; और मैं नफी के लोगों का नेता हूं।

१५. जब अमरोन ने इस पर्चे को पाया, तब वह क्रोधित हो उठा; और उसने मरोनी के पास दूसरा पर्चा लिखा जिसमें उसने ये शब्द लिखे:

१६. मैं लमनायटियों का राजा, अमरोन हूं; मैं उस अमलिकियाह का भाई हूं जिसकी हत्या तुमने की थी। देखो, मैं उसकी (७) हत्या का बदला तुमसे लूंगा; हां मैं अपनी सेना के साथ तुम्हारे विरुद्ध आऊंगा क्योंकि मैं तुम्हारी धमकियों से नहीं डरता।

१७. क्योंकि सुनो, तुम्हारे पूर्वजों ने अपने भाइयों के साथ ठीक व्यवहार नहीं किया था; इतना तक कि उन्होंने (८) शासन करने के उनके अधिकार को भी छीन लिया था, जो कि न्याय के अनुसार उनका था।

१८. और सुनो, अगर तुम अपने हथियार डाल दो और उनके अधीन हो जाओ, जिनका शासन न्यायानुसार होना चाहिए, तब मैं अपने लोगों से हथियार को डालने को कहूंगा और हम युद्ध नहीं करेंगे।

१९. सुनो, तुमने मेरे और मेरे लोगों के विरुद्ध बहुत-सी धमकी की बातें कहीं; लेकिन हम तुम्हारी धमकियों से नहीं डरते।

२०. मैं प्रसन्नता के साथ तुम्हारी इच्छानुसार बन्दियों को बदलने के लिए तैयार हूं, जिससे कि मैं भोजन सामग्रियों को अपने सैनिकों के लिए बचा सकूं; और हम तब तक युद्ध जारी रखेंगे जब तक कि

(३) अल० ४७:१८, २२-३४. (४) पद्य ३. (५) देखो २, २ नफी ५. (६) देखो २, २ नफी ५. (७) अल० ५१:३४. (८) ३ नफी ५:१-४. देखो १४, या०७.

हम नफायटियों को अपने अधीन नहीं कर लेते या उन्हें एकदम मिटा नहीं देते।

२१. और उस परमेश्वर के विषय में, जिसके विषय में तुम कहते हो कि हमने उसे (९) त्याग दिया है, सुनो, हम ऐसे किसी प्राणी को नहीं जानते; और न तो तुम ही जानते हो; परन्तु अगर ऐसी कोई वस्तु है भी, जिसे हम नहीं जानते, तो उसने हम दोनों को बनाया है।

२२. अगर ऐसा है कि एक शैतान है, और एक अधोलोग भी है, तब सुनो, क्या वह तुम्हें भी मेरे उस (१०) भाई के साथ वहां रहने के लिए नहीं भेजेगा जिसकी हत्या तुमने की थी और जिसके विषय में तुमने कहा था कि वह वैसी जगह गया है? लेकिन सुनो, ऐसी बातों का कोई अर्थ नहीं।

२३. मैं अमरोन हूं और मैं उस (११) जोराम का वंशज हूं जिनको तुम्हारे पूर्वज दबाव डाल कर यरूशलेम से लाए थे।

२४. और अब सुनो, मैं साहसी लमनायटी हूं; और यह युद्ध हमारे प्रति किए गए उनके अन्यायों का बदला लेने के लिए और शासन करने के अपने (१२) अधिकार को वापस प्राप्त करने के लिए किया जा रहा है; और मैं मरोनी के लिए इस पर्चे को समाप्त करता हूं।

अध्याय ५५

अमरोन के असत्य विश्वास से क्रोधित होकर मरोनी द्वारा बन्दियों की अदला-बदली को अस्वीकार करना—बन्दी बनाए गए नफायटियों का युद्ध-कौशल द्वारा छुड़ाया जाना—गिड नगर का बिना रक्त गिराए लिया जाना।

१. ऐसा हुआ कि जब मरोनी ने पर्चे को प्राप्त किया, तब वह और भी क्रोधित हो उठा, क्योंकि वह जानता था कि अमरोन अपने छल-कपट को भली प्रकार जानता है; हां वह जानता था कि अमरोन यह जानता है कि नफी के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए उसके पास कोई उचित कारण नहीं है।

२. और उसने कहा: सुनो, मैं अमरोन से बन्दियों को तब तक नहीं बदलूंगा जब तक कि वह (१) अपने इरादे को नहीं बदलता जैसा कि मैंने पर्चे में लिखा था; क्योंकि उसके पास जो बल है, उससे अधिक बलवान मैं उसे नहीं होने देना चाहता।

३. सुनो, मैं उस स्थान को जानता हूं जहां पर लमनायटी मेरे लोगों को बन्दी बना कर रखे हुए हैं; और जबकि अमरोन मेरे पर्चे के अनुसार कार्य करने को तैयार नहीं है, तब मैं अपने कहे अनुसार ही कार्य करूंगा; हां, मैं तब तक उन्हें मौत के घाट उतारता रहूंगा, जब तक कि वे शान्ति के लिए याचना न करने लगेंगे।

४. जब मरोनी ने ये शब्द कहे, तब उसने एक ऐसे व्यक्ति को अपने लोगों में खोज करवायी, जो सम्भवत: लमान का वंशज हो।

५. और तब ऐसा हुआ कि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को पाया जिसका नाम लमान था, और वह उस राजा का (२) नौकर था जिसकी हत्या अमलिकियाह ने कर दी थी।

६. तब मरोनी ने लमान को उसके कुछ आदमियों के साथ उन प्रहरियों के पास भेजा, जिन्होंने नफायटियों को बन्दी बना रखा था।

७. इस समय नफायटी बन्दी (३) गिड नगर में रखे गए थे; इस कारण मरोनी ने लमान को अपने थोड़े से आदमियों के साथ वहां जाने को नियुक्त किया।

८. जब सन्ध्या हुई, तब लमान उन प्रहरियों के पास गया, जो नफायटी बन्दियों पर पहरा दे रहे थे; और सुनो, उन्होंने उसे आते हुए देखा और दूर से उसे पुकारा, लेकिन उसने उनसे कहा : डरो मत, देखो, मैं एक लमनायटी हूं। हम नफायटियों से बच कर भाग निकले हैं। वे सब सो रहे हैं; और देखो, हम उनकी अंगूरी शराब अपने साथ लेते आए हैं।

९. जब लमनायटियों ने इन शब्दों को सुना, तब उन्होंने प्रसन्न हो, जो अपने पास आने दिया; और उन्होंने उससे कहा: तुम अपनी मदिरा हमें दो, जिससे कि उसे हम पीएं; हमें इससे बहुत

(९) पद्य ९. (१०) अल० ५१:३४. ५२:३. ११. (११) १ नफी ४:३५. (१२) देखो ८. अध्याय ५५. (१) अल० ५४:६, १३. (२) अल० ४७:२९. (३) देखो २९, अल० ५१.

ईसा से लगभग ६३ वर्ष पूर्व

प्रसन्नता है कि तुम अपने साथ मदिरा लेते आए हो, क्योंकि हम थके हुए हैं।

१०. लेकिन लमान ने उससे कहा: हम अपनी मदिरा को तब तक बचाए रखें, जब तक कि हम नफायटियों से लड़ने नहीं जाते। लेकिन इस बात ने उन्हें मदिरा पीने के लिए और भी अधिक आतुर बना दिया।

११. क्योंकि उन्होंने कहा: हम थके हुए हैं, इस मदिरा को हम पी लें और बाद में जो मदिरा हमारे लिए आएगी, वह हमें नफायटियों से लड़ने के लिए बल देगी।

१२. तब लमान ने उनसे कहा: तुम अपनी इच्छानुसार ही करो।

१३. तब ऐसा हुआ कि उन्होंने अपनी इच्छानुसार मदिरा पी; वह उन्हें स्वादिष्ट लगी तब उन्होंने और अधिक पी; वह तेज़ मदिरा थी, क्योंकि वह वैसी ही बनाई गई थी।

१४. तब ऐसा हुआ कि पीकर वे आनन्द मनाने लगे और धीरे धीरे सभी मतवाले हो गए।

१५. जब लमान और उसके आदमियों ने देखा कि वे सब मतवाले होकर गहरी नींद में सो गए हैं तब वे मरोनी के पास आए और जो कुछ हुआ था, वह सब कह सुनाया।

१६. यह मरोनी की इच्छानुसार ही हुआ था। मरोनी ने अपने आदमियों को युद्ध के अस्त्र-शस्त्र से तैयारी कर रखा था; और (४) गिड नगर में जब कि लमनायटी मतवाले बने गहरी नींद में सो रहे थे, तब उसने बन्दियों के पास इतने अधिक युद्ध के हथियार फेंके, कि वे सब सशस्त्र हो गए।

१७. हां, यहां तक कि उनकी स्त्रियों और बच्चों को भी जो युद्ध के हथियार चलाने लायक थे, मरोनी ने सशस्त्र कर दिया, इस तरह उसने बन्दियों को अस्त्र-शस्त्र से तैयार किया; और यह सब अत्यन्त शान्तिपूर्वक किया गया।

१८. अगर उन्होंने लमनायटियों को जगा दिया होता, तब सुनो, वे मतवाले थे और नफायटी उन्हें मार सकते थे।

१९. लेकिन मरोनी की यह इच्छा नहीं थी; उसे हत्या या रक्तपात में आनन्द नहीं मिलता था, अपितु उसे लोगों को नष्ट होने से बचाने में आनन्द मिलता था; इस कारण वह अपने ऊपर बदनामी नहीं लेना चाहता था और लमनायटियों को नशे की हालत में मारना नहीं चाहता था।

२०. लेकिन उसने अपनी इच्छा पूरी कर ली, क्योंकि उसने उन नफायटी बन्दियों को सशस्त्र कर दिया जो कि नगर की दीवाल के अन्दर थे और उन्हें दीवाल के अन्दर के स्थान पर अधिकार करने की शक्ति दे दी।

२१. तब उसने अपने साथ के आदमियों को उनसे पीछे हट कर लमनायटी सेनाओं को घेर लेने की आज्ञा दी।

२२. अब सुनो, यह सब कुछ रात के समय हुआ, और सुबह लमनायटी जागे तब उन्होंने देखा कि बाहर से वे नफायटियों से घिरे हुए हैं और भीतर उनके बन्दी सशस्त्र हो चुके हैं।

२३. इस प्रकार उन्होंने देखा कि वे नफायटियों के वश में हैं; और इस स्थिति में उन्होंने नफायटियों से लड़ना उचित नहीं समझा; इसलिए नफायटियों के प्रधान नायकों ने उनसे उनके अस्त्र-शस्त्रों की मांग की और उन्होंने दया की मांग करते हुए, अपने हथियारों को लाकर नफायटियों के पैरों के पास डाल दिया।

२४. अब देखो, मरोनी की यही इच्छा थी। उसने उनको युद्ध-बन्दी बना लिया और नगर को अपने अधिकार में करके, सभी नफायटी बन्दियों को मुक्त करवाया और वे मरोनी की सेना में भर्ती हो गए, जिससे मरोनी की सेना और भी शक्तिशाली हो गई।

२५. तब ऐसा हुआ कि उसने गिड नगर की (५) किलेबन्दी को और दृढ़ करवाने के लिए लमनायटियों से जिन्हें उसने बन्दी बना लिया था, परिश्रम करवाना आरम्भ किया।

२६. और तब ऐसा हुआ कि अपनी इच्छानुसार जब उसने (६) गिड नगर की गढ़बन्दी को सुदृढ़ करवा लिया, तब वह बन्दियों (७) को सम्पन्न नगर ले गया; और उसने उस नगर की रक्षा भी एक अति शक्तिशाली सेना द्वारा की।

२७. और ऐसा हुआ कि उन्होंने लमनायटियों

(४) देखो २९, अलमा ५१. (५) देखो ३; अल० ४८. (६) देखो २६, अल० ५१. (७) देखो ३७, अल० २२.

के अनेकों षड्यन्त्रों के बावजूद, पकड़ कर लाए गए बन्दियों को और जीती हुई भूमि और लाभदायक स्थिति को अपने अधिकार में बनाए रखा।

२८. इस समय नफायटी सफल होने और अपने अधिकारों और सुविधाओं को प्राप्त करने लगे।

२९. अनेकों बार लमनायटियों ने रात में उन्हें घेरने का प्रयत्न किया, परन्तु इन प्रयत्नों में उनके बहुत से लोग बन्दी बनाए गए।

३०. कई बार उन्होंने उन्हें शराब देने के प्रयत्न किए जिससे उन्हें विषपान करा कर मार डाला जाय या उन्हें नशे की हालत में किया जाए।

३१. लेकिन सुनो, इस कष्टमय समय में, नफायटी अपने प्रभु परमेश्वर को स्मरण रखने में आलस नहीं करते थे। वे उनके जाल में नहीं फंसे; हां, वे उनकी शराब को नहीं लेते और लेते भी तो पहले लमनायटी बन्दियों को ही देते थे।

३२. इस तरह वे सजग थे, कि उनमें से कोई विषपान न करे क्योंकि अगर कोई लमनायटी विष-ग्रस्त होता, तब वह विष नफायटियों पर भी असर करता। इस प्रकार वे उनकी सभी शराबों की परीक्षा कराते।

३३. अब ऐसा हुआ कि मरोनी के लिए (८) मोरियन्दन नगर पर आक्रमण करने की तैयारी करना आवश्यक हो गया, क्योंकि लमनायटियों ने अपने परिश्रम से (९) गढ़बन्दी द्वारा उसे एक अति दृढ़ केन्द्र बना लिया था।

३४. वे लगातार वहां नई सेना और नई साम्रगी ला रहे थे।

३५. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का उन्नीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

अध्याय ५६

मरोनी को इलामन का पत्र—तरुण अमनायटियों का आश्चर्यजनक साहस और विश्वास—एक और भयंकर युद्ध—नफायटियों की विजय।

१. निर्णायकों के शासन के *तीसवें वर्ष के प्रथम माह के दूसरे दिन मरोनी को इलामन से एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें देश के (१) उस भाग के लोगों के विषय में लिखा गया था।

२. उसने पत्र में इन शब्दों को लिखा था : जैसे प्रभु की सेवा में, वैसे ही युद्ध के संकटों में, मेरे परम प्रिय भाई मरोनी; सुनो प्रिय भाई, मुझे देश के इस भाग में चलने वाले संघर्ष के विषय में तुम्हें कुछ बताना है।

३. जिन दो (२) सहस्त्र युवकों को आमोन ने (३) नफी देश से लाया था, उनको तुम जानते ही हो कि वे उस लमान के वंशज हैं, जो हमारे पूर्वज लेही का सबसे बड़ा पुत्र था।

४. मुझे तुमसे उनकी (४) परंपराओं या अविश्वास के विषय में कुछ कहना नहीं है, क्योंकि इन बातों को तुम जानते हो।

५. इसलिए मुझे इतना ही तुम्हें बतलाना है कि उनके (५) दो सहस्त्र तरुण युवक अपने युद्ध के हथियार ग्रहण कर चुके हैं, और वे चाहते हैं कि मैं उनका नायक बनूं; और हम अपने देश की रक्षा के लिए अग्रसर हो चुके हैं।

६. उनके पूर्वजों ने जो यह प्रतिज्ञा की थी कि वे युद्ध के हथियार लेकर अपने बन्धुओं का रक्त नहीं गिराएंगे, उसके विषय में भी तुम जानते हो।

७. लेकिन छब्बीसवें वर्ष, जब उन्होंने अपने लिए हमारे कष्टों और विपत्तियों को देखा, तब वे हमारी रक्षा के लिए शस्त्र ग्रहण कर, अपनी (६) प्रतिज्ञा भंग करने को तैयार हो गए।

८. लेकिन मैं नहीं चाहता था कि वे अपनी प्रतिज्ञा को भंग करें, क्योंकि मैं सोचता हूं कि उनके अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहने से, परमेश्वर हमें इतना शक्तिशाली बना देगा कि हम और अधिक कष्ट नहीं झेलेंगे।

९. लेकिन देखो, यहां एक ऐसी बात है जिससे हमें भारी आनन्द होना चाहिए। क्योंकि *छब्बीसवें वर्ष में, मैं इलामन ने (७) इन दो सहस्त्र तरुणों के साथ (८) यहूदिया नगर को, उस अण्टिपस की सहायता के लिए कूच किया, जिसको अपने देश के उस भाग के लोगों का नेता चुना था।

(८) देखो १६, अल० ५०. (९) देखो ३, अल० ४८. अध्याय ५६. (१) अल० ५३:८, २२. (२) पद्य ५, १०. अल० ५३:२२. (३) देखो २, २ नफी ५. (४) देखो १४, या० ७. (५) देखो २. (६) अल० २४:१७-१९. ५३:१३-१५. (७) अल० ५३:२२. (८) पद्य १५, १८, ५७, अल० ५७; ११.

*ईसा से ६२ वर्ष पूर्व ईसा से ६२ वर्ष पूर्व

१०. और मैं अपने (९) दो सहस्त्र बेटों के साथ (क्योंकि वे मेरे बेटे कहलाने के योग्य हैं) एण्टिपस की सेना के साथ हो गया, और इस शक्ति को प्राप्त कर एण्टिपस को बड़ा ही आनन्द हुआ, क्योंकि लमनायटियों ने उसके बहुत से सैनिकों को मार उसकी सेना की संख्या को कम कर दी थी, जो हमारे शोक का कारण है।

११. लेकिन हमें इस बात से संतोष करना चाहिए कि वे अपने देश के लिए और अपने परमेश्वर के लिए मरे हैं, और हां, वे सुखी हैं।

१२. और लमनायटी बहुतों को बन्दी बनाए हुए हैं, जो कि सभी मुख्य सेनापति हैं, क्योंकि अन्य किसी को उन्होंने जीता नहीं छोड़ा। और हमारा अनुमान है कि अगर वे मारे नहीं गए हैं, तो वे इस समय (१०) नफी के देश में हो सकते हैं।

१३. इस समय हमारे अनेकों साहसी लोगों का रक्त बहाकर लमनायटी हमारे इन नगरों पर अधिकार किए हुए हैं:

१४. (११) मण्टी देश अर्थात् मण्टी नगर, जीजरोम नगर, (१२) कुमेनी नगर और (१३) अण्टीपारा नगर।

१५. और जब मैं (१४) यहूदिया नगर पहुंचा था, तब वे उपरोक्त नगरों पर अधिकार किए हुए थे; और मैंने एण्टीपस और उसके लोगों को नगर को (१५) सुदृढ़ करते हुए पाया।

१६. और वे, शरीर से थके हुए, हतोत्साहित हो चुके थे, क्योंकि दिन में वीरता के साथ लड़ते थे और रात को नगर की सुरक्षा के लिए परिश्रम करते थे; इस तरह वे हर प्रकार के कष्ट झेल रहे थे।

१७. इस समय उन्होंने यहां विजय प्राप्त करने की या (१६) मर मिटने की ठानी है; इसलिए आप यह समझियेगा कि मैं जो यह छोटी सी सेना लेकर आया हूं, हां (१६) मेरे बेटों से उन्हें भारी उत्साह और आनन्द प्राप्त हुआ है।

१८. और जब लमनायटियों ने यह देखा कि एण्टिपस ने अपनी सेना के लिए भारी सहायता प्राप्त कर ली है, तब वे अमरोन की आज्ञा के कारण (१७) यहूदिया नगर, या हमारे विरुद्ध आक्रमण न करने के लिए बाध्य हो गए।

१९. इस प्रकार हम पर प्रभु की कृपा हुई; क्योंकि अगर वे हमारी निर्बलता में हम पर आक्रमण कर देते, तब वे हमारी छोटी सी सेना को नष्ट कर देते; परन्तु हम बचा लिए गए।

२०. उन्हें अमरोन द्वारा आज्ञा मिली थी कि विजयी नगरों पर वे अपना अधिकार बनाए रखें। इस प्रकार *छब्बीसवां वर्ष समाप्त हुआ। और सत्ताइसवें वर्ष के आरम्भ में हमने अपने आपको और अपने नगर को आत्मरक्षा के लिए तैयार कर लिया।

२१. अब हम चाहते थे कि लमनायटी हम पर चढ़ाई करें, क्योंकि हम उनके दृढ़ अड्डों पर आक्रमण करना नहीं चाहते थे।

२२. और ऐसा हुआ कि हमने अपने आस-पास चारों ओर भेदियों को लमनायटियों की गति-विधि देखने के लिए नियुक्त कर दिया था, जिससे कि वे रात को या दिन को, हमारे उन शहरों पर आक्रमण करने के लिए न चले जाएं, जो उत्तर की ओर हैं।

२३. क्योंकि हम जानते थे कि उन शहरों के लोग उनका सामना करने के लिए पर्याप्त बलशाली नहीं हैं; इस कारण हम चाहते थे कि अगर वे हमें छोड़कर आगे निकल जाएं, तब पीछे से हम उनपर आक्रमण कर दें; जिससे कि हम पीछे से भी और आगे से भी उनसे लड़ें। लेकिन सुनो, इसमें हमें निराश होना पड़ा।

२४. उन्होंने अपनी सारी सेना के साथ हमारे आगे जाने का साहस नहीं किया, और न ही अपनी सेना के एक भाग के साथ इस भय से आगे बढ़े कि अगर वे पर्याप्त शक्ति में नहीं रहे तब वे मारे जाएंगे।

२५. वे न तो (१८) जराहेमला नगर के

(९) देखो २. (१०) देखो २, २ नफी ५. (११) देखो ८, अल० १६. (१२) अल० ५७:७, ८, १२, २३, ३१, ३४. (१३) पद्य ३१, ३३, ३४. अल० ५७:१-४. (१४) देखो ८. (१५) देखो ३, अल० ४८. (१६) पद्य १०. (१७) देखो ८. (१८) देखो १३.

*ईसा से ६५ वर्ष पूर्व

विरुद्ध बढ़े और न ही (१९) सिदोन नदी के उद्‌गम को पार करके उन्होंने नफियाह नगर पर ही आक्रमण किया।

२६. इस प्रकार उन्होंने केवल अपनी सेनाओं के साथ उन नगरों को अपने अधीन रखने का निश्चय किया जिन नगरों को उन्होंने जीता था।

२७. अब, इस वर्ष के दूसरे माह में, हमारे उन (२१) दो सहस्त्र बेटों के (२२) पिताओं द्वारा भेजी गई बहुत-सी सामग्री हमारे पास लाई गई।

२८. और (२३) जराहेमला देश से भी हमारे पास दो सहस्त्र आदमियों को भेजा गया था। इस प्रकार हम दस सहस्त्र लोगों, उनके और उनकी स्त्रियों और बच्चों के लिए खाने-पीने की सामग्रियों के साथ तैयार थे।

२९. इस प्रकार जब लमनायटियों ने हमारी सेना को प्रतिदिन बढ़ते और सामग्रियों को आते देखा, तब वे डरे और हमें और अधिक शक्ति को प्राप्त करने से रोकने के प्रयास में हम पर आक्रमण करने लगे।

३०. जब हमने देखा कि लमनायटी अशान्त हो उठे हैं, तब हमने भी उनके साथ चालाकी का व्यवहार करने का निश्चय किया; इसलिए एण्टिपस ने हमें आज्ञा दी कि मैं अपने छोटे बेटों के साथ पड़ोस के एक नगर की ओर इस ढ़ंग से जाऊं कि उन्हें मालूम पड़े कि हम पड़ोस के उस नगर की ओर सामग्री लेकर जा रहे हैं।

३१. और हमें (२४) एण्टिपस नगर के निकट से होकर आगे बढ़ना था, जिससे ऐसा प्रतीत हो कि हम उससे आगे की ओर, समुद्र तट के सीमा प्रदेश को जा रहे हैं।

३२. और ऐसा हुआ कि हम इस प्रकार आगे बढ़े, कि प्रतीत हो कि हम उस नगर में सामग्री लेकर जा रहे हैं।

३३. और ऐसा हुआ कि जब मैं अपनी छोटी सी सेना के साथ एण्टिपारा नगर के निकट पहुंच गया, तब एण्टिपस अपनी सेना के एक भाग को नगर की रक्षा करने के लिए छोड़कर दूसरे भाग को साथ लेकर आगे बढा।

३४. इस समय (२५) एण्टिपारा नगर में लमनायटियों की सबसे अधिक शक्तिशाली और बड़ी सेना नियुक्त थी।

३५. तब ऐसा हुआ कि जब उन्होंने अपने भेदियों से यह समाचार पाया, तब वे अपनी सेना के साथ हमारे विरुद्ध आगे बढ़े।

३६. और ऐसा हुआ कि हम उनके सामने से उत्तर की ओर भाग चले। इस प्रकार हम लमनायटियों की सबसे शक्तिशाली सेना को दूर ले जाने लगे।

३७. इस तरह हम उनको बहुत दूर तक ले गए, इतनी दूर कि जब उन्होंने एण्टिपस की सेना को अपना पीछा करते हुए पाया, तब वह बिना बिना दांये-बाएं मुड़े सीधे हमारा पीछा करते हुए आगे बढ़ने लगे; और हमने सोचा कि उनका उद्देश्य है एण्टिपस द्वारा पकड़े जाने से पूर्व ही हम सभी को मार डालना, जिससे कि वे दोनों ओर से घिर न जाएं।

३८. इस समय एण्टिपस ने हमारे खतरे को देखकर अपनी सेना की गति को बढ़ाया। लेकिन सुनो, इस समय रात हो गई थी, इसलिए न तो वे ही हमें पकड़ पाए और न एण्टिपस ही उनको पकड़ पाया; इसलिए हमने रात काटने के लिए पड़ाव डाल दिया।

३९. और ऐसा हुआ कि सुबह पौ फटने से पूर्व ही लमनायटी पकड़ने के लिए हमारा पीछा करने लगे। इस समय हम उनसे लड़ने में समर्थ नहीं थे; हां, मैं नहीं चाहता था कि मेरे तरुण बेटे उनके द्वारा मारे जाएं, इसलिए हम भी आगे बढ़ने लगे; और हमने जंगल का रास्ता पकड़ा।

४०. और उन्होंने दांये-बाएं मुड़ने का साहस इस भय से नहीं किया कि शायद वे घिर जाएं; और मैं भी पकड़े जाने के भय से दायें-बाएं नहीं मुड़ा; और न तो हम उनसे युद्ध ही कर सकते थे। अगर हम उनसे लड़ते भी तो मारे जाते और वे बचकर भाग भी जाते; और हम दिन भर इस

(१९) देखो ७, अल० २. (२१) अल० २७:२६. (२२) पद्य ३, ५, १०, ४६. (२३) ओम १३. (२४) देखो १३. (२५) देखो १३.

तरह उनसे बचकर वन में तब तक भागते रहे जब तक कि रात न हो गई।

४१. और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन जैसे ही प्रकाश हुआ, पुन: वे हमें पकड़ने को आगे बढ़े और हम उनसे बचने के लिए भाग चले।

४२. लेकिन ऐसा हुआ कि थोड़ी ही देर हमारा पीछा करके वे रुक गए; यह सातवें माह के तीसरे दिन की घटना है।

४३. हम यह नहीं जानते थे कि वे एण्टिपस द्वारा पकड़ लिए गए हैं या नहीं; लेकिन मैंने अपने लोगों से कहा : सुनो, हम यह नहीं जानते कि वे इस आशा से रुक गए हैं कि हम उनके विरुद्ध आक्रमण करेंगे और उनके फन्दे में फंस जाएंगे।

४४. इसलिए मेरे पुत्रो, तुम क्या कहते हो, क्या हम उन पर आक्रमण करने के लिए जायें?

४५. और अब, मैं तुमसे कहता हूं—मेरे प्रिय भाई मरोनी, मैंने ऐसा साहस पहले कभी नहीं देखा; नहीं, कभी नहीं, नफायटियों में भी नहीं।

४६. जैसा कि मैं उनको (२६) अपना पुत्र सदा से कहता आया हूं (क्योंकि वे सब कम आयु के तरुण हैं) : उसी तरह उन्होंने मुझसे कहा : पिता, सुनो, हमारा परमेश्वर हमारे साथ है, और वह हमें मरने नहीं देगा; इसलिए हम आगे बढ़ें; अगर वे हमसे छेड़-छाड़ न करेंगे, तब हम अपने बन्धुओं को मारेंगे नहीं; इसलिए हम आगे बढ़ें; कहीं वे एण्टिपस की सेना पर विजय प्राप्त न कर लें।

४७. उन्होंने पहले कभी युद्ध नहीं किया था, फिर भी वे मरने से भय नहीं खाते थे; उन्होंने (२७) अपने पूर्वजों की स्वतन्त्रता को अपने जीवन से अधिक महत्व दिया; हां, उनको अपने माताओं से (२८) शिक्षा मिली थी कि अगर उन्होंने सन्देह नहीं किया, तब परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा।

४८. उन्होंने अपनी माताओं के कहे शब्दों को भी मुझे सुनाते हुए कहा : हम इसमें सन्देह नहीं करते कि हमारी मातायें भी ये बातें जानती थीं।

४९. और ऐसा हुआ कि जिन लमनायटियों ने हमारा पीछा किया था, उनके विरुद्ध मैं अपने दो सहस्त्र तरुणों के साथ गया। और सुनो एण्टिपस की सेना उनका पीछा करते हुए उन तक आ गई थी, और भयंकर युद्ध आरम्भ हो चुका था।

५०. लम्बी यात्रा करने के कारण एण्टिपस की सेना थकी हुई थी और लमनायटियों के हाथों में पड़ने ही वाली थी; और अगर मैं अपने दो सहस्त्र, तरुणों के साथ वापस नहीं लौटता तब उनका उद्देश्य पूरा हो जाता।

५१. शीघ्र गति से बढ़ने के कारण, थके होने से एण्टिपस तलवार से मारा गया था और उसके बहुत से नायक भी मारे जा चुके थे, इसलिए एण्टिपस के लोग अपने नेताओं के मारे जाने से घबराए हुए थे और लमनायटियों के सामने से पीछे हट रहे थे।

५२. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों को साहस हुआ और वे उन्हें खदेड़ने लगे; और इस प्रकार जब लमनायटी उन्हें तीव्र गति से खदेड़ रहे थे, तब पीछे से इलामन (२९) अपने दो सहस्त्र तरुणों के साथ वहां पहुंचा और उन्हें इतनी भारी संख्या में मार गिराने लगा कि लमनायटियों की सारी सेना रुक गई और घूमकर इलामन से लड़ने लगी।

५३. जब एण्टिपस के लोगों ने लमनायटी सेना को दूसरी ओर लड़ते हुए पाया तब उन्होंने अपने लोगों को एकत्रित करके पीछे से लमनायटियों पर उन्होंने आक्रमण कर दिया।

५४. और अब ऐसा हुआ कि नफी के लोगों ने, एण्टिपस के लोगों ने और मैंने अपने दो सहस्त्र तरुणों के साथ लमनायटियों को घेर लिया और बहुतों को मार डाला; हां, हमने उन्हें इतनी बड़ी संख्या में मारा कि बाध्य होकर उन्होंने युद्ध के हथियार हमें दे दिए और वे युद्ध के बन्दी बन गए।

५५. जब उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया तब मेरे साथ जिन तरुण युवकों ने युद्ध किया था, उनकी गिनती मैंने इस भय से की कि सम्भवत: कुछ तरुण मारे गए हों।

५६. लेकिन सुनो, इस बात से मुझे बहुत हर्ष हुआ कि उनमें से (३०) एक भी धरती पर नहीं गिरा था। और उन्होंने इस तरह लड़ा था

(२६) पद्य १०, १७, २७, ३०, ३९. (२७) अल० २७:२६. (२८) अल० ५७:२१. (२९) देखो २. (३०) अल० ५७:२५.

कि मानो उनमें परमेश्वर की शक्ति विराजमान थी; इस प्रकार आश्चर्यजनक बल के साथ लोगों को पहिले कभी भी लड़ते नहीं पाया गया था; वे इतने शौर्य के साथ लमनायटियों पर टूट पड़े कि उन्होंने लमनायटियों को भयभीत कर दिया; और इसी कारण लमनायटी हमारे हाथों बन्दी बन गए।

५७. जबकि हमारे पास लमनायटियों से बन्दियों को बचाए रखने के लिए कोई स्थान नहीं था, तब हमने उनको और उनके साथ एण्टिपस के लोगों के एक भाग को (३१) जो मारे नहीं गए थे, ज़राहेमला देश भेज दिया और शेष आदमियों को मैंने अपने तरुण (३२) अमनायटियों के साथ सम्मिलित कर लिया और हम (३३) वापस यहूदिया नगर लौट आए।

अध्याय ५७

इलामन का पत्र—क्रमशः अण्टिपारा नगर का वापस लिया जाना—कुमोनी नगर का आत्म-समर्पण किया जाना—लमनायटियों का मण्टी तक भगाया जाना—चमत्कारी ढ़ंग से रक्षा—लमनायटी बन्दियों का भाग जाना।

१. अब ऐसा हुआ कि राजा अमरोन से मुझे एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमें लिखा था कि अगर मैं उन युद्ध के बन्दियों को उसे दे दूं जिन्हें हमने पकड़ा था, तब वह बदले में हमें (१) एण्टिपारा नगर दे देगा।

२. लेकिन मैंने राजा के पास यह लिखकर भेजा कि हमें विश्वास है कि हमारी सेनाएं एण्टिपारा नगर को बलपूर्वक वापस लेने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हैं; और उस नगर के लिए बन्दियों को मुक्त करना हमारे लिए बुद्धिमानी नहीं होगी, इसलिए हम उनको अपने बन्दियों के बदले में ही छोड़ सकते हैं।

३. और अमरोन ने मेरे पत्र को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वह बन्दियों की अदला-बदली नहीं करना चाहता था; इसलिए एण्टिपारा नगर पर आक्रमण करने की तैयारी हमने आरम्भ कर दी।

४. लेकिन (२) एण्टिपारा नगर के लोग, नगर को छोड़कर अपने अधिकार के अन्य नगरों को (३) दृढ़ करने के लिए भाग गए; और इस तरह एण्टिपारा नगर हमारे हाथों में आ गया।

५. इस प्रकार निर्णायकों के शासन का अट्ठाइसवां वर्ष समाप्त हुआ।

६. और ऐसा हुआ कि *उन्तीसवें वर्ष के आरम्भ में (४) ज़राहेमला देश और आस-पास के देशों से हमें बहुत-सा सामान और सेना के लिए छः सहस्त्र लोगों के अलावा, साठ (५) अमनायटियों के लड़के भी अपने भाइयों का साथ देने के लिए मेरी दो सहस्त्र की छोटी-सी सेना में आकर सम्मिलित हो गए। और अब देखो, हम लोग शक्तिशाली थे, और हमारे पास बहुत-सी सामग्री भी लाई गई थी।

७. और ऐसा हुआ कि हमारी इच्छा हुई कि (६) कुमेनी नगर की रक्षा के लिए रखी गई सेना से हम लड़ें।

८. और अब सुनो, हमने अपनी इच्छा शीघ्र ही पूरी कर ली; हां, हमने अपनी प्रबल सेना के साथ अर्थात् अपनी बलवान सेना के एक भाग के साथ रात को, जब कि वे रसद प्राप्त करने वाले थे, उससे कुछ ही समय पूर्व (७) कुमेनी नगर को घेर लिया।

९. और हम कई रात नगर के चारों ओर पड़ाव डाले पड़े रहे, परन्तु हम अपनी तलवार के साथ सोते और प्रहरियों को नियुक्त कर देते कि जिससे लमनायटी आकर हमें सोते हुए मार न सकें और ऐसा करने का उन्होंने कई बार प्रयत्न भी किया।

१०. कुछ समय पश्चात्, खाद्य सामग्री सहित उनका सामान आया और वे रात को नगर में प्रवेश करने ही वाले थे; लेकिन वहां पर लमनायटियों के बदले हम नफायटी थे; इसलिए हमने उन सामान लाने वालों को पकड़ लिया और उनके सामान को भी ले लिया।

११. इस प्रकार, सहायता प्राप्त होने का

(३१) ओम० १३. (३२) अल० २७:२६. (३३) देखो ८. अध्याय ५७. (१) देखो १३, अल० ५६. (२) देखो १३, अल० ५६. (३) देखो ३, अल० ४८. (४) ओम १३. (५) अल० २७:२६. (६) देखो १२, अल० ५६. (७) देखो १२, अल० ५६.

*ईसा से ६३ वर्ष पूर्व

रास्ता बन्द हो जाने पर भी, उन्होंने नगर को अपने अधिकार में रखने का निश्चय किया; इसलिए यह आवश्यक हो गया, कि हम उन सामानों को (८) यहूदियों और बन्दियों को (९) ज़राहेमला देश भेज दें।

१२. बहुत दिन भी नहीं बीते कि लमनायटियों की सहायता प्राप्त करने की आशा जाती रही; इसलिए उन्होंने नगर को हमारे हवाले कर दिया; और इस प्रकार (१०) कुमेनी नगर को हमने अपनी इच्छानुकूल प्राप्त कर लिया।

१३. लेकिन ऐसा हुआ कि हमारे बन्दी इतने अधिक थे कि अपनी इतनी अधिक जनसंख्या के बावजूद हमें अपनी पूरी की पूरी शक्ति उनको बन्दी बनाए रखने में लगानी पड़ रही थी वरना हमें उन्हें मार डालना पड़ता।

१४. क्योंकि सुनो, समय-समय पर कारागार तोड़ कर वे निकल पड़ते और पत्थरों, डण्डों, और उन्हें जो कुछ भी मिलता, उसी से वे लड़ने लगते, और उनकी इस प्रकार से लड़ने की घटनाएं इतनी अधिक होने लगी, कि युद्ध के बन्दी के रूप में आत्मसमर्पण करने के समय से, हमें उनमें से दो सहस्त्र से भी अधिक लोगों को मार डालना पड़ा।

१५. इसलिए यह आवश्यक हो गया कि हम या तो उनके जीवन का अन्त कर दें या हाथ में तलवार लेकर (११) ज़राहेमला देश तक उन पर पहरा देते रहें; साथ ही हमारे पास लमनायटियों से छीने गए सामानों के होते हुए भी इतनी ही सामग्री थी जो कि केवल हमारे लोगों के लिए भी प्रयाप्त नहीं थी।

१६. और अब इस खतरनाक परिस्थिति में इन युद्ध के बन्दियों के विषय में, कोई निश्चय करना एक गम्भीर समस्या हो गई; फिर भी हमने उनको ज़राहेमला भेजना निश्चय किया; इसलिए हमने अपने लोगों से कुछ लोगों को चुना और अपने बन्दियों को ज़राहेमला देश ले जाने के लिए उन्हें सौंपा।

१७. लेकिन ऐसा हुआ कि दूसरे दिन सुबह को वे वापस लौट आए। और अब सुनो, हमने उनसे बन्दियों के विषय में कुछ नहीं पूछा; क्योंकि लमनायटियों ने हम पर चढ़ाई कर दी थी और उन्होंने मौके पर पहुंचकर हमें उनके हाथों में पड़ने से बचा लिया था। क्योंकि अमरोन ने उनकी सहायता के लिए नए सामान और भारी संख्या में सेना के लिए आदमियों को भेज दिया था।

१८. और ऐसा हुआ कि बन्दियों के साथ (१२) जिन लोगों को हमने भेजा था उन्होंने समय पर पहुंच कर उनको पीछे हटा दिया जब कि वे हमें पराजित करने वाले थे।

१९. लेकिन सुनो, मेरी छोटी-सी (१३) दो सहस्त्र और साठ की सेना ने सब से भीषण युद्ध किया; हां, वे लमनायटियों के सामने दृढ़ बने रहे और जो भी उनके विरुद्ध आया उन सभी को उन्होंने मार गिराया।

२०. और जबकि हमारी बाकी सेना लमनायटियों के सामने से पीछे हटने ही वाली थी, तब सुनो, वे दो सहस्त्र और साठ दृढ़ और अडिग बने रहे।

२१. और उन्होंने आज्ञा के प्रत्येक शब्द पर ध्यान दिया और अच्छी तरह उनका पालन किया। और हां, उनके विश्वास के अनुसार ही उनसे व्यवहार किया जाता था क्योंकि मुझे उनके कहे शब्द याद थे, जो कि उनकी (१४) माताओं ने उनको सिखाया था।

२२. और अब सुनो, मेरे बेटे और जिनको बन्दियों को ले जाने के लिए (१५) चुना गया था, वे ही हमारी इस महान विजय के कारण हैं। क्योंकि उन्होंने ही लमनायटियों को पराजित किया; इस कारण वे (१६) मण्टी देश वापस खदेड़ दिए गए।

२३. हमने (१७) कुमेनी नगर को प्राप्त कर लिया और हम तलवार से भी नहीं मारे गए— फिर भी हमारी बहुत बड़ी हानि हुई।

२४. जब लमनायटी भाग गए तब मैंने तुरन्त आज्ञा दी कि हमारे अपने घायल आदमियों को

(८) देखो ८, अल० ५६. (९) ओम० १३ (१०) देखो १२. (११) ओम० १३. (१२) पद्य १६. (१३) पद्य ६, देखो २, अलमा ५६. (१४) पद्य २६, अल० ५६:४७, ४८. (१५) पद्य १६, १८. (१६) देखो ८, अल० १६. (१७) देखो १२, अल० ५६.

मरे हुए लोगों में से निकाल कर मरहम-पट्टी की जाए।

२५. और ऐसा हुआ कि मेरे दो सहस्त्र और साठ सैनिकों में से रक्त निकल जाने से दो सौ बेहोश हो गए; फिर भी परमेश्‍वर की दया से और हमारी और शत्रुओं की सारी सेना को इस बात से महान आश्‍चर्य हुआ कि उनमें से (१८) एक भी तरुण मारा नहीं गया; और शत्रुओं में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो घायल न हुआ हो।

२६. और अब उनका सुरक्षित रहना पूरी सेना के लिए आश्‍चर्यजनक था, हां उनका बच जाना, जबकि हमारे एक सहस्त्र अन्य बन्धु मारे गए; और हम लोग ठीक ही इसका कारण परमेश्‍वर की चमत्कारपूर्ण शक्ति समझते हैं क्योंकि उसमें उनके अनन्त विश्‍वास के कारण जिसकी उनको शिक्षा मिली थी कि एक न्यायी परमेश्‍वर है और जो इसको सन्देह नहीं करता कि वह उसकी चमत्कारपूर्ण शक्ति द्वारा (१९) सुरक्षित रखा जाएगा।

२७. यह उनका विश्‍वास था, जिसके विषय में मैंने चर्चा की है, वे अभी कम आयु के हैं और उनके विचार दृढ़ हैं और वे लगातार परमेश्‍वर पर विश्‍वास करते हैं।

२८. तब ऐसा हुआ कि जब हमने घायलों की सेवा कर ली, और अपने मरे हुए लोगों को और लमनायटियों के मरे हुए लोगों को, जिनकी संख्या बहुत अधिक थी, गाड़ दिया, तब सुनो, गिड से हमने (२०) उन बन्दियों के विषय में पूछा जिनके साथ वे ज़राहेमला जा रहे थे।

२९. उनको ले जाने वाले सैनिकों का मुख्य नायक गिड ही था।

३०. तब गिड ने जो कुछ कहा वह इस प्रकार है : सुनो, हमने अपने बन्दियों के (२१) साथ ज़राहेमला देश की यात्रा आरम्भ की, और हमारी भेंट अपनी सेना के उन भेदियों से हुई जिन्हें लमनायटियों के पड़ाव पर दृष्टि रखने के लिए भेजा गया था।

३१. और उन्होंने हमसे कहा—सुनो, लमनायटियों की सेना (२२) कुमेनी नगर की ओर बढ़ रही है और वह वहां आक्रमण करके हम लोगों को नष्ट कर देगी।

३२. और ऐसा हुआ कि बन्दियों ने इस बात को सुन लिया जिससे उनको साहस हुआ और उन्होंने हमारे विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

३३. उनके विद्रोह के कारण हमने सोचा कि हमारी तलवारें उनके ऊपर पड़नी चाहिए। और ऐसा हुआ कि एक साथ बहुत से लमनायटी हमारी तलवारों पर दौड़ पड़े जिनमें से अधिकांश मारे गए; और बाकी घेरे में से निकल कर हमसे बच कर भाग निकले।

३४. और सुनो, जब वे भाग गए और हम उन्हें पकड़ नहीं सके तब हम शीघ्रता के साथ (२३) कुमेनी नगर की ओर चल पड़े; और समय पर पहुंच कर हमने अपने भाइयों को नगर की रक्षा करने में सहायता पहुंचाई।

३५. और देखो, शत्रुओं के हाथों में पड़ने से हम फिर बचा लिए गए। और परमेश्‍वर का नाम धन्य है; क्योंकि उसी ने हमें बचाया है; हां, उसने इस महान कार्य को हमारे लिए ही किया है।

३६. तब ऐसा हुआ कि जब मैं, इलामन ने, गिड़ से इन बातों को सुना, तब हमें बचाने में परमेश्‍वर की कृपा पर मुझे महान आनन्द हुआ क्योंकि हम सब नष्ट नहीं हुए थे; और हां, हमें विश्‍वास है कि जो लोग मारे गए थे उनकी आत्मा अपने परमेश्‍वर के विश्रामगृह में है।

अध्याय ५८

इलामन के पत्र की समाप्ति—मण्टी के सामने नफायटी सेना की कार्यवाइयां—लमनायटियों का धावा—गिड और टेमनर द्वारा नगर का लिया जाना—शत्रुओं का पीछे हटना।

१. और सुनो, ऐसा हुआ कि हमारा दूसरा उद्देश्य (१) मण्टी नगर को लेना था; लेकिन अपनी छोटी सी सेना द्वारा उनको नगर से बाहर निकालने का कोई उपाय हमारे पास नहीं था। क्योंकि सुनो, हमने जो कुछ उनके साथ किया था, वह उन्हें स्मरण था; इसलिए उन्हें फांस कर, उनके

(१८) अल० ५६:५६. (१९) देखो १४. (२०) पद्य १६. (२१) ओम० १३. (२२) देखो १२, अल० ५६. (२३) देखो १२, अल० ५६. अध्याय ५८. (१) देखो ८, अल० १६. ईसा से ६३ वर्ष पूर्व

दृढ़ केन्द्रों से, हम उनको बाहर निकाल नहीं सके।

२. और वे हमारी सेना से इतने अधिक थे कि उनके दृढ़ केन्द्रों पर आक्रमण करने का हमें साहस नहीं होता था।

३. और यह भी आवश्यक हो गया था कि हम देश के उन भागों की रक्षा करते रहें जिन पर हमने अधिकार प्राप्त कर लिया था; इस कारण यह भी आवश्यक हो गया कि हम प्रतिज्ञा करें, जिससे कि (२) ज़राहेमला देश से हमें और भी शक्ति और सामान प्राप्त हो जाए।

४. और ऐसा हुआ कि मैंने देश के शासक के पास एक दूत को अपने लोगों की परिस्थितियों की जानकारी कराने के लिए भेजा। और हम जरा-हेमला देश से शक्ति और सामान प्राप्त करने की प्रतीक्षा करने लगे।

५. इससे हमें बहुत ही कम लाभ हुआ; क्योंकि लमनायटी भी प्रतिदिन शक्ति और सामान की प्राप्ति कर रहे थे; और इस समय यही स्थिति हमारी भी थी।

६. और समय-समय पर लमनायटी भी छल द्वारा हमें नष्ट करने के लिए एकाएक टूट पड़ते; फिर भी उनके पीछे हट जाने और उनके दृढ़ केन्द्रों के कारण हम उनसे लड़ नहीं पाते थे।

७. और ऐसा हुआ कि इस कठिन परिस्थिति में हम कई महीनों तक प्रतीक्षा करते रहे, यहां तक कि बिना भोजन के हम मरने ही वाले थे।

८. लेकिन ऐसा हुआ कि हमें खाद्य-सामग्री प्राप्त हुई जो हमारे पास उन दो सहस्त्र सैनिकों द्वारा लाई गई थी जो हमारी सहायता के लिए आये थे; देश को शत्रुओं के हाथों में पड़ने से और अपनी रक्षा करने के लिए हमें केवल यही सहायता प्राप्त हुई, हां, उस शत्रु से लड़ने के लिए जो अगणित थे।

९. और अब अपनी व्यग्रता का कारण या कि उनके द्वारा हमारे पास और अधिक सैनिक न भेजे जाने का कारण हम नहीं जानते। इसलिए हमें बहुत दुख हुआ और हम भयभीत हो उठे कि कहीं परमेश्वर का न्यायदण्ड हमारे देश के ऊपर न पड़ जाए और हम पराजित होकर पूरे तौर से नष्ट न हो जाएं।

१०. इसलिए (३) प्रार्थना में हमने अपनी आत्माओं को खोल कर परमेश्वर के आगे रख दिया कि वह हमें बल दे और हमें अपने शत्रुओं के हाथों से बचा ले, और हमें ऐसी शक्ति दे कि जिससे हम अपने लोगों के निर्वाह के लिए अपने नगरों, भूमि और सम्पत्तियों को अपने अधिकार में रख सकें।

११. और ऐसा हुआ कि परमेश्वर यह आश्वासन लेकर हमारे पास आया कि वह हमारी रक्षा करेगा; उसने हमें इतना आश्वासन दिया कि हमारी आत्माओं को शान्ति मिली और हमें भारी विश्वास दिया और इसके कारण हमें आशा हुई कि उसमें ही हमारी मुक्ति है।

१२. और हमने उस आई छोटी-सी सेना को पाकर साहस किया और अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने और अपनी भूमि, सम्पत्तियों, स्त्रियों, बच्चों और अपनी (४) स्वतन्त्रता पर अपना अधिकार रखने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

१३. इस प्रकार हमने पूरे बल के साथ लम-नायटियों पर चढ़ाई की जो कि (५) मण्टी नगर में थे, और हमने नगर के निकट वन की ओर अपने तम्बुओं को खड़ा कर दिया।

१४. और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन सुबह, जब लमनायटियों ने हमें उस जंगल के निकट सीमा के अन्दर पाया, जो कि नगर के निकट था, तब हमारी संख्या और शक्ति का पता लगाने के लिए हमारे चारों ओर उन्होंने भेदियों को भेजा।

१५. और जब उन्होंने देखा कि संख्या में हम कम हैं और इस भय से कि अगर वे आकर हमसे लड़ कर हमें मार न डालेंगे तब हम उनके सहायता प्राप्त करने के रास्ते को बन्द कर देंगे और इस कारण से भी कि वे अपने असंख्य सैनिकों के द्वारा हमें नष्ट सकते हैं, वे हमसे लड़ने की तैयारियां करने लगे।

१६. जब हमने देखा कि वे हमारे विरुद्ध आने की तैयारियां कर रहे हैं तब मैंने गिड को थोड़े से लोगों के साथ वन में छुपा दिया और फिर उसी प्रकार टेमनर को भी थोड़े से सैनिकों के साथ वन में छुपे रहने को कहा।

१७. अब गिड और उसके आदमी दाहिने ओर थे और दूसरे बांई ओर; जब वे वन में छुप गए तब सुनो, मैं अपनी सेना के साथ उसी स्थान पर डटा

(२) ओम १३. (३) देखो ५, २ नफी ३२. (४) देखो १३, मू० २६. (५) देखो ८, अल० १६.

रहा, जहां पर हमने पहले अपने तम्बुओं को उस के लिए लगा दिया था जब कि लमनायटी निकल कर हमसे युद्ध करने के लिए आएंगे।

१८. और ऐसा हुआ कि लमनायटी अपनी असंख्य सेना के साथ हमारे विरुद्ध आए। और जब वे तलवार हाथ में ले हमारे ऊपर टूट पड़ने को हुए, तब जो लोग मेरे साथ थे, उन्हें लेकर मैं पीछे वन में हट गया।

१९. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों ने तीव्र गति से हमारा पीछा किया क्योंकि उनकी इच्छा थी हमें पकड़ लेने की, जिससे वे हमें मार डालें; इसलिए वन में उन्होंने हमारा पीछा किया; और हम (६) गिड और टेमनर के बीच से गुजर गए परन्तु लमनायटी उनका पता भी न पा सके।

२०. जब लमनायटी उनके मध्य से होकर आगे बढ़ गए अर्थात् जब सेना उनके बीच से होकर आगे निकल गई तब गिड और टेमनर अपने छुपे हुए स्थान से निकलें और लमनायटी भेदियों का रास्ता बन्द कर दिया जिससे कि वे वापस नगर में न लौट सकें।

२१. जब उन्होंने भेदियों के पथ को रोक दिया तब दौड़ते हुए नगर में पहुंचे और जो प्रहरी नगर की रक्षा करने के लिए नियुक्त किए गए थे वे उन पर टूट पड़े और उन सभी को नष्ट कर दिया और नगर पर अधिकार भी कर लिया।

२२. यह इसलिए हो सका क्योंकि कुछ लमनायटी प्रहरियों को छोड़ कर उनकी सारी सेना वन में ले जाई जा चुकी थी।

२३. इस प्रकार गिड और टेमनर ने उनके दृढ़ अड्डों पर अधिकार कर लिया। और हम बहुत दूर तक वन में यात्रा करने के पश्चात् (७) जराहेमला देश की ओर बढ़े।

२४. जब उन्होंने हमें ज़राहेमला देश की ओर बढ़ते देखा तब यह सोच कर वे बहुत डरे कि हमने उनको नष्ट करने की कोई योजना तो नहीं बना रखी है; इसलिए वे जिस रास्ते से आए थे उसी रास्ते से वन में पीछे हटने लगे।

२५. और सुनो, रात हो गई थी और उन्होंने अपने तम्बुओं को गाड़ दिया क्योंकि लमनायटियों के सेनापतियों ने सोचा कि चलने के कारण नफायटी थके हुए हैं; और उन्होंने सोचा कि वे नफायटियों की पूरी सेना को खदेड़ आए हैं इसलिए उन्होंने (८) मण्टी नगर की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

२६. और ऐसा हुआ कि जब रात हो गई तब मैंने अपने लोगों को सोने नहीं दिया बल्कि उन्हें दूसरे रास्ते से मण्टी की ओर बढ़ाया।

२७. हमारे रात के समय चलने के कारण दूसरे दिन सुबह को हम लमनायटियों से भी आगे निकल गए और उनके पहुंचने से पहले ही मण्टी नगर में पहुंच गए।

२८. इस प्रकार चतुराई से हमने बिना रक्त बहाए ही (९) मण्टी नगर को अपने अधिकार में कर लिया।

२९. और ऐसा हुआ कि जब लमनायटी नगर के निकट पहुंचे और देखा कि हम उनका सामना करने के लिए तैयार हैं तब अति विस्मित होकर इतने भयभीत हुए कि वे सब वन में भाग खड़े हुए।

३०. और हां, ऐसा हुआ कि देश के इस पूरे भाग से लमनायटियों की सभी सेनाएं भाग गईं। लेकिन सुनो, वे बहुत-सी स्त्रियों और बच्चों को देश से बाहर अपने साथ लेते गए।

३१. और जो नगर लमनायटियों द्वारा ले लिए गए थे वे सब इस समय हमारे अधिकार में है; और जिनको लमनायटी बन्दी बनाकर ले गए हैं, उनको छोड़ कर बाकी सभी हमारे माता-पिता; हमारी स्त्रियां और बच्चे अपने-अपने घरों को लौट रहे हैं।

३२. लेकिन सुनो, इतने अधिक नगरों और इतनी बड़ी सम्पत्तियों की देख-भाल करने के लिए हमारी सेना बहुत छोटी है।

३३. फिर भी हम अपने परमेश्वर पर विश्वास करते हैं; जिसने कि हमें इतनी सफलता दी कि हमने उन नगरों और भूमि पर अधिकार कर लिया जो कि हमारी थी।

३४. हम यह नहीं जानते कि सरकार हमें और सेना क्यों नहीं देती और (१०) जो आदमी

(६) पद्य १६, १७, २०, २३. (७) ओम १३. (८) देखो ८, अल० १६. (९) देखो ८, देखो १६. (१०) पद्य ८.

हमारे पास आए थे वे भी नहीं जानते कि हमने और अधिक शक्ति क्यों नहीं प्राप्त की।

३५. सुनो, हम इसकी अपेक्षा और कुछ नहीं जानते कि तुम असफल होकर सेनाओं को देश के उस भाग में ले गए हो, अगर ऐसी बात है तब हम अपना असन्तोष प्रकट करना नहीं चाहते।

३६. अगर ऐसा नहीं है तब सुनो, हमें भय है कि (११) सरकार में फूट है जिसके कारण वे और लोगों को हमारी सहायता करने के लिए भेज नहीं रहे हैं कि उन्होंने जितने लोगों को भेजा है उनसे कहीं अधिक संख्या में वे हैं।

३७. लेकिन कोई बात नहीं, हमारी सेनाओं की कमजोरियों के होते हुए भी हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमारी रक्षा करेगा और हमें अपने शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचाएगा।

३८. सुनो, यह उन्तीसवां वर्ष है और हम इस वर्ष के अन्तिम भाग में हैं और हम अपनी भूमि पर अधिकार किए हुए हैं; और लमनायटी (१२) नफी के देश में भाग गए हैं।

३९. और (१३) आमोन के वे पुत्र जिनकी मैंने इतनी प्रशंसा की है वे इस समय मेरे साथ (१४) मण्टी नगर में हैं; और परमेश्वर ने उनको सहारा दिया और उनकी इतनी रक्षा की कि उनमें से (१५) एक भी तलवार से मारा नहीं गया।

४०. लेकिन देखो, उनमें से कइयों को चोट लगी; फिर भी वे उस स्वतन्त्रता के लिए दृढ़ता के साथ खड़े हैं, जिसमें कि परमेश्वर ने उन्हें स्वतन्त्र बनाया है; और दिन प्रतिदिन वे अपने प्रभु परमेश्वर को स्मरण रखने में भी अडिग हैं—और उसकी व्यवस्था न्याय और आज्ञाओं को लगातार मानते रहे हैं, और उन भविष्यवाणियों में उनका विश्वास दृढ़ है जो अभी पूरी होने को है।

४१. और अब, मेरे प्रिय भाई मरोनी, हमारा प्रभु परमेश्वर जिसने हमें बचाया और मुक्त रखा लगातार अपनी उपस्थिति में तुम्हें रखे; और इन लोगों पर इतनी कृपा करे कि तुम्हें उन सभी सम्पत्तियों का अधिकारी बनने में सफलता मिले, जिन्हें लमनायटी हमसे ले चुके हैं और जो हमारे निर्वाह के लिए थी। और अब सुनो, मैं अपने पत्र को समाप्त करता हूं। मैं अलमा का पुत्र इलामन हूं।

अध्याय ५९

मरोनी का पहोरन के पास लिख कर इलामन को सहायता पहुंचाने की मांग करना—लमनायटियों का नफियाह नगर को लेना—सरकार द्वारा दिलचस्पी न लेने से मरोनी का क्रोध करना।

१. नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के *तीसवें वर्ष में ऐसा हुआ कि मरोनी इलामन के (१) पत्र को प्राप्त कर, उसे पढ़ने के पश्चात् उसकी कुशलता और अपनी खोई हुई भूमि को वापस प्राप्त करने में उसकी भारी सफलता को जान कर बहुत ही आनन्दित हुआ।

२. और देश के जिस भाग में वह था वहां के सभी आस-पास के लोगों को उसने इस बात को बताया जिससे कि वे भी आनन्द मनाएं।

३. और ऐसा हुआ कि उसने उसी समय (२) पहोरन के पास पत्र लिखकर इच्छा प्रकट की कि वह इलामन को अर्थात् इलामन की सेना को इतना बलवान बनाने के लिए लोगों को एकत्रित करे, जिससे कि वह सरलता के साथ देश के उस भाग को अपने अधिकार में रख सके जिसे कि वह चमत्कारिक ढ़ंग से वापस प्राप्त करने में सफल हुआ है।

४. और जब मरोनी ने इस पत्र को (३) जराहेमला देश भेज दिया तब वह पुनः लमनायटियों द्वारा जीती गई सम्पत्तियों और नगरों को वापस लेने की योजना बनाने लगा।

५. और ऐसा हुआ कि जब मरोनी इस प्रकार लमनायटियों से जाकर युद्ध करने की तैयारियां कर रहा था तब (४) नफियाह के लोग जो कि (५) मरोनी नगर (६) लेही नगर और (७)

(११) अल० ६१. (१२) देखो २, २ नफी ५. (१३) अल० २७:२६. (१४) देखो ८, अल० १६. (१५) अल० ५६:५६. ५७:२५. अध्याय ५९. (१) अल० अध्याय ५६-५८. (२) अल० ५०:४०. (३) ओम० १३. (४) देखो १२, अल० ५०. (५) देखो ११, अल० ५०. (६) देखो १३, अल० ५०. (७) देखो १६, अल० ५०. *ईसा से ६२ वर्ष पूर्व

मोरियन्दन नगर से एकत्रित हुए थे, लमनायटियों के आक्रमण के शिकार हो बैठे।

६. (८) मण्टी देश से भगाए गए लमनायटी और आस-पास के देशों के लमनायटी आकर यहां के लमनायटियों के साथ मिल गए थे।

७. इस प्रकार उनकी संख्या अत्यधिक हो गई थी और दिन प्रतिदिन उन्हें सहायता भी प्राप्त हो रही थी तब अमरोन की आज्ञा से उन्होंने (९) नफियाह के लोगों के विरुद्ध आक्रमण कर दिया और उन्हें भारी संख्या में मारने लगे।

८. और उनकी सेनाएं इतनी अधिक थीं कि नफियाह के बचे हुए लोगों को उनके सामने से जान बचा कर भागना पड़ा; और वे आकर मरोनी की सेना में सम्मिलित हो गए।

९. (१०) मरोनी नफियाह नगर की रक्षा करने के लिए लोगों को भेजना चाहता था क्योंकि वह जानता था कि लमनायटियों से नगर की रक्षा करना उनके हाथों में नगर जाने के बाद उसको दुबारा प्राप्त करने से अधिक सरल है। उसने सोचा था कि वे लोग सरलता के साथ नगर की रक्षा कर सकेंगे।

१०. इसलिए उसने अपनी सारी सेना को फिर से जीते हुए स्थानों की रक्षा करने के लिए रख लिया।

११. जब मरोनी ने देखा कि नफियाह नगर हाथों से जा चुका है तब उसे बहुत ही दुःख हुआ, और लोगों की दुष्टता पर उसे सन्देह होने लगा और भय हुआ कि कहीं वे अपने उन बन्धुओं के हाथों में न पड़ गए हों।

१२. यही बात उसके मुख्य नायकों के साथ भी थी। उन पर लमनायटियों की सफलता के कारण, उनको भी अपने लोगों की दुष्टता पर सन्देह और आश्चर्य होने लगा।

१३. और ऐसा हुआ कि (११) देश की स्वतन्त्रता की उपेक्षा करने के कारण मरोनी सरकार पर क्रोधित हो उठा।

अध्याय ६०

पहोरन को मरोनी का दूसरा पत्र—उपेक्षा करने के लिए असंतोष प्रकट करना—बदले के भय के कारण अविलम्ब सहायता की मांग करना।

१. और ऐसा हुआ कि मरोनी ने देश के शासक जो कि (१) पहोरन था, के पास पुनः पत्र लिखा जिसमें उसने ये शब्द लिखे : सुनो (२) ज़राहेमला नगर में, मैं पहोरन को, जो कि देश का मुख्य निर्णायक और शासक है, और उन सभी को, पत्र लिख रहा हूं जो कि इन लोगों के द्वारा इस युद्ध के संचालन और देखभाल करने के लिए चुने गए हैं।

२. मुझे उनके अपराध के विषय में उनसे कुछ कहना है, क्योंकि सुनो, तुम सब स्वयं यह जानते हो कि आदमियों को एकत्र करके उन्हें तलवारों, कटारों और हर प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से (३) सुसज्जित करके देश के किसी भी भाग पर लमनायटी आक्रमण करें, वहां उन्हें भेजने के लिए तुम्हें नियुक्त किया गया है।

३. और सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि मैंने और मेरे आदमियों ने तथा हिलामन और उसके आदमियों ने, बड़े-बड़े कष्ट उठाए हैं; हां हमने भूख, प्यास, थकान और हर एक प्रकार के कष्ट झेले हैं।

४. लेकिन सुनो, अगर हमने केवल इन्हीं कष्टों को झेला होता तब न तो हम असन्तोष ही प्रकट करते और न ही उलाहना देते।

५. लेकिन सुनो, हमारे लोग भारी संख्या में मारे भी गए हैं: हां, सहस्त्रों लोग तलवार से मारे गए हैं। अगर तुमने हमें विपत्ति के समय पर्याप्त सैनिक सहायता दी होती तो ऐसा नहीं होता। हां, तुमने हमारी बहुत बड़ी अवहेलना की है।

६. और अब सुनो, हम इस भारी अवहेलना के कारण जानना चाहते हैं; हां, हम तुम्हारे अविचार के कारण जानना चाहते हैं।

७. क्या तुम यह सोचते हो कि तुम अपनी इस असावधानीपूर्ण कर्तव्यहीनता की स्थिति में अपनी गद्दियों पर बैठे ही रहोगे जबकि तुम्हारे शत्रु चारों ओर मृत्यु जाल फैला रहे हैं? हां, जबकि वे तुम्हारे सहस्त्रों भाइयों को मार रहे हैं।

८. जो रक्षा के लिए तुम्हारी ओर ताक रहे थे,

(८) देखो ८, अल० १६:५८-२६, ३०. (९) देखो १२, अल० ५०. (१०) देखो १२, अल० ५०. (११) देखो १३, मू० २६.
अध्याय ६०. (१) अल० ५०:४०. (२) ओम० १३. (३) देखो ६, अल० २.

जिन्होंने तुम्हें विपत्ति के समय सहायता पहुंचाने की (४) स्थिति में किया, जिनके पास तुम्हें सेनाओं को भेजना चाहिए था, ताकि उनको बलवान करके सहस्त्रों को तलवार से कटकर गिरने से तुम उन्हें बचा सकते।

९. लेकिन सुनो, इतना ही नहीं, तुमने अपने सामानों को भी उन तक पहुंचाने से रोक लिया, जिन्होंने इन लोगों के हितों के लिए लड़कर अपने रक्त को बहा कर अपने प्राणों को खो दिया है; और हां उन्होंने, यह उस समय किया जबकि वे भूख के कारण मरने ही वाले थे क्योंकि तुमने उनकी घोर अवहेलना की थी।

१०. और अब, मेरे प्रिय भाइयो—क्योंकि तुम्हें प्रिय होना चाहिए; तुम्हें इन लोगों के हितों और स्वतन्त्रता के लिए और अधिक परिश्रम के साथ उद्योग करना चाहिए था; लेकिन तुमने उनकी इतनी अवहेलना की है कि सहस्त्रों का रक्त तुम्हारे सिर पर आएगा; क्योंकि परमेश्वर को उनकी पुकारों और कष्टों का पता है।

११. सुनो, क्या तुम सोचते हो कि तुम अपने सिहांसन पर बने रहोगे और परमेश्वर की असीम कृपा होने से तुम चुपचाप बैठे रहो और वह तुम्हें बचा लेगा? सुनो, अगर तुमने यह सोचा है तब तुम्हारा सोचना व्यर्थ है।

१२. क्या तुम यह सोचते हो कि तुम्हारे जितने बन्धु मारे गए हैं वे सब अपने ही पापों के कारण मारे गए हैं? मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुमने यह सोचा है तब तुम्हारा यह सोचना भी व्यर्थ है; क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि अनेकों तलवार से गिरे हैं और यह तुम्हें दोषी ठहराता है।

१३. क्योंकि परमेश्वर (५) धार्मिक का मरना इसलिए सहन करता है; जिससे कि उसका न्याय-दण्ड पापियों के ऊपर गिरे; इसलिए तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि धार्मिक मारे जाने के कारण मिट गए हैं; लेकिन सुनो, वे अपने प्रभु परमेश्वर के (६) विश्राम में प्रवेश कर चुके हैं।

१४. और अब सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि परमेश्वर का न्याय-दण्ड इन लोगों पर अत्यन्त आलस करने के कारण पड़ेगा; हां, हमारी सरकार के आलसीपन, और अपने बन्धुओं के प्रति अत्यधिक अवहेलना करने के कारण; हां, अवहेलना उनके प्रति, जो मारे जा चुके हैं।

१५. क्योंकि दुष्टता जो सबसे पहले हमारे सिर पर सवार हुई, अगर नहीं होती, तब हम अपने शत्रुओं का सामना कर सकते थे और वे हम पर विजयी नहीं हो सकते थे।

१६. अगर हम लोगों में आपसी युद्ध न होता हां, ये राजा के (७) लोग अगर (८) हममें इतना रक्तपात न करवाते, जब हम आपस में लड़ रहे थे, तब लड़ने की जगह, अगर हम पहले की तरह अपनी शक्ति को संगठित रखते; अगर राजा के लोग हमारे ऊपर प्रभुता पाने के इच्छुक न होते, अगर वे हमारी स्वतन्त्रता के प्रति सच्चे रहते और हमारे साथ मिले रहते और शत्रुओं से लड़ने के लिए आगे चलते न कि हमारे ही विरुद्ध तलवार उठाते, जिससे कि हमारे बीच इतना रक्तपात हुआ है; हां, अगर हम प्रभु के बल पर उनके विरुद्ध गए होते, तब हम अपने शत्रुओं को भगा देते, क्योंकि यह (९) उसके द्वारा कही गई वाणी के अनुसार पूरा हुआ होता।

१७. लेकिन सुनो, अब लमनायटी हमारे विरुद्ध बढ़ रहे हैं और हमारी भूमि पर अधिकार कर रहे हैं और हमारे लोगों को तलवार से गिरा रहे हैं; वे हमारी स्त्रियों को भी मार रहे हैं और उन्हें बन्दी बना कर ले जाते रहे हैं और उन्हें हर प्रकार के कष्ट दे रहे हैं और यह सब उन लोगों के कारण हो रहा है, जो प्रभुता और बल के भूखे (१०) राजा के लोग हैं।

१८. इस विषय पर मैं और क्या कहूं? क्योंकि हम यह नहीं जानते कि कहीं तुम भी तो प्रभुता को खोज नहीं रहे हो। हम यह भी नहीं जानते कि कहीं तुम भी देश के प्रति द्रोह तो नहीं कर रहे हो।

१९. तुम हमारी अवहेलना इसलिए तो नहीं कर रहे हो कि हमारे देश के बीच में होने के कारण तुम सुरक्षित हो, और इसलिए तुम हमारे पास

(४) देखो ५, मू० २९. (५) मू० १७:१०. अल० १४:११. (६) देखो ४८, अल० १२. (७) अल० ५१:१३-२७. (८) देखो ५, अल० ५१. (९) देखो ८, २ नफी १. (१०) देखो ५, अल० ५१.

भोजन सामग्री नहीं भेज रहे हो और न ही हमारी सेना को और शक्तिशाली बनाने के लिए आदमी भेजते हो ?

२०. क्या तुम अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं को भूल गए हो? क्या तुम अपने पूर्वजों की बन्दी अवस्था को भी भूल गए हो? क्या तुम यह भी भूल गए हो कि अनेकों बार हमें अपने शत्रुओं से बचाया गया है ?

२१. या कि तुम यह सोचते हो कि हम अपने आसनों पर बैठे रहें और बिना प्रभु के दिए (११) साधनों को उपयोग में लाए ही प्रभु हमें बचा लेगा ?

२२. क्या तुम सहस्त्रों निकम्मों से घिरे आलस में बैठे रहोगे; दस-दस सहस्त्र निकम्मों से घिरे हुए बैठे रहोगे, जबकि सीमा के प्रदेशों में सहस्त्रों की संख्या में लोग तलवार से गिर रहें हैं—घायल और रक्त बहाते हुए ?

२३. क्या तुम सोचते हो कि उन कामों को चुपचाप बैठ कर देखने से परमेश्वर तुम्हें निर्दोष ठहराएगा? मैं तुम से कहता हूं कि नहीं। अब मैं चाहता हूं कि तुम यह याद रखो कि परमेश्वर ने कहा है कि (१२) बर्तन के भीतर पहले सफाई की जाएगी और तब उसे बाहर से साफ किया जाएगा।

२४. और अब केवल अपने किए हुए कर्मों पर पश्चात्ताप करते हुए उठ खड़े होकर, कर्म आरम्भ करो और हमारे तथा इलामन के पास भोजन सामग्री और आदमियों को भेजो, जिससे कि वह देश के उस भाग की देखभाल कर सके, जिस पर उन्होंने फिर से अधिकार कर लिया है, और जिससे कि हम भी इस भाग में बचे हुए स्थानों पर पुनः अपना अधिकार कर सकें, अन्यथा यह आवश्यक हो जाएगा कि हम लमनायटियों से लड़ना तब तक बन्द कर दें, जब तक कि हम अपने बर्तन के भीतरी भाग को शुद्ध नहीं कर लेते हैं; हां, यहां तक कि अपने शासन के बड़े अधिकारी तक को भी।

२५. और अगर मेरे पत्र के अनुसार तुमने स्वतन्त्रता की (१३) सच्ची भावना नहीं दिखाई और हमारी सेनाओं को शक्तिमान नहीं किया और उनके निर्वाह के लिए भोजन सामग्री नहीं दी, तब मैं अपने स्वतन्त्र लोगों के एक भाग को देश के इस भाग की देखभाल करने के लिए परमेश्वर की शक्ति और आशीर्वाद उनके साथ नियुक्त कर दूंगा, जिससे उनके विपरीत कोई भी शक्ति काम कर न सके।

२६. और यह ऐसा मैं उनके अपने कष्टों में परमेश्वर के प्रति भारी विश्वास, और धैर्य के कारण करूंगा।

२७. और मैं तुम्हारे पास आऊंगा, और तुममें अगर कोई स्वतन्त्रता का इच्छुक होगा, हां, अगर स्वतन्त्रता की (१४) एक चिनगारी भी बची होगी, तब सुनो, मैं तुम लोगों में ऐसा विद्रोह करवा दूंगा, जिससे प्रभुता और अधिकार के भूखे मिट जाएंगे।

२८. हां, सुनो, मैं तुम्हारे बल और अधिकार से डरता नहीं; मैं केवल अपने परमेश्वर से डरता हूं; और मैं उसकी आज्ञाओं के अनुसार तलवार लेकर अपने देश की रक्षा कर रहा हूं, और तुम्हारे पाप के कारण हमने इतनी बड़ी हानि उठाई है।

२९. सुनो, अब वह समय आ गया है कि अगर तुमने अपने देश और नन्हें बच्चों की रक्षा के लिए उद्यम नहीं किया, तब न्याय की तलवार तुम्हारे ऊपर लटक रही है; हां, वह तुम्हारे ऊपर गिरेगी और तुम्हें बिल्कुल नष्ट कर देगी।

३०. सुनो, मैं तुमसे सहायता की प्रतीक्षा कर रहा हूं; और अगर तुमने सहायता नहीं भेजी, तब मैं तुम्हारे पास (१५) ज़राहेमला देश तक भी चला आऊंगा और तुम लोगों को तलवार से तब तक मारता रहूंगा, जब तक कि हमारी (१६) स्वतन्त्रता की प्रगति में, बाधा पहुंचाने के लिए तुम्हारे पास कोई बल शेष न रह जाएगा।

३१. क्योंकि सुनो, परमात्मा यह सहन नहीं कर सकता कि तुम उसके धार्मिक लोगों को नष्ट करने के लिए जीवित रह कर अपने पापों में फूलो-फलो।

३२. देखो, क्या तुम सोच सकते हो कि प्रभु

(११) पद्य ११. (१२) पद्य २४. (१३) देखो ३२, अल० ४३. (१४) देखो ३२, अल० ४३. (१५) ओम १३. (१६) देखो ३२, अल० ४३.

तुम्हें क्षमा प्रदान कर, लमनायटियों के विरुद्ध न्याय करने के लिए आएगा जब कि यह उनके (१७) पूर्वजों की परम्परा है जो कि हमारे विरुद्ध ईर्ष्या उत्पन्न कर रही है, जिसे उन लोगों ने दुगना कर रखा है जो हमसे मतभेद के कारण हमसे अलग हो चुके हैं, जबकि तुम्हारे अनुचित कार्य यश से प्रीति और व्यर्थ की सांसारिक वस्तुओं के कारण है?

३३. तुम यह जानते हो कि तुम परमेश्वर के नियमों को तोड़ रहे हो, और तुम यह भी जानते हो कि उन्हें तुम पैरों तले कुचल रहे हो। सुनो, प्रभु मुझसे कहता है: जिन्हें तुमने अपना शासक नियुक्त किया, अगर वे अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं करते हैं, तब तुम उनके विरुद्ध युद्ध करने जाओगे।

३४. और अब सुनो, मैं, मरोनी, वचनवद्ध होने के कारण अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करने के लिए विवश हूं; इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम परमेश्वर की वाणी के प्रति दृढ़ रहो और शीघ्रता के साथ हमारे और इलामन के पास भोजन-सामग्री और अपने आदमियों को भेजो।

३५. और देखो, अगर तुमने ऐसा नहीं किया तब शीघ्रता के साथ मैं तुम्हारे पास आऊंगा, परमेश्वर हमें भूखों मरते नहीं देख सकता, इसलिए वह हमें तुम्हारा भोजन देगा, चाहे वह तलवार के ही बल पर क्यों न हो। अब परमेश्वर की वाणी को (१८) पूरा करना तुम्हारा काम है।

३६. सुनो, मैं तुम्हारा प्रधान सेनापति मरोनी हूं—मैं शक्ति को नहीं खोजता उसे ढोना चाहता हूं। मैं सांसारिक यश नहीं ढूंढता परन्तु मैं अपने परमेश्वर का यश, अपने देश की (१९) स्वतन्त्रता और भलाई चाहता हूं। इस प्रकार मैं अपने पत्र का अन्त कर रहा हूं।

अध्याय ६१

पहोरन का देशभक्ति पूर्ण उत्तर—उसका अपने और स्वतन्त्र लोगों को दोष से मुक्त ठहराना—नफायटी साम्राज्य का डगमगाना—विद्रोहियों के विरुद्ध शासक का सेना से सहायता मांगना।

१. सुनो, प्रधान शासक के पास मरोनी द्वारा पत्र भेजे जाने के शीघ्र पश्चात् उसने (१) पहोरन, जो कि प्रधान शासक था, से एक पत्रोत्तर पाया। और उसने ये शब्द उत्तर में पाए।

२. मैं पहोरन, जो कि देश का प्रधान शासक हूं, सेना के प्रधान सेनापति मरोनी के पास ये शब्द भेज रहा हूं। सुनो, मरोनी, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम्हारे भारी कष्टों से मैं आनन्दित नहीं होता हूं, अपितु उनसे मेरी आत्मा को दुःख होता है।

३. लेकिन सुनो, कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्हें तुम्हारे कष्टों से आनन्द मिलता है और यहां तक हुआ कि उन्होंने मेरे विरुद्ध और मेरे (२) स्वतन्त्र लोगों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है और ये विद्रोही संख्या में बहुत अधिक हैं।

४. और ये वे लोग हैं जिन्होंने मुझसे न्याय आसन को छीनना चाहा और जो कि इस भारी अपराध की जड़ हैं, क्योंकि उन्होंने बड़ी बहकाने वाली बातें कीं और बहुतों को बहका भी लिया, जिससे हम लोगों को बहुत दुःख हुआ। उन्होंने हमारे सामानों को रोक रखा है, और वे स्वतन्त्र लोगों को धमकाते हैं, जिससे वे तुम्हारे पास न जा सके।

५. और सुनो, उन्होंने मुझे खदेड़ दिया और मैं जितने लोगों को हो सका, अपने (३) साथ लेकर गिडियन देश भाग आया।

६. और सुनो, मैंने देश के इस भाग में घोषणा कर दी और प्रतिदिन लोग मेरे पास देश की और अपनी (४) स्वतन्त्रता की रक्षा और हमारे साथ किए अन्याय का बदला लेने के लिए आ रहे हैं।

७. और ऐसे लोग हमारे पास इतनी बड़ी संख्या में आ चुके हैं, कि जिन्होंने विद्रोह किया, उनको हम लड़ने के लिए ललकार रहे हैं; और वे हमसे डरते हैं और लड़ने का साहस नहीं कर रहे हैं।

८. उन्होंने ज़राहेमला देश अर्थात् (५) ज़राहेमला नगर पर अपना अधिकार कर लिया है; और एक राजा नियुक्त कर दिया है, जिसने

(१७) देखो १४ या० ७. (१८) पद्य ३३. (१९) देखो ३२, अल० ४३. अध्याय ६१. (१) अल० ५०:४०. (२) देखो १३, मू० २९. (३) देखो १३, अल० २. (४) देखो १३, मू० २९. (५) ओम० १३. *ईसा से ६२ वर्ष पूर्व

लमनायटियों के राजा के पास पत्र लिखकर उसके साथ सन्धि कर ली है, जिसके अनुसार वह ज़राहेमला नगर पर अधिकार बनाए रखेगा जिसके, कारण वह सोचता है कि बचे हुए देश पर लमनायटी विजय प्राप्त कर सकेंगे, और लमनायटियों द्वारा जीते गए लोगों का वह राजा नियुक्त किया जाएगा।

९. तुमने अपने पत्र में मुझ पर दोष लगाया है, लेकिन कोई बात नहीं; मैं क्रोध नहीं करता, अपितु तुम्हारे हृदय की विशालता पर आनन्दित होता हूं। मैं, पहोरन, अपने न्याय आसन को केवल प्राप्त करना चाहता हूं जिससे कि मैं अपने लोगों के अधिकारों और (६) स्वतन्त्रता को सुरक्षित रख सकूं; इसके अलावा मैं शक्ति का इच्छुक नहीं हूं। मेरी आत्मा उस स्वतन्त्रता में दृढ़ है जिसमें परमेश्वर ने हमें स्वतन्त्र किया है।

१०. और अब सुनो, हम अन्याय का सामना अपना रक्त बहा कर भी करेंगे। अगर लमनायटी अपनी भूमि पर रहें, तब हम उनका रक्तपात नहीं करेंगे।

११. अगर हमारे भाई हमारे विरुद्ध विद्रोह कर तलवार न उठाएं, तब हम उनका भी रक्तपात नहीं करेंगे।

१२. अगर परमेश्वर का न्याय चाहता हो कि हम दासता के जुए में बांधे जाएं, या वह हमें इसकी आज्ञा दे, तब हम गुलाम हो जाएंगे।

१३. लेकिन सुनो, वह हमें आज्ञा नहीं देता कि हम अपने शत्रुओं के अधीन हो जाएं, परन्तु वह चाहता है कि हम उस पर विश्वास करें और वह हमें मुक्त करेगा।

१४. इसलिए मेरे प्रिय भाई मरोनी, हम दुष्टता का विरोध करें, और जिन बुरी बातों का विरोध हम शब्दों से न कर सकें जैसे विद्रोह और मतभेद, उसका हम तलवार से विरोध करें। इनका विरोध हम तलवार से करें जिससे कि हम अपनी स्वतन्त्रता को बनाए रख सकें और अपने गिरजे की सुविधाओं में और अपने मुक्तिदाता और परमेश्वर में आनन्द मनाएं।

१५. इसलिए अपने थोड़े से आदमियों के साथ शीघ्र गति से मेरे पास आओ और शेष आदमियों को लेही और टेनकम के अधिकार में दे दो; उन्हें देश के उस भाग में, परमेश्वर की आत्मानुसार जो कि स्वतन्त्रता की आत्मा भी है और जो उनके अन्दर है, युद्ध चालू रखने का अधिकार दे दो।

१६. सुनो, मैंने थोड़ा सामान उनके पास भेज दिया है, जिससे कि मेरे पास तुम्हारे आने तक वे नष्ट न हों।

१७. यहां की यात्रा करते समय जितनी सेना एकत्रित कर सको, करते आओ और जो विश्वास हम लोगों में है, उसी के अनुसार हम परमेश्वर की शक्ति से, अपने विरोधियों के विरुद्ध शीघ्र गति से जाएंगे।

१८. और हम (७) ज़राहेमला नगर पर अधिकार करेंगे, जिससे कि हम लेही और टेनकम के पास भेजने के लिए और अधिक भोजन सामग्री को प्राप्त कर सकें; हां, हम प्रभु की शक्ति से मुक्त होकर उनके विरुद्ध जाएंगे और इस घोर दुष्कर्म का अन्त कर डालेंगे।

१९. और अब, मरोनी, तुम्हारे पत्र से मुझे आनन्द मिला है, क्योंकि मुझे इस बात की चिन्ता थी कि हमें क्या करना चाहिए, और क्या अपने ही बन्धुओं के विरुद्ध जाना उचित है?

२०. लेकिन तुमने यह कहा कि प्रभु ने तुम्हें यह (८) आज्ञा दी है कि अगर वे पश्चात्ताप नहीं करते हैं, तब तुम्हें उनके विरुद्ध आक्रमण करना चाहिए।

२१. तुम लेही और टेनकम को प्रभु में दृढ़ कर दो; उन्हें बतलाओ कि डरो मत क्योंकि परमेश्वर उनकी रक्षा करेगा; और हां, परमेश्वर उनको भी बचाएगा जो परमेश्वर की दी स्वतन्त्रता में दृढ़ बने रहेंगे। और अब मैं अपने प्रिय भाई मरोनी को लिखे पत्र को समाप्त करता हूं।

अध्याय ६२

पहोरन की सहायता के लिए मरोनी का जाना—जराहेमला का विद्रोहियों के हाथों से लिया जाना—इलामन, लेही और टेनकम को सहायता भेजना—लमनायटियों का मरोनी देश में केन्द्रित

(६) देखो १३, मू० २६. (७) ओम १३. (८) अल० ६०:३३.

होना—टेनकम का अपने प्राण दे कर अमरोन को मारना—लमनायटियों को देश से बाहर खदेड़ा जाना।

१. जब मरोनी को पहोरन से यह पत्र प्राप्त हुआ तब पहोरन की ईमानदारी और इस बात से कि वह भी देश और स्वतन्त्रता के प्रति विश्वास-घाती नहीं है, उसके हृदय में साहस हुआ और वह अति आनन्द से भर उठा।

२. लेकिन जिन लोगों ने पहोरन को न्याय-आसन से भगा दिया था, दूसरे शब्दों में जिन्होंने अपने देश और अपने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था, उन लोगों के पापों पर उसने विलाप किया।

३. और ऐसा हुआ कि पहोरन की इच्छानुसार मरोनी ने कम संख्या में आदमियों को लेकर (१) गिडियन देश की ओर यात्रा की और अपनी शेष सेना को लेही और टेनकम के अधीन छोड़ दिया।

४. और जिन स्थानों में प्रवेश किया वहां उसने (२) स्वतन्त्रता की पताका लहरायी और (३) गिडियन देश की यात्रा करते हुए जितनी सेना हो सकी एकत्रित की।

५. सहस्त्रों लोग उसके झण्डे के नीचे एकत्रित हुए और अपनी (४) स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने शस्त्र ग्रहण किए जिससे कि वे दासत्व में न पड़ें।

६. इस प्रकार जितने भी लोगों को वह एकत्रित कर सकता था एकत्रित कर लिया तब मरोनी ने (५) गिडियन देश में प्रवेश किया; और जब उसने अपनी सेना को पहोरन की सेना के साथ संयुक्त किया तब वे अति प्रबल हो गए, यहां तक कि वे उन विद्रोहियों के राजा पांचू की शक्ति से भी अधिक शक्तिमान हो उठे, जिन्होंने (६) स्वतन्त्र लोगों को ज़राहेमला देश से बाहर भगा कर देश पर अपना अधिकार कर लिया था।

७. और तब ऐसा हुआ कि मरोनी और पहोरन अपनी सेनाओं के साथ (७) ज़राहेमला देश में वहां तक गए जहां उनका सामना पांचू के आदमियों से हुआ जिनसे उनका युद्ध हुआ।

८. और सुनो, पांचू मारा गया और उसके आदमी बन्दी बना लिए गए और पहोरन को न्यायासन पर फिर से बैठाया गया।

९. और नियम के अनुसार पांचू के लोगों का और उन (८) राजा के लोगों का न्याय किया गया, जिनको कारागार में डाल (९) दिया गया था; उनको नियम के अनुसार प्राणदण्ड दिया गया; हां, पांचू के और राजा के उन लोगों को प्राणदण्ड दिया गया जो अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए शस्त्र ग्रहण न करके उसके विपरीत लड़ने के लिए तैयार थे।

१०. इस प्रकार उनके देश की सुरक्षा के लिए इस नियम का कड़ाई के साथ पालन करना आवश्यक हो गया था; और जिनको अपनी स्वतन्त्रता की अवज्ञा करते हुए पाया गया उसे शीघ्रता के साथ नियम के अनुसार प्राणदण्ड दिया जाता था।

११. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का तीसवां वर्ष समाप्त हुआ और मरोनी और पहोरन ने (१०) ज़राहेमला देश, और अपने लोगों में (११) स्वतन्त्रता के प्रति सच्चे न रहने वालों को समाप्त कर शान्ति की स्थापना की।

१२. और ऐसा हुआ कि नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के *इक्तीसवें वर्ष के आरम्भ में बिना विलम्ब किए मरोनी ने इलामन के पास सामान और देश के उस भाग की रक्षा करने के लिए छः सहस्त्र की सेना को भिजवाया।

१३. और उसने लेही और टेनकम की सेनाओं के लिए भी पर्याप्त भोजन-सामग्री और छः सहस्त्र आदमियों को भिजवाया। यह लमनायटियों के विरुद्ध देश को सुरक्षित करने के लिए किया गया।

१४. और ऐसा हुआ कि मरोनी और पहोरन (१२) ज़राहेमला देश में भारी संख्या में सैनिकों को छोड़कर एक बड़ी सेना को लेकर नफियाह की

(१) देखो १३, अल० २. (२) अल० ४६:१२, १३, ३६. (३) देखो १३, अल० २. (४) देखो १३, मू० २६. (५) देखो १३, अल० २. (६) अल० ५१:६-७. ६१:४. (७) ओम० १३. (८) पद्य ६, १०, ११. अल० ५१:५, ७, १७, २१. ६०:१६. ६१:८. (९) अल० ५१:१९. (१०) ओम० १३. (११) अल० ४६:१२, १३, ३६. (१२) ओम० १३.

*ईसा से लगभग ६१ वर्ष पूर्व

ओर बढ़े, क्योंकि उन्होंने लमनायटियों को उस नगर में पछाड़ने का निश्चय कर लिया था।

१५. जब वे उस नगर की ओर बढ़ रहे थे तब उनकी भेंट भारी संख्या में लमनायटियों से हुई जिनमें से उन्होंने बहुतों को मार डाला और उनके सामानों और युद्ध के हथियारों को छीन लिया।

१६. उनको पकड़ लेने के पश्चात् उन्होंने उनसे यह शर्त करवायी कि वे भविष्य में नफायटियों के विरुद्ध कभी भी युद्ध के हथियार नहीं उठाएंगे।

१७. जब उन्होंने यह शर्त की तब उन्हें (१४) आमोन के लोगों के साथ रहने के लिए भेज दिया गया और ये लोग जो मारे नहीं गए थे, उनकी संख्या चार सहस्त्र की थी।

१८. जब इनको भेज दिया तब उन्होंने नफियाह देश की ओर पुनः यात्रा जारी की। जब वे (१५) नफियाह नगर के निकट पहुंचे तब उन्होंने नफियाह के उस मैदान में पड़ाव डाल दिया जो कि नफियाह नगर के निकट ही था।

१९. इस समय मरोनी चाहता था कि लमनायटी आकर मैदान में उससे लड़ें; लेकिन उनके भारी साहस को जानने के कारण और उनकी बहुत बड़ी संख्या को देखकर लमनायटियों ने उनसे आकर लड़ने का साहस नहीं किया; इसलिए उस दिन वे उनसे युद्ध करने नहीं आए।

२०. और जब रात हुई तब यह देखने के लिए कि लमनायटी अपनी सेना के साथ नगर के किस भाग में डेरा डाले हुए हैं, मरोनी अंधेरे में दीवाल के ऊपर चढ़ गया।

२१. वे द्वार के पूरब की ओर थे और सभी सोए हुए थे। मरोनी लौट कर अपनी सेना में आया और दीवाल के ऊपर से दीवाल के भीतरी भाग तक शीघ्रतापूर्वक मजबूत (१६) रस्सी और सीढ़ियों को तैयार करवाने लगा।

२२. और तब ऐसा हुआ कि मरोनी ने अपने आदमियों को दीवाल के ऊपर चढ़ा कर अन्दर नगर के पश्चिमी भाग में, जहां लमनायटियों की सेना का पड़ाव नहीं था, की ले जाने के लिए आगे बढ़ाया।

२३. और ऐसा हुआ कि रात को मजबूत रस्सियों और सीढ़ियों के द्वारा सभी को नगर के अन्दर उतार दिया गया; इस प्रकार जब सुबह हुई तब सभी नगर की दीवाल के अन्दर थे।

२४. और जब लमनायटी जागे और मरोनी की सेना को दीवालों के अन्दर पाया तब वे भयभीत होकर द्वार मार्ग से भागे।

२५. और जब मरोनी ने उनको अपने सामने से भागते हुए देखा तब उसने अपनी सेना को उनके विरुद्ध आगे बढ़ाया और बहुतों को मार डाला और बहुतों को घेर कर उन्हें बन्दी बना लिया और बचे हुए (१७) मरोनी देश में भाग गए जो कि समुद्र तट का सीमा प्रदेश था।

२६. इस प्रकार मरोनी और पहोरन ने बिना एक भी आदमी को खोए ही (१८) नफियाह नगर को अपने अधीन कर लिया; और लमनायटियों के बहुत से आदमी मारे गए थे।

२७. इस समय ऐसा हुआ कि बहुत से लमनायटी बन्दी (१९) आमोन के साथ मिल कर एक स्वतन्त्र लोग बनने के इच्छुक थे।

२८. और जितने लोग ऐसी इच्छा रखते थे उनको उनकी इच्छानुसार स्वीकृति दे दी गई।

२९. इसलिए सभी लमनायटी बन्दी आमोन के लोगों के साथ सम्मिलित हो गए और खेत जोतने, सभी प्रकार के अनाज उपजाने और सभी प्रकार के पशु-पक्षी पालने में भारी परिश्रम करने लगे। इस तरह नफायटियों को भारी बोझ से छुटकारा मिला; यहां तक कि उनको सभी लमनायटी बन्दियों को देखभाल करने से छुटकारा मिल गया।

३०. जब मरोनी ने (२०) नफियाह नगर को ले लिया, और बहुतों को बन्दी बना लिया तो लमनायटियों की सेना बहुत क्षीण हो गई और बहुत से नफायटियों को जिनको बन्दी बना लिया गया था, पुनः प्राप्त कर लिया जिससे मरोनी की सेना अति प्रबल हो चुकी थी; इसलिए मरोनी नफियाह देश से लेही (२१) देश की ओर बढ़ा।

३१. जब लमनायटियों ने देखा कि मरोनी उनके

(१३) देखो १२, अल० ५०. (१४) अल० २७:२६. (१५) देखो १२, अल० ५०. (१६) पद्य २३. (१७) देखो ११, अल० ५०. (१८) देखो १२, अल० ५०. (१९) अल० २७:२६. (२०) देखो १२, अल० ५०. (२१) देखो १२, अल० ५०.

विरुद्ध आ रहा है, तब वे भयभीत हो मरोनी की सेना के सामने से भाग चले।

३२. और तब ऐसा हुआ कि मरोनी और उसकी सेना ने एक नगर से दूसरे नगर तक उनका पीछा तब तक किया जब तक कि उनका सामना लेही और टेनकम से न हो गया; और लमनायटी लेही और टेनकम से जान बचाने के लिए सागर तट के सीमा प्रदेश में तब तक भागते रहे जब तक कि (२२) मरोनी देश में न पहुंच गए।

३३. लमनायटियों की सभी सेनायें मरोनी देश में एकत्रित होकर एक हो चुकी थीं। यहीं पर लमनायटियों का राजा अमरोन भी उनके साथ था।

३४. और ऐसा हुआ कि मरोनी, लेही और टेनकम ने अपनी-अपनी सेनाओं के साथ मरोनी देश में इधर-उधर इस तरह से पड़ाव डाल दिया जिससे कि लमनायटी दक्षिण में वन की सीमा पर और पूरब वन की सीमा पर चारों ओर से घिर गए।

३५. इस प्रकार रात बिताने के लिए वे ठहर गए। क्योंकि सुनो, नफायटी और लमनायटी चलने के कारण थके हुए थे; और टेनकम को छोड़ कर अन्य किसी ने भी कोई चाल नहीं चली; क्योंकि वह अमरोन पर अति क्रोधित था। वह सोच रहा था कि उनके और लमनायटियों के बीच जो भारी, और लम्बा युद्ध चल रहा है जिससे इतनी लड़ाइयां रक्तपात और अकाल हुआ, उन सबका कारण अमरोन और उसका भाई अमलिकियाह ही है।

३६. क्रोध में भरा हुआ टेनकम लमनायटियों के पड़ाव में गया और वह नगर की दीवाल पर से नीचे उतर गया। वह एक रस्सी के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर तब तक घूमता रहा जब तक उसने राजा को पा न लिया; और उसने उसको (२३) बर्छी फेंक कर मारा जो उसके शरीर में हृदय के पास चुभ गई। लेकिन सुनो, मरने से पहले उसने अपने सेवक को जगा दिया जिससे उसके सेवक टेनकम को खदेड़ कर मार डालने में सफल हुए।

३७. जब लेही और मरोनी को टेनकम के मरने का पता लगा तब उन्हें बहुत अधिक दुख हुआ, क्योंकि वह वीरता के साथ अपने देश के लिए लड़ा था, हां, (२४) वह स्वतन्त्रता का सच्चा मित्र था और उसने बड़े-बड़े कष्ट झेले थे। लेकिन सुनो, उसका अन्त हो गया और वह इस संसार के रास्ते से होकर चला गया।

३८. सुबह मरोनी आगे बढ़ा और लमनायटियों से उसका सामना हुआ और उसने बहुत से लमनायटियों को मार डाला और उनको देश से बाहर भगा दिया; और वे भागे और नफायटियों के विरुद्ध प्रत्याक्रमण नहीं किया।

३९. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का *इक्तीसवां वर्ष समाप्त हुआ; और इस तरह कई वर्षों तक उन्होंने युद्ध, रक्तपात, अकाल और कष्टों का सामना किया।

४०. और नफी के लोगों में हत्यायें, विवाद, मतभेद और हर प्रकार के पापकर्म हुए; फिर भी धार्मिकों के कारण, हां धार्मिकों की (२५) प्रार्थनाओं के कारण उनको छोड़ दिया गया।

४१. लेकिन दीर्घ काल तक लमनायटियों और नफायटियों में युद्ध होने के कारण बहुत से लोग कठोर बन चुके थे; और बहुत से लोग मानवता की चरम सीमा पर पहुंच कर परमेश्वर के सामने विनीत बन चुके थे।

४२. और ऐसा हुआ कि देश के जो भाग लमनायटियों के आक्रमण के लिए खुले हुए थे वहां मरोनी (२६) तब तक किलेबन्दी को दृढ़ करता रहा जब तक कि वे सुरक्षित न हो गए और तब (२७) ज़राहेमला नगर वापस लौट आया; और इलामन भी अपनी पैतृक भूमि को लौट गया और नफी के लोगों में एक बार फिर शान्ति स्थापित हो गई।

४३. और मरोनी ने सेनाओं को अपने पुत्र के अधिकार में दे दिया जिसका नाम मरोनियाह था; और स्वयं अवकाश लेकर अपने घर चला गया जिससे कि वह अपने जीवन के शेष दिनों को शान्ति के साथ व्यतीत कर सके।

(२२) देखो ११, अल० ५०. (२३) अल० ५१:३४. (२४) अल० ४६:१२, १३, ३६. (२५) देखो ५, २ नफी ३२.
(२६) देखो ३, अल० ४८. (२७) ओम १३.
*ईसा से ६० वर्ष पूर्व

४४. और पहोरन अपने न्यायासन पर फिर फिर से विराजमान हुआ; और इलामन लोगों में परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने का काम फिर से लिया और इतने अधिक युद्धों और विवादों के कारण यह आवश्यक हो गया कि गिरजा में एक नियम की व्यवस्था की जाए।

४५. इसलिए इलामन और उसके भाई शक्ति के साथ ईश्वर की वाणी का प्रचार करने के लिए आगे बढ़े और बहुतों से उनके पापों को मनवाया जिसके कारण उन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप किया और अपने प्रभु परमेश्वर में (२८) बपतिस्मा लिया।

४६. और ऐसा हुआ कि उन्होंने सारे देश भर में गिरजे की स्थापना फिर से की।

४७. और नियम की व्यवस्थायें बनाई गईं— और उनके (२९) निर्णायक और प्रधान निर्णायकों को चुना गया।

४८. और देश में नफी के लोग फिर से प्रगति करने लगे और उनकी संख्या में वृद्धि होने लगी और वे बहुत ही शक्तिशाली होने लगे। साथ ही उन्होंने धनवान होना भी आरम्भ कर दिया।

४९. लेकिन इतनी धनसम्पदा, शक्ति या समृद्धि होने पर भी वे अहंकार से नहीं फूल उठे, और न ही वे अपने प्रभु परमेश्वर को याद करने में आलसी ही हुए, परन्तु उसके सामने उन्होंने अपने आपको अति बिनीत बना लिया।

५०. हां, उन्होंने यह स्मरण रखा कि प्रभु ने उनके लिए कितने महान कार्य किए हैं। उन्हें मरने से बचाया, बन्धनों से मुक्त किया, कारागार, से छुड़ाया, हर प्रकार के कष्टों से मुक्त किया और उनकी उनके शत्रुओं के हाथों से रक्षा की।

५१. और वे लगातार अपने प्रभु परमेश्वर से (३०) प्रार्थना करते रहे और प्रभु ने अपने वचनानुसार उन्हें आशीर्वाद दिया और वे देश में प्रगति करते रहे और शक्तिशाली होते गए।

५२. ये सब कार्य किए गए और इलामन की मृत्यु नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के *पैंतीसवें वर्ष में हो गई।

अध्याय ६३

शिबलन का इलामन का स्थान लेना—मरोनी की मृत्यु—नावों का निर्माणकर्ता हागूथ—नफायटियों का उत्तर के देश की जहाजी यात्रायें करना—इलामन के पुत्र इलामन का लेखाओं को रखना—मरोनियाह का लमनायटियों को पराजित करना—अलमा के लेख-विवरण का अन्त।

१. नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के †छत्तीसवें वर्ष के आरम्भ में (१) शिबलन ने उन (२) पवित्र वस्तुओं को अपने अधिकार में ले लिया, जिनको अलमा ने इलामन को दिया था।

२. वह एक अच्छा व्यक्ति था और परमेश्वर के सामने सीधा चलने वाला था। वह और उसका भाई लगातार उपकार करते रहे और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते रहे।

३. और ऐसा हुआ कि मरोनी की भी मृत्यु हो गई। और इस तरह निर्णायकों के शासन का छत्तीसवां वर्ष भी समाप्त हो गया।

४. निर्णायकों के शासन के ‡सैंतीसवें वर्ष में बहुत से लोग जिनकी संख्या पांच सहस्त्र और चार सौ पुरुषों की थी, उनकी पत्नियां और बच्चे (४) जराहेमला देश से निकल कर उस देश में चले गए जो (५) उत्तर की ओर था।

५. और ऐसा हुआ कि हागूथ ने जो कि एक अति जिज्ञासु व्यक्ति था, एक बहुत (६) बड़े जहाज को (७) सम्पन्न देश और (८) नीरव देश की सीमाओं पर बनाया और उसे पश्चिम के समुद्र के (९) पतले जलडमरू में उतारा जो (१०) उत्तर देश का मार्ग था।

६. और सुनो, बहुत से नफायटियों ने स्त्रियों और बच्चों को लेकर बहुत से सामानों के साथ उस

(२८) देखो २१, २ नफी ९. (२९) मू० २९:३९. (३०) देखो ५, २ नफी ३२. अध्याय ६३. (१) अल० ३८. (२) अल० ३७:३-१२. (४) ओम० १३. (५) अल० ४६:१७. (६) पद्य ६-१०, इला० ३:१०-१४. (७) देखो ३७, अल० २२. (८) देखो ३८, अल० २२. (९) देखो ४८, अल० २२. (१०) देखो ५.

*ईसा से ५७ वर्ष पूर्व; †ईसा से ५६ वर्ष पूर्व; ‡ईसा से ५५ वर्ष पूर्व

जहाज में प्रवेश कर उत्तर की ओर यात्रा की। और इस तरह सैंतीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

७. और अड़तीसवें वर्ष में इस व्यक्ति ने (११) दूसरे जहाज बनाए। प्रथम जहाज भी वापस लौट कर आया और फिर बहुत से लोग उसमें सवार हुए और बहुत से सामानों को लेकर उत्तर देश को चले गए।

८. और ऐसा हुआ कि उनके विषय में फिर कुछ सुना नहीं गया। हम सोचते हैं कि वे सागर की गहराई में डूब गए। इसके पश्चात् एक नाव और और गई और हम उसके विषय में भी नहीं जानते कि वह कहां गई।

९. और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष बहुत से लोग उत्तर देश को गए। इस प्रकार अड़तीसवां वर्ष भी समाप्त हुआ।

१०. निर्णायकों के शासन के *उन्तीसवें वर्ष में (१२) शिबलन का भी देहान्त हो गया और (१३) कोरियन्दन (१४) जहाज पर उत्तर देश में गए हुए लोगों के लिए भोजनादि सामग्रियों को लेकर चला गया।

११. इसलिए शिबलन के लिए यह आवश्यक हो गया कि अपनी मृत्यु से (१५) पूर्व पवित्र वस्तुओं को इलामन के पुत्र जिसका नाम पिता के नाम पर इलामन था, के अधिकार में दे दे।

१२. और अब सुनो, जो सब अंकित लेख इलामन के पास थे उन्हें (१६) लिख कर देश भर के मानव वंश में भेजा गया, केवल जिन भागों को अलमा ने न (१७) भेजने की आज्ञा दी थी, उन्हें नहीं भेजा गया।

१३. फिर भी इन वस्तुओं को पवित्र रखना था और उन्हें (१८) एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को देते रहना है; इसलिए इस वर्ष उन्हें इलामन को (१९) शिबलन की मृत्यु से पहले (२०) ही दे दिया गया।

१४. इस वर्ष ऐसा भी हुआ कि कुछ मतभेदी लमनायटियों से जा मिले और उन्हें नफायटियों के विरुद्ध भड़का कर क्रोधित कर दिया।

१५. इसी वर्ष वे अपनी असंख्य सेना के साथ मरोनियाह के लोगों के विरुद्ध अर्थात् (२१) मरोनियाह की सेना के विरुद्ध लड़ने आए जिसमें उनकी हार हुई वे वापस अपनी भूमि पर भारी हानि के साथ भगा दिए गए।

१६. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का उन्चालीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

१७. इस प्रकार अलमा, उसके पुत्र इलामन और शिबलन जो कि उसका पुत्र था, के लेख-विवरण का अन्त हुआ है।

इलामन की पुस्तक

नफायटियों का विवरण। उनके युद्ध विवाद और मतभेद। इलामन जो कि इलामन का पुत्र था, और उसके पुत्र के अभिलेखों के अनुसार मसीह के आने से पूर्व और मसीह के आने तक के अनेकों पवित्र भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियां। बहुत से लमनायटियों का मत परिवर्तन करना। उनके मत परिवर्तन का विवरण। लमनायटियों की धार्मिकता, नफायटियों की दुष्टता और उनके घृणित कार्यों का इलामन और उसके पुत्र के अभिलेख के अनुसार मसीह के आने तक का विवरण जिसे इलामन की पुस्तकादि कहा गया।

अध्याय १

न्याय आसन के लिए पहोरन के पुत्रों का झगड़ना—किस्कूमन द्वारा द्वितीय पहोरन को मार डालना—कोरियण्टूमर नफायटी मतभेदी—जराहेमला का छीना जाना और फिर से उसका लिया जाना।

१. और अब सुनो, नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के चालीसवें वर्ष नफायटी

(११) देखो ६. (१२) देखो १. (१३) देखो ५. (१४) देखो ६. (१५) अल० ३७:३-१२. (१६) अल० १७:२. (१७) अल० ३७:२७-३२. (१८) अल० ३७:४. (१९) पद्य ११. (२०) पद्य १०. (२१) अल० ६६:४३.

ईसा से ५७ वर्ष पूर्व *ईसा से ५७ वर्ष पूर्व। ईसा से ५५ वर्ष पूर्व। *ईसा से ५३ वर्ष पूर्व

लोगों में भारी विवाद उठ खड़ा हुआ।

२. क्योंकि (१) पहोरन की मृत्यु हो गई और वह भी संसार के सभी लोगों के रास्ते से गुजर गया: इसलिए न्यायासन को लेकर पहोरन के पुत्रों में गम्भीर विवाद होने लगा कि कौन उसे ग्रहण करे।

३. जिन्होंने न्यायासन के लिए विवाद कर जनता में कलह उत्पन्न किया उनके नाम हैं पहोरन, पाञ्ची और पाकूमनी।

४. पहोरन के केवल ये ही पुत्र नहीं है, क्योंकि उसके अनेक पुत्र हैं लेकिन ये वे हैं जो न्यायासन के लिए झगड़े; इसलिए इन्होंने लोगों को तीन भागों में विभाजित कर दिया।

५. फिर भी ऐसा हुआ कि लोगों के बहुमत ने पहोरन को प्रधान निर्णायक और नफी के लोगों का शासक बनाया।

६. जब पाकूमनी ने देखा कि वह न्यायासन को प्राप्त नहीं कर सकता तब वह जनता के मनोनुकूल हो गया।

७. लेकिन सुनो, पाञ्ची और जो लोग उसे अपना शासक बनाने के इच्छुक थे वे अति क्रोधित हो उठे; इसलिए वह उनको बहका कर अपने भाइयों के विरुद्ध विद्रोह कराने ही वाला था।

८. जब वह विद्रोह कराने ही वाला था तब उसे पकड़ लिया गया और (२) जनमतानुसार उसका न्याय किया गया और उसे मृत्युदण्ड दिया गया; क्योंकि उसने विद्रोह खड़ा कर लोगों की स्वतन्त्रता को नष्ट करने का प्रयत्न किया था।

९. जो लोग उसे अपना शासक बनाना चाहते थे, उन्होंने जब देखा कि उसे मृत्युदण्ड मिला तब वे क्रोधित हो उठे, और किस्कूमन नामक व्यक्ति को पहोरन को मारने के लिए भेजा और उसने पहोरन की न्यायासन पर बैठे हुए हत्या कर डाली।

१०. और उसका पीछा पहोरन के सेवकों ने किया; लेकिन वह इतने जोर से भागा कि उसे कोई पकड़ नहीं सका।

११. वह भाग कर उन लोगों के पास पहुंचा जिन्होंने उसे भेजा था और वे अपने रचयिता की शपथ ले शर्तबद्ध हुए कि वे किसी को यह नहीं बताएंगे कि पहोरन को किस्कूमन ने मारा था।

१२. इसलिए नफी के लोगों में यह भेद खुलने नहीं पाया कि किस्कूमन ने ही पहोरन को मारा था क्योंकि उस समय किस्कूमन ने भेष बदल रखा था लेकिन जितने लोगों को उनके विरुद्ध पाया गया उन्हें मृत्युदण्ड दिया गया।

१३. और तब लोगों की (३) इच्छानुसार लोगों का प्रधान निर्णायक और शासक पाकूमनी को उसके भाई पहोरन के स्थान पर शासन करने के लिए नियुक्त किया गया और यह उसके अधिकार के अनुसार भी था। यह सब निर्णायकों के शासन के चालीसवें वर्ष में हुआ जो समाप्त हो गया।

१४. निर्णायकों के शासन के *एकतालीसवें वर्ष में लमनायटियों ने असंख्य आदमियों की सेना एक (४) साथ एकत्रित करके उन्हें तलवारों, छूरियों, तीर, कमानों, सिर-ढाल, बक्ष-ढाल और अनेक प्रकार के ढालों से सशस्त्र किया।

१५. वे पुन: नफायटियों से लड़ने के लिए आए। उनका नेता एक व्यक्ति था जिसका नाम था कोरियण्टूमर जो कि जराहेमला के वंश का था और मतभेद होने के कारण वह नफायटियों से अलग होकर शत्रुओं से जा मिला था। वह शरीर से दीर्घ और बहुत ही बलवान व्यक्ति था।

१६. इसलिए लमनायटियों का राजा, जिसका नाम तूबलोथ था और जो अमरोन का पुत्र था, उसने कोरियण्टूमर को बलवान जान कर सोचा कि वह नफायटियों के विरुद्ध अपनी शक्ति और बुद्धि के बल पर सामना कर सकता है और उसे भेज कर वह नफायटियों पर अधिकार कर सकता है।

१७. इसलिए उसने लोगों को भड़का कर क्रोधित कर दिया; उसने अपनी सेनाओं को एकत्रित किया और कोरियण्टूमर को उनका नेता नियुक्त किया और उन्हें जराहेमला (५) देश में नफायटियों से लड़ने के लिए भेजा।

१८. और ऐसा हुआ कि अधिक लड़ाई झगड़ा और शासन में कठिनाइयों के कारण पर्याप्त संख्या में जराहेमला देश में प्रहरियों को नियुक्त नहीं रखा

(१) अलमा ५०:४०. (२) देखो ३, मू० २६, अल० १:१०-१५. (३) देखो ३, मू० २६, इला० २:२. (४) देखो ४२, अल० ४३. (५) ओम० १३.

*ईसा से ५२ वर्ष पूर्व

गया था; क्योंकि उन्होंने यह सोचा भी नहीं था कि लमनायटी उनके देश के केन्द्र में घुस कर महान नगर जराहेमला पर आक्रमण करने का साहस करेंगे।

१९. लेकिन ऐसा हुआ कि कोरियण्टूमर अपने असंख्य सैनिकों के आगे चलता हुआ नगरवासियों तक पहुंच गया; और वह इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ा कि नफायटियों को अपनी सेनाओं को एकत्रित करने का अवसर ही नहीं मिलने पाया।

२०. इसलिए कोरियण्टूमर ने नगर के प्रवेश द्वार के प्रहरियों को काट गिराया और अपनी सारी सेना के साथ नगर में प्रवेश किया, और जिसने भी उसका विरोध किया उन्हें उसने मार डाला। उसने इतने लोगों को मारा कि सारे नगर पर उसका अधिकार हो गया।

२१. और ऐसा हुआ कि पाकूमनी, जो कि प्रधान निर्णायक था, कोरियण्टूमर के सामने से भागता हुआ नगर की दीवालों तक गया और कोरियण्टूमर ने दीवाल पर उसे इतना मारा कि वह मर गया। इस प्रकार पाकूमनी के दिन समाप्त हुए।

२२. जब कोरियण्टूमर ने देखा कि जराहेमला नगर उसके अधिकार में आ गया है और उनके सामने से नफायटी भाग खड़े हुए, मारे गए, बन्दी बनाए और कारागार में डाले गए और सारे देश भर का सबसे शक्तिशाली स्थान अपने अधिकार में आ गया है, तब उसके हृदय में साहस हुआ और वह सारे देश के विरुद्ध चढ़ाई करने वाला था।

२३. वह जराहेमला देश में नहीं रुका परन्तु एक बहुत बड़ी सेना के साथ सम्पन्न (६) नगर की ओर बढ़ा; क्योंकि उसने निश्चय कर लिया था कि वह तलवार के बल पर अपना रास्ता बनाएगा और देश के उत्तर भाग को अपने अधीन कर लेगा।

२४. उसने सोचा कि नफायटियों की शक्ति देश के मध्य में केन्द्रित थी, इसलिए उन्हें छोटी-छोटी संख्याओं में एकत्रित होने के अलावे एक साथ भारी संख्या में एकत्रित होने का अवसर न देकर वह आगे बढ़ा और वे उन पर टूट पड़ते और उन्हें मारमार कर धरती पर गिरा देते।

२५. लेकिन सुनो, भारी संख्या में नफायटियों के मरने की परवाह किए बगैर कोरियण्टूमर के देश के मध्य भाग से होकर आगे बढ़ने से मरोनियाह को भारी सफलता प्राप्त हुई।

२६. क्योंकि मरोनियाह ने सोचा था कि लमनायटी देश के मध्य भाग में आने का साहस नहीं करेंगे, परन्तु देश की सीमा के शहरों पर आक्रमण करेंगे जैसे अभी तक करते आए थे; इसलिए मरोनियाह ने अपनी प्रबल सेनाओं को देश के ऐसे ही भागों में रखा था।

२७. लेकिन उसके सोचने के अनुसार लमनायटी डरे नहीं परन्तु निर्भय होकर देश के मध्य भाग में आकर उस नगर को ले लिया जो देश की राजधानी थी और देश के मुख्य भागों से होकर आगे बढ़ रहे थे और अति अधिक संख्या में स्त्री-पुरुषों और बच्चों को मार रहे थे। और शहरों और दृढ़ केन्द्रों पर अपना अधिकार कर लिया था।

२८. जब मरोनियाह को यह पता लगा तब उसने अविलम्ब एक सेना के साथ लेही को दूसरे रास्ते से जाकर सम्पन्न देश (७) पहुंचने से पूर्व ही उन्हें फेर देने के लिए भेजा।

२९. और उसने ऐसा ही किया; उनके सम्पन्न देश पहुंचने से पूर्व ही उसने उनका रास्ता घेर लिया और ऐसा युद्ध किया कि वे वापस जराहेमला देश की ओर पीछे हटने लगे।

३०. और ऐसा हुआ कि मरोनियाह ने उन्हें पीछे हटने से रोक लिया और ऐसा भीषण युद्ध किया कि धरती रक्तरंजित हो गई और बहुत से लोग मारे गए जिनमें कोरियण्टूमर भी पाया गया।

३१. और लमनायटी किसी ओर भी पीछे हट नहीं पाए, न वे उत्तर की ओर, न दक्षिण की ओर, न पूरब की ओर और न ही पश्चिम की ओर हट सके क्योंकि वे चारों ओर से नफायटियों से घिर गए थे।

३२. इस तरह कोरियण्टूमर ने लमनायटियों को नफायटियों के मध्य झोंक दिया और वे नफायटियों के वश में हो गए और स्वयं मारा गया और लमनायटियों ने अपने आप को नफायटियों के हाथों में दे दिया।

ईसा से ५० वर्ष पूर्व

(६) देखो ३७, अल० २२. (७) देखो ३७, अलमा २२.

३३. और मरोनियाह ने फिर से (८) जरा-हेमला नगर पर अधिकार कर लिया और जो लमनायटी बन्दी बना लिए गए थे उन्हें शान्ति के साथ देश से बाहर जाने दिया।

३४. इस प्रकार निर्णायकों के शासन का इक्तालीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

अध्याय २

द्वितीय इलामन का प्रधान निर्णायक बनाया जाना—किस्कूमन का मारा जाना—गुप्त सन्धि—गेडियन्दन डाकू।

१. निर्णायकों के शासन के बयालीसवें वर्ष में ऐसा हुआ कि जब मरोनियाह ने नफायटियों और लमनायटियों में फिर से शान्ति स्थापित कर दी तब निर्णायक के आसन पर आसीन होने वाला कोई न था, इसलिए कौन उस आसन पर बैठे, इस बात को लेकर लोगों में विवाद होने लगा।

२. और ऐसा हुआ कि (१) लोगों के मत के अनुसार इलामन का पुत्र इलामन न्याय आसन पर बैठने के लिए चुना गया।

३. लेकिन सुनो, किस्कूमन जिसने (२) पहोरन की हत्या की थी, इलामन को भी मार डालने की ताक में था; और उसको वे लोग सहयोग दे रहे थे जो उसके गिरोह के थे—और जिन्होंने यह शर्त बना रखी थी कि कोई भी उसकी दुष्टता को जान न पाए।

४. उन में गेडियन्दन नाम का एक व्यक्ति था जो बातें करने में अति चतुर और हत्या करने और डाका डालने के (३) गुप्त कार्यों में बहुत ही चालाक था; इसलिए किस्कूमन के गिरोह का वह नेता बन गया।

५. इसलिए उसने गिरोह के लोगों और किस्कूमन को बहकाया कि अगर वे उसको न्याय-आसन पर बैठा देंगे तब वह अपने गिरोह के लोगों को शक्ति और अधिकार देगा; इसलिए किस्कूमन इलामन को (४) नष्ट करने का अवसर ढूंढ रहा था।

६. और ऐसा हुआ कि जब वह इलामन को मारने के लिए न्यायासन के निकट जा रहा था, तब इलामन का एक सेवक जो रात के समय बाहर गया हुआ था और रूप बदल कर जिसने इलामन को (५) नष्ट करने की योजना को मालूम कर लिया था, उससे मिला।

७. और जब उसकी भेंट किस्कूमन से हुई तब उसने संकेत किया; इसलिए किस्कूमन ने उस पर अपनी इच्छा प्रकट की और चाहा कि वह उसे न्याय-आसन तक ले चले जिससे वह इलामन की हत्या कर सके।

८. और जब इलामन के सेवक ने किस्कूमन के हृदय की सभी बातें जान लीं कि उसका और उसके गिरोह के लोगों का उद्देश्य है हत्या करना, लूटना और शक्ति प्राप्त करना (यही उनकी (६) गुप्त योजना और सन्धि थी) तब इलामन का सेवक किस्कूमन से बोला: चलो हम न्याय-आसन चलें।

९. यह सुन कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई क्योंकि उसने सोचा कि वह अपनी इच्छा पूरी कर सकेगा लेकिन सुनो, जब वे न्यायासन जा रहे थे, तब इलामन के सेवक ने उसके हृदय में छुरी भोंक दी और वह बिना कुछ बोले ही मर कर गिर पड़ा—और सेवक ने दौड़ कर जो कुछ उसने देखा, जाना और किया था, वह सब इलामन से कह सुनाया।

१०. और तब इस गिरोह (७) के डाकुओं और गुप्त हत्यारों को पकड़ने के लिए इलामन ने लोगों को भेजा जिससे उन्हें नियम के अनुसार मृत्युदण्ड दिया जा सके।

११. लेकिन सुनो, जब गेडियन्दन को पता लगा कि किस्कूमन लौट कर नहीं आया तब वह यह सोच कर भयभीत हुआ कि वह सम्भवत: मारा गया है; इसलिए उसने अपने गिरोह के लोगों को अपना अनुसरण करने को कहा। और वे एक गुप्त राह से देश से बाहर वन में भागे और इस प्रकार जब इलामन ने उनको पकडने के लिए लोगों को भेजा तब वे कहीं भी न मिले।

१२. इस गेडियन्दन के विषय में आगे और कहा जाएगा और इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का बयालीसवां वर्ष समाप्त हुआ।

(८) ओम० १३. अध्याय २. (१) देखो ३, मू० २६. (२) इला० १:९. (३) देखो ६, २ नफी १०. (४) पद्य ३, ६, ९. (५) देखो ४. (६) देखो ६, २ नफी १०. (७) देखो ६, २ नफी १०.

१३. और सुनो, इस पुस्तक के अन्त में हम देखेंगे कि यही गेडियन्दन नफायटियों के पतन का लगभग नफी के लोगों का पूरी तरह नष्ट होने का कारण बना।

१४. देखो, मेरा अर्थ इलामन की पुस्तक के अन्त से नहीं है, लेकिन मेरा तात्पर्य (८) नफी की उस पुस्तक की समाप्ति से है जिसमें से मैंने सभी विवरणों को प्राप्त करके लिखा है।

अध्याय ३

उत्तर की ओर और देशान्तरगमन—भारी जलाशयों और नदियों वाला देश—सीमेन्ट के मकान—अभिलेखों का रखा जाना—इलामन का पुत्र नफी के द्वारा पिता का स्थान गृहण करना।

१. निर्णायकों के शासन के *तैतालीसवें वर्ष, गिरजा के अन्दर थोड़े अहंकार को छोड़ कर नफी के लोगों में कोई विवाद नहीं हुआ। इस अहंकार के कारण मतभेद उत्पन्न हुआ जिसको *तैतालीसवें वर्ष के समाप्त होते-होते समाप्त कर दिया गया।

२. चौरालीसवें वर्ष में भी लोगों में लड़ाई-झगड़ा न हुआ और न ही पैंतालीसवें वर्ष में अधिक विवाद हुआ।

३. और ऐसा हुआ कि †छियालीसवें वर्ष में बहुत अधिक लड़ाई झगड़े और मतभेद हुए, जिसमें बहुत अधिक लोग (१) जराहेमला देश से निकल कर (२) उत्तर देश में बसने के लिए चले गए।

४. वे बहुत दूर चले गए, इतनी दूर कि वे एक ऐसे देश में पहुंच गए जहां (३) बड़े-बड़े जलाशय और बहुत-सी नदियां थीं।

५. और बहुत पहले बसने वालों के कारण जहां जहां सूनसान और बिना वृक्ष के स्थान थे, वहां-वहां देश भर में वे फैल गए।

६. इस समय कुछ ऐसे स्थान थे जहां पर वृक्ष नहीं थे और ऐसा स्थान नहीं था जो निर्जन हो, वह (५) *निर्जन अथवा सूनसान इसलिए कहलाया क्योंकि वहां के जो पूर्व निवासी थे वे नष्ट हो गए थे।

७. देश में लकड़ियों के वृक्ष बहुत कम थे परन्तु जो लोग वहां गए वे सीमेन्ट के प्रयोग में प्रवीण हो गए थे, इसलिए जिन घरों में वे रहते थे उन्हें (६) सीमेन्ट से बनाया गया था।

८. और ऐसा हुआ कि उन लोगों की संख्या में वृद्धि हुई और वे (७) दक्षिण से (८) उत्तर की ओर बढ़े और वे इतना अधिक फैले कि दक्षिण के समुद्र से (१०) उत्तर के समुद्र तक, (११) पश्चिम के समुद्र से (१२) पूरब के समुद्र तक सारे देश भर में फैल गए।

९. और जो लोग (१३) उत्तर देश में निवास करते थे, वे तम्बुओं और (१४) सीमेन्ट के बने घरों में निवास करते थे और जो भी वृक्ष उग सकते थे उन्हें वे उगाते थे जिससे कि भविष्य में उनको घरों, नगरों (१५) मन्दिरों (१६) प्रार्थना भवनों (१७) शरण-स्थानों और हर एक प्रकार के मकानों को बनाने के लिए लकड़ियां प्राप्त हो सकें।

१०. और जब कि उत्तर के देश में लकड़ियों की (१८) कमी थी, तब वे लकड़ियों को (१९) नाव द्वारा मंगाया करते थे।

११. इस प्रकार (२०) उत्तर देश में लोग लकड़ियों और (२१) सीमेन्ट के अनेक नगरों को बनाने में समर्थ हुए।

१२. बहुत से (२२) आमोन के लोग, जो जन्म से लमनायटी थे, इस देश में चले गए।

१३. इन लोगों के विषय में अनेकों विशेष महत्व के और (२३) विस्तृत अभिलेख इनके कई लोगों द्वारा रखे जा रहे हैं।

१४. लेकिन सुनो, इन लोगों के, अर्थात् लम-नायटियों और नफायटियों के युद्ध, लड़ाई-झगड़ों, मतभेदों, विश्वासघातों, भविष्यवाणियों, उनकी

(८) देखो ६, १ नफी १. (१) ओम० १३. (२) अलमा ४३, १७, ६३:४. (३) देखो ९, मू० ८. (४) देखो १०, मू० ८. (५) देखो ३८, अल० २२. (६) पद्य ९-११. (७) देखो १४, अल० ४६. (८) देखो १६, अल० ४६. (१०) १ नफी २१:२१. (११) अल० २२:२७. ३२, ३३ इला० ११:२०. (१२) देखो १२. (१३) देखो ८. (१४) देखो ६. (१५) देखो ८, २ नफी ५. (१६) देखो २१, अल० १६. (१७) देखो २०, अल० १५. (१८) पद्य ५, ६. (१९) देखो ६, अल० ६३. (२०) देखो ८. (२१) देखो ६. (२२) अल० २७:२६. (२३) पद्य १५.

*ईसा से ४६ वर्ष पूर्व

(२४) नौका यात्रादि, और नाव निर्माणों, (२५) मन्दिरों के निर्माणों, २६) प्रार्थना भवनों, (२७) शरण के स्थनों, धार्मिकता, (२८) पापाचरण, हत्यायें, लूट, डाका जनी और हर प्रकार के घृणित कार्यों और विषयवासनाओं का एक सौवां भाग भी इसमें लिखा नहीं जा सकता।

१५. लेकिन सुनो, (२६) हर एक प्रकार की पुस्तकें और अभिलेख हैं जिनको विशेषकर नफायटी रखते हैं।

१६. और नफायटियों द्वारा (३०) उनकी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को ये तब तक दी जाती रहीं जब तक कि ये लोग पापों में पतित न हो गए और इनकी हत्यायें की गईं, लूटे गए, शिकार बनाए गए, भगाए गए, मारे गए, धरती पर तितर-बितर किए गए और लमनायटियों में तब तक मिलते गए (३१) जब तक कि वे नाममात्र के लिए भी नफायटी न रहकर दुष्ट, हिंसक भयंकर प्रकृति के बन कर लमनायटी न बन गए।

१७. और अब मैं फिर से अपने विवरण की ओर वापस लौटता हूं; मैंने जो कुछ कहा वह सब बहुत ही लड़ाई-झगड़ों, युद्धों और नफी के लोगों में मतभेदों के हो जाने के पश्चात् कहा है।

१८. निर्णायकों के शासन का *छियालिसवां वर्ष समाप्त हुआ।

१९. और ऐसा हुआ कि अभी देश में भारी दंगा फसाद हो रहा है, हां, यहां तक कि सैतालिसवें और अड़तालिसवें वर्षों में भी लड़ाई-झगड़े होते रहे।

२०. फिर भी (३२) इलामन न्यायासन से न्यायापूर्वक और निष्पक्ष भाव से अपना काम करता रहा और परमेश्वर की श्रेष्ठता, न्याय और उसकी आज्ञाओं का पालन करता रहा और लगातार उसने वही काम किया जो परमेश्वर की दृष्टि में उचित ठहरता था; और उसने अपने पिता की तरह ही व्यवहार कर के देश में प्रगति की।

२१. उसके दो पुत्र हुए। उसने बड़े पुत्र को नफी छोटे को लेही नाम दिया। और वे परमेश्वर के लिए बड़े होने लगे।

२२. और नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन के अड़तालिसवें वर्ष के अन्त तक नफायटी युद्ध और विवाद कुछ कम हुए।

२३. और निर्णायकों के शासन के †उन्चासवें वर्ष में देश में शान्ति स्थापित रही, केवल गेडियन्दन (३३) डाकू द्वारा जो गुप्त गिरोह देश के अधिक आबादी वाले स्थानों में स्थापित किए गए थे वे उस समय शासन के अधिकारियों को मालूम नहीं था; वे गिरोह देश से नष्ट नहीं हुए थे।

२४. और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष गिरजा में भारी प्रगति हुई और सहस्त्रों लोगों ने गिरजा के सदस्य बन कर (३४) पश्चात्ताप में बपतिस्मा लिया।

२५. और गिरजे की इतनी उन्नति हुई और लोगों के ऊपर आशीर्वादों की इतनी वर्षा हुई कि स्वयं (३५) प्रधान पुरोहित गण और शिक्षक भी चकित हो उठे।

२६. और ऐसा हुआ कि प्रभु के कामों में इतनी प्रगति हुई कि सहस्त्रों सहस्त्र लोग (३६) बपतिस्मा लेकर ईश्वर के गिरजे में मिल गए।

२७. इस प्रकार हम देख सकते हैं कि प्रभु उन सभी लोगों पर कृपा करता है जो अपने सच्चे हृदय से उसके पवित्र नाम को पुकारते हैं।

२८. हां, इस तरह हम देख सकते हैं कि स्वर्ग का द्वार सभी लोगों के लिए खुला है, यहां तक कि उन लोगों के लिए भी जो उस यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करेंगे जो कि परमेश्वर का पुत्र है।

२९. हां, हम देखते हैं कि जो कोई भी परमेश्वर की उस वाणी का सहारा लेगा, जो कि शीघ्रगामी और शक्तिपूर्ण है और जो शैतान की सभी चालाकियों, जालों, और कपटताओं को चूर-चूर

(२४) नफी २६:६-११. (२५) देखो ६, अल० ६३. (२६) देखो ८, २ नफी ५. (२७) देखो २१, अल० १६. (२८) देखो २०. अल० १५. (२९) पद्य १३. (३०) १ नफी ५. १६-१९, अल० ३७:४. (३१) अल० ४५:१२-१४. (३२) इला० २:२. (३३) देखो ६, २ नफी १०. (३४) देखो ३१, २ नफी ६. (३५) देखो ७, मू० २६. (३६) देखो २१, २ नफी ६.

*ईसा से ४५ वर्ष पूर्व †ईसा से ४३ वर्ष पूर्व

करके मसीह के लोगों को (३७) सीधे-सकरे रास्ते से चला कर दु:खों की उस अनन्त (३८) घाटी के पार ले जाता है जिसे पापियों के लिए तैयार किया गया है।

३०. और उनकी आत्माओं को, हां, उनकी (३९) अमर आत्माओं को परमेश्वर के राज्य में, परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर, इब्राहीम, इसाहाक, याकूब और हमारे सभी पवित्र पूर्वजों के साथ उन्हें और कभी भी भटकने के लिए न छोड़ कर, बैठाया जाएगा।

३१. और इस वर्ष (४०) ज़राहेमला देश में, आस-पास के देशों, यहां तक कि नफी के अधिकार के सभी देशों में लगातार आनन्द रहा।

३२. उन्चासवें वर्ष के शेष भाग में भी शान्ति और बहुत ही आनन्द बना रहा; और निर्णायकों के शासन के पचासवें वर्ष में भी शान्ति बनी रही और लोग आनन्दपूर्वक रहे।

३३. निर्णायकों के शासन के *इक्यावनवें वर्ष में, गिरजा के अन्दर जिस अहंकार ने प्रवेश करना आरम्भ किया था, उसे छोड़ कर शान्ति बनी रही। यह अहंकार गिरजा का नहीं अपितु उन लोगों के हृदयों का अहंकार था जो गिरजा में होने का ढोंग रच रहे थे।

३४. वे अहंकार में इतने फूले हुए थे कि अपने अनेक भाइयों को कष्ट दे रहे थे। यह बहुत ही बुरा था क्योंकि इससे जनता में जो विनीत लोग थे उन्हें भारी उपद्रवों का सामना करते हुए अति दु:खों को झेलना पड़ रहा था।

३५. फिर भी वे (४१) सदा व्रत रखने और प्रार्थना किया करते और दीनता में और मसीह के विश्वास में दृढ़ होते जा रहे थे जिससे उनकी आत्मा में आनन्द और सन्तोष यहां तक भर उठता था कि जिससे उनका हृदय उस पवित्रता से शुद्ध हो जाता था जो शुद्धता अपने हृदयों को परमेश्वर को देने से प्राप्त होती है।

३६. जो अति अहंकार लोगों के हृदयों में प्रवेश कर चुका था, उसको छोड़ कर बावनवां वर्ष भी शान्ति से बीता; यह अहंकार उनके अधिक धन-सम्पत्ति और देश में उनकी प्रगति के कारण हुआ था जो दिन प्रतिदिन बढ़ रहा था।

३७. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन के *तिरपनवें वर्ष में (४२) इलामन की मृत्यु हो गई और उसके स्थान पर उसके बड़े पुत्र नफी ने शासन करना आरम्भ किया। और इसने भी न्यायासन पर से न्यायोचित और निष्पक्ष रूप से शासन किया, और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया और पिता के ही पद चिन्हों पर चला।

अध्याय ४

ज़राहेमला देश पर लमनायटियों का फिर से आक्रमण करना—नगर का लिया जाना—नफायटियों का सम्पन्न देश में खदेड़ा जाना—मरोनियाह का रास्ते पर मोर्चाबन्दी करना—दुष्टताओं से निर्बल होना और नफायटियों का सूर्य अस्त होना।

१. *चौवनवें वर्ष में ऐसा हुआ कि गिरजा में कई बार मतभेद हुआ और लोगों में इतनी लड़ाई हुई कि बहुत ही रक्तपात हुआ।

२. और बहुत से विद्रोही मारे गए और देश से बाहर खदेड़े गए और वे लमनायटियों के राजा के पास चले गए।

३. और उन्होंने लमनाटियों को नफायटियों से लड़ने के लिए भड़काया, लेकिन लमनायटी बहुत डरपोक थे। वे इतना डरते थे कि उन्होंने उन मतभेदियों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

४. लेकिन निर्णायकों के शासन के छप्पनवें वर्ष में मतभेदियों का दल नफायटियों से अलग होकर लमनायटियों के पास गया जो अन्य मतभेदियों के साथ मिलकर लमनायटियों को नफायटियों के विरुद्ध भड़का कर क्रोधित कर देने में सफल हुए और वे पूरे वर्ष भर आक्रमण करने की तैयारी में लगे रहे।

५. और †सत्तावनवें वर्ष में वे नफायटियों से युद्ध करने के लिए आए और मृत्यु का काम आरम्भ हुआ; हां, इतना बड़ा संघर्ष हुआ कि अट्ठानवें वर्ष

(३७) देखो ५, २ नफी ३१. (३८) देखो ६, १ नफी १५. (३९) अल० ४२:६, ११ देखो २०, अल० १२. (४०) ओम० १३. (४१) देखो २०, मू० २७. (४२) इला० २:२.

*ईसा से ४२ वर्ष पूर्व *ईसा से ३९ वर्ष पूर्व

में उन्होंने (१) ज़राहेमला देश को जीत लिया और (२) सम्पन्न देश के निकट के स्थानों को अपने अधिकार में कर लिया।

६. और नफायटी और मरोनियाह की सेनाएं सम्पन्न देश तक पीछे हटा दी गईं।

७. और वहां उन्होंने लमनायटियों के विरुद्ध (३) पश्चिम के समुद्र से पूरब के समुद्र तक मोर्चेबन्दी की; जो कि एक नफायटी के लिए यह मोर्चेबन्दी की रेखा और उत्तर देश की रक्षा के लिए जहां उनकी सेनाएं स्थापित थी, एक पूरे दिन (५) की यात्रा का समय ले लेती थी।

८. इस प्रकार नफायटियों के द्रोहियों ने लमनायटियों की असंख्य सेना की सहायता से दक्षिण के देश के सभी नफायटियों पर अपना अधिकार जमा लिया। और यह सब निर्णायकों के शासन के अट्ठावनवें और उन्सठवें वर्ष में हुआ।

९. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन के साठवें वर्ष में मरोनियाह अपनी सेना के साथ देश के कई भागों को वापस लेने में समर्थ हो गया; हां, कई नगर जो लमनायटियों के हाथों में पड़ चुके थे, उन्हें उसने फिर से अपने अधिकार में कर लिया।

१०. और, इकसठवें वर्ष में वे अपने देश के आधे भाग पर पुनः अधिकार करने में सफल हुए।

११. नफायटियों की यह भारी हानि और रक्तपात नहीं होता अगर उनमें दुष्टता और घृणित कार्य नहीं होते; हां, ये अनुचित आचरण उनमें व्याप्त थे जो अपने आप को परमेश्वर के गिरजे का होने का ढोंग रचते थे।

१२. और यह उनके धन-सम्पदा से अति सम्पन्न होने के कारण, हृदय में अहंकार होने से, दरिद्रों को सताने से, (६) भूखों को भोजन न देने से, वस्त्रहीन को वस्त्र न देने से, और अपने विनीत बन्धुओं के गालों पर थप्पड़ मारने से, पवित्र वस्तुओं व बातों की हंसी उड़ाने से भविष्य-वाणी की भावना और ज्ञान-प्रकाश को अस्वीकार करने से, हत्या करने, लूट मार करने, असत्य बोलने, चोरी करने, व्यभिचार करने, भारी विग्रह करने और स्वदेश त्याग कर (७) नफी के देश में लमनायटियों में जाकर मिल जाने से हुआ।

१३. और भारी पापों और अपने बल की बड़ाई के कारण उनको उन्हीं के बल छोड़ दिया गया था; इसलिए उनकी प्रगति रुक गई और वे उत्पीड़ित किए गए मारे-पीटे गए और लमनायटियों के आगे से तब तक भगाए जाते रहे जब तक कि उन्होंने अपने अधिकार की लगभग सारी भूमि को खो न दिया।

१४. उनके पापों के कारण मरोनियाह ने लोगों को बहुत उपदेश दिए, तथा नफी और लेही ने भी जो कि इलामन के पुत्र थे, लोगों को कई उपदेश दिए और उनके दुष्कर्मों के विषय में बहुत-सी भविष्यवाणियां उनसे कह सुनाईं और बताया कि अगर वे पश्चात्ताप नहीं करेंगे तब उनका परिणाम क्या होगा।

१५. और ऐसा हुआ कि उन्होंने इतना पश्चात्ताप किया कि फिर से वे प्रगति करने लगे।

१६. जब मरोनियाह ने देखा कि लोग पश्चात्ताप कर रहे हैं तब वह उनको एक स्थान से दूसरे स्थान, एक नगर से दूसरे नगर तक तब तक ले जाता रहा जब तक कि उन्होंने अपने पूर्व की सम्पत्ति की आधी (८) सम्पत्ति और अपनी आधी भूमि को फिर से प्राप्त न कर लिया।

१७. इस प्रकार निर्णायकों के शासन का इकसठवां वर्ष समाप्त हुआ।

१८. निर्णायकों के शासन के †बासठवें वर्ष में ऐसा हुआ कि मरोनियाह लमनायटियों पर और अधिक विजय प्राप्त न कर सका।

१९. इसलिए उन्होंने अपने देश के बचे हुए भाग पर अधिकार करने की योजना को त्याग दिया क्योंकि लमनायटियों की संख्या इतनी अधिक थी कि नफायटियों के लिए लमनायटियों को वश में करना असम्भव हो गया; इसलिए मरोनियाह

(१) ओम० १३. (२) देखो ३७, अल० २२. (३) देखो ३, अल० ४८. (४) अल० २२:३२. (५) देखो ३, अल० ४८. (६) देखो १२, मू० ४. (७) देखो २, २ नफी ५. (८) पद्य १०.

*ईसा से ३८ वर्ष पूर्व †ईसा से ३५ वर्ष पूर्व †ईसा से ३१ वर्ष पूर्व

ने अपनी सेना को वापस प्राप्त देश की भूमि की सुरक्षा में लगा दिया।

२०. लमनायटियों की भारी संख्या के कारण यह सोचकर नफायटी अति भयभीत थे कि सम्भवत: वे पराजित कर रौंदे, मारे और नष्ट कर दिए जायेंगे।

२१. और उन्हें अलमा की भविष्यवाणियां और (९) मूसायाह के शब्द स्मरण हो आए : और उन्होंने देखा कि वे हठी लोग थे और उन्होंने परमेश्वर की वाणी को तृणवत् समझ लिया था।

२२. और उन्होंने (१०) मूसायाह के नियम को परिवर्तित कर के उसे पैरों तले रौंद डाला था, अर्थात् उन्होंने उन नियमों को पैरों तले रौंदा जिनको परमेश्वर ने उसे लोगों को देने के लिए कहा था; और उन्होंने देखा कि उनके नियम दूषित हो चुके थे और वे पापी लोग बन चुके थे, इतने पापी कि जितने पापी लमनायटी थे।

२३. और उनके पापों के कारण गिरजा का ह्रास होने लगा और वे (११) भविष्यवाणी और ज्ञान-प्रकाश की भावना में अविश्वास करने लगे थे; और परमेश्वर का न्याय उनके चेहरे को निहार रहा था।

२४. और उन्होंने यह भी देखा कि वे अपने बन्धु लमनायटियों की तरह निर्बल बन चुके हैं और प्रभु की आत्मा अब उनकी रक्षा नहीं कर रही है; हां, वह उनसे अलग हो चुकी है क्योंकि प्रभु की आत्मा (१२) अपवित्र मन्दिरों में निवास नहीं करती।

२५. इसलिए परमेश्वर ने अपने चमत्कारी और अद्वितीय शक्ति के द्वारा उनकी रक्षा करना छोड़ दिया था क्योंकि वे अविश्वास और भयानक पाप कर्मों से पतित हो चुके थे; और उन्होंने देखा कि लमनायटी संख्या में उनसे बहुत अधिक हैं और अगर वे अपने प्रभु परमेश्वर से नहीं चिपक गए तब निसन्देह नष्ट हो जाएंगे।

२६. क्योंकि सुनो, उन्होंने देखा कि लमनायटियों का बल उनके बल के समान है, यहां तक कि उनके एक व्यक्ति का बल उनके एक प्रतिद्वन्दी के बराबर है। इस प्रकार वे इस भारी पाप में पतित हो गए; हां, इस तरह वे अपने पाप कर्मों के कारण थोड़े ही दिनों में निर्बल हो गए।

अध्याय ५

नफी का न्यायासन को सेजोराम को देना—अपने भाई लेही के साथ उसका उपदेश देने में समय लगाना—आश्चर्यजनक स्पष्टीकरण—मत परिवर्तित लमनायटियों की जीती गई भूमि को वापस नफायटियों को लौटाना।

१. इसी वर्ष ऐसा हुआ कि नफी ने (१) न्यायासन को एक व्यक्ति को दे दिया जिसका नाम सेजोराम था।

२. जबकि उनके (२) नियम और शासन जनता के मत के द्वारा संचालित होते थे और अनुचित आचरण वाले लोग उचित आचरण वालों से अधिक थे, इसलिए विनाश की ओर वे बढ़ रहे थे, क्योंकि नियम दोषपूर्ण हो चुके थे।

३. हां, इतना ही नहीं; वे इतने हठी बन चुके थे कि वे न तो नियम द्वारा ही और न ही न्याय द्वारा शासित हो सकते थे; वे केवल विनाश की ओर ही बढ़ रहे थे।

४. और ऐसा हुआ कि नफी उनके पापों से थक गया और उसने न्यायासन को त्याग कर अपने भाई लेही के साथ शेष जीवन भर परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने का कार्य अपने ऊपर ले लिया।

५. क्योंकि जो बातें उनके पिता इलामन ने उनसे कही थीं वे उन्हें याद थीं। और उसने ये शब्द उनसे कहे थे :

६. सुनो मेरे बेटों, मैं चाहता हूं कि तुम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना स्मरण रखो और मैं चाहता हूं कि तुम इन शब्दों की घोषणा लोगों में करो। मैंने तुम्हें अपने उन पूर्वजों के नाम दिये जो यरूशलेम देश से आए थे; और मैंने ऐसा इसलिए किया कि जिससे तुम जब अपना नाम स्मरण करोगे तब तुम उन्हें भी याद करोगे; और जब तुम उन्हें याद करोगे तब तुम उनके

(९) मू० २९:२७. (१०) अल० १:१. (११) पद्य १२. (१२) देखो १८, अलमा ७. (१) इला० ३:३७. (२) मू० २९:२७.

†ईसा से ३० वर्ष पूर्व

कामों को भी याद करोगे; और जब तुम उनके कामों को याद करोगे तब तुम यह जानोगे कि कैसे वे अच्छे कहलाए और लिखे गए।

७. इसलिए मेरे बेटों, मैं चाहता हूं कि तुम वही करो जो उचित हो, जिससे कि तुम भी उन्हीं की तरह कहलाओ और लिखे जाओ।

८. और अब, सुनो मेरे बेटों, मैं तुमसे कुछ और भी आशा करता हूं, मैं यह नहीं चाहता कि तुम इन कामों को अहंकार करने के लिए करो बल्कि इन कामों को (३) स्वर्ग में अपने को बहुमूल्य सिद्ध करने के लिए करो जो कि अनन्त होगा और जिस में कोई कमी नहीं होगी; जिससे कि तुम्हें उस बहुमूल्य (४) अनन्त जीवन का उपहार मिले जिसके विषय में हमारे पास यह विश्वास करने के कारण है कि वह हमारे पूर्वजों को दिया गया है।

९. ओह् स्मरण रखो, स्मरण रखो मेरे बेटों उन शब्दों को जिन्हें राजा (५) बिन्यामीन ने अपने लोगों से कहा था; हां, दूसरा और कोई नहीं न ही और कोई उपाय हे जिसके द्वारा मनुष्य बच सकता हो, यह एकमात्र यीशु मसीह के रक्त (६) के प्रायश्चित के द्वारा ही हो सकता है, जो आने वाला है, हां यह याद रखो कि वह जगत का उद्धार करने के लिए आता है।

१०. और उन शब्दों को भी याद रखो जिन्हें अमूलक ने जीज़रोम से (७) अमोनियाह नगर में कहा था; क्योंकि उसने कहा था कि प्रभु जगत का उद्धार करने के लिए अवश्य ही आएगा परन्तु वह उनके (८) पापों में ही मुक्त करने नहीं आएगा बल्कि उनको पापों से उद्धार करने के लिए आएगा।

११. और पश्चात्ताप के कारण लोगों का पापों से उद्धार करने के लिए उसे परमपिता की ओर से शक्ति दी गई है; इसलिए उसने अपने स्वर्गदूत को पश्चात्ताप के उन नियमों के सन्देश की घोषणा करने के लिए (९) भेजा जो कि उद्धारकर्ता को उनकी आत्माओं को मुक्ति प्रदान करने में समर्थ करता है।

१२. और अब मेरे बेटों, स्मरण रखो, स्मरण रखो कि तुम्हें अपने उद्धारकर्ता जो कि परमेश्वर का पुत्र मसीह है, उसकी चट्टान पर अपनी नींव को बनाना है; जिससे कि जब शैतान अपनी प्रबल हवा के झकोरों को, हां बवण्डल के धुरे को, अपने सभी ओले और भीषण आंधियों के थपेड़ों को तुम्हारे ऊपर (१०) भेजे, तब उसके पास वह शक्ति न होगी जो तुम्हें, खींच कर सन्तापों और अनन्त दुःखों की खाई में फेंक सके क्योंकि जिस चट्टान पर तुमने अपनी नींव डाली थी वह निसन्देह ऐसी नींव है जिस पर अगर लोगों ने अपने मकान बनाए तब वह कदापि गिर नहीं सकते।

१३. इलामन ने इन शब्दों को अपने पुत्रों को सिखाया; हां, उसने ऐसी बहुत-सी बातों की शिक्षा दी जो कुछ तो लिखी नहीं गईं, और कुछ लिखी गई हैं।

१४. और उन्होंने उनकी बातों को स्मरण रखा, और परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हुए नफी के लोगों में परमेश्वर की वाणी का प्रचार करने (११) सम्पन्न देश से आरम्भ करने के लिए आगे बढ़े।

१५. और वहां से वे लोग (१२) गिड़नगर गए और गिड़नगर से (१३) मूलकनगर गए।

१६. वे (१४) दक्षिण के देश के सभी नफी के लोगों में एक (१५) नगर से दूसरे नगर तक जाते रहे और वहां से वे ज़राहेमला देश में लमनाय-टियों के (१६) बीच में गए।

१७. और ऐसा हुआ कि उन्होंने इतने बल के साथ प्रचार किया कि बहुत से उन (१७) मतभेदियों का वाद-विवाद में मुंह बन्द कर दिया जो कि लमनायटियों से जा मिले थे और ये इतने प्रभावित हुए कि आगे आकर उन्होंने पापों को स्वीकार किया और पश्चात्ताप में (१८) बपतिस्मा लेकर अबिलम्ब अपने किए गए क्षति की पूर्ति के लिए नफायटियों के पास गए।

(३) इला० ८:२५, ३ नफी १३:१९-२१. (४) १ नफी १५:३६. (५) मू० २:५. (६) मू० ३:१७, देखो ६, २ नफी २.
(७) देखो ९, अल० ८. (८) अल० ११:३३-३७. (९) अल० १३:२४, २५, ३९:१९. (१०) देखो ५, अल० २६.
(११) देखो ३७, अल० २२. (१२) देखो २६, अल० ५१. (१३) देखो ३०, ५१. (१४) देखो १४, अल० ४६. (१५) ओम० १३.
(१६) इला० ४:५. (१७) इला० ४:२, ४. (१८) देखो २१, २ नफी ९.

१८. और ऐसा हुआ कि नफी और लेही ने प्रबल शक्ति और अधिकार के साथ प्रचार किया। क्योंकि उनको शक्ति और अधिकार दिया गया था कि जिससे वे उपदेश दे सकें और उन्हें क्या कहना चाहिए यह भी उन्हें दिया जाता रहा है।

१९. इसलिए जो बातें वे कहते उनसे लमनायटी आश्चर्य चकित हो उठते थे और उन्हें इतनी तृप्ति होती कि (१९) जराहेमला देश में और आस-पास के स्थानों में आठ सहस्त्र लमनायटी प्रायश्चित में (२०) बपतिस्मा लेकर अपने पूर्वजों की (२१) परम्पराओं की भूलों को स्वीकार करने लगे।

२०. वहां से नफी और लेही (२२) नफी देश की ओर बढ़े।

२१. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों की एक सेना ने उन्हें पकड़ कर कारागार में डाल दिया; और यह वही कारागार था जिसमें (२३) आमोन और उसके भाइयों को लिमही के सेवकों ने बन्दी बना कर रखा था।

२२. जब बिना भोजन पानी के कई दिन बीत गए तब वे उन्हें ले जाकर मारने के लिए कारागार में गए।

२३. तब ऐसा हुआ कि नफी और लेही दोनों ऐसी ज्वाला से घिरे हुए प्रतीत हुए कि जल जाने के भय से उन पर हाथ लगाने का उन्हें (२४) साहस न हुआ। फिर भी नफी और लेही जले नहीं; वे अग्नि के मध्य में खड़े हुए प्रतीत हुए फिर भी वे जले नहीं।

२४. जब उन्होंने अपने आप को जलते हुए एक ज्वाला के स्तम्भ के बीच में खड़े पाया जो कि उन्हें जला नहीं रहा था तब उनके हृदय में साहस हुआ।

२५. क्योंकि उन्होंने देखा कि लमनायटी उन पर हाथ लगाने का साहस नहीं कर रहें हैं; और न ही वे उनके निकट आने का ही साहस करते हैं परन्तु इस तरह खड़े हैं मानो आश्चर्यचकित हो मूक बन बैठे हों।

२६. और तब नफी और लेही आगे खड़े होकर उनसे इस प्रकार बोलने लगे कि डरो मत, क्योंकि देखो, यह आश्चर्यजनक घटना परमेश्वर ने तुम्हें दिखाई जिसमें तुम्हें दिखाया गया है कि तुम हमें मारने के लिए हम पर हाथ नहीं उठा सकते।

२७. और सुनो, जब उन्होंने ये शब्द कहे तब धरती बहुत अधिक हिल उठी और कारागार की दीवाले ऐसे हिलने लगीं कि मानो वह धरती पर गिर जायेंगी, लेकिन वे गिरी नहीं। और जो लोग कारागार में थे, वे लमनायटी और द्रोही नफायटी थे।

२८. और ऐसा हुआ कि उनके ऊपर अन्धकार का बादल छा गया और उन पर एक गम्भीर भय व्याप्त हो गया।

२९. और एक वाणी उन्हें सुनाई दी जो कि अन्धकार के काले बादल के ऊपर से आती हुई जो कह रही थी : तुम पश्चात्ताप करो, तुम पश्चात्ताप करो, और मेरे उन सेवकों को नष्ट करने का प्रयत्न मत करो जिनको मैंने तुम्हारे पास सुसमाचार देने के लिए भेजा है।

३०. और जब उन्होंने इस आवाज को सुना और देखा कि यह आवाज मेघ गर्जन नहीं है, और न ही कोई कोलाहलपूर्ण आवाज है परन्तु (२५) एक व्यवस्थित अति मृदुलतापूर्ण वाणी है मानो मन्द-मन्द आ रही हो जो अन्तर्रात्मा तक पहुंच रही थी।

३१. और वाणी की मृदुलता के होते हुए भी, देखो, धरती अति कम्पायमान थी और कारागार की दीवालें फिर से कम्पायमान हो उठीं, मानो वे धरती पर गिर जाएंगी; और देखो, उनके ऊपर छाया हुआ अन्धकार का बादल हटा नहीं।

३२. और वह वाणी यह कहती हुई फिर से सुनाई दी : तुम पश्चात्ताप करो, तुम पश्चात्ताप करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है; और मेरे सेवकों को नष्ट करने का और प्रयास मत करो और ऐसा हुआ कि धरती फिर हिल उठी और दीवालें भी हिल उठीं।

३३. और तीसरी बार वह वाणी सुनाई दी

(१९) ओम० १३. (२०) देखो २१, २ नफी ९. (२१) देखो १४, या० ७. (२२) देखो २, २ नफी ५. (२३) मू० ७:६-८, २१:२२-२४. (२४) पद्य २५. (२५) ३ नफी ११:३.

ईसा से ३० वर्ष पूर्व

और उसने उनसे चकित कर देने वाले शब्द कहे जो कि किसी भी मनुष्य से कहे नहीं जा सकते थे; और दीवाल पुनः हिल उठी और धरती ऐसे हिलने लगी मानो वह टुकड़ों में टूट कर अलग-अलग हो जाएगी।

३४. और ऐसा हुआ कि लमनायटी अन्धकार के उस बादल के कारण भाग भी नहीं सके, जो उनके ऊपर छाया हुआ था; और जो भय उनमें व्याप्त हो गया था, उसके कारण वे हिल-डोल भी नहीं सकते थे।

३५. उनमें एक व्यक्ति था जो जन्म से नफायटी था और जो एक समय में परमेश्वर के गिरजे का सदस्य था परन्तु मतभेदी होकर अलग हो गया था।

३६. इसने घूमकर अन्धकार के बादल में से नफी और लेही के चेहरों को देखा; और देखो, उनका चेहरा इतना अधिक चमक रहा था कि जैसे स्वर्गदूतों के चेहरे चमकते हो। और उसने देखा कि उन्होंने अपनी आखें स्वर्ग की ओर उठा रखी हैं; और वे ऐसे भाव में थे कि वे मानो बातें या अपनी वाणी को उस तक पहुंचा रहे हों जिसे वे देख रहे थे।

३७. और इस व्यक्ति ने भीड़ से ऊंची आवाज में उन्हें घूम कर देखने को कहा। और सुनो, उन्हें बल दिया गया कि जिससे उन्होंने घूम कर देखा; और उन्होंने नफी और लेही के चेहरे को देखा।

३८. और उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा : सुनो, इस सबका अर्थ क्या है, और वह कौन है जिससे ये बातें कर रहे हैं?

३९. उस व्यक्ति का नाम था अमीनादाब। और अमीनादाब ने उनसे कहा : वे परमेश्वर के दूतों से बातें कर रहे हैं।

४०. और ऐसा हुआ कि लमनायटी उससे बोले : हम क्या करें कि जिससे अन्धकार का यह बादल हमारे ऊपर से हट जाए?

४१. और अमीनादाब ने उनसे कहा : तुम पश्चात्ताप करो और उस वाणी को तब तक पुकारते रहो जब तक कि तुम मसीह पर विश्वास न करने लगो जिसके विषय में तुम्हें अलमा, अमूलक और जीजरोम ने शिक्षा दी थी; और जब तुम यह करोगे तब तुम्हारे ऊपर से अन्धकार के इस बात को हटा लिया जाएगा।

४२. और वे सभी जिसने धरती हिलाई थी, उसकी वाणी को पुकारने लगे; हां, वे तब तक उसको पुकारते रहे जब तक कि अन्धकार के बादल को हटा न लिया गया।

४३. और ऐसा हुआ कि जब उन्होंने आखें इधर-उधर दौड़ाईं तब देखा कि अन्धकार का वह बादल उनके ऊपर से हट गया है और उनमें से हरएक व्यक्ति ज्वाला के एक स्तम्भ से घिरा हुआ है।

४४. और उनके मध्य में थे नफी और लेही, हां, वे चारों ओर से घिरे हुए थे, हां, वे मानो जलते हुए ज्वाला के बीच में हों फिर भी उन्हें कोई हानि नहीं हो रही थी और न तो वह ज्वाला कारागार की दीवाल को ही जला रही थी, और वे ऐसे आनन्द में भरे हुए थे जिसके विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता और जो गौरव से भरा हुआ था।

४५. और सुनो, परमेश्वर की (२६) पवित्र-आत्मा स्वर्ग से आकर उनके हृदयों में प्रवेश कर गई और वे मानो अग्नि से भर उठे हों और चकित कर देने वाले शब्द कह सकते थे।

४६. और ऐसा हुआ कि उनको एक अति मृदु-वाणी सुनाई दी जो मन्द मन्द यह बोली:

४७. मेरे उस प्रिय पर विश्वास करने के कारण जो (२७) कि जगत की नींव के समय से है, शान्त होओ, तुम्हें शान्ति मिले।

४८. जब उन्होंने ये शब्द सुने, तब अपनी आंखे ऊपर उठाईं मानो वे यह देखना चाहते हों कि ये शब्द कहां से आए हैं; और सुनो, उन्होंने स्वर्गों को खुलते देखा; और स्वर्ग से उतर कर स्वर्गदूत आए और उन्हें उपदेश दिए।

४९. लगभग तीन सौ व्यक्ति थे जिन्होंने यह सब देखा और सुना; और उन्हें जाने के लिए तथा आश्चर्य न करने के लिए कहा गया; और न ही सन्देह करने को कहा गया।

५०. और ऐसा हुआ कि उन्होंने लोगों में जाकर प्रचार किया और जो कुछ देखा और सुना था उसकी घोषणा आस-पास के सभी स्थानों में इतनी अधिक की कि अधिकांश लमनायटियों

(२६) ३ नफी ९:२०;एo, १२:१४. (२७) देखो ४, मूo ४.

ने उनकी बातों पर विश्वास किया, क्योंकि इस पर उनको बहुत अधिक साक्षियां प्राप्त हुईं।

५१. और जिन्हें विश्वास हुआ उन्होंने अपने युद्ध के हथियार डाल दिए और अपने (२८) द्वेष और अपने पूर्वजों की परम्पराओं को भी त्याग दिया।

५२. और ऐसा हुआ कि उन्होंने नफायटियों को (२९) उनकी भूमि वापस दे दी।

अध्याय ६

लमनायटियों का नफायटियों के पास उपदेशकों को भेजना—शान्ति और स्वतन्त्रता का साम्राज्य लेही और मूलक देश—सीजोराम और उसके पुत्र की हत्या—गेडियन्दन डाकुओं का शासन छीनना।

१. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन के बासठवें वर्ष के समाप्त होते-होते ये सब कार्य हुए, और अधिकांश लमनायटी धार्मिक हो गए, यहां तक कि विश्वास में दृढ़ता और स्थिरता के कारण उनकी धार्मिकता नफायटियों से भी अधिक बढ़ गई।

२. क्योंकि सुनो, बहुत से नफायटी लोगों ने कठोर और क्षमा न चाहने वाले बनकर, परमेश्वर की जिस वाणी का उनमें प्रचार किया गया था और जो भविष्यवाणियां उनमें आई थीं, उन सभी को अस्वीकार कर दिया था।

३. फिर भी, लमनायटियों के मत परिवर्तन से, हां, उनमें गिरजे की स्थापना से गिरजा के लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई। एक धार्मिक भागीदारी में एक दूसरे के साथ वे बहुत प्रसन्न हुए और आनन्द मनाया।

४. और बहुत से लमनायटियों ने (१) ज़राहेमला देश आकर नफायटियों से बताया कि किस प्रकार उन्होंने मत परिवर्तन किया और उन्हें विश्वास और पश्चात्ताप करने के लिए सदुपदेश दिए।

५. हां, और बहुतों ने बल और अधिकार के साथ उपदेश देकर बहुतों को अति विनीत कर दिया जिससे वे परमेश्वर के दीन अनुचर और मेमने बन गए।

६. और ऐसा हुआ कि बहुत से लमनायटी, नफी और लेही, लोगों में प्रचार करने के लिए (२) उत्तर के देश में गए। इस तरह तिरसठवां वर्ष समाप्त हुआ।

७. और सुनो, देश में इतनी शान्ति हो गई कि नफायटी देश के किसी भी भाग में चाहे नफायटियों में या लमनायटियों में, इच्छानुसार आ-जा सकते थे।

८. और लमनायटी भी अपनी इच्छानुसार कहीं भी आ-जा सकते थे, चाहे लमनायटियों में या नफायटियों में; इस प्रकार वे स्वतन्त्रता पूर्वक, एक दूसरे से वस्तुओं को खरीदते बेचने के लिए मिलते जुलते थे और अपनी इच्छानुसार लाभ प्राप्त करते थे।

९. और ऐसा हुआ कि लमनायटी और नफायटी दोनों बहुत अधिक धनी हो गए; और उनके पास (३) बहुत अधिक सोना, चांदी और हरएक प्रकार के धातु (४), दक्षिण और (५) उत्तर के दोनों देशों में हो गए।

१०. अब दक्षिण का देश (६) लेही और उत्तर का देश (७) मूलक कहलाने लगा, जो कि (८) जदकियाह के दो पुत्रों के नाम थे; क्योंकि प्रभु (९) मूलक को उत्तर के देश में और (१०) लेही को दक्षिण के देश में लाया था।

११. और सुनो, इन दोनों (११) देशों में सभी प्रकार का सोना, चांदी और हर प्रकार की मूल्यवान धातु पाई जाती थी। और दोनों देशों में विलक्षण कारीगर भी थे, जो सभी प्रकार की धातुओं की वस्तुएं बनाते थे, और इस प्रकार वे धनी हो गए।

१२. वे उत्तर और दक्षिण दोनों, में ही बहुत अधिक अनाज उपजाते ; और दोनों ओर के लोग सम्पन्न हो गए। उनकी संख्या में भारी वृद्धि हुई और वे शक्तिशाली भी बन गए।

१३. उनकी स्त्रियां १२ भी परिश्रम करती

(२८) देखो १४, या ७. (२९) इला० ४:५, ९, १०, १८, १९. (१) ओम० १३. (२) देखो १६, अल० ४६. (३) देखो १४, १ नफी १८. (४) देखो १४, अल० ४६. (५) देखो १६, अल० ४६. (६) अल० ५०:२५. (७) अल० ५१:२६. (८) ओम० १४-१५. (९) देखो ५. (१०) देखो ४. (११) देखो १४, १ नफी १८. (१२) देखो ३, मू० १०.

और सूत कात कर सभी प्रकार के वस्त्र तैयार करतीं; और तन ढकने के लिए उत्तम बुने कपड़े बनातीं। इस तरह शान्ति के साथ चौसठवां वर्ष समाप्त हुआ।

१४. और पैंसठवें वर्ष में भी आनन्द और शान्ति बनी रही और उपदेश दिए जाते रहे और भविष्य में होने वाली बातों पर अनेक भविष्यवाणियां हुईं।

१५. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन के *छियासठवें वर्ष में, (१३) सीजोराम एक अज्ञात व्यक्ति द्वारा उस समय मारा गया जब कि वह न्याय-आसन पर बैठा हुआ था। और इसी वर्ष उसका पुत्र, जो कि लोगों द्वारा उसके पिता के स्थान पर नियुक्त किया गया था, मारा गया। इस तरह छियासठवां वर्ष भी समाप्त हुआ।

१६. और सरसठवें वर्ष के आरम्भ में लोगों ने फिर से दुष्ट होना आरम्भ कर दिया।

१७. क्योंकि सुनो, प्रभु उनको सांसारिक धन द्वारा इतने दिनों तक आशीर्वाद देता रहा, जिससे कि वे भड़का कर क्रोधित नहीं किए गए, न तो उन्हें युद्ध में लगाया गया और न ही उन्होंने रक्तपात किया; इसलिए वे अपना हृदय अपनी धन-सम्पदा में लगाने लगे; वे और अधिक धनोपार्जन की युक्ति ढूंढने लगे जिससे कि वे एक दूसरे से चढ़-बढ़ के हों; इसलिए वे (१४) गुप्त रूप से धन के लिए, हत्या तथा चोरी करने और डाका डालने लगे।

१८. और अब सुनो, ये हत्यारे और लुटेरे एक गिरोह के लोग थे, जिसकी स्थापना करने वाले किस्कूमन और (१५) गेडियन्दन थे। और इस समय इस गिरोह में बहुत से लोग मिल गए थे; यहां तक कि नफायटियों में भी गेडियन्दन के गिरोह के बहुत से लोग थे। परन्तु वे अधिक संख्या में दुष्ट लमनायटियों में थे। उन्हें गेडियन्दन डाकू और हत्यारे कहा जाता था।

१९. और इन्हीं लोगों ने (१६) सीज़ोराम और उसके (१७) पुत्र की हत्या की थी जबकि वे न्याय आसन पर थे और उन्हें पकड़ा नहीं गया था।

२०. और जब लमनायटियों को पता लगा कि उनमें डाकू हैं, तब उन्हें बहुत दुःख हुआ; और उन्हें धरती से मिटा देने के लिए उन्होंने अपनी शक्ति भर प्रयत्न किया।

२१. लेकिन सुनो, शैतान ने अधिकांश नफायटियों के हृदयों को इतना भड़का दिया था कि वे डाकुओं के उस (१८) गिरोह के साथ मिल गए और वे उनकी शर्तों, शपथों में सम्मिलित हो गए कि वे चाहे कितनी ही कठिन परिस्थितियों में पड़ जाएं, फिर भी एक दूसरे को बचाएंगे और उनकी रक्षा करेंगे, जिससे कि उन्हें हत्याओं, डाकाजनी और चोरियों के लिए दण्ड नहीं भुगतना पड़े।

२२. और उनके पास अपने गुप्त (१९) संकेत और शब्द थे, जिनके द्वारा वे अपने गिरोह-बन्धुओं को पहचान लेते थे, जो उनके साथ प्रतिज्ञा-बद्ध थे और जो भी दुष्टता करते थे, उसके लिए उन्हें कोई हानि नहीं पहुंच पायी थी, और न ही उनको दूसरे गिरोह के उन सदस्यों से ही कोई हानि पहुंच सकती थी, जो प्रतिज्ञाबद्ध थे।

२३. इस प्रकार वे अपने देश के और अपने परमेश्वर के नियमों के विपरीत हत्या कर सकते थे, व्यभिचार कर सकते थे और हर प्रकार के कुकर्म कर सकते थे।

२४. अगर कोई उस गिरोह का व्यक्ति अपनी दुष्टता और घृणित कार्यों की बातों का भेद लोगों पर खोलता, तब उसका न्याय देश के नियम के अनुसार नहीं, बल्कि उनके पापों के उन नियमों के अनुसार होता जिनको गेडियन्दन और किस्कूमन ने दिया था।

२५. अब सुनो, ये वही (२०) गुप्त शपथ और शर्तें थीं जिन्हें अलमा ने अपने पुत्र को संसार को न बताने की आज्ञा दी थी, क्योंकि ये लोगों के विनाश का कारण बन सकती थीं।

२६. और सुनो, ये गुप्त शपथ गेडियन्दन को उन अभिलेखों से प्राप्त नहीं हुई थीं जो कि इलामन को दिए गए थे; परन्तु उन्हें गेडियन्दन के हृदय में (२१) उसने दिया था, जिसने कि हमारे प्रथम पूर्वज को, वर्जित फल खाने के लिए लालच दिया था।

२७. हां, वही जिसने कि कैन के साथ यह षडयन्त्र रचा था कि अगर वह अपने भाई हाबिल

(१३) इला० ५:१. (१४) देखो ६, २ नफी १०. (१५) इला० २:१२, १३. (१६) पद्य १५. (१७) पद्य १५. (१८) देखो ६. २ नफी १०. (१९) अल० ३७:२७. (२०) अल० ३७:२७-३२. (२१) मोती मू० ४:६-१२.

को मार डालेगा तब जगत में यह बात कोई भी जान नहीं पाएगा। और उस समय से वह कैन और उसके भाइयों के साथ (२२) षडयन्त्र करता रहा है।

२८. और यही वह था जिसने कि लोगों के हृदयों में यह विचार उत्पन्न कर दिया था कि (२३) स्वर्ग में पहुंचने के लिए उन्हें पर्याप्त ऊंची मीनार बनानी चाहिए। और उसी ने उस मीनार से (२४) इस देश में आए हुए उन लोगों का नेतृत्व किया, जिन्होंने इस देश में अंधकार में किए जाने वाले और घृणित कार्यों को तब तक फैलाया, जब तक कि लोगों को एकदम (२५) नष्ट करके उन्हें (२६) अनन्त अधोलोक में न डाल दिया।

२९. हां, उसी ने (२७) गेडियन्दन के हृदय में भी अन्धकार में किए जाने वाले कामों को और गुप्त हत्याओं को करते रहने का विचार दिया; और उसी ने आदि मानव से लेकर वर्तमान समय तक ऐसे विचारों को बढ़ाया है।

३०. और सुनो, वही सभी पापों का जन्मदाता है। और वह अन्धकार में किए जाने वाले कर्मों को और हत्याओं को करता रहता है, और वह ऐसी योजनाओं, शपथों, शर्तों, और घोर दुष्कर्म करने के विचारों को, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के मानव वंशजों के हृदयों पर, अपने अधिकार के अनुसार देता रहता है।

३१. और इस समय वह नफायटियों के हृदयों पर अधिकार किए हुए है; हां, वह इतना अधिकार किए हुए है कि जिससे वे अति पापी बन गए हैं, उनमें से अधिकांश धर्मपथ त्याग चुके हैं, और परमेश्वर की आज्ञाओं को पैरों तले कुचल कर अपनी मनमानी करते हुए, उन्होंने अपने लिए सोने चांदी से मूर्तियां बना ली हैं।

३२. ऐसा हुआ कि ये सब पाप थोड़े समय के अन्दर ही इन लोगों में आ गया। अधिकांश नफी के लोगों में यह निर्णायकों के शासन के सरसठवें वर्ष में ही आया।

३३. धार्मिक लोगों को दुख और विलाप देते हुए †अड़सठवें वर्ष में भी उनका पाप बढ़ता रहा।

३४. इस प्रकार हम देखते हैं कि नफायटी अविश्वास से पतित होने लगे और दुष्टता और घृणित कर्मों में बढ़ने लगे, जबकि लमनायटी अपने परमेश्वर के ज्ञान में भारी वृद्धि करने लगे; हां, वे परमेश्वर की महत्ता और आज्ञाओं को स्वीकार करने लगे और उसके सत्य पथ पर, सीधे चलने लगे।

३५. इस प्रकार हम देखते हैं कि परमात्मा की आत्मा नफायटियों से उनके पापों और हृदय की कठोरता के कारण, दूर हटने लगी।

३६. इस प्रकार हम यह भी देखते हैं कि लमनायटियों की सरलता और उसकी वाणी पर सहज विश्वास करने से, प्रभु ने अपनी आत्मा को उनपर उंड़ेलना आरम्भ कर दिया था।

३७. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों ने गेडियन्दन के इस (२८) गिरोह को ढूंढ कर, उनकी अगुआनी करने वालों में, परमेश्वर की वाणी का इतना प्रचार किया कि डाकुओं का यह दल उनमें से एकदम मिट गया।

३८. और दूसरी ओर नफायटियों ने उनकी दुष्टताओं को इतना बढ़ाया और सहारा दिया कि वे नफायटियों के सारे देश में फैल गए; और अधिकांश धार्मिकों को पाप में तब तक प्रवृत्त करते रहे जब तक कि वे उनके कामों में विश्वास करके, उनकी लूट में साझीदार होकर, उनकी गुप्त हत्याओं और षड्यन्त्रों में उनके साथ मिल न गए।

३९. और इस प्रकार उन्होंने शासन पर इतना एकमात्र अधिकार प्राप्त कर लिया, कि कंगालों, विनीतों और परेमश्वर के विनम्र अनुयायियों को पैरों तले कुचला, उन्हें मारा-पीटा और उनसे मुंह फेर लिया।

४०. इस प्रकार हम देखते हैं कि वे एक भयावह स्थिति में थे और अनन्त विनाश की राह पर आगे बढ़ रहे थे।

४१. इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का अड़सठवां वर्ष समाप्त हुआ।

(२२) अनमोल मोती मू० ५:२९-३१. (२३(देखो ए० १. (२४) एथर का पुस्तक. (२५) ए० ८:९, १५-२५.
(२६) देखो ११, १ नफी १५. (२७) इला० २:१०-१३. (२८) देखो ६, २ नफी १०.

† ईसा से वर्ष पूर्व

इलामन के पुत्र नफी की भविष्यवाणी—परमेश्वर का नफी के लोगों को आने वाली विपत्तियों की सूचना देना कि अगर उन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया तब उनको पूर्णतया नष्ट कर देने के लिए वह उनमें क्रोध के साथ आएगा। परमेश्वर का नफी के लोगों को महामारी से मारना; उनका पश्चात्ताप करना और परमेश्वर की ओर लौटना। लमनायटी सामुएल का नफी के लोगों के बारे में भी भविष्यवाणी करना।

अध्याय ७ से १६

अध्याय ७

उत्तर में लोगों द्वारा नफी को अस्वीकार किया जाना, उसका जराहेमला देश वापस लौटना—अपने बाग़ की मीनार पर से उसका परमेश्वर से प्रार्थना करना और लोगों की भीड़ को उपदेश देना।

१. सुनो, नफायटी लोगों पर निर्णायकों के शासन के *उन्हत्तरहवें वर्ष में इलामन का पुत्र नफी (१) ज़राहेमला देश में (२) उत्तर के देश से वापस लौट कर आया।

२. वह उन लोगों में गया हुआ था जो उत्तर के देश में रहते थे। उसने उन लोगों में परमेश्वर की वाणी का प्रचार किया और बहुत-सी भविष्य-वाणियां कीं।

३. परन्तु उन्होंने उसकी सभी बातों को अस्वीकार किया और ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी कि वह उनमें रह न सका और वापस स्वदेश लौट आया।

४. लोगों की इतनी अधिक दुष्टता देख और उन (३) गेडियन्दन डाकुओं को शासन और व्यवस्था को हड़प कर न्याय-आसनों पर बैठे पाया, जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञाओं को अलग रख दिया था और वे मानव सन्तानों के प्रति कोई उचित न्याय भी नहीं कर रहे थे।

५. वे धार्मिक लोगों को, उनकी धार्मिकता के कारण अपराधी ठहराते; अपराधी और दुष्टों को उनके धन के कारण बिना दण्ड दिए छोड़ देते और शासन के मुख्य पदों पर इसलिए बने हुए थे ताकि वे अपनी इच्छानुसार शासन और कार्य करें जिससे उन्हें लाभ और सांसारिक यश प्राप्त हो और वे सरलता पूर्वक व्यभिचार, चोरी, हत्या और मनमानी कर सकें।

६. ये सब घोर पाप नफायटियों में थोड़े समय में ही आ गए; और जब नफी ने यह देखा तब उसका हृदय दुःख से व्याकुल हो उठा और वह आत्मग्लानि से पीड़ित हो पुकार उठा:

७. ओह! क्या ही अच्छा होता कि मैं उस समय जन्म लेता जबकि मेरे पूर्वज पिता नफी यरूशलेम देश से निकल कर आए थे, जिससे कि मैं इस (४) आनन्द देश में उनके साथ आनन्द को प्राप्त करता, क्योंकि उस समय लोगों को सरलता के साथ प्रार्थना में लगाया जा सकता था और वे परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करने में दृढ़ थे और उन्हें सरलता से पाप में नहीं लगाया जा सकता था; और वे परमेश्वर की वाणी को सुनने में तत्पर रहते थे।

८. हां, अगर मैं उन दिनों होता तब अपने बन्धुओं की धार्मिकता से मेरी आत्मा को आनन्द मिलता।

९. लेकिन मैं तो इन दिनों में भेजा गया हूं, और अपने इन भाइयों के पापों के कारण मेरी आत्मा दुःख से भर उठी है।

१०. और सुनो, नफी उस मीनार पर झुका था जो कि उसके बगीचे में थी और वह बगीचा उस मुख्य सड़क पर था जो उस मुख्य बाजार तक जाता था जो कि (५) ज़राहेमला नगर में था, इसलिए नफी उस मीनार पर घुटनों के बल झुका था जो कि उसके बगीचे के द्वार के निकट था जिसके पास से आम सड़क जाती थी।

११. और ऐसा हुआ कि उस रास्ते से होकर कुछ लोग जा रहे थे जिन्होंने नफी को उस मीनार पर परमेश्वर के आगे अपने हृदय को खोलते हुए देखा; और वे दौड़ कर गए और जो कुछ उन्होंने देखा था वह लोगों से बताया और लोगों की एक

अध्याय ७. (१) ओम० १३. (२) देखो १६, अल० ४६. (३) देखो ६, २ नफी १०, इला० २:१०-१३. (४) देखो १, १ नफी २. (५) ओम० १३.

ईसा से २३-२० वर्षों के मध्य *ईसा से २३ वर्ष पूर्व

बहुत बड़ी भीड़ यह देखने के लिए आई कि लोगों के पापों के लिए इतना विलाप करने की क्या आवश्यकता है।

१२. और जब नफी उठ कर खड़ा हुआ, तब उसने लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को एकत्रित हुए देखा।

१३. और ऐसा हुआ कि उसने उनसे कहा: सुनो, तुम यहां क्यों एकत्रित हुए हो? क्या इसलिए कि मैं तुम्हें तुम्हारे पापों को बताऊं?

१४. मैं अपनी इस मीनार पर इसलिए चढ़ा कि जिससे तुम्हारे पापों के कारण अपने हृदय के भारी दुख से दुखित आत्मा को परमेश्वर के आगे खोल दूं।

१५. मेरी पुकार और विलाप के कारण तुम यहां आश्चर्य करने के लिए एक साथ एकत्रित हुए हो; हां, आश्चर्य करने की तुम्हें भारी आवश्यकता है; हां, तुम्हें आश्चर्य करना ही चाहिए, क्योंकि तुम इतने बहके हुए हो कि तुम्हारे हृदयों पर शैतान ने अधिकार कर लिया है।

१६. जो तुम्हारी आत्माओं को (६) अनन्त दुख और अन्तहीन क्लेश में फेंकने का अवसर ढूंढ रहा है। उसके दिखाए लालच में तुम कैसे पड़ गए?

१७. ओह, तुम पश्चात्ताप करो, पश्चात्ताप करो! तुम क्यों मरना चाहते हो? तुम लौटो, अपने प्रभु परमेश्वर की ओर लौटो। उसने तुम्हें क्यों त्याग दिया है?

१८. इसलिए कि तुमने अपने हृदयों को कठोर बना लिया है; हां, उस (७) अच्छे गड़रिए की आवाज नहीं सुनते हो; तुमने उसे छेडकर अपने विरुद्ध क्रोधित कर दिया है।

१९. और सुनो, अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया, तब वह एकत्रित करने के बदले, तुम्हें तितर-बितर कर देगा जिससे तुम कुत्तों और हिंसक पशुओं के खाने का मांस बनोगे।

२०. ओह, तुम अपने परमेश्वर को कैसे उसी समय भूल बैठे, जिस समय तुमको उसने मुक्त किया?

२१. तुमने ऐसा स्वार्थ के लिए, लोगों से प्रशंसा प्राप्त करने के लिए और सोना चांदी पाने के लिए किया। और तुमने सांसारिक सम्पत्ति और व्यर्थ की वस्तुओं में अपने हृदयों को लगाया, जिसके लिए तुम हत्या करते, लूटते, चोरी करते, अपने पड़ोसी के विरुद्ध असत्य साक्षी देते और हर प्रकार के पाप कर्म करते हो।

२२. और अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब तुम पर विपत्तियां आएंगी। अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब यह महान नगरी और साथ ही हमारे अधिकार में जो आसपास के नगर हैं, तुमसे ले लिए जाएंगे, और उनमें तुम्हें स्थान नहीं मिलेगा; क्योंकि सुनो, प्रभु तुम्हें जैसा अभी तक शत्रुओं का सामना करने की शक्ति देता रहा है, वैसी शक्ति अब नहीं देगा।

२३. क्योंकि सुनो, प्रभु ऐसा कहता है: पापियों को अगर अपने पापों पर वे पश्चात्ताप नहीं करते और मेरी वाणी को नहीं सुनते, तो एक से अधिक बार मैं उन्हें अपनी शक्ति नहीं दिखा सकता। इसलिए मेरे भाइयों, मैं चाहता हूं कि तुम सुनो कि अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया, तब तुम्हारे बदले लमनायटियों का भला होगा।

२४. क्योंकि सुनो, वे तुमसे अधिक धार्मिक हैं, क्योंकि जिस महान ज्ञान को तुमने प्राप्त किया है, उसके विरुद्ध उन्होंने अपराध नहीं किया, इसलिए प्रभु उनपर दयालु होगा; हां, वह उनके समय को (८) लम्बा करेगा और उनके वंश को बढ़ायेगा और अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया, तब वह तुम्हें (९) सम्पूर्णतया नष्ट कर देगा।

२५. हां, जो घृणित पापाचरण तुममें आ गया है, उसके कारण तुम पर विपत्ति आएगी; और हां, तुमने उस (१०) गुप्त दल के साथ सांठ-गांठ कर ली है जिसकी स्थापना गेडियन्दन ने की थी।

२६. तुम्हारे ऊपर उस अहंकार के कारण विपत्ति आएगी जिसे कि तुमने अपने हृदय के अंदर प्रवेश करने दिया है, और अधिक धन सम्पदा ने तुम्हें आवश्यकता से अधिक अहंकारी बना दिया है, जितना कि अच्छा नहीं है।

(६) देखो १३, या० ६. (७) देखो ३१, अल० ५. (८) देखो १०, अलमा ९. (९) देखो १३, अल० ९. (१०) देखो ३ और ६, २ नफी १०.

२७. हां, पापों और घृणित कार्यों के लिए तुम्हारे ऊपर विपत्ति आये।

२८. और अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब तुम नष्ट हो जाओगे; हां, तुम्हारा देश तुमसे छीन लिया जाएगा और धरती पर से तुम्हें (११) नष्ट कर दिया जाएगा।

२९. अब सुनो, मैं स्वयं नहीं कह रहा हूं कि यह सब होगा, क्योंकि मैं इन बातों को अपने आप नहीं जान गया। मैं जानता हूं कि यह सब सत्य है क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने मुझे इन बातों की जानकारी कराई है, इसलिए मैं यह साक्षी देता हूं कि यह सब होगा।

अध्याय ८

नफी के उपदेश का क्रम—भ्रष्ट निर्णायकों द्वारा लोगों को उसके विरुद्ध भड़काने का असफल प्रयत्न करना—प्रेरणा द्वारा वह प्रधान निर्णायक की हत्या की घोषणा करता है।

१. जब नफी ने इन शब्दों को कह लिया तब सुनो, भीड़ में (१) गेडियन्दन के गुप्त दल के सदस्य कुछ निर्णायक भी थे, जो क्रोधित हो उठे और लोगों को पुकार कर उसके विरुद्ध बोले: तुम क्यों नहीं इस व्यक्ति को पकड़ कर हमारे पास लाते, जिससे इसके अपराध के लिए हम इसे दोषी ठहरावें?

२. क्यों तुम इस आदमी को इन लोगों और हमारे नियमों की निन्दा करते हुए देख-सुन रहे हो?

३. क्योंकि सुनो, नफी ने उनसे उनके दूषित नियमों के विषय में कहा था; और उसने बहुत-सी अन्य बातें कहीं थीं, जिन्हें लिखा नहीं जा सकता। उसने कोई ऐसी बात नहीं कही जो परमेश्वर की आज्ञाओं के विपरीत हों।

४. और वे निर्णायक उससे क्रोधित हो उठे, क्योंकि उसने उनसे (२) उनके अन्धकार में किए गए कामों के विषय में स्पष्ट कहा; फिर भी उन्होंने उस पर हाथ लगाने का साहस इस भय से नहीं किए कि सम्भवत: लोग उनके विरुद्ध हो जाएं।

५. इसलिए उन्होंने लोगों से कहा: तुम इस आदमी द्वारा हमारी निन्दा किया जाना कैसे सहन करते हो? क्योंकि सुनो, यह हम सभी लोगों को दोषी ठहराता है और यहां तक कहता है कि हम सब दुष्ट हो जाएंगे; और यह भी कहता है कि हमारे (३) महान नगर हमसे छीन लिए जाएंगे और उनमें रहने के लिए हमें स्थान नहीं मिलेगा।

६. और हम यह जानते हैं कि यह असम्भव है; क्योंकि सुनो, हम बलवान हैं और हमारे नगर भी महान हैं, इसलिए हमारे शत्रु हम पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते।

७. और ऐसा हुआ कि उन्होंने नफी के विरुद्ध लोगों को भड़काया और उनमें झगड़ा पैदा कर दिया; क्योंकि उनमें कुछ थे जो कहने लगे: इस व्यक्ति से छेड़-छाड़ मत करो, क्योंकि यह एक भला आदमी है, और अगर हमने पश्चात्ताप नहीं किया, तब जो कुछ इसने कहा है वह अवश्य ही घटेगा।

८. और जिन बातों की गवाही इसने दी है उन सबका न्यायदण्ड हमारे ऊपर अवश्य ही आएगा, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे पापों के विषय में इसने सब सच ही कहा है। और सुनो, हमारे पाप बहुत अधिक हैं; और जैसे वह हमारे पापों को जानता है, उसी तरह जो कुछ हम पर बीतेगा, उसे भी वह जानता है।

९. हां, और सुनो, अगर यह एक भविष्यवक्ता नहीं होता, तब उन सब बातों के विषय में साक्षियां नहीं दे सकता था।

१०. और ऐसा हुआ कि जो लोग नफी को नष्ट करना चाहते थे, वे उन लोगों के भय से उस पर हाथ नहीं उठा सके; इसलिए कुछ लोगों का सहारा पाकर उसने पुन: बोलना आरम्भ किया, और लोगों का झुकाव उसकी ओर देख शेष लोग भयभीत हुए।

११. इसलिए बाध्य होकर उसने उन लोगों से यह कहते हुए बोलना शुरू किया: सुनो, मेरे भाइयो, क्या तुमने यह नहीं सुना कि परमेश्वर ने एक व्यक्ति मूसा को यह शक्ति दी थी कि उसने जब लालसागर पर प्रहार किया, तब सागर

(११) देखो १३, अल० ९. अध्याय ८. (१) देखो २ और ६, २ नफी १०. (२) देखो ६, २ नफी १०. (३) इला० ७:२२.

ईसा से २३ से २० वर्षों पूर्व के मध्य

का जल इधर-उधर दो भागों में बंट गया और इस्राएली जो कि हमारे पूर्वज थे, पार होकर सूखी भूमि पर आ गए और मिश्रियों की सेना सागर के जल में समा गई और डूब कर मर गए?

१२. और अब सुनो, अगर परमेश्वर ने इस व्यक्ति को ऐसी शक्ति दी है तब तुम आपस में बहस क्यों करते हो, और क्यों कहते हो कि मुझे परमेश्वर ने कोई ऐसी शक्ति नहीं दी है जिसके द्वारा मैं यह (४) जान सकता हूं कि अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया, तब तुम पर दण्ड आएगा?

१३. लेकिन सुनो, तुम केवल मेरी बातों को अस्वीकार नहीं करते हो, बल्कि उन सभी बातों को अस्वीकार करते हो, जो कि हमारे पूर्वजों के द्वारा कही गई थीं; और जो बातें उस मूसा द्वारा कही गई थीं, उन्हें भी तुमने अस्वीकार किया है, जिसे इसी प्रकार की शक्ति दी गई थी, हां, जो बातें उसने मसीहा के आने के विषय में कही थीं, उन्हें तुम अस्वीकार करते हो।

१४. क्या उसने इस बात की साक्षी नहीं दी कि परमेश्वर का पुत्र आएगा? और जिस तरह उसने (५) पीतल के सांप को मरुदेश में ऊपर उठाया था, उसी तरह वह जो आएगा, ऊपर उठाया जाएगा।

१५. और जितने लोग उस सर्प को देखेंगे, वे बच जाएंगे, ठीक उसी तरह जितने लोग विश्वास के साथ परमेश्वर के पुत्र को पश्चात्ताप की भावना से देखेंगे वे अनन्त जीवन के लिए बच जाएंगे।

१६. और अब सुनो, केवल मूसा ने ही इन बातों की साक्षी नहीं दी है, परन्तु उसके समय से इब्राहीम के समय तक के सभी पवित्र भविष्य-वक्ताओं ने यही साक्षी दी है।

१७. और हां, इब्राहीम ने उसके आगमन को देखा था और वह प्रसन्नता से भर उठा था और उसने आनन्द मनाया।

१८. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि इब्राहीम ही इन बातों को नहीं जानता था, परन्तु उससे पहले जो परमेश्वर की (६) पुकार से आए थे, वे भी सब जानते थे, हां, जिनकी पुकार उसके पुत्र द्वारा हुई थी वे भी, और यह इसलिए कि जिससे उसके आने से कई सहस्त्र वर्ष पूर्व ही यह दिखाया जा सके कि उद्धार उनके पास भी आएगा।

१९. और अब मैं यह चाहता हूं कि तुम यह जानो कि इब्राहीम के समय से लेकर अनेक भविष्यवक्ता हुए हैं, जिन्होंने इसकी साक्षी दी है। हां, सुनो, भविष्यवक्ता (७) जीनस ने भी साहस के साथ यही कहा था जिसके लिए वह मारा गया था।

२०. और सुनो, (८) जीनक, (९) इसियाज, यशायाह, और यिर्मयाह (यह यिर्मयाह वही भविष्यवक्ता था जिसने कि यरूशलेम के नष्ट होने की भविष्यवाणी की थी) ने भी यही साक्षी दी थी, और हम यह जानते हैं कि यिर्मयाह के कहे अनुसार यरूशलेम नष्ट हो गया था। तब उसकी वाणी के अनुसार परमेश्वर का पुत्र क्यों नहीं आएगा?

२१. और अब क्या तुम इस बात पर भी संदेह करोगे कि यरूशलेम नष्ट हुआ था? क्या तुम यह कहोगे कि जिदिकियाह का वंश (१०) मूलक को छोड़ कर नष्ट नहीं हुआ था? और क्या तुम यह नहीं देखते कि जिदिकियाह का वंश हमारे साथ है, जिन्हें यरूशलेम से बाहर निकाल दिया गया था? लेकिन सुनो, इतना ही सब कुछ नहीं है।

२२. हमारे पिता लेही को यरूशलेम से बाहर निकाल दिया गया था क्योंकि उसने भी इन्हीं बातों की साक्षी दी थी। नफी ने भी यही कहा था और हमारे पूर्वजों ने भी, यहां तक कि वर्तमान समय तक यही कहा गया है; हां, उन्होंने मसीह के आने की गवाही दी है और उसके आगमन की प्रतीक्षा करते हुए आनन्दित हुए हैं।

२३. और सुनो, वह परमेश्वर है, जो उनके साथ है; वह उनके सामने प्रकट हुआ जिससे उसके द्वारा उनका उद्धार हुआ; और भविष्य

(४) इला० ७:२८, २९. (५) अल० ३३:१९-२२. (६) देखो ७, मू० २६, अलमा १, ३:१६, सि० शर्त० ८४:६-१६. (७) देखो ८, नफी १९. (८) देखो ७, १ नफी १९. (९) सि० शर्त० ८४:११-१३. (१०) इला० ६:१०, ओम० १३, जि० १७:२२, २३ ओम० १४.

में घटने वाली बातों के कारण उन्होंने उसे गौरवान्वित किया।

२४. और अब जब कि तुम इन बातों को जानते हो तब तुम इन्हें अस्वीकार नहीं कर सकते और अगर अस्वीकार करते हो तब असत्य बोलते हो; इसलिए इतनी साक्षियों को पाकर भी इन्हें अस्वीकार करके, तुमने पाप किया है; हां, इन बातों की सत्यता के लिए प्रमाणस्वरूप स्वर्ग की और पृथ्वी की भी सभी वस्तुओं को तुमने पाया है।

२५. लेकिन सुनो, तुमने सत्य को त्याग दिया है और अपने पवित्र परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया है; यहां तक कि इस समय भी, उस स्वर्ग में जहां कुछ भ्रष्ट नहीं हो सकता और जहां कोई भी अशुद्ध वस्तु नहीं आ सकती, वहां अपने लिए (११) धन-भंडार रखने के बदले तुम न्याय दिन के लिए परमेश्वर के क्रोध का ढेर लगा रहे हो।

२६. हत्याओं, व्यभिचार और पापों के कारण तुम्हारे सदैव के लिए नष्ट हो जाने का समय आ रहा है; और अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब तुम्हारे पास वह समय शीघ्र आ जाएगा।

२७. हां, सुनो, वह समय तुम्हारे द्वार के पास आ पहुंचा है; तुम न्यायआसन के पास जाकर ढूंढो; तुम्हारा निर्णायक मारा गया है और वह रक्तरञ्जित पड़ा हुआ है; और वह (१२) अपने भाई के द्वारा ही मारा गया है जो स्वयं न्यायाआसन पर बैठना चाहता है।

२८. और सुनो, वे दोनों तुम्हारे (१३) गुप्त दल के हैं जिसका जन्मदाता गेडियन्दन है, और वह दुष्ट है, जो लोगों की आत्माओं को नष्ट करना चाहता है।

अध्याय ९

नफी की बात का सत्य सिद्ध होना—न्याय-आसन के पास प्रधान निर्णायक का मरा पाया जाना—नफी और अन्य पांच व्यक्तियों पर दोषारोपण—उनका निर्दोष सिद्ध होना—हत्यारे का नाम पता चलना।

१. जब नफी ने इन शब्दों को कह लिया तब लोगों में से कुछ लोग दौड़कर न्यायासन गए; जाने वाले (१) पांच व्यक्ति थे जो जाते हुए आपस में बोले:

२. अब हम निश्चयपूर्वक जान सकेंगे कि क्या यह भविष्यवक्ता है और क्या परमेश्वर ने इसे आश्चर्यजनक भविष्यवाणियां करने हमारे पास भेजा है? सुनो, हमें तो विश्वास नहीं होता कि वह भेजा गया है; हम यह भी नहीं विश्वास करते कि वह भविष्यवक्ता है; फिर भी जो कुछ उसने प्रधान निर्णायक के विषय में कहा है, अगर वह सत्य निकला तब हम विश्वास करेंगे कि उसकी अन्य बातें भी सच हैं।

३. और ऐसा हुआ कि वे जितनी तीव्र गति से दौड़ सकते थे दौड़े और न्याय-आसन के पास आए; और सुनो, प्रधान निर्णायक धरती पर (२) अपने रक्त में गिरा पड़ा था।

४. और वे बहुत विस्मित हुए, इतना कि वे धरती पर गिर पड़े; क्योंकि नफी ने प्रधान निर्णायक के विषय में जो कुछ कहा था उस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया।

५. लेकिन अब जबकि उन्होंने देखा, तब विश्वास किया और उन पर यह सोचकर भय छा गया कि नफी ने जो सब न्यायदण्ड के विषय में कहा है, वह सब लोगों के ऊपर अवश्य ही आएगा; इसलिए भय से वे थर-थर कांप कर भूमि पर गिर पड़े।

६. जैसे ही निर्णायक को गुप्त रूप से छुरी भोंक (३) कर उसका भाई मार कर भागा, वैसे ही उसके सेवक दौड़ कर आए और हत्या के विषय में उन्होंने लोगों को बताया।

७. तब लोग (५) न्याय-आसन के पास एकत्रित हुए—और जो पांच (४) व्यक्ति धरती पर गिरे पड़े थे, उन्हें देखकर वे आश्चर्य में आ गए।

८. ये लोग (५) नफी के बगीचे के पास एकत्रित हुई भीड़ के विषय में कुछ नहीं जानते थे; इसलिए वे आपस में एक दूसरे से बोले (६)

(११) देखो ३, इला० ५. (१२) इला० ९:६, २३-३८. (१३) देखो ६, २ नफी १०. अध्य. ९. (१) पद्य ७-९, १२-१८. (२) इला० ८:२७. (३) देखो १२, इला० ८. (४) देखो १. (५) इला० ७:१०, ११:१४. (६) देखो १

इन्हीं लोगों ने प्रधान निर्णायक की हत्या की है, और परमेश्वर ने इन्हें मार गिराया है, जिससे कि ये हमसे बचकर भाग न सकें।

९. और ऐसा हुआ कि उन लोगों ने उन्हें पकड़ कर बांध दिया और कारागार में ले जा कर डाल दिया। और लोगों में यह समाचार फैल गया कि निर्णायक मारा गया है और उसके हत्यारों को पकड़ कर बन्दीगृह में डाल दिया गया है।

१०. और दूसरे दिन मृत प्रधान निर्णायक के अन्तिम संस्कार में भाग लेकर (७) शोक मनाने और निराहार रहने के लिए लोग एकत्रित हुए।

११. इस प्रकार, जो अन्य निर्णायक नफी के बगीचे के पास थे और जिन्होंने उसकी बातों को सुना था, वे भी अन्तिम संस्कार में एकत्रित हुए।

१२. और उन्होंने एकत्रित लोगों से यह कहते हुए जांच की: वे पांच (८) व्यक्ति कहां हैं जिन्हें यह पता लगाने के लिए भेजा गया था कि वे जाकर देखें कि प्रधान निर्णायक मारा गया है या नहीं? और उन्होंने कहा: जिन पांच को तुमने भेजा था, उनके विषय में हम नहीं जानते लेकिन पांच लोग जो हत्यारे हैं उन्हें हमने कारागार में डाल दिया है।

१३. और तब निर्णायकों ने उन पांचों को देखने की इच्छा की; और वे उनके सामने लाए गए। ये वही (९) पांच व्यक्ति थे जिन्हें भेजा गया था; तब निर्णायकों ने जांच करते हुए पूरी घटना जानने की इच्छा प्रकट की और उन्होंने घटना की जानकारी देते हुए कहा:

१४. हम दौड़ते हुए निर्णायक के स्थान तक गए और जब हमने नफी के अनुसार ही सब कुछ पाया तब इतना आश्चर्य हुआ कि हम धरती पर गिर पड़े; और जब हमें होश आया, तब देखा, उन्होंने हमें (१०) कारागार में डाल दिया है।

१५. और इस व्यक्ति की हत्या के विषय में हम नहीं जानते कि किसने की है। हम केवल इतना ही जानते हैं कि तुम्हारी इच्छा के अनुसार हम भागते हुए गए, तो जाकर देखा, सुनो, वह नफी के कहे अनुसार (११) मर चुका था।

१६. तब निर्णायकों ने इस घटना को लोगों को समझाते हुए नफी के विरुद्ध अभियोग लगाते हुए कहा: सुनो, नफी ने इन लोगों के साथ मिलकर निर्णायक की हत्या करवाई है, जिससे यह इस घटना की भविष्यवाणी करके हमारा मत परिवर्तित कर हमें अपने मतानुकूल कर सके और अपने आप को महान, परमेश्वर का चुना हुआ और भविष्य-वक्ता ठहरा सके।

१७. और अब सुनो, हम इस व्यक्ति से पता लगाएंगे, और यह अपना अपराध स्वीकार करेगा और प्रधान निर्णायक के असली हत्यारे का नाम बताएगा।

१८. ऐसा हुआ कि कब्र में गाड़ने के दिन उन (१२) पांचों व्यक्तियों को मुक्त कर दिया गया। उन्होंने नफी के विरुद्ध कहे शब्दों के लिए निर्णायकों को धिक्कारा और बहस करके हरएक ने उनके मुंह बन्द कर दिए।

१९. फिर भी उन्होंने नफी को पकड़ कर बंधवा दिया, और वे उसे भीड़ के सामने लाए, और उससे अनेक प्रकार के प्रश्न पूछ कर उसे बातों में पकड़ना चाहा, जिससे कि वे उसे मृत्यदण्ड दे सकें।

२०. वे उससे बोले: तुम षड्यन्त्रकारी हो; वह कौन सा व्यक्ति है जिसने यह हत्या की है? हमें यह बताओ और अपना अपराध स्वीकार करो; देखो, यह धन है; अगर तुमने उसका नाम हमें बताया और उसके साथ किए अपने षड्यन्त्र को स्वीकार कर लिया, तब हम तुम्हें प्राण दान दे देंगे।

२१. लेकिन नफी ने उनसे कहा: हे मन्द बुद्धि के लोगों, हृदय के संस्कारहीन अन्धो, हठी लोगों, क्या तुम यह जानते हो कि हमारा प्रभु परमेश्वर तुम्हें अपने पापमय पथ पर चलते कितने दिनों तक सहन कर सकता है?

२२. अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब जो महान नाश तुम्हारी प्रतीक्षा में है, उसके कारण तुम्हें विलाप और रुदन आरम्भ करना चाहिए।

२३. तुम कहते हो कि प्रधान निर्णायक

(७) देखो २०, मू० २७. (८) देखो २. (९) देखो १. (१०) अल० ९. (११) इला० ८:२७. (१२) देखो १.

सीजोराम की हत्या करने में, मैं एक व्यक्ति के साथ षड़यन्त्र में साझीदार हूं। लेकिन सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम ऐसा इसलिए कह रहे हो क्योंकि मैंने तुम्हारे जानने के लिए इस बात की साक्षी दी है; हां, इस बात की गवाही के रूप में कि मैं तुम्हारे उन पापों और घृणित कार्यों को जानता हूं जो कि, तुम लोगों के अन्दर हो रहे हैं।

२४. ऐसा करने के कारण तुम कहते हो कि मैंने एक व्यक्ति को सहमति दी है कि यह काम करे; हां, मैंने जो यह चिन्ह दिखाया है, उससे तुम मुझ पर क्रोधित हो उठे हो, और मेरा प्राण नष्ट करना चाहते हो।

२५. और अब सुनो, मैं तुम्हें एक और चिन्ह दिखाऊंगा और देखूंगा कि क्या तुम इसमें भी मुझे नष्ट करने की चेष्टा करते हो?

२६. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम सीएण्टम के घर जाओ जो कि (१३) सीजोराम का भाई है और उससे कहो—

२७. क्या नफी, जो कि भविष्यवक्ता होने का ढोंग रचता है और इन लोगों की बहुत-सी पाप की बातों की भविष्यवाणी करता है, तुम्हारे साथ सहमत हुआ था कि तुम उस सीजोराम की हत्या करो जो कि तुम्हारा भाई था?

२८. और सुनो, वह बोलेगा नहीं।

२९. तब तुम उससे कहना: क्या तुमने अपने भाई की हत्या की है?

३०. और वह भयभीत खड़ा रहेगा और कुछ कह नहीं सकेगा। और सुनो, वह तुमसे यह अस्वीकार करेगा और आश्चर्य करने का ढोंग करेगा; फिर भी वह अपने को निर्दोष कहेगा।

३१. लेकिन सुनो, तुम उसको भली प्रकार देखना और तुम्हें उसके कपड़े के किनारे पर रक्त दिखाई देगा।

३२. जब तुम यह देख लेना तब उससे कहना: यह रक्त कहां से लगा? क्या हम नहीं जानते कि यह तुम्हारे भाई का रक्त है?

३३. तब वह कांपेगा और उसका चेहरा पीला पड़ जाएगा, मानो उस पर मृत्यु आ गई हो।

(१३) देखो १२, इला० ८. (१४) देखो १. अध्याय १०.

३४. तब तुम उससे यह कहना: तुम्हारे इस भय और तुम्हारे चेहरे पर जो पीलापन आ गया है, उसके कारण हम जानते हैं कि तुम दोषी हो।

३५. और तब वह और भी भयभीत हो उठेगा और तुमसे अपना अपराध स्वीकार करते हुए यह और नहीं कहेगा कि उसने यह हत्या नहीं की है।

३६. तब वह तुमसे यह कहेगा कि मैं नफी, इस विषय में कुछ भी नहीं जानता, उसे तो परमेश्वर द्वारा जानकारी कराई गई है। और तब तुम जानोगे कि मैं एक सच्चा व्यक्ति हूं और तुम्हारे पास परमेश्वर द्वारा भेजा गया हूं।

३७. और तब ऐसा हुआ कि उन्होंने नफी के कहे अनुसार जाकर किया। और सुनो जो कुछ उसने कहा था, सब सच निकला; क्योंकि उसके कहे अनुसार उसने पहिले तो अपराध अस्वीकार किया और फिर स्वीकार किया।

३८. और उसे यह सिद्ध करने के लिए लाया गया कि वह स्वयं हत्यारा था और उन पांचों व्यक्तियों को, और नफी को भी मुक्त कर दिया गया।

३९. कुछ नफायटी थे, जिन्होंने नफी के कहने पर विश्वास किया; और कुछ लोगों ने उन (१४) पांचों की साक्षी से विश्वास किया, क्योंकि जब वे कारागार में थे तब उनके साथ से उनका मत परिवर्तित हो गया था।

४०. अब उन लोगों में कुछ नफी को एक भविष्यवक्ता मानने लगे।

४१. और कुछ दूसरे कहते: सुनो वह परमेश्वर है, क्योंकि बिना परमेश्वर के हुए वह इन सब बातों को नहीं जान सकता। क्योंकि सुनो उसने हमारे हृदय की बातों को बता दिया और साथ ही बहुत-सी अन्य बातें बताई हैं; यहां तक कि उसने हमारे प्रधान निर्णायक के असली हत्यारे की जानकारी हमसे कराई है।

अध्याय १०

नफी को भारी शक्ति देने का वचन दे कर प्रभु द्वारा सांत्वना देना—उसका पश्चात्ताप करने का

ईसा से २३-२० वर्षों पूर्व के मध्य

प्रचार करना और दुष्टों को भयंकर न्यायदण्ड की चेतावनी देना।

१. और ऐसा हुआ कि लोगों में इतना अधिक मतभेद हो गया कि लोग इधर-उधर समूहों में बंट कर जिस प्रकार नफी उनमें अकेला खड़ा था, उसी प्रकार उसे अकेला छोड़कर, चले गए।

२. और जो कुछ प्रभु ने दिखाया था, उसपर विचार करता हुआ नफी अपने घर की ओर चला।

३. और जब वह विचार मग्न चला जा रहा था—और नफायटियों के पापों (१) उनके अंधकार में किए जाने वाले गुप्त कार्यों, उनके द्वारा की गई हत्याओं, लूटों और हर प्रकार के पाप कार्यों के कारण उदास था—तब उसे एक वाणी कहते हुए सुनाई दी:

४. जिन कामों को तुमने किया है, उनके लिए तुम धन्य हो नफी; क्योंकि जिस वाणी को मैंने तुम्हें दिया उसे बिना थके तुम्हें इन लोगों को देते हुए मैंने देखा है। तुमने उनसे भय नहीं किया, अपने प्राणों का मोह नहीं किया, और मेरी इच्छा के अनुसार, मेरी आज्ञाओं का पालन किया।

५. और अब, क्योंकि तुमने यह काम इतनी लगन और अथक प्रेम से किया है, तब सुनो मैं तुम्हें सदैव के लिए आशीर्वाद दूंगा; और मैं तुम्हें वचन और कर्म में तथा विश्वास और कार्यों में दृढ़ और शक्ति प्रदान करूंगा; हां, और तुम्हारे कहने के अनुसार ही सभी कुछ होगा, क्योंकि तुम कोई ऐसी इच्छा नहीं करोगे जो मेरी इच्छा के प्रतिकूल हो।

६. सुनो, तुम नफी हो और मैं परमेश्वर हूं। सुनो, मैं अपने स्वर्गदूतों की उपस्थिति में कहता हूं कि तुम्हारी शक्ति इन लोगों के ऊपर होगी और मैं पृथ्वी को (२) अकाल, महामारी और विनाश से इन लोगों के पापों के अनुसार दण्ड दूंगा।

७. सुनो, मैं तुम्हें यह अधिकार देता हूं कि धरती पर तुम जिस पर भी मुहर लगाओगे, उस पर स्वर्ग में भी छाप लग जाएगी; और पृथ्वी पर तुम जो कुछ खोओगे वह स्वर्ग में भी खो जाएगा; और इस तरह तुम्हारी इन लोगों पर शक्ति होगी।

८. इस प्रकार अगर तुम कहोगे कि यह मन्दिर दो टुकड़ों में फट जाए, तब वैसा ही होगा।

९. और अगर तुम इस (३) पर्वत से कहोगे कि गिर कर समतल हो जाओ, तो वैसा ही हो जाएगा।

१०. और सुनो, अगर तुम कहोगे कि परमेश्वर का दण्ड इन लोगों पर पड़े तब भी होगा।

११. और अब सुनो, मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि जाओ और इन लोगों को बताओ कि प्रभु परमेश्वर जो कि सर्वशक्तिमान है, इस प्रकार कह रहा है: अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब तुम्हें विपत्तियों से यहां तक दण्डित किया जाएगा कि तुम (४) नष्ट हो जाओगे।

१२. और सुनो, जब प्रभु ने नफी से इन शब्दों को कहा तब वह अपने घर न जाकर, जगत में इधर-उधर बिखरी हुई भीड़ में लौटा और प्रभु की कही हुई उन बातों का प्रचार लोगों में करने लगा जो कि उसने नफी से कही थीं कि अगर लोगों ने पश्चात्ताप नहीं किया तब उनको नष्ट कर दिया जाएगा।

१३. (५) मुख्य निर्णायक की मृत्यु के विषय में जो चमत्कार नफी ने दिखाया था, उसकी परवाह न करते हुए लोगों ने अपने हृदयों को कठोर बना लिया और प्रभु की वाणी की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

१४. इसलिए नफी ने उनसे प्रभु की यह बात कही: प्रभु कहता है कि अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब तुम्हें (६) विपत्तियों से इतना दण्डित किया जाएगा कि तुम नष्ट हो जाओगे।

१५. जब नफी ने इन शब्दों को लोगों को बताया, तब भी लोगों ने अपने हृदयों को कठोर बनाए रखा; और उसकी बातों को नहीं माना; इसलिए उन्होंने उसकी निन्दा की और उसे पकड़ कर कारागार में डालना चाहा।

१६. लेकिन सुनो, उसके साथ परमेश्वर की शक्ति थी, इसलिए उसे कारागार में डालने

(१) देखो ६, २ नफी १०. (२) इला० ११:४-१८. (३) ए० १२-३०. देखो ३, याकू. मत्ती १७:२०. (४) पद्य १२-१४. (५) इला० ८:२७, ९:२६-३८. (६) पद्य ११.

ईस्वी पूर्व २३-२० वर्षों के मध्य

के लिए पकड़ न सके क्योंकि पवित्रात्मा उसे भीड़ के मध्य में से (७) दूर ले गया।

१७. और ऐसा हुआ कि (८) पवित्र आत्मा से प्रभावित होकर वह एक भीड़ में परमेश्वर की वाणी की घोषणा करते हुए तब तक घूमता रहा जब तक कि उसने उन सभी लोगों में स्वयं या दूसरों को भेज कर घोषणा कर न दी।

१८. और ऐसा हुआ कि लोगों ने उसकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और इतनी कलह आरम्भ हुई कि वे आपस में एक दूसरे के विरुद्ध बंट गए और तलवार से एक दूसरे को मारने लगे।

१९. और इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का एकहत्तरवां वर्ष समाप्त हुआ।

अध्याय ११

भारी अकाल—लोगों का प्रभु की ओर घूमना और फिर से संपन्न होना—मतभेद और तनाव—गेडियन्दन दल का फिर से सक्रिय किया जाना।

१. निर्णायकों के शासन के *बहत्तरवें वर्ष में विवाद इतना अधिक बढ़ा कि सारे देश के सभी नफायटियों में कई बार युद्ध हुए।

२. और यह विनाश और दुष्टता के कर्म इसी (१) गुप्त दल के द्वारा किए जा रहे थे। और यह संघर्ष पूरे वर्ष होता रहा; और *तिहत्तरवें वर्ष भी चालू रहा।

३. और इस वर्ष में नफी ने प्रभु को पुकारते हुए कहा :

४. हे प्रभु, इन लोगों को तलवार से मत नष्ट होने दो, परन्तु देश में (२) अकाल पड़े जिससे इनमें अपने प्रभु परमेश्वर की याद जागे और ये संभवतः पश्चात्ताप करें और आप की ओर लौटें।

५. और नफी के कहे शब्दों के अनुसार ही हुआ। और देश में नफी के सारे लोगों में भारी अकाल पड़ गया। यह अकाल चौहत्तरवें वर्ष में भी रहा। तलवार द्वारा नाश का अन्त तो हुआ, परन्तु अकाल द्वारा नाश बढ़ गया।

६. यह विनाश †चौहत्तरवें वर्ष में भी होता रहा, क्योंकि शाप के कारण धरती सूख गई और अनाज के उपज के मौसम में अनाज उपजा नहीं और सारी धरती शापित हुई, लमनायटियों की भी नफायटियों की भी और देश के अधिक पाप के भाग में लोग सहस्त्रों की संख्या में मरने लगे।

७. जब लोगों ने देखा कि वे अकाल के द्वारा नष्ट हो जाएंगे, तब उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर को और नफी के शब्दों को स्मरण करना आरम्भ किया।

८. और लोग अपने प्रधान निर्णायकों और नेताओं से विनय करने लगे कि वे नफी से ऐसा कहें; सुनो, हम जानते हैं कि तुम परमेश्वर के एक आदमी हो, इसलिए हमारे प्रभु परमेश्वर को पुकार कर कहो कि वह इस अकाल को हमसे हटा ले नहीं तो जो कुछ तुमने (३) हमारे नष्ट होने के विषय में कहा था, वह सब पूरा हो जाएगा।

९. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों ने नफी से उनकी इच्छा के अनुसार शब्द कहे। और जब नफी ने देखा कि लोगों ने पश्चात्ताप कर, अपने आप को मोटे कपड़े पहन कर विनीत बना लिया है, तब उसने प्रभु को फिर से पुकार कर कहा:

१०. हे प्रभु, देखो ये लोग पश्चात्ताप कर रहे हैं, और इन्होंने अपने में से (४) गेडियन्दन दल का इतना सफाया कर दिया है कि वे मिट गए हैं और उनकी गुप्त योजनाओं को धरती में गाड़ दिया है।

११. अब, हे प्रभु, इनकी इस दीनता के कारण क्या आप अपने क्रोध को हटा लेंगे और जिन दुष्टों को आपने मृत्युदण्ड दिया है, उनके मरने से आप अपने क्रोध को शान्त करेंगे?

१२. हे प्रभु, क्या आप अपने क्रोध को लौटा लेंगे, हां, अपने भयंकर क्रोध को, और इस देश में जो अकाल है, उसका अन्त करेंगे?

१३. हे प्रभु, क्या आप मेरी पुकार सुनकर

(७) प्रेरितों के काम ८:३९-४०. (८) पद्य १६. अध्याय ११. (१) देखो ६, २ नफी १०. (२) देखो २, इला० १०. (३) इला० १०:११-१४. (४) देखो ६, २ नफी १०. *ईसा से २० वर्ष पूर्व *ईसा से १९ वर्ष पूर्व †ईसा से १८ वर्ष पूर्व

मेरे कहे अनुसार धरती पर वर्षा कराएंगे, जिससे कि वह उपज के मौसम में अनाज और फल उत्पन्न कर सकें?

१४. हे प्रभु, जब मैंने पुकारा था कि (५) अकाल पड़ने दो जिससे कि तलवार की मार का अन्त हो, तब आपने मेरे शब्दों को सुना था, ठीक उसी तरह मैं जानता हूं कि आप इस बार भी सुनोगे, क्योंकि आपने कहा था कि अगर ये लोग पश्चात्ताप करेंगे तब मैं उनको छोड़ दूंगा।

१५. हां, हे प्रभु, आप देखते हैं कि इन लोगों ने अकाल और महामारी के कारण और उनका जो नाश हुआ है, उसके कारण पश्चात्ताप किया है।

१६. और अब, हे प्रभु, क्या आप अपने क्रोध को हटा कर देखेंगे कि ये लोग आपकी आराधना करते हैं या नहीं? अगर हां, तब हे प्रभु, अपने कहे अनुसार आप इनको आशीर्वाद देंगे?

१७. और ऐसा हुआ कि *छिहत्तरवें वर्ष में प्रभु ने अपने क्रोध को शान्त किया और धरती पर जल बरसाया और इतनी वर्षा हुई कि धरती पर फिर से वृक्षों के फलने के मौसम में फल लगे और अनाज के उपजने के समय में अनाज उपजा।

१८. और परमेश्वर के लिए कृतज्ञता में लोगों ने आनन्द मनाया और यशगान गाए और सारा देश आनन्द से भर गया। उन्होंने नफी को नाश करने का प्रयत्न भी त्याग दिया, और वे उसे एक महान भविष्यवक्ता और परमेश्वर द्वारा (६) भारी शक्ति और अधिकार दिया हुआ परमेश्वर का आदमी मानने लगे।

१९. और देखो, लेही, उसका भाई, धार्मिक मामलों में उसकी तुलना में एक बिन्दु समान भी नहीं था।

२०. इस प्रकार नफी के लोग देश में फिर से प्रगति करने लगे और नष्ट हुए स्थानों को फिर से बसाने लगे और उनकी संख्या में वृद्धि होने लगी और वे सारे देश भर में फैल गए (७) उत्तर में भी और (८) दक्षिण में भी, पश्चिम के सागर से लेकर पूरब के सागर तक।

२१. और छिहत्तरवां वर्ष शान्ति से समाप्त हुआ। सतहत्तरवां वर्ष भी शान्ति से आरम्भ हुआ और गिरजे का प्रसार सारे देश भर में हुआ। अधिकांश नफायटी और लमनायटी भी गिरजे के अनुयायी थे और उन्हें देश में अति शान्ति प्राप्त हुई। इस प्रकार सतहत्तरवां वर्ष समाप्त हुआ।

२२. अठहत्तरहवें वर्ष में भविष्यवक्ताओं द्वारा दिए गए सिद्धान्त की कुछ बातों पर थोड़े से विवादों को छोड़कर शान्ति बनी रही।

२३. परन्तु †उन्हत्तरवें वर्ष में बहुत अधिक विवाद होने आरम्भ हुए। परन्तु ऐसा हुआ कि नफी, लेही और उनके बन्धु जो सिद्धान्त के उन विषयों की सत्यता को जानते थे और जो प्रतिदिन ज्ञान-प्रकाश पाते थे, उन्होंने लोगों में इतना अधिक प्रचार किया कि उसी वर्ष उन्होंने उन विवादों का अन्त कर दिया।

२४. और ऐसा हुआ कि निर्णायकों के शासन के ‡अस्सीवें वर्ष, में कुछ विद्रोही जो नफी के लोगों से अलग होकर कुछ वर्ष पूर्व लमनायटियों में जाकर मिल गए थे और जिन्होंने लमनायटी नाम भी ग्रहण कर लिए थे, उन्होंने और उनके साथ कुछ असली लमनायटी विद्रोहियों द्वारा भड़का कर क्रोधित कर दिए गए थे, अपने बन्धुओं के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया।

२५. वे हत्यायें करते और डाका डाल पर्वतों में, जंगलों में या गुप्त स्थानों में भाग जाते और छिपे रहते जिससे उन्हें पकड़ा नहीं जा सकता था; प्रतिदिन उनकी संख्या में वृद्धि होती थी और जितने भी मतभेदी होते थे, वे सब उनसे जा मिलते थे।

२६. और थोड़े समय के अन्दर ही इन लुटेरों का दल बढ़कर बहुत अधिक लोगों का दल हो गया और उन्होंने गेडियन्दन की सारी (९) योजनाओं का पता लगा लिया; और इस प्रकार वे गेडियन्दन के डाकू बन गए।

२७. इन डाकूओं ने भारी आतंक फैला रखा

(५) देखो २, इला० १०. (६) इला० १०:५-११. (७) देखो १६. (८) देखो १४, अल० ४६. (९) देखो ६, २ नफी १०.

†ईसा से १७ वर्ष पूर्व

‡ईसा से १२ वर्ष पूर्व

था; इनका आतंक नफी और लमनायटी लोगों के ऊपर भी था, जहां वे भारी हानि पहुंचा रहे थे।

२८. विनाश के इस कार्य को रोकना आवश्यक हो गया था; इसलिए बलवान लोगों की एक सेना को इन्हें खोज कर नष्ट करने के लिए वनों और (१०) पर्वतों में भेजा गया।

२९. लेकिन सुनो, इसी वर्ष इस सेना को अपने देश वापस पीछे हटा दिया गया। इस प्रकार नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का अस्सीवां वर्ष समाप्त हुआ।

३०. *एक्यासीवें वर्ष के आरम्भ में उन्होंने फिर से इन डाकुओं के विरुद्ध चढ़ाई की और बहुत से डाकुओं को मार डाला, परन्तु उनकी भी बहुत बड़ी हानि हुई।

३१. और डाकुओं की संख्या बहुत अधिक होने के कारण उन्हें वनों और जंगलों में से अपने स्थानों को वापस लौटना पड़ा।

३२. इस प्रकार यह वर्ष समाप्त हुआ। और डाकू बढ़ते और बलवान होते गए और यहां तक हुआ कि सारी नफायटी और पूरी लमनायटी सेनाओं की अवहेलना करने लगे; और सारे देश भर में उनकी लूटमार का आतंक छा गया।

३३. क्योंकि उन्होंने देश के कई भागों पर आक्रमण किया और लोगों की बहुत बड़ी हानि की और बहुतों को मार डाला और बन्दी बनाकर जंगल में ले गए, जिनमें विशेषकर स्त्रियां और बच्चे थे।

३४. लोगों के पापों के कारण उनके सिर पर जो यह भारी विपत्ति आई थी, उसने उन्हें उनके प्रभु परमेश्वर की याद में जागृत किया।

३५. इस प्रकार निर्णायकों के शासन का एक्यासिवां वर्ष समाप्त हुआ।

३६. बयासिवें वर्ष में उन्होंने पुनः अपने प्रभु परमेश्वर को भूलना आरम्भ कर दिया और तिरासिवें वर्ष में वे अपने पाप कर्मों में अधिक बढ़ने लगे और चौरासिवें वर्ष में भी उन्होंने अपना कोई सुधार नहीं किया।

३७. और ऐसा हुआ कि †पचासिवें वर्ष में वे अपने अहंकार और पापों में अधिकाधिक बढ़ने लगे और इस प्रकार वे नाश की ओर अग्रसर हो चले।

३८. इस तरह पचासिवां वर्ष भी समाप्त हुआ।

अध्याय १२

मनुष्य की निर्बलता और परमेश्वर की श्रेष्ठता और शक्ति—धन्य हैं पश्चात्ताप करने वाले—मनुष्यों का न्याय उनके कर्मों के अनुसार।

१. हम इस प्रकार यह देख सकते हैं कि मानव संतान के हृदय में कितनी असत्यता है और उनका हृदय कितना अस्थिर है; और प्रभु अपनी अपरिमित उदारता से, उनको आशीर्वाद देकर प्रगति कराता है, जो उस पर विश्वास करते हैं।

२. हां, हम देख सकते हैं कि वह तत्काल अपने लोगों की प्रगति उनकी खेतीबारी पशु-पक्षी (१) सोना, चांदी और हरएक प्रकार की मूल्यवान वस्तुओं और कलाओं में वृद्धि कराता है; उनके प्राणों की रक्षा करता और शत्रुओं के हाथों से उनकी रक्षा करता है; उनके शत्रुओं के हृदयों में दया उत्पन्न करता है जिससे वे उनके विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं करते; अर्थात् अपने लोगों के हित और आनन्द के लिए सभी कुछ करता है। और ऐसे ही आनन्द के होने पर लोग अपने हृदयों को कठोर बनाकर अपने प्रभु परमेश्वर को भूल बैठते हैं और उस पवित्र आस्था को पैरों तले कुचलते हैं—और यह उनके सुख और अत्यधिक सौभाग्यवान होने के कारण होता है।

३. इस तरह हम देखते हैं कि प्रभु अपने लोगों को अनेक कष्टों, भय, मृत्यु, अकाल और अनेक प्रकार के रोगों के द्वारा शुद्ध करता है अन्यथा वे उसे स्मरण नहीं रखते।

४. ओह! मानव सन्तान कितनी बुद्धिहीन, अहंकारपूर्ण, दुष्ट और कुटिल होती है, और पाप कर्म करने में कितनी शीघ्रता और अच्छे कर्म करने में कितना विलम्ब करती है; हां, बुरे की बातों को कितनी जल्दी सुन लेती है और

(१०) पद्य २५. (१) देखो १४, १ नफी १८.

*ईसा से ११ वर्ष पूर्व †ईसा से ७ वर्ष पूर्व

व्यर्थ की सांसारिक वस्तुओं पर मन लगाती है।

५. हां, मानव वंशज कितनी शीघ्रता के साथ अहंकार में फूल उठते हैं और अपने मुंह मियां मिट्ठू बनते और हरएक प्रकार के पाप करने लगते हैं; और अपने प्रभु परमेश्वर को स्मरण करते, उसकी सम्मतियों पर कान देने और विवेकमय पथ पर चलने में कितना आलस करते हैं।

६. सुनो, वे इच्छा नहीं रखते कि प्रभु, उनका परमेश्वर, जिसने उनको बनाया है, उनको आज्ञा दे और शासन करे; उसके महान उपकारों और उन पर की गई दया की भी वे परवाह नहीं करते और उसकी सम्मतियों को बिन्दु समान समझते हैं और यह नहीं चाहते कि वह उनका पथ-प्रदर्शक हो।

७. ओह, मानव वंशज कितने महत्वहीन हैं; हां, वे धरती की धूल से भी कम महत्व के हैं।

८. क्योंकि सुनो, धरती उसकी आज्ञा पर इधर-उधर फट कर बंट जाती है।

९. हां, उसकी वाणी को सुनकर पहाड़ियां और पर्वत कांपते और डोल उठते हैं।

१०. और उसकी वाणी की शक्ति से वे टूट कर समतल हो जाते और यहां तक कि खाई के समान तक हो जाते हैं।

११. उसकी वाणी की शक्ति से सारी पृथ्वी हिल उठती है।

१२. हां, उसकी वाणी की शक्ति से, आधार शिला तक अपने मध्य से हिल उठती है।

१३. और अगर वह पृथ्वी से चलने को कहता है, तब वह चलने लगती है।

१४. अगर वह पृथ्वी से कहे कि—तुम वापस पीछे लौट जाओ जिससे (२) दिन कई घण्टों का लम्बा हो जाए—तब ऐसा ही होगा।

१५. इस तरह उसके कहे शब्द के अनुसार धरती पीछे लौट जाती है और लोगों को ऐसा मालूम पड़ता है कि सूरज स्थिर है; हां, और सुनो, यह ऐसा ही है क्योंकि निश्चय ही धरती चलती है न कि सूरज।

१६. और सुनो, वह (३) अगर गहरे समुद्र से कहे कि सूख जा, तब वह सूख जाएगा।

१७. अगर वह इस पर्वत से कहे—वहां से (४) उठकर उस नगर पर जा कर गिर पड़ जिससे वह ढक जाए—तब ऐसा ही होगा।

१८. और अगर कोई व्यक्ति धरती में धन छुपा दे और अगर प्रभु कहे—वह (५) शापित हो, तब उस धन को छुपाने वाले व्यक्ति के पापों के कारण वह धन शापित हो जाएगा।

१९. अगर प्रभु कहे—तुम शाप-ग्रसित हो जाओ जिससे कि इस समय से सदा के लिए कोई पा न सके—तब सुनो, कोई भी व्यक्ति उस समय से लेकर कभी भी उसे पा न सकेगा।

२०. और अगर प्रभु एक आदमी से कहे—अपने पापों के कारण तुम (६) सदैव के लिए शापित हो जाओ—तब यह ऐसा ही होगा।

२१. और अगर प्रभु कहे—तुम अपने पापों के कारण मेरी (७) उपस्थिति से अलग हटा दिए जाओगे तब ऐसा ही किया जाएगा।

२२. और धिक्कार है उसपर, जिससे प्रभु यह कहे कि उसके पाप उसे नष्ट करेंगे और उसे बचाया नहीं जा सकेगा; इसलिए पश्चात्ताप की व्यवस्था दी गई है जिसके द्वारा मनुष्य को बचाया जा सके।

२३. इसलिए धन्य हैं वे जो पश्चात्ताप करेंगे और अपने प्रभु परमेश्वर की वाणी को सुनेंगे; क्योंकि यही वे लोग होंगे जो बचा लिए जाएंगे।

२४. और परमेश्वर अपनी परिपूर्णता से लोगों को पश्चात्ताप में लाए और वे भले कर्म करें और अपने कर्मों के लिए उन्हें उसकी दया प्राप्त हो।

२५. और मैं चाहता हूं कि सभी मनुष्य बच जाएं। परन्तु हम पढ़ते हैं कि उस अन्तिम महान दिन बहुत से ऐसे लोग होंगे, जिन्हें (८) परमेश्वर की उपस्थिति से अलग फेंक दिया जाएगा।

२६. हां, उन्हें (९) अनन्त दुर्गति में छोड़ दिया जाएगा जो इन शब्दों को सत्य सिद्ध करेगा; जिन्होंने अच्छे कर्म किए हैं, उन्हें अनन्त जीवन

(२) यहो० १०:१२-१४, २ राजा २०:८-११, यशा० ३८:७-८, देखो २७, अल० ३०. (३) यशा० ४४:२७, ५१:१०. (४) ३ नफी ८:१०, २५, ९:५, ६, ८. (५) पद्य १६, इला० १३:१७-२३, ३०-३७, मार० १:१७-१९, २:१०-१४ ए० १४:१, २. (६) देखो २ १, या० ६. (७) २५, २६ देखो २, १ नफी २. (८) देखो ७ (९) देखो ७, १३ या० ६.

मिलेगा; और जिन्होंने बुरे कर्म किए हैं, उन्हें अनन्त (१०) काल के लिए अधोलोक मिलेगा। और यह इसी प्रकार है। आमीन।

लमनायटी सामुएल का नफायटियों को भविष्य-वाणी बताना।

अध्याय १३ से १५

अध्याय १३

नगर की दीवाल पर से सामुएल का भविष्यवाणी करना—न्याय की तलवार का चौथी पीढ़ी पर पड़ने की चेतावनी—धार्मिकों के कारण नफायटी नगरों को बचा छोड़ा जाना—भूमि को शाप दिया जाना—नाशवान सम्पत्ति।

१. ऐसा हुआ कि *छियासिवें वर्ष में भी नफायटी लोग पापमय जीवन ही बिता रहे थे, हां, अति पापमय जीवन जबकि लमनायटी कड़ाई के साथ परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन (१) मूसा के नियम के अनुसार कर रहे थे।

२. और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष सामुएल नाम का एक लमनायटी (२) ज़राहेमला देश में आकर लोगों को उपदेश देने लगा। और ऐसा हुआ कि उसने कई दिनों तक पश्चात्ताप करने पर प्रचार किया, परन्तु लोगों ने उसको बाहर भगा दिया और वह अपने देश वापस लौट जाना चाहता था।

३. लेकिन सुनो, प्रभु की आवाज ने उसको फिर से वापस लौटकर, जो कुछ उसके हृदय में आए उसकी भविष्यवाणी करने को उससे कहा।

४. और ऐसा हुआ कि लोग नहीं चाहते थे कि वह नगर में प्रवेश करे, इसलिए वह नगर की दीवाल के ऊपर चढ़ गया और अपने हाथ को फैलाकर ऊंची आवाज में उन बातों की भविष्य-वाणी करने लगा, जो उसके हृदय में प्रभु ने दी थी।

५. और उसने कहा: सुनो, मैं सामुएल जो कि एक लमनायटी हूं, प्रभु की उन बातों को बोल रहा हूं जिन्हें प्रभु मेरे हृदय में दे रहा है; सुनो, वह मेरे हृदय में इन लोगों से यह कहने को कह रहा है कि न्याय की तलवार इन लोगों के ऊपर लटक रही है; और (३) चार सौ वर्ष पूरे नहीं होंगे जबकि न्याय की तलवार इन लोगों के ऊपर गिरेगी।

६. हां, भारी विनाश इन लोगों की प्रतिक्षा कर रहा है, और निश्चय ही वह इन लोगों के ऊपर आएगा और इनको पश्चात्ताप और उस प्रभु ईशु मसीह पर विश्वास के अलावा कुछ भी बचा न सकेगा, जो कि निश्चय ही जगत में आएगा और अपने लोगों के लिए अनेकों प्रकार के कष्ट झेलेगा और मारा भी जाएगा।

७. और सुनो, प्रभु के एक दूत ने मुझे बताया और उसने मेरी आत्मा को हर्ष का समाचार दिया है। और इस बात की घोषणा तुमसे करने के लिए मुझे भेजा गया है जिससे कि तुम भी उस आनन्दमय समाचार को सुनो, परन्तु तुम मुझे (४) स्वीकार नहीं करना चाहते।

८. इसलिए प्रभु इस तरह कह रहा है: नफायटी लोगों के हृदयों की कठोरता के कारण, अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया, तब मैं अपनी वाणी को उनके पास से वापस ले लूंगा और अपनी आत्मा को भी वापस लौटा लूंगा और उनकी कोई परवाह न करके उनके बन्धुओं के हृदयों को उनके विपरीत कर दूंगा।

९. और (५) चार वर्ष नहीं बीतने पाएंगे, जबकि मैं ऐसा करूंगा कि वे पीटे जाएंगे; हां, मैं उनके पास तलवार, अकाल और महामारी को लेकर आऊंगा।

१०. हां, मैं उनके पास अति क्रोधित हो आऊंगा, और तुम्हारी चौथी पीढ़ी के जो लोग अपने शत्रुओं से बचे रहेंगे, वे तुम्हारा सर्वनाश देखेंगे; और प्रभु कहता है कि अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब यह निश्चय ही होगा और विनाश तुम्हारी चौथी पीढ़ी पर होगा।

११. और प्रभु यह भी कहता है कि अगर तुम पश्चात्ताप करके प्रभु की ओर लौटे, तब मैं अपना क्रोध लौटा लूंगा और धन्य हैं वे लोग जो पश्चात्ताप करते हैं और मेरी ओर लौटते हैं

(१०) देखो १३, या० ६. अध्याय १३. (१) देखो १५, २ नफी २५. (२) ओम० १३. (३) देखो ४. १ नफी १२. (४) पद्य २. (५) देखो ४, १ नफी १२.

*ईसा से ६ वर्ष पूर्व

और सन्ताप पड़े उन पर जो पश्चात्ताप नहीं करते।

१२. हां, (६) सन्ताप पड़े इस महानगरी ज़राहेमला पर, क्योंकि सुनो, जो लोग यहां धार्मिक हैं, उन्हीं के कारण यह बचा हुआ है; और प्रभु कहता है कि मैं देख रहा हूं कि इस नगर के अधिकांश निवासी मुझसे विमुख होकर अपने हृदयों को कठोर बना लेंगे, इसलिए सन्ताप पड़े इस नगर पर।

१३. लेकिन धन्य हैं वे लोग जो पश्चात्ताप करेंगे, क्योंकि मैं उन्हें बचा लूंगा। लेकिन सुनो, धार्मिक लोग जो इस नगर में हैं, वे अगर नहीं होते तो मैं स्वर्ग से अग्नि भेज कर इसे नष्ट करवा देता।

१४. लेकिन सुनो, धार्मिक लोगों के कारण मैं इसे बचा छोड़ देता हूं। लेकिन वह समय आता है जबकि तुम धार्मिकों को बाहर निकाल दोगे, तब तुम नाश के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो जाओगे; हां, जो पाप और घृणित कार्य यहां होते हैं, उनके लिए सन्ताप पड़ेगा इस महानगरी पर।

१५. और (७) गिडियन नगर में जो पाप और घृणित कर्म होते हैं, उनके लिए उस पर सन्ताप पड़े।

१६. और नफायटियों के अधिकार में आस-पास जो नगर हैं, उन पर भी उनकी दुष्टताओं और पापों के लिए सन्ताप पड़े।

१७. सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि देश में जो लोग हैं उनके पापों और घृणित कार्यों के लिए देश पर (८) शाप पड़ेगा।

१८. और सर्वशक्तिमान प्रभु, हां, हमारा महान और सच्चा परमेश्वर कहता है कि जो भी कोई धरती में धन छुपाएगा वह फिर उसे देश के शाप के कारण पाएगा नहीं, केवल धार्मिक को छोड़ कर, जो प्रभु के काम के लिए धन छुपाता है।

१९. प्रभु कहता है कि मैं चाहता हूं कि लोग धन को मेरे लिए छुपाएं; और शापित होंगे वे लोग जो अपने धन को मेरे निमित्त नहीं छुपाते; क्योंकि मेरे निमित्त धन छुपाने वाले केवल धार्मिक लोग होते हैं, दूसरे नहीं; और जो लोग मेरे निमित्त धन नहीं छुपाते वे शापित होते हैं और उनका धन भी (९) शापित होता है और धरती के शाप के कारण उस धन को कोई भी पा न सकेगा।

२०. और वह दिन आएगा जबकि लोग अपने धन को छुपाएंगे क्योंकि उनका मन उनके धनों पर लगा हुआ है; और जबकि उनका हृदय उनके धनों पर लगा हुआ है, इसलिए जब वे अपने शत्रुओं से बचने के लिए भागेंगे, तब मैं उनके धनों को छुपा दूंगा; जब वे मेरे लिए अपने धन को नहीं छुपाएंगे तब वे और उनका धन दोनों ही शापित होंगे और उसी दिन वे मारे जाएंगे, यह प्रभु का कहना है।

२१. इस महान नगरी के लोगों, सुनो, और मेरी बातों पर कान दो; हां, उन शब्दों को सुनो जिन्हें प्रभु कह रहा है; क्योंकि वह कहता है कि तुम अपने धन के कारण शापित हो, और तुम्हारा धन इसलिए शापित है, क्योंकि तुमने अपने हृदय को अपने धन पर लगा रखा है और जिसने उस धन को तुम्हें दिया है, उसके शब्दों को तुम सुनते नहीं।

२२. जो कुछ तुम्हें प्रभु परमेश्वर के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ है, उसके लिए तुम प्रभु परमेश्वर को याद नहीं रखते, परन्तु तुम अपना धन सदा याद रखते हो; और न उसे धन्यवाद देते हो; प्रभु पर तुम्हारा हृदय नहीं लगा है बल्कि अहंकार, घमण्ड, ईर्ष्या, डाह, जलन, उपद्रव, दुर्भावना, अत्याचार, हत्या और हर प्रकार के कुकर्म से भरा है।

२३. इसी कारण से प्रभु परमेश्वर ने देश को शाप दिया, और तुम्हारे धन को भी शाप दिया, और यह सब तुम्हारे पापों के कारण ही हुआ।

२४. इन लोगों पर सन्ताप पड़े क्योंकि यह वह समय आ गया है जबकि तुम (१) भविष्य-वक्ताओं को बाहर निकाल देते हो, उनकी हंसी करते हो, उन पर पथराव करते हो, उनको मार डालते हो और हर प्रकार से उन्हें सताते हो, जैसे प्राचीन समय में लोग करते थे।

२५. और जब बातें करते हो तब कहते हो: अगर हम अपने पूर्वजों के युग में होते, तो हम भविष्यवक्ताओं को मारते नहीं; हम न उन पर

(६) ३ नफी ८:८, २४, ९:३. (७) देखो १३, अल० २. (८) देखो ५, इला० १२. (९) देखो ५, इला० १२. (१०) पद्य २३, इला० १६:६.

पथराव करते और न उन्हें बाहर निकालते।

२६. लेकिन सुनो, तुम तो उनसे भी बुरे हो; चेतन प्रभु यह जानता है कि जब कोई भविष्यवक्ता तुम्हारे पास आकर प्रभु की वाणी की घोषणा करता है जो कि तुम्हारे पापों और दुष्टता की बातों की साक्षी देता हो, तब तुम उस पर क्रोधित हो उठते हो, और उसे बाहर निकाल देते हो; और हर तरह से उसको नष्ट करने की चेष्टा करते हो; और कहोगे कि वह झूठा भविष्यवक्ता पापी, शैतान का अनुगामी है, क्योंकि उसने तुम्हारे किए कर्मों को बुरा कहा था।

२७. लेकिन सुनो, अगर तुममें कोई व्यक्ति आकर कहे कि तुम यह करो, इसमें कोई पाप नहीं है, तुम वह करो, उसके करने से तुम दण्ड नहीं पाओगे और अगर वह कहे: अपने हृदय के अहंकार के अनुसार चलो; अपनी आंखों के घमण्ड के अनुसार चलो और वह सब करो जो तुम्हारे हृदय की चाह हो—हां, अगर कोई ऐसा आकर कहे, तब तुम उसे ग्रहण करोगे और कहोगे कि वह एक भविष्यवक्ता है।

२८. हां, तुम उसे ऊपर उठाओगे और अपनी वस्तुओं में से उसे दोगे; तुम अपने-अपने चांदी में से उसे दोगे और उसे मूल्यवान वस्त्र पहिनाओगे; और उसके द्वारा चिकनी-चुपड़ी बातों को कहने और यह कहने से कि सब कुछ ठीक है, तुम उसकी त्रुटियों को नहीं देखोगे।

२९. ओह! दुष्ट और हठी पीढ़ी; निर्दयी और कठोर लोगों, तुम कितने दिनों तक सोचते हो कि प्रभु तुम्हें सहन करता रहेगा? तुम स्वयं कब तक मन्दबुद्धि और अन्धे पथ-प्रदर्शकों का नेतृत्व सहन करते रहोगे? तुम कितने दिनों तक प्रकाश के स्थान पर अन्धकार को चुनते रहोगे?

३०. हां, सुनो, प्रभु का क्रोध तुम्हारे विरुद्ध जाग चुका है; सुनो, तुम्हारे पापों के कारण उसने देश को (११) शापित किया है।

३१. और वह समय भी निकट आ रहा है जबकि वह तुम्हारे धनको शापित करेगा, जिससे कि वह ऐसा (१२) चंचल बन जाएगा, कि तुम उसे पकड़ कर रख नहीं सकोगे।

३२. और अपने गरीबी के दिनों में प्रभु को पुकारोगे; परन्तु तुम व्यर्थ में ही पुकारोगे क्योंकि तुम्हारे बुरे दिन तुम्हारे ऊपर आ चुके होंगे, और उनको बाहर न निकाला होता। हां, उस दिन तब तुम उस दिन रोओ और चिल्लाओगे, यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है।

३३. तुम पछताओगे कि ओह! मैंने (१३) पश्चात्ताप किया होता और भविष्यवक्ताओं की हत्या न की होती, उन पर पथराव न किया होता और उनको बाहर न निकाला होता। हां, उस दिन तुम कहोगे: ओह जब प्रभु परमेश्वर ने हमें धन दिया था, अगर उस समय हम उसे याद रखते तब वह खोने के लिए चंचल न बनता; क्योंकि सुनो, हमारा धन हमारे पास से चला गया।

३४. सुनो, हम यहां एक हथियार धरते हैं और उनको बाहर न निकाला होता। हां, उस दिन हमारी तलवार उसी दिन हमसे ले ली जाती है जिस दिन हम उसे युद्ध के लिए लेते हैं।

३५. हां, हमने अपने धन को छुपाया और वह खो गया और धरती के शाप के कारण हुआ।

३६. ओह, जब प्रभु की वाणी हमारे पास आई थी, तभी हमें पश्चात्ताप करना चाहिए था; क्योंकि सुनो, धरती के शाप के कारण सभी (१४) वस्तुएं चंचल बन चुकी हैं और हम उन्हें पकड़ कर रख नहीं सकते।

३७. सुनो, हम (१५) पिशाच से घिरे हुए हैं, हां, हम उसके दूतों द्वारा घिरे हुए हैं जिसने हमारी आत्माओं को नष्ट करना चाहा था। हमारे पाप महान हैं। हे प्रभु, क्या आप अपने क्रोध को लौटा नहीं सकते? और उन दिनों यही हमारी भाषा होगी।

३८. लेकिन सुनो तुम्हारा (१६) परीक्षाकाल समाप्त हो चला; तुम अपने मुक्ति दिन को तब तक टालते रहे, जब तक कि बहुत देर न हो गई और तुम्हारा (१७) नष्ट होना निश्चित हो गया; क्योंकि तुम अपने जीवन भर उसी की खोज करते रहे जिसे तुम पा नहीं सकते थे, तुम पाप करते हुए

(११) देखो ५, इला० १२. (१२) पद्य ३३-३७, मार० १:१७-१९, देखो ५, इला० १२. (१३) मार० २:१०-१५. (१४) देखो १२. (१५) मार० २:१०. (१६) मार० २:१३-१५. (१७) मार० २:१५.

आनन्द की खोज करते रहे जो कि हमारे अनन्त नायक की (१८) धार्मिकता के स्वभाव के प्रतिकूल है।

३६. हे इस देश के लोगों, मैं चाहता हूं कि तुम मेरी बातों को सुनो। और मैं प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर का क्रोध तुम्हारे ऊपर से हट जाए और तुम पश्चात्ताप करके बच जाओ।

अध्याय १४

लमनायटी सामुएल का मसीह के विषय में भविष्यवाणी करना—पांच वर्षों में मसीह के जन्म होने के संकेत और उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी।

१. ऐसा हुआ कि लमनायटी सामुएल ने अन्य बहुत-सी बातों की भविष्यवाणी की जिन्हें लिखा नहीं जा सकता।

२. और उसने उनसे कहा: सुनो, मैं तुम्हें उस समय एक संकेत दूंगा, जबकि (१) पांच वर्षों में परमेश्वर का पुत्र उन लोगों का उद्धार करने के लिए आएगा जो उसके नाम पर विश्वास करेंगे।

३. और उसके आने के समय में मैं जो संकेत दूंगा वह यह होगा कि उसके आने से पूर्व (२) आसमान में इतना तेज प्रकाश होगा और रात का अन्धकार इतना मिट जाएगा कि एक व्यक्ति को वह दिन के समान प्रतीत होगी।

४. इसलिए एक दिन और एक रात, और फिर एक दिन, एक ही दिन के समान लगेंगे, मानो रात हुई ही नहीं; और यही तुम्हारे संकेत के लिए होगा; क्योंकि तुम सूर्योदय और सूर्यअस्त जानोगे; इसलिए वे निश्चय से जानेंगे कि दो दिन और एक रात होगी; फिर भी रात अन्धकारमय नहीं होगी; और उसके जन्म से पूर्व रात होगी।

५. और सुनो, (३) एक नया तारा निकलेगा, जैसा कि तुमने पहिले कभी देखा भी न होगा; और यह भी तुम्हारे लिए एक संकेत होगा।

६. इतना ही नहीं, आसमान में और भी बहुत (४) से संकेत और आश्चर्य होंगे।

७. और ऐसा होगा कि तुम चकित हो इतने आश्चर्य में पड़ जाओगे कि तुम (५) धरती पर गिर पड़ोगे।

८. और जो भी कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करेगा, वह अनन्त जीवन प्राप्त करेगा।

९. और सुनो, प्रभु ने अपने दूत के द्वारा मुझे (६) आज्ञा दी कि मैं इन बातों को आकर तुम्हें बताऊंगा; हां, उसने मुझे आज्ञा दी है कि इन बातों की भविष्यवाणी करूं; हां, उसने मुझसे कहा: इन लोगों से पुकार कर कहो कि पश्चात्ताप करें और प्रभु के पथ को तैयार करें।

१०. एक लमनायटी होने के कारण, और उन शब्दों को कहने के कारण, जिन्हें कहने के लिए प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी, और जो तुम्हारे प्रति कठोर थे, तुम मुझ से क्रोधित हो उठे हो और मुझे नष्ट करना चाहते हो, और मुझको अपने में से (७) निकाल बाहर किया है।

११. तुम मेरी बातों को सुनो, इसी उद्देश्य से मैं इस नगर की (८) दीवाल के ऊपर चढ़ आया हूं कि जिससे तुम परमेश्वर के उन न्यायदण्डों को जानो जो कि तुम्हारे पापों के कारण तुम्हारी प्रतीक्षा में है; और तुम पश्चात्ताप की शर्तों को भी जानो।

१२. और परमेश्वर के पुत्र, स्वर्ग और धरती के (९) पिता, आरम्भ से लेकर सभी वस्तुओं के रचयिता यीशु मसीह के आगमन को भी जान सको; और उसके आने के संकेतों को भी इस उद्देश्य से जान जाओ कि तुम उसके नाम पर विश्वास करने लगो।

१३. और अगर तुम उसके नाम पर विश्वास करने लगोगे, तब तुम अपने सभी पापों पर पश्चात्ताप करोगे, जिसके कारण तुम उसकी योग्यता के द्वारा अपने पापों के लिए क्षमा प्राप्त कर सकोगे।

१४. और फिर सुनो, मैं तुम्हें एक और संकेत देता हूं, उसकी मृत्यु का संकेत।

१५. क्योंकि निश्चय ही उसकी मृत्यु होगी जिससे कि मुक्ति आ सके; हां, मृत्यु उसके योग्य है और मृतकों को (१०) पुनर्जीवित करने के लिए

(१८) अल० ४१:१०-१२ अध्याय १४. (१) ३ नफी १:४-२१. (२) पद्य ४, ३ नफी १:८, १३-२०. (३) ३ नफी १:२१. (४) ३ नफी १:२०, २:१-३. (५) ३ नफी १:१६, १७. (६) इला० १३:३, ७. (७) इला० १३:२. (८) इला० १३:४. (९) मू० ३:८, १५:४, अल० ११:३६, ३ नफी ९, १५ए० ४:७. (१०) देखो ४, २ नफी २.

उसका मरना आवश्यक है, जिससे कि लोगों को परमेश्वर की उपस्थिति में लाया जा सके।

१६. हां, सुनो, यह मृत्यु (११) सभी मानव समाज को, प्रथम मृत्यु अर्थात् आत्मिक मृत्यु से उद्धार करके पुनर्जीवित होने की व्यवस्था को लाती हैं; क्योंकि आदम के पतन से सारा मानववंश प्रभु की उपस्थिति से अलग कर दिया गया था, जिसे (१२) शारीरिक और आत्मिक दोनों तरह से मरे के समान माना गया था।

१७. लेकिन सुनो, मसीह का मर कर जीवित हो उठना मानव समाज का उद्धार करता है हां, (१३) सारे मानव वंश को उद्धार करके उन्हें प्रभु की उपस्थिति में लाता है।

१८. और यह पश्चात्ताप की शर्त लागू करना है कि जो कोई पश्चाताप करेगा, उसे काट कर आग में नहीं डाल दिया जाएगा; परन्तु जो पश्चा-ताप नहीं करेगा उसे काट कर आग में डाल दिया जाएगा और उन पर फिर से (१४) आत्मिक मृत्यु आएगी, हां, उनकी दूसरी मृत्य, क्योंकि उनको (१५) फिर से धार्मिकता से अलग कर दिया जाता है।

१९. इसलिए तुम पश्चात्ताप करो, पश्चात्ताप करो, नहीं तो इन बातों को जानते हुए भी इनको व्यवहार में न लाने से तुम अपने आपको अपराधी ठहराओगे और तुम्हें दूसरी (१६) मृत्यु भी दी जाएगी।

२०. लेकिन सुनो, मैंने जो एक (१७) दूसरे संकेत के विषय में कहा, जो कि उसकी मृत्यु का संकेत होगा। सुनो, जिस दिन उसकी (१८) मृत्यु होगी, उस दिन सूरज अन्धेरे में छुप जाएगा और तुम्हें प्रकाश नहीं देगा; इसी प्रकार चांद और तारे भी दिखाई नहीं देंगे और धरती के ऊपर उसकी मृत्यु के समय से लेकर उसके पुनर्जीवित होने के तीन दिनों के समय तक प्रकाश नहीं होगा।

२१. जिस समय वह अपना प्राण त्यागेगा उस समय कई (१९) घन्टों तक बादल गरजेंगे और बिजली चमकेंगी, और धरती थर थर कांपेगी; और जो (२०) चट्टानें इस धरती पर मिट्टी के अन्दर और ऊपर हैं, जिन्हें तुम ज़ानते हो कि इस समय ठोस हैं या उनके अधिकांश भाग ठोस पिंड हैं टूट कर चूर चूर हो जाएंगी।

२२. हां, वे टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगी और तब से पृथ्वी भर में (२१) परतों, टूटे हुए टुकड़ों में धरती के ऊपर और नीचे भी दिखाई दिया करेंगी।

२३. और सुनो, (२२) भयंकर आंधियां आएंगी और बहुत से पर्वत (२३) खाई के समान हो जाएंगे और बहुत से स्थान जहां खाई हैं, वहां ऊंचे ऊंचे पर्वत हो जाएंगे।

२४. और बहुत-सी (२४) आम सड़कें टूट जाएंगी (२५) और बहुत से नगर निर्जन हो जाएंगे।

२५. और (२६) बहुत-सी कब्रें खोल दी जाएंगी और उनके मृतक बाहर आएंगे; और अनेक (२७) सन्त बहुतों को दिखाई पड़ेंगे।

२६. सुनो, इसी तरह स्वर्गदूत ने मुझसे कहा था; क्योंकि उसने मुझसे कहा था कि कई घण्टों तक (२८) मेघगर्जन होगा और बिजली चमकेगी।

२७. और उसने यह भी कहा कि जब तक मेघगर्जन होता रहेगा, बिजली चमकती रहेगी और आंधी चलती रहेगी, तब तीन (२९) दिनों तक सारी धरती पर अन्धकार छाया रहेगा।

२८. और स्वर्गदूत ने मुझसे कहा कि बहुत से होंगे, जो इससे भी अधिक, इसलिए देखेंगे कि वे यह विश्वास करें कि ये घटनाएं और आश्चर्यमय दृश्य पूरे देश भर में हो रहे हैं, और मानव वंश में अविश्वास का कोई कारण न रहे।

२९. और यह इसलिए कि जो भी कोई विश्वास करेगा, वह बचा लिया जाएगा, और जो कोई विश्वास नहीं करेगा उसके लिए उचित न्याय होगा;

(११) देखो १०, २ नफी ९. (१२) देखो २ और ३, २ नफी २. (१३) देखो १०, २ नफी ९. (१४) देखो १६, अल० १२. (१५) देखो १०, अलमा १२. (१६) देखो १३, अल० १२. (१७) पद्य १४. (१८) देखो ६, १ नफी १९. (१९) पद्य २६, २७, १ नफी १२:४, १९:१२, १२, ३ नफी ८:५, ७, १९. (२०) १ नफी १२:४-१९, १२. ३ नफी ८:१८, १०, ९. (२१) ३ नफी ८:१८. (२२) १ नफी १९:११, ३ नफी ८:६, १२, १९, १०:१४. (२३) १ नफी १२:४, १९:११, ३ नफी ८, १०-१९. (२४) ३ नफी ८:१३. (२५) १ नफी १२:४, ३ नफी ८:८-१०, १४, २४, २५, ९:३-१२, १०:७. (२६) देखो ७, या० ४. (२७) ३ नफी २३:७-१३. (२८) देखो १३. (२९) देखो ९, १ नफी १९.

और अगर उनको अपराधी ठहराया गया, तब वे स्वयं ही अपराध अपने ऊपर लाएंगे।

३०. और अब, याद रखो, याद रखो मेरे भाइयों, कि जो भी कोई नष्ट होता है वह स्वयं ही नष्ट होता है, क्योंकि तुम (३०) स्वतन्त्र हो; तुम कर्म करने के लिए स्वतन्त्र हो; क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें ज्ञान दे कर तुम्हें स्वतन्त्र किया है।

३१. उसने तुम्हें ज्ञान इसलिए दिया कि तुम भले और बुरे को जानो और जीवन या मृत्यु को चुनो; और तुम अच्छे कर्म करके अच्छे में स्थापित हो सकते हो, और अच्छा परिणाम (३१) प्राप्त कर सकते हो: और बुरे कर्म करके सब बुराईयां पुन: प्राप्त कर सकते हो।

अध्याय १५

लमनायटी सामुएल की चेतावनी के शब्दों का क्रम—उसके कुछ बचे हुए लोगों का सुरक्षित किए जाने का आश्वासन—अगर नफायटी पश्चात्ताप नहीं करेंगे तब वे सम्पूर्णतया नष्ट हो जाएंगे।

१. और अब मेरे प्रिय बन्धुओं, सुनो, अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब तुम्हारे (१) घर निर्जन हो जाएंगे।

२. हां, बिना पश्चात्ताप किए तुम्हारी स्त्रियों के प्रसव के दिन, भारी दु:ख के कारण बनेंगे, क्योंकि तुम प्राणरक्षा के लिए भागने की चेष्टा करोगे, और तुम्हारी सुरक्षा के लिए कोई स्थान न होगा; और बुरा होगा उनका जो गर्भवती होने के कारण भारी होंगी और भाग नहीं सकेंगी; इसलिए वे रौंदी जाएंगी और मरने के लिए छोड़ दी जाएंगी।

३. अगर ये सब संकेत और आश्चर्य जो इनको दिखाए जाएंगे, देख लेने पर भी अगर इन लोगों ने, जो नफी के लोग कहलाते हैं पश्चात्ताप नहीं किया, तब सन्ताप पड़े इनपर; क्योंकि सुनो, ये लोग प्रभु के चुने हुए लोग थे; हां, नफी के लोगों से उसने प्रेम किया और उन्हें पवित्र किया था; उसने उनके पाप के दिनों में शुद्ध किया था क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था।

४. लेकिन सुनो मेरे बन्धुओं, उसने लमनायटियों को इसलिए नहीं चाहा क्योंकि अपने (२) पूर्वजों की परम्परानुसार उनके कर्म लगातार अनुचित रहे हैं। परन्तु सुनो, नफायटियों के ही उपदेशों के द्वारा मुक्ति उनके पास आई; इसी कारण से प्रभु ने उनके दिनों को बढ़ाया है।

५. और मैं चाहता हूं कि तुम यह देखो कि उनके अधिकांश लोग अपने कर्तव्य मार्ग पर परमेश्वर के सामने सावधानी से चलते हुए तथा उसकी आज्ञाओं का पालन करते हुए (३) मूसा के नियम के अनुसार उसकी व्यवस्थाओं और निर्णयों को मान रहे हैं।

६. मैं तुमसे कहता हूं कि उनमें अधिकतर ऐसा कर रहे हैं, और अथक परिश्रम कर रहे हैं, जिससे अपने शेष बन्धुओं को सत्य के ज्ञान में ला सकें; इसलिए वे उनमें से अनेकों को प्रतिदिन अपने में ला रहे हैं।

७. और तुम स्वयं जानते हो कि उनमें से जितनों को भी सत्य का ज्ञान और अपने पूर्वजों के अनुचित (४) घृणा योग्य परम्पराओं की जानकारी दी जाती है, तथा शास्त्रों, उन पवित्र भविष्यवक्ताओं की लिखित भविष्यवाणियों पर विश्वास करना सिखाया जाता है, जो कि प्रभु पर विश्वास और पश्चात्ताप को लाते हैं, जो कि उनमें हृदय परिवर्तन करते हैं।

८. तुम स्वयं जानते हो कि जितने लोग इस अवस्था में आए, वे सब विश्वास में दृढ़ और अविचल होने के कारण उद्धार प्राप्त करते हैं।

९. और तुम यह भी जानते हो कि उन्होंने अपने (५) युद्ध के हथियारों को धरती में गाड़ दिया है, और उन्हें फिर से ग्रहण करने में इसलिए भय खाते हैं कि कहीं उनसे पाप न हो जाए—हां, तुम देख सकते हो कि वे पाप करने से डरते हैं—क्योंकि सुनो, वे अपने आपको शत्रुओं से कुचले और मारे (६) जाने देंगे, परन्तु उनके ऊपर वे तलवार नहीं उठाएंगे और ऐसा वह मसीह पर अपने विश्वास के कारण करते हैं।

१०. और अब, जिस बात पर वे विश्वास

(३०) देखो १२, २ नफी २. (३१) अल० ४१. अध्याय १५. (१) देखो २५, इला० १४. (२) देखो १४, या० ७. (३) देखो १५, २ नफी २५. (४) देखो १४, याकू० ७. (५) अल० २४:१७-१९. (६) अल० २४:२१-२६.

करते हैं, उस पर दृढ़ बने रहने के कारण सुनो, प्रभु उनको आशीर्वाद देगा और उनके पापों की उपेक्षा कर उन्हें दीर्घकाल देगा।

११. अगर वे अविश्वास में दुर्बल हो भी गए तब भी प्रभु उनके समय को तब तक के लिए (७) बढ़ा देगा जिस समय के विषय में हमारे पूर्वजों ने और (८) भविष्यवक्ता जीनस और दूसरे अनेकों भविष्यवक्ताओं ने हमारे बन्धु लमनायटियों को सत्य के ज्ञान में पुनर्स्थापित किए जाने के विषय में कहा था।

१२. हां, मैं तुमसे कहता हूं कि बाद में, प्रभु ने अपने वचन (९) लमनायटियों को भी दिए, उनके अनेक कष्टों, उनके धरती पर इधर से उधर भगाए (१०) जाने और पीछा किए जाने, मारे जाने और विदेशों में जहां उनके लिए कोई सुरक्षित स्थान नहीं रहेगा, तितर-बितर किए जाने पर भी प्रभु उनपर दयालु बना रहेगा।

१३. और यह उस भविष्यवाणी के अनुकूल है जो कहती है कि उनको उस सत्य ज्ञान की जानकारी में लाया जाएगा जो कि उनके उस उद्धारक के विषय में है जो उनका महान और (११) सच्चा गड़रिया है और उनकी गिनती उसके भेड़ों में होगी।

१४. इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि अगर तुमने पश्चात्ताप नहीं किया तब तुम्हारे बदले उनका ही भला होगा।

१५. क्योंकि सुनो, जो महान कार्य तुम्हें दिखाए गए हैं, वे अगर उन्हें दिखाए जाते जो कि अपने पूर्वजों की परम्पराओं के कारण अविश्वास में दुर्बल हो चुके हैं, तब तुम स्वयं यह देख सकते हो कि वे फिर कभी भी अविश्वास में दुर्बल नहीं होते।

१६. इसलिए प्रभु कहते हैं: मैं उनको सम्पूर्णतया नष्ट नहीं करूंगा, परन्तु अपनी इच्छानुसार उन्हे अपने पास फिर से वापस बुला लूंगा।

१७. और अब सुनो, प्रभु नफाटियों के विषय में क्या कहता है: अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया और मेरे इच्छानुसार काम नहीं किया, तब प्रभु कहता है कि मैंने उनमें (१२) जो महान कार्य किए हैं, उनकी, उनके अविश्वास के कारण उपेक्षा करके, मैं उन्हें सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर दूंगा; और जितना निश्चय प्रभु के होने का है, उतना ही निश्चय है ऐसा होने का।

अध्याय १६

कुछ नफायटियों का मसीह के गिरजा में सम्मिलित होना—अधिकांश का सामुएल की साक्षी को अस्वीकार करना—उनका उसे मारने और पकड़ कर बांधने का प्रयत्न करना—उसका बच कर स्वदेश लौटना—नफी द्वारा और प्रचार किया जाना—संशय की अधिकता।

१. और ऐसा हुआ कि बहुत से लोगों ने लमनायटी सामुएल की उन बातों को सुना जिन्हें उसने (१) नगर की दीवाल पर से कहा था। जिन्होंने उसकी बातों पर विश्वास किया वे नफी की खोज में निकले और जब वह मिल गया तब उन्होंने उसके सामने अपने पापों को स्वीकार किया और इच्छा प्रकट की कि वे प्रभु के लिए (२) बपतिस्मा लेना चाहते हैं।

२. लेकिन जितने लोगों ने सामुएल की बातों पर विश्वास नहीं किया, वे सब उसके ऊपर क्रोधित हो उठे और उसपर पथराव किया और कईयों ने उसपर उस समय तीर चलाए जबकि वह दीवाल के ऊपर खड़ा हुआ था; परन्तु परमात्मा की आत्मा उसके साथ थी और उसकी इतनी रक्षा की कि वे न तो पत्थरों से ही और न तो तीरों से ही उसे चोट पहुँचा सके।

३. जब उन्होंने देखा कि वे उसको चोट नहीं पहुंचा सकते, तब बहुत से लोगों ने उसकी बातों पर इतना अधिक विश्वास किया कि वे बपतिस्मा लेने के लिए नफी के पास गए।

४. क्योंकि सुनो, नफी लोगों को बपतिस्मा देता हुआ भविष्यवाणी करता, उनको उपदेश देता, लोगों को पश्चात्ताप करने के लिए पुकारता, उन्हें संकेत और आश्चर्यजनक कार्य और चमत्कार दिखाता जिससे कि वे लोग यह जान सकें कि मसीह शीघ्र ही आएगा।

(७) ई० १३, देखो ३, २ नफी २७. (८) देखो ८, १ नफी १९. (९) इनो० १३, देखो ३, २ नफी २७. (१०) मार० ५:१५. (११) देखो ३१, अल० ५. (१२) इनो० १३ और ३, २ नफी २७. अध्याय १६. (१) इला० १३:४. (२) देखो २६,

५. उनको शीघ्र ही होने वाली बातों को इसलिए बतलाता कि जिससे लोग उन बातों के होने के पूर्व ही जानते हुए उन्हें स्मरण रखें, और उनपर विश्वास करें; इसलिए जितने लोगों ने सामुएल की बातों पर विश्वास किया वे सब उसके पास बपतिस्मा लेने के लिए गए क्योंकि वे सब पश्चात्ताप करते हुए और अपने पापों को स्वीकार करते हुए गए।

६. परन्तु उनमें से अधिकांश ने सामुएल की बातों पर विश्वास नहीं किया; इसलिए जब उन्होंने देखा कि वे उसको (३) अपने पत्थरों और तीरों से नहीं मार सकते तब उन्होंने अपने नायकों से ऊंची आवाज में कहा: इस व्यक्ति को पकड़ कर बांध दो, क्योंकि सुनो, इसके पास शैतान है; और इसके अन्दर जो शैतान की शक्ति है, उसके कारण हम इसको अपने पत्थरों और तीरों से मार नहीं पा रहे हैं, इसलिए इसको पकड़ कर बांध दो और ले जाओ।

७. और जब वे उस पर हाथ लगाने के लिए आगे बढे तब वह (४) दीवाल पर से नीचे कूद गया और उनके देश से जान बचाकर भाग गया, हां, वह भागकर स्वदेश पहुंचा और अपने लोगों को उपदेश देने और भविष्यवाणी करने लगा।

८. और उसके विषय में नफायटियों में फिर कभी सुना नहीं गया; और ऐसी थी लोगों की अवस्था।

९. और इस तरह नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का छियासिवां वर्ष समाप्त हुआ।

१०. और इसी प्रकार निर्णायकों के शासन का सतासिवां वर्ष भी समाप्त हुआ, अर्थात् अधिकांश लोग अपने अहंकार और पाप में ही रहे; केवल अल्पांश परमेश्वर के सामने सावधानी के साथ चल रहा था।

११. और यही अवस्था निर्णायकों के शासन के अठासिवें वर्ष में भी बनी रही।

१२. निर्णायकों के शासन के नवासिवें वर्ष में लोगों की अवस्था में केवल इतना ही परिवर्तन हुआ कि वे पाप कर्म में और अधिक पतित होकर ऐसे कर्म अधिकाधिक करने लगे जो परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रतिकूल थे।

१३. लेकिन निर्णायकों के शासन के नब्बेवें वर्ष में लोगों को बड़े-बड़े संकेत और आश्चर्य दिखाए गए; और भविष्यवक्ताओं की वाणियां सत्य सिद्ध होना आरम्भ हुई।

१४. और विवेकी लोगों के समक्ष (५) स्वर्गदूत प्रकट होने लगे और उन्हें अति आनन्द-दायक सुसमाचार बतलाने लगे; इस तरह शास्त्र की बातें पूरी होने लगीं।

१५. फिर भी अधिक विश्वासियों को छोड़-कर, अधिकांश अपने हृदयों को कठोर बनाते रहे जिनमें नफायटी और लमनायटी दोनों ही थे, और वे अपनी ही बल-बुद्धि पर यह कहते हुए निर्भर रहने लगे:

१६. बहुत-सी बातों में से कुछ बातों का अनुमान उन्होंने सही कर लिया हो; लेकिन सुनो, हम जानते हैं कि जितनी महान और आश्चर्यजनक बातें कही गई हैं, वे सब सत्य नहीं होंगी।

१७. और वे आपस में विचार और विवाद यह कहते हुए करने लगे:

१८. यह ठीक प्रतीत नहीं होता कि मसीह जैसा कोई आएगा; अगर वह जो कि स्वर्ग का और जगत का (६) पिता और परमेश्वर का पुत्र होगा, जैसा कि कहा गया है, तब यरूशलेम में रहने वालों के साथ ही साथ वह हमें भी क्यों दिखाई नहीं देगा?

१९. हां, वह यरूशलेम देश के साथ ही इस देश में भी अपने आप को क्यों नहीं दिखाएगा?

२०. लेकिन सुनो, हम जानते हैं कि यह एक दुष्ट परम्परा हमें हमारे पूर्वजों से प्राप्त हुई है कि हम एक महान और चमत्कारी शक्ति के आने में विश्वास करें—जो हमारे देश में नहीं दूर के एक देश में आएगी जिसे हम जानते नहीं; इसलिए वे हमें अज्ञानता में रख सकते हैं क्योंकि हम अपनी आखों से उसे देख नहीं सकेंगे कि वह सत्य है या नहीं।

(३) पद्य २. (४) इला० १३:४. (५) अलमा १३:२६. (६) देखो १, मू० ३.

†ईसा से ६ वर्ष पूर्व †ईसा से ५ वर्ष पूर्व †ईसा से २ वर्ष पूर्व

२१. और वे एक दुष्ट की चालाकी और गुप्तकलाओं द्वारा कुछ ऐसे रहस्यमय काम करेंगे जिसे हम समझ नहीं पायेंगे, और इस तरह वह हमें अपनी बातों का दास बनाकर रखेंगे और हम उनके दास भी बने रहेंगे, क्योंकि शिक्षा के लिए हम उनपर निर्भर रहेंगे; और अगर हम सारा जीवन उन्हीं की बातों को मानते रहें, तब हमें वे इसी प्रकार अज्ञानता में रखे रहेंगे।

२२. इसी प्रकार लोगों ने मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ की बहुत-सी बातों की अपने हृदय में कल्पना की; और वे बहुत ही अशांत हो उठे, क्योंकि लगातार पापकर्म करने के लिए शैतान ने उनको भड़काया; हां, वह सारे संसार भर में लोगों में अफवाह और विवाद फैलाता हुआ घूमता रहा, जिससे कि वह लोगों के हृदयों को उसके प्रति कठोर कर सके जो कि श्रेष्ठ और आने वाला था।

२३. और प्रभु के लोगों में जो संकेत और आश्चर्यजनक बातें हो रही थीं और जो बहुत से चमत्कार वे दिखला रहे थे, उनकी (७) उपेक्षा करके सारे जगत भर में शैतान ने लोगों के हृदयों पर भारी अधिकार कर लिया।

२४. और इस तरह नफी के लोगों के ऊपर निर्णायकों के शासन का नब्बेवां वर्ष समाप्त हुआ।

२५. और इलामन और उसके पुत्र के अभिलेख के अनुसार इलामन की पुस्तक का भी अन्त हुआ।

नफी की पुस्तक

उस नफी का पुत्र जो कि इलामन का पुत्र था, और इलामन उस इलामन का पुत्र था जो कि उस अलमा का पुत्र था, जो अलमा नामक उस व्यक्ति का पुत्र था जो कि उस नफी के वंश का था, जो कि उस लेही का पुत्र था जो कि यहूदा के राजा सिदिकियाह के शासन के प्रथम वर्ष में यरूशलेम से आया था।

अध्याय १

इलामन के पुत्र नफी का विदा होना—मुक्तिदाता के जन्म के चिन्ह—प्रतिकूल प्रभाव का पड़ना—फिर से गेडियन्दन डाकुओं का प्रकट होना।

१. ऐसा हुआ कि ०एक्यानवे वर्ष समाप्त हुए, और लेही के यरूशलेम छोड़े (१) सौ वर्ष व्यतीत हुए; और इसी वर्ष में, लक्षोनस प्रधान निर्णायकों और देश का शासक था।

२. और इलामन का पुत्र नफी (२) पीतल की पटियों और अन्य सभी रखे गए अभिलेखों उन अन्य (३) वस्तुओं को, जो कि लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय से पवित्र रखे गए थे, अपने बड़े पुत्र नफी को देकर (४) जराहेमला देश से चला गया।

३. (५) वह कहां गया, यह कोई नहीं जानता; और उसके स्थान पर उसका पुत्र नफी अभिलेखों को रखने लगा, जो कि इन लोगों के विषय के अभिलेख थे।

४. और ऐसा हुआ कि बानबे वर्ष के आरम्भ में भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियां और भी अधिक पूरी होनी आरम्भ हुईं; क्योंकि लोगों में और (६) बड़े-बड़े संकेत और चमत्कार होने लगे।

५. लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जो कहने लगे कि (७) सामुएल लमनायटी द्वारा कही गई बातों के होने का समय बीत चुका।

६. और वे अपने बन्धुओं से यह कहते हुए आनन्द मनाने लगे : सुनो, समय बीत गया और सामुएल द्वारा की गई भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई; इसलिए इस विषय पर तुम्हारा आनन्द और विश्वास व्यर्थ हुआ।

७. और ऐसा हुआ कि देश भर में इन लोगों ने भारी शोर मचाया; और जिन लोगों ने विश्वास किया था वे यह सोचकर दुख करने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि कही बातें घटित ही न हों।

८. लेकिन सुनो, वे दृढ़ता के साथ उस समय

(७) पद्य १३. (१) १ नफी १०:४. (२) ओम० १३. (३) देखो १, १ नफी ३. (४) अलमा ३७. (५) ३ नफी २:९.
(६) इला० १६:१३, २३. (७) इला० १४:२-७.

ईसा से १ वर्ष पूर्व

की प्रतीक्षा करने लगे जबकि (८) एक दिन, एक रात और फिर एक दिन, एक ही दिन के समान होंगे, जैसे रात हुई ही न हो, जिससे कि उन्हें मालूम हो कि उनका विश्वास व्यर्थ में नहीं गया।

९. और ऐसा हुआ कि अविश्वासियों द्वारा एक दिन निश्चय किया गया कि अगर (९) सामुएल द्वारा बताए संकेत दिखाई नहीं दिए, तब उन्हें (१०) मार डालना चाहिए, जिन्होंने उन परम्पराओं पर विश्वास किया है।

१०. जब नफी के पुत्र नफी ने अपने लोगों की इस दुष्टता को देखा, तब उसका हृदय अति दुखित हुआ।

११. और ऐसा हुआ कि वह जाकर धरती पर झुक गया और अपने उन लोगों के लिए उसने परमेश्वर को बहुत ही पुकारा जो कि अपने पूर्वजों की परम्पराओं पर विश्वास करने के कारण (११) मारे जाने वाले थे।

१२. और वह सारा दिन प्रभु को पुकारता रहा; और सुनो, प्रभु की वाणी उसे यह कहती हुई सुनाई दी:

१३. अपने सिर को ऊपर उठाओ और प्रसन्न रहो; क्योंकि सुनो, वह समय निकट है जबकि मैं संसार को यह दिखाने के लिए कि मैंने जो कुछ अपने पवित्र भविष्यवक्ताओं से कहलाया था, उन सब भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए (१२) इस रात को संकेत दूंगा और सुबह को मैं पृथ्वी पर आऊंगा।

१४. और मैं दोनों, पिता पुत्र की इच्छा को पूरी करने के लिए और (१३) जगत की नींव के समय से लेकर जिन बातों की जानकारी मानव वंश को दी गई थी, उनको पूरा करने के लिए, मैं अपने लोगों के पास आऊंगा—(१४) मेरे कारण पिता की और (१५) मेरे शरीर के कारण पुत्र की। और सुनो, वह समय आ गया है और (१६) इसी रात को संकेत दिए जाएंगे।

१५. और जो वाणी नफी के पास आई थी उसके कहे अनुसार घटना सत्य हुई; क्योंकि सुनो (१७) सूर्य अस्त होने पर अंधकार नहीं हुआ और लोग चकित हो उठे, क्योंकि रात होने पर अंधेरा नहीं हुआ।

१६. और बहुत से लोग जिन्होंने भविष्यवक्ताओं की बातों पर विश्वास नहीं किया था, वे मरे हुओं के समान धरती पर (१८) गिर पड़े, क्योंकि वे यह जान गए कि जिन लोगों ने भविष्यवक्ताओं की बातों पर विश्वास किया था, उनको नष्ट करने के लिए जो महान (१९) योजना उन्होंने बनायी थी, वह बिगड़ चुकी थी।

१७. और वे यह जानने लगे कि परमेश्वर का पुत्र शीघ्र ही आने वाला है; हां, सारी धरती के लोग पश्चिम से पूरब तक, (२०) उत्तर के देश (२१) दक्षिण के देश, दोनों देशों में लोग इतने अधिक चकित हुए कि वे धरती पर (२२) गिर पड़े।

१८. क्योंकि वे जानते थे कि भविष्यवक्ताओं ने इन बातों की साक्षी अनेक वर्षों से दी है, और जो संकेत बताए गए थे, वे दिखाई देने लगे हैं; और वे अपने पापों और अविश्वास के कारण भयभीत होने लगे।

१९. और ऐसा हुआ कि सारी रात (२३) अंधेरा नहीं हुआ और ऐसा प्रकाश हुआ कि मानो मध्यान्ह हो। और ऐसा हुआ कि सुबह को फिर से सूर्योदय नियमानुसार हुआ। और वे दिए गए संकेत के कारण जान गए कि यही वह दिन है जबकि प्रभु जन्म लेगा।

२०. और जैसा कि भविष्यवक्ताओं ने कहा था, सब कुछ बिल्कुल उसी तरह हुआ।

२१. और वाणी के अनुसार एक (२४) नवीन तारा भी उदित हुआ।

२२. और ऐसा हुआ कि इसी समय से शैतान द्वारा लोगों के हृदयों को कठोर बनाने के लिए असत्य का प्रचार आरम्भ हुआ, कि जिससे जो संकेत और आश्चर्य उन्होंने देखे थे, उन पर विश्वास न करें; परन्तु अधिकांश लोगों ने असत्य और बहकाने

(८) इला० १४, ३, ४. (९) इला० १४:२-७. (१०) पद्य ११, १६. (११) पद्य ६, १६. (१२) पद्य ८; इलामन १४:३, ४. (१३) देखो ४, मू० ४. (१४) देखो ३, मू० १५. (१५) देखो २, मू० ३ (१६) इला० १४:३, ४. (१७) इला० १४:३, ४. (१८) पद्य १७, इला० १४:७. (१९) पद्य ९, ११. (२०) देखो १६, अल० ४६. (२१) देखो १४, अल० ४६. (२२) पद्य १६, इला० १४:७. (२३) इला० १४:३, ४. (२४) इला० १४:५.

वाली बातों की परवाह न करके विश्वास किया और प्रभु के लिए बपतिस्मा ग्रहण कर लिए।

२३. और ऐसा हुआ कि नफी और दूसरे लोग जनता में जाकर उन्हें (२५) बपतिस्मा देने लगे, जिसमें पापों के लिए भारी क्षमादान की व्यवस्था थी। इस तरह लोगों ने देश में फिर से शान्ति से रहना आरम्भ किया।

२४. और कोई विवाद नहीं हुआ, केवल कुछ लोग शास्त्रों से यह प्रमाणित करने की चेष्टा करते हुए प्रचार करने लगे कि अब मूसा के नियम को मानना आवश्यक नहीं रह गया। शास्त्रों को समझने से उन्होंने इसमें भूल की थी।

२५. परन्तु शीघ्र ही इन लोगों ने अपने विचारों को बदल दिया क्योंकि उन्हें यह ज्ञान कराया गया कि (२६) नियम अभी पूरा नहीं हुआ था, सम्पूर्ण रूप से उस का पूरा होना आवश्यक था, इससे उन्हें अपनी भूल मालूम हो गई; हां, उनको बताया गया कि वह पूरे रूप में होगा और उसका एक बिन्दु या लेशमात्र भी नहीं छूटेगा, बल्कि सबका सब पूरा होगा; इसलिए इसी वर्ष में उनको भूल से ज्ञान कराया गया और उन्होंने अपनी भूल को स्वीकार किया।

२६. इस प्रकार बानबेवां वर्ष लोगों को जो संकेत दिखाई दिए थे और जो सभी भविष्यवक्ताओं की कही गई वाणियों के अनुसार थे, लोगों के पास आनन्ददाई समाचार को लाता हुआ समाप्त हुआ।

२७. और ऐसा हुआ कि तिरानबेवां वर्ष भी शान्ति से समाप्त हुआ, सिवाये (२७) गेडियन्दन डाकू के जो पर्वतों पर रहते थे और देश को कष्ट देते थे; क्योंकि उनके अड्डे और गुप्त स्थान इतने दृढ़ थे कि लोग उनको परास्त नहीं कर पाते थे; इसलिए उन्होंने बहुत से लोगों की हत्या की और लोगों में बहुत अधिक रक्तपात किए।

२८. और चौरानबें वर्ष में उनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ने लगी क्योंकि बहुत-से नफायटी मतभेदी उनके पास भाग कर गए, जिससे देश में रहने वाले बचे नफायटियों को बहुत ही दुःख हुआ।

२९. लमनायटियों में अधिक दुःख का एक और कारण यह था कि उनके बहुत-से बच्चे जो बढ़ती आयु के साथ ही आत्मनिर्भर और बलवान होते उन्हें जोरमायटी झूठ बोलकर और फुसला बहका कर उन गेडियन्दन डाकुओं में सम्मिलित होने को तैयार कर लेते थे।

३०. इसी प्रकार लमनायटी भी अपनी नई पीढ़ी के कारण विश्वास और धार्मिकता में घटने से कष्ट पा रहे थे।

अध्याय २

नफायटियों का अधर्मी होना—श्वेत लमनायटी —दोनों जातियों का डाकुओं और हत्यारों से सुरक्षा के लिए संगठित होना।

१. इसी प्रकार पचानबेवां वर्ष का भी अन्त हो गया और लोगों ने जिन (१) संकेतों और आश्चर्यों को सुना था, उन्हें भूलने लगे, और स्वर्ग से दिए जाने वाले संकेत और चमत्कार पर वे कम अचम्भा करते और धीरे-धीरे इतना तक हुआ कि वे हृदय के कठोर और बुद्धि के अन्धे होने लगे और उन्होंने जो कुछ देखा सुना था, उस पर वे अविश्वास करने लगे।

२. वे अपने हृदयों में कल्पना करते कि वह सब लोगों को धोखा देने और उनको बहकाने के लिए शैतान के सहारे लोगों द्वारा किया गया था, इस प्रकार शैतान ने लोगों के हृदयों पर इतना अधिकार कर लिया कि उसने उनको आंखों के अन्धे बनाकर उन्हें यह विश्वास करने में बाध्य कर दिया कि मसीह का सिद्धान्त मूर्खतापूर्ण और निरर्थक है।

३. और ऐसा हुआ कि लोग पापों और घृणित कार्यों में और अधिक बढ़ने लगे और यह विश्वास नहीं करते कि और अधिक चमत्कार और संकेत दिए जाएंगे; और शैतान उनको बहकाता हुआ उन्हें लालच में डालता और उनसे देश में भारी अपराध करवाता।

४. इसी प्रकार छियानबेवां वर्ष भी समाप्त हुआ; और अट्ठानबेवां वर्ष भी समाप्त हुआ और निन्यानबेवां वर्ष भी।

५. और नफायटियों के राजा (२) मूसायाह के समय से सौ वर्ष भी पूरे हो गए।

(२५) देखो २१, २ नफी ९. (२६) देखो २५, २ नफी २५. ३-७, ३ नफी १:८, १३-२१. (२) मू० २९:४६, ४७. (२७) इलामन २:११-१३. अध्याय २. (१) इलामन १४:

६. और लेही के यरूशलेम छोड़े छः सौ नौ वर्ष बीत गए।

७. और उस समय से नौ वर्ष बीत गए जबकि वह (३) संकेत दिया गया था जो कि भविष्य-वक्ताओं द्वारा मसीह के जगत में आने के लिए था।

८. अब नफायटी संकेत दिए जाने के समय से अर्थात् मसीह के आने के समय (४) से अपने समय की गिनती करने लगे; इसलिए उस समय से नौ वर्ष बीत गए।

९. और नफी जो कि इस नफी, जिसके अधिकार में अभिलेख हैं, का पिता था, (५) ज़राहेमला देश वापस (६) लौट कर नहीं आया और सारे देश भर में उसका कोई पता नहीं लगा।

१०. और ऐसा हुआ कि लोग उनमें किए गए अधिक प्रचार और भविष्यवाणियों की परवाह न करते हुए पापी बने रहे; और इसी तरह दसवां वर्ष भी बीत गया; और पापों में ही ग्याहरवां वर्ष भी बीत गया।

११. और तेहरवें वर्ष में सारे देश में युद्ध और झंझट होने लगा; क्योंकि (७) गेडियन्दन डाकू इतने अधिक हो गए, उन्होंने इतने अधिक लोगों की हत्या की, इतने नगरों को नष्ट किया और इतनी अधिक हत्यायें और रक्तपात देश भर में किया कि यह आवश्यक हो गया कि सभी नफायटी और लमनायटी मिल कर उनके विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करें।

१२. इसलिए जितने लमनायटी मत परिवर्तित कर प्रभु में विश्वासी हुए थे, उन सबने अपने नफायटी बन्धुओं के साथ मिल कर, अपने प्राणों, अपने स्त्रियों और बच्चों की सुरक्षा के लिए बाध्य होकर, उन गेडियन्दन डाकुओं के विरुद्ध अस्त्र ग्रहण किये, जिससे कि वे (८) अपने अधिकारों, गिरजा और प्रार्थना करने की सुविधाओं, अपनी स्वतन्त्रता और मुक्ति की भी रक्षा कर सकें।

१३. और ऐसा हुआ कि तेरहवां वर्ष समाप्त होने से पूर्व इस युद्ध के अति भयंकर हो जाने के कारण, नफायटियों के विनाश का खतरा उत्पन्न हो गया।

१४. और ऐसा हुआ कि जो लमनायटी नफायटियों के साथ संगठित हो गए थे, उनकी गिनती नफायटियों में हुई।

१५. और (९) उनका शाप उन पर से हटा लिया गया और उनके खाल नफायटियों की तरह (१०) सफेद हो गयी।

१६. और उनके तरुण युवक और युवतियां अत्यन्त सुन्दर हो गए और उनकी गिनती भी नफायटियों में होने लगी और वे नफायटी कहलाने लगे।

१७. और ऐसा हुआ कि चौदहवें वर्ष में भी (११) डाकुओं और नफायटियों से युद्ध होता रहा जो अति गम्भीर हो उठा और इसमें नफायटियों को इतनी सफलता मिली कि उन्होंने डाकुओं को अपनी भूमि पर से पर्वतों और उनके गुप्त स्थानों में वापस भगा दिए।

१८. इस प्रकार चौदहवां वर्ष समाप्त हुआ। पन्द्रहवें वर्ष में उन्होंने फिर से नफी के लोगों के विरुद्ध आक्रमण किया; और नफी के लोगों के पापों, और उनके बहुत से आपसी झंझटों और मतभेदों के कारण गेडियन्दन डाकुओं को कई सफलताएं मिलीं।

१९. इस तरह पन्द्रहवां वर्ष समाप्त हुआ और लोग बहुत कष्ट में थे और विनाश की तलवार उनके ऊपर लटक रही थी, जिसके द्वारा उन पर वार होने ही वाला था और यह सब उनके पापों के कारण ही हो रहा था।

अध्याय ३

देश के शासक लक्षोनस का डाकुओं के सरदार गिडियानी से पत्र प्राप्त करना—आत्मसमर्पण की आज्ञा का मिलना—लक्षोनस का आज्ञा की उपेक्षा कर रक्षा की तैयारी करना।

१. और ऐसा हुआ कि मसीह के आने के सोलहवें वर्ष में देश के शासक (१) लक्षोनस को डाकुओं के सरदार और संचालक से एक पत्र

(३) देखो १. (४) पद्य ७. (५) ओमनी १३. (६) ३ नफी १:२, ३. (७) इलामन २:११-१३. (८) देखो १३, मू० २६. (९) देखो ४, २ नफी २. (१०) देखो ६, २ नफी ३०. (११) इलामन २:११-१३. अध्याय ३. (१) ३ नफी १:१.

मिला; और उस पत्र में ये शब्द लिखे हुए थे :

२. अत्यन्त श्रेष्ठ और देश के प्रधान शासक लक्षोनस सुनो, मैं इस पत्र को तुम्हारे पास लिख रहा हूं और मैं तुम्हारी भारी प्रशंसा कर रहा हूं क्योंकि जिसे तुम (२) अपना अधिकार और स्वतन्त्रता समझते हो, उसको बनाए रखने के लिए तुमने और तुम्हारे लोगों ने बहुत दृढ़ता दिखलाई है; हां, तुम ऐसे दृढ़ रहे हो, जैसे तुमको अपनी स्वतन्त्रता, सम्पत्ति, और देश की, या उनकी जिन्हें तुम ऐसा समझते हो, रक्षा में परमेश्वर का सहारा मिल रहा हो।

३. श्रेष्ठ लक्षोनस, मुझको तुम पर इस बात से दया आ रही है कि तुम मूर्खता और व्यर्थ में ही यह सोचते हो कि मेरे इतने अधिक वीर पुरुषों का सामना कर सकते हो, जो मेरी आज्ञा में हैं और इस समय सशस्त्र होकर तैयार खड़े इन शब्दों की प्रतीक्षा कर रहे हैं—जाओ नफायटियों पर आक्रमण करो और उनको नष्ट कर दो।

४. और मैं उनके अजेय उत्साह को, युद्ध के मैदान में परख लेने के कारण, तुमने जो उनके प्रति बहुत-सी बुराईयां की हैं उनके कारण और तुम्हारे लिए उनके हृदय में जो स्थाई घृणा है उससे मैं जानता हूं कि अगर वे तुम्हारे विरुद्ध आए, तब वे तुम्हें सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर देंगे।

५. जिस बात को तुम उचित समझते हो, उसमें दृढ़ रहने से और युद्ध के मैदान में भारी साहस दिखाने के कारण, तुम्हारा हित समझ कर मैंने इस पत्र को लिख कर अपने हाथ से मुहरबन्द किया।

६. इसलिए मैं तुम्हारे पास यह लिखता हूं कि मेरी इच्छा है कि मेरे लोगों के तलवार लेकर तुम्हारे पास आने और तुम्हारे पास नाश आने के बदले तुम स्वयं मेरे लोगों को अपने नगरों, अपनी भूमि और सम्पत्तियों को दे दो।

७. या दूसरे शब्दों में, हमारे अधीन होकर हमारे साथ हो जाओ और (३) हमारे गुप्त कार्यों से परिचित होकर हमारे बन्धु बन हमारी ही तरह हो जाओ—हमारे दास नहीं, बल्कि हमारे बन्धु और हमारी सभी वस्तुओं के साझीदार बन जाओ।

८. और सुनो, मैं तुमसे शपथ लेकर कहता हूं कि अगर तुमने ऐसा किया तब तुम नष्ट नहीं किए जाओगे; परन्तु अगर तुमने ऐसा नहीं किया तब मैं शपथ लेकर कहता हूं कि अगले महीने की सुबह को मैं अपनी सेना को तुम्हारे ऊपर आक्रमण करने की आज्ञा दूंगा और वे अपने हाथों को न तो रोकेंगे और न ही किसी को छोड़ेंगे; वे तुम्हें मारेंगे और तुम्हारे ऊपर तब तक तलवार चलाते रहेंगे जब तक कि तुम समाप्त न हो जाओगे।

९. और सुनो, मैं गिडियानी हूं; और मैं इस (४) गुप्त गेडियन्दन दल का शासक हूं; जिसके कार्य मैं जानता हूं कि अच्छे हैं; और जो यह संगठन प्राचीन समय से चलता आ रहा है, हमें दिया गया है।

१०. और यह पत्र, लक्षोनस, मैं तुम्हारे पास लिख रहा हूं और आशा करता हूं कि तुम बिना रक्तपात करवाए ही अपनी भूमि और सम्पत्तियों को हमें दे दोगे जिससे कि मेरे ये लोग अपने अधिकारों और शासन को फिर से प्राप्त कर सकें, जो कि तुमसे अलग हो गए क्योंकि तुमने इनको शासन से वंचित करने की दुष्टता की है, और अगर तुमने ऐसा नहीं किया तब मैं उनका बदला लूंगा। मैं गिडियानी हूं।

११. जब लक्षोनस को यह पत्र प्राप्त हुआ तब नफायटियों की भूमि अपने अधिकार में किए जाने की मांग करने में गिडियानी का दुःसाहस और लोगों को धमकाने, और उनके प्रति की गई बुराई का बदला चुकाने की बात से उसे बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि उनके प्रति कोई बुराई नहीं कि गई थी, बल्कि वे स्वयं द्रोह कर दुष्ट घृणित डाकुओं में जा मिले थे।

१२. सुनो, लक्षोनस एक भला आदमी था और डाकू की मांग और धमकियों से डरने वाला नहीं था; इसलिए उसने डाकुओं के शासक के पत्र की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, परन्तु उसने अपने लोगों से डाकुओं के आने के समय शक्ति प्राप्त करने के लिए प्रभु को पुकारने को कहा।

१३. उसने सब लोगों में ढिंढोरा पिटवाया कि वे सब (५) अपनी स्त्रियों, बच्चों, पशु, पक्षियों,

(२) देखो १३, मू० २६. (३) देखो ६, २ नफी १०. (४) देखो ६, २ नफी १०. (५) पद्य २२-२४.

वस्तुओं, अपनी भूमि को छोड़ और सब कुछ एक स्थान पर एकत्रित करें।

१४. और उसने उनके चारों ओर अति दृढ़ (६) किलेबन्दी करने की आज्ञा दी, और उसने नफायटी और लमनायटी दोनों सेनाओं या उन सभी लोगों को जो नफायटी कहलाते थे आज्ञा दी कि वे उनके चारों ओर पहरा देने के लिए नियुक्त किए जाएं और वे डाकुओं से उनकी रक्षा रात-दिन किया करें।

१५. हां, उसने उनसे कहा: जितना निश्चय प्रभु का चेतन होने का है, उतना ही निश्चय है कि अगर तुमने अपने सारे पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया और प्रभु को नहीं पुकारा, तब तुम्हारी रक्षा इन (७) गेडियन्दन डाकुओं से कदापि नहीं की जाएगी।

१६. और लक्षोनस के शब्द इतने महान और प्रभावपूर्ण थे कि उनके ऊपर भय छा गया; और उन्होंने लक्षोनस के कहे अनुसार अपने बल के साथ प्रयत्न किया।

१७. और ऐसा हुआ कि जंगल से डाकुओं के आने के समय नफायटी सेनाओं का संचालन करने के लिए लक्षोनस ने मुख्य सेनाध्यक्षों को नियुक्त किया।

१८. जो मुख्य सेनाध्यक्षों में प्रधान और सारी नफायटी सेनाओं का सर्वप्रधान संचालक नियुक्त किया गया उसका नाम था (८) गिडगिडोनी।

१९. सभी नफायटियों में यह परम्परा थी कि वे प्रधान सेनापतियों के पद पर किसी ऐसे व्यक्ति (केवल पापकर्मों के लिए छोड़ कर) को नियुक्त करते जिसमें ज्ञानप्रकाश और भविष्यवाणी की भावना होती थी; गिडगिडोनी उनमें से एक भारी भविष्यवक्ता और प्रधान निर्णायक भी था।

२०. लोगों ने गिडगिडोनी से कहा: हम प्रभु से प्रार्थना करें और पर्वतों पर और वनों में चलें, जिससे कि हम उन डाकुओं पर टूट पड़ें और उन्हें उन्हीं की भूमि पर नष्ट कर दें।

२१. परन्तु गिडगिडोनी ने कहा: प्रभु ऐसा करने से हमें मना करता है; क्योंकि अगर हम उनके विरुद्ध गए, तब प्रभु हमें उनके हाथों में दे देगा; इसलिए हम अपने देश के बीच में तैयारी करें, अपनी सभी सेनाओं को एकत्रित कर लें और उनके विरुद्ध चढ़ाई न करें, परन्तु हम तब तक प्रतीक्षा करते रहें जबतक कि वे हम पर आक्रमण करने नही आ जाते; इसलिए जितना निश्चय प्रभु के चेतन होने का है, उतना ही निश्चय है कि वह उन्हें हमारे हाथों में दे देगा।

२२. और ऐसा हुआ कि सत्तरहवें वर्ष के उत्तरार्ध में (९) लक्षोनस की घोषणा सारे देश भर में भेजी गई और लोग (१०) अपने घोड़ों, (११) रथों, पशुओं, पक्षियों, अनाज और अपनी सारी वस्तुओं को लेकर हजारों और लाखों की संख्या में तब तक आते रहे जब तक कि सब लोग (१२) एकत्रित होने के स्थान पर अपने आपको अपने शत्रुओं से रक्षा करने के लिए एकट्ठे न हो गये।

२३. और जो स्थान नियुक्त किया गया था, वह (१३) ज़राहेमला और (१४) सम्पन्न देश था, जो कि सम्पन्न देश और (१५) नीरव देश के मध्य में था।

२४. और नफायटी कहलाने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक थी, जो वहां एकत्रित हुए थे। इस समय लक्षोनस ने उन सबको उस देश के (१६) उत्तर पर भारी शाप होने के कारण (१७) दक्षिण भाग में एकत्रित होने की आज्ञा दी।

२५. और उन्होंने अपने शत्रुओं से अपनी रक्षा करने के लिए वहां (१८) किलेबन्दी की; और वे सब एक साथ एक ही स्थान पर निवास करने लगे और वे लक्षोनस के कहे शब्दों के कारण भय कर रहे थे और इतने भयभीत थे कि उन्होंने अपने सब पापों पर पश्चात्ताप किया; और अपने प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे कि जब उनके शत्रु उनसे लड़ने के लिए आवें तब वह उनकी रक्षा करें।

२६. और अपने शत्रुओं के कारण वे सब

(६) देखो ३, अलमा ४८. (७) इलामन २:२१-१३. (८) पद्य २०, २१, २६, ३ नफी ४:१३, २४, २६. (९) ३ नफी १:१. (१०) देखो १३, १ नफी १८. (११) देखो १२, अलमा १८. (१२) पद्य १३, २३, २४. (१३) ओम० १३. (१४) देखो ३७, अलमा २२. (१५) देखो ३८, अल० २२. (१६) देखो १६, अल० ४६. (१७) देखो १४, अल० ४६. (१८) देखो ३, अल० ४८.

अति दु:खित थे। और (१६) गिडगिडोनी ने उनसे (२०) हरएक प्रकार के युद्ध के हथियार बनवाए और शरीर रक्षा के लिए ढाल कवचादि अपनी आज्ञानुसार बनवाये।

अध्याय ४

डाकुओं का पराजित किया जाना और उनके नेता का मारा जाना—उसके उत्तराधिकारी का फांसी पर लटकाया जाना—गिडगिडोनी की सैनिक वीरता।

१. अट्ठारहवें वर्ष के उत्तरार्ध में (१) डाकुओं की सेनाएं युद्ध के लिए तैयार हुईं और पहाड़ों, पर्वतों, जंगलों, अपने दृढ़ अड्डों और अपने गुप्त स्थानों से निकल निकल कर, दोनों (२) दक्षिण के देश और (३) उत्तर के देश की नफायटियों द्वारा (४) खाली की गई सारी भूमि और निर्जन किए गए नगरों को अपने अधिकार में करने लगे।

२. लेकिन सुनो, नफायटियों के द्वारा खाली किए गए देशों में कोई जंगली पशु व आखेट के लिए जानवर नहीं थे और (५) जंगलों को छोड़कर डाकुओं के आखेट के लिए भी कोई पशु नहीं था।

३. वनों को छोड़कर, और कहीं भी वे भोजन की कमी के कारण जीवित नहीं रह सकते थे; क्योंकि नफायटी देश को उजाड़ छोड़ कर, अपने पशु-पक्षियों, और सभी वस्तुओं को लेकर (६) एकत्रित हो गए थे।

४. इसलिए भोजन सामग्री को लूटने का डाकुओं का कोई अवसर नहीं था और खुली लड़ाई करने के सिवाय उनके पास कोई चारा नहीं रह गया था; और नफायटी एक साथ और इतनी अधिक संख्या में होने के कारण और अपने लिए (७) सामग्री संग्रहित रखने और (८) घोड़ों,गाय, बैलों, और हर प्रकार की पक्षियों को रखने से सात वर्षों तक निर्वाह कर सकते थे और इतने समय के अन्दर वे देश से डाकुओं का सफाया कर देने की आशा करते थे; इस तरह अट्ठारहवां वर्ष समाप्त हुआ।

५. और ऐसा हुआ कि उन्नीसवें वर्ष में गिडियानी ने नफायटियों से युद्ध करना आवश्यक समझा, क्योंकि लूटने और हत्या करने के अलावा जीवित रहने का और कोई उपाय ही नहीं था।

६. और वे बिखर कर अनाज उपजाने का साहस इसलिए नहीं कर रहे थे क्योंकि उन्हें भय था कि नफायटी उन पर आक्रमण कर उन्हें नष्ट न कर दें; इसलिए गिडियानी ने अपनी सेना को आज्ञा दी कि इसी वर्ष वे नफायटियों से युद्ध करने के लिए जाएंगे।

७. और वे युद्ध के लिए आए; और वह छठवां महीना था; और जिस दिन वे युद्ध के लिए आए वह बड़ा ही भयंकर और महत्वपूर्ण दिन था। वे डाकुओं के भेष में थे; कमर पर रक्त से रंगी मेमने की खाल लपेटे हुए थे; सिर मुडाए सिरटोप पहने हुए थे; और गिडियानी की सेनाएं अपने कवच और उनके रक्त से रंगे होने के कारण अति भयंकर लग रही थीं।

८. और ऐसा हुआ कि नफायटियों की सेनाओं ने जब गिडियानी की सेनाओं के रूपरंग को देखा, तब वे धरती पर गिर पड़े और अपने प्रभु परमेश्वर को पुकारने लगे कि वह उनके शत्रुओं से रक्षा करे।

९. और ऐसा हुआ कि जब गिडियानी की सेनाओं ने यह देखा तब प्रसन्नता के मारे जोर से कोलाहल मचाने लगे, क्योंकि उन्होंने सोचा कि उनकी सेना के भय से नफायटी डर कर गिर पड़े।

१०. लेकिन इसमें वे निराश हुए क्योंकि नफायटी उनसे डरते नहीं थे; वे अपने परमेश्वर से भय मानते थे और उससे रक्षा करने की मांग करते थे; इसलिए जब गिडियानी की सेनाएं उन्हें मारने को दौड़ीं, तब वे उनका सामना करने के लिए तैयार थे; हां, उन्होंने परमेश्वर की शक्ति से उनका सामना किया।

११. और युद्ध इस छठवें महीने में आरम्भ हुआ; और यह युद्ध अति भयंकर हुआ; और जो रक्तपात हुआ वह भी अति भयंकर हुआ, इतना भयंकर कि लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय

(१६) देखो ८. (२०) ४२ अलमा ४३. (१) इलामन २:११-१३. (२) देखो १४, अल० ४६. (३) देखो १६, अल० ४६. (४) ३ नफी ३:१३, १४, २२-२४. (५) देखो १३, १ नफी १८. (६) देखो ४. (७) पद्य १६-१८. (८) देखो १३, १ नफी १८.

से लेकर इतनी अधिक मारकाट पहिले कभी भी नहीं हुई थी।

१२. और गिडियानी की (९) धमकी, उसकी प्रतिज्ञा और गिडियानी की अवहेलना कर नफायटी लोगों ने उन्हें इतनी मार लगाई कि वे उनके सामने से पीछे हटने लगे।

१३. और (१०) गिडगिडोनी ने उन्हें आज्ञा दी कि वे वन की सीमा तक उनका पीछा करें और जो भी इस बीच उनके हाथ में पड़ जाय, उन्हें वे छोड़े नहीं; इस प्रकार वे गिडगिडोनी की आज्ञा का पालन करते हुए उनका पीछा वन की सीमा तक करके उन्हें मारते रहे।

१४. और ऐसा हुआ कि गिडियानी जो कि वीरता के साथ लड़ रहा था, जब भागा तब उसको खदेड़ा गया; और अधिक लड़ने के कारण वह थका हुआ था, इसलिए उसे पकड़ लिया गया और मार डाला गया।

१५. और ऐसा हुआ कि नफायटी सेनायें अपने सुरक्षित स्थान पर वापस लौट आईं। उन्नीसवां वर्ष समाप्त हुआ और डाकू वापस लड़ने के लिए नहीं आए; वे बीसवें वर्ष में भी लड़ने नहीं आए।

१६. *इक्कीसवें वर्ष में वे लड़ने के लिए आए, परन्तु इस बार उन्होंने चारों तरफ से आकर नफायटियों के चारों ओर घेरा डाल दिया; क्योंकि उन्होंने सोचा कि अगर वे नफी के लोगों का रास्ता बन्द करके उन्हें चारों ओर से घेरे रहेंगे और उन्हें बाहर की सुविधाओं से वंचित रखेंगे, तब वे अपनी इच्छानुसार आत्मसमर्पण करवा सकेंगे।

१७. इस समय उन्होंने अपना एक नया नेता चुन लिया था जिसका नाम जेमनारिहा था; यह जेमनारिहा ही था जिसने कि यह घेरा डलवाया था।

१८. लेकिन सुनो, यह नफायटियों के हित में सिद्ध हुआ; क्योंकि उन्होंने बहुत-सी (११) सामग्रियाँ एकत्रित कर रखी थीं और डाकू इतने दिन तक घेरा डाले रख नहीं सकते थे कि जिससे नफायटियों पर कोई प्रभाव पड़ता।

१९. डाकुओं के पास भोजन की कमी थी क्योंकि सुनो, जीवित रहने के लिए वे मांस पर ही निर्भर रहते थे, जिसे वे वन से ही प्राप्त करते थे।

२०. और ऐसा हुआ कि वन में पशुओं की इतनी कमी हो गई कि डाकू भूख से मरने ही वाले थे।

२१. और नफायटी रात-दिन उनकी सेनाओं पर धावा मारते और उनको हजारों लाखों की संख्या में मार डालते।

२२. और रात-दिन भारी संख्या में मारे जाने के कारण जेमनारिहा के लोगों को पीछे लौट जाने की इच्छा हुई।

२३. और ऐसा हुआ कि जेमनारिहा ने अपने लोगों को (१२) उत्तर के देश में उसके सब से दूर के स्थानों में चले जाने की आज्ञा दी।

२४. गिडगिडोनी को उनकी इच्छा का पता लग गया, और वह उनकी भोजन की कमी और भारी संख्या में उनके मारे जाने की कमजोरियों को जानता था; इसलिए उसने रात में अपनी सेनाओं को भेज कर उनके पीछे हटने के रास्ते को बंद कर दिया और पीछे लौटने के रास्ते पर अपनी सेनाओं को नियुक्त कर दिया।

२५. यह उन्होंने रात को किया और डाकुओं से आगे निकल कर रास्ता रोक लिया, इसलिए जब सुबह को डाकुओं ने कूंच किया, तब उनका सामना आगे, और पीछे से भी नफायटियों की सेनाओं से हुआ।

२६. और जो डाकू दक्षिण में थे उनका भी पीछे लौटने का रास्ता बन्द हो गया था। यह सब कुछ गिडगिडोनी की आज्ञा से ही हुआ।

२७. और कई सहस्त्र डाकू नफायटियों के बन्दी बन गए और शेष मारे गए।

२८. और उनके नेता जेमनारिहा को पकड़कर एक पेड़ की सबसे ऊंची डाल से तब तक लटका कर रखा गया, जब तक कि वह मर न गया। और जब उसके प्राण पखेरू उड़ गए, तब उन्होंने उस वृक्ष को काट कर धरती पर गिरा दिया, और वे ऊंची आवाज में कहने लगे :

२९. प्रभु अपने लोगों को उनके धार्मिक होने और हृदय के पवित्र होने से सुरक्षित रखे जिससे कि जो भी कोई उनको बल के साथ और (१३) गुप्त संगठन के द्वारा मारना चाहे, उसे

(९) ३ नफी ३, ४-१०. (१०) देखो ८, ३ नफी ३. (११) पद्य ४. (१२) देखो १६, अलमा ४६. (१३) देखो ९, २ नफी १०.

*ईस्वी २२

इसी व्यक्ति की तरह धरती पर मार गिराया जाए।

३०. और वे सब आनन्द मनाते हुए एक साथ पुकार उठे; इब्राहीम, इसाक, और याकूब का परमेश्वर, इन लोगों की तब तक रक्षा करता रहे जब तक कि ये लोग धार्मिकता के साथ रक्षा के लिए अपने परमेश्वर के नाम को पुकारते हैं।

३१. और ऐसा हुआ कि वे सब अपने परमेश्वर के गीत गाने और उसकी प्रशंसा करने लगे, क्योंकि उसने उनको शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बचा कर, उनके लिए महान कार्य किए थे।

३२. हां, उन्होंने पुकारा: सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर की जयजयकार। और वे पुकार उठे सर्वश्रेष्ठ, सर्व-शक्तिमान प्रभु परमात्मा का नाम धन्य है।

३३. और अपने शत्रुओं से रक्षा करने के लिए, परमेश्वर की महान उदारता के कारण, उनका हृदय इतना प्रफुल्लित हो उठा कि उनकी आंखों से आंसू बहने लगे; और वे जानते थे कि पश्चात्ताप करने और विनीत बनने के कारण उनको सदा के लिए नष्ट होने से बचा लिया जाएगा।

अध्याय ५

नफायटियों का पश्चात्ताप और पापकर्मों को समाप्त करने का प्रयत्न—मारमन द्वारा स्वयं का और अपने पास रखी पटियों का विवरण—इस्राएली वंश का एकत्रित होने का संकेत।

१. और अब सुनो, सारे नफायटियों में कोई एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो कि भविष्यवक्ताओं की कही गई वाणियों में ज़रा सा भी सन्देह करता हो; क्योंकि वे जानते थे कि उनका पूरा होना आवश्यक है।

२. और वे यह भी जानते थे कि मसीह का आना आवश्यक था क्योंकि भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहे अनुसार अनेक संकेत दिए जा चुके थे; और जो घटनाएं घटी थीं उनके कारण वे जान चुके थे कि कही गई बातों के अनुसार ही सब कुछ होगा।

३. इसलिए वे अपने सारे पापकर्मों को, घृणित व्यवहारों को और व्यभिचारों को त्याग कर, रात-दिन परिश्रम के साथ परमेश्वर की सेवा में लग गए।

४. और ऐसा हुआ कि जो डाकू मरने से बच गए थे, उनमें से कोई भी बच कर भाग नहीं सका, वे सब के सब बन्दी बना लिए गए थे और उन्होंने उन्हें कारागार में बन्द कर दिया। और उनमें परमेश्वर की वाणी का प्रचार करवाया गया; और जिन्होंने भी पश्चात्ताप किया, और आगे से कभी भी किसी की हत्या न करने की शर्त मानी, उन्हें मुक्त कर दिया गया।

५. लेकिन जितने लोगों ने शर्त नहीं मानी, और अभी भी जिनके हृदय में (१) गुप्त रूप से हत्या करने की बात थी और अपने बन्धुओं को धमकी देने की बातें करते थे, उन्हें नियम के अनुसार दण्ड दिया गया।

६. इस प्रकार उन्होंने उन सभी दुष्टताओं, गुप्त बातों, और उस घृणित संगठन का अन्त कर दिया जिसमें इतने बुरे कार्य और इतनी हत्यायें की गई थीं।

७. इस प्रकार बाइसवां वर्ष बीत गया; और तेइसवां, चौबीसवां, वर्ष भी बीत गए। इसी प्रकार (२) पच्चीस वर्ष बीत गए।

८. और बहुत-सी बातों की प्रेरणा मिली जो बहुतों की दृष्टि में महान और असाधारण बातें थीं, जो सभी इस पुस्तक में लिखी नहीं जा सकतीं; पच्चीस वर्षों में जो कुछ इतने अधिक लोगों में घटित बातें हुईं कि (३) इस पुस्तक में उनका एक सौवां भाग भी लिखा नहीं जा सकता।

९. लेकिन सुनो कुछ (४) अभिलेख हैं जिनमें इन लोगों के विषय में सब कुछ लिखा गया है; एक संक्षिप्त और सत्य विवरण नफी के द्वारा भी दिया गया है।

१०. इसलिए मैंने जो विवरण दिए हैं, वे नफी के (५) उस अभिलेख से दिए हैं जो कि उन पटियों पर खुदे हुए हैं, जिन्हें (६) नफी की पटियां कहा जाता है।

११. और सुनो, मैं अपने अभिलेख को (७) उन पटियों पर तैयार कर रहा हूं, जिन्हें मैंने अपने हाथों से स्वयं तैयार किया है।

(१) देखो ६, २ नफी १०. (२) ३ नफी २:८. (३) पद्य १०, ११ मा० वा० ५-७, ६ इला० ३:१४. (४) इला० ३:१३, १५, १६. (५) इला० २:१४. (६) देखो ६, १ नफी १. (७) पद्य १४:१८ मा० वा० १-११ इला० ३:१३-१७ मार० १:१, ३:१६-२२, ५:६, १२, १३; ७:८-१०; ८:५, १२-१६.

१२. और मैं उस (८) मारमन देश के नाम पर मारमन कहाता हूं, जिस देश में (९) अलमा ने लोगों द्वारा पाप करने पर उनमें प्रथम गिरजे की स्थापना की थी।

१३. सुनो, मैं परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का एक शिष्य हूं। उसके लोगों में उसकी वाणी की घोषणा करने के लिए मैं पुकारा गया हूं, जिससे कि उनको अनन्त जीवन मिले।

१४. और यह आवश्यक है कि जो संसार से चले गए हैं उनकी प्रार्थना और इच्छानुसार मैं उनके किए गए कामों का अभिलेख तैयार करूं।

१५. हां, लेही के यरूशलेम छोड़ने के समय से लेकर वर्तमान समय तक की होने वाली घटनाओं का (११) संक्षिप्त अभिलेख मैं तैयार करूं।

१६. इसलिए मैंने अपने अभिलेख को उन विवरणों से तैयार किया है जो मुझे उन लोगों द्वारा दिए गए हैं जो मेरे जीवन के आरम्भ से पूर्व थे।

१७. और तब मैं (१२) उन बातों का विवरण दे रहा हूं जिन्हें मैं स्वयं अपनी आंखों से देख चुका हूं।

१८. और मैं जानता हूं कि जिस अभिलेख को मैं तैयार कर रहा हूं, वह उचित और सत्य है; फिर भी बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें हम अपनी भाषानुसार लिखने में असमर्थ हैं।

१९. और अब मैं अपने विषय में, अपनी बातों का अन्त कर उन विषयों का विवरण दूंगा, जो मुझसे पूर्व हुई थीं।

२०. मैं मारमन हूं और लेही का शुद्ध वंशज हूं। यरूशलेम से मेरे पूर्वज-पिता को बाहर लाने (और यह केवल वह स्वयं जानते थे या वह लोग जिन्हें वह अपने साथ बाहर लाए) और मुझे और मेरे लोगों की आत्माओं को मुक्ति दिलाने हेतु इतना अधिक ज्ञान देने के लिए, मेरे पास अपने परमेश्वर और अपने रक्षक यीशु मसीह को आशीष देने के अनेक कारण हैं।

२१. निश्चय ही उसने याकूब के घराने को आशीर्वाद दिया और युसुफ के वंश पर दयालू बना रहा है।

२२. और अपने वचनानुसार लेही के वंशज (१३) जहां तक उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहे हैं, उसने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनकी प्रगति करवाई है।

२३. और निश्चय ही युसुफ के (१४) बचे हुए वंश को फिर से वह उनके प्रभु परमेश्वर की जानकारी में लाएगा।

२४. और जितना निश्चय परमेश्वर के होने का है, उतना ही निश्चय है कि वह जगत को चारों दिशाओं से याकूब के (१५) सभी अवशेष वंश-वालों को एकत्रित कर लेगा, जो सारे संसार भर में बिखरे हुए हैं।

२५. और जिस प्रकार उसने याकूब के सारे घराने के साथ वायदा किया था, ठीक उसी प्रकार याकूब के सारे वंशवालों से किए गए वायदे को उचित अवसर पर जानकारी कराकर, उसकी सत्यता को सिद्ध करेगा।

२६. और तब वे अपने उद्धारक को जानेंगे, जो कि यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र है; और तब वे संसार के चारों कोनों से अपने उस देश में एकत्रित किए जाएंगे, जहां से वे चले गए थे; और जितना परमेश्वर के होने का निश्चय है उतना ही निश्चय इसके होने का भी है। आमीन।

अध्याय ६

लोगों का सम्पन्न होना—अहंकार, सम्पत्ति और वर्गभेद का आना—मतभेद के कारण गिरजे का विभाजन होना—अन्धकार में किए जाने वाले कार्य।

१. ऐसा हुआ कि *छब्बीसवें वर्ष में नफी के सभी लोग अपने परिवारों, पशु-पक्षियों (१) घोड़ों, गाय-बैलों और अन्य वस्तुओं के साथ अपनी भूमि को वापस लौट गए।

२. और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपनी भोजन-सामग्री को खाकर समाप्त नहीं कर दिया था; इसलिए हरएक प्रकार के बचे हुए अनाजों, अपने सोने-चांदी, और अपनी अन्य सभी मूल्यवान वस्तुओं को लेकर वे, उत्तर और दक्षिण को, (२)

(८) देखो २, मू० १८. (९) मू० १८. (११) देखो ७. (१२) मार० १-७. (१३) देखो ८, २ नफी १. (१४) देखो ७, २ नफी ३. (१५) देखो ५, १ नफी १५. (१) देखो १३, १ नफी १८. (२) देखो १६, अल० ४६. ईस्वी २१-२६

उत्तर के देश में और (३) दक्षिण के देश में भी, अपने-अपने घरों और अधिकार की भूमि पर वापस लौट गए।

३. और उन डाकुओं को जिन्होंने (४) शान्ति बनाए रखने का समझौता किया था, और जो लमनायटी ही बने रहना चाहते थे, उन्हें उनकी संख्या के अनुसार जीवन निर्वाह करने के लिए उन्होंने भूमि दी; और इस तरह उन्होंने सारे देश भर में शान्ति स्थापित की।

४. और वे फिर से प्रगति करने और बढ़ने लगे; और छब्बीसवां और सत्ताइसवां वर्ष बीत गया और सारे देश में पूर्ण व्यवस्था बनी रही; और लोगों ने निष्पक्षता और न्याय के अनुरूप अपने नियम बना लिए।

५. और अब पाप से पतित होने के अलावा सारे देश भर में कोई बाधा नहीं रह गयी थी, जो उनको लगातार समृद्ध बनने से रोक सकती हो।

६. और देश में इस भारी शान्ति की स्थापना करने के जिम्मेदार (५) गिडगिडोनी, निर्णायक (६) लक्षोनस और अन्य दूसरे नेता थे, जिन्हें नियुक्त किया गया था।

७. और बहुत से नए नगर बसाए गए और बहुत से पुराने नगरों की मरम्मत की गई।

८. और (७) बहुत सी मुख्य सड़कें और रास्ते तैयार किए गए, जो कि एक नगर से दूसरे नगर, एक देश से दूसरे देश और एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते थे।

९. इस तरह अट्ठाइसवां वर्ष बीत गया और लोगों को लगातार शान्ति मिलती रही।

१०. लेकिन ऐसा हुआ कि उन्तीसवें वर्ष में लोगों में कुछ वादविवाद होना आरम्भ हुआ; और कुछ अपने अधिक धन के कारण घमंड में फूल गए और बढ़-बढ़ कर बोलने लगे, और लोगों का भारी उत्पीड़न आरम्भ हुआ।

११. क्योंकि देश में बहुत से (८) व्यापारी, (९) वकील और बहुत से अफसर हो गए थे।

१२. और अब लोगों को उनके पद, उनके धन और विद्या प्राप्त करने के अवसरों के अनुसार पहिचाना जाने लगा था, कुछ कंगाल होने के कारण अज्ञानता में थे, जबकि दूसरों ने धन के कारण भारी ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

१३. कुछ अहंकार में फूले हुए थे, जबकि दूसरे अति विनीत बने हुए थे; कुछ गाली के बदले गाली देते, कुछ गाली भी सहते और उपद्रव और हर प्रकार के कष्टों का सामना भी करते और पलट कर बुरा भला भी नहीं कहते, परन्तु परमेश्वर के सामने दीन और पश्चात्ताप करने वाले बने रहते थे।

१४. इस तरह से सारे देश भर में भारी असमानता हो गई, इतनी भारी असमानता कि गिरजा भी टूटने लगा; और गिरजों को इतनी क्षति पहुंची कि कुछ लमनायटियों के गिरजों को छोड़ कर, जिन्होंने मत परिवर्तन कर सत्य धर्म को स्वीकार कर लिया था, देश भर के गिरजे टूट गए; और ये लमनायटी अपने गिरजों को छोड़ते नहीं थे, क्योंकि ये दृढ़ और अडिग थे और प्रभु की आज्ञाओं का पालन परिश्रम के साथ करने के लिए तैयार थे।

१५. अब इस पाप का कारण यह था: लोगों से हर एक प्रकार के पापकर्म करवाने के लिए, उन्हें भड़काने को शैतान के पास भारी शक्ति थी और उसने उन्हें अहंकार में फुला कर शक्ति, अधिकार, सम्पत्ति और निरर्थक सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए लालच दिया।

१६. इस तरह हरएक प्रकार के पापकर्म करने के लिए शैतान ने लोगों के हृदयों को बहकाया; इसलिए उन्होंने शान्ति का आनन्द कुछ ही वर्ष उठाया।

१७. इस प्रकार (१०) तीसवें वर्ष के आरम्भ में शैतान ने लोगों को अपने लालच में फंसा कर, उन्हें अपनी इच्छानुसार चाहे जहां ले जाने और चाहे जो भी पाप करवाना चाहे, करवाने लायक बना दिया था— इस तरह तीसवें वर्ष के आरम्भ में लोग भयंकर पाप की कीचड़ में फंस चुके थे।

१८. वे अज्ञानता में पापकर्म नहीं कर रहे थे,

(३) देखो १४, अल० ४६. (४) ३ नफी ५:४. (५) देखो ८, ३ नफी ३. (६) ३ नफी १:१, ३:१. (७) इला० १४:२४, ३ नफी ८:१३. (८) इला० ६:८. (९) पद्य २१, २२, २७अल० १०:१४, १५, १७, २७-३२, १८, २३, २७. (१०) ३ नफी २:८.

*ईस्वी २६ ईस्वी २९-३०

क्योंकि उनके विषय में परमेश्वर की जो इच्छा थी वे जानते थे, क्योंकि यह उनको सिखायी गयी थी; इसलिए उन्होंने जानबूझकर परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था।

१९. यह (११) लक्षोनस के पुत्र लक्षोनस के समय में हुआ क्योंकि लक्षोनस के मरने के पश्चात् उसका पुत्र लक्षोनस पिता की गद्दी पर बैठ कर शासन कर रहा था।

२०. और स्वर्ग से प्रेरणा प्राप्त लोगों को सारे देश भर में भेजा जाने लगा, जो निर्भीकता के साथ लोगों में खड़े होकर उपदेश देने और उनके पापों और अनुचित कामों की गवाही देते हुए, प्रभु द्वारा अपने लोगों के लिए उद्धार लाने की व्यवस्था के विषय में, दूसरे शब्दों में मसीह के मरकर जी उठने के विषय में साक्षी देते; और साथ ही निर्भीकता के साथ उसके कष्टों और मृत्यु के विषय में भी बतलाते।

२१. और जो इन बातों की साक्षी दे रहे थे उनसे कुछ लोग अति क्रोधित हो उठे; और जो क्रोधित हुए उनमें मुख्य निर्णायक, प्रधान (१२) पुरोहित और (१३) वकील थे; हां, जितने भी वकील थे वे सब उन पर क्रोधित थे, जिन्होंने इन बातों की साक्षी दी थी।

२२. देश के (१४) शासक के हस्ताक्षर के बिना किसी भी (१५) वकील, निर्णायक या (१६) पुरोहित को मृत्युदण्ड देने का अधिकार नहीं था।

२३. इस समय बहुत से लोगों ने मसीह के विषय में साक्षी दी थी और साहस के साथ इन बातों को कहने वाले लोगों को निर्णायक ने गुप्त रूप से मार डाला, जिसकी सूचना देश के (१७) शासक को उनकी मृत्यु से पूर्व नहीं मिली।

२४. बिना देश के शासक द्वारा अधिकार दिए जाने के किसी को मार डालना देश के नियम के विरुद्ध था।

२५. इस कारण (१८) ज़राहेमला देश में शासक के पास इन निर्णायकों के विरुद्ध शिकायत आई, जिन्होंने प्रभु के भविष्यवक्ताओं को नियम के विरुद्ध मार डाला था।

२६. तब ऐसा हुआ कि उनको पकड़ कर लोगों (१९) द्वारा बनाए गए नियम के अनुसार न्याय करने के लिए निर्णायकों के पास ले जाया गया।

२७. तब ऐसा हुआ कि उन निर्णायकों के अनेक मित्रों और सम्बन्धी थे; और दूसरे लोग और यहां तक कि सभी (२०) वकील, और (२१) मुख्य पुरोहित एक साथ होकर उन निर्णायकों के सम्बन्धियों से मिल गए, जिनका निर्णय नियम के अनुसार होने वाला था।

२८. और उन्होंने एक दूसरे के साथ वह प्रतिज्ञा करली, हां, ऐसी प्रतिज्ञा, जो उन्हें आदिकाल से, धार्मिकता के विरुद्ध संगठित होने को, शैतान करवाता आ रहा है।

२९. इसलिए वे प्रभु के लोगों के विरुद्ध संगठित हो गए और उन्हें नष्ट करने के लिए और जो हत्या के अपराधी थे, उन्हें न्याय की पकड़ से मुक्त करने के लिए, वचनबद्ध हो गए।

३०. और उन्होंने अपने देश के नियम और अधिकारों की अवहेलना की; और देश के शासक को नष्ट कर, देश में एक राजा को स्थापित करने के लिए उन्होंने एक दूसरे के साथ प्रतिज्ञा की, जिससे कि देश (२२) स्वतन्त्र न रह कर, राजाओं के अधीन रहा करे।

अध्याय ७

प्रधान निर्णायक की हत्या और शासन का पलटा जाना—जातियों में भी विभाजन—राजा याकूब—नफी का प्रभावपूर्ण उपदेश।

१. और अब सुनो, मैं तुम्हें यह दिखाऊंगा कि उन्होंने देश में किसी राजा को स्थापित नहीं किया; लेकिन इसी तीसवें वर्ष में उन्होंने न्यायासन पर देश के प्रधान निर्णायक को नष्ट किया, हां, उन्होंने उसकी हत्या कर दी।

२. और लोग एक दूसरे के विरुद्ध हो गए और एक दूसरे से अलग हो, वर्गों में, अपने परिवार और सम्बन्धियों और मित्रों के अनुसार बंट गए; और उन्होंने देश के शासन को नष्ट कर डाला।

(११) ३ नफी १:१. (१२) देखो ७, मू० २६. (१३) देखो ६. (१४) देखो ६. (१५) देखो ७. (१६) पद्य १६. (१७) पद्य १६. (१८) ओम० १३. (१९) देखो ५ मू० २६. (२०) देखो ६. (२२) देखो १३, मू० २६.

३. और हरएक दल ने अपना प्रधान या नेता नियुक्त किया और इस तरह से वर्गीकरण हुआ और वर्गों के नेता बने।

४. और अब सुनो, उनमें कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसके भारी परिवार और सम्बन्धी और मित्र न रहे हों; इसलिए दल बहुत ही बड़े-बड़े थे।

५. यह सब कुछ हुआ परन्तु उनमें अभी तक कोई लड़ाई न हुई; और लोगों में ये सब पाप इसलिए आ गए क्योंकि उन्होंने अपने आपको शैतान की शक्ति के वश में हो जाने दिया था।

६. और जिन्होंने भविष्यवक्ताओं की हत्या की थी, उनके साथ उनके मित्रों और सम्बन्धियों के द्वारा (१) गुप्त संगठन कर लेने के कारण, शासन की व्यवस्थायें नष्ट हो गई थीं।

७. और देश में इतना अधिक विवाद होने लगा कि धार्मिकों का अधिकांश भाग पापी बन गया; हां, उनमें कुछ ही लोग धार्मिक बचे थे।

८. जिस प्रकार कुत्ते अपने वमन किए की ओर और सुअरी लोटती हुई कीचड़ की ओर जाती है ठीक उसी प्रकार इस तरह से छः वर्ष के भीतर ही अधिकांश लोगों ने धार्मिकता (२) त्याग दी।

९. लोगों के ऊपर इतना अधिक पाप लाने वाले इस (३) गुप्त संगठन के लोग एक साथ एकत्रित हुए और उन्होंने अपने प्रधान के पद पर एक व्यक्ति को नियुक्त किया, जिसका नाम था याकूब।

१०. उन लोगों ने उसे अपना राजा कहा और इस तरह वह इस दुष्ट दल का राजा बना; और यह व्यक्ति उन लोगों में प्रधान था जिन्होंने मसीह के पक्ष में साक्षी देने वाले के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाई थी।

११. और ऐसा हुआ कि ये लोग संख्या में उन लोगों के दल की तरह बलवान नहीं थे जो कि संगठित थे, और जिनके नेता अपने-अपने दल के अनुसार अपने नियम बनाते थे; फिर भी वे एक दूसरे के शत्रु होते हुए भी और अपने धार्मिक न होने की परवाह किए बिना, जो लोग शासन को नष्ट करने का षड्यन्त्र किए हुए थे, उनके विरुद्ध वे संगठित थे।

१२. याकूब ने देखा कि उसके शत्रु उसके लोगों से अधिक हैं और वह अपने दल का राजा था, इसलिए उसने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वे देश के सब से उत्तर की भूमि पर भाग चलें और वहां एक राज्य की स्थापना करके तब तक रहें, जब तक कि उनके साथ अन्य विद्रोही आकर मिल नहीं जाते (उसने उनसे बहुत ही बहकाने वाली बातें कहीं कि उनसे बहुत से विद्रोही आ मिलेंगे) और वे लोगों से युद्ध करने में समर्थ हो जाएंगे। लोगों ने उसके कहे अनुसार ही किया।

१३. और वे इतनी वेग गति से गए कि उनको लोगों द्वारा अपनी पकड़ के अन्दर रोका न जा सका; इस तरह तीसवां वर्ष समाप्त हुआ; और नफी के लोगों की अवस्था इस प्रकार थी।

१४. और ऐसा हुआ कि एकतीसवें वर्ष में उनका हरएक व्यक्ति ने अपने परिवार, सम्बन्धियों और मित्रों के अनुसार वर्गों में विभाजित होते हुए भी यह समझौता कर रखा था कि वे एक दूसरे से लड़ाई नहीं करेंगे। परन्तु नियमों और शासन पद्धति में उनमें एकता नहीं थी, क्योंकि ये तो उनके द्वारा स्थापित किये जाते थे जो उनके मुखिया या नेता होते थे। परन्तु वे एक दूसरे के मामलों में बाधा न डालने के नियम का इतनी कड़ाई के साथ पालन करते थे कि किसी हद तक देश में शान्ति थी; फिर भी उनका हृदय अपने प्रभु परमेश्वर के विपरीत था, और उन्होंने (४) भविष्यवक्ताओं पर पथराव किया था, और उन्हें अपने में से बाहर निकाल दिया था।

१५. और ऐसा हुआ कि नफी—जिसने स्वर्गदूतों के सम्पर्क का और प्रभु की वाणी का अनुभव किया था, जिसने स्वर्गदूतों को देखा था और जिसके पास इसका आखों देखा प्रमाण था और जिसको यह शक्ति दी गई थी कि वह मसीह के विषय में जानकारी रखे और जिसने कि लोगों को (५) शीघ्रता के साथ धार्मिकता को त्याग कर दुष्टता और घृणित कार्यों की ओर लौटते हुए अपनी आंखों से देखा था।

१६. इसलिए उनके हृदयों की कठोरता और

(१) देखो ६, २ नफी १०. (२) ३ नफी ५:७. (३) देखो ६, २ नफी १०. (४) पद्य १६, ३ नफी ६:२३-२५. (५) पद्य ८.

बुद्धिहीनता को देखकर वह दु:खी हुआ और उसी वर्ष उनमें जाकर निर्भीकता के साथ पश्चात्ताप और यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा पापों के क्षमा-दान का प्रचार करने लगा।

१७. और उसने उनमें अन्य बहुत सी बातों का उपदेश दिया, जो सभी यहां लिखी नहीं जा सकती और उनका केवल एक अंश लिखना पर्याप्त नहीं होगा, इसलिए उनको इस पुस्तक में लिखा नहीं गया।

१८. और ऐसा हुआ कि लोग उसके ऊपर क्रोधित हो उठे, यद्यपि उसके पास उनसे अधिक बल था। उसके शब्दों पर अविश्वास करना सम्भव नहीं था क्योंकि प्रभु यीशु मसीह पर उसका विश्वास इतना अधिक था कि (६) स्वर्गदूत प्रतिदिन उसको उपदेश देते थे।

१९. और मसीह के नाम पर उसने शैतानों और अपवित्र आत्माओं को निकाला; और यहां तक कि उसने उस मरे हुए (७) भाई को जिला दिया, जिसे लोगों ने पथराव करके मार डाला था।

२०. और लोगों ने यह देखा और ऐसे कार्यों की साक्षी देखी, और उसकी शक्ति के कारण वे उस पर क्रोधित हो उठे; और यीशु मसीह के नाम पर उसने लोगों के सामने अन्य बहुत से चमत्कार दिखाए।

२१. और ऐसा हुआ कि एकतीसवां वर्ष समाप्त हुआ और बहुत ही कम लोग मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वासी हुए; लेकिन जिन लोगों ने मत परिवर्तन किया था, उन्होंने लोगों को यह बताया कि उनके पास परमेश्वर की शक्ति और आत्मा आई थी जो कि उस मसीह में थी जिसपर उनका विश्वास था।

२२. और जितने लोगों के अन्दर से (८) शैतान कोनिकाला गया और जिनको रोगों और व्याधियों से चंगा किया गया, उन्होंने लोगों को विश्वास दिलाया कि परमेश्वर की आत्माओं द्वारा उन पर प्रभाव पड़ा और वे चंगे हो गए; और उन्होंने भी संकेत दिखाए और कुछ लोगों में चमत्कार के काम भी किए।

२३. इस तरह बत्तीसवां वर्ष भी समाप्त हो गया। और तैतीसवें वर्ष के आरम्भ में नफी ने लोगों को पुकारा; और उसने उनमें पश्चात्ताप और पापों की क्षमा का उपदेश दिया।

२४. मैं चाहता हूं कि तुम यह भी याद रखो कि बिना पानी से (९) बपतिस्मा लिए पश्चात्ताप में किसी को भी नहीं लाया गया।

२५. इसलिए इस सिद्धान्त में नफी के द्वारा अभिषिक्त लोगों के पास जो भी उन्हें वे पानी द्वारा बपतिस्मा देते और यह परमेश्वर के और लोगों के सामने गवाही और साक्षी के लिए होता कि उन्होंने पश्चात्ताप किया है और पापों के लिए क्षमा प्राप्ति कर ली है।

२६. और इस वर्ष के आरम्भ में बहुत से लोगों ने पश्चात्ताप कर (१०) बपतिस्मा ग्रहण किया इस तरह वर्ष का अधिकांश भाग बीता।

अध्याय ८

बताए हुए संकेतों के द्वारा मसीह का क्रुश पर चढ़ाए जाने की साक्षी—आंधी, भूकम्प, बवण्डर और ज्वाला—एक भयंकर विनाश—तीन दिनों तक अन्धकार।

१. हम जानते हैं कि हमारा अभिलेख सत्य है, क्योंकि सुनो, जो अभिलेख को लिखता था, वह एक (१) निष्पक्ष व्यक्ति था—क्योंकि यीशु के नाम पर उसने (२) कई चमत्कार किए थे; और कोई भी व्यक्ति अपने पापों से पूर्णरूप से बिना शुद्ध हुए यीशु के नाम पर कोई भी चमत्कार नहीं दिखा सकता था।

२. और ऐसा हुआ कि हमारे अभिलेख के अनुसार अगर समय की गणना में इस व्यक्ति ने कोई भूल नहीं की है, तब (३) तैंतीसवां वर्ष बीत गया है।

३. और लोग उत्सुकता के साथ लमनायटी भविष्यवक्ता सामुएल द्वारा बताए गए संकेत की प्रतीक्षा करने लगे; हां, उस समय की प्रतीक्षा करने लगे जबकि धरती पर तीन दिनों तक (४)

(६) पद्य १५. (७) ३ नफी १९:४. (८) पद्य १९. (९) देखो २१, २ नफी ९. (१०) देखो २१, २ नफी ९. अध्याय ८. (१) ३ नफी २३:७, १२. (२) ३ नफी ७:१९, २०. (३) ३ नफी २:८. (४) पद्य २३, १ नफी १९:१० इला० १४:२०, २७, ३ नफी १०:९.

अन्धेरा छाया रहेगा।

४. और दिए गए अनेक संकेतों की उपेक्षा कर लोग आपस में भारी सन्देह और तर्क करने लगे।

५. और ऐसा हुआ कि (५) चौतीसवें वर्ष के प्रथम माह के चौथे दिन को एक ऐसी तेज आंधी आई जैसी कि सारे देश भर में पहिले कभी भी नहीं आई थी।

६. और (६) एक भारी भयंकर बवण्डर भी आया; और ऐसा (७) भयावह मेघ गर्जन हुआ कि जिससे सारी धरती कांप उठी, मानो वह फट जाएगी।

७. और (८) इतनी तेज बिजलियां चमकी कि जैसी पहले कभी भी नहीं कौंधी थी।

८. और (९) ज़राहेमला नगर में आग लग गई।

९. और (१०) मरोनी नगर सागर की गहराई में डूब गया और उसके निवासी डूब गए।

१०. और (११) मरोनियाह नगर पर इतनी मिट्टी जमा हो गई कि नगर की जगह पर एक भारी पर्वत हो गया।

११. और (१२) देश के दक्षिण भाग में भयंकर विनाश हुआ।

१२. परन्तु देश के (१३) उत्तर भाग में और भी भयंकर विनाश हुआ; क्योंकि (१४) प्रचण्ड आंधी, (१५) बवण्डरों (१६) मेघगर्जन, (१७) बिजली और सारी धरती के हिलने से धरती का रूप ही बदल गया।

१३. और (१८) मुख्य सड़कें टूट गई थीं, चिकने रास्ते बिगड़ गए थे और बहुत से समतल स्थान (१९) ऊबड़-खाबड़ बन गए थे।

१४. और बहुत-से बड़े नगर धंस गए; कुछ (२०) आग में नष्ट हो गए और कुछ (२१) ऐसे हिले कि वहां के मकान धरती पर (२२) गिर गए और सब नगर निवासी मारे गए और नगर निर्जन हो गए।

१५. कुछ नगर बच गए; परन्तु वहां जो हानि हुई वह बहुत बड़ी थी, और बहुत-से लोग मारे गए थे।

१६. और कुछ को (२३) बवण्डर उड़ा ले गया; वे कहां गए यह कोई भी नहीं जानता; केवल इतना ही जानते हैं कि उन्हें उड़ा ले जाया गया।

१७. और इस तरह तीव्र (२४) आंधी, (२५) मेघ गर्जन (२६) बिजली चमकने और धरती के हिलने से सारी पृथ्वी की ऊपरी सतह बिगड़ गयी।

१८. और (२७) चट्टानें (२८) टुकड़े-टुकड़े हो गईं; वे सारी धरती के ऊपर इतने अधिक टुकड़े-टुकड़े हो गए कि सभी जगह टुकड़ों, सतहों टूटे हुए दिखाई देने लगे।

१९. ऐसा हुआ कि (२९) मेघ गर्जन होता रहा (३०) बिजली चमकती रही (३१) प्रचण्ड वायु (३२) और आंधी चलती रही और भूचाल होता रहा—और सुनो—यह सब (३३) तीन घण्टों तक होता रहा; और कुछ लोग कहते रहे कि यह और अधिक समय तक हुआ; कुछ भी हो, यह सब प्रचण्ड और भयानक कार्य लगभग तीन घण्टों तक होते रहे और तब तक धरती पर (३४) अंधकार छाया रहा।

२०. और ऐसा हुआ कि सारी धरती पर इतना घना अंधकार छा गया कि जगत के जीवित बचे लोगों ने अंधकार के (३५) वास्प का अनुभव किया।

२१. और अंधकार के कारण कोई प्रकाश

(५) ३ नफी २:८. (६) देखो २२, इला० १४. (७) देखो १६, इला० १४. (८) देखो ११, २ नफी १६. (९) ओम० १३, अल० २:२६. (१०) देखो ११, अल० ५०. (११) पद्य २५, इला० १२:१७, ३ नफी ९:५. (१२) देखो १४, अल० ४६. (१३) देखो १६, अल० ४६. (१४) देखो २२, इला० १४. (१५) पद्य १६, ३ नफी १०:१३, १४. (१६) इला० १४. (१७) देखो ११, १ नफी १९. (१८) देखो ७, ३ नफी ६. (१९) १ नफी १२:४. (२०) १ नफी १२:४. (२१) १ नफी १२:४. (२२) १ नफी १२:४. (२३) पद्य १२. (२४) देखो २२, इला० १४. (२५) देखो १६, इला० १४. (२६) देखो ११, १ नफी १९. (२७) देखो २०, इला० १४. (२८) इला० १४:२२. (२९) देखो १६, इला० १४. (३०) देखो ११, १ नफी १९. (३१) पद्य ५. (३२) देखो २२, इला० १४. (३३) लूका २३:४४, ४५. (३४) देखो ६, १ नफी १९. (३५) पद्य ३, २२, २३; १ नफी १२:५, १९:११, इला० १४:२०, २७; ३ नफी १०:९.

नहीं हो सका, न तो मोमबत्ती जलाई जा सकी और न तो मशाल ही जलाई गई; और न ही अच्छी सूखी लकड़ियों के होते हुए आग ही जलाई जा सकी; इस कारण किसी भी तरह से प्रकाश न हुआ।

२२. और किसी भी प्रकार का प्रकाश या आग देखी न गई, न ही चमक, न सूरज, न ही चन्द्रमा और न ही तारे देखे गए, क्योंकि अंधकार का जो कुहरा धरती पर छाया हुआ था वह इतना घना था।

२३. और ऐसा हुआ कि (३६) तीन दिनों तक कोई भी प्रकाश नहीं देखा गया; और सभी लोगों में लगातार भारी रोना चिल्लाना और आंसू बहाना होता रहा; हां, अंधकार और भारी विनाश के कारण लोग दारुण रूप से कराह रहे थे।

२४. और एक स्थान पर लोगों को पुकार कर यह कहते सुना गया: ओह, इस महा भयंकर दिन से पूर्व ही हम लोगों ने पश्चात्ताप कर लिया होता और भविष्यवक्ताओं की हत्या और उन पर पथराव न किया होता, तब हमारे बन्धुओं को इस विनाश से बचा लिया जाता और वे उस महानगरी (३७) ज़राहेमला में जला कर नष्ट नहीं कर दिए जाते।

२५. और दूसरे स्थान पर लोगों को रोते चिल्लाते हुए यह कहते सुना गया: ओह! अगर हमने इस महाभयंकर दिन से पहले ही पश्चात्ताप किया होता और भविष्यवक्ताओं की हत्या न की होती और उन पर पथराव न किया होता, तब हमारी मातायें, और सुन्दर कन्यायें और बच्चे छोड़ दिए जाते, न कि उस (३८) महानगरी मरोनियाह में दफन हो जाते। इस तरह लोगों का रोना चिल्लाना बड़ा दारुण था।

अध्याय ९

परमेश्वर की वाणी द्वारा प्रकोप के विस्तार और उसके कारणों का प्रकट किया जाना—मूसा के नियम का पूरा होना—एक निराश हृदय और एक शोकार्त आत्मा का बलिदान स्वीकार किए जाने योग्य।

१. और ऐसा हुआ कि सारे संसार के लोगों को, और इस देश के सभी स्थानों पर एक (१) वाणी यह कहती हुई सुनाई दी:

२. संताप हो, संताप हो, संताप हो इन लोगों को; और अगर लोगों ने पश्चात्ताप नहीं किया तब सारे संसार के लोगों को संताप होगा; क्योंकि मेरे लोगों के जो सुन्दर पुत्र-पुत्रियां इन लोगों के पापों के कारण मरे हैं, उसके कारण शैतान हंस रहा है, और उसके दूत आनन्द मना रहे हैं।

३. सुनो, मैंने उस (२) महानगरी ज़राहेमला और उसके निवासियों को ज्वाला से (३) जला डाला है।

४. और सुनो, मैंने उस महानगरी (४) मरोनी को सागर की गहराई में (५) डुबो दिया है, और उसके सब निवासी डूब मरे हैं।

५. और सुनो, उस (६) महानगरी मरोनियाह और उसके निवासियों को, उनके पापों और घृणित कार्यों को अपनी दृष्टि से छुपाने के लिए मिट्टी से ढंक दिया है, जिससे कि भविष्यवक्ताओं और संतों के रक्त उनके विरुद्ध मेरे पास और न आए।

६. और सुनो, गिलगाल नगर और उसके निवासियों को मैंने मिट्टी के अन्दर ढंक दिया है।

७. और ओनिहा नगर और उसके निवासियों के स्थान, और मोकम नगर और उसके निवासियों के स्थान और (७) यरूशलेम नगर और उसके निवासियों के स्थान को मैंने जल में डुबो दिया है, ताकि उनके पापों और घृणित कामों को अपनी दृष्टि से छुपा सकूं, जिससे कि भविष्यवक्ताओं और संतों के रक्त, मेरे पास उनके विरुद्ध न आ सकें।

८. और सुनो, गडियन्दी, गडिओमनाह, याकूब और गिमगिनो नगरों को भी मैंने मिट्टी के अन्दर कर दिया है, जिनके स्थानों पर मैंने (८) पहाड़ों और खाइयां कर दी हैं; और उनके नगरों के

(३६) देखो ६, १ नफी १९. (३७) पद्य ८, इला० १३:१२-१४. (३८) देखो ११. अध्याय ९. (१) १ नफी १६:११. (२) १ नफी, ओम० १३. (३) ३ नफी ८:८. (४) देखो ११, अल० ५०. (५) ३ नफी ८:९. (६) देखो ११, नफी ८. (७) देखो २, अल० २१. (८) १ नफी १६:१७, १४:२३; ३ नफी ८:१०, १०:१३, १४.

निवासियों को मिट्टी की गहराई में ढंक दिया है; जिससे कि मैं उनके पापों और घृणित कामों को अपनी दृष्टि से छुपा दूं, ताकि भविष्यवक्ताओं और संतों के रक्त मेरे पास उनके विरुद्ध और न आएं।

९. और सुनो, वह महानगरी याकोबगाथ, जहां राजा याकूब के लोग रहते थे जिनके पाप और घृणित कार्य संसार के अन्य लोगों की तुलना में, उनकी (९) गुप्त हत्याओं और संगठनों के कारण अत्यधिक थे, को मैंने (१०) अग्नि से जला डाला है; क्योंकि यही वे लोग थे जिन्होंने (११) मेरे लोगों की शान्ति भंग की और देश की शासन व्यवस्था को नष्ट कर डाला था: इसलिए मैंने उन्हें जला डाला है जिससे कि उन्हें मैं अपने सामने से नष्ट कर दूं ताकि भविष्यवक्ताओं और संतों के (१२) रक्त उनके विरुद्ध मेरे पास और न आ सके।

१०. और सुनो, लमान नगर, जोश नगर, गेड नगर, और किसकूमन नगर और वहां के निवासियों को मैंने (१३) जला डाला है, क्योंकि मैंने उनके पापों को और घृणित कामों को उन्हें बतलाने के लिए जिन भविष्यवक्ताओं को भेजा था उन्होंने उन्हें खदेड़ा और उन पर पथराव कर पाप किया था।

११. उन्होंने उनमें से हरएक को खदेड़ा और उनमें एक भी धार्मिक व्यक्ति नहीं था, इसलिए मैंने (१४) आग भेजकर जला डाला है जिससे कि उनके पाप और घृणित कार्य मेरी दृष्टि से छुप जाएं और जिन भविष्यवक्ताओं और संतों को मैंने भेजा था, उनके रक्त लोगों के विरुद्ध और न आ सके।

१२. और इन लोगों पर, और इस देश पर, उनके पापों और घृणित कार्यों के कारण मैं अन्य बहुत भयंकर विनाश लाया हूं।

१३. उनसे अधिक धार्मिक होने के कारण हे बचे हुए लोगो, क्या अब तुम मेरी ओर लौटोगे और पश्चात्ताप कर मत परिवर्तन करोगे, जिससे कि मैं तुम्हें रोग मुक्त कर सकूं?

१४. मैं तुमसे सच कहता हूं कि अगर तुम मेरे पास आओगे तब तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा। सुनो, मेरा दया का हाथ तुम्हारी ओर फैला हुआ है और जो मेरे पास आएगा, उसे मैं स्वीकार करूंगा; और धन्य हैं वे लोग जो मेरे पास आते हैं।

१५. सुनो, मैं परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हूं। मैंने (१५) स्वर्ग, पृथ्वी और उनकी सारी वस्तुओं की रचना की है। आरम्भ से ही मैं पिता के साथ था। (१६) मैं पिता में हूं और पिता मुझमें है; और पिता ने अपने नाम को (१७) मुझमें गौरवान्वित किया है।

१६. मैं (१८) अपने लोगों के पास आया परन्तु उन्होंने मुझको स्वीकार नहीं किया। और मेरे आने के (१९) विषय में शास्त्रों का कहना सत्य हुआ।

१७. और जितने लोगों ने मुझे स्वीकार किया उन सभी को (२०) परमेश्वर की सन्तान बनने की स्वीकृति मैंने प्रदान की; इसी तरह जितने लोग मेरे नाम पर विश्वास करेंगे उन सभी को अवसर दिया जाएगा; क्योंकि सुनो (२१) उद्धार मेरे द्वारा ही आता है और मूसा का नियम भी (२२) मुझमें पूर्ण हो गया।

१८. मैं ही (२३) जगत का प्रकाश और जीवन हूं, मैं ही अल्फा और ओमेगा अर्थात् आदि और अन्त हूं।

१९. और (२४) अब रक्त की आहुति मुझे और मत दो; हां, तुम्हारे बलिदान और अग्नि में जली आहुति का अब अन्त हो जाना चाहिए, क्योंकि अब मैं तुम्हारी बलि और आहुतियों को स्वीकार नहीं करूंगा।

२०. अब मेरे लिए एक निराश हृदय और एक शोकार्त आत्मा की बलि दिया करो। और मेरे पास जो कोई निराश हृदय और शोकार्त आत्मा से आएगा,

(९) पद्य १०, १ नफी १२:४, ३ नफी ८:१४. (१०) देखो ९, २ नफी १०. (११) ३ नफी ७:९-१३. (१२) ३ नफी ६:२३-२५, ७-१०. (१३) देखो ९. (१४) देखो ९. (१५) मू० ३:८, ४:२, देखो इला० १४. (१६) ३ नफी ११:२७, १९:२३ २९ ए० ३:१४. (१७) ३ नफी ११:७, १२. (१८) यूहन्ना १, ११. (१९) ३ नफी १५:४, ५. (२०) यूहन्ना १:१२. (२१) पद्य २१, २ नफी ३१:२१, मू० ३:१७, ४:७, ८ देखो ४, मू० ५. (२२) ३ नफी १५:२-८. (२३) देखो १३, मू० १६. (२४) ३ नफी १५:२-८.

उसको मैं (२५) अग्नि और पवित्रात्मा से बपतिस्मा उसी प्रकार दूंगा जैसे कि लमनायटियों को उनके (२६) मत परिवर्तन के समय, मुझ पर विश्वास के कारण मैंने अग्नि और पवित्रात्मा से बपतिस्मा दिया था और वे यह जानते भी नहीं थे।

२१. सुनो, मैं जगत को पापों से (२७) उद्धार करने के लिए संसार में आया हूं।

२२. इसलिए जो भी कोई पश्चात्ताप कर (२८) एक शिशु के समान मेरे पास आएगा, उसे मैं स्वीकार करूंगा क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसा ही है। सुनो, ऐसे ही लोगों के लिए मैंने अपने प्राण को देकर फिर से उसे ग्रहण कर लिया; इसलिए पश्चात्ताप करो और पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे सिरे के लोगो, मेरे पास आओ और बच जाओ।

अध्याय १०

देश में शान्ति—स्वर्ग से पुनः वाणी का सुनाई देना—अन्धकार का हटना—केवल अधिक धार्मिक लोगों का बचाया जाना।

१. और अब सुनो, ऐसा हुआ कि देश के सभी लोगों ने (१) इन बातों को सुना और देखा। इन बातों के कहे जाने के पश्चात् देश में कई घण्टों तक शान्ति बनी रही।

२. क्योंकि लोगों को इतना अधिक आश्चर्य हुआ कि उन्होंने अपने मारे गए रिस्तेदारों के लिए विलाप करना बन्द कर दिया; इसलिए सारे देश भर में कई घण्टों तक शान्ति बनी रही।

३. और ऐसा हुआ कि लोगों को वह वाणी फिर सुनाई दी और सभी ने उसको सुना और उसके साक्षी हुए जो यह थी:

४. इन (२) नष्ट हुए महान नगरों के लोगो, जो कि याकूब के वंश के हो, हां, तुम जो इस्राएल के घराने के हो, जिस तरह एक मुर्गी अपने बच्चों को अपने डैनों के नीचे एकत्रित कर लेती है, उसी प्रकार मैंने कितनी बार तुम्हें एकत्रित करके पालन-पोषण किया है।

५. हे इस्राएल के घराने के लोगों, जो मर चुके हो, मैं कितनी बार तुम्हें उसी प्रकार एकत्रित करता जिस प्रकार एक मुर्गी अपने बच्चों को अपने डैनों के नीचे एकत्रित करती है। हे इस्राएल के घराने के लोगो जो यरूशलेम के रहने वाले हो, तुम भी पतित लोगों जैसे हो; मैं तुम्हें भी कितनी बार उसी तरह एकत्रित करता, जिस प्रकार एक मुर्गी अपने बच्चों को अपने परों के नीचे एकत्रित करती है, परन्तु तुम एकत्रित नहीं होते थे।

६. हे इस्राएल के घराने वालो, जिन्हें मैंने जीवित (३) छोड़ दिया है, अगर तुम पश्चात्ताप करो और सच्चे हृदय से मेरी ओर लौटो, तब मैं तुम्हें कितनी बार उसी प्रकार एकत्रित करूंगा जिस प्रकार एक मुर्गी अपने बच्चों को अपने डैनो के नीचे एकत्रित करती है।

७. लेकिन अगर ऐसा नहीं होता, तब तुम्हारे निवास स्थान तब तक के लिए निर्जन हो जाएंगे जब तक कि तुम्हारे पूर्वजों द्वारा शर्तनामे के पूरे होने का (४) समय नहीं हो जाता।

८. और जब लोगों ने ये शब्द सुन लिए तब पुनः वे अपने बन्धुओं और मित्रों के मरने के कारण रोने चिल्लाने लगे।

९. और ऐसा हुआ कि इसी प्रकार (५) तीन दिन बीत गए। और वह (६) सुबह का समय था जबकि धरती के ऊपर से अंधकार हट गया, धरती का हिलना बन्द हुआ, (७) चट्टानों का टूटना समाप्त हुआ, और भयानक कराहें और तहस-नहस होने के कोलाहल का भी अन्त हुआ।

१०. और फिर से धरती एक साथ चिपक कर शान्त हो गई; और जो लोग जीवित बच गए थे उनका रोना चिल्लाना बन्द हुआ; और उनका रुदन आनन्द में परिवर्तन हो गया और शोक

(२५) १ नफी १०:१७, १९:२२, १३:३७, २ नफी ३१:११-१४. १७, १८, ३२:२-५, ३३:१, २ या० ६:८, ७:१२, अल० १३:२८, ३४, ३८, ३६:२४, इला० ५:४५, ३ नफी ७:२१, ११:३५, ३६, १२:१, २; १५:२३; १६:४, ६; १८. (३७) १९:९, १३, १४, २०-२२, २६:१७. २८:११; १८, ३०:२, ४ नफी १, २०, ४८, मार० १:१४, ७:१० ए० ५:४:१२:१४, २३. ४१ मरो० २, ३; ४:३; ५:२, ६:४, ९, ७:३२, ३६, ८:७, ९, २३, २६, १०:४-७. ९:१९. (२६) इला० ५:४५ एथ० १२:१९. (२७) देखो २१. (२८) ३ नफी ११:३७, ३८. (१) १ नफी १९:११. (२) ३ नफी ८:८-१६, २४:९:३-१२. (३) पद्य १२, ३ नफी ९:१३. (४) देखो ५, १ नफी १५. (५) देखो ६, १ नफी १९. (६) ३ नफी ८:१९-२३. (७) देखो २० इला० १४.

अपने उद्धारक प्रभु यीशु मसीह की प्रशंसा और कृतज्ञता में बदल गया।

११. और यहां तक भविष्यवक्ताओं के द्वारा कही गई (८) शास्त्र की बातें पूरी हुईं।

१२. और जो (९) अधिक धार्मिक लोग थे, जिन्होंने भविष्यवक्ताओं पर पथराव न करके उन्हें स्वीकार किया था, वे ही लोग बचे थे और इन्हीं बचे लोगों ने संतों का रक्तपात नहीं किया था।

१३. उन्हें (१०) धंसा कर मिट्टी के अन्दर ढंक नहीं दिया गया, परन्तु जीवित ओड़ दिया गया; उन्हें (११) सागर की गहराई में डुबाया भी नहीं गया; न उन्हें (१२) ज्वाला से जलाया ही गया और न उन्हें गिरा कर नष्ट ही किया गया; उन्हें (१३) बवण्डर में उड़ाया भी नहीं गया और न तो धुंए और अंधकार (१४) की भाप से ही वे शक्तिहीन हुए।

१४. और अब जो भी कोई पढ़े उसे समझना चाहिए; और जिनके पास शास्त्र हैं उन्हें उनमें (१५) यह ढूंढना चाहिए कि (१६) अग्नि, (१७) धुंए, (१८) आंधी, (१९) बवण्डर और (२०) धरती के फटने से जो मृत्यु हुई है, और ये सब बातें बहुत से पवित्र भविष्यवक्ताओं की कही गई भविष्यवाणियों को पूर्ण करती हैं या नहीं।

१५. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि बहुतों ने मसीह के आने के समय होने वाली इन बातों की साक्षी दी थी और इन साक्षियों के कारण वे मारे गए थे।

१६. हां, भविष्यवक्ता (२१) जीनस ने इसकी साक्षी दी थी, और (२२) जीनक ने भी विशेष रूप से हमारे विषय में कहा था, हम जो कि उनके वंश के अवशेष हैं।

१७. सुनो, हमारे पूर्वज याकूब ने भी युसुफ के (२३) एक बचे अंश के विषय में कहा था। और देखो, क्या हम यूसुफ के वंश के अवशेष लोग नहीं हैं? और ये बातें जो हमारे विषय में कही गई हैं या उन पीतल की (२४) पटियों पर नहीं लिखी हैं जिनको हमारे पिता लेही यरूशलेम से लाए थे?

१८. और सुनो, मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि चौतिसवें वर्ष की समाप्ति से पूर्व नफी के लोग और नफायटी कहलाए जाने वाले लोग, जिनको जीवित छोड़ दिया गया था, उन पर विशेष कृपा की गई और उन पर आशीर्वादों की इतनी वर्षा हुई कि मसीह के स्वर्ग जाने के शीघ्र पश्चात् उसने उनमें अपने आप को प्रकट किया।

१९. उसने उनको अपना (२५) दर्शन दिया और उन्हें उपदेश दिया; और उसके उपदेशों का विवरण (२६) यहां से आगे दिया जाएगा। इसलिए इस समय मैं अपनी बातों को समाप्त कर रहा हूं।

जब नफी के लोगों की भीड़ सम्पन्न देश में एकत्रित थी तब यीशु मसीह उनके समक्ष प्रकट हुआ और उनको उपदेश दिया और इसी उद्देश्य को लेकर वह उनके सामने प्रकट हुआ।

अध्याय ११ से २६ तक

अध्याय ११

अमर पिता द्वारा मसीह के विषय की घोषणा—पुनर्जीवित मसीह का प्रकट होना—भीड़ को उसके घावों को छूने की अनुमति—बपतिस्मा की विधि की व्यवस्था—विवाद और तर्क की मनाई—मसीह चट्टान।

१. अब ऐसा हुआ कि जो (१) मन्दिर (२) सम्पन्न देश में था, उसके आसपास नफी के लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित हुई; और वे एक दूसरे पर आश्चर्य और अपने मन की विस्मय प्रकट कर रहे थे और (३) महान और आश्चर्यजनक हुए परिवर्तन को दिखा रहे थे।

(८) १ नफी १२:४, ५, १९:१०-१२ इला० १४:२०-२८. (९) पद्य १३, ३ नफी ९:१३. (१०) ३ नफी ८:९, ९ ४-८. (११) ३ नफी ८:९, ९:, ९:४, ७. (१२) ३ नफी ८:८, २४, ९:३, ९:१०. (१३) पद्य १४, ३ नफी ८:१६. (१४) देखो ३५, ३ नफी ८. (१५) देखो ८. (१६) देखो १२. (१७) देखो ३५, ३ नफी ८. (१८) देखो २२, इला० २४. (१९) देखो १३. (२०) देखो ८, ३ नफी ९. (२१) देखो ८, २ नफी १९. (२२) देखो ७, १ नफी १९. (२३) अल० ४६. २४-२६, ३ नफी २०:२२. (२४) देखो २, २ नफी ३. (२५) देखो २, १ नफी १२. (२६) ३ नफी. अध्याय ११-३०. अध्याय ११. (१) देखो ८, २ नफी ५. (२) देखो ३७, अल० २२. (३) ३ नफी ८:११-१४. ईस्वी ३४

२. और वे यीशु मसीह के विषय में भी बातचीत कर रहे थे, जिसके मरने के (४) संकेत दिखाए जा चुके थे।

३. और ऐसा हुआ कि जब वे एक दूसरे के साथ इस तरह बातें कर रहे थे, तब उन्होंने एक वाणी को सुना जो मानो स्वर्ग से आ रही हो; तब उन्होंने अपनी दृष्टि चारों ओर दौड़ाई क्योंकि उन्होंने यह नहीं समझा कि (५) वह वाणी कहां से आ रही है; न तो वह कठोर वाणी थी और न ही वह तीव्र थी; परन्तु मृदुवाणी के होते हुए भी वह उनके हृदय के अन्दर तक इतनी प्रभावकारक थी कि उनके शरीर का कोई भी भाग थरथराने से न बचा; हां, वह उनकी आत्मा तक वेध गई और उनके हृदयों को जलाने लगी।

४. और ऐसा हुआ कि वह वाणी पुनः सुनाई दी परन्तु वे कुछ समझ नहीं पाए।

५. और फिर से उस वाणी को तीसरी बार उन्होंने सुना और उस वाणी को सुनने के लिए वे कान खोल कर तैयार हुए; और उनकी आंखें उस ओर उठी थीं जिस ओर से वह आ रही थी; और उनकी आंखे स्वर्ग की ओर स्थिर थीं जहां से वह वाणी आ रही थी।

६. और सुनो, जब तीसरी बार उस वाणी को उन्होंने सुना तब उसका अर्थ उन्होंने समझा और वह वाणी उनसे बोली :

७. मेरे प्रिय पुत्र को देखो, जिससे मैं प्रसन्न हूं, और जिसके द्वारा मैंने (६) अपने नाम को यशस्वी किया है—तुम उसकी बातों को सुनो।

८. और ऐसा हुआ कि जैसे ही उन्होंने समझा वैसे ही उन्होंने अपनी आंखों को फिर से स्वर्ग की ओर उठाया; और सुनो, उन्होंने स्वर्ग से (७) एक व्यक्ति को उतरते हुए देखा; और वह श्वेत लबादा पहिने हुए था। वह नीचे उतर कर उनके मध्य में खड़ा हुआ; और सारी भीड़ की आखें उस पर लगी हुई थीं और उन्हें मुंह खोलने का साहस नहीं हो रहा था, यहां तक कि वे एक दूसरे से भी कुछ बोल नहीं रहे थे और उन्हें यह जानने की इच्छा भी न हुई कि इसका अर्थ क्या है, क्योंकि उन्होंने सोचा कि उनके सामने एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ है।

९. और ऐसा हुआ कि उसने अपने हाथ को फैला कर उनसे कहा :

१०. सुनो, मैं यीशु मसीह हूं जिसके विषय में भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि जगत में आएगा।

११. सुनो (८) मैं जगत का प्रकाश और जीवन हूं; मैंने उस (९) कड़ुवे प्याले में से पिया है जिसे मुझे पिता ने दिया था, और मैंने जगत के (१०) पापों को अपने ऊपर लेकर पिता को गौरवान्वित किया है, जिसमें कि मैंने आरम्भ से लेकर हरएक बात में पिता की इच्छा को पूरा किया है।

१२. जब यीशु ने ये शब्द कहे, तब सारी भीड़ धरती पर गिर पड़ी; क्योंकि उन्हें स्मरण हो आया कि उनमें यह (११) भविष्यवाणी की गई थी कि स्वर्ग में जाने के पश्चात् मसीह अपने आप को उन्हें दिखाएगा।

१३. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने उनसे कहा :

१४. उठो और मेरे पास आओ, जिससे कि तुम अपने (१३) हाथ को मेरे पार्थिव शरीर से लगा कर देखो और कील के घाव के चिन्हों को मेरे हाथों और पैरों में स्पर्श करके देखो, जिससे कि तुम यह जान सको कि मैं ही इस्राएल का और सारे (१४) जगत का परमेश्वर हूं और (१५) जगत के पापों के लिए मारा गया हूं।

१५. और ऐसा हुआ कि भीड़ आगे बढ़ी और एक-एक कर वह अपने (१६) हाथों से उसके शरीर के और हाथ पैरों के कीलों के घावों को तब तक स्पर्श करते रहे जब तक कि वहां उपस्थित सभी लोगों ने अपनी आंखों से देख, हाथों से छू न लिया और उन्हें निश्चय हो गया और वे इस

(४) इला० १४:२०, २७, ३ नफी ८:५-२५, ९:१०. (५) इला० ५:३०, ३१, ४६, ४७. (६) पद्य ३, ११, ३ नफी ९, १५.
(७) देखो २, १ नफी १२. (८) देखो १३, मू० १६. (९) यूहन्ना १८:११. (१०) पद्य १४, ३ नफी ९:२१, युहन्ना १:२९.
(११) पद्य ७, ३ नफी ६:१५. (१२) देखो २, १ नफी १२. (१३) पद्य १५, यूहन्ना २०:२७. (१४) देखो २८, मू० ७.
(१५) देखो ११. (१६) पद्य १४.

बात के गवाह हो गए कि यही वह है जिसके विषय में (१७) भविष्यवक्ताओं ने लिखा था कि वह आएगा।

१६. और जब सबने आगे बढ़कर स्वयं देख लिया, तब सब एक साथ एक स्वर में पुकार उठे :

१७. पवित्र प्रभु! (१८) सर्वोच्च परमेश्वर का नाम धन्य है! और वे सब यीशु के पैरों पर गिर पड़े और उसकी आराधना की।

१८. और ऐसा हुआ कि उसने नफी से (१९) (नफी उस भीड़ में उपस्थित था) बातें कीं और उसे आगे आने की आज्ञा दी।

१९. और नफी उठकर खड़ा हुआ और आगे बढ़कर प्रभु के आगे झुका और उसके (२०) पैरों को चूम लिया।

२०. और प्रभु ने उसको उठने की आज्ञा दी।

२१. प्रभु ने उससे कहा : जब मैं (२१) पुनः स्वर्ग चला जाऊंगा तब इन लोगों को (२२) बपतिस्मा देने का (२३) अधिकार मैं तुम्हें देता हूं।

२२. उसी तरह प्रभु ने दूसरों को बुला कर उनसे कहा; और बपतिस्मा देने का (२४) अधिकार उन्हें भी दिया और उसने उनसे कहा : तुम इस तरह बपतिस्मा देना; और (२५) आपस में कोई वाद-विवाद न करना।

२३. मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई तुम्हारी बातों को सुन कर पश्चात्ताप करे और मेरे नाम पर बपतिस्मा लेना चाहे उन्हें इस तरह बपतिस्मा देना—सुनो, तुम जल में जाकर (२६) खड़े होना और उन्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा देना।

२४. और अब सुनो, उनको उनके नाम से सम्बोधित कर तुम इन शब्दों को कहना :

२५. मसीह के दिए गए (२७) अधिकार के द्वारा मैं तुम्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर (२८) बपतिस्मा देता हूं। आमीन।

२६. और तब तुम उन्हें पानी में गोता देकर पानी में से निकाल लेना।

२७. और इस तरह तुम उन्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा देना; क्योंकि सुनो, मैं तुमसे सच कहता हूं कि (२९) पिता, पुत्र और पवित्रात्मा एक ही है; और (३०) मैं पिता में हूं और पिता मुझमें है, और मैं और पिता (३१) एक ही हैं।

२८. और जिस प्रकार मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, उसी (३२) प्रकार तुम बपतिस्मा देना। और जिस प्रकार तुममें (३३) वाद विवाद होता रहा है वैसा नहीं होना चाहिए और मेरे सिद्धान्त पर अब तक जैसा तर्क किया जाता रहा है, वह भी नहीं होना चाहिए।

२९. क्योंकि मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि जो कोई (३४) वादविवाद की भावना रखता है वह मेरा नहीं, परन्तु उस शैतान का है जो कि कलह का जन्मदाता है और वह लोगों के हृदयों को एक दूसरे से लड़ने के लिए भड़काता है।

३०. सुनो, लोगों के हृदयों को एक दूसरे के विरुद्ध क्रोधित करना यह मेरा सिद्धान्त नहीं है; मेरा सिद्धान्त है ऐसी बातों को (३५) दूर करना।

३१. सुनो, मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि मैं अपने सिद्धान्त को तुम्हें बताऊंगा।

३२. और जिस सिद्धान्त को पिता ने मुझे दिया है वही मेरा सिद्धान्त है और (३६) मैं पिता के तथ्य को लेता हूं, और पिता मेरे तथ्य को, और पवित्रात्मा मेरे और पिता के तथ्य को स्वीकार करता है; और मैं इस तथ्य को लाता हूं कि पिता हर एक मनुष्य को सभी जगह यह आज्ञा देता है कि वे पश्चात्ताप करें और मुझमें विश्वास करें।

३३. और जो मुझ पर विश्वास करता है और (३७) बपतिस्मा लेता है, वही बचा लिया जाएगा;

(१७) पद्य १०. (१८) देखो २८, मू० ७. (१९) ३ नफी १:२, ३, १०, ७:१५, २०, २३-२६. (२०) ३ नफी ७, १०. (२१) देखो ७, मू० १८. (२२) देखो ६१, २ नफी ९. (२३) ३ नफी १८:३९. (२४) देखो मू० १८. (२५) पद्य २८-३०, ३ नफी १८:३४. (२६) मू० १८:१२, ३ नफी १९:१०-१३. (२७) देखो ७, मू० १८. (२८) देखो २१, २ नफी ९. (२९) देखो ११, २ नफी ३१. (३०) देखो १६, ३ नफी ९. (३१) देखो ११, २ नफी ३१. (३२) पद्य २५:२९. (३३) पद्य २२, २९, ३०. (३४) पद्य २२:२८, ३०. (३५) पद्य २२, २८, २९. (३६) पद्य ३६, ३५; ३ नफी २८:११ ए० ५:४. (३७) देखो २१, २ नफी ९.

और यही वे लोग होंगे जो परमेश्वर के राज्य के अधिकारी होंगे।

३४. और जो मुझमें विश्वास नहीं करेंगे और बपतिस्मा नहीं लेंगे, वे अधोगति को प्राप्त होंगे।

३५. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि यही मेरा सिद्धान्त है जिसे (३८) मैंने पिता से प्राप्त किया है और (३९) जो मुझमें विश्वास करता है वह पिता में भी विश्वास करता है और पिता उससे (४०) मेरा समर्थन करेगा और वह उसके पास (४१) आग और पवित्रात्मा को लेकर आएगा।

३६. और इस तरह पिता (४२) मेरा समर्थन करेगा और पवित्रात्मा उसका और मेरा समर्थन करेगा (४३) क्योंकि पिता, मैं और पवित्रात्मा एक हैं।

३७. और मैं तुमसे कहता हूं कि तुम पश्चात्ताप करो और एक छोटे शिशु के समान बन जाओ और (४४) बपतिस्मा ले लो नहीं तो किसी भी तरह ये बातें प्राप्त नहीं होंगी।

३८. और मैं फिर तुमसे कहता हूं कि पश्चात्ताप करो और मेरे नाम पर बपतिस्मा लेकर (४५) एक छोटे शिशु के समान बन जाओ, अन्यथा तुम किसी भी प्रकार से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

३९. मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि यह मेरा सिद्धान्त है, जो इस पर अपना निवास बनाएगा वह मेरे चट्टान पर बनाएगा, और (४६) अधोलोक का प्रवेश द्वार उसके लिए नहीं होगा।

४०. और जो कोई इससे कम या अधिक का प्रचार करेगा और उसे मेरा सिद्धान्त बताएगा, वह दुष्टता से होगा और वह अपना निवास मेरे चट्टान पर नहीं बनाएगा; परन्तु वह अपना विश्वास (४७) बालू की नीव पर बनाएगा और जब बाढ़ आएगी और हवा के चपेटे उस पर पड़ेंगे, तब अधोलोक का प्रवेश द्वार उसे स्वीकार करने के लिए खुलेगा।

४१. इसलिए जगत के कोने कोने में जाकर लोगों में मेरे कहे शब्दों की घोषणा करो।

अध्याय १२

मुक्तिदाता का नफायटियों का उपदेश देना—उसका बारह शिष्यों को नियुक्त करना—भीड़ के लिए उसके शब्द—उसके पर्वत पर दिए उपदेश को दोहराना—मत्ती ५ से तुलना करो।

१. और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन शब्दों को (१) नफी और जिनकी पुकार हुई थी, उनसे ये शब्द कह लिए, (जिनको पुकारा गया था और जिन्हें बपतिस्मा देने के लिए (२) सामर्थ्य और अधिकार दिया गया था उनकी संख्या (३) बारह थी) तब उसने अपने हाथ को भीड़ की ओर फैला कर उनसे ऊंची आवाज में कहा: तुममें से जिन बारह जनों को मैंने तुम्हें उपदेश देने और तुम्हारी सेवा करने के लिए चुना है, अगर तुमने उनकी बातों पर ध्यान दिया, तब तुम धन्य होगे; और पानी द्वारा तुम्हें बपतिस्मा देने का (४) सामर्थ्य मैंने उन्हें दिया है; और जब तुम पानी द्वारा बपतिस्मा गृहण कर लेते हो, तब मैं तुम्हें (५) आग और पवित्रात्मा से बपतिस्मा दूंगा। इसलिए मुझे देखने और यह जानने के पश्चात् कि मैं हूं, अगर तुमने मुझ में विश्वास किया और बपतिस्मा लिया तब तुम धन्य हो।

२. और वे अधिक धन्य हैं जो तुम्हारी बातों पर विश्वास करेंगे, क्योंकि तुम इस बात की साक्षी दोगे कि तुमने मुझे देखा है और जानते हो कि मेरी आस्था है। हां, धन्य होंगे वे लोग जो तुम्हारी बातों पर विश्वास कर मानवता की गहराई में उतरेंगे और (६) बपतिस्मा लेंगे क्योंकि उनके पास (७) ज्वाला और पवित्रात्मा आएंगे और उन्हें उनके पापों के लिए क्षमा प्राप्त होगी।

(३८) पद्य ३२, ३६. (३९) ए० ४:१२. (४०) पद्य ३२, ३६. (४१) देखो २५, ३ नफी ९. (४२) देखो ३६. (४३) देखो ११, २ नफी ३१. (४४) देखो २१, २ नफी ९. (४५) देखो २८, ३ नफी ९. (४६) मत्ती १६:१८, ३ नफी १८:१२, १३. (४७) मत्ती ७:२४-२७, ३ नफी १४:२४-२७, १८:१२-१६. (१) देखो ३ नफी ११. (२) देखो ७, मू० १८. (३) ३ नफी १३:२५, १५:११, १८:१-१७, २६-३९, १९:४-३६, २०:१-६, २६:१७ अध्याय २७:२८, ४ नफी १, ५, १३, १४, ३०-३३, ३७, ४४, ४६, मार० १:१३, ३:१९, ८, १०, ११, ९:२२, २५ एथ० १२:१७ मरो० २:३. (४) देखो ७, मू० १८. (५) देखो २५, २ नफी ९. (६) देखो २१, २ नफी ९. (७) देखो २५, ३ नफी ९.

३. हां, धन्य हैं वे लोग जो मन के (८) विनीत बनकर मेरे पास आएंगे, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

४. और धन्य हैं वे सब लोग जो रोते हैं क्योंकि उन्हें सांत्वना दी जाएगी।

५. और धन्य हैं वे लोग जो नम्र हैं क्योंकि पृथ्वी के अधिकारी वे ही होंगे।

६. और धन्य हैं वे सब लोग जो धर्म के पीछे भूखे और प्यासे रहते हैं, क्योंकि वे (९) पवित्रात्मा से पूर्ण होंगे।

७. और धन्य हैं वे जो दयावान हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

८. और धन्य हैं वे लोग जो मन के शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

९. और धन्य हैं वे सब लोग जो शान्ति करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की सन्तान कहलाएंगे।

१०. और धन्य हैं वे सब लोग जो मेरे कारण (१०) सताए जाते हैं, क्योंकि परमेश्वर का राज्य उन्हीं का है।

११. और धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, सताएं और हर प्रकार की बुरी और झूठी बातें कहें;

१२. क्योंकि तुम्हें (११) महान आनन्द मिलेगा और तुम प्रसन्न होगे क्योंकि तुम्हें स्वर्ग में भारी परितोष मिलेगा, क्योंकि लोगों ने इसी प्रकार तुमसे पहले के भविष्यवक्ताओं को सताया था।

१३. मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि मैंने तुम्हें पृथ्वी को नमक स्वरूप दिया है,, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए तब फिर (१२) पृथ्वी को किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर तो वह किसी काम की भी नहीं रहेगी, सिवाए इसके कि उसको बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।

१४. मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि मैं तुम्हें इन लोगों के लिए ज्योति के रूप में दे रहा हूं। एक नगर जो पहाड़ पर बसा है, वह छिपाया नहीं जा सकता।

१५. सुनो, लोग दिया जलाकर बरतन के नीचे ढक कर नहीं रखते परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश मिलता है;

१६. ठीक इसी प्रकार तुम्हारा प्रकाश लोगों के सामने चमके जिससे कि वे तुम्हारे भले कर्मों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।

१७. यह मत समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्य-वक्ताओं को नष्ट करने के लिए आया हूं। मैं नष्ट करने नहीं परन्तु उन्हें पूरा करने के लिए आया हूं।

१८. क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि (१३) व्यवस्था लेश-मात्र या एक बिन्दु के बराबर भी अपूर्ण नहीं रहती, अपितु मुझ में सब कुछ पूरा हुआ है।

१९. और सुनो, मैंने तुम्हें अपने पिता की व्यवस्था और आज्ञाओं को दिया है, जिससे कि तुम मुझमें विश्वास करो और अपने लिए पापों पर पश्चात्ताप करो और मेरे पास (१४) टूटे हृदय और शोकार्त मन से आओ। सुनो, तुम्हारे सामने आज्ञायें हैं और (१५) व्यवस्था पूरी हुई।

२०. इसलिए मेरे पास आओ और बच जाओ; क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैंने (१६) जिन आज्ञाओं को इस समय तुम्हें दिया है, उनका पालन किए बिना तुम किसी भी तरह से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

२१. तुम सुन चुके हो कि पूर्व काल के लोगों से कहा गया था और तुम लोगों से पहले लिखा भी जा चुका है कि तुम हत्या न करना और जो कोई हत्या करेगा वह परमेश्वर के (१७) न्यायदण्ड के दण्ड के खतरे में पड़ेगा।

२२. परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह भी उसके (१८) न्यायदण्ड के खतरे में पड़ेगा। और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड पाने के योग्य ठहरेगा; और जो कोई, किसी को मूर्ख कहेगा, तब वह अधोलोक की आग के खतरे में पड़ेगा।

२३. इसलिए अगर तुम मेरे पास आओ,

(८) मत्ती ५:३. (९) मत्ती ५:६. (१०) मत्ती ५:१०. (११) मत्ती ५:१२. (१२) मत्ती ५:१३. (१३) मत्ती ५:१८. (१४) ३ नफी ९:२०. (१५) पद्य १८:४६, ३ नफी ९:१७, १५:४-१०. (१६) पद्य १९, ३ नफी १५:१०. (१७) मत्ती ५:२१. (१८) मत्ती ५:२२.

या (१९) आने की इच्छा रखते हो और अगर तुम्हें स्मरण हो जाए कि तुम्हारे भाई के मन में तुम्हारे लिए कुछ विरोध है,

२४. तब पहले जाकर अपने भाई से मेल-मिलाप कर लो, और तब अपने सच्चे हृदय से मेरे पास आओ और मैं तुम्हें स्वीकार करूंगा।

२५. जब तक तुम अपने शत्रु के साथ मार्ग में हो; उससे मेलमिलाप शीघ्रता से कर लो अन्यथा वह तुम्हें कारागार में किसी भी समय डलवा सकता है।

२६. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि जब तक तुम वहां कौड़ी-कौड़ी (मूल में (२०) सेनिन) भर न दोगे तब तक तुम वहां से छूटने नहीं पाओगे। और जब तक तुम कारागार में रहोगे, तब तक क्या तुम एक भी पैसा भर पाओगे? मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि नहीं।

२७. सुनो, प्राचीन काल में लिखा जा चुका है कि तुम व्यभिचार न करना।

२८. परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले तो वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका।

२९. सुनो, मैं तुम्हें एक आज्ञा देता हूं कि तुम अपने हृदय में (२१) इन बातों में से किसी एक को भी अपने हृदय के अन्दर प्रवेश मत करने देना।

३०. क्योंकि इन बातों को अस्वीकार करना तुम्हारे लिए अच्छा होगा, वरना तुम क्रूश पर चढ़ने के लिए अपने क्रूश को उठाओगे, जिससे कि तुम अधोलोक में फेंके जाओगे।

३१. यह भी लिखा गया है कि जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे, तब वह उसे त्यागपत्र दे।

३२. परन्तु मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि जो कोई अपनी (२२) पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी अन्य कारण से त्याग देता है, तो वह उससे व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह करता है, तो वह भी व्यभिचार करता है।

३३. और आगे यह भी लिखा है कि झूठी शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिए किए गए शपथ को पूरा करना।

३४. परन्तु मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि तुम कोई भी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है।

३५. न धरती की क्योंकि वह उसके पावों की चौकी है।

३६. तुम अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तुम एक बाल को भी न तो सफेद कर सकते हो और न काला कर सकते हो।

३७. तुम अपने वार्तालाप में हां, हां, या नहीं, नहीं कहना; क्योंकि जो कुछ इससे अधिक होगा वह बुराई से होगा।

३८. और सुनो, यह भी लिखा जा चुका है कि एक आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत।

३९. परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो तू उसकी ओर दूसरा भी गाल कर देना।

४०. और यदि कोई तुम पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो तू उसे अपना अंगरखा भी दे देना।

४१. और जो कोई तुम्हें कोस भर बेगार में ले जाए तो तुम उसके साथ दो कोस चले जाना।

४२. जो कोई तुमसे कुछ मांगे, उसे दो; और जो तुझसे उधार लेना चाहे, उससे मुंह न मोड़ो।

४३. और सुनो, यह लिखा जा चुका है कि अपने पड़ोसी से प्रेम करना और अपने शत्रु से बैर रखना।

४४. परन्तु सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, जो तुझे शाप दे, उसे तू आशीष दे; जो तुझ से द्वेष करे तू उसके साथ भलाई कर और जो तेरी बुराई करे और तुझे सताए, उसके लिए तू प्रार्थना कर।

४५. जिससे कि तुम उस पिता की सन्तान ठहरो जो कि स्वर्ग में है, क्योंकि वह अच्छे और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है।

(१९) मत्ती ५:२३. (२०) देखो ३, अल० ११. (२१) सिद्धान्त और शर्तें ४२:२३, ४३:१९, १७ देखो ६, २ नफी २८.
(२२) मत्ती ५:३२, मरकुस १०:११, १२, लूका १६:१८.

४६. इसलिए पुराने समय की बातें जो कि व्यवस्था के अन्तर्गत आती थी वे (२३) सब मुझमें पूर्ण हुईं।

४७. पुरानी बातें (२४) अलग हो चुकी और सभी बातें नई हो चुकीं।

४८. इसलिए मैं चाहता हूं कि तुम भी (२५) मेरी तरह या जो पिता स्वर्ग में है, उसकी तरह निर्दोष बनो।

अध्याय १३

रक्षक द्वारा नफायटियों को उपदेश देने का क्रम: बारह शिष्यां को उसकी आज्ञायें—मत्ती ६ से तुलना करो।

१. मैं सच-सच कहता हूं कि मैं चाहता हूं कि तुम कंगालों को दान दो; परन्तु इस बात पर ध्यान दो कि लोगों के सामने उन्हें दिखाने के लिए मत दो; अन्यथा तुम अपने उस पिता से कोई फल प्राप्त न करोगे जो कि स्वर्ग में है।

२. इसलिए जब तुम दान करो, तो अपने आगे तुरही मत बजवाना, जैसे कि कपटी (१) प्रार्थना-भवनों और गलियों में करते हैं ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना फल पा चुके।

३. परन्तु जब तुम दान करो, तो जो तुम्हारा दाहिना हाथ करे, उसे तुम्हारा बायां हाथ न जानने पाए।

४. ताकि तुम्हारा दान गुप्त रहे, और तब तुम्हारा पिता, जो कि गुप्त बातों को देखता है, तुम्हें खुलकर प्रतिफल देगा।

५. और जब तुम प्रार्थना करो, तो कपटियों की तरह न करना, क्योंकि उन लोगों को दिखाने के लिए प्रार्थना भवनों और सड़कों के नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना अच्छा लगता है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।

६. परन्तु जब तुम प्रार्थना करो, तब अपने कमरे में जाकर द्वार बन्द करके अपने पिता से, जो गुप्त हैं, प्रार्थना करो, और तब तुम्हारा पिता जो गुप्त स्थानों में देखता है, तुम्हें खुले में प्रतिफल देगा।

७. परन्तु जब तुम प्रार्थना करो, तब नास्तिकों के समान व्यर्थ के बकवास मत करो; क्योंकि वे यह समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी।

८. इसलिए तुम उनकी तरह मत बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकतायें हैं।

९. सो तुम इस तरह से प्रार्थना करो; हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए।

१०. तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

११. और जिस प्रकार हमने अपने कर्जदारों को क्षमा किया है उसी तरह तू हमारे ऋणों को क्षमा कर।

१२. और हमें परीक्षा में मत ला, परन्तु बुराई से बचा।

१३. क्योंकि राज्य, शक्ति और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन

१४. इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध को क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।

१५. और यदि तुम मनुष्यों के अपराध को क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा न करेगा।

१६. और जब तुम (२) उपवास करो, तो कपटियों की तरह तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवास करने वाला जाने। मैं तुमसे सच कहता हूं कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।

१७. परन्तु जब तुम उपवास करो तब अपने सिर पर तेल मल लो और अपने मुंह को धो लो;

१८. जिससे कि लोग नहीं, परन्तु तुम्हारा पिता जो कि गुप्त में है, तुम्हें उपवास करने वाला जाने; और तुम्हारा पिता जो गुप्त में देखता है। तुझे खुले में प्रतिफल देगा।

(२३) देखो १५. (२४) ३ नफी १५:२, ३. (२५) मत्ती ५:४८ ३ नफी १६:२५-२६; २७:२७. (१) देखो ११, अल० १६. (२) देखो २०, मू० २७.

१९. अपने लिए पृथ्वी पर धन मत एकत्रित करो, जहां कीड़े और मुर्चा उन्हें बिगाड़ सकते हैं; और जहां चोर सेंध लगा कर उसे चुरा सकते हैं;

२०. परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़े, और न ही मुर्चा बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।

२१. क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

२२. शरीर का दीपक आंख है; इसलिए अगर तुम्हारी आंख निर्मल हो, तो तुम्हारा सारा शरीर भी प्रकाशयुक्त रहेगा।

२३. परन्तु अगर तुम्हारी आंख बुरी होगी, तो तुम्हारा सारा शरीर भी अंधकारमय होगा। इसलिए वह उजियाला जो तुममें है, यदि अंधकार हो तो वह अंधकार कितना बड़ा होगा।

२४. कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा एक साथ नहीं कर सकता, क्योंकि या तो वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे की अवज्ञा किया करेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

२५. और ऐसा हुआ कि जब यीशु मसीह ने इन शब्दों को कह लिया, तब वह अपने द्वारा चुने हुए बारह जनों को देखता हुआ उनसे बोला: मैंने जिन बातों को कहा उनको स्मरण रखना। क्योंकि सुनो, (३) तुम वह हो जिन्हें मैंने इन लोगों को उपदेश देने के लिए चुना है। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि अपने प्राण के लिए यह चिन्ता मत करना कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे। और न ही अपने शरीर के लिए कि हम क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और वस्त्र से बढ़कर नहीं है।

२६. आकाश के पक्षियों को देखो, वे न तो बोते हैं, न काटते हैं, और न खलिहानों में बटोर कर रखते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक श्रेष्ठ नहीं हो?

२७. तुममें कौन है, जो विचार करके अपनी अवस्था में एक हाथ भी बढ़ा सकता है?

२८. और वस्त्र के लिए क्यों चिन्ता करते हो? मैदान की कुमुदनी को देखो कि वे कैसे बढ़ती हैं; न तो परिश्रम ही करती हैं और न ही कातती बुनती ही हैं;

२९. फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि सुलेमान भी, अपने सारे बैभव में भी, उनमें से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था।

३०. इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल चुल्हे में डाल दी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनता है, तो हे अल्प विश्वासियों, तुम को भी वह उसी प्रकार पहिनाएगा।

३१. इसलिए तुम चिन्ता करते हुए यह न कहना कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे?

३२. क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता यह जानता है कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।

३३. इसलिए पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।

३४. इसलिए आने वाले कल की चिन्ता मत करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिए आज का ही दुःख बहुत है।

अध्याय १४

रक्षक द्वारा धर्मोपदेश का क्रम—भीड़ को और आज्ञायें—मत्ती ७ से तुलना करो।

१. जब मसीह ने इन बातों को कह लिया तब वह भीड़ की ओर फिर घूम कर इन बातों को उनसे कहने के लिए उसने अपना मुंह खोला: मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुम दूसरों पर इसलिए दोष न लगाओ कि तुम पर दोष न लगाया जाए।

२. क्योंकि जिस प्रकार तुम दूसरों पर दोष लगाओगे, उसी प्रकार तुम पर दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हें नापा जाएगा।

३. तुम क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखते हो, और अपनी आंख का लट्ठा भी नहीं देखते?

४. और जब तुम्हारी ही आंख में लट्ठा है,

(३) मत्ती ६:२५, देखो ३, ३ नफी १२.

तो तुम अपने भाई से कैसे कह सकते हो कि मैं तेरी आंख का तिनका निकाल दूं?

५. हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल लो, तब तुम अपने भाई की आंख का तिनका भली-भांति देख कर निकाल सकोगे।

६. पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सुअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवो तले रौंदे और पलट कर तुमको चीर डालें।

७. (१) मांगो, तुम्हें दिया जाएगा; खोजो तब तुम पाओगे; खटखटाओ तब तुम्हारे लिए द्वार खोला जाएगा।

८. क्योंकि जो कोई मांगता है, वह पाता है; और जो कोई ढूंढता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है उसके लिए द्वार खोला जाता है।

९. तुममें से क्या कोई ऐसा मनुष्य भी है जो अगर उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तब वह उसे पत्थर देगा?

१०. या मछली मांगे, तो उसे सांप दे?

११. तुम अगर बुरे होकर भी अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तब तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा।

१२. इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करे, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो, क्योंकि व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की यही शिक्षा है।

१३. (२) संकरे द्वार से प्रवेश करो; क्योंकि जो फाटक चौड़ा है, वह विनाश को ले जाता है, और बहुत से लोग हैं जो उसमें से प्रवेश करते हैं।

१४. संकरे फाटक का संकरा रास्ता जो जीवन तक ले जाता है, उसे थोड़े लोग ही पाते हैं।

१५. झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़खाने वाले भेड़िये हैं।

१६. उनके फलों से तुम उन्हें पहिचान लोगे। क्या लोग कांटों से अंगूर और गोखरू से अंजीर तोड़ते हैं?

१७. इसी तरह हरएक अच्छा पेड़ अच्छा फल देता है और भ्रष्ट पेड़ बुरा फल देता है।

१८. अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं दे सकता और बुरा पेड़ अच्छा फल नहीं दे सकता।

१९. हरएक पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, वह काटा और आग में डाला जाता है।

२०. इसलिए उनके फलों से तुम उन्हें पहिचान लोगे।

२१. जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उनमें से हरएक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा; परन्तु जो मेरे पिता की इच्छा को पूरा करता है, वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा।

२२. उस दिन बहुत से लोग कहेंगे, हे प्रभु हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से अनेक आश्चर्यमय काम नहीं किए?

२३. तब मैं उनसे कहूंगा: मैंने तुमको कभी नहीं जाना; पापकर्म करने वालों, तुम मुझसे दूर चले जाओ।

२४. इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य की तरह है जो अपना घर चट्टान पर बनाता है।

२५. और (३) पानी, वर्षा, बाढ़े, आंधियां आई और उस घर से टकराई परन्तु वह गिरा नहीं क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी।

२६. परन्तु जो कोई मेरी बातों को सुनता है और उन पर चलता नहीं वह उस मूर्ख के समान है जो अपना मकान बालू पर बनाता है।

२७. और मेंह बरसा, बाढ़ें आईं, आंधियां चलीं और उस घर से टकराई और वह घर बड़े जोर से गिर कर नष्ट हो गया।

अध्याय १५

मूसा की व्यवस्था का हटाया जाना—व्यवस्था को देने वाले के द्वारा व्यवस्था को पूरा किया जाना—दूसरे बाड़े की भेड़।

१. जब मसीह ने इन बातों को कह लिया, तब भीड़ पर अपनी दृष्टि इधर-उधर डाल कर उनसे कहा: सुनो, तुम लोगों ने उन बातों को सुना,

(१) ३ नफी २७:२९. (२) देखो २७, २ नफी ९, ३ नफी २७:३३. (३) देखो ५ अल० २६.

ईस्वी ३४

जिन्हें (१) अपने पिता के पास जाने से पहिले ही मैंने लोगों को शिक्षा दी थी; इसलिए जो भी कोई मेरी बातों को स्मरण रखेगा और उनके अनुसार कार्य करेगा, उसे मैं (२) अन्तिम दिन को पुनर्जीवित करूंगा।

२. और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने ये शब्द कह लिए तब उसने देखा कि उनमें कुछ लोग थे जो इस बात पर सोच-विचार कर रहे थे कि वह (३) मूसा की व्यवस्था का क्या करेगा; क्योंकि वे (४) जो यह कहा गया था, समझ नहीं रहे थे कि पुरानी बातें बीत चुकी हैं और सभी व्यवस्थायें नई हो चुकी हैं।

३. और उसने उनसे कहा: मैंने जो तुमसे कहा है कि पुरानी बातें बीत चुकीं और सभी बातें नई हो चुकी हैं, उस पर आश्चर्य मत करो।

४. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि जो (५) व्यवस्था मूसा को दी गयी थी, वह पूरी हो गई।

५. सुनो, (६) मैं वही हूं जिसने व्यवस्था दी थी, और मैं वही हूं जिसने इस्राएल के अपने लोगों से शर्तनामा बनाया था; इसलिए (७) व्यवस्था मुझमें पूरी हुई, क्योंकि मैं व्यवस्था को पूरा करने के लिए आया हूं; इसलिए उसका अन्त हुआ।

६. सुनो, मैं भविष्यवक्ताओं द्वारा कही गई बातों को (८) नष्ट नहीं करता, क्योंकि जो भविष्यवाणियां मेरे द्वारा पूरी नहीं हुई हैं, मैं सच कहता हूं, कि वे सब पूरी होंगी।

७. मैंने तुमसे जो यह कहा कि (९) पुरानी बातें बीत चुकी, उससे मैं उन बातों को नष्ट नहीं करता जो भविष्य में होगी।

८. क्योंकि सुनो, मैंने जो (१०) शर्तें अपने लोगों से की थीं, वे सब पूरी नहीं हुईं; परन्तु जो (११) व्यवस्था मूसा को दी गयी थी, वह मुझसे पूरी हुई।

९. सुनो, मैं ही व्यवस्था हूं, और मैं ही (१२) ज्योति हूं। मुझ को देखो और अन्त तक सहनशील बने रहो, तब तुम जीवित रहोगे; क्योंकि जो (१३) अन्त तक सहनशील बना रहेगा, उसे मैं अनन्त जीवन दूंगा।

१०. सुनो, मैंने तुमको आज्ञायें दी हैं; इसलिए मेरी आज्ञाओं का पालन करो। और यही व्यवस्था है क्योंकि भविष्यवक्ताओं ने मेरे द्वारा इसकी पुष्टि की है।

११. और जब यीशु ने ये शब्द कह लिए, तब उसने जिन (१४) बारह जनों को चुना था, उनसे बोला:

१२. तुम मेरे शिष्य हो; और ये लोग जो कि यूसुफ के बचे वंश के लोग हैं, उनके लिए तुम प्रकाश हो।

१३. और सुनो, (१५) यह तुम्हारा पैतृक देश है; और इसे पिता ने तुम्हें दिया है।

१४. पिता ने किसी भी समय मुझे कोई आज्ञा नहीं दी, कि जिसे मैं केवल यरूशलेम के तुम्हारे बन्धुओं को ही बताऊं।

१५. और न तो पिता ने किसी समय मुझे कोई आज्ञा दी जिसे कि मैं इस्राएल की (१६) उन दूसरी शाखाओं को ही बताऊं, जिन्हें पिता देश से बाहर निकाल ले गया था।

१६. पिता ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं तुम्हें यह बताऊं:

१७. कि मेरी (१७) और भी भेड़ें हैं, जो इस बाड़े की नहीं हैं; मुझे उनको भी लाना आवश्यक है, और वे भी मेरी वाणी को सुने; तब एक ही बाड़ा और एक ही गड़रिया होगा।

१८. हठी और अविश्वासी होने के कारण उन्होंने मेरी बातों को नहीं समझा; इसलिए पिता ने मुझे आज्ञा दी कि मैं इस विषय पर उनसे और कुछ न कहूं।

१९. परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि यह कहने की पिता ने मुझे आज्ञा दी है और मैं तुमसे कहता हूं कि उनके पापों के कारण तुमको उनसे अलग

(१) मत्ती अध्याय ५-७. (२) देखो १६, मू० २३. (३) देखो १५, २ नफी २५ (४) ३ नफी १२:४६, ४७. (५) ३ नफी ६:१७. (६) १ कुरु० १०:४. (७) ३ नफी १२:४६, ४७. (८) पद्य ७, ८, ३ नफी २०:११, १२, २३:१-३. (९) ३ नफी १२:४६, ४७. (१०) ३ नफी ५:२४-२६, १६:५ देखो ५, १ नफी १५. (११) देखो १५, २ नफी २५. (१२) देखो १३, मू० १६. (१३) देखो २, नफी ३१:२०. (१४) ३ नफी १२:१. (१५) देखो २१, १ नफी १८. (१६) पद्य २०, २ नफी २१:१२, ३ नफी १६:१-४, १७:४. (१७) पद्य २१-२४, यूहन्ना १०:१६.

ईस्वी ३४

किया गया और अपने पापों के कारण ही वे तुम्हें जानते नहीं हैं।

२०. और मैं तुमसे पुन: सच कहता हूं कि पिता ने (१८) दूसरी शाखाओं को भी उनसे अलग कर दिया है; और वे अपने पापों के कारण ही उन्हें भी नहीं जानते।

२१. और मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुम (१९) वही हो जिनके विषय में मैंने कहा: मेरी और भी भेड़े हैं जो कि इस बाड़े की नहीं; मुझे उनको भी लाना आवश्यक है; और वे भी मेरी वाणी को सुनेंगी; और तब एक ही बाड़ा और एक ही गड़रिया होगा।

२२. और उन्होंने मेरी बात को समझा नहीं; वे यह समझे कि मेरा तात्पर्य यहूदियों से भिन्न जाति वाले नास्तिकों से है; क्योंकि उन्होंने यह भी नहीं समझा कि वे भिन्न जाति वाले नास्तिक उनके प्रचार से (२०) मत परिवर्तन कर लेंगे।

२३. मैंने जो कहा था कि वे मेरी वाणी को सुनेंगे तो वे इसका अर्थ नहीं समझे; और मैंने जो यह कहा था कि मेरी आवाज को किसी भी समय नहीं सुनेंगे तो इसका तात्पर्य भी वे नहीं समझे—कि (२१) पवित्र आत्मा के बिना मैं उनमें कभी प्रकट नहीं होऊंगा।

२४. लेकिन सुनो, तुमने मेरी वाणी को सुना और मुझे देखा भी; और तुम मेरी (२२) भेड़े हो, और तुम्हारी गिनती उनमें हुई है, जिनको पिता ने मुझे दिया है।

अध्याय १६

एक और बाड़े की भेड़ों को मुक्तिदाता की बातें सुनने का अवसर—विश्‍वासी भिन्न जाति वालों को आशीर्वाद—इंजोल अस्वीकार करने वालों की स्थिति—भविष्यवक्ता यशायाह के कहे शब्दों का प्रमाण देना।

१. मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि (१) मेरी और भी भेडें हैं जो कि न तो इस देश की हैं और न ही यरूशलेम की हैं और न ही उस देश के आसपास के देशों की, जहां मैं उपदेश देने के लिए गया था।

२. मैं जिनके विषय में कह रहा हूं, वह वे लोग हैं जिन्होंने अभी मेरी (२) वाणी को सुना नहीं है; और न ही मैंने कभी भी उनके सामने अपने आप को प्रकट किया हूं।

३. परन्तु मुझे पिता की ओर से आज्ञा मिली है कि मैं उनके पास जाऊं (३) जिससे वे मेरी वाणी को सुने और उनकी गिनती मेरी भेड़ों में होगी जिससे कि एक ही बाड़ा और एक ही चरवाहा हो; इसलिए मैं उनके सामने चला जाऊंगा।

४. और मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि जब मैं चला जाऊं, तब तुम इन बातों को लिख लेना, जिससे कि अगर यरूशलेम के मेरे लोग, जिन्होंने मुझे उपदेश देते हुए देखा था, और मेरे साथ थे, वे मेरे नाम पर पिता से पवित्र आत्मा की कृपा द्वारा, तुम्हारे और जिन (४) दूसरी जातियों के विषय में जानते नहीं हैं, उनके विषय में जानने की इच्छा प्रकट न करें, और इन बातों को जिन्हें तुम लिखोगे, सुरक्षित रखा जाए और (५) दूसरी जातियों को दिखाया जाए जिससे कि उन जातियों के (६) पूर्ण ज्ञान के द्वारा उनके अवशेष वंश के लोग जो अपने अविश्‍वास के कारण सारी धरती पर फैले हुए होंगे उन्हें अन्दर लाया जा सके, या उनके उद्धारक मुझ से, उनकी जानकारी कराई जा सके।

५. और (७) तब मैं उनको जगत के चारों ओर से एकत्रित करूंगा; और (८) जो शर्तनामा पिता ने इस्राएल के घराने के सब लोगों के साथ किया था, उसे मैं पूरा करूंगा।

६. मुझ में और पवित्रात्मा में विश्‍वास के कारण, और (९) पवित्रात्मा में, जो कि उनसे (१०) मेरी और पिता की गवाही देता है, के विश्‍वास के कारण दूसरी जाति के लोग धन्य हैं।

७. सुनो, पिता कहता है कि मुझमें उनके

(१८) देखो १६. (१९) पद्य १७. (२०) प्रेरितों० १०:३४-४३. (२१) प्रेरितों १०:४४, ४८. (२२) पद्य १७, २१.
अध्याय १६. (१) देखो १६, ३ नफी १५. (२) ३ नफी १५:१७, २१, २३, २४. (३) देखो २. (४) देखो १६, ३ नफी १५.
(५) देखो ३, २ नफी २७. (६) १ नफी २७. (६) १ नफी १०:१४ देखो ६, २ नफी २७. (७) देखो ५, १ नफी १५.
(८) देखो १०, ३ नफी १५. (९) देखो २१, ३ नफी १५. (१०) ३ नफी ११, ३२, ३५, ३६. ईस्वी ३४

विश्वास के कारण, और तुम्हारे अविश्वास के कारण, हे इस्राएल के घरानेवालों, (११) अन्तिम दिनों में दूसरी जाति वालों के पास सच्चाई आएगी, और इन सम्पूर्ण बातों की जानकारी उनसे कराई जाएगी।

८. लेकिन (१२) संताप पड़े भिन्न जाति वालों के अविश्वास करने वालों पर क्योंकि इस देश में आकर उन्होंने मेरे उन लोगों को तितर-बितर कर दिया, जो कि इस्राएल के घराने के हैं; और इस्राएल के घराने के मेरे लोग, उनमें से बाहर निकाल दिए गए और उनके द्वारा पैरों तले कुचले गए।

९. और अन्य जातियों पर पिता की दया, और इस्राएल के घराने के मेरे लोगों के ऊपर पिता के न्याय के कारण, मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि (१३) इन सब बातों के पश्चात् मैंने इस्राएल के घराने के अपने लोगों को मरवाया, कष्ट दिलवाया, और मृत्युदण्ड दिलवाया, और उनमें से उन्हें अलग करवाया जिससे वे उनके द्वारा घृणित ठहराए और दुतकारे गए।

१०. और पिता मुझे तुमसे यह कहने की आज्ञा देता है: जिस दिन दूसरी जाति के लोग मेरे (१४) इंजील के विपरीत पाप करेंगे और अपने हृदय के अहंकार में (१५) दूसरे सभी राष्ट्रों से और सारे जग के दूसरे लोगों से अपने आपको बढ़कर समझने लगेंगे, और हर प्रकार की झूठी बातें बोलने लगेंगे, छल करने और धूर्तताई करने लगेंगे, और हर तरह के ढोंग करने, हत्या (१६) अनुचित पूजा, (१७) व्यभिचार और (१८) गुप्त घृणित काम करने लगेंगे; अर्थात् उस सभी कर्मों को करते हुए भी मेरे (१९) इंजील की पूर्णता को अस्वीकार कर देगे तब सुनो, पिता कहता है कि उनमें से मैं अपने इंजील की (२०) पूर्णता को लाऊंगा।

११. और तब हे इस्राएल के घराने के लोगों उस शर्तनामे को स्मरण करूंगा जिसे मैंने अपने लोगों के साथ बनाया था, और तब मैं (२१) उनमें अपने इंजील को लाऊंगा।

१२. और हे इस्राएल के घराने के लोगों, तब मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि दूसरी जाति वाले तुम्हारे ऊपर किसी भी तरह का प्रभाव न रख सकेंगे; परन्तु मैं तुमसे किया हुआ (२२) शर्तनामा स्मरण रखूंगा और तुम मेरे इंजील की (२३) पूर्णता की जानकारी में आओगे।

१३. लेकिन पिता कहता है कि अगर दूसरी जाति के लोग पश्चात्ताप करेंगे और मेरी ओर लौटेंगे, तब हे इस्राएल के घराने के लोगों, सुनो, (२४) उनकी गिनती मेरे लोगों में होगी।

१४. और मैं यह नहीं होने दूंगा कि मेरे लोग, जो इस्राएल के घराने के हैं, उनमें जाकर उनको पैरों तले रौंदे, यह पिता का कहना है।

१५. लेकिन हे इस्राएल के घराने के लोगों, अगर वे मेरी ओर नहीं लौटे और उन्होंने मेरी वाणी को नहीं सुना तब वे उनमें जाकर उनको पैरों तले कुचलेंगे और वे उस (२५) नमक की तरह होंगे जो अपना नमकीनी स्वाद खो चुका हो, जो कि फेंके जाने के अलावे किसी काम का नहीं होता और फेंके जाने पर मेरे लोगों के पैरों तले कुचला जाएगा।

१६. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि पिता ने मुझे ऐसी आज्ञा दी है—कि (२६) मैं इन लोगों को यह पैतृक देश के रूप में दे दूं।

१७. और तब भविष्यवक्ता यशायाह के शब्द सत्य होंगे जो कहते हैं :

१८. (२७) तेरे प्रहरी ऊंची आवाज उठाएंगे; और एक साथ जयजयकार करेंगे, क्योंकि वे अपनी आंखों से प्रभु द्वारा सियोन को फिर से वापिस लाते हुए देखेंगे।

१९. हे यरूशलेम के खंडहरों, एक साथ उमंग में आकर जयजयकार करो; क्योंकि प्रभु ने अपने

(११) देखो ३, २ नफी २७. (१२) २ नफी २८:३२ देखो ४, १ नफी १४. (१३) देखो १०, २ नफी २६. (१४) १ नफी १३:३४, ३६, ३ नफी २७:९-१२. (१५) मार० ८:३५-४१. (१६) २ नफी २९:२६. (१७) देखो ६, २ नफी २८. (१८) देखो ६, २ नफी १०. (१९) देखो १४. (२०) ३ नफी २०:२७, २८. (२१) देखो २२, ३ नफी २०:२९. (२२) देखो २०, ३ नफी १५. (२३) इला० १५, १३. (२४) २ नफी १०:१८, १९; ३ नफी २१:२२-२५. अध्याय ३०. (२५) ३ नफी १२:१२. (२६) देखो १५, ३ नफी १५. (२७) यशा० ५२:८-१०.

लोगों को सांत्वना दी है, उसने यरूशलेम को छुड़ा लिया है।

२०. प्रभु ने सारी जातियों के सामने अपनी पवित्र भुजा को प्रकट किया है; और पृथ्वी के दूर-दूर देशों के सब लोग परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे।

अध्याय १७

रक्षक की आज्ञाओं का कम—खोई हुई शाखा—रक्षक द्वारा बीमार को रोग मुक्त करना और बच्चों को आशीर्वाद देना—एक आश्चर्यजनक और हृदय स्पर्शी दृश्य।

१. सुनो, ऐसा हुआ कि जब यीशु ने ये शब्द कह लिए तब उसने भीड़ पर इधर-उधर अपनी दृष्टि को दौड़ा कर उनसे कहा : सुनो, मेरा समय निकट है।

२. मैं देखता हूं कि तुम निर्बल हो, जिससे कि तुम उन सभी बातों को समझ नहीं रहे हो जिन्हें इस समय तुमसे कहने के लिए, पिता ने मुझे आज्ञा दी है।

३. इसलिए तुम अपने-अपने घरों को जाओ और जिन बातों को मैंने कहा है, उन पर विचार करो, और मेरे नाम पर पिता से उनको समझने की याचना करो, और अपनी-अपनी बुद्धियों को कल के लिए तैयार करो, और मैं तुम्हारे पास फिर आऊंगा।

४. लेकिन अब मैं (१) पिता के पास जाता हूं और मुझे अपने आपको इस्राएल की (२) खोई हुई शाखा को भी दिखाना है, क्योंकि वे पिता के लिए खोए हुए नहीं हैं क्योंकि वह जानता है कि उनको कहां ले गया है।

५. जब यीशु ने इस तरह कह लिया तब उसने भीड़ पर पुनः इधर-उधर अपनी दृष्टि डाली और देखा कि लोगों की आंखों में आंसू थे और वे टकटकी लगाए उसे देख रहे थे मानो वे उससे कुछ देर और रुकने का निवेदन करना चाहते हों।

६. और उसने उनसे कहा : सुनो, तुम्हारे लिए मेरा प्याला दया से भरा हुआ है।

७. (३) तुममें क्या कोई ऐसा भी है जो बीमार है? उसे यहां लाओ। तुम्हारे पास कोई लंगड़ा, अंधा, या पंगु जो निर्बल हो चुका हो, या बहिरा, या किसी भी प्रकार के कष्ट में है? उन्हें यहां लाओ और मैं उन्हें ठीक करूंगा, क्योंकि तुम पर मैं दया करता हूं; मेरा प्याला दया से भर चुका है।

८. क्योंकि मैं देखता हूं कि तुम चाहते हो कि मैंने तुम्हारे यरूशलेम के भाइयों के साथ जो कुछ किया था, वह तुम्हें दिखाऊं और मैं देखता हूं कि तुमको निरोग करने के लिए तुम्हारे पास (४) पर्याप्त विश्वास है।

९. और ऐसा हुआ कि जब उसने इस प्रकार कहा तब सारी भीड़ अपने बीमारों, दुखियों, लंगड़ों, अन्धों, गूंगों और किसी भी कष्ट से पीड़ित जनों को लेकर एक ही उद्देश्य से आगे बढ़ी; और जैसे ही वे उसके पास लाए जाते, वैसे ही वैसे वह उन्हें (५) रोग मुक्त करता गया।

१०. और सभी लोग, जो रोग मुक्त किए गए थे और जो स्वस्थ थे, उसके पैरों पर झुके और उसकी आराधना की; और भीड़ की ओर से जितने लोग आ सके, उन सबने (६) उसके पैरों को चूमा और अपने आंसुओं से उसके पैरों को भिगो दिया।

११. और उसने उन्हें (७) अपने छोटे बच्चों को लाने की आज्ञा दी।

१२. इसलिए उन्होंने अपने छोटे बच्चों को लाकर उसके आसपास बैठा दिया और यीशु उनके मध्य खड़ा हुआ और भीड़ तब तक उसके पास जाने के लिए रास्ता देती रही जब तक कि सभी छोटे बच्चे उसके पास न ला दिए गए।

१३. और तब ऐसा हुआ कि जब सभी बच्चे ला दिए गए और यीशु उनके मध्य में खड़ा हुआ, तब उसने भीड़ को भूमि पर (८) घुटनों के बल होने की आज्ञा दी।

१४. और जब सब भूमि पर घुटनों के बल झुक गए, तब यीशु ने स्वतः कहा: पिता, इस्राएल

(१) ३ नफी १८:३९. (२) देखो १६, ३ नफी १५. (३) पद्य ९, १०. (४) २ नफी २७:२३. (५) ३ नफी २६:१५. (६) ३ नफी ११:१९. (७) पद्य १२, २१, २३, २४; ३ नफी २६:१४, १६. (८) ३ नफी १९:६, १६, १७. ईस्वी ३४

के घराने के लोगों के (९) पापों के कारण मुझे दुःख हो रहा है।

१५. और जब उसने ये शब्द कह लिए तब वह स्वयं (१०) घुटनों के बल भूमि पर बैठ गया; और सुनो, उसने पिता से प्रार्थना की, और जो कुछ उसने प्रार्थना की, उसे लिखा नहीं जा सकता, परन्तु भीड़ के जिन लोगों ने सुना, उन्होंने उसका अभिलेख रखा।

१६. उन्होंने उसका अभिलेख इस प्रकार रखा: जो यीशु को हमने पिता से कहते हुए देखा और सुना, उतनी महान और विस्मयकारी बातों को हमारी (११) आंखों ने पहिले कभी नहीं देखा था, और न तो कानों ने सुना ही था।

१७. और न तो किसी की जुबान उस तरह बोल सकती है और न तो कोई उस तरह की बातें लिख ही सकता है; और जिन बातों को यीशु को हमने कहते देखा और सुना है उस तरह की बातें कोई अपने हृदय में विचार भी नहीं सकता; और जिस समय वह पिता से हमारे लिए प्रार्थना कर रहा था, उस समय हमारी आत्माओं में जो आनन्द भरा भरा हुआ था वैसा आनन्द कोई भी अनुभव नहीं कर सकता।

१८. जब यीशु ने पिता से प्रार्थना करना समाप्त किया तब वह खड़ा हुआ; परन्तु भीड़ को इतना अधिक आनन्द था कि वे अपनी सुध-बुध खो बैठे थे।

१९. और यीशु ने उनसे बोलते हुए उनसे उठ खड़े होने को कहा।

२०. और वे धरती पर से उठ कर खड़े हुए, और उसने उनसे कहा: अपने विश्वास के कारण तुम धन्य हो। और सुनो, मेरा आनन्द परिपूर्ण है।

२१. जब यीशु ने यह कह लिया, तब वह रोया, और भीड़ इसकी साक्षी हुई और (१२) उसने उनके एक-एक छोटे बच्चे को लेकर आशीर्वाद दिया, और पिता से उनके लिए प्रार्थना की।

२२. और जब उसने यह कर लिया, तब फिर से रोया।

२३. और उसने भीड़ से कहा: अपने छोटे बच्चों को देखो।

२४. और जब उन्होंने देखना चाहा तब अपनी आंखों को स्वर्ग की ओर किया, और स्वर्गों को खुलते हुए और स्वर्गदूतों को मानो अग्नि के मध्य से उतरते हुए देखा; और उन्होंने उतर कर उन छोटे बच्चों को घेर लिया, और वे (१३) ज्वाला से घिर गए; और स्वर्गदूतों ने उनको उपदेश दिए।

२५. और भीड़ ने यह सब देखा, सुना और इन सब बातों का अभिलेख रखा; और वे जानते हैं कि उनका अभिलेख सत्य है, क्योंकि उन सभी लोगों ने अपने आप देखा और सुना था और उनकी संख्या लगभग दो सहस्त्र और पांच सौ थी; और उनमें स्त्री, पुरुष और बच्चे भी थे।

अध्याय १८

नफायटियों में रोटी और दाखरस संस्कार का किया जाना—प्रार्थना करने की आवश्यकता पर बल देना—पवित्रात्मा को देने का अधिकार दिया जाना।

१. और ऐसा हुआ कि यीशु ने अपने (१) शिष्यों को (२) कुछ रोटी और दाखरस लाने की आज्ञा दी।

२. और जब वे रोटी और दाखरस लाने के लिए चले गए, तब उसने भीड़ को धरती पर बैठ जाने की आज्ञा दी।

३. जब उसके शिष्य रोटी और दाखरस लेकर आ गए, तब उसने रोटी को लेकर उसे टुकड़ों में तोड़ा और उसे आशीसित किया; और अपने शिष्यों को देकर उन्हें खाने को आज्ञा दी।

४. और जब वे खा चुके, तब उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे रोटी के टुकड़ों को भीड़ के लोगों को भी बांटें।

५. जब भीड़ के लोग खाकर तृप्त हुए, तब उसने अपने शिष्यों से कहा: सुनो, मैं तुममें से एक को रोटी तोड़ने और उसे आशीसित करने और अपने गिरजे के उन लोगों को बांटने का अधिकार देकर

(९) ३ नफी २७:३२. (१०) ३ नफी १९, २७. (११) ३ नफी १९:३२-३४. (१२) देखो ७. (१३) देखो ७. अध्याय १८.
(१) देखो ३, ३ नफी १२. (२) पद्य २-१४, २८-३४, ३ नफी २०:३-९, २६:१३, ४ नफी २७, मार० ६:२६, मरो० अध्याय ४, ५.

(३) अभिषिक्त करूंगा, जो विश्वास करेंगे और (४) मेरे नाम पर बपतिस्मा लेंगे।

६. और जिस प्रकार मैंने किया, जिस तरह मैंने रोटी तोड़ी उसे आशीसित किया और तुम्हें दिया, उसी प्रकार तुम सदा करते रहना।

७. तुम यह मेरे उस (५) शरीर की स्मृति में करना जिसे मैंने तुम्हें दिखाया है। और यह पिता के लिए तुम्हारी साक्षी होगी कि तुम मुझे सदा याद रखते हो। और अगर (६) तुम सदा मुझे स्मरण रखोगे, तब मेरी आत्मा को अपने साथ पाओगे।

८. जब उसने ये शब्द कह लिए तब उसने अपने शिष्यों को दाखरस के प्याले को लेकर उसमें से पीने और भीड़ को भी पीने की आज्ञा दी।

९. और ऐसा हुआ कि उन्होंने उसे पीया और तृप्त हुए; और भीड़ के लोगों को भी दिया और वे भी उसे पीकर तृप्त हुए।

१०. जब शिष्यों ने यह कर लिया तब यीशु ने उनसे कहा: यह कार्य जो तुमने किया है, उसके लिए तुम धन्य हो, क्योंकि यह मेरी आज्ञा का पालन करना हुआ, और पिता के लिए भी यह साक्षी स्वरूप है कि तुम उसे करने को तत्पर हो जिसे करने की मैंने आज्ञा दी थी।

११. और ऐसा ही तुम उन सब के साथ करना जो पश्चात्ताप करें और (७) मेरे नाम पर बपतिस्मा लें, और यह तुम मेरे उस रक्त की स्मृति में करना जिसे मैंने तुम्हारे लिए गिराया है, जिससे कि तुम पिता के सामने यह साक्षी दे सको कि तुमने सदा मुझे (८) याद रखा। और अगर तुमने मुझे (९) सदा याद रखा तब तुम मेरी आत्मा को अपने पास पाओगे।

१२. और मैंने तुम्हें इन कामों को करने के लिए एक आज्ञा दी है, और अगर तुमने सदैव इन कामों को किया तब तुम धन्य हो, क्योंकि तुमने मेरी चट्टान पर अपना मकान बनाया।

१३. और तुममें से अगर किसी ने इससे कम या अधिक किया, तब उसने (१०) मेरी चट्टान पर नहीं लेकिन बालू पर अपने मकान की नींव को डाला; और जब वर्षा होगी, बाढ़ आएगी और उस पर हवा के थपेड़े पड़ेंगे, तब वे गिर पड़ेंगे और अधोलोक का द्वार उनको लेने के लिए खुलेगा।

१४. इसलिए अगर तुमने मेरी उन आज्ञाओं का पालन किया जिसे तुम्हें देने के लिए पिता ने मुझे आज्ञा दी थी, तब धन्य होगे तुम लोग।

१५. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि जागते रहो और सदा (११) प्रार्थना करते रहो, नहीं तो शैतान तुम्हें लालच में फंसाएगा, और तुम्हें अपना बन्दी बनाकर ले जाएगा।

१६. और जिस प्रकार तुम्हारे मध्य मैंने प्रार्थना की है, उसी तरह तुम पश्चात्ताप कर मेरे नाम पर बपतिस्मा लेने वाले मेरे लोगों के मध्य मेरे गिरजे में प्रार्थना करना। सुनो (१२) मैं ही ज्योति हूं; मैंने तुम्हारे लिए उदाहरण रखा है।

१७. और जब यीशु ने इन शब्दों को अपने शिष्यों से कह लिया तब वह भीड़ की ओर घूम कर बोला:

१८. सुनो, मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि जागते रहो और (१३) सदा प्रार्थना करते रहो, नहीं तो तुम बहकावे में पड़ जाओगे; क्योंकि तुम्हें शैतान इसलिए चाहता है कि वह गेहूं के पौधों की तरह तुम्हें इधर-उधर झुका सके।

१९. इसलिए तुम पिता से सदैव मेरे नाम पर प्रार्थना किया करो।

२०. तुम जो कुछ मेरे नाम पर, पिता से पाने का विश्वास कर मांगोगे, और अगर तुम्हारी मांग उचित रही, तब सुनो, वह तुम्हें दिया जाएगा।

२१. तुम सदा मेरे नाम पर पिता से अपनी स्त्रियों और बच्चों के लिए आशीर्वाद पाने को अपने परिवार में (१४) प्रार्थना किया करो।

२२. और सुनो, तुम सदा एक साथ एकत्रित हुआ करो, और जब तुम एकत्रित होओ, तब किसी भी मनुष्य को अपने पास आने से रोको मत; उन्हें अपने पास बुलाओ, न कि रोको।

(३) ४ नफी १४, देखो ७, मू० १८, मार० ३:४. (४) देखो २१, २ नफी ९. (५) पद्य ११, ३ नफी २०:८, मरो० ४:३, ५:२. (६) पद्य ११, मरो० ४:३-५:२. (७) देखो २१, २ नफी ९. (८) देखो ६. (१०) देखो ५, अल० २६. (११) देखो ५, २ नफी ३२. (१२) देखो १३, मू० १६. (१३) देखो ५, २ नफी ३२. (१४) अल० ३४:२१, देखो ५, २ नफी ३२.

२३. तुम उनके लिए प्रार्थना करो, न कि उनको निकाल बाहर करो, और वे अगर सदा तुम्हारे पास आते रहें, तब तुम उनके लिए पिता से मेरे नाम पर प्रार्थना किया करना।

२४. इसलिए अपने दीपक को ऊपर उठाओ जिससे कि वह जगत के लिए प्रकाश दिखाए सुनो, वह (१५) दीपक मैं ही हूं जिसे तुम ऊपर उठाए रहोगे—जैसा करते तुमने मुझे देखा है। सुनो, तुमने मुझे पिता से प्रार्थना करते हुए देखा है, जिसकी साक्षी तुम सब हो।

२५. और तुम देख ही रहे हो कि मैंने (१६) किसी को भी जाने की आज्ञा नहीं दी है, परन्तु मैंने तुम्हें अपने पास आने की आज्ञा दी है जिससे कि तुम मुझे अपने हाथों से (१७) स्पर्श करो और देखो; इसी तरह का व्यवहार तुम जग से करना; और जो भी कोई इस आज्ञा को भंग करेगा वह अपने आप को बहकावे में डालेगा।

२६. और जब यीशु ने इन शब्दों को कह लिया, तब वह फिर से अपने उन (१८) शिष्यों की ओर घूमा, जिन्हें उसने चुना था और उनसे कहा:

२७. सुनो, मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि मैं तुम्हें एक और आज्ञा देता हूं और तब मैं अपने पिता के पास (१९) उसकी दूसरी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए जाऊंगा, जिसे उसने मुझे दिया है।

२८. और अब सुनो, मैं जो तुम्हें दूसरी आज्ञा दे रहा हूं वह यह है कि जब तुम मेरे मांस और रक्त के संस्कार को करो, तब जानते हुए किसी अयोग्य को उसमें (२०) भाग मत लेने दो।

२९. क्योंकि जो भी कोई अयोग्य मेरा मांस खाएगा और रक्त पीएगा, वह अपनी आत्मा के लिए अधोगति पाएगा; इसलिए अगर तुम जानते हो कि कोई व्यक्ति अयोग्य है, तब उसे मेरा मांस खाने और रक्त पीने से मना करो।

३०. फिर भी तुम उसे अपने में से निकाल मत दो, परन्तु उसे उपदेश दो और पिता से उसके लिए मेरे नाम पर प्रार्थना करो, और अगर वह पश्चात्ताप करे और मेरे नाम पर (२१) बपतिस्मा ले, तब तुम उसे स्वीकार करो और मेरे मांस और रक्त के संस्कार को उसके साथ सम्पन्न करो।

३१. और अगर वह पश्चात्ताप न करे, तब उसकी गिनती मेरे लोगों में नहीं होगी जिससे कि वह मेरे लोगों को नष्ट न कर सके, क्योंकि सुनो, मैं अपनी (२२) भेड़ों को जानता हूं। और उनकी गिनती हो चुकी है।

३२. फिर भी उसे अपने (२३) प्रार्थना भवनों से या प्रार्थना करने वाले स्थानों से बाहर नहीं निकाल देना, परन्तु ऐसे व्यक्तियों को उपदेश देते रहना; क्योंकि तुम यह नहीं जानते कि कब वे सम्भवत: लौट आएं, और मैं उन्हें रोग मुक्त करूंगा, और उनके लिए मुक्ति लाने में साधन तुम होओगे।

३३. इसलिए तुम मेरी इन बातों का पालन करना जिससे कि तुम अधोगति को न प्राप्त होओ; क्योंकि सन्ताप हो उनको जिसे पिता अपराधी ठहराएगा।

३४. तुममें जो विवाद था, उसके कारण मैंने तुम्हें इन आज्ञाओं को दिया है और तुम धन्य होगे अगर तुममें (२४) विवाद न होगा।

३५. और (२५) अब मैं पिता के पास जाता हूं, क्योंकि तुम्हारे लिए पिता के पास मेरा जाना आवश्यक है।

३६. और जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तब उसने जिन शिष्यों को चुना था, उन्हें एक-एक कर अपने हाथ से स्पर्श किया और हरएक को छूते हुए उनसे बातें कीं।

३७. परन्तु भीड़ यह न सुन सकी कि उसने उन शिष्यों से क्या कहा, इसलिए वह इसका अभिलेख न रख सकी; परन्तु उन शिष्यों ने इसका अभिलेख रखा कि उसने उनको (२६) पवित्रात्मा देने का (२७) अधिकार दिया था और मैं (२८) आगे दिखाऊंगा कि यह अभिलेख सत्य है।

३८. और जब यीशु ने उन सभी को स्पर्श कर

(१५) देखो १३, मू० १६. (१६) पद्य २२, २३. (१७) ३ नफी ११:१४, १६. (१८) देखो ३, ३ नफी १२. (१९) ३ नफी १६:३. (२०) पद्य २९:३०, ३ नफी २०:८ मार० ९:२९. (२१) देखो २१, २ नफी ९. (२२) १ नफी २२:२५. (२३) देखो २१, अल० १६. (२४) ३ नफी ११:२८-३०. (२५) ३ नफी १७:४. (२६) मरो० २. (२७) देखो २५, ३ नफी १. (२८) दे मरो० २.

ईस्वी ३४

लिया तब ऐसा हुआ कि भीड़ के ऊपर बादल छा गया जिससे वे यीशु को और देख न सके।

३९. और जब उनके ऊपर बादल छाया हुआ था तब वह उनसे विदा हो ऊपर स्वर्ग को चला गया। और (२९) शिष्यों ने देखा कि वह पुन: स्वर्ग चला गया और उन्होंने इसका अभिलेख रखा।

अध्याय १९

बारह नफायटियों के नाम—उनका बपतिस्मा लेना—पवित्रात्मा का दिया जाना—रक्षक का दुबारा आना—एक अवर्णनीय प्रार्थना का किया जाना।

१. और जब यीशु (१) ऊपर स्वर्ग चला गया, तब भीड़ वहां से हटी और हरएक व्यक्ति अपनी-अपनी स्त्रियों और बच्चों को साथ लेकर अपने-अपने घरों को चला गया।

२. और यह समाचार शीघ्र ही अन्धकार होने से पूर्व ही दूसरे स्थानों में फैल गया कि भीड़ ने यीशु को देखा था और उसने उनको उपदेश दिया और (२) दूसरे दिन वह पुन: भीड़ को दिखाई देगा।

३. यीशु के विषय में सारी रात अन्य स्थानों में चर्चा होती रही; और बहुत अधिक संख्या में लोगों को उस भीड़ के लोगों के पास भेजा गया, हां, बहुत अधिक लोगों ने सारी रात कठिन परिश्रम किया, ताकि दूसरे दिन वे वहां पहुंच जाएं जहां यीशु दिखाई देने वाला था।

४. और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन जब लोगों की भीड़ फिर से एकत्रित हुई, तब उनमें यीशु के (३) बारह शिष्य भी थे जिन्हें उसने चुना था और जिनके नाम थे नफी और उसका (४) भाई तीमुथियुस जिन्हें उसने मरने पर पुनर्जीवित किया था, और उसका पुत्र योनस, और मथोनी और उसका भाई मथोनियाह, कूमन, कुमनोनिहा, यरमयाह, सिमनन, जीनस, जिदिकियाह और यशायाह— ये सब भीड़ के मध्य में जाकर खड़े हुए।

५. और सुनो, यह भीड़ इतनी बड़ी थी कि लोगों ने भीड़ को बारह दलों मे विभक्त कर दिया।

६. और बारह शिष्यों ने भीड़ को उपदेश दिया; और सुनो, उन्होंने उन्हें धरती पर (५) घुटनों के बल झुकने को और यीशु के नाम पर पिता से प्रार्थना करने को कहा।

७. और यीशु के शिष्यों ने भी पिता से यीशु के नाम पर प्रार्थना की। प्रार्थना करने के पश्चात् उन्होंने खड़े होकर लोगों को उपदेश दिया।

८. और जब उन्होंने बिना कुछ (६) परिवर्तन किए ही यीशु द्वारा कहे शब्दों को उन्हें सुनाया, तब उन्होंने फिर से घुटनों के बल होकर पिता से यीशु के नाम पर प्रार्थना की।

९. और उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की जिसकी उन्हें सबसे अधिक इच्छा थी; और वे सबसे अधिक इच्छा (७) पवित्रात्मा पाने की करते थे।

१०. और जब वे इस प्राकर प्रार्थना कर चुके, तब वे जल के निकट जाकर खड़े हुए और भीड़ उनके पीछे-पीछे गई।

११. और ऐसा हुआ कि नफी जल में घुसा और उसे बपतिस्मा दिया गया।

१२. और उसने जल में ऊपर निकल कर दूसरों को बपतिस्मा देना आरम्भ किया। उसने उन सभी को बपतिस्मा दिया जिन्हें यीशु ने चुना था।

१३. और जब (८) वे सब बपतिस्मा ले चुके और जल में से बाहर आए, तब उनके ऊपर (९) पवित्रात्मा आयी और वे सब पवित्रात्मा और ज्वाला से भर उठे।

१४. और सुनो, ऐसा प्रतीत हुआ मानो वे (१०) ज्वाला से घिर गए जो कि (११) स्वर्ग से नीचे उतरा था, जिसे भीड़ के लोगों ने देखा और जिसके साक्षी हुए; और स्वर्ग से स्वर्गदूत आए और उन्होंने उपदेश दिए।

१५. और ऐसा हुआ कि जब स्वर्गदूत शिष्यों को उपदेश दे रहे थे तब सुनो, यीशु आया और उनके मध्य में खड़े होकर उसने उन्हें उपदेश दिए।

१६. और उसने भीड़ से बातें कीं और उन्हें

(२९) देखो ३, ३ नफी १२. अध्याय १९. (१) ३ नफी १८:३९. (२) ३ नफी १७:३. (३) ३ नफी ७:१९. (४) देखो ३, ३ नफी १२. (५) देखो ८, ३ नफी १७. (६) ३ नफी. अध्याय ११-१८. (७) देखो २५, ३ नफी ९. (८) देखो २१, ३ नफी ९. (८) देखो २१, २ नफी ९. (९) देखो २५, ३ नफी ९. (१०) इला० ५:२३, २४, ३६, ४३-४५, ३ नफी १७:२४. (११) इला० ५:४५.

भूमि पर फिर से (१२) घुटनों पर होने को आज्ञा दी, और उसने अपने शिष्यों को भी घुटनों पर होने को कहा।

१७. और ऐसा हुआ कि जब सब घुटनों पर हो गए तब उसने (१३) अपने शिष्यों को प्रार्थना करने की आज्ञा दी।

१८. और सुनो, उन्होंने प्रार्थना करना आरम्भ किया; और यीशु से प्रार्थना करते हुए उन्होंने उसे अपना प्रभु और परमेश्वर कहा।

१९. और ऐसा हुआ कि यीशु उनके मध्य से कुछ दूर हट कर गया और उसने धरती पर घुटने टेक कर कहा :

२०. हे पिता, मैं तुझे धन्यवाद देता हूं, क्योंकि तुमने इन लोगों को जिन्हें मैंने चुना है, (१४) पवित्रात्मा को दिया है। इनके विश्वास के कारण मैंने इन्हें (१५) संसार के लोगों में से चुना है।

२१. हे पिता, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि जितने भी लोग इनकी बातों पर विश्वास करें (१६) उन सभी को पवित्रात्मा देना।

२२. हे पिता, तुमने इन्हें पवित्रात्मा को इसलिए दिया कि ये मुझमें विश्वास करते हैं; और तुम देख ही रहे हो कि ये मुझमें विश्वास करते हैं क्योंकि तुम इन्हें सुन रहे हो, और ये मुझसे प्रार्थना भी कर रहे हैं क्योंकि मैं इनके साथ हूं।

२३. और अब, हे पिता, मैं उनके लिए आप से प्रार्थना करता हूं और उन सभी लोगों के लिए भी प्रार्थना करता हूं जो उनकी बातों पर विश्वास करेंगे, जिससे कि वे मुझमें विश्वास करें, जिससे कि मैं (१७) उनके अन्दर इसी प्रकार रहूं जिस प्रकार पिता, आप मुझमें हैं और जैसे हम (१८) एक हों।

२४. और जब यीशु ने इस तरह पिता से प्रार्थना कर ली, तब वह अपने शिष्यों के पास आया और देखो, वे बिना रुके उससे प्रार्थना कर रहे थे; और प्रार्थना में उन्होंने शब्दों का आडम्बर नहीं किया क्योंकि वे (१९) क्या प्रार्थना करें यह उन्हें बतलाया गया था, और वे आराधना की इच्छा में भरे हुए थे।

२५. और जब वे प्रार्थना कर रहे थे तब मसीह ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उसकी आकृति उनपर मुस्काती दिखाई दी और उसकी मुस्कान की ज्योति उनके ऊपर पड़ी और सुनो, वे उसके मुख-मंडल की शोभा और लबादे की तरह उज्ज्वल हो उठे; और यह उज्ज्वलता अन्य सभी सफेदी से (२०) बढ़कर थी; हां, इस उज्ज्वलता के समान दूसरी कोई भी उज्ज्वलता इस संसार में हो ही नहीं सकती।

२६. और यीशु ने उनसे कहा : प्रार्थना किए जाओ; फिर भी उन्होंने प्रार्थना करना समाप्त नहीं किया।

२७. और वह फिर से घूम कर उनसे कुछ दूर जाकर धरती पर झुका और पुनः उसने पिता से प्रार्थना करते हुए यह कहा :

२८. हे पिता, मैंने जिनको चुना है, उनके विश्वास के कारण उनको शुद्ध करने के लिए धन्यवाद और मैं उनके लिए, और उन लोगों के लिए जो उनकी बातों पर विश्वास करेंगे, प्रार्थना करता हूं कि वे भी उनके शब्दों पर विश्वास करके मुझमें उसी तरह शुद्ध हों जिस तरह ये मुझमें शुद्ध हुए हैं।

२९. हे पिता, मैं जगत के लिए प्रार्थना नहीं करता, परन्तु उनके लिए करता हूं जिनको उनके विश्वास के कारण तुमने जगत में से मुझे दिया है, जिससे कि वे मुझमें शुद्ध हों, और मैं (२१) उनमें उसी प्रकार व्याप्त रहूं, जिस प्रकार हे पिता, तू मुझमें है, जिससे कि हम एक हों और मैं उनमें यशस्वी होऊं।

३०. और जब यीशु ने यह कह लिया, तब वह पुनः अपने शिष्यों के पास आया; और सुनो, वे बिना रुके दृढ़ता के साथ उससे प्रार्थना करते रहे; और वह पुनः उन पर मुस्कुराया; और सुनो, वे भी मसीह की तरह (२२) श्वेत हो गए थे।

३१. और ऐसा हुआ कि उसने फिर उनसे कुछ हट कर पिता से प्रार्थना की।

३२. और जो कुछ उसने प्रार्थना की, उसे किसी भी व्यक्ति की (२३) जुबान कह नहीं सकती और

(१२) देखो ८,३ नफी. (१३) देखो ५, २ नफी ३२. (१४) देखो २५, ३ नफी ९. (१५) देखो ३, ३ नफी १२. (१६) देखो २५, ३ नफी ९. (१७) देखो १६, ३ नफी ९. (१८) देखो ११, २ नफी ३१. (१९) पद्य ९. (२०) पद्य ३०. (२१) देखो १६, ३ नफी ९. (२२) पद्य २५. (२३) ३ नफी १७:१६, १७, २६:१४, २८:१४, १६.

न ही कोई व्यक्ति उन शब्दों को लिख सकता है, जिन शब्दों में उसने प्रार्थना की।

३३. और यह भीड़ ने सुनी जिसका अभिलेख वे रख रहे हैं; और उनका हृदय द्वार खुल गया और उन्होंने उन शब्दों को अपने हृदय में समझा, जिन्हें उसने प्रार्थना में कहा था।

३४. फिर भी जिन शब्दों द्वारा उसने प्रार्थना की थी, वे इतने महान और आश्चर्यजनक थे कि उन्हें लिखा नहीं जा सकता और न ही किसी व्यक्ति द्वारा उच्चारण ही किया जा सकता है।

३५. और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने प्रार्थना करना समाप्त कर लिया, तब वह फिर अपने शिष्यों के पास आया और उनसे कहा : इतना अधिक विश्वास मैंने सारी यहूदी जाति में नहीं पाया; इसलिए, उनके अविश्वास के कारण इतना (२४) महान चमत्कार मैंने उन्हें नहीं दिखाया।

३६. मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि जितनी महान बातों को तुमने देखा है उतनी महान बातें उनमें से किसी ने भी नहीं देखी हैं; और न तो जितनी महान बातें तुमने सुनी हैं उतनी महान बातें ही उन्होंने सुनी हैं।

अध्याय २०

चमत्कारी ढंग से दाखरस और रोटी का दिया जाना और इसका संस्कार—याकूब के अवशेष वंश—रक्षक द्वारा अपने आप को मूसा के समान कहाए जाने वाला भविष्यवक्ता प्रकट करना—कई भविष्यवक्ताओं की वाणियों का प्रमाण दिया जाना।

१. और ऐसा हुआ कि यीशु ने भीड़ को और अपने शिष्यों को प्रार्थना समाप्त करने की आज्ञा दी। और उसने यह भी आज्ञा दी कि वे अपने हृदयों में प्रार्थना करना अन्त न करें।

२. और उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे उठ कर अपने पैरों पर खड़े हों। और वे उठकर अपने पैरों पर खड़े हुए।

३. और ऐसा हुआ कि उसने फिर से रोटी को (१) तोड़ कर आशीषित किया और अपने शिष्यों को खाने को दिया।

४. और जब वे खा चुके तब उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे रोटी तोड़ कर भीड़ को दें।

५. और जब वे रोटी दे चुके तब उसने उन्हें दाखरस पीने को दी, और उन्हें आज्ञा दी कि वे भीड़ को भी पीने को दें।

६. इस समय रोटी और दाखरस न तो शिष्य ही लाए थे और न ही भीड़ का कोई भी व्यक्ति लाया था।

७. लेकिन उसने सच में उन्हें खाने को रोटी और पीने को दाखरस दी थी।

८. और उसने उनसे कहा : जो इस रोटी को खाता है वह अपनी आत्मा के लिए (२) मेरे शरीर का मांस खाता है; और जो इस दाखरस को पीता है वह अपनी आत्मा के लिए मेरा रक्त पीता है; और उसकी आत्मा कभी भी न तो भूखी रहेगी और न ही प्यासी रहेगी, परन्तु सदा तृप्त रहेगी।

९. जब भीड़ ने खा और पी लिया तब सुनो, वे पवित्रात्मा से (३) भर उठे; और एक स्वर से पुकार उठे और उन्होंने यीशु को यश दिया, जिसे उन्होंने देखा भी था और जिसकी बातों को भी सुना था।

१०. और जब सभी यीशु को यश दे चुके, तब उसने उनसे कहा : अब सुनो, इस्राएल के अवशेष के इन लोगों के विषय में जो आज्ञा पिता ने मुझे दी थी, उसे मैं पूरा कर चुका हूं।

११. तुम यह याद रखना कि मैंने कहा था कि (४) यशायाह की वाणी कब सत्य होगी—सुनो, वह लिखी हुई हैं, जो कि तुम्हारे सामने है, इसलिए उसे ढूंढो।

१२. और मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि जब वह पूरी होगी तब हे इस्राएल के घराने के लोगो, जो (५) शर्तनामा पिता ने इन लोगों से किया था, वह पूरा होगा।

१३. और तब जो अवशेष लोग सारी धरती पर बिखरे होंगे, उन्हें पूरब से, पश्चिम से, दक्षिण से और उत्तर से (६) एकत्रित किया जाएगा; और उन्हें उनके प्रभु परमेश्वर   जानकारी में लाया

(२४) देखो ४, ३ नफी २७. अध्याय २०. (१) देखो २, ३ नफी १८. (२) देखो २०, ३ नफी १८. (३) देखो २५, ३ नफी ६. (४) ३ नफी १६:१७ यशा० ५२:८-१०. (५) देखो १०, ३ नफी १५. (६) देखो ५, १ नफी १५. ईस्वी ३४

जाएगा जिसने कि उनका उद्धार किया है।

१४. और पिता ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं इस देश को (७) तुम्हें पैतृक देश के रूप में दूं।

१५. और मैं तुमसे कहता हूं कि दूसरी जातियों को मेरे (१४) लोगों को तितर-बितर करने के पश्चात् जोआशीर्वाद प्राप्त होगा, उसके पश्चात् भी अगर उन्होंने (८) पश्चात्ताप नहीं किया।

१६. तब (१५) तुम जो कि याकूब के बचे हुए वंश के हो, उनमें जाओगे; और उन लोगों के मध्य में जिनकी संख्या बहुत अधिक होगी, तुम उसी प्रकार रहोगे जिस प्रकार वन के पशुओं के मध्य में सिंह रहता है, और जिस प्रकार भेड़ों के मध्य में से सिंह अगर जाता है तो उनको कुचलता हुआ और चीरता-फाड़ता हुआ और उन्हें कोई भी बचा नहीं सकता।

१७. और तुम्हारे हाथ तुम्हारे शत्रुओं पर उठेंगे, और तुम्हारे बैरियों को काट दिया जाएगा।

१८. और मैं अपने लोगों को उसी तरह (१६) बटोरूंगा जिस तरह एक आदमी अपने कटे अनाज को खलिहान में बटोरता है।

१९. और मैं अपने उन लोगों को बना दूंगा जिनके साथ पिता ने शर्तनामा बनाया था; हां, मैं तुम्हारे सींग को लोहा और खुरों को पीतल बना दूंगा, और तुम कई जातियों को पीट कर टुकड़े-टुकड़े कर दोगे; और उनके लाभ को मैं प्रभु के लिए उत्सर्ग कर दूंगा, और उनकी वस्तुओं को सारे जगत के प्रभु के लिए लगा दूंगा। और सुनो, मैं वही हूं जो यह करेगा।

२०. और पिता कहता है कि उस दिन मेरे न्याय की तलवार उनके ऊपर लटक रही होगी और अगर वे पश्चात्ताप नहीं करेंगे तब वह उनके ऊपर गिरेगी, यहां तक कि वह अन्य जातियों के (१७) सभी राष्ट्रों के ऊपर गिरेगी।

२१. और हे इस्राएल के घराने के लोगों ऐसा होगा कि मैं अपने लोगों को स्थापित करूंगा।

२२. और सुनो, मैंने जो (१८) शर्तनामा तुम्हारे पिता याकूब से किया था उसकी पूर्ति में मैं इन लोगों को (१९) इस देश में स्थापित करूंगा; और वह होगा एक (२०) नया यरूशलेम। और (२१) स्वर्ग की शक्ति इन लोगों के मध्य में होगी; यहां तक कि (२२) मैं भी तुम्हारे बीच में ही रहूंगा।

२३. सुनो, मैं वह हूं जिसके विषय में मूसा ने कहा था : मेरी तरह ही तुम्हारे और तुम्हारे बन्धुओं के लिए प्रभु तुम्हारा परमेश्वर (२३) एक भविष्यवक्ता खड़ा करेगा; और सभी बातों में वह तुमसे जो कुछ कहेगा, वह तुम सुनोगे और ऐसा होगा कि जो भी कोई उस भविष्यवक्ता की बात को नहीं सुनेगा उन्हें लोगों से अलग कर दिया जाएगा।

२४. मैं तुमसे सच कहता हूं कि सामुएल से लेकर उसके पश्चात् जितने भी (२४) भविष्यवक्ता हुए हैं जिन्होंने बातें की हैं, उन सब ने मेरी गवाही दी है।

२५. और सुनो, तुम भविष्यवक्ताओं की सन्तान हो और इस्राएल के घराने के हो; और तुम उनके वंश के लोग हो जिनके पिता इब्राहीम से, पिता ने यह कहते हुए शर्तनामा बनाया था : तुम्हारे (२५) वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियां आशीषित होंगी।

२६. पिता ने मुझे तुम्हारे लिए प्रथम खड़ा किया, और तुममें से हरएक को पापों से मुख मोड़ने के लिए तुम्हें आशीर्वाद देने को तुम्हारे पास भेजा है; और यह इसलिए कि तुम उस वचन दिए लोगों की सन्तान हो।

२७. और इसके पश्चात् तुम्हें आशीर्वाद दिया गया और पिता के उस शर्तनामें को पूरा किया गया, जिसे उसने इब्राहीम से यह कहते हुए किया था: (२६) तुम्हारे वंश के द्वारा पृथ्वी की सारी जातियां आशीषित होंगी—और मेरे द्वारा अन्य

(७) देखो १५, ३ नफी १५. (८) देखो १२, ३ नफी १६. (१३) देखो ३, २ नफी २७. (१४) ३ नफी १६:१०-१४. (१५) ३ नफी १६:१४, १५, २१:११-२१, मार० ५:२२-२४, मीका ४:१२-१३, ५:८-१५. (१६) मी० ४:१२, १३. (१७) देखो १०, १ मीका १४. (१८) देखो १५, ३ नफी १५. (१९) उत्त० ४९-२२-२६. (२३) ३ नफी २१:, २३, २४ ए० १३:१-१२. (२१) ३ नफी २१:२५. (२२) ३ नफी २१:२५. (२३) देखो १३, १ नफी २२, व्यवस्था १८:१५, १९, प्रेरितों० ३:१९-२६. (२५) पद्य २७, उत्त० २२:१८, प्रे० ३:२५. (२६) देखो २५.

जातियों पर (२७) पवित्रात्मा उड़ेल दी जाएगी और यह आशीर्वाद उनको (२८) सब से सबल बना देगा और हे इस्राएल के घरानेवालों, वे मेरे लोगों को तितर-बितर भी कर देंगे।

२८. और वे होंगे इस देश के लोगों को (२९) दण्ड देने वाले। फिर भी पिता कहते हैं कि जब उनको मेरे इंजील (३०) की पूर्णता प्राप्त होगी और तब वे अगर अपने हृदयों को मेरे विपरीत कठोर कर लेंगे, तब मैं उनके पापों को (३१) उन्हीं के सिर पर कर दूंगा।

२९. और पिता कहता है कि मैं अपने उस (३२) शर्तनामे को स्मरण रखूंगा जिसे मैंने अपने लोगों से किया था; और वह शर्तनामा यह है कि मैं उन्हें अपने नियुक्त समय में (३३) एकत्रित करूंगा जिससे कि मैं उनको उनके पैतृक देश को, जो कि यरूशलेम देश है, जो कि सदैव के लिए उनका आनन्दमय देश है, उन्हें फिर से दे दूं।

३०. और ऐसा होगा कि सम्पूर्ण इंजील का उनमें (३४) प्रचार किए जाने का समय आएगा।

३१. और वे मुझमें विश्वास करेंगे कि मैं ही परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हूं, और वे मेरे नाम से पिता से प्रार्थना किया करेंगे।

३२. तब उनके (३५) प्रहरी ऊंची आवाज में एक साथ जयजयकार करेंगे, क्योंकि वे अपनी आंखों से साक्षात् देखेंगे।

३३. तब पिता उनको फिर से (३६) एकत्रित करेगा, और उन्हें यरूशलेम पैतृक देश के लिए दे देगा।

३४. और तब वे आनन्द से भर उठेंगे—हे यरूशलेम के खण्डहरो, एक साथ जयजयकार करो; क्योंकि पिता ने अपने लोगों को सांत्वना दी है, उसने यरूशलेम का उद्धार किया है।

३५. पिता ने सारी जातियों की आंखों के सामने अपनी पवित्र खुली भुजा को दिखाया है; और जगत का कोना-कोना पिता द्वारा लाई गई मुक्ति को देखेगा; और मैं और पिता (३७) एक ही हैं।

३६. और तब वह काम किया जाएगा जो कि लिखा है; हे सियोन, (३८) जाग, जाग, और अपना बल धारण कर; हे पवित्र नगर यरूशलेम, अपने सौंदर्यपूर्ण वस्त्रों को पहिन ले; क्योंकि तुझ में बिना खतना किए और अशुद्ध लोग कभी प्रवेश करने नहीं पाएंगे।

३७. अपने ऊपर से धूल झाड़ दे। हे यरूशलेम, उठकर बैठ; हे सियोन की बन्दी बेटी, अपने गले के बन्धन को खोल दे।

३८. क्योंकि प्रभु कहता है: तुमने अपने आपको बिना मूल्य के बेच दिया था; इसलिए तुम बिना पैसे के छुड़ाए भी जाओगे।

३९. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि मेरे लोग मेरा नाम जान जाएंगे; हां, वे उस दिन जान लेंगे कि मैं वही हूं जो बातें करता है।

४०. और तब वे कहेंगे (३९) पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं, जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सियोन से कहता है, तेरा परमेश्वर राज्य करता है।

४१. और तब यह आवाज सुनाई देगी (४०) दूर हो, दूर हो, वहां से निकल जाओ, कोई अशुद्ध वस्तु मत छूओ, उसके बीच से निकल जाओ; हे यहोवा के पात्रों को ढोने वालों, तुम अपने को शुद्ध रखो।

४२. क्योंकि तुमको शीघ्रता से निकलना नहीं पड़ेगा और न ही भागना पड़ेगा; क्योंकि प्रभु तुम्हारे आगे-आगे चलेगा और इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पीछे भी रक्षा करता हुआ चलेगा।

४३. देखो, मेरा दास बुद्धि से काम करेगा; वह अति ऊंचा, महान और अति महान हो जाएगा।

४४. जैसे बहुत से लोग मुझे देख कर चकित हुए—क्योंकि उसका रूप यहां तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी।

(२७) ३ नफी १५:२३, प्रे० १०:४४-४८. (२८) १ नफी १३:११-१५. (२९) १ नफी १३:२२, १४. ३ नफी १६:८, ९. (३०) ३ नफी १६:१०. (३१) ३ नफी १६:१५, २०:१५-२०. (३२) देखो १०, ३ नफी १५. (३३) देखो ५, १ नफी १५. (३४) देखो ६, २ नफी २५. (३५) यशा० ५२:६, १०; ३ नफी १६:१८-२०. (३६) देखो ५, २ नफी १५. (३७) देखो ११, २, २ नफी ३१. (३८) यशा० ५२:१-३, ६. (३९) यशा० ५२:७. (४०) यशा० ५२:११-१५.

४५. वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देखकर राजा अपने मुंह बन्द करेंगे, क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसे उनको बताया नहीं गया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी।

४६. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं, जैसे कि पिता ने मुझे आज्ञा दी है, ये सभी बातें पूरी होंगी। तब जो (४२) वचन पिता ने इन लोगों को दिया था, वह पूरा होगा; और तब (४३) यरूशलेम मेरे लोगों से फिर आबाद होगा, और वह उनका पैतृक देश हो जाएगा।

अध्याय २१

पिता के काम का संकेत—पश्चात्तापयुक्त दूसरी जातियों का उत्तम सौभाग्य—पश्चात्तापहीनों की अधोगति की भविष्यवाणी—नया यरूशलेम।

१. और मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैं तुम्हें एक (१) संकेत दूंगा जिसके द्वारा तुम उस समय को जान सकोगे जब ये बातें होने को होंगी—मैं उनके लम्बे काल तक बिखरे रहने के बाद उन्हें (२) एकत्रि करूंगा, और हे इस्राएल के घरानेवालों, मैं उनमें अपने सियोन की स्थापना करूंगा।

२. और सुनो, (३) संकेत के लिए मैं तुम्हें यही दूंगा—क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो बातें अपने विषय में अभी बतला रहा हूं, और भविष्य में भी बतालाऊंगा और पवित्रात्मा की (४) वह शक्ति जो कि पिता के द्वारा तुम्हें दी जाएगी, उसे (५) अन्य जातियों की जानकारी में लाई जाएगी जिससे कि वे (६) इन लोगों के विषय में जान सके जो कि याकूब के घराने के अवशेष लोग हैं और ये लोग मेरे हैं, जो कि उनके (७) द्वारा तितर-बितर कर दिए जाएंगे।

३. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि पिता के विषय की ये बातें पिता के द्वारा उनकी जानकारी कराई जाएगी और (८) उनसे तुम्हारे पास आएगी।

४. क्योंकि इसमें पिता का विवेक है कि उनको इस देश में स्थापित किया जाए, और पिता की शक्ति के द्वारा उनको एक (९) स्वतन्त्र जाति की तरह खड़ा किया जाए जिससे कि ये बातें उनसे (१०) तुम्हारे अवशेष वंश के लोगों के पास लाई जाएं, जिससे कि (११) जो वचन पिता ने अपने लोगों से दिया था, उसे हे इस्राएल के घरानेवालों, पूरा किया जा सके।

५. इसलिए जब ये बातें, और जो बातें इसके पश्चात् तुम्हें दी जाएगी, वे तुम्हारे (१२) उन वंशजों के पास अन्य जातियों के द्वारा लाई जाएंगी, जो कि अपने पापों के कारण अविश्वास में (१३) दुर्बल हो जाएंगे।

६. क्योंकि पिता को यही उचित प्रतीत होता है कि यह अन्य जातियों के द्वारा आए ताकि वह उन्हें अपनी (१४) शक्ति की उन्हें जानकारी करा सके, जिससे कि अगर उन्होंने अपने हृदयों को कठोर नहीं किया और पश्चात्ताप कर मेरे पास आए और मेरे नाम पर (१५) बपतिस्मा लेकर मेरे सिद्धान्त के सत्य मन्तव्यों को जाना तब हे इस्राएल के घराने के लोगों, इससे उनकी (१६) गिनती मेरे लोगों में होगी।

७. और जब ऐसा होगा कि तुम्हारे वंश के लोग इन बातों को (१७) जानना आरम्भ करेंगे—तब उनके लिए यह एक (१७) संकेत होगा कि पिता ने उनको जो वचन इस्राएल के घराने वालों के साथ दिया था, वह (१९) पूरा होना आरम्भ हो चुका है।

८. और जब वह दिन आएगा तब (२०) राजा अपने मुंह बन्द कर लेंगे; क्योंकि जो उन्हें बताया नहीं गया था उसे वे देखेंगे, और ऐसी बात

(४१) ३ नफी २१:८. (४२) देखो १०, ३ नफी १५. (४३) देखो ५, १ नफी १५. अध्याय २१. (१) पद्य २, ७ यशा० ६६:१९. (२) देखो ५, १ नफी १५. (३) देखो १. (४) देखो २५, ३ नफी ९. (५) देखो ३, २ नफी २७. (६) देखो १५, ३ नफी २०. (७) देखो २६, ३ नफी २०. (८) देखो २:२ नफी ३०. (९) १ नफी १३:१७-१९, देखो ६, २ नफी १०. (१०) देखो २, २ नफी ३०. (११) देखो १०, ३ नफी १५. (१२) देखो २, २ नफी ३०. (१३) देखो ७ और ८, नफी १२. (१४) देखो ९, १ नफी १४. (१५) देखो २१, २ नफी ९. (१६) देखो २४, ३ नफी १६. (१७) ३ नफी १६:१०-१३. (१८) देखो १. (१९) पद्य २६-२९. (२०) ३ नफी २०:४५.

उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी।

९. क्योंकि उस दिन मेरे लिए पिता एक काम करेगा जो कि उनमें (२१) एक महान और आश्चर्यजनक काम होगा; और उनमें ऐसे भी लोग होंगे जो कि एक मनुष्य के बतलाने पर भी विश्वास नहीं करेंगे।

१०. लेकिन सुनो, मेरे (२२) सेवक का जीवन मेरे हाथ में होगा; इसलिए यद्यपि उनके कारण उसकी आकृति (२३) विकृत होगी, फिर भी वे उसे हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। फिर भी मैं उसे स्वस्थ कर दूंगा, क्योंकि मैं उन्हें यह दिखाऊंगा कि मेरा विवेक (२४) शैतान की चतुराई से बढ़कर है।

११. इसलिए ऐसा होगा कि जो भी कोई मुझ यीशु मसीह के शब्दों पर विश्वास नहीं करेगा, तब पिता (२५) उनको अन्य जातियों के पास लाएगा, और उन्हें बल देगा जिससे वे उन दूसरी जाति वालों में लाए जाएंगे; यह उसी प्रकार होगा जैसे कि (२६) मूसा ने कहा था : और उन्हें मेरे वचन दिए लोगों से अलग कर दिया जाएगा।

१२. तब (२७) मेरे लोग जो कि याकूब के अवशेष वंश के लोग होंगे, वे अन्य जातियों में होंगे; हां, वे उसी प्रकार उनके मध्य में रहेंगे जिस प्रकार वन के पशुओं के मध्य में सिंह रहता है और जिस प्रकार एक तरुण सिंह अगर भेड़ों के झुण्ड में से होकर गुजरा तो उन्हें रौंदता और चीरता-फाड़ता हुआ गुजरेगा और उनकी रक्षा कोई भी न कर सकेगा।

१३. उनके हाथ उनके शत्रुओं पर उठेंगे और उनके सभी शत्रु नष्ट कर दिए जाएंगे।

१४. हां, अगर अन्य जातियों ने पश्चात्ताप नहीं किया, तब संताप पड़े उन पर; क्योंकि पिता का कहना है कि उस दिन तुम्हारे मध्य से मैं तुम्हारे घोड़ों को अलग कर दूंगा और तुम्हारे रथों को नष्ट कर दूंगा।

१५. और मैं तुम्हारे देश के नगरों और सभी दृढ़ गढ़ों को धराशाई कर दूंगा।

१६. और मैं तुम्हारे देश से जादूगरी को मिटा दूंगा, और तुममें कोई भी ज्योतिषी नहीं रहेगा।

१७. तुम्हारी बनाई मूर्तियों को, और तुम्हारी खड़ी मूर्तियों को तुम्हारे मध्य से मिटा दूंगा और तुम अपने हाथों से बनाई गई चीजों की उपासना नहीं करोगे।

१८. तुम्हारे मध्य में से मैं तुम्हारी वाटिकाओं को उखाड़ डालूंगा; और उसी तरह तुम्हारे नगरों को भी नष्ट कर दूंगा।

१९. और ऐसा होगा कि (२८) सभी असत्य बातें, विश्वास घातें, द्वेष, संघर्ष, अनुचित पूजापाठ और व्यभिचार का अन्त हो जाएगा।

२०. क्योंकि पिता कहता है कि हे इस्राएल के घरानेवालों, ऐसा होगा कि उस दिन जो भी पश्चात्ताप नहीं करेंगे और मेरे प्रिए पुत्र के पास नहीं आएंगे, (२९) उन्हें मैं अपने लोगों में से अलग कर दूंगा।

२१. और उनपर मैं अपना कोपमय (३०) बदला उसी तरह उतारूंगा जिस प्रकार नास्तिकों पर उतारा जाता है और जिसे उन्होंने कभी भी सुना भी न होगा।

२२. परन्तु अगर उन्होंने पश्चात्ताप किया और मेरी बातों पर ध्यान दिया, और अपने हृदयों को कठोर नहीं किया, तब मैं (३१) अपने गिरजे की स्थापना उनमें करूंगा और वे मेरे (३२) दिए गए वचन के अर्न्तगत आ जाएंगे और (३३) उनकी गिनती याकूब के अवशेष वंशवालों में होगी, जिनको मैंने (३४) इस देश को पैतृक देश स्वरूप दिया है।

२३. और वे लोग याकूब के अवशेष वंश के मेरे लोगों को, और इस्राएल के घराने के जितने भी लोग यहां आएंगे, उन सभी की (३५) सहायता

(२१) देखो ९, २ नफी १५. (२२) पद्य ११, ३ नफी २०:४३, ४५. (२३) ३ नफी २०:४४, सि० शर्त० १०:४३. (२५) देखो ५:२, नफी ३. (२६) देखो २३, ३ नफी २०. (२७) देखो १५, ३ नफी २०. (२८) पद्य ११, २०, २१, ३ नफी २९:४, ९. अध्याय ३०. मार० ८:२१, ४१. (२९) देखो २३, ३ नफी २०. (३०) देखो २८. (३१) १ नफी १४. १२, १४. (३२) देखो १०, ३ नफी १५. (३३) देखो २४, ३ नफी १६. (३४) देखो १५, ३ नफी १५. (३५) ए० १३:१०. ईस्वी ३४

करेंगे, जिससे कि वे एक नगर बसाएंगे जो कि (३६) नया यरूशलेम कहलाएगा।

२४. और तब (३७) वे मेरे उन लोगों को (३८) नए यरूशलेम में एकत्रित करने में सहयोग देंगे, जो कि सारी धरती के ऊपर बिखरे हुए हैं।

२५. और तब स्वर्ग की (३९) शक्ति उनके मध्य उतरेगी; और (४०) मैं भी उनके मध्य में रहूंगा।

२६. और (४१) जब इन लोगों के अवशेष वंश में इस इंजील का प्रचार किया जाएगा, तब उस दिन पिता का काम आरम्भ होगा। मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरे सभी बिखरे हुए लोगों में पिता का काम उस दिन आरम्भ होगा, (४२) यहां तक कि उनमें भी जिन शाखाओं को पिता ने यरूशलेम से ले गया था और जो खो गए हैं।

२७. हां, मेरे सभी बिखरे हुए लोगों में काम आरम्भ होगा और रास्ता पिता तैयार करेगा, जिससे कि वे मेरे पास आएंगे और मेरे नाम पर पिता को पुकारेंगे।

२८. और रास्ता तैयार करने में पिता सारी जातियों में होगा जिससे कि (४३) उसके लोगों को उनके पैतृक देश में एकत्रित किया जा सके।

२९. और वे सभी राष्ट्रों से निकलेंगे; (४४) परन्तु वे शीघ्रता से नहीं निकलेंगे, और न ही उन्हें भागना पड़ेगा, क्योंकि प्रभु उनके आगे आगे चलेगा और पीछे से भी उनकी रक्षा करता चलेगा; यह पिता कहता है।

अध्याय २२

रक्षक द्वारा यशायाह की भविष्यवाणी से उदाहरण देना—यशायाह ५४ से तुलना करो।

१. और तब वह होगा जो कि लिखा है: हे (१) बांझ, तू जो सन्तान नहीं जनी, जयजयकार कर; तू जिसे जनन पीड़ा नहीं हुई; ऊंची आवाज से आनन्द गायन गा, क्योंकि (२) परित्यक्ता की सन्तान सुहागिन की सन्तानों से अधिक होंगी, यह प्रभु का कहना है।

२. (३) अपने तम्बू के स्थान को और बड़ा कर और अपने निवास-स्थान के पर्दों को फैला; अपने डोर को मत बचा, परन्तु उसे और लम्बा कर और खूंटों को दृढ़ कर।

३. क्योंकि तेरा बिस्तार दाहिने और बाएं होगा, और तेरा वंश अन्य जातियों का अधिकारी होगा और उजड़े हुए नगरों को फिर से बसाएगा।

४. भयभीत मत हो, क्योंकि तुझे लज्जित होना नहीं पड़ेगा; मत घबड़ा, क्योंकि तुझे लज्जित नहीं किया जाएगा; क्योंकि तू अपनी तरुणाई को लज्जा और तिरस्कार को भूल जाएगी और अपने विधवापन के अपमान का तुझे स्मरण भी नहीं रहेगा।

५. क्योंकि तेरा रचयिता तेरा पति है, उसका नाम सर्वशक्तिमान प्रभु है; और इस्राएल का पवित्र तुझे मुक्त करने वाला है वह सारी पृथ्वी का भी परमेश्वर कहलाएगा।

६. क्योंकि प्रभु ने (४) तुझे इस तरह पुकारा है, मानो तू परित्यक्त, मन की दुखिया और जवानी की त्यागी हुई स्त्री हो, यह तेरे परमेश्वर का वचन है।

७. क्षण भर ही के लिए मैंने तुझे छोड़ दिया था, परन्तु अब बड़ी दया करके मैं फिर तुझे (५) रख लूंगा।

८. तुझे मुक्त करने वाले प्रभु का कहना है कि थोड़े से क्रोध में होकर पल भर के लिए मैंने तुझ से अपना मुंह छुपा लिया था, परन्तु अब अनन्त करुणा से मैं तुझ पर दया करूंगा।

९. यह मेरे लिए नूह के समय के जलप्रलय के समान है; क्योंकि जैसे मैंने शपथ ली थी कि नूह के समय जैसी जलप्रलय से पृथ्वी फिर न डूबेगी, वैसे ही मैंने यह भी शपथ खाई है कि मैं फिर कभी तुझ पर क्रोध न करूंगा।

१०. चाहे (६) पर्वत हट जाए और पहाड़ियां खिसक जाएं परन्तु तुझ पर से मेरी करुणा कभी

(३६) पद्य २४, २५. ३ नफी २०:२२. ए० १३:१-१२. (३७) पद्य ६. (३८) देखो ३६. (३९) ३ नफी २०:२२. (४०) ३ नफी २०:२२. (४१) देखो २, २ नफी ३०. (४२) देखो १६, ३ नफी १५. (४३) देखो ५, १ नफी १५. (४४) ३ नफी २०:४२, यशा० ५२:११-१५. अध्याय २२. (१) सप्नयाह ३:१४. (२) यशा० ४९:२१. (३) यशा० ४९:१९, २०. (४) यशा० ६२:४. (५) देखो ५, १ नफी १५. (६) इला० १२:८-१२, यशा० ४०:४, ५.

न हटेगी और न ही मैंने अपने लोगों को जो (७) वचन दिया था वही हटेगा, तुझ पर जो प्रभु दया करता है, उसका यह कहना है।

११. हे दुख की मारी, तू जो (८) आंधी की सताई हुई है,और जिसको शान्ति नहीं मिली (९) मैं तेरे पत्थरों को सुन्दर रंग से रंग कर बैठाऊंगा, और तेरी नींव नीलमणि से डालूंगा।

१२. और मैं तेरी खिड़कियों को सुलेमानी पत्थरों से, तेरे फाटकों को मणिक रत्नों से और तेरे किनारों को मनोहर पत्थरों से बनाऊंगा।

१३. और तेरे (१०) सब बच्चे प्रभु के द्वारा शिक्षित किए हुए होंगे, और उन्हें बड़ी शान्ति प्राप्त होगी।

१४. तुझे धार्मिकता में स्थापित किया जाएगा: तेरी स्थापना धार्मिकता में होगी : तू अत्याचारों से बहुत दूर रहेगी, क्योंकि तू डरेगी नहीं, और न ही तू भयभीत होगी क्योंकि भय के कारण तेरे पास न आएंगे।

१५. सुनो, वे तेरे (११) विरुद्ध एकत्रित होंगे, परन्तु मेरी ओर से नहीं; जितने लोग तेरे विरुद्ध एकत्रित होंगे, वे तेरे कारण गिरेंगे।

१६. सुन, मैंने एक लोहार को बनाया है जो कोयले की आग को फूंक कर इसके लिए हथियार बनाता है। और मैंने विनाश करने के लिए एक संहारक, एक उजाड़ कर नाश करने वाले को भी बनाया है।

१७. तेरे विरुद्ध जितने हथियार बनाए जाएंगे, वे सब व्यर्थ होंगे; और जितने लोगों की वाणी तेरे विरुद्ध अभियोग लगाएंगी उन सबको तू परास्त करोगी प्रभु के दासों का यही पैतृक अधिकार होगा, और वे मेरे ही कारण धर्मी ठहरेंगे, प्रभु की यही वाणी है।

अध्याय २३

रक्षक द्वारा नफायटी अभिलेखों में भूल से छूटी हुई बातों को लिखने की आज्ञा देना—लमनायटी सामुएल की भविष्यवाणी का सम्मिलित किया जाना।

१. और अब, सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि इन बातों को ढूंढना चाहिए; हां, मैं तुम्हें यह आज्ञा देता हूं कि तुम इन बातों को परिश्रम के साथ ढूंढो; क्योंकि यशायाह के शब्द महान हैं।

२. क्योंकि निश्चय ही उसने मेरे लोगों के सम्बन्ध में, जो कि इस्राएल के घराने के सभी विषयों पर बातें कही थीं, इसलिए यह भी आवश्यक था कि वह अन्य जाति वाले लोगों से भी बातें करता।

३. और जो कुछ उसने कहा था उसी प्रकार हुआ और भविष्य में भी (१) उसी के कहे अनुसार ही होगा।

४. इसलिए तुम मेरी बातों पर ध्यान दो; मैंने जो कुछ कहा उसे लिख लो; और समयानुसार और पिता की इच्छा से (२) ये सब बातें अन्य जातियों के पास आएगी।

५. और जो भी कोई मेरी बातों को मानेगा (३) और बपतिस्मा लेगा, वही बचा लिया जाएगा। तुम भविष्यवक्ताओं की बातों में ढूंढो, क्योंकि बहुतों ने इन बातों की साक्षी दी है।

६. जब यीशु ने इन बातों को कह लिया और जो शास्त्र उनको प्राप्त थे उनकी व्याख्या करके उन्हें समझाने के पश्चात् उसने फिर उनसे कहा : सुनो, मैं चाहता हूं कि तुम दूसरे शास्त्रों को भी लिखो जो तुम्हारे पास नहीं है।

७. और ऐसा हुआ कि उसने (४) नफी से कहा : उस अभिलेख को लाओ जो तुम्हारे पास है।

८. और जब नफी ने उन अभिलेखों को लाकर उसके सामने रख दिया तब उसने उन्हें देखकर कहा :

९. मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैंने अपने दास लमनायटी सामुएल को आज्ञा दी थी कि वह इन लोगों को इस बात की गवाही दे कि जब पिता मेरे द्वारा अपने नाम को गौरवान्वित करेगा तब (५) अनेक मरे हुए सन्त जीवित हो उठेंगे और वे बहुतों को दिखाई देंगे और बहुतों को उपदेश देंगे। और उसने उनसे कहा: क्या यह सत्य नहीं?

(७) देखो १०, ३ नफी १५. (८) यशा० ४९:२१. (९) प्रकाशित० २२:१८-२१. (१२) यशा० ६०:२१, यिर्म० ३१:३३, ३४. (११) देखो १०, १ नफी २२. अध्याय २३. (१) २ पत० १:१९, २१. (२) देखो ३, २ नफी २७. (३) देखो २१, २ नफी ९. (४) ३ नफी ८:१-२. (५) देखो ७, या० ४, इला० १४:२५, २६. ईस्वी ३४

१०. और उसके शिष्य उसको उत्तर देते हुए बोले : हां, प्रभु, सामुएल ने आपके कहे अनुसार भविष्यवाणी की थी और वे सब पूरी भी हुई।

११. और यीशु ने उनसे कहा : तुमने इस बात को कैसे नहीं लिखा कि बहुत से सन्त जीवित हो उठे और बहुतों के सामने प्रकट होकर उनको उपदेश दिए?

१२. और ऐसा हुआ कि नफी को स्मरण हुआ कि ये बातें लिखी नहीं गई थीं।

१३. और यीशु ने आज्ञा दी कि ये बातें लिखी जाएं; इसलिए उसकी आज्ञानुसार लिखी गईं।

१४. और जब यीशु उनके द्वारा लिखित सभी शास्त्रों की व्याख्या करके उन्हें एक कर दिया तब उसने आज्ञा दी कि उसके द्वारा व्याख्या किए गए विषयों की वे दूसरों को भी शिक्षा दें।

अध्याय २४

नफायटियों को मलाकी की वाणी का दिया जाना—दशांश और भेंट-दान का नियम मलाकी ३ से तुलना करो।

१. ऐसा हुआ कि उसने उन्हें आज्ञा दी कि पिता के द्वारा मलाकी को जो शब्द दिए गए थे, उन्हें वह बताएगा, उसे वे लिख लें। जब वे उन शब्दों को लिख चुके तब उसने उनकी व्याख्या की। उसने जो कुछ उनसे कहा वह यह है : पिता ने मलाकी से इस प्रकार कहा : सुनो, (१) मैं अपने दूत को भेजूंगा, और वह आगे से ही मेरे लिए रास्ता तैयार करेगा, और जिस प्रभु को तुम ढूंढते हो, वह (२) अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा जो कि उस वचन का दूत होगा, जिसमें कि तुम्हें आनन्द मिलता है; सुनो, सर्वशक्तिमान परमात्मा कहता है कि वह अवश्य ही आएगा।

२. लेकिन उसके आने के समय (३) कौन से लोग जीवित रहेंगे, और उसके प्रकट होने के समय कौन खड़ा होगा? क्योंकि वह धातुओं को शुद्ध करने वाले की आग की तरह और धोबी के साबुन की तरह है।

३. वह चांदी को निर्मल और शुद्ध करने वाले के समान बैठेगा; वह (४) लेवी के पुत्रों को शुद्ध करके खरा सोना-चांदी की तरह कर देगा जिससे वे प्रभु को धार्मिकता के साथ भेंट अर्पण करेंगे।

४. तब यहूदा और यरूशलेम की भेंट प्रभु को उसी प्रकार अच्छी लगेगी जैसी कि प्राचीन काल में और पूर्व के वर्षों में अच्छी लगती थी।

५. तब न्याय करने के लिए तुम्हारे (५) निकट मैं आऊंगा; और मैं जादूगरों, व्यभिचारियों, झूठी शपथ लेने वालों, मज़दूरों की मज़दूरी मारने वालो, विधवा और अनाथों पर अत्याचार करने वालों, परदेसियों की अवहेलना करने वालों, और जो मुझसे डरते नहीं उन सभी के विरुद्ध (६) अविलम्ब गवाही दूंगा।

६. क्योंकि मैं प्रभु हूं जो कि बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान, तुम नष्ट नहीं हुए।

७. अपने पूर्वजों के समय से तुम मेरी व्यवस्थाओं से दूर हटते आए हो, और उनका पालन नहीं किया। तुम मेरी ओर लौटो, तब मैं भी तुम्हारी ओर लौटूंगा, सर्वशक्तिमान प्रभु का यह कहना है। परन्तु तुम कहते हो : हम किस बात में तुम्हारी ओर फिरें?

८. क्या कोई मनुष्य परमेश्वर को लूट सकता है? फिर भी तुमने मुझे लूटा है। लेकिन तुम कहते हो कि हमने तुम्हें किस बात में लूटा है। तुमने मुझे दशांश और भेंट दान में लूटा है।

९. तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुमने मुझे लूटा है, यहां तक कि यह सारी जाति शाप-ग्रस्त है।

१०. तुम सारे दशांशों को भण्डार में लाओ (७) जिससे कि मेरे भवन में भोजन सामग्री रहे; और सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश की खिड़कियों को खोल कर तुम्हारे लिए इतनी अधिक आशीष की वर्षा

अध्याय २४. (१) सि० शर्त० ४५:९, यशा० ६६:६, ४०:३-५, ९:११, ५६:२०, २१. (२) यशा० २:२-४, मो० ४:१-४, ३ नफी २०:२२, २१, २५. (३) ३ नफी २५. (४) सि० शर्त० भाग १३, ८४ ३१-३४. (५) यहे० ४३:१, २, ४-७. (६) ३ नफी २५:१, ३, ६ देखो २३, ३ नफी २०. (७) सि० शर्त० भाग ६४:२३. ११९, १२०.

करता हूं कि तुम्हारे पास उनको रखने की जगह भी नहीं रहेगी।

११. और सर्वशक्तिमान प्रभु कहता है कि मैं तुम्हारे लिए नष्ट करने वाले को ऐसा डाटूंगा कि वह तुम्हारी उपज को नाश न करेगा और तुम्हारी अंगूर लताओं के अंगूर बिना पके गिरेंगे नहीं।

१२. और तब सारी जातियां तुमको धन्य मानेंगी, क्योंकि तुम्हारा देश आनन्दमय देश होगा, सर्वशक्तिमान प्रभु का यह कहना है।

१३. प्रभु कहता है कि तुमने मेरे विरुद्ध कठोर बातें कही हैं। परन्तु फिर भी तुम कहते हो कि हमने तुम्हारे विरुद्ध क्या कहा है?

१४. तुमने कहा : परमेश्वर की सेवा करना व्यर्थ है और उसकी व्यवस्थाओं का पालन करने से हमें क्या मिला, और सर्वशक्तिमान प्रभु के आगे शोकाकुल होकर चलने से क्या लाभ हुआ?

१५. और अब हम अभिमानियों को प्रसन्न कहते हैं; हां, जो दुराचारी हैं, वे बन गए हैं; और हां, जो परमेश्वर को लालच देते हैं, वे बच भी गए हैं।

१६. तब प्रभु से भय करने वाले (८) आपस में बातचीत करते थे और प्रभु उनकी बातों को ध्यान देकर सुनता था; और जो प्रभु का भय खाते थे और उसके नाम का आदर करते थे, उनकी याद में उसके सामने (९) एक पुस्तक लिखी गई।

१७. और सर्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है कि जिस दिन मैं (१०) अपने आभूषणों को बनाऊंगा उस दिन वे मेरे होंगे और मैं उनको उसी तरह बचा लूंगा जैसे कोई मनुष्य अपनी सेवा करने वाले पुत्र की रक्षा करता है।

१८. तब तुम वापस लौट कर धार्मिक और दुष्टों में और परमेश्वर की सेवा करने वालों और उसकी सेवा न करने वालों में अन्तर को जानोगे।

अध्याय २५

मलाकी की वाणी का क्रम—एलियाह और उसका उद्देश्य—प्रभु का महान और भयानक दिन—मलाकी अध्याय ४ से तुलना करो।

१. क्योंकि देखो, वह मिट्टी की तरह (१) जलता हुआ दिन आता है; और सभी अहंकारी और दुराचारी कटे हुए अनाज की खूंटी बन जाएंगे और जो दिन आता है, उसमें वे ऐसे भस्म हो जाएंगे कि न तो उनकी जड़ें ही बचेंगी और न ही उनकी शाखाएं ही शेष रहेंगी।

२. परन्तु तुम्हारे लिए जो (२) मेरे नाम से भय खाते हो, धर्म का पुत्र अपने बाजुओं पर स्वस्थ करने की शक्ति को लेकर आएगा; और तुम उसी प्रकार निकल कर बढ़ोगे जैसे (३) गोशाला के बछड़े बढ़ते हैं।

३. और तुम दुष्टों को पैरों तले रौंदोगे; और जिस दिन मैं यह कहूंगा उस दिन वे तुम्हारे (४) पैरों के तलुवे के नीचे राख बन जाएंगे, यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का वचन है।

४. तुम मेरे दास मूसा की व्यवस्था और जो विधि और नियम मैंने सारे इस्राएलियों के लिए उसको होरेब में दिए थे, उनको स्मरण रखो।

५. सुनो, (५) प्रभु के उस महान और भयानक दिन के आने से पहले मैं (६) भविष्यवक्ता एलियाह को भेजूंगा।

६. और वह माता-पिता के मन को उनकी सन्तानों की ओर सन्तानों को उनके माता-पिता की ओर (७) फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को शाप के द्वारा नाश कर दूं।

अध्याय २६

रक्षक द्वारा सभी बातों की आरम्भ से व्याख्या करना—शिशुओं के मुख से आश्चर्यजनक बातें कहा जाना—शिष्यों के कार्य।

१. और जब यीशु ने इन बातों को कह लिया तब उसने भीड़ को इसकी व्याख्या सुनाई; और उसने सभी छोटी-बड़ी बातों को उन्हें समझाया।

(८) मरो० ६:५, ६. (९) ३ नफी २७:२५, २६. (१०) सि० शर्त० १०:१:३. अध्याय २५ (१) पद्य ३, १ नफी २२:१५, १७, १८, २३; २ नफी २७:२, ३०:१० याकू० ६:३, याशा० २४:६, ६६:१६. (२) ३ नफी २४:१६. (३) १ नफी २२:२४. (४) पद्य १. (५) सि० शर्त० ११०:१३. (६) ३ नफी २५:३. (७) सि० शर्त० १८:१६, १७.

२. और उसने कहा : पिता ने मुझे आज्ञा दी है कि शास्त्र की (१) ये बातें जो तुम्हारे पास नहीं थीं, उन्हें मैं तुम्हें दूं; क्योंकि उन्हें भविष्य की पीढ़ियों को देने में पिता की बुद्धिमानी है।

३. और उसने आरम्भ से लेकर (२) गौरव के साथ अपने आने के समय तक की सभी बातों की व्याख्या उन्हें कह सुनाई—यहां तक कि उन सभी बातों की परिभाषा उसने की जो कि पृथ्वी पर तब तक भविष्य में होगी जब तक कि (३) अणु तीक्ष्ण ज्वाला से गल न जाए और पृथ्वी एक साथ कागज के टुकड़े की तरह लपेट न ली जाए और आकाश और पृथ्वी टल न जाए।

४. यहां तक कि उस महान और अन्तिम दिन तक (४) जबकि सभी लोग, सभी जातियां, सभी देश, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले लोग परमेश्वर के सामने अपने भले-बुरे कर्मों के न्याय के लिए खड़े होंगे।

५. अगर उनके कर्म अच्छे हुए तब उन्हें (५) अनन्त जीवन के लिए पुनर्जीवित किया जाएगा; और जिनके कर्म बुरे हुए तब उनको अधोगति के लिए पुनर्जीवित किया जाएगा और जिनके कर्म समान रहे अर्थात् एक ओर बुरे कर्म भी रहे और दूसरी ओर अच्छे कर्म भी रहे तब उनका निर्णय उस मसीह की दया, न्याय और पवित्रता पर निर्भर रहेगा, जो कि (६) पृथ्वी के आरम्भ से भी और आगे से है।

६. और जिन बातों की शिक्षा यीशु ने लोगों को दी, उनका एक शतांशवां भाग भी इस (७) पुस्तक में नहीं लिखा जा सकता।

७. लेकिन देखो, जिन बातों की शिक्षा उसने लोगों को दी उनका अधिकांश भाग (८) नफी की पटियों में है।

८. मैंने जो इन बातों को लिखा है वह जो शिक्षा लोगों को दी थी, उसका यह अति (९) लघु भाग ही है; और मैंने इसे इस उद्देश्य से लिखा कि जो शब्द यीशु ने कहे हैं उन्हीं के अनुसार इन लोगों के पास (१०) अन्य जातियों के द्वारा पुनः इन्हें लाया जाए।

९. और जब उन्हें यह प्राप्त हो जाएगा, जो कि उनके विश्वास की परीक्षा के लिए आवश्यक है, कि उन्हें यह पहिले प्राप्त हो, और अगर उन्होंने (११) इन बातों पर विश्वास किया, तब उनपर और भी (१२) महान बातें प्रकट की जायेंगी।

१०. और अगर उन्होंने इन बातों पर विश्वास नहीं किया तब उनकी अधोगति के लिए महान बातें उनके पास (१३) जाने से रोक दी जायेंगी।

११. सुनो, मैं (१४) उन सभी बातों को लिखने ही वाला था, जो कि नफी की पटियों पर लिखी हुई हैं; परन्तु प्रभु ने यह कहते हुए मना किया कि मैं अपने लोगों के विश्वास की (१५) परीक्षा लूंगा।

१२. इसलिए मैं, मारमन, जिन बातों को लिखने की आज्ञा प्रभु ने मुझे दी है, उन्हें मैं लिख रहा हूं। और अब मैं, मारमन, अपनी बातों को समाप्त करते हुए उन बातों को लिखूंगा जिनकी आज्ञा मुझे दी गई है।

१३. इस कारण मैं चाहता हूं कि तुम देखो कि प्रभु ने सचमुच में लोगों को तीन दिनों तक शिक्षा दी जिसके पश्चात्ताप उसने उनको कई बार दर्शन दिए। और (१६) रोटी तोड़कर उसे आशीर्वाद दिया और उन्हें खाने को दिया।

१४. और (१७) भीड़ के जिन बच्चों के विषय में कहा जा चुका है उनको उसने उपदेश दिया और उनके मुख को खोल दिया और उन्होंने अपने पिताओं से महान और आश्चर्यजनक बातें कही (१८) यहां तक कि जिन बातों का भेद उसने लोगों पर खोला था उससे भी महान बातों का भेद उन्होंने खोला; और उसी ने उनकी जुबान को वाचाल किया।

१५. और ऐसा हुआ कि लोगों के सामने

अध्या २६. (१) ३ नफी २४, २५. (२) देखो ६, ३ नफी २५. (३) मार० ५:२३, २ पत० १:१०, १२ यशा० २४:१-४, १७-२०, प्रका० २०:११. (४) मू० १६:१, २, १० अल० १२:१२, ४०:२१; ३ नफी २७:१४-१५ मार० ९:१३, १४. (५) मू० १६:११, देखो ४, २ नफी २. (६) देखो ४, मू० ४. (७) मा० को वा० ५ इला० ३:१४, ३ नफी ५:८, ए० १५:३३. (८) देखो ६, १ नफी १. (९) देखो ७. (१०) देखो २, २ नफी ३०. (११) देखो ९. (१२) सि० शर्त० १२८:१८, ए० ४:६-८, १३. (१३) ए० ४:८-१०. (१४) पद्य ७. (१५) ए० ११:६. (१६) देखो २, ३ नफी १८. (१७) देखो ७, ३ नफी १७. (१८) देखो २३, ३ नफी १९.

दुबारा प्रकट होने और उनके सभी रोगियों और लंगड़ों को (१६) ठीक करने, अन्धों की आखें खोलने, बहिरों को सुनने की शक्ति देने और अन्य सभी प्रकार के रोगों को ठीक करने और एक मरे हुए व्यक्ति को जिला देने और लोगों को अपनी शक्ति दिखाने के पश्चात् वह स्वर्ग में पिता के पास चला गया।

१६. देखो, दूसरे दिन ऐसा हुआ कि भीड़ फिर से एकत्रित हुई और उन लोगों ने बच्चों को देखा और उनकी बातों को सुना भी; यहां तक कि (२०) नन्हें शिशुओं ने भी अपने मुखों को खोल कर विस्मयजनक बातें कहीं; और जिन बातों को उन्होंने कहा, उन्हें किसी भी व्यक्ति के द्वारा लिखे जाने की मनाही की गई।

१७. और ऐसा हुआ कि उस समय से यीशु ने जिन (२१) शिष्यों को चुना था, वे उन लोगों को उपदेश और (२२) बपतिस्मा देने लगे जो उनके पास आते थे; और जितने लोग यीशु के नाम पर बपतिस्मा लेते थे, वे सब (२३) पवित्रात्मा से भर उठते थे।

१८. और उनमें से बहुतों ने ऐसी विस्मयकारी बातों को सुना जिन्हें (२४) लिखना नियमानुकूल नहीं होगा।

१९. और वे एक दूसरे को भी शिक्षा और उपदेश देते; और उनमें (२५) सभी बातों की समानता थी और एक-दूसरे के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करते थे।

२०. उन्होंने सभी बातों में यीशु के कहे अनुसार ही काम किया।

२१. और जिन लोगों ने यीशु के नाम पर बपतिस्मा लिया, उन्हें (२७) यीशु के गिरजे का कहा गया।

अध्याय २७

यीशु द्वारा अपने गिरजे का नाम दिया जाना—पिता द्वारा ही सभी बातों का लिखा जाना—जो कुछ पुस्तकों में लिखा गया उन्हीं के अनुसार लोगों का न्याय होगा।

१. जब यीशु के (१) शिष्य यात्रा करते हुए जिन बातों को उन्होंने देखा और सुना था, उनका प्रचार करते हुए लोगों को यीशु के नाम पर बपतिस्मा देते हुए एक स्थान पर एकत्रित हुए तब वे एक साथ मिलकर महान (२) प्रार्थना और (३) उपवास करने लगे।

२. और यीशु उनके समक्ष फिर से प्रकट हुआ क्योंकि वे पिता से उसी के नाम पर प्रार्थना कर रहे थे; और यीशु आकर उनके मध्य में खड़ा हुआ और बोला: तुम मुझसे क्या चाहते हो?

३. और उन्होंने उससे कहा: हे प्रभु, हम चाहते हैं कि आप बतलावें कि हम इस गिरजे को किस नाम से पुकारें; क्योंकि इस विषय पर लोगों में वाद-विवाद हो रहा है।

४. और प्रभु ने उनसे कहा: मैं तुमसे सचमुच में पूछता हूं कि इस पर लोग असंतोष प्रकट करते हुए क्यों वाद-विवाद कर रहे हैं?

५. क्या उन्होंने उस शास्त्र को नहीं पढ़ा है जो कहता है कि तुम्हें (४) मसीह का नाम लेना चाहिए जो कि मेरा नाम है? और अन्तिम दिन तुम इसी नाम से पुकारे जाओगे।

६. और जो मेरा नाम अपने ऊपर लेगा और अन्त तक सहनशील बना रहेगा, उसे अन्तिम दिन बचा लिया जाएगा।

७. इसलिए तुम जो कुछ भी करो, उसे मेरे नाम पर करो; इसलिए गिरजे को भी मेरे नाम से पुकारो, और मेरे नाम पर पिता को पुकारो जिससे कि वह मेरे कारण गिरजे को आशीर्वाद दे।

८. मेरे नाम से पुकारे जाने के बिना वह मेरा गिरजा कैसे हो सकता है? अगर कोई गिरजा मूसा के नाम से पुकारा जाता है तब वह मूसा का गिरजा होगा; या अगर वह किसी व्यक्ति के नाम से पुकारा जाता है तब वह उस व्यक्ति का गिरजा होगा; परन्तु अगर वह मेरे नाम से बुलाया जाता है और अगर वह मेरे इंजील पर बना होगा, तब वह मेरा गिरजा होगा।

(१९) ३ नफी १७:७-१०. (२०) देखो २३, ३ नफी १६. (२१) देखो ३, ३ नफी १२. (२२) ४ नफी १, देखो २१, २ नफी ६. (२३) देखो २५, ३ नफी ६. (२४) देखो २३, ३ नफी १६. (२५) ४ नफी २, ३, २५, २६. (२६) देखो २१, २ नफी ६. (२७) देखो ४, मू० २६. अध्याय २७. (१) देखो ३, ३ नफी १२. (२) देखो ५, २ नफी ३२. (३) देखो २०, मू० २७. (४) पद्य ६:१०; देखो ५, मू० ५.

९. मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुम मेरे इंजील पर बने हो; इसलिए तुम जो कुछ करो वह मेरे ही नाम पर करो; इसलिए अगर तुम मेरे नाम पर पिता को गिरजा के लिए पुकारोगे तब वह तुम्हारी सुनेगा।

१०. अगर गिरजा मेरे इंजील पर बना होगा तब पिता भी अपने कामों को उसमें दिखाएगा।

११. परन्तु अगर वह मेरे इंजील पर न बना होगा और लोगों के अपने विचारों के अनुकूल होगा, या शैतान के कर्मों के अनुसार बना होगा, तब मैं तुम से सच कहता हूं कि उससे थोड़े समय के लिए ही आनन्द प्राप्त होगा और तब अन्त आएगा और उन्हें (५) काटकर आग में डाल दिया जाएगा जहां से वापस लौटा नहीं जा सकता।

१२. क्योंकि उनके कर्म उनके साथ होता है और वे अपने कर्मों के कारण ही काटे जाते हैं; इसलिए मैंने जो कुछ कहा है उसको स्मरण रखो।

१३. देखो, मैंने तुम्हें अपने इंजील को दिया है और जो इंजील मैंने तुम्हें दिया है वह है—कि मैं इस पृथ्वी पर अपने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए आया था, क्योंकि पिता ने मुझको भेजा था।

१४. और पिता ने मुझे इसलिए भेजा कि मैं क्रूश पर उठाया जाऊं; और उसके पश्चात् मैं (६) क्रूश पर इसलिए उठाया गया कि जिससे सब मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित कर सकूं, और जिस तरह मैं लोगों के द्वारा ऊपर उठाया गया, उसी तरह (७) अपने भले या बुरे कर्मो का न्याय पाने के लिए मनुष्य पिता द्वारा मेरे सामने खड़े करने के लिए ऊपर उठाए जाएंगे।

१५. इसी कारण मैं ऊपर उठाया गया; इसलिए पिता की शक्ति के अनुसार मैं सभी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करूंगा, जिससे कि उनके कर्मों के अनुसार उनका न्याय हो।

१६. और ऐसा हुआ कि जो भी कोई पश्चात्ताप करेगा और मेरे नाम पर (८) बपतिस्मा लेगा वह परिपूर्ण होगा; और अगर वह (९) अन्त तक सहनशील बना रहेगा; तब जिस दिन मैं जगत का न्याय करने के लिए खड़ा होऊंगा, उस दिन मैं पिता के समक्ष उसे निर्दोष मानूंगा।

१७. और जो अन्त तक सहनशील बना न रहेगा वह वही होगा जिसे (१०) काट कर अग्नि में डाल दिया जाएगा जहां से पिता के न्याय के कारण लौटा नहीं जा सकता।

१८. और यही वह वाणी है जिसे उसने मानव वंश को दिया है इसलिए उसने जो कुछ कहा उसे पूरा करता है, वह असत्य नहीं कहता, परन्तु वह अपने कहे सभी शब्दों को पूरा करता है।

१९. और उसके राज्य में (११) कोई भी अशुद्ध वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती इसलिए अपने विश्वास से, अपने सभी पापों पर पश्चात्ताप करने से, और (१२) अन्त तक सहनशील बन कर अपने सभी वस्त्रों को मेरे रक्त में धोए बिना कोई भी उसके विश्राम-गृह में प्रवेश नहीं कर सकता।

२०. अब यह आज्ञा है : संसार के सभी कोनों में तुम पश्चात्ताप करो, और मेरे पास आओ, और मेरे नाम पर (१३) बपतिस्मा लो जिससे कि तुम पवित्रात्मा के स्वागत (१४) के लिए पवित्र हो जाओ, जिससे कि अन्तिम दिन को तुम बिना कलंक के मेरे सामने खड़े हो सको।

२१. मैं तुमसे सच-सच कहता हूं कि यही मेरा इंजील है; और तुम जानते हो कि मेरे गिरजा में तुम्हें क्या करना है; क्योंकि तुमने मुझे जो काम करते देखा वही तुम भी करना; और उन कामों को जिस तरह मैंने किया उसी प्रकार से तुम भी करना।

२२. इस कारण अगर तुमने उन कामों को किया, तब तुम धन्य होगे, क्योंकि अन्तिम दिन को तुम (१५) ऊपर उठा लिए जाओगे।

२३. जिन बातों को लिखना (१६) मना

(५) देखो ११, १ नफी १५. (६) पद्य १५, १ नफी ११:१०, ३ नफी २८:६. (७) देखो ६. (८) देखो २१, २ नफी ९. (९) १ नफी १३:३७, देखो ८, २ नफी ३१. (१०) देखो ११, १ नफी १५. (११) अल० ११:३७, देखो १८, अल० ७. (१२) देखो ९. (१३) देखो २१, २ नफी ९. (१४) देखो २५, ३ नफी ९. (१५) देखो १६, मू० २३. (१६) ३ नफी २६:१६, १८.

किया गया है उनको छोड़ कर जो तुमने देखा और सुना है उन्हें लिख लेना।

२४. इन लोगों के कार्यों को भी उसी तरह लिख लो जैसे कि अतीत की बातों को अंकित किया गया है।

२५. क्योंकि सुनो, जो पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं और जो लिखी जाएंगी (१७) उन्हीं से इन लोगों का (१८) न्याय होगा, क्योंकि उन्हीं के द्वारा उनके कामों को लोग जान सकेंगे।

२६. क्योंकि देखो, सभी बातें (१९) पिता के द्वारा लिखी गई हैं; इस कारण जो (२०) पुस्तकें लिखी जाएंगी उन्हीं से जगत का न्याय होगा।

२७. और तुम यह समझो कि जो न्याय-पद्धति मैं तुम्हें दूंगा जो कि उचित होंगी, उसी के अनुसार (२१) तुम इन लोगों के न्यायकर्ता होगे। इसलिए तुम्हें किस तरह का व्यक्ति होना चाहिए? मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरी तरह।

२८. और अब मैं पिता के पास जाता हूं और मैं सच कहता हूं कि मेरे नाम पर तुम जो कुछ पिता से मांगोगे, वह तुम्हें मिलेगा।

२९. इसलिए (२२) मांगो, तुम्हें मिलेगा; खटखटाओ, तुम्हारे लिए द्वार खुलेगा; क्योंकि जो मांगता है वह पाता है; और जो खटखटाता है उसके लिए द्वार खोला जाता है।

३०. और अब सुनो, तुम्हारे और इस पीढ़ी के लोगों के कारण मुझे महान आनन्द है, यहां तक कि मैं आनन्द से परिपूर्ण हूं; और तुम्हारे और इस पीढ़ी के कारण पिता और सब पवित्र स्वर्गदूत भी आनन्द मना रहे हैं; क्योंकि इनमें से कोई भी खोया नहीं।

३१. सुनो, मैं चाहता हूं कि तुम समझो; मेरा तात्पर्य उन लोगों से है जो कि इस पीढ़ी के जीवित लोग हैं; और उनमें से कोई भी खोया नहीं, और उनमें मेरा आनन्द परिपूर्ण है।

३२. लेकिन सुनो, इस पीढ़ी से (२३) चौथी पीढ़ी के कारण मुझे दुःख हो रहा है, क्योंकि वे उस (२४) अनन्त मृत्यु के पुत्र की तरह बन्दी बना लिए जाएंगे; और वे मुझे सोने-चांदी के लिए बेच देंगे जो कि (२५) कीड़ों के द्वारा भ्रष्ट किए जाते हैं और चोर तिजोरी तोड़ कर चुरा सकते हैं। उस दिन मैं उनके पास आऊंगा और उनके (२६) कर्मों को मैं उन्हीं के सिर के ऊपर लाद दूंगा।

३३. और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने यह कहना समाप्त किया तब उसने अपने शिष्यों से कहा: (२७) तुम सकरे द्वार से प्रवेश करो; क्योंकि द्वार सकरा है और जीवन तक ले जाने वाली राह पतली है और उसको पाने वाले लोग बहुत कम हैं; परन्तु मृत्यु तक ले जाने वाला द्वार चौड़ा है और मार्ग भी चौड़ा है, और वहां तक यात्रा करने वाले लोग तब तक बहुत से होंगे जब तक कि रात न हो जाएगी जबकि कोई भी कार्य नहीं कर सकेगा।

अध्याय २८

बारह शिष्यों में से हर एक की अभिलाषा का पूरा होना—गौरव के साथ प्रभु के आने के समय तक तीन को पृथ्वी पर रहने के लिए चुना जाना—तीनों को आश्चर्यजनक जानकारी प्राप्त करना—उनको मृत्यु और विपत्तियों से अमर किया जाना।

१. और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन शब्दों को कह लिया तब उसने अपने शिष्यों से एक-एक कर उनसे कहा: मेरे पिता के पास चले जाने के पश्चात् तुम मुझसे क्या चाहते हो?

२. और तीन शिष्यों को छोड़कर बाकी के शिष्यों ने उससे कहा: हमारी इच्छा है कि हमारी मनुष्य की आयु पूरी हो जाने के पश्चात् और जिस काम में आपने हमें लगाया है वह समाप्त हो जाए, तब हम शीघ्रता के साथ आपके पास आपके राज्य में आएं।

३. और उसने उनसे कहा: तुम धन्य हो,

(१७) पद्य २६, देखो २, नफी २७. (१८) देखो १०, २ नफी २९. (१९) ३ नफी २४:१९. (२०) पद्य २५, देखो ३, (२१) १ नफी १२:९, १० मार० ३:१९. (२२) ३ नफी १४:७, ८. (२३) देखो ४, १ नफी १२. (२४) ३ नफी २९:७. (२५) ३ नफी १३:१९-२१. (२६) मार० ५. (२७) देखो ३ नफी १४:१३, १४ देखो २७, २ नफी ९. ईस्वी ३४-३५

क्योंकि तुमने मुझसे इस बात की इच्छा की; इसलिए जब तुम (१) बहत्तर वर्ष के होगे, तब तुम मेरे पास मेरे राज्य में आओगे; और मेरे साथ तुम विश्राम पाओगे।

४. जब वह उनसे बोल चुका तब वह अन्य तीन शिष्यों की ओर घूमा और उनसे बोला : जब मैं पिता के पास चला जाऊंगा तब तुम मुझसे क्या चाहते हो?

५. तब वे तीनों अपने हृदयों में दुखित हुए क्योंकि उनकी जो इच्छा थी उसे उससे कहने का उन्हें साहस नहीं हो रहा था।

६. और उसने उनसे कहा : देखो, मैं तुम्हारे विचारों को जानता हूं। तुम वही चाहते हो जो कि मेरे प्रचार काल में और यहूदियों द्वारा मुझे (२) ऊपर उठाए जाने से पूर्व मेरे साथ रहने वाले मेरे प्रिए (३) यूहन्ना ने चाहा था।

७. इसलिए तुम अधिक धन्य हो क्योंकि तुम्हें मृत्यु का (४) कभी अनुभव नहीं होगा; लेकिन पिता द्वारा मानव समाज के लिए जो कुछ किया जाएगा, वह सब तुम देख सकोगे, यहां तक कि तुम सब कुछ तब तक देखते रहोगे जब तक कि पिता की सारी इच्छायें पूरी नहीं हो जातीं और जबकि मैं स्वर्ग की शक्ति के साथ (५) अपने गौरव-गरिमा के साथ आऊंगा।

८. और तुम कभी भी (६) मृत्यु की पीड़ा नहीं सहोगे; लेकिन जब मैं अपने गौरव के साथ आऊंगा तब पलक भांजते ही नश्वरता से तुमको अमरता में (७) बदल दिया जाएगा; और तब तुमको मेरे पिता के राज्य से आशीर्वाद प्राप्त होगा।

९. और मानव शरीर में रहते हुए संसार के पापों के लिए पीड़ा (८) को छोड़कर तुम्हें और (९) पीड़ा नहीं होगी; और यह सब मैं तुम्हारी इच्छा के कारण करूंगा, क्योंकि तुमने यह इच्छा की थी कि तुम लोगों की आत्माओं को मेरे पास तब तक लाते रहो जब तक कि यह धरती रहती है।

१०. इस कारण तुम्हें पूर्ण आनन्द प्राप्त होगा; और तुम मेरे पिता के राज्य में भी बैठोगे; हां, तुम्हारा आनन्द उसी तरह परिपूर्ण होगा जिस तरह पिता ने मुझे पूर्ण आनन्द दिया है; और तुम मेरी तरह होगे और मैं पिता की तरह ही हूं; और मैं और पिता (१०) एक ही हैं।

११. और पवित्रात्मा मेरी और पिता की साक्षी है; और पिता मेरे ही कारण मानव वंश को पवित्रात्मा (११) देता है।

१२. और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन शब्दों को कह लिया तब जिन तीन को पृथ्वी पर रहना था, उनको छोड़कर बाकी सभी को अपनी उंगली से स्पर्श किया और तब वह बिदा हो गया।

१३. और सुनो, स्वर्ग खोल दिए गए और (१२) उनको स्वर्ग में ले जाया गया, और उन्होंने अवर्णनीय बातें देखीं और सुनीं।

१४. और उन्होंने जो कुछ देखा और सुना, उनके विषय में चर्चा करना (१३) मना था और न ही उनके विषय में बातें करने की सामर्थ्य ही उनको प्राप्त थी।

१५. वे यह नहीं जान सके कि वे शरीर में थे या बिना शरीर के; क्योंकि उन्हें प्रतीत हुआ कि उनकी काया पलटी हुई है और हाड-मांस के शरीर से वे अमरत्व को प्राप्त हो गए हैं जिससे कि वे परमेश्वर के कामों को देख सकते थे।

१६. लेकिन ऐसा हुआ कि उन्होंने फिर से पृथ्वी पर प्रचार किया; परन्तु उन्होंने जो कुछ देखा और सुना था, उनके विषय में उन्होंने कोई प्रचार नहीं किया; क्योंकि स्वर्ग में इसके विषय में उन्हें (१४) आज्ञा मिली थी।

१७. और अब मैं नहीं जानता कि जिस दिन से उनकी काया पलट हुई है उस दिन से वे (१५) पार्थिव शरीरयुक्त हैं या अमर हैं।

१८. लेकिन जो अभिलेख हमें दिया गया है

अध्याय २८. (१) ४ नफी १४. (२) सि० शर्त० ७. (३) देखो ६, ३ नफी २७. (४) पद्य ८, ९, १९-२२ २५, ३७-४०, ४ नफी १४, ३७ मार० ८:१०-१२ ए० १२:१७. (५) ३ नफी २०:२२, २१ २५. (६) देखो ४. (७) पद्य १५, १७, ३६-४०. (८) देखो ४. (९) ४ नफी ४४, मोर० ८:१०. (१०) देखो ११, २ नफी ३१. (११) देखो २५, ३ नफी ३९. (१२) पद्य २, ४-८, १२, ३६, ४ नफी १४, ३७. (१३) देखो २३, ३ नफी १९. (१४) पद्य १४. (१५) पद्य ३६-४०.

उसके अनुसार हम यह जानते हैं कि पृथ्वी पर जाकर उन्होंने सभी लोगों को उपदेश दिया और जिन लोगों ने उनके प्रचार में विश्वास किया, उन्हें गिरजा में उन्होंने सम्मिलित किया; और उन्हें (१६) बपतिस्मा दिया और जितने लोगों ने बपतिस्मा लिया (१७) उन्हें पवित्रात्मा प्राप्त हुई।

१९. और जो लोग गिरजा के नहीं थे उन्होंने उन्हें कारागार में डाल दिया (१८) कारागार में उनको रोका न जा सका क्योंकि वे टुकड़ों-टुकड़ों में टूट गए।

२०. वे धरती के अन्दर तहखानों में बन्द किए गए; लेकिन उन्होंने परमेश्वर की वाणी के द्वारा धरती पर ऐसा प्रहार किए कि वे वहां से भी उसकी शक्ति के द्वारा निकल आए; इसलिए वे उनको बन्द करने के लिए कोई भी पर्याप्त कूप तैयार न कर सके।

२१. और तीन बार उन्हें भट्ठियों में डाला गया परन्तु उन्हें कोई भी हानि न पहुंची।

२२. दो बार उनको हिंसक पशुओं की मांदो में डाला गया; और सुनो, उन्होंने दूध पीते बच्चों के समान उनके साथ खेला परन्तु उन्हें कोई हानि न हुई।

२३. और इसी तरह वे नफी के लोगों में गए और देश के सभी लोगों में मसीह के इंजील का प्रचार किया और लोग मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वासी हुए, और मसीह के गिरजा में सम्मिलित हो गए, और इस तरह (१९) उस पीढ़ी के लोगों ने यीशु की वाणी के अनुसार आशीर्वाद प्राप्त किया।

२४. और अब मैं, मारमन, कुछ समय के लिए इन बातों का कहना स्थगित करता हूं।

२५. सुनो, मैं उनका (२०) नाम लिखने वाला था जिनको कभी मृत्यु का अनुभव नहीं होगा, परन्तु प्रभु ने मना किया; इसलिए मैं उनका नाम नहीं लिखता, क्योंकि जगत से यह छुपाया गया है।

२६. परन्तु सुनो, (२१) मैंने उनको देखा है और उन्होंने मुझे उपदेश भी दिया है।

२७. और सुनो, वे अन्य जातियों में भी जाएंगे परन्तु अन्य जातियाँ उन्हें जानेगी नहीं।

२८. वे यहूदियों में भी रहेंगे और वे भी उन्हें नहीं जानेंगे।

२९. और जब प्रभु अपने विवेक से उचित समझेंगे तब वे इस्राएल की सभी बिखरी हुई शाखाओं को और सभी जातियों, राष्ट्रों, और भिन्न-भिन्न भाषा बोलने वाले लोगों को उपदेश देंगे और उनमें जो प्रभु को संतोष देने की शक्ति विद्यमान है, उसके सहयोग से वे उनमें से बहुतों को यीशु के पास लाएंगे जिससे कि उनकी (२३) इच्छापूर्ण होगी।

३०. और वे प्रभु के दूत की तरह हैं, और उन्होंने अगर यीशु के नाम पर पिता से प्रार्थना की तब जिस व्यक्ति को उन्होंने उचित समझा उसे वे अपने आप को दूत के रूप में दिखा सकेंगे।

३१. इसलिए सभी लोगों को न्याय के लिए मसीह के न्यायासन के सामने खड़े होने वाले महान दिन से पूर्व ही उनके द्वारा (२४) बड़े-बड़े विस्मयजनक काम किए जाएंगे।

३२. हां, न्याय दिन से पूर्व अन्य जातियों में भी उनके द्वारा महान और आश्चर्यजनक काम किए जाएंगे।

३३. और मसीह द्वारा किए गए सभी आश्चर्य-जनक कामों पर तुम्हारे पास (२५) सभी शास्त्र हों तब तुम्हें जानना चाहिए कि मसीह के द्वारा कहे गए शब्दों के अनुसार यह सब कुछ अवश्य ही होगा।

३४. और सन्ताप पड़े उनपर जो कि यीशु की वाणी पर और जिन्हें उसने चुना और उनके पास भेजा उन लोगों की बातों पर (२६) विश्वास नहीं करेंगे; इसलिए वह उन्हें अन्तिम दिन को स्वीकार नहीं करेगा।

३५. उनके लिए यही अच्छा होता कि वे जन्म ही न लेते। क्योंकि क्या तुम सोचते हो कि उस असन्तुष्ट परमेश्वर के न्याय से कोई बच सकता है जो कि यह समझ कर पैरों तले रौंदा

(१६) देखो २१, २ नफी ९. (१७) देखो २५, ३ नफी ९. (१८) ४ नफी ५, ३०:३३ मार० ८:२४. (१९) ३ नफी २७:३०, ३१. (२०) ३ नफी १९:४. (२१) मोर० ८:११. (२२) पद्य ९. (२३) पद्य ३०-३३. (२४) देखो २३. (२५) ३ नफी २६:३-१२. (२६) ए० ४:८-१२.

गया हो कि वैसा करने से मुक्ति मिलेगी ?

३६. और सुनो, जैसा कि मैंने प्रभु द्वारा चुने हुए तीन जनों के विषय में कहा, हां, वे जो (२७) स्वर्गों में ले जाए गए थे, उनके विषय में मैं नहीं जानता था कि वे (२८) इस पार्थिव शरीर से अमरता में पवित्र किए गए थे या नहीं।

३७. लेकिन सुनो, जब से मैंने लिखा, तब से मैंने प्रभु से जांच की और उसने मुझे यह जानकारी दी कि उनके शरीर में परिवर्तन लाना आवश्यक है अन्यथा उनको (२९) मृत्यु का अनुभव करना आवश्यक हो जाएगा।

३८. इस कारण उनके शरीर में परिवर्तन लाया गया जिससे कि उनको मृत्यु का अनुभव न हो और जगत के पापों के कारण पीड़ा और कष्टों को छोड़कर उनको पीड़ा और कष्ट भी (३०) नहीं होगा।

३९. अब यह परिवर्तन उस परिवर्तन के समान नहीं है जो कि अन्तिम दिन को लाया जाएगा; परन्तु उनमें परिवर्तन लाया गया जिससे कि उन पर शैतान का कोई वश नहीं चल सकता जिससे कि वह उनको बहका नहीं सकता; और उनको हाड-मांस के शरीर में पवित्र भी किया गया, वे पवित्र हुए और (३१) धरती की शक्तियां उन्हें रोक नहीं सकती।

४०. और इसी रूप में उन्हें मसीह के न्याय दिन तक रहना है; और उस दिन उनको : (३२) और बड़ा परिवर्तन प्राप्त होगा और फिर कभी भी बाहर न जाने के लिए उनको पिता के राज्य में सदा के लिए परमेश्वर के साथ रहने को स्वीकार किया जाएगा।

अध्याय २९

प्रभु की वाणी और कामों को तिरस्कार करने वालों को मारमन द्वारा चेतावनी।

१. और अब सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि जब प्रभु अपने विवेक से ठीक समझेगा कि ये बातें (१) अन्य जातियों के पास उसके कहे अनुसार आनी चाहिए, तब तुम्हें जानना चाहिए कि पिता ने जो (२) वचन इस्राएल के वंशवालों को उनके पैतृक देश में पुनर्स्थापित करने के लिए दिया था, वह पूरा होना आरम्भ हो चुका है।

२. और तुम्हें जानना चाहिए कि पवित्र भविष्य-वक्ताओं के द्वारा प्रभु की जो वाणियां कही गई हैं, वे सब पूरी होंगी; और तुम्हें यह कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रभु इस्राएल के वंशवालों के पास आने में देर कर रहा है।

३. और तुम्हें अपने हृदयों में यह कल्पना नहीं करनी चाहिए कि जो बातें कही गई हैं वे व्यर्थ हैं, क्योंकि प्रभु अपने उस वचन को स्मरण रखेगा जो कि उसने इस्राएल के घरानेवाले अपने लोगों को दिया था।

४. और ये बातें (३) जब तुम देखो कि तुम्हारे अन्दर आ रही हैं तब उन्हें प्रभु के कामों का तिरस्कार करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि उसने न्याय की तलवार उसके दाहिने हाथ में है; और देखो, उस दिन, अगर तुमने उसके कामों की अवहेलना की तब वह (४) शीघ्र ही उसका प्रतिफल तुम्हें देगा।

५. सन्ताप पड़े उनपर जो प्रभु के कामों का तिरस्कार करते हैं; हां, सन्ताप हो उन पर जो मसीह और उसके कामों को अस्वीकार करेंगे।

६. हां, (५) सन्ताप हो उन पर जो कि प्रभु के दिए दिव्य ज्ञान को अस्वीकार करेंगे और जो कहेंगे कि प्रभु भविष्यवाणी द्वारा, देन द्वारा, मूकों को वाचाल करके, या रोगियों को स्वस्थ करके पवित्रात्मा की शक्ति द्वारा अब चमत्कार नहीं दिखाता।

७. और सन्ताप हो उन पर जो अपने स्वार्थ की दृष्टि से उस दिन कहेंगे कि यीशु मसीह के द्वारा कोई भी चमत्कार का काम नहीं किया जा सकता; क्योंकि जो ऐसा कहेगा वह उस (६) अनन्त मृत्यु पुत्र के समान होगा जिसके लिए मसीह के कहे अनुसार कोई भी दया नहीं थी।

८. तुम्हें और असंतोष और तिरस्कार नहीं

(२७) पद्य १३:१६. (२८) पद्य १७. (२९) देखो ४. (३०) पद्य ६. (३१) पद्य २०. (३२) पद्य ८. (१) देखो ३, २ नफी २७. (२) देखो १०, ३ नफी १५. (३) देखो १०, ३ नफी १५. (४) देखो २८, ३ नफी २१. (५) मार० ६:७-११, १५-२६, मरो० ७, ३५-३८, १०:१६-२६. (६) ३ नफी २७:३२.

करना चाहिए और न ही यहूदियों को या इस्राएल के घराने के अवशेष वंश वालों को खेल ही समझना चाहिए; क्योंकि सुनो, उनको दिए हुए (७) अपने वचन को प्रभु स्मरण रखता है और वह उनके साथ अपने शपथ के अनुसार ही काम करेगा।

९. इसलिए यह मत समझो कि तुम प्रभु के दाहिने हाथ को बांया हाथ कर सकते हो जिससे कि वह उस न्याय को (८) कार्यान्वित न करे जो कि उसके (९) उस वचन की पूर्ति करेगा जिसे उसने इस्राएल के घराने के लोगों को दिया था।

अध्याय ३०

मारमन का अन्य जातियों को पश्चात्ताप करने के लिए पुकारना।

१. हे अन्य जातियों के लोग, सुनो, तुम उस चेतन परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की उस वाणी को सुनो, जिसने (१) मुझे आज्ञा दी है कि मैं तुम्हारे विषय में बोलूं, क्योंकि देखो, उसने मुझे यह लिखने की आज्ञा दी है।

२. दूसरी सभी जातियां, अपने बुरे कर्मों को त्यागें, और अपने बुरे कामों के लिए, अपनी मिथ्या (२) बातों और धोखाओं के लिए, अपने (३) व्यभिचारों और (४) गुप्त घृणित कामों के लिए, अपनी मूर्ति पूजाओं और हत्याओं के लिए, अपने (५) अनुचित पूजा और द्वेष के लिए, अपनी आपसी झगड़ों और अन्य प्रकार की दुष्टताओं और घृणित कामों के लिए, पश्चात्ताप करो, और मेरे पास आओ और (६) मेरे नाम पर बपतिस्मा लो, जिससे तुम अपने पापों के लिए क्षमा प्राप्त कर सको, और पवित्रात्मा से (७) परिपूर्ण हो जाओ, जिससे कि तुम्हारी (८) गिनती मेरे लोगों के साथ हो जो कि इस्राएल के घराने के लोग हैं।

चौथा नफी

नफी की पुस्तक

उस नफी का पुत्र—जो यीशु मसीह
का शिष्य था।

—उसके अभिलेखानुसार नफी लोगों का विवरण

मसीह के गिरजे की प्रगति—नफायटियों और लमनायटियों का मत परिवर्तन करना—सभी बातों में उनकी समानता—दो धार्मिक पीढ़ियों के पश्चात् विभाजन और धर्म भ्रष्टता—आमोस और अमरोन का बारी-बारी अभिलेखों को रखना।

१. और ऐसा हुआ कि (१) चौतीसवां और पैंतीसवां वर्ष बीत गए और यीशु के (२) शिष्यों ने आसपास के सारे देशों में मसीह के गिरजा की स्थापना कर ली। और जितने लोग उनके पास आए और सचमुच में अपने पापों पर पश्चात्ताप किया उन सब ने यीशु के नाम पर (३) बपतिस्मा लिया; और उन्हें (४) पवित्रात्मा भी प्राप्त हुआ।

२. और ऐसा हुआ कि छत्तीसवें वर्ष में सभी देशों के सभी नफायटी और लमनायटी दोनों, मत परिवर्तन कर प्रभु में विश्वासी हो गए, और उनमें कोई लड़ाई-झगड़ा या किसी तरह का विवाद नहीं था, और हरएक व्यक्ति एक दूसरे के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करता था।

३. और उनमें (५) सभी बातों में समानता थी; इस कारण उनमें न धनी थे और न कंगाल,

(७) देखो १०, ३ नफी १५. (८) ३ नफी २१. (९) देखो १०, ३ नफी १५. अध्याय ३०. (१) ३ नफी ५:१२-१३. (२) ३ नफी २१:१९-२१. (३) देखो २५, २ नफी ९. (४) देखो १२, २ नफी १०. (४) देखो २४; २ नफी २६. (६) देखो २१, २ नफी ९. (७) देखो २५, ३ नफी ९. (८) देखो २४, ३ नफी १६. (१) ३ नफी २:६-८. (२) देखो ३, ३ नफी १२. (३) देखो २१, २ नफी ९. (४) देखो २५, ३ नफी ९. (५) देखो २५, ३ नफी २६.

न दास और न मुक्त, परन्तु वे सभी स्वतन्त्र और (६) स्वर्गीय देनों का उपभोग करने वाले थे।

४. और ऐसा हुआ कि सैतीसवां वर्ष भी बीत गया और देश में शान्ति बनी रही।

५. और (७) यीशु के शिष्य ने बड़े-बड़े चमत्कारी काम किए, यहां तक कि उन्होंने रोगियों को स्वस्थ किया, मरे हुओं को जिलाया, लंगड़ों को चलाया, अंधों को आंखे दीं और बहिरों को सुनने की शक्ति दी; और मानव समाज में हर प्रकार के चमत्कारी काम किए; और उन्होंने जो चमत्कारी काम किए वे सब यीशु के नाम पर ही किए, उसके नाम के बिना कुछ भी नहीं किया।

६. इस तरह अड़तिसवां, उंतालिसवां, एकतालिसवां, बयालिसवां, यहां तक कि उन्चासवां और एक्यावनवां और बावनवां वर्ष भी बीत गया, और फिर उनसठवां वर्ष तक भी बीत गया।

७. और प्रभु ने देश में उनकी भारी प्रगति कराई; यहां तक कि जहां नगर जल गए थे वहां पुन: नगर बसाए गए।

८. हां, उन्होंने उस महानगरी (८) ज़राहेमला को भी फिर से बनाया।

९. लेकिन बहुत से नगर (९) धंस गए थे और उनके स्थानों पर जल हो गया था; इस कारण उन नगरों को फिर से बसाया नहीं जा सका।

१०. और अब सुनो, नफी के लोग बहुत ही सम्पन्न हो गए और शीघ्रता के साथ उनकी वृद्धि भी होने लगी और वे अत्यधिक सुन्दर और आनन्द-दायक लोग हो गए।

११. वे आपस में विवाह सम्बन्ध स्थापित करते और प्रभु द्वारा भीड़ को कहे गए शब्दों के अनुसार उनको आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

१२. और वे अब (१०) मूसा के नियमों और संस्कारों के अनुसार नहीं चलते; लेकिन जो आज्ञायें उनको उनके प्रभु और परमेश्वर से मिली थीं उन्हीं के अनुसार वे आचरण करते हुए (११) उपवास और प्रार्थना करते, और समय-समय पर (१२) प्रार्थना करने और प्रभु की वाणी को सुनने के लिए (१३) एकत्रित हुआ करते थे।

१३. और ऐसा हुआ कि सारे देश के लोगों में कोई विवाद नहीं था; परन्तु यीशु के शिष्यों में (१४) बड़ी-बड़ी चमत्कारी घटनाएं हुईं।

१४. और ऐसा हुआ कि *एकहत्तरवां वर्ष और बहत्तरवां वर्ष बीत गया, हां, उनहत्तरवां वर्ष तक बीत गया; यहां तक कि एक सौ वर्ष बीत गए और मसीह ने जिन शिष्यों को चुना था, उनमें से (१५) उन तीनों को छोड़कर जिनको कि जगत में रहना था, शेष सब परमेश्वर के (१६) स्वर्ग में चले गए; और उनके स्थान पर दूसरे शिष्य अभिषिक्त किए गए; और उस पीढ़ी के बहुत से लोग भी गुजर चुके।

१५. और लोगों के हृदयों में परमेश्वर का जो प्रेम निवास कर रहा था, उसके कारण देश में कोई विवाद नहीं था।

१६. और लोगों में विद्वेष, प्रतिद्वन्दता, हलचल, व्यभिचार, असत्यता, हत्या और किसी भी प्रकार की कामुकता नहीं थी; और निश्चय ही परमेश्वर के हाथों द्वारा रचे गए सारे लोगों में इन लोगों की तरह आनन्दमय और कोई भी नहीं था।

१७. कोई डाकू और हत्यारा नहीं था, और न तो लमनायटियों और नफायटियों का भेदभाव ही था; परन्तु सभी एक समान मसीह की सन्तान थे, और परमेश्वर के राज्य के अधिकारी थे।

१८. और वे धन्य थे। क्योंकि प्रभु ने उनके हर एक काम में उन्हें आशीर्वाद दिया; हां, यहां तक कि एक सौ दस वर्ष गुजरने तक उन्हें आशीर्वाद प्राप्त होता रहा और वे प्रगति करते रहे; और मसीह के समय से पहिली पीढ़ी गुजर गई और पूरे देश में कहीं कोई विवाद नहीं हुआ।

१९. और ऐसा हुआ कि (१८) नफी, जो कि इस अन्तिम अभिलेख (और वह इसे (१९) नफी की पटियों पर रख रहा था) को रख रहा था,

(६) देखो २५, ३ नफी ९. (७) देखो १८, ३ नफी २८. (८) ओम० १३, ३ नफी ८:८, २४, ९:३. (९) ३ नफी ८:९, ९:४, ७. (१०) देखो १५, २ नफी २५, ३ नफी ९:१९, १५:२-८. (११) देखो २०, मू० २७. (१२) ३ नफी २४:१६. (१३) देखो ५, २ नफी ३२. (१४) देखो १८, ३ नफी २८. (१५) देखो १२, २ नफी ९. (१६) देखो ४, ३ नफी २८. (१८) देखो चौथे नफी का शीर्षक. (१९) देखो ६, १ नफी १:१७.

*ईस्वी ७२

मृत्यु को प्राप्त हो गया और उसके स्थान पर उसका पुत्र आमोस अभिलेख रखने लगा, और उसने भी नफी की पटियों पर उसे रखा।

२०. उसने चौरासी वर्षों तक अभिलेख रखा और देश में शान्ति बनी रही, केवल कुछ ही लोगों ने गिरजा से विद्रोह कर लमनायटी नाम ग्रहण किया; इसलिए देश में फिर से लमनायटी हो गए।

२१. और ऐसा हुआ कि आमोस भी मर गया (यह मसीह के आगमन से एक सौ चौरानवें वर्ष पश्चात हुआ) और उसके स्थान पर उसके पुत्र आमोस ने अभिलेख को रखा; और इसने भी नफी की पटियों पर ही उसे रखा; और नफी की पुस्तक में भी लिखा गया, जो कि यही वह पुस्तक है।

२२. और ऐसा हुआ कि *दो सौ वर्ष बीत गए; और कुछ लोगों को छोड़कर दूसरी पीढ़ी भी गुजर गई।

२३. और अब, मैं, मॉरमन यह चाहता हूं कि तुम यह जानो कि लोगों की जनसंख्या में इतनी वृद्धि हुई कि वे सारे देश भर में फैल गए और मसीह में उनकी आस्था के कारण वे अति धनवान भी हो गए।

२४. और अब *दो सौ एकवें वर्ष में कुछ लोग अहंकार में मूल्यवान वस्त्र धारण करने लगे, और हर प्रकार के सुन्दर मोती और सांसारिक वस्तुएं प्रयोग में लाने लगे।

२५. और उस समय से उन्होंने अपने सामानों और वस्तुओं को (२०) समान रूप से उपयोग में लाना भी समाप्त कर दिया।

२६. और वे श्रेणियों में विभाजित होने लगे; और मसीह के सच्चे गिरजे को अस्वीकार करके अपने स्वार्थ के लिए गिरजाओं को बनाने लगे।

२७. और ऐसा हुआ कि दो सौ दसवां वर्ष समाप्त होते-होते देश में कई गिरजे हो गए; हां, बहुत से गिरजे मसीह को जानने का ढोंग करते हुए उसके इंजील के अधिकांश भाग को इन्कार करने लगे, यहां तक कि उनमें हर प्रकार की बुराइयां आ गईं और ऐसी क्रियायें करने लगे जो कि उनके लिए (२१) अनुचित होने के कारण वर्जित थी परन्तु उन लोगों के लिए पवित्र हो गईं।

२८. और पाप के कारण, और उस शैतान की शक्ति के कारण जिसने कि उन लोगों के हृदयों पर अधिकार कर लिया था, यह गिरजा बहुत ही बढ़ा।

२९. और फिर एक और गिरजा ऐसा था जो मसीह को मानता ही नहीं था; और वे मसीह के सच्चे गिरजे को उत्पीड़न करने लगे और यह उनके विनीत स्वभाव और मसीह में विश्वास के कारण; और वे उनमें अनेकों चमत्कारी कामों के कारण भी उनका तिरस्कार करने लगे।

३०. इसलिए मसीह के जो (२२) शिष्य उनमें थे, उनपर वे अपना बल और अधिकार दिखाते और उन्होंने उन्हें कारागार में डाल दिया, परन्तु परमेश्वर की वाणी की शक्ति जो कि उनमें थी (२३) कारागार टुकड़ों-टुकड़ों में टूट गया, और वे उनमें जाकर बड़े-बड़े चमत्कार दिखाने लगे।

३१. फिर भी इन चमत्कारों की अवहेलना करके लोग अपने हृदयों को कठोर बना कर, उनको उसी प्रकार मार डालने का प्रयत्न करने लगे जिस प्रकार यरूशलेम के यहूदी यीशु को, उसके कहे अनुसार, मार डालने का प्रयत्न कर रहे थे।

३२. और उन्होंने उनको (२४) आग की भट्ठियों में डाल दिया परन्तु उनकी कोई हानि न हुई।

३३. और उन्होंने उन्हें (२५) हिंसक पशुओं की मांदों में भी डाल दिया, और उन्होंने उन पशुओं से उसी प्रकार क्रीडा की जैसे बच्चे मेमनों से खेलते हैं; और वे उनसे बचकर निकल आए और उनकी कोई हानि न हुई।

३४. फिर भी लोग अपने हृदयों को कठोर बनाए रहे क्योंकि वे अनेक पुजारियों और झूठे भविष्यवक्ताओं द्वारा अनेक गिरजाओं को बनाने के लिए और सभी प्रकार के बुरे कर्मों को करने के लिए बहकाए गए थे। और उन लोगों ने यीशु

(२०) देखो २५, ३ नफी २६. (२१) ३ नफी १८:२८, २९. (२२) देखो ४, ३ नफी २८. (२३) पद्य ५, ३ नफी २८:१९.
(२४) ३ नफी २८:२१. (२५) ३ नफी २८:२२.

†ईस्वी १११ *ईस्वी २०१

के लोगों को पीटा; परन्तु यीशु के लोगों ने उनको बदले में नहीं मारा। और इस तरह वर्ष-प्रतिवर्ष वे अविश्वास में क्षीण होने लगे और दो सौ तीस वर्ष बीत गए।

३५. और अब, *दो सौ एक्तीसवें वर्ष में लोगों में भारी विभाजन हो गया।

३६. और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष नफायटी कहाने वाले लोगों का उदय हुआ जो मसीह में सच्चे विश्वासी थे; और उनमें लमनायटी—याकूबायटी, यूसुफायटी और जोरमायटी कहाने वाले लोग भी थे।

३७. इसलिए मसीह के सच्चे विश्वासी और पुजारी (जिन में पृथ्वी पर रहने वाले मसीह के (२६) तीन शिष्य भी थे) नफायटी, याकूबायटी, यूसुफायटी और जोरमायटी कहाते थे।

३८. और ऐसा हुआ कि जिन्होंने इंजील को अस्वीकार किया उन्हें लमनायटी, लमुएलायटी और इस्मलायटी कहा गया; वे अविश्वास में दुर्बल नहीं हुए परन्तु (२७) जानबूझ कर मसीह के इंजील के विरुद्ध उन्होंने विद्रोह किया; और उन्होंने अपने बच्चों को भी विश्वास करना उसी प्रकार नहीं सिखाया जिस प्रकार उनके पूर्वज आरम्भ से ही दुर्बल होते गए थे।

३९. और यह उनके पिताओं के बुरे कर्मों और घृणित कार्यों के कारण हुआ जैसे आरम्भ में हुआ था। उन्हें परमेश्वर के बच्चों से उसी प्रकार घृणा करना सिखाया गया जैसे कि आरम्भ से लमनायटियों को (२८) नफी की सन्तानों से घृणा करना सिखाया गया था।

४०. और ऐसा हुआ कि *दो सौ चवालिस वर्ष बीत चुके और लोगों की स्थिति इस तरह थी। और अधिक दुष्ट लोगों की बहुत वृद्धि हुई, और उनकी संख्या परमेश्वर के लोगों से बहुत अधिक हो गई।

४१. और वे अब भी अपने लिए गिरजा बना कर उनको हरएक मूल्यवान वस्तुओं से सजा रहे थे। इस तरह दो सौ पचास वर्ष बीत गए और दो सौ साठ वर्ष भी धीरे-धीरे गुजर गए।

४२. और ऐसा हुआ कि जनता के दुष्ट जन फिर से (२९) गेडियन्दन के गुप्त शपथें खाने और दलबन्दी करने लगे।

४३. और जो लोग नफी के लोग कहलाते थे, वे भी अति धन सम्पदा के कारण अपने हृदयों में अहंकारी होकर अपने लमनायटी भाइयों की तरह बेकार हो गए।

४४. इस समय से (३०) मसीह के शिष्य जगत के पापों के लिए दुखी रहने लगे।

४५. और ऐसा हुआ कि तीन सौ वर्ष व्यतीत होते-होते नफायटी और लमनायटी दोनों एक-दूसरे के समान दुष्ट हो गए।

४६. और (३१) गेडियन्दन दल के डाकू सारे देश भर में फैल गए और यीशु के शिष्यों को छोड़कर कोई भी धार्मिक नहीं रहा। और लोग अत्यधिक सोना, चांदी जमा करके रखते और हर तरह से उनका लेन देन करते।

४७. और ऐसा हुआ कि तीन सौ पांच वर्ष बीत गए (और लोग अब भी बुरे कर्मों में लगे हुए थे) और आमोस भी मृत्यु को प्राप्त हो गया; और उसका भाई अमरोन उसके स्थान पर अभिलेख रखने लगा।

४८. और जब *तीन सौ बीस वर्ष बीत गए पवित्रात्मा द्वारा विवश हो अमरोन ने उन अभिलेखों को छुपा दिया जो कि पवित्र थे—हां, वे सभी (३२) पवित्र अभिलेख जो पीढ़ी दर पीढ़ी दिया जाता रहा है—यहां तक कि मसीह के आने से तीन सौ वर्ष बीत जाने तक जो अभिलेख दिए जाते रहे।

४९. और उसने उन सभी को प्रभु के लिए छुपा दिया जिससे कि प्रभु द्वारा कही गई भविष्य-वाणियों और वचनानुसार (३३) याकूब के घराने के अवशेष वंश के पास वे पुन: आ सकें। इस तरह अमरोन का अभिलेख समाप्त हुआ।

(२६) देखो ४, ३ नफी २८. (२७) ३ नफी २७:३२ मो० १-१९. (२८) देखो १४, या० ७. (२९) देखो ९, २ नफी १०, इला० २:३-१४. (३०) ३ नफी २८:९. (३१) देखो २९. (३२) अल० ३७:२-४, इला० ३:१३, १५, १६. (३३) ३ नफी २१:२६.

*ईस्वी २३१ *ईस्वी २४५ ईस्वी ३०६ *ईस्वी ३२१

अध्याय १

पवित्र अंकित लिपि सम्बन्धी कर्तव्य का पालन करने के लिए अमरोन का मॉरमन को आदेश देना—युद्ध और दुष्टता—तीन नफायटी शिष्यों का विदा होना—मॉरमन को प्रचार करने से रोका जाना—अभिनन्दी और लमनायटी सामुएल की भविष्यवाणियों का पूरा होना।

१. और अब मैं, मॉरमन, उन बातों का अभिलेख बना रहा हूं जिन्हें मैंने देखा और सुना है और इस अभिलेख को मैं (१) मॉरमन की पुस्तक कहूंगा।

२. जिस समय (२) अमरोन ने अभिलेखों को प्रभु के लिए गुप्त कर दिया, तब वह मेरे पास आया, (इस समय मेरी आयु लगभग दस वर्ष की थी और मैं अपने लोगों की परम्परानुसार शिक्षा ग्रहण करने लगा था) और अमरोन ने मुझसे कहा : मैं देखता हूं कि तुम बुद्धिमान बालक हो और किसी भी बात को शीघ्र देख लेते हो।

३. इसलिए मैं चाहता हूं कि जब तुम चौबीस वर्ष के हो जाओ तब इन लोगों के विषय में जो भी कुछ देख रहे हो उसे स्मरण रखना, और इस आयु के हो जाने पर (३) एण्टम देश में जाकर उस पहाड़ के पास जाना जिसे (४) शिम कहा जाएगा; और वहां पर मैंने इन लोगों के विषय में खोदी हुई पवित्र लिपियों को प्रभु के लिए (५) छुपा दिया है।

४. और सुनो, वहां से तुम (६) नफी की पटियों को अपने लिए लेकर शेष पटियों को वहीं छोड़ देना; और नफी की पटियों पर तुम (७) वह सब अंकित करना जो कुछ तुम इन लोगों के विषय में देख चुके हो।

५. और मैं मॉरमन, (८) नफी का वंशज हूं, (और मेरे पिता का नाम मॉरमन था) और अमरोन ने जो आज्ञा मुझे दी थी, वह मुझे स्मरण है।

६. और ऐसा हुआ कि जब मैं *ग्यारह वर्ष का हुआ तब मेरे पिता ने मुझे (९) दक्षिण के देश में (१०) ज़राहेमला देश तक ले गए।

७. वहां सारे देश भर में मकान बने हुए थे और लोगों की संख्या लगभग समुद्र के बालू के समान अधिक थी।

८. और ऐसा हुआ कि इस वर्ष नफायटी जिनके साथ याकूबायटी, यूसुफायटी और जोरमायटी थे, युद्ध करने लगे, और यह युद्ध नफायटियों और इसमलायटियों के मध्य हो रहा था।

९. इस समय लमनायटी, लमुएलायटी और इस्मलायटी, लमनायटी कहलाते थे, इसलिए एक दल नफायटी और दूसरा दल लमनायटी कहाते थे।

१०. उनमें यह युद्ध ज़राहेमला की सीमा पर (११) सिदोन के जल के निकट होना आरम्भ हुआ।

११. और ऐसा हुआ कि नफायटियों ने बहुत अधिक लोगों को एकत्रित कर लिया, यहां तक कि उनकी संख्या तीस सहस्त्र से भी अधिक थी। और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष कई बार युद्ध हुए जिनमें नफायटियों ने लमनायटियों को पराजित किया और बहुतों को मार डाला।

१२. और तब लमनायटियों ने अपने विचार में परिवर्तन लाया और देश में शान्ति हुई; और चार वर्षों तक शान्ति बनी रही और इस अवधि में रक्तपात नहीं हुआ।

१३. परन्तु सारे देश भर में इतने अधिक दुष्कर्म होते रहे कि प्रभु ने (१२) अपने शिष्यों को बुला लिया और चमत्कार के और रोगियों को स्वस्थ करने के काम लोगों के पापों के कारण समाप्त हो गया।

१४. और उनकी दुष्टताओं और अविश्वास के कारण प्रभु द्वारा दिए जाने वाले उपहारों का

(१) मार० २:१७, १८, ५:९. (२) ४ नफी ४७:४९. (३) मार० २:१७. (४) मार० ४:२३, ए० ९:३. (५) ४ नफी ४८. (६) देखो ६, १ नफी १ (७) मार० २:१८. (८) ३ नफी ५:१२. २० देखो २, मू० १८. (९) देखो १४, अल० ४३. (१०) ओम० १३. (११) देखो ७, अल० २. (१२) ३ नफी २८:२-१२, देखो ४, ३ नफी २८. *ईस्वी ३२२

भी अन्त हो गया और पवित्रात्मा भी किसी के ऊपर नहीं आयी।

१५. और मैं *पंद्रह वर्ष की आयु का था और शान्त बुद्धि का होने के कारण प्रभु ने मुझे दर्शन दिए जिसका मैंने आनन्द लिया और यीशु की उदारता को मैंने जाना।

१६. और मैंने इन लोगों में प्रचार करने का प्रयत्न किया परन्तु मेरा मुख बन्द कर दिया गया; क्योंकि सुनो, उन्होंने (१३) स्वेच्छा से अपने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था; और उनके पापों के कारण यीशु के (१४) प्रिय शिष्यों को देश से बाहर निकाल लिया गया था।

१७. परन्तु मैं उनके ही बीच में रहा परन्तु उनके हृदयों की कठोरता के कारण मुझे उनको उपदेश देने से रोक दिया गया; और उनके हृदयों की कठोरता के कारण ही उनके लिए देश (१५) शापित किया गया था।

१८. और (१६) गेडियन्दन डाकू जो लमनायटियों में थे, देश को इतना अधिक कष्ट दे रहे थे कि लोग अपनी मूल्यवान सम्पत्तियों को धरती में गाड़ कर छुपाने लगे; जो प्रभु द्वारा देश को (१७) शापित किए जाने के कारण खिसकने वाले बन गए थे, जिससे वे उन सम्पत्तियों को अपने पास न तो रोक ही सकते थे और न ही वे उनको पुनः प्राप्त कर सकते थे।

१९. और ऐसा हुआ कि जादू, टोना, टोटका, होने लगा और देश भर में उस दुष्ट की शक्ति का प्रभाव फैल गया, यहां तक कि (१८) अभिनन्दी और लमनायटी सामुएल की कही सभी बातें सत्य सिद्ध हुईं।

अध्याय २

मॉरमन का नफायटी सेना का संचालन करना—गेडियन्दन डाकुओं के विषय में और बातें—संधि द्वारा उत्तर के देश को नफायटियों को, और दक्षिण का देश लमनायटियों को दिया जाना।

१. उसी (१) वर्ष ऐसा हुआ कि नफायटियों और लमनायटियों में युद्ध होने लगा और मैं अपनी कम आयु के होते हुए भी शरीर से हृष्ट-पुष्ट था; इसलिए नफी के लोगों ने मुझे अपना नेता और अपनी सेनाओं का अध्यक्ष चुना।

२. इसलिए अपने †सोलहवें वर्ष में नफायटियों की एक सेना का नायक बन कर मैं लमनायटियों से लड़ने के लिए गया; और तीन सौ छब्बीस वर्ष (२) बीत गए हैं।

३. और ऐसा हुआ कि तीन सौ सत्ताइसवें वर्ष में उन्होंने इतनी अधिक शक्ति के साथ हमारे ऊपर चढ़ाई की कि उन्होंने हमारी सेना को भयभीत कर दिया; इसलिए वे उनसे लड़े नहीं और (३) उत्तर देश की ओर पीछे हटने लगे।

४. और हम अंगोला नगर पहुंचे, उसे अपने अधिकार में लिया और आत्मरक्षा की हमने तैयारी की। और हमने अपनी पूरी शक्ति के साथ नगर में (४) किलेबन्दी की; परन्तु हमारी तैयारियों की परवाह न करके लमनायटी ने हमारे विरुद्ध आकर आक्रमण कर दिए और हमें वहां से खदेड़ दिए।

५. उन्होंने हमें दाऊद के देश से भी बाहर निकाल दिया।

६. और वहां से कूच कर हम यहोशू देश में आए जो कि पश्चिम में समुद्र तट की सीमा का देश था।

७. और हमने जितनी शीघ्रता के साथ हो सकता था अपने आदमियों को वहां एकत्रित किया जिससे कि हमारे सभी लोग एक स्थान पर एक साथ हो जाएं।

८. लेकिन सुनो, आस-पास के सारे स्थान (५) डाकुओं और लमनायटियों से भर गया; और सिर पर आए हुए भारी विनाश की परवाह न करके मेरे लोगों ने अपने बुरे कर्मों के लिए पश्चात्ताप नहीं किया; इसलिए सारे देश भर में चारों ओर नफायटियों का भी और लमनायटियों का भी रक्तपात और नर संहार होने लगा जिसने सारे देश भर में पूरा उलटफेर ला दिया।

९. इस समय लमनायटियों का एक राजा था

(१३) देखो २७, ४ नफी. (१४) देखो १२. (१५) देखो ४, २ नफी १. (१६) देखो २६, ४ नफी. (१७) देखो ४, २ नफी १. (१८) इला० १३:१८-२३, ३०:३७, मार० २:१०-१५. अध्याय २. (१) मार० १:१२, १५. (२) ३ नफी २: ७, ८. (३) देखो ४४, अल० २२ और देखो १६, अल० ४६. (४) देखो ३, अल० ४८. (५) देखो २६, ४ नफी.

*ईस्वी ३२६ †ईस्वी ३२७-३२८

जिसका नाम था (६) आरोन; और वह चवालीस सहस्त्र की सेना लेकर हमसे लड़ने के लिए आया। मैंने बयालीस सहस्त्र की सेना के साथ उसका सामना किया। और ऐसा हुआ कि मैंने उसको अपनी सेना के साथ ऐसा परास्त किया कि वह हमारे सामने से भाग चला। और सुनो, यह सब कुछ हुआ और *तीन सौ तीस वर्ष बीत गए।

१०. और ऐसा हुआ कि नफायटी ने अपने दुष्कर्मों पर पश्चात्ताप करना आरम्भ कर दिया और जिस तरह (७) भविष्यवक्ता सामुएल ने भविष्यवाणी की थी उसी के कहे अनुसार उन्होंने रोना भी आरम्भ किया; क्योंकि कोई भी आदमी देश के चोरों, डाकुओं, हत्यारों, जादूगरी और टोना-टोटका के कारण अपनी सम्पत्ति को सुरक्षित नहीं रख सकता था।

११. इस तरह सारे देश भर में, विशेष कर नफायटी लोगों में, इन कारणों से रुदन और शोक मनाया जाने लगा।

१२. और ऐसा हुआ कि जब मैं, मॉरमन ने प्रभु के आगे उनको शोक करते और रोते हुए देखा तब प्रभु की दया और उसके दीर्घकाल तक कष्ट सहने के पश्चात् मेरा हृदय इस कारण मेरे अन्दर आनन्द मनाने लगा कि शायद वह उनपर दया करे और वे फिर से धार्मिक हो जाऐं।

१३ लेकिन सुनो, मेरा यह आनन्द व्यर्थ में ही था, क्योंकि परमेश्वर की उदारता के कारण, उनका वह शोक पश्चात्ताप के लिए नहीं था; परन्तु उनका वह शोक अपराधियों का शोक था, क्योंकि प्रभु सदैव पापों में उनको आनन्द नहीं दे सकता।

१४. और वे यीशु के पास टूटे हृदय और शोकार्त आत्मा के साथ नहीं आए, लेकिन उन्होंने परमेश्वर की निन्दा की और मृत्यु को चाहा। फिर भी उन्होंने अपने प्राणों के लिए तलवार ग्रहण की।

१५. और ऐसा हुआ कि मैं फिर से दुःखी रहने लगा और मैंने देखा कि उनपर शारीरिक और आध्यात्मिक दया करने के दिन बीत चुकें; क्योंकि मैं देख चुका था कि अपने परमेश्वर से खुला विद्रोह करने के कारण सहस्त्रों काट गिराए गए थे और उनके शरीरों को विष्ठा की तरह धरती पर ढेर लगा दिया गया था। और इस तरह †तीन सौ चवालिस वर्ष बीत गए।

१६. और तीन सौ पैंतालिसवें वर्ष में ऐसा हुआ कि नफायटी फिर से लमनायटियों के सामने से प्राण बचाने के लिए भागने लगे और उनको खदेड़ा जाता रहा और जब तक वे जशन देश पहुंच न गए तब तक पीछे हटने से उन्हें रोका नहीं जा सका।

१७. अब (८) जशन नगर उस स्थान से निकट था जहां कि अमरोन ने (९) अभिलेखों को प्रभु के लिए छुपा दिया था, जिससे कि वे नष्ट न हो जाएं। और सुनो, मैं अमरोन के कहे अनुसार वहां गया (१०) और नफी की पटियों को लाया और अमरोन के कहे अनुसार मैंने एक अभिलेख लिखा।

१८. और नफी की पटियों पर मैं (११) सभी दुष्टताओं और घृणित कर्मों को अंकित कर रहा हूं; परन्तु (१२) इन पटियों पर उनकी सभी दुष्टताओं और घृणित कर्मों को लिखना नहीं चाहता, क्योंकि सुनो, लगातार ये दुष्टता और घृणित कर्म तब से मेरी आंखों के सामने आते रहे हैं जब से कि मैं मनुष्य के व्यवहारों को देखने योग्य हुआ था।

१९. और उनके बुरे कामों के लिए मुझे संताप हो रहा है; क्योंकि सारे जीवन भर उनके पापों के लिए मेरा हृदय दुःख से भरा रहा; फिर भी, मैं जानता हूं कि अन्तिम दिन मैं (१३) ऊपर उठा लिया जाऊंगा।

२०. और ऐसा हुआ कि इसी वर्ष नफी के लोगों का आखेट किया और भगाया जाता रहा। और ऐसा हुआ कि हम तब तक पीछे हटाए गए जब तक कि हम उत्तर में उस स्थान तक नहीं पहुंच गए जिसे सेम कहते थे।

२१. और हमने (१४) सेम नगर को आत्म-रक्षा के लिए दृढ़ किया, और हमने अपने जितने लोगों को हो सका वहां एकत्रित किया जिससे उनको

(६) मरो० ९:१७. (७) देखो १८, मार० १. (८) मार० १:३, ४:२३. (९) ४ नफी ४८, ४९. (१०) मार० १:४, देखो ६, १ नफी १. (११) मार० १:४, (१२) देखो ७, ३ नफी ५. (१३) देखो १६, मू० २३. (१४) देखो ३, अल० ४८.

*ईस्वी ३३१, †ईस्वी ३४५

नष्ट होने से बचाया जा सके।

२२. और ऐसा हुआ कि *तीन सौ छियालीसवें वर्ष में वे पुन: हमारे विरुद्ध आने लगे।

२३. और ऐसा हुआ कि मैंने अपने लोगों से बातें कीं और बड़े बल के साथ उनसे आग्रह किया कि वे साहस के साथ लमनायटियों के सामने खड़े होकर अपनी पत्नियों, बच्चों, मकानो और निवासगृहो के लिए युद्ध करें।

२४. मेरी बातों से उनमें साहस का संचार हुआ और वे लमनायटियों के सामने से भागे नहीं परन्तु साहस के साथ उनके सामने खड़े हुए।

२५. और ऐसा हुआ कि हमने तीस सहस्त्र की सेना के साथ उनके पचास सहस्त्र की सेना से युद्ध किया। हमने उनसे इतनी दृढ़ता से लड़ाई लड़ी कि वे हमारे सामने से भाग चले।

२६. और जब वे भागे तब हमने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया और फिर से हमारा और उनका सामना हुआ और हमने उनको पुन: पराजित किया; फिर भी प्रभु की शक्ति हमारे साथ नहीं थी; हां, हमें अकेले छोड़ दिया गया था, जिससे कि प्रभु की आत्मा हमारे साथ निवास नहीं कर रही थी; इसलिए हम अपने बन्धुओं के समान ही दुर्बल हो चुके थे।

२७. मेरे लोगों के इस दुर्भाग्य के कारण, उनकी दुष्टताओं और धृणित कार्यो से मेरा हृदय दु:खित हुआ। लेकिन सुनो, हम लमनायटियों और (१५) गेडियन्दन डाकुओं के विरुद्ध तब तक बढ़कर संघर्ष करते रहे जब तक कि हमने अपने पैतृक देश को फिर से अपने अधिकार में न कर लिया।

२८. और तीन सौ उन्चास वर्ष बीत गए। †तीन सौ पचासवें वर्ष में हमने लमनायटियों और गेडियन्दन डाकुओं से सन्धि कर ली जिसके कारण हमारे पैतृक देशों का विभाजन हो गया।

२९. और लमनायटियों ने हमें वहां तक (१६) उत्तर का देश दिया जहां (१७) सकरी घाटी है जिसके द्वारा (१८) दक्षिण के देश में जाया जाता है। और हमने दक्षिण का सारा देश लमनायटियों को दे दिया।

अध्याय ३

नफायटियों की लगातार दुष्टता—मॉरमन का उनकी सेना का नेता बने रहने से इनकार करना—उसका भविष्य की पीढ़ियों को उपदेश—बारहों द्वारा इस्राइल के घराने वालों का न्याय।

१. और ऐसा हुआ कि लमनायटी हमसे *और दस वर्ष युद्ध करने नहीं आए, और मैंने अपने लोगों को नफायटियों को उनके देशों और अस्त्र-शस्त्रों को युद्ध के समय की तैयारी में लगाए रखा।

२. और प्रभु ने मुझसे कहा: इन लोगों को पुकार कर कहो—तुम पश्चात्ताप करो, मेरे पास आओ और (१) बपतिस्मा लो, और फिर से मेरे गिरजा को बनाओ, और तब तुम बचा लिए जाओगे।

३. और मैंने इन लोगों को पुकारा परन्तु मेरी पुकार व्यर्थ हुई; और उन्होंने यह नहीं समझा कि वह प्रभु ही था जिसने उनकी रक्षा की थी और उन्हें पश्चात्ताप करने का अवसर प्रदान किया था। और सुनो, उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर के प्रतिकूल अपने हृदयों को कठोर बना लिया।

४. और जब यह दसवां वर्ष व्यतीत हो गया, जो कि कुल मिलाकर मसीह के आने के समय से लेकर तीन सौ साठ वर्ष हो गए, तब लमनायटियों के राजा ने मेरे पास एक पत्र लिखकर सन्देश भेजा कि मैं जान जाऊं कि वे हमसे पुन: आकर युद्ध करने की तैयारी कर रहे हैं।

५. और ऐसा हुआ कि मैंने अपने लोगों को (२) नीरव देश के एक नगर में एकत्रित करवाया जो कि (३) दक्षिण देश में ले जाने वाले (४) उस सकरे दर्रे के बगल में सीमा पर था।

६. हमने अपनी सेना को इसलिए वहां रखा जिससे कि वे हमारे देश के किसी भाग पर अधिकार न कर सकें; इसलिए हमने अपनी सारी शक्ति के साथ वहां (५) गढ़बन्दी की।

(१५) देखो २६, ४ नफी. (१६) देखो ३. (१७) देखो ४८, अल० २२. (१८) देखो १४, अल० ४६. अध्याय ३. (१) देखो २१, २ नफी ९. (२) देखो ३८, अल० २२. (३) देखो ४८, अल० २२. (४) देखो १४, अल० ४६. (५) देखो ३, अल० ४८.

*ईस्वी ३४६, †ईस्वी ३५०

७. ऐसा हुआ कि तीन सौ एकसठवें वर्ष लमनायटी ने हमसे लड़ने के लिए नीरव देश के उस (६) नगर पर चढ़ाई की; और उस वर्ष हमने उनको ऐसा पछाड़ा कि वे वापस अपने देश लौट गए।

८. और †तीन सौ बासठवें वर्ष में वे फिर से युद्ध करने के लिए आए। और हमने फिर से उनको परास्त किया और उनके बहुत से लोगों को हमने मार डाला और उनके मृतकों को समुद्र में डुबो दिया गया।

९. और हमारे नफायटी लोगों ने जो यह महान कार्य किया था, उसके लिए वे अपने ही बल पर घमण्ड करने लगे और स्वर्गों के सामने शपथ लेने लगे कि वे अपने उन बन्धुओं के रक्त का बदला शत्रुओं से लेंगे जो उनके द्वारा मारे गए थे।

१०. और उन्होंने आकाश और परमेश्वर के सिंहासन की शपथ लेकर प्रतिज्ञा की कि वे अपने शत्रुओं से जाकर युद्ध करेंगे और धरती पर से उन्हें मिटा देंगे।

११. इस समय से उनकी दुष्टता और घृणित कामों के कारण मैं, मॉरमन ने इन लोगों का सेनाध्यक्ष और नेता रहने से एकदम इनकार कर दिया।

१२. सुनो, उनकी दुष्टताओं की परवाह न करके मैंने उनका नेतृत्व किया और अनेकों बार मैंने उनका युद्ध में संचालन किया और परमेश्वर का जो प्रेम मेरे अन्दर था, उसके अनुसार मैंने उनसे अपने सारे हृदय से प्रेम किया, और उनके लिए सारा दिन मैंने अपने परमेश्वर से प्रार्थना की; फिर भी यह उनके हृदयों की कठोरता के कारण बिना विश्वास के था।

१३. मैंने (७) तीन बार उनको उनके शत्रुओं के हाथों से बचाया परन्तु उन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया।

१४. और जब उन्होंने अपने भाइयों के रक्त का बदला लेने के लिए अपने शत्रुओं से जाकर लड़ने की प्रतिज्ञा (८) की, जो कि हमारे प्रभु और रक्षक यीशु मसीह के द्वारा वर्जित की गयी थी, तब सुनो, प्रभु की वाणी मेरे पास यह कहने को आई :

१५. बदला लेना मेरा काम है, और मैं ही प्रतिफल दूंगा; और इनको मैंने बचाया फिर भी पश्चात्ताप नहीं किया, इसलिए सुनो, ये (९) धरती पर से मिटा दिए जाएंगे।

१६. और मैंने अपने शत्रुओं के विरुद्ध आक्रमण करने से एकदम इनकार कर दिया; और मैंने वही किया जो कि प्रभु ने कहा था; और मैं उन बातों को जगत पर प्रकट करने के लिए एक साक्षी रूप में खड़ा हुआ जिन्हें मैंने देखा और सुना है, और जैसा कि उस आत्मा द्वारा मुझ पर प्रकट किया गया है जिसने भविष्य में घटने वाली बातों की गवाही दी है।

१७. इसलिए दूसरी जातियां, और इस्राएल के घराने वालो, मैं तुम्हारे लिए लिख (१०) रहा हूं कि जब वह काम (११) आरम्भ होगा जिसमें तुम अपने पैतृक देश को वापस लौटने की तैयारी करोगे;

१८. हां, सुनो, मैं जगत के कोने-कोने के लिए लिख रहा हूं, और ए इस्राएल के बारहों शाखाओं, जिनका निर्णय उन (१२) बारह शिष्यों के द्वारा होगा जिनको यीशु ने यरूशलेम देश में अपने शिष्य के लिए चुना था, मैं तुम्हारे लिए भी लिख रहा हूँ।

१९. और मैं इन लोगों के अवशेष वंशवालों के लिए भी लिख रहा हूं जिनका न्याय (१३) उन बारह शिष्यों के द्वारा भी होगा जिनको यीशु ने इस देश में चुना था; और (१४) उनका न्याय उन बारहों के द्वारा होगा जिनको यीशु ने यरूशलेम देश में चुना था।

२०. और ये बातें आत्मा द्वारा मुझ पर प्रकट की जा रही हैं; इसलिए मैं तुम सभी लोगों के लिए लिख रहा हूं। और मैं इन्हें इस उद्देश्य से लिख रहा हूं कि तुम्हें यह मालूम हो कि तुम सभी को (१५) मसीह के न्याय आसन के सामने खड़ा

(६) देखो ३८. (७) पद्य ७, ८ मार० २:२७-२९. (८) पद्य ९:१०. (९) मार० ६. (१०) देखो ३, २ नफी २७. (११) देखो ५, १ नफी १५. (१२) १ नफी १२:९. (१३) १ नफी १२:१०, ३ नफी २७:२७. (१४) १ नफी १२:९. (१५) देखो ४, ३ नफी २६.

*ईस्वी ३६०, †ईस्वी ३६२

होना पड़ेगा, हां, आदम के परिवार के हरएक वंश को खड़ा होना है। तुम्हें अपने कर्मों के न्याय के लिए खड़ा होना ही पड़ेगा, चाहे वे बुरे हों, या चाहे भले हों।

२१. और इस कारण भी कि तुम यीशु मसीह के उस इंजील पर विश्वास करो (१६) जो कि तुम्हारे पास होगा और प्रभु द्वारा दिए गए वचन के लोग यहूदी यह जान सकें कि जिसको उन्होंने देखा और सुना था, और जिसको उन्होंने मारा था, उसके (१७) दूसरे भी साक्षी हैं कि वही मसीह (१८) परमेश्वर था।

२२. मैं चाहता था कि मैं तुम्हें जगत के कोने-कोने को, पश्चात्ताप करवाने और मसीह के न्यायासन के सामने खड़ा होने की तैयारी करवाने के लिए प्रोत्साहित करूं।

अध्याय ४

नफायटियों का लमनायटियों से प्रतिकारक युद्ध आरम्भ करना—नफायटियों की पराजय—शिम पहाड़ से पवित्र अभिलेखों का लिया जाना।

१. *तीन सौ तिरसठवें वर्ष में ऐसा हुआ कि नफायटी अपनी सेनाओं के साथ (१) नीरव देश से बाहर निकल कर लमनायटियों से लड़ने के लिए आगे बढ़े।

२. और ऐसा हुआ कि नफायटियों को वापस नीरव देश में पीछे हटा दिया गया। और जब कि वे थके हुए थे, तभी लमनायटियों की एक ताजी सेना ने उनपर आक्रमण कर दिया; और ऐसा युद्ध हुआ कि लमनायटियों ने (२) नीरव नगर को अपने अधिकार में कर लिया और बहुत से नफायटियों को मार डाला और बहुतों को बन्दी बना लिया।

३. और बचे हुए भाग कर (३) टेनकम नगर के निवासियों में जा मिले। टेनकम नगर सागर तट की सीमा पर स्थित था; और (४) नीरव नगर के निकट ही था।

४. नफायटियों की सेना लमनायटियों के पास जाने के कारण ही वे मारे जाने लगी; अगर ऐसा नहीं होता तो लमनायटियों का उन पर कोई वश नहीं चलता।

५. लेकिन सुनो, परमेश्वर का न्याय दुष्टों पर भारी पड़ता है, और ऐसा होता है कि दुष्टों को दुष्टों द्वारा दण्ड दिया जाता है; क्योंकि वह दुष्ट ही है जो मानव वंश को उकसा कर रक्तपात करवाता है।

६. और ऐसा हुआ कि लमनायटी टेनकम नगर पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगे।

७. और तीन सौ चौसठवें वर्ष में लमनायटी (५) ने टेनकम नगर पर चढ़ाई कर दी ताकि वे इसे भी अपने अधिकार में कर लें।

८. और ऐसा हुआ कि नफायटियों द्वारा उनको पराजित कर उन्हें पीछे हटा दिया गया। और जब नफायटियों ने उनको भगा दिया तब वे (६) अपने बल पर पुनः अहंकार करने लगे; और वे अपने ही बाहुबल पर जाकर फिर से (७) नीरव नगर को अपने अधिकार में कर लिया।

९. और यह सब कुछ हुआ और सहस्त्रों की संख्या में दोनों ओर के लोग, नफायटियों के और लमनायटियों के भी मारे गए।

१०. और ऐसा हुआ कि तीन सौ छियासठ वर्ष बीत गए, और लमनायटी फिर से नफायटियों से लड़ने के लिए आए; फिर भी नफायटी ने अपने किए बुरे कर्मों के लिए पश्चात्ताप नहीं किया किन्तु अपनी दुष्टताओं में ही वे मरने लगे।

११. और जो भयानक हत्याकांड और रक्तपात दोनों, नफायटियों और लमनायटियों का हो रहा था, उसका वर्णन किसी की जिह्वा द्वारा करना या लिखना सम्भव नहीं; और हरएक का हृदय कठोर हो चुका था इसलिए लगातार रक्तपात करने से उनको आनन्द आ रहा था।

१२. और प्रभु की वाणी के अनुसार जैसी दुष्टता इन लोगों में थी वैसी दुष्टता न तो लेही के वंश में और न ही इस्राएल के घराने में पहिले कभी थी।

(१६) १ नफी १३:२०-२६, ४१, ४२. (१७) देखो ११, २ नफी २५. (१८) २ नफी २६:१२, देखो २, मू० ३. अध्याय ४. (१) देखो ३८, अल० २२. (२) देखो ३८, अल० २२. (३) पद्य ६, ७, १४. (४) देखो ३८, अल० २२. (५) देखो ३. (६) मार० ३:९. (७) देखो ३८, अल० २२.

*ईस्वी ३६३ ईस्वी ३६४-३७५

१३. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों ने (८) नीरव नगर पर अधिकार कर लिया और ऐसा इसलिए हुआ कि उनकी संख्या नफायटियों से अधिक थी।

१४. और वे (९) टेनकम नगर के विरुद्ध भी बढ़ आए और वहां के निवासियों को भगा दिया और बहुत-सी स्त्रियों और बच्चों को भी बन्दी बना लिया और (१०) उनको अपने भगवानों की मूर्ति के लिए बलिदान चढ़ा दिया।

१५. और ऐसा हुआ कि तीन सौ सड़सठवें वर्ष में अपने बच्चों और स्त्रियों के (११) बलिदान के कारण नफायटी अति क्रोधित हो लमनायटियों से लड़ने के लिए गए और उन्होंने ऐसी लड़ाई लड़ी कि फिर से लमनायटियों को अपने देश से बाहर भगा दिया।

१६. उस समय से लमनायटी नफायटियों से तीन सौ पचहत्तरवें वर्ष तक लड़ने नहीं आए।

१७. और इसी वर्ष (तीन सौ पचहत्तरहवें) वे अपनी सारी शक्ति के साथ नफायटियों से युद्ध करने के लिए आए और उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि वे असंख्य थे।

१८. इस समय से नफायटी लमनायटियों के ऊपर हावी नहीं हो सके परन्तु उनके द्वारा उसी प्रकार मिटाए जाने लगे जैसे सूरज के सामने से ओस की बूंदे मिट जाती हैं।

१९. और ऐसा हुआ कि लमनायटी (१२) ने नीरव देश पर चढ़ाई कर दी; और नीरव देश में अति भयंकर युद्ध हुआ जिसमें उन्होंने नफायटियों को पराजित कर दिया।

२०. और वे फिर उनके सामने से भागे और भाग कर बोअज़ नगर में आए और वहां वे लमनायटियों के विरुद्ध इतनी वीरता के साथ खड़े हुए कि लमनायटी उनको तब तक परास्त न कर सके जब तक कि वे दुबारा उन पर आक्रमण न किया।

२१. और जब उन्होंने दुबारा आक्रमण किया तब नफायटी भगा दिए गए और उनके अत्यधिक लोगों को मार डाला गया और उनकी स्त्रियों और बच्चों को (१३) फिर से मूर्तियों के लिए बलिदान किया गया।

२२. और ऐसा हुआ कि नफायटी फिर से उनके सामने से सभी देहातों और शहरों के निवासियों को साथ लेकर भाग चले।

२३. जब मैंने देखा कि लमनायटी देश को विजय करने वाले हैं तब मैं (१४) शिम के पहाड़ पर गया और मैंने उन सभी अभिलेखों को ले लिया जिन्हें अमरोन ने (१५) प्रभु के लिए छुपा दिया था।

अध्याय ५

मॉरमन का दया करना और फिर से लमनायटियों की अध्यक्षता करना—लमनायटियों का नफायटियों से अधिक संख्या में होना—अपराध और रक्तपात—मॉरमन द्वारा अभिलेखों का संक्षिप्त किया जाना—

१. और ऐसा हुआ कि मैं नफायटियों में गया और जो प्रतिज्ञा (१) मैंने की थी कि अब मैं इन लोगों की सहायता नहीं करूंगा, उसके लिए मैंने पश्चात्ताप किया और उन्होंने अपनी सेनाओं का संचालन करने का भार मुझे दिया, क्योंकि वे मुझे ऐसे देख रहे थे मानो मैं उनको उनके कष्टों से निकाल लूंगा।

२. लेकिन सुनो, मैं निराश था, क्योंकि मैं जानता था कि परमेश्वर का न्यायदण्ड उनके सिर पर पड़ेगा; क्योंकि उन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया था और जिसने उनको रचा था, बिना उसको पुकारे ही वे अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहे थे।

३. और ऐसा हुआ कि जब हम यरदन नगर भाग गए तब लमनायटी फिर हमारे विरुद्ध बढ़ आए; लेकिन सुनो, इस बार उनको पीछे हटा दिया गया और वे नगर पर अधिकार न कर सके।

४. और ऐसा हुआ कि वे फिर से हम पर चढ़ आये परन्तु हम नगर पर अधिकार जमाए रहे। कुछ दूसरे नगर भी थे जिन पर नफायटी अधिकार जमाए रहे और ये नगर दृढ़ अड्डे थे

(८) देखो ३०, अल० २२. (९) देखो ३. (१०)पद्य १५, २१. (११) देखो १०. (१२) देखो ३८, अल० २२. (१३) देखो १०. (१४) मार० १:३ एथर ९, ६. (१५) देखो ३२, ४ नफी. अध्याय ५. (१) मार० ३:११, १६.

और हमारा जो देश हमारे आगे था वहां जाने का रास्ता इन से बन्द होने के कारण वे वहां जाकर हमारे देश के निवासियों को नष्ट करने में असमर्थ थे।

५. और हम जो देश छोड़ आए थे, वहां के निवासियों को हम अपने साथ नहीं लाए, उनको लमनायटियों ने नष्ट कर दिया, और उनके शहरों, गावों और नगरों को आग से जला दिया; और इस तरह तीन सौ उन्नासी वर्ष बीत गए।

६. और ऐसा हुआ कि तीन सौ अस्सीवें वर्ष में लमनायटी हमसे लड़ने के लिए फिर से आए और हमने वीरता के साथ उनका सामना किया; परन्तु यह सब कुछ व्यर्थ हुआ, क्योंकि उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि उन्होंने नफायटियों को अपने पैरों तले कुचल दिया।

७. और ऐसा हुआ कि हम फिर भागे और जो लमनायटियों से अधिक तेज दौड़ सके वे बच गए और जो उनसे तेज दौड़ न सके वे उनकी चपेट में आ गए और उन्हें नष्ट कर डाला गया।

८. और अब सुनो, मैं मॉरमन, लोगों के सामने इतने भयंकर रक्तपात और हत्याकांड के दृष्य, जैसा कि मेरी आंखों के सामने हुए हैं, रखकर उनकी आत्माओं को कष्ट देना नहीं चाहता; परन्तु मैं जानता हूं कि (२) ये बातें प्रकट होवेंगी ही और जो कुछ छुपा हुआ है उनको घरों की छतों पर से (३) प्रकट किया ही जाएगा।

९. और इस कारण भी कि जिससे इन बातों की जानकारी इन लोगों के अवशेष वंशवालों को हो और अन्य जातियां भी जानें, जिनके विषय में प्रभु ने कहा था कि वे इन लोगों को (४) तितर-बितर कर देंगे और उनमें इन लोगों की गिनती शून्य होगी इस कारण जिन बातों को मैंने देखा है, उनको संक्षेप में लिख (५) रहा हूं और उनका पूरा विवरण देने का मैं साहस उस आज्ञा के कारण नहीं करता जिसे मैंने पाया है, और इसलिए भी कि इन लोगों की दुष्टताओं के कारण आपको अधिक कष्ट न हो।

१०. और अब सुनो, यह मैं (६) उनके वंश-वालों से, और उन अन्य जाति वालों से बोल रहा हूं जो कि इस्राएल के घराने वालों के लिए चिन्ता करते हैं और यह समझते हैं और जानते हैं कि उनके आशीर्वाद कहां से आते हैं।

११. क्योंकि मैं जानता हूं कि ऐसे लोग इस्राएल के घराने वालों के दुर्भाग्य के कारण दुखी होंगे; हां, वे इन लोगों के नष्ट होने से दुखी होंगे; वे इसलिए दुखी होंगे कि उन लोगों ने पश्चात्ताप नहीं किया जिससे ये यीशु की बाहों में लिए नहीं गए।

१२. और अब ये बातें याकूब के अवशेष वंश के लोगों के लिए लिखी जा रही हैं; और वे इस तरह इसलिए लिखी जा रही हैं क्योंकि परमेश्वर को मालूम है कि दुष्टता में ये सब बातें उनके पास नहीं आ सकतीं; और ये सब परमेश्वर के लिए छुपा (७) दिया जाता है और उचित अवसर पर फिर सामने आएंगी।

१३. और जो आज्ञा मुझे मिली है वह यही है; और सुनो, प्रभु की आज्ञा के अनुसार ही ये बातें तब आएंगी (८) जब वह अपने विवेकानुसार उचित समझेगा।

१४. और सुनो, वे वाणियां अविश्वासी यहूदियों के पास भी इस उद्देश्य से जाएंगी—जिससे कि उनको यह (९) विश्वास दिलाया जा सके कि यीशु ही चेतन परमेश्वर का पुत्र मसीह है; जिससे कि वह अपने सबसे प्रिए के द्वारा अपने उस महान और अनन्त उद्देश्य (१०) को पूरा कर सके जो कि यहूदियों या इस्राएल के घराने वालों को उनके उस पैतृक देश में पुनर्स्थापित करना है जिसको उनके प्रभु परमेश्वर ने अपने वचन की पूर्ति के लिए दिया है।

१५. और इसलिए भी की जो (११) इंजील इन लोगों में अन्य जातियों के द्वारा जाएगा उस पर इन लोगों के (१२) वंशज और अधिक विश्वास

(२) पद्य ९-१५ (३) देखो ३, २ नफी २७. (४) पद्य १९, २०, १ नफी १३:२४, २२:७. २ नफी १:११-१२. १०:१८; २६:१९, ३ नफी १६:८, ९; २०:२७, २८. (५) देखो १, मार० १. (६) २ नफी १, ३१. (७) मार० ८:४, १३, १४ मरो० १०:२. (८) देखो ३, २ नफी २७. (९) देखो ६, २ नफी २५. (१०) देखो ५, १ नफी १५. (११) देखो ६. (१२) देखो १ नफी १३:२०-२९, ३८-४१, मार० ७:८-९.

कर सकें; क्योंकि ये लोग (१३) बिखर जाएंगे और इतने काले, (१४) मैले और घृणित हो जाएंगे कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता और जैसे पहले कभी भी हमारे मध्य में लोग नहीं थे और न ही लमनायटियों में ही थे। और यह उनके अविश्वास और (१५) मूर्ति पूजा के कारण ही होगा।

१६. क्योंकि सुनो, प्रभु की आत्मा ने उनके पिताओं के साथ मेहनत करना छोड़ दिया है; और अब वे संसार में बिना मसीह और परमेश्वर के हैं; और वे उसी प्रकार इधर-उधर भगाए जा रहे हैं जैसे हवा में भूसा उड़ता है।

१७. एक समय वे आनन्दयुक्त लोग थे, और मसीह को अपना गड़रिया रखे हुए थे; हां, उनका नेतृत्व परमेश्वर पिता कर रहा था।

१८. लेकिन अब, सुनो, उनकी अगुवाई शैतान उसी तरह कर रहा है जैसे हवा द्वारा भूसा उड़ाया जाता है, या तरंगों पर एक पात्र बिना पाल या लंगड़ या पतवार के इधर-उधर डावां-डोल होता है; और जैसे यह पात्र है, इसी तरह वे हैं।

१९. और सुनो, अब प्रभु ने अपने उस आशिष को जो वे शायद पाते, उन दूसरी जातियों के लिए सुरक्षित रख लिया (१६) जो इस देश के अधिकारी होंगे।

२०. लेकिन सुनो, ऐसा होगा कि वे अन्य जातियों के द्वारा (१७) खदेड़े और तितर-बितर किए जाएंगे; और जब वे भगाए और तितर-बितर कर दिए जाएंगे, तब सुनो, (१८) प्रभु इब्राहीम को और इस्राएल के पूरे घराने को दिए गए वचन को स्मरण करेगा।

२१. और प्रभु (१९) धार्मिकों की प्रार्थनाओं को भी स्मरण करेगा, जिन्हें उन्होंने उसके लिए की थी।

२२. और तब, हे दूसरी जातियो, तुम परमेश्वर के बल के सामने बिना पश्चात्ताप किए और अपने बुरे कर्मों को त्यागे कैसे खड़े होओगे?

२३. क्या तुम यह नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के हाथों में हो? क्या तुम नहीं जानते कि सभी शक्तियां उसके पास हैं और उसकी महान आज्ञा से (२०) धरती एक कागज़ के टुकड़े के समान लपेटी जा सकती है?

२४. इसलिए तुम पश्चात्ताप करो, और उसके सामने अपने आप को दीन बना लो नहीं तो तुम्हारे विरुद्ध वह न्यायदण्ड को लेकर आएगा—ऐसा न हो कि याकूब के वंश के (२१) अवशेष तुम्हारे मध्य एक सिंह के समान जाकर तुम्हें टुकड़ों-टुकड़ों में चीर डाले और तुम्हारा कोई रक्षक न रहे।

अध्याय ६

कुमोरा का पहाड़ और उसके अभिलेख—दोनों राष्ट्रों का अन्तिम संघर्ष—लमनायटियों की विजय—चौबीस नफायटी बचे।

१. और अब मैं अपने लोगों के नष्ट होने के विषय के अभिलेख का अन्त करूंगा। और ऐसा हुआ कि हम लमनायटियों से लड़ने के लिए आगे बढ़े।

२. और मैं, मारमन ने लमनायटियों के राजा के पास एक पत्र लिख कर इच्छा प्रकट की कि वह हमें अपने लोगों को (१) कुमोरा नामक स्थान के पहाड़ के पास एकत्रित होने दे जहां हम उनसे लड़ सकें।

३. और ऐसा हुआ कि लमनायटियों के राजा ने हमारी इच्छा को स्वीकार किया।

४. और ऐसा हुआ कि हमने कुमोरा नामक स्थान में जाकर कुमोरा के पहाड़ के चारों ओर अपने तम्बू खड़े किए; और यह स्थान अनेक जलाशयों, नदियों, और श्रोतों का देश था; और यहां लमनायटियों के ऊपर सफल होने की आशा हमें थी।

५. और *जब (२) तीन सौ चौरासी वर्ष बीत गए तब हमने अपने सब बचे हुए लोगों को कुमोरा देश में एकत्रित किया।

६. और ऐसा हुआ कि जब हमने अपने बचे हुए लोगों को कुमोरा देश के एक स्थान पर एकत्रित

(१३) देखो ४. (१४) देखो ४,१ नफी २. (१५) देखो १०, मार० ४. (१६) १ नफी १३:१२-१९, २ नफी १:११, १०:१०-१४, १८, १९, २६:१९, २०, ३०:३. (१७) देखो ४. (१८) ३ नफी १६:८-१२, २१; १-११. (१९) इनो० १२:१८, मार० ८:२४-२६, मार० ९:३६, ३७. (२०) देखो ३, ३ नफी २६. (२१) देखो १५, ३ नफी २०. अध्याय ६. (१) पद्य ४-६, ११; मार० ८:२. (२) ३ नफी २:७-८.

*ईस्वी ३८५

कर लिया तब तक सुनो, मैं मॉरमन, (३) वृद्ध
हो चला था, और यह जान कर कि मेरे लोगों के
लिए यह अन्तिम संघर्ष होगा, और प्रभु द्वारा मुझे
आज्ञा मिली थी कि मैं उन पवित्र (४) अभिलेखों
को लमनायटियों के हाथों में पड़ने न दूं जो कि
हमारे पूर्वजों के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को
दिए जाते रहे थे (क्योंकि लमनायटी नष्ट कर देंगे)
इसलिए मैंने (५) इस अभिलेख को (६) नफी की
पटियों से तैयार किया और (७) कुमोरा के पहाड़ में
(८) उन सभी अभिलेखों को (९) छुपा दिया जो
प्रभु द्वारा मुझे दिए गए थे, केवल (१०) इन थोड़ी-
सी पटियों को रख लिया जिन्हें मैं अपने पुत्र मरोनी,
को दे रहा हूं।

७. और ऐसा हुआ कि मेरे लोगों ने अपनी
पत्नियों और बच्चों के साथ लमनायटी सेना को
इस समय अपनी ओर आते हुए देखा; और दुष्टों
के हृदय में मृत्यु का भयंकर जो भय समा जाता है,
उसी भय के साथ वे उनका सामना करने की प्रतिक्षा
करने लगे।

८. और ऐसा हुआ कि जब वे हमसे लड़ने आए
तब उनकी अति अधिक संख्या के कारण हरएक
व्यक्ति भयत्रस्त हो उठा।

९. और वे अपनी (११) तलवार, धनुष वाण,
कुल्हाड़ी, और भांति-भांति के अस्त्र-शस्त्र लेकर
मेरे लोगों के ऊपर टूट पड़े।

१०. और ऐसा हुआ कि मेरे साथ के दस सहस्त्र
लोग मारे गए और मैं उनके मध्य में घायल होकर
गिर पड़ा; और वे मेरे पास से मुझे छोड़कर आगे
निकल गए और मेरे जीवन का अन्त नहीं किया।

११. और हम चौबीस जनों (जिन में मेरा
पुत्र मरोनी भी था) को छोड़ कर उन्होंने मेरे अन्य
सभी जनों को मार डाला और हम जो बच गए,
दूसरे दिन जब लमनायटी अपने डेरों में लौट गए;
तब (१२) कुमोरा के पहाड़ पर से अपने उन दस
सहस्त्र लोगों को देखा जो मारे गए थे और मैं उनके
आगे होकर उनको युद्ध में ले गया था।

१२. और हमने उन दस सहस्त्र लोगों को भी
देखा जिनको मेरे पुत्र मरोनी ने आगे होकर युद्ध
में नेतृत्व किया था।

१३. और सुनो, गिडगिडोना के भी दस सहस्त्र
लोग मारे गए थे जिनके मध्य में वह भी गिरा था।

१४. लमाह भी अपने दस सहस्त्र लोगों के साथ
मारा गया; गिलगाल अपने दस सहस्त्र लोगों के
साथ मारा गया; लिमही अपने दस सहस्त्र लोगों
के साथ मारा गया; योनियम अपने दस सहस्त्र के
साथ मारा गया; और गमनियाह, मरोनियाह,
अण्टिनम, शिबलम, शिम, और योश भी अपने
अपने दस-दस सहस्त्र लोगों के साथ मारे गए।

१५. दूसरे दस जन भी अपने-अपने दस-दस
सहस्त्र लोगों के साथ तलवार से मारे गए थे;
केवल (१३) वे चौबीस जो मेरे साथ थे, (१४)
थोड़े से लोग जो दक्षिण के देश में भाग गए थे
और कुछ जो (१५) असन्तुष्ट होकर लमनायटियों
में जा मिले थे उनको छोड़ कर सब गिर चुके थे;
और उनके हाड़ मास, और रक्त धरती पर पड़े
हुए थे, जिन्हें धरती पर सड़ने और चूर्ण होकर
धरती माता की गोद में वापस लौटने के लिए उनके
द्वारा जिन्होंने उनको मारा था छोड़ दिया गया था।

१६. अपने लोगों के मारे जाने के कारण दुख
में मेरा कलेजा फट गया और मैं रोया।

१७. हे रूपवान लोगो, तुमने प्रभु के रास्ते
को कैसे छोड़ दिया था। हे सुखी लोगो, तुमने उस यीशु
को कैसे अस्वीकार कर दिया था जो कि तुम्हें अपनी
बाहों को फैला कर खड़ा हुआ था?

१८. सुनो अगर तुमने ऐसा नहीं किया होता,
तब तुम नहीं मरते लेकिन सुनो, तुम मारे गए और
तुम्हारे मरने के कारण मैं रोता हूं।

१९. हे सुन्दर लड़के और लड़कियों, तुम माता
और पिताओ, पति और पत्नियां, सुन्दर लोगो,
तुम कैसे मारे गए।

२०. लेकिन देखो, तुम सब चले गए और मेरा
दुःख तुम्हें वापस ला नहीं सकता।

२१. और वह दिन शीघ्र ही आता है जब कि
तुम्हारी नश्वरता (१६) अमरता को प्राप्त करेगी,

(३) ४ नफी ४८, मार० १:२, ८:१. (४) देखो ३२, ४ नफी. (५) देखो १, मार० १. (६) देखो ६, १ नफी १. (७) देखो ७, मार० ५. (८) देखो १. (९) देखो ३२, ४ नफी. (१०) देखो १, मार० १. (११) देखो ४२, अल० ४३. (१२) देखो १. (१३) पद्य ११. (१४) मार० ८:२. (१५) देखो ८, अल० ४५. (१६) देखो ४, नफी २.

और तुम्हारे ये शरीर जो कि भ्रष्टता में नष्ट हो रहे हैं वे शीघ्र ही अभ्रष्ट बन जाएंगे; और तब तुम्हें मसीह के न्याय आसन के सामने खड़ा होना ही पड़ेगा और तुम्हारा न्याय तुम्हारे कर्मों के अनुसार होगा; और अगर तुम धार्मिक ठहरे, तब तुमको तुम्हारे उन पिताओं के साथ आशीर्वाद मिलेगा जो तुमसे पूर्व जा चुके हैं।

२२. ओह, जो यह महान नाश तुम्हारे ऊपर आया है, इससे पहले ही तुम्हें पश्चात्ताप कर लेना था। लेकिन सुनो, तुम तो चले गए और पिता, हां, वह स्वर्ग का अनन्त पिता तुम्हारी स्थिति को जानता है; और वह तुम्हारे साथ अपने न्याय और दया के अनुसार ही व्यवहार करेगा।

अध्याय ७

मॉरमन का लमनायटियों को निश्चय कराना कि वे इस्राइल के घराने के लोग हैं—उनको मुक्ति के लिए सावधान करना।

१. और अब सुनो, उन लोगों में से बचे हुए जो लोग हैं उनसे मैं कुछ कहूंगा और मेरी बातें अगर परमेश्वर ने उन तक पहुंचाईं, तब वे अपने पिताओं के विषय में जानेंगे; हां, तुम इस्राएल के घराने के बचे लोगो; मैं तुमसे बोलता हूं; और तुमसे ये शब्द कहता हूं:

२. तुम यह जानो कि तुम इस्राएल के घराने के हो।

३. तुम्हें यह भी जानना चाहिए कि बिना पश्चात्ताप किए तुम बच नहीं सकते।

४. तुम्हें यह भी मालूम होना चाहिए कि तुमको अपने युद्ध के हथियारों को धर देना चाहिए और रक्तपात में आनन्द न लेकर फिर से रक्तपात तब तक नहीं करना चाहिए जब तक कि उसके लिए परमेश्वर तुम्हें आज्ञा नहीं देता है।

५. और तुम्हें जानना चाहिए कि तुम्हें अपने पिताओं के विषय में (२) ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, और अपने सभी पापों पर पश्चात्ताप करना और परमेश्वर के पुत्र मसीह पर विश्वास करना चाहिए और यह भी जानना चाहिए कि वह यहूदियों के द्वारा मारा गया था; और पिता की शक्ति के द्वारा वह फिर से जीवित हो उठा था जिससे उसने कब्र पर विजय पाई थी; और उसी में (४) मृत्यु के डंक उदरस्त हो जाते हैं।

६. और वह मृतकों को (५) पुनर्जीवित करने की व्यवस्था को लागू करता है जिसके द्वारा मनुष्य को उसके न्याय आसन के सामने खड़ा होने के लिए उठाया जाता है।

७. और वह जगत के लिए उद्धार लाया जिसके द्वारा उसके सामने न्याय दिन को जो निर्दोष ठहरता है, उसको परमेश्वर के राज्य में (६) स्वर्ग के गायकों के साथ पिता, पुत्र और पवित्रात्मा जो कि एक ही परमेश्वर हैं, के लिए उसकी उपस्थिति में उस आनन्द की स्थिति (७) में रहने का अवसर प्राप्त होगा जिसका कि कोई अन्त नहीं।

८. इसलिए पश्चात्ताप करो और यीशु के नाम पर (८) बपतिस्मा को लो और मसीह की उस इंजील का सहारा लो जो कि तुम्हारे सामने रखी जाएगी जो न कि केवल (९) इसी अभिलेख में है परन्तु उसमें भी है जो कि अन्य जातियों के पास (१०) यहूदियों से आएंगे और जो अभिलेख उन दूसरी जातियों से तुम्हारे पास आएंगे।

९. क्योंकि सुनो, (११) यह इसी उद्देश्य से लिखा गया है कि तुम (१२) उस पर विश्वास करो; और अगर तुम उस पर विश्वास करोगे तब इस पर भी विश्वास करोगे; और अगर तुम इस पर विश्वास करोगे तब तुम (१३) अपने पूर्वजों के विषय में और परमेश्वर की शक्ति के द्वारा उनमें जो आश्चर्यजनक काम किए गए थे, वे भी तुम जानोगे।

१०. और तुम यह भी जानोगे कि तुम याकूब के वंश के अवशेष हो; इसलिए तुम्हारी गिनती प्रथम दिन के वचन के लोगों में हुई है; और अगर तुम मसीह में विश्वास करोगे और पहले जल में (१४)

(२) देखो ७, २ नफी ३. (३) देखो ८, मू० १६. (४) देखो ६, मू० १६. (५) देखो ४, २ नफी २. (६) मू० २:२८. (७) देखो ११, २ नफी ३१. (८) देखो २१, २ नफी ९. (९) देखो १, मार० १. (१०) देखो १२, मार० ५. (११) ३ नफी ५:१२-१७, देखो १, मार० १. (१२) देखो १२, मार० ५. (१३) देखो ७, २ नफी ३ (१४) देखो २१, २ नफी ९.

लगभग ईस्वी ३८५

बपतिस्मा लेकर तब (१५) अग्नि और पवित्र आत्मा से हमारे रक्षक द्वारा प्रस्तुत किए गए उदाहरण के अनुसार बपतिस्मा लोगे जैसी कि हमें आज्ञा मिली है, तब उस न्याय दिन को तुम्हारे लिए यह अच्छा होगा। आमीन।

अध्याय ८

मरोनी का अपने पिता के अभिलेख को पूरा करना—कुमोरा के रक्तपात के पश्चात्—मारे गए लोगों में मॉरमन—देश लमनायटियों और डाकुओं के अधिकार में—मॉरमन का अभिलेख धरती में से निकाला जाएगा—अन्तिम दिनों की परिस्थितियों और दुर्भाग्य का वर्णन।

१. सुनो, मैं (१) मरोनी, अपने पिता मॉरमन के अभिलेख को पूरा कर रहा हूं। सुनो, मुझे अपने पिता की आज्ञा के अनुसार कुछ ही बातों को लिखना है।

२. और ऐसा हुआ कि (२) कुमोरा की (३) भीषण लड़ाई के पश्चात् जो नफायटी दक्षिण देश में (४) भाग गए थे उनको लमनायटी खोज कर तब तक मारते रहे जब तक कि वे सब नष्ट न हो गए।

३. और मेरे पिता भी उनके द्वारा मारे गए और एकमात्र मैं ही अपने लोगों के नाश होने की दुखद कहानी लिखने के लिए बचा हूं। लेकिन सुनो, वे सब चले गए, और मैं अपने पिता की आज्ञा को पूरा कर रहा हूं। और वे मुझे भी मार डालेंगे या नहीं यह मैं नहीं जानता।

४. इसलिए मैं अभिलेखों को लिख कर धरती में (५) छुपा दूंगा; और तब तक मैं कहां जाता हूँ, यह कोई महत्व नहीं रखता।

५. सुनो, मेरे पिता ने इस अभिलेख को (६) बनाया और इसका उद्देश्य भी लिखा मैं भी यह लिखता अगर लिखने के लिए स्थान होता परन्तु इन (७) पटियों पर स्थान नहीं है, और धातु भी मेरे पास नहीं है क्योंकि मैं अकेला हूं। युद्ध में मेरे पिता, मेरे सभी अन्य भाई-बन्धुओं के साथ (८) मारे गए और मेरा कोई साथी न रहा और जाने के लिए कोई स्थान भी नहीं है; और प्रभु मुझे कितने (९) दिनों तक जीवित रखेगा यह भी मालूम नहीं।

६. सुनो, हमारे प्रभु रक्षक को आए *चार सौ वर्ष बीत चुके हैं।

७. और सुनो, लमनायटी मेरे लोगों को एक नगर से दूसरे नगर, एक स्थान से दूसरे स्थान तब तक खोजते रहे जब तक वे (१०) समाप्त न हो गए; और उनका महा विनाश हुआ; हां मेरे लोगो नफायटियों का नाश महान और आश्चर्य-जनक रहा।

८. और सुनो, वह भी प्रभु का हाथ था जिसने ऐसा किया। और यह भी सुनो, लमनायटी आपस में भी एक दूसरे से लड़ रहे हैं; और इस सारे देश के ऊपर हत्यायें और रक्तपात हो रहे हैं; और कोई भी (११) नहीं जानता कि युद्ध का अन्त कब होगा।

९. और अब सुनो, उनके विषय में मैं और कुछ नहीं कहूंगा क्योंकि लमनायटियों और (१२) डाकुओं को छोड़ कर देश में और कोई भी बचा नहीं।

१०. और यीशु के (१३) उन शिष्यों को छोड़ कर सच्चे परमेश्वर को कोई भी नहीं जानता था, जो कि देश में तब तक रहे जब तक कि लोगों के पाप इतने अधिक न हो गए कि प्रभु ने उनको लोगों के मध्य में (१४) रहना उचित नहीं समझा; —और यह भी कोई नहीं जानता कि वे धरती पर हैं भी या नहीं।

११. लेकिन सुनो, मेरे (१५) पिता ने और मैंने भी उनको देखा है, और उन्होंने हमें उपदेश भी दिए थे।

१२. और जिसको भी (१६) यह अभिलेख प्राप्त होगा वह इसकी त्रुटियों के कारण इसकी

(१५) देखो २५, ३ नफी ९. अध्याय ८. (१) मार० ६:६, मरो० ९:२४. (२) देखो २, मार० ६. (३) मार० ३:८-१५. (४) मार० ६:१५. (५) देखो ७, मार० ५. (६) देखो १, मार० १. (७) मार० ६:६ (८) पद्य ३. (९) ९) मरो० १, १० १, २. (१०) देखो ४, १ नफी १२. (११) ११) १ नफी १२:२०, २३. (१२) देखो २६, ४ नफी. (१३) देखो ४, ३ नफी २८. (१४) मार० १:१६. (१५) ३ नफी २८:२९. (१६) ३ नफी ४:८-११, १३, १८, देखो १, मार० १.

*ईस्वी ४०१

अवहेलना नहीं करेगा और वह इन बातों से भी (१७) अधिक महान बातों की जानकारी करेगा। सुनो मैं मरोनी हूं; अगर सम्भव होता तो मैं तुम्हें सभी बातों की जानकारी कराता।

१३. सुनो, मैं इन लोगों के विषय में कहने का अन्त कर रहा हूं। मैं मॉरमन का पुत्र हूं और मेरे पिता (१८) नफी के वंशज थे।

१४. और मैं वही हूं जो कि इस अभिलेख को प्रभु के लिए (१९) छुपा रहा हूं; और प्रभु की आज्ञा के कारण इन पटियों का किसी के लिए कोई महत्व नहीं। यह इस कारण कि उसका कहना है कि उनको कोई फिर से प्राप्त नहीं कर सकता; परन्तु उन पर अंकित अभिलेख बहुत ही महत्व का है; और जो कोई उसको प्रकाश में लाएगा (२०) उसको प्रभु आशीर्वाद देगा।

१५. क्योंकि सिवाय परमेश्वर के द्वारा दी गयी शक्ति के और किसी के पास शक्ति नहीं होगी कि इसे प्रकाश में लाए। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा है इसे उसके यशोगान की दृष्टि से किया जाए अथवा प्रभु के प्राचीन बिखरे हुए प्रवचन लोगों के कल्याण के लिए किए जायें।

१६. और धन्य होगा (२१) वह जो इसे प्रकाश में लाएगा; क्योंकि परमेश्वर की वाणी के अनुसार यह अन्धकार में से प्रकाश में लाया जाएगा; हां, यह (२२) धरती के अन्दर से बाहर निकाला जायगा और यह अन्धकार से निकल कर चमकेगा, और लोगों के ज्ञान में आएगा; और यह होगा परमेश्वर की शक्ति के द्वारा ही।

१७. और अगर कोई त्रुटि होगी तो वह किसी (२३) मनुष्य की ही होगी। लेकिन सुनो; हमें किसी भी त्रुटि का पता नहीं है; फिर भी परमेश्वर ही सब कुछ जानता है; इसलिए जो कोई इसकी निन्दा (२४) करेगा उसे जानना चाहिए कि उसे अधोलोक की अग्नि का भय होगा।

१८. और जो यह कहता है: मुझे दिखाओ अन्यथा तुम (२५) मारे जाओगे। उसे सावधान रहना चाहिए क्योंकि वह उस बात को कह रहा है जो कि प्रभु द्वारा कहना मना किया गया है।

१९. और जो कोई धृष्टता के साथ निर्णय करेगा उसका भी निर्णय धृष्टता के साथ ही होगा; क्योंकि उसके काम के अनुसार ही उसका वेतन चुकाया जाएगा, इसलिए जो मरेगा वह प्रभु द्वारा मारा जाएगा।

२०. सुनो, शास्त्र क्या कहता है—मनुष्य न तो किसी को मारे और न ही दूसरे का निर्णय करे; क्योंकि प्रभु कहता है कि न्याय करना, और बदला लेना मेरा काम है और मैं ही प्रतिफल दूंगा।

२१. और जो प्रभु के कामों के विरुद्ध और जो इस्राएल के घराने के प्रभु के दिए वचन के लोग हैं, उनके विरुद्ध रोषपूर्ण बातें कहेगा और संघर्ष करेगा और कहेगा: हम प्रभु के काम को नष्ट कर देंगे, और प्रभु ने जो वचन इस्राएल के घराने के साथ किया था उसे स्मरण नहीं रखेगा—वही (२६) काट कर अग्नि में डाले जाने के खतरे में रहेगा।

२२. क्योंकि प्रभु के अनन्त उद्देश्य तब तक प्रचलित रहेगा जब तक कि उसके सभी वचन पूरे नहीं हो जाते।

२३. यशायाह की भविष्यवाणियों को देखो। सुनो, मैं उन्हें लिख नहीं सकता। हां, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम उन्हें देखो, कि जो सन्त इस देश के अधिकारी थे और जो तुमसे पूर्व चले गए हैं, वे पुकारेंगे, हां, वे (२७) धूल में से प्रभु को पुकारेंगे; और जब कि प्रभु चेतन है वह जो शर्त अपने लोगों से बनाया था, उसे वह स्मरण रखेगा।

२४. और वह उनकी प्रार्थनाओं को जानता है कि वे उनके बन्धुओं की ओर से की गई थी। और वह उनके विश्वास को जानता है, क्योंकि (२८) उसके नाम पर वे पर्वत को हटा सकते है; और उसी के नाम पर वे धरती को हिला सकते हैं; और उसकी वाणी के बल पर उन्होंने कारागारों को धरती पर गिरा दिया; यहां तक कि जलती

(१७) ३ नफी २६:६-११, एथर ४:८, १३. (१८) ३ नफी ५:२०. (१९) देखो १६, १ नफी १३, मरो० १०:१, २. (२०) देखो ५, २ नफी ३. (२१) देखो ५, २ नफी ३. (२२) देखो ३, २ नफी २७. (२३) देखो शीर्षक पृष्ठ मार० ९:३१, ३३ए० १२:२२-२८, ३५. (२४) देखो मुख पृष्ठ, पद्य १६, २१, २ नफी २८:२६, ३०, ३ नफी २९ए० ४:८-१०. (२५) पद्य १९ २०. (२७) देखो २४. (२७) देखो १६, मार० ५. (२८) देखो ३, या० ४.

ईश्वी ४००-४२१ के मध्य

भट्टी उनको हानि न पहुंचा सकी, न तो हिंसक पशु और न हि विषधर सर्प ही उनको नष्ट कर सके और यह उसकी वाणी की शक्ति के ही कारण हुआ।

२५. और सुनो, (२९) उनकी प्रार्थनायें (३०) उसके लिए भी थी कि इन बातों को प्रकाश में लाए।

२६. और किसी को यह कहने की आवश्यकता नही कि ये नहीं लाई जाएंगी, क्योंकि ये अवश्य ही लाई जाएंगी और प्रभु ने यह कहा है क्योंकि (३१) ये धरती के अन्दर से प्रभु के हाथ द्वारा निकाली जाएंगी और इसे कोई भी रोक नहीं सकता; और ये उन दिनों आएंगी जब कहा जाएगा कि (३२) चमत्कार अब नहीं किए जाते; और यह उसी प्रकार आएगी जैसे मानो (३३) कोई मरा व्यक्ति बोलने लगा हो।

२७. और यह उस समय आएगा जब कि (३४) गुप्त संगठनों और अन्धकार में किए जाने वाले कामों के कारण सन्तों के (३५) रक्त प्रभु को पुकारेंगे।

२८. हां यह उस समय आएगा जब कि परमेश्वर की शक्ति को (३६) अस्वीकार किया जाएगा और गिरजे (३७) भ्रष्ट हो जाएंगे और अपने हृदयों के अहंकार के कारण फूल उठेंगे; हां, यहां तक कि गिरजों के नेता और शिक्षक भी जब अपने हृदयों के अहंकार में फूल उठेंगे और अपने गिरजों के अनुयाइयों तक से द्वेष करने लगेंगे।

२९. हां, यह उस समय आएगा जब कि हम विदेशों में अग्निकांड, भीषण आंधी और धुंए के वाष्प के (३८) विषय में सुनेंगे;

३०. और अनेक स्थानों पर हुए (३९) युद्ध की चर्चायें और (४०) भूकंप के विषय में सुना जाएगा।

३१. हां, यह उस समय आएगा जब कि धरती पर भारी दूषण होगा; (४१) हत्यायें होंगी, डकैती की जाएगी, झूठी बातें बोली जाएंगी, छल कपट किए जाएंगे, व्यभिचार होगा और हर प्रकार के घृणित काम किए जाएंगे; और जब बहुत होंगे जो कहेंगे कि यह करो, वह करो, कोई चिंता मत करो क्योंकि अंतिम दिन को प्रभु इनके पक्ष में होगा। लेकिन संताप हो ऐसे लोगों को, क्योंकि वे कड़वाहट के मध्य में और पापों के बन्धन में होंगे।

३२. हां, यह उस दिन आएगा जबकि ऐसे गिरजा बनाए जाएंगे जो कहेंगे: मेरे पास आओ, और तुम्हारे पैसों के कारण तुमको तुम्हारे पापों के लिए क्षमा किया जाएगा।

३३. हे दुष्ट, कुटिल और हठी लोगों, तुमने अपने (४२) लाभ के लिए क्यों गिरजाओं को बनाया? अपनी आत्मा के ऊपर अधोगति को लाने के लिए तुमनें क्यों परमेश्वर की वाणी को (४३) विकृत किया? सुनो, तुम परमेश्वर के (४४) ज्ञान प्रकाशों को देखो, वह समय आता है जबकि उस दिन ये सभी बातें पूरी की जाएंगी।

३४. सुनो, प्रभु ने मुझे शीघ्र होने वाली आश्चर्यजनक और (४५) महान बातों को दिखाया है जो कि उस समय होंगी जबकि ये बातें तुम में आएंगी।

३५. सुनो, मैं तुमसे उसी तरह बोल रहा हूं जैसे मानो तुम मेरे सामने उपस्थित हो, परन्तु तुम यहां हो नहीं। लेकिन सुनो, यीशु मसीह ने तुम्हें मुझे दिखाया है, और मैं तुम्हारे कर्मो को जानता हूं।

३६. और मैं जानता हूं कि तुम (४६) अपने हृदयों के अहंकार में इतराते हुए चलते हो; और केवल (४७) कुछ ही लोग अहंकार में फूले हुए नहीं हैं, मूल्यवान सुन्दर वस्त्र ग्रहण नहीं करते,

(२९) देखो १९, मार० ५. (३०) २ नफी ३, देखो ५. (३१) देखो ३, २ नफी २७. (३२) २ नफी २८:४-६, ३ नफी २९:७, मार० ८:२८, ९:१५-२६, देखो १८, २ नफी २६. (३३) २ नफी २६:१५, १६; ३३:१३, मार० ९:३०, मरो० १०:२७. (३४) देखो ६, २ नफी २८. (३५) देखो ९, २ नफी २, १०. (३६) देखो ३२. (३७) पद्य ३२-२८, देखो १७, २ नफी २६. (३८) १ नफी २२:१८, २ नफी २७:१-३. (३९) १ नफी १४:१५-१७, २२:१३-१५. यशा० ६६:१५, १६. (४०) २ नफी २७:२. (४१) ३ नफी १६:१०, २१:१९. अध्याय ३०. (४२) देखो ३७. (४३) १ नफी १३:२०-२९, ३२, ३४, ३५, ४०, ४१. (४४) १ नफी १४:१८-२७, एथ० ४:१६. (४५) देखो ९, २ नफी २५. (४६) २ नफी २८, ३ नफी १६:१०. (४७) २ नफी २८:१४.

ईश्वी ४००-४२१ के मध्य

द्वेष नहीं रखते, विवाद नहीं करते, डाह नहीं रखते, उत्पीड़न नहीं करते और अन्य सभी प्रकार के दुराचार नहीं करते; और तुम्हारे गिरजा, हां, उनमें से हर एक तुम्हारे हृदयों के अहंकार के कारण दूषित हो चुके हैं।

३७. क्योंकि सुनो, (४८) कंगालों, जरुरत मन्दों, रोगियों और दुखियों से अधिक प्रेम तुम अपने पैसों, वस्तुओं, अपने सुन्दर वस्त्रों और अपने गिरजाओं की आराधना करने से करते हो।

३८. हे दूषितो, तुम ढोंगियो, तुम शिक्षको, तुम जो अपने आपको उन वस्तुओं के लिए बेचते हो जो कि कीड़ों द्वारा नष्ट किए जाते हैं, क्योंकि तुमने परमेश्वर के पवित्र गिरजे को दूषित किया? तुम अपने ऊपर (४९) मसीह का नाम लेने से क्यों लजाते हो? तुम क्यों नहीं सोचते कि अनन्त आनन्द का महत्व अन्तहीन दुर्गति से अधिक है—क्या सांसारिक प्रशंसा के कारण?

३९. तुम जड़ वस्तुओं की क्यों पूजा करते हो और (५०) भूखों, जरुरतमन्द बिना वस्त्र के, बीमारों को, और दुखियों को बगल से निकल जाने देते हो और उनकी ओर ध्यान भी नहीं देते हो?

४०. अपने लाभ के लिए (५१) गुप्त घृणित कर्मों को क्यों करते हुए विधवाओं और अनाथों को प्रभु के आगे रोने देते हो, और उनके पिताओं, और पतियों के (५२) रक्त को भी धरती के अन्दर से तुम्हारे ऊपर बदला के लिए प्रभु को क्यों पुकारने देते हो?

४१. सुनो, (५३) प्रतिफल की तलवार तुम्हारे ऊपर लटक रही है; और वह समय शीघ्र आता है जब कि वह (५४) सन्तों के रक्त का बदला तुमसे चुकाएगा, क्योंकि वह उनकी पुकार को और नहीं सह सकता।

अध्याय ९

अविश्वासियों से मॉरमन का निवेदन—मसीह में उसकी साक्षी—नफायटी भाषा का मिश्रियों की भाषा का संशोधित रूप माना जाना।

१. और अब मैं उन लोगों के विषय में कुछ कहूंगा जो मसीह पर विश्वास नहीं करते।

२. सुनो, क्या तुम उस दिन में विश्वास करते हो जब कि प्रभु तुम्हारे पास आएगा—सुनो, उस महान दिन में जब कि (१) पृथ्वी एक कागज़ के टुकड़े के समान समेट ली जाएगी और पृथ्वी के तत्व तीक्ष्ण गर्मी से गलेगा, हां, उस महान दिन में जब कि तुम को परमेश्वर के मेमने के सामने खड़े होने के लिए लाया जाएगा—तब तुम क्या यह कहोगे कि परमेश्वर नहीं है?

३. तब भी क्या तुम उस मसीह को और अस्वीकार करोगे या परमेश्वर के मेमने को देख सकोगे? क्या तुम सोचते हो कि अपने अपराध को जानते हुए भी तुम उसके साथ रह सकोगे? जब कि सदैव उसके नियमों का अपमान करने से अपराध चेतने के द्वारा तुम्हारी आत्मायें दुखी हों, तब क्या सोचते हो कि उस पवित्र आस्था के साथ रहने में आनन्द का अनुभव करोगे?

४. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम अपने गन्दे चेतन ज्ञान के कारण उस पवित्र और निष्पक्ष परमेश्वर के साथ रहने में, अपराधी आत्माओं के साथ अधोलोक में रहने से अधिक दुखी रहोगे।

५. क्योंकि सुनो, जब तुम्हें परमेश्वर के सामने अपने नंगे पने को, परमेश्वर के यश को, और ईशु मसीह की पवित्रता को देखने के लिए ले जाया जाएगा, तब यह तुम्हारे ऊपर कभी भी न बुझने वाली आग लगा देगा।

६. तब हे अविश्वासियों प्रभु की ओर घूमो; बल के साथ पिता से यीशु के नाम पर पुकारो, तब शायद तुम (२) मेमने के रक्त से धुल कर अन्तिम दिन को बेदाग, शुद्ध सुन्दर और श्वेत ठहरो।

७. और मैं फिर उनसे कहता हूं जो कि परमेश्वर के ज्ञान-प्रकाश को अस्वीकार करते हैं और कहते हैं कि अब ज्ञान प्रकाश नहीं होते, कोई (३) ज्ञान प्रकाश नहीं है, न ही भविष्यवाणियां हैं, कोई दिव्य देन नहीं है, लोग रोगमुक्त नहीं होते,

(४८) देखो १२, मू० ४. (४९) देखो ५, मू० ५ (५०) देखो १२, मू० ४. (५१) देखो ९, २ नफी १०. (५२) देखो ६, २ नफी २८. (५३) देखो ११, १ नफी १४. (५४) देखो ६, २ नफी २८. अध्याय ९. (१) देखो ३, ३ नफी २६. (२) देखो ६, २ नफी. (३) देखो ५, ३ नफी २९, देखो ३२, मार० ८.

ईस्वी ४००-४२१ के मध्य

दूसरी भाषायें न तो बोली जाती हैं और न ही उनके अनुवाद होते हैं।

८. सुनो, जो इन बातों को नहीं मानता वह मसीह के इंजील को नहीं जानता; हां, उसने शास्त्रों को नहीं पढ़ा; और अगर वह पढ़ता है तो उसे समझता नहीं।

९. क्या हम यह नहीं पढ़ते कि परमात्मा (४) भूत वर्तमान और सदैव एक ही समान रहता है और उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं होता और न ही परिवर्तनयुक्त उसकी छाया ही है?

१०. और अब अगर तुमने अपने लिए एक ऐसे परमेश्वर की कल्पना की है जो परिवर्तनशील है, और उसकी छाया बदलती है तब तुमने अपने लिए एक ऐसे परमेश्वर की कल्पना की है जो कि चमत्कारों का परमेश्वर नहीं है।

११. लेकिन सुनो, मैं तुमको चमत्कारों का एक परमेश्वर दिखाऊंगा जो कि इब्राहीम का परमेश्वर, इसाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर है; और यह वही परमेश्वर है जिसने पृथ्वी, स्वर्गों और उनमें की सारी वस्तुओं को रचा है।

१२. सुनो, उसने आदम को (५) उत्पन्न किया, और (६) आदम के द्वारा मनुष्य का पतन हुआ। और मनुष्य के पतन के कारण यीशु मसीह, यहां तक कि (७) पिता और (८) पुत्र भी आया; और मसीह के कारण मनुष्य के लिए प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति की व्यवस्था आई।

१३. और उस मुक्ति की व्यवस्था के कारण जो कि यीशु मसीह के द्वारा आई है, उनको प्रभु की उपस्थिति में वापिस लाया गया है; हां, इसी में (९) सभी मनुष्यों का उद्धार किया जाता है, क्योंकि मसीह की मृत्यु लोगों को (१०) पुनर्जीवित करती है जो कि लोगों को (११) उस अन्तहीन निन्द्रा से मुक्त करती है जिसमें से वे परमेश्वर की शक्ति से समय जाग्रत किए जाएंगे जबकि तुरही बजेगी; और तब छोटे बड़े सब आगे आ कर उसके न्यायालय के सामने, उस मृत्यु की जंजीर से उद्धार पा कर मुक्त हो कर खड़े होंगे जो कि शरीरिक मृत्यु है।

१४. और तब उनके ऊपर पवित्र आस्था का न्याय आता है; और तब वह समय भी आता है जब कि (१२) अशुद्ध ही रह जाते हैं; और जो धार्मिक हों वे धार्मिक ही रहते हैं; जो आनन्द में हों वे आनन्द में ही रहते हैं और जो दुखी होंगे वे दुखी ही रहेंगे।

१५. और अब हे तुम सब लोगों, जिन्होंने अपने लिए एक ऐसे ईश्वर की कल्पना की है जो कोई चमत्कार (१३) नहीं कर सकता, मैं तुमसे पूछना चाहता हूं कि जिन बातों को मैंने कहा क्या वे सब बातें बीत चुकी? क्या अभी अन्त आ गया है? मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं; और परमात्मा ने चमत्कारी होना त्याग नहीं दिया है।

१६. सुनो, परमात्मा ने जो काम किए हैं वे क्या हमारी आंखों में आश्चर्यजनक नहीं हैं? और हां, परमेश्वर की आश्चर्यजनक बातों को कौन समझ सकता है?

१७. कौन कह सकता है कि वह चमत्कार नहीं था कि उसके कहने से धरती और आकाश बन गए; और उसके शब्द के बल पर धरती के (१४) धूल से आदमी की रचना हो गई; और उसके शब्द के बल पर आश्चर्यजनक चमत्कार किए गए?

१८. और कौन कह सकता है कि यीशु मसीह ने अनेकों महान चमत्कार नहीं किए? और बहुत से महान चमत्कार उसके शिष्यों के हाथों द्वारा भी किए गए।

१९. और अगर चमत्कार किए गए तब परमेश्वर चमत्कार त्याग कर कैसे परिवर्तनहीन परमेश्वर रह सकता है? और सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि वह (१५) बदलता नहीं; अगर वैसा होता तब उसके ईश्वरत्व का (१६) अन्त हो जाता;

(४) पद्य १०, १९, १ नफी १०:१८, १९, अल० ७:२०, मरो० ८:१८. (५) देखो १३, मू० २. (६) २ नफी २, १८, १९, २१; ९:६-९, मू० ३:२६, १६:३-५, अल० १२:२२, २६, इला० १४:२६, एथ० ३:१३, मरो० ८:८. (७) देखो ३, मू० १५. (८) देखो २, मू० ३. (९) देखो १०, २ नफी ९. (१०) देखो ४, २ नफी २. (११) देखो ७, २ नफी ९. (१२) देखो १५, २ नफी ९. (१३) देखो ३. (१४) देखो १३, मू० २. (१५) देखो ४. (१६) देखो ६, २ नफी ११.

परन्तु उसके ईश्वरत्व का अन्त नहीं होता, और वह चमत्कारों का परमेश्वर है।

२०. और मानव सन्तानों में वह चमत्कारों को इसलिए बन्द कर देता है क्योंकि वे (१७) अविश्वास में दुर्बल हो जाते हैं और उचित रास्ते को त्याग कर उस परमेश्वर को भूल जाते हैं जिस पर उनको विश्वास करना चाहिए।

२१.सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि कुछ भी सन्देह न (१८) कर के जो भी कोई मसीह में विश्वास करेगा वह मसीह के नाम पर पिता से जो कुछ मांगेगा वह उसे दिया जाएगा; यह वचन सब के लिए है यहां तक कि पृथ्वी के छोरों तक यह वचन दिया गया है।

२२. क्योंकि सुनो, मसीह के (१९) जिन शिष्यों को जगत में रहने के लिए रोक लिया गया था और (२०) जो सब शिष्य भीड़ के निकट थे, उनसे परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने इस तरह कहाः तुम जगत के हर एक स्थान में जाओ और हर एक प्राणियों में इंजील का प्रचार करो।

२३. और जो विश्वास करेगा और (२१) बपतिस्मा लेगा, वह बचा लिया जाएगा, और जो विश्वास नहीं करेगा, उसकी अधोगति होगी;

२४. और जो विश्वास करेंगे वे ये (२२) संकेत दिखा सकेंगे—वे मेरे नाम पर शैतान को निकाल बाहर करेंगे; वे नई भाषाएं बोलेंगे, हाथों में सर्प उठा लेंगे, और अगर वे विषपान कर लेंगे तब भी उनकी कोई हानि न होगी; वे अपने हाथों को रोगियों के ऊपर धरेंगे और रोगी स्वास्थय लाभ कर लेंगे;

२५. और जो कोई बिना किसी प्रकार का सन्देह किए ही मेरे नाम पर विश्वास करेगा, उसको मैं जगत के कोने-कोने तक अपने हर एक शब्द को प्रमाणित करूंगा।

२६. और अब सुनो, प्रभु के कामों के विपरीत कौन खड़ा हो सकता है? उसकी बातों का कौन निषेध कर सकता है? प्रभु की असीम शक्ति के प्रतिकूल कौन उठ सकता है? प्रभु के कामों की अवहेलना कौन कर सकता है? मसीह के बच्चों का कौन तिरस्कार कर सकता है? सुनो, तुम सब जो प्रभु के कामों का तिरस्कार करने वाले हो, तुम (२३) आश्चर्य करोगे, और नष्ट हो जाओगे।

२७. और हे लोगों, तब तुम तिरस्कार मत करो, और सन्देह में मत पड़ो, परन्तु प्रभु की वाणी को सुनो, और तुम्हे जिस किसी बात की आवश्यकता हो उसे पिता से यीशु के नाम पर मांगो। सन्देह मत करो परन्तु विश्वास करो और प्राचीन काल की तरह प्रभु के पास अपने पूरे हृदय के साथ आना आरम्भ करो और अपनी मुक्ति को भय और उसके सामने कांपते हुए आओ।

२८. परीक्षा काल में बुद्धिमान् रहो; अपने ऊपर से सभी अशुद्ध बातों को उतार बहाओ अपनी वासनाओं को पूरा करने की याचना मत करो, परन्तु दृढ़ता के साथ यह याचना प्रकट करो कि तुम किसी भी प्रकार के लालच में नहीं पड़ोगे, और सच्चे और चेतन परमेश्वर की सेवा करोगे।

२९. सावधान रहो जिससे कि अयोग्यता में न (२४) बपतिस्मा ले लो; इस बात से भी सावधान रहो कि (२५) आयोग्यता में ही दाख रस और रोटी के संस्कार में भाग न ले बैठो; हर एक काम योग्यता में रहकर करने का ध्यान रखो और चेतन परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के नाम पर करो; और अगर तुमने यह किया (२६) और अन्त तक सहनशील बने रहे, तब तुम को किसी भी तरह से बहिस्कृत नहीं किया जाएगा।

३०. सुनो, मैं तुमसे उसी तरह बोल रहा हूं मानो मैं (२७) मृत हो कर बोला होता; क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे शब्दों को सुनोगे।

३१. मेरी त्रुटियों के कारण न तो तुम मुझे दोषी ठहराओ और न मेरे पिता की त्रुटियों के कारण मेरे पिता को दोषी ठहराओ और न ही उसको दोषी ठहराओ जो उससे भी पूर्व लिख चुके हैं; परन्तु परमेश्वर को धन्यवाद दो कि उसने (२८) हमारी त्रुटियों को तुम पर प्रकट किया है जिससे कि तुम हमसे और अधिक विवेकी बन सको।

(१७) देखो ४, ३ नफी १७, देखो ३. (१८) ३ नफी १८:२०. (१९) देखो ४, ३ नफी २८. (२०) देखो ३, ३ नफी १२. (२१) देखो २१, २ नफी ९. (२२) देखो ३ और मरकुस १६, १७, १८. (२३) पद्य २७. (२४) देखो २१, २ नफी ९. (२५) देखो २०, ३ नफी १८. (२६) देखो ८; २ नफी ३१. (२७) देखो ३३, मार० ८. (२८) देखो २३, मार० ८.

ईश्वी ४००-४२१ के मध्य

३२. और अब सुनो, हमने इस अभिलेख को अपने ज्ञान के अनुसार उस लिपि में लिखा जो हम लोगों में (२९) मिश्रियों की संशोधित लिपि मानी जाती है और जो हमें अपने पूर्वजों से मिली थी और हमने उनमें अपनी भाषा के अनुसार परिर्वतन किया।

३३. और अगर हमारी पटियां (३०) पर्याप्त बड़ी होतीं तब हम इब्रानी में लिखते; लेकिन इब्रानी लिपि में भी हमने (३१) परिवर्तन किया है; और अगर हम इब्रानी भाषा में लिखते, तब सुनो, तुम्हें हमारे अभिलेख में (३२) कोई त्रुटि नहीं मिलती।

३४. लेकिन जिन बातों को हमने लिखा उन्हें प्रभु जानते हैं; हमारी भाषा को दूसरे कोई भी लोग नहीं जानते; इसलिए इसके अनुवाद के लिए उसने (३३) साधन तैयार किए हैं।

३५. और ये बातें इस कारण लिखी गई हैं जिससे कि हम अपने उन बन्धुओं के रक्त से रंगे अपने वस्त्रों को उतार सकें, जो कि (३४) अविश्वास में दुर्बल हो गए थे।

३६. और सुनो, हमने अपने बन्धुओं के लिए ये जो इच्छायें की हैं, यहां तक कि मसीह में विश्वास करनें में उनको पुनर्स्थापित करना (३५) उन सब सन्तों की प्रार्थनाओं के अनुसार ही होगा जो कि इस देश में रह चुकें हैं।

३७. और प्रभु यीशु मसीह उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर उनके विश्वास के अनुसार दे; और पिता परमेश्वर उस (३६) शर्त को स्मरण रखे जिसे उसने इस्राएल के घराने वालों से की थी; और उन्हें सदैव के लिए मसीह के नाम पर विश्वास के द्वारा आशीर्वाद दे। आमीन।

एथर की पुस्तक

यारदाइयों का वह अभिलेख जिसे उन चौबीस पटियों से लिया गया जिन्हें राजा मूसायाह के काल में लिमही के लोगों के द्वारा पाया गया था।

अध्याय १

भविष्यवक्ता एथर की वंशावली—महान मीनार—यारद और उसका भाई—उनकी भाषा भ्रष्ट नहीं हुई—प्रभु के निर्देशानुसार देशान्तरगमन की तैयारी करना।

१. और अब मैं, मरोनी, उन प्राचीन निवासियों का विवरण दे रहा हूं जो कि प्रभु के हाथ से इस (१) उत्तर के देश में नष्ट कर दिए गए थे।

२. और मैं अपने इस विवरण को उन (२) चौबीस पटियों में से ले रहा हूं जिन्हें लिमही के लोगों ने पाया था और जिन्हें एथर की पुस्तक कहा जाता है।

३. और जैसा कि मैं सोचता हूं अभिलेख का प्रथम भाग (३) जगत की रचना और आदम के विषय में और उस समय से ले कर उस महान (४) मीनार के समय तक यहूदियों में जो प्रेरणाएं हुई थीं उन सब के विषय में बतलाता है।

४. इसलिए आदम के समय से लेकर उस समय तक जो कुछ हुआ उसे मैं नहीं लिख रहा हूं; परन्तु वह सब इन पटियों पर अंकित है; और जो भी कोई इन्हें पाएगा, उसे इसका पूरा विवरण प्राप्त करने का सामर्थ्य प्राप्त होगा।

५. लेकिन सुनो, मैं पूरा विवरण नहीं लेकिन (५) एक अंश मात्र देता हूं जो कि उस (६) मीनार से ले कर उनके नष्ट होने के समय तक का है।

६. मैं इस प्रकार अपना विवरण देता हूं:— जिसने इस अभिलेख को लिखा वह एथर था और वह कोरियन्दन का वंशज था।

(२९) देखो १, १ नफी १. (३०) देखो १, मार० १, देखो मार० ८. (३१) १ नफी १:२. (३२) देखो २३, मों० ८.
(३३) मू० ८:१३-१८, ए० ३:२३, २८ सि० शर्त० १७:१. (३४) देखो ४, १ नफी २. (३५) देखो १६, मार० ५.
(३६) देखो १०, ३ नफी १५. एथर की पुस्तक. (१) देखो १६, अल० ४६. (२) देखो ११, मू० ८. (३) मू० २८:१७.
(४) पद्य ५, ३३, ओम० २०-२२, मू० २८:१७. (५) एथ० ३:१७, १५:३३. (६) देखो ८.

७. कोरियन्दन मोरन का पुत्र था।

८. और मोरन एथम का पुत्र था।

९. और एथम अहाह का पुत्र था।

१०. और अहाह सेठ का पुत्र था।

११. और सेठ शिबलन का पुत्र था।

१२. और शिबलन कोम का पुत्र था।

१३. और कोम कोरियण्टम का पुत्र था।

१४. और कोरियण्टम अमनीगदा का पुत्र था।

१५. और अमनीगदा आरोन का पुत्र था।

१६. और आरोन उस हेथ का वंशज था जो कि हारथम का पुत्र था।

१७. और हारथम लिब का पुत्र था।

१८. और लिब किश का पुत्र था।

१९. और किश कोरम का पुत्र था।

२०. और कोरम लिवी का पुत्र था।

२१. और लिवी किम का पुत्र था।

२२. और किम मोरियन्दन का पुत्र था।

२३. और मोरियन्दन रिप्लीकिश का वंशज था।

२४. और रिप्लीकिश सेज का पुत्र था।

२५. और सेज हेथ का पुत्र था।

२६. और हेथ कोम का पुत्र था।

२७. और कोम कोरियण्टम का पुत्र था।

२८. और कोरियण्टम अमर का पुत्र था।

२९. और अमर ओमर का पुत्र था।

३०. और ओमर सूले का पुत्र था।

३१. और सूले किब का पुत्र था।

३२. और किब उस ओरिहा का पुत्र था जो कि यारद का पुत्र था;

३३. जो यारद अपने परिवार, भाई और भाई के परिवार, और कुछ लोगों और उनके परिवार वालों के साथ उस (७) महान मीनार से उस समय आया था जब कि प्रभु ने लोगों की भाषा में (८) गड़बड़ी उत्पन्न कर दी थी और क्रोध में प्रतिज्ञा की थी कि (९) उनको सारी धरती के ऊपर तितर-बितर कर दिया जाएगा; और प्रभु की वाणी के अनुसार ही लोग बिखर गए थे।

३४. और यारद का भाई शरीर से भारी और बलवान व्यक्ति था और वह प्रभु का भारी कृपापात्र भी था, इस कारण उसका भाई यारद ने अपने भाई से कहा: प्रभु को पुकारो, जिससे कि वह हम लोगों में (१०) गड़बड़ी न करे जिससे कि हम अपनी ही भाषा को समझने में असमर्थ न हो सकें।

३५. और ऐसा हुआ कि यारद के भाई ने प्रभु को पुकारा, और प्रभु ने यारद पर दया की; इसलिए प्रभु ने यारद की भाषा में कोई गड़बड़ी न की; और यारद और उसके भाई में कोई गड़बड़ी न हुई।

३६. तब यारद ने अपने भाई से कहा: प्रभु को फिर से पुकारो जिससे कि सम्भवतः वह उन पर से अपना क्रोध हटा ले जो कि हमारे मित्र हैं जिससे वह उनकी भाषा में गड़बड़ी न करे।

३७. और ऐसा हुआ कि यारद के भाई ने प्रभु को पुकारा, तब प्रभु ने उनके मित्रों और उनके परिवार वालों पर भी कृपा की और उनमें (११) कोई गड़बड़ी न हुई।

३८. और यारद ने अपने भाई से फिर कहा: जाओ प्रभु से पूछो क्या वह हमें (१२) देश से बाहर निकाल देगा, और अगर वह हमें बाहर कर देगा तब उससे पुकार कर पूछो कि हम कहां जांए। कौन जाने प्रभु हमें शायद संसार के सब से अच्छे देश में लेजाए? और अगर ऐसा है तब हम प्रभु के प्रति इमानदार रहें, जिससे कि हम उस देश को पैतृक देश के रूप में पाएं।

३९. और यारद के भाई ने उसी तरह प्रभु को पुकारा, जैसा कि यारद के मुख से शब्द कहे गए थे।

४०. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने यारद के भाई की पुकार सुनी, और उन पर दया की और उनसे कहा:

४१. जाओ तुम अपने हर एक प्रकार के नर और मादा पशुओं को, और हर तरह के धरती के बीज एकत्रित करो, (१३) अपने परिवारों को; अपने भाई यारद और उसके परिवार को, अपने (१४) मित्रों और उनके परिवारों को, और यारद

(७) देखो ४. (८) पद्य ३४-३७ उत्पति ११:७, ९ ओम० २२, मू० २८:१७. (९) पद्य ३८:४३, ओम० २२, मो० २८:१-७, उत्पति ११:८-९. (१०) देखो ८. (११) देखो ८. (१२) देखो ९. (१३) ए० ६:२०. (१४) एथ० ६:१६.

के मित्रों और उनके परिवारों को एकत्रित करो।

४२. और जब यह कर चुको तब तुम उनके आगे हो कर उस घाटी में जाओ जो कि उत्तर की ओर है। और वहां मैं तुमसे मिलूंगा और तुम्हारे आगे (१५) उस देश में चलूंगा जो कि संसार का सबसे श्रेष्ठ चुना हुआ देश होगा।

४३. और वहां मैं तुमको और तुम्हारे वंश को आशीर्वाद दूंगा, और तुम्हारे, तुम्हारे भाई के और तुम्हारे साथ वहां जाने वालों के वंश को एक महान राष्ट्र बना दूंगा। और जो राष्ट्र मैं तुम्हारे वंश से खड़ा करूंगा उससे (१६) बढ़ कर सारी पृथ्वी पर दूसरा नहीं होगा। इस तरह मैं तुम्हारे साथ करूंगा क्योंकि तुमने इतने लम्बे समय तक मुझे पुकारा है।

अध्याय २

निमरोद की घाटी में—डेसरट मधुमक्खियां—यारद के भाई से प्रभु का फिर से बातें करना—आनन्द देश के विषय में दिव्य व्यवस्था—मोरियं-कूमर नामक स्थान—नौकाओं का बनाया जाना—

१. और ऐसा हुआ कि यारद और उसका भाई, और उनके परिवार, यारद और उसके भाई के मित्र और उनके परिवार (१) हर एक तरह के नर और मादा पशुओं को जिन्हें उन्होंने एक साथ एकत्रित किया था, साथ ले कर उस घाटी में गए जो कि (२) उत्तर की ओर थी।: इस घाटी का नाम निमरोद था जो कि एक महाबली शिकारी के नाम पर था।

२. और उन्होंने हवा के पक्षियों को पकड़ने के लिए फन्दे लगाए और उन्हें पकड़ा; और एक ऐसा पात्र बनाया जिसमें वे अपने साथ जल की मछलियों को ले गए।

३. और वे अपने साथ डेसरट भी ले गए जिसका अनुवाद करने से मधु मक्खी अर्थ होता है; इस तरह वे अपने साथ मधुमक्खियों के झुण्ड, और जो कुछ धरती के ऊपर था और (३) हर प्रकार के बीजों को ले गए।

४. और ऐसा हुआ कि जब वे (४) निमरोद की घाटी में आए तब प्रभु ने आ कर (५) यारद के भाई से बातें कीं; और (६) वह बादलों में था, और यारद का भाई उसे देख नहीं सका।

५. और प्रभु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे जंगल में ऐसे स्थान पर जाएं जहां कि मनुष्य पहिले कभी नहीं गया था। और ऐसा हुआ कि (७) प्रभु उनके आगे-आगे चला और उसने बादल में स्थित हो कर उनसे बातें कीं और उन्हें किस ओर जाना चाहिए यह निर्देश किया।

६. और उन्होंने जंगल में हो कर यात्रा की और नौकाएं बनाईं जिन में उन्होंने लगातार प्रभु के हाथ द्वारा दिखलाए मार्ग पर कई जलों को पार किया।

७. प्रभु की इच्छा नहीं थी कि वे समुद्र को पार करके मरुभूमि में ठहरते, परन्तु वह चाहता था कि वे आगे बढ़ कर (८) उस आनन्द देश में जाएं जो कि अन्य सभी देशों से श्रेष्ठ चुना हुआ देश था और जिसे प्रभु परमेश्वर ने धार्मिक लोगों के लिए सुरक्षित रखा था।

८. और उसने रोष के साथ यारद के भाई से कहा था कि आनन्द के देश पर उस समय से सदैव के लिए जो लोग अधिकार रखेंगे वे उसकी सेवा में रहेंगे जो कि सच्चा और एकमात्र परमेश्वर है अन्यथा जब उन पर उसका पूर्ण क्रोध पड़ेगा तब वे मिटा दिए जाएंगे।

९. और अब हम इस देश के विषय में परमेश्वर की (१०) व्यवस्था को देख सकते हैं कि यह एक आनन्दमय प्रतिज्ञा का देश है; और जो भी जाति इस पर अधिकार रखेगी, वह परमेश्वर की सेवा करेगी अन्यथा जब उसका पूर्ण क्रोध उन पर पड़ेगा तब वे नष्ट कर दिए जाएंगे। और उसका पूर्ण क्रोध उन पर उस समय पड़ेगा जब कि उन का पाप का घड़ा भर जाएगा।

१०. क्योंकि सुनो, यह देश है जो सब देशों में से सर्वोपरि चुना गया है इसलिए जो भी इस देश पर अधिकार रखेंगे उन्हें परमेश्वर की सेवा

(१५) देखो १, १ नफी २. (१६) ए० १५:२. अध्याय २. (१) ए० १:४१, ६:४, ६:१८, १६. (२) ए० १:४१. (३) ए० १:४२. (४) पद्य १. (५) ए० १:४२. (६) पद्य ५, १४. (७) १:४२. (८) पद्य ८, १२-१५, देखो १५, ए० १ और देखो ४, २ नफी १. (१०) पद्य १०-११, देखो ९.

करनी चाहिए अन्यथा नष्ट कर दिए जाएंगे; क्योंकि परमेश्वर की यह व्यवस्था सदा के लिए है। और जब तक देश की सन्तानों के पाप के घड़े भरेंगे नहीं तब तक वे नष्ट नहीं होंगे।

११. हे अन्य जातियो, यही बात तुम्हारे लिए भी है, जिससे कि तुम भी परमेश्वर की व्यवस्था को जानो, और पश्चात्ताप करो और अपने पापों के घड़े के भरने तक पाप कर्म करते न रहो जिससे की परमेश्वर के पूरे क्रोध को अपने ऊपर उसी तरह न लाओ जैसा कि इस देश के वासियों ने किया था।

१२. सुनो, यह चुना हुआ देश है, और जिस किसी जाति के अधिकार में यह देश होगा उस जाति ने अगर देश के उस परमेश्वर की सेवा की, जो कि यीशु मसीह है और जो कि हमने जो कुछ लिखा उससे स्पष्ट विदित है, तब वह दासता, बन्दी अवस्था और आकाश के नीचे सभी अन्य राष्ट्रों से (११) मुक्त रहेगा।

१३. और अब मैं अपने अभिलेख को आगे बढ़ाता हूं; क्योंकि सुनो, ऐसा हुआ कि प्रभु यारद और उनके बन्धुओं को उस महान समुद्र के पास लाया जो कि देशों को विभक्त करता है। और जब वे समुद्र तट पर आए तब उन्होंने अपने तम्बुओं को खड़ा किया; और उन्होंने उस स्थान का नाम मूरियकूमर रखा, और वहां उन्होंने तम्बुओं में चार वर्ष निवास किया।

१४. और ऐसा हुआ कि चौथे वर्ष के अन्त में प्रभु यारद के भाई के पास फिर से आया और (१२) एक बादल में खड़े हो कर उससे बातें कीं। और प्रभु ने तीन घण्टों तक यारद के भाई से बातें कीं और उसको झिड़की दी क्योंकि वह प्रभु के नाम को पुकारना भूल गया था।

१५. और यारद के भाई ने अपने अनुचित किए कर्म पर पश्चात्ताप किया, और अपने साथ के अपने बन्धुओं के लिए उसने प्रभु को पुकारा। और प्रभु ने उससे कहा: मैं तुमको और तुम्हारे बन्धुओं को उनके किए पापों के लिए क्षमा करूंगा; लेकिन अब आगे और पाप मत करना क्योंकि तुम्हें स्मरण रखना चाहिए कि मेरी आत्मा सदैव मनुष्य के साथ उद्यम नहीं करेगी; इसलिए अगर तुम पाप करते हुए अपने पापों के घड़े को भर दोगे तब तुमको प्रभु की उपस्थिति से अलग हटा दिया जाएगा। और उस देश पर मेरे (१३) यही विचार रहेंगे जिसे मैं तुम्हारे पैतृक देश के लिए तुम्हें दूंगा; क्योंकि यह चुना हुआ सर्वोपरि देश होगा।

१६. और प्रभु ने कहा: जाओ परिश्रम करो और जिस प्रकार तुमने (१४) अभी तक नौकाएं बनाई थीं उसी प्रकार की नौकाओं को बनाओ। और ऐसा हुआ कि यारद का भाई और उसके बन्धु ने परिश्रम किया और उसी प्रकार की नौकाएं बनाई जैसे कि प्रभु के निर्देशनानुसार पहले बना चुके थे। ये नौकाएं छोटी और उसी प्रकार हलकी थीं जैसे जल के ऊपर हंस हलके होते हैं।

१७. और वे इस प्रकार से (१५) सुरक्षित बनी थीं जिससे इनके अन्दर उसी प्रकार जल प्रवेश नहीं कर सकता था जिस प्रकार एक थाल के अन्दर जल नहीं प्रवेश कर सकता; और उनके पैंदे थाल की तरह दृढ़ थे; और उनके बगली भी थाल की तरह दृढ़ थीं और दोनों छोर नुकीले थे; उनके ऊपरी भाग भी थाल की तरह ही दृढ़ थे; उनकी लम्बाई वृक्ष के समान थी; और उनके द्वार जब बन्द किए जाते तब वे भी थाल के समान दृढ़ थे।

१८. और ऐसा हुआ कि यारद के भाई ने प्रभु को पुकार कर कहा: हे प्रभु, आप ने मुझे जिस काम को करने की आज्ञा दी थी उसे मैंने कर लिया, और आप के निर्देशनानुसार मैंने नौकाएं बना ली हैं।

१९. और हे प्रभु सुनो, उनमें उजियाला नहीं है; हम उसे किस ओर ले जाएं? और उन में हम मर जाएंगे, क्योंकि हम अन्दर सांस नहीं ले सकते इसका यह कारण है कि उसके अन्दर केवल अन्दर की हवा ही है; इस कारण हम मर जाएंगे।

२०. और प्रभु ने यारद के भाई से कहा: सुनो, ऊपर तुम एक छिद्र बनाओ और (१७) पैंदे में भी एक छेद बना दो; और जब तुम्हें हवा की आवश्यकता हो तब छेद को खोल कर हवा ले लो। और जब पानी अन्दर आने लगे तब सुनो, तुम छेद को बन्द कर दो जिससे कि तुम पानी में डूब न मरो।

(११) १ नफी १३:१९, २ नफी १:७, १०:१०-१४. (१२) देखो ६. (१३) देखो ६. (१४) पद्य ६. (१५) ए० ६:७. (१७) पद्य २४, २५.

२१. और यारद के भाई ने प्रभु की आज्ञानुसार ही किया।

२२. और उसने फिर प्रभु को यह कहते हुए पुकारा: हे प्रभु तुमने जैसे मुझे आज्ञा दी थी, मैंने वैसा ही किया है; और मैंने अपने लोगों के लिए नौकाएं तैयार कर ली हैं परन्तु उनमें प्रकाश नहीं है। हे प्रभु सुनो, क्या आप हमें इस महान जल-राशि को अन्धेरे में ही पार कराएंगे।

२३. और यारद के भाई से प्रभु ने कहा: तुम क्या चाहते हो कि मैं करूं जिससे तुम्हारी नौकाओं में प्रकाश हो? क्योंकि सुनो, तुम खिड़कियां नहीं रख सकते, क्योंकि वे टुकड़े टुकड़े टूट जाएंगी, और न ही तुम अपने साथ आग ले जाना क्योंकि तुम्हें आग के प्रकाश में हो कर यात्रा नहीं करनी है।

२४. (१८) समुद्र के बीच में तुम्हें तिमिगिल महामच्छ की तरह रहना है क्योंकि बड़े-बड़े पर्वताकार तरंगें तुमसे टकराएंगी। फिर भी मैं तुमको सागर की गहराई से ऊपर लाऊंगा; क्योंकि वायु मेरे मुख से निकलती है और वर्षा और बाढ़ भी मैं ही भेजता हूं।

२५. और सुनो, मैं तुमको इन सब का सामना करने के लिए तैयार करता हूं, क्योंकि समुद्र की इस गहराई को तब तक तुम पार नहीं कर सकते जब तक कि सागर की तरंगों और बहते हुए हवा, और जो जल प्रवाह मिलेंगे उनका सामना करने के लिए मैं तुमको तैयार नहीं करता। इसलिए तुम अगर समुद्र की गहराई में समा गए तब तुम्हें प्रकाश देने के लिए मुझे कुछ करने से क्या लाभ होगा।

अध्याय ३

प्रभु की उंगली—यीशु मसीह की आत्मा का अपने आपको यारद के भाई को दिखाना—चमकीले पत्थर—अनुवादक—एक और अभिलेख आएगा।

१. और ऐसा हुआ कि यारद का भाई (जो नौकाएं बनाई गई थीं उनकी संख्या आठ थीं) उस पर्वत पर गया जिसको अधिक उंचाई के कारण शीलम कहते थे, और एक चट्टान से गला कर सोलह छोटे पत्थरों को तैयार किया जो कि शीशे के समान पारदर्शक और सफेद और स्वच्छ थे। उन्हें वह अपने हाथों से पर्वत की चोटी पर ले गया और फिर से प्रभु को पुकारते हुए कहा:

२. हे प्रभु, तुमने कहा था (२) कि हम जल प्रवाह से घिरे हुए होंगे। अब सुनो, हे प्रभु अपने आगे अपने सेवक की त्रुटियों से क्रोध न करना; क्योंकि हम जानते हैं कि आप पवित्र हैं और स्वर्गों में निवास करते हैं, और हम आप के सामने अयोग्य ठहरते हैं; और मनुष्य के (३) पतन से लगातार हमारे स्वभाव में बुराई आ गई है; फिर भी हे प्रभु, तुमने हमें यह आज्ञा दी है कि हम तुम्हें पुकारें, जिससे कि हम अपनी इच्छानुसार आप से प्राप्त करें।

३. हे प्रभु सुनो, हमारे पापों के कारण तुमने हमें मारा, और हमें यहां लाये; और हमने कई वर्षों तक इस वन में निवास किया; फिर भी आप हम पर दयावान बने रहे। हे प्रभु, दया कर मेरी ओर देखो, और अपने इन लोगों पर से अपने क्रोध को हटा लो और उन्हें इस भयंकर गहराई को अन्धकार में मत पार करने दो; परन्तु इन (४) वस्तुओं को देखो जिन्हें चट्टान से गला कर मैंने तैयार की है।

४. और हे प्रभु, मैं जानता हूं कि मनुष्य के लिए आप जो कुछ करना चाहेंगे वह कर सकते हैं, क्योंकि आप सर्वशक्तिमान हैं; इसलिए हे प्रभु, इन पत्थरों को (५) अपनी उंगली से छू दो और इन्हें ऐसा कर दो कि अन्धकार में चमकें; और ये उन नौकाओं में चमकें जिन्हें हमने तैयार किया है, जिससे समुद्र को पार करते समय हमें प्रकाश मिलता रहे।

५. हे प्रभु, सुनो, तुम यह कर सकते हो। हम जानते हैं कि आप अपनी महा-शक्ति दिखा सकते हैं, जो कि मनुष्य की समझ के अनुसार देखने में साधारण लगती है।

६. और ऐसा हुआ कि जब यारद के भाई ने ये शब्द कहे, तब सुनो, प्रभु ने अपने हाथ को बढ़ा

(१८) पद्य २५, ए० ६:६, ७, १०. अध्याय ३. (२) ए० २:२४, २५. (३) देखो ६, मार० ९. (४) पद्य १, ४, ६, ए० ६:२, ३, १०. (५) पद्य ६-९, १९, ए० १२:१९-२१. (६) पद्य १९:२०, ए० १२:१९-२१. (७) देखो ५.

कर उन पत्थरों को एक एक कर अपनी उंगली से छूआ। और तब यारद के भाई की (६) आंखों का पर्दा उठ गया और उसने प्रभु की उंगली को (७) देखा, जो कि मनुष्य की उंगली की तरह रक्त-मांस की थी; और यारद का भाई प्रभु के सामने गिर पड़ा, क्योंकि वह भयभीत हो उठा था।

७. और प्रभु ने देखा कि यारद का भाई धरती पर गिर गया है; तब प्रभु ने उससे कहा: उठो, तुम क्यों गिर पड़े हो?

८. और उसने प्रभु से कहा: मैंने प्रभु की उंगली को देखा और मैं इस बात से भयभीत हो उठा कि वह मुझे कहीं मार न दे; क्योंकि मैं नहीं जानता था कि प्रभु रक्त-मांसयुक्त है।

९. और प्रभु ने उसे कहा: अपने विश्वास के कारण तुमने देखा कि मैं रक्त-मांस भी धारण कर सकता हूं; और जितने अधिक विश्वास के साथ तुम आए हो उतने विश्वास के साथ पहले कभी भी कोई नहीं आया था; अगर ऐसा नहीं होता तब तुम मेरी अंगुली नहीं देख सकते थे। क्या तुम और कुछ नही देखते?

१०. और उसने उत्तर दिया: नहीं; प्रभु, आप मुझे दर्शन दें।

११. और प्रभु ने उससे कहा: मैं जो बातें कहूंगा उन पर क्या विश्वास करोगे?

१२. और उसने उत्तर दिया: हां, प्रभु, मैं जानता हूं कि तुम सत्य कहते हो, क्योंकि तुम सत्य के परमेश्वर हो और असत्य तुम कह नहीं सकते।

१३. और जब उसने ये शब्द कहे तब सुनो, प्रभु ने उसको दर्शन दिया और कहा: इन बातों को जानने के कारण (८) पतन से तुमको मुक्त किया जाता है: इसलिए तुमको वापस मेरी उपस्थिति में लाया जाता है; इसलिए मैंने अपने आप को तुम्हें दिखाया है।

१४. सुनो, मैं वही हूं, जो कि अपने लोगों को मुक्त करने के लिए (९) सृष्टि की नींव के समय से तैयार था। सुनो, मैं यीशु मसीह हूं। (१०) पिता (११) पुत्र मैं ही हूं। मुझी से सारा मनुष्य समाज जो मेरे नाम पर विश्वास करेंगे, वे अनन्त के लिए प्रकाश पाएंगे; और वे मेरे पुत्र और पुत्रियां बन जाएंगे।

१५. मैंने (१२) पहले कभी भी अपने आपको मनुष्य को नहीं दिखाया जिसे मैंने उत्पन्न किया, क्योंकि कभी भी किसी ने तुम्हारी तरह मुझ पर विश्वास नहीं किया। क्या तुम देख सकते हो कि मेरे ही स्वरूप के बनाए गए हो? हां, आरम्भ में (१३) सभी मनुष्य मेरे स्वरूप में बनाए गए थे।

१६. सुनो, तुम जो इस शरीर को देख रहे हो, यह मेरी आत्मा (१४) का शरीर है; और मैंने (१५) मनुष्य को अपनी आत्मा के शरीर के स्वरूप में ही उत्पन्न किया है; और जिस प्रकार मैं तुम्हारे सामने आत्मा से प्रकट होता हूं, उसी तरह मैं अपने लोगों के सामने शरीर से प्रकट होऊंगा।

१७. जैसे मैं, मरोनी, ने कहा कि जो बातें लिखी गई हैं उनका (१६) पूरा ववरण नहीं दिया जा सकता, इस लिए इतना कहना पर्याप्त होगा कि यीशु ने इस व्यक्ति को आत्मा के रूप में उसी प्रकार से और उसी तरह के शरीर में दर्शन दिए जैसे कि नफायटियों को दर्शन दिए थे।

१८. और उसने उसको उसी तरह उपदेश दिया जैसे कि उसने नफायटियों को उपदेश दिया था; और यह सब इसलिए कि यह व्यक्ति जान सके कि वह परमेश्वर था क्योंकि प्रभु ने इस व्यक्ति को अनेक महान काम कर दिखाए थे।

१९. और इस व्यक्ति के ज्ञान के कारण उसे (१८) आवरण के अन्दर देखने से रोका नहीं जा सका और उसने यीशु की (१९) उंगली को देखा, जिसे देख कर (२०) भय से वह गिर पड़ा; क्योंकि वह जान गया कि वह प्रभु की उंगली थी; और उसे अब और दुविधा न रही क्योंकि वह कोई ऐसी बात नहीं जानता था जो कि संदिग्ध रही हो।

२०. इसलिए परमेश्वर का पूर्ण ज्ञान होने के कारण उसे (२१) आवरण के अन्दर से बाहर

(८) ए० १२:१९,२१. (९) देखो ४, मू० ४. (१०) देखो ३, मू० १५. (११) देखो २, मू० ३. (१२) सि० शर्त १०७:५४. (१३) पद्य १६, मू० ७:२७, अल० १८:३४. (१४) १ नफी ११:११. (१५) देखो १३. (१६) देखो ५, ए० १. (१८) देखो ६. (१९) देखो ५. (२०) पद्य ६. (२१) देखो ६.

रखा न जा सका; इसलिए उसने मसीह को देखा; और उसने उसको (२२) उपदेश दिया।

२१. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने यारद के भाई से कहा: सुनो, तुमने जो कुछ देखा और सुना है उन्हें तुम जगत पर तब तक प्रगट न करना जब तक कि वह (२३) समय नहीं आ जाता जबकि मैं अपने नाम को शरीर से गौरवान्वित करूंगा; इसलिए तुमने जो कुछ देखा और सुना है उसे अमूल्य निधि के रूप में रखना और किसी को भी दिखलाना नहीं।

२२. और सुनो, जब तुम मेरे पास आना तब तुम उन्हें (२४) लिख कर मुहरबन्द कर देना जिससे उनका अनुवाद कोई भी न कर सके; क्योंकि तुम उन्हें ऐसी भाषा में लिखोगे जिससे वे पढ़े न जा सकेंगे।

२३. और सुनो मैं तुम्हें इन (२५) दो पत्थरों को दूंगा और तुम जो कुछ लिखोगे उन्हीं के साथ इन्हें भी मुहरबन्द कर देना।

२४. क्योंकि सुनो, जिस (२६) भाषा में तुम लिखोगे उस में मैंने (२७) गड़बड़ी उत्पन्न कर दी है; इसलिए मेरे अनुसार उपयुक्त समय में जो कुछ तुम लिखोगे (२८) उसका रहस्य मनुष्य की आंखों के सामने ये पत्थर खोलेंगे।

२५. जब प्रभु ने ये बातें कह लीं तब उसने यारद के भाई को पृथ्वी के सभी अतीत के निवासियों को और भविष्य में होने वाले वासियों को (२९) दिखाया; उसने उसकी आंखों से कुछ भी नहीं छिपाया, यहां तक कि जगत के अन्त तक का दृष्य भी नहीं छुपाया।

२६. क्योंकि उसने कई बार उससे कहा था कि अगर वह उस पर विश्वास करेग तब वह उसको सब कुछ दिखला सकेगा—सब कुछ दिखाया जाएगा; इसलिए प्रभु उससे कुछ भी छिप न सका, क्योंकि वह जानता था कि प्रभु उसे सब कुछ दिखा सकते हैं।

२७. और प्रभु ने उससे कहा: ये सब बातें लिखकर मुहरबन्द कर (३०) दो, और मैं इन्हें अपने उपयुक्त समय पर मानव वंश को दिखाऊंगा।

२८. और ऐसा हुआ कि प्रभु (३१) दोनों पत्थरों को जिन्हें उसे दिया गया था, मुहरबन्द करने की और तब तक किसी को भी न दिखाने की आज्ञा दी जब तक कि प्रभु मानव वंश को न दिखाए।

अध्याय ४

यारद के भाई को लिखने की आज्ञा का दिया जाना—मरोनी की गम्भीर चेतावनी—वे लोग शापित हैं जो प्रभु की वाणी का विरोध करते हैं—अच्छे कर्म करने की प्रेरणा परमेश्वर देता है।

१. और प्रभु ने यारद के भाई को आज्ञा दी कि वह (१) पर्वत पर से प्रभु की उपस्थिति में से चला जाए और उन बातों को लिखे जिन्हें उसने देखा था; और ये बातें मानवसमाज के सामने तब तक लाने के लिए (२) मना की गई जब तक कि वह क्रूश पर चढ़ा न दिया जाए; इसी कारण राजा (३) मूसायाह ने उन्हें अपने पास रखा कि जब तक मसीह अपने लोगों को दर्शन न दे दे तब तक वे संसार में न लाए जाएं।

२. और मसीह ने आज्ञा दी कि जब वह अपने आप को अपने लोगों को दिखा चुके तब उसके पश्चात् उनको प्रकट किया जाए।

३. और अब सभी अविश्वास में दुर्बल हो चुके हैं; और लमनायटियों को छोड़ कर कोई बचा नहीं है और वे सब मसीह की इंजील को अस्वीकार कर चुके हैं; इसलिए मुझे आज्ञा मिली है कि मैं उन्हें (४) फिर से धरती में छुपा दूं।

४. सुनो, मैंने इन पटियों पर सब कुछ (५) वही लिखा है जिसे यारद के भाई ने देखा था; और जितनी महान बातें यारद के भाई पर प्रकट की गयी थीं उतनी महान बातें पहले कभी भी किसी पर प्रकट नहीं की गयीं।

५. इसलिए प्रभु ने इन्हें लिखने की आज्ञा मुझे

(२२) पद्य १८. (२३) ए० ४:१, २. (२४) पद्य २७. (२५) देखो १४, मू० ८. (२६) पद्य २२. (२७) देखो ८, ए० १. (२८) देखो १४, मू० ८. (२९) पद्य २६, ए० ४:४. (३०) २ नफी २७:६-२३, मू० २८:११-२०. अल० ३७:२१-३१. (३१) देखो १४, मू० ८. अध्याय ४. (१) ए० ३:१. (२) ए० ३:२१. (३) मू० २८:११-२०. (४) देखो १६, १ नफी १३, मार० ८:१४, मरो० १०:१-२. (५) पद्य ५-७, १३-१६, २ नफी २७:६-११, १५, १७, २१, २२, ए० ५:१.

दी है और मैंने इन्हें लिखा। और उसने मुझे मुहरबन्द करने की आज्ञा दी; उसने मुझे उसके अनुवाद को भी मुहरबन्द करने की आज्ञा दी; इसलिए प्रभु की आज्ञानुसार मैंने (६) अनुवादों को भी मुहरबन्द किया।

६. क्योंकि प्रभु ने मुझसे कहा: वे अन्य जातियों के पास (७) तब तक न जाएं जब तक कि वे अपने पापों पर पश्चात्ताप कर के प्रभु के सामने शुद्ध नहीं हो जाते।

७. और प्रभु कहते हैं कि जिस दिन वे यारद के (८) भाई की तरह विश्वास करने लगेंगे जिससे कि वे मुझ में पवित्र हों, तब मैं उन पर वह प्रकट करूंगा जिसे यारद के भाई ने देखा था, यहां तक कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह, (९) स्वर्गों और पृथ्वी का पिता, कहते हैं कि मैं अपने सभी ज्ञान प्रकाशों को और जो कुछ उनमें है, मैं सब उन पर प्रकट करूंगा।

८. और जो प्रभु की वाणी का विरोध करेंगे (१०) उन्हें शापित होने दो; और जो इन्हें अस्वीकार करेंगे, उन्हें भी शापित रहने दो; क्योंकि यीशु मसीह कहता है कि मैं उनको (११) कोई भी महान बातें नहीं दिखाऊंगा; क्योंकि मैं वहीं हूं जो इन बातों को कहता हूं।

९. और आज्ञा से स्वर्ग खुलते और बन्द होते हैं; और मेरी आज्ञा से (१२) धरती कांपती है और उसके निवासी उसी तरह नष्ट हो जाते हैं जैसे मानो (१३) आग से नष्ट हुए हों।

१०. और जो मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते वे मेरे शिष्यों पर भी विश्वास नहीं करते, और अगर ऐसा हुआ कि मैं मौन हो जाऊं तब तुमको निर्णय करना होगा; क्योंकि तुम्हें यह मालूम हो जाएगा कि अन्तिम दिन को मैं ही बोलूंगा।

११. लेकिन जो कोई इन बातों पर विश्वास करेगा जिन्हें मैं कहता हूं, उसको मैं अपनी आत्मा से (१४) प्रकाशित करने उसके पास आऊंगा और उसे ज्ञान होगा और वह उसका अभिलेख रखेगा। क्योंकि वह मेरी आत्मा के कारण जानेगा कि ये बाते सत्य हैं। क्योंकि उससे लोगों को अच्छे कर्म करने की प्रेरणा मिलती है।

१२. और जो भी कोई बात मनुष्य को अच्छे कर्म करने की (१५) प्रेरणा देती है वह मेरी ओर से ही होती है; क्योंकि अच्छाई अन्य कहीं से नहीं, एकमात्र मेरी ओर से ही होती है। मैं वही हूं जो मनुष्य को हर प्रकार के अच्छे कर्म करने का नेतृत्व करता हूं; जो कोई मेरी बातों पर विश्वास नहीं करेगा वह (१६) मुझ पर विश्वास नहीं करेगा— कि मैं हूं; और जो कोई मुझ पर विश्वास नहीं करेगा वह उस पिता पर भी विश्वास नहीं करेगा जिसने मुझे भेजा है। क्योंकि सुनो, मैं ही (१७) पिता, मैं ही (१८) जगत का प्रकाश, जीवन और सत्य हूं।

१३. हे अन्य जातियो, मेरे पास आओ, और मैं तुमको (१९) बड़ी-बड़ी बातें, और अविश्वास के कारण जो ज्ञान तुमसे छुपा है, वह सब दिखाऊंगा।

१४. हे इस्राएल के घरनो वालो, मेरे पास आओ, और तुम पर यह प्रकट किया जाएगा कि पिता ने तुम्हारे लिए पृथ्वी की नींव के समय से कितने बड़े-बड़े कार्य तुम्हारे लिए कर रखे हैं, जो अविश्वास के कारण तुम्हारे ज्ञान में नहीं आए हैं।

१५. हे इस्राएल के घराने वालो, सुनो, जब तुम अविश्वास के उस पर्दे को फाड़ डालोगे जो कि तुमको भयंकर पाप की स्थिति में, हृदय की कठोरता में, और विवेक से अन्धेपने में रखे हुए है, तब जो (२०) महान और आश्चर्यजनक बातें (२१) पृथ्वी की नींव के समय से तुमसे छुपा कर रखी गई हैं—हां जब तुम पिता को मेरे नाम पर भग्न हृदय और शोकार्त आत्मा से पुकारोगे तब तुम जानोगे कि पिता उस (२२)

(६) देखो १४, मू० ८. (७) पद्य ७:१६, २ नफी २७:७, ८, ११, २१. (८) ए० ३. (९) देखो १, मू० ३, मू० ३:८-४:२, ६:२७, इला० १६:१८. (१०) २ नफी २७:१४, २८:२६, ३०, ३३:११-१५. (११) पद्य १३-१६, ३ नफी २६:६-१२. (१२) इला० १२:८-१८, ३ नफी २६, ३ मार० ५:२३, ९:२. (१३) देखो १, ३ नफी २५. (१४) ए० ५:४, मरो० १०:४,५. (१५) मरो० ७:५-२२, १०:६, ७. (१६) पद्य १०, ३ नफी २८:३४, ३५. (१७) देखो ३, मू० १५. (१८) देखो १३, मू० १६. (१९) देखो ११. (२०) देखो ९, २ नफी २५. (२१) देखो ४, मू० ४. (२२) देखो १०, ३ नफी १५.

बचन को स्मरण रखे हुए है जिसे कि उसने तुम्हारे पिताओं से किया था।

१६. और तब मैंने जो ज्ञान प्रकाश अपने सेवक (२३) यूहन्ना से लिखवाया था, उसका रहस्योद्घाटन सभी लोगों की आंखों के सामने किया जाएगा। याद रखो कि जब तुम इन बातों को घटते देखो, तब तुम यह जान लेना कि उसी घटना में इनका प्रकट होने का समय आ गया है।

१७. इसलिए जब तुम्हें (२४) यह अभिलेख प्राप्त हो जाए तब तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि सारे देश भर में पिता का काम आरम्भ हो चुका है।

१८. इसलिए हे संसार के कोना कोना, पश्चात्ताप करो, मेरे पास आओ, मेरे इंजील पर विश्वास करो, और मेरे नाम पर (२५) बपतिस्मा लो; क्योंकि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा वही बचा लिया जाएगा; परन्तु जो विश्वास नहीं करेगा उसकी अधोगति होगी; और जो मेरे नाम पर विश्वास करेगा उसका अनुकरण (२६) संकेत करेंगे।

१९. और धन्य होगा वह जिसे अन्तिम दिन को मेरे नाम पर ईमानदार पाया जाएगा और उसे (२७) जगत की नींव के समय से तैयार किए गए राज्य में रहने के लिए ऊपर (२८) उठा लिया जाएगा। और सुनो जिसने यह कहा वह मैं ही हूं। आमीन।

अध्याय ५

अपने लिखे लेखों के भविष्य के अनुवादकों के लिए मरोनी की सम्मति।

१. और अब मैं, मरोनी, अपनी स्मृति के अनुसार उन बातों को लिख चुका जिनको लिखने की आज्ञा मुझे मिली थी; और मैंने जिन वस्तुओं को मुहरबन्द किया है उन्हें मैं (२) तुम्हें बता चुका हूं; इसलिए (३) उनका अनुवाद करने के विचार से उनको मत छूओ; क्योंकि ऐसा करना तुम्हें मना किया गया है जब तक कि परमेश्वर के विवेकानुसार उसका समय नहीं आ जाता।

२. और सुनो, तुम इन पटियों को उन्हें दिखा सकोगे (४) जो इस काम को प्रकाश में लाने के लिए तुम्हारी सहायता करेंगे;

३. और यह (५) तीन जनों को परमेश्वर की शक्ति के द्वारा दिखाया जाएगा; जिस से वे जान सकेंगे कि निश्चय ही ये बातें सत्य हैं।

४. और (६) तीन गवाहों के मुख से इसे सत्य सिद्ध किया जाएगा; और तीनों की साक्षियां, और यह कार्य जिसमें (७) परमेश्वर की और उसकी वाणी की शक्ति दिखाई जाएगी, जिसकी साक्षी पिता, पुत्र और पवित्रात्मा हैं—और ये सब अन्तिम दिन को जगत के विरुद्ध साक्षी रूप में खड़े होंगे।

५. अगर ऐसा हुआ कि वे पश्चात्ताप कर के यीशु के नाम पर पिता के पास आए तब उन्हें परमेश्वर के राज्य में ले लिया जाएगा।

६. और अब अगर तुम्हारी समझ के अनुसार इन बातों के लिए मेरे पास कोई अधिकार नहीं है तब तुम स्वयं निर्णय करो; क्योंकि (८) जब तुम मुझे देखोगे और अन्तिम दिन को हम परमेश्वर के सामने खड़े होंगे तब तुम जानोगे कि मेरे पास अधिकार है। आमीन।

अध्याय ६

यारदाइयों की कथा जारीः—चमत्कारी ढंग से उनकी नौकाओं में प्रकाश का होना—समुद्र की गहराई को पार कर आनन्द देश में—लोगों का एक राजा की इच्छा करना—अशुभ की आशंका करते हुए भी नेताओं का बहुमत के आगे झुकना—यारद और उसके भाई की मृत्यु।

१. और अब मैं, मरोनी, यारद और उसके भाई का विवरण दे रहा हूं।

२. ऐसा हुआ कि जिन (१) पत्थरों को यारद के भाई पर्वत पर ले गए थे, उसे जब प्रभु ने तैयार

(२३) १ नफी १४:१८, २८. (२४) ३ नफी २१:१-११, २६-२९. (२५) देखो २१, २ नफी ९. (२६) देखो ५, ३ नफी २९, देखो ३२, मार० ८. (२७) देखो ४, मू० ४. (२८) देखो १६, मू० २३. अध्याय५. (१) देखो ५, ए० ४. (२) २ नफी २७:७-१२. (३) देखो १. (४) देखो ४, २ नफी ११. (५) पद्य ४, देखो ३, २ नफी ११. (६) देखो ५. (७) देखो १५, १ नफी १३, देखो ५, ३ नफी २९, देखो ३२, मार० ८. (८) ३ नफी ११:३२-३६. (९) देखो ७, २ नफी ३३. अध्याय ६. (१) देखो ४, ए० ३.

कर दिया तब यारद का भाई पर्वत पर से उतर कर आया और उन पत्थरों को उन (२) नौकाओं के अन्दर दोनों छोरों पर एक-एक पत्थर रखा जिससे उन नौकाओं के अन्दर प्रकाश होने लगा।

३. इस प्रकार प्रभु ने पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को प्रकाश देने के लिए उन (३) पत्थरों को अन्धकार में चमकाया जिससे कि वे महान जलराशि को अन्धकार में ही पार न करें।

४. और ऐसा हुआ कि उन्होंने अपने और अपने साथ ले जाने वाले सभी (४) पशु-पक्षियों के लिए हर प्रकार के भोजन तैयार किए— और जब उन्होंने ये सब कार्य कर लिया तब वे अपनी नौकाओं के अन्दर गए और अपने आप को अपने प्रभु परमेश्वर को सौंप कर समुद्र में आगे बढ़ना आरम्भ कर दिया।

५. और प्रभु परमेश्वर ने समुद्र के जल पर आनन्द देश की दिशा में (५) प्रचण्ड वायु चलायी; और इस तरह समुद्र की तरंगों के ऊपर हवा के आगे वे उछालें लेने लगे।

६. और ऐसा हुआ कि उनसे पर्वताकार तरंगों के टकराने और प्रचण्ड वेग से हवा के चलने से जो भीषण आंधियां आती थीं उनके कारण वे कई बार सागर की गहराई में समा गए।

७. थाल की तरह (६) दृढ़ और नूह की नाव के समान सुरक्षित होने के कारण उनकी नौकाओं के अन्दर पानी प्रवेश नहीं कर रहा था, जिससे कि उनकी कोई हानि हो, इसलिए जब वे जलमग्न होते तब प्रभु को पुकारते और वह उनको फिर से जल के ऊपर ला देता।

८. और जब तक वे जल के ऊपर थे तब तक आनन्द देश की ओर वायु का प्रवाह कभी भी बन्द न हुआ; और इस तरह वे हवा के द्वारा प्रवाहित हो चले।

९. और उन्होंने प्रभु का यशगान गाया; हां, यारद के भाई ने प्रभु की प्रशंसा के गीत गाए, और उसने सारे दिन प्रभु को धन्यवाद दिया और उसकी बड़ाई की; और जब रात हुई तब भी उन्होंने प्रभु के गुण-गान का अन्त नहीं किया।

१०. इस तरह वे आगे ले जाए गए; और कोई भी सागर का दैत्य उनकी नौकाओं को तोड़ न सका, और न ही तिमिगिल महामच्छ उनको रोक सका; चाहे वे जल के ऊपर हों या जल के नीचे उन्हें बराबर (७) प्रकाश मिलता रहा।

११. इस तरह वे आगे जाते रहे और वे तीन सौ चवालीस दिनों तक जल पर बहते रहे।

१२. और वे (८) आनन्द देश के तट पर उतरे। और जब उन्होंने आनन्द देश की भूमि पर पैर रखा तब पृथ्वी पर झुक कर अपने आप को प्रभु के सामने विनीत किया और उसके सामने उसकी अनन्त कृपा के कारण, आनन्द के आंसू गिराए।

१३. और ऐसा हुआ कि वे भूमि पर जा कर खेत जोतने लगे।

१४. और यारद के चार पुत्र थे जिनके नाम थे जाकोम, जिलगा, महाह् और ओरिह।

१५. और यारद के भाई के पुत्र और पुत्रियां थीं।

१६. और यारद और उसके भाई के मित्रों की संख्या में बाईस व्यक्ति थे और आनन्द देश में पहुंचने से पहिले ही उनके पुत्र पुत्रियां जन्म ले चुके थे; इस प्रकार उनकी संख्या में वृद्धि होने लगी।

१७. और उनको प्रभु के सामने विनीत बन कर चलने की शिक्षा दी गई; और उन्हें ऊपर से भी शिक्षा दी गई।

१८. और ऐसा हुआ कि वे देश में फैलने लगे और भूमि जोत कर अपना निर्वाह करने लगे और उनकी संख्या में वृद्धि होने लगी।

१९. और यारद का भाई वृद्ध होने लगा और उसने जाना कि वह शीघ्र कब्र में चला जाएगा; इसलिए उसने यारद से कहा: हम अपने लोगों को एकत्रित करें जिससे हम उनकी गिनती करें और यह जानें कि हमारे कब्र में जाने से पहिले वे हमसे क्या पाने की (९) इच्छा करते हैं।

२०. इस विचार के अनुसार लोगों को एक साथ एकत्रित किया गया। इस समय यारद के भाई के (१०) बाईस पुत्र और पुत्रियां थीं; और यारद के बारह सन्तानें थीं जिनमें चार पुत्र थे।

२१. और उन्होंने अपने लोगों की गिनती की; और उनकी गिनती करने के पश्चात् उन्होंने यह

(२) ए० ३. (३) देखो ४, ए० ३. (४) देखो ४, ए० २. (५) पद्य ६, ए० २:२४-२५. (६) ए० २:१७, २०.
(७) देखो ४, ए० ३. (८) ए० ७:६, अल० २२:२९-३४. (९) पद्य २१, २२. (१०) ए० १:४१.

जानना चाहा कि उनके कब्र में जाने से पूर्व वे उनसे क्या करवाना चाहते हैं।

२२. तब ऐसा हुआ कि लोगों ने (११) यह इच्छा प्रकट की कि वे अपने किसी पुत्र को उनका राजा नियुक्त कर दें।

२३. और अब सुनो, यह उनके लिए एक गम्भीर विषय था। और यारद के भाई ने उनसे कहा: निश्चय ही यह (१२) दासता की ओर ले जाना होगा।

२४. लेकिन यारद ने अपने भाई से कहा: उनके लिए एक राजा होने दो। इसलिए उसने उनसे कहा: तुम हमारे पुत्रों में से किसी को चाहो अपने लिए एक राजा चुन लो।

२५. और तब ऐसा हुआ कि उन्होंने यारद के सबसे बड़े पुत्र को चुना; और उसका नाम था पगाग। और ऐसा हुआ कि उसने राजा होने से अस्वीकार किया। और लोगों ने उसके पिता को चाहा कि वह उससे आग्रह करे कि वह राजा बन जाए, परन्तु उसके पिता ने ऐसा करना अस्वीकार कर दिया; और उसने लोगों को आज्ञा दी कि राजा बनने के लिए वे किसी पर भी दबाव न डालें।

२६. और तब ऐसा हुआ कि उन्होंने पगाग के सभी भाइयों को चुना परन्तु उन्होंने भी राजा बनना स्वीकार नहीं किया।

२७. यारद के पुत्रों में से एक पुत्र को छोड़कर उन्होंने भी राजा बनना स्वीकार नहीं किया; और (१३) ओरिहा को लोगों के लिए राजा अभिषिक्त किया गया।

२८. और उसने शासन करना आरम्भ किया और लोग प्रगति करने लगे; और वे बहुत ही सम्पन्न हो गए।

२९. और (१४) यारद और उसके भाई मर गए।

३०. और ऐसा हुआ कि ओरिहा प्रभु के सामने विनीत बनकर चलता रहा; और यह स्मरण रखता रहा कि प्रभु ने उसके पिता के लिए कितने महान काम किए थे, और उसने अपने लोगों को भी यह शिक्षा दी कि प्रभु ने उनके पिताओं के लिए कितने महान काम किए थे।

अध्याय ७

ओरिहा का धार्मिक शासन, विद्रोह, बल-प्रयोग और कलह—शूले और कोहर के प्रतिस्पर्धी राज्य—दुष्टता और मूर्तिपूजा—भविष्यवक्ताओं का आना और लोगों का पश्चात्ताप करना।

१. और ऐसा हुआ कि ओरिहा ने देश में सारे जीवन धर्मानुसार शासन किया, और उसका जीवन लम्बा हुआ।

२. उसके भी पुत्र और पुत्रियाँ हुईं; हां, उसके एकतीस बच्चे हुए जिनमें तेइस पुत्र हुए।

३. और ऐसा हुआ कि बुढ़ापे में उसके (१) किब नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। और ऐसा हुआ कि उसके स्थान पर किब ने शासन किया; और किब के (२) कोरिहर नामक पुत्र हुआ।

४. और जब कोरिहर बत्तीस वर्ष का हुआ तब वह अपने पिता से विद्रोह कर (३) निहोर नामक स्थान में रहने लगा; और उसके भी लड़के और लड़कियां हुईं और वे अति सुन्दर हुए जिससे कोरिहर ने बहुत लोगों को अपने पास खींच लिया।

५. और जब उसने एक सेना को एकत्रित कर लिया तब वह (४) मोरन नामक स्थान पर आया जहां कि राजा रहता था और उसने उसे बन्दी बना लिया जिससे यारद के भाई का यह कहना सत्य सिद्ध हुआ कि वे (५) इससे दासता में लाए जाएंगे।

६. यह (६) मोरन देश जहां कि राजा रहता था उस देश के निकट था जिसे नफायटी (७) नीरव देश कहते थे।

७. और ऐसा हुआ कि किब और उसके आदमी उसके पुत्र कोरिहर की दासता में रहे और दासता में ही वह अति वृद्ध हो गया; फिर भी दासता और वृद्धावस्था में उसके शूले नामक पुत्र ने जन्म लिया।

८. अपने भाई के व्यवहार से शूले उस पर

(११) पद्य १६, २१. (१२) ए० ७:५. (१३) पद्य १४, ३० ए० १:३२, ७:१. (१४) पद्य १९. अध्याय ७. (१) पद्य ३: १०, ए० १:३१, ३२. (२) पद्य ३-१५. (३) पद्य ९. (४) पद्य ६, १६, १७ ए० १४:६, ११. (५) ए० ६:२३. (६) देखो ५. (७) देखो ३८, अल० २२.

क्रोधित हुआ। वह बलवान हुआ और निर्णय लेने में भी दृढ़ रहा करता।

९. इसलिए वह ऐप्रेम पहाड़ पर आया, और पहाड़ से गलाकर उसने उन लोगों के लिए (८) लोहे की तलवारें बनाई जिनको वह अपने साथ लाया था; और जब उसने उन लोगों को सशस्त्र कर दिया तब (९) निहोर नगर आया और उसने अपने भाई कोरिहर से युद्ध किया और इस तरह उसने राज्य प्राप्त कर अपने पिता किब को राज्य पर फिर से राजा स्थापित किया।

१०. और जो काम शूले ने किया था, उससे उसके पिता ने प्रसन्न होकर उसको राज्य दे दिया; इसलिए वह अपने पिता के स्थान पर शासन करने लगा।

११. और ऐसा हुआ कि उसने धार्मिकता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करना आरम्भ किया और अपने राज्य का विस्तार उसने सारे देश भर में किया क्योंकि लोगों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हो चुकी थी।

१२. और शूले के भी लड़के और लड़कियां हुईं।

१३. और कोरिहर ने अपने किए गए बहुत से बुरे कर्मों पर पश्चात्ताप किया; इसलिए शूले ने उसे अपने राज्य में अधिकार दिया।

१४. और ऐसा हुआ कि कोरिहर के भी अनेक लड़के और लड़कियां हुईं। उसके लड़कों में एक नूह नाम का पुत्र था।

१५. और ऐसा हुआ कि नूह ने राजा शूले और अपने पिता कोरिहर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और उसने कहोर और अपने भाइयों को और बहुत से लोगों को अपनी ओर कर लिया।

१६. और उसने राजा शूले से युद्ध किया और अपने (१०) प्रथम निवास के स्थान को प्राप्त कर लिया और देश के उस भाग का राजा बन बैठा।

१७. और ऐसा हुआ कि उसने शूले राजा से फिर से युद्ध किया और राजा शूले को बन्दी बनाकर (११) मोरन ले गया।

१८. और जब वह उसे मार डालने वाला था तब शूले के पुत्र रात को नूह के घर में चुपके से घुस गए और उसे मार डाला और कारागार के द्वार को तोड़कर अपने पिता को मुक्त कर लाए और उसको उसके राज्य सिंहासन पर फिर से बैठा दिया।

१९. इस कारण नूह का पुत्र उसके स्थान पर राज्य करने लगा; फिर भी वे दुबारा राजा शूले का कुछ बुरा न कर सके और शूले की प्रजा ने बहुत अधिक उन्नति की और उनकी संख्या में भारी वृद्धि हुई।

२०. इस तरह देश का विभाजन हो गया; और दो राज्य हो गए एक शूले का और दूसरा कोहर का जो नूह का पुत्र था।

२१. और नूह के पुत्र कोहर ने अपने लोगों से शूले के ऊपर आक्रमण करवा दिया और इस युद्ध में शूले ने उनको पराजित कर दिया और कोहर को मार डाला।

२२. और कोहर का एक पुत्र था जिसका नाम निमरोद था; और निमरोद ने कोहर के राज्य को शूले को दे दिया जिससे वह शूले का कृपापात्र हो गया और शूले ने उसके साथ भारी उपकार किया और उसने भी शूले के राज्य में उसकी इच्छानुसार काम किया।

२३. और शूले के शासनकाल में (१२) भविष्यवक्ता आए जिन्हें प्रभु ने भेजा था जो भविष्यवाणी करने और कहने लगे कि लोगों की दुष्टता और मूर्ति पूजा देश पर शाप ला रही है और अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब वे नष्ट कर दिए जाएंगे।

२४. और ऐसा हुआ कि लोगों ने भविष्य-वक्ताओं की निन्दा की और उनकी हंसी उड़ाई। और ऐसा हुआ कि राजा शूले ने उनको न्याय दण्ड दिया जिन्होंने भविष्यवक्ताओं की निन्दा और हंसी की थी।

२५. और उसने सारे देश भर में एक नियम लागू किया जिसमें यह अधिकार दिया कि वे स्वतन्त्रतापूर्वक जहां जाना चाहें वहां जाएं; और इस तरह लोगों को पश्चात्ताप में लाया गया।

२६. और लोगों ने अपने पापों और मूर्ति पूजा के लिए पश्चात्ताप किया जिससे प्रभु ने उनको जीवित छोड़ दिया और वे देश में फिर से

(८) देखो ५, १ नफी १६. (९) पद्य ४. (१०) पद्य १७, देखो ५. (११) देखो ११. (१२) पद्य २४-२६.

प्रगति करने लगे। और ऐसा हुआ कि वृद्धावस्था में शूले के पुत्रियां और पुत्र हुए।

२७. और शूले के शेष जीवन में फिर युद्ध नहीं हुआ; और उसे यह सदा याद रहा कि उनके पिताओं को गहरे समुद्र को (१३) पार कर आनन्द देश में लाने में प्रभु ने उनके लिए कितने महान कार्य किए थे; इसलिए उसने सारा जीवन अपने कर्तव्यों का पालन धार्मिकता के साथ किया।

अध्याय ८

उदार राजा ओमर—सिंहासन पाने के लिए उसके पुत्र यारद का आकिस के साथ षड्यन्त्र करना—कलह और रक्तपात—गुप्त और हत्यारों का दल—इस प्रकार के दलों के विपरीत आधुनिक अन्य जातियों को चेतावनी।

१. और ऐसा हुआ कि उसको ओमर नामक पुत्र हुआ, जिसने उसके स्थान पर शासन करना आरम्भ किया। और ओमर का पुत्र यारद हुआ और यारद के भी पुत्र और पुत्रियां हुईं।

२. और यारद अपने पिता से विद्रोह कर हेथ नामक स्थान में आकर रहने लगा। और ऐसा हुआ कि वह अपने वाक्-पटुता के बल पर चिकनी-चुपड़ी बातों से लोगों को तब तक अपनी ओर खींचता रहा जब तक कि उसने आधे राज्य पर अधिकार न कर लिया।

३. और जब उसने आधे राज्य पर अधिकार कर लिया तब उसने अपने पिता से युद्ध किया और अपने पिता को बन्दी बनाकर ले गया और उससे अपनी सेवा कराई।

४. ओमर ने शासन कर अपने जीवन का आधा भाग दासता में बिताया। उसके पुत्र और पुत्रियां हुईं जिनमें इसरोम और कोरियण्टूमर भी थे।

५. और वे अपने भाई यारद की दुष्टता पर इतने क्रोधित हुए कि उन्होंने एक सेना एकत्रित कर यारद से युद्ध किया। यह लड़ाई रात को उससे लड़ी गई।

६. और जब उन्होंने यारद की सेना के लोगों को मार डाला तब वे यारद को भी मारने ही वाले थे परन्तु उसने अपने प्राण की भीख मांगी और राज्य को अपने पिता को देने को कहा। और ऐसा हुआ कि उन्होंने उसे प्राण दान दिया।

७. राज्य को खोने से यारद को बहुत दुःख हो रहा था क्योंकि उसका हृदय राज्य और सांसारिक यश में लगा हुआ था।

८. यारद की कन्या अति चालाक थी, और अपने पिता के दुख को देखकर उसने पिता के राज्य को वापस प्राप्त करने के लिए एक षड्यन्त्र रचा।

९. यारद की यह कन्या अति सुन्दरी थी और वह अपने पिता से परामर्श करती हुई बोली: मेरे पिता इतने कष्ट में क्यों हैं? क्या आप ने उस (१) अभिलेख को नहीं पढ़ा जिसे हमारे पूर्वजों ने समुद्र पार से लाए थे? सुनो, क्या उसमें उनके विषय में पुरानी बातें नहीं लिखी हुई हैं कि वे (२) अपने गुप्त षड्यन्त्रों के द्वारा राज्यों को और भारी यश को प्राप्त किया था?

१०. इसलिए किमनोर के पुत्र आकिश को बुलाओ; और सुनो, मैं सुन्दर हूं और मैं उसके सामने नाचूंगी और उसे प्रसन्न करूंगी जिससे वह मुझे अपनी पत्नी बनाना चाहेगा; इसलिए अगर वह आप से मुझे पत्नी बनाने की इच्छा प्रकट करेगा तब आप कहना: मैं तुम्हें तब उसे दूंगा जब तुम मेरे राजा पिता का सिर लाकर मुझे दो।

११. ओमर आकिश का मित्र था; और जब यारद ने आकिश को बुलाया तब यारद की कन्या ने उसके सामने नाच कर उसे प्रसन्न कर दिया और उसने उसे अपनी पत्नी बनाने की इच्छा प्रकट की और उसने यारद से कहा: मुझे इसे पत्नी के तौर पर दे दो।

१२. और यारद ने उससे कहा: मैं उसको तुम्हें तब दूंगा जबकि तुम मेरे राजा पिता का सिर लाकर मुझे दोगे।

१३. तब आकिश ने यारद के घर में अपने सभी भाई-बन्धुओं को एकत्रित किया और उनसे बोला: क्या तुम यह शपथ लोगे कि मैं जो कुछ तुमसे करवाना चाहूंगा वह तुम करोगे?

१४. तब उन्होंने स्वर्ग के परमेश्वर, स्वर्गों, धरती और अपने सिरों की (३) शपथ ली कि

(१३) ए० ६:१-१२. अध्याय ८. (१) ए० १:३. (२) पद्य १५ अनमोल मोती मूसा ५:१८-३३,, इला० ६:२७, देखो ६, २ नफी १०. (३) देखो ६, २ नफी १०.

जो भी कोई आकिश की सहायता करने से पीछे हटेगा वह अपना सिर खोएगा और जो कुछ आकिश उनसे कहेगा उसका भेद अगर कोई खोलेगा तब उसको अपना प्राण देना होगा।

१५. इस प्रकार वे आकिश के साथ सहमत हो गए। और आकिश ने उनको उसी तरह की शपथें खिलाईं जैसी कि प्राचीन समय में (४) वे लोग शपथ लेते थे जो बल के इच्छुक होते थे और जो कि उस कैन के समय से प्रचलित हुई थी जो कि स्वयं एक हत्यारा था।

१६. और लोगों के साथ इस शपथ को व्यवहार में लाने के लिए उन्हें शैतान के बल का सहारा मिला जिससे कि उन्हें अंधकार में रखा जा सके और जो बल के भूखे थे उन्हें बल प्राप्त करने में सहायता मिले, और वे हत्या करें, लोगों को लूटें, झूठी बातें बोलें, और हर प्रकार की दुष्टता और व्यभिचार करें।

१७. प्राचीन काल की इन बुरी बातों को यारद की पुत्री ने उसके हृदय में भर दिया और यारद ने इन बातों को आकिश को दिया; और आकिश ने इन्हें अपने मित्रों और बन्धुओं को दिया और प्रतिज्ञा द्वारा जो कुछ वे चाहे उनसे करवाने के लिए उन्होंने उन्हें अपने वश में कर लिया।

१८. और प्राचीन समय की तरह ही उन्होंने एक (५) गुप्त दल को संगठित किया जो कि परमेश्वर की दृष्टि में सबसे घृणित दुष्ट दल था।

१९. क्योंकि प्रभु न तो किसी के साथ गुप्त रूप से मिलकर कुछ करता है और न ही वह यह चाहता है कि मनुष्य रक्तपात करे जिसे उसने मानव सृष्टि काल से ही वर्जित किया है।

२०. और अब, मैं, मरोनी उनकी शपथों और दल के संगठनों का और ब्योरा नहीं लिखता, क्योंकि मुझे यह जानकारी दी गई है कि यह सभी लोगों में थे और लमनायटियों में भी था।

२१. और जिन लोगों के विषय में मैं कह रहा हूं, उनका और नफी के लोगों का नाश उन्हीं के कारण हुआ है।

२२. और जो भी जाति शक्ति और स्वार्थ के लिए इस तरह के दल को तब तक बढ़ाते रहेंगे जब तक कि वह सारे देश भर में फैल न जाए, तब उनका भी नाश हो जाएगा; क्योंकि प्रभु के (६) सन्तों का जो रक्त उनके द्वारा गिराया जायेगा उसे सदा बदले के लिए पुकारते हुए सुनकर प्रभु बगैर बदला लिए मौन नहीं रह सकता।

२३. इसलिए हे अन्य जातियो, यह परमेश्वर के विवेकानुसार है कि तुम्हें इन बातों को दिखाया जाए, जिससे कि तुम अपने पापों पर पश्चात्ताप करो और इन (७) हत्यारे दलों को अपने से ऊपर मत उठने दो जो कि शक्ति और स्वार्थ के लिए है और इसके द्वारा तुम्हारे लिए बुरा परिणाम होगा यहां तक कि तुम्हारा नाश भी हो सकता है; हां, अगर तुमने इनको रहने दिया तब उस अनन्त पिता के (८) न्याय की तलवार तुम्हारे ऊपर गिरेगी जिससे तुम्हारा पतन होगा और तुम्हारा नाश होगा।

२४. इसलिए प्रभु तुम्हें आज्ञा देता है कि जब तुम इन बातों को अपने अन्दर आया देखो तब तुम अपनी भयंकर स्थिति से इस कारण सचेत हो जाओ कि तुम्हारे अन्दर यह (९) गुप्त दल आ चुका है, अन्यथा मारे गए लोगों के (१०) रक्त के कारण तुम पर और इस दल के बनाने वालों पर सन्ताप होगा; क्योंकि धूल में से वे बदले के लिए पुकारेंगे।

२५. ऐसा होगा कि जो भी कोई इसका संगठन करेगा, वह सभी देशों की सभी जातियों की और सभी स्थानों की (११) स्वतन्त्रता को अपहरण करना चाहेगा; और सभी लोगों का नाश लाएगा, क्योंकि वह शैतान द्वारा बनाया जाता है जो कि हर प्रकार की झूठों का जन्मदाता है; यहां तक कि यही वह झूठा है जिसने हमारे पूर्व पिता को बहकाया था और यही वह है जिसने आरम्भ से ही मनुष्य द्वारा हत्या करवायी थी; और जिसने लोगों के हृदयों को कठोर बना दिया जिससे उन्होंने भविष्यवक्ताओं की हत्या की और उन पर पथराव किए और आरम्भ से ही उन्हें अपने में से बाहर निकालते रहे।

२६. इसलिए मुझ मरोनी को, आज्ञा मिली

(४) देखो २. (५) देखो ६, २ नफी १०. (६) देखो ६, २ नफी २८. (७) देखो ६, २ नफी १०. (८) देखो ११, १ नफी १४. (९) देखो ६, २ नफी १०. (१०) देखो ६, २ नफी २८. (११) पद्य २१, २२.

है कि मैं इन बातों को लिखूं जिससे कि बुराई को त्याग दिया जाए और वह समय आए जबकि (१२) शैतान का मानव हृदय पर किसी प्रकार का अधिकार न रहे परन्तु उन्हें लगातार भलाई करने की प्रेरणा मिलती रहे जिससे कि वे सभी प्रकार की धार्मिकता के उद्गम पर पहुंच जाए और बच जाएं।

अध्याय ९

ओमर का सिंहासन खोना और उसे फिर से प्राप्त करना—एमर का उन्नतशील शासन उस युग के कूरिलम और कुमोम पशु—लघुकालिक राजा लोग—अकाल और विषधर सर्प।

१. और अब मैं, मरोनी अपने अभिलेख को बढ़ाता हूं। इसलिए सुनो, ऐसा हुआ कि आकिश और उसके सहयोगियों के (१) दल के कारण उन्होंने ओमर के राज्य को पराजित कर दिया।

२. फिर भी ओमर और उसके जो लड़के-लड़कियां उसका विनाश नहीं चाहते थे, उन पर प्रभु दयावान बने रहे।

३. और प्रभु ने ओमर को स्वप्न में चेतावनी दी कि वह देश से बाहर चला जाए; इसलिए ओमर अपने परिवार वालों के साथ देश से बाहर निकल कर कई दिनों की यात्रा कर उस (२) सिम पहाड़ से होकर आगे गुजरा जहां कि नफायटियों का (३) नाश हुआ था, और वहां से पूरब की ओर वहां आया जिस स्थान को एबलोम कहते थे और जो कि समुद्र तट पर था, और वहां उसने अपने तम्बू को खड़ा किया और उसके पुत्र और पुत्रियों ने, और उसके घर के सभी लोगों ने भी अपने-अपने तम्बू लगाए।

४. और ऐसा हुआ कि दुष्टता के द्वारा, यारद लोगों का राजा अभिषिक्त किया गया; और उसने आकिश को अपनी कन्या दे दी।

५. और ऐसा हुआ कि आकिश ने अपने ससुर की जान लेनी चाही और उनसे सहायता मांगी जिन्होंने (५) प्राचीन समय की तरह उसकी सहायता के लिए शपथ ली थी, और उन्होंने उसके ससुर का सिर उस समय काट लिया जबकि वह अपने सिंहासन पर बैठा हुआ अपने लोगों की बातों को सुन रहा था।

६. यह दुष्ट और गुप्त दल इतना अधिक फैला कि इसने सभी लोगों के हृदयों को भ्रष्ट कर दिया था; इसलिए अपने सिंहासन पर यारद मारा गया और उसके स्थान पर आकिश राज्य करने लगा।

७. और ऐसा हुआ कि आकिश अपने पुत्र से द्वेष करने लगा, इसलिए उसने उसे बन्दीगृह में डाल और कारागार में उसे बहुत कम या कुछ भी भोजन नहीं दिया जिससे वह मर गया।

८. और अब, जो मारा गया उसका भाई (उसका नाम था निमरा) अपने पिता से बहुत नाराज़ हो उठा जिसका कारण था उसके पिता का उसके भाई के साथ किया गया बरताव।

९. और ऐसा हुआ कि निमरा ने कुछ लोगों को एकत्रित किया और उन्हें अपने साथ ले देश से बाहर भाग गया और जाकर (६) ओमर के साथ रहने लगा।

१०. और ऐसा हुआ कि आकिश के और पुत्र हुए और उन्होंने लोगों के हृदयों को अपनी ओर कर लिया और इस बात की कोई परवाह न की कि उन्होंने उससे प्रतिज्ञा की थी कि उसकी इच्छानुसार वे हर तरह के पाप कर्म उसके लिए करेंगे।

११. और जिस प्रकार आकिश बल का इच्छुक था, उसी प्रकार आकिश के लोग भी स्वार्थ के इच्छुक थे; इसलिए आकिश के लड़कों ने उन्हें रुपये दिए और इस तरह उन्होंने अधिकांश लोगों को अपनी ओर खींच लिया।

१२. और आकिश और आकिश के लड़कों में युद्ध होने लगा जो कि कई वर्षों तक चलता रहा जिसमें केवल तीस लोगों को छोड़कर बाकी सब मारे गए, और जो ओमर के परिवार वालों के साथ भाग गए थे वे भी शेष रह गए।

१३. इसलिए ओमर को अपने पैतृक (७) देश में फिर से स्थापित कर दिया गया।

१४. और ऐसा हुआ कि ओमर वृद्ध हो चला;

(१२) देखो १४, २ नफी ३०. अध्याय ९. (१) देखो ६, २ नफी १०. (२) देखो ४, मार० १. (३) मार० ६:१-१५. (५) देखो ६, २ नफी १०. (६) पद्य ३. (७) देखो ५, ए० ७.

फिर भी वृद्धावस्था में उसके अमर नाम का पुत्र हुआ; और उसने अपने स्थान पर शासन करने के लिए अमर को अभिषिक्त किया।

१५. अमर को अभिषिक्त करने के बाद दो वर्षों तक उसने शान्ति देखी और फिर दुख भरे बहुत अधिक दिनों को देखकर वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। और अमर अपने पिता का अनुसरण करता हुआ अपने पिता के स्थान पर शासन करने लगा।

१६. और प्रभु फिर से देश के ऊपर से शाप उठाने लगा और अमर के शासन काल में अमर का परिवार भारी प्रगति करने लगा; और बासठ वर्ष के अवधिकाल में वे बहुत अधिक बलवान हो गए, यहां तक कि वे अधिक धनवान भी बन गए।

१७. वे (८) सभी प्रकार के फल, अनाज (९) रेशम, उत्तम सन् (१०) सोना, चांदी और मूल्यवान वस्तुओं का उपार्जन करने लगे।

१८. और (११) हर प्रकार के पशु, गाय, बैल, भेड़, सूअर, बकरियां और अन्य प्रकार के पशु जो मनुष्य को खाने के लिए उपयुक्त थे, उनके पास हो गए।

१९. और उनके पास (१२) घोड़े, गधे, हाथी और कूरिलम और कुमोम नामक पशु थे जो कि मनुष्य के लिए उपयोगी पशु थे विशेष कर हाथी, कूरिलम और कुमोम।

२०. इस प्रकार प्रभु ने इस देश पर जो कि (१३) चुना हुआ श्रेष्ठ देश है, अपना आशीर्वाद उड़ेल दिया, और उसने यह आज्ञा दी कि जो कोई इस देश पर अधिकार रखे वह प्रभु के लिए रखे अन्यथा उनके पाप का घड़ा भरने पर उनको (१४) नष्ट कर दिया जाएगा; क्योंकि ऐसे लोगों के लिए प्रभु ने कहा है: उनके ऊपर मैं अपने सम्पूर्ण क्रोध को उतारूंगा।

२१. और अमर ने अपने जीवन भर विधि पूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन किया और उसके कई पुत्र और पुत्रियां हुईं; और उसके कोरियण्टम नामक पुत्र हुआ जिसको उसने अपने स्थान पर शासन करने के लिए अभिषिक्त किया।

२२. कोरियण्टूम को अपने स्थान पर शासन करने के लिए अभिषिक्त करने के पश्चात् वह चार वर्षों तक और जीवित रहा और उसने देश में शान्ति देखी; उसने धर्मपरायणता के पुत्र को भी देखा, और अपने जीवन काल में उसने आनन्द मनाया और यश गान किया; और उसने शान्ति से प्राण त्याग दिये।

२३. और ऐसा हुआ कि कोरियण्टूम ने अपने पिता के पद-चिन्हों पर चलते हुए कई महानगर बनाए और सारा जीवन अपने लोगों को जो लाभप्रद थे, उन्हीं बातों की शिक्षा देता रहा।

२४. एक सौ दो वर्ष की होकर उसकी पत्नी मर गई। तब कोरियण्टूम ने अपनी वृद्धावस्था में एक तरुणी कन्या को अपनी पत्नी के लिए लिया और उसके पुत्र और पुत्रियां हुई और वह एक सौ बयालीस वर्षों तक जीवित रहा।

२५. उसका कोम नाम का एक पुत्र था और कोम ने उसके स्थान पर शासन किया। कोम ने उन्चास वर्षों तक राज्य किया और उसके हेथ नामक सन्तान के साथ अन्य लड़के और लड़कियां थीं।

२६. और फिर से लोग सारे देश भर में फैलने लगे, और सभी स्थानों पर अधिक बुरे कर्म होने लगे और अपने पिता को नष्ट करने के लिए हेथ ने भी पुराने (१५) गुप्त षड्यन्त्रों को अपनाया।

२७. और ऐसा हुआ कि उसने अपने पिता को गद्दी पर से उतार दिया और उसे अपनी ही तलवार से मार कर उसके स्थान पर स्वयं शासन करने लगा।

२८. और (१६) फिर से देश में भविष्यवक्ता आए और लोगों से पुकार कर पश्चात्ताप करने को कहने लगे—और कहने लगे कि उन्हें प्रभु का रास्ता तैयार करना चाहिए अन्यथा देश के ऊपर शाप पड़ेगा; हां, देश में भारी (१७) अकाल पड़ेगा जिसमें अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब वे नष्ट हो जाएंगे।

(८) ए० १:४१. (९) ए० १०:२४. (१०) ए० १०:१२-२३. (११) पद्य ३१, ३४, ए० १०, १२, २६, २०, २६. (१२) देखो १३, १ नफी १८. (१३) देखो ६, ए० २. (१४) ए० २:८-११. (१५) देखो ६, २ नफी १०. (१६) पद्य २६, ए० ७:२३, ११:१, १२, २०. (१७) पद्य ३०-३५.

२९. लेकिन लोगों ने भविष्यवक्ताओं की बातों पर विश्वास नहीं किया और उनको अपने में से बाहर निकाल दिया; और कुछ को गड्ढों में भी डाल दिया। यह सब उन्होंने राजा हेथ के कहने पर किया।

३०. और ऐसा हुआ कि देश में भारी अकाल पड़ गया और इस दुर्भिक्ष के कारण लोग शीघ्रता के साथ मरने लगे क्योंकि देश में कुछ भी वर्षा नहीं हुई।

३१. और देश में बहुत से (१८) विषधर सर्प भी हुए जिनके डंक से बहुत से लोगों को विष हो गया। और ऐसा हुआ कि विषधर सर्पों के आगे-आगे उनके पशु उस (१९) दक्षिण देश की ओर भाग चले जिसे नफायटी (२०) ज़राहेमला कहते थे।

३२. और ऐसा हुआ कि उनमें से बहुत से रास्ते में ही मर गए; फिर भी कुछ भाग कर दक्षिण की ओर चले गए।

३३. और ऐसा हुआ कि प्रभु ने सर्पों को उनका पीछा करने से रोक दिया परन्तु उन्हें रास्ते पर रखा जिससे कोई भी मनुष्य उस ओर न आ सके और अगर किसी ने जाने की चेष्टा की तब वह विषधर सर्पों के द्वारा गिरेंगे।

३४. और ऐसा हुआ कि लोगों ने पशुओं का अनुसरण किया और रास्ते में मरे हुए पशुओं के लोथों पर टूट पड़े और उन्हें तब तक खाते रहे जब तक कि उन्होंने सभी मरे हुए पशुओं को खा न लिया। और जब उन्होंने देखा कि उन्हें मरना ही होगा तब वे अपने पापों पर पश्चात्ताप करने लगे और प्रभु को पुकारने लगे।

३५. और जब उन्होंने प्रभु के सामने अपने आपको पर्याप्त दीन बना लिया तब उसने धरती पर वर्षा को भेजा; और लोगों की स्थिति सुधरने लगी और उत्तर देश में और आसपास के देशों में फल लगने लगे और प्रभु ने दुर्भिक्ष से बचाकर उन्हें अपनी शक्ति दिखाई।

अध्याय १०

भूल करने वाला रिप्लाकिश—सुधार करने वाला मोरियन्दन—दूसरे राजे और उनकी लड़ाईयां—वनयुक्त दक्षिणी देश—उत्तर का देश आबाद।

१. और ऐसा हुआ कि अकाल में सेज जो कि हेथ का वंशज था, को छोड़कर हेथ और उसका सारा परिवार मृत्यु के ग्रास में पड़ गए—इसलिए सेज दलित लोगों को सुधारने में लग गया।

२. उसे अपने पिता का नष्ट होना स्मरण था; इसलिए उसने धार्मिक राज्य की स्थापना की; क्योंकि उसे प्रभु द्वारा यारद को (१) समुद्र पार लाने का महान कार्य भी याद था; इसलिए वह प्रभु के पथ पर चला; और उसके पुत्र और पुत्रियां हुईं।

३. और उसके बड़े पुत्र ने, जिसका नाम सेज था, उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया; परन्तु सेज अपने अधिक धन-सम्पदा के कारण एक डाकू के हाथ से मारा गया, जिससे उसके पिता को पुनः शान्ति प्राप्त हुई।

४. और ऐसा हुआ कि उसके पिता ने देश में कई नगर बसाए और लोग फिर से देश भर में फैलने लगे। और सेज बहुत वृद्धावस्था तक जीवित रहा और उसके रिप्लकिश नामक पुत्र हुआ। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके स्थान पर रिप्लकिश ने शासन करना आरम्भ किया।

५. प्रभु की दृष्टि में जो कुछ उचित था वह रिप्लकिश ने नहीं किया, क्योंकि उसकी (२) कई पत्नियां और रखैलें थीं और उसने लोगों के कन्धों पर इतना अधिक बोझ रखा जो कि हानिकारक था; हां, उसने लोगों पर बहुत अधिक कर लागू किया, और कर से प्राप्त धन से उसने कई बड़े-बड़े मकान बनवाए।

६. और उसने अपने लिए अति सुन्दर राज सिंहासन बनवाया और बहुत से कारागार भी बनवाए और जिन लोगों ने कर भरना नहीं चाहा उन्हें उसने कारागार में डलवा दिया, और जो लोग कर भरने में असमर्थ थे उन्हें भी उसने कारागार में डलवाया और उनके निर्वाह के लिए उनसे लगातार कठिन परिश्रम करवाता; और जो

(१८) पद्य ३२-३४, ए० १०:१९. (१९) देखो १४, अल० ४६. (२०) ओम० १३. अध्याय १०. (१) ए० ६:१-१२, ७:२७. (२) देखो ११, १२ और १७ याकूब २.

परिश्रम करना अस्वीकार करते उन्हें वह मरवा डालता।

७. इसलिए उसने अपनी सारी उत्तम सम्पत्ति बना ली; हां, उसने कारागार में अपने उत्तम सोने को और शुद्ध करवाया और हर प्रकार की उत्तम वस्तुओं को कारागार में उत्पादन करवाने लगा। और उसने अपने (२) व्यभिचारों और कुकर्मों के द्वारा लोगों को दु:ख दिया।

८. जब उसने बयालीस वर्षों तक शासन कर लिया तब लोगों ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और देश में युद्ध होने लगा जिसमें रिप्लकिश मारा गया और उसकी सन्तानों को देश से बाहर खदेड़ दिया गया।

९. कई वर्षों पश्चात् ऐसा हुआ कि मोरियन्दन (जो कि रिप्लकिश का वंशज था) ने निकाले गए लोगों की एक सेना एकत्रित की और लोगों से जाकर युद्ध किया, और कई नगरों को अपने अधीन कर लिया; और यह युद्ध गम्भीर होता गया और कई वर्षों तक चलता रहा; और उसने सारे देश पर अधिकार कर लिया और सारे देश का राजा बन बैठा।

१०. और जब वह राजा बन गया तब उसने लोगों का बोझ हल्का किया जिससे लोग उसपर प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे अपना राजा अभिषिक्त किया।

११. और उसने लोगों के साथ उचित व्यवहार किया परन्तु अपनी (४) अनेक वेश्याओं के कारण उसने स्वयं अपने साथ उचित व्यवहार नहीं किया जिससे उसे परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर दिया गया।

१२. और ऐसा हुआ कि मोरियन्दन ने अनेक नगर बसाए और उसके शासन काल में लोग मकानों से, (५) सोना, चांदी से, अनाज उपजाने में, (६) पशु-पक्षियों से और अन्य वस्तुएं जिन्हें उनको फिर से प्रदान की गई थीं, उन सभी से वे अति धन सम्पदायुक्त बन गए।

१३. और मोरियन्दन बहुत दिनों तक जीवित रहा और उसके किम नामक पुत्र हुआ; और किम अपने पिता के स्थान पर शासन करने लगा; और उसके आठ वर्षों तक शासन कर लेने पर उसके पिता की मृत्यु हो गई। और ऐसा हुआ कि किम ने उचित ढंग से शासन नहीं किया, जिससे वह प्रभु की कृपा प्राप्त नहीं कर सका।

१४. और उसके भाई ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिससे उसने उसे बन्दी बना लिया और उसने अपने शेष जीवन को कारागार में बिताया; और बन्दी अवस्था में ही उसके पुत्र और पुत्रियां उत्पन्न हुईं, और वृद्धावस्था में उसके लिबी नाम का पुत्र हुआ, और तब उसकी मृत्यु हो गई।

१५. और लिबी अपने पिता के मरने के पश्चात् बयालीस वर्षों तक कारागार में परिश्रम करता रहा। और उसने राजा से युद्ध कर राज्य को स्वयं प्राप्त कर लिया।

१६. राज्य प्राप्त कर लेने पर उसने वही किया जो कि प्रभु की दृष्टि में उचित था; और देश में लोगों ने प्रगति की, और वह दीर्घकाल तक जीवित रहा और उसके लड़के और लड़कियां हुईं; और एक कोराम नामक पुत्र हुआ, जिसे उसने अपने स्थान पर राजा नियुक्त किया।

१७. और कोराम ने अपने सारे जीवन भर वही काम किए जो कि प्रभु की दृष्टि में उचित थे; और उसके कई पुत्र और पुत्रियां हुईं; और वह बहुत दिनों तक जीवित रहा और तब सांसारिक रीतिनुसार वह भी चला गया; और तब उसके स्थान पर किश ने शासन किया।

१८. और ऐसा हुआ कि किश भी मृत्यु को प्राप्त हुआ और उसके स्थान पर लिब ने शासन करना आरम्भ किया।

१९. और लिब ने भी ऐसे काम किए जो कि प्रभु की दृष्टि में उचित थे। और लिब के समय में विषधर सर्प नष्ट हो गए। इसलिए वे (८) दक्षिण के देश में लोगों के खाने के लिए शिकार की खोज में गए क्योंकि वहां के वन में (९) बनैले पशुओं की बहुतायत थी। और लिब स्वयं एक महान शिकारी हुआ।

२०. और उन्होंने सकरे डमरुमध्य के सिरे

(३) देखो ९, २ नफी २८. (४) देखो ३. (५) देखो १०, ए० ९. (६) देखो ११, ए० ९. (८) देखो १४, अल० ४६. (९) ए० ९:३२.

पर जहां समुद्र भूमि का विभाजन करता है, एक बड़े नगर को बसाया।

२१. और उन्होंने (१०) दक्षिण के देश को वन के लिए सुरक्षित रखा जिससे उन्हें शिकार मिलता रहे। और सारा (११) उत्तर का देश लोगों से भरा हुआ था।

२२. और वे बहुत ही परिश्रमी थे और अपने लाभ के लिए एक दूसरे के साथ व्यापार करते थे।

२३. और वे हरएक प्रकार की (१२) धातुओं को काम में लाते, सोना, चांदी, लोहा, पीतल और सभी धातुओं का प्रयोग करते; वे इन सब धातुओं को धरती में से निकालते; इसलिए सोना, चांदी, लोहा, तांबा को प्राप्त करने के लिए वे (१३) मिट्टी के बड़े-बड़े ढूह लगा देते। और वे उनसे हर तरह की उत्तम वस्तुओं को बनाते।

२४. और उनके (१४) पास रेशम और अच्छे सूती कपड़े थे; और तन ढकने के लिए वे तरह-तरह के वस्त्र बनाया करते।

२५. और वे (१५) धरती जोतने, गोड़ने, बीज बोने, अनाज काटने, कुदाल के लिए और अनाज निकालने के लिए तरह-तरह के औजार बनाते।

२६. और अपने पशुओं से काम लेने के लिए भी उन्होंने तरह-तरह के औजार बनाए।

२७. और उन्होंने सभी प्रकार के युद्ध के लिए अस्त्र-शस्त्रों को बनाया। और वे हर प्रकार के उत्तम कारीगरी का काम करते।

२८. और इतना अधिक आशीर्वाद प्राप्त करने और प्रभु के हाथ से प्रगति करने वाले लोग पहिले कभी नहीं थे। और वे प्रभु के कहने के अनुसार (१६) सर्वश्रेष्ठ चुने हुए देश में निवास कर रहे थे।

२९. और ऐसा हुआ कि लिब बहुत दिनों तक जीवित रहा और उसके भी पुत्र और पुत्रियां हुई जिनमें हारथम नामक सन्तान भी थी।

३०. और ऐसा हुआ कि उसके स्थान पर हारथम नेशासन किया। जब हारथम ने चौबीस वर्षों तक शासन कर लिया तब राज्य उससे छीन लिया गया। तब उसे बहुत दिनों तक, यहां तक कि शेष जीवन भर बन्दी अवस्था में ही रहना पड़ा।

३१. और उसके हेथ नामक सन्तान हुई जिसने अपना सारा जीवन कारागार में व्यतीत किया। और उससे आमोन हुआ जिसने अपना सारा जीवन बन्दी अवस्था में काटा; और आरोन को अमनीगदा प्राप्त हुआ और अमनीगदा ने भी अपना सारा जीवन कारागार में बिताया; और इसे कोरियण्टूम नामक पुत्र हुआ और इसने भी अपना जीवन कारागार में बिताया; और इसने कोम को प्राप्त किया।

३२. और ऐसा हुआ कि कोम ने आधे राज्य को प्राप्त कर लिया। बयालीस वर्षों तक आधे राज्य पर शासन कर लेने पर वह राजा अमगिद से लड़ने गया और वे कई वर्षों तक लड़ते रहे जिसमें उसे अमगिद पर विजय प्राप्त हुई और सारे राज्य पर उसका अधिकार हो गया।

३३. और कोम के समय में देश में डाकू हो गए, जिन्होंने पुरानी योजनाओं को अपनाया और पुरानी प्रथा के अनुसार (१७) शपथ लेने लगे और राज्य को नष्ट करने का प्रयत्न करने लगे।

३४. इस समय कोम उन डाकुओं से बहुत लड़ा परन्तु उनसे वह जीवित बच न सका।

अध्याय ११

यारदाई भविष्यवक्ताओं द्वारा अपने लोगों का, अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब पूर्ण रूप से नाश होने की भविष्यवाणी करना—चेतावनी का अनसुनी किया जाना।

१. और कोम के समय (१) बहुत से भविष्यवक्ता आए और उन्होंने भविष्यवाणी की कि अगर ये महान लोग पश्चात्ताप कर, प्रभु की ओर नहीं लौटे और हत्यायें करना और दुष्ट कर्म करना समाप्त नहीं किया तब वे नष्ट हो जाएंगे।

२. और ऐसा हुआ कि लोगों ने भविष्यवक्ताओं को अस्वीकार किया, और वे सुरक्षा के लिए भाग कर कोम के पास गए, क्योंकि लोग उनका प्राण लेना चाहते थे।

३. और उन्होंने कोम को बहुत-सी भविष्य-

(१०) देखो १४, अल० ४६. (११) देखो १६, अल० ४६. (१२) देखो १०, एथ० ६. (१३) देखो १२. (१४) एथ० ६, १७. (१५) पद्य २५. (१६) देखो ६, एथ० २. अध्याय ११. (१) देखो १६, एथ० ६.

वाणियां सुनाईं; और शेष जीवन भर उसने आशीर्वाद प्राप्त किया।

४. और वह वृद्धावस्था तक जीवित रहा और उसे शिबलम नामक पुत्र प्राप्त हुआ जिसने उसके स्थान पर शासन किया। और शिबलम के भाई ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और सारे देश भर में भयंकर युद्ध होने लगा।

५. और ऐसा हुआ कि शिबलम के भाई ने (२) उन सभी भविष्यवक्ताओं की हत्या करवा दी जिन्होंने यह भविष्यवाणी की थी कि लोग नष्ट हो जाएंगे।

६. और सारे देश भर में भारी संकट आ पड़ा, क्योंकि उन्होंने कहा था कि अगर उन्होंने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया तब देश के ऊपर और लोगों के ऊपर भी शाप आएगा, और उनका ऐसा नाश होगा जैसा कि धरती के ऊपर पहिले कभी भी देखा नहीं गया था और देश में उनकी हड्डियों के ढेर मिट्टी के ढूहों के समान हो जाएंगे।

७. अपने (४) दुष्ट संगठन के कारण उन्होंने प्रभु की वाणी की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, इसलिए सारे देश भर में ऐसी लड़ाइयां, कलह, अकाल, महामारी आने लगीं कि जिन से ऐसा विनाश होने लगा जैसा कि धरती के ऊपर पहिले कभी भी नहीं सुना गया था। और यह सब शिबलम के काल में हुआ।

८. और लोगों ने अपने पापों पर पश्चात्ताप करना आरम्भ किया; और जितना उन्होंने पश्चात्ताप किया उतना प्रभु ने भी उन पर कृपा की।

९. और ऐसा हुआ कि शिबलम मारा गया, और सेथ को बन्दी बना लिया गया और अपना सारा शेष जीवन उसने कारागार में बिताया।

१०. और ऐसा हुआ कि उसका पुत्र अहाह ने राज्य प्राप्त किया, और उसने जीवन भर लोगों पर शासन किया। और उसने अपने जीवन में सभी प्रकार के पाप किए जिनके द्वारा उसने बहुत रक्तपात किया; परन्तु उसका जीवन बहुत कम दिनों का था।

११. और एथम जो कि अहाह का वंशज था, ने राज्य प्राप्त किया; और इसने भी अपने जीवन में वे काम किए जो कि बुरे थे।

१२. और ऐसा हुआ कि एथम के दिनों में (५) बहुत से भविष्यवक्ता आए, और लोगों से भविष्यवाणियां कीं; हां, उन्होंने यह भविष्य वाणी भी की कि अगर लोगों ने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया तब प्रभु उनको धरती पर से सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर देगा।

१३. परन्तु लोगों ने अपने हृदयों को कठोर बना लिया और उनकी बातों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया; और भविष्यवक्ता रोकर उनमें से निकल कर चले गए।

१४. और एथम ने सारा जीवन अन्यायपूर्वक न्याय किया; और उसके मोरन नामक पुत्र हुआ। और उसके पश्चात् मोरन ने राज्य किया; और मोरन ने भी ऐसे कार्य किए जो कि प्रभु की दृष्टि में अनुचित थे।

१५. और ऐसा हुआ कि शक्ति और स्वार्थ के लिए जिस (६) गुप्त दल का संगठन किया गया था उसके कारण लोगों में विद्रोह हो गया और विद्रोहियों में एक बहुत ही अधम व्यक्ति हुआ जिसने मोरन से युद्ध किया और आधे राज्य को विजय कर कई वर्षों तक उस पर अधिकार बनाए रहा।

१६. और ऐसा हुआ कि मोरन ने उसको परास्त करके फिर से सम्पूर्ण राज्य पर अधिकार कर लिया।

१७. और ऐसा हुआ कि एक और बलवान व्यक्ति हुआ जो कि यारद के भाई के वंश का था।

१८. और ऐसा हुआ कि उसने मोरन को पछाड़ा और उससे राज्य छीन लिया; इसलिए मोरन ने अपना शेष जीवन कारागार में व्यतीत किया; और उससे कोरियन्दोर हुआ।

१९. और कोरियन्दोर ने अपना सारा जीवन कारागार में बिताया।

२०. और कोरियन्दोर के जीवन काल में (७) भी कई भविष्यवक्ता हुए जिन्होंने महान और आश्चर्यजनक बातों की भविष्यवाणी की और उन्हें पश्चात्ताप करने को कहा, और यह भी बताया

(२) पद्य १. (४) देखो ६, २ नफी १०. (५) देखो १६, ए० ६. (६) देखो ६, २ नफी १०. (७) देखो १६, ए० ६.

कि अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तो प्रभु परमेश्वर उनके विरुद्ध निर्णय करके उन्हें सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर देगा।

२१. और प्रभु परमेश्वर अपनी शक्ति दूसरे (८) लोगों को इस देश पर अधिकार रखने के लिए भेजेगा, या ले आएगा, जिस तरह कि वह इन लोगों के पूर्वजों को लाया था।

२२. और उन्होंने उस (९) गुप्त दल और अपने घृणित कार्यों के कारण भविष्यवक्ताओं की सभी बातों को अस्वीकार किया।

२३. और ऐसा हुआ कि कोरियन्दोर को एथर उत्पन्न हुआ और वह अपना सारा जीवन बन्दी अवस्था में बिता कर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

अध्याय १२

भविष्यवक्ता एथर और राजा कोरियण्टूमर—यारदाई और नफायटी भाषायें—परमेश्वर लोगों को निर्बलता इस कारण देता है कि जिससे वे विनीत बनें—अन्य जातियों से मरोनी की बिदाई।

१. और ऐसा हुआ कि एथर कोरियण्टूमर के जीवन काल में हुआ और कोरियण्टूमर सारे देश का राजा था।

२. और एथर प्रभु का भविष्यवक्ता था; इसलिए एथर कोरियण्टूमर के दिनों में आगे आकर लोगों से भविष्यवाणी करने लगा, क्योंकि प्रभु की जो आत्मा उस में थी, उसके कारण उसको रोका न जा सका।

३. वह सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक लोगों को पश्चात्ताप करा कर परमेश्वर में विश्वास करने, (१) अन्यथा नष्ट कर दिए जाने की यह कहकर चेतावनी देता कि विश्वास से सभी इच्छायें पूरी होती हैं।

४. इसलिए जो परमेश्वर पर विश्वास करता है वह (२) निश्चयपूर्वक एक उत्तम संसार की आशा कर सकता है; हां, वह परमेश्वर के दाहिने ओर स्थान पाने की आशा कर सकता है जो कि विश्वास से उपजता है और लोगों की आत्मा के लिए एक लंगड़ की तरह होता है जो कि उन्हें निश्चित और दृढ़ करता है और उनसे बहुत से अच्छे कर्म करवाता और परमेश्वर का गौरव गान करवाता है।

५. और ऐसा हुआ कि एथर ने महान और विस्मयजनक भविष्यवाणियां लोगों से कीं जिन पर उन्होंने इसलिए विश्वास नहीं किया क्योंकि उन्होंने उनको देखा नहीं था।

६. और अब, मैं, मरोनी, इन बातों के विषय में कुछ कहूंगा; मैं जग को दिखाऊंगा कि विश्वास ऐसी चीज है जिसकी आशा की जाती है, वह दिखाई नहीं देता, इसलिए अगर वह दिखाई नहीं देता तब उस पर सन्देह मत करो, क्योंकि इसके लिए तुम्हें तब तक साक्षी नहीं मिल सकती जब तक कि तुम्हारे विश्वास की परीक्षा न हो जाए।

७. मृत होकर जी उठने के पश्चात् विश्वास के कारण ही मसीह ने हमारे पूर्वजों को दर्शन दिया था; और उसने अपने आप को तब तक नहीं दिखाया जब तक कि उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया; इसलिए उस पर कुछ लोगों का ही विश्वास था, इसलिए उसने अपने आपको सारे संसार को नहीं दिखाया।

८. परन्तु लोगों के विश्वास के कारण ही उसने-अपने आप को जगत को दिखाया और पिता के नाम को गौरवान्वित किया, और एक रास्ता तैयार किया जिस पर चल कर दूसरे लोग भी उस दिव्य उपहार को प्राप्त करें जिससे कि वह उन बातों को प्राप्त करने की आशा करें जिन्हें उन्होंने देखा नहीं है।

९. इसलिए तुम भी आशा करो और अगर तुमने विश्वास किया तब तुम भी उस उपहार के हिस्सेदार होओगे।

१०. वह विश्वास ही था जिसके द्वारा हमारे प्राचीन लोगों को (३) परमेश्वर की पवित्र पदवी द्वारा पुकारा गया था।

११. इसीलिए विश्वास के साथ मूसा की व्यवस्था को दिया गया था। लेकिन उसके पुत्र को देने के लिए परमेश्वर ने और भी उत्तम रास्ता तैयार किया है; और विश्वास के कारण ही उसकी पूर्ति की गई है।

१२. अगर मानव समाज में विश्वास न रहे

*८) ए० १३:२०, २१. (९) देखो ६, २ नफी १०. अध्याय १२. (१) ए० ११:१२, २०-२२. (२) पद्य ६, ८, ९, ३२, मरो० ७:४०, ४४, ८:२६; १०, २०-२२. (३) देखो ७, मू० २६.

तब परमेश्वर उनमें (४) कोई चमत्कार नहीं दिखा सकता; इसी कारण उसने अपने आपको उनके विश्वास के पश्चात् ही उन्हें दर्शन दिया।

१३. सुनो, वह अलमा और अमूलक का विश्वास था जिसने (५) कारागार को धरती पर गिरा दिया था।

१४. सुनो, वह नफी और लेही का विश्वास था जिसने लमनायटियों को (६) परिवर्तित किया था जिससे उनको आग और पवित्रात्मा से बपतिस्मा दिया जा सका था।

१५. सुनो, वह आमोन और उसके भाइयों का (७) विश्वास था जिसके द्वारा लमनायटियों में इतना चमत्कार हुआ था।

१६. और हां, मसीह से पूर्व, और मसीह के पश्चात् भी जिन लोगों ने चमत्कार दिखाए, वे सब विश्वास के द्वारा ही।

१७. और विश्वास के द्वारा ही तीन शिष्यों ने यह वरदान प्राप्त किया था कि उनको (८) मृत्यु का अनुभव नहीं सहना पड़ेगा; और उन्होंने अपने विश्वास से पहिले यह निधि प्राप्त नहीं की थी।

१८. और विश्वास से पहिले ही कोई भी चमत्कार के काम नहीं हुए थे; इसलिए उन्होंने परमेश्वर के पुत्र पर पहिले विश्वास किया।

१९. और मसीह के आने से पूर्व ही बहुत से ऐसे लोग थे जिनका विश्वास इतना अधिक दृढ़ था कि जिनको (९) आवरण के भीतर नहीं रखा जा सका, परन्तु उन्होंने जिन बातों को विश्वास की आंखों से देखा था, उन्हें उन लोगों ने सचमुच में देखा जिससे वे आनन्दित हुए थे।

२०. और सुनो, हमने इस अभिलेख में देखा कि इनमें से एक यारद का भाई भी था; क्योंकि परमेश्वर में उसका विश्वास इतना अधिक था कि जब परमेश्वर ने (१०) अपनी ऊंगली को आगे बढ़ाया तब वह उसे यारद के भाई को दिखाने से छुपा न सका; क्योंकि यह जो शब्द उसने उनसे कहा था, उसे उसने विश्वास से प्राप्त किया था।

२१. और विश्वास से यारद के भाई ने जो (११) वचन प्राप्त किया था उसके कारण प्रभु की ऊंगली को देख लेने के पश्चात् प्रभु उसके द्वारा (१२) देखने से कुछ छुपा न सका; इस कारण उसने उसे सभी कुछ दिखाया; क्योंकि उसे (१३) आवरण के बाहर नहीं रखा जा सका।

२२. और विश्वास के द्वारा ही हमारे पूर्वजों ने यह (१४) वचन प्राप्त किया था कि ये बातें उनके बन्धुओं के पास दूसरी जातियों से आएगी; इसी कारण प्रभु ने, हां, यीशु मसीह ने, मुझे आज्ञा दी है।

२३. और मैंने उनसे कहा: प्रभु, दूसरी जातियाँ हमारे लिखने की त्रुटियों के कारण इन बातों की (१५) हंसी उड़ाएंगी; क्योंकि हे प्रभु, आपने हमें विश्वास के कारण वाणी में शक्तिशाली बनाया, परन्तु लिखने में हमें प्रबल नहीं किया; क्योंकि इन लोगों को तुमने जो पवित्रात्मा दी है उसके कारण इन लोगों को तुमने बोलने में प्रवीण किया है।

२४. और हमारे हाथों के (१६) भद्देपने के कारण आपने हमें लिखने में निर्बल बनाया है। सुनो आपने हमें यारद के भाई की तरह लिखने में प्रवीण नहीं किया, क्योंकि आपने उसे ऐसा बनाया कि वह (१७) जो कुछ लिखे वह ऐसा प्रबल हो जैसा कि लोगों को परास्त करने में स्वयम् आप हो।

२५. आपने हमारी वाणी को इतना प्रबल और महान किया है कि हम उसी प्रबलता के साथ (१८) लिख नहीं सकते; इस कारण जब हम लिखते हैं तब हम अपनी त्रुटियों को देख सकते हैं और शब्दों के प्रयोगों में हम भूल कर बैठते हैं; इस कारण मैं डरता हूं कि अन्य जातियाँ हमारे (१९) शब्दों पर फबतियां कसेंगी।

२६. और जब मैंने यह कहा, तब प्रभु ने मुझसे बातें करते हुए कहा: मूर्ख हंसी उड़ाएंगे, परन्तु वे रोएंगे; और विनीतों पर मेरी पर्याप्त दया है, और वे तुम्हारी त्रुटियों से कोई अनुचित लाभ नहीं उठाएंगे।

(४) देखो ४, ३ नफी १७. (५) अल० १४:२६-२९. (६) इला० ५:२०-५२, ३ नफी ९:२०. (७) अल० १७:२९-३९. (८) देखो ४, ३ नफी २८. (९) देखो ६, ए० ३. (१०) देखो ५, ए० ३. (११) ए० ३:२६. (१२) ए० ३:२५, २६. (१३) देखो ६, ए० ३. (१४) इनो० १३. (१५) पद्य २६-२८, देखो २३, मी० ८. (१६) देखो २३, मार० ८. (१७) ए० ३:२७, ४:१. (१८) पद्य २३, २४, ४०, २ नफी ३३:१. (१९) पद्य २३, २७.

२७. और अगर लोग मेरे पास आएंगे तब मैं उनकी त्रुटियां उन्हें दिखाऊंगा। मैं लोगों को निर्बलता इसलिए देता हूं जिससे कि वे विनीत बनें; और जो मेरे सामने दीन बनते हैं उन सब पर मेरी कृपा यथेष्ट होती है; क्योंकि अगर वे मेरे सामने दीन बनते हैं और मुझ में विश्वास करते हैं तब उनके लिए मैं निर्बल बातों को सबल कर देता हूं।

२८. सुनो, मैं दूसरी जातियों को उनकी त्रुटियां दिखाऊंगा और मैं उन्हें यह भी दिखाऊंगा कि सभी धार्मिकताओं के श्रोत विश्वास, आशा और दान लोगों को मेरे पास लाते हैं।

२९. और जब मैं, मरोनी ने, इन शब्दों को सुना तब मुझे सांत्वना मिली और मैंने कहा: हे प्रभु, तुम्हारा धर्म-कार्य किया ही जाएगा, क्योंकि मैं जानता हूं कि आप मानव वंश के विश्वास के अनुसार ही कार्य करते हैं;

३०. क्योंकि यारद के भाई ने जरीन पर्वत को कहा था: हट जाओ—और (२०) वह वहां से हट गया था। और अगर उसे विश्वास नहीं होता तब वह वहां से नहीं हटता; इसलिए आप मनुष्य के विश्वास होने पर ही कार्य करते हैं।

३१. क्योंकि इसी तरह आपने अपने शिष्यों के सामने अपने आप को प्रकट किया था; और जब उनको विश्वास हुआ, और उन्होंने आप के नाम पर बातें कीं, तब आप ने महान शक्ति के साथ अपने आपको उन्हें दिखाया।

३२. और मुझे यह भी याद है—कि आपने कहा था कि तुमने मनुष्य के लिए एक मकान तैयार किया है, हां, अपने पिता के (२१) महलों में जिससे वहां मनुष्य को उत्तम (२२) आशा हो; इसलिए मनुष्य को आशा करनी चाहिए, अन्यथा जिस स्थान को आपने तैयार किया है, उसमें वह स्थान नहीं प्राप्त कर सकता।

३३. और पुन: मुझे यह भी याद है कि आप ने कहा था कि तुमने संसार से ऐसा प्रेम किया कि तुमने जगत के लिए अपना जीवन तक दे दिया, जिससे कि तुम उसे पुन: ग्रहण कर के मानव वंश के लिए एक जगह तैयार कर सको।

३४. और अब यह मैं जानता हूं कि जो प्रेम तुम्हारे पास मानव वंश के लिए है, वह दान है; इसलिए अगर लोगों को (२३) दान न प्राप्त हुआ तब जो स्थान आप अपने पिता के महलों में तैयार कर रहे हैं उसमें वे स्थान नहीं प्राप्त कर सकते।

३५. इस कारण मैं इस बात से जानता हूं कि जो आप ने यह कहा था कि हमारी दुर्बलता के कारण अगर दूसरी जातियों को यह दान नहीं प्राप्त हुआ तब उनको प्रमाणित करेंगे, और उनके गुणों को उनसे ले लेंगे, यहां तक कि उनको जो प्राप्त हो चुका है, उसे भी उन लोगों से लेकर उन्हें दे देंगे जिनके पास इसकी बहुतायत होगी।

३६. और ऐसा हुआ कि मेने प्रभु से प्रार्थना की वह दूसरी जातियों पर कृपा करे जिससे उन्हें दान प्राप्त हो।

३७. और प्रभु ने मुझसे कहा: अगर उनको यह दान न मिला तब इससे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं, क्योंकि तुम तो ईमानदार रहे; इसलिए तुम्हारे वस्त्र शुद्ध किए जाएंगे। और अपनी दुर्बलता (२४) देखने के कारण तुमको बलवान किया जाएगा और तुमको उस स्थान में बैठाया जाएगा जिसे मैंने अपने पिता के (२५) महलों में तैयार किया है।

३८. और अब, मैं, मरोनी, दूसरी जातियों से, और अपने उन बन्धुओं से भी जिनसे मैं प्रेम करता हूं तब तक के लिए बिदा ले रहा हूं जब तक कि हम मसीह के न्याय आसन के सामने नहीं मिलते जहां पर सभी लोग यह जान सकेंगे कि मेरे वस्त्रों पर तुम्हारे रक्त के धब्बे नहीं लगे हैं।

३९. और तब तुम जानोगे कि मैंने मसीह को देखा है, और उसने आमने सामने हो मुझ से बातें की और जिस प्रकार मेरी अपनी भाषा में कोई व्यक्ति बोलता है, उसी तरह इन बातों को उसने मुझे विनम्रता के साथ स्पष्ट बताया।

४०. और लिखने की अयोग्यता के कारण उनमें से मैंने (२६) थोड़ी सी बातों को ही लिखा हूं।

४१. और अब मैं तुम्हें इस मसीह को खोजने

(२०) देखो ३, या ४. (२१) पद्य ३३, ३४, ३७, इनो० २७. (२२) देखो २. (२३) पद्य ३५-३७. (२४) पद्य २३-२८, ३५, ४०. (२५) देखो २१. (२६) देखो ५, ए० १.

की सम्मति देता हूं जिसके विषय में भविष्य-वक्ताओं और शिष्यों ने लिखा है कि पिता परमेश्वर और प्रभु ईशु मसीह, और पवित्र आत्मा जो उनकी (२७) साक्षी देते हैं सदा के लिए तुम्हारे अन्दर निवास करे। आमीन।

अध्याय १३

मरोनी का यारदाई इतिहास को जारी रखना—एथर और उसकी भविष्यवाणियां—उसकी जान लेने की चेष्टा—उसका चट्टान की गुहा में निवास करना—उसका अपने लोगों के विनाश का दृश्य रात को देखना।

१. और अब, मैं, मरोनी, जिनके विषय में मैं लिख रहा हूं, उनके नष्ट होने से सम्बन्धित अपने अभिलेख को पूरा करना चाहता हूं।

२. क्योंकि सुनो, उन्होंने एथर की सभी बातों को अस्वीकार कर दिया; जिसने कि मानव के आदि काल से लेकर सभी बातों को बताया था; और जब इस धरती के ऊपर से जल हट गया तब यह प्रभु का अन्य सभी देशों से श्रेष्ठ चुना हुआ देश बन गया; इसलिए प्रभु चाहता है कि इस देश में रहने वाले सभी लोग उसकी सेवा करें।

३. और वह (१) उस नए यरुशलेम का स्थान होगा जो कि स्वर्ग से, और प्रभु के रहने के पवित्र स्थान से (२) नीचे आएगा।

४. सुनो, एथर ने मसीह के दिन देखे, और उसने इस देश पर (३) नए यरुशलेम के विषय में बातें कहीं।

५. और उसने इस्राएल के घराने के विषय में, और उस यरुशलेम के विषय में कहा जहां से (४) लेही आने को था—और जो नष्ट कर देने के पश्चात् फिर से बनाए जाने को था, जो कि प्रभु के लिए एक (५) पवित्र नगर है; इसलिए वह नया यरुशलेम नहीं हो सकता क्योंकि वह प्राचीन युग से है; परन्तु उसे फिर से बसाया जाएगा, और वह प्रभु का पवित्र नगर हो जाएगा; और वह इस्राएल के घराने वालों के लिए फिर से बनाया जाएगा।

६. और एक (६) नया यरुशलेम इस देश के ऊपर यूसुफ के बचे हुए वंश के लिए बनाया जाएगा जिसके लिए वस्तुओं का एक नमूना पहिले से ही है।

७. क्योंकि जिस तरह यूसुफ अपने पिता को मिश्र में लाया और वहीं उसकी मृत्यु हुई; उसी तरह यूसुफ के वंश में से बचे हुए एक को प्रभु ने यरूशलेम से निकाला और उसे इसलिए लाया कि वह यूसुफ के वंश पर उसी तरह दया करे जिससे कि (७) वे नष्ट न हों जिस तरह कि वह यूसुफ पर इसलिए दयालू हुआ था जिससे कि वह नष्ट न हो।

८. इसलिए यूसुफ के वंश में से बचे हुए लोगों को इस देश में स्थापित किया जाएगा; और यह देश उनका (८) पैतृक देश हो जाएगा; और वे प्रभु के लिए एक (९) पवित्र नगर को पुराने यरुशलेम के समान बसाएंगे; और उन्हें पुनः तब तक तंग नहीं किया जाएगा जब तक कि अन्त न आ जाए और धरती मिट न जाएगी।

९. (१०) और तब नया आसमान होगा और एक नई धरती होगी और वे उसी पुराने के समान होंगे परन्तु पुराना बीत चुका होगा और सभी बातें नई होंगी।

१०. और (११) तब आएगा नया यरुशलेम; और धन्य होंगे वे लोग जो वहां निवास करेंगे, क्योंकि वहां वे लोग ही निवास करेंगे जिनके वस्त्र मेमने के रक्त से उज्ज्वल हो चुके होंगे; और वे होंगे वे लोग जिनकी (१२) गिनती यूसुफ के वंश में से बचे हुए लोगों में होगी और वे इस्राएल के घराने के लोग होंगे।

११. और (१३) तब पुराना यरुशलेम, और उसके निवासी भी आएंगे और धन्य हैं वे लोग क्योंकि वे मेमने के रक्त में धोए गए लोग होंगे; और वे होंगे वे लोग जो बिखरे रहे होंगे और जिन्हें जगत के चारो दिशाओं से एकत्रित किया

(२७) ३ नफी ११:३२, ३६. अध्याय १३. (१) देखो २०, ३ नफी २०. (२) पद्य प्र० वा० ३:१२, २१:२. (३) देखो २०, ३ नफी २०. (४) १ नफी. अध्याय १-१८. (५) पद्य ११, प्र० वा० २१:१०-२७. (६) देखो २०, ३ नफी २०. (७) २ नफी ३:५-१४, अल० ४६:२४-२६. (८) देखो १५, ३ नफी १५. (९) देखो २०, ३ नफी २०. (१०) प्र० वा० २१:१. (११) देखो २. (१२) देखो २४, ३ नफी १६. (१३) देखो ५.

जाएगा, और उन्हें (१४) उत्तर के देशों से भी लाया जायगा। और जिस वचन को परमेश्वर ने उनके पूर्वज इब्राहीम से किया था, उसकी पूर्ति किए जाने वाले लोगों में से वे लोग होंगे।

१२. और जब ये बातें होंगी तब शास्त्र की बात आएगी जो कहती है (१५) वे लोग हैं जो पहिले थे और जो अंतिम होंगे; और वे भी हैं जो कि अन्तिम हो कर प्रथम होंगे।

१३. और मैं और लिखना चाहता था, परन्तु मुझे मना किया गया है; लेकिन महान और विलक्षण हैं एथर की भविष्यवाणियां जिनको कोई महत्व नहीं दिया गया और उसे निष्कासित कर दिया गया; और दिन को वह चट्टान की एक (१६) गुहा में छुपा रहता और (१७) रात को लोगों पर आने वाली बातों को देखने के लिए बाहर निकल आता।

१४. और चट्टान की गुहा में रहते हुए रात में लोगों के ऊपर जो विनाश आया उसे देख कर उसने इस अभिलेख के (१८) अवशेष भाग को तैयार किया।

१५. और जिस वर्ष उसको लोगों ने अपने में से बाहर निकाल दिया था, उसी वर्ष लोगों में बहुत बड़ा युद्ध होने लगा, क्योंकि अनेक शक्तिवान लोग हो गए थे जो कोरियण्टूमर को अपने उन (१६) गुप्त दुष्ट योजनाओं के द्वारा नष्ट कर देना चाहते थे जिनके विषय में कहा जा चुका है।

१६. और कोरियण्टूमर युद्ध के सभी दांव-पेचों को सीखे हुए था और जग के छल कपटों से परिचित था, इसलिए जो उसको नष्ट करना चाहते थे, उनसे उसने युद्ध किया।

१७. परन्तु न तो उसने, और न ही उसके लड़के या लड़कियों ने ही पश्चात्ताप किया: और न ही कोहर के पुत्र और पुत्रियों ने ही पश्चात्ताप किया। कोरिहर के सुन्दर लड़कियों और लड़कों ने भी पश्चात्ताप नहीं किया; दूसरे शब्दों में सारी धरती पर कोई भी सुन्दर लड़का या लड़की नहीं थी जिसने कि अपने पापों पर पश्चात्ताप किया हो।

१८. इसलिए, ऐसा हुआ कि एथर के चट्टान के (२०) गुहा में रहने के प्रथम वर्ष में उस (२१) गुप्त दल द्वारा तलवार से बहुत से लोग मारे गए जो कि कोरियण्टूमर से राज्य छीन लेने की आशा से उससे लड़ रहे थे।

१९. और ऐसा हुआ कि कोरियण्टूमर के लड़के बहुत लड़े और अपना रक्त गिराया।

२०. और दूसरे वर्ष में प्रभु की वाणी एथर के पास आई और उससे कहा कि वह जा कर कोरियण्टूमर को यह भविष्यवाणी बताए कि अगर वह, उसके घर के सब लोग पश्चात्ताप करें तब प्रभु उसका राज्य उसे दे देगा और लोग बच जाएंगे—

२१. अन्यथा वे सब और उसको छोड़ कर उसके घर के सब लोग नष्ट कर दिए जाएंगे। और वह केवल इन भविष्यवाणियों को पूरा होते देखने के लिए जीवित रहेगा जो कह चुकी है कि (२२) दूसरे लोग इस देश को पैतृक देश के लिए प्राप्त करेंगे; और कोरियण्टूमर को उन्हीं के द्वारा दफ़न किया जाएगा; और कोरियण्टूमर को छोड़ कर सभी (२३) नष्ट कर दिए जाएंगे।

२२. और ऐसा हुआ कि न तो कोरियण्टूमर ने ही, और न ही उसके घर के लोगों ने और न ही अन्य लोगों ने पश्चात्ताप किया; और न तो युद्ध ही रुका; और उन्होंने एथर को मार डालना चाहा, लेकिन वह भाग कर चट्टान के (२४) उस गुहा में जा कर फिर से छुप गया।

२३. और ऐसा हुआ कि शारद नामक एक व्यक्ति का उद्‌भव हुआ और वह भी कोरियण्टूमर से युद्ध कर उसे पराजित करता रहा और तीसरे वर्ष में उसने उसे बन्दी बना लिया।

२४. और चौथे वर्ष में कोरियण्टूमर के लड़कों ने शारद को परास्त कर अपने पिता के लिए राज्य फिर से प्राप्त कर लिया।

२५. इस समय ऐसा हुआ कि सारे देश भर में मार काट होने लगी जिसमें हर एक अपने मनोवाञ्छित इच्छा पूरी करने के लिए लड़ता।

२६. और देश में डाकू भी थे, और हर प्रकार की दुष्टताएं होती रही।

(१४) सि० शर्त० १३३:२६-३५. (१५) १ नफी १३:४२. (१६) पद्य १४, १८, २२. (१७) पद्य १४, ए० १५:१३. (१८) ए० १५:३३. (१६) देखो ६, २ नफी १०. (२०) देखो १६. (२१) देखो ६, २ नफी १०. (२२) ओम० २१. (२३) ए० १५:२६-३२. (२४) देखो १६.

२७. और ऐसा हुआ कि कोरियण्टूमर शारद पर अति क्रोधित हो चुका था और वह अपनी सेना को लेकर उससे लड़ने के लिए गया; और उन दोनों का सामना गिलगाल नामक घाटी में हुआ; और बड़ी भयंकर लड़ाई हुई।

२८. और ऐसा हुआ कि शारद उससे तीन दिनों तक युद्ध करता रहा, और ऐसा हुआ कि कोरियण्टूमर ने उसे हरा दिया और उसका पीछा हेसलन के मैदान तक करता रहा।

२९. और ऐसा हुआ कि इस मैदान में शारद ने उससे फिर युद्ध किया; और कोरियण्टूमर को परास्त कर उसे गिलगाल की घाटी तक फिर से पीछे ढकेल दिया।

३०. और कोरियण्टूमर ने शारद से गिलगाल की घाटी में फिर से युद्ध किया और उसे हरा कर उसे मृत्यु के घाट उतार दिया।

३१. और शारद ने उसकी जांघ घायल कर दी जिससे कोरियण्टूमर दो वर्षों तक लड़ने नहीं गया और इस अवधि में सारे देश भर में लोग एक दूसरे का रक्तपात कर रहे थे और उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था।

अध्याय १४

देश पर शाप—संघर्ष और रक्तपात का जारी रहना—कोरियण्टूमर का तलवार से मारा न जाना—

१. और अब देश पर (१) शाप का प्रभाव लोगों के उस पाप के कारण लगा जिसमें कि अगर एक व्यक्ति अपने औज़ार या तलवार को अलमारी या उसके रखने के स्थान पर रख देता, तब सुनो, सुबह को उसे गायब मिलता; इतना बड़ा शाप था देश पर।

२. इसलिए हर एक व्यक्ति अपनी वस्तुओं को अपने हाथों से चिपकाए रहता और न तो वह कोई वस्तु किसी से मांगता और न ही किसी को देता; और हर एक व्यक्ति अपनी सम्पत्ति, अपने जीवन और अपनी स्त्री और बच्चों की रक्षा के लिए अपने दाहिने हाथ को अपनी तलवार की मूठ पर रखे रहता।

३. और शारद की मृत्यु के दो वर्ष बीत जाने पर शारद के भाई ने शक्तिशाली हो कर कोरियण्टूमर से युद्ध किया जिसमें कोरियण्टूमर ने उसे पराजित कर आकिश के वन तक उसका पीछा किया।

४. और ऐसा हुआ कि आकिश के वन में शारद के भाई ने उससे युद्ध किया; और यह लड़ाई बड़ी भयंकर हुई जिसमें सहस्त्रों की संख्या में लोग तलवार से कट मरे।

५. और ऐसा हुआ कि कोरियण्टूमर ने उस वन पर घेरा डाल दिया, और शारद का भाई रात को वन में से निकल कर कोरियण्टूमर की सेना के एक भाग पर उस समय टूट पड़ा जबकि वे नशे में मतवाले थे, और उसने उन्हें नष्ट कर दिया।

६. और वह (२) मोरन देश में प्रवेश हो कोरियण्टूमर की गद्दी पर जा बैठा।

७. और ऐसा हुआ कि कोरियण्टूमर अपनी सेना के साथ दो वर्षों तक उस वन में रहा और इस समय के अन्दर बहुत से लोगों ने उसकी सेना में सम्मिलित हो कर उसे प्रबल बना दिए।

८. और शारद का भाई, जिसका नाम गिलाद था, (३) ने गुप्त दलों से सहायता प्राप्त कर अपनी सेना को दृढ़ बना लिया था।

९. और जब कि वह सिंहासन पर बैठा हुआ था, तब उसके मुख्य पुरोहित ने उसकी हत्या कर दी।

१०. और ऐसा हुआ कि गुप्त दल के एक व्यक्ति ने एक गुप्त छल द्वारा उसकी हत्या कर दी और राज्य का अधिकार स्वयम् ले बैठा; और इस व्यक्ति का नाम लिब था; और लिब डीलडौल में सभी लोगों में सब से अधिक भीमाकार व्यक्ति था।

११. लिब के शासन के प्रथम वर्ष में, कोरियण्टूमर (४) मोरन देश में आया और उसने लिब से युद्ध किया।

१२. इस युद्ध में वह स्वयम् लिब से लड़ा जिसमें लिब ने उस पर प्रहार कर उसे हाथ में घायल कर दिया; फिर भी कोरियण्टूमर की सेना लिब की सेना को मारती काटती आगे बढ़ी जिससे लिब भाग कर सीमा के समुद्र तट पर चला गया।

१३. और कोरियण्टूमर ने उसका पीछा किया; और समुद्र तट पर लिब ने उससे फिर युद्ध किया।

(१) देखो ११, इला० १३. (२) देखो ५, ए० ७. (३) देखो ६, २ नफी १०. (४) देखो ४, ए० ७.

१४. और ऐसा हुआ कि लिब ने कोरियण्टूमर की सेना को ऐसी मार लगाई कि वह पुन: आकिश के वन में भाग गई।

१५. और लिब उनका पीछा करता हुआ आगोश के मैदान तक आया। और जहां-जहां से हो कर कोरियण्टूमर लिब के आगे से भागा, वह अपने साथ वहां के लोगों को भी लेता गया।

१६. और जब वह आगोश के मैदान में आया तब वह लिब से लड़ा और उस पर तब तक प्रहार करता रहा जब तक कि वह मर न गया, तब उसके स्थान पर लिब का भाई उससे लड़ने आया और बड़ी गम्भीर लड़ाई हुई, जिसमें कोरियण्टूमर को लिब के भाई के सामने से भागना पड़ा।

१७. लिब के इस भाई का नाम सेज था। और सेज ने कोरियण्टूमर का पीछा करते हुए कई नगरों पर विजय प्राप्त कर स्त्रियों और बच्चों को मार कर नगरों को जला डाला।

१८. और सारे देश पर सेज का भय छा गया; और लोग पुकारने लगे—सेज की सेना के सामने कौन खड़ा हो सकता है? सुनो, वह जगत का सफाया करता हुआ चलता है।

१९. और सारे देश भर में लोग सेनाओं में भारी संख्या में सम्मिलित होने लगे।

२०. और वे विभाजित हो एक भाग सेज की सेना में मिलने के लिए भागे और दूसरा भाग कोरियण्टूमर की सेना में सम्मिलित होने के लिए दौड़े।

२१. और यह युद्ध इतना भीषण और लम्बे समय तक हुआ और इतने दिनों तक रक्तपात और हत्याकाण्ड होता रहा कि सारा देश मरे हुए लोगों की लाशों से भरा पड़ा था।

२२. और यह युद्ध इतनी शीघ्रता और तीव्रता के साथ हो रहा था कि मृतक शरीरों को गाड़ने के लिए कोई न रहता परन्तु वे एक स्थान पर रक्तपात करने के पश्चात दूसरे स्थान पर रक्तपात करने के लिए चल देते, और पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के मृत शरीरों को चारों ओर मास खाने वाले कीड़ों के लिए छोड़ कर चले जाते।

२३. और सड़े गले शवों कीं दुर्गन्ध यहां तक कि सारे देश भर में फैल गयी, और इस दुर्गन्ध के कारण लोगों को रात-दिन कष्ट होने लगा।

२४. फिर भी सेज ने कोरियण्टूमर का पीछा नहीं छोड़ा; क्योंकि उसका जो भाई मारा गया था, उसके (५) रक्त का बदला कोरियण्टूमर से लेने की प्रतिज्ञा उसने की थी, और प्रभु ने एथर से कहा था कि कोरियण्टूमर (६) तलवार से नहीं मरेगा।

२५. और इस तरह हम देखते हैं कि प्रभु अपने सम्पूर्ण क्रोध के साथ आया और उनके पाप और घृणित कर्मों ने सदैव के लिए नष्ट होने का रास्ता तैयार कर दिया।

२६. और सेज ने कोरियण्टूमर को पूरब की ओर समुद्र तट तक खदेड़ा जहां पर कोरियण्टूमर ने उससे तीन दिनों तक युद्ध किया।

२७. और सेज की सेना के इतने लोग मारे गए कि उसके लोग भयभीत हो गए और वे कोरियण्टूमर की सेना के सामने से भाग खड़े हुए; और वे भागते हुए कोरिहर नामक स्थान में आए और रास्ते में जो लोग उनमें न मिले उन्हें उन्होंने नष्ट कर दिया।

२८. और उन्होंने कोरिहर की घाटी में अपने तम्बू खड़े किए; और कोरियण्टूमर ने शूर की घाटी में अपना डेरा डाला। यह शूर की घाटी कुमनोर के पहाड़ के निकट थी; इसलिए कोरियण्टूमर ने अपनी सेनाओं को कुमनोर के पहाड़ के ऊपर एकत्रित किया और सेज को लड़ने के लिए आह्वान करते हुए तुरही बजाई।

२९. और ऐसा हुआ कि वे आगे आए परन्तु उन्हें भगा दिया गया; और वे फिर से दुबारा लड़ने आए परन्तु उन्हें फिर से भगा दिया गया। वे तीसरी बार आए और बड़ी भयानक लड़ाई हुई।

३०. और ऐसा हुआ कि सेज ने कोरियण्टूमर पर आघात किए जिससे कोरियण्टूमर के कई गहरे घाव लगे; और रक्त बहने से कोरियण्टूमर बेहोश हो गया और उसे इस प्रकार उठा के ले गए मानो वह मर गया हो।

३१. इस समय दोनों ओर के इतने अधिक पुरुष, स्त्रियां और बच्चे मारे गए थे कि सेज ने अपने

(५) पद्य १९. (६) ए० १३:२१.

लोगों को आज्ञा दी कि वे कोरियण्टूमर की सेना का पीछा मत करें: इसलिए वे अपने डेरे पर वापस लौट आए।

अध्याय १५

रामा अथवा कुमोरा पहाड़—एक भारी संघर्ष की तैयारी—लाखों की संख्या में लोगों का मरना—कोरियण्टूमर द्वारा सेज का मारा जाना—एथर के अन्तिम शब्द—यारदाई अभिलेख का अन्त।

१. और ऐसा हुआ कि जब कोरियण्टूमर के घाव ठीक हो गए, तब उसे (१) एथर के कहे शब्द स्मरण हुए।

२. उसने देखा कि तलवार द्वारा उसके बीस लाख लोग मारे गए थे जिससे उसके हृदय में बड़ा दुख हुआ; हां, बीस लाख बीर पुरुष, उनकी स्त्रियां और बच्चे मारे गए थे।

३. वह अपने दुष्कर्मों पर पछताने लगा; और उसे सभी भविष्यवक्ताओं के मुखों से कहे गए शब्द याद आने लगे, और उसने देखा कि अभी तक वे सभी बातें पूर्णरूप से पूरी हुई थीं; और उसकी आत्मा रोने लगी और उसे किसी भी तरह शान्ति नहीं मिल रही थी।

४. और उसने सेज के पास एक पत्र लिख कर यह इच्छा प्रकट की कि अगर वह लोगों की जान न ले तब वह उनके प्राणों की रक्षा के लिए अपना राज्य दे देगा।

५. और ऐसा हुआ कि जब सेज को यह पत्र मिला तब उसने कोरियण्टूमर को उत्तर दिया कि अगर वह उसे अपनी तलवार से मार डालने के लिए आत्मसमर्पण कर दे तब वह लोगों को जीवन दान दे सकेगा।

६. और लोगों ने अपने पापों पर पश्चात्ताप नहीं किया; और कोरियण्टूमर के लोग सेज के लोगों पर क्रोधित हो उठे थे; और सेज के लोगों को कोरियण्टूमर के लोगों के विरुद्ध क्रोधित कर दिया गया था; इसलिए सेज के लोग कोरियण्टूमर के लोगों से लड़े।

७. और जब कोरियण्टूमर ने देखा कि वह घायल हो गिरने वाला है तब वह फिर से सेज के लोगों के सामने से भाग खड़ा हुआ।

८. और वह रिप्लियंकम जल के पास आया, जिसका अनुवाद करने से भारी, या सब से बड़ा अर्थ निकलता है; इसलिए जब वे वहां आए तब उन्होंने अपने तम्बू लगाए; और सेज ने भी उनके निकट अपना खेमा लगाया; इसलिए दूसरे दिन वे फिर लड़ने के लिए आए।

९. और ऐसा हुआ कि उन्होंने भयंकर लड़ाई लड़ी जिसमें कोरियण्टूमर फिर से घायल हुआ और रक्त के बहने से बेहोश हो गया।

१०. और ऐसा हुआ कि कोरियण्टूमर की सेनाओं ने सेज की सेनाओं पर भारी धावा किया और उन्हें अपने सामने से भागने को बाध्य कर दिया; और वे (४) दक्षिण की ओर भागे और ओगाथ नामक स्थान पर जा कर डेरा डाला।

११. और कोरियण्टूमर की सेना ने रामा पहाड़ के निकट अपने तम्बू लगाए। यह वही पहाड़ है जहां मेरे पिता मारमन ने प्रभु के लिए उन अभिलेखों को (६) छुपा दिया था, जो कि पवित्र थे।

१२. और ऐसा हुआ कि एथर को छोड़ कर सारे देश भर में जो लोग अभी तक मारे नहीं गए थे, उन्हें एकत्रित किया।

१३. और ऐसा हुआ कि एथर ने लोगों की (७) सारी करतूतों को देखा और देखा कि कोरियण्टूमर के लोग उसकी सेना के साथ एकत्रित थे; और सेज के लोग सेज की सेना के साथ एकत्रित हुए थे।

१४. इसलिए चार वर्षों तक वे सारे देश भर के बचे हुए लोगों को एकत्रित करते रहे जिससे कि जितनी शक्ति एकत्रित करना सम्भव था, एकत्रित कर लें।

१५. और जब सभी लोग अपनी इच्छानुसार जिस सेना का पक्ष लेना चाहते थे, लेने के लिए अपनी स्त्रियों और बच्चों के साथ एकत्रित हो गए तब युद्ध के (८) अस्त्र-शस्त्र से पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को सुसज्जित करने के लिए उन्हें ढाल, कवच, सिरटोप दिया गया और युद्ध की रीति के अनुसार वस्त्र पहिनाए गए— और वे एक दूसरे से लड़ने के लिए आगे बढ़े; और उस दिन उन्होंने

(१) ए० १३:२०, २१. (४) देखो १, मार० ६. (६) मार० ६:६. (७) ए० १३:१४. (८) ए० १०:२७.

सारा दिन युद्ध किया पर किसी की भी हार जीत न हुई।

१६. रात होते-होते वे थक कर अपने-अपने डेरों में लौट गए; और जब वे अपने-अपने डेरों में लौटे तब अपने मारे गए स्वजनों के लिए वे (९) महा रुदन करने लगे; और इतना अधिक रोने चिल्लाने लगे कि उनके रुदन से वायुमण्डल गूंज उठा।

१७. और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन वे फिर से युद्ध करने के लिए गए और यह दिन भी अति भयावह दिन हुआ; फिर भी किसी की हार जीत नहीं हुई, और जब रात फिर से हुई, तब फिर वे अपने (१०) मारे गए स्वजनों के लिए रुदन से वायु विदीर्ण करने लगे।

१८. और ऐसा हुआ कि कोरियण्टूमर ने (११) फिर से सेज के पास पत्र लिख कर अपनी इच्छा प्रकट की कि वह फिर से लड़ने के लिए न आए परन्तु राज्य ले कर लोगों को जीवन दान दे।

१९. और सुनो, प्रभु की आत्मा उनके लिए उद्योग करना समाप्त कर चुकी थी, और लोगों के हृदयों पर शैतान का पूर्णरूप से अधिकार हो चुका था; क्योंकि वे अपने हृदयों की कठोरता और बुद्धि की अन्धेपने से लाचार हो चुके थे जिससे कि वे नष्ट हो जाएं; इसलिए वे फिर से लड़ने के लिए आगे बढ़े।

२०. और ऐसा हुआ कि उस दिन भी वे दिन भर लड़े और जब रात हुई तब तलवार ले कर सोए।

२१. और दूसरे दिन भी रात होने तक वे लड़े।

२२. और रात होते-होते वे क्रोध में उसी तरह मतवाले हो उठे थे जिस प्रकार लोग मदिरा पान कर मतवाले हो उठते हैं; और फिर उन्होंने तलवार ले कर विश्राम किया।

२३. और दूसरे दिन उन्होंने फिर युद्ध किया; और रात होते-होते कोरियण्टूमर के केवल बावन लोगों को छोड़ कर और सेज के उनहत्तर लोगों को छोड़ कर शेष सभी मारे जा चुके थे।

२४. और उस रात भी वे अपनी तलवारों को ले कर सोए, और दूसरे दिन वे फिर लड़े, और उन्होंने अपनी शक्ति के साथ तलवारों और ढालों से सारा दिन युद्ध किया।

२५. और जब रात हुई तब सेज के बत्तीस लोग बचे और कोरियण्टूमर के सत्ताइस शेष रह गए।

२६. और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन मरने की तैयारी में खा पीकर वे सो गए। मानव बल की दृष्टि से वे दीर्घकाय और बलवान लोग थे।

२७. और दूसरे दिन वे तीन घण्टों तक लड़े और रक्त बहने से वे सब बेहोश हो गिर पड़े।

२८. और जब कोरियण्टूमर के लोगों को होश आया और चलने की शक्ति लौटी तब वे अपने प्राण लेकर भागना ही चाहते थे लेकिन उसी समय सेज और उसके आदमी उठ खड़े हुए और उसने क्रोध में प्रतिज्ञा की कि या तो वह कोरियण्टूमर को मार डालेगा या स्वयम् उसकी तलवार के द्वारा कट मरेगा।

२९. इसलिए उसने उनका पीछा किया और दूसरे दिन उन्हें पकड़ लिया; और उन्होंने पुनः तलवार से युद्ध किया। और ऐसा हुआ कि जब कोरियण्टूमर और सेज को छोड़ कर शेष सब मारे गए तब रक्त के निकल जाने से सेज सुधबुध खो कर गिर पड़ा।

३०. और कोरियण्टूमर ने अपनी तलवार का सहारा ले कुछ आराम किया और तब उसने सेज का सिर काट लिया।

३१. और जब उसने सेज का सिर काट लिया तब सेज अपने हाथों पर हो उठा और गिर पड़ा जिसके पश्चात् स्वांस के लिए छटपटा कर वह मर गया।

३२. और (१२) कोरियण्टूमर निश्चल मरे के समान हो धरती पर गिर पड़ा।

३३. और प्रभु ने एथर से कहा: आगे जाओ। और उसने वहां से आगे बढ़ कर देखा कि प्रभु की सभी बातें पूर्ण रूप से घट चुकी थीं; और उसने अपने अभिलेख को (१३) पूरा किया; जिसका (१४) एक सौवां भाग भी मैंने नहीं लिखा: और उसने उन्हें प्रभु के लिए उसी प्रकार छुपा दिया जिस अवस्था में (१५) लिमही के लोगों ने उन्हें पाया था।

(९) पद्य १७. (१०) पद्य १६. (११) पद्य ४. (१२) ओम० २०-२२. (१३) ए० १३:१४. (१४) देखो ५, ए० १. (१५) देखो ११, मू० ८.

३४. और एथर ने जो अन्तिम शब्द लिखे वे हैं: अगर मैं परमेश्वर के राज्य में बचा लिया गया तब चाहे मेरे इस मानवी शरीर के परिवर्तन द्वारा या इसी हाड़ मास के शरीर से प्रभु की इच्छा को प्राप्त करूं, इसकी कोई चिन्ता नहीं। आमीन।

मरोनी की पुस्तक

अध्याय १

मरोनी का एकाकीपन—लमनायटियों के हित की आशा से उसका और लिखना।

१. और अब मैं, मरोनी, यारद के लोगों के विवरण को (१) संक्षिप्त कर देने के पश्चात् और लिखना नहीं चाहता था; परन्तु अभी मैं जीवित हूं; और मैं अपने जीवित रहने का पता लमनायटियों को लगने नहीं देना चाहता अन्यथा वे मुझे मार डालेंगे।

२. क्योंकि सुनो, उनकी आपसी लड़ाई (२) भी अति भयंकर हो रही है; और द्वेष के कारण जो भी नफायटी मसीह को अस्वीकार नहीं करता उसे वे मार डालते हैं।

३. और मैं, मरोनी, मसीह को अस्वीकार कर नहीं सकता; इसलिए अपने प्राण रक्षा के लिए मैं इधर-उधर भटकता हूं।

४. इसलिए मुझे जो कुछ लिखना था उसकी अपेक्षा कुछ अन्य बातें भी मैं लिख रहा हूं क्योंकि और कुछ लिखना मेरे लिए मना था, लेकिन कुछ अल्प बातें मैं इसलिए लिख रहा हूं कि सम्भवत: ये मेरे लमनायटी बन्धुओं के लिए भविष्य में किसी समय प्रभु की इच्छानुसार (३) हितकर हों।

अध्याय २

बारह नफायटी शिष्यों के द्वारा पवित्रात्मा की देन के विषय में।

१. मसीह ने अपने जिन (१) बारह शिष्यों को चुना था, उन पर अपने हाथों को धरते हुए जो शब्द उसने कहे थे वे ये हैं।

२. उसने उनको उनके नाम से पुकारते हुए कहा: गम्भीर प्रार्थनाओं में तुम पिता को मेरे नाम पर पुकारो; जब तुम यह कर चुकोगे, तब तुम्हें यह सामर्थ्य प्राप्त होगा कि जिसके ऊपर तुम अपने हाथों को रखोगे, उसे (२) तुम पवित्रात्मा की देन दे सकोगे; और तुम यह मेरे नाम पर ही देना, क्योंकि इसी तरह मेरे शिष्य करते हैं।

३. मसीह ने इन शब्दों को उनसे उस समय कहा था जबकि वह पहिली बार प्रकट हुआ था; लेकिन (३) इन शब्दों को भीड़ वालों ने नहीं सुना था। परन्तु शिष्यों ने सुना था; और (४) उन्होंने जितने लोगों के ऊपर अपने हाथ धरे थे उन सब के ऊपर पवित्रात्मा उतरी थी।

अध्याय ३

पुरोहितों और शिक्षकों के अभिषिक्त करने के विषय में।

१. गिरजा के उपदेशक (एल्डर) कहाए जाने वाले (१) शिष्य (२) पुरोहितों और शिक्षकों को इस प्रकार अभिषिक्त करते थे।

२. मसीह के नाम पर पिता से प्रार्थना कर लेने के पश्चात् वे अपने हाथों को उनके ऊपर धर कर बोलते—

३. अंत तक मसीह के नाम पर विश्वास करते रहने में सहनशील बने रहने के द्वारा, पापों पर पश्चात्ताप करने और यीशु मसीह के द्वारा पापों की क्षमा प्राप्ति का प्रचार करने के लिए मैं तुमको मसीह के नाम पर एक पुरोहित अभिषिक्त करता हूं, (अगर वह शिक्षक है—या मैं तुम्हें एक शिक्षक नियुक्त करता हूं।

४. वे इस तरह पुरोहितों और शिक्षकों को, लोगों के दिव्य देनों और पुकारों के अनुकूल नियुक्त करते थे; और वे (३) पवित्रात्मा की उस शक्ति के द्वारा नियुक्त करते थे जो उनके अन्दर होती थी।

(१) एथर की पुस्तक देखो. (२) १ नफी १२:२०-२३, मार० ५:१५. (३) २ नफी ३:७, ११, १२, १९-२१, देखो ३, २ नफी २७. अध्याय २. (१) देखो ३, ३ नफी १२. (२) पद्य ३, ३ नफी १८:३७. (३) ३ नफी १८:३७. (४) देखो २. अध्याय ३. (१) देखो ३, ३ नफी १२. (२) पद्य २-४, देखो ३, मू० ६. (३) १ नफी १३:३७, मरो० ६:९.

अध्याय ४

रोटी वाले संस्कार को करने की विधि

१. (१) उपदेशकों और पुरोहितों के द्वारा गिरजा के लिए मसीह के (२) रक्त-मांस के संस्कार को करने की विधि, जिसे वे मसीह की आज्ञानुसार ही करते थे; इसलिए हम जानते हैं कि यह विधि सत्य है; और इसे उपदेशक या पुरोहित ही किया करते थे।

२. और वे गिरजा के साथ (३) घुटनों पर होकर पिता से मसीह के नाम पर यह कहते हुए प्रार्थना करते:

३. हे अनन्त पिता परमेश्वर, हम तुम्हारे पुत्र यीशु मसीह के नाम पर इस संस्कार में भाग लेने वालों की आत्मा के लिए, इस रोटी को आशीषित और पवित्र करने की याचना करते हैं; जिससे कि वे इसे आपके (४) पुत्र के शरीर की याद में खावें, और हे अनन्त पिता परमेश्वर, तुम्हें इस बात की साक्षी दें कि वे तुम्हारे पुत्र का (५) नाम अपने ऊपर लेने के लिए तत्पर हैं और उसको सदा स्मरण रखते हुए उसकी उन आज्ञाओं का पालन करते रहेंगे, जिन्हें उसने उन को दी हैं, जिससे कि आत्मा उनके साथ सदैव रहेगी। आमीन।

अध्याय ५

दाखरस के संस्कार की विधि।

१. दाखरस की विधि इस प्रकार है—सुनो, उन्होंने कटोरी को लेकर इस प्रकार कहा:

२. हे अनन्त पिता परमेश्वर, जितने लोग इसे पीने में भाग ले रहे हैं, उनकी आत्माओं के लिए हम आपके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर याचना करते हैं, कि आप इस दाखरस को आशीषित और पवित्र करें जिससे कि वे आपके पुत्र के (१) उस रक्त के स्मरण में इसे करें, जिसे उनके लिए गिराया गया था; जिससे कि हे अनन्त पिता परमेश्वर, वे तुमसे इस बात की साक्षी दें कि वे सदैव उसको स्मरण रखते हैं, जिससे कि वे उसकी आत्मा को सदैव अपने में पाएं। आमीन।

अध्याय ६

बपतिस्मा की व्यवस्था और विधि—गिरजा का अनुशासन।

१. और अब मैं बपतिस्मा के विषय में बोलना चाहता हूं। सुनो, (१) उपदेशक (२) पुरोहित और शिक्षक सबने बपतिस्मा लिया था; और उन्होंने बपतिस्मा के लायक फल लाए बिना ही (३) बपतिस्मा नहीं लिया था।

२. और न तो उन्होंने बिना भग्न हृदय और शोकार्त आत्मा के किसी को बपतिस्मा के लिए स्वीकार ही किया और उनके लिए गिरजा को साक्षी दी कि वे अपने किए सभी पापों पर पश्चात्ताप कर चुके हैं।

३. और बपितस्मा के लिए केवल उन्हीं को स्वीकार किया गया जिन्होंने मसीह का (४) नाम अपने ऊपर लिया और उसकी सेवा अंत तक करने का व्रत लिया।

४. और बपतिस्मा के लिए उन्हें स्वीकार कर लेने के पश्चात् और (५) पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा उन्हें शुद्ध करके उनकी गिनती मसीह के गिरजे में की गई, और उनका नाम लिया गया जिससे उनको स्मरण रखा जाए और उन्हें उचित पथ पर रखने और लगातार (६) प्रार्थना करने में चौकस रखने के लिए उन्हें परमेश्वर की श्रेष्ठ वाणी के द्वारा उनका पोषण होता रहे और वे उस मसीह का सहारा अवलम्बित करते रहें जो कि उनके विश्वास का उत्पादक और अन्तकर्ता है।

५. और (७) उपवास, प्रार्थना और अपनी आत्माओं की भलाई के लिए एक दूसरे से विचार विनिमय करने के लिए गिरजा के लोग समय-समय पर मिला करते।

६. और प्रभु यीशु के स्मरण में वे समय-समय

(१) मरो० ३:१. (२) देखो २०, ३ नफी १८. (३) सि० शर्त० २०:७६. (४) देखो २०, ३ नफी १८. (५) देखो ५, मू० ५
अध्याय ५. (१) देखो २०, ३ नफी १८, सि० शर्त० २०:७६, २७:२-४. अध्याय ६. (१) मरो० ३:१. (२) देखो ३, मू० ६.
(३) देखो २१, २ नफी ६. (४) देखो ५, मू० ५. (५) देखो २५, ३ नफी ६. (६) देखो ५, २ नफी ३२. (७) देखो २०, मू० २७.

पर (८) रोटी और दाखरस के संस्कार में भाग लिया करते थे।

७. और वे यह कड़ाई के साथ देखते थे कि उनके अन्दर पाप कर्म न होने पाए; और जिस किसी को भी पाप कर्म करते हुए पाया जाता तो गिरजा के (९) तीन गवाह उसे उपदेशक के सामने अपराधी ठहराते, और अगर वह पश्चात्ताप नहीं करता और अपने किए पाप को स्वीकार नहीं करता तब उसका नाम मिटा दिया जाता और उसकी गिनती मसीह के लोगों में नहीं की जाती।

८. और वे सच्चे हृदय से (१०) जितनी बार पश्चात्ताप करके क्षमा चाहते उतनी बार उन्हें क्षमा कर दिया जाता।

९. और गिरजा उनके अधिवेशनों को आत्मा के कामों के अनुकूल और पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा किया करता था, क्योंकि पवित्रात्मा (११) की शक्ति उपदेश देने के लिए, या लोगों को सावधान करने के लिए या प्रार्थना करने के लिए, या बिनती करने या भजन गाने के लिए चाहें जहां ले जाती वे वहां जाकर वैसा ही करते।

अध्याय ७

विश्वास, आशा और दान पर मॉरमन की शिक्षा को मरोनी का प्रस्तुत करना।

१. और अब मैं मरोनी, अपने पिता के कुछ शब्दों को लिख रहा हूं, जिन्हें उसने विश्वास, आशा और दान के (१) विषय में कहे थे; क्योंकि उसने लोगों से इसी प्रकार उस (२) भवन में कहा था जिसे उन्होंने प्रार्थना करने के लिए बनाया था।

२. और अब, मेरे प्रिय बन्धुओ, मैं मारमन तुमसे बोल रहा हूं। इस समय तुमसे बोलने की अनुमति पिता परमेश्वर की कृपा से और प्रभु यीशु मसीह और उसकी पवित्र इच्छा से मुझे (३) मेरी पुकार की देन के कारण मिली है।

३. इसलिए तुम जो गिरजा के लोग हो और मसीह के शान्त अनुगामी हो, और पर्याप्त आशा प्राप्त कर चुके हो, जिसके द्वारा तुम इस समय से लेकर स्वर्ग में प्रभु के साथ विश्राम करने तक के लिए उसके आराम-गृह में प्रवेश कर सकते हो।

४. मेरे भाइयो, जिस तरह तुम मानव समाज में शान्ति के साथ चल रहे हो उससे मैं यह निर्णय कर सका हूं।

५. क्योंकि परमेश्वर की वह वाणी मुझे स्मरण है जो कहती है (४) कि उनके कर्मों के द्वारा तुम उन्हें जानोगे; क्योंकि अगर उनके कर्म अच्छे होंगे, तब वे भी अच्छे होंगे।

६. क्योंकि सुनो, परमेश्वर ने कहा है कि दुष्ट होकर कोई भला कर्म नहीं कर सकता; और अगर वह किसी को कुछ देता है, या परमेश्वर से प्रार्थना करता है तब अगर वह अपने हृदय की अच्छी भावना से नहीं करता, तब उसे कोई लाभ नहीं होता।

७. सुनो, ऐसे कार्य अगर हृदय की अच्छी भावना से नहीं किए जाते तब वे उसके लिए धार्मिक कर्म नहीं होते।

८. अगर कोई दुष्ट किसी को उपहार देता है तब वह अनिच्छा पूर्वक ही देता है इस कारण उसके लिए यह न देने के समान ही है और वह परमेश्वर के सामने दुष्ट ठहराता है।

९. और इसी प्रकार अगर कोई हृदय की अच्छी भावना से प्रार्थना नहीं करता तब उसे भी उस व्यक्ति के लिए अच्छा नहीं माना जाता; और ऐसी प्रार्थना से उसको कोई लाभ नहीं होता क्योंकि ऐसी प्रार्थनाओं को परमेश्वर स्वीकार नहीं करता।

१०. इसलिए अगर कोई बुरा है तब वह ऐसा कार्य नहीं करेगा जो कि भला हो और न तो वह अच्छे उद्देश्य से ही कोई उपहार किसी को देगा।

११. क्योंकि सुनो, एक कड़वे श्रोत से मीठा जल नहीं प्राप्त होगा और न ही मीठे जल के श्रोत से कड़वा जल ही निकलेगा; इसलिए एक मनुष्य

(८) देखो २, ३ नफी १८. (९) सि० शर्त० ४२:८०, ८१. (१०) मू० २३:३६. (११) देखो ३, मरो० ३. अध्याय ७ (१) पद्य २१-३९, ४०-४४, ४५-४८, ए० १२:३-३७. मरो० ८:१४, २६; १०:२०-२३. (२) देखो २१, अल० १६. (३) ३ नफी ५:१३. (४) ३ नफी १४, १५:२०.

ईस्वी ४००-४२१ के मध्य

शैतान का सेवक होकर मसीह का अनुगामी नहीं हो सकता; और अगर वह मसीह का अनुगमन करता है तब वह शैतान का सेवक नहीं हो सकता।

१२. इसलिए (५) सभी अच्छी बातें परमेश्वर से आती हैं; और जो बुरी बातें हैं, वे शैतान से आती हैं; क्योंकि शैतान परमेश्वर का शत्रु है, और उसके विरुद्ध लगातार संघर्ष करता रहता है और लोगों को पाप करने के लिए आमन्त्रित करता हुआ उन्हें बहकाता रहता है और उसके बहकावे में पड़ना लगातार पाप करना होता है।

१३. लेकिन सुनो, जो परमेश्वर का है वह लगातार अच्छे कार्य करने के लिए आमन्त्रित करता हुआ बुलाता रहता है; इसलिए अच्छे कार्य करने और परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी सेवा करने के लिए आमन्त्रित करके जो बुलाता रहता है, वह परमेश्वर के द्वारा प्रेरणा से होता है।

१४. इसलिए मेरे प्रिए भाइयो, तुम यह मत (६) समझ बैठना कि जो बुरी बातें हैं वे परमेश्वर की हैं और जो अच्छी परमेश्वर की हैं वे शैतान की हैं।

१५. सुनो, मेरे प्रिए बन्धुओ, तुम्हें निर्णय करने योग्य इसलिए किया गया है कि जिससे तुम भले और बुरे को जान सको; और निर्णय करने का तरीका स्पष्ट है जिससे कि तुम निसन्देह उसी तरह जान लो जिस प्रकार अंधकार से प्रकाश भिन्न है।

१६. क्योंकि सुनो, मसीह की आत्मा हर एक व्यक्ति को इसलिए दी गई है जिससे वह उचित को अनुचित से जान सके; इसलिए निर्णय करने का रास्ता मैं दिखाता हूं; क्योंकि अच्छे कार्य करने की जो (७) प्रेरणा मिलती है और मसीह में विश्वास करने का आग्रह जो होता है, वे मसीह की शक्ति और देन के द्वारा भेजा जाता है; इसलिए तुम्हें पूर्ण रूप से जानना चाहिए कि ये सब ईश्वरीए हैं।

१७. और जो कुछ मनुष्य को अनुचित कर्म करने, मसीह में विश्वास न करने और उसे अस्वीकार करने और परमेश्वर की सेवा न करने के आग्रह होते हैं, उन्हें तुमको पूर्णरूप से जानना चाहिए कि वे सब शैतान की हैं; क्योंकि शैतान के काम ऐसे ही होते हैं, वह किसी से अच्छे कर्म करने का अनुरोध नहीं करता, किसी एक से भी नहीं; और न तो उसके दूत और न ही वे लोग जो उसके अनुगामी बन जाते हैं।

१८. और अब मेरे बन्धुओ, जबकि तुम उस ज्योति को जान चुके हो जिसके प्रकाश में तुम निर्णय कर सकते हो और जो कि मसीह का प्रकाश है, तब तुम्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि कहीं तुम (८) अनुचित निर्णय न ले लो; क्योंकि जिस निर्णय को तुम अपनाओगे ठीक उसी निर्णय से तुम्हारा भी न्याय होगा।

१९. इसलिए मेरे बन्धुओ, मैं तुमसे आग्रह करता हूं कि तुम मसीह के प्रकाश में परिश्रम पूर्वक ढूंढो जिससे कि तुम्हें भले और बुरे का ज्ञान हो; और अगर तुमने हर एक अच्छी बातों को अपनाया और उन्हें त्यागने योग्य नहीं ठहराया, तब तुम निश्चय ही मसीह की सन्तान ठहरोगे।

२०. और अब मेरे भाइयो, यह कैसे सम्भव हो सकता है कि तुम हर एक भली बातों को अपना लो?

२१. और अब मैं उस (९) विश्वास पर आता हूं जिसके विषय में मैंने कहा था कि बताऊंगा और मैं यह भी बताऊंगा कि किस प्रकार तुम हर एक भली बात को अपना सकोगे।

२२. सुनो, परमेश्वर (१०) शाश्वतकाल से शाश्वतकाल तक (११) सर्वज्ञ होने के कारण मानव वंश को सद्ज्ञान देने के लिए अपने दूतों को भेजा कि जिससे वे उन्हें मसीह के विषय में जानकारी करा सकें; और मसीह से ही सभी अच्छी बातें आएंगी।

२३. और परमेश्वर ने स्वयं भविष्यवक्ताओं से कहा था कि मसीह आएगा।

२४. और सुनो, भिन्न-भिन्न उक्तियों द्वारा उसने अच्छी बातों की जानकारी मानव वंश से कराई है; और सभी अच्छी बातें मसीह से आती है; अन्यथा मनुष्य पतित हो चुका था और (१२) कोई भी अच्छी बात उन तक जा नहीं सकती थी।

२५. इसलिए स्वर्गदूतों के उपदेशों, और परमेश्वर के मुख से निकले हर एक शब्द द्वारा मनुष्य मसीह पर विश्वास करने लगा, और इस

(५) देखो १५, ए० ४. (६) पद्य १८, ३ नफी १४:२, मार० ८:१९. (७) देखो १५, ए० ४. (८) देखो ६. (९) देखो १. (१०) देखो १, मू० ३. (११) देखो १८, २ नफी ९. (१२) देखो २ और ३, २ नफी २.

प्रकार (१३) विश्वास से वे हरएक भली बात को ग्रहण करने लगे; और मसीह के आने तक ऐसा ही रहा।

२६. और उसके आने के पश्चात् भी उसके नाम पर विश्वास करने से लोग बचाए गए हैं; और विश्वास के द्वारा ही वे परमेश्वर की संतान बनते हैं। और जितना निश्चय मसीह के जीवित रहने का है उतना ही निश्चय है कि इन शब्दों को उसने हमारे पूर्वजों से इस प्रकार कहा था (१४) मेरे नाम पर पिता से जो अच्छी बात इस विश्वास से मांगोगे कि वह तुम्हें मिलेगी, तब सुनो, वह वैसा ही होगा।

२७. इसलिए मेरे प्रिय बन्धुओं, मसीह के ऊपर स्वर्ग चले जाने और जो दया मानव वंश के लिए उसके पास है, उसका अधिकार पिता से मांगने के (१५) लिए वह परमेश्वर की दाहिने ओर बैठ जाने से, क्या चमत्कारों के होने का अन्त हो गया है?

२८. उसने सारे नियमों को पूरा किया है और (१६) जो लोग उस पर विश्वास करते हैं उन्हें वह अपनाता है; और उसपर विश्वास करने वालों को सभी अच्छी बातें प्राप्त होंगी; इसलिए वह मानव वंश के लिए (१७) वकालत करता हुआ वह अनन्त के लिए स्वर्गों में निवास करता है।

२९. क्या उसके ऐसा करने से (१८) चमत्कार के होने का अन्त हो गया है? मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं और न ही (१९) स्वर्गदूतों द्वारा मानव वंश के उपदेश देने का ही अन्त हुआ है।

३०. क्योंकि सुनो, वे उसके अधीन उसकी आज्ञा के शब्दों के अनुसार ही उपदेश देते हुए उनको दृढ़ विश्वास और विवेक के हर पहलुओं द्वारा दिव्यता को दिखाते हैं।

३१. और उनके उपदेश का उद्देश्य है लोगों को पश्चात्ताप के लिए तैयार करना और पिता के वचन को पूरा करना और उसके लिए काम करना जिसे उसने मानव वंश के लोगों में मसीह की वाणी को उन चुने हुए पात्रों को दिया था जिससे कि वे मसीह को साक्षी दे सकें।

३२. और ऐसा करके प्रभु परमेश्वर बचे हुए लोगों के लिए राह तैयार करता है जिससे कि लोग मसीह में विश्वास करें और (२०) पवित्रात्मा उनकी शक्ति के अनुसार उनके हृदयों में स्थान पा सके; और इस प्रकार मानव वंश को जो (२१) वचन पिता ने दिया था उसे वह पूरा करता है।

३३. और मसीह ने कहा है: अगर तुम मुझमें विश्वास करोगे तब मेरे निमित जो आवश्यक होगा उसे करने में तुम समर्थ होगे।

३४. और उसने कहा था: जगत का कोना-कोना (२२) पश्चात्ताप करे, मेरे पास आओ और मेरे नाम पर (२३) बपतिस्मा लो और मुझमें विश्वास करो, जिससे कि तुम बच जाओ।

३५. और अब मेरे भाइयो, मैंने जो इन बातों को तुमसे कहा है जिन्हें अन्तिम दिन को परमेश्वर बड़े (२४) बल और महान गौरव के साथ दिखाएगा कि वे सत्य हैं, और अगर ये सत्य हैं तब क्या (२५) चमत्कार के दिन बीत गए हैं?

३६. या मानव वंश के सामने स्वर्गदूतों का आना (२६) अब अन्त हो गया है? या उसने (२७) पवित्रात्मा की शक्ति को उनसे रोक रखा है? या अन्त काल तक अर्थात् जब तक कि धरती है, या जब तक धरती पर एक भी व्यक्ति बचाने के लिए बचा रहेगा तब तक क्या वह उस शक्ति को रोके रहेगा?

३७. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि नहीं; क्योंकि (२८) विश्वास से चमत्कार किए जाते हैं; और (२९) विश्वास के कारण ही स्वर्गदूत लोगों को उपदेश देने के लिए प्रकट होते हैं; इसलिए अगर ये काम नहीं होते हैं, तब संताप हो मानव वंश पर क्योंकि (३०) अविश्वास के कारण ही सब व्यर्थ है।

३८. और मसीह के शब्दों के अनुसार बिना उसके नाम पर विश्वास किए कोई भी बचाया नहीं जा सकता; इसलिए अगर ये बातें अब नहीं

(१३) देखो १. (१४) ३ नफी १८:२०. (१५) देखो ५, २ नफी २. (१६) देखो १. (१७) देखो ५, २ नफी २. (१८) देखो १८, २ नफी २६. (१९) पद्य ३०-३२, ३६, ३७. (२०) देखो २५, ३ नफी ९. (२१) देखो १०, ३ नफी १५. (२२) ३ नफी २७:२० ए० ४:१८. (२३) देखो २१, २ नफी ९. (२४) देखो ७, २ नफी ३३. (२५) देखो १८, २ नफी २६. (२६) देखो १९. (२७) १ नफी १०:१७-१९, २ नफी २८:४, मरो० १०:४, ५, ८, १९, २४:७. (२८) देखो १. (२९) देखो १९. (३०) पद्य ३८, मरो० १०:१९, २३-२७.

होती तब (३१) विश्वास का भी अन्त हो चुका है; और मनुष्य की स्थिति भयावह हो चुकी है, क्योंकि वे उसी प्रकार की स्थिति में हो चुके हैं जैसी कि मानो उद्धार की व्यवस्था बनाई ही न गई हो।

३९. लेकिन सुनो, मेरे प्रिए बन्धुओ, मैं तुम्हें इससे बढ़कर अच्छा समझता हूं; क्योंकि तुम्हारी दीनता के कारण मैं समझता हूं कि तुम मसीह में विश्वास करते हो; और अगर उसमें तुम विश्वास नहीं करते तब उसके गिरजा के लोगों में गिनती करने योग्य तुम नहीं हो सकते।

४०. और अब मैं फिर से तुमसे (३२) आशा पर बातें करना चाहता हूं। बिना आशा के तुम विश्वास कैसे प्राप्त कर सकते हो?

४१. और वह कौन सी वस्तु है जिसकी आशा तुम्हें करनी चाहिए? सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि (३३) मसीह के प्रायश्चित और पुनर्जीवित किए जाने की उसकी शक्ति के द्वारा (३४) अनन्त जीवन के लिए उठाये जाने की आशा तुम कर सकते हो, और यह उसके दिए वचन से, उसमें तुम्हारे विश्वास के कारण होगा।

४२. इसलिए अगर एक व्यक्ति विश्वास करता है तब उसको आशा भी करनी चाहिए; क्योंकि बिना विश्वास के आशा नहीं हो सकती।

४३. और फिर, सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि बिना विनीत और हृदय का दीन बने कोई विश्वास और आशा प्राप्त नहीं कर सकता।

४४. अगर वह ऐसा नहीं है तब उसका विश्वास करना और आशा करना व्यर्थ है, क्योंकि विनीत और हृदय के दीन को छोड़कर अन्य कोई भी परमेश्वर के सामने स्वीकार नहीं किया जाएगा; और अगर कोई विनीत और हृदय का दीन है और पवित्र आत्मा की शक्ति के कारण स्वीकार करता है कि यीशु ही मसीह है तब उसे (३५) उदार होना चाहिए; क्योंकि अगर वह उदार नहीं है तब वह कुछ भी नहीं है; इसलिए उसे उदार भी होना चाहिए।

४५. और उदारता का प्रभाव लम्बा और दयालू होता है और द्वेष रहित होता है, अहंकार में फूलता नहीं है, स्वार्थ रहित होता है, आसानी से क्रोधित नहीं होता, बुरा नहीं सोचता, पापों में आनन्द नहीं मनाता परन्तु सच्चाई में आनन्दित होता है, सभी कष्टों को सहता हुआ सभी सत्य बातों पर विश्वास करता है, सभी बातों में आशा करता हुआ सभी बातों में सहनशील बना रहता है।

४६. इसलिए मेरे प्रिए बन्धुओ, अगर तुम्हारे पास उदारता नहीं है तब तुम कुछ भी नहीं हो, क्योंकि उदारता कभी असफल नहीं होती। इसलिए उदारता को अपनाओ जो कि सबसे बढ़कर है क्योंकि अन्य बातें असफल होंगी।

४७. परन्तु उदारता मसीह का सच्चा प्रेम और चिरस्थाई है; और यह अन्तिम दिन को जिसके पास मिलेगा, उसका भला होगा।

४८. इसलिए मेरे प्रिए बन्धुओ, अपने हृदय की सम्पूर्ण शक्ति के द्वारा इस प्रेम से परिपूर्ण होने के लिए पिता से प्रार्थना करो जिसे कि उसने उन लोगों को देन में दिया है जो कि उसके पुत्र यीशु मसीह के सच्चे अनुगामी हैं; जिससे कि जब वह प्रकट होगा तब (३६) हम भी उसी के समान होंगे क्योंकि हम उसका वास्तविक रूप देख सकेंगे; जिससे कि हमें यह आशा प्राप्त होगी और हम उसी (३७) प्रकार निर्मल किए जाएंगे जैसा कि वह स्वयं निर्मल है। आमीन।

अध्याय ८

मरोनी को मारमन का पत्र—छोटे बच्चों को पश्चात्ताप या बपतिस्मा की आवश्यकता नहीं।

१. मेरे पिता मारमन द्वारा मुझ मरोनी को एक पत्र लिखा गया था; और उस पत्र का प्रचार करने के लिए मेरी पुकार जब हुई थी तब उसके शीघ्र पश्चात् इस प्रकार लिखा गया था :

२. मेरे प्रिए पुत्र मरोनी, मैं इस बात से अति आनन्द मना रहा हूं कि तुम्हारे प्रभु यीशु मसीह ने तुमको ध्यान में रखा और धर्म-प्रचार करने और उसके पवित्र कामों को करने के लिए तुमको पुकारा है।

३. मैं सदा अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा ध्यान

(३१) देखो ३०. (३२) देखो १. (३३) देखो ६, २ नफी२. (३४) देखो ४, २ नफी २. (३५) देखो १. (३६) ३ नफी २७:२७, १ यूहन्ना ३:२. (३७) ३ नफी १९:२८, २९.

ईस्वी ४००-४२१ के मध्य

रखता हूं और पिता परमेश्वर से पवित्र बच्चे यीशु के नाम पर लगातार प्रार्थना करता रहता हूं कि वह अपनी अनन्त उदारता और कृपा के द्वारा (१) उसके नाम पर विश्वास करते रहने के लिए अन्त तक तुम्हें स्थिर रखे।

४. और अब मेरे बेटे, मैं तुमसे उस विषय पर कुछ बोलना चाहता हूं जिसके कारण मुझे अति कष्ट हो रहा है; और वह है तुम लोगों के अन्दर फूट का उत्पन्न होना।

५. क्योंकि मैंने जो कुछ सुना है अगर वह सत्य है तब तुम्हारे छोटे बच्चों को (२) बपतिस्मा देने के विषय को लेकर तुममें मतभेद उत्पन्न हो गया है।

६. मेरे बेटे, अब मैं चाहता हूं कि तुम इस भारी मतभेद को मिटाने के लिए घोर परिश्रम करो, क्योंकि इसी उद्देश्य से मैंने तुम्हें यह पत्र लिखा है।

७. क्योंकि जैसे ही मुझे तुम्हारे इस विषय में पता लगा वैसे ही मैंने प्रभु से इस संबध में पूछताछ की और (३) पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा प्रभु की वाणी मेरे पास यह कहती हुई आई :

८. अपने उद्धारक, प्रभु और परमेश्वर मसीह की वाणी को सुनो। सुनो, मैं धार्मिकों को बुलाने जगत में नहीं आया परन्तु पापियों को पश्चात्ताप कराने के लिए आया हूं; जो स्वस्थ हैं, उनको वैद्य की आवश्यकता नहीं, वैद्य की आवश्यकता उन्हें है जो बीमार हैं, इस कारण छोटे बच्चे स्वस्थ हैं क्योंकि वे पाप करने में समर्थ नहीं है; इसलिए आदम का शाप (४) मेरे द्वारा उन पर से ले लिया जाता है, इसलिए उन पर उसका कोई प्रभाव नहीं रहता और (५) खतने का संस्कार भी मुझमें समाप्त हो जाता है।

९. इस तरह पवित्रात्मा ने परमेश्वर की वाणी को मुझ पर प्रकट किया, इसलिए मेरे प्रिए पुत्र छोटे बच्चों को बपतिस्मा देना परमेश्वर के सामने एक (६) गम्भीर हास्यास्पद बात है।

१०. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि तुम निम्न बातों की शिक्षा देना—पश्चात्ताप उन्हें करना चाहिए और बपतिस्मा उन्हें देना चाहिए जो कि पाप कर्म करने योग्य और उसके लिए उत्तरदायी होते हैं; हां, माता-पिता को शिक्षा दो कि उन्हें पश्चात्ताप करना और बपतिस्मा लेना चाहिए और अपने छोटे-छोटे बच्चों के समान अपने आपको विनीत बना लेना चाहिए और तब वे अपने बच्चों के साथ बचा लिए जाएंगे।

११. और उनके बच्चों को न तो पश्चात्ताप करने की आवश्यकता है और न बपतिस्मा लेने की। सुनो, पश्चात्ताप में बपतिस्मा लेना (७) पापों की क्षमा प्राप्ति के लिए आज्ञा का पालन करने के लिए है।

१२. परन्तु छोटे बच्चे तो (८) पृथ्वी की नींव के समय से मसीह में जीवित हैं; और अगर ऐसा नहीं है तब परमेश्वर पक्षपाती ठहरता है, और एक भाव रहित, और लोगों का सम्मान करने वाला होगा क्योंकि कितने बच्चे बिना बपतिस्मा के मर चुके हैं।

१३. इसलिए अगर छोटे बच्चे बिना बपतिस्मा लिए ही बचाए नहीं जा सकते तब वे अन्त न होने वाले अधोलोक मे चले गए होंगे।

१४. सुनो, मैं तुमसे कहता हूं कि जो व्यक्ति कहता है कि बच्चों को बपतिस्मा देना आवश्यक है, वह कड़वाहट के मध्य में और पापों के बन्धन में है, क्योंकि उसे न तो (९) विश्वास है, न आशा है, और न ही उसके पास उदारता ही है; इसलिए विचार से ही उसे अलग कर दिया जाएगा और उसे (१०) अधोलोक में ही जाना होगा।

१५. क्योंकि यह अत्यधिक दुष्टता होगी कि यह सोचा जाए कि बपतिस्मा के कारण एक बच्चे को बचा लिया जाएगा और दूसरा बपतिस्मा न लेने के कारण नष्ट कर दिया जाएगा।

१६. सन्ताप पड़ेगा उन लोगों पर जो इस प्रकार प्रभु के रास्तों को दूषित करेंगे और अगर उन लोगों ने पश्चात्ताप नहीं किया तब वे नष्ट कर दिए जाएंगे। सुनो, परमेश्वर की ओर से अधिकार प्राप्त कर मैं निर्भीकता के साथ कह रहा हूं; और मैं इस बात से भी डरता नहीं कि मनुष्य मेरी

(१) देखो ८, २ नफी ३१. (२) पद्य ६-२६. (३) देखो ३, मरो० ३. (४) देखो १३, मू० ३. (५) उत्पति १७:९-१४. (६) पद्य १४, २३ देखो २. (७) ३ नफी १२:२, ३०:२. (८) देखो ४, मू० ४. (९) देखो १, मरो० ७. (१०) ११, १ नफी १५.

हानि कर सकते हैं; क्योंकि पूर्ण प्रेम भय रहित कर देता है।

१७. और मैं उदारता से परिपूर्ण हूं जो कि अनन्त प्रेम है; इसलिए सभी बच्चे मेरे लिए एक समान हैं और मैं उन्हें अपने सम्पूर्ण प्रेम के साथ प्यार करता हूं और वे सभी एक समान हैं और (११) मुक्ति के साझीदार हैं।

१८. क्योंकि मैं जानता हूं कि परमेश्वर पक्षपाती नहीं है और (१२) न ही वह परिवर्तनशील है; परन्तु वह (१३) अनन्त से एक समान है और अनन्त तक एक समान रहेगा।

१९. छोटे बच्चे पश्चात्ताप नहीं कर सकते; इसलिए उनको परमेश्वर की शुद्ध दया से वंचित रखना भयंकर दुष्टता है, क्योंकि उसकी (१४) दया के कारण वे (१५) सभी उस में जीवित हैं।

२०. और जो कहते हैं कि छोटे बच्चों को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, वे उन्हें मसीह की दया से वंचित रखना चाहते हैं और उसके (१६) प्रायश्चित, और मुक्ति देने की उसकी शक्ति को कोई महत्व नहीं देते हैं।

२१. सन्ताप हो ऐसे लोगों को, क्योंकि वे मृत्यु (१७) अधोगति और अन्तहीन यातना के खतरे में होते हैं। मैं निर्भीकता के साथ कहता हूं; और ऐसा करने की आज्ञा परमेश्वर ने मुझको दी है। उनको सुनो और उन पर ध्यान दो, अन्यथा मसीह के न्याय आसन के सामने वे तुम्हारे विरुद्ध खड़े होंगे।

२२. क्योंकि सुनो, जबकि सभी छोटे बच्चे (१८) मसीह में जीवित हैं तब (१९) उन सभी पर नियम लागू नहीं होता। और जिन पर नियम लागू नहीं होता उन सभी पर उद्धार की शक्ति का प्रभाव असरकारक होता है; इसलिए जो अपराधी नहीं ठहरते, या जो किसी प्रकार के अपराध के अन्तर्गत नहीं आते, वे पश्चात्ताप नहीं कर सकते; और ऐसों के लिए बपतिस्मा का कोई महत्व नहीं होता।

२३. लेकिन मसीह की (२०) दया और पवित्र आत्मा की शक्ति को अस्वीकार करना और जो समाप्त हो चुके हैं उन कामों पर विश्वास करना परमेश्वर के सामने (२१) हंसी करना है।

२४. सुनो मेरे बेटे, ऐसा नहीं होना चाहिए; क्योंकि पश्चात्ताप तो उनके लिए है जो कि अपराधी हैं और व्यवस्था भंग करने से जो शाप ग्रस्त हैं।

२५. और पश्चात्ताप का प्रथम फल बपतिस्मा है; और वह आज्ञाओं को पूरा करने के लिए विश्वास से आता है; और आज्ञाओं को (२२) पूरा करना पापों की क्षमा को लाता है।

२६. और पापों की क्षमा लाती है दीनता और हृदय की नम्रता; और दीनता और हृदय की नम्रता से (२३) पवित्रात्मा आती है जो कि हमें सांत्वना देकर (२४) हमें आशा से और उस सम्पूर्ण प्रेम से भर देती है जो कि परिश्रम के साथ (२५) प्रार्थना में हमें तब तक लीन कराता है जब तक कि अन्त न आ जाए और सब सन्त परमेश्वर के साथ रहने न लगेंगे।

२७. सुनो मेरे बेटे, अगर मैं लमनायटियों के विरुद्ध शीघ्र नहीं गया तब मैं तुम्हें फिर लिखूंगा। सुनो इस जाति आर्थात् नफायटियों के अहंकार के कारण, अगर इन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब इनका नष्ट होना निश्चित है।

२८. उनके लिए विनती करो मेरे बेटे जिससे कि उनके पास पश्चात्ताप आए। लेकिन सुनो, मुझे भय है कि आत्मा उनके साथ उद्योग करना समाप्त कर चुकी है; और देश के इस भाग में भी परमेश्वर से आते हुए सभी सामर्थ्य और अधिकारों को समाप्त कर देने का प्रयत्न कर रहे हैं; और वे पवित्रात्मा को भी (२६) अस्वीकार कर रहे हैं।

२९. इतने बड़े ज्ञान को अस्वीकार करके मेरे बेटे, (२७) भविष्यवक्ताओं की कही गई वाणियों और हमारे रक्षक द्वारा स्वयं कहे गए शब्दों के अनुसार वे शीघ्र ही नष्ट हो जाएंगे।

३०. तब तक के लिए बिदा मेरे बेटे, जब तक

(११) देखो १३, मू० ३. (१२) देखो ४, मार० ९. (१३) देखो १, मू० ३. (१४) पद्य २०, २३. (१५) पद्य २२. (१६) देखो ६, २ नफी २. (१७) देखो ११, १ नफी १५. (१८) पद्य १९. (१९) देखो १०, मू० ३. (२०) पद्य १९, २०, २३. (२१) देखो ६. (२२) देखो ७. (२३) देखो २५, ३ नफी ९. (२४) देखो १, मरो० ७. (२५) देखो ५, २ नफी ३२. (२६) अल० ३९:५, ६. (२७) देखो ४, २ नफी १२.

ईस्वी ४०० और ४२१ के मध्य

कि मैं फिर तुम्हें न लिखूं या मैं फिर तुमसे न मिलूं आमीन।

अध्याय ९

अपने पुत्र मरोनी को मॉरमन का दूसरा पत्र लमनायटियों और नफायटियों द्वारा घोर दुष्कर्म—एक पिता का अंतिम और प्रेमपूर्ण सदुपदेश।

१. मेरे प्रिए पुत्र, मैं तुमको फिर से लिख रहा हूं जिससे कि तुम यह जान लो कि मैं अभी जीवित हूं; लेकिन मैं एक शोचनीय विषय को लिख रहा हूं।

२. क्योंकि सुनो, हमने लमनायटियों से भारी युद्ध किया परन्तु हम जीत न सके और तलवार से आकान्तुस, लूराम और अमरन मारे गए; हां, हमारे बहुत से चुने हुए आदमी मारे गए।

३. और अब सुनो मेरे बेटे, मैं इस बात से डरता हूं कि लमनायटी इन लोगों को (१) नष्ट कर देंगे; क्योंकि ये पश्चात्ताप नहीं करते और शैतान इनको लगातार भड़काता रहता है जिससे ये एक दूसरे पर क्रोधित हुआ करते हैं।

४. सुनो, मैं लगातार इनके साथ परिश्रम करता रहता हूं; और जब मैं (२) मर्मभेदी परमेश्वर की वाणी इनसे कहता हूं तब ये कांपते हैं और मुझ पर क्रोधित हो उठते हैं; और जब मैं इनसे तीखी बातें नहीं कहता तब ये वाणी के प्रति अपने हृदयों को कठोर बना लेते हैं; इसलिए मैं भय करता हूं कि (३) सम्भवत: प्रभु की आत्मा इनके साथ उद्योग करना समाप्त कर दे।

५.क्योंकि ये इतने अधिक क्रोधित हो उठते हैं कि इन्हें मरने तक का भय नहीं रहता; और अब इनके अन्दर एक दूसरे के प्रति प्रेम भी नहीं रह गया है; और ये रक्त के (४) प्यासे हो उठे हैं, और लगातार एक दूसरे से बदला ले रहे हैं।

६. और अब मेरे प्रिए बेटे, इनकी कठोरता की परवाह न करके हमें कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए; क्योंकि अगर हमने परिश्रम करना छोड़ दिया तब हम अपराधी ठहराए जाएंगे क्योंकि जब तक हम मिट्टी के इस मानव शरीर में हैं तब तक हमें हर प्रकार की धार्मिकता के शत्रु को जीतने के लिए परिश्रम करना और अपनी आत्माओं को परमेश्वर के राज्य में विश्राम देना हमारा कर्तव्य है।

७. और अब मैं इन लोगों के कष्टों के विषय में कुछ लिखना चाहता हूं। मैंने अमरोन से जो कुछ सुना है, उसके अनुसार लमनायटियों के पास बहुत से बन्दी हैं जिन्हें वे गिरजा की मीनार से ले गए थे और जिनमें पुरुष, स्त्रियां और बच्चे भी हैं।

८. और उन स्त्रियों और बच्चों के पिताओं और पतियों को उन्होंने मार डाला है और स्त्रियों को उनके पतियों का मांस, और बच्चों को उनके पिताओं का मांस खिलाते हैं और पीने के लिए बहुत ही थोड़ा जल देते हैं।

९. और लमनायटियों के ये भारी घृणित कर्म हमारे मोरियण्टूम के लोगों से बढ़कर नहीं हैं क्योंकि लमनायटियों की बहुत सी कन्याओं को पकड़ कर उन्होंने बन्दी बनाया हुआ है; और उनकी सबसे प्रिए और अमूल्य सतीत्व को और जो मर्यादा थी उसे इन लोगों ने लूट लिया है।

१०. और यह कर्म करके ये उनको दारुण यातना दे देकर उन्हें मार रहे हैं; और ऐसा करके अपने हृदयों की कठोरता के कारण ये उनके शरीरों के मांस को हिंसक पशुओं के समान खा जाते हैं; और ऐसा करने में वे बहादुरी का लक्षण मानते हैं।

११. हे मेरे प्रिए बेटे, इस तरह के लोग कैसे बिना सभ्यता के हो बैठे हैं।

१२. (और कुछ ही वर्ष पूर्व ये लोग सभ्य और आनन्दमय लोग थे।)

१३. लेकिन हे मेरे बेटे, इस तरह के लोग इतने घृणित कर्मों में कैसे आनन्द लेने लगे।

१४. हम अब कैसे सोच सकते हैं कि परमेश्वर अपने हाथ को हमें न्यायदण्ड देने से रोक सकता है?

१५. सुनो, मेरा हृदय रो रहा है; सन्ताप पड़े इन लोगों पर। हे परमेश्वर, न्याय करने के लिए आओ, और अपने सामने से उनके पापों, दुष्टताओं और घृणित कर्मों को ढक दो।

१६. और सुनो मेरे बेटे, सिरजा में बहुत-सी

(१) देखो ४, १ नफी १२. (२) देखो १, १ नफी १६. (३) मरो० ८:२८. (४) मार० ४:११, १२.

विधवायें और उनकी बेटियां हैं, और जो कुछ भोजनादि सामग्रियाँ लमनायटी नहीं ले जा सके उन्हें जनीफी की सेना ले गई और उन्हें पेट के लिए इधर-उधर भटकने के लिए छोड़ गई और बहुत-सी बूढ़ी स्त्रियां रास्ते में ही गिर कर मर जाती हैं।

१७. और मेरे साथ जो सेना है वह निर्बल हो चुकी है और लमनायटियों की सेना हमारे और सिरजा के मध्य है; और जितने लोगों ने भाग कर (५) आरुन की सेना में जाने की चेष्टा की, वे सब उनकी भारी निर्दयता के शिकार हो गए।

१८. ओह मेरे लोगों का दुराचार! उनके ऊपर कोई अनुशासन नहीं और वे बिना दया के हो चुके हैं। मैं एक आदमी हूं और मेरा बल एक आदमी का बल है, और मैं अपनी आज्ञाओं का अब और पालन नहीं करवा सकता।

१९. उनके दोष बहुत बढ़ चुके हैं और वे पशु के समान होकर किसी पर भी दया नहीं करते, और न तो बच्चों को छोड़ते हैं और न ही बूढ़ों को; और अच्छे कर्मों को छोड़कर हर तरह के कुकर्मों में वे आनन्द लेते हैं; और इस सारे देश के ऊपर हमारी स्त्रियों और बच्चों के कष्ट सबसे बढ़कर हैं; जिनका वर्णन न तो जीभ द्वारा किया जा सकता है और न ही लिखा जा सकता है।

२०. और अब मेरे बेटों, मैं इस हृदयविदारक बातों को और नहीं बढ़ाना चाहता। तुम इन लोगों की दुष्टता को जानते हो तुम जानते हो कि ये लोग बिना दया के और विचारहीन हो चुके हैं; और इनकी दुष्टता लमनायटियों से भी अधिक बढ़ चुकी है।

२१. सुनो पुत्र, मैं परमात्मा से इनकी कोई सिफारिश नहीं कर सकता अन्यथा वह मुझे दण्ड देगा।

२२. लेकिन मैं परमात्मा से तुम्हारी सिफारिश करता हूं और इसमें मैं मसीह में विश्वास करता हूं कि तुम बचा लिए जाओगे; और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह (६) तुम्हारे जीवन को बचा छोड़ दे जिससे कि तुम उसके लोगों को उसके पास लौटने की या सम्पूर्ण नष्ट होने की साक्षी बन सको; क्योंकि यह मैं जानता हूं कि अगर इन लोगों ने पश्चात्ताप नहीं की तब नष्ट हो जाएंगे।

२३. और अगर ये नष्ट हुए तो उन (७) यारदाइयों की तरह होंगे जिनमें (८) रक्त और बदला लेने की हार्दिक अभिलाषा बनी रहती थी।

२४. अगर ये नष्ट हो गए तब हम जानते हैं कि हमारे बहुत से बन्धु (९) विद्रोह कर लमनायटियों में जा मिले हैं और अभी बहुत से हमारे लोग विद्रोह कर उनमें जा मिलेंगे; इसलिए अगर तुम बचे रहे और मैं मर गया और तुम्हें देख न सका, तब तुम कुछ और आवश्यक बातों को लिख देना; परन्तु तुम्हें शीघ्र देखने की आशा मैं करता हूं; क्योंकि मेरे पास पवित्र अभिलेख हैं जिन्हें मैं तुम्हें (१०) देना चाहता हूं।

२५. हे मेरे बेटे, मसीह में भक्तिपूर्ण बने रहो; और जिन बातों को मैंने लिखा है उनसे अपने को कष्ट मत होने देना जिससे कि वे तुम्हें कष्ट पहुंचा कर मरणासन न कर सकें; परन्तु मसीह तुम्हारा उत्थान करे और उसके कष्ट, मृत्यु, हमारे पूर्वजों दर्शन देना उसकी दया और दीर्घ कष्ट झेलना, उसका यश और अनन्त जीवन की बातें तुम्हारी बुद्धि में सदैव स्थिर रहे।

२६. और जिस पिता परमेश्वर का सिंहासन ऊंचे स्वर्गों में है और हमारा प्रभु यीशु मसीह जो कि उसकी शक्ति के दाहिने ओर तब तक के लिए बैठता है जब तक कि सभी बातें उसके अधीनस्थ न हो जाएंगी, तुम्हारे साथ सदा के लिए रहे। आमीन।

अध्याय १०

लमनायटियों से मरोनी का विदा लेना—मारमन धर्मशास्त्र की सच्चाई पर व्यक्तिगत साक्षी लेने की स्थितियां—मरोनी का अपने लोगों के विषय के अभिलेख को मुहरबन्द करना।

१. और अब मैं, मरोनी, कुछ उन बातों को लिख रहा हूं जो हितकारी है और यह मैं अपने लमनायटी भाइयों के लिए लिख रहा हूं; और मैं चाहता हूं कि वे यह जानें कि मसीह के आने के (१) संकेत जो दिए गए थे, उस समय *चार सौ बीस वर्षों से भी अधिक बीत चुके हैं।

२. और मैं तुमसे कुछ सदुपदेश की वाणी कहकर

(५) मार० २:९. (६) मार० ८:३. (७) ए०. अध्याय १३-१५. (८) पद्य ५, मार० ४:११, १२. (९) १ नफी १३:३१, अल० ४५:१४. (१०) मार० ६:६. अध्याय १०. (१) ३ नफी २:८.

*लगभग ईस्वी ४२१

(२) इन अभिलेखों को मुहरबन्द कर दूंगा।

३. अगर परमेश्वर ने चाहा कि तुम इन बातों को पढ़ो, तब सुनो, मैं तुम्हें सावधान करता हूं कि जब तुम इन्हें पढ़ो, तब यह याद रखो कि (३) आदम के बनाए जाने के समय से लेकर इन बातों को प्राप्त करने के समय तक, परमेश्वर मानव वंश के लिए कितना दयालु रहा है और तुम अपने हृदय में इसका चिन्तन करना।

४. और जब तुमको ये बातें प्राप्त होंगी तब मैं तुम्हें सावधान करूंगा कि तुम परमेश्वर अमर पिता से मसीह के नाम पर पूछो कि क्या ये बातें सत्य नहीं हैं; और अगर तुम सच्चे हृदय से और अच्छी अभिलाषा से, मसीह में विश्वास करके पूछोगे, तब वह (४) पवित्रात्मा की शक्ति द्वारा तुम पर सच्चाई स्पष्ट प्रकट करेगा।

५. और तुम पवित्रात्मा की शक्ति द्वारा सब बातों की सच्चाई जानोगे।

६. और जो अच्छी बातें हैं, वे उचित और सत्य हैं; इसलिए कोई भी अच्छी बातें मसीह को अस्वीकार नहीं करतीं परन्तु यह स्वीकार करती हैं कि वह है।

७. और पवित्रात्मा की शक्ति के द्वारा तुम यह जान सकोगे कि वह है; इसलिए मैं तुम्हें सावधान करता हूं कि तुम परमेश्वर की (५) शक्ति को अस्वीकार मत करना; क्योंकि (६) वह वर्तमान में, और भविष्य में, और सदैव मानव समाज के (७) विश्वासानुसार शक्ति के साथ काम करता है।

८. मेरे भाइयो, मैं फिर तुम्हें सावधान करता हूं कि तुम परमेश्वर के उपहारों को, बहुत अधिक होने के कारण (८) अस्वीकार मत करना। वे उपहार सब एक ही परमेश्वर के पास से आते हैं। इनको कई तरह से दिए जाते हैं; परन्तु इन सब में उसी एक परमेश्वर का हाथ होता है; और ये लोगों की भलाई के लिए परमेश्वर की आत्मा मनुष्यों पर प्रकट होकर दिया करती है।

९. (९) क्योंकि सुनो, एक को परमेश्वर की आत्मा द्वारा इसलिए दिया जाता है कि जिससे वह दूसरों को विवेक के शब्दों की शिक्षा दे।

१०. और दूसरे को इसलिए दिया जाता है कि जिससे उसी आत्मा के द्वारा वह ज्ञान के शब्दों की शिक्षा दे।

११. और उसी आत्मा के द्वारा किसी को अत्यधिक विश्वास दिया जाता है और किसी को रोगियों को रोग मुक्त करने की योग्यता की देन दी जाती है।

१२. और फिर किसी को ऐसी देन दी जाती है जिसके द्वारा वह बड़े-बड़े चमत्कार दिखा सकता है।

१३. और किसी को सभी विषयों पर भविष्यवाणियां करने की योग्यता मिलती है।

१४. किसी को स्वर्गदूतों को और उपदेश देने वाली आत्माओं को देखने के लिए योग्यता प्राप्त होती है।

१५. और फिर किसी को सभी भाषाओं का उपहार मिलती है।

१६. और किसी को भाषाओं का अनुवाद करने और भिन्न-भिन्न भाषाओं को बोलने की योग्यता प्राप्त होती है।

१७. ये सभी उपहार मसीह की आत्मा द्वारा उसकी इच्छानुसार हरएक मनुष्य के पास, अनेक प्रकार से लाए जाते हैं।

१८. और मेरे प्रिय बन्धुओ मैं तुम्हें सावधान करता हूं कि तुम यह स्मरण रखना कि (१०) हरएक अच्छा उपहार मसीह से मिलता है।

१९. और मैं तुम्हें सावधान करना चाहता हूं कि तुम यह भी स्मरण रखो कि वह (११) भूत, वर्तमान और भविष्य में सदा एक समान है और जिन सभी उपहारों के विषय में मैंने कहा है, वे सब आत्मिक हैं और मानव वंश के अविश्वास के समय को छोड़कर (१२) इनको कभी भी अन्त नहीं किया जाएगा, यहां तक कि जब तक धरती रहेगी तब तक इन उपहारों को प्रचलित रखा जाएगा।

२०. इस कारण (१३) विश्वास का होना आवश्यक है; और अगर विश्वास रहा तब आशा

(२) मार० ९:९. (३) देखो १३, मू० २. (४) पद्य ५, ७, देखो ३, मरो० ३. (५) देखो १८, २ नफी २६. (६) देखो ४, मार० ९. (७) देखो ४, ३ नफी १७. (८) देखो ५, ३ नफी २९. (९) देखो ५, ३ नफी २९. १ कुरन्थियों १२:८-११. सिद्धान्त और शर्तनामा ४६:८-३०. (१०) देखो १५, ए० ४. (११) देखो ४, मरो० ९. (१२) देखो ३०, मरो० ७. (१३) देखो १, मरो० ७.

भी रहेगी; और अगर आशा रही तब उदारता भी रहेगी।

२१. और अगर तुम्हारे पास उदारता नहीं है तब तुम किसी भी तरह से परमेश्वर के राज्य में बच नहीं सकते; और न तो तुम विश्वास के न रहने से ही परमेश्वर के राज्य में बच सकते हो, और न ही आशाहीन होकर बच सकोगे।

२२. और अगर तुम्हारे पास आशा नहीं है तब तुम अवश्य ही निराश होगे; और निराशा पाप से आती है।

२३. और मसीह ने हमारे पूर्वजों से सच में कहा था: (१४) अगर तुममें विश्वास है तब तुम मेरे लिए सभी आवश्यक काम कर सकते हो।

२४. और अब मैं संसार के कोने-कोने के लिए बोल रहा हूं। (१५) अगर कभी वह दिन आएगा जब कि परमेश्वर की शक्ति और उपहार तुम्हारे अन्दर रह न जाएंगे, तब यह तुम्हारे अविश्वास के कारण ही होगा।

२५. और अगर कभी ऐसा हुआ तब संताप पड़े मानव वंश के ऊपर; क्योंकि उस समय तुम्हारे अन्दर अच्छे कर्म करने वाला कोई भी न रहेगा। अगर तुम में एक भी भला करने वाला रहेगा तब वह परमात्मा की शक्ति और देनों के द्वारा कर्मों को करेगा।

२६. और संताप पड़े उन पर जो ऐसी बातों को नष्ट कर के मरेंगे क्योंकि ऐसे लोग अपने पापों में मरते हैं और उन्हें परमेश्वर के राज्य में बचाया नहीं जा सकता; और मैं मसीह के कहे अनुसार ही कहता हूं; मैं असत्य नहीं कहता।

२७. और इन सब बातों को स्मरण रखने के लिए मैं तुम्हें सावधान किए देता हूं; क्योंकि वह समय शीघ्रता के साथ आता है जब कि तुम यह (१६) जानोगे कि मैं मिथ्या नहीं कहता क्योंकि तुम मुझे परमेश्वर के न्यायालय में देखोगे; और प्रभु तुमसे कहेगा: क्या मैंने अपनी उस वाणी की घोषणा तुमसे नहीं की थी जो कि इस व्यक्ति द्वारा लिखी गई थी जो कि मानो (१७) कोई मर कर उसी तरह पुकार रहा हो जैसे कोई मानो धूल में से बोल रहा हो?

२८. मैं भविष्यवाणियों की पूर्ति के लिए इन बातों की घोषणा करता हूं। और सुनो, अनन्त परमेश्वर के मुख से भी ये बातें निकलती रहेंगी; और उसकी वाणी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को (१८) बताई जाएगी।

२९. और परमात्मा (१९) तुम्हें दिखाएगा कि मैंने जो कुछ लिखा है वह सब सत्य है।

३०. और फिर मैं तुम्हें सावधान करना चाहता हूं कि तुम मसीह के पास आओ और हर एक (२०) अच्छे उपहार को ले लो और (२१) बुरे उपहारों को और अशुद्ध वस्तुओं को छूओ भी नहीं।

३१. और हे यरूशलेम (२२) जाग और धूल में से उठ और हे सियोन की बेटी, अपने सुन्दर वस्त्रों को धारण कर ले; अपने स्तम्भों को दृढ़ कर और सदैव के लिए अपनी सीमाओं को बढ़ा जिससे (२३) तुम्हारे अन्दर किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो जिससे कि हे इस्राएल के घराने वालों (२४) जो वचन अमर पिता ने तुम लोगों को दिया था, वह पूरा हो।

३२. हां, मसीह के पास आओ और उसमें पूर्ण विश्वास करो और जितनी बातें ईश्वर के प्रतिकूल हैं उन सब को त्यागो; और जब तुम परमेश्वर के प्रतिकूल जितनी बातें हैं उनको त्याग कर अपनी सम्पूर्ण-शक्ति और बुद्धि के साथ परमेश्वर से प्रेम करोगे, तब उसकी पर्याप्त कृपा तुम को प्राप्त होगी जिससे कि उसकी दया से मसीह में तुम पूर्ण बनोगे; और अगर तुम परमेश्वर की दया से मसीह में पूर्ण हुए तब तुम (२५) किसी भी तरह से परमेश्वर की शक्ति को अस्वीकार नहीं कर सकते।

३३. और फिर अगर तुम परमेश्वर की कृपा के द्वारा मसीह में पूर्ण बनते हो और उसकी शक्ति को अस्वीकार नहीं करते हो तब परमेश्वर की

(१४) मरो० ७:३३. (१५) देखो ३०, मरो० ७. (१६) देखो ७, २ नफी ३३. (१७) देखो १९, मार० ५ और ३३, मार० ८. (१८) देखो ४, २ नफी २९. (१९) देखो ७, २ नफी ३३. (२०) देखो १५, ए० ४. (२१) २ नफी १८:१९. (२२) यशा० ५२:१, २. (२३) ए० १३:८. (२४) देखो १०, ३ नफी १५. (२५) देखो ५, ३ नफी २६.

लगभग ईस्वी ४२१

दया से मसीह में, (२६) मसीह के गिराए गए रक्त से पवित्र किए जाओगे जो कि तुम्हारे पापों के क्षमा के लिए पिता के दिए गए वचन में है, जिससे कि तुम बिना धब्बे के पवित्र हो जाओ।

३४. और अब मैं सब से बिदा चाहता हूं। मैं शीघ्र ही परमेश्वर के (२७) स्वर्ग में तब तक आराम करने के लिए जाऊंगा जब तक कि मेरी आत्मा और शरीर फिर से (२८) एक साथ मिल न जाए और विजई हो वायु में से तुम से मिलने के लिए जीवित और मृत दोनों के न्याय करने वाले अनन्त निर्णायक महान यहोवा के आनन्ददायक न्यायालय में न ले जाया जाऊं।

(२६) देखो ६, २ नफी २. (२७) देखो १२, २ नफी ६, प्र० वा० २, ७. (२८) देखो ४, २ नफी २. (२९) याकूब ६:१३.
लगभग ईस्वी ४२१

अध्यायों का संक्षिप्त विवरण

नफी की प्रथम पुस्तक

अध्याय १—ईसा से ६०० वर्ष पूर्व, नफी के अभिलेख का आरम्भ होना—लेही का दिव्य दर्शन द्वारा अग्निस्तम्भ और भविष्यवाणी की पुस्तक को देखना—वह यरूशलेम के निकट भविष्य में होने वाले भयंकर परिणाम और मसीह के आगमन की भविष्यवाणी करता है—यहूदी उसके प्राण लेने की चेष्टा करते हैं।

अध्याय २—लेही का अपने परिवार के साथ लाल सागर के तट पर जंगल में जाना—उसके बड़े बेटों, लमान और लेमुएल का अपने पिता के विरुद्ध असन्तोष प्रकट करना—नफी और साम का उसकी बातों पर विश्वास करना। ईश्वर का नफी को वचन देना।

अध्याय ३—प्रभु के आदेश पर, लेही के पुत्रों को पीतल की पटियों को लाने के लिए वापस यरूशलेम भेजा जाना—लबान का पटियों को देने से इनकार करना। लबान और लेमुएल का स्वर्गदूत द्वारा झिड़की खाना।

अध्याय ४—युक्ति द्वारा नफी की पटियों को प्राप्त करना—अपनी ही तलवार द्वारा लबान का मारा जाना—जोराम का नफी और उसके भाइयों के साथ जंगल में जाना।

अध्याय ५—लेही के विरुद्ध सारा की शिकायत—अपने पुत्रों के लौटने पर दोनों की प्रसन्नता—पीतल की पटियों पर अंकित विषय—लेही युसुफ का एक वंशज—लबान भी उसी वंश का—लेही की भविष्यवाणियां।

अध्याय ६—नफी की भाषा—उसका वह लिखना जो परमेश्वर को पसन्द था।

अध्याय ७—लेही के पुत्रों को वापस यरूशलेम भेजा जाना—इस्माइल और उसके परिवार का लेही की साथ देने को तैयार होना—मतभेद—नफी का रस्सी से बांधा जाना, विश्वास द्वारा उसका बन्धनमुक्त होना—उसके विद्रोही भाइयों का पश्चात्ताप।

अध्याय ८—लेही का वृक्ष, नदी और लोहे की छड़ का स्वप्न—लमान और लेमुएल का वृक्ष के फलों का न खाना।

अध्याय ९—नफी की पटियों का विषय—दो प्रकार के अभिलेख—एक का विषय सैद्धान्तिक और दूसरा शासकों और युद्ध आदि से सम्बन्धित।

अध्याय १०—लेही द्वारा बेबलोन की गुलामी, और परमेश्वर का मेमना के आने की भविष्यवाणी—इस्राएल के घर का जैतून के वृक्ष की तरह—तितर-बितर होना और पीछे एकत्रित होने का संकेत में प्रकट करना।

अध्याय ११—नफी और परमेश्वर की आत्मा—लेही द्वारा भविष्य—सूचक स्वप्न देखना और उसका अर्थ निकाला जाना—नफी का कुमारी और ईश्वर—पुत्र का स्वप्न दर्शन करना—मसीह का धर्मोपदेश।

अध्याय १२—नफी का प्रतिज्ञा के देश का दर्शन पाना—भविष्य में नफी के वंश के निमित्त मुक्तिदाता का आना—उनकी धर्मपरायणता—दुराचार और पतन का पूर्व ज्ञान।

अध्याय १३—यहूदियों से भिन्न जाति वालों के राष्ट्र—एक महान घृणित गिरजा—अमरीका के इतिहास का पूर्वाभास—यहूदियों से पवित्र धर्मशास्त्र (बाइबिल) का प्रारम्भ होना—उसके तदुपरान्त मारमन की पुस्तक गैर-यहूदियों वालों की ओर या उन तक आना।

अध्याय १४—गैर-यहूदियों के लिए आशीर्वाद या शाप—केवल दो गिरजा—वेश्याओं की जननी को दण्ड—भेद खोलने वाला यूहन्ना का धर्मार्थकार्य—नफी के दिव्य-दर्शन का अन्त।

अध्याय १५—नफी द्वारा लेही की शिक्षा की व्याख्या—जैतून का वृक्ष—जीवन का वृक्ष—परमेश्वर की वाणी।

अध्याय १६—इस्माइल की कन्याओं से लेही के लड़कों का विवाह—आगे की यात्रा—इस्माइल की मृत्यु।

अध्याय १७—जलराशि—प्रभु द्वारा नफी को नाव बनाने की आज्ञा देना—उसके भाइयों द्वारा विरोध करना और उनका पराजित होना।

अध्याय १८—नाव बना कर तैयार की गई—याकूब और यूसुफ—नाव द्वारा यात्रा आरम्भ—अनुचित आनन्द और विद्रोह—समुद्र में आंधी—प्रतिज्ञा के देश में पहुंचना।

अध्याय १९—नफी द्वारा अपने लोगों का अभिलेख रखना—अनेक भविष्यवक्ताओं की चर्चा—जीनस और उसकी भविष्यवाणी।

अध्याय २०—पीतल की पटियों पर भविष्यवाणियों का अंकित किया जाना—यशायाह ४८ से तुलना करो।

अध्याय २१—पीतल की पटियों पर अंकित यशायाह के लेख का जारी रहना—यशायाह ४९ से तुलना करो।

अध्याय २२—नफी द्वारा, यशायाह की भविष्यवाणियों की व्याख्या करना—प्रतिज्ञा के देश में गैर-यहूदियों के एक प्रबल राष्ट्र की भविष्यवाणी—लेही के वंशजों का गैर-यहूदियों द्वारा पालन-पोषण—सियोन के विरुद्ध लड़ने वालों का परिणाम।

नफी की दूसरी पुस्तक

अध्याय १—प्रतिज्ञा का देश, स्वतन्त्रता की एक भूमि, धार्मिक लोगों के लिए आशीष किन्तु पापियों के लिए अभिशाप—लेही का उपदेश।

अध्याय २—लेही द्वारा उसके पुत्र याकूब को उपदेश देना—हरएक कार्य में विरोधी विचार आवश्यक—निषेधित फल और जीवन का वृक्ष—आदम का पतन कि जिससे मनुष्य को मुक्ति देने के लिए महान मध्यस्थ मसीह हो।

अध्याय ३—लेही का अपने पुत्र यूसुफ को उपदेश देना—मिश्र देश में यूसुफ द्वारा भविष्यवाणी—एक चुने हुए भविष्यदर्शी के विषय की भविष्यवाणी—मूसा का कर्तव्य—इब्रानी और नफायटी शास्त्र।

अध्याय ४—लमान और लेमुएल के पुत्र-पुत्रियों को लेही द्वारा आशीर्वाद देना—इस्माइल के परिवार और साम

की सन्तति को आशीर्वाद दिया जाना—लेही की मृत्यु और विद्रोह।

अध्याय ५—परमेश्वर द्वारा नफी को चेतावनी देना और उसके प्राण लेने की चेष्टा करने वालों से उसका अलग होना—जराम, साम, याकूब, यूसुफ और दूसरों का उसके साथ जाना—लबान की तलवार—मन्दिर बनाया जाना—नफी एक राजा या रक्षक—शाप द्वारा चर्म काला—पुरोहितों और अध्यापकों को प्रतिष्ठित करना।

अध्याय ६—याकूब का लोगों को उपदेश देना—उसका यशायाह की भविष्यवाणियों को देखना।

अध्याय ७—याकूब की शिक्षा का क्रम—यशायाह अध्याय ५० से तुलना करो।

अध्याय ८—याकूब की शिक्षा का क्रम—यशायाह ५१ से तुलना करो।

अध्याय ९—याकूब की शिक्षा का क्रम—अनन्त प्रायश्चित—रक्षक के कष्टों का पूर्व दर्शन—जहां कोई नियम नहीं वहां कोई दण्ड भी नहीं।

अध्याय १०—याकूब की शिक्षा का जारी रहना—मसीह का आगमन—प्रतिज्ञा के देश पर कोई राजा नहीं—सियोन के विरुद्ध जो लड़ेंगे वे नष्ट हो जाएंगे।

अध्याय ११—याकूब की शिक्षा का जारी रहना—परमेश्वर की वाणी के गवाह—मुक्तिदाता के संकेत।

अध्याय १२—भविष्यवाणियां, जिस प्रकार पीतल की पटियों पर अंकित की गईं—यशायाह अध्याय २ से तुलना करो।

अध्याय १३—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ३ से तुलना करो।

अध्याय १४—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ४ से तुलना करो।

अध्याय १५—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ५ से तुलना करो।

अध्याय १६—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ६ से तुलना करो।

अध्याय १७—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ७ से तुलना करो।

अध्याय १८—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ८ से तुलना करो।

अध्याय १९—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ९ से तुलना करो।

अध्याय २०—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय १० से तुलना करो।

अध्याय २१—पीतल की पटियों से शास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय ११ से तुलना करो।

अध्याय २२—पीतल की पटियों से धर्मशास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय १२ से तुलना करो।

अध्याय २३—पीतल की पटियों से धर्मशास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय १३ से तुलना करो।

अध्याय २४—पीतल की पटियों से धर्मशास्त्र का क्रम—यशायाह अध्याय १४ से तुलना करो।

अध्याय २५—नफी की व्याख्या—इस्राएल के वंश के तितर-बितर होने और पीछे उनके एकत्रित होने की भविष्यवाणी—ईसा के जन्म का समय निर्दिष्ट।

अध्याय २६—नफी की भविष्यवाणी का क्रम—नफायटियों में मसीह के प्रकट होने की भविष्यवाणी—उनका अन्तिम नाश—यहूदियों से भिन्न जाति वालों का युग।

अध्याय २७—नफी की भविष्यवाणियों का क्रम—पापियों के ऊपर परमेश्वर का न्याय—मुहरबन्द पुस्तक—अज्ञानी मनुष्य—तीन साक्षी—एक अद्भुत कार्य और एक आश्चर्य।

अध्याय २८—नफी की भविष्यवाणी का क्रम—अन्तिम दिनों के गिरजा और परिस्थितियां—शैतान के राज्य के हिलाए जाने की भविष्यवाणी—मनुष्य को बहकाने वाले उपदेश।

अध्याय २९—नफी की भविष्यवाणी का क्रम—धर्मशास्त्र और भिन्न-भिन्न जातियां—अन्य अभिलेख—परमेश्वर की वाणी एक साथ संकलित की जाएंगी।

अध्याय ३०—नफी की भविष्यवाणियों का क्रम—मतपरिवर्तित गैरयहूदियों को वचन दिए गए लोगों में गिनती—यहूदियों और लमनायटियों को विश्वास करना होगा—पापियों को नष्ट किया जाएगा।

अध्याय ३१—नफी की भविष्यवाणी का क्रम—मुक्तिदाता को क्यों बपतिस्मा दिया जाएगा—सीधा और सकरा रास्ता।

अध्याय ३२—नफी की भविष्यवाणी का क्रम—स्वर्गदूतों की भाषा—पवित्रात्मा का पद।

अध्याय ३३—नफी की अन्तिम साक्षी—जितना बोलने में शक्तिशाली उतना लिखने में नहीं—अपने लोगों के लिए उसकी भारी चिन्ता।

याकूब की पुस्तक

अध्याय १—नफायटी और लमनायटी लोग—लेही के पुत्र नफी की मृत्यु—हृदय की कठोरता और पापयुक्त रीतियां।

अध्याय २—याकूब द्वारा व्यभिचार और दूसरे पापों को भर्त्सना करना—दुष्कर्म के कारण बहुपत्नी प्रथा वर्जित।

अध्याय ३—याकूब को भर्त्सना का क्रम—नफायटियों से अधिक धार्मिक लमनायटी—विवाह में लमनायटियों की ईमानदारी के प्रति निष्ठा के कारण प्रशंसा—नफायटियों को पुनः चेतावनी।

अध्याय ४—याकूब की शिक्षा का क्रम—मसीह की ओर संकेत करता हुआ, नफायटियों में मूसा का नियम—यहूदियों द्वारा उसका बहिष्कार किए जाने का भविष्य-दर्शन।

अध्याय ५—याकूब द्वारा भविष्यवक्ता जीनस की चर्चा—अच्छे और जंगली जैतून वृक्ष का दृष्टान्त—इस्राएल और यहूदियों से भिन्न जातियां।

अध्याय ६—याकूब द्वारा जैतून वृक्ष के दृष्टान्त की व्याख्या करना—बगीचे का छांटा जाना—

अध्याय ७—सीरम द्वारा मसीह को अस्वीकार करना और एक चिन्ह मांगने पर मारा जाना—उसका अपने पापों को स्वीकार करना और मर जाना—एक सुधार का आरम्भ होना—नफायटियों के विरुद्ध लमनायटियों का द्वेष—याकूब का अपने पुत्र इनोस को पटियों का देना।

इनोस की पुस्तक

नफी के लोगों का अभिलेख, लमनायटियों में जाने के विषय पर प्रभु के वचन—इन दो लोगों का चरित्र, स्थिति और युद्ध।

जराम की पुस्तक

इनोस के पुत्र जराम का अभिलेख रखना—नफायटियों का प्रभु की सेवा करना और उनका प्रगति करना।

ओमनी की पुस्तक

ओमनी, अमरोन, चेमिस, अविनदोम, और अमलेकी के सम्मिलित लेख—मूसायाह का नफी का देश छोड़ना—उसका यरूशलेम से आए हुए अन्य लोगों द्वारा बसाए ज़राहेमला का देश पाना—उसको राजा बनाया जाना—कोरण्टूमर, अन्तिम यारदी—राजा बिन्यामीन— अन्य देशान्तरगमन।

मॉरमन की पुस्तक

नफी की छोटी पटीयों और मारमन की वाणी का संक्षेप—मारमन की पुस्तक के पूर्व भाग का अन्य भाग से सम्बन्ध।

मुसायाह की पुस्तक

अध्याय १—राजा बिन्यामीन का अपने पुत्रों का उपदेश देना—मूसायाह का अपने पिता का उत्तराधिकारी चुना जाना—मूसायाह का अभिलेख को पाना—इत्यादि।

अध्याय २—राजा बिन्यामीन का अपने लोगों को भाषण देने को मीनार बनाना—परमेश्वर से डरने वाले राजा का धार्मिक शासन।

अध्याय ३—राजा बिन्यामीन के उपदेश का जारी रहना—मसीह के विषय में एक और भविष्यवाणी—प्रायश्चित के विषय में और बातें।

अध्याय ४—राजा बिन्यामीन के वक्तव्य का समाप्त होना—मोक्ष की स्थितियां—मनुष्य का परमेश्वर पर आश्रय—निष्पक्षता, विवेक, और परिश्रम का निर्देशन।

अध्याय ५—राजा बिन्यामीन के वक्तव्य का प्रभाव—लोगों का अपने पापों पर पश्चात्ताप करना और मसीह के साथ अनुबंध करना और उसके नाम से उनका पुकारा जाना।

अध्याय ६—लोगों के नामों का लिखा जाना—पुरोहितों की नियुक्ति—मूसायाह के शासन का आरम्भ होना—राजा बिन्यामीन की मृत्यु।

अध्याय ७—लेही और नफी के देश की साहसिक यात्रा—आमोन और राजा लिमही— लेही और नफी के लोग लमनायटियों के दास

अध्याय ८—आमोन का चौबीस खुदी हुई स्वर्ण पटियों के पाए जाने का पता पाना, उसका उन पटियों को भविष्य-वक्ता और दिव्य-दर्शी राजा मूसायाह को दिए जाने की सलाह देना।

अध्याय ९—जनीफ के अभिलेख का प्रारम्भ—लेही —नफी के देश पर अधिकार करने के लिए जनीफ का जाना—लमनायटियों में एक भेदी—राजा लमान की धूर्तता।

अध्याय १०—राजा लमान की मृत्यु—अपने अत्याचारियों के विरुद्ध जनीफ और उसके लोगों का प्रबल होना।

अध्याय ११—दुष्ट राजा नूह और उसके पुजारी—भविष्य-वक्ता अभिनन्दी द्वारा प्रचलित दुराचारों की निन्दा करना—राजा नूह का उसकी जान लेने की चेष्टा करना।

अध्याय १२—बुरे कर्म करने वालों को फटकारने के कारण अभिनन्दी का कारागार में डाला जाना—झूठे पुरोहितों का उसका न्याय करने को बैठना—उनका पराजित होना।

अध्याय १३—भविष्यवक्ता अभिनन्दी की दिव्य—शक्ति के द्वारा रक्षा किया जाना, पुरोहितों का विरोध करना और नियम और सुसमाचार का उच्चारण करना।

अध्याय १४—अभिनन्दी का राजा नूह के पुरोहितों को यशायाह का उद्धरण देना—यशायाह ५३ से तुलना करो।

अध्याय १५—अभिनन्दी की भविष्यवाणी—अपने लोगों को मुक्त करने के लिए स्वयं परमेश्वर का आना—यीशु मसीह क्यों पिता और पुत्र कहलाते हैं?

अध्याय १६—अभिनन्दी की भविष्यवाणी का क्रम—मसीह ही एकमात्र मुक्तिदाता—मर कर जीवित होना और न्याय।

अध्याय १७—अभिनन्दी का धर्म के लिए प्राणत्याग करना—अग्नि द्वारा मृत्यु पीड़ा सहते हुए उसका अपने हत्यारों के प्रतिकार की भविष्यवाणी करना—अलमा का मत-परिर्वतन।

अध्याय १८—मारमन का जल—अलमा का हिलम और दूसरों को बपतिस्मा देना—मसीह की गिरजा—अलमा और उसके अनुयाइयों को नष्ट करने के लिए नूह का सेना भेजना।

अध्याय १९—असफल खोज—गिडियन का विद्रोह—लमना-यटियों का आक्रमण—राजा नूह का अग्नि द्वारा मृत्यु-यातना सहना। उसके पुत्र लिमही का अधीनस्थ राजा होना।

अध्याय २०—राजा नूह के पुरोहितों द्वारा लमनायटियों की कन्याओं का हरण—लमनायटियों का, राजा लिमही और उसके लोगों से इसका बदला लेने का प्रयास करना—उनका पीछे हटाया जाना और शान्त करना।

अध्याय २१—अभिनन्दी की और भविष्यवाणी का पूरा

होना—दासता में नफी के लोगों का भारी कष्ट झेलना—प्रभु द्वारा उनके शत्रुओं के हृदयों को कोमल करना—चौबीस पटियों की और बातें।

अध्याय २२—लमनायटियों के जुआ को उतार फेंकने की योजना—गिडियन की राय—लमनायटियों को नशे में किया जाना—बन्दी लोगों का भागना और वापस ज़राहेमला लौटना—जनीफ के लेखा का अन्त।

अध्याय २३—अलमा का राजा बनने से इनकार करना—हिलम के देश पर लमनायटियों का अधिकार करना—लमनायटी सम्राट के अधीन राजा नूह के दुष्ट पुरोहितों के मुखिया अमुलोन का शासन करना।

अध्याय २४—अमुलोन का अलमा और उसके अनुसरण करने वालों को कष्ट देना—प्रभु द्वारा उनके बोझों को हलका करना और दासता से मुक्त करना—उनका ज़राहेमला लौटना।

अध्याय २५—मूलक का वंशज ज़राहेमला—जनीफ की लेखा और अलमा का विवरण लोगों के लिए पढ़ा जाना—अलमा द्वारा सारे देश में मसीह के गिरजा की स्थापना करने की अनुमति देना।

अध्याय २६—अविश्वासियों और दुष्टों को कुछ बातें—प्रभु द्वारा अलमा को बताया जाना कि उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए।

अध्याय २७—उपद्रव का निषेध और समानता का समावेश किया जाना—अविश्वासियों में अलमा के एक, और राजा के चार पुत्र—उनका चमत्कारिक मत परिवर्तन—उनका धर्म प्रचारक बनना।

अध्याय २८—मूसायाह का अपने लड़कों को लमनायटियों में प्रचार करने की अनुमति देना—चौबीस पटियों का अनुवाद किया जाना—अलमा को लेखाओं का संरक्षक नियुक्त किया जाना।

अध्याय २९—राजा मुसायाह का शासन सम्बन्धी उपदेश—प्रजातन्त्र ढंग के राज्य का योग्य बतलाना—न्यायाधीश का चुना जाना—वृद्ध अलमा की मृत्यु—मुसायाह की मृत्यु से नफायटी राजाओं के शासन का अन्त होना।

अलमा की पुस्तक

अध्याय १—गिरजा के शत्रु निहोर द्वारा गिडियन की हत्या। न्याय के लिए उसको लाया जाना और प्राण दण्ड—पुरोहिती छल और उपद्रव—सुधारी गई परिस्थितियां—पुरोहित और साधारण जनता एक समान।

अध्याय २—अमलिकी का राजा बनने का प्रयत्न करना—बहुमत द्वारा उसको अस्वीकार किए जाने पर भी उसका राजा बनना—युद्ध में उसकी हार—उसका लमनायटियों से मिलना—अलमा का अमलेकी को मारना और उसकी सेना को नष्ट करना।

अध्याय ३—अमलिसायटियों का चिन्ह और लमनायटियों पर अभिशाप—नफायटियों की एक और विजय।

अध्याय ४—गिरजा विस्तार—सफलता, अहंकार, और पाप नफी का मुख्य निर्णायक बनाया जाना।

अध्याय ५—अलमा का देश भर के नगरों में लोगों को पवित्र प्रभु के अनुसार वाणी को सुनाना।

अध्याय ६—जो सुधार ज़राहेमला में आरम्भ हुआ उसका प्रसार गिडियन नगर में होना।

अध्याय ७—अलमा के अभिलेख के अनुसार उसको वे बातें जिसे उन्होंने गिडियन के लोगों को सुनाया।

अध्याय ८—मीलक में अलमा की सफलता—अमोनिहा के लोगों द्वारा उसका बाहर निकाला जाना—एक स्वर्ग-दूत द्वारा सांत्वना दिया जाना और उसका वापस लौटना—प्रचार के लिए अमूलक का उसके साथ होना—बहुत बड़ी शक्ति का दिया जाना।

अध्याय ९—अमोनिहा के लोगों में अलमा का प्रचार करना और उनको पश्चात्ताप करने के लिए आह्वान करना—उसके साक्ष्य का अस्वीकार किया जाना।

अध्याय १०—अमूलक के पूर्वज—मनासाह के द्वारा लेही, यूसुफ का वंशज—अमूलक का अपने विचार परिवर्तन को बताना—उसका वक्तव्य—उसका कपटी वकीलों और निर्णायकों को दोषी ठहराना—जीज़रोम।

अध्याय ११—निर्णायक और उनका हर्जाना—नफायटियों के सिक्के और उनके माप—अमूलक द्वारा जीज़रोम का पराजित होना।

अध्याय १२—अलमा द्वारा अमूलक को साक्षी का अनुमोदन करना—जीवन के वृक्ष का सिद्धान्त प्रायश्चित द्वारा पाप से मुक्ति की योजना की व्याख्या।

अध्याय १३—अलमा के उपदेश का क्रम—परमेश्वर के पुत्र का पवित्र पद—मुख्य पुरोहित—नियुक्ति क्यों—मेल्कोसेदेक और इब्राहीम।

अध्याय १४—अलमा और अमूलक का बन्दी बनाया जाना—उनके अनुयाइयों पर अत्याचार—अग्नि द्वारा मृत्यु—जीज़रोम का पश्चात्ताप करना और उनके लिए वकालत करना—भविष्यवक्ताओं को मुक्त होना और उनके शत्रुओं का मारा जाना।

अध्याय १५—जीज़रोम का चमत्..री ढंग से चंगा होना, और उसका गिरजा में सम्मिलित होना और उपदेश देना—बहुतों का बपतिस्मा लेना—अलमा और अमूलक ज़राहेमला लौटना।

अध्याय १६—एक युद्ध की पुकार—लमनायटियों द्वारा अधर्मी शहर अमोनिहा का नष्ट किया जाना—जोराम और उसके पुत्रों द्वारा शत्रु का मर्दन किया जाना—निहोर की निर्जनता—गिरजा का व्यापक रूप में स्थापित होना।

अध्याय १७—इस्माइल के देश में आमोन—उसका राजा लमोनी का नौकर होना—राजा के पशुओं की साहस के साथ रक्षा करना।

अध्याय १८—राजा लमोनी का आमोन को महान आत्मा

समझना—उसके सच्चे परमात्मा के विषय में शिक्षा दिया जाना—प्रभु की आत्मा का प्रभाव पड़ना।

अध्याय १९—आश्चर्यजनक परिवर्तन—अविश—एक लमनायटी स्त्री लमनायटी राजा और रानी का धर्म स्वीकार करना—इस्माइल देश में आमोन का गिरजे की स्थापना करना।

अध्याय २०—आमोन और राजा लमोनी का मिदोनी की यात्रा करना—उनका लमोनी के पिता से मिलना जो कि सारे देश का राजा है—उसका पहले विरोध फिर विरोध त्यागना—उसके द्वारा भारी कृपा किया जाना।

अध्याय २१—अमलकायटियों के द्वारा आरुन और मुलकी को अस्वीकार किया जाना और उनका मिदोनी जाना—उनका बन्दी बनना—उनका मुक्त होना और प्रचार करना—आमोन का और अधिक सफल होना—प्रार्थना भवन का बनाया जाना।

अध्याय २२—नफी के देश में आरुन—राजा और उसके पूरे परिवार का मत परिवर्तन—नफायटी और लमनायटियों के मध्य देश का बंटवारा।

अध्याय २३—धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा किया जाना—बहुत से लमनायटियों का मत परिवर्तन करना—अमलकायटी और अमुलोनायटी लोगों का सत्य को अस्वीकार करना—एण्टी-नफी-लेही नामकरण।

अध्याय २४—परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध लमनायटियों की चढ़ाई—मत परिवर्तित लमनायटियों का शस्त्र धारण करने से इनकार करना—और मत परिवर्तन किया जाना।

अध्याय २५—लमनायटियों के द्वारा आक्रमण किया जाना—अमुलोनायटियों द्वारा बदला लिया जाना—प्राणोत्सर्ग—अभिनन्दी की और भविष्यवाणियों का पूरा होना।

अध्याय २६—आमोन का प्रभु का यशगान करना—धार्मिकता में अहंकार करना—अपने और अपने बन्धुओं के प्रति उसका आशीर्वादों को गिनना।

अध्याय २७—एण्टी-नफी-लेही के लोगों का ज़राहेमला में शरण लेना—उनका आमोन के लोग कहलाना—जसन का देश उनको दिया जाना।

अध्याय २८—लमनायटियों का नफायटियों से युद्ध करना—भयंकर संग्राम—लमनायटियों का हारना—महारुदन।

अध्याय २९—अलमा का सभी लोगों से पश्चात्ताप करने का अनुरोध करने की उत्कण्ठा करना—परमेश्वर की वाणी का विवेक में विभाग करना—अपने भाइयों की सफलता से अलमा का आनन्द मनाना।

अध्याय ३०—मसीह के विरुद्ध कोरिहर, उसका जारसन से निकाला जाना और गिडियन में उसका बन्दी बनना—ज़राहेमला में दोष लगाया जाना—उसका चिन्ह मांगना और गूंगा हो जाना—घृणास्पद मृत्यु।

अध्याय ३१—स्वधर्म त्यागी जोरमायटियों को पुन: धर्म में लाने के लिए अलमा का नेतृत्व करना—पवित्र वेदी—आराधना करने का जोरमायटी ढंग।

अध्याय ३२—धनहीनों का मुक्ति के सन्देश को सुनना—अलमा की स्तुति और उपदेश—विश्वास करने की इच्छा से विश्वास का बढ़ना।

अध्याय ३३—अलमा के उपदेश का क्रम: सच्ची आराधना का उपासना गृहों तक ही सीमित नहीं रहना—भविष्यवक्ता जीनस और जीनुक की पुन: चर्चा किया जाना।

अध्याय ३४—अमूलक का साक्षी देना—महान और अन्तिम बलिदान—दया भी किस प्रकार न्याय होती है—पश्चात्ताप में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

अध्याय ३५—नफायटी धर्म प्रचारकों का जारसन देश वापस लौटना—उनके द्वारा मतपर्वितित जोरमायटियों का स्वदेश से निर्वासित किया जाना और उनसे मिलना—युद्ध की तैयारियां।

अध्याय ३६—अलमा का अपने पापमय अतीत की चर्चा करना, उसका चमत्कारी ढंग से मत परिवर्तन करना और प्रचार में उसका उत्साह।

अध्याय ३७—इलामन को अभिलेखों और अन्य पवित्र स्मारक की वस्तुओं का सौंपा जाना—गाजीलम—लियाहोना—एक प्रकार की ईश्वर की वाणी।

अध्याय ३८—अलमा की वे आज्ञायें जो उसने अपने पुत्र सिबलोन को दी थी।

अध्याय ३९—व्यभिचार के कारण कोरियन्दन को झिड़का जाना—उसके पापमय आचरण से जोरमायटियों के विश्वास पर प्रभाव पड़ना—मसीह की उद्धार योजना का पूर्वकाल पर प्रभावित होना।

अध्याय ४०—अलमा द्वारा कोरियन्दन को उपदेश देने का क्रम—पुनर्जीवन सारे विश्व के लिए—मृत्यु और पुनर्जीवन में धार्मिकों और पापियों की भिन्न स्थितियां—वास्तव में पूर्व स्थिति की स्थापना।

अध्याय ४१—अलमा द्वारा कोरियन्दन को उपदेश का क्रम—पुनर्स्थापना से अभिप्राय—मनुष्यों का न्याय उनके कर्मों और इच्छाओं के अनुसार स्वयं निर्णय करना।

अध्याय ४२—अलमा द्वारा कोरियन्दन को उपदेश देने का क्रम—न्याय और दया की व्याख्या—जीवन का वृक्ष—मानव जीवन परीक्षा का समय—आध्यात्मिक और लौकिक मृत्यु—पश्चात्ताप—प्रायश्चित—नियम-दण्ड, सब आवश्यक।

अध्याय ४३—अलमा और उनके पुत्रों ने कई बार शिक्षा देने और प्रचार करने गए—एक और लमनायटी आक्रमण—मरोनी और लेही की सेनाओं का शत्रुओं को घेरना और उन्हें पराजित करना।

अध्याय ४४—मरोनी की उदारता—उसके प्रस्ताव को ज़राहेमना का अस्वीकार करना, परन्तु बाध्य होकर शर्तों को मानना—लमनायटियों का शान्ति के लिए शर्तबद्ध होना—अलमा के लेखाओं का अन्त।

अध्याय ४५—नफायटियों के अन्त की भविष्यवाणी—मूसा के विदा की तुलना—गिरजा में कलह।

अध्याय ४६—राजा बनने के लिए अमलिकियाह का षड्यन्त्र—मरोनी और स्वाधीनता की पद्वी—स्वतन्त्र रहने के लिए लोगों का शर्तबद्ध होना—अमलिकियाह का भाग जाना।

अध्याय ४७—विश्वासघात द्वारा अमलिकियाह का लमनायटियों का राजा बनना—उसकी भयंकर दुष्टता।

अध्याय ४८—अमलिकियाह का नफायटियों के विरुद्ध लमनायटियों को भड़काना—विग्रह का सामना करने के लिए मरोनी का तैयारी करना—एक सच्चा देशभक्त और परमेश्वर का प्रबल अनुचर।

अध्याय ४९—लमनायटियों ने नूह के नगर पर आक्रमण किया—आक्रमणकारी लमनायटियों को हैरान करना और उन्हें पीछे हटाना—अपनी असफलता पर अमलिकियाह का भारी क्रोध करना—गिरजे की प्रगति।

अध्याय ५०—मरोनी का ज़राहेमला और नफी के देश के मध्य—सीमा पर मोर्चेबन्दी को दृढ़ करना—मोरियन्दन का उत्तर के देश पर अधिकार करने की योजना बनाना—टेनकम द्वारा उसका मारा जाना—नफियाह का उत्तराधिकारी पहोरन का होना।

अध्याय ५१—राजार के लोगों और स्वतन्त्र लोगों—स्वतन्त्र लोगों द्वारा मुख्य निर्णायक पहोरन को उसके पद पर बनाए रखना—राजा के लोगों का पराजित किया जाना—अमलिकियाह का आक्रमण—उसकी पराजय और मृत्यु।

अध्याय ५२—अमरोन का अमलिकियाह का उत्तराधिकारी होना—मरोनी का टेनकम और लेही के साथ मूलक नगर को वापस लेना और उनकी भारी विजय—लमनायटी सेनाध्यक्ष याकूब की मृत्यु।

अध्याय ५३—सम्पन्न नगर का दृढ़ किया जाना—नफायटियों की फूट से शत्रुओं को लाभ पहुंचाना—इलामन और उसके दो सहस्त्र युवकों की सेना।

अध्याय ५४—अमरोन द्वारा बन्दियों की अदला-बदली करने की मांग को स्वीकार किया जाना—लमनायटी राजा का क्रोधपूर्ण उत्तर।

अध्याय ५५—अमरोन के असत्य विश्वास से क्रोधित होकर मरोनी द्वारा बन्दियों की अदला-बदली को अस्वीकार करना—बन्दी बनाए गए नफायटियों का युद्ध कौशल द्वारा छुड़ाया जाना—गिड नगर का बिना रक्त गिराए लिया जाना।

अध्याय ५६—मरोनी को इलामन का पत्र—तरुण लमनायटियों का आश्चर्यजनक साहस और विश्वास—[illegible] और भयंकर युद्ध—नफायटियों की विजय।

अध्याय ५७—इलामन का पत्र—क्रमश: अण्टिपारा नगर का वापस लिया जाना—कुमोनी नगर का आत्मसमर्पण किया जाना—लमनायटियों का मण्टी तक भगाया जाना—चमत्कारी ढंग से रक्षा—लमनायटी बन्दियों का भाग जाना।

अध्याय ५८—इलामन के पत्र की समाप्ती—मण्टी के सामने नफायटी सेना की कार्यवाइयां—लमनायटियों का धावा—गिड और टेमनार द्वारा नगर का लिया जाना—शत्रुओं का पीछे हटना।

अध्याय ५९—मरोनी का पहोरन के पास लिखकर इलामन को सहायता पहुंचाने की मांग करना—लमनायटियों का नफियाह नगर को लेना—सरकार द्वारा दिलचस्पी न लेने से मरोनी का क्रोध करना।

अध्याय ६०—पहोरन को मरोनी का दूसरा पत्र—उपेक्षा करने से असंतोष प्रकट करना—बदले के भय के कारण अविलम्ब सहायता की मांग करना।

अध्याय ६१—पहोरन का देश भक्ति पूर्ण उत्तर— उसका अपने और स्वतन्त्र लोगों को दोष से मुक्त ठहराना—नफायटी साम्राज्य का डगमगाना—विद्रोहियों के विरुद्ध शासक का सेना से सहायता मांगना।

अध्याय ६२—पहोरन की सहायता के लिए मरोनी का जाना—ज़राहेमला का विद्रोहियों के हाथों से लिया जाना—इलामन, लेही और टेनकम को सहायता भेजना—लमनायटियों का मरोनी देश में केन्द्रित होना—टेनकम का अपने प्राण देकर आमोन को मारना—लमनायटियों को देश से बाहर खदेड़ा जाना।

अध्याय ६३—शिबलन का इलामन का स्थान लेना—मरोनी की मृत्यु— नावों का निमार्णकर्ता हागूथ—नफायटियों का उत्तर के देश की जहाजी यात्रायें करना—इलामन का लेखाओं को रखना—मरोनियाह का लमनायटियों को पराजित करना—अलमा के लेख—विवरण का अन्त।

इलामन की पुस्तक

अध्याय १—न्याय आसन के लिए पहोरन के पुत्रों का झगड़ना—किस्कूमन द्वारा द्वितीय पहोरन को मार डालना—कोरियण्टूमर नफायटी मतभेदी—ज़राहेमला का छीना जाना और उसका फिर से लिया जाना।

अध्याय २—द्वितीय इलामन का प्रधान निर्णायक बनाया जाना—किस्कूमन का मारा जाना—गुप्त संधि—गेडियन्दन डाकू।

अध्याय ३—उत्तर की ओर देशान्तरगमन—भारी जलाशयों और नदियों वाला देश—सीमेन्ट के मकान—अभिलेखों का रखा जाना—इलामन का पुत्र नफी के द्वारा पिता का स्थान ग्रहण करना।

अध्याय ४—गिरजा में भारी मतभेद—ज़राहेमला देश पर लमनायटियों का फिर से आक्रमण करना—नगर का लिया जाना—नफायटियों का सम्पन्न देश में खदेड़ा जाना—मरोनियाह का रास्ते पर मोर्चेबन्दी करना—दुष्टताओं से निर्बल होना और नफायटियों का सूर्य अस्त होना।

अध्याय ५—नफी का न्यायासन को सेजोराम को देना—अपने भाई लेही के साथ उसका उपदेश देने में समय लगाना—आश्चर्यजनक स्पष्टीकरण—मत परिवर्तित लमना-

यटियों की जीती भूमि को वापस नफायटियों को लौटाना।

अध्याय ६—लमनायटियों का नफायटियों के पास उपदेशकों को भेजना—शान्ति और स्वतन्त्रता का साम्राज्य—लेही और मूलक देश—सेजोराम और उसके पुत्र की हत्या—गेडियन्दन डाकुओं का शासन छीनना।

अध्याय ७—नफी के प्रारम्भ की भविष्यवाणियां, पुत्र इलामन—उत्तर में लोगों द्वारा नफी को अस्वीकार किया जाना, उसका ज़राहेमला देश वापस लौटना—अपने बाग की मीनार पर से उसका परमेश्वर से प्रार्थना करना और लोगों की भीड़ को उपदेश देना।

अध्याय ८—नफी के उपदेशों का क्रम—भ्रष्ट निर्णायकों द्वारा लोगों को उसके विरुद्ध भड़काने का असफल प्रयत्न करना—प्रेरणा द्वारा वह प्रधान निर्णायक की हत्या की घोषणा करता है।

अध्याय ९—नफी की बात का सत्य सिद्ध होना—न्याय आसन के पास प्रधान निर्णायक का मरा पाया जाना—नफी और अन्य पांच व्यक्तियों पर दोषारोपण—उनका निर्दोष सिद्ध होना—हत्यारे के नाम का पता चलना।

अध्याय १०—नफी को भारी शक्ति देने का वचन देकर प्रभु द्वारा सांत्वना देना—उसका पश्चात्ताप करने का प्रचार करना और दुष्टों को भयंकर न्यायदण्ड की चेतावनी देना।

अध्याय ११—गुप्त रूप से लुटेरों के गिरोह द्वारा विध्वंस—भारी अकाल—लोगों का प्रभु की ओर घूमना और फिर से संपन्न होना—मतभेद और तनाव—गेडियन्दन दल का फिर से सक्रिय किया जाना।

अध्याय १२—लोगों की हालत पर मारमन की आलोचना—मनुष्य की निर्बलता और परमेश्वर की श्रेष्ठता और शक्ति —धन्य हैं पश्चात्ताप करने वाले—मनुष्यों का न्याय उनके कर्मों के अनुसार।

अध्याय १३—सामुएल का प्रारम्भ की भविष्यवाणी—नगर की दीवाल पर से सामुएल का भविष्यवाणी करना—न्याय की तलवार का चौथी पीढ़ी पर पड़ने की चेतावनी—धार्मिकों के कारण नफायटी नगरों को बचा छोड़ा जाना—भूमि को शाप दिया जाना—नाशवान सम्पत्ति।

अध्याय १४—लमनायटी सामुएल का मसीह के विषय में भविष्यवाणी करना—पांच वर्षों में मसीह के जन्म होने के संकेत और उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी।

अध्याय १५—लमनायटी सामुएल की चेतावनी के शब्दों का क्रम—उसके कुछ बचे हुए लोगों का सुरक्षित किए जाने का आश्वासन—अगर नफायटी पश्चात्ताप नहीं करेंगे तब वे सम्पूर्णतया नष्ट हो जाएंगे।

अध्याय १६—कुछ नफायटियों का मसीह के गिरजा में सम्मिलित होना। अधिकांश का सामुएल की साक्षी को अस्वीकार करना—उनका उसे मारने और पकड़ कर बांधने का प्रयत्न करना—उसका बचकर स्वदेश लौटना—नफी द्वारा और प्रचार किया जाना—संशय की अधिकता।

तीसरा नफी

अध्याय १—इलामन के पुत्र नफी का विदा होना—मुक्तिदाता के जन्म के चिन्ह—प्रतिकूल प्रभाव का पड़ना—फिर से गेडियन्दन डाकुओं का प्रकट होना।

अध्याय २—नफायटियों का अधर्मी होना—नफायटी समय गणना में परिवर्तन—श्वेत लमनायटी—दोनों जातियों का डाकुओं और हत्यारों से सुरक्षा के लिए संगठन।

अध्याय ३—देश के शासक लक्षोनस का डाकुओं के सरदार गिडियानी से पत्र प्राप्त करना—आत्मसमर्पण की आज्ञा का मिलना—लक्षोनस का आज्ञा की उपेक्षा कर रक्षा की तैयारी करना।

अध्याय ४—डाकुओं का पराजित किया जाना और उनके नेता का मारा जाना—उसके उत्तराधिकारी का फांसी पर लटकाया जाना—गिडगिडोना की सैनिक वीरता।

अध्याय ५—नफायटियों का पश्चात्ताप और पापकर्मों को समाप्त करने का प्रयत्न—मारमन द्वारा स्वयं का और अपने पास रखी पटियों का विवरण—इस्राएली वंश का एकत्रित होने का संकेत।

अध्याय ६—लोगों का सम्पन्न होना—अहंकार, सम्पत्ति और वर्गभेद का आना—मतभेद के कारण गिरजे का विभाजन होना—अंधकार में किए जाने वाले कार्य।

अध्याय ७—प्रधान निर्णायक की हत्या और शासन का पलटा जाना—जातियों में भी विभाजन—राजा याकूब—नफी का प्रभावपूर्ण उपदेश।

अध्याय ८—बताए हुए संकेतों के द्वारा मसीह का क्रुश पर चढ़ाए जाने की साक्षी—आंधी, भूकम्प, बवण्डर और ज्वाला—एक भयंकर विनाश—तीन दिनों तक अंधकार।

अध्याय ९—परमेश्वर की वाणी द्वारा प्रकोप का विस्तार और उसके कारणों का प्रकट किया जाना—मूसा के नियम का पूरा होना—एक निराश हृदय और एक शोकार्त आत्मा का बलिदान स्वीकार किए जाने योग्य।

अध्याय १०—देश में शान्ति—स्वर्ग से पुनः वाणी का सुनाई देना—अंधकार का हटना—केवल अधिक धार्मिक लोगों को बचाया जाना।

अध्याय ११—नफायटियों में पुनर्जीवित मसीह का स्वयं दिए गए उपदेश के अभिलेख का आरम्भ— अमर पिता द्वारा मसीह के विषय की घोषणा—पुनर्जीवित मसीह का प्रकट होना—भीड़ को उसके घावों को छूने की अनुमति—बपतिस्मा की विधि की व्यवस्था—विवाद और तर्क की मनाई—मसीह चट्टान।

अध्याय १२—मुक्तिदाता द्वारा नफायटियों को उपदेश देना—उसका बारह शिष्यों को नियुक्त करना—भीड़ के लिए उसके शब्द—उसके पर्वत पर दिए उपदेश को दोहराना—मत्ती ५ से तुलना करो।

अध्याय १३—रक्षक द्वारा नफायटियों को उपदेश देने का क्रम—बारह शिष्यों को उसकी आज्ञायें—मत्ती ६ से तुलना करो।

अध्याय १४—रक्षक द्वारा धर्मोपदेश का क्रम—भीड़ को और आज्ञायें—मत्ती ७ से तुलना करो।

अध्याय १५—मूसा की व्यवस्था का हटाया जाना—व्यवस्था को देने वाले के द्वारा व्यवस्था को पूरा किया जाना—लोगों की उपस्थिति में दूसरे बाड़े की भेड़ की घोषणा—यहूदियों से बातचीत।

अध्याय १६—एक और बाड़े की भेड़ों को मुक्तिदाता की बातें सुनने का अवसर—विश्वासी भिन्न जातिवालों को आशीर्वाद—इंजील अस्वीकार करने वालों की स्थिति—भविष्यवक्ता यशायाह के कहे शब्दों का प्रमाण देना।

अध्याय १७—रक्षक की आज्ञायों का क्रम—खोई हुई शाखा—रक्षक द्वारा बीमार को रोग मुक्त करना और बच्चों को आशीर्वाद देना—एक आश्चर्यजनक और हृदयस्पर्शी दृश्य।

अध्याय १८—नफायटियों में रोटी और दाखरस सस्कार का किया जाना—प्रार्थना करने की आवश्यकता पर बल देना—पवित्रात्मा को देने का अधिकार दिया जाना।

अध्याय १९—बारह नफायटियों के नाम—उनका बपतिस्मा लेना—पवित्रात्मा का दिया जाना—रक्षक का दुबारा आना—एक अवर्णनीय प्रार्थना का किया जाना।

अध्याय २०—चमत्कारी ढंग से दाखरस और रोटी का दिया जाना और इसका संस्कार—याकूब के अवशेष वंश—रक्षक द्वारा अपने आपको मूसा के समान कहाए जाने वाला भविष्यवक्ता प्रकट करना—कई भविष्यवक्ताओं की वाणियों का प्रमाण दिया जाना।

अध्याय २१—पिता के काम का संकेत—पश्चात्तापयुक्त दूसरी जातियों का उत्तम सौभाग्य—पश्चात्तापहीनों की अधोगति की भविष्यवाणी—नया यरूशलेम।

अध्याय २२—रक्षक द्वारा यशायाह की भविष्यवाणी से उदाहरण देना—यशायाह ५४ से तुलना करो।

अध्याय २३—रक्षक द्वारा नफायटी अभिलेखों में भूल से छूटी हुई बातों को लिखने की आज्ञा देना—लमनायटी सामुएल की भविष्यवाणी का सम्मिलित किया जाना।

अध्याय २४—नफायटियों को मलाकी की वाणी का दिया जाना—दशांश और भेंट—दान का नियम—मलाकी ३ से तुलना करो।

अध्याय २५—मलाकी की वाणी का क्रम—एलियाह और उसका उद्देश्य—प्रभु का महान और भयानक दिन—मलाकी अध्याय ४ से तुलना करो।

अध्याय २६—रक्षक द्वारा सभी बातों की आरम्भ से व्याख्या करना—शिशुओं के मुख से आश्चर्यजनक बातें कहा जाना—शिष्यों के कार्य।

अध्याय २७—यीशु द्वारा अपने गिरजे का नाम दिया जाना—पिता द्वारा ही सभी बातों का लिखा जाना—जो कुछ पुस्तकों में लिखा गया उन्हीं के अनुसार लोगों का न्याय होगा।

अध्याय २८—बारह शिष्यों में से हरएक की अभिलाषा का पूरा होना—गौरव के साथ प्रभु के आने के समय तक तीन को पृथ्वी पर रहने के लिए चुना जाना—तीनों को आश्चर्यजनक जानकारी प्राप्त करना—उनको मृत्यु और विपत्तियों से अमर किया जाना।

अध्याय २९—प्रभु की वाणी और कामों को तिरस्कार करने वालों को मारमन द्वारा चेतावनी।

अध्याय ३०—मारमन का अन्य जातियों को पश्चात्ताप करने के लिए पुकारना।

चौथा नफी

उसके अभिलेखानुसार नफी के लोगों का विवरण—मसीह के गिरजे की प्रगति—नफायटियों और लमनायटियों का मत परिवर्तन करना—सभी बातों में उनकी समानता—दो धार्मिक पीढ़ियों के पश्चात् विभाजन और धर्म भ्रष्टता—आमोस और अमरोन का बारी-बारी अभिलेखों को रखना।

मारमन की पुस्तक

अध्याय १—पवित्र अंकित लिपि सम्बन्धी कर्तव्य का पालन करने के लिए अमरोन का मारमन को आदेश देना—युद्ध और दुष्टता—तीन नफायटी शिष्यों का विदा होना—मारमन को प्रचार करने से रोका जाना— अभिनन्दी और लमनायटी सामुएल की भविष्यवाणियों को पूरा करना।

अध्याय २—मारमन का नफायटी सेना का संचालन करना—गेडियन्दन डाकुओं के विषय में और बातें—संधि द्वारा उत्तर के देश को नफायटियों को, और दक्षिण का देश लमनायटियों को दिया जाना।

अध्याय ३—नफायटियों की लगातार दुष्टता—मारमन का उनकी सेना का नेता बने रहने से इनकार करना—उसका भविष्य की पीढ़ियों को उपदेश—बारहों द्वारा इस्राएल के घराने वालों का न्याय।

अध्याय ४—नफायटियों का लमनायटियों से प्रतिकारक युद्ध आरम्भ करना—नफायटियों की पराजय—शिम पहाड़ से पवित्र अभिलेखों का लिया जाना।

अध्याय ५—मारमन का दया करना और फिर से लमनायटियों की अध्यक्षता करना—लमनायटियों का नफायटियों से अधिक संख्या में होना—अपराध और रक्तपात—मारमन द्वारा अभिलेखों का संक्षिप्त किया जाना।

अध्याय ६—कुमोरा का पहाड़ और उसके अभिलेख—दोनों राष्ट्रों का अन्तिम संघर्ष—लमनायटियों की विजय—चौबीस नफायटी बचे।

अध्याय ७—मारमन का लमनायटियों को निश्चय कराना कि वे इस्राएल के घराने के लोग हैं—उनको मुक्ति के लिए सावधान करना।

अध्याय ८—मरोनी का अपने पिता के अभिलेख को पूरा करना—कुमोरा के रक्तपात के पश्चात् मारे गए लोगों में मारमन—देश लमनायटियों और डाकुओं के अधिकार

में—मारमन का अभिलेख धरती में से निकाला जाएगा—अन्तिम दिनों की परिस्थितियों और दुर्भाग्य का वर्णन।

अध्याय ९—अविश्वासियों से मारमन का निवेदन—मसीह के विषय में उसकी साक्षी—नफायटी भाषा का मिश्रियों की भाषा का संशोधित रूप माना जाना।

एथर की पुस्तक

अध्याय १—भविष्यवक्ता एथर की वंशावली—महान मीनार—यारद और उसका भाई—उनकी भाषा भ्रष्ट नहीं हुई—प्रभु के निर्देशानुसार देशान्तरगमन की तैयारी करना।

अध्याय २—निमरोद की घाटी में—डेसरट मधुमक्खियां—यारद के भाई से प्रभु का फिर से बातें करना—आनन्द देश के विषय में दिव्य व्यवस्था—मोरिन्कूमर नामक स्थान—नौकाओं का बनाया जाना।

अध्याय ३—प्रभु की उंगली—यीशु मसीह की आत्मा का अपने आपको यारद के भाई को दिखाना—चमकीले पत्थर—अनुवादक—एक और अभिलेख आएगा।

अध्याय ४—यारद के भाई को लिखने की आज्ञा का दिया जाना—मरोनी की गम्भीर चेतावनी वे लोग शापित हैं जो प्रभु की वाणी का विरोध करते हैं,—अच्छे कर्म करने की प्रेरणा परमेश्वर देता है।

अध्याय ५—अपने लिखे लेखों के प्रति भविष्य के अनुवादकों के लिए मरोनी की सम्मति।

अध्याय ६—यारदाइयों की कथा जारी—चमत्कारी ढंग मे उनकी नौकाओं में प्रकाश का होना—समुद्र की गहराई को पार कर आनन्द देश में—लोगों का एक राजा की इच्छा करना—अशुभ की आशंका करते हुए भी नेताओं का बहुमत के आगे झुकना—भाई की मृत्यु।

अध्याय ७—ओरिहा का धार्मिक शासन, विद्रोह, बल प्रयोग और कलह—शूले और कोहर के प्रतिस्पर्धी राज्य—दुष्टता और मूर्तिपूजा—भविष्यवक्ताओं का आना और लोगों का पश्चात्ताप करना।

अध्याय ८—उदार राजा ओमर—सिंहासन पाने के लिए उसके पुत्र यारद का आकिश के साथ षड्यन्त्र करना—कलह और रक्तपात—गुप्त और हत्यारों का दल—इस प्रकार के दलों के विपरीत आधुनिक अन्य जातियों को चेतावनी।

अध्याय ९—ओमर का सिंहासन खोना और उसे फिर से प्राप्त करना—एमर का उन्नतिशील शासन उस युग के कूरिलम और कुमोम पशु—लघुकालिक राजा लोग—अकाल और विषधर सर्प।

अध्याय १०—भूल करने वाला रिप्लाकिश—सुधार करने वाला मोरियन्दन—दूसरे राज और उनकी लड़ाइयां—वनयुक्त दक्षिणी देश—उत्तर का देश आबाद।

अध्याय ११—यारदाई भविष्यवक्ताओं द्वारा अपने लोगों का, अगर उन्होंने पश्चात्ताप नहीं किया तब पूर्ण रूप से नाश होने की भविष्यवाणी करना—चेतावनी का अनसुनी किया जाना।

अध्याय १२—भविष्यवक्ता एथर और राजा कोरियण्टूमर—यारदाई और नफायटी भाषायें—परमेश्वर लोगों को निर्बलता इस कारण देता है कि जिससे वे विनीत बनें—अन्य जातियों से मरोनी की विदाई।

अध्याय १३—मरोनी का यारदाई इतिहास को जारी रखना—एथर और उसकी भविष्यवाणियां—उसकी जान लेने की चेष्टा—उसका चट्टान की गुहा में निवास करना—उसका अपने लोगों के विनाश का दृश्य रात को देखना।

अध्याय १४—देश पर शाप—और संघर्ष और रक्तपात जारी रहना—कोरियण्टूमर का तलवार से मारा न जाना।

अध्याय १५—रामा अथवा कुमोरा पहाड़—एक भारी संघर्ष की तैयारी—लाखों की संख्या में लोगों का मरना—कोरियण्टूमर द्वारा सेज का मारा जाना—एथर के अन्तिम शब्द—यारदाई अभिलेख का अन्त।

मरोनी की पुस्तक

अध्याय १—मरोनी का एकाकीपन—लमनायटियों के हित कि आशा से उसका और लिखना।

अध्याय २—बारह नफायटी शिष्यों के द्वारा पवित्रात्मा की देन के विषय में।

अध्याय ३—पुरोहितों और शिक्षकों के अभिषिक्त करने के विषय में।

अध्याय ४—रोटी वाले संस्कार को करने की विधि।

अध्याय ५—दाखरस के संस्कार की विधि।

अध्याय ६—बपतिस्मा की व्यवस्था और विधि—गिरजा का अनुशासन।

अध्याय ७—विश्वास, आशा और दान पर मारमन की शिक्षा को मरोनी का प्रस्तुत करना।

अध्याय ८—मरोनी को मारमन का पत्र—छोटे बच्चों को पश्चात्ताप या बपतिस्मा की आवश्यकता नहीं।

अध्याय ९—लमनायटियों और नफायटियों द्वारा घोर दुष्कर्म—एक पिता का अंतिम और प्रेमपूर्ण सदुपदेश।

अध्याय १०—लमनायटियों से मरोनी का विदा लेना—मारमन धर्मशास्त्र की सच्चाई पर व्यक्तिगत साक्षी लेने की स्थितियां—मरोनी का अपने लोगों के विषय के अभिलेख को मुहरबन्द करना।

सूची में जो नाम आदि आए हैं उन्हें दी गई पुस्तकों के अध्याय और पद्यों में पाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए आरुण, मूसायाह अध्याय २७ पद्य ३४ में देखा जा सकता है।

—अंगुली परमेश्वर की अंगुली द्वारा दीवाल पर लिखी लिपि, अल० १०:२, यारद द्वारा प्रभु की अंगुली देखी गई, एथर ३:६

—अंगूर कांटों से प्राप्त नहीं किया जा सकता, ३ नफी १४:१६, जंगली अंगूर का इस्राइल पर लाक्षणिक प्रयोग, २ नफी १५:२, ४

—अंगूर का बगीचा प्रभु के सेवक उसके बगीचे में कलम करेंगे, याकू० ६:२ राजा नूह द्वारा रोपण, मू० ११:१५

—अंगूर रस का संस्कार, यीशु ने अपने शिष्यों को लाने की आज्ञा दी, ३ नफी १८:१, यीशु मसीह द्वारा चमत्कारी ढंग, ३ नफी २०:५, इस संस्कार की विधि, मरोनी अध्याय ४, ५:१

—अंगोला नगर की किलाबन्दी, मॉरमन २:४, वहां से नफायटियों का भगाया जाना, मार० २:४

—अंजीर कांटों से, अल० १४:८

—अंतिम दिनों के लोगों की भलाई के लिए नफी की वाणी लिखी गई, २ नफी २५:८, परमेश्वर की वाणी पर विचार, २ नफी २५:१८, इस समय पर नफी की भविष्य-वाणी २ नफी २६:१४ अंतिम दिन भयंकर होंगे, २ नफी २७:१

—अंधकार का कुहरा, देखो अंधकार

—अंधकार मरुस्थल, लेही के दिव्य दर्शन में १ नफी ८:४, घृणित लोग, लमनायटी, १ नफी १२:२३ मार० ५:२५ दुष्टों के कर्म, २ नफी २७:२७, अविश्वास का पर्दा, अल० १९:६

—अहंकर, मानव शक्ति में अहंकार, मूसायाह ११:१९, इला० १२:५, ३ नफी ६:१० मॉरमन ३:९ ४:८ धर्म-निष्ठता में, अल० २६:१२-२६:३६, आहुति, लेही और उसके परिवार वालों के द्वारा जलाई गई, १ नफी ५:९, ७:२२, राजा बिन्यामीन के द्वारा, मू० २:३

—अहंकार, गैरयहूदियों का अहंकर में फूलना, २ नफी २६:२०, अहंकर के कारण गिरजों का भ्रष्ट होना, २८:१२, सोना से प्रेम के कारण, याकू० २:१६, निहोर का फूलना, अल० १:६, अहंकार से दूसरे पाप, १:३२, गिरजा में प्रवेश इला० ३:३३, इसके कारण लोगों की समानता में अन्त, ४ नफी २४

—अकाल, अकाल की भविष्यवाणी, २ नफी १:१८, २ नफी ६:१५, १०:६, २४:३०, इला० १०:६, १३:९, एथर ९:२८, जनीफ के लोगों का अकाल का सामना करना, मूसायाह ९:३ नफायटियों द्वारा अकाल का सामना, अल० ६२:३५, इला० ११:४ यारदाइयों द्वारा अकाल का सामना, एथर ९:३०, एथर ११:७, अकाल से लोगों की रक्षा, अल० ९:२१, १०:२१, ५२:७

—अकाल के समय, हेथ के युग में, एथर ९:३०

—अग्नि, अग्नि स्तम्भ, लेही द्वारा देखा गया, १ नफी १:२, गन्धक की अग्नि द्वारा दण्ड २ नफी ९:१६, २३:२३, याकूब ४:११, ६:१०, मू० ३:२७, अल० १२:१७, १४:१४, न बुझने वाली, मू० २:३८, अल० ५:५२, मार० ६:५, अभिनन्दी का जलाया जाना, मू० १८:१३, राजा को जलाया जाना, मू० १०:२०, लमनायटियों को जलाया जाना, अल० २५:५, अधोलोक की अग्नि का भय, ३ नफी १२:२२, मार० ८:१७, अग्नि से नफी और लेही का घेरा जाना, इला० ५:२३, इला० ५-४३, बच्चों का आग से घिरना, ३ नफी १७:२४, शुद्ध करने वालों की अग्नि के समान, २४:२ तीन नफायटी शिष्यों का अग्नि में डाला जाना, ४ नफी ३२, अग्नि द्वारा बपतिस्मा, देखो पवित्रात्मा।

—अजगरों: अलंकृत: २ नफी ८:९, २ नफी २३:२२, लिमही के लोगों का अजगरों की तरह लड़ना, मू० २०:११, लमनायटियों का अजगरों की तरह लड़ना, अल० ४३:४४

—अण्टुम, स्थान, यहां पर अमरोन द्वारा पटियों को छुपाया गया था, मारमन १:३

—अण्टिओनम, नफायटी नायक, उसका मारा जाना, मार० ६:१४

—अण्टिपारा, नगर, लमनायटियों द्वारा विजय किया जाना, अल० ५६:१४; इलामन की सेना से छल करना, अल० ५६:३१, नफायटियों का इसे फिर से अपने अधिकार में लेना, अल० ५७:४

—अदन का बाग, आदम और हौवा निकाले गए, २ नफी २:१९, अल० १२:२१, ४२:२, कैसी पूर्णता, २ नफी ८:३,

—अदूषणीय, नश्वर शरीर का होना, अल० १६:१०, २ नफी ९:१३, अल० ५:१५, ४०:२, ४१:४

—अधोलोक (नर्क) शैतान लोगों की आत्मा अधोलोक ले जाता है, १ नफी १४:३, २ नफी २:२९, आत्मिक मृत्यु, ९:१२, मृतकों का वापस देना, ९:१२, की पीड़ा, याकूब ३:११, अल० २६:१३, की जंजीर अल० ५:७, अल० ५:९ प्रवेश द्वार नहीं रह जाएगा, ३ नफी ११:३९

—अधोलोक के द्वार, २ नफी ४:३२, १० नफी ११:३९, १८:१३

—अनन्त जीवन चुनने के लिए मनुष्य स्वतन्त्र है २ नफी, २:२७, अल० १०:२३, अनन्त जीवन के विषय में शिक्षा, २ नफी ९:२९, ३१:२८, इनोस ३, पाने की आशा याकूब ६:११, मरोनी ७:४१

—अनन्त दुर्गति, अल० ३:२६, ९:११, अलमा का दैत्य कहना,

अल० १९:२६
—अनन्त पुरोहितपद अल० १३:७
—अनन्त या अमर पिता, परमेश्वर का अनन्त मेमना या पुत्र, १ नफी ११:२१, १४:४०, अनन्त पिता भी देखो; उसीसे प्रार्थना करो, १०:४, अनन्त, २ नफी १९:६, पिता का एकमात्र २५:१२, अल० ५:४८, ९:२६, १३:५, ९, असत्य का जन्मदाता, २ नफी २:१८, ९:९ एथर ९:२५, शैतान द्वारा विद्रोह ३ नफी ११:१९ स्वर्ग और पृथ्वी का पिता, मूसायाह ३:८, इला० १४:१२, एथर ४:७, पिता का पुत्र, मू० १५:२, ३ नफी ११:२७, २०:३५, २८:१०, एथर ३:१४
—अनाज, नफायटियों द्वारा उपजाए गए, इनोस २१, मू० ९:९
—अनी आण्दी, आरुन का वहां जाना, अल० २१:११, मुल्की और उसके बन्धुओं द्वारा प्रचार, २१:११
—अनुचित बात शैतान से, ओम० २४, अल० ५:१४, मरो० ७:१२ मनुष्य का शीघ्र अनुचित कर बैठना इला० १२:४
—अनुचित कर्म करने वाले, २ नफी १९:१७, २ नफी २४:२०
—अनुतापी, आत्मा और हृदय से संताप में, २ नफी ४:३२, १ नफी २२:१५, मरो० अध्याय ४, ५, ६:२, मूसाई बलिदान के स्थान पर, ३ नफी ९:२०, १२:१९
—अनुवादक यन्त्र, भविष्यदर्शी द्वारा उपयोग, मूसा ८:१३, गुप्त भेदों को खोलने के लिए तैयार किया जाना मू० ८:१९, अलमा का प्राप्त करना, मू० २८:२०, इलामन को प्राप्त होना, अलमा २७:२१, २४, मरोनी का मुहरबन्द करना एथर ४:५
—अनुवाद, करने की योग्यता का उपहार, मू० ८:१३, नफायटियों में, अल० ९:२१
—अनुचित, लमनायटियों की परम्परा अल० ३:८, ९:१७, २६:२४, ३६:९
—अनुगामी, मसीह के, २ नफी २८:१४, मरो० ७:३, ८:४८, परमेश्वर के, अल० ५:१५, इला० ६:५
—अनुसंधान, विश्वास पर, अल० ३२:२७, ३४:४
—अंधा जो देख नहीं सकते, २ नफी ९:३२, पर्दे से बाहर देख सकेंगे, २ नफी २७:१९, अंधे देख सकेंगे, मू० ३:५, ३ नफी २६:१५, ४ नफी ५
—अंधकारमय खोह, मू० २७:२९, अल० २६:३
—अंधकार का वाष्प इस्राएलियों में आएगा, १ नफी १९:११, २२:१८
—अबलम, ओमर का यहां डेरा लगाना, एथर ९:३
—अभिनन्दी, नूह के लोगों से भविष्यवाणी करना, मूसायाह ११:२०; १२:१, राजा नूह के सामने लाया जाना, १२:१९, १७:६; बन्दी बनना १२:१७; प्रश्नों का सही उत्तर, १२:१९; यशायाह का उल्लेख करना १२:२१; १४:१; दस आज्ञाओं में से उदाहरण देना, मूसायाह १२:३५; १३:१३; चेहरे की आभा मू० १३:५; प्रायश्चित का प्रचार मू० १३:२८, मसीह को क्रूश पर चढ़ाए जाने की भविष्यवाणी मू० १५:७, दिव्य न्याय की घोषणा, मू० १६:१, उद्धार और पुनर्जीवन का उपदेश, मू० १६:६; नूह द्वारा मृत्युदण्ड मू० १३:१; १७:१; अग्नि से जलकर अनेकों के मरने की भविष्यवाणी करना, मू० १७:१५; अग्नि द्वारा प्रथम बलिदान, मू० १७:१३, अल० २६:११; अलमा के आशीर्वाद का साधन, मूसायाह २६:१५; भविष्यवाणी, का पूरा होना, मू० २०:२१; २५:९; मारमन १:१९,
—अभिनदोम, चेमिश का पुत्र नफायटी इतिहासकार, ओमनी १०
—अभिलेख, लेही का पुत्र, नफी का संक्षिप्त, १ नफी १:१७, १९:१, वंश का विवरण, ६:१, यहूदियों के विषय में स्वर्गदूत की भविष्यवाणी १३:२३, मॉरमन का, मरोनी को देना, मरो० १, मार० ८:१, नफायटियों में संकेत, ३ नफी २१:५, एथर ४:१७, मसीह द्वारा नफायटियों के विषय में छति की पूर्ति ३ नफी २६:७
—अभिलेख, परमेश्वर सुरक्षित रख सकता है, इनोस १५, यारदाइयों का अभिलेख राजा लिमही के खोजियों के द्वारा लाया जाना, मू० ८:९, एथर १:२, बहुतों द्वारा नफायटियों के अभिलेख को रखा जाना, इला० ३:१३, ३ नफी ५:९, कुमोरह की पहाड़ी पर छुपाया जाना, मार० ६:६, एथर १५:११
—अभिषिक्त या नियुक्त, परमेश्वर द्वारा बारह शिष्यों की नियुक्त १ नफी १२:७, पचास सदस्यों पर एक पुरोहित की नियुक्ति, मू० १८:१८, अलमा द्वारा पुरोहितों और पादरियों की नियुक्ति, अल० ६:१, नफी के गिरजे में, ३ नफी ८:२५, शिष्यों द्वारा पुरोहितों और शिष्यों की नियुक्ति का तरीका, मरोनी अध्याय ३
—अपरिवर्तनीय, परमेश्वर के निर्णायक अल० ४१:८, मरो० ९:१९, ८:१८
—अपराध, अंतःकरण में जानकारी २ नफी ९:१४, याकूब ६:९, मू० ३:३८, ३:२५, अल० ५:१८, ११:४३, अतंर्वेदना, मरो० ९:३, एण्टी-नफी-लेही राजा बनाया गया, अल० २४:३; आमोन और लमोनी से विचार विमर्श, अल० २४:५, लड़ने से मना करना; अल० २४:६
—अपराध, स्वीकार करने का आग्रह, अल० ८०:२३, स्वीकार करना, ३ नफी २:२५, अभिलेख में एक मनुष्य के, मार० ८:१७
—अपराध, याकूब द्वारा अपराध के विरोध में उपदेश, या० २:९ घोर अपराधी, २:२२, अलमा द्वारा अपराध के अनुसार निर्णय, मू० २६:११, कोरिहर पक्ष में अल० ३०:१७
—अपराधी, जहां नियम नहीं वहां अपराधी नहीं, २ नफी ९:२५
—अपराधी, अपराध अस्वीकार करते हैं, २ नफी १६:२
—अप्रेम, सीरिया के साथ संधि, २ नफी १७:२, परमेश्वर की वाणी जानने के लिए, २ नफी १६:६, द्वेष त्याग, २ नफी २१:१३
—अप्रेम पहाड़, एथर ७:९

—अमलकायटी, इलामन के विरुद्ध विद्रोह करने वालों का नेता, अल० ४६:३; धूर्त व्यक्ति, अल० ४६:१०; मरोनी से प्राण बचाने के लिए भागना, अल० ४६:२६; उसकी सेना का बन्दी होना, अल० ४६:३३; शर्त न मानने वालों को मृत्युदण्ड, अल० ४६:३५; लमनायटियों को भड़काना, अल० ४७:१; लमनायटी सेना का प्रधान, अल० ४७:३; राजा के विरुद्ध षड्यन्त्र, अल० ४७:४; लिहोण्टी को सन्देश, अल० ४७:१०, लिहोण्टी की सेना द्वारा उसकी सेना का घेरा जाना, अल० ४७:१४; लिहोण्टी की मृत्यु का कारण, अल० ४७:१८; सेनाध्यक्ष नियुक्त किया जाना, अल० ४७:१९; नफी नगर की ओर, अल० ४७:२०, राजा की मृत्यु का कारण, अल० ४७:२४; नफी नगर पर अधिकार, अल० ४७:३१; रानी के सामने लाया जाना, अल० ४७:३३, राजा बनाया जाना, अल० ४७:३५; नफायटियों के विरुद्ध लमनायटियों के द्वेष को भड़काना, अल० ४८:१; जोरमायटियों की सेनानायकों के पदों पर नियुक्त करना, अल० ४८:५; ज़राहेमला देश पर चढ़ाई की आज्ञा, अल० ४८:६; उसके अनेक सैनिकों का मारा जाना, अल० ४९:२५; सेना की पराजय से क्रोध करना और मरोनी को गालियां देना, अल० ४९:२७; स्वयं सेना का संचालन करना, अल० ५१:१२; मरोनी का नगर पर अधिकार करना, अल० ५१:२३; अनेक नगरों पर अधिकार करना, अल० ५१:२६; टेनकम से सामना, अल० २६:२९; टेनकम द्वारा मारा जाना, अल० ५१:३४; उसके भाई का राजा बनना, अल० ५२:३
—अमलकायटी, देखो अमलकियाह
—अमलकाटी, यरूशलेम नगर को बसाने में सहायता करना, अलमा, २१:२; लमनायटियों से भी अधिक दुष्ट, अल० २१:३; आरुन द्वारा उपदेश, अल० २१:४; निहोर के अनुकूल अल० २१:४; मत परिवर्तन नहीं किए; अल० २३:१४; विद्रोही २४:२ दुष्चरित्र, अल० २७:१२; क्रूरता के कारण मुख्य सेनापतियों के पद पर, अल० ४३:६; नफायटियों से विरोध, अल० ४३:१३
—अमलकी, अभिनदोम का पुत्र, ओमनी पद्य १२; राजा बिन्यामीन को पटियां देता है, ओम० पद्य २५; अपने अभिलेख को समाप्त करता है, ओम० पद्य ३०
—अमलकी, आमोन का एक भाई, मूसायाह ७:६
—अमलिकियाह का छल, अलमा ४७:४, अल० ८७:३०
—अमलिकियाह का लिहोण्टी के पास दूत बनकर जाना, अल० ४७:१०, लमनायटी रानी के पास ४७:३२
—अमगिद, यारदाई राजा जो कोम द्वारा पराजित किया गया, एथर १०:३२ अमिनदाब, नफायटी विद्रोही द्वारा, लमनायटियों को शिक्षा देना, इला० ५:३९
—अमनायटी, देखो अमोन के लोग
—अमनीहू पहाड़, अल० २:१५
—अमनीगदा, आरुन का पुत्र, यारदाई राजा, एथर १:१५,
—कारागार में, एथर १०:३१
—अमनोर नफायटी जासूस, अल० २:२२
—अमनूर, अल० ११:६, ११
—अमनोर, मारमन को विवरण दिया, मरोनी ९:७
—अमरोन, ओमनी का पुत्र जिसे अपने पिता से पटियां प्राप्त हुआ, ओमनी ३, चेमिश को पटिया देना, ओम० ८
—अमरोन, अभिलेखों का रखना, ४ नफी ४७, अभिलेखों को छुपाना, ४ नफी ४८, अभिलेखों के विषय में मारमन को बतलाना, मॉरमन १:२, मॉरमन द्वारा उसकी आज्ञाओं का पालन, मॉरमन ४:२३
—अमरोन, लमनायटियों का राजा, अल० ५२:३, लमनायटियों की रानी को विवरण देना, अल० ५२:१२, पश्चिम समुद्रतट पर नफायटियों पर आक्रमण, अल० ५२:१२; बन्दियों की अदला-बदली करने का प्रस्ताव, अल० ५४:१; मरोनी का पत्र, अल० ५४:४, अमरोन का उत्तर, अल० ५४:१५ यहूदिया शहर पर आक्रमण करने का विचार त्यागना, अल० ५६:१८; मरोनी देश में, अल० ६२:३३; टेनकम द्वारा उसका मारा जाना, अल० ६२:२९
—अमर, ओमर का पुत्र, एथर १:२९, यारदाइयों का अभिषिक्त राजा, ए० ९:१४
—अमरन, मरोनी ९:२
—अमर (अनन्त) पिता, मूसायाह, १५:४, मू० १६:१५, अल० ११:१९, पिता से रोटी दाखरस की प्रार्थना मरोनी, अध्याय ४, ५, इस्राइलियों के साथ वचन, मरो० १०:३१ उसका पुत्र यीशु, १ नफी ११:२१, १३:४०
—अमरन, एक नफायटी सैनिक जो मारा गया, मरो० ९:२
—अमिनडी, अमूलक का पूर्वज, मन्दिर की हस्तलिपि का अनुवाद किया, अल० १०:२
—अमिलकी, राजा बनने की चेष्टा अल० २:१, बहुमत विरोध में, अल० २:७; विद्रोही दल का राजा बनाया गया, अल० २:९; युद्ध में अलमा द्वारा उसका मारा जाना, अल० २:३१ अमिलसायटी, नफायटी विद्रोही, अल० २, ११; उनकी पराजय, अल० २:३५; माथे पर चिन्ह, अल० ३:१३
—अमोनिहा, नगर, अल० ८:६; अलमा का यहां प्रचार, अल० ८:८, ९:१; अलमा का वहां से निकाला जाना, अल० ८:१३, अलमा का वापस लौटना, अल० ८:१८; अमूलक द्वारा वहां के लोगों के नष्ट होने की भविष्यवाणी, अल० १०:२३; नगर के लोगों द्वारा शास्त्रों को जलाना, अल० १४:८; मत परिवर्तकों को जीवित जलाया जाना, अल० १४:८, मुखियों द्वारा अलमा और अमूलक को बांधना, अल० १४:२२; कारागार का गिरना, अल० १४:२७; लोगों का भविष्यवक्ताओं के सामने से भागना, अल० १५:२९; अलमा और अमूलक का वहां से निकाला जाना, अल० १५:१, वहां के लोगों का पश्चात्तापहीन बनना, अल० १५:१५; वहां के लोगों को नष्ट किया जाना.

अल० १६:६; २५:२; निहोर की निर्जनता कहा जाना, अल० १६:११; लमनायटियों की चढ़ाई, अल० ४६:१; नफायटियों द्वारा फिर से बसाया जाना, अल० ४६:२; किलाबन्दी, अल० ४६:४
—अमोनिहायटी, अल० १६:६
—अमोनिहा देश, देखो नगर
—अमूलक, स्वर्गदूत द्वारा भेंट, अलमा ८:२०; १०:७; अलमा को अपने घर पर आश्रय देना, अल० ८:२१; अलमा द्वारा आशीर्वाद अल० १०:१; गिडोना का पुत्र, अल० १०:२ उसकी प्रतिष्ठा, अल० १०:४; अमोनिहा के लोगों का नष्ट होने की भविष्यवाणी, अल० १०:२३, जिज़रोम द्वारा प्रश्न, अल० ११:२१; मसीह का प्रचार, अल० ११:३६; संबन्धियों और परिवार वालों द्वारा परित्यक्त, अल० १५:१६; जोरमायटियों के पास जाना, अल० ३१:६; कंगालों को उपदेश, देना अल० ३४:१; सर्वश्रेष्ठ मसीह के बलिदान का प्रचार, अल० ३४:१०; प्रार्थना का सिखलाना, अल० ३४:१७; उसका जारसन जाना, अल० ३५:१, मुक्ति पर उल्लेख, इला० ५:१०; अलमा और अमूलक भी देखो।
—अमूलन देश, मूसायाह २३:३१, शिक्षकों की नियुक्ति मू० २४:१
—अमूलन, नूह के पुरोहितों का नेता मू० २३:३२, अमूलन का अपनी और अपने बन्धुओं की पत्नियों को अपने पतियों को जीवन दान की याचना करने भेजना, मू० २३:३३; उनका लमनायटियों का साथ देना, मू० २३:३५; हीलम में उसको लोगों का राजा बनाया जाना, मू० २३:३६; लमनायटियों का शिक्षक बनाया जाना, मू० २४:१; अलमा के लोगों को कष्ट देना, मू० २४:८; प्रार्थना करने को मना करना, मू० २४:११ नाम में परिवर्तन, मू० २५:१२; लोगों द्वारा यरूशलेम नगर बसाना, अल० २१:२, वंशजों को ढूंढ-ढूंढ कर मारा जाना, अल० २५:८, २५:१२
—अमूलनायटी, लमनायटियों से भी अधिक दुष्ट, अल० २१:३, मत परिवर्तन नही किए, अल० २३:१४, अल० २४:२६; लमनायटियों को भड़काना, अल० २४:१ अमनायटियों के विरुद्ध विद्रोह, अल० २४:२; नफायटियों के द्वारा मारा जाना, अल० २५:४; नेतृत्व को हड़पना और लमनायटियों का उत्पीड़न, अल० २५:५; लमनायटियों द्वारा मारा जाना, अल० २५:८; अभिनन्दी की भविष्यवाणी का पूरा होना, अल० २५:६
—अम्माह, लमनायटियों में उपदेश देने वाला एक प्रचारक, मिदोनी में बन्दी, अल० २०:२; बन्दीगृह से छुटकारा, अल० २०:२८; अनी अण्टी में प्रचार, अल० २१:११; मिदोनी जाना, अल० २१:१२
—अराधना, राजकुमार अराधना, १ नफी २१; ७ यहूदियों द्वारा पुत्र के नाम पर पिता की, २ नफी २५:१६, नफायटियों द्वारा पुत्र के नाम पर पिता की, या० ४:५, सिदोम में वेदी के सामने परमेश्वर की, अल० १६:१७; जोरमायटियों द्वारा विचित्र ढंग से, अल० ३१:१२, प्रार्थना के मकानों के अन्दर सीमित नहीं ३३:२, पवित्र अवसर, ५१:३६
—अराधना के मकान, देखो प्रार्थना भवन
—अलमा और उसके लोगों का विवरण, मूसायाह, अध्याय २३-२४
—अलमा की पुस्तक; अलमा की वाणी, अध्याय ५
—अलमा प्रथम, मूसायाह १७:२; नूह द्वारा उसके प्राण लेने की चेष्टा करना, मू० १७:३; अभिनन्दी की वाणी की शिक्षा देना, मू० १८:१; मारमन में उसका शरण लेना, मू० १८:५; उसका विश्वासियों को शिक्षा देना मू० १८:७; हीलम को बपतिस्मा देना, मू० १८:१३; अनेकों को बपतिस्मा देना, मू० १८:१८; मू० २३:१७ पुरोहितों को चेतावनी देना कि वे लोगों पर आश्रित न रहें, मू० १८:२६; राजा नूह के सेवकों द्वारा उसका पता पाना, मू० १८:३२; उसका वन में भागना, मू० १८:३४; उसका राजा बनने से इन्कार करना मू० २६:७; मुख्य पुरोहित, गिरजा का संस्थापक, मू० २३:१६ लोगों का लमनायटियों को आगे आत्मसमर्पण, मू० २३:२६; अमूलन द्वारा लोगों को सताया जाना, मू० २८:४; उसका लोगों को दासता से निकाल कर जंगल में ले जाना, २४:१७ लोगों का ज़राहेमला पहुंचना, मू० २४:२५; उसके अभिलेख को राजा मूसायाह द्वारा पढ़ा जाना, मू० २५:६; नफायटियों में प्रचार, मू० २५:१४; लिमही और लोगों को बपतिस्मा देना, मू० २५:१८; गिरजे की स्थापना की आज्ञा, मू० २५:१६; असन्तुष्ट लोगों को उसके सामने लाया जाना, मू० २६:७; मूसायाह द्वारा उसे गिरजे का अधिकारी बनाना, मू० २६:८; प्रभु द्वारा आज्ञा प्राप्त करना, मू० २६:२६; गिरजा के कार्यों का संचालन, मू० २६:२७; गिरजा की शिकायत, मू० २७:१; पुत्र के लिए प्रार्थना, मू० २७:१४; पुत्र को प्रधान पुरोहित नियुक्त करना, मू० २६:४२; मृत्यु, मू० २६:४२
—अलमा का अलमा नामक पुत्र, गिरजे को नष्ट करने की चेष्टा, मू० २७:८; मूसायाह के पुत्रों के साथ उसका स्वर्गदूत को देखना, मू० २७:११; उसका निसहाय और मूक होना, मू० २७:२०; उसके पिता को आनन्द होना, मू० २७:२०; उसका भयावह अनुभव बताना, मू० २७:२६; लोगों को उपदेश देना, मू० २७:३२; राजा मूसायाह से उसका पटियों, अभिलेखों और अनुवाद की वस्तुओं को प्राप्त करना, मू० २८:२०; उसका प्रथम प्रधान पुरोहित के पद पर नियुक्त होना, मू० २६:४२; निहोर को दण्ड देना, अलमा १:१४; नफायटियों की सेना का नेतृत्व करना, अल० २:१६; अमलकी को मारना, अल० २:३१; लमनायटियों के राजा से युद्ध, अल० २:३२; लमनायटियों को पीछे हटाने के लिए सेना को भेजना,

अल० ३:२३; सिदोन में बपतिस्मा देना, अल० ४:४; पादरियों, पुरोहितों और शिक्षकों को नियुक्त करना, अल० ४:७, ६:१; निर्णायक के आसन को नफियाह को देना, अल० ४:१७; प्रधान पुरोहित के पद पर बना रहना, अल० ५:१८; जराहेमला देश में प्रचार, अल० ५:१; गिडियन की घाटी में प्रचार, अल० ६:७; गिडियन के लोगों से बोलना, अल० ७:१; उद्धारक के आने का प्रचार, अल० ७:७; गिडियन में गिरजे की स्थापना, वापस जराहेमला लौटना, अल० ८:१; मलक में उपदेश और बपतिस्मा देना, अल० ८:४; अमोनिहा में प्रचार, अल० ८:८; दूत द्वारा भेंट, अल० ८:१४; आज्ञा के अनुसार वापस अमोनिहा लौटना, अल० ८:१६; मूलक से भेंट, अल० ८:१९ जीज़रोम को स्वस्थ कर बपतिस्मा देना, अल० १६:१०; सिदोम में गिरजे की स्थापना करना, अल० १५:१३; गिडियन से मण्टी जाते हुए मूसायाह के पुत्रों से भेंट, अल० १७:१; अल० २६:१६, मूसायाह के पुत्रों को जराहेमला ले जाना, अल० २७:२०; अपने मत परिवर्तन की बात को आमोन के लोगों को बताना, अल० २७:२५; स्वर्गदूत होने की उसकी अभिलाषा, अल० २९:१; उसका कहना कि प्रभु हर एक देश में सत्य की शिक्षा देने के लिए मनुष्य को खड़ा करता है, अल० २९:८; कोरिहर को उसके सामने लाया जाना, अल० ३०: ३०; उसका प्रचार पैसों के लिए नहीं, अल० ३०:३३; कोरिहर का मूक होने का संकेत, अल० ३०:४९; पादरियों के दल को जोरमायटियों में ले जाना, अल० ३१:६; जोरमायटियों की प्रार्थना पर आश्चर्य, अल० ३१:१९; साथियों के ऊपर हाथ धरना, अल० ३१:३६; बन्धुओं से अलग, अल० ३१:३७; ओनिडाह के पहाड़ पर प्रचार करना, अल० ३२:४; कंगालों को उपदेश, अल० ३२:१२; बन्धुओं का जारसन जाना, अल० ३५:१; इलामन को आज्ञायें देना, अल० ३६:१; मतपरिवर्तन की बातों को दोहराना, अल० ३६:६, ३८:७; पश्चात्ताप से पूर्व की अपनी भयंकर स्थिति का वर्णन करना, अल० ३६:१२; अति तीव्र पीड़ा और आनन्द का अनुभव, अल० ३६:२१; अपने परिश्रम की बातों को दोहराना, अल० ३६:२४; पवित्र पटियों को इलामन को देना, अल० ३७:१; शिबलोन को आज्ञाओं को देना, अल० ३८:१; शिबलोन से मनोवेग को वश में रखने की सलाह देना, अल० ३८:१२; दीनता और पश्चात्ताप करने की सलाह, अल० ३८:१४; आज्ञाओं को कोरियन्दन को देना, अल० ३९:१; कोरियन्दन को झिड़की, अल० ३९:२; व्यभिचार को बुरा बताना, अल० ३९:५; पुनर्जीवित होने की व्याख्या, अल० ४०:१; मृत्यु और पुनर्जीवित होने के मध्य की स्थिति का विवरण, अल० ४०:११; पुनर्स्थापना के सिद्धान्त को समझाना, अल० ४०:२२, ८१:१; दण्ड की आवश्यकता बताना, अल० ४२:१; आदम के पतन की बात, अल० ४२:३; प्रायश्चित पर उपदेश, अल० ४२; १५; न्याय और दया का सम्बन्ध समझाना, अल० ४२:२४ कोरियन्दन को प्रचार करने के लिए भेजना, अल० ४२:३१; मरोनी के लिए प्रभु का वचन, अल० ४३:२४; इलामन को निर्देश देना, अल० ४५:२; नफी के लोगों की दुष्टता और उनके नष्ट होने की भविष्यवाणी, अल० ४५:१०; धर्मनिष्ठ लोगों के कारण संतापों और धरती को आशीर्वाद देना, अल० ४५:१६; गिरजा को आशीर्वाद, अल० ४५:१७; मलक की ओर जाना जिसके पश्चात् अज्ञात, अल० ४५:१८; पवित्रात्मा द्वारा ले जाए जाने की सम्भावना, अल० ४५:१९; उसकी शिक्षाओं को अभिनन्दी द्वारा उल्लेख, इलामन ५:४१

—अलमा, अलमा की शिक्षा, प्रार्थना पर, भविष्यवक्ता जीनस का उल्लेख, अल० ३३:३; पुनर्जीवन पर, अल० ४०:१; मृत्यु और पुनर्जीवन के मध्य मनुष्य की अवस्था, अल० ४०:११ स्वर्ग पर, अल० ४०:१२; दुष्टों की अवस्था पर, अल० ४०:१४ पुनर्स्थापना पर, अल० ४०:२२; ४१:१ मानव जीवन परीक्षाकाल ४२:४; उद्धार पर, अल० ४२:१३; न्याय की मांग पर, ४२:१४; प्रायश्चित पर, ४२:१५; दया की मांग पर, अल० ४२:२३; स्वतन्त्र प्रतिनिधित्व पर अल० ४२:२७

—अलमा और अमूलक अमोनिहा में, अल० ९:१; जीजरोम और लोगों से बोलना, अल० १२:१; अन्दिवाह द्वारा प्रश्न, अल० १२:२०; पश्चात्ताप की शिक्षा, अल० १२:३३; अमोनिहा के लोगों द्वारा बन्धनों से बांधा जाना, अल० १४:५; देखो मत परिवर्तन करने वालों का अग्निदाह, अल० १४:१०; मुख्य निर्णायक द्वारा पीटा जाना, अल० १४:१४, अल० १४:२४; बांध कर कारागार में डाला जाना, अल० १४:१८; बहुतों द्वारा मार सहना, अल० १४:२५; बन्धनों को तोड़ना, अल० १४:२६; कारागार के गिरने पर मुक्ति, अल० १४:२८; अमोनिहा से सिदोम जाना, अल० १५:१; जराहेमला वापस लौटना, अल० १६:१८; पश्चात्ताप का प्रचार करना, अल० १६:१३

—अलमा की घाटी, मूसायाह, २७:२०

—अवज्ञा, परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना, अल० ५:१८; नियमों की ३ नफी ६:३०

—अवसर, हर एक मनुष्य के लिए समान, मू० २९:३८, सीखने का समान अवसर, ३ नफी ६:१२

—अविश्वास, समझने की योग्यता न होने के कारण, मूसा २६:३, मरो० ७:३७

—अशुद्ध, अल० ३२:३, गन्दगी, अल० ३४:२९

—अशुद्ध, परमेश्वर के समक्ष कोई भी अशुद्ध चीज़ नहीं, १ नफी ११:२१, १६:३४, अल० ८:२१, अल० ११:३७, इला० ९:२५

—असत्य बोलने वालों को अधोलोक में ढकेल दिया जाएगा २ नफी ९:३४

—असमानता, मू० २९:३२, ३ नफी ६:१४, नफायटियों में,

अल० ४:१२, १५, मिटाया जाना, अल० १६:१६, पाप के कारण, अल० २८:१३
—अस्त्र शस्त्र, नफायटियों के, जोराम ८, यारदाइयों के, एथर ११:२७, अल० २:१२, आमोन के लोगों ने त्यागा, अल० २४:१७, पश्चात्ताप में लमनायटियों का अस्त्र त्यागना, अल० २४:२५, अल० २५:२४; तोपना, अल० २४:१७ अल० २५:१४, इला० १५:६
—अहा, जोराम का पुत्र, अलमा १६:५
—अहाह, सेथ का पुत्र यारदाई राजा, एथर १:१०
—अक्षर, सुधारे गए मिश्री, मार० ७:३२
—अक्षम्य पाप, याकूब ७:१६, अल० ३६:६
—अक्षम्य पाप, याकूब ७:१६, अल० २६:६

आ

—आंख, परमेश्वर की आंख खोज रही है, २ नफी ६:४४ मू० २७:३१, भेदने वाली, याकूब, २:१०, साक्षात देखना मू० १२:२२, मू० १५:२६, १, अल० २६:३६, ३ नफी १७:१८ ३ नफी २०:३२, विश्वास की, मू० १८:२१, अल० ५:१५:३२:४०, एथर १२:१६, एक आंख के लिए, ३ नफी १२ ३८, शरीर की ज्योति, १४:२२, भाई की आंख में, ३ नफी १४:३ पलक भांजते परिवर्तन, ३ नफी २८:८ परमेश्वर की कीर्ति, मारमन ८:१५
—आंखें, संसार की आंखें, पुस्तक का छुपाया जाना, २ नफी २७:१२ अन्धों की, २७:२६, अंधो को आंख देना, ३ नफी २६:१५
—आकार, परमेश्वर की आत्मा परमेश्वर के आकार में, १ नफी ११:११, परमेश्वर मनुष्य शरीर में, मू० १३:३४, पड़की के रूप में पवित्र आत्मा १ नफी ११:२७, ३१:८, पुनर्जीवित होना, अल० ११:४३ परमेश्वर का स्वभाव, परमेश्वर की एक साक्षी, अल० ३०:४४ ईश्वरत्व, मरो० ७:३०
—आकृति प्रभु के सेवके के विकृत, ३ नफी २०:४४
—आकृति, नफी और लेही की, इला० ५:३६ मसीह की, ३ नफी ११:२४
—आकिश, मरुभूमि, गिलियड और कोरियण्टूमर की समर भूमि एथर १४:३
—आकिश, किमनोर का पुत्र, एथर ८:१०; उसके सामने यारद की पुत्री का नृत्य करना, ए० ८:११, उसका वचन निभाना, ए० ८:१३ ओमर के राज्य को नष्ट करना, ए० ६:१ यारद की कन्या से विवाह करना, ए० ६:४ यारद की हत्या कर स्वयं राज्य का अधिकारी बनाना, ए० ६:५; पुत्रों से युद्ध, ए० ६।१२
—आगे से जानना, परमेश्वर के आज्ञानुसार लोगों का चुना जाना और नियुक्त किया जाना, अल० १३:३, परमेश्वर को सभी बातों का ज्ञान पूर्व से ही, अल० १३:७
—आगोस लिब और कोरियन्टूमर का समर क्षेत्र एथर १४:१५
—आण्टिनूह, अमोनिहा का एक शासक, अल० १२:२०
—आत्मा की पीड़ा १ नफी १७:४७, २ नफी २६:७, मू० २८:४, अल० ८:१४, अल० ३८:८, मार० ६:१६
—आत्मा का शत्रु, २ नफी ४:२८
—आत्माओं की अंतिम अवस्था, १ नफी १५:३५, मृत्यु और पुनर्जीवन के बीच की स्थिति, अल० ४०:७
—आत्मा का संताप, इलामन ७:६
—आत्मा, आमोन को महान आत्मा समझा जाना, अलमा १८:२, आरुन द्वारा स्पष्टीकरण अल० २२:६
—आत्मा परमेश्वर की आत्मा स्वर्ग से उतरी, इला० ५:४५ राजाओं की आत्माओं पर प्रभाव, १ नफी १६:१२ सत्य का प्रकाश, अल० ५:४६
—आत्मा, प्रभु की आत्मा में नफी का लीन हो जाना, १ नफी ११:१, मानव के रूप में, १ नफी ११:११, सदैव मनुष्य के लिए प्रयास नहीं करेगी, २ नफी २६:११, पिता पुत्र, अल० ११:४४, अपवित्र मंदिरों में निवास नहीं करता, इला० ४:२४, पवित्रात्मा भी देखो।
—आत्मा, हर एक मनुष्य की मृत्यु पर उनकी आत्मा को परमेश्वर के पास ले जाया जाता है, अल० ४०:११, शरीरों में पुनः प्रवेश कराई जाएंगी, २ नफी ६:१२, अपवित्रात्मा के लिए देखो शैतान
—आत्मा महान, आमोन समझा गया, अल० १८:२, ११: १६:२५, लमनायटियों का विश्वास १८:५, परमेश्वर १८:२८, २२:६
—आत्मा की वेदना, इला० ७:६
—आर्थिक लाभ की इच्छा से आत्मा की हानि, मू० २६:४०, परमेश्वर से अधिक प्रेम सम्पत्ति से, अल० ११:२४
—आदम, आदम के पतन का कारण, २ नफी २५ उसके वंशजों का उद्धार, २ नफी ६:२१; मूसायाह ४:७, वर्जित फल खाने से पतित, अलमा १२:२२; जीवन के वृक्ष का फल पाने से वंचित अल० ४२:३; यारदाई पटियों के अभिलेख में एथर १:४
—आदम और हौव्वा, पीतल की पटियों पर विवरण १ नफी ५:११, उनका पतन, २ नफी २:१६
—आदि और अन्त, मसीह के लिए प्रयोग ३ नफी ६:१८
—आदिनाम, वह देश जहां जोरमायटी बसे थे, अल० ३१:४, लमनायटियों का प्रवेश, अल० ४३:५, लमनायटियों का पीछे हटना, अल० ४२:२२
—आदि और अन्त प्रभु के लिए कहना, ३ नफी ६:१८
—आदेश अनुचित, २ नफी २१, परमेश्वर के निर्णय में परिवर्तन नहीं, अल० ४१:८, प्रतिज्ञा के देश पर परमेश्वर एथर २:६
—आनन्द, धर्मनिष्ठता में आनन्द, मू० ३:४ अल० ३:२६, अल० २७:३०, अल० ४०:१२ मार० ७:७; मनुष्य के

लिए, २ नफी २:२५, पूर्णआनन्द २ नफी ९:१८
—आनन्ददायक लोग, मारमन की वाणी ८, मार० ५:१७, २ नफी ५:२१, ४ नफी १:१०, गौरांग और, २ नफी ३६ सभ्य और, मरो० ९:१२
—आण्दि—नफी, लेही जन, देखो आमोन के लोग
—आण्दिओमनो, मिदोनी का राजा अल० २०:४
—ओनिहा नगर, मसीह के क्रूश पर चढ़ाए जाने के समय नष्ट हुआ, ३ नफी ९:७
—ओनिदाह, पहाड़, अल० ३२:४, स्थान अल० ४७:५
—अमोन, जराहेमला के वंशज, मूसायाह ७:३, अपने भाईयों के साथ राजा लिमही से भेंट करना और राजा द्वारा बेदी बनाया जाना, मू० ७:७, राजा के सामने उस पर दोषारोपण और आदर पाना, मू० ७:८; लिमही के लोगों को उपदेश देना, मू० ८:२; लिमही के अभिलेख को पढ़ना, मू ८:६; प्राचीन लोगों के अभिलेखों और अवशेष के विषय में जानकारी प्राप्त करना, मू० ८:७; लिमही को एक ऐसे दर्शी का पता बताना जो उनका अनुवाद करने की योग्यता रखता था, मू० ८:१३; नूह का पुरोहित होने का सन्देह; अल० २१:२३; लिमही और उसके लोगों को मुक्त किया, मू० २२:११
—आमोन, मूसायाह का पुत्र, मूसायाह २७:३४; उपदेशकों का प्रधान, अल० १७:१८; उसका इस्माइल देश में जाना और लमनायटियों द्वारा बांधा जाना, अल० १७:२०; राजा लमोनी का सेवक बनना, अल० १७:२५; राजा के पशुओं की रक्षा के लिए शत्रुओं से लड़ना, अल० १७:३४; उसका अजेय बनना, अल० १८:३; उसको महान आत्मा समझा जाना, अल० १८:४; रथों को तैयार करना, अल० १८:९; राजा के विचारों को जान लेना, अल० १८:१८; राजा लमोनी को शिक्षा देना, अल० १८:२४; लमान और लेमुएल की कहानी को बताना, अल० १८:३८; पवित्रात्मा के वश में, अल० १९:१४; एक लमनायटी द्वारा धमकी, अल० १९:२२; लोगों में जागृति और उपदेश, अल० १९:३३; गिरजा को संगठित करना, अल० १९:३५; राजा लमोनी के पिता से भेंट करने का आमन्त्रण, अल० २०:१; नफी के देश में जाने से प्रभु द्वारा उसको रोका जाना, अल० २०:१; भाइयों को मुक्त करने के लिए मिदोनी की यात्रा का आरम्भ अल० २०:३; राजा लमोनी के पिता से उसकी भेंट, अल० २०:८; लमनायटियों के राजा पर विजय, अलमा २०:२४; अपने भाइयों को मुक्त करवाने की मांग, अल० २०:२८; इस्माइल देश वापस लौटना, अल० २१:१८; राजा लमोनी के लोगों को शिक्षा देना, अल० २१:२३; बन्धुओं को राजा लमोनी और उसके भाई से भेंट, अल० २४:५; सफलता पर विचार, अल० २६:१; हारुन द्वारा झिड़की, अल० २६:१०; ईश्वर की प्रशंसा, अल० २६:१२; २६:३५; मत परिवर्तकों को जराहेमला जाने की सलाह, अल० २७:५; प्रभु से जांच, अल० २७:११; अपने अपने बन्धुओं के साथ जराहेमला में प्रवेश, अल० २७:१५, अलमा से भेंट, अल० २७:२६; आनन्द विभोर, अल० २७:१७ अलमा के साथ उसका वापस लौटना, अल० २७:२५; जनता के प्रधान पुरोहित, अल० ३०:२०, कोरिहर को निर्वासित करना, अल० ३०:२१, मूसायाह के पुत्रों को भी देखो।
—अमोन, आमोन के लोगों का अण्टी-नफी-लेही कहाना, अल० २३:१७, अमोनायटी कहाना, अल० ५३:५७; ५६:६; नफायटियों से मित्रता, अल० २३:१८; उनके राजा की मृत्यु, अल० २४:४; युद्ध करने से हटना, अस्त्र शस्त्रों को गाड़ना, अल० २४:१२, अल० २४:१६; लमनायटी आक्रमण, अल० २४:२०; सहनशीलता में मृत्यु तक स्वीकारना, अल० २४:२१; अल० २४:२१; अल० २७:३; शत्रुओं का पश्चात्ताप, अल० २४:२४; लमनायटियों का उनके साथ होना, अल० २४:२६, ६२:२७; अमलकायटियों द्वारा उनका मारा जाना, अल० २४:२८; २७:२ मूसा के नियमों का पालन करना, अल० २५:१५; ३०:३; मसीह के आने की प्रतिक्षा, अल० २५:१६; नफायटियों के दास बनने के इच्छुक, अल० २७:८; उनके विषय में घोषणा, २७:२१; जारसन देश उनको दिया जाना, अल० २७:२२; नफायटियों द्वारा सुरक्षा प्रदान किया जाना, अल० २७:२३; गिरजा के लोगों में गिनती, अल० २७:२७; जोरमायटी मत-परिवर्तकों को अपने में स्वीकार करमा, अल० ३४:६; मलक देश में हटाया जाना, अल० ३५:१३; उनसे लमनायटियों का घृणा करना, अल० ४३:११; नफायटियों द्वारा सहायता पहुंचाना, अल० ४३:१२; सेना को सहारा, अल० ४३:१३, ५३:२७; शर्त तोड़ने का विचार, अल० ५३:१३; उनके लड़कों द्वारा युद्ध की तैयारी, अल० ५३:१६, उनके बाल-सैनिकों द्वारा इलामन का सेनानायक चुना जाना, अल० ५३:१९; बाल-सैनिकों द्वारा लमनायटियों का पराजित होना, अल० ५६:५४; चमत्कारी ढ़ंग से सब बाल सैनिकों की रक्षा, अल० ५६:५६; उत्तर देश को जाना इला० ३:१२
—आमोस, नफी का पुत्र, अभिलेखों का रखना, ४ नफी १९; मृत्यु, ४ नफी २१
—आमोस, आमोस का पुत्र, अभिलेखों को रखता है, ४ नफी २१, उसकी मृत्यु, ४ नफी ४७
—आरचियण्टस, तलवार से मारा गया, एक नफायटी, मरोनी ९:२
—आरम्भ, निर्णायकों के शासन का, मू० २९:४४
—आरुन (हारुन) मूसायाह का पुत्र, मूसायाह अध्याय २७:३४; लोगों के द्वारा मनोनित राजा; सिंहासन को अस्वीकार करना, मू० २९:२ उसका यरूशलेम जाना, अल० २१:१; लमनायटियों में प्रचार, अल० २१:४;

प्रायश्चित का प्रचार, अल० २१:७; उसका अनी-अण्टी जाना, अल० २१:११ मिदोनी जाना, अल० २१:१२; मिदोनी में बन्दी होना, अल० २०:७; २१:१३; छुटकारा २१:१४; प्रार्थना भवनों में प्रचार २१:१६; नफी के देश में जाना, अल० २२:१; राजा को उपदेश देना २२:२; आमोन को झिड़की देना, २२:१०; अलमा से भेंट, अल० २७:१६, मूसायाह के पुत्रों को भी देखो
—आरुन (हारुन) हेत का पुत्र यारदाई राजा, एथर १:१६; १०:३१
—आरुन (हारुन) मारमन की सेना द्वारा पराजित लमनायटी राजा, मारमन २:६; उसकी सेना की क्रूरता, मरोनी ६:१७
—आरोन, नगर, अलमा ८:१३; अलमा १५:१४
—आलसी, सियोन में, २ नफी २८:२४
—आलस, लमनायटियों का, १ नफी १२:२३, २ नफी ५:२४, अल० २२:२८, आलस के विरुद्ध उपदेश, अल० ३६:१२
—आलस की निन्दा, अल० ६०:१४
—आवाज (वाणी) परमेश्वर तक, २ नफी ४:३५, लोगों द्वारा निर्णायकों को चुना जाना देखो, न्याइकों, अमलकी के विरुद्ध, अल० २:७ स्वर्गदूत की मेघगर्जन के समान, ३८:७, लेही और नफी की रक्षा में स्वर्ग से, इला० ५:२६, मसीह के क्रूश पर पढ़ाये जाने के पश्चात् प्रभु की वाणी लोगों के लिए, ३ नफी ६:१, ३ नफी १०:३, मसीह का नफायटियों में आने के समय पिता की वाणी द्वारा यीशु के विषय में घोषणा, ३ नफी ११:३, प्रभु की वाणी से पहाड़ों और पर्वतों का थर्राना, इला० १२:६
—आविश, एक लमनायटी महिला, उसका मतपरिवर्तन अल० १६:१६, राजा के घर पर लोगों को बुलाना १६:१७ हंगामा से उसको दुख होना, अल० १६:२८, उसका रानी को उठाना, अल० १६:२६
—आश्चर्य, मसीह द्वारा संकेत दिखाए जाएंगे, २ नफी २६:१३, मसीह के जन्म लेने का समय निकट आने के साथ अनेक संकेत, इला० १६:१३
—आशा, आशा का आनन्द, अल० ८:२४, मरो० ७:४१
—आज्ञा, अल० २३:२
—आज्ञायें, अपनी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए प्रभु राह बना देता है, १ नफी ३:७, आज्ञाओं को मानने से आशीर्वाद मिलता है, २ नफी २:६ नफायटियों का आज्ञा पालन करने से, २ नफी २५:२५, संक्षेप में करना, २ नफी २६:३२, नफायटियों द्वारा माना, २ नफी ३०:१, आज्ञाओं को रखने से प्रगति, जोरम ६, राजा विन्यामीन द्वारा सिखाया जाना, मूसायाह २:१३; दस आज्ञायें, मू० १३:१२, आज्ञाओं का उल्लघंन से प्रभु से अलग, अल० ६:१३
—इंजील, दूसरी जातियों के पास, १ नफी १३:३४, बहुमूल्य भाग निकाले गए, १३:३२, दूसरी जातियों के लिए लिखाया जाएगा १३:३५, लेही के बचे वंश वालों में प्रचार होगा, २ नफी ३:५, इसी पर गिरजे की स्थापना, ३ नफी २७:१०, जो नहीं जानते उनके द्वारा अस्वीकार, मरो० ६:८
—इकलौता, पिता का २ नफी २५:१२, अल० १३:५, ६, देखो मसीह
—इच्छा, परमेश्वर की इच्छा मारमन के साथ, देखो मारमन की वाणी ७
—इज़रोम, एक चांदी का सिक्का अल० ११:१२
—इज़रोम, अल० ११:१२
—इतिहास, बड़ी पटियों पर अंकित लोगों का इतिहास, १ नफी ६:२, २ नफी ४:१४, याकूब १:३
—इनोस, पटियों को दिया जाना, याकूब ६:२७, पाप क्षमा किए गए, देखो इनोस ५, जराम को पटियां देता है, देखो जराम १
—इनोस की पुस्तक देखो
—इब्राहीम, के साथ वचन, १ नफी १५:८, १ नफी १७:४०, २ नफी २६:१४, के द्वारा जगत के लोगों को आशीर्वाद, १ नफी १५:१८, १नफी २२:६, ३ नफी २०:२५, का परमेश्वर क्रूश पर चढ़ाया जाएगा, १ नफी १६:२०, परमेश्वर और उसके पुत्र की समानता में, याकू० ४:५, दसांश दिया, अल० १३:१५
—इब्राहीम द्वारा मलसिदक को दसांश देना, अल० १३:१५, प्रभु को दसांश में लूटना
—इमानुएल, मसीह की एक पदवी, २ नफी १८:१४
—इरेण्टुम, अधिक जल १ नफी २७:५
—इलम २ नफी २१:११
—इलायजा, ३ नफी २५:५
—इलामन की पुस्तक
—इलामन, राजा विन्यामीन का पुत्र मूसायाह १:२
—इलामन अलमा का पुत्र, अल० ३१:७ अलमा द्वारा इसको आज्ञा, अल० ३६:१, पटियों को पाना, ३७:१; २, २१ अल० ५०:३८, गुप्त शपथ को खोलने की मनाई, अल० ३७:२७, लियाहोना अर्थात् दिग्दर्शक के विषय में आज्ञा को पाना, अल० ३७:३८, पुरोहितों को नियुक्त करता है, अल० ४५:२२, उपदेश करना, अल० ४६:१, अल० ६२:४५, गिरजा में व्यवस्था लाता है, अल० ४६:३८, आमोन के लोगों से आग्रह करता है कि वे अपना शपथ भंग न करें, अल० ५३:१४, २००० बाल सैनिकों का नेता, अल० ५३:१६, मरोनी को पत्र लिखता है, अल० ५६:१, अण्टिपस को सहायता पहुंचाना, अल० ५६:६, अण्टिपारा के बगल से उसका बढ़ना, अल० ५६:३१, लौटकर अण्टिपस के आदमियों की सहायता करता है, अल० ५६:५०, विजयी ५६:५४, राजा आमरोन से उसको पत्र का मिलना, अल० ५७:१, बन्दियों की अदला बदली करने की शर्त, अल० ५७:२, उसकी सेना का सबल होना, अल० ५७:६ कुमेनी को घेरना, अल० ५६:७, शासकों की लापरवाही की शिकायत अल० ५८:७, मण्टी में लमनायटियों को छला जाना, अल० ५८:१७, ५८:१८, जराहेमला वापस लौटना,

अल० ६२:४२, मृत्यु, अल० ६२:५२
—इलामन का पुत्र इलामन, अभिलेखों का पाना, अल० ६३:११, निर्णायक पद पर, इला० २:२, सेवक द्वारा बचाया जाना, इला० २:६, व्यक्तित्व इला ३०:२०, ५:५, मृत्यु, ३:३७
—इलायाह, वचनानुसार वापस, ३ नफी २५:५
—इलारम, राजा विन्यामीन का एक पुत्र मू० २:१
—इश की जड़, २ नफी २१:१०
—इस्माइल की पुत्रियां, १ नफी ७:६, जोराम और लेही के पुत्रों के साथ विवाह,¯१ नफी १६:७, नूह के पुरोहितों द्वारा लमनायटियों की पुत्रियों का हरण, मू० २०:५, लमनायटियों की पुत्रियों के साथ अत्याचार, मरो० ९:९
—इस्रोम, यारदाई, ओमर का पुत्र, एथर ८:४; यारदाइयों से युद्ध, ए० ८:५
—इस्राएल का घराना, जैतून वृक्ष के समान, १ नफी १०:१२, बिखेरा जाना और पीछे एकत्रित किया जाना, १ नफी ११:१४, शिष्यों द्वारा निर्णय, १ नफी १२:९, शिष्यों के विरुद्ध युद्ध, १ नफी ११:३५, गैर-यहूदियों की गिनती यहूदियों में १ नफी १४:२, प्रभु द्वारा इनको वचन दिया गया, १ नफी १४:५, परमेश्वर का काम इनमें आरम्भ होगा, १ नफी १४:१७, हास्य और अवहेलना, १ नफी १९:२०, धार्मिक शाखा की पुनर्स्थापना २ नफी ३:५, ३:१३, शाखा की पुनर्स्थापना २ नफी ३:५, ३:१३, शाखा प्रभु की वाणी को लिखेंगे, २ नफी १९:१२, मसीह का इनसे बात करना, ३ नफी १०:५; मसीह का खोई शाखा में जाना, ३ नफी १७:४ कोई भी विभेद नहीं, ४ नफी १७, यीशु, देखो मसीह
—इस्राएल के घराने के बचे हुए लोग, २ नफी २८:२, इंजील को सुनने के लिए, ३०:३, याकूब के वंशज, अल० ४६:२३, ३ नफी ६:२४, २०:१६, २१:१२, २२; यूसुफ के वंशज अल० ४६:२३, ३ नफी ६:२३, ३ नफी १२, एथर १३:६
—इस्राएल की शाखाओं के लिए परमेश्वर की वाणी, २ नफी २९:१२, ३ नफी १५:१५, मरो० १८, नफायटियों का विभाजन, ३ नफी ७:२, राजा याकूब के विरुद्ध संगठित, ७:११, एक दूसरे से न लड़ने का विचार, ७:१४
—इस्राएलियों के तितर-बितर होने की भविष्यवाणी, १ नफी १०:३, १४, १ नफी १५:१७, २२:३, ६:११, २नफी १०:६, २५:१५
—इस्राएलियों का दिव्यान्न खाना, मू० ७:१९
—इस्माइल और उसका परिवार लेही के साथ होते हैं, १ नफी ७:५, ८:२२ कन्याओं का विवाह लेही के पुत्रों के के साथ, १६:७, जोराम का विवाह बड़ी लड़की के साथ, १६:७, उसकी मृत्यु नाहूम में १६:३४; उसका वंशज लमोनी, अल० १७:२१
—इस्माइल, अभिनन्दी का वंशज, अल० १०:२,
—इस्माइल देश, अल० १७:१९ अलमा इस्माइल देश में, अल० १७:२०, २१, वहां प्रार्थना भवनों को बनाया जाना, अल० २१:२०
—इसपात (लोहा) तलवार, १ नफी ४:९, एथर ७:९, नफी का धनुष, १ नफी १६:१८, की चीजों को बनाना, २ नफी ५:१५
—इसाक, के साथ परमेश्वर का वचन, १ नफी १७:४०, इसाक का परमेश्वर १ नफी १०:१०, बलिदान करने का विचार, याकूब ४:५
—ईसाई, विश्वासियों के द्वारा नाम लिया गया, अल० ४६:१५ इसाइत की रक्षा, ४८:१०, गुप्त में ईसाइयों की हत्या, ३ नफी ६:२३
—इसियाज, इला० ८:२०
—इर्ष्या, (द्वेष, जलन) विरोध से, २ नफी २६:२१, अल० १:३२, इला० १३:२२, निषेध, अल० १६:१८, ३ नफी २१:२९ अध्याय २६, ३०
—ईर्ष्या, (द्वेष) इफ्रेम का २ नफी २१:१३ अनुचित ठहराना, अल० ५:१९
—ईश्वर का न्यायालय, २ नफी ३३:११, १५, या० ६:९, १३, मू० १६:१०, अल० ५:२२, ११:४४, १२:१२, ९:१३, मरो० १०:३४,
—ईसाबेल, सीरोन की वेश्या, अल० ३९:३

उ

—उत्तम, कडुवाहट और मीठा, अल० ३६:२१
—उत्तम, कड़वा और मीठा, अल० ५६:२१
—उत्तरदाइत्व, बपतिस्मा उनके लिए जो कि अपने इस उत्तरदाइत्व को समझें, मरो० ८:१०
—उत्पात, लमनायटियों द्वारा नफायटियों के विरुद्ध १ नफी २:२४, २ नफी ५:२५
—उत्पीड़न, अविश्वासियों के द्वारा, मू० २७:१ नफायटी नियमानुसार मना था, अल० १, २१
—उदाहरण, नफी द्वारा प्रस्तुत, १ नफी ७:८, मसीह द्वारा, २ नफी ३१:१६
—उदाहरण बुरे, याकूब २:३५, ३:१०, अल० ४:११, अच्छे उदाहरण, अल० १७:११, अल० ३९:१
—उधार मांग कर लाना, मू० ४:२८
—उद्धार, (मुक्ति) मृत्यु से, २ नफी ११, ५, लमनायटियों से, मू० ९:१७, मृत्यु के बन्धन से, अल० ५:१४, शत्रुओं से प्रभु द्वारा, ४६:७
—उद्धार, मसीहा के द्वारा, २ नफी २:६, २:२६ मा० वा० ८ अल० ९:२७, मार० ९:१२ योजना, अल० १२:२५, पास से, इला० ५:१०, लाया जाएगा, मार० ७:७
—उद्धार, सारा जगत देखेगा, १ नफी १९:१७, ३ नफी २०:३५, बेमोल, २ नफी २:४, किसी पर रोक नहीं, २ नफी २६:२४, लमनायटी प्राप्त कर सकते हैं, अल० इनो० १३, विश्वास के द्वारा मू० ५:७, अल० ११:४० प्रायश्चित द्वारा, मू० ४:६, अल० ५:२१, एकमात्र मूसा

के नियमों के द्वारा ही नहीं, मू० १३:२८, हरएक जाति के लिए १५:२८, धर्मनिष्ठ लोगों के लिए उपहार, अल० ६:२८, निकट, अल० १३:२१, विलम्ब करना, इला० १३:२८
—उद्धारक—देखो मसीह
—उपदेश, ओमनी २५, अलमा द्वारा भिन्न-भिन्न उपहारों पर व्याख्या, अल० ६:२१ विविध प्रकार के, मरो० १०:८, अविश्वास के कारण लोगों से वापस ले लिया जाता है, मरो० १०:२४
—उपदेश, पर्वत पर के उपदेश का दोहराया जाना, ३ नफी अध्याय १२-१५
—उपवास और प्रार्थना का सम्बन्ध, ओमनी २६, अल० ६:६, और भेद खोलने की योग्यता, अल० १७:३
—उपहार, अच्छी चीजों पर हाथ धरो और बुरे को मत छूओ, मरो: १०:३०, हरएक अच्छे उपहार मसीह से आते हैं, १०:१८, भाषाओं का अनुवाद करने का, ओमनी २५, अनुवाद का, अल० ६:२१, अनन्त जीवन का, इला० ५:८, नैसर्गिक, ४ नफी ३, एथर १२:८, देखो पवित्रात्मा की देन
—उपहार (देन) अध्यात्मिक, अमलकी द्वारा विश्वास करने
—उपहास, नन्हें बच्चों का बपतिस्मा, मरो० ८:६, २३
—उपहार, अमलकी द्वारा अध्यात्मिक उपहार में विश्वास का उपदेश, ओ० २५ अलमा का उपदेश, अल० ६:२१ विविध ढंग से प्रकट, मरो० १०:८, अविश्वास के कारण वापस, १०:२४
—उपेक्षा, परमेश्वर के कामों की उपेक्षा करने वालों को परमेश्वर नष्ट कर देगा, मरो० ६:२६

ए

—एक ही गड़रिया और एक ही परमेश्वर, १ नफी १३:४१, एक ही बाड़ा और एक ही, २२:२५, ३ नफी १५:१७, जैसे बिना चरवाहे की भेड़ें, अल० ५:३७ मसीह अच्छा गड़रिया, अल० ५:३८, ३६, ४१, ५७, ६०, इला० ७:१८ शैतान, अल० ५:३६
—एण्टिपस, इलामन सहायता करने जाता है, अल० ५६:६, लमनायटियों का पीछा करना, अल० ५६:३३, लमनायटियों को पकड़ना, अल० ५६:४६, मारा जाना, ५६:५१, इलामन द्वारा उसकी सेना की रक्षा, अल० ५६:५२
—एण्टिपन सोने का सिक्का, अल० ११:१६
—एण्टिपस, लमनायटियों का शिखर पर एकत्रित होना, अल० २:४७:७
—एण्टम, अमरोन द्वारा यहां पटियों को छुपाया गया था, मार० १:३
—एथम, यारदाई राजा, अहाह का पुत्र, एथर १:६, ११:११
—एथर की पुस्तक, चौबीस पटियों का अभिलेख से, ए० १:२
—एथर, कोरियण्टोर का पुत्र, ए० १:६, ११:२३, भविष्यवाणियाँ १२:५, उसकी बातों का अस्वीकार किया जांना, ए० १३:२, मसीह के दिनों का दर्शन, १३:४, गुहा में शरण, १३:१८, १४:२२, एथर से प्रभु की बातें, १५:२४, उसकी बातों की याद, १५:१, पटियों को छुपाना, १५:३३, अन्तिम वाणी, १५:३४
—ओगात, यारदाइओं ने यहां डेरा डाला था, एथर १५:१०
—ओनिहा, नगर, मसीह के क्रुश पर चढ़ाए जाने के समय यह नष्ट हुआ, ३ नफी ६:७
—ओमनी, देखो ओमनी की पुस्तक
—ओमनी, जराम का पुत्र, ओमनी २५ पटियों पर उसका लिखना, ओम० १
—ओमनर, मूसायाह का पुत्र, मूसा २७:३४, देखो मूसायाह के पुत्र
—ओमर, एक यारदाई राजा, एथर १:१०, एथर ८:१, एथर ८:११ ए० ६:१
—ओरिहा, यारद का वह पुत्र जो महान मिनार से आया था एथर १:३२, एथर ६:१४ अभिषिक्त राजा एथर ६:२७, एथर ६:२० उसकी धार्मिकता, एथर ६:३० उसके अनेक सन्तान ए० ७:२ ओरिहा, यारद का वह पुत्र जो बड़े मिनार से आया था, एथर १:३२, ६:१४, अभिषेक द्वारा नियुक्त राजा, एथर ६:२७, उसकी धर्मनिष्ठता एथर ६:३०, अनेक संतान, एथर ८:२
—ओला, राजा नूह के लोगों को मारने के लिए मू० १२:६
—औजार, बनाने के लिए नफी का धातुओं को पाना, १ नफी १७:६ नफायटियों के, जराम ८ यारदाइयों के, एथर ११:२५

क

—कताक (छुरी) बनाने में लमनायटी प्रवीण थे, इनो० २०
—कर्कमीश, २ नफी २६
—कर्ज (ऋण) ३ नफी १३:११
—चटर, (अलमा) आत्मछेदन के लिए याकूब २:६
—कटार, आत्मा को छेदने के लिए, याकूब २:६
—कर्णलो, २ नफी, २०:६
—कपड़े, मोटे, दीनता और पश्चात्ताप के लिए मू० ११:२७, इला० ११:६
—कृपा, परमेश्वर की, २ नफी ६:८, ६:५३, या० ४:७ गैरयहूदियों के लिए प्रार्थना, ए० १२:३६
—कब्र, कोई भी यात्री कब्र से वापस नहीं लौट सकता, २ नफी १:१४, मृतकों को लौटाएगा, २ नफी ६:१२, कब्र की विजय नहीं होगी अल० २२:१४
—कब्र, मसीह तीन दिन तक कब्र में २ नफी २५:१३
—कब्रों का खुलना, इला० १४:२५
—कमरा, में प्रार्थना, अल० ३३:७, ३४:२६, ३ नफी १३:६
—कमनिहा, एक मारा गया नफायटी नेता, मरो० ६:१४
—कर्म, पर दृष्टि, मू० ४:३०, शरीर से, अल० ५:१५, कर्म के अनुसार न्याय, ३६:१५, ४३:२७, बुरे कर्म इला०

१३:२६, २ नफी २:१३, २६, मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र, अल० १३:३१, इला० १५:३०
—कर्मानुसार न्याय, १ नफी १६:३२
—कर, राजा बिन्यामीन द्वारा साधारण मू० २:१४ लिमही के लोगों को मू० ७:१५ रीप्लीकिश द्वारा भारी कर का बोझ एथर १०:५
—करुणा, मानव संतान के लिए दिव्य, मू० १५:६ लमनायटियों की मू० १६:१४, २१:२६, २४:३४ करुणा से आमोन, अल० २७:४, मसीह करुणा से परिपूर्ण, ३ नफी २७:६, यारद के लिए प्रभु की, १:३५
—करुबों, अल० १२:२१, ४२:२
—कवच, लिमही के लोगों द्वारा लाया गया, मू० ८:१०, नफायटियों द्वारा उपयोग, अल० ४३:१६, ३८, ४४:६, लमनायटियों द्वारा उपयोग, इला० १:१४, यारदाइयों द्वारा, ए० १५:१५
—कवच, धार्मिकता का, २ नफी १:२३
—कष्ट, अनेक प्रकार से असरकारक, अल० ६२:४१, आशीर्वाद के लिए समर्पण, २ नफी २:२
—कष्टों, में होकर चलना, १ नफी १७:१, अल० ७:५, ८:१४, ५३:१५, इला० ३:३४
—कष्टों में होकर चलना, १ नफी १७:१, अल० ७:५, ८:१४, ५३:१५
—कड़वा प्याला, (अल०) २ नफी ६:१७, मू० ३:२६, अल० ४०:२६, ३ नफी ११:११, अंगूर रस का, ३ नफी १८:८ अध्याय ४, मरो० ५:१
—काठ, लेही के साथियों के लिए नाव बनाने में विचित्र कारीगरी, १ नफी १८:१, नगरों की रक्षा के लिए, अल० ५०:२, ५३:४, बिना वृक्ष का देश, इला० ३:५, पेड़ पौधों को उगाने का प्रयास, ३:६, कारीगरी की शिक्षा, २ नफी ५:१५, बारीक कारीगरी, जराम ८
—कहोर, नूह का भाई, एक यारदाई, एथर ७:१५
—कहोर, नूह का पुत्र, यारदाइयों का राजा बनना, एथर ७:२०
—कामोत्तेजना, विरुद्ध याकूब को चेतावनी, या० ३:१२
—कामुकता के वश में नफायटी, अल० ४५:१२, आशीर्वाद के समय कामुकता से मुक्त, ४ नफी १६
—काम, प्रभु के महान और आश्चर्यजनक, १ नफी १४:७, २ नफी २५:१७, २६:१, ३ नफी ६ गैरयहूदियों में आश्चर्य-जनक, १ नफी २२:८, विस्मयजनक और आश्चर्य, २ नफी २७:२६, प्रभु का काम समाप्त नहीं, २६:६, पिता के काम का आरम्भ, ३ नफी २२:२६
—कायाकल्प, शिष्यों का कायाकल्प होते प्रतीत होना, ३ नफी २८:१५
—कारीगर, विचित्र, इला० ६:११
—कारागार (बन्दीगृह) अलमा और अमूलक कारागार में अल० २४:१७, कारागार का नष्ट होना और चमत्कारी ढंग से मुक्ति, अल० २४:२७ मिदोनी में, अल० २०:३, नफी और लेही कारागार में, इला० ५:२१ नफी और लेही का चमत्कारी ढंग से छुटकारा, कारागार का हीलना इला० ५:२७
—किलाबन्दी, नफायटियों की, अल० ४८:८, ४६:१३, अल० ५०:१०, ५३:७, ३ नफी ३:१४, लमनायटियों के अधिकार में जाना, अल० ५१:२३, बन्दियों से परिश्रम करवाना, ५५:२५, अंगोला का अपर्याप्त किलाबन्दी, मार० २:४
—किब, यारदाई राजा, ओरिहा का पुत्र, एथर १:३२, ७:३, कोरिहर का बन्दी ७:७, पुनः राज्य प्राप्त करना, ७:६ शूले को राज्य देना ७:१०
—किम, यारदाई राजा, मोरियन्दन का पुत्र, एथर १:२२, १०:१३, दासता में १०:१४
—किश, कोराम का पुत्र, यारदाई राजा, ए० १:१६
—किमनोर, आकिश का पिता, ए० ८:१०
—किस्कूमन, पहोरन, की हत्या, इला० १:६, इलामन को मारने का प्रयास, इला० २:३, इलामन के सेवक द्वारा मारा जाना, इला० २:६
—किस्कूमन नगर का आग से नष्ट होना, ३ नफी ६:१०
—कीड़े, देश का कीड़ों से सत्यानाश मू० १२:६
—कील, मसीह के हाथ पैरों में चिन्ह, ३ नफी ११:१४
—कुमेनी नगर, अल० ५६:१४, ५७:७
—कुमारी, अल० ७:१०, नफी के स्वप्न दर्शन में, १ नफी ११:१३, १५:१८
—कुमोम, यारदाइयों के जाने हुए पशु, ए० ६:७
—कुमोर, पहाड़, नफायटियों का दिया नाम, मार० ६:२, यहीं पर नफायटियों और लमनायटियों का अंतिम युद्ध हुआ था, मार० ८:२
—कुरिलम, यारदाइयों के जाने पशु, एथर ६:१६
—कुश, २ नफी २१:११
—कुल्हाड़ी, वृक्ष के जड़ पर, अल० ५:५२
—कूमन, बारह शिष्यों में से एक, ३ नफी १६:४
—कूरिलम, एक प्रकार का यारदाइयों के पशु, ए० ६:१६
—कुमनोर, पहाड़, भीषण यारदाई युद्ध, एथर १४:२८
—कुमनोही, बारह शिष्यों में से एक, ३ नफी १६:४
—क्रुश, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी ११:३३
—क्रुश, जगत के, २ नफी ६:१८
—क्रुश पर चढ़ाए जाने का दृश्य, नफी द्वारा पूर्व से देखना, १ नफी ११:३३, २ नफी ६:६, १०:३, २५:१३, बिन्यामीन द्वारा, मू० ३:६, मसीह द्वारा पुष्टी, ३ नफी ११:१४, देखो मसीह
—क्रूरता लमनायटियों की क्रूरता और नफायटियों का अधःपतन, मरो० ६:१०, ६:१७, १६
—कैन, इला० ६:२७
—कोम, यारदाई राजा, हेथ का पिता, ए० १:२६, ६:२५ अपदस्त और उसका मारा जाना ६:२७
—कोम, यारदाई राजा, दासता में जन्मा, एथर ११:३१,

अमगिद को वश में करना और राज्य के कुछ भाग पर अधिकार, ए० १०:३२, डाकुओं से युद्ध किया १०:३४, भविष्यवक्ताओं की रक्षा, ए० ११:२
—कोराम, लिवी का पुत्र, ए० १:२०, ए० १०:१०
—कोरियन्दन, ए० १:७
—कोरियन्दन, जोरमायटियों में जाना, अल० ३१:७ अलमा को आज्ञा देना, अल० ३९:१, धर्म त्याग, ३९:३, धर्म की हानि, ३९:४, अलमा द्वारा प्रोत्साहन ४१:१४, उद्धार पर, ४२:११, न्याय पर ४२:१४, प्रायश्चित पर ४२:१५, पश्चात्ताप पर, ४२:१६, स्वतन्त्र प्रतिनिधित्व पर ४२:२७, उपदेश करने की पुकार ४२:३१, नाव द्वारा उत्तर की यात्रा ६३:१०
—कोरियन्टोर, मोरन का पुत्र, एथर १:७ दासता में जन्म, ए० ११:१८, एथर का पिता दासता में मृत्यु, ए० ११:२३,
—कोरियटूम, अमगिद का पुत्र, एथर १:१४, दासता में, ११:३१
—कोरियण्टूम, अमर का पुत्र, ए० १:२८ अभिषिक्त राजा ए० ६:२१, धर्मानुसार शासन, ए० ङ:२३
—कोरियण्टूमर, ओमर का पुत्र, ए० ८:४ यारदाइयों को पराजित करता है, ए० ८:६
—कोरियण्टूमर, अंतिम यारदाई, जराहेमला के लोगों में, ओमनी २१, उसके लोगों का विवरण, ओम० २१, यारदाइयों का राजा, एथर १२:१ उसको नष्ट करने की योजना ए० १३:१५ युद्ध में कुशल १४:१६, एथर द्वारा चेतावनी १३:२०, दूसरे के द्वारा दफ़न १३:२०, शारद द्वारा पकड़ा जाना १३:२३, पुत्रों द्वारा मुक्ति, १३:२४, शारद का सामना १३:२८, घायल १३:३१, शारद के भाई को पराजित करना, १४:१३, गिलियड द्वारा सिंहासन छीनना, १४:६, लिब के साथ युद्ध १४:१२, आगोश को भगाना, १४:१५, लिब को मारना, १४:१६, सेज से युद्ध, १४:१६, सेज के सामने से भागना १४:१७, तलवार से मारा नहीं जा सकता, १४:२४, कुमनोर में सेज से युद्ध १४:२६, सेज द्वारा घायल किया जाना, १४:३०, १५:६, पश्चात्ताप करना, १५:३, सेज को पत्र, १५:४, १८, सेज के सामने से भागना, १५:७, रिप्लयंकम जाना १५:८, सेज को पराजित करना १५:१०, रामा पर्वत पर पड़ाव १५:११, एथर द्वारा देखना १५:१३, सेज से अन्तिम युद्ध १५:१५, सेज को मारना १५:३०, घायल होकर गिरना १५:३२
—कोरियण्टूमर, नफायटी विद्रोही, लमनायटियों का सेना नायक, इला० १:१५, जराहेमला पर विजय, इला० १:२० पाकूमनी निर्णायक का हत्यारा, ४:२१, सम्पन्न देश की ओर कूच, इला० १:२३ उसका मारा जाना, एला० २:३०, उसकी सेना का पकड़ा जाना, इला० २:३२
—कोरिहर, देश, एथर, १४:२७
—कोरिहर, किब का पुत्र, एथर ७:३, किब के विरुद्ध विद्रोह, ए० ७:४, पिता को बन्दी बनाना ७:७ शूले का उसका राज्य लेना, ७:६, पश्चात्ताप करना और शूले की कृपा प्राप्त करना ७:१३
—कोरिहर कोरियण्टूमर का सहयोगी, ए० १३:१७
—कोरिहर, मसीह का विरोधी, अल० ३०:१२, जारसन में अल० ३०:१६, गिडियन में अल० ३०:२१, गिडोना के समक्ष ३०:२३, दोष लगाना, अल० ३०:२४, अलमा के सामने लाया जाना ३०:२६ उसका संकेत की मांग, ३०:४३, संकेत पाना, उसका गूंगा हो जाना, ३०:५०, शैतान द्वारा बहकाया जाना ३०:५३, उसका बहिष्कार ३०:५६, जोरमायटियों में मारा जाना, ३०:५९
—क्रोध, लमान और लेमुएल का, २ नफी ४:१३, ५:१, प्रभु का, २६:६, शैतान द्वारा क्रोध भड़काना २८:२०, यारदाई सेना क्रोध से मतवाली, ए० १५:२२, नफायटियों को, मरो० ९:५
—क्रोध परमेश्वर का २ नफी १:२२, मू० १:१७
—क्रोध, आक्रमणकारियों द्वारा २ नफी ४:१३, युद्ध में जोरमायटी याकूब द्वारा अल० ५२:३३, व्यवहार में, ३ नफी २१:२१

ख

—खतने का नियम मसीह से अंत, मरो० ८:८
—खाई, भयंकर, जीवन के वृक्ष से दुष्टों को अलग करती है १ नफी १६:२८ कष्ट और संताप २ नफी १:१३
—खाओ पिओ और मौज करो, दुष्टों का कहना, २ नफी २८:७, बारह शिष्यों को यह नहीं सोचना चाहिए, ३ नफी १४:२५, ३१
—खूंटी, दुष्ट खूंटी की तरह, २ नफी २२:१५
—खेत, लेही के दिव्य दर्शन में एक भारी १ नफी ८:१३, लबानोन एक उर्वरा, २ नफी २७:२८, में प्रार्थना, अल० ३३:५, ३४:२०, कमल, ३ नफी १४:२८
—खोई शाखा, ३ नफी १५:१५, १५:२०, २१, २२:२६
—खोई शाखा, इस्राएल की, ३ नफी १५:१५, ३ नफी १७:४

ग

—गट्ठर, परिश्रम के परिणाम का संकेत, अल० २६:५, प्रभु के लोगों को एकत्रित किया जाएगा, ३ नफी २०:१८
—गन्धक, दुष्टों का सन्ताप और अग्नि, २ नफी ९:१६, ९:२६, २८:२३, या० ३:११, ६:१०, अल० १२:१७
—गहराई, अधोलोक की, १ नफी १२; १६, दुख की, १ नफी १६:२५ मानवता की, २ नफी ९:४२, मू० ४:११, अल० ६२:४१, इला० ६:५, धरती की, २ नफी २६:५, ३ नफी ९:६, ईश्वरीय महिमा की, या० ४:८
—गाय, प्रतिज्ञा के देश में, १ नफी १८:२५, यारदाइयों की, ए० ९:१८
—ग्रह, परमेश्वर के गवाह, अल० ३०:४४

—गर्मी, तत्वों को गलने के लिए, ३ नफी २६:३, मार० ६:२
—गिड, लमनायटी बन्दियों की देखभाल करने वालों का नायक, अल० ५७:२६, इसके हाथ से बन्दियों का भागना, ५६:३२, मण्टी के लिए घात में ५२:१६, मण्टी पर अधिकार करना, ५८:२१
—गिद्ध, लमनायटियों और नफायटियों के अनेकों शवों को गिद्धों ने आहार बनाया, अल० २:३८
—गिड नगर पर लमनायटियों का अधिकार, अल० ५२:२६, नाफयटियों का पुनः अधिकार, ५५:७, १६, २३, दृढ़ किलाबन्दी ५५:२५
—गिडियानी, लक्ष्योनस को पत्र लिखना, ३ नफी ३:६, लूट ४:५, सैनिकों की भयंकर आकृति ४:७, हत्याकांड ४:११, पराजय ४:१२
—गिडोना, अमूलक का पिता, अल० १०:२
—गिडोना, गिडियन देश का मुख्य पुरोहित, अल० ३०:२३ कोरिहर को न्याय के लिए अलमा के पास भेजना, ३०:२६
—गिडियन, नफायटी बुजुर्ग, मू० १६:४, स्वतन्त्रता की योजना, मू० २२:६, लोगों का शिक्षक, अल० १:७, निहोर का सामना करना, १:७, ६; निहोर द्वारा मारा जाना, १:६; १:१३, घाटी और एक नगर का नाम, २:२०, ६:७
—गिडियन नगर, अल० ७ ६:७
—गिडियन की घाटी अल० २:२० गिरजे की स्थापना ६:८
—गिडगिडोना, नफायटी सेनाध्यक्ष, मो० ६:१३,
—गिडगिडोनी, नफायटी सेनाओं का प्रधान सेनापति, ३ नफी ३:१८, एक भविष्यवक्ता ३:१६ गेडियन्दन डाकुओं का परास्त करना, ३ नफी ४:१४, शान्ति की स्थापना करना ६:६
—गिलगाह, यारद का पुत्र, एथर ६:१४
—गिलगाल, एक नफायटी नेता, मारा जाना, मा० ६:१४
—गिलगाल नगर, जलमग्न, २ नफी ६:६
—गिलगाल की घाटी, ए० १३:२७ यहीं पर कोरियण्टूमर ने शारद को पराजित किया, ए० १३:२८, शारद को पराजित किया, ए० १३:२८, शारद का यहां मारा जाना १३:३०
—गिलियड, शारद का भाई, ए० १४:८, कोरियण्टूमर से युद्ध, ए० १४:३, सिंहासन पर, ए० १४:६, अपने पुरोहित द्वारा मारा जाना १४:६
—गिमगिमनो, नगर जो डूब गया, ३ नफी ६:८
—गिरजे की स्थापना, अलमा और अमूलक द्वारा, अल० १६:१५
—गुफा, चट्टान का, नफी और उसके भाइयों का छुपना, ६:२७, एथर का छुपना, ए० १३:१३, १८:२२
—गुहा, नाग का, २ नफी २१:८, हिंसक पशुओं के गुहा में तीन शिष्यों का बीगा जाना, ३ नफी
—गुप्त संगठन, आकिश का, ए० ८:१३, देखो गेडियन्दन डाकू २८:२२, ४ नफी ३३
—गूंगा, अलमा का होना, मू० २७:१६, कोरिहर का, अल० ३०:५० मसीह द्वारा ठीक किया जाना, ३ नफी १७:६,
—गेडियन्दी नगर, ३ नफी ६:८
—गेडियन्दन, अति दुष्ट, इला० २:४, इलामन के सामने से भागना, २:११, नफी के लोगों का नाश, २:१३, गुप्त संगठन, इला० ३:२३, भेद, ६:२४, शपथ, ६:२६, शैतान द्वारा प्रोत्साहित ६:२६, गुप्त दल का संस्थापक, ६:२८, दल का नष्ट होना, ११:१०, गुप्त योजना ११:२६
—गेडियन्दन डाकू, दल, इला० ६:१८, ४ नफी ४२, लमनायटियों द्वारा जलाए गए, इला० ६:३७, न्यायासन पर अधिकार ७:४, ८:१, नाश होना, ११:१०, पर्वतों पर पुनः संगठित ३ नफी २:२७, लमनायटियों में, २:२६, मार० १:१८, असंख्य, ३ नफी २:११, प्रबल होना, २:१८
—गेबा, २ नफी २०:२६
—गेबीन, २ नफी २०:३१
—गैरयहूदी (दूसरी जाति) एक गैरयहूदी का सागर पार करना, १ नफी १३:१२, उनमें शक्तियुक्त राष्ट्र, १ नफी २२:७, चमत्तकारी काम, २२:८, ३ नफी २६:३२, उनमें याकूब के अवशेष वंशज, ३ नफी २१:१२, उनमें तीन शिष्य, २८:२७, इस्राएल के वंशजों का बिखरना, १ नफी १५:१७, २ नफी २६:१५, इस्राएल के वंशजों का पोषण, १ नफी २२:६, पुस्तक को प्रकाश में लाना, १ नफी १३:३८, मार० ७:८, द्वारा इंजील का आना, १ नफी १५:१३, ३ नफी २१:५, २६:८, मार० ५:१५, ७:८, उनमें महान गिरजा, १ नफी १३:४, यहूदियों से शुद्ध रूप में शास्त्र प्राप्त करना, भ्रष्ट शास्त्र, १ नफी १३:२६, नफी के वंशज को कष्ट, २ नफी १०:१८, अविश्वासियों पर चोट, २ नफी २६:१६, वे कहेंगे: धर्मशास्त्र, और दूसरे शास्त्रों को त्यागेंगे, २ नफी २६:३, उन पर दया, १ नफी १३:३२, नफायटियों के अभिलेख पाएंगे १३:३५, २ नफी ३०:३, मसीह के प्रकट होने की बात को स्वीकार करेंगे, १ नफी १४:२४, उनमें इंजील, १५:१३, उनसे वचन २ नफी १०:६, प्रतिज्ञा का देश उनके लिए स्वतन्त्रता का १०:११, मरोनी द्वारा प्रार्थना, ए० १२:३६ नफी के दिव्य दर्शन में उनकी प्रगति, १ नफी १३:१५ हंसी करना, ए० १२:२३, उनके लिए मरोनी द्वारा लिखा गया, मार० ४:१७

घ

—घर के छतों पर से मुहरबन्द पुस्तक पढ़ी जाएगी, २ नफी २७:११
—घृणा, धर्मनिष्ठ लोगों द्वारा पाप को घृणा की दृष्टि से देखना, अल० १३:१२
—घृणित गिरजा, १ नफी १४:६
—घृणित संगठन, गुप्त, २ नफी ६:६, २६:२२, अल० ३७:२१, ३ नफी ५:६, ए० ११:२२
—घृणित कार्यों की जननी, १ नफी १४:६, शैतान के गिरजे की, १४:१२, यहूदियों की, २ नफी २५:२; अंतिम दिनों में,

२७:१, दिव्य ढंग से तैयार किए पत्थर से पता, अल० ३७:२३, नफायटियों और लमनायटियों के पूरे विवरण नहीं, इला० ३:१४, मारमन के समय में लमनायटियों और नफायटियों के, मरो० ६:६
—घृणित लोग, लमनायटी, १ नफी १२:२३, २ नफी ५:२२, मार० ५:१५
—घुटना, हरएक का घुटना मसीह के सामने झुकेगा, मू० २८:३१
—घेरा, डाकुओं द्वारा नफी के लोगों पर ३ नफी ४:१६ वन में कोरियण्टूमर द्वारा, एथर १४:५
—घोषणा, गेडियन्दन डाकुओं से रक्षा के लिए लक्षोनस द्वारा, ३ नफी ३:२२

च

—चांदी, १ नफी १३:७, प्रतिज्ञा के देश में प्राप्त, १ नफी १८:२५, चांदी में कारीगरी, २ नफी ५:१५, नफायटी चांदी में सम्पन्न, जराम ८ अल० १:२८
—चट्टान की दरारों, २ नफी १२:२१
—चट्टान, धर्मनिष्ठ मसीह की शक्ति की उपमा, १ नफी १५:१५, २ नफी ४:३०, ३५, २ नफी ६:४५, २६:२८, ३ नफी १२:३६
—चट्टान, नफी के दिव्य दर्शन में मसीह की मृत्यु के समय टूटना, १ नफी १२:४, लमनायटी सामुएल की भविष्यवाणी, में, इला० १४:२१ भविष्यवाणी के अनुसार, ३ नफी ८:१८
—चमत्कार, दूसरे देशों में लोग अगर पश्चात्ताप किए, २ नफी १०:४ मसीह द्वारा भारी, २ नफी २६:१३, मू० ३:५, चमत्कारी परमेश्वर २ नफी २८:६, इलामन के पुत्र द्वारा, इला० १६:४ लोगों में भारी, ३ नफी १:४, नफायटियों में मसीह द्वारा, ३ नफी १७:७, २६:१५ सभी तरह के, ४ नफी ५, परमेश्वर ने चमत्कार दिखाना समाप्त नहीं किया, मार० ६:१५ चमत्कार का दिन, मरो० ७:२७, ३५
—चमत्कारी ढ़ंग से स्वस्थ लाभ, मू० ३:५, ३ नफी २७:१५
—चापलूसी, सीरम द्वारा, या० ७:४, अलमा की, मू० २७:८, अमलिकियाह की, अल० ४६:५, राजा के लोगों द्वारा, ६१:४
—चीता, बच्चे के साथ, २ नफी ३१:१२
—चिन्ह, परमेश्वर द्वारा लमनायटियों पर, अल० ३:६, ३:१५, अमलकायटियों पर लाल, ३:४, १३
—चुने हुए लोग, २ नफी १:१६
—चेमिश, अमरोन से पटियों का पाना, ओमनी ८, ओमनी की पुस्तक में लिखना ओ० ६
—चेतावनी, प्रभु द्वारा, २ नफी ४:१३, इनो० १

छ

—छमा, के लिए प्रार्थना, १ नफी ८:२१, पापों के लिए, मू० ४:२, प्राप्त करना सरल नही, अल० ३६:६, जितनी बार मांगोगे मिलेगा, मरो० ६:८
—छल, से लमनायटियों को गढ़ से बाहर निकालना, अल० ५२:२१, असफल, ५८:१

ज

—जंगल, यरूशलेम से लेही का जंगल में जाना, १ नफी २:४, कष्टों के कारण इस्माइल की लड़कियों का रोना, १ नफी १६:३५, बच्चों का जन्म, १ नफी १७:२०, १ नफी १८:७, २ नफी २:१, नफायटियों और लमनायटियों के अलग होने के समय नफी और उसके साथियों का भागना, ५:५, हेरमाउण्ट लमनायटियों को जंगल में भागना, अल० २:३७
—जंगली पशु, नफायटियों द्वारा भोजन के लिए मारना, १ नफी १६:३१, प्रतिज्ञा के देश में, १ नफी १६:२५; परमेश्वर द्वारा रचे गए, २ नफी २:१५, इनोस द्वारा शिकार, इनो० ३, लमनायटियों द्वारा रक्तपात, जराम ६, मारमन देश में, मू० १८:४, हेरमण्ट में, अल० २:३७, मृत शरीरो में, १६:१०
—जमनरिहा, डाकुओं का सरदार, ३ नफी ४:१७, नफायटियों के विरुद्ध योजना में असफल ३ नफी ५:२२, अपने लोगों के साथ उत्तर देश की ओर, ५:२३, पकड़ा जाना और फांसी ५:२८
—जनीफी, की उपद्रवी सेना, मरो० ६:१६
—जनीफ, लिमही का पूर्वज, मू० ७:६, भेदियों, मू० ६:१, अपनी टुकड़ी सेना का नायक, मू० ६:३, आक्रमणकारी लमनायटियों को पीछे हटाना ६:१४, १०:१६, अपने पुत्र नूह को राज्य देना, ११:१
—जनीफ का अभिलेख, मू० अध्याय ६:२२, राजा मूसायाह द्वारा स्वीकारना, मू० २२:१४, राजा मूसायाह के निर्देशन पर पढ़ा जाना २५:५
—जराम, पुस्तक
—जराम, इनोस का पुत्र, जराम, १
—जराहेमला, के लोग, ओमनी १४, यरूशलेम से आए, ओ० १५, के लोगों का मूसायाह के साथ मिलना, ओ० १६, लिमही का लोगों को पता लगाने भेजना, मू० ८:७, नफायटियों के साथ गणना, मू० २५:१३, लोगों के आने का स्थान, अल० २२:३०
—जराहेमला, देश, ओ० १३, अल० २:२४, लक्षोनस का यहां सेना एकत्रित करना, ३ नफी ३:२२, दक्षिण का देश ए० ६:३१
—जराहेमला नगर, मसीह के क्रुश पर चढ़ाए जाने के समय

आग से नष्ट ३ नफी ८:८ फिर से बसाया जाना, ४ नफी ८
—जराहेमला देश की राजधानी, इला० १.२७
—जल, दूषित जल का श्रोत, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी १२:१६, लेही के दिव्यदर्शन का तात्पर्य, १६:२६, मूसा से, परमेश्वर की शक्ति द्वारा चट्टान में से, १ नफी १७:२१, २ नफी २५:२०, मसीह का पानी से बपतिस्मा, ३१, ५, अलमा और इलामन ढके या बपतिस्मा लिए, मू० १८:१४ जराहेमला लगभग घिरा हुआ, अल० २२:३२, भारी जलराशि, उत्तर के देश में इला० ३:४, यारदाइयों का ३४४ दिनों तक जल पर, ए० ६:११, कड़वे जल के श्रोत से अच्छा जल नहीं, मरो० ७:११
—जलाशय, बहुत से जलाशय नफी के दिव्यदर्शन में, १ नफी १३:१०, इरेण्टम का अर्थ, १ नफी १७:५, बहुत से जलाशयों का देश, कुमोरह मरो० ६:४, लाल सागर का विभाजन, १ नफी १७:२६, सिदोम के जल में मुर्दों का बीगा जाना, अल० ३:३, ४५:२२, सीबू के जल के पास आमोन, १८:३४, १७:२६, मार० देखो मारमन का जलाशय।
—जसन देश, मार० २:१६
—जागते और प्रार्थना करते रहो, पर उपदेश, अल० १३:२२, ३ नफी १८:१५
—जादूगरी, अल० १:३२, मार० १:१६
—जादूगरी, मिटा दिया जाएगा, २ नफी २१:१६
—जारसन देश, अल० २७:२२, एण्टी, नफी, लेही के लोगों को दिया जाना, देखो आमोन के लोग, यहां गिरजे की स्थापना, २८:१६, अलमा और अमूलक का प्रवेश, ३५:१, आमोन के लोगों का यहां से जाना, ३५:१३, नफायटियों की सेनाओं का यहां एकत्रित होना, अल० ४३:४
—जीज़रोम का अलमा द्वारा स्वस्थ लाभ, अल० १६:६, मसीह का रोगियों और दुखियों को ठीक करना, ३ नफी १८:६, २६:१५, शिष्यों द्वारा स्वस्थ करना, ४ नफी ५
—जीज़रोम, वकील, अलमा और अमूलक पर दोष लगाता है, अल० १०:३१, अमूलक से प्रश्न, अल० ११:२१, अलमा से, अल० १२:८ अधोगति के संताप में, १४:६, सिदोम में रोगी, १५:३, मत परिवर्तन और स्वास्थ्य लाभ १६:६ इंजील का प्रचार, १५:१२
—जीनस, मसीह के दफन की भविष्यवाणी, १नफी १६:१०, तीन दिनों के अन्धकार की भविष्यवाणी ३ नफी १६:१०, जैतून वृक्ष का उदाहरण, याकूब ५:१ याकू० ६:१ वाणी पूरी होगी ६:१ प्रार्थना और अराधना पर, अल० ३३:३ मसीह के क्रूश पर चढ़ाए जाने के समय में विनाश की भविष्यवाणी ३ नफी ११:१६
—जीनक, भविष्यवाणी मसीह को ऊपर उठा लिया जाएगा १ नफी १६:१०, परमेश्वर के पुत्र सम्बन्धी साक्षी, अल० ३३:१५, क्रूश पर चढ़ाए जाने के समय विनाश की भविष्यवाणी, ३ नफी ११:१६
—जीवित मसीह में, २ नफी २६:२५, मरोनी ८:१२, १६,२२
—जोनम, मारा गया, नफायटी नेता, मार० ६:१४
—जुआ, घृणित गिरजे का, १ नफी १३:५
—जैतून का वृक्ष लेही द्वारा इस्राएल की तुलना, १ नफी ११:१२, १४ १५:७, १२, १६, जंगली और उत्तम का दृष्टान्त, या० ५:३
—जेराम, भेदियों के रूप में भेजा गया, अल० २:२२
—जोराम, लबान का सेवक, १ नफी ४:३५, विवाह, १६:७, नफी का सच्चा मित्र, २ नफी १:३०, लेही द्वारा आशीर्वाद, नफायटियों के साथ, अल० ५:६
—जोराम, नफायटियों, का प्रधान सेनाध्यक्ष अल० १६:५
—जोराम, मतभेदियों का नेता, अल० ३०:५६
—जोरमायटी, या० १:१३, नफायटियों से अलग, अल० ३०:५६, प्रार्थना भवनों का निर्माण, अल० ३१:१२, पवित्र चबूतरा, ३१:२१, विचित्र प्रार्थना, ३१:१५, मत परिवर्तकों का निकाला जाना ३५:१२, विचित्र प्रार्थना, ३१:१५, मत परिवर्तकों का निकाला जाना ३५:६
—जोरामायटी, या० १:१३, नफायटियों से अलग, अल० ३०:५६ प्रार्थना भवनों का निर्माण, अल० ३१:१२, पवित्र चबूतरा, ३१:२१, विचित्र प्रार्थना, ३१:१५, मत-परिवर्तकों को निकाला जाना ३५:६, ८, आमोन के लोगों के विरुद्ध युद्ध की तैयारी ३५:१०, मत परिवर्तन करने वालों को भूमि, ३५:१४, उनका लमनायटी बनना, ४३:४, लमनायटियों के नायक, अल० ४८:५, लमना-यटियों को दूर ले जाना ३ नफी १:२६
—जोस, नगर, आग से नष्ट, ३ नफी ६:१०
—जोस, एक नफायटी नायक जो मारा गया, मार० ६:१४

झ

—झण्डा, राष्ट्रों के लिए, अल० ५५:२६, लोगों का, २ नफी २१:१०
—झण्डा, स्वतन्त्रता का, मरोनी द्वारा, अल० ५१:२०
—झरना, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी १२:१६, लोहे का छड़ झरना तक, १ नफी ८:२०, १ ११:२५, मारमन में, मू० १८:५, सम्पूर्ण धार्मिकता का, ए० ८:२६, १२:८ कड़वा झरना मीठा जल नहीं दे सकता, मरो० ७:११
—झुकना, पाप या लालच के आगे मत झुको, २ नफी ४:२७, २६:१० याकूब ४:५ मारमन ६:२८
—झूठे मसीह, मा० वा० १५
—झूठी गवाही वर्जित, मू० १३:२३

ट

—टीमुथी, इलामन का पोता, अपने भाई नफी द्वारा मृत से जीवित किया गया, बारह शिष्यों में से एक ३ नफी १६:४
—टुकड़े मसीह के क्रूश पर चढ़ाए जाने के समय चट्टान के, इला० १४:२२, ३ नफी ८:१८

—टेनकम नफायटी सेनाध्यक्ष जिसने मोरिग्नन्दन को मारा, आलमा ५०:३५ अमलिकियाह की सेना का सामना करना, ५१:२६, सम्पन्न देश की सीमा पर गया ५१:३२ अमलिकियाह को मारा, ५१:३४, चलाकी, ५२:२२, बन्दियों से परिश्रम करवाना ५३:३ अमरोन को मारा, ६२:३६, मारा जाना ६२:३६
—टेनकम नगर, मार० ४:३
—टोना टोटका अपराध, ३ नफी २१:१६

ड

—डमरु मध्य, उत्तर और दक्षिण देश को मिलाता हुआ, अल० २२:३२, नाव का उतारना ६३:५ किलाबन्दी, इला० ४:७, यारदाइयों द्वारा महानगरी बसाया जाना एथर १०:२०
—डाकू, देखो, गेडियन्दन डाकू, डाकूओं के गुप्त दल, ३ नफी ३:९ एथर ९:६, ११:२२

ढ

—ढेलवांस, नफायटियों द्वारा उपयोग, अल० २:१२ देखो अस्त्र शस्त्र।
—तिरस्कार करने वाले नष्ट होंगे, २ नफी २७:३१
—तीन नफायटी शिष्य अमर, ३ नफी २८:७, ४ नफी १४, नफायटियों में, ३ नफी २८:१६, ४ नफी ५: लोगों के पापों के कारण उनको अलग किया गया, मार० ७:१०, मारमन और मरोनी के उपदेश, ११
—तूबलोथ लमनायटी राजा इला० १:१६
—तेमनर एक नफायटी नायक जो इलामन का मातहत था अल० ५८:१६

द

—दण्ड जहां नियम नहीं वहां दण्ड नहीं, २ नफी ९:२५, सीरम अनन्त दण्ड पर या० ७:१८, दुष्टों के लिए अनन्त परिणाम मू० २:३३
—दमस्क, २ नफी २७:८
—दर्शी २ नफी ३:६ मू० ८:१३, मू० २८:१६ पापों के कारण दर्शियों पर पर्दा, २ नफी २७:५
—दुखों का विविध रुप से प्रभाव, अल० ६२:४१ दुखों के कारण प्रतिष्ठा, २ नफी २:२
—दुर्गति आत्मा की, मू० ३:२५, ३ नफी १८:१९, शैतान के वश में, मू० १६:११, बुरे कर्म करने वालों के लिए, इला० १२:२६, पुनर्जीवन, ३ नफी २६:५, वाणी को भ्रष्ट करने वालों के लिए, मरो० ८:३३
—दुर्बल होना, अविश्वास में, देश की रक्षा के लिए लबान का मारा जाना, १ नफी ४:१३, लेही के वंशजों का दुर्बल होने की भविष्यवाणी १ नफी १२:२२, १३:२५, २ नफी १:१०, अल० ४५:१०, ३ नफी २१:५, नफायटियों में अल० ५०:२२, इला० ६:३४, ४ नफी ३४, शाप के कारण, १ नफी १२:२३, जानबूझ कर विद्रोह से स्पष्ट, ४ नफी ३८, दुर्बलता में चमत्कारों का अंत, मरो० ८:२० गड नगर ३ नफी ९:१० गदहा, प्रतिज्ञा के देश में १ नफी १८:२५
—दुष्ट, नफी का विचार, १ नफी १६:२, जब परमेश्वर का सम्पूर्ण क्रोध आएगा तब वे धर्मनिष्टों को नष्ट नहीं कर सकेंगे, १ नफी २२:१६, बुरे राज्य नष्ट किए जाएंगे, १७:३७, फेंक दिए जाएंगे, मू० १६:२ बाहर निकाले जाएंगे, अल० ५:५७ परमेश्वर का न्याय, मारमन ४:५ दुष्ट देखो शैतान
—दुष्टता के कारण बहुतों का भटकना, २ नफी २८:१४, के कारण नष्ट, अल० ४:२, ३ नफी, ९: ७
—दिन, बादल, २ नफी १४:५ न्याय का मू० ३:२४, १ एक दिन की यात्रा की दूरी इला० ४:७ विश्वासियों को मारने का, ३ नफी १:९, एथर का गुफा में छुपना, एथर १३:१३ दिव्य दर्शन लेही का, १ नफी १:८, ५:४, ४:२, २ नफी १:४, नफी का १ नफी ११:१, अमूलक का, अल० ८:२०, अल० १०:७ आविश के पिता का अल० १९:१६, द्वारा ज्ञान प्राप्ति, २ नफी ४:२३
—देश, गिरजे का विरोध से, २ नफी २६:२१, वर्जित, २ नफी २६:३२
—दैत्य, इलामन १३:३७
—दाऊद इस्राएल का राजा, बुरी बातें, याकूब २:१५ बहु-पत्नित्व घृणित याकूब २:२४, का घराना २ नफी १७:२, १८:१३
—दाऊद का देश, मार २:५
—दाऊद देश, मरो० २:५
—द्वारपाल, इस्राएल का पवित्र प्रभु, २ नफी ९:४१
—दासता, इस्राएल का दासता में से निकलना, १ नफी १७:२४, १९:१० लमनायटियों की दासता में लिमही, मू० ७:१५ अभिनन्दी की भविष्यवाणी में, मू० १२:२ लिमही का मुक्ति के लिए प्रयास मू० २१:३६ अलमा और उसके साथियों की दासता से मुक्ति, मू० २१:१७
—दासता, राजा लिमही का दासता स्वीकार करना मू० ७:१५ आमोन के लोगों की, अलमा २७:८, कानून द्वारा मना अल० २७:९
—दासता, यहूदियों की भविष्यवाणी, १ नफी १:१३, १ नफी १०:३, यहूदियों की २ नफी ६:८ ओम० १५, नफायटियों की, अल० १९:३, १९:१७, इला० ११:३३ पूर्वजो की मू० २७:१६ अल० ५:६ अल० ३०:११, ३६:२, ६०:२०, यारद का भाई राजाओं के विरुद्ध इसी के कारण चेतावनी ए० ६:२३ किब की ए० ७:९ शूले की ए० ७:१७ ओमर की ए० ८:४ किम की ए० १०:१४ लिबी की ए० १०:१५ हाथाम की ए० १०:३० हेथ मारोन अमनीगदा और कोरियण्टूमर की ए० १०:३१ सेथ

की ए० ११:१६ मोरन की ए० ११:१८ कोरियण्ठोर की ए० ११:१६

—दिव्य दर्शन, २ नफी २:८, ५:४, ८:२, २ नफी २:४ नफी का २ नफी ११:१ अमूलक का अल० ८:२०, १०:७ आविश का पिता. अल० १६:१६, द्वारा ज्ञान दिया जाना २ नफी ४:२३.

ध

—धर्मनिष्ट शिकायत नहीं करते १ नफी १६:३ परमेश्वर के कृपापात्र १७:३५, भय नहीं, २२:२२ नष्ट नहीं होंगे, २ नफी २६:८

—धरती का कांपना, १ नफी १२:४, इलामन १२:६, ३ नफी ८:१२

—धूल दीनता की, १ नफी २२:१४, २ नफी १:१४, २६:१५, धूल मेंसे अभिलेख बोलेंगे, २ नफी ४:१६, २ नफी २७:६, ३३:१३ मरोनी १०:२७, से मनुष्य को रचा गया, मू० २:२५

—धातु औजारों के लिए २ नफी १७:६, प्रतिज्ञा के देश में, १८:२५, नफी द्वारा धातु की पटियां बनाना, १६:१, मूल्यवान २ नफी ५:१५ या० २:१२ बहुमूल्य धातु की पटियों पर अभिलेख मू० २१:२७ कारीगरी, इलामन ६:११ यारदाइयों द्वारा रखना और उपयोग, ए० ११:२३

—धार्मिकता, धार्मिकता के कारण परमेश्वर इस्राएल से मिलेगा, १ नफी १६:११ परमेश्वर के तरीके, २ नफी १:१६ पूरी जानकारी ६:१४

न

—नए यरूशलेम की स्थापना होगी, ३ नफी २०:२२, २१:२३, स्वर्ग से नीचे आएगा, एथर १३:३

—नगर, नष्ट होना, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी १२:४, प्रथम अधिकारियों के नाम पर अल० ८:७, किलाबन्दी, अल० ५०:१, नफायटियों द्वारा अनेक नगर बसाए गए, ५०:१५, लमनायटियों द्वारा विजय ५१:२६, फिर से बसाया जाना और सुधार, ३ नफी ६:७ मसीह के क्रूश पर चढ़ाए जाने के समय नष्ट, ३ नफी ८:८, ६:३, ४ नफी ६ कोरियण्टूम द्वारा कई बसाए गए, ए० ६:२३

—नफायटी, वे सभी जो लमनायटी नहीं, याकूब १:१३, बसाया द्वारा लमनायटियों से भी अधिक दुष्ट ठहराया जाना, २:३५, इनके अभिलेख को सुरक्षित रखने की इनोस द्वारा प्रार्थना, इनो० १३ विश्वासियों की संज्ञा, अल० ३:११, जारसन में सेनाओं का एकत्रित होना, ४३:४, स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष, ४३:६, शक्ति के लिए नहीं परन्तु अपने घरों और प्रार्थना के अधिकार के लिए युद्ध, ४३:४५, आत्मरक्षा के लिए रक्तपात तक करने की शिक्षा, ४८:१४, ४३:४६ अमोनिहा की किलाबन्दी ४६:४, नूह की किलाबन्दी ४६:१३, नूह पर आक्रमण ४६:२१, हागूथ की नाव द्वारा अनेकों की यात्रा, ६३:६, पश्चात्ताप, इला० ४:२५ लमनायटियों का भय, ४:२०, नियमों का भ्रष्ट करना ४:२२, पश्चात्तापहीन, इला० ६:११; लमनायटियों ने मत परिवर्तन करवाया, ६:५; लमनायटियों की मित्रता ६:६ प्रभु ने कहा कि बिना पश्चात्ताप किए कल्याण नहीं, १५:१७, अविश्वासी और कठोर, ३ नफी २:१, सभी मत परिवर्तन किए, ३ नफी ५:१, लमनायटियों का मत परिवर्तन, ४ नफी २ अपने मकानों को वापस, ३ नफी ६:१, गेडियन्दन डाकुओं पर विजय कर शान्ति, ३ नफी ६:३, विग्रह और विभाजन, ७:२ धार्मिकता के समय प्रगति, ४ नफी ७; श्वेत और सुन्दर, १०; दलबन्दी, ४ नफी ३६, अहंकारी निरर्थक, ४६, एक जाति के रूप में लमनायटियों द्वारा नाश किया जाना, मार० ६:१०, ८:२ जो मसीह को अस्वीकार नहीं करते उनका मारा जाना, मरो० १:२, पतित, लालची और नर मास भक्षी, मरो० ६:६, असभ्य ६:११

—नफायटी पैसे, अल० ११:४

—नफायटियों के नाश की भविष्यवाणी, २ नफी २६:६ इनो० २३, मसीह की मृत्यु के समय, ३ नफी ८:५, दुष्टता के कारण, ६:१२, ११:१४, मरोनी के लोगों का, मार० ८:३ यारदाइयों का, ए० ७:२३, ११:१, १३:१, १४, गुप्त दलों द्वारा, ए० ८:२१

—नफायटियों की चरित्रहीनता, मरो० ६:१८

—नफी के लोगों को डाकुओं द्वारा घेरा जाना, ३ नफी ४:१६, जंगल में कोरियण्टूमर द्वारा घेरा, एथर १४:५

—नफी नगर की नीरवता, जराहेमला आदि की, देखिए

—नफी नगर, जराहेमला की नीरवता आदि

—नफी की पहिली पुस्तक पृ० १

—नफी की तीसरी पुस्तक

—नफी की चौथी पुस्तक

—नफी, लेही का पुत्र, जन्म और शिक्षा, १ नफी १, अभिलेख का लिखना, १:२, २:१७, स्वभाव, २:१६ प्रतिज्ञा के देश की ओर २:२०, शासक २:२२, उसका विश्वास ३:१५ लबान से पीतल की पटियों को मांगना, ३:२४, गुफा में भाइयों के साथ छिपना ३:२७, भाइयों द्वारा पीटा जाना, ३:२८, स्वर्गदूत द्वारा सुरक्षा ३:२६ लबान को मारना, १ नफी ४:१८, पटियों का लेना, १ नफी ४:२४, जोराम को साथ लेना ४:२४, उसका इस्माइल मय परिवार के लिए यरूशलेम लौटना, १ नफी अध्याय ११, ८:२ बन्धनों से बांधा जाना, ७:१६, १८:११, दिव्य दर्शन, ११:१, इस्राएल के घराने को जैतून के वृक्ष से उपमा १५:१२, विवाह, १६:७, धनुष का टूटना १ नफी १६:१८, नाव बनाने की आज्ञा, १७:१८, १८:४; परमेश्वर की शक्ति से परिपूर्ण, १७:५२, भाइयों को झटका लगना, १७:५३, पिता के साथ सागर का पार करना १८:६, प्रतिज्ञा के देश में १८:२३, उसका पटियों का बनाना.

१६:१ मसीह के विषय में उसका बोलना, २२:२१, २ नफी १:१०, २५:२३, २६:१ लमान और लेमुएल से अनेक लोगों के साथ उसका भागना, ५:७ शासक बनना और राजा कहाया जाना, ५:१८ यशायाह की भविष्यवाणी पर भाष्य, २५:१, अन्तिम दिनों पर भविष्यवाणी २७:१, मृत्यु, याकूब १:१२

—नफी इलामन का पुत्र, इला० ३:२१, प्रधान निर्णायक ४:३७, पदत्याग ५:१, भाई लेही के साथ प्रचार, ५:१४, लमनायटियों में ५:१८; नफी के देश में ५:२०, लेही के साथ बन्दी, इला० ५:२१ कारागार का हिलना, ५:२७, ३१; अग्नि से घिरा हुआ, ५:२३, नफी और लेही का स्वर्गदूतों से बातचीत, ५:३६, ३६, अन्धकार के बादल में ५:२८, ३४, ४०, उत्पतियों से पश्चात्ताप करने को कहा जाना, ५:३८, लेही और नफी के सताने वालों से आकाशवाणी द्वारा झिड़की, ५:२६ लेही और नफी के चेहरों की आभा, ५:३६ बहुतों का मत परिवर्तन, ५:५०, उत्तर के देश की ओर, ६:६ जराहेमला वापस लौटना, इला० ७:१ गेडियन्दन दल पर शोक, ७:४ लेही के काल में जन्म न लेने पर दुःख ७:७, भविष्यवाणियां ७:२ बगीचे के मीनार पर प्रार्थना ७:१०, मीनार पर से लोगों को शिक्षा देना, ७:१२, बिना पश्चात्ताप किए विपत्ति से छुटकारा नहीं, ७:१६ विरोध, ८:५ निर्णायक की हत्या का भेद खोलना, ८:२७, हत्यारे का नाम बताना, ६:२६, स्वर्ग से वाणी का सुनना, १०:३, महान शक्ति का पाना. १०:७, उत्पातियों से पवित्रात्मा द्वारा रक्षा, १०:१६, अकाल, ११:४, वर्षा के लिए प्रार्थना, ११:१०, १७; अज्ञात होना, ३ नफी १:३, २:६

—नफी इलामन का पितामह, ३ नफी १:२ उसका पटियों का लेना, १:२, प्रभु के जन्म का संकेत, १:१३, प्रतिदिन स्वर्गदूत का उससे मिलना, ३ नफी ७:१८, बुरी आत्माओं को निकालना, ७:१६ मृतभाई को जीवित करना, ७:१६, कई चमत्कार दिखाना, ७:२०, मसीह द्वारा भीड़ में से उसे बुलाना, ३ नफी ११:१८, ग्यारह दूसरों के साथ बपतिस्मा देने का अधिकार प्राप्त करना, ११:२२, बपतिस्मा ग्रहण करना, १६:११, अपने साथियों को बपतिस्मा देना, १६:१२ बारह में से प्रमुख, १६:४

—नफी, शिष्य नफी का पुत्र, ४ नफी अपने समय का इतिहासकार, ४ नफी मृत्यु ४ नफी १६

—नफी नगर, २ नफी ५:८ नफायटियों का यहां शरण लेना मूसायाह ६:१५, लिमही और उसके लोगों का यहां वापस आना, २१:१, लमनायटियों का प्रवेश, अल० २३:११, नफी देश का मुख्य नगर, ४७:२० अमलकियाह के अधिकार में ४७:३१

—नफी का देश, नफी के नाम पर, २ नफी ५:८, प्रभु की आज्ञानुसार प्रथम मूसायाह का वहां से भागना, ओमनी १२, आमोन और उसके भाइयों का वहां जाना, मू० ७:६, यहां का राजा लिमही ७:६, जनीफ का ज्ञान, ६:१, नूह के लोगों को लमनायटियों द्वारा वापस ले जाना १६:१५, अमूलन और लमनायटियों द्वारा इस देश की खोज, २३:३५, मूसायाह के लड़कों द्वारा प्रचार के लिए यहां जाना २६:३, अमलकायटियों का लमनायटियों के साथ होना, अल० २:२४, राजा लमोनी का आमोन को साथ ले जाने की इच्छा २०:१ आरुन को पवित्रात्मा द्वारा यहां ले जाया जाना, २२:१ लगभग पानी से घिरा हुआ, २२:३२ मूसायाह के लड़कों का आप बीती बतलाना, २७:२० आमोन के लोगों का वहां से लाया जाना, ५३:३, लमनायटियों का भागना, ५८:३८

—नफी की पटियां, देखो पटियां

—नफीहा, अलमा का उत्तराधिकारी प्रधान निर्णायक, अल० ५:१७ मृत्यु ५०:३७

—नफीहा नगर, अल० ५०:१४, नफायटियों का भाग कर यहां प्राण रक्षा करना, ५१:२४ अमलकियाह द्वारा विजय ५१:२६, लमनायटियों द्वारा आक्रमण, ५६:५, मरोनी का पुनः अधिकार में करना, ६२:२६

—नफीहा देश, मरोनी का वहां जाना अल० ६२:१४, मरोनी का नफीहा देश छोड़ना, ६२:३०

—नफीहा मैदान, नफायटियों का डेरा लगाना, अल० ६२:१८

—नाजरथ नगर, नफी ने दिव्य दर्शन में देखा, १ नफी ११:१३

—नाजरथ नगर, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी ११:१३

—नाव, यारद द्वारा, एथर २:६, विवरण २:१६ संख्या, ३:१ संख्या, ३:१, यात्रा, ए० अध्याय ६, ६:४ वायु द्वारा नावों का बढ़ना ए० ६:५

—नाव, नफी को नाव बनाने की आज्ञा, १ नफी १७:८, लेही और उसके साथियों की नाव में यात्रा, १ नफी १८:८, हागोथ द्वारा बनाई गई नाव जिन्हें खोया गया समझना, अल०, ६३:५

—नास्तिकों का स्मरण, २ नफी २७:३३, से प्रतिशोध, ३ नफी २१:१२

—नाहूम, एक भविष्यवकता जिसने मसीह के क्रुश पर चढ़ाए जाने की भविष्यवाणी की १ : नफी १६:१०

—नाहोम, अरब में वह स्थान है जहां पर इसमाइल को दफनाया गया १ नफी १६:३४

—निर्णायक, अलमा प्रथम प्रधान, अल० २६:४२ नफीह द्वित्य प्रधान, ४:१६ निहोर के अनुरूप अमोनिहा का, १४:१६, अलमा और अमूलक को मारना, १४:२४, कारागार के दीवाल गिरने से मृत्यु, १४:२७ एण्टी-नफी-लेही के लोगों के विषय की घोषणा २७:२१, नफीह की मृत्यु, अल० ५०:३७, पहोरन की नियुक्ति ५०:३६, पहोरन की मृत्यु, इला० १:२, पहोरन का पुत्र पहोरन नियुक्ति,

इला १:५, किस्कूमन द्वारा पहोरन की हत्या, इला १:६ पाकूमनी प्रधान, १:१३ कोरियण्टूमर द्वारा पाकुमनी का मारा जाना १:२१, इलामन प्रधान, २:२, नफी की नियुक्ति ४:३७, सेजोराम प्रधान, ५:१, सेजोराम का

पुत्र प्रधान, ६:१५, सीजोराम, इला० ६:२३, लक्षोनस प्रधान, ३ नफी १:१ लक्षोनस का पुत्र लक्षोनस, प्रधान, ६:१६
—निर्णायक होने की सम्मति, मूसायाह द्वारा, मू० २६:११ जनमत द्वारा, मू० २६:२५, ३५, इला० १:५, १:१३, २:२ शासन का आरम्भ, अल० ११
—निर्णायक, प्रथम प्रधान निर्णायक अलमा, मू० २६:४२, द्वित्य नफीहा, अल० ५:१६, निहोर के अनुकूल अमोनिहा का, अल० १४:१६ अलमा और, अमूलक पर मार, १४:२४, कारागार के दीवालों से मृत्यु १४:२७, एण्टी-नफी-लेही के विषय में घोषणा, २७:२१, नफीहा की मृत्यु पहोरन का प्रधान होना ५१:३६ पहोरन की मृत्यु, ५०:३७, इला० पहोरन का पुत्र पहोरन १:५, किस्कूमन द्वारा हत्या, इला० १:६, पाकूमनी की नियुक्ति, १:१३, मोरियण्टूमर द्वारा पाकूमनी की हत्या १:२१, इलामन प्रधान, इला० २:२, नफी की नियुक्ति ३:३७ सेजोराम ५:१ सेजोराम का पुत्र प्रधान, ६:१५ सेजोराम प्रधान ६:२३, लक्षोनस का पुत्र लक्षोनस, ३ नफी ६:१६
—निर्दोष का रक्त, अल० १४:११
—निमरा, आकिश का पुत्र, एथर ६:८, अपने पिता के राज्य से भाग कर ओमर का साथ देना ए० ६:६
—निमरोद, कोहर का पुत्र, एथर ७:२२
—निमरोद की घाटी, एथर २:१
—नियम, नफायटी कड़ाई के साथ नियम का पालन करते जराम ५, मूसायाह द्वारा स्थापित, अल० १:१ पापियों से पालन करवाना, १:३२, ११:२, ३०:१०, नफायटियों के पैरों तले इला० ५:२२, भ्रष्ट, ५:२ गेडियन्दन द्वारा शक्ति में आने पर नष्ट, ७:४
—नियम का बिन्दु भी व्यर्थ नहीं, अल० ३२:१३, ३ नफी २:२५
—निराशा, पाप के कारण, अल० २६:१६, मार० ६:२२
—निश्चित दण्ड और आशीर्वाद, २ नफी २:१० अल० ४२:१६
—निहोर, गिरजा के विपरीत घोषणा, अल० १:३, गिडियन से तर्क, १:७, गिडियन का मारा जाना; १:६, अलमा द्वारा अपराधी ठहराया जाना, १:१४, मृत्युदण्ड १:१५ उसी के अनुकूल उसके अनुकरण करने वाले, १४:१६, १८, २५, १६:११, २१:४, २८, २६
—निहोर, यारदाई नगर, ए० ७:६
—निहोर देश, यारदाइयों के अधिकार में, यहां कोरिहर और उसके अनुयाइयों का रहना, ए० ७:४
—निहोर की नीरवता, अल० १६:११
—नीरव नगर, लमनायटियों का आक्रमण, मार, ३:७, लमनायटियों के अधिकार में ४:२, १३, नफायटियों का पुनः अधिकार ४:८
—नीरव (निर्जन) देश, अल० २२:३० सम्पन्न देश के निकट २२:३२ लोगों का एकत्रित होना, मार० ३:५, मारमन के निकट, एथर ७:६
—नीयस, एक प्रकार का अनाज, मू० ६:६
—नूह, जनीफ का पुत्र मू० ७:६, राजा बनना, मू० ११:१, इसके द्वारा मकानों का बनवाना, ११:८, मदकची ११:१५, परमेश्वर की वाणी के प्रति हृदय को कठोर बनाना, ११:२६, अभिनन्दी को बन्दी बनाना, १२:१७, अभिनन्दी की हत्या का आदेश, १३:१, १७:१, अलमा पर आरोप, १६:३३ गिडियन द्वारा जीवन दान, १६:८ लमनायटियों से रक्षा के लिए अपने आदमियों के साथ उसका भागना, १६:६ स्त्री बच्चों को छोड़ कर भागने की आज्ञा १६:११, जला कर मारा जाना, १६:२०, इसके पुरोहितों द्वारा लमनायटी कन्याओं का हरण, २०:३
—नूह, एक यारदाई, कोरिहर का पुत्र, एथर० ७:१४, १५; शूले पकड़ना ७:१७, मारा जाना, ७:१८
नूह, बुजुर्ग, इसके काल में बाढ़, अल० १०:२२, ३ नफी २२:६ यारदाई नौकायें इसके नाव की तरह दृढ़, एथर ६:७
—नूह देश और नगर, अल० १६:१२, किलाबन्दी ४६:१३, लेही के अधिकार में, ४६:१७
—नृत्य, लेही की नाव में १ नफी १८:६, लमनायटी लड़कियों का, मू० २०:१, उस यारद की कन्या द्वारा जो गद्दी से उतारा गया, ए० ८:११
—न्याय, परमेश्वर का, १ नफी १२:५, २ नफी १:१०, ६:१५, २५:३, अल० १२:१५, १४:११, १ नफी १६:३५, २ नफी ६:१७, २ नफी ६:२६, ४६, मू० ३:३८, अल० ४२:१, अस्वीकार नहीं किया जा सकता, या० ६:१०, नष्ट नहीं किया जा सकता, अल० १३:३२, ४२:१३, दया न्याय को नष्ट नहीं करता, ४२:२५
—न्याय, कर्म के लिए, १ नफी ११:२०, या० १:१५, धर्मानुसार १ नफी २२:२१, प्रथम न्याय, २ नफी ६:७, मृत्यु होने पर, अल० १२:२७, हत्यारे, खतरे में, ३ नफी १२:२१, पुस्तकों के अनुसार २७:२५, दुष्टों के विरुद्ध परमेश्वर का, ए० ११:२०, परमेश्वर से मरोनी की न्याय के लिए प्रार्थना, मरो० ६:१५

प

—पगाग, यारद के भाई का प्रथम जन्मा पुत्र, ए० ७:२५
—पचास, लबान के १ नफी ३:३१, ४:१, के नायक, २ नफी १३:३ जराहेमला के सभी मारे गए केवल ५० बचे, ओमनी २८, लोगों पर एक पुरोहित, मू० १८:१८, नूह नगर पर आक्रमण के समय नफायटी घायल, अल० ५०:२४
—पटियों की लिपि, लिखने में कठिनाई, या० ४:१, १ नफी ४:२४, ६:११, २ नफी ५:३२, मू० ८:६ पत्थर पर खोदित, ओमनी २०, अक्षर, मार० ६:३२
—पटियां, पीतल की, इतिहास, वंशावली और शास्त्र की बातें अंतिम, १ नफी ३:३, २४:, ४:२४, १३:२३, ओमनी १४, ३ नफी ११:१७, मूसा की पांच पुस्तकें, १ नफी ५:११, यूसुफ की भविष्यवाणियां २ नफी ४:२, ४:१५, लमान से अलग होने पर पटियां नफी के पास, २ नफी ५:१२, इनके विषय में

बिन्यामीन के पुत्रों की शिक्षा, मू० १:३, अलमा को दिया जाना २८:२०, वंशावली पर शास्त्र की बातें, अल० ३७:३, इलामन के पोता नफी को दिया जाना, ३ नफी १:२
—पटियां नफी की, दो तरह की, १ नफी ९:२, ४, २ नफी ६:३० धातु की, १ नफी १९:१, मारमन का संक्षिप्त करना, मा० वा० २, राजा बिन्यामीन का कहना कि अभिलेख ठीक है, मू० १:६, मूसायाह के पास, १:१६, मसीह की शिक्षा पटियों पर, ३ नफी २६:७ पटियों को लेने का अमरोन द्वारा मारमन को आदेश मार० १:४, कुमोरह के पर्वत पर छुपाया जाना ६:६
—पटियां बड़ी, जिन्हें दूसरी पटियां और नफी की दूसरी पटियां भी कहा गया, इतिहास विषयक, १ नफी ९:४, १९:४, २ नफी ४:१४, २ नफी ५:२९, ३३, या० १:३, ३:१३, ७:२६, छोटी पटियों के साथ चेमिश को दिया जाना, ओ० ८ इनकी सहायता से मारमन का अपने अभिलेख को पूरा करना, मा० वा० ४, ९, इलामन को इन पर अभिलेख रखने की आज्ञा, अल० ३७:२, नफी इलामन का पोता इनसे अपना अभिलेख बनाता है ३ नफी ५:१०
—पटियां, छोटी, इन पटियों का पवित्र या नीतिवचन के इतिहास, १ नफी ९:४, १०:१, १९:१, ३, २ नफी ५:४, ६:३०, या० १:१, ३:१३ इनो० २७, जराम २, १४, ओमनी १, २२, मा० वा० ३, एक भाग याकूब की पटियां कहाना, या० ४:१४, पूर्ण, ओम० ३०, मारमन का अपने अभिलेखों में और जोड़ना, मा० वा० ६
—पटियां सोने की २४, यारदाइयों का अभिलेख, लिमही के खोजियों द्वारा लाया गया, मू० ८:९, २२:२७, मूसायाह द्वारा लिया जाना, मू० २२:१४, इनके विषय में इलामन से अलमा की बातचीत, अल० ३७:२१, इनमें से मरोनी का एथर का विवरण प्राप्त करना, ए० १:२ यारद के भाई का विवरण, एथर ३:२१, मसीह तक भेद न खोला जाए, ए० ४:१ किसको दिखाना चाहिए, ए० ५:२
—पटियों का समय के साथ धूमिल न होना, १ नफी ५:१९, अल० ३७:५
—पड़की के रूप में पवित्रात्मा का मसीह के ऊपर आना, १ नफी ११:२७, २ नफी ३१:८.
—पड़ाव, अमलकायटियों के पड़ाव पर नजर, अल० २:२२
—पड़ोसी, के साथ अनुचित व्यवहार मत करो, २ नफी २८:८, मू० ६:१४, के विरुद्ध झूठी गवाही, १३:२३ पड़ोसी की सम्पत्ति मत हड़पो, मू० १३:२४, पड़ोसी से प्रेम, मू० २३:१५, ३ नफी १३:४३
—पत्थर, यहूदी अस्वीकार करेंगे, या० ४:१५, मूसायाह के पास खुदी लिपि का पत्थर लाना, ओमनी २०, गाजीलम के लिए प्रभु द्वारा तैयारी किया जाना, अल० ३७:२३
—पत्थर, लेही द्वारा पत्थरों से वेदी बनाना, १ नफी २-७, नफी का पत्थरों से आग जलाना १ नफी १७:११, दो पत्थरों की सहायता से मूसायाह का अनुवाद करना, मू० २८:१३, यारद के भाई का १६ पत्थरों को तैयार करना, ए० ३:१, प्रभु द्वारा यारद के भाई को दो पत्थरों का दिया जाना, ए० ३:२३
—पत्नियां, अधर्मी बहुपत्नी के पक्ष में, या० १:१५, दाऊद और सुलेमान की अनेक पत्नियां, या० २:२४, पतियों की दुष्टता से पत्नियों को कष्ट, या० २:३५, जो पुरुष अपनी पत्नियों से प्रेम करते हैं, ३ नफी बड़ाई, या० ३:७
—पथ, सीधा, सीधा और सकरा, १ नफी ८:२०, २ नफी ३१:९, १९
—परमानन्द, मसीह द्वारा नफायटियों को दिया जाना, ३ नफी १२:३
—परम्परा, नगर के नाम रखने में अल० ८:७, परदेशियों को बन्दी बनाने की, अल० १७:२०, नेतागिरी के लिए, अल० ४७:१७, योग्य नेताओं की नियुक्ति ३ नफी ३:१९
—परमेश्वर के प्रेम की भुजा, २ नफी १:१५
—परमेश्वर की ओर से अधिकार, की कमी के कारण बपतिस्मा का अस्वीकार किया जाना, मू० २२:३३, के द्वारा मूसायाह के पुत्रों की शिक्षा, अल० १७:३
—परमेश्वर की निन्दा करने वाले, सीरम इंजील का ढोंग बताता है, या० ७:७ अलमा के सामने कोरिहर, अल० ३०:३०
—परमेश्वर से जन्म, मूसायाह २७:२५, २८, अल० ५:१४, २२:१५, ३६:५, २३, ३८:६
—परमेश्वर की गिरजा, १ नफी १४:१०, और बाड़ा, २ नफी ९:२, बपतिस्मा के द्वारा प्रवेश, अल० ४:४, ३ नफी २७:२१, अहंकार का प्रवेश अल० ४:६, लोगों का दुष्ट होना, ५:११, अन्य जातियों में, ३ नफी २१:२२, मसीह के नाम पर, ३ नफी २७:८, शिष्यों के द्वारा संगठित, ४ नफी १, नियमित सम्मेलन, मार० ६:५
—परमेश्वर की अप्रसन्नता, २ नफी १ २१, मू० १:१७
—परमेश्वर, प्रेम का, १ नफी ११:२२, का न्याय, १२:१८, क्रूश पर चढ़ने के लिए १९:१०, अन्य जातियों में आश्चर्यमय काम, १ नफी २२:८, महानता, २ नफी २:२, द्वारा आज्ञायें, २ नफी २:२१ पाप घृणामय, या० २:५, पुरोहिती ढोंग वर्जित २ नफी २७:२९, चमत्कारों का, मार० ९:१५, में कोई परिवर्तन नहीं, मार० ८:१८
—परमेश्वर की पवित्रता, मसीह की पवित्रता, २ नफी २:१०, ९:२०, ३ नफी २६:५, मार० ९:५
—परमेश्वर के पवित्र पद के अनुसार, याकूब की नियुक्ति, २ नफी ६:२ अलमा के लिए, अल० ६:८ पुरोहितों की नियुक्ति १३:१, लोगों को चलना चाहिए, ७:२२, के अनुसार उच्च पुरोहितों की नियुक्ति १३:८, पुरोहिती पद भी देखो
—परमेश्वर ईर्षावान,, मू० ११:२२, अल० १३:१३
—परमेश्वर का मेमना, देखो मसीह
—परमेश्वर को धन्यवाद दिया जाना, अल० ८:२३, ३७:३७, ३ नफी १०:१०
—परमेश्वर के सिंहासन के सामने सबको खड़ा होना होगा,

२ नफी २६:२३, या० ३:८, ३ नफी २४:८

—परमेश्वर का क्रोध, ३ इला० २१:२१, मार० ३:१५, मार० ८:२०, संतों का रक्त, बदला लेने की पुकार, अल० १:१३ ए० २२:२४, के क्रोध की तलवार ८:४१

—परम्परा, नफायटियों की परम्परा को नष्ट करने की लमनायटियों द्वारा प्रतिज्ञा, इनो० १४ लमनायटियों की भूल मू० ५ लमनायटियों की नीचता अल० १७:६, मसीह विरोधी कोरिहर का भविष्यवाणियों को बेवकूफी कहना, अल० ३०:१४, लमनायटी दुष्ट और घृणित, इला० १५:७

—परोपकार या दान, सभी लोगों द्वारा, २ नफी २७:३०, नफी द्वारा यहूदियों और उसके अपने लोगों के लिए या० १:७, ८, ६, विश्वास आशा और अल० ८:२४, १४:२६, ए० १२:२८, बिना इसके मनुष्य स्वर्ग का राज्य पा नहीं सकता १२:३४, विश्वास, आशा और परोपकार पर मारमन, मार० ७:१

—परिवारों की रक्षा अल० ४३:४७, प्रार्थना में, ३ नफी १८:२१

—परिवर्तन, पश्चात्ताप से, मू० ५:२, ५:१२, १३, १४, इला० १५:७, तीन नफायटी शिष्यों के शरीरों पर, ३ नफी २८:३६, राजा के लोगों द्वारा नियमों में परिवर्तन करने की इच्छा करना, अल० ५१:२

—परिश्रम, मू० ४:२७, आज्ञाओं का पालन करने में, अल० ७:२३

—परीक्षाकाल, मानवजीवन, २ नफी २:२१, २ नफी ६:२७ अल० १२:२४, ४२, समाप्ती तक २ नफी ३३:६ के दिन बीते, कष्टों का अंत, इला० १३:३८

—पवित्र आत्मा, मसीह गैरयहूदियों में प्रकट होगा, १ नफी १०:११, २ नफी २६:१३, मसीह पर आश्रित हो नफी ने देखा १ नफी ११:२७, नफी ने बारह शिष्यों पर देखा १ नफी १२:७, मसीह के लिए साक्षी, १ नफी १२:१८, ३ नफी १८:११, अस्वीकार किया जाना, २ नफी २८:२६, अल० ३६:६, बपतिस्मा के पश्चात् दिया जाना, ३१:१२, ३ नफी १२:३७, की देन, २ नफी ३२:२, मरो० १०:५, की शक्ति से मरियम को गर्भ, अल० ७:१०, द्वारा शुद्धि, १३:१२, नफी और लेही का पवित्रात्मा से भर उठना, इला० ६:४५, बारह शिष्यों को देने का अधिकार, ३ नफी १८:३७, शिष्यों को प्राप्त, १६:१३, १६:१३, १६:२०, दूसरी जातियों में, २०:२७, सभी बातों में सत्य प्रकट करता है। मरो० १०:५

—पवित्र वेदि, जोरमायटियों के, अल० ३१:२१

—पवित्र चीजें, अभिलेख अनुवादक पत्थर आदि का कहना, १ नफी १६:५, या० १:४, अल० ३७:१४, ३७:४७, ५०:३८, ६३:१, ३ नफी १:२, ४ नफी ४८, मार० ६:६

—पश्चात्ताप, राह तैयार करने का, मार० ८:१८, अन्य जातियों के लिए, १ नफी १४:५, २ नफी ६:१२, ३०:२ लमान और लेमुएल का अस्थिर, १ नफी १६:२०, करने को मनुष्यों की पुकार २ नफी २:२१, ६:२३, २६:२७, मू० ४:१०, अल० ६:१२, २ नफी १२:३२, मरो० ७:३२, ८:८, और बपतिस्मा २ नफी ३१:११, अल० ५:४६ पश्चात्ताप के बिना दण्ड, मू० ३:३८, इला० १५:१ का फल, मू० ३:१२, मू० २६:२६, इला० १५:२२ स्वर्ग से पुकार, इला० ५:२६

—पश्चात्तापी को आशीर्वाद, अल० २६:२१, २७:१८, ४३:२३, २४

—पशु, प्रतिज्ञा के देश में, १ नफी १८:२५, नफायटियों का पशुपालन २ नफी ५:११ हिंसक पालतू के समान २ नफी ३१:१२, यात्रा में यारदाई साथ ले गए, ए० ६:४, यारदाई पशुपालन, ए० ६:१८

—पशु, नफी द्वारा भोजन के लिए शिकार, १ नफी १६:३१, प्रतिज्ञा के देश में १८:२५, परमेश्वर द्वारा रचित, २ नफी २:१५ इनोस द्वारा शिकार, इनोस ३, लमनायटियों का पशुओं का रक्त पीना, जराम ६, मारमन में, मू० १८:४ हिरमन्त में, अल० २:३७, लाशों के बीच, १६:१०,

—पशु, नफायटियों द्वारा पशुपालन, इनोस के समय में, इनोस २१, जिस प्रकार गड़रिए से दूर भागना, मू० ८:२१, लमनायटियों द्वारा नफायटियों के पशुओं को लेने की इच्छा ६:१२, लमनायटियों से बचाने की चेष्टा, मू० १०:२, जिस तरह हिंसक पशुओं द्वारा खदेड़े जाते हैं, मू० १८:१७, भेडियों से भेड़ों की रक्षा गड़रिया करता है, अल० ५:५६, आमोन द्वारा बचाने की चेष्टा, मू० १०:२, जिस तरह हिंसक पशुओं द्वारा खदेड़े जाते हैं, मू० १८:१७, भेड़ियों से भेड़ों की रक्षा गड़रिया करता है, अल० ५:५६, आमोन द्वारा लमोनी के पशुओं की रक्षा, १७:२५, १८:२, डाकुओं से रक्षा, ३ नफी ४:४, यारद के भाई के, ए० १:४१, यारदाइयों के पास अधिक, ए० १०:१२

—पशुओं के झुण्ड, नफायटियों के, २ नफी ५:११, जराम २१, अल० १:२६, जनीफ के लोगों का कर रूप में आधा पशु-पक्षियों को देना, मू० ७:२२, यारदाइयों के ए० ५:४, ए० १०:१२

—पहोरन, नफीहा का पुत्र, अल० ५०:३६, लोगों में विग्रह ५१:२, उसका नियमों में परिवर्तन करने का विरोध, ५१:३, उसके विरोधियों का राजा के लोग कहाना ५१:५, उसके पक्ष वालों का स्वतन्त्र लोग कहाना, ५१:६, मरोनी को पत्र लिखना ६१:६, मरोनी का उसके साथ मिलना ६२:६, वापस न्याय आसन पर ६२:४४, मृत्यु इला० १:२

—पहोरन का पुत्र पहोरन, न्यायासन के लिए संघर्ष, इला० १:३, प्रधान निर्णायक के बाद पद पर, इला० १:३, प्रधान निर्णायक के पद पर, इला० १:५ किस्कूमन द्वारा हत्या, इला० १:६

—पत्र व्यवहार, लमनायटियों और नफायटियों में, अल० २३:१८, २४:८

—पत्र अमरोन के पास मरोनी का, अल० ५४:४, अमरोन का ५४:१५, इलामन का मरोनी को, ५६:१, अमरोन का

इलामन को, ५७:१, इलामन का अमरोन को ५७:२, मरोनी का पहोर को ६०:३, पहोरन का मरोनी को ६१:१, गिडियानी का लक्षोनस को, ३ नफी ३:१, लमनायटी राजा का मारमन को, मार० ३:४, मारमन का लमनायटी राजा को, मार० ६:२, कोरियण्टूमर का सेज को, ए० १५:४, १८, सेज का कोरियण्टूमर को १५:५, मारमन का मरोनी को, मार० ८:१, ९:१
—पाकूमनी, पहोरन का पुत्र, न्यायआसन के लिए संघर्ष, इला० ३ बहुमत के आगे झुकना, १:६, प्रधान निर्णायक और शासक इला० १:१३, कोरियण्टूमर द्वारा मारा जाना, इला० १:२१
—पागल, अभिनन्दी की बातों से उसे पागल समझा जाना, मू० १३:१, ४
—पादरी, या प्रमुख, यहूदियों के, १ नफी ४:२२, गिरजा के, अल० ४:७, नियुक्त, अल० ६:१, शिष्यों का कहाना, मरो० ३:१ बपतिस्मा दिया जाना, मरो० ६:१, पापों पर निर्णय, मरो० ७:७
—पादरी, यहूदियों को १ नफी ४:२२, गिरजा के अल० ४:७, नियुक्त, ६:१, शिष्य, मरोनी अध्याय ३, बपतिस्मा मरो० अध्याय ६:१, पापों के निर्णय, मरो० ६:७
—पाञ्ची; पहोरन का पुत्र, न्याय आसन के लिए संघर्ष इला० १:३, प्राण दण्ड १:८
—पांचू, विद्रोही नफायटियों का राजा, अल० ६२:६, मारा जाना ६२:८
—पाप, के कारण मसीह का कष्ट सहना, मू० १३:२८, १४:५, ६, अध्याय १५, पाप शीघ्र, मू० १३:२९, अल० ४६:८, इला० १२:४ कड़वाहट के प्याले और बन्धन में मू० २७:२९, अल० ४१:११, मार० ८:३१, मरो० ८:१४
—पाप, के लिए प्रभु कोई छूट नहीं देता, अल०४५:१६, क्षमा के लायक नहीं, या० ७:१९, अल० ३९:६
—पाप के विरुद्ध चेतावनी, २ नफी ९:३८, ४५, के लिए क्षमा, २ नफी २६:२६, इनो० २, जगत के पापों के लिए प्रभु का मेमना, अल० ७:१४, यीशु मसीह मारा गया, ३ नफी ११:१४
—पाप के धब्बे का उदाहरण, अल० ५:२१, २४:१२
—पाप वृति वालों को अपराधी ठहराना, अल० ५:३७
—पाप की जंजीर, २ नफी १:१३, २ नफी ९:४५, अधोलोक की, अल० ५:७, अल० १२:११, १३:३०, २६:१४
—पापों की क्षमा, अल० ७:६, पश्चात्ताप से अल० १२:३४, १३:१६, के लिए बपतिस्मा, मार० ८:११
—पात्र, भीतर साफ करना चाहिए, अल० ६०:२३, २४, कुमारी बहुमूल्य और चुनी हुई, अल० ७:१०, प्रभु के उपदेशकों को चुने हुए पात्र कहाना, मरो० ७:३१
—पात्र, प्रभु के पात्रों को ढोने वालों को शुद्ध रहना चाहिए ३ नफी २०:४१
—पिता का मकान, जराम २७: ए० १२:३२, ३४:३७
—पीढ़ी मसीह के जन्म से चौथी पीढ़ी, १ नफी १२:१२, २ नफी २६:२९, अल० ४५:१२, इला० १३:१०, ३ नफी २७:३२, पिताओं के किए पाप तीसरी और चौथी पीढ़ी, मू० १३:१३, दुष्ट और हठी, अल० ९:८, १०:१७, ११:२५, इला० १३:२९
—पीढ़ियां मसीह के समय से तीन पीढ़ियां धर्मनिष्ठ, १ नफी १२:११, २ नफी २६:९, भविष्य के लिए भविष्यवाणियां, २ नफी ४:२, ९:५३, अल० ३७:१४, ३ नफी २६:२
—पीतल का गेंद, देखो लिया होना
—पीतल की पटियां, लबान के अधिकार में, १ नफी ३:३, २४ नफी के अधिकार में, ४:३८ लेही की भविष्यवाणी ५:१८, १९, के विषय में ५:११, जराहेमला के लोगों का पटियों के लिए आनन्द, ओमनी १४, अलमा द्वारा विवरण, अल० ३७:३
—पुकार, पुरोहितों और मुख्य पुरोहितों की, अल० १३:३, ८, एक पवित्र, १३:४, ३०:१३
—पुनर्जीवन, पतन के अनुसार आवश्यक, १ नफी ९:६, सब के लिए, २ नफी ९:२२, अल० ११:४१, ३ नफी २६:४, की शक्ति, २ नफी ११:२५, या० ४:११, ६:९, मरो० ७:४१, विश्व के लिए मसीह का, अल० ३३:२२, इला० १४:१५, मार० ७:६, मरे हुए लोगों के लिए, मू० १३:३५, १५:२०, प्रथम, मू० १५:२१, १८:९, अल० १४:१७, अर्थ, अल० १२:८, ४०:१८, आरून का उपदेश, अल० २९:९, मृत्यु और पुनर्जीवन के बीच का समय, अल० ४०:२१, मसीह द्वारा लोगों का उद्धार, मू० १६:७ इला० १४:१७ अनेक सन्तों का, इला० १५:२५, ३ नफ़ी २३:९
—पुनर्स्थापना, इस्राएल की, २ नफी ३०:५, ८ इस्राएल की स्थापना के आरम्भ के संकेत, ३ नफी २९:१, व्यवस्था-नुसार सभी बातों का न्याय के अनुकूल, अल० ४१:२
—पुरोहितीपन, परमेश्वर का पवित्र पद, अल० १३:१८, अल० ४३:२, इला० ८:१८.
—पुरोहित, याकूब और यूसुफ की नियुक्ति, २ नफी ५:२६, या० १:१८,मनुष्य के गिरजाओं का आपस में विग्रह, २ नफी २८:४, राजा विन्यामीन नियुक्त करता है, मू० ६:३, नूह की दुष्टता, मू० १९:२३, निर्वाह के लिए परिश्रम, मू० २७:५ अल० १:२६, परमेश्वर द्वारा नियुक्ति, अल० १३:१, अलमा द्वारा नियुक्तियां १६:१३, झूठे भविष्यवक्ता, ४ नफी ३४, नियुक्ति के तरीके, मरो० ३:३
—पुरोहिती ढोंग और पाप, २ नफी १०:५ वर्जित २६:२९ में, अल० १:१२
—पुस्तक, लेही के दिव्य-दर्शन में, १ नफी १:११, यहूदियों का अभिलेख, १३:२३, गैरयहूदियों के लिए बहुमूल्य, १३:२३, घृणित गिरजा द्वारा बहुत से स्पष्ट और मूल्य-वान अंश नष्ट, १३:२६, यूसुफ के वंश वालों के लिए आशीस, २ नफी ४:२३, प्रभु के लिए मुहरबन्द, २ नफी २६:१७, २७:१०, २२, वाणी प्रकट किया जाएगा, २७:६, छतों पर से वाणी, २७:११ तीन गवाह, २७:१२, अन्य गवाह,

२७:१३, पढ़ने के लिए एक विद्वान को दिया जाना, २७:१५, अपढ़ द्वारा पढ़ा जाना, २७:२०, दूसरी जातियों में, ३०:३ जीवन की पुस्तक में धर्मनिष्ठों के नाम अल० ५:५८, विश्वास की परीक्षा ३ नफी २६:६

—पुस्तक, पीतल की पटियों पर मूसा की पांच पुस्तकें, १ नफी ५:११, इस्राएल में १३:३६, भविष्य के लिए मुहरबन्द १४:२६, वाणी के अनुसार निर्णय, २ नफी २६:११, नफायटियों के द्वारा कई पुस्तकें, इला० ३:१५

—पुत्र, धर्मनिष्ट, २ नफी २६:६, ३ नफी २५:२, ए० ६:२२, देखो मसीह

—पूर्णता, इंजील की १ नफी ११:१४, ३ नफी २०:२८, अन्य जातियों की, १ नफी १५:१३, ३ नफी १६:४, परमेश्वर के क्रोध की, १ नफी १७:१५, १ नफी २२:१६, ए० २:११, ए० ६:२०, समय की, २ नफी २:३ २ नफी ११:७, आनन्द की, ३ नफी २७:३०, २८:१०, पाप की ए० २:१०.

—पूर्वज, पोषण करने वाले, २ नफी १०:६, के पाप, मू० १३:१३, लड़कों के लिए रोना, अल० २८:५, पिताओं के हृदयों को पुत्रों की ओर फेरना, ३ नफी २५:६, बच्चों को उनके पिताओं का मास खिलाना, मरो० ६:८

—पूर्वज, लेही के पूर्वजों की वंशावली पीतल की पटियों पर, १ नफी ३:३, अल० ३७:३, का ज्ञान १ नफी १५:१४

—पैर, मसीह के पैरों पर लोगों की आराधना, १ नफी ११:२४, ३ नफी १७:१०, कीलों के चिन्ह ३ नफी ११:१४, पर्वतों पर सुन्दर मू० १५:१५

—पैसे, नफायटियों के, अल० ११:४

—पैसे नफायटियों के, अल० ११:४, के कारण दुष्टों को दण्ड नहीं, गेडियन्दन के शासन के अन्तर्गत, इला० ७:५, पैसों के लिए परिश्रम करने वालों का परिणाम, २ नफी २६:३१, पैसों के लिए पापक्षमा, दुष्ट गिरजा द्वारा, मार०८:३२

—प्रकाश, सारी रात, मसीह के जन्म का संकेत, इला० १४:३, ३ नफी १:८, १:१५, जंगल में प्रभु, १ नफी १७:१३, प्रकाश की अपेक्षा अन्धकार को चुनना, २ नफी २६:१०, पुरोहिती ढोंग २६:२६, यारदाई नावों के लिए चमत्कारी ढंग से प्रकाश, ए० ३:४, ए० ६:२

—प्रकृति का परमेश्वर को कष्ट, १ नफी १६:१२

—प्रगति, गिरजे की, इलामन के समय, इला० ३:२५

—प्रचण्ड तूफान, लेही की यात्रा के समय, १ नफी १८:१३, इस्राएलियों में प्रभु का आना, १ नफी १६:११, अविश्वासियों का नाश होना, २ नफी ६:१५, देशों में, २ नफी २७:२ मसीह की मृत्यु के समय, इला० १४:२३, ३ नफी ८:५

—प्रथम जन्मे, पशु-पक्षियों के बच्चों का बलिदान, मू० २:३

—प्रधान और नेता, लमनायटी परम्परा में, अल० ४७:१७, जातियों के लिए, ३ नफी ७:३, १४

—प्रधान निर्णायक, देखो निर्णायक

—प्रतिज्ञा का देश, चुना हुआ, २:२०, १३:३०, २ नफी १:५, १०:१६, ए० २:७, १०, १२, १५; ए० १३:२, चुना हुआ दर्शी, २ नफी ३:६, चुनी हुई पटियां, मार० वा० ६

—प्रतिज्ञा के देश में तांबा, १ नफी १८:२५, नफी द्वारा प्रयोग, २ नफी ५:१५, बारीक कारीगरी, जराम ८

—प्रतिज्ञा का देश, नफी का आगमन, १ नफी २:२०, ११:१३, लेही का आनन्द ५:५, नफी और उसके भाइयों को प्राप्त, ८:१३, दिव्य दर्शन में नफी का देखना, १२:१, लेही के वंशजों के पास प्रतिज्ञा के देश में अन्य जातियों को ले जाना १३:१३, श्रेष्ठ चुना हुआ, १३:३०, २ नफी १:५, देखो चुना हुआ, लेही और उसके परिवार के देश की ओर, १ नफी १८:२३, उनका वहां पहुंचना १८:२३, लेही के वंशजों की प्रगति, २ नफी १:६ सोना चांदी आदि मूल्यवान धातु, या० २:१२, यारद और उसके साथियों का प्रतिज्ञा के देश की ओर यात्रा, ए० अध्याय ५, यारदाइयों का वहां पहुंचना, ए० ६:१२

—प्रतिज्ञा के देश में घोड़े, १ नफी १८:२५, नफायटियों और लमनायटियों के पास, इनो० २१, अल० १८:६, यारदाइयों के पास ए० ६:१६

—प्रतिज्ञायें, मनुष्यों की रीति के अनुसार, २ नफी १०:२, १०:१७ लमनायटियों के लिए परमेश्वर की, अल० ६:१६, ६:२४, नफी के लोगों के लिए ५०:२१, झूठे वादाओं से आकिश का लोगों के बहकाना ए० ८:१७

—प्रभु, के सामने गैरयहूदियों का विनीत बनना, १ नफी १३:१६, ज्ञान के लिए प्रभु से मांग १५:३, पूर्वजों से शर्तबन्द, २२:६, दूसरी जातियों के शक्तिशाली राष्ट्र २२:७, अपने लोगों के लिए रास्ता तैयार करता है, २२:२०, प्रभु का विधान, २ नफी १:१६, का क्रोध दुष्टों के विरुद्ध २६:६, प्रभु की आत्मा सदैव मनुष्य के लिए उद्योग नहीं करेगी, २६:११, उद्धारक की भूमि, २८:५, अपवित्र मन्दिरों में नहीं, अल० ३५:३६, यारद के भाई से वार्तालाप, ए० २:१४, ३:२०, देखो मसीह

—प्रभु की प्रार्थना, ३ नफी १३:६

—प्रभु दया के साथ लोगों के पास आता है, २ नफी ४:२६, २ नफी १०:५३, जो पश्चात्ताप नहीं करते उनका दया अधिकार नहीं, मू० ३:३६, जो पश्चात्ताप करता है उसका अधिकार है, अल० १३:३४, ३४:१५

—प्रभु का दूत, २ नफी २४:१

—प्रभु की प्रकृति और उपदेश, इनो० १

—प्रभु के बल की भुजा, इनोस १३, या० २:२५, खुली भुजा, मू० १२:२४, १६:३१, ३ नफी २०:३५, दया से फैली भुजा, या० ६:५, ३ नफी ६:१४, देखो परमेश्वर की दया की भुजा

—प्रभु की प्रार्थना, ३ नफी १३:६

—प्रहरी गाएंगे, मू० १२:२२, ३ नफी २०:३२

—प्राचीन इकरारनामा के लोग, २ नफी २६:४, ५

—प्राचीन बुरे शपथ, ए० ६:५

—प्राणी, सभी जीवधारियों के लिए मुक्ति, मू० २८:३, न्याय की मांग, अल० ४२:२२, इंजील सभी प्राणियों के

लिए मार० ९:२२
—प्रार्थना, धर्मनिष्ठों की प्रार्थना से नाश का विलम्ब, आ० १०:२२ अलमा की, ३०:१७ प्रार्थना पर जीनस अल० ३३:३ दया के लिए प्रार्थना करने का उपदेश, अल० ३४:१८, व्यर्थ की ३४:२८, मरो० ७:६ प्रभु की, ३ नफी १३:९ परिवारों में, ३ नफी १८:२१ मसीह के नाम पर, ३ नफी १९:६, मरो० ७:२६, विश्वास पर ३ नफी १९:२२, शिष्यों का संगठित होना और उपवास ३ नफी २७:१ प्रार्थना के लिए गिरजा, मरो० ६:५
—प्रार्थना और उपवास, अलमा के लिए, मू० २७:२२
—प्रार्थना भवन, प्रवेश करने के लिए किसी को रोक नहीं, २ नफी २६:२६, अलमा और अमूलक का प्रचार करना अल० १६:१३ निहोर के अनुसार, अल० २१:४, जोरमायटियों का कंगालों को बाहर निकाल देना, अल० ३२:२, भवनों में ढोंग, ३ नफी १३:५
—प्रायश्चित, अनन्त २ नफी ९:७, २५:१६, न्याय को संतुष्ट करता है, २ नफी ९:२६, बिना इसके मूसा के नियम व्यर्थ, मू० ३:१५, राजा बिन्यामीन के लोगों का प्रायश्चित पर विश्वास, मू० ४:२, आरम्भ से, मू० ४:६, बिना इसके मुक्ति नहीं, ४:८, आरुन द्वारा शिक्षा, अल० २१:९, अलमा द्वारा, अल० ३३:२२, अमूलक द्वारा अल० ३४:९, मरोनी द्वारा, मरो० ८:४१, बिना इसके मुक्ति नहीं, अल० ३४:९, दया और पुनर्जीवन लाया है, अल० ४३:२३, बिना बपतिस्मा लिए बच्चों को मरो० ८:२०
—प्रिय पुत्र, मसीह

फ

—फल, लेही के दिव्य दर्शन में, १ नफी ८:१०, बुरा, या० ५:३५, ६:७, २ नफी १३:१७ वर्जित फल, २ नफी २:१५, मू० ३:२६, अल० १२:२२, अच्छे, या० ५:२६, अल० ५:३६, ३ नफी १४:१७, जंगली, और उत्तम, या० ५:१८, २५, जीवन के वृक्ष का, १ नफी १६:३६, अल० ५:६२, कड़वा, या० ५:५२
—फल पुनर्जीवन का प्रथम, २ नफी २:९, मसीह का, या० ४:११ पश्चात्ताप करने का मरो० ८:२५, परिश्रम का, अल० २६:३१ अल० ४०:२६, अपने फल के कारण मनुष्य की पहिचान, ३ नफी १४:१६
—फुसफुसाहट, धूल में से, नफायटियों को, २, नफी २६:१६

ब

—बकवास, जो गिरजा के सदस्य नहीं उनका, अल० १:३२
—बकरियां, प्रतिज्ञा के देश में, १ नफी १८:२५, इनो० २१
—बगीचा, अदन का, प्रथम पूर्वजों का वहां से खदेड़ा जाना, २ नफी २:१९, अल० ४२:२, नफी के बगीचे में लोगों को उपदेश, इला० ७:१०, ९:८, ११
—बच्चा, नफी के दिव्य दर्शन में कुमारी का, १ नफी ११:२०, छोटे बच्चों द्वारा अगुवाई, २ नफी २१:६, शैतान के बच्चे, अल० ५:३९, अधोलोक के, अल० ११:२३, अल० ५४:११, विनीतता, ३ नफी १२:३७, बुद्धिमान मारमन, मार० १:२, पवित्र, मरो० ८:३
—बच्चे, जैसे मुर्गी, ३ नफी १०:४, ५, ६
—बच्चे, लेही के लोगों के जंगल में जन्मे, १ नफी १७:२०, लेही के, १ नफी १८:७, लेही के वंशजों में से बहुत से नष्ट होंगे और बहुतों का विश्वास में स्थापित होना, २ नफी १०:२, मानव वंश को परमात्मा की वाणी प्राप्त होगी, २नफी २८:२, २८:३०, देखभाल, मू० ४:१४, मसीह के, मू० ५:७, छोटे बच्चों को अनन्त जीवन, मू० १५:२५, ज्ञानियों का मुंह बन्द करेंगे, अल० ३२:२३, मसीह के पास लाए गए, ३ नफी १७:११, मसीह द्वारा आशीर्वाद, ३ नफी १७:२१, स्वर्गदूतों द्वारा शिक्षा, ३ नफी १७:२४, आश्चर्यजनक बातें कहना, ३ नफी २७:१४, मू० ४:२१, बच्चों को बपतिस्मा प्रभु के सामने मजाक करना है, मरो० ८:९, बचाए गए, ८:१२, छोटे बच्चे मसीह में जीवित, मरो० ८:२२,
—बड़े और घृणित गिरजा की नींव १ नफी १३:४, १ नफी १४:९
—बड़े और घृणित गिरजा, देखो शैतान का गिरजा
—बथबारा, भविष्यवक्ता का यहां बपतिस्मा, १ नफी १०:९
—बन्दी, मरोनी के, अदला बदली के लिए, अल० ५२:८, लमनायटी बन्दी विवश हो अपने मृतकों को दफनाते हैं अल० ५३:१, परिश्रम करवाना, अल० ५३:३, अदला बदली करने का प्रस्ताव, अल० ५४:१, मरोनी का बन्दियों को बदलने की शर्तें और अमरोन के अनुचित शर्तें, अल० ५४:११, २०, विद्रोह में २००० से अधिक का मारा जाना, अल० ५७:१४ ज़राहेमला भेजा जाना, अल० ५७:१६, मत परिवर्तन किए बन्दियों को स्वतन्त्र
—बन्धन, नफी का बांधा जाना, १ नफी ७:१६, शैतान का, २ नफी २६:२२, मरोनी द्वारा सीढ़ी बना कर काम में लाना, अल० ६२:२१
—बपतिस्मा, भविष्यवक्ता द्वारा, लेही के कहे अनुसार बथबारा में, १ नफी १०:९, परमेश्वर के मेमने का, आगे से जानना, १ नफी १०:१०, ११:२७, आज्ञा, २ नफी ९:२३, सभी को लेना चाहिए, २ नफी ३१:५, मसीह के लिए क्यों आवश्यक २ नफी ३१:७, बपतिस्मा के पश्चात् पवित्रात्मा २ नफी ३१:१२, आग और पवित्रात्मा से, २ नफी ३१:१३, ३ नफी १२:३५, ३ नफी १२:१, ३ नफी १०:१३, २७:१७, भीतर प्रवेश करने के लिए द्वार, २ नफी ३१:१७, मरो० ६ ४, प्रभु के साथ शर्तबन्द होने की साक्षी, मू० १८:१०, अलमा द्वारा, मू० १८:१३, अल० ८:५, सेजोराम का, अल० १६:१२, सिदोम में, अल० १६:१४, ८००० लमनायटियों का, इला० ५:१९, इलामन के पुत्रों द्वारा उपदेश, इला० ५:१७, बारह शिष्यों

को अधिकार, ३ नफी ११:२२, ३ नफी १२:१, व्यवस्था का विवरण, ३ नफी ११:२५, इलामन के पोता नफी का, ३ नफी १६:११, नफी के द्वारा, ३ नफी १६:१२, मुक्ति के लिए आवश्यक, ३ नफी १२:३३, ए० ४:१८ बारह शिष्यों के द्वारा, ३ नफी २६:१७, पहिले विनीत होना आवश्यक, मरो० ६:२ छोटे बच्चों के लिए उचित नहीं, मरो० ८:६, उनके लिए जो उत्तरदायित्व समझे, मरो० ८:१०

—बबलोन, यहूदी बन्दियों को यहां ले जाया जाना, १ नफी १०:३ ओमनी १५, नष्ट किया जाएगा, २ नफी २५:१५

—बलिदान, पाप के लिए मसीह का, २ नफी २:७, राजा विन्यामीन के लोगों द्वारा जलाए गए, मू० २:३, अपरिमित और असीम, अल० ३४:१०, भग्न हृदय और शोकातुर आत्मा जलाए गए के स्थान पर, ३ नफी ९:२०, लमनायटी मूर्तियों के लिए स्त्रियों और बच्चों का, मरो० ४:१४, २१

—बवण्डर, उपद्रवी लोगों को बवण्डर उड़ा ले जाएगा, २ नफी २६:५ दुष्ट बवण्डर द्वारा उड़ाए जाएंगे, मसीह की मृत्यु के समय, ३ नफी ८:१६

—बहिरा, जो सुनेगा नहीं, २ नफी ९:३१, पुस्तक की वाणी सुनेंगे, २ नफी २७:२९, सुनने को, मू० ३:५, मसीह द्वारा ठीक किया जाना, ३ नफी १७:७, शिष्यों द्वारा ठीक किए गए, ४ नफी ५

—बाढ़, से नफायटियों का नाश नहीं, अल० १०:२२ यारद और उसके लोग बाढ़ से नष्ट नहीं होंगे, ए० ३:२०

—बाड़ा, एक ही बाड़ा और एक ही गड़रिया, २ नफी १:२५, ३ नफी १:१६:३, परमेश्वर का, २ नफी ९:२, अल० २६:४, शैतान का, अल० ५:३९, दूसरी भेंडें, ३ नफी १६:१७, १६:१

—बादल, में दूत का उतरना, मू० २७:११, लमोनी के ऊपर अन्धकार का, अल० १९:६, भीड़ के ऊपर अन्धकार का, इला० ५:२८, मसीह के स्वर्गारोहण के समय भीड़ के ऊपर, ३ नफी १९:३८, प्रभु का बादल में से यारद के भाई से बातें करना, ए० २:४

—बारह निर्णायक निर्णय करेंगे, १ नफी १२:१०

—बाल सैनिक, इलामन के, अल० ५३:२२, ५६:५७

—बालू पर नींव, २ नफी २८:२८, ३ नफी १४:२६, ३ नफी १८:१३, मसीह में एक ही, और सुरक्षा या० ४:१५, इला० ५:१२, नींव का नाश, अल० १०:२७

—बाहरी अन्धकार, में दुष्टों की आत्माओं का कष्ट सहना, अल० ४०:१३

—बिजली और मेघ-गर्जन, नफी के दिव्य-दर्शन में, १ नफी १२:४, परमेश्वर इस्राएल के पास इन विपत्तियों के साथ, १ नफी १९:११, दुष्टों के पास इन विपत्तियों के साथ, २ नफी २६:६, मसीह की मृत्यु के समय, २ नफी ८:७

—बीज, हर तरह के बीज लेही के लोगों द्वारा ले जाया जाना, १ नफी ८:१, १६:११, १८:६, लेही के लोगों द्वारा बोया जाना, १ नफी १८:२४, नफी के लोगों द्वारा बोया जाना, २ नफी ५:११, यारदाइयों द्वारा ले जाया जाना, ए० २:४१, २:३

—बीज से वाणी की तुलना, अल० ३२:२८

—बीमारियां, मसीह द्वारा बीमारों को स्वस्थ करने की भविष्यवाणी, मू० ३:५, का प्रभाव, ३ नफी १७:७, दवा के लिए अमुक पेड़ पौधे, अल० ४६:४०

—बुखार नफायटियों में, अल० ४६:४०

—बुद्धिमान, शिक्षित अपने आप को, २ नफी ९:२८, परमेश्वर द्वारा स्वीकार किए जाने के लिए अपने आप को निर्बुद्धि समझना चाहिए २ नफी ९:४२, अहंकार में फूले पाप कर्म करने वालों को अधोलोक में ढकेला जाएगा, २ नफी २८:१५ बच्चों द्वारा मुंह बन्द किया जाएगा, अल० ३२:२३, मसीह के जन्म के समय के निकट होने पर स्वर्गदूतों का आना, इला० १६:१४, लोग चट्टान पर नींव डालते हैं, ३ नफी १४:२८

—बुरी (दुष्ट) आत्माओं का निकाला जाना, मू० ३:६, निकाली गई, ३ नफी ८:१६

—बेवकूफ, नफी का कहाना, १ नफी १७:१७, धर्मशास्त्र का न समझना, २ नफी २९:६, भाई को कहना मना है, ३ नफी १२:२२

—बेवकूफ, परमेश्वर के सामने अपने आपको समझना, २ नफी ९:४२, दुष्ट नफायटियों का कहाना, इला० ९:२१, हंसी करने वाले रोएंगे, ए० १२:२६

—बेवकूफी, मनुष्यों की, २ नफी ९:२८, २ नफी २६:१०

—बैल, प्रतिज्ञा के देश में, १ नफी १८:२५, की तरह शेर घास खाएंगे, २ नफी ३०:१३

—बोअज़ नगर, नफायटियों का भाग कर यहां जाना, मार० ४:२०, यहां से भगाया जाना मार० ४:२१

—बोझ, दासता के समय, बोझ हल्का हुआ, मू० २४:१४

भ

—भयंकर दीखना, दुष्टों के पुनर्जीवन प्राप्त करने के समय, अल० १४:१४

—भटकने वाले, विदेश में, अल० १३:२३, अल० २६:३६

—भट्टी, कष्टों का, १ नफी २१:१०, राजा नूह का जीवन जैसे भट्टी में वस्त्र, मू० १२.३, तीन शिष्यों का फेंका जाना, ३ नफी २८:२१, ४ नफी ३२, मरो० ८:२४

—भय, प्रभु का, २ नफी १२:१० मू० ४:१, अल० १९:१५, अल० ३६:७, मृत्यु का, मरो० ६:७, नष्ट होने का, अल० १४:२६

—भविष्यवक्ता, यहूदियों को समझाना, २ नफी २५:५, अस्वीकार किया जाना, २ नफी २७:५, या० ६:८, सताने वाले नष्ट होंगे, २ नफी २६:३, वाणियों की खोज, या० ४:६, यहूदियों ने मारा, या० ४:१४, इनोस के दिनों में अनेक, इनो० २२ जराम के दिनों में भारी परिश्रम करना, जराम ११, शूले के शासन में यारदाई ए० ७:२३, राजा शूले द्वारा यारदाई भविष्यवक्ताओं को जाने आने की

स्वतन्त्रता, ए० ७:२५, यारदाई पश्चात्ताप करवाए, ए० ७:२६, हेथ के लोगों से यारदाइयों का पश्चात्ताप करने को कहना, ए० ६:२८, हेथ के समय में उत्पीड़न इतना अधिक कि मृत्यु तक, ए० ६:२६
—भविष्यवाणी, यहूदियों के विषय में नफी की, २ नफी २५:४
—भविष्यवाणियां, मसीह के जन्म सम्बन्धी, पूरा होना, ३ नफी १:४, अविनादी और लमनायटी की, पूरा होना, मार० १:१६, मार० २:१०
—भागना, यरूशलेम से लेही का, १ नफी ४:३६, लिमही की सेना के सामने से लमनायटियों का, मू० २०:१२, मोरियन्दन का, अल० ५०:३३, किस्कूमन का, इला० १:१०, गेडियन्दन डाकुओं का, इला० ३:११, राजा याकूब का, ३ नफी ७:१२, मारमन का, मार० ५:७
—भाला, विरोध का, १ नफी १५:२४
—भाषा, नफायटियों की, १ नफी १:२, मू० १:२ नफायटी सभी विवरण लिखने में असमर्थ, ३ नफी, ६:१८ सुधारी गई मिश्री, मार० ६:३२, दूसरे लोग नहीं जानते, मार० ६:३४, भारी मीनार पर भाषा की गड़बड़ी, एथर १:३३, यारद की भाषा में कोई गड़बड़ी नहीं, ए० १:३५
—भाषाओं को बोलने समझने की योग्यता का देन, अल० ६:२१, बच्चों को, ३ नफी २६:१४
—भिखारी व्यर्थ में "ही भीख" न पसारे, मू० ४:१६
—भिखारी व्यर्थ में ही भीख न पसारें, मू० ४:१६
—भीड़, मसीह के प्रकट होने के समय लोगों का धरती पर गिरना, ३ नफी ११:१२, मसीह के प्रार्थना करने के समय लोगों का आनन्द से परिपूर्ण होना, ३ नफी १७:१८
—भूकम्प की भविष्यवाणी, १ नफी १२:४, २ नफी ६:१५, २६:६, २ नफी २७:२, मरो० ८:३०, मसीह के मृत्यु के समय ३ नफी ८:१२
—भूख, आत्मा की, इनो० ४, ३ नफी १२:६, सांत्वना दिया जाएगा, ३ नफी २०:८
—भूत, वर्तमान और भविष्य में परमेश्वर सदैव एक समान १ नफी १०:१८, २ नफी २:४, २ नफी २७:२३, २ नफी २६:६, अल० ३१:१७, मरो० ६:६, १०:१६
—भूलों पर जानकारी कराया जाना, अल० ३७:८, ३ नफी २:२५, जोरमायटियों की भूलें, अल० ३१:६, शिशुओं को बपतिस्मा देना भारी भूल, मरो० ८:६
—भेड, परमेश्वर के लोग भेड़ समान, नफी २२:२५, इला० १५:१३ मसीह की ओर से अवज्ञा नफी अल० ५:३८, मसीह के दूसरे बाड़े की, ३ नफी १५, १७, १६:१
—भेड़िया भेड़ के बच्चे के साथ, २ नफी ३१:१२
—भेड़िये, सच्चा गड़रिया देखेगा कि भेडिये घुस न आएं, अल० ५:५०, झूठे भविष्यवक्ता भेड़ की खाल में नष्ट करने वाले, ३ नफी १४:१५
—भेदिये, अलमा के, अल० २:२१, इलामन के, अल० ५६:२२
—भेष बदलना, अभिनन्दी का, मू० १२:१, किस्कूमन का, इला० १:१२, इलामन के सेवक का, इला० २:६
—भोजन, अमूलक द्वारा अलमा को, अल० ८:२०, अलमा और अमूलक कारागार में बिना भोजन के, अल० १४:२२, कोरिहर द्वारा भोजन की भीख मांगना, अल० ३१:५६, इलामन की सेना का बिना भोजन के कष्ट सहना, अल० ५८:७, शासकों द्वारा भेजा ना जाना, अल० ६०:१६, लेही और टेनकम द्वारा प्राप्त किया जाना, अल० ६२:१३, बिना भोजन के लेही और नफी कारागार में इला० ५:२२, नफायटियों के घेरा से डाकुओं को भोजन प्राप्त न होना, ३ नफी ४:३, पशुओं को यारदाइयों द्वारा काम में लाना, ए० ६:१८, देश के लोगों के लिए खोज, ए० १०:१६
—भ्रष्ट, गेडियन्दन द्वारा नियम भ्रष्ट, इला० ८:३
—भ्रष्टता, नैतिक भ्रष्टता को अभ्रष्ट होने लायक, २ नफी ६:७ मू० १७:१०, अल० ४०:२, ४१:४

म

—मकान, भारी, लेही के दिव्य दर्शन में, १ नफी ८:२६, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी ११:३५, व्याख्या १२:१८
—मछली, मसीह द्वारा चर्चा, ३ नफी १४:१०, यारदाइयों द्वारा ले जाया जाना, ए० २:२
—मण्टी पहाड़, इस पर निहोर को मृत्युदण्ड दिया गया, अल० १:१५
—मण्टी, एक नफायटी योद्धा, अल० २:२२
—मण्टी नगर, अल० ५७:२२, छल से विजय करना, अल० ५८:१३, २८
—मण्टी देश, अल० १६:६
—मणि पत्थरों से बने द्वार, ३ नफी २२:१२
—मत परिवर्तन, अलमा का अभिनन्दी द्वारा, मू०
—मतभेद, अलमा द्वारा फैलाना, मू० २७:६, अमलिकियाह द्वारा, अल० ४६:६
—मतभेद मूसायाह के समय में, मू० २६:५, बुरे कर्मों के बाद, अल० ४६:३६
—मतवालापन, सैनिक योजना के लिए, अल० ५५:८, ५६:३०
—मिथोनी, बारह शिष्यों में से एक, ३ नफी १६:४
—मिथोनी बारह में से एक शिष्य, ३ नफी १६:४
—मदमनाह, फिलस्तीन में एक गांव, २ नफी २०:३१
—मदिरा, जो लोग शर्तनामे को नष्ट करेंगे वे रक्त में मतवाले होंगे, २ नफी ६:१८, पापी मतवाले होंगे परन्तु मद से नहीं, २ नफी २७:४, बिना पैसे के मोल लो, मुक्ति के लिए उपमा, २ नफी ६:५०, दुष्ट राजा नूह द्वारा बहुत अधिक बनाया जाता था, मू० ११:१५, लिमही का लमनायटियों के पास भेजना, मू० २२:१०, मरोनी का एक सैनिक लमान का लमनायटियों के पास मदिरा ले जाना और लमनायटियों का बेखबर होना, अल० ५५:८, १४
—मधुमक्खी, डेसर्ट, यारदाइयों द्वारा ले जाया जाना, ए०२:३
—मधु, सम्पन्न देश में, अरब में, १ नफी १७:५, नाव में ले जाया जाना, १ नफी १८:६, और मक्खन, २ नफी १८:१५

और दूध २ नफी २६:२५
—मधुमक्खी, डेसर्ट, ए० २:३
—मन्दिर की ओर तम्बुओं के द्वार, मू० २:६, द्वार बन्द कर प्रार्थना, ३ नफी १३:६
—मन्दिर, नफी द्वारा निर्माण, २ नफी ५:१६, मन्दिर में याकूब द्वारा उपदेश या० १:१७, २:२, २:११, मूसायाह लोगों को मन्दिर में बुलाता है, मू० १:१८, मसीह के प्रकट होने के समय लोगों का सम्पन्न देश में एकत्रित होना, ३ नफी ११:१
—मनाशाह, अभिनन्दी मनाशाह का वंशज, अल० १२:२६, मसीह सबका उद्धार करेगा, अल० १६:१३, इला० १४:१६
—मनुष्य, के समान स्वर्गदूत, १ नफी ८:५, के समान परमेश्वर का पुत्र, १ नफी ११:७, यीशु मसीह का अपने आपको यारद के भाई को दिखाना, ए० ३:१५, के समान यीशु मसीह का नफायटियों में जाना, ३ नफी ११:८, प्रभु की आत्मा का मानव रूप में नफी के सामने प्रकट होना, १ नफी ११:११
—मनुष्य की तरह, स्वर्गदूत १ नफी ८:५, परमेश्वर का पुत्र, १ नफी ११:७, यारद के भाई के सामने यीशु मसीह मानव रूप में, ए० ३:१५, यीशु मसीह मानव रूप में नफायटियों के सामने, ३ नफी ११:८, नफी के सामने प्रभु की आत्मा मानव रूप में १ नफी ११:११
—मनुष्य का पतन, से रास्ता तैयार किया गया, २ नफी २:४, पतन से अनुचित प्रवृत्तियां, मू० १६:३, ए० ३:२, हारुन द्वारा परिभाषा, अल० २२:१३, अलमा द्वारा, अल० ४२:२, लमनायटी सामुएल द्वारा, इला० १४:१६, मारमन द्वारा, मार० ६:१२
—मरियम, यीशु की मां, १ नफी ११:१८ मू० ३:८, अल० ७:१०
—मरे हुए, जीवित मरे हुओं से सुनेंगे, २ नफी १८:१९ नफी के पुत्र द्वारा मरे हुओं को जिलाने ३ नफी १६:४, मसीह द्वारा जिलाया जाना, ३ नफी २६:१५, मसीह का जी उठना, देखो मसीह सभी का मृत से जीवन प्राप्त होना, देखो पुनर्जीवन
—मरोनी की शर्तें, बन्दियों की अदला-बदली के लिए, अल० ५४:११
—मरोनी, नफायटी सेनाध्यक्ष, अल० ४३:१६, सेना की सामग्रियों, अल० ४३:१६, जंगल में भेदियों को भेजना, अल० ४३:२३ मण्टी की ओर, अल० ४३:२५, की चालाकी, अल० ४३:२७, लमनायटियों को पछाड़ना, अल० ४३:५१, जराहेमना को आत्मसमर्पण करने की मांग, अल० ४४:५, लड़ाई समाप्त, अल० ४५:२०, स्वतन्त्रता का झण्डा, अल० ४६:१३, सेना का इकट्ठा करना, अल० ४६:२१, २८, अमलकियाह की सेना का रास्ता रोकना, अल० ४६:३२, स्वतन्त्रता और शान्ति की स्थापना, अल० ४६:३६, सेना को शक्तिशाली बनाना, अल० ४८:८, स्वभाव, अल० ४८:११, सेना को तैयार करना, अल० ४६:८, अमलकियाह का बुरा भला कहना, अल० ५०:२७, और गढ़ों का बनाना, अल० ५०:१ राजा के लोगों का सामना, अल० ५१:१३ विजय लाभ, अल० ५१:१६, टेनकम की सहायता, अल० ५२:७, सम्पन्न देश में प्रवेश, अल० ५२:१८ टेनकम के साथ, अल० ५२:१६, घायल अल० ५२:३५, सम्पन्न देश में किलाबन्दी, अल० ५३:४, अमरोन से पत्र व्यवहार, अल० ५४:४, १५, लमान को मदिरा के साथ लमनायटियों के पास भेजना, अल० ५५:६, गिड में बन्दियों के पास हथियार पहुंचाना, अल० ५५:६, इलामन से पत्र पाना, अल० ५६:१, पहोरन के पास पत्र, अल० ५६:३, १ उत्तर प्राप्त, अल० ६१:१, गिडियन की ओर, अल० ६२:३, पहोरन से मिलना, अल० ६२:६, १४, नफियाह नगर पर अधिकार, अल० ६२:१, जराहेमला वापस, अल० ६२:४२, मृत्यु, अल० ६३:३ मरोनी, मारमन का पुत्र, मा० वा० १, मार० ६:६, उसका अपने पिता के अभिलेख को पूरा करना, मार० ८:१, तीन नफायटी शिष्यों का गवाह, मार० ७:१०, भविष्य में अभिलेखों को लाने पर, मार० ८:१२, यारदाई अभिलेखों को संक्षिप्त में किया जाना, ए० १:१ अनुवादक पत्थरों और अभिलेखों का मुहरबन्द किया जाना, ए० ४:५, विश्वास पर उपदेश, ए० १२:६, प्राण बचाने के लिए भी मसीह को अस्वीकार नहीं करेगा, मरो० १:३, व्यवस्थाओं और पवित्रात्मा को देने की विधि, मरो० अध्याय २, पुरोहितों और शिक्षकों की नियुक्ति, मरो० अध्याय ३, रोटी अंगूर रस की विधि, मरो० अध्याय ४:५, बपतिस्मा और गिरजे का अनुशासन, मरो० अध्याय ६ विश्वास, आशा और उदारता पर, मरो० ७:१, मारमन का पत्र, मरो० ८:१, ६:१, लमनायटियों को पत्र, मरो० १०:१, विश्वासियों द्वारा अभिलेख पढ़ने वालों के लिए भविष्यवक्ता की तरह वचन, मरो० १०:३, आत्मिक देनों पर, मरो० १०:८, विश्वास, आशा और उदारता की प्रशंसा, मरो० १०:२०, अंतिम साक्षी, मरो० १०:३४, अभिलेखों को मुहरबन्द करके छुपाना, मरो० ८:१४, मरो० १०:२
—मरोनी का अंतिम उपदेश, मरो० १०:२
मरोनी नगर, अल० ५०:१३, नष्ट किया जाना, ३ नफी ८:६
—मरोनी देश, अल० ५१:२२, ६२:२५
—मरोनिहा, सेनाध्यक्ष, मरोनी का पुत्र और उत्तराधिकारी, अल० ६२:४३, लमनायटी आक्रमण से आश्चर्य, इला० १:२६, शत्रुओं को पराजित कर बन्दी बनाना, इला० २:३०, सम्पन्न देश में पीछे हटाया जाना, इला० ४:६, हारे हुए के आधे पर विजय, इला० ४:१०
—मरोनिहा, नफायटी नायक, कुमोरा में मारा जाना, मार० ६:१४
—मरोनिहा, नगर, मिट्टी के अन्दर, ३ नफी ८:१०
—मलाकी, यहूदी भविष्यवक्ता की चर्चा, ३ नफी २४:१
—मलसिदक, अल० १३:१४
—मलक देश, अल० ८:३, अमूलक और जीजरोम यहां,

अल० ३१:६
—मसीन, नफायटियों का काम में लाना, जराम ८
—मसीह का विरोधी, शीरम, या० ७:१, निहोर, अल० १:२, कोरिहर ज़राहेमला में, अल० ३०:६, जारसन में, अल० ३०:१९ गिडियन में अल० ३०:२१
—मसीह के स्वर्गारोहण की भविष्यवाणी, मू० १७:२, अल० लमनायटियों के पास भेजना, अल० ५५:६, गिड में ४०:२० मसीह द्वारा अनुमोदन, ३ नफी १५:१ नफायटियों में प्रकट होने के पश्चात्, ३ नफी १९:३९, ३ नफी २७:१५
—मसीह का जन्म, नफी के दिव्यदर्शन में, १ नफी ११:१५, नफी द्वारा संकेतों की भविष्यवाणी, २ नफी २६:३, सामुएल, ३ नफी १:१५
—मसीह के नाम, २ नफी १०:३, २५:१९, मू० ३:८ ३ नफी ११:१०, के आने की भविष्यवाणी, या० ७:११, इला० ८:१६, ३ नफी २०:२४, लेही द्वारा, १ नफी २:१९, १ नफी ११:१७, इला० ९:२२, लेही के पुत्र नफी द्वारा, १८:६, अलमा द्वारा, मू० १८:२, आमोन द्वारा, अल० १९:३९, आमोन द्वारा, अल० २१:७,९; लमनायटी सामुएल द्वारा, इला० १४:२, इलामन के पुत्र नफी द्वारा, ३ नफी ७:१६, मूसा द्वारा, ३ नफी २०:२३, आने के समय की भविष्यवाणी, १ नफी १०:४, इला० १४:२, ३ नफी १:१३, आने के समय से समय की गणना, ३ नफी २:८ स्वयं अन्य जातियों में प्रकट नहीं होगा, ३ नफी १६:२३, उसके नाम पर गिरजा, ३ नफी २७:८, राजा बिन्यामीन के लोगों द्वारा स्वीकार किया जाना, मू० ४:२, लमोनी द्वारा, अल० १९:१३, लमोनी की रानी द्वारा, अल० १९:२९, एण्टी-नफी-लेही, अल० २४:१०, ८००० लमनायटियों द्वारा, इला० ५:१९, मूसा के नियम, प्रकार के, २ नफी ११:४, पीतल का सर्प, अल० ३४:१९, इला० ८:१४, मसीहा की उपाधि, १ नफी ११:१७, मुक्तिदाता, १ नफी १४:४०, १ नफी २२:१२, २ नफी ३१:१३, मू० ३:२०, उद्धारक, १ नफी १३:४०, १ नफी २२:१२, २ नफी २:३, २ नफी ६:११, २ नफी ११:२, इनो० २७, अल० ७:७, मरो० ८:८, परमेश्वर का पुत्र, २ नफी २५:१६, मू० १५:२ अल० ५:५०, ३४:२, १४, धार्मिकता का पुत्र, २ नफी २६:९, ३ नफी २५:२, ए० ९:२२, इकलौता, २ नफी २६:९, अल० १३:३३, १३:९, इस्राएल का पवित्र प्रभु, १ नफी १९:१४, २०:१७, २२:१७, २२:५, २ नफी १:१०, २ नफी २५:२९, बलवान, १ नफी २१:२६, २२:१२, २ नफी ६:१८, पिता का पुत्र, मू० १५:२, मार० ९:१२, ए० ३:१४, अच्छा गड़रिया, अल० ५:३८, इला० ७:१८, स्वर्ग का राजा, अल० ५:५०, स्वर्ग और धरती का अनन्त पिता, अल० ११:३९, विश्वास का रचयिता और अंत करने वाला, मरो० ६:४, प्रथम बार जन्म लेने के संकेत, २ नफी २६:३, जन्म के, इला० १४:४, मृत्यु के, इला० १४:१४, २०, बताए संकेतों का पूरा होना, ३ नफी १:१९, मृत्यु के समय नाश ३ नफी ८:५, जीवन और मरण नारी से जन्म, १ नफी ११:१८, अल० १९:१३, युहन्ना द्वारा बपतिस्मा, १ नफी ११:२७, अस्वीकार किया जाना, २ नफी २५:१२, उसकी हंसी, कष्ट और बाहर किया जाना, मू० १५:५, क्रुश पर ऊपर उठाया जाना, १ नफी ११:१३, २ नफी २५:१३, मू० ३:९, ३ नफी २७:१४, मरकर जी उठना, २ नफी २५:१३, मृत्यु की जंजीर को तोड़ता है, मू० १५:८, नफायटियों में प्रकट होना, २ नफी २६:१, ३ नफी ११:१८, स्वर्ग से वाणी द्वारा घोषणा, ३ नफी ९:१, १०:३, ११:३ लोगों की वाणी को समझना, ३ नफी ११:६, स्वर्ग से उतरना ३ नफी ११:८, नफी को बुलाना, ३ नफी ११:१८, नफी नफी और दूसरों को बपतिस्मा देने का अधिकार देना, ३ नफी ११:२१, बारह शिष्यों की नियुक्ति, ३ नफी ११:२२, १२:१, चमत्कार दिखाना, मू० ३:५ ३ नफी १७:७, २६:१५, इस्राएल की खोई शाखा में प्रकट होना, ३ नफी १७:४, की पूजा, ३ नफी १७:१०, छोटे बच्चों के लिए प्रार्थना और आशीर्वाद देना, ३ नफी १७:२१, रोटी और अंगूर रस के संस्कार को करना, ३ नफी १८:१, शिष्यों के ऊपर ३ नफी ११:२१ बारह शिष्यों की नियुक्ति, ३ नफी ११:२२, १२:१, चमत्कार दिखाना, मू० ३:५ ३ नफी १७:७, २६:१५, इस्राएल की खोई शाखा में प्रकट होना, ३ नफी १७:४, की पूजा, ३ नफी १७:१०, छोटे बच्चों के लिए प्रार्थना और आशीर्वाद देना, ३ नफी १७:२१, रोटी और अंगूर रस के संस्कार को करना, ३ नफी १८:१, शिष्यों के ऊपर हाथ धरना, ३ नफी १९:३६, ऊपर स्वर्ग में जाना, ३ नफी १८:३९, पुनः प्रकट होना, ३ नफी १९:१५, रोटी अंगूर रस संस्कार में चमत्कार, ३ नफी २०:६, शिष्यों के सामने प्रकट होना, ३ नफी २७:२, चौथी पीढ़ी में पतन की बात, ३ नफी २७:३२, उद्देश्य और काम, मूसा के नियमों को देने वाला, ३ नफी १५:५, नियम पूरा करने वाला, ३ नफी १५:४, ८, नियम और प्रकाश, ३ नफी १५:९, आदम द्वारा पतित होने वालों के लिए प्रायश्चित, मू० ३:११, अल० ५:२७, २२:१४, अपने लोगों का उद्धार करता है, मू० १५:१ लेकिन उनके पापों में नहीं, अल० ११:३४, न्याय की मांग को संतुष्ट करना, मू० १५:९, मृत्यु से जीवन लाता है, अल० ५:१४, अल० १०:३, इला० १४:१५ सब पर प्रकट होगा, मू० २७:३०, छोटे बच्चों को अनन्त जीवन देता है, मू० १५:२५, अपने वंश को देखेगा, मू० १५:१७, अन्य जातियों के लिए भी मुक्ति का मार्ग, २ नफी ३३:९, इस्राएल के घराने द्वारा, ३ नफी २०:३१, सभी को अपनी ओर, ३ नफी २७:१४, दुबारा प्रकट होगा, २ नफी ६:१४, यरूशलेम में, २ नफी ९:५, निर्णायक, २ नफी ३३:७, ११, मू० ३:१०, जो उसको अस्वीकार करेंगे, वह उनको अस्वीकार करेगा, ३ नफी २९:३४, वाणी गैरयहूदियों में, ३ नफी ३०:१, बपतिस्मा की शिक्षा और पद्धति, ३ नफी ११:२३, बपतिस्मा देने का अधिकार, ३ नफी ११:२२, सभी को पश्चात्ताप करना और बपतिस्मा लेना चाहिए, ३ नफी ११:३७, तब अ5ि और पवित्रात्मा,

३ नफी १२:२, बपतिस्मा लिए हुए गिरजा के, मू० १८:१७, ३ नफी २७:२१, रोटी अंगूर रस के संस्कार पर, उसके शरीर की स्मृति मे, ३ नफी १८:७, उसके रक्त के, ३ नफी १८:११, अयोग्य लोगों को भाग लेने से निषेध, ३ नफी १८:२८, ईश्वरत्व की एकता पर, ३ नफी ११:२७, ११:३२, फुटकर मामलों पर, विवाद की मनाई, ३ नफी ११:२८, हरएक मनुष्य को पश्चात्ताप और विश्वास करना चाहिए, ३ नफी ११:३२, छोटे बच्चों के समान ३ नफी ११:३७, चट्टान, ३ नफी ११:३९, पर्वत के उपदेश को दोहराना, ३ नफी १२:३, विनीतों के लिए स्वर्ग, ३ नफी १२:३, उसकी भेड़ें, ३ नफी १५:२४, दूसरी भेड़ें, ३ नफी १५:२४, दूसरी भेड़े, ३ नफी १६:१ इस्राएलियों का एकत्रित होना, ३ नफी १६:५, अन्य जातियों की गणना परमेश्वर के लोगों के साथ, ३ नफी १६:१३, सदैव जागते और प्रार्थना करते रहो, ३ नफी १८:१५, परिवारों में प्रार्थना, ३ नफी १८:२१, सदैव मिलते रहो, ३ नफी १८:२२, शास्त्र अध्ययन, ३ नफी २३:१, उनकी शिक्षाओं को लिखा जाना, ३ नफी २३:५, मलाकी की भविष्वाणियों की व्याख्या, ३ नफी २४:१, शिष्य लोगों के लिए प्रकाश, ३ नफी १५:१२, बारह नफायटियों के नाम, ३ नफी १९:४, उनकी इच्छा जानने की मांग ३ नफी २८:१, तीन को छोड़ बाकी अपनी इच्छा प्रकट किए, ३ नफी २८:२, इच्छाओं का पूरा किया जाना, ३ नफी २८:३, तीन को वचन दिया जाना, ३ नफी २८:७, तीनों का देश में जाना, ३ नफी २८:१८, चमत्कारी ढंग से रक्षा, ३ नफी २८:२१, तीनों के नामों का न दिया जाना, ३ नफी २८:२५, उनका मारमन को उपदेश, ३ नफी २८:२६, और मरोनी को मार० ८:११, अन्य जातियों में परन्तु अज्ञात, ३ नफी २८:२७,
—मसीह के शिष्यों में सभी बातों की समानता, ३ नफी २६:१९
—मसीह के गिरजे का शासन छोटा, १ नफी १४:१२
—महान आत्मा, आमोन को समझा जाना, अल० १८:२, अल० १८:११, अल० १९:१५,लमनायटियों का विश्वास अल० १८:५, परमात्मा है, अल० १८:२८, अल० २२:९
—महामारी, से अविश्वासी नष्ट किए जाएंगे, २ नफी ६:१५, २ नफी १०:६, मू० १२:७, धर्मनिष्ठों की प्रार्थना के कारण रोक रखा गया, अल० १०:२२
—महाह, यारद का पुत्र, ए० ६:१४
—महान मध्यस्थ, मसीह, २ नफी ३:२८
—मांस खाने का लोभ, १ नफी २२:२३, पुत्र मसीह हाड़ मास का, मू० १५:३, मसीह का मास और रक्त का संस्कार, मरो० ४:१, ५:१, बच्चों और स्त्रियों को मनुष्य का मांस खिलाना, मरो० ९:८
—मांग न्याय की, मू० ३:३८, प्रायश्चित तृप्त करता है, २ नफी ९:२६, दया द्वारा, अल० ३४:१६, न्याय की मांग को सन्तुष्ट करना, अल० ६२:१५, एक डाकू का, लक्षोनस द्वारा अस्वीकार, ३ नफी ३:१२
—माथा, अमलकायटियों का लाल रंग से रंगना, अल० ३:४
—मानव समाज, खोया और पतित, अल० १२:२६, मसीह सब का उद्धार करेगा, अल० १९:१३, इला० १४:१६
—मानसिक कष्ट, अनन्त और किस प्रकार का, २ नफी ९:१९, २८:२३, या० ६:१०, मू० ३:२५, अल० १२:१७
—मारमन शिष्य, ३ नफी ५:१३
—मारमन का जंगल, मू० १८:२०
—मारमन का जल, मू० १८:८, मू० २५:१८, अल० ५:३
—मारमन का देश, अल० ५:३
—मारमन धर्मशास्त्र के गवाह, तीन जो पुस्तक के सत्य होने की साक्षी देंगे, २ नफी २७:१२, ११:३ ए० ५:३, ४, तीन के अलावे अन्य, २ नफी २७:१८, २ नफी २७:२२, देखो भूमिका में तीन और आठ गवाहों की साक्षियां
—मारमन, नफायटियों का अन्तिम महान नेता, ३ नफी ५:१२, मार० १:१, नफी की पटियों को उस का अपनी पटियों के साथ करना, मार० १:६, अभिलेखों के विषय में अमरोन की आज्ञा, मार० १:२, उसका जराहेमला जाना, मार० १:६, प्रभु का आना, मार० १:१५, उपदेश न देने पर विवश, मार० २:१६, सैनिक नेता नियुक्ति, मार० २:१, यहोशू देश में पीछे हटना, मार० २:६ नफी की पटियों को अपने अधिकार में लेना, मार० २:१७, देश विभाजन कर लमनायटियों से संधि करना, मार० २:२८, लोगों की दुष्टता से पद त्याग, मार० ३:११, भविष्य की पीढ़ियों के लिए उसका लिखना, मार० ३:१७, अमरोन द्वारा छिपाये गए अभिलेख को लेना, मार० ४:२३, नफी की पटियों को संक्षेप में लिखना, मा० वा० २:३, अपने समय के इतिहास को रखना, मार० १:१ कुमोराह पर नफायटियों को एकत्रित करना, मार० ६:४, विश्वास आशा, दान पर मरोनी का अभिलेख लिखना, मरो० ७:१, मरोनी का पहिला पत्र और उत्तर, मरो० ८:१, दूसरा पत्रोत्तर मरो० ९:१, लमना-. यटियों से युद्ध, मार० ६:२, मारा जाना, मार० ८:३
—मारमन का पिता, मार० १:५
—मारमन की पुस्तक—देखो मारमन की पुस्तक
—मारमन की वाणी, मारमन की वाणी अध्याय १
—मिट्टी गढ़बन्दी के लिए, अल० ४९:२, ५३:४
—मिडियन देश, अल० २४:५
—मिदोनी देश, अल० २०:२
—मिश्र, यूसुफ का बेचा जाना, १ नफी ५:१४, २ नफी ३:४, ४:१, अल० १०:३, इस्राएलियों की दासता से मुक्ति, १ नफी ६, १५, १७:४०
—मिश्री भाषा, १ नफी १:२, मू० १:४
—मिश्री लिपि, सुधारा गया लेख, मार० ९:३२
—मीनार, मरोनी द्वारा गढ़ों के लिए बनाया जाना, अल० ५०:४
—मीनार, यारद के लोग मीनार से आए, ओम २२:ए० १:३३, बड़े, मू० २८:१७, स्वर्ग में चढ़ने के लिए पर्याप्त ऊंची,

इला० ६:२८, महान, ए० १:३, बिन्यामीन द्वारा बनाया गया, मू० २:७, लिमही को पता लगता है कि लमनायटी मीनार से, मू० २०:८, नफी के बगीचे में, इला० ७:१०
—मुख, मुख से प्रभु के निकट और हृदय से दूर, २ नफी २७:२५, प्रभु के मुख की वाणी, २ नफी २६:२
—मुक्ति के लिए परिस्थितियां, मू० ४:८ अल० ५:१०
—मुख्य मार्ग, नफायटियों द्वारा बनाया जाना, ३ नफी ६:७
—मुर्दों का दुर्गन्ध, अल० १६:११, ए० १४:२३
—मुलकी, कारागार में, अल० २०:२, उपदेश अल० २१:११
—मुहरबन्दी, इलामन के पुत्र नफी को अधिकार दिया गया, इला० १०:७
—मुहरबन्द, पुस्तक मुहरबन्द की जाएगी, २ नफी २७:७
—मूर्ति खुदी हुई, ३ नफी २१:१७
—मूर्ति पूजा, लमनायटियों का, इनो० २०, मू० १०:१२, नफायटियों में, मू० ११:६, ७, अल० १:३२, ५०:२१, अलमा की मूर्ति पूजा, मू० २७:८, यारदाइयों में, ए० ७:२३, देखो मूर्तियां
—मूर्ति, पूजा वर्जित है, २ नफी ९:३७, नफायटियों द्वारा, इला० ६:३१, लमनायटियों द्वारा, अल० १७:१५, जोरमायटियों द्वारा, अल० ३१:१, लमनायटियों द्वारा बलिदान मार० ४:१४, २१
—मूर्तियां, देखो मूसा के नियम
—मूलक जिदकियाह का पुत्र, प्रतिज्ञा के देश में लाया गया, इला० ६:१०, जिदकियाह के अन्य सभी लड़के मारे गए, इला० ६:२१
—मूलक नगर, पर विजय, अल० ५१:२६, वापस लिया जाना, अल० ५२:२६
—मूलक देश, उत्तर में, इला० ६:१०
—मूसा के नियम, पीतल की पटियों पर, १ नफी ४:१६, ५:११, लमान और लेमुएल का नियम पर कहना, १ नफी १७:२२, नूह के पुरोहितों का शिक्षा देने का ढोंग, मू० १२:२८, से मसीह के आगमन की प्रतीक्षा अल० २६:१५, उस समय पूरा नहीं हुआ, ३नफी २:२४, नियम देने वाले मसीह में और मसीह के द्वारा पूरा हुआ, ३ नफी ९:१७, ३ नफी १५:४, ५, मसीह के आगमन के पश्चात, ४ नफी १२
—मूसा के नियम, पीतल की पटियों पर, १ नफी ४:१६, मूसा के अनुसार आज्ञायें, १ नफी १७:२२, २ नफी ५:१०, मू० २:३, जराम ५, क्यों दिया गया, २ नफी ११:४, मसीह में पूर्ण होने तक माना जाए, २ नफी २६:२४
—मूसा की पांच पुस्तकें पीतल की पटियों पर, १ नफी १०:११ नफी ने पढ़ा, १ नफी १९:२३
—मूसा, एक महान काम करने की आज्ञा, १ नफी १७:२६, की तरह भविष्यवक्ता, १ नफी २२:२०, ३ नफी २०:२३, परमेश्वर ने शक्ति दी, २ नफी ३:१७, इला० ८:११, भविष्यवक्ता मसीह जिसके विषय में मूसा ने कहा, १ नफी २२:२१, ३ नफी २०:२३
—मूसायाह, के पुत्र, मू० २८:३४, अविश्वासियों में, मू० २७:८, गिरजा को नष्ट करने की चेष्टा, मू० २७:१०, स्वर्गदूत द्वारा झिड़की, मू० २७:११, मत परिवर्तन और गिरजा के लिए उद्योग, मू० २७:३२, गिरजा के लिए यात्रा, मू० २८:१, २८:७, प्रभु द्वारा सांत्वना, अल १७:१० लमनायटियों में उनके प्रचार का एक अभिलेख, अध्याय १७:२६ अल० गिरजा की स्थापना करते हैं, अल० २३:४
—अलमा के साथ जोरमायटियों में जाना, अल० ३१:६, वे परमेश्वर के थे, अल० ४८:१८
—मूसायाह, नफायटियों का अन्तिम राजा बिन्यामीन का पुत्र, मू० १:२, राजा बनाया गया, मू० १:१०, २:३०, ६:४, जनीफ के अभिलेख का पढ़ना, मू० २५:५, अलमा के विवरण का पढ़ा जाना, मू० २५:६, राज्य काल में विग्रह, मू० २६:५, राजा के शासन पर सम्मति, मू० २९:५, राजा के स्थान पर जनतन्त्र शासन की सम्मति, मू० २९:२५, निर्णायकों का चुनाव, मू० २९:३९, यारदाई अभिलेख का अनुवाद कर अपने पास रखना, मू० २८:१३, ए० ४:१ मृत्यु, मू० २९:४६, नफायटियों का अंतिम राजा, मू० २९:४७, इसके द्वारा स्थापित नियम, अल० १:१, १:१४, इला० ५:२२
—मूसायाह, राजा, ओमनी १२:१९
—मृत्यु, सभी के लिए, २ नफी ९:६, आत्मा के लिए, अधोलोक, २ नफी ९:१०, का बन्धन परमेश्वर द्वारा तोड़ा गया, मू० १५:८, मसीह में विलय, मू० १६:८, आत्मिक, अल० १२:१६
—मृत समान, मूसाई नियम, २ नफी २६:२७
—मृतकों को जिलाना, मसीह द्वारा, मू० ३:५, ३ नफी २७:१५, इलामन के पोता नफी द्वारा ३ नफी ७:१९, नफायटी शिष्यों द्वारा, ४ नफी ५, पुनर्जीवन भी देखो
—मृत्यु दंसन, अल० २२:१४, मरो० ७:५
—मेघ गर्जन मसीह की मृत्यु के समय पर, १ नफी १२:४, १ नफी १९:११ दुष्टों के लिए, २ नफी २६:६ मसीह की मृत्यु के समय ३ नफी ८:६
—मेनन देश, अल० २:२४
—मेमने का चर्म, गेडियन्दन डाकुओं का पहिनना, ३ नफी ४:७
—मेमना भेड़िया के साथ, २ नफी ३१:१२
—मैल, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी १६:२७, लमनायटियों का, या० ३:५, कंगालों को मल समान समझा जाना, अल० ३२:३, नैतिक मू० ७:३०, अल० ५:२२, अल० ८:२१, मार० ६:४
—मोकम नगर, नष्ट किया गया, ३ नफी ९:७
—मोती, आभूषणों और प्रदर्शनी के लिए, ४ नफी २४
—मोरन, एक यारदाई राजा, ए० २:७
—मोरियन्दन, उत्तर की ओर भागने का प्रस्ताव, अल० ५०:२९, एक नारी उसकी योजना को मरोनी को बतलाई, ५०:३१, मारा जाना, अल० ५०:३५
—मोरियन्दन देश, अल० ५०:२५
—मोरियन्दन नगर, अमलकियाह द्वारा विजय, अल० ५१:२६

लमनायटियों द्वारा किलामबन्दी, अल० ५५:३३
—मोरियन्दन, रिप्लकिश का वंशज, ए० १:२३, इसका राजा बनना, ए० १०:९

य

—यरदन, नगर जहां से लमनायटियों को पीछे हटाया गया, मारमन ५:३
—यरमायाह, बारह शिष्यों में से एक, ३ नफी १९:४
—यरमायाह, इस्राएल का एक भविष्यवक्ता, पीतल की पटियों पर इसकी कुछ भविष्यवाणियां, ६:१३, कारागार में डाला गया, १ नफी ७:१४
—यरूशलेम, नया, देखो नया यरूशलेम
—यरुशलेम, फिलस्तीन में, भविष्यवक्ताओं द्वारा नष्ट होने की भविष्यवाणी, १ नफी १:४, लेही की विपरीत भविष्यवाणी, १ नफी १:१८, लेही का अपने परिवार वालों के साथ त्यागना, १ नफी २:४, भविष्यवाणी पूरी की जाएगी, १ नफी ७:१३, पीतल की पटियों के लिए लेही के लड़कों का वापस लौटना, १ नफी ३:२, इस्माइल के परिवार के लिए वापस लौटना, १ नफी ७:२, नष्ट किया जाना, २ नफी १:४, ६:८, २५:१०, जराहेमला के लोग वहां से आए, ओमनी १४ शर्तनामा के लोग वापस लौटेंगे, ३ नफी २०:२९, मुक्त किया जाएगा, ३ नफी २०:३४
—यरूशलेम, लमनायटी नगर, अल० २१:१, आरून का यहां आना, अल० २१:४, जलमग्न, ३ नफी ९:७
—यश, परमेश्वर का पुत्र महान यश के साथ आएगा, १ नफी २२:२४, अल० ५:५०, अल० ९:२६, १ १३:२४, ३ नफी २६:३, नफायटियों में आने के समय में यश और गौरव, ३ नफी २०:९, १०
—यशायाह, बारह शिष्यों में से एक, ३ नफी १९:४
—याशायाह, इस्राएल का भविष्यवक्ता, नफी द्वारा इसकी वाणी की शिक्षा, १ नफी १५:२०, १९:२३, इसकी वाणी को नफी द्वारा पढ़ा जाना, १ नफी २०:१, २१:१, इसके द्वारा अभिलेखों को नफी द्वारा भाष्य, १ नफी २२:१, इसकी बातों को नफी द्वारा लिखा जाना, २ नफी अध्याय १२ से २५, अभिनन्दी द्वारा उल्लेख, मू० १४:१, लोगों को इसकी भविष्यवाणियों को अध्ययन करने की सलाह, मार० ८:२३
—यहूदी, शास्त्र एक यहूदी के मुख से, १ नफी १३:२३, १४:२३, के लिए नफी की उदारता, २ नफी ३३:८
—यहूदी, लेही की हंसी करना, १ नफी १:१९, लबान के पास अभिलेख, १ नफी ३:३, पीतल की पटियों पर इनके अभिलेख, १ नफी ६:१२, यहूदियों में भविष्यवक्ता, १ नफी १०:४, इंजील का प्रचार, १ नफी १०:११, नफी द्वारा इनके अभिलेख को दिव्य दर्शन में देखना, १ नफी १३:२३, उत्पीड़न १ नफी १९:१३, परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं द्वारा बातें की, २ नफी ९:२, भविष्यवाणियों को समझना, २ नफी २५:५, बिखेरे जाएंगे, २ नफी २५:१५ पाप में मतवाले, २ नफी २७:१, गैर यहूदियों द्वारा शाप, २ नफी २९:५, नफायटियों और खोई शाखा की बातें प्राप्त करेंगे, २ नफी १९:१३, अगर पश्चात्ताप न किए तब फेंके जाएंगे, २ नफी ३०:२, मसीह को अंत में स्वीकार करेंगे, ३ नफी २०:३१
—यहूदिया नगर, इलामन का यहां आना, अल० ५६:९ गढ़बन्दी, अल० ५६:५०
—यहोवा, २ नफी २२:२, मरो० १०:३४
—यहोशू, देश, नफायटियों का यहां आना, मार० २:६
—याकूब की पुस्तक
—याकूब नगर, जलमग्न, ३ नफी ९:८
—याकूब डाकुओं का राजा, ३ नफी ७:९, उत्तर की ओर भागना, ३ नफी ७:१२
—याकूब, जोरमायटी नेता, अल० ५२:२०, सेना का घेरा जाना, अल० ५२:३१, मारा जाना, अल० ५२:३५
—याकूब लेही का पुत्र, १ नफी १८:७, नफी के साथ रक्षा के लिए भागना, २ नफी ५:६, पुरोहित बनाया जाना, २ नफी ५:२६, लोगों को उपदेश, २ नफी ६:१, २ नफी ११:१, पटियों पर लोगों के इतिहास को लिखना, या० १:२, सीरम को पराजित करना, या० ७:८ अपने अभिलेख को समाप्त करना, या० ७:२६
—याकूब के वंशज, १ नफी २०:१, २ नफी १५:५, २७:३३, ३ नफी ६:२१, २५, २०:१६, नफी २१:२
—याकूबायटी, नफायटियों की एक शाखा, या० १:१३
—याकूबोगथ नगर, जल कर नष्ट, ३ नफी ९:९
—याकोम, यारद का पुत्र, ए० ६:१४
—यारद का भाई, उसका अभिलेख जैसा कि एथर द्वारा लिखा गया, लिमही के खोजियों द्वारा पाया गया, मू० ८:९, एथर के अभिलेख का मूसायाह द्वारा अनुवाद, मू० २८:११ एथर द्वारा लोगों के विषय में विवरण, ए० १:२, यारदाई अभिलेख का मरोनी द्वारा संक्षिप्त किया जाना, ए० १:५, प्रभु का कृपापात्र, ए० १:३४, उसकी और उसके लोगों की भाषा में कोई गड़बड़ी नहीं, ए० १:३५, एक श्रेष्ठ देश का वचन, ए० १:४२:२:७, एक बड़े राष्ट्र का वचन, ए० १:३ मधुमक्खियों को ले जाना, ए० २:३ प्रभु से बातें, ए० २:४, वन में जाने की आज्ञा, ए० २:५, मोरियन्कूमर में निवास, ए० २:१३, शुद्धी और पश्चात्ताप, ए० २:१४ नौकाओं को बनाने की आज्ञा, ए० २:१६, सीलम पर्वत पर पत्थरों को गलाना ए० ३:१, प्रभु की उंगली को देखना, ए० ३:६, मसीह को देखना, ए० ३:१३, बतलाया कि मसीह मानव शरीर में प्रकट होगा, ए० ३:१६, अभिलेखों को लिखने और मुहरबन्द करने की आज्ञा, ए० ३:२२, दो अनुवादक पत्थरों का दिया जाना, ए० ३:२३, धरती के निवासियों को देखना, ए० ३:२५, लेखों और पत्थरों को मुहरबन्द करने की आज्ञा, ए० ३:२६, मरोनी द्वारा इसके लेखों और अनुवाद को मुहरबन्द किया जाना, ए० ४:५,

प्रकाश के लिए प्रभु द्वारा छुए गए पत्थरों को नावों में रखा जाना, ए० ६:२, प्रतिज्ञा के देश की ओर अपने लोगों के साथ ए० ६:४, वायु के सहारे यात्रा, ए० ६:५, प्रतिज्ञा के देश में, ए० ६:१२, खेती करना, ए० ६:१३, परिवार ए० ६:२०, राजा के शासन के विरुद्ध चेतावनी, ए० ६:२३, पुत्रों का राजा बनने मे इनकार करना, ए० ६:२६, मृत्यु, ए० ६:२९, जरीन पर्वत का हटाया जाना, ए० १२:३०

—यारद, बड़े मीनार से आया, ए० १:३३, भाषा में कोई अन्तर नहीं, ए० १:३५, एक श्रेष्ठ देश के लिए वचन, ए० १:४२, निमरोद की घाटी में, ए० २:१, नाव में, ए० ६:६ प्रतिज्ञा के देश में पहुंचना, ए० ६:१२, लोगों की गणना, ए० ६:१९, मृत्यु, ए० ६:२९, यारद का भाई भी देखो।

—यारद, ओमर का पुत्र, ए० ८:१, पिता से विद्रोह, ए० ८:२, युद्ध में पराजय, ए० ८:६, आकिश से हत्या के लिए षड़यन्त्र, ए० ८:१२, राजा नियुक्त, ए० ९:४, मारा जाना, ए० ९:५

—यारदाई विवरण, ए० १:१, हृदयहीनता के कारण नष्ट होंगे, मार० ९:२३

—यारदाइयों की तलवारें, लिमही के खोजियों ने पाया, मू० ८:११, एण्टी नफी लेही की, गढ़े में तोपे गए, अल० २२:१२, २४:१७

—यात्री कब्र में से कोई वापस नहीं, २ नफी १:१४

—युद्ध, ए० १४:३, सिहासन पर, ए० १४:६, अपने प्रधान पुरोहित द्वारा मारा जाना, ए० १४:९

—युद्ध नफी द्वारा नफायटियों में युद्ध की जानकारी, १ नफी १२:२, १५ लमनायटियों के साथ मारमन का मार० ६:२ नफायटियों का अंतिम, मार० ६:८ यारदाइयो का अंतिम, ए० १५:१५

—युद्ध की चर्चा, १ नफी १२:२१, १ नफी १४:१५, २५:१२ मरो० ८:३०

—युद्ध, नफी के दिव्य दर्शन में नफी के वंशजों का आपसी, १ नफी १२:२, २१, बड़े घृणित गिरजा में भविष्यवाणी, १ नफी २२:१३, घृणितों की जननी द्वारा राष्ट्रों में, १ नफी १४:१६, लेही के वंशजों में, अर्थात दूसरी पटियों पर अंकित, १ नफी १९:४ २ नफी ६:३३, यहूदियों की दासता में से मुक्त होने के पश्चात्, २ नफी २५:१२, नफी के लोगों में युद्ध की भविष्यवाणी, २ नफी २६:२, इनोस द्वारा नफायटियों और लमनायटियों में युद्ध को देखा जाना, इनो० २४ ओमनी द्वारा चर्चा ओम० ३, अभिनदोम द्वारा चर्चा, ओ० १०, अमलकी द्वारा चर्चा, ओ० २४, मारमन द्वारा लिखा गया, मार० १:८ ६:८ संघर्ष और बुरे कर्मो के कारण, अल० ५०:२१

—युद्ध पर मरोनी और टेनकम नायकों से विचार-विमर्श, अल० ५२:१९

—युद्ध के विषय में इलामन का मरोनी को लिखना, अल० ५६:२

—युद्ध, अंतिम, यारदाइयों का, ए० १५:८ लमनायटियों और नफायटियों का, मार० ६:८

—यूहन्ना, मसीह का शिष्य, १ नफी १४:२७, ३ नफी २८:६, मिलने के लिए नियुक्त, १ नफी १४:२५, ज्ञान प्रकाश पर लिखना, ए० ४:१६

—यूसुफ, मिश्र में बेचा गया जिसका वंशज लेही, २ नफी ३:४, के वंशज में से एक दिव्य-दर्शी, २ नफी ३:११, १४, भविष्यवाणियां, २ नफी ४:१, वंश नष्ट नहीं होगा, २ नफी २५:२१, वंश में से धर्मनिष्ठ शाखा, या० २:२५, अमूलक उसका वंशज, अल० १०:२, वस्त्र का एक भाग सुरक्षित, अल० ४६:२४, लेही की पवित्रता, वंश का एक भाग, अल० ४६:२३, २७, ३ नफी ११:१७, ए० १३:६, १०

—यूसुफ, लेही का पुत्र, वन में जन्मा, १ नफी १८:७, भाइयों द्वारा कष्ट, १ नफी १९:१९, लेही द्वारा आशीर्वाद, २ नफी ३:१, नफी की बातों को मानने का उपदेश, २ नफी ३:२५, नफी के साथ भागना, २ नफी ५:६, पुरोहित बनाया जाना, २ नफी ५:२६, या० १:१८

—यूसुफायटी, नफायटियों की एक शाखा, या० १:१३

र

—रक्तपात, की भविष्यवाणी, २ नफी १:१२, ५:१५, १०:६, परिवारों की रक्षा में, अल० ४३:४७

—रक्तपात, गेडियन्दन डाकुओं का, ३ नफी ४:११, अमलकायटियों का, अल० २:१८, नफायटियों का, मार० ५:२१, मार० ६:१० यारदाइयों का, ए० १५:१५

—रक्तपात, गेडियन्दन डाकुओं द्वारा, ३ नफी २:११, मारमन के समय में, मार० २:८, ४:११, ५:८, एथर के समय में, ए० १४:२१

—रक्त, प्रायश्चित में मसीह का, १ नफी १२:१०, मू० ३:११, घृणित गिरजा के लोग अपने ही रक्त को पी कर मतवाले, १नफी २२:१३ अंगूर रस का प्याला मसीह के रक्त की याद में, ३ नफी १८:११ मरो० ५:२, उत्पीड़न करने वाले अपने ही, २ नफी ६:१८, संतों का रक्त धूल में से पुकारेगा २ नफी २८:१०

—रचइता, देखो मसीह

—रथ, राजा लमोनी का, अल० १८:९, २०:६, नफायटियों के, ३ नफी ३:२२, दूसरी जातियों के नष्ट किए जाएंगे, ३ नफी २१:१४

—रबाना, लमनायटियों के आदर की उपाधि, अल० १८:१३

—राजा, नफायटियों का, नफी कहाना या० १:११, स्वर्ग और धरती का, अल० ५:५०, सदोम का, मलसिदक, अल० १३:१८

—राजा के लोग, अल० ५१:५, प्राण दण्ड, अल० ६२:९

—राजाओं के शासन के विरुद्ध मूसायाह की चेतावनी, मू० २९:१६, कुछ राजाओं के पापकर्म, मू० २९:३१, बुरे नफायटी द्वारा राजा की इच्छा, ३ नफी ६:३०

—राजा बिन्यामीन के मत परिवर्तकों को उपदेश, मू० ५:२

—राज्य, लोगों में शैतान के राज्य की स्थापना, १ नफी २२:२२, कांपेगा, २ नफी २८:१९, दुष्ट शैतान के राज्य के, अल० ५:२५, परमेश्वर का, १ नफी १३:३७, २ नफी ९:२३, ३१:२१ या० ६:४, मल नहीं, १ नफी १५:३४, खोजो, या० २:१८, नफायटियों के राज्य का अन्त, मू० २९:४७, स्वर्ग का, अल० ५:५०, कौन अधिकारी होगा, ३ नफी ११:३८

—रानी, लमोनी की पत्नी, आमोन से सलाह, अल० १९:३, लिहोण्टी की विधवा का अमलकियाह के साथ विवाह, अल० ४७:३५

—रानियां, इस्राएल के लोगों की परिचारिकाएं होंगी, २ नफी १०:९

—रामा, कुमोरा की तरह एक पहाड़, ए० १५:११

—रास्ते, लक्षोनस के समय में अनेक बनाए गए ३ नफी ६:८

—राह के रोड़े, २ नफी ४:३३, २६:२०

—रिप्ला, पहाड़, अल० ४३:३१

—रिप्लकिश, मोरियन्दन का पूर्वज, एक यारदाई, ए० १:२३ अन्यायपूर्ण शासन, ए० १०:४, उसकी मृत्यु, ए० १०:८

—रिप्लेनकम, का जल, ए० १५:८

—रुदन, जो पश्चात्ताप नहीं करते उनका रुदन सुनने में परमेश्वर विलम्ब करता है, मू ११:२४, धर्मनिष्ठों की पुकार शीघ्र सुनता है, अल० ९:२६, नफायटी भेदियों का, बन्दियों द्वारा सुना जाना, अल० ५७:३२, यारदाइयों के नाश के समय, ए० १५:१६

—रुदन, नफायटियों में, २ नफी ८:२३, २५, यारदाइयों में, ए० १५:१६, १७

—रुदन, नफी के लोगों में, अल० २८:४, ३ नफी ८:२३

—रुदन, लिमही के लोगों में, मू० २१:९, नफी के सभी लोगों में, अल० २८:४, धार्मिक नफायटियों में, इला० ६:३३, इलामन के पुत्र नफी का, इला० ७:१५, पाप में, मार० २:११, यारदाइयों का, ए० १५:१६

—रेमूप्टन, जोरमायटियों की पवित्र वेदि, अल० ३१:२१

—रोटी, के संस्कार के लिए मसीह की आज्ञा, ३ नफी १८:१, तोड़ा और आशीसित, ३ नफी १८:३, २०:३, नफायटियों में संस्कार के लिए चमत्कारिक ढंग से, ३ नफी २०:६ आशीषित, मरो० ४:३

ल

—लड़ाई, शिष्यों के विरुद्ध नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी ११:३४, परमेश्वर के मेमना के विरुद्ध, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी १४:१३, सियोन के विरुद्ध होने से नाश लाना, १ नफी २२:१४, २ नफी ६:१२, २७:३, परमेश्वर के विरुद्ध, २ नफी २५:१४

—लबान, जिसके पास पीतल की पटियां थीं, १ नफी ३:३, पटियों के लिए बहुमूल्य वस्तुओं को देने का प्रयत्न, १ नफी ३:२४, एक डाकू, १ नफी ३:२५ मारा जाना, १ नफी ४:१८, की तलवार १ नफी ४:१८, २ नफी ५:१४ या० १:१०, मा० वा० १३, मू० १:१६, युसुफ का वंशज, १ नफी ६:१६

—लबान की तलवार, १ नफी ४:९, २ नफी ५:१४, या० १:१० मा० वा० १३, मू० १:१६

—लबनोन, अन्नदाइनी भूमि होगी, २ नफी २७:२८

—लमनायटी, सामुल, देखो सामुएल

—लमनायटी, शापित, १ नफी १२:२३, २ नफी ५:२१, या० ३:५, नफायटियों को नष्ट करने की चेष्टा, या० १:१४, इनके लिए इनोस की प्रार्थना, इनो० ११, वेश, मू० १०:८, गलत विश्वास, मू० १०:१२, नूह के पुजारियों द्वारा इनकी कन्याओं का हरण, मू० २०:१, उचित आज्ञाओं का पालन करने पर प्रगति, मू० २४:७ सिर मुड़ाना, मू० १०:८ अल० ३:४, मतभेदियों का उनसे मिलाना और उनके ऊपर चिन्ह, अल० ३:१० दयामय वचन दिया जाना, अल० ९:१६ कुछ मत परिवर्तन करने वाले, अल० १७:४, २३:३, ८, अनुचित परम्परा, अल० १७:९ इनके और नफायटियों के मध्य में जंगल, अल० २२:२७; मत परिवर्तन के पश्चात् सच्चाई में दृढ़, अल० २३:६, युद्ध के हथियार त्यागना, २३:७, २४:६, मत परिवर्तन करने वालों का नाम ग्रहण करना, अल० २३:१६, २४:३, जो मत परिवर्तन नहीं किए उनके द्वारा मत परिवर्तकों की हत्या, अल० २४:१ अल० २४:२१, नफायटियों पर क्रोध उतारने पर तुले, अल० २५:१, अमोनिहा के लोगों को नष्ट करना, अल० २५:२, आग द्वारा जलाए गए, अल० २५:५, मत परिवर्तन करने वालों का अनुकरण भारी रक्तपात, अल० २८:१, अमोनिहा की ओर, अल० ४९:१, पत्थरों से लड़ाई, अल० ४९:२, नफायटी गढ़बन्दी से आश्चर्य, अल० ४९:४, युद्ध की तैयारी, अल० ४९:६, नूह नगर पर हमला, अल० ४९:१५, २१; पराजय, अल० ४९:२५; मरोनी की सेना द्वारा पीछे हटाया जाना, अल० ५०:७, जीते गए नगरों और गढ़ों में पीछे हटना अल० ५२:२, पश्चिम के सागर तट पर, अल० ५२:११, टेनकम द्वारा छले गए, अल० ५२:२३, हारे, अल० ५२:३९; बन्दी बनाए गए और सैनिकों के पहरे पर परिश्रम करवाना, अल० ५३:१ स्त्रियों और बच्चों को बन्दी बना कर ले जाना, अल० ५४:३; छल करने की चेष्टा, अल० ५५:२९, मोरियन्दन को दृढ़ करना, अल० ५५:३३, नायकों को छोड़ कर सभी बन्दियों को मारना, अल० ५६:१२, नफायटियों से भय खाना, अल० ५६:२४, मण्टी नगर को खोना, अल० ५८:२८ नफीहा नगर पर चढ़ाई, अल० ६०:५, मरोनी और पहोरन द्वारा अनेक बन्दी बनाए गए, अल० ६२:१५; अपनी भूमि पर पीछे हटाए गए, अल० ६३:१५, जराहेमला पर अधिकार, इला० १:२२, इलामन के पुत्रों द्वारा मत में दीक्षित, इला० ५:१९, ५:५०, भूमि वापस करना, इला० ५:५२, अनेकों का नफायटियों से भी अधिक धार्मिक होना, इला० ६:१, ३६, नफायटियों को उपदेश इला० ६:४, उत्तर की ओर, इला० ६:६, मत परिवर्तन करने पर शाप से छुटकारा, ३ नफी २:१४, नाम मिटाया

गया, ४ नफी १७, गिरजा से विद्रोह और पुनः नाम धारण, ४ नफी २०, अविश्वासी ४ नफी ३८, द्वेष करने की शिक्षा, ४ नफी ३६, नफायटी जाति को नष्ट किया गया, मार० ६:७, ११, मतभेद, मार० ८:८ मसीह की इंजील को अस्वीकार करना, ए० ४:३, गुप्त संगठन, ए० ८:२०

—लमान नगर मिट्टी के नीचे, ३ नफी ६:१०

—लमान, मरोनी का एक सैनिक, अल० ५५:५

—लमान, लमनायटियों का राजा, मू० ७:२१, २४:३

—लमान, लेही का बड़ा पुत्र, १ नफी २:५, पिता द्वारा उपदेश, १ नफी २:६, दिव्यदर्शन में शापित और घृणित, १ नफी १२:२३, लबान से भेंट, १ नफी ३:११, लबान के आगे से भागना, १ नफी ३:१४, नफी और साम के विपरीत, १ नफी ७:६, विवाह, १ नफी १६:७, लेही और नफी के प्राण लेने का षडयन्त्र, १ नफी १६:३७, लेमुएल की सहायता से नफी को बांधना, १ नफी १८:११, इसके बच्चों को लेही द्वारा आशीर्वाद, २ नफी ४:४, वंश नष्ट नहीं होगा, २ नफी ४:६, नफी पर क्रोधित, २ नफी ४:१३

—लमोनी, इस्माइल देश का राजा, अल० १७:२१, सेवकों को मारना, अल० १७:२८, आमोन से भेंट, अल० १७:२१, आमोन को महान समझना, अल० १८:२, प्रार्थना करना, अल० १८:४१, मृत समान, अल० १६:१, ठीक हो कर मसीह की साक्षी देना, अल० १६:१२, रानी के साथ आनन्दमग्न, अल० १६:१३, भीड़ का चकित होना, अल० १६:१८, इसके लोगों में गिरजा की स्थापना, अल० १६:३५, अपने पिता से मिलना जो कि सारे लोगों का राजा था, अल० २०:८, इस्माइल देश वापस लौटना अल० २१:१८, प्रार्थना भवनों को बनवाना, अल० २१:२०, एण्टी-नफी-लेही के लोगों से सलाह, अल० २४:५

—लमाह, लमाह नफायटी नायक जो मारा गया, मारमन ६:१४

—लक्षोनस, लक्षोनस का पुत्र, प्रधान निर्णायक, ३ नफी ६:१६, हत्याओं पर शिकायत, ३ नफी ६:२५, विद्रोहियों द्वारा मारा जाना, ३ नफी ७:१

—लक्षोनस, प्रधान निर्णायक, ३ नफी १:१, डाकुओं के सरदार से पत्र, ३ नफी ३:१, अपने लोगों को एकत्रित करना, ३ नफी ३:१३, पड़ाव को सुदृढ़ करना, ३ नफी ३:१४, स्वभाव, ३ नफी ३:२ १२:१६, १६

—लाभ, के लिए गिरजा बनाए गए, १ नफी २२:२३, २ नफी २६:२०, २६, ४ नफी २६, मा० ८:३३, नफायटी वकीलों का ध्यान केवल लाभ पर, अल० १०:३२, अल० ११:२०, लूट द्वारा इला० ६:१७, पटियों को लाभ के लिए नहीं, मा० ८:१४, लेनदेन के द्वारा, ए० १०:२२

—लाल सागर, लेही का पहुंचना, १ नफी २:५, मूसा का प्रहार इला० ८:११

—लिब, किस का पुत्र, ए० १:१८, राजा बनना, ए० १०:१८, एक बड़ा शिकारी, ए० १०:१६

—लिमहर, एन नफायटी सैनिक, अल० २:२२

—लिमनाह, एक नफायटी नायक, जो मारा गया, मार० ६:१४

—लिमनाह, एक सोने का सिक्का, अल० ११:५

—लिमही, नूह का पुत्र, आमोन से मिलना, मू० ७:६, लोगों को एकत्रित होने की घोषणा, मू० ७:१७, लोग लमनायटियों के दास, मू० ७:२२, पकड़ा गया, मू० १६:१६, राजा बनना, मू० १६:२६, लमनायटियों से लड़ाई, मू० २०:६, जराहेमला देश खोजने के लिए लोगों को भेजना, मू० २१:२५, खोजियों द्वारा यारदाई अभिलेख को लाना, मू० २२:२७, आमोन की सहायता से लोगों का भागना, मू० २२:११; जराहेमला में पहुंचना, मू० २२:१३

—लियाहोना अर्थात् दिग्दर्शक यन्त्र, लेही द्वारा पाया जाना, १ नफी १६:१०, इस पर आज्ञा, ए० १ नफी १६:२७, विश्वास के अनुसार काम करना, १ नफी १६:२८, दुष्टता के कारण स्थिल, १ नफी १८:१२, नफी के विश्वास से पुनः कार्यरत, १ नफी १८:२१, नफी ने अपने साथ ले गया, २ नफी ५:१२, गेंद और दिग्दर्शक के रूप में जाना गया, १ नफी १६:१०, १ नफी १६:२६, २ नफी ५:१२, निर्देशक भी कहा गया, मू० १:१६, अल० ३७:४५, पूर्वजों द्वारा, अल० ३७:३८

—लिवी, एक यारदाई, किम का पुत्र, ए० १:२१, दासता में और पीछे राजा बनना, ए० १०:१५

—लिहोण्टी, लमनायटियों का नेता, अल० ४७:१० अमलकियाह की आज्ञा से बन्दी, अल० ४७:१८

—लीह, छोटे मूल्य का एक सिक्का, अल० ११:१७

—लुभाना, शैतान द्वारा, २ नफी ६:३६, पवित्रात्मा द्वारा, मू० ३:१६

—लूराम, एक नफायटी सैनिक, मारा गया, मरो० ६:२

—लेख, मूसा को दिया गया, २ नफी ३:१७, मन्दिर के दीवाल पर प्रभु की उंगली द्वारा, अल० १०:२

—लेख, राजाओं के, जराम १४

—लेमुएल की घाटी, १ नफी २:१४, लेही का अस्थाई निवास १ नफी ६:१

—लेमुएल, लेही का द्वित्य पुत्र, झिड़की, १ नफी २ १४, शाप की धमकी, १ नफी २:२१, विद्रोह, १ नफी ७:६, विवाह, १ नफी १६:७, लेही और नफी के प्राण लेने का षडयन्त्र, १ नफी १६:३७, लमान से मिल कर नफी को बांधना, ४:६; क्रोधित, २ नफी ४:१३, वंशजों पर चिन्ह, अल० ३:७

—लेमुएलायटी, लमनायटियों की एक शाखा, या० १:१३, इंजील अस्वीकार, ४ नफी ३८

—लेही, इलामन का पुत्र, इला० ३:२१, नफायटियों में प्रचार, इला० ४:१४, लमनायटियों को उपदेश, इला० ५:१८; नफी देश में जाना, इला० ५:२०, कारागार में डाला जाना, इला० ५:२०, कारागार में डाला जाना, इला० २१, अग्नि से घिरे हुए के समान, इला० ५:२३, चमकता चेहरा, इला० ५:३६; उत्तर देश में जाना, इला ६:६

—लेही, जोराम का पुत्र, अल० १६:५

—लेही, दक्षिण की ओर का देश, इला० ६:१०
—लेही देश, अल० ५०:२५, मरोनी से आग्रह, अल० ५०:२७
—लेही नगर अल० १५:१५, युद्ध के लिए लोगों की तैयारी, अल० ५१:२४, अमलकियाह द्वारा विजय, अल० ५१:२६
—लेही, नफायटी सेनाध्यक्ष, अल० ४३:३५, लमनायटियों का पीछा, अल० ४३:४०, प्रधान सेनापति, अल० ४९:१६, नूह नगर में, अल० ४९:१७, लमनायटियों से मिलना, अल० ५२:२४, याकूब की सेना पर हमला, अल० ५२:३६ मूलक में सेनापति, अल० ५३:२, लमनायटियों का भागना, अल० ६२:३२, शत्रु को रोकना, सम्पन्न देश की रक्षा, इला० १:२८
—लेही-नफी देश, मू ७:१
—लेही, यरूशलेम का, अग्निस्तम्भ देखना, १ नफी १:६, स्वर्ग का दिव्य दर्शन, १ नफी १:८, मसीह और उसके बारह शिष्यों को देखना, १ नफी १:९, यरूशलेम के नाश होने का दिव्य-दर्शन द्वारा देखना, १ नफी १:१३, १ नफी १०:३, का अभिलेख, १ नफी १:१७, १ नफी १९:१, यरूशलेम में उपदेश देना, १ नफी १:१८, स्वप्न, १ नफी २:१, यरूशलेम छोड़ना, १ नफी २:४, परिवार, १ नफी २:५, बल के साथ लेमुएल की घाटी में बोलना, १ नफी २:१४, पीतल की पटियों के लिए लड़कों को भेजना, १ नफी ३:४, पीतल की पटियों को पाना, १ नफी ५:१०, यूसुफ का वंशज, १ नफी ५:१४, पटियों के विषय की भविष्यवाणी, १ नफी १८, वृक्ष और लोहे की छड़ को दिव्य दर्शन में देखना, १ नफी ८:२, मसीह के सम्बन्ध में भविष्यवाणी, १ नफी १०:४, लियाहोना प्राप्त, १ नफी १६:१०, वन में जन्मे बच्चे, १ नफी १८:७, प्रतिज्ञा के देश में पहुंचना, १ नफी १८:२३; भविष्यवाणी, २ नफी १:१, याकूब को आशीर्वाद, २ नफी २:१; लमान के बच्चों को आशीर्वाद, २ नफी ४:३, लेमुएल के बच्चों को आशीर्वाद, २ नफी ४:८; साम को आशीर्वाद, २ नफी ४:११; मृत्यु, २ नफी ४:१२; पुत्रियों, २ नफी ५:६
—लोगों में समानता, मू० २७:३, अल० १६:१६, ३०:११
—लोथ, पैरों तले कुचला जाना, २ नफी २४:१९
—लोथों को कुत्तों द्वारा नोचा जाना, अल० १६:१०, लोगों द्वारा भक्षण, ए० ९:३४
—लोभ, मास खाने का, दुष्टों द्वारा, १ नफी २२:२३, आंखों का, अल० ४०:९, लोभ की वस्तुओं की मांग मत करो, मार० ९:२८
—लोहे का छड़, लेही के दिव्य दर्शन में १ नफी ८:१९, नफी के, १ नफी ११:२५, अर्थ, १ नफी १५:२३

व

—वंशावली, लेही के, १ नफी ३:३, १२, १ नफी ६:१४, १६ अल० ३७:३, जराहेमला की, ओम० १८, यारदाई राजाओं की, ए० १:६
—वकील, न्यायालयों में अल० १०:१४, नफायटियों में अनेक, ३ नफी ६:११
—वरछा, युद्ध के लिए नफायटियों द्वारा बनाया जाना, जराम ८, अमलकियाह का वरछा से मारा जाना, अल० ५१:३४, अमरोन का मारा जाना, अल० ६२:३६
—वस्तुएं, देखो सभी वस्तुएं
—वस्त्र चीरना, मरोनी द्वारा स्वतन्त्रता की पताका के लिए, अल० ४६:१२, यूसुफ का, अल० ४६:२४
—वस्त्र, जनीफ के लोगों द्वारा बनाए गए, मू० १०:५, नफायटियों द्वारा, इला० ६:१३, यारदाइयों द्वारा, ए० ११:२४
—वस्त्र, मरोनी की सेना के, अल० ४३:१९, नंगों को वस्त्र न देना, इला० ४:१२, भेड़ के चर्म में भेड़िए, ३ नफी १४:१५
—वस्त्र, मूल्यवान, निहोर द्वारा, अल० १:६, नफायटियों द्वारा मूल्यवान, अल० ४:६, मोटे कपड़ों के कारण, कष्ट, अल० ३२:२
—वस्त्र, राजा नूह के जीवन की तुलना, मू० १२:३
—वस्त्र, लबान के नफी द्वारा पहिनना, १ नफी ४:१९ मसीह के रक्त में बारह शिष्यों के धुल कर उज्ज्वल १ नफी १२:१०, बिना धब्बों के रखना, या० १:१९, २:२, मू० २:२८, अल० ५:२१, लमनायटियों के चमड़ों से बने, अल० ४९:६
—वस्त्र, शिष्यों को कपड़ों पर ध्यान न देने का आदेश, ३ नफी १३:२५, २८
—वाणी, अपने कहे अनुसार परमेश्वर की, १ नफी १७:३१, आज्ञाकारी मसीह की वाणी पर, २ नफी ३२:२०, परमेश्वर की, लोहे का छड़, १ नफी ११:२५, परमेश्वर की वाणी को अस्वीकार करने वालों पर संताप, २ नफी २७:१४, परमेश्वर की वाणी की फुसफुसाहट, २ नफी २९:३, परमेश्वर की वाणी का पोषण, या० ६:७
—वाणी, पुस्तक की वाणी उनके शब्द जो धूल में मिल गए, २ नफी २७:९, पुस्तक की, परमेश्वर प्रकट करेगा, २ नफी २७:१४
—विजय, के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता, अल० ५८:३३, मृत्यु और कब्र पर, मू० १५:८, अल० २२:१४, २८:२८, मार० ७:५, शैतान पर, अल० १९:२१
—विद्रोह, सागर में लमान और दूसरों के द्वारा, १ नफी १८:९, २ नफी १:२ यारदाई कोरिहर द्वारा ए० ७:४, कोहर और नूह द्वारा, ए० ७:१५, यारद का, ए० ८:२, आकिश का, ए० ८:१३, हेथ का, ए० ९:२६, गुप्त संगठन द्वारा, ए० ११:१५
—विनीत, धनियो द्वारा उत्पीड़न, २ नफी ९:३०, २८:१३ बढ़ा, २ नफी २८:३० विनीतों के लिए परमेश्वर न्याय करेगा २ नफी ३:९, होने की शिक्षा, अल० ३७:३३, धन्य है विनीत, ३ नफी १ १३:५
—विनीत का आनन्द, २ नफी ९:४२, मू० ४:११, लोग

बलवान हुए, इला० ४:३५
—बिन्यामीन, नफायटी राजा और भविष्यवक्ता, प्रथम मूसायाह का उत्तराधिकारी, ओम० २५: अमलकी ने इसे पटियां दीं, ओम० २५, दूसरी पटियां भी इसके पास, मा० वा० १० लमनायटियों के विरुद्ध लमान की तलवार का प्रयोग, मा० वा० १३, लमनायटियों को पराजित करना, मा० वा० १४, लगातार शान्ति का आनन्द, मू० १:१ पुत्र, मू० १:२, पटियों से लड़कों की शिक्षा, मू० १:३, मूसायाह को राजा बनाना, मू० १:१०, मू० २:३०, पवित्र वस्तुओं को मूसायाह को देना, मू० १:१६, मीनार से उपदेश, मू० २:८ स्वंय हाथों से परिश्रम, मू० २:१४, लोगों की सहायता करने का आग्रह, मू०२:१७, शर्तबन्द लोग प्रभु को साथ, मू० ५:५, शर्तबन्दी के लोगों का नाम ग्रहण करना, मू० ६:१, मूसायाह की नियुक्ति, मू० ६:३, मृत्यु, मू० ६:५, अच्छा उदाहरण, मू० २९:१३, शिक्षा का उल्लेख, इला० ५:६
—विभाजन लोगों में होने को भविष्यवाणी, २ नफी ३१:१०, राजा नूह के लोगों में, मू० १९:२, स्वतन्त्र लोग और राजा के लोगों में, अल० ५१:४, पहोरन की मृत्यु पर, इला० १:४, गिरजा और अविश्वासियों के मध्य, ४ नफी ३५
—विभाजन, सरकार में होने का भय, अल० ५८:३६
—विरोधी, १ नफी १५:२४, अल० १२:२७
—विरासत, नफायटियों को विरासत में देश, १ नफी २२:१२, २ नफी १:५, ६; मसीह द्वारा अनुमोदन, ३ नफी २०:१४, यहूदियों को उनके देश में एकत्रित किया जायगा, २ नफी १०:८, लमनायटियों को प्राप्त होगा, या० ३:४, धर्मनिष्ठों को परमेश्वर के दाहिनी ओर स्थान प्राप्त, अल० ५:५८
—विरोध, आवश्यक, २ नफी २:११, १५
—विरोधी, कोरियण्टूमर, इला० १:१५
—विरोधी का फन्दा, मू० २३:६, अल० १२:६
—विरोधियों का नाम मिटा दिया जायेगा, अल० १:२४, मत परिवर्तन नहीं किए, अल० २४:२९, लमनायटियों की हत्यायें, अल० २५:५, लमनायटियों द्वारा मारने के लिए खोज, अल० २५:८, जोरमायटी, अल० ३१:८, विरोधियों का लमनायटियों से मिलना, अल० ४३:१३; ४७:३५, इला० ११:२४, नफायटियों के लिए हानिकारक, अल० ४८:२४, राजा वाले लोगों का लड़ने से इनकार करना, अल० ५१:१५, ६२:६, एक ने मत परिवर्तन किया, इला० ५:३५, याकूब और षड्यन्त्रकारी, ३ नफी ७:१२
—विलम्ब, पश्चात्ताप का समय, अल० ३४:३३, ३५
—विवरण, नफी द्वारा, १ नफी १:१७, जनीफ द्वारा, मूसायाह, अध्याय ९ से १२, अलमा और उसके लोगों का, मू० अध्याय २३ और २४, मूसायाह के लड़कों के, अल० १७:२९; आरुन और उसके भाइयों का, अल० २०:२९, इलामन द्वारा, अल० ४५-६२
—विवाद, मसीह ने मना किया, ३ नफी ११:२२, २८, ३ नफी १९:३४, गिरजा के नाम पर, ३ नफी २७:३, शिशुओं के बपतिस्मा पर, मरो० ८:४, ५
—विवाद और युद्ध, बड़ी पटियों पर लिखित, १ नफी ९:४, १९:४ नफी को दिव्य ज्ञान, १ नफी १२:३, नफी द्वारा भविष्यवाणी, २ नफी २६:२, याकूब ने देखा, या० ७:२६, इनोस ने, इनो० २३, जराम ने, जरा० १६, बिन्यामीन ने, मा० वा० १२, मूसायाह द्वारा चेतावनी, मू० २९:७, जराहेमला के लोगों में ओम० १७, लोगों को चेतावनी, मू० २:३२, मना किया गया, मू० १८:२१, अमलकी से सम्बन्धित, अल० २:५, गिरजा में, अल० ४:९, आमोन को लेकर लमनायटियों में, लेही और मोरियन्दन देशों की भूमि को लेकर, अल० ५०:२५, नफायटियों में युद्ध और उनका विनाश, अल० ५१:९, गेडियन्दन डाकुओं द्वारा, ३ नफी २:११, शैतान, जन्मदाता, ३ नफी ११:२९; यारदाइयों में, ए० ११:७
—विवाह, लेही के पुत्रों का, १ नफी १६:७
—विवेक, परमेश्वर का, २ नफी ९:८, २७:२२, विवेकी नष्ट होंगे, २ नफी २७:२६, मनुष्यों की वेवकूफी, २ नफी ९:२८ परमेश्वर सर्वज्ञ अल० २६:३५, तरुणाई में शिक्षा ग्रहण करने की सम्मति अल० ३७:३५
—विश्वास करने वाले, मसीह में, ईसाई कहलाए, अल० ४६:१४, सच्चे विश्वासी नफायटी कहलाए, ४ नफी ३६
—विश्वास, मुक्ति के लिए आवश्यक, २ नफी ९:२३, मू० ३:१२, मसीह में, २ नफी ३२:१९, मू० १८:७, मू० २३:१५, अल० ७:६, १६:१०, ३४:४, ३७:३३, इला० ८:१५; ज्ञान लाता है, या० १:५, मू० ५:८, अल० १९:३५, २६:२२, इला० १५:७, ए० ३:१९; ४:७, भविष्यवक्ता के शब्दों में, मू० २२:२० अल० ५:१२, विश्वास से रक्षा, अल० ४४:४, ४८:१६, ५७:२७, इला० १३:६, ३ नफी १३:३०, मरो० ८:३, प्रार्थना में शक्ति, मू० २७:१४, अल० २:३०, १९:१०, उचित व्यवहार में, अल० ५७:२७, ६१:१७, ३ नफी ७:१८, मरो० १०:७, पूर्ण सच्चाई नही, अल० ३२:१८, आशा और उदारता, ए० १२:४, मरो० ७:४
—विश्वास, व्यक्तिगत, विधान से दण्डनीय नहीं, अल० १:१७, ३०:७
—विषधर, एथर ९:३१
—वेतन, के अनुसार, अल० ३:२७, दुष्टों का, अल० ५:४२, नफायटी निर्णायकों के, अल० ११:१
—वेदी, लेही द्वारा बनाया गया, १ नफी २:७, सिदोम के शरण स्थान में, अल० १६:१७, पश्चात्ताप करने वाले लमनायटियों के सामने लाना, अल० १७:४
—वेश्यायें, दाऊद और सुलेमान की, या० १:१५, या० २:२४, अनुचित, या० २:२७, राजा नूह और उसके दुष्ट पुरोहितों के, मू० ११:१४, यारदाइयों में, ए० १०:५
—वेश्यायें, राजा नूह के पुरोहितों के संग, मू० २ ११:१४, ईशाबेल, अल० ३९:३, वेश्याओं की इच्छा करना, घृणित गिरजा द्वारा; १ नफी १३:८
—वेश्या, सारे जग की घृणित गिरजा, १ नफी १४:१०,

११, १२, १ नफी २२:१३, १४, २ नफी १०:१६, २ नफी २८:१८
—वेश्यावृति आदि व्यभिचार, करने वालों पर संताप हो २ नफी ९:३६, ईश्वर द्वारा निषेध २ नफी २६:३२, इसके कारण बहुतों का भटकना, २ नफी २८:१४, बहाना करना, या० २:२३, पश्चात्ताप करने की सलाह, ३ नफी ३०:२ मोरियन्दन का वेश्याओं के कारण स्वयं पर अन्याय करना, ए० १०:११
—वृक्ष, लेही के दिव्य दर्शन में, १ नफी ८:१०,नदी के तट पर १ नफी ८:१३, लोहे की छड़ वृक्ष तक, १ नफी ८:१९, इच्छित फल, १ नफी ८:१०, १५, जीवन का, १ नफी ११:२५, १५:२२, अल० २८, अल० १२:२१, ४२:३, अवशेष को सच्चे जैतून के वृक्ष में कलम लगाया जाएगा, १ नफी १५:१६
—वृक्ष, विश्वास के कारण आज्ञा मानेंगे, या० ४:६
—व्यभिचार अपराध है, या० ३:१२, इला० ६:२६, तलाक के लिए उचित, ३ नफी १२:३२
—व्यभिचार, अति घृणित पाप, अल० ३९:५, वर्जित, मू० १३:२२, अल० १६:१८, अल० २३:३, ३ नफी १२:२७
—व्यर्थ के बकवास और बेवकूफी, २ नफी ९:२८
—व्यापारी, ३ नफी ६:११
—व्यवस्थायें, मूसा के नियमों से सम्बन्धित, २ नफी २५:३०, एक तरह से परमेश्वर के पुत्र की आज्ञाओं के अनुसार, अल० १३:१६, कड़ाई के साथ पालन करने का इतिहास लेख, अल० ३०:३
—व्यवहार, परमेश्वर का, लमान और लेमुएल समझ नहीं पाए, १ नफी २:१२, मू० १०:१४, दयामय और उचित, अल० ५०:१९

श

—शान्ति की पवित्रता, मू० १४:५
—शपथ, और पवित्र व्यवस्था, अल० ५०:३९, बुरे और गुप्त, अल० ३७:२७, २९, इला० ६:२१, २५, ३०, ४ नफी ४२ ए० ८:१५, २०, ए० ११:३३, नफी और जराम के बीच, ६:३३, ३५, ३७: आमोन के लोगों का, अल० ५३:११, १४, अल० ५६:८, मारमन का पछताना, मार० ५:१
—शम, एक सिक्का, अल० ११:५
—शरण स्थान, २ नफी २८:१३, अल० १६:१७; २१:६
—शरीर, मसीह मानव शरीर में, २ नफी ९:५, मरणशील अमरत्व को प्राप्त करेगा, अल० ११:४३, हरएक अंग की पुनर्स्थापना, अल० ११:४३ अल० ४१:२, मसीह की आत्मा का, ए० ३:१६
—शर्तनामा, इब्राहीम के साथ, १ नफी १५:१८, लेही के साथ, २ नफी १:५, हीलम के बपतिस्मा के विषय में, मू० १८:१३, बुरे का, ३ नफी ६:२८, उस समय मसीह द्वारा सभी पूरे नहीं किए गए ३ नफी १५:८, अन्तिम दिनों में पूरे होंगे, ३ नफी २१:७
—शर्तनामा, यहूदियों के अभिलेख में, १ नफी १३:२३; २९:१५, २ नफी ६:१२, यहूदियों के अभिलेख से निकाला गया, १ नफी १३:२६, इस्राएल के वंशजों के साथ, १ नफी १४:५, २ नफी २२:६, मानव वंश के साथ, २ नफी १०:१५, १६:१, बुरा और गुप्त, लोगों की जानकारी से परे, अल० २६:३७
—शत्रु, निरुत्तर, २ नफी ४:२२, शत्रुओं से मुक्ति, २ नफी ४:३१
—शाखा, लेही के वंश की एक, धार्मिक, २ नफी ९:५३
—शाप, अगर लमनायटी विद्रोह किए तब उनपर, १ नफी २:२३, लमनायटियों का नफी द्वारा देखा जाना, १ नफी १२:२३, लमनायटियों के ऊपर, २ नफी ५:२१, या० ३:५, अल० ३:६, देश पर, इला० १३:३०, ३ नफी ३:२४, ए० १४:१, आदम का, बच्चों से लिया जाना, मरो० ८:८
—शापित जो प्रभु से विद्रोह करेंगे, वे शापित हो सकते हैं, ए० ४:८, श्रेणियां, लोगों में, अल० ३२:२, ४ नफी २६
—शारद, एक यारदाई, कोरियण्टूमर से संग्राम ए०१३:२३, मारा जाना ए० १३:३०
—शासक, नफी पर शासक बनने का दोषारोपण, १ नफी १६:३८, १ नफी १८:१०, २ नफी ५:३, परमेश्वर नफी को शासक नियुक्ति करता है, १ नफी २:२२, ३:२९, २ नफी ५:१९, राजा बिन्यामीन द्वारा मूसायाह को, मू० १:१०, मू० २:३०, शासकों के ऊपर पर्दा, २ नफी २७:५
—शासक, अलमा, अल० २:१६, लक्षोनस, ३ नफी १:१
—शास्त्र, सभी लाभ और ज्ञान के लिए, १ नफी १९:२३, पीतल की पटियों पर अंकित, २ नफी ४:१५, बन्द कर धरने के लिए नहीं, अल० १३:२०, शास्त्र में ढूंढने की शिक्षा मसीह द्वारा, ३ नफी २३:१
—शिकायत, बुरे निर्णायकों के विरुद्ध, ३ नफी ६:२५
—शिकार, नफायटियों द्वारा छोड़े गए देश में कोई शिकार नहीं, ३ नफी ४:२, शिकार की कमी से डाकुओं की कठिनाई, ३ नफी ४:२०, यारदाइयों ने संरक्षण की, ए० १०:२१
—शिष्य, नफी द्वारा देखा जाना, १ नफी १४:२०, यूहन्ना जगत के अंत की बातें लिखेगा, १ नफी १४:२२, २७
—शिष्यों को लेही के दिव्य दर्शन में, १ नफी १:१०, नफी के दिव्य दर्शन में, १ नफी ११:२९, इस्राएल और दूसरी जातियों से लड़ाई, १ नफी ११:३५, इस्राएल की शाखाओं के न्यायकर्ता, १ नफी १२:९, के द्वारा शास्त्र, १ नफी १३:२४, के चमत्कार, मार० ९:१८
—शिक्षक, याकूब एक, २ नफी ६:४८, राजा बिन्यामीन का अपनी शिक्षा के कार्य को अंत करना, मू० २:२९.
—शिक्षक, याकूब और यूसुफ की नियुक्ति, २ नफी ५:२६, या० १:१८, झूठी शिक्षा से भ्रष्टता, २ नफी २८:१२ नियुक्तियां, मरो० अध्याय ३
—शिक्षा. मसीह द्वारा नफायटियों को, एक सौंवा भाग भी नहीं लिखा गया, ३ नफी २६:६, देखो मसीह की शिक्षा
—शिक्षा में फूले हुए गैरयहूदी, २ नफी २६:२०, पुरोहित

पवित्र आत्मा को भूल कर अपनी शिक्षा देने लगे, २ नफी २८:४
—शीशा, यारद के भाई द्वारा जो पत्थर तैयार किए गए वे शीशे के समान, ए० ३:१
—शुद्ध करना, लेही का, प्रभु द्वारा, १ नफी १६:२५, लमान लेमुएल और दूसरों की १ नफी १६:३६, नफी के लोगों की, इला० १५:३, यारद के भाई की, ए० २:१४, विवेकमय कारण से मू० २३:२१
—शुद्ध, हृदय का, या० ३:२, धन्य हैं वे, ३ नफी १२:८
—शुद्धि, पश्चात्ताप और आज्ञाओं के पालन से, इला० ४:३५, अल० ५:५४, १३:१२, मरो० १०:३३
—शून्य समान मनुष्य, इला० १२:७, मू० ४:५, ११
—शेर, २ नफी ३१:१२, ३ नफी २०:१६
—श्रेष्ठता, राजा के लोगों को अपने आपको श्रेष्ठ समझना अल० ५१:८, १७, १८, अल० ५१:२१
—शैतान का गिरजा, १ नफी १४:१०, बड़ा और घृणित कहा गया, १ नफी १३:५, १४:३, १७, १ नफी २२:१३, २ नफी ६:१२, सारे जग की वेश्या, १ नफी १४:१०, २२:१३, २ नफी १०:१६, २८:१८, मसीह को अस्वीकार करता है, ४ नफी २६
—शैतान, घृणित गिरजा का संस्थापक, १ नफी १३:६, १४:३, शैतान की दासता, १ नफी १४:७, २ नफी १:१८, गिरा हुआ स्वर्गदूत, २ नफी २:१७, ६:८, प्रथम माता-पिता को बहकाया, २ नफी ६:६, रूप परिवर्तन, २ नफी ६:६, दूषित स्वर्गदूत, २ नफी ६:१६, गुप्त संगठनों का जन्मदाता, २ नफी २६:२२, इला० ६:२६, शक्तिहीन, किया जाएगा, २ नफी १३:१८, सीरम को धोखा दिया, या० ७:१८, बुरी बातें उसी से, ओम २५, ३ नफी १:२२, मरो० ७:१२, पापों का स्वामी, मू० ४:१४, की दासता, अल० ६:२८, कोरिहर के सामने, अल० ३०:५३, दुष्टों को अपने अधिकार में करता है, अल० ४०:१३, आत्माओं को नष्ट करने वाला, इला० ६:२८, परमेश्वर का शत्रु, मरो० ७:१२
—शैतान की दासता, २ नफी २:२६, अल० ६:२८

स

—संकट, न्याय दिन को भयंकर, अल० ३४:३४, अपराध के लिए, अल० ७:३, १८
—संकेत, मसीह के जन्म के, २ नफी २६:३ इला० १४:३, ३ नफी १:१३, मसीह की मृत्यु के, १ नफी १६:१०, इला० १४:२०, ३ नफी ८:३, २०, सीरम द्वारा मांग, या० ७:१३, इस्राएलियों के एकत्रित होने के, ३ नफी १६:१, किस्कूमन द्वारा गुप्त, इला० २:७
—संगठन, किस्कूमन का गुप्त, इला० २:८, हत्यारों का,
—संगठन, गुप्त, २ नफी २६:२२, देखो गेडियन्दन डाकुओं को, उन पर परमेश्वर का न्याय, अल० ३७:३०, नफायटियों में आरम्भ, इला० ६:१८, गुप्त संकेत और सांकेतिक शब्द, इला० ६:२२ गुप्त शपथों को लोगों से गुप्त रखना, इला० ६:२५, शैतान द्वारा कैन को गुप्त शपथों को देना, इला० ६:२७ नफायटी समाप्त करते हैं, ३ नफी ५:६ शैतान द्वारा दिया गया, ३ नफी ६:२८, शासन को नष्ट करना, ३ नफी ७:६, एकत्रित होकर राजा को नियुक्त करना, ३ नफी ७:६, यारदाइयों में, ए० ८:१८, नफायटियों के नष्ट होने का कारण, इला० ३:१३, यारदाइयों के, ए० ८:२१, अन्य जातियों को चेतावनी, ए० ८:२३, शैतान द्वारा स्थापित, ए० २५, गद्दी से हटाए गए राजा यारद की कन्या द्वारा प्रोत्साहन, ए० ८:१७, यारद की हत्या, ए० ६:६, हेथ का षड्यन्त्र, ए० ६:२६, विरोध में कोम की लड़ाई, ए० १०:३४, भविष्यवक्ताओं को अस्वीकार किया जाना, ए० ६:२६, अनेकों का मारा जाना, ए० १३:१८, गिलियड़ का अपने दल के लिए आदमियों को प्राप्त करना, ए० १४:८, इसके कारण गिलियड़ की हत्या, ए० १४:६
—संत, मनुष्य प्रायश्चित द्वारा हो सकता है, मू० ३:१६
—संत, परमेश्वर का गिरजा संतों का कहना, १ नफी १४:१२, दुष्टों और संतों के मध्य भारी खाई, १ नफी १६:२८, पवित्र प्रभु के, २ नफी ६:१८, रक्त पुकारेगा, धरती पर से उठकर परमेश्वर के पास फरियाद करने जाएगा २ नफी २६:३, २ नफी २८:१० सब परमेश्वर के साथ निवास करेंगे, मरो० ८:२६
—संस्थापक, शान्ति का, मू० १५:१८, अलमा द्वारा गिरजे का, मू० २३:१६, मू० २६:४६
—संक्षिप्त, नफी द्वारा लेही के अभिलेख का, १ नफी १:१७, मारमन द्वारा नफी की पटियों का, मा० वा० ३, ३ नफी ६:१५, मरोनी द्वारा यारदाई अभिलेख का, ए० १:५, ३:१७, १५:३३
—सजार, लेही ने जहां डेरा लगाया था, १ नफी १६:१३
—सतीत्व में परमेश्वर को आनन्द, या० २:२८ दूसरी सभी बातों से अधिक मूल्यवान, मरो० ६:६
—सदोम देश, अल० १५:१
—सदोम राजा मलसिदक, अल० १३:१७
—सन् के उत्तम बुने कपड़े, १ नफी १३:८, अल० १:२६, अल० ४:६, इला० ६:१३, ए० ११:२४
—सन्ताप अनन्त, अन्तहीन कष्ट, २ नफी १:१३, अल० ६:११, इला० ५:१२, ७:१६
—संदेह, लमनायटी सामुएल की भविष्यवाणी पर, ३ नफी ८:४
—सबथ, नफी के लोगों के द्वारा मनाया जाना, जराम ५, मू० १८:२३ स्मरण रखो, मू० १३:१६
—सभी बातें, प्रभु जानते हैं, १ नफी ६:६, २ नफी २:२४, ६:२०, परमेश्वर को पूर्व से जानकारी, अल० १३:७, परमात्मा जानकारी रखता है, अल० ७:१३, परमेश्वर और मसीह ने रचा, २ नफी २:१४, मू० ३:८, इला० १४:१२, ३ नफी ६:१५, में विरोध आवश्यक, २ नफी २:११, अनेकता में एकता, २ नफी २:११, प्रकट की जाएगी, २ नफी २७:१०, ११ फिर से स्थापित की जाएगी अल०

४१:२, ४, एक परमेश्वर में होने का संकेत अल० ३०:४४, पिता द्वारा लिखी गई, ३ नफी २७:२६, नई होंगी, ए० १३:६
—सभ्यता, विद्रोही नफायटियों को बाध्य करना, अल० ५१:२२, असभ्य, मरो० ६:११
—समय की गणना, मसीह के जन्म के संकेत के समय से नफायटियों ने परिवर्तन किया, ३ नफी २:८
—समलन देश, मू० १०:७, मू० ३:२०
—समानता, इब्राहीम और इसाक की, या० ४:५
—सम्पन्न देश अरब में, १ नफी १७:५, ६, ७,
—सम्पन्न देश का एक शहर आनन्द नगर, :प्रतिज्ञा के देश में: अल० २२:२६, नफायटी वहां बसे, अल० २२:३३, नफायटी सीमा तक हटाए गए, अल० ५१:२८, टेनकम का वहां जाना, अल० ५१:२६, ५२:१५, गढ़बन्दी, अल० ५२:६, ५३:४ टनकम की सेना के अधीन, अल० ५२:१७, मरोनी का वहां पहुंचना, अल० ५२:१८, लेही का लमनायटियों से सामना, अल० ५२:२७, बन्दियों का ले जाया जाना, अल० ५२:३६, बन्दियों का परिश्रम करना, अल० ५३:३, हागूथ का यहां नाव बनाना, अल० ६३:५, कोरियण्टूमर का इस ओर बढ़ना, इला० १:२३, लमनायटियों का निकट की भूमि प्राप्त करना, इला० ४:५, मसीह का यहां प्रकट होना, ३ नफी ११:१
—सम्पत्ति खोजने से पूर्व परमेश्वर के राज्य को खोजो, या० २:१८, राजा विन्यामीन ने सम्पत्ति को नहीं खोजा, मू० २:१२, शाप द्वारा खिसकने वाला होगा, इला० १३:३१, मार० २:१८
—सम्पत्ति शापित हो सकती है, इला० १३:१८
—सम्पत्तिवान, दुष्टों को अपराधी ठहराना, २ नफी ६:३०, ४२, २८:१५, मू० ४:२३, धार्मिकता के कारण गिरजा के लोगों का धनी होना, अल० १:२६, लमनायटियों और नफायटियों का धनी होना, इला० ६:६
—सरकार का गुप्त सगठनों द्वारा पलटा जाना, ३ नफी ७:६
—सरदार, मू० २४:६, १६
—सर्प जो मूसा द्वारा ऊपर उठाया गया, २ नफी २५:२०, इला० ८:१४, शैतान भी देखो।
—सर्प, अग्नि की तरह, कष्ट देने वाले, १ नफी १७:४१, २ नफी २४:२६, यारदाइयों को कष्ट देने वाले विषधर, ए० ६:३१, नष्ट किए गए, ए० १०:१६
—सर्वशक्तिमान परमेश्वर, २ नफी २३:६, मू० ११:२३, इला० १०:११
—सर्वनाशक पुत्र, ३ नफी २७:३२, २६:७
—सहारा, अल० ४६:३५, मरोनी द्वारा प्रयत्न, अल० ४८:११, पहोरन की प्रतिज्ञा, अल० ५०:३६, स्वतन्त्र लोगों के पक्ष में मत, अल० ५१:७, अवहेलना करना, अल० ५६:१३, पहोरन द्वारा रक्षा अल० ६१:६, गेडियन्दन डाकुओं से रक्षा, ३ नफी २:१२, गुप्त संगठनों द्वारा खतरा, ए० ८:२५
—सांत्वना देने वाला, मरो० ८:२६
—सागर के द्वीप,कष्ट झेलेंगे, १ नफी १६:१२, इस्राएल के वंशज बिखरेंगे, १ नफी २२:४, स्मरण रखे जाएंगे, २ नफी २६:७; इस्राएल के वंशजों को एकत्रित किया जाएगा, २ नफी १०:८
—साम, लेही का एक पुत्र, १ नफी २:५, १७, इसका पिता और भाइयों के विरुद्ध विद्रोह १ नफी ७:६, अल० ३:६, लेही का आनन्द, १ नफी ८:३, १४, लेही द्वारा आशीर्वाद, २ नफी ४:११, लमनायटियों से अलग होने के समय नफी के साथ वन में जाना, २ नफी ५:६
—सामुएल, इस्राएल का भविष्यवक्ता जिसकी चर्चा मसीह ने की, ३ नफी २०:२४
—सामुएल, लमनायटी, इला० १३:२, जो पश्चात्ताप नहीं करेंगे उनके नष्ट होने की भविष्यवाणी करना, इला० १३.५, ३८, मसीह के विषय की भविष्यवाणी, इला० १३:६, मसीह के जन्म और मृत्यु के संकेतों का विवरण, इला० १४:३, २०; पश्चात्ताप करने की आग्रह, इला० १५:१, बहुतों का मत परिवर्तन करता है, इला० १६:१, बचकर भागना, इला० १६:६, भविष्यवाणी का पूरा होना, ३ नफी २४:१०, मार० १:१६; २:१०
—सारा, लेही की पत्नी, १ नफी २:५, ५:१, ८:१४; लेही के विरुद्ध शिकायत, १ नफी ५:२
—साक्षी, कोरिहर से, अल० ३०:४०
—साक्षी नफी की वाणी, २ नफी २६:२८, गवाह केवल कुछ ही होंगे, २ नफी २७:१३, दो जातियों, परमेश्वर के गवाह, २ नफी २६:८, मसीह का साक्षी अलमा, अल० ७:१३, नफायटी अभिलेख के तीन, २ नफी २७:१२, ए० ५:३, तीन और आठ, देखो पुस्तक की भूमिका में।
—साक्षियां, कानून, अल० ११:२, सचाई की, इला० ५:५०, ६:२४
—सिदकियाह, यहूदा का राजा, १ नफी १:४, ६:१३, ओम० १५, मूलक का पिता इला० ६:१०, मूलक को छोड़कर बाकी सभी पुत्र मारे गए, इला० ८:२१
—सिदकियाह, बारह शिष्यों में से एक, ३ नफी १६:४
—सिदोम नदी का जल, मार० १:१०, बपतिस्मा दिया जाना अल० ४:४, सिदोन नदी के उद्‌गम का वन, अल० २२:२६, ४३:२२
—सिबलन या सिबलोम, कोम का पुत्र एक यारदाई राजा, ए० १:१२, इसके भाई द्वारा भविष्यवक्ता की हत्या, ए० ११:५, मृत्यु, ए० ११:६
—सिबलन, एक सिक्का, अल० ११:१५
अल० ११:१६
—सिबलन देश, मू० ७:५, १०:८, राजा नूह द्वारा अनेक मकान बनाए गए, मू० ११:१३
—सिबलोम, एक नफायटी नायक कुमोरह में मारा जाना, मरो० ६:१४
—सिम, पहाड़ जहां पर अमरोन ने खुदी लिपि को छुपाया, मार० १:३ पवित्र अभिलेखों को मारमन ने यहां से प्राप्त की, मार० ४:२३ यारदाइयों के अभिलेख में इसकी चर्चा,

ए० ९:३
—सियोन पर्वत के विरुद्ध युद्ध, २ नफी २७:३
—सियोन, के सहायकों को आशीर्वाद, १ नफी १३:३७ विरोधी नष्ट किए जाएंगे, १ नफी २२:१४, २ नफी ६:१३, २नफी १०:१३, २ नफी २७:३, से व्यवस्था निकलेगा २ नफी १२:३, में श्रम करना, २ नफी २७:३१, शैतान का मत कि सब ठीक है, २ नफी २८:२१
—सिर टोपें, नफायटियों की, अल० ४३:३८, ४४, लमनायटियों की, इला० १:१४, यारदाइयों में ए० १५:१५
—सिद्धान्त, झूठा, २ नफी २८:९, १२; अल० १:१६, झूठे मत को नफायटी और यहूदी शास्त्र परास्त करेंगे, २ नफी ३:१२, मसीह का, २ नफी ३१:२१; ३२:६, ३ नफी ११:३२; और देखो मसीह की शिक्षा।
—सिलोम-नगर, मू० ७:२१
—सिल्क, १ नफी १३:७, अल० ४:६, ए० ९:१७, ए० ११:२४
—सीढ़ी, मरोनी की सेना ने काम में लाया, अल० ६२:२१
—सीबू का जल, अल० १७:२६
—सीमा के झंझट से युद्ध, अल० ५०:२५
—सीमेन्ट, काम में लाने में नफायटी प्रवीण, इला० ३:७, ९, ११
—सीरम, मसीह को अस्वीकार करना, या० ७:१, संकेत की मांग, या० ७:१३, दण्ड और मृत्यु या० ७:१५, २०
—सीरन देश, अल० ३९:३
—सुलेमान, का मन्दिर, उसी प्रकार बनाए गए नफायटियों का मन्दिर, २ नफी ५:१६, के बुरे कर्म, या० २:२३
—सुसमाचार, महान आनन्दमय, राजा विन्यामीन के, मू० ३:३
—सूर, एक घाटी जहां कोरियण्टूमर ने डेरा डाला था, ए० १५:२८
—सूरज, स्थिर प्रतीत हुआ, इला० १२:१५
—सूले, किम का पुत्र, एक यारदाई राजा, ए० १:३१, ७:७, पिता के राज्य की पुनर्स्थापना, ए० ७:१०, धर्मनिष्ठता, ए० ७:११ नूह ने पकड़ा, ए० ११:१७, राज्य पर फिर से अधिकार, ए० ७:१, १८, भविष्यवक्ताओं की रक्षा करना, ए० ७:२४
—सेज, हैथ का पुत्र, एक यारदाई राजा, ए० १:२५, राष्ट्र को बचाने का प्रयत्न, ए० १०:१, मृत्यु, ए० १०:४
—सेज, लिब का भाई एक यारदाई, ए० १४:१७, बदला लेने की प्रतिज्ञा, ए० १४:२४, कोरियण्टूमर द्वारा मारा जाना, ए० १५:३०
—सेजोराम, प्रधान निर्णायक बनना, इला० ५:१, हत्या किया जाना, इल० ६:१५, पुत्र की हत्या, इला० ६:१५
—सेजोराम, प्रधान निर्णायक, भाई द्वारा हत्या, इला० ९:२३
—सेथ, सिबलन का पुत्र एक यारदाई, ए० १:११, दासता में, ए० ११:९
—सेनम, चांदी का सिक्का और उसका मूल्य, अल० ११:३, ६
—सेनानायक, नफायटियों द्वारा नियुक्त, अल० २:१३, जराहेमना द्वारा अमलकायटियों और जोरमायटियों को नियुक्त करना, अल० ४३:६, लमनायटियों का युद्ध में नेतृत्व के लिए जोरमायटियों और अमलाकायटियों में से नायकों को नियुक्त करना, अल० ४३:४४, नफायटी नगरों की जानकारी होने के कारण जोरमायटियों को नियुक्त करना, अल० ४८:५, नफायटियों की गढ़बन्दी लमनायटियों को आश्चर्य, अल० ४९:५, लक्षोनस द्वारा नियुक्त, ३ नफी ३:१७
—सेनाध्यक्ष, गिडियन, राजा लिमही का, मू० २०:१७, जोरम, नफायटियों को, अल० १६:५, मरोनी नफायटियों का, अल० ४३:४४, लेही नफायटियों का, अल० ४९:१६, गिड, लमनायटी बन्दियों के प्रहरियों का, अल० ५७:२९
—सेनाध्यक्ष, अल० ४३:४४, मरोनी प्रधान, अल० ४६:११, अमलकियाह प्रधान, अल० ४७:१९, गिडगिडोनी प्रधान, ३ नफी १८, मारमन का पद अस्वीकार करना, मा० ३:११
—सेनिन, सोने का सिक्का, निर्णायक के लिए एक दिन का वेतन, अल० ११:३, ५, ७
—सेम, देश; मार० ३:२०
—सेम, एक नफायटी नायक, कुमोरह में मारा जाना, मार० ६:१४
—सेमनन, बारह में से एक शिष्य, ३ नफी १९:४
—सेलम, वह पहाड़ जहां पर यारद के भाई के सामने प्रभु प्रकट हुए थे, ए० ३:१
—सेवक, लबान का सेवक जोराम, १ नफी ४:२०, आमोन, राजा लमोनी का, अल० १७:२५, टेनकम का, अल० १२:३३, शैतान का, मरो० ७:११
—सेवक, लाभहीन, मू० २:२१, लमनायटियों द्वारा लमोनी के सेवकों को तितर-बितर करना, अल० १७:२७
—सेण्टम, निर्णायक का हत्यारा, इला० ९:२६, अपराध स्वीकार करना, इला० ९:३७
—सेहूम, एक प्रकार का खाने वाला पौधा, मू० ९:९
—सोना, घृणित गिरजा द्वारा प्राप्त करने की इच्छा, १ नफी १३:७, प्रतिज्ञा के देश में पाया जाना, १ नफी १८:२५, सोने की कारीगरी की शिक्षा, २ नफी ५:१५, के कारण अहंकार, या० २:१०, लिमही के लोगों का कर स्वरूप देना, मू० १९:१५, लोगों के पास बहुत अधिक सोना सञ्चय, अल० १:२९, सोने के सिक्के, अल० ११:५
—स्पष्ट और बहुमूल्य शास्त्र निकाल दिए गए, १ नफी १३:२६, २८, १३:४०
—स्पष्टता, से नफी को आनन्द, २ नफी २५:४, ३१:३, ३२:६, परमेश्वर की वाणी, १ नफी १३:२४, २९; २ नफी ३३:५, या० २:११
—स्वतन्त्रता की उपाधि का झण्डा, मरोनी द्वारा ऊपर उठाया गया, अल० ४६:१२, मतभेदी ने विवश हो उड़ाया, अल० ५१:२०
—स्वर्गदूत, का लमान और लेमुएल से बाते करना, १ नफी ३:२९, ४:३, १ नफी ७:१०, १ नफी १७:४५, लेही के

पुत्र नफी के सामने, १ नफी ११:१४, स्वर्ग से गिरा हुआ, २ नफी २:१७, २ नफी ९:८, याकूब के सामने, २ नफी १०:३, या० ७:३, या० ७:५, राजा बिन्यामीन से बातें, मू० ३:२ मू० ४:१, अलमा और मूसायाह के पुत्रों के सामने, मू० २७:११, अल० ३६:८, अलमा के सामने प्रकट होना, अल० ८:१४, अमूलक के सामने, अल० १०:७, सामुएल और लमनायटियोंके सामने, इला० १३:७

—स्वर्गदूत, लेही के दिव्य दर्शन में, १ नफी १:८, नफी को उपदेश, २ नफी ४:२४, शैतान को, २ नफी ९:९, या० ३:११, पवित्रात्मा की शक्ति से बोलना, २ नफी ३२:३, बहुतों को वाणी देना, अल० १४:२४, लमनायटियों के सामने प्रकट होना, अल० १९:३४, आरुन से तर्क, अल० २१:५, आमोन के लोगों से भेंट, अल० २४:१४, पश्चात्ताप की घोषणा, इला० ५:११; नफी और लेही के चेहरे जैसे, इला० ५:३६, लोगों को उपदेश, इला० ५:४८, बुद्धिमानों के सामने, इला० १६:१४, इलामन के पुत्र नफी के सामने, ३ नफी ७:१५, १८, शैतान के दूतों को आनन्द, ३ नफी ९:२ मसीह के सामने छोटे बच्चों को उपदेश, ३ नफी १७:२४, बारह शिष्यों को उपदेश, ३ नफी १९:१४ तीन शिष्य जैसे, ३ नफी २८:३०, क्या चमत्कारों का होना अंत हो गया? मरो० ७:२९

—स्वर्गो, लेही के लिए खुला, १ नफी १:८, नफी के लिए, १ नफी ११:१४, १ नफी ११:२७ पश्चात्ताप करने वाले लमनयटियों के लिए, इला० ६:४८ जहां परमेश्वर रहता है, अल० १८:३०

—स्वतन्त्र व्यक्ति, नाम ग्रहण करना, अल० ५१:६, पहोरन के पक्ष को ग्रहण करना, अल० ६१:३, जराहेमला से पीछे हटाया जाना, अल० ६२:६

—स्वतन्त्रता, दासता से, यूसुफ के वंश वालों की, २ नफी ३:५, दासता से मुक्ति के लिए संघर्ष उचित, अल० ४३:४८, के लिए

—स्वतन्त्रता, प्रतिज्ञा का देश स्वतन्त्रता, २ नफी १:७, विश्वास और आराधना के लिए, अल० १:१७, २१:२२, ३०:९, के लिए नफायटियों का उद्योग, अल० ४३:३०, मरोनी का झण्डा, अल० ४६:१३, हर एक मीनार से झण्डा, अल० ४६:२६, मरोनी ने झण्डा गाड़ा, अल० ४६:३६, राजा के लोगों का विवश होना, अल० ५१:२० तरुण अमोनायटियों का दल स्वतन्त्रता के लिए, अल० ५६:१७

—स्वप्न देखने वाला, १ नफी २:११, १ नफी ९:२, ४

—स्वप्न, देखो दिव्य दर्शन

—स्थिर, विश्वास हो सकता है, अल० ३२:३४

—स्त्रियां, लेही के साथ की स्त्रियों ने वन में बच्चे जन्मे, १ नफी १७:१, २० परमेश्वर को स्त्रियों के सतीत्व से आनन्द मिलता है, या० २:२८, कपड़े बुनने की शिक्षा, मू० १०:५, परिश्रम करना और बुनना, इला० ६:१३, दुष्ट लमनायटियों ने पतियों का मांस खिलाया, मरो० ९:८

ह

—हत्यायें, प्रतिज्ञा के देश में गुप्त हत्याओं का अन्त किया जाएगा, २ नफी १०:१५, वर्जित, २ नफी २७:३२, नफायटियों द्वारा, मरो० ९:१०

—हत्यारे पर संताप, २ नफी ९:३५

—हागोथ, नावों को बना कर जल में करना, अल० ६३:५

—हाथ रखने की क्रिया, नियुक्ति में, अल० ६:१

—हाथी, ए० ९:१९

—हाबिल, इला० ६:२७

—हारथम, लिब का पुत्र, यारदाइयों का राजा, ए० १:१७, ए० १०:२९

—हिमनी, मूसायाह का पुत्र, मू० २८:३४, लमनायटियों में अल० २६:१७, जराहेमला के गिरजा का प्रधान, अल० ३१:६, देखो मूसायाह के पुत्रों को

—हिरमन्त, जहां लमनायटी भाग कर गए थे, अल० २:३७

—हीलम नगर, मू० २३:२०

—हीलम, आमोन का एक बन्धु, मू० ७:६

—हीलम, नूह का अनुयाई, अलमा द्वारा बपतिस्मा दिया गया, मू० १८:१२

—हेथ, कोमका पुत्र, ए० १:२६, १:२५, विद्रोह कर सिंहासन प्राप्त करना, ए० ९:२७, मृत्यु, ए० १०:१

—हेथ, देश, ए० ८:२

—हेथ, हीतरम का पुत्र, ए० १:१६, ए० १०:३१

—हेम, आमोन के बन्धुओं में से एक, मू० ७:६

—हेसलन का मैदान, ए० १४:२८

ज्ञ

—ज्ञान, से आनन्द या कष्ट, अल० १४:१५, १७

—ज्ञान, प्रभु के विषय की जानकारी, पश्चात्ताप से अल० २३:५, अल० ३७:९, अल० ४७:३६, ३ नफी ५:१३, २०:१३, धरती पर पूर्ण ज्ञान, २ नफी २१:९, २ नफी ३१:१५

—ज्ञान प्रकाश अथवा दिव्य ज्ञान, परमेश्वर की ओर से, मुहरबन्द पुस्तक में, २ नफी २७:७, अवहेलना नही की जानी चाहिए, या० ४:८

HINDI
4 02335 72294 5
33572 294